२५०८

श्रीहरिकृष्ण महाराजनां

श्रीमुख सिद्धांत

प्रकरण पेहेलुं

चुडावाळा

ओझा भगवानजी लक्ष्मिराम

विगेरे हरिभक्तोए

अमदावादमध्ये

मामानी हवेलीमां अमदावाद युनाईटेड प्रिन्टिंग अने जनरल एजन्सी कंपनी "लिमिटेड"ना

प्रेसमां

रणछोडलाल गंगाराम पासे

छपावी प्रसिद्ध कर्यो.

संवत १९३५. सने १८७८.

॥ ॥

अथश्री मुखसिद्धांतप्रकरणपेहेलुंप्रारंभ.


मुनिमंडल
जगंनाथ
हरीजनो.

॥अथ॥श्लोक॥ लिख्यते॥ ॥रमापतिं भक्तजनैः सुसेव्यं

॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ प्रेमणाहरिकृष्णमहंनमामि॥१॥उदारलीलंनवकंजनेत्रं

ब्रह्मेंद्ररुद्रादिसुवर्णनीयकीर्त्तिं॥सदाप्रसन्नास्यमनादिदेवं॥प्रेमणाहरिकृष्णमहंनमामि॥२॥अधर्मनाशायकृतोद्यमो

सिंहासनस्थंबहुगौरवर्णम्॥अनेकजन्मार्जितपुन्यगम्यं प्रेमणाहरिकृष्णमहंनमामि॥ प्रेमणाह०॥३॥प्रफुल्लहृत्पंकजकोशम॥थ्य स्थि-

पिआर्तसतांज्ञानप्रकाशनार्थम्॥शुभस्वरूपंदिविदेवगीतम्॥प्रेमणाह०॥४॥किरीटयुक्तंशुभपुष्पहारमाजानबाहुन

त्वासतां नित्यविशुद्धभावम्॥विभूषितंकांचनकुंडलाद्यैः प्रेमणाह०॥५॥सुनासिकंकोटिदिनेशकांतिं पितांबरं साधुजनौभि

वकंजमाजं॥सुनिलकेशाभि॥विरोचमानं॥प्रेमणाह०॥ ६॥स्वभक्तमोक्षैकफलस्यहेतुमद्भुतरूपंनटराजवेशम्॥अनेक

युक्तं॥दिनेदिने दिव्यस्वरूपमाथं प्रेमणाह०॥ ७॥ अघौघबोधं भवमोचनाशा

शास्त्रार्थपुराणदक्षंप्रेमणा०॥७॥अखंडमूर्त्तिं भवरोगवैद्य राजाधिराजं यदुराम नाथं ॥ ॥ पठंतिये भूमिव

य प्रेमणा हरिकृष्णमहंनमामि॥८॥ कृतंमुदे ल त्यदुरामनाम्ना संध्याष्टकं श्रीहरिकृष्णविष्णोः॥ ॥इति संध्याष्टक संपूर्णम्॥ ॥ ॥

लेसुभक्त्यासयांति तं तेहरिकृष्णलोके॥९॥ ॥प्रातर्नमामिहरिकृष्णमनंतरूपं॥ सर्वास्फदंसकलदेवमुनिद्रभुपं॥

॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ शिवंतनोतु॥१॥प्रातर्भजामिहरिकृष्णमुखारविंदं॥

यन्यादनोस्थितिमतां भवनिरराशि॥र्याया च्च धनुपदतांस

यत्पादनो स्थितिमतां भवनिरराशिः॥ यांयाश्च धनुपदतांसशिवंतनोतु॥१॥प्रातर्भजामिहरिकृष्णमुखारविंदं॥

भक्तामरभ्रमरगुंजितमुत्प्रफुल्लं॥यन्मन्वयतांनयनमानसदोषराशिं॥ ईर्ष्यं प्रयाति दिननाथमिवप्रियाद्यं॥२॥

भक्तामर भ्रमरगुञ्जितमुत्प्रफूलं॥ यत्स्वनुयतांनयनमानसदोषराशिं॥नामैवनामिगतपापतमः प्रणाशं॥यद्

चर्चदामि हरिकृष्णहरःप्रसारं॥माधुर्यमोदितमहेशसुरेशशेषं॥ नामैवनामिगतपापतमः प्रणाशं॥यद्

...तुर्चदामि हरिकृष्णहरःप्रसारं॥माधुर्यमोदितमहेशसुरेशशेषं॥ वेदोक्तमौक्तिकमालिकया

...ति ज्वलनंजराहृत्॥३॥स्वांतेस्मरेहिकरुणार्णसधिमपूर्णं॥ वेदोक्तमौक्तिकमालिकया

...ति ज्वलनंजराहृत्॥३॥स्वांतेस्मरेहिकरुणार्णवसधिमपूर्णं॥ यन्नाभिपद्मकुहरे भुव

...मं म्यवाचा॥ स्वियानपरंपरमहारपदंदिशंतं॥४॥यन्नाभिपद्मकुहरे भुव

... नया प्रजातःप्रातः स्मरामिचरणौ

आपुस्तक धर्म ज्ञान वैराग्य महात्मे सहित प्रत्यक्ष हरिकृष्णमहाराजनी प्रेमलक्षणा भ-
क्ति उत्पन्न थाय अने आत्मा परमपदने पामे एवा शुभ हेतुथी परमात्मानुं परम रहस्य
ज्ञान सनातन सिद्धांतछे माटे सर्व हरिभक्तोए मलीने धर्म अर्थ काम मोक्षने अर्थे ने
आत्यंतिक ज्ञान प्रत्यक्ष हरिकृष्ण परमात्माना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय था
यतेनी सिद्धिने अर्थे आ श्रीमुख्यसिद्धांत चुडावाला हरिभक्तोए तथा बिजा सम-
स्त हरिभक्तोनी मददथी गाम रोहीशाला तथा चुडा वाला ओझा भगवानजी ल-
क्ष्मिराम तथा सरवैना भक्त दुदाजीवाए छपावी प्रसिद्ध कर्युंछे. आपुस्तक
कोई वांचे सांभळे तेओने परमपदनी प्राप्ति थाओ एवि अमारी विनंतिछे
तेवीजरीते तमो अमने श्रीहरिकृष्णमहाराज विषे अखंड प्रति रहे एवो आशि-
र्वाद देजो. आपुस्तक अमूल्यचिंतामणीछे. पण खर्चना रु०५ राख्याछे.।। ।।

॥ त्रारणाय वन्यां ॥५॥ श्रीशंकरेण जनता वृषतां प्रणिता ॥ हत्वाजनान् जिनमतानुरत तान वन्यां ॥ काले पुनः
कलियुगेन हृते स्वधर्मे ॥ यो भुत्स्वयं हि हरिकृष्ण महं नमामि ॥६॥ नष्टं वृषं समधि गम्य पुनः प्रविष्ट ॥ यद्रो-
न्चिषी स्कर गणोमुदीतो दिनादौ ॥ प्रित्याहि नांदनयनैः कुसमैः सिषेवे ॥ तस्मै नमो भगवते हरिकृष्ण धाम्ने
॥७॥ जयशंकर मुनिरचितं ॥ रचितं हरिकृष्ण किर्तिरत्नौघे ॥ प्रातः प्रित्या पठते स्तोत्र मिदं वै ॥ लभेत्स
वृषामुक्तिं ॥८॥ अधिगतं भूवि विप्रकुलेमले ॥ स्वयचनामत तोजने ताजनि ॥ अजनि माद धतं दत स्कलं
॥ भजत तां भजतां भजतां हरिं ॥९॥ इतिश्री रेवायार पान ज ब्या वम लवो धरामक्षेत्रिय चातुर्विंशा तिज्ञा-
तिय गोविंद स्करि श्रीकृष्णात्मज जयशंकर विबुधरचितं श्री हरिकृष्ण स्वरूप स्तोत्रं ॥ ॥श्रीरस्तु॥

॥ ॥किरतन॥ ॥चीतडुं चोरे छे चीतडुं चोरे छे चीतडुं चोरे छे होहरीकृष्ण तारि मूर्ति रे मारुं चितडुं चोरे छे रे हरि
कृष्णु ॥ मुर्ति मनोहर जोई गई का हिर विश्री स्रि छो रे छे ॥ जे जन जुवे तेनां तर्त मनने होरे छे रे ॥ हरि ॥ हो प्रीतम पातला
तारी ॥ हो विठल वांकडा तारी ॥ पातलिया तारी मूर्ति प्यारी वर्णी गोरे भव ब्रह्माजोई भूलापडे हवे यर्या करो
रे छे रे ॥ हरि ॥२॥ आंख अणी आ लिने मुख रूडुं मुछ फूटते दोरे छे कामणगारां कटाक्ष तारां ते काळजु कोरे छे ॥ हरि ॥३॥ कंठमां पुष्पना हार शोभे तेनी स्कगंधी फोरे छे ॥ जगंनाथ हे वी मूर्तिमां प्रित्ये चितने जोरे छे रे ॥ हरि कृष्ण तारी मूर्ति रे मारुं चितडुं चोरे छे रे हरि कृष्ण तारी०॥४॥ ॥ इति किर्तन संपूर्ण॥ ॥

॥ श्री हरिकृष्णाय नमोनमः ॥ संवत ॥१९॥ ओगणिशे ॥१८॥ चौदना महा शुदि १ पडवाने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवा-
न गाम श्री बुधमध्ये सांजने समेरोजी घोडिये असवार थैने यज्ञ शाळामां पधार्या हता ॥ अने ते यज्ञशाळामध्ये सिंहासनउपर विराज
मान थया हता ॥ अने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठमां गुलाब ने मोगरानां पुष्पना हार धारण कर्या हता ॥ अने बे हाथने विषे पु-
ष्पना बाजुने गजरा धारण कर्या हता ॥ ने पागने विषे तोरा लटकता हता ॥ अने कर्ण उपर गुलाबना पुष्पना गुछ धारण कर्या हता ने ज
मणा हस्त कमळमां रुमाल धारण कर्यो हतो ॥ अने पोताना मुखारविंदनी आगल देशदेशना विद्वान हजारो ब्राह्मण तथा हरिभक्त साधुसं
न्यासि तेनी मोटी सभा भराई ने बेठि हति ॥ पछे श्री हरिकृष्ण महाराज कृपा द्रष्टि करिने सर्वे सभा प्रत्ये बोल्या जे सर्वे सांभळो एक वातो क
रिये छैये ॥ जे पुरुष प्रकृति थकी उतपन्न थयु एवुं जे पिंड ब्रह्मांडादिक तथा देव मनुष्यादिकनां जे सर्वे शरिर ॥ अने ते शरिरना धारणना-
करनारा देव मनुष्यादिकना आत्मा ते जे ते पोताने अज्ञाने करिने स्वस्वरुपनी विस्मृति थये छ ते प्रकृतिनुं कार्य जे त्रण गुणनो देह ते
ने विषे अहंबुद्धिने करे छे ॥ अने ते देहोहं बुद्धिये करिने महा दुःख रुप जे जन्ममृत्यु तेने पामे छे ॥ हवे ते जन्ममृत्यु थकी निवृति पामवा
ने अर्थे एने ज्ञान जोईये ते ज्ञान केवुंक जेणे करिने पोताने शांति थाय ॥ केमजे अशांतपणुं छे ॥ एज जन्म मृत्युनुं कारण छे ॥ ते एवुं ज्ञा-
न कियुं छे तेने कहिये छैये ॥ जे स्वस्वरुप जे पोताना जिवात्मानुं ज्ञान तथा परमात्मा पुरुषोतमना स्वरुपनुं ज्ञान ॥ हवे ज्ञाने करिने जि-
व जे ते जन्ममृत्युना दुःख थकि मुकाईने परमशांतिने पामे छे ॥ हवे प्रथम स्वस्वरुपनुं जे ज्ञान तेने कहे छे ॥ जे चोविस तत्वरुप मायाते थ-
कि थयुं जे आ स्थावर जंगम रुप विश्व तेमां सर्वे जे स्तंब थी ते ब्रह्मा पर्यंत ते जे ते पोते पोताने मोटा थवाने इछे छे ॥ ते सेणे करिने मोटा थ
वाने ईछे छे ॥ तो पंचविषयनां पदार्थे करिने मोटा थवाने इछे छे ॥ ते पदार्थ मले तोय पण सदाय अपूर्ण कामज रहे छे ॥ केमके पंचविष
य थकि कोईने यथार्थ शांति थति ज नथी ॥ केमके एकनि आशा होय ॥ अने ते वस्तु मळे तो वळि बिजा पाचनी इछा थाय ॥ पण एम ज्ञा-
न न रहे जे मारे एकनि इछा हति ते प्राप्त थतां हवे संतोष राखुं ते तो जेम पदार्थ मळतां जाय ॥ तेम तेम आगळ वधु वधु इछा थती जाय ॥
पण तेणे करिने शांति थाय नहि ॥ हवे ते शांति न थाय तेनुं कारण शुं छे तो ॥ बे विषयने विषे सुख जे ते लेषमात्र नथि केमजे पोते सा मा-

न्य गृहस्थनाजे शाविषयने भोगवतो होय ॥ तो तेने उत्तम गृहस्थनाविषयने विषे सारप्य लागे ॥ अने उत्तम विषयवाळा गृहस्थने राजादिक
नाविषय सारा लागे ॥ अने राजादिकने पण देवादिकनाविषय ते सारा लागे ॥ अने उपर कह्यो तेसर्वेने पोतपोताना विषय कर्तां आ-
गळ अधिक विषयने विषे इछित जणायछे ॥ अने मनुष्यादिक देवादिक ब्रह्मादिक पुरुषादिक सुधी सर्वेने पोतपोताना विषयनुं सुख
जेवें केवुं लागे छे ॥ केजेम प्रथम सामान्य कहेतां दुर्बळ गृहस्थ कह्यो तेनेजेवुं पोताना विषयनुं सुख जणायछे ॥ अने बीजा उत्तम गृ
हस्थना सुखने इछे छे ॥ तेमज पूर्वे कह्या जे मनुष्य तथा देव ब्रह्माने पुरुषादिक सुधी सर्वे पण तेजे ते पेला सामान्य गृहस्थ
नाविषयनो सामान्य गृहस्थने जेवो आनंद छे ॥ ते वोज ते सर्वेने पण पोतपोताना विषमां आनंद माने छे पण तेथी अधिक नहि ॥ के
मके ते सर्वे पण अपूर्णपणे रहिने बीजा विषयने भजे छे ॥ अने दुर्बळ गृहस्थपणे तेमज भजे छे ॥ माटे आवात तपासिजो तां एम मालुम प-
ड्युं जे उत्तरोत्तर सारा विषयनुं सुख मळे ॥ तथा ऐश्वर्य प्राप्त थाय ॥ तोय पण अशांति जर रहे छे ॥ हवे जे अशांति रहे छे तेनुं कारण ए-
छे के ए विषय जे छे ते सर्वेने विषे सुख जे ते लेषमात्र नथी ॥ अने ते विषयने विषे जे सुख जेवुं जणाय छे ॥ ते तो स्वस्वरुप जे आत्मस्व
रुप तेनुं सुख छे ॥ पण तेने अविद्याये करिने पोताना आत्माने विषे जे सुख रह्युं छे ॥ तेने जाणतो नथि ॥ अने विषयने विषे सुख माने छे ॥
ते केनी पेठे जेम कस्तुरीयो मृग छे ॥ तेने पोतानी नाभिने विषे कस्तुरि छे ॥ पण तेने न जाणतां ते कस्तुरिनी वास लेवा सारुं मृग जे ते त्रण ने सुं-
घे छे ॥ अने तेणे करिने सुख माने छे ॥ तेम पोताना आत्माने विषे कस्तुरिरुप सुख रह्युं छे पण तेने भूलीने त्रणरुप जे पंचविषय ते ने भोग-
विने मृगनि पेठे सुख माने छे ॥ पण जेम त्रणने विषे कस्तुरि जे ते लेषमात्र नथि ने कस्तुरि तो मृगनी नाभिमां छे ॥ तेम पंचविषयमां सुख
लेषमात्र नथि ॥ अने सर्वे सुख तो पोताना आत्माने विषे रह्युं छे ॥ केमके जिह्वा इंद्रि छे ते प्रथविनो भाग छे ॥ अने खटरसादिक जे सर्वे-
खाधानां पदार्थ छे ॥ ते पण पंचभूतनो भाग छे ने खाधाना पदार्थनो कोळियो करिने जिह्वा उपर मुक्यो ॥ तारे ते जिभने कोळियो ते बे-
य जड छे ॥ अने सुख तो चैतन्य जे आत्मा ॥ तेने आव्युं केमके सुख तो ज्ञानने विषे रह्युं छे ॥ ते ज्ञान चैतन्यमां छे ॥ माटे सुखमात्रनुं स्थान
कने महा शांति आपे एवुं ॥ अने जेने विषे प्रिति करिने फरिने विषयमां प्रिति थाय जनहि एवुं ॥ ने जन्ममृत्युने टाळे एवुं अने सत्यरुप एवुं ॥

नेप्रकाश रुप एवुं ॥ ने ज्ञान रुप एवुं ॥ अने अजर अमर एवुं ॥ जे अक्षरब्रह्म स्वरुप ते जे ते सर्व सुखनो सिंधु छे ॥ ने ते सुख अपरमित छे ॥
ने ते सुख मन वाणि थि पर छे ॥ एवुं जे ब्रह्म स्वरुप ते जे ते मारु स्वरुप छे ॥ अने हुं अक्षरब्रह्म छुं ॥ एवुं पोताना जिवात्मा ने जाणिने त्रण देहथ-
की प्रथक समजिने ॥ ब्रह्म ने विषे एकत्वपणुं करिने कहे तां हुं ब्रह्म छुं ॥ एवुं जे ज्ञान ते भास थये छते ॥ ए जिवात्मा जे ते ब्रह्म ना भाव ने पामे
छे कहेतां ब्रह्म रुप थाय छे ॥ जेम सत चिद ने आनंद एवुं जे जिवात्मानुं स्वरुप ॥ तेने भूलिने जड रुप ने मिथ्या रुप एवो जे देह ॥ तेने विषे अज्ञाने
करिने जोडाणो छे ॥ तो ते आत्मा देहना भावने पामि गयो छे ॥ कहेतां आत्मा कोइ काळे मरे एवो नथि तो पण कहे छे जे हुं मरि जाउ छुं ॥ अ-
ने मने कोइक मारि नाखशे ॥ इत्यादिक देहना भाव आत्मा ने विषे आवि गया छे ॥ ते भक्तो हवे जिव जे ते मन द्वारे ब्रह्म नो संग करे ॥ तो ते ब्रह्म
ना भावने पामे छे माटे एवुं ज्ञान जाणिने सदाय शांत रुप थइने ॥ भगवान पुरुषोतमनि उपासना करे तो ने सर्वोपरि सुखने पामे छे ॥ ह-
वे ते पुरुषोतम भगवान केवा छे तो अक्षरना आधार छे ते अक्षर केवुं छे ॥ तो जड प्रकृति जे स्थावर जंगम रुप सर्व विश्व एवा अनंत कोटि ब्र-
ह्मांड ने अक्षरना एक रोमने विषे अणुनि पेठे उडे छे ॥ एवुं अक्षर तो एक छे ते ॥ एवा एक अक्षर जे वा अनंत कोटि अक्षरना करतां प-
ण भगवान पुरुषोत्तमने विषे अधिक बळ गुण रुपने सामर्थि छे ॥ एवा जे पुरुषोतम भगवान ॥ अने पूर्वे कह्युं जे पोताना आत्मानुं मूळ अना-
दि ब्रह्म स्वरुप तेने ॥ पोतानुं स्वरुप मानीने पछे ॥ पुरुषोतम नारायण नो यथार्थ पूर्वे कह्यो ॥ एवो महिमा जाणिने परमात्माने भजे छे ते-
आत्मा परमात्माना सरखा सुखने पामे छे ॥ त्यां श्रुति ॥ निरंजनः परमं शांति मुपयाति ॥ अर्थ ॥ अंजन जे माया एटले अज्ञान तेणे रहित थ-
यो ते भगवानना तुल्यपणाने पामे छे ॥ वळि कह्युं छे ॥ मम साधर्म्य मागताः ॥ अर्थ ॥ परमात्माये पोते कह्युं छे ॥ जे मुने जाणनारो मारा
साधर्म्य पणाने पामे छे ॥ कहेतां परमात्मा जेम काळ कर्म मायाये रहित छे ॥ तेम ते परमात्मा ने जाणनारो ॥ परमात्मानो भक्त ते पण का-
ळ कर्म मायाये रहित थाय छे ॥ वळि कह्युं छे ॥ ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति ॥ अर्थ ॥ ब्रह्म जे परमात्मा तेने जाणनारो ब्रह्म रुप थाय छे ॥ एवि
रिते परमात्मा ने भजनारो जाणनारो ने पामनारो ते परमात्मा ना सरखा सुखने पामे छे ॥ हवे ते परमात्मा ने क्यारे पमाय छे ॥ तो ते
परमात्मा अनेक जिवोनो उधार करवा सारु पृथवी उपर रामकृष्णादिक रुपे प्रगट थाय छे ॥ ते प्रगट परमात्मा भगवान मनुष्य रुप ते

नो आश्रयजेजे करे छे।।ते परमात्माने साक्षातकार पामे छे।।ने तेनी आत्यंतिक मुक्ति थाय छे।। माटे ते अति शायदुर्लभ समय ते।।आज तमारे
सर्वेने आव्यो छे।।ते तमारा भाग्य नो पार नथि।।केमके प्रगट महात्मा पुरुषनो संग मळवो ते तोजेने अनेक जन्मना पुन्य होय तेने मळे छे।।
तेतमारे आज योग बन्यो छे।।माटे तमारां बहु मोटां भाग्य छे।।एम कहिने घोडिये असवार थईने गाममां पोताना उतारानी मेडिये पधार्या।। ।।
इतिश्री मुखसिधांत।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।।संवत १९ ओगणिसे चौदना महा शुदि २ नेदिवस सांजने समे महाराज श्री
हरिकृष्ण भगवान।।गामश्री चुडा मध्येथी।।घोडिये असवार थइने पोतानी यज्ञशाळाये पधार्या हता नेत्यां आवीने यज्ञशाळामां पाकना
करनाराने दरसन आपिने पछे चोकमां खुरसिउपर विराजमान थया।।नेसर्वे स्वेतवस्त्र धारण कर्यां हतां।।ने पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या
हता।।नेपुष्पना बाजु गजरा तोराने गुछ सोभिरह्यां हतां।।ने ललाटने विषे।।केसरनी अरचा अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो।।अने पोताना
मुखारविंदनि आगळ हजारो विद्वान ब्राह्मणोनि सभा।।तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा तथा साधु ब्रह्मचारि संन्यासि।।ते सर्वेनि मोटी स
भाभराइने बेठि हति।।पछे भारदना ब्राह्मणे जोशी पुरुषोतमनाथाए महाराजने प्रश्न पुछ्युं।।जे हे महाराज पुरुषोतम भगवानने सेउ
पायेकरिने पमाय छे।।अने सेसाधने करिने सर्वोपरि सुख प्राप्त थाय छे।।ते कृपा करिने कहो।।पछे श्री हरिकृष्ण भगवान बोल्या जे शुद्ध उ
पासना थकि पुरुषोतमने पमाय छे।।अने ज्यारे पुरुषोतमने पामे छे त्यारेज सर्वोपरि सुखने पाम्यो कहेवाय छे।।माटे शुध्ध उपासना रा-
खवी।।केमजे जिवनुं जे अपूर्णपणुं छे।।ते अनंत कोटि ब्रह्मांडना विषयना सुखने भोगवे।।तोयपण जिवनुं जे अपूर्णपणुं ते टळे नहि।।ए
वुं जे जिवनुं अपूर्णपणुं।।तेनुं कारण ए छे।।जे ए जिवे विषयवासनाए करिने भोगव्युं जे सुख।।ते थि लागु जे पाप ते पापे करिने जजिवने
अपूर्णपणुं छे।।अने सुजे एटला विषय मळे तो यपण जिवजे ते पोते त्रप्त थतो नथि।।हवे ते त्रप्त थता नुनथि तेनुं कारण एछे के सर्वे जे विषय
मळे छे ते सर्वे पुरुषप्रकृति थकि थयेला छे।।माटे ते सर्वे विषय नो जिवजे ते द्रष्टा छे।।एटले पोते पोताने जेजे विषय मल्या होय तेनुं परि-
माणकरे छे।।माटे ते सुखने भोगवतो थको बिजा सुखने इच्छे छे।।अने जे सुखने इच्छे छे।।ते सुख जो प्राप्त थाय तोय पण ते अपूर्णकाम
जरहे छे।।शा माटे जे तेनोपण पोते द्रष्टा छे।।वास्ते ते सुखनुं पण परिमाण करे छे।।जे आ ते आवुं जसुख छे।।एमजाणिने वळि तेथी बि

जाअधिकविषयसुखनेइछेछे।।पण सुजे एटला विषयने भोगवे।।तोयपण पोतानेइछारुपिजे,पापवलग्युं छे।।ते थकि निवृतिने नथिपमातु।।
त्यां द्रष्टांत छे।।केजेम कोई कहेकाणे अग्नि लागि होय।।अने ते थिछेटे पतंगिया होय।।ते पतंगिया ने अजवालु ने तापथोडो होय।।अने जे-
मजेम ते पतंगियो प्रकाशसुं सुखलेवा लाइ ठायनि समिपे आवतो जायछे।।अग्निनिकोरेइडोट करे छे।।तेमतेम पोताने तापवधतो लागतो
जायछे।।अने ते अजवालाने सुखरुप जाणिने।।आगमां पडिने पतंगियो बलिमरेछे।।तेएटलुंदुःखपडतांपण तेने आगथि छेटेरहेवुं नग
मतां पोताना प्राणनो घातकरेछे।।एतो द्रष्टांतने एनुं सिधांततो एछे।।केआगनेठेकाणे तो पुरुषप्रकृति थकि थयाजे पंचविषयते छे।।अने
पतंगियानेठेकाणे वासनिकजिवछे।।अने तेजेम पतंगियाने।।आगसामुचालतां विशेषताप लागेछे।।तेम वासनिकजिव छे।।तेने जे
मजेम मोटा मोटा विषय मलता जायछे।।तेमतेम विशेष तापने पामेछे।।कहेतां बहु दुखियो थायछे।।पण ज्ञानविना कोईने शांति
थतिज नथि।।अने वलिबिजुं द्रष्टांत छे।।जेजे मनिंद्रा नेविषे सुतो एवोजे पुरुष।।तेणे जाग्रत अवस्थाने विषे क्षुधा।।तथा त्रृषाये क
रिने कल्पा एवाजे।।पदार्थनासंकल्प।।ते संकल्पने लिधे पाणि तथा खाधाना पदार्थ ते स्वप्नामां देखवाइ आवे छे।।हवे ते पदार्थ देखाणा तेनुं का
रण सुं छे।।के कर्मफलप्रदाता एवाजे ईश्वर।।तेजे ते जिवने संकल्परुपि कर्मनुं फलआपेछे।।अने जे वस्तु स्वपनामां प्राप्त थाय।।तेने भो
गवतो सतो पण असंतुष्ट रहेछे।।त्यारे कोई एम कहेसे जे।।ईश्वरे कर्मफल आप्युं।।तेने भोगवते सते असंतुष्ट रह्यो।।तेनुं कारण सुं
हसे।।तोएनुं कारण एछे।।के भूख तरस तो स्थूलदेहमां लागि छे।।अने ईश्वर नुआपेलुं फल तो स्वप्नदेहे भोगव्युं।।माटे संतोषने
नथिपामतो।।अने ते संतोषने तो क्यारे पामे।।तो एणे जे स्वप्नमां भोग तथा भोगना स्थानक।।तथा स्वप्नमां दिठुं।।एवुं जे जगत्।।रा
जा रंक पर्यंत सर्वे ते स्वप्न वस्तु ते सत्यभासे छे।।अने तेना भोगपणते वखते सत्य मनाय छे।।पण ते मां लेशमात्र।।संशय रहेतो नथि।।अने सुजे
एघोरतो होय।।अने तेणे जाग्रत अवस्थामां स्वप्नना पदार्थ मिथ्या छे।।एवो निश्चय कर्यो होय।।तोयपण ते निद्रामां समृति-
रहेति नथि।।एवुं ईश्वरनी मायाये करिने।।विपरित ज्ञान थइ जाय छे।।तेविपरितज्ञानने लिधे खोटा विषय छे।।तेने अज्ञाने करिने सु
जे एटला भोगवे।।तोय पण स्थूलदेहनी भूख तरस मरे नहि।।अने शांतिपण थाय नहि।।पछे अशांतिने लिधे वलि वधु वधु विषयमां

तणातो जाय॥ अने तेणे करिने पधुपधुताप ने पामतो जाय छे॥ अने महा दुखियो थायछे॥ हवे ए दुख थकि निवर्तिने सुखनी प्राप्तिका-
रे थाय॥ के ज्यारे जाग्रत अवस्थाने पामीने॥ अन्नस्वाद॥ तथा जळ पिये त्यारे क्षुधा त्रशाना दुख थकि निवर्तिने पांमे॥ ने सुखियो
थाय॥ हवे एनुं कारण शुं छे॥ तो स्वप्नअवस्था नुं जे भ्रांतिमान स्वप्न स्वरूप॥ तेनुं अहं पणुं जड ने स्थूळ देह जे॥ जाग्रतअवस्थानुं जे पोता
नुं स्वरूप मान्युं छे॥ तेने विषे स्थिति थाय॥ अने स्थुळ देह संबंधी जे विषय तेना भोगने पामे॥ अने भूख तरसने निवारण करे॥ एवा जे जा-
ग्रतअवस्थाना विषय॥ तेने भोगवे त्यारे भूख तरस थकि निवर्तिने पामे छे॥ अने ज्यारे स्वप्नअवस्थाने पाम्यो हतो॥ त्यारे जाग्रतअवस्थानो
जे देह॥ अने जाग्रत अवस्थानुं मानेलुं जे जगत॥ एविजे स्मृती तेनो नाश थाय छे॥ अने स्वप्नअवस्थानुं जे सत्यभासे छे॥ अने ज्यारे जाग्र-
त अवस्थाने पामे छे॥ त्यारे ते स्वप्नअवस्थानुं जे जगत देखाणुं हतुं ते सर्वे मिथ्या थई जाय छे॥ तो यपण जेवुं स्वप्नमां जाग्रतना जगतनी वि-
स्मृति थाय छे॥ तेविविस्मृति स्वप्नअवस्थानि जाग्रतमा थतिनथि॥ केमके स्वप्नअवस्थामां तो जाग्रत लेषमात्र सांभरतुं नथि अने-
जाग्रतने पाम्या पछि॥ जे स्वप्नमां रहि होय तेवुं कांइ देखायतो नहि॥ पण रह्युं होय तेवुं कहे थाय खरुं॥ तेनुं कारण ए छे जे जाग्रतअव-
स्थाने विषे स्वप्नअवस्थाना करतां वधु ज्ञान होय छे॥ वास्ते करिने स्वप्ननी स्मृति जाग्रतमां रहे छे॥ एलो सर्वे द्रष्टांतने तेनु सिधांत ए छे॥
के जेम स्वप्नअवस्था छे ते तेठेकाणे तो आ जाग्रतअवस्थाने जाणवी॥ अने जेम जाग्रत अवस्था छे तेने ठेकाणे तुर्या अवस्था थि पर निर्गुण स्व-
रूप छे॥ अने जेम जाग्रतना विषय छे तेने ज्यारे भोगवे छे॥ त्यारे भूख तरस जाय छे॥ ने शांतिने पामे छे॥ अने ते विना स्वप्नना सुख जे एटला
भोग भोगवे॥ तो यपण पोताने शांति थती नथी॥ ते शा सारु के ते विषय खोटा छे॥ एटले स्थूळ शरिर जे पोतानुं जाग्रतअवस्थानुं शरिर ते
ना दुःखने नथि टाळता॥ जेम पाडानि पिडा पखाळ उं भेजाय नहि॥ तेम ज्यारे मोहरूपि निंद्राने विषे॥ आ जाग्रतअवस्थारूपि पोताने स्व-
प्न भास्युं छे॥ ते जेम स्वप्नने विषे जेजे सेहेर बजार माणस पशु पक्षि राजा देवता अने ते सर्वेना विषय अने तेमां जे सुखदुःख राजी पो कु
राजि पो हुं ने मारुं ए सर्वे जाग्रतने विषे लेष नथि रहेतुं॥ अने तेमां जे सुख ने दुःख ते सर्वे जाग्यो त्यारे जेम मिथ्या थइ जाय छे ते जाणि ये जे
मां इयजन थि॥ तेम गुणातितपणा रूप जे अवस्था तेना आगळ॥ आ जाग्रतअवस्था जे ते स्वप्न जेवी छे॥ कहेतां आ जाग्रतअवस्थाना जे म-

नुष्य तथा देवता वैराटादिक जे पुरुष ते सर्वे ॥ असत्य छे केहेतां जाग्रतनुं दुःख स्वप्नना विषय जेम नथि टालता ॥ तेम पूर्वे कह्या जे ॥ मनुष्य
नी आद्ये देईने इंद्र ॥ तथा ब्रह्मादिक देव ॥ तथा वैराटादिक ईश्वर ॥ ए सर्वेना विषय ते जे ते जाग्रत अवस्थाने विषे भासे छे ॥ पण ते गुणाति
त रुप जे पोतानुं आत्मस्वरुप ॥ ते निःशांतिने अर्थे ॥ एवा अनंत कोटि ब्रह्मांडना विषय सुख ॥ ते आत्माने शांति करवाना उपयोगमां न-
थि आवता ॥ अने सामा अशांति जे असंतोष ते रुपि महा दुःखने आपे छे ॥ अने ज्यारे स्व स्वरुप पोतानुं पोताने भासे छे ॥ त्यारे स्वप्नना सुख
नो ॥ जेम दुःख शोक रहेतो नथि तेम आत्मस्वरुपने पामे ॥ त्यारे पुरुष प्रकृति पर्यंत सर्वेना विषयनुं तुछपणुं थै जाय छे ॥ अने अपरिमित ए
वुं जे पोतानुं स्वरुप जे ब्रह्मस्वरुप ॥ तेने ज्यारे पोते पामे छे ॥ त्यारे ते थकि अन्य जे पुरुष प्रकृति आदिकना जे विषय ते सर्वेनो द्रष्टा पोते छे ॥
एटले ते सर्वेना विषयनुं प्रमाण करे छे ॥ अने विचारिने ते थकि पाछो वलिने ॥ सर्वोपरि सुख जे ब्रह्मानुभव सुख तेने पामे छे ॥ अने ज्यारे
ब्रह्मानुभव सुखने पामे छे ॥ त्यारे ते पोतानी व्रत्ति केवी राखे छे ॥ के जेम जाग्रत अवस्थाने पामिने स्वप्न अवस्थाना विषयनि मिथ्याभावना थै
जाय छे ॥ तेम मायिक विषयने स्वप्न तुल्य जाणिने त्याग करे छे ॥ अने एवुं जे ज्ञान रुप ब्रह्मस्वरुप ॥ तेने पोतानुं रुप मानतो थको भगवान
पुरुषोत्तम एवा जे ॥ प्रगट हरि परमात्मा तेने उपासे छे ॥ ते केम उपासे छे के जेम ॥ जाग्रत अवस्थामां ॥ जे वा विषय पामवानी इछा हति ॥
तेवा विषय प्राप्त थया ॥ अने ते विषय सुख छे तो प्राकृत ॥ पण तेनो अंत आवतो नथि ॥ केमके जुवो ने एवो कोई नथि ॥ जे आथी मोटो नहि होय ॥
एवुं ए सुखनुं बहुपणु लागे छे ॥ अने एवुं जे मायिक सुख ॥ ते जे ते जेने आत्मानो अनुभव थाय छे ॥ त्यारे तेने एम भासे छे ॥ के आत्माना सुख
आगल ए मायिक सुख केवुं छे ॥ के जेम दिवस आगल रात्रि ॥ एटले कांईये जनहि ॥ तेम ए ब्रह्मस्वरुपना सुखनो छांटो ॥ एटले लेषमात्र-
सुख पंचविषयमां नथि ॥ एवुं जे ब्रह्मस्वरुप ते ज सर्वे सुख थकि अधिक सुखरूप छे ॥ अने अपरिमित सुख छे जेने विषे ॥ एवुं जे ब्रह्म तेने
पोतानुं स्वरुप जाणिने ॥ तेनो विषय जे परब्रह्म स्वरुप ॥ तेने पोताना ब्रह्मस्वरुप करतां ॥ अति अधिक सुखरुप समजिने तेने भजे छे ॥ ते स-
र्वोपरि सुखने पामे छे ॥ जेम जाग्रत अवस्थावाला जे पुरुष ॥ ते जेम पंचविषयनुं बहुपणुं ॥ मानिने ते सुखनि उपासना करे छे ॥ तेम ते ज्ञा-
नि जे ब्रह्मस्वरुप ॥ ते जे ते पोताना ब्रह्मरुपनो महिमा ॥ अनंत अपार छे ॥ ने परिमाणमां नथि आवतो ॥ एवो जे पोताना ब्रह्मस्वरुपनो महिमा

तेने भोगवतो छतो ॥ एवु सुख नेनथि जाणि रह्यो ॥ जे मारे आटलुं सुख छे ॥ एम छे तोय पण एकांतिक संत थकि सांभल्यो जे ॥ भगवान प्रत्य-
क्ष पुरुषोत्तमनो अपरमित महिमा ॥ एवु जे सनातन अनादि परब्रह्म स्वरुप ॥ तेने विषे मननि स्थिति राखीने ब्रह्मरुप थयो थको ॥ ए परब्र-
ह्मने उपासे छे ॥ ते भक्त परब्रह्मना साधर्म्यपणाने पामे छे ॥ ते जेम कोईक पुरुष होय ॥ ते भक्ति करतो थको इंद्र जेवा जो भगवानने जाणे तो ते
इंद्र जेवो थाय छे ॥ अने ब्रह्मा जेवा भगवानने जाणे तो ते ब्रह्मा जेवो थाय छे ॥ तेमज जेमजेम देहरुपे भक्ति करतो जाय तो ते देह संबंधि पदा-
र्थे करिने मोटम्य पामे ॥ अने ते पदार्थने विषे थी ममत्व मटे नहि ॥ ए विरिते देहरुप वरतनारा पुरुषने प्रकृतिनुं कार्य जे जगत ॥ तेथी ब-
हार तेनी द्रष्टि पहोंचे नहि ॥ अने भगवाननो महिमा पण एथकि वधु ते देहरुपवाळा भक्तने स्फुरे नहि ॥ केमके तेने आघो अनुभव नथी ॥
माटे भगवानना भक्त होय ॥ पण जे देहरुपे वरतता होय ॥ ते पाणे करीने पोताने विषयमां थि वृत्ति उखडे नहि ॥ अने भगवान प्रगट पुरुषो-
त्तमनो महिमा ॥ पण तेने जाणवो घणो कठण छे ॥ एवु परमेश्वरनि मायाये करिने विपरित ज्ञान थै जाय छे ॥ अने वळि जेवो जे मनुष्य देव
ब्रह्माने पुरुषादिक ईश्वर ॥ ए जे सर्वे छे ते मां कोइ एक सरखो नथि ॥ एटले न्युनाधिकपणु घणुं छे तेनुं कारण ॥ ए छे के कोइ जिव ईश्व-
रनि एक सरखी रुचीनथि ॥ वास्ते एम थयुं ॥ माटे जेनी जेवी रुचि ने जेवी पयमां जेणे जेवो माल मान्यो ॥ ए ठेकाणे ते ते जोडाणा छे ॥ तेम हवे जो
पुरुष प्रकृतिथकि पर ॥ एवुं जे शुद्ध चैतन्य ब्रह्म स्वरुप ॥ ते विषे गण अनंत कोटि मुक्त जे ते अनंत प्रकारना छे ॥ केमके मुक्तिने तो एक
सरखि कहि छे ॥ ने मुक्तमां अनंतपणुं कहेवाणुं ॥ ए तो उपासनाने भेदे करिने छे ॥ जेम देहरुप थयो थको भगवानने भजतो हतो ने भ-
गवाननो जेवो महिमा जाणतो हतो ॥ तो ते वो ते थयो ॥ तेमां केटला एक तो भगवानने राजा जेवा जाण्या ॥ तथा केटला एक तो इंद्र
जेवा जाण्या ॥ तथा कोईके तो ब्रह्मादिक देव जेवा जाण्या ॥ तथा देहरुप वाळे भक्ते भगवानने अतिशे जाण्या होय तो पुरुष प्रकृति जे-
वा जाणे ॥ त्यारे ते जाणि रहीा कहेवाय ॥ केमके देहरुप भक्तनी शुद्ध उपासना ॥ पुरुष प्रकृतिना साधर्म्यपणाने पमाडे छे ॥ तेम अ-
नादी अविनाशी एवुं जे ब्रह्मरुप जे भगवत धाम ॥ तेने विषे ब्रह्म जे आत्मा ॥ ते रुप थये छते ॥ ब्रह्म जे अक्षर तेने विषे स्थिति पामीने
भगवान पुरुषोत्तमने जेवा जाणे छे ॥ तेवा साधर्म्यपणाने पामे छे ॥ अने देहरुप भक्तने जेम पुरुष स्कंधी प्राप्ति थाय ॥ त्यारे ते देहरुप

बालानि शुद्ध उपासना कहेवायछे ॥ अने मध्यम उपासना वैराग्यादिकनि प्राप्ति करावे छे ॥ अने कनिष्ट उपासना राजा तथा इंद्रादिकनी प्राप्ति ॥ करावे छे ॥ अने उत्तम मध्यम ने कनिष्ट जे उपासना कहि ॥ तेंतो देहरुपवाला ॥ भक्तनि छे ॥ अने ए त्रण्य प्रकारनो सविकल्प निश्चय छे ॥ ते- देहरुपवाला भक्तनो छे ॥ अने द्वे आत्मारुपपणे वरतिने जे उपासना करे छे ॥ तेने सर्वोपरि प्राप्ति एवि थाय छे ॥ के पोते पुरुषोत्तमने विषे ॥ अ- त्यंत विलक्षणपणे रहिने सर्वोपरि शुद्ध स्वरुप गुण ऐश्वर्य सामर्थि बल आदिक ॥ अनंत प्रकारना जे महागुण ॥ जेनी उपमा कसि नहि ॥ एवा- भगवान ॥ प्रतक्ष पुरुषोत्तमने जाणिने ॥ ते प्रगट पुरुषोत्तम थकि ज ॥ पोते पुरुषोत्तमना उपासक जे सर्वे अक्षरादिक मे कक ॥ ते मां अक्षर थ- कि बिजो कोइ पुरुषोत्तम भगवान विना समर्थ नथि ॥ एवा जे मुल अनादि अक्षर ॥ ते ज अक्षर हुं छुं ॥ एम समजिने ॥ हुं थकि एक पर तो प्रगट पुरुषोत्तम विना बिजो कोई मोटो नथि ॥ अने ए अक्षर थि कोई मोटो थावाने पण समर्थ नथि ॥ एवुं जे अक्षर स्वरुप तेने पोतानुं स्वरुप मानिने ॥ पोता थकि पर जे प्रगट पुरुषोत्तम तेने भजे छे ॥ त्यारे ते निरगुण एवि शुद्ध उपासनाने पामिने ॥ पुरुषोत्तमने विषे प्रवेश करे छे ॥ कहेतां पुरुषो- त्तमना धामने पामे छे ॥ अने पुरुषोत्तम जेवो स्वरुप थायो ॥ तथा स्वतंत्र थाय छे ॥ अने महा अद्भुत आनंदने पामे छे ॥ केमके सहज ए बो जिव होय ते पोताने सर्व कर्ता अधिक मोटुं थवुं ॥ अने सर्वना कर्ता अधिक स्वलेवुं ॥ एवो पोताने अनादि कालनो निश्चय सर्वे जिव प्राणिमात्रने छे ॥ ते- पोतानि इछा पुरि करवा सारु बहु जग ने अनंत काल थया ॥ अनंत फेर जन्म मृत्युने पाम्यो ॥ तो यपण पोतानि इछा जे धारणा ॥ तेने ज्यां स- [illegible] त्यां स धी ए जिव जे ते पोताना निश्चयने छोडतो नथि ॥ त्यारे ए वि प्राप्ति तो उपर कहुं जे सर्वोपरि [illegible] उपासना तथा [illegible] तेविना ए [illegible]- यनो निश्चय पुरो पडतो नथि ॥ ने ए ठेकाणे आवे छे त्यारे शांतिने पामे छे ॥ माटे ए उपर थि तपासि जोतां एम मालम पडे छे जे जाणिये जिव जे ते अनादिनो अक्षर होय नहि ॥ अने तेने अनादिनि पुरुषोत्तमनि उपासना पण होय नहि शुं ॥ एम भासे छे ॥ ते शाथि जे अक्षर ने अक्ष- रातित जे प्रगट पुरुषोत्तम तेनी प्राप्ति थई ॥ एटले सर्वे बिजा सत्य पामवाना उपाय तेने मेठीने ॥ केवल प्रतक्ष पुरुषोत्तमने भजे छे ॥ अने ए वि- प्राप्ति थया विना तो शांतिने नथि पामतो ॥ केमके एने शांति पामवानो उपाय तो एज छे जे ॥ आत्मा परमात्मानुं ज्ञान थावुं ॥ पण ते ज्ञान विना केवल अज्ञाने करिने ॥ अवलो मार्ग जे विषयाशक्तिपणुं ॥ तेथि कि पोताने पुरण काम थावाने इछे छे ॥ पण ते कोई काले करिने पुरण काम ॥

मायना॰ के भक्त पूर्ण काम थवानो तो पूर्वे कह्यो एवा आचार तारवी अने ते विचार सिद्ध कर्यानो अर्थ पाम्या प्रकार्य निरूढि करवि जोइये छे ॥ ते शुद्ध करिये ॥
॥ स॰ अक्षररूप उपदेष्टा ॥ तथा रूढ पुरुष प्रकृतिथि पर ॥ ने रूढ वैतन्य एवो शुद्ध उपासक थइने ॥ शुद्ध स्थानकनि रूढि जाणीने
अक्षरना उपदेशे करिने सिद्ध थयो एवो जे अक्षर मुक्त ॥ तेनी सोबत रूपि संगनि शुद्धि करिने ॥ अक्षरातित कहेतां ॥ गुण रूप ऐश्वर्यादिके करि
ने अधिक ॥ अने अपरमित छे महिमा ते जेनो ॥ ते महिमाने अक्षर ॥ तथा प्रगट पुरुषोत्तम ॥ पंडे पोते पोताना महिमाने केहवाने समर्थ नथि ॥ ए-
वुं ॥ महिमाये सहित परब्रह्म स्वरूप जाणिने ॥ ते प्रगट पुरुषोत्तम भगवाननि रूढ उपासना करवि ॥ अने एवा स्वरूपने जाणिने जे प्रग-
ट मूर्त्ति भगवान ॥ तेने भजे छे ॥ तेने कोई वातनि कसर रहेति नथि ॥ ॥ इति श्रीमुखसिद्धांत ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णाय-
नमो नमः ॥ ॥ संवत् १९ ओगणिशे १६ चौदना महा शुदि ६ छठने दिवस ॥ महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री चुडामधे सां-
जने समे ॥ रावल भा इजियराम कसलाने घेर ॥ उगमणे वास मेडिनी आगळ ॥ चोकवचे पाट उपर गादि तकिया बिछाविने ते उपर विराजमा-
न थया हता ॥ अने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ अने कंठने विषे पुष्पना हार धारण कर्या हता ॥ ने बे हाथने विषे फुलना गजराने बाजुबं-
ध धारण कर्या हता ॥ अने पागने विषे बे कोरे फुलना तोरा लटकता हता ॥ ने बे कान उपर गुलाबना पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता ॥ अने पोता-
ना मुखारविंदनी आगळ ॥ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनि सभा भराइने बेठी हति ॥ पछे महाराज कृपा करिने ज्ञान उपदेश देता थका
बोल्या ॥ जे मुळ पुरुष जे प्रकृति पुरुष ॥ तेने अनादिनो रागात्मक संकल्प छे ॥ मारे ते संकल्पे करिने बंधके वाय छे ॥ अने ते रागात्मक सं-
कल्प टळे त्यारे ते मुक्त थाय छे ॥ हवे ते रागात्मक संकल्पने कहिये छिये ॥ जे ते पुरुषने विषे रागात्मक संकल्प छे ॥ अने ते संकल्पने विषे पुरुष छे
एवि रिते अन्योअन्य भाव तेने शुद्ध विचारे करिने जाणवुं ॥ ते संकल्प टळवानु कारण छे ॥ हवे ते विचारने कहे छे ॥ के जेम कोई पुरुषने स्वप्न आवुं होय ॥
अने वळि ते स्वप्नमां बिजुं स्वप्न आवुं ॥ एवि रिते घणा कस्वप्नो परस्पर विचित्र भावे ॥ तारतम्यतापणे घणी तरेहथी ॥ अति घणि विचित्र श्रष्टि ने पो-
ते एककोरे रहे ॥ अने पोते कोण छे ॥ एनुं एने भान रहे नहि ॥ एवि अवस्था थई जाय छे ॥ तेम ए प्रकृति पुरुष छे ॥ ते थकि आ विचित्र श्रष्टि उत्तप-
न्न करनारो ॥ पुरुषनो रागात्मक संकल्प छे ॥ ते मां हरख ने शोक ॥ सुख ने दुःख ॥ मानने अपमान ॥ ए छ मोटी दुःखनी नदियो छे ॥ ते-

मां पुरुषना संकल्पे करिने श्रष्टि मां आव्या एवा जे अनंत कोटि जिव ।। तेनदियो मां तणाइ जाय छे ।। अने ते नदियो जे ते ।। अज्ञान मोहने दुःख
ते रुपजे सागर ।। तेने विषे मले छे ।। अने जेम समुद्रनुं जल ।। ने सूर्य ना किरण ।। एबे ना योग पडे करिने ।। वरसात थाय छे ।। अने पृथ्वी उपली
नदियो भराइ जाय छे ।। अने वरसात ना योग वडे करिने ।। अनंत उत्पत्ति थाय छे ।। तेम पुरुष प्रकृतिना योगे करिने ।। विषय भोग रुपि
वृष्टि थईने अनंत उत्पत्ति थाय छे ।। अने षड उर्मिरुपि छ नदियो भराई जाय छे ।। ए रिते अनंत जिव माया ने विषे रह्या थका अज्ञान श्रष्टि-
वडे करिने ।। अहंमम त्व थकि महा कष्ट ने पामे छे ।। अने ते दुःख थकि मुक्त थवा नो उपाय तो ए छे ।। जे शुद्ध ज्ञान रुपि जाग्रत अवस्था ने पामवुं ।।
जेम स्वप्नुं दुःख जागवा थि टले छे ।। ते म जिव जे ते ।। प्रकृति ने पुरुष ए बेयने विषे ।। प्रितिये करिने जोडाणो छे ।। ते रुपि जिव ने स्वप्न छे ।। ते स्व-
प्न थकि जागवुं ।। कहेतां प्रकृति ने पुरुष ।। ते नां जे सुख ।। तेनि वासना नो जे संकल्प तेनो त्याग करवो ।। अने ते संकल्प ने टालवा ने अर्थे ।।
आत्मा रुप पोताने मानि ने निष्काम कर्म जे फलनि ईछाये रहित कर्म करवुं ।। कहेतां फलना संग ने छोडिने परमात्मा नी नव धा भक्ति ।। अ-
ति श्रद्धाये करिने करवि ।। अने ते ज्ञान भक्ति ना विरोधि ।। एवा जे पंच महा दोष ।। जे काम लोभादिक ।। तेने पोते आत्मा अनात्मा नो विचार पा-
मीने जितवा ।। अने ते कामादिक ना संकल्प नो वेग तो रज तम ने सत्व एवा जे त्रण गुण तेने लिधे थाय छे ।। ते ए गुण मां जो जिव भलि जाय ।। तो जि-
वने पराणे क्रिया करावे छे ।। ने अपार दुःख ने पमाडे छे ।। अने जो ते गुण नो पोते द्रष्टा थाय ।। ने ते संकल्प थि पोते जुदो पडे ।। तो ते संकल्प नो वेग ।।
एनि मेले द थई जाय ।। ने जिवात्मा पोते निर्विघ्न पणे रहे ।। अने ते संकल्प ने थवा नुं कारण पण ।। मन ने पंच ज्ञान इंद्रियो ते ज छे ।। केम के जिव ने
विषे जो रजो गुण वरततो होय ।। ने ते समय मां जो इंद्रियो गोचर कोई सारा विषय प्राप्त थाय ।। तो ते विषय नो राग ।। जिव मां चोंटि जाय ।। अने ते
विषय तेने जिव मां थि काढवो पण घणो ज कठण पडे ।। अने ज्यारे जिव ने विषे ।। तमो गुण के सत्व गुण वरततो होय ।। ने ते समे कजे एवा सारा
विषय इंद्रियो गोचर थाय ।। तो य पण तेने विषे जिव नी वृत्ति घणि चोंटे नहिं ।। जेम तिख्खी अणि वालु बाण होय ने तेनो भिंत मां घा करे ।। तो ते-
मां चोंटी जाय ने पाछुं काढ्युं पण निकले नहिं ।। अने जो ते बाण ना फलने काढि लेइ ने थोथा नो घा कर्यो होय ।। तो उथडकि ने पाछुं पडे ।। तेम फले-
सहित बाण नी पेठे तो रजो गुण ना वेग नो संकल्प छे एम जाणवुं ।। अने तम ने सत्वनि वृत्ति तो थोथा नि पेठे पदार्थ मां घणि चोंटे नहिं ।। त्यारे एम जा-

पणुं ॥ जेसत्वगुण केतमोगुणनोवेग वरतेछे ॥ माटे संकल्प टालनारा पुरुषनेरज तमनेसत्व एवाजेत्रणगुण तेनेओ लखवा ॥ अनेतेनेओ-
लखिनेनेगुणनुंकारणजेअविद्यामाया ॥ तेनोभूक्ताजेपुरुष ॥ अनेएसर्वेथिपर एवुंजे अक्षर ब्रह्म ॥ तेनेपोतानुंस्वरुपमानिने ॥ गुण मा-
यानेपुरुष ॥ तेथकिथयोनेसंकल्प तेने द्रष्टापणाना ज्ञानेकरिनेटालवो ॥ अनेतेसंकल्पटळे एवो ॥ सद्विचार पोतानेकरवो ॥ अनेतेसंक-
ल्पनेटालिनेपछे तेविचारनेपोताना आत्मानेविषे लय करवो ॥ कहेतां ज्ञानरुप स्थितियेजुक्त थइनेआकाशनिपेठे निर्लेप ॥ निरावर्ण
एविस्थितियेजुक्त ॥ ज्ञानरसरुपेरहिने ॥ ते ज्ञानरुपरसने मध्ये ॥ अखंड पुरणने अद्वैत ॥ एवुंजेपरमात्मानुं स्वरुप ॥ तेने ज्ञान स्थितिमां
धारण करवुं एजपरममोक्षनोअचलसिद्धांत छे तेएवुंज्ञान क्यारे थायछे ॥ तोपरमात्मा पोते साक्षातकार जियनेमळे ॥ अनेकांतेना
एकांतिकनिरवासनिक संत ॥ ते जिवनेमळे ॥ त्यारे तेएवुं ज्ञानआपेछे ॥ त्यारे एवुंज्ञानथायछे ॥ पणतेविना एवुंज्ञान शास्त्रमांथि
सांभळीने थायनहि ॥ केमके एवुंज्ञानजेनीपासे होय ॥ तेथकिजएवुं ज्ञानथायछे ॥ माटेतेसमो ज्ञानपामवानोआजनमारोआव्योछे ॥
तेसारुसावधानथइने पंचविषयनां पदार्थने ज्ञास्वाकरुपजाणीने ॥ पोतानाआत्माने त्रणदेह ॥ जेस्थूळ सूक्षम ने कारण ॥ ने त्रणअवस्था
जेजाग्रत स्वप्नने सुशुप्ति ॥ तेथकि जुदां पोतानाआत्माने जाणिने ॥ ने आत्मानेविषे परमात्माजे पोताने प्रतक्षमळ्याछे ॥ तेनेधारवा
अनेतेनीअखंड भक्ति करवि ॥ ॥ इतिश्री मुखसिद्धांत ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ॥ ॥ ॥ ॥
संवत १९ ओगणिशे चौदना महा शुदि ७ सातमने दिवस महाराजा श्रीहरिकृष्णभगवान ॥ गामश्रीचुडामध्ये ॥ रायवळभाई जि-
वरामकसलाने घेर ॥ दुगमणे बारमेडिनीआगळ चोकवच्चे पाटउपर गादिनकिया बिछावीने तेउपर विराज मानथया हता ॥
ने सर्वेजरियानीवस्त्र धारण कर्या हतां ने कंठमां गुलाबनाने मोगरानापुष्पना हार पहेर्या हता ॥ अनेहाथनेविषे बाजुबंधनेगजरा
धारण कर्या हता ॥ ने पागमां फुलना तोरा लटकता हता ॥ ने बेकान उपर पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता ॥ अनेललाटने विषे कुंकु
नो चांदलो कर्यो हतो ॥ नेपोताना मुखारविंदनी आगळ ॥ साधुनथा घणा करहरिभक्तनिमोटि सभाभराइनेबेठिहति ॥ अनेसंत किरत-
न गाता हता ॥ पछेमहाराज बोल्याजे ॥ किरतन वारवोनेएकवातोंकरवि छे ॥ एमकहिने किरतनरखावीने बोल्याजे ॥ मरणियामति-

सा गतिर्भवेत ॥ ए श्रुतिमां एम कह्युं छे ॥ जे मरण वखते जेवी जिवनी गति होय तेवी गति थाय छे ॥ मारे ज्यां सुधि जिवने पंचविषयनि वासना
छे ॥ त्यां सुधि जिवने जन्म मृत्यु टले नहि ॥ केमके वासना होय त्यां सुधि जरुर विषयमां तिरह्या विना रहेज नहिं ॥ ते सारु विषयनि वासनारुप जे
महामाया ॥ तेने टालवा वडे करिने मृत्यु तराय छे ॥ हवे ते मृत्यु तरवानुं कारण ए छे ॥ के पंचविषयनि वासना छे ते जिवनुं कारण शरिर छे ॥ अ-
ने बिजुं जिवने नवतत्वनुं सूक्षम शरिर छे ॥ अने त्रिजुं पंदर तत्वनुं स्थुल शरिर छे ॥ तेमां स्थुलने सूक्षमा ते कारणने आशरे रह्यां छे ॥ अने कारण जे
छे ॥ ते रागात्मकरुप छे ॥ ते जिवनी मांहि रहेल छे ॥ जेम तलमां तेल ॥ फुलमां वास ॥ तेम जिवमां वासना रहि छे ॥ अने जिवात्मा जे ते कारणश-
रिरे युक्त स्थुलसूक्षम मां रह्यो छे ॥ ए विरिते जिवनि माया ये जिवने आवरि लिधो छे ॥ जेम करोलियो जे ते पोतानि लालमां अवराय छे ॥ तेम
जिव जे ते मायाने विषे अवरायो छे ॥ माटे ते माया जिवने विषे थि दुर करवाना त्रण उपाय छे ॥ केमके माया पण स्थुल सूक्षम ने कारण त्रण्य रुपे
थई छे ॥ माटे त्रण उपाये माया टले छे ॥ तेमां प्रथम स्थूल देहरुप मायाने जीतवानो उपाय कहियेछियें ॥ जे स्थुल देह जे ते पांच भूत ने दश
इंद्रियो ॥ ए पंदर तत्वरुपे छे ॥ तेने तपनियमने त्यागे करीने जिताय छे ॥ अने ते पछि सूक्षम देह जे ॥ पाच विषयने चार अंतःकरण ॥ एन
व तत्वनुं सूक्षम देह छे ॥ तेने आत्मविचारे करिने जितवुं ॥ अने त्रिजुं जे कारण शरिर छे ॥ तेने आत्माने विषे ॥ परमात्माने देखवा वडे जिता-
य छे ॥ हवे ते आत्माने विषे परमात्माने देखवानो विचार कहियेछियें ॥ के पोताना कल्याणने इछतो एवो जे ॥ मुमुक्षु तेने आत्मविचारे करि-
ने प्रथम चितने स्थिर करवुं ॥ अने दृढ आसन थि निवृत्तिपर जग्यामां बेसवुं ॥ अने पछी आकाशनि पेठे ॥ पोताना आत्माने ज्ञानप्रका-
शरुप स्थिर जोवो ॥ ने ते आत्माने मध्ये ॥ अनादि चैतन्यमुर्ति भगवान रह्या छे ॥ एम धारवुं ॥ अने ते परमात्मानुं ध्यान करतां करतां
मुर्ति न देखाय तोपण ध्यान कर्यां करवुं ॥ अने तेमां एक ज्ञानरुपि विचार राखवो ॥ ते श्या सारु विचार राखवो ॥ तो कोइक माइक
पदार्थनो संकल्प थाय ॥ तेने दुर करवा रुपि विचार राखवो ॥ त्यां द्रष्टांत छे ॥ के जेम दिवाने ओलववा एवा जे झिणा पांखोवाला जंतु ॥
तेने जेम दिपक वा प्रकाशथि ॥ गरोलि जे ते ते जंतुनो नाश करे छे ॥ तेम शुद्ध विचारे करिने सूक्षम संकल्पने टालवा ॥ अने ते विचा-
रे करि ते टाल्या न टले ॥ ने घणांक संकल्पनो वेग वधवा लागे ॥ तो ध्यानने पडतुं मुकीने ॥ ए विचारने बे प्रकारे करवो ॥ तेमां एक तो आ-

त्मानोविचारकरवो॥ जे हुं आत्माने अविनासि छुं॥ सुखरुपछुं सत्तारुपछुं चैतन्यछुं संकल्पेरहितआकाशनीपेठेस्थिरायमानछुं अने तेजे स्त्रि या-
दिकनो संकल्पथायछे॥ तेस्त्रिनो देह तो मळमुत्रना कोथळारुपछे॥ अने हाड मांस नाडियो त्वचा विर्य रोमादिक माहाअपवित्रवस्त-
रुपछे॥ माटे आत्माने नेमाईकपदार्थने घणोजविरुद्धभावछे॥ माटे हे आत्मा एनने घटेछे॥ के तुं सिंह सरखो थईने खड खाईश॥ एम बे-
एम बे प्रकारनो विचार करिने पोताना आत्माने भोगोपाडवो॥ अने लज्याएयुक्त करवो॥ तोतेणे करिने ते विरोधिसंकल्पजे ते॥ तत्का-
ळनाश थई जायछे॥ अने आत्माने शांतिथायछे॥ अने एवो विवेकजो नआवडे तो॥ ध्यानना करनाराने॥ मोटि खोड पेदाथायछे
जेम कोई पुरुष बळे रहित होय॥ ने ते घणुंक द्रव्य लेइने॥ रणवगडामां जाय॥ तोतेद्रव्यने सहेजे जचोरलुंटिजाय॥ अने जो बल-
वान वळावोभेगो होय॥ तो तेनि रक्षा करेछे॥ तेम पूर्वे कह्यो जे विचार॥ ते सांख्यरुपवळावो छे॥ अने असक्त कहेतां संकल्पे युक्त
थइने जो ध्यान करे॥ तो तेने शुं विघ्न आवे॥ तो जाग्रत अवस्थामां यथार्थ ज्ञान छे॥ अने स्वप्न अवस्थामां अयथार्थज्ञान रह्युं छे॥ तो पण
यथार्थज्ञानने विषे श्रवण करे॥ अने अयथार्थज्ञान रुपजे सुक्ष्म देहातिमां मनन न करे॥ तो यथार्थज्ञान थाय नहि॥ तेनुं कारण एछे जे
सुक्ष्मदेहनासमिपे यास्तनुं प्रमाण नोकरनारो द्रष्टाजे आत्मा ते रह्यो छे॥ मारे जिवमां जे वात द्रढथायछे॥ ते वात काढवी घणी
कठण छे॥ तेम ध्याननो करनारो एकाग्रवृत्ति करिने परमात्माने सुक्ष्मदेहजे॥ अंतःकर्ण तेमां धारयाते ध्यानने भूलिने॥ ते एकाग्रवृ-
त्तिये करिने॥ माईक विषयना पदार्थना संकल्प करे॥ तो तेणे करिने विषयना पदार्थ जिवमां अति द्रढ चोंटिजायछे॥ मारे ते तो उल-
टुं थयुं केम के विषयवासना टाळवासारु आत्माने विषे परमात्माने देखवा हता॥ ते वात न बनतां॥ ध्यानयोगने विषे मोटुं विघ्न थयुं॥
माटे ध्यानना करनाराने पूर्वे कह्यो जे विचार तेराखवो॥ ते विचारे करिने संकल्पने स्थिर करिने॥ एकाग्रवृत्तिवडे आत्माने विषे परमा-
त्मा प्रत्यक्ष मूर्तिनुं ध्यान करवुं॥ अने एविरिते ध्यान करे त्यारे ज तेने परमात्माना ध्याननुं सुख आवे॥ जेम राजा राजगादिये बेठो हो-
य ने तेने शत्रु नडता होय तो तेने राज्यनुं सुख यथार्थ भोगवाय नहि॥ अने शत्रुनो नाश कह्या पछि सुखेथी राज्यना वैभवने भोगवेछे॥
तेम मुमुक्षुनेपण॥ राजसुखने ठेकाणे मुक्त स्थिति छे॥ तेने अखंड सुख लेवासारु॥ परमात्माना ध्यानमां विरोधि॥ एवा जे विषयना संक

त्यरूपिशत्रु तेनेटाळीने अखंड परमात्माने जोवा तो तेने पछी सेहेजानंदरूप एवुं जे पोतानुं स्वरूप अक्षरब्रह्म तेने विषे परमात्मा प्रगट भगवान तेनुं स्व
रूप ते नाम हिमाये सहित यथार्थ जणाय छे अने ते परमात्माना दरसन यडे करिने कारण देह जे विषय वासना ते समुळी उखडी जाय छे त्यां भगवद्गीतानो श्लो
क छे ॥ जे विषया विनिवर्तंते ॥ निराहारस्य देहिनः ॥ रसवर्जं रसो प्यस्य परं द्रष्ट्वा निवर्तते ॥ एनो पूर्वे कह्यो एज अर्थ छे ते एवो अर्थ के एनाथ कि सिद्ध थाय
छे ॥ ने ते माया के नाथ कि तराय छे तो क्षर अक्षर ने पार स्वरूप एवा जे प्रत्यक्ष परमात्मा ते ज अर्थने सिद्ध करावे छे अने मायाने पण तेज दूर करावे छे त्यां
भगवद्गीतानो श्लोक छे जे दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ॥ मामेव ये प्रपद्यंते ॥ मायामेतां तरंति ते ॥ एमां पण भगवाने एमज कह्युं छे
जे त्रिगुणात्मक एवि जे मारि माया ते जिवने दुःख करि ने ॥ तरवि घणि कठण छे ॥ पण जो हुं मनुष्य देहनुं धारण करु छुं ॥ त्यारे जे मारा च
रण ने पामे ॥ कहे तां मुने माया पर जाणिने ॥ मारो द्रढ आश्रय करे ॥ तो ते माया ने तरि ने परम मोक्षने पामे छे ॥ माटे माया तरवानो एज उ
पाय छे ॥ जे प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना निरवासनिक संतनो द्रढ आश्रय करवो ॥ ने ते नाथ कि ज्ञान पामवुं ॥ एज माया ने तरिने मुक्त
थवानो उपाय छे ॥ पण ते विना बिजो माया ने तरवानो कोई उपाय नथि ॥ माटे ते माया ने तरवानो समो आज तमारे आव्यो छे ॥ ते त-
मारुं मोटुं भाग्य छे ॥ ॥ इति श्री मुखसिद्धांत ॥ ॥ श्री हरिकृष्णाय नमो नमः ॥ ॥ संवत् १९ ओगणिसें १४ चौदना
महा शुदि ७ सातमने दिवस ॥ महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान ॥ गाम श्री गुडा मध्ये भटनाणजि भगवानजिने घेर उगमणे बार ओरडानि
ओसरिमां ढोलियानी उपर ॥ गादि तकिया नखाविने ॥ रात्रिने समे विराजमान थया हता ने हिर कोरि स्वेत धोतियुं पहेर्युं हतुं ॥ अने गुळा
बि छींटनुं अंगरखुं धारण कर्युं हतुं ॥ अने कसुंबल ताराळो फेंटो मस्तके बांध्यो हतो ॥ ने गुलाबि केर नो खेस खभे धारण कर्यो हतो ॥ अने पो-
ताना मुखारविंदनि आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनि सभा भराई ने बेठि हति ॥ पछि महाराजा श्री हरिकृष्ण भगवान बोल्या ॥ जे जिवने जे वा
त अजाणि छे ते वात तेने बहु मोटी जणाय छे ॥ अने ते वात करवि पण तेने घणि मुशकल पडे छे ॥ अने जे वात जाणिति छे ते वात तेने सुग-
म लागे छे ॥ ने ते करवाने चाय छे ॥ अने ते काम करवामां घणुं कष्ट पडे ॥ तो पण ते काम करवाने इच्छे छे ॥ ते मज जिव प्राणिमात्रने विषे
देह ने आत्मा बे वस्तु छे ॥ ते मां जे देहसंबंधि पंचविषय छे ॥ ते ने अनादिकाळनो जिव भोगवतो आवे छे ॥ ने ते वात पोतानि जाणिति छे मा-

टे ते पंचविषय ने पामवा सारु ॥ जिव जे ते अनादि नो क्रिया करे छे ॥ अने तेमां घणु कष्ट पडे छे ॥ तो पण ते काम कर्या करे छे ॥ ते पोताने सुखि
यो थवा करे छे ॥ पण तेमांथि कोईने त्रप्ति थति नथि ॥ जेम फुटेलो कुलडो होय ते मां सुजे एटलुं पाणि रेडिये ॥ तो पण ते कुलडो भरायनहि ॥ तेम
देह जे ते ॥ फुटेला कुलडा रुप छे ॥ ते देह करिने सु जे एटला पंचविषयने भोगवे तो य पण शांति थाय नहि ॥ अने सामु वधु वधु वधु दुःखने पा-
मे छे ॥ जेम पतंगियो तापने सुख रुप जाणिने ताप सामो जाय छे ॥ तो ते पतंगियो ताप मां पडिने बलि मरे छे ॥ नेम हा कष्टने पामे छे ॥ तेम
जिव जे ते पंचविषय पामवा सारु ॥ जे जे क्रिया करे छे ते मांथि महा दुःखज थाय छे पण सुख जे ते लेष मात्र थतु नथि ॥ वलि जेम कोई पुरुषने ॥
स्वप्न आव्युं होय ॥ ने ते स्वप्नमां राज मल्युं ॥ पण जाग्य पछि मिथ्या छे ॥ ने लेष मात्र ते राज्यनुं सुख रहेतुं नथि ॥ तेम पंचविषयना सुख जी-
व सु जे नेटला भोगवे ॥ पण खालि नो खालि ज रहे छे केम के जिभे करिने घणांक घी गोल खांड साकर आदिक अनंत रस खाधा हसे ॥
तो य पण जिभ हजि कोरि ने कोरि ॥ पण लेष मात्र त्रप्त थई नथि ॥ अने जो एक दिवस उपवास करे ॥ तो जाणे जे कोई दिवस खाधु नथि ॥ अने
मोरे खाधु होय तेनु सुख पण जणाये रहे नहि ॥ अने तेमज नेत्रे करिने घणांक रुप जोयां पण आंख त्रप्त थई नथि ॥ अने काने करिने घणाक
शब्द सांभल्या छे पण कानने त्रप्ति थई नथि ॥ अने त्वचाये करिने सारां सारां वस्त्रादिक घणा क स्पर्श कर्या पण त्वचा त्रप्त थई नथि ॥ अने ना-
सिकाये करिने घणा क गंध सुंघ्या ॥ पण नाक त्रप्त थयुं नथि ॥ एवि रिते जिवे अनंत राजाना ॥ तथा देवताना देह धरिने अनंत फेरा पंचविष
य भोगव्या छे ॥ पण जिवने हजि लेष मात्र त्रप्ति थइ नथि ॥ अने हजि अनंत युग सुधि विषय भोगवि ने त्रप्ति थशे पण नहि ॥ माटे विषयनां
सुख पामवानी आशा नो त्याग करिने ॥ पोते आत्मा शुद्ध रुप थइने परमात्मा ने भजे ॥ त्यारे सुख शांति ने पामे ॥ अने जे देह निर्वाहने अ
र्थे अन्न वस्त्र ॥ अवस्य जोइये ॥ ते तो भगवान सौने आपे छे ॥ एम जाणिने भगवाननुं अखंड भजन करवुं ॥ अने जे भगवान छे ॥ ते महा
चतुर छे ॥ माटे ते सर्वे जिवने सरखुं ज सुख आपे छे ॥ पण कोईने अधिक न्युन्य थावा देता नथि ॥ केमके जेवुं कुतराने कुतरि मां सुख छे ॥
तेवुं ज राजाने राणि मां सुख छे ॥ अने तेवुं ज इंद्रने इंद्राणि मां सुख छे ॥ पण कोइने लेष मात्र ओछुं वधतुं नथि ॥ केमके किट थि ते देव ब्रह्मा
पर्यंत स्त्रि पुरुष सर्वना देह जे ते ॥ पंचभूत नो विकार छे ॥ ने विर्य रुधिर मांथि बने ल छे ॥ अने हाड मांस नाडियो त्वचा रोम ॥ मल मुत्र

दिकनकांई वस्तुनाभरेलास्त्रीपुरुषनादेहसर्वेनासर्वाछेमाटेसर्वेस्त्रिपुरुषराजारंक॥देवताब्रह्मादिकईश्वर॥तथापशुपक्षादिकसर्वे-
नेजसरखुंजसुखछे॥अनेखाधानापदार्थपणसर्वेनेसरखांजछे॥केमकेरांकहोयतेने सेरअन्नखावाजोईये॥नेराजानेपणसेरअ-
न्नजोइये॥माटेसौनेईश्वरआपेछे॥नेरांकहोयतेनेदिवसमांबेवखतभूखलागेछे॥नेराजानेपणबेवखतभूखलागेछे॥पणभूखए-
मनथिजाणतिजेआपजाछे॥तेनेथोडिभूखलागु॥नेरांकनेवधुलागु॥माटेराजारंकबेयनेसरखिभूखलागेछे॥पणतेमांकांइलेषमा-
त्रन्युनाधिकनथि॥अनेवलिसुखजेएवुंसारुखावानुंहोयतोपण॥जेनेएकसेरनोआहारहोयनेतेपांचशेरखायतो॥तेमहादुःखने
पामे॥नेवधुखायतोमरिपणजाय॥अनेसुखजोएवुंसारुहोय॥पणगलेथिहेठुंउतरतावेंतनरकथइजायछे॥अनेजिभनेसारुनरसुंला-
गेछे॥तेतोरसनाइंद्रिनेनेमननेलागेछे॥पणआत्मानेलेषमात्रतेनुसुखदुःखनथि॥माटेभगवानेसर्वेनेसरखुंजसुखआप्युंछे॥अ-
नेजेअधिकन्युनजणायछे॥नेतोमिथ्याभ्रांतिस्वप्नवतजणायछे॥अनेवलिदेहदुर्बलथाय॥तेणेकरिनेआत्मादुबलोथतोनथि॥नेदे-
हजाडोथायतेणेकरिनेआत्माजाडोथतोनथि॥अनेदेहनेमरवेकरिनेआत्मामरतोनथि॥नेदेहनेजनमेकरिनेआत्माजन्मतोनथि॥अने
अग्नीयेकरिनेआत्माबलतोनथि॥अनेजलेकरिनेआत्माकोवरातोनथि॥अनेवायुएकरिनेआत्मासुकातोनथि॥नेशस्त्रेकरिनेआत्मा
कपातोनथि॥नेकालनोनाशकर्योआत्मानाशथतोनथि॥अनेमायापणआत्मानेपोतानेविषेलिनकरिशक्तिनथि॥अनेकर्मपणआ-
त्मानेनाशकरिशकतांनथि॥एवोमहाचमत्कारिजेआत्मातेपोतानुंस्वरूपछे॥अनेएवोचमत्कारिआत्मातेनेविषेपरमात्माभगवानतेअखं-
डरह्याछे॥तेपरमात्माकेवाछे॥तोआपंचासक्रोडपृथ्वीतेएकलोककहेवाय॥अनेएवाचौदलोकनुएकब्रह्मांडकहेवायछे॥अनेएवांए-
वांअनंतकोटिब्रह्मांडछे॥तेनोकरतायेकमूलपुरुषछे॥नेएवाएवाअनंतकोटिमूलपुरुषछेतेपरमात्मापुरुषोत्तमनुं॥धामजेअक्षरब्र-
ह्म॥तेनाकोकएकदेषनेविषेलिनथईजायछे॥अनेएवुंजेअक्षरब्रह्मतेनाकारणनेआधारपरमात्माछे॥अनेपरमात्माएवाजेभगवानते
अनंतजिवनोमोक्षकरवासारु॥प्रथ्वीउपरमनुष्यदेहनुधारणकरेछे॥तेभगवानआजमनेप्रत्यक्षमल्याछे॥अनेतेजभगवानमारा
आत्मानेविषेरह्याछे॥एमसमजिनेपंचविषयनेमहापापरूपने॥दुःखरूपजाणिने॥तेनोत्यागकरिनेभगवाननोदृढआश्रयकर

वो अने इंद्रियो अंतःकर्णना सुखने अर्थे विषय पामवा सारु अनंत जन्म धरिने अनंत पाप कर्यां छे॥ मारे हवे ते पाप थकि मुक्त थवाने अर्थे॥ पोतानी इंद्रियो अंतःकर्णने॥ भगवान निसेवामां जोडि देवी॥ तेने नेत्रे करिने भगवानना दरसन करवां॥ अने ते प्रगट भगवानने संतना दरसने करिने॥ नेत्रनां पाप सर्वे बळिने भस्म थइ जायछे॥ अने काने करिने भगवानने संतना शब्द हे ते करिने सांभळवा॥ तेने करिने काननां पाप नाश थइ जायछे॥ अने त्वचाये करिने भगवानना चर्णनो स्पर्श करवो॥ अने मुखे करिने भगवानना गुण गावा॥ तेणे करिने वाणिनां पाप बळि जायछे॥ अने पगे करिने चालिने भगवानने भगवानना संतने दर्शने जावुं॥ ने हाथे करिने भगवानने भगवानना संतनि सेवा करवी॥ अने बुद्धिये करिने भगवान प्रत्यक्षना स्वरुपनो निश्चय करवो॥ ने चित्ते करिने भगवाननी मुर्तिनुं चिंतवन करवुं॥ ने मने करिने भगवानना संकल्प करवा॥ अने अहंकारे करिने भगवानना दासत्वपणानुं अभिमान धरवुं॥ जे हुं भगवाननो दास छुं॥ एवि रिते इंद्रियो अंतःकर्णने भगवानने भगवानना संतनी सेवामां जोडि देवा॥ अने ते भगवानने संतनी सेवाये करिने सर्वे पाप जे ते नाश थइ जायछे॥ ने जिवात्मा जे ते ब्रह्मरुप थायछे॥ ने भगवानना अक्षरधामने पामे छे॥ ने अखंड भगवान निसेवामां रहे छे॥ मारे जे प्रत्यक्ष भगवानना भक्त होय तेने तो संसारनी जे दुःखरुप क्रिया तेनो त्याग करिने॥ भगवाननुं अखंड भजन करवुं॥ अने पोताने मल्या जे प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना निरपसनिक संत॥ तेनि आज्ञामां द्रढ वर्तवुं॥ पण ते मां फेर पाडवो नहि॥ केमके मोटा ब्रह्मादिक जेनि आज्ञामां तत्पर वर्ते छे॥ एम जाणिने पोतना कल्याणने अर्थे ते भगवानने संतनी आज्ञामां वर्तवुं॥ अने देह तथा देहसंबंधि पदार्थ तेनुं प्रमाण करवुं॥ जे सो वर्ष उपरना मनुष्य पशु कोई नथि॥ केमके सर्वेने काळ भक्षण करि गयो॥ अने आजना पण जे जे मनुष्य॥ पशु घणाक जणाय छे॥ ते पण सो वर्ष केडे एके नहि रहे॥ अने जिवे अनंत देह धारण करिने घणाक संबंधि कर्यां छे॥ अने आ जगतमां जेटलि जातनी स्त्रीयो छे॥ ते सर्वेने पेट जन्म धर्यां छे॥ अने जिवे स्त्रिनो देह धरिने जेटलि जातना पुरुष छे ते सर्वेने पोताना धणि कर्या छे॥ मारे ते सर्वे संबंधी नाश थई गयां छे॥ तेम आजनां सगां संबंधि धन्य माल ते पण जरुर नहि जरहे॥ मारे सर्वे पदानि वासनानो त्याग्य करिने पोताना आत्माने ब्रह्म रुप मानिने भगवाननुं भजन करवुं॥ अने जेम पूर्वना संबंधि अज्ञाने करिने सांभरतां नथि। तेम आजना संबंधिने ज्ञाने करिने विसारि देवां॥ अने जे एम नथि समजतो ते केवळ देहने

देहनासंबंधिने अर्थे तत्पर थईनेमंड्यो छे॥ नेआत्मानासुखनेअर्थे भगवाननेनथिभजतो तेने तो महामूर्खजाणवो॥ नेतेने कृतघ्नी जाणवो॥ अने तेने अतिशे बुद्धिहिण जाणवो॥ अने ते मरजगतमां राजा केहेया तो होय॥ कामदार कहेवातो होय॥ मोटो शेठशाहुकार-होय॥ पंडितपुराणि होय॥ पण ते जो पंचविषयनीवासना टालिने भगवानने नथि भजतो तो तेने धिक्कार छे॥ अने तेनि मोटम्य तो एक क्षणमात्रमां नास पामिजाशे॥ नेतेने पछे यमपुरी चोरासि गर्भवासनादिक नामहादुःखभोगववा पडशे॥ अने त्यां कोई राजधन्यमाल कुटुंबपरिवार सहायकरतां नथि॥ माटे मनुष्यदेह पामिने॥ विषयवासनानो त्याग करिने भगवाननुं भजन करवुं॥ एज पोताना आत्मानो महालाभ छे॥ अने एलाभ लेछे तेज बुद्धिवाला छे॥ केम के मनुष्यदेह धरिने जेने॥ प्रत्यक्षभगवानने भगवानना निर्वासनिक संत मल्ये छे॥ तेनो जमोक्ष थाय छे॥ माटे ने समो तमारे आज आव्यो छे॥ ते तमारां बहु मोटां भाग्य छे॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांत॥ ॥

॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ संवत् १९ ओगणिसें चौदना महाशुदि॥११॥ एकादशिने दिवसे॥ महाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीजुडा-मध्ये॥ भटनारणजिभगवानजिने घेरडगमणे बारना ओरडानि ओसरीमां पाटउपर गादिनखियाविछावि नेविराजमान थया हता॥ नेसर्वे कसुंबलवस्त्र धारण कर्यां हतां॥ ने कंठने विषे मोगराना पुष्पना तथा गुलाबना पुष्पना हार धारण कर्या हता॥ अने हाथने विषे पुष्पना बाजुगजराने पोंचीयो धारण कर्यां हतां॥ अने हाथनि आंगलियोमां फूलनि वींटियो पेहेरि हति॥ अने कानउपर पुष्पना गुछ धारण कर्या हता॥ ने पाघमां बेकोरे पुष्पना तोरा लटकता हता॥ ने ललाटने विषे केसरनी आडयने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो॥ ने पोताना मूखारविंदनी आगल॥ साधुतथा देशदेशना हरिभक्तनि मोटी सभा भराईने बेठि हति॥ पछे महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान कृपादृष्टीकरिने बोल्या जे जियना कल्याणने अर्थे जे सिद्धांत छे ते कहिये छैये॥ जे अनंतकोटिब्रह्मांडनि उत्पत्तिस्थितिने प्रलय॥ तेना कर्ता एक भगवान छे ने सर्वना स्वामि छे॥ ने सर्वना आधार छे॥ एम जे जिय जाणतो होय॥ पण ते भगवान विना बिजा कोई काल कर्म मायादिक॥ तेने कर्ता जाणे नहिं॥ अने एवा जे भगवान ते जआ प्रत्यक्ष छे॥ एम जे समजो होय॥ अने जेवुं पूर्वे भगवानना अवतार थई गया तेनुं महात्म समजाय छे॥ ने पूर्वे थया जे भगवानना साधु तेनुं जेवुं महात्म समजाय छे तेवुंज जे प्रगट भगवाननुं महात्म समजे॥ तथा ते भगवानना साधूनुं महात्म समजे तो ते जियनो साक्षात्

कारमोक्षथायछे॥अनेएटलोनिश्चेजेनेथयो।तेनेकांई करवुं बाकिरह्युं नथि॥माटे आवातजेदहाडे तेदहाडे समजेजछुटको छे॥नेसूजेतो आजसमजो॥नेसूजेतोकोटियुगकेडेसमजो॥अनेसूजेतोएकशब्दकह्योसमजो॥नेसूजेतोअनंतशब्दकह्येसमजो॥पणएवातसमजेजजिवनोमोक्षछे॥अनेएवातजाण्याविनाबिजाअनंतसाधनकरेतोयपणजिवनुंकल्याणथाय नहिं॥माटेप्रगटभगवानअनेजिवने मनुष्यनोदेह॥अनेतेप्रत्यक्षभगवाननोमहात्म्येसहितदृढनिश्चयथाय॥तेजअतिशेदुर्लभछे॥अनेएतोसमोजेनेप्राप्तथाय॥त्यारेज तेजिवनुंकल्याणथायछे॥अनेपूर्वेपणजेनाजेनांकल्याणथयाछे॥तेपणप्रगटभगवानथकिजथयाछे॥माटेमोटापुरुषोयेपणशास्त्र मांअनेकथातोलखीनेनेप्रगटभगवानने प्रगटभगवानना संत तेनेज कल्याणना कर्त्ता कह्याछे॥अनेजेवुंपरोक्षभगवानने प्रोक्षसाधु नुंमहात्म्यछे॥ तेवुंजप्रगटभगवानने प्रगटसाधु॥तेनुंमहात्म समजवुं॥एमज मोटापुरुषकहिगयाछे॥माटेप्रगटभगवान तेजएकआत्यंतीक कल्याणनादाता छे॥ तेसारुं एटलो जेनेनिश्चयथयो तेनेकांईकरवुंरह्युंनथिने तेनेकांईसमजवुंबाकिरह्युंनथि॥एनेतो सर्वोपरिमोक्ष नोमार्ग हाथआव्योछे॥अनेतेनुंतोकल्याणथईजरह्युंछे॥अनेतेनिरविघ्नथकाभगवानना अक्षरधामनेपामे छे॥अनेमोरेपणजेनेजेने प्रगटभगवानने प्रगटभगवानना संतमल्याछे॥तेनांजयगरदारयले कल्याणथयांछे॥अनेप्रगटभगवानने संतमल्याविनातो॥जपतपसा धनकरिकरिनेमरिजाय॥तोपणजिवनुंकल्याणथायनहिं॥अनेगोपिगोवालां।वानराएआदिकजेनेजेनेप्रगटभगवानमल्यानेतेकांई येसमजतां नहोतां॥तोपण तेनेप्रगटभगवाननेविषेदृढहेतथयुं॥तोतेसर्वेसाक्षात्कारपरमपदनेपामिगया अनेतेनागुणमोटाभक्तादि कगायछे॥ माटे तेसमोआजनमारे आव्योछे।तेनेजतन करिनेराखजो॥ तोतमारांकल्याणसाक्षात्कारथईरह्यांछे।एमां कांईसंशय नथि॥पछेरायलक्षशलारुपजिएमहाराजने प्रश्नपुछ्युं॥जेहेमहाराज पूर्वे कृष्णाअवतारमांरूषिमहाडाह्यानेमणेलाहता॥नेशास्त्र पूराणवांचताहता॥अनेआजपण केटलांकशास्त्रपूराणनाभणेलाछे॥पण तेने प्रगटभगवाननुंस्वरुपओलखवातुं नथि।तेनुंशुंकारणहशे ते कहो॥पछे महाराज बोल्या जेशास्त्रपूराण वांचेछे।तोरयरापण एने भगवानना आशरो नथि॥माटे कामक्रोधलोभादिके करिने एनाजिवनेहरविनाराख्यो छे।अने कामादिकशत्रु एनेमाथुंउपाडवा देता नथि॥पछेते पंडितपणजेतेपोताने पेठेज भगवानने भग

वाननाभगतनेसमजेछे।।जेजेमअमाराकामादिकशत्रूनिवृतिनथिपांमता।।तेमएनाकामादिकनिवृतिनहिपामताहोय।।एमसमजि-
नेभगवाननेभगवाननाभक्तनेविषेदोषसमजेछे।।माटेतेपापेकरिनेप्रगटभगवाननुंस्वरूपएनेओळखवामांआवतुंनथिमाटेशास्त्रपूराणनेवां-
चेछे।।पणएनेभगवाननेभगवाननाभक्तनोजेमछे तेममहिमासमजातोनथी।।तेणेकरिनेप्रगटभगवाननास्वरूपनोनिश्चयथतोनथि।।
एतमाराप्रश्ननोउत्तरछे।। ।।इतिश्रीमुख्यसिद्धांतः।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।।संवत्।।११।।ओगणिशे।।७४।।
महाशुदि।।१२।।द्वादशीनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवान।।गामश्रीचुडामध्ये।।मरनारणजिभगवानजिनेघेरउगमणाबारनाओरडानिआ
गळचोकवचेपाटउपरगादितकियाबिछावीनेबिराजमानथयाहता।।नेरातापिनखापनोसुरवालनेउगलिधारणकर्यांहतां।।अनेमस्तक
उपरसोनेरीपाघबांधिहतीअनेसोनेरीकोरछेडालोगुंठीरेटोधारणकर्योहतो।।अनेकेडेउकसंबलुसेलुंबांध्युंहतुं।।नेएकसेलुंखभेधार-
णकर्युंहतुं।।अनेकंठनेविषेमोगरानेजाईनेगुलाबनाहारधारणकर्याहता।।नेबेहाथनेविषेबाजुबंधनेगजराधारणकर्याहता।।
अनेपाघमांतोराळटकताहता।।नेकांनउपरगुलाबनापूष्पनागुच्छधारणकर्याहता।।अनेललाटनेविषेकंकुनोचांदलोकर्योह-
तो।।नेउगमणेमुखारविंदेबिराजमानथयाहता।।नेपोतानामूखारविंदनिआगळ।।साधुतथाघणाकहरिभक्तनिमोटीसभाभराई-
नेबेठिहति।।अनेदिवसनाचारघागतेसभाथईहति।।पछेहरिकृष्णभगवानबोल्याजे।।एकादशिआदिकनुंव्रतकरवुंतेनुंशुंका
रणछे।।तोआजिवनिजेवृतिओछे।।तेपंचविषयमांप्रवर्त्तिगयुंछे।।तेनेतेतेविषयथकिपाछियाळिनेभगवाननास्वरूपमांजोडि
देवि।।एजसर्वेव्रतउपवासादिकनुंफळछे।।अनेतेइंद्रियोनिवृतिओविषयमांप्रवर्त्तेछे।।तेणेकरिनेजिवनेजन्ममरणनांदुःख
भोगववांपडेछे।।हवेतेकेविरितेविषयमांइंद्रियोप्रवर्त्तेछेतोश्रोत्रनिवृत्तिछेतेसब्दमांवसाईगईछे।।नेत्वचानिवृतिछेतेस्पर्श-
मांवसाईगईछे।।नेनेत्रनिवृतिछेतेरुपमांवसाईगईछे।।नेनासिकानिवृतिछेतेगंधमांवसाईगईछे।।एविरितेदशइंद्रियोनेचार
अंतःकरणनिवृत्तियोजेतेपोतपोतानाविषयमांएकरसरूपथईगयुंछेअनेतेणेकरिनेजन्ममृत्युनेपामेछे।।तेउपरवेदनिश्रुति
छे।।जेयामतिसगतिर्भवेत्।।माटेभगवाननाभक्तहोयतेनेतोएइंद्रियोअंतःकरणथिनोखोएवोजेक्षेत्रज्ञचैतन्यब्रह्मआत्मा।।

तेनेपोतानुंस्वरूपमानवुं॥अनेशब्दविषयनुंजेसुखदुःखछे।तेतोश्रोत्रइंद्रियनेनेएनादेवजेदिगपालतेनेनेमननेछे॥पणआत्मानेतेनुंसुखदुःख
लेशमात्रनथि॥अनेस्पर्शनुंजेसुखदुःखतेत्वचाइंद्रिनेनेवायुदेवतानेनेमननेछे॥पणमारेआत्मानेनथिनेहुंतोसदायअसंगिछुं॥अनेरूप
कुरूपनुंजेसुखदुःखतेतोचक्षुःइंद्रिनेनेसूर्यदेवनेनेमननेछेनेहुंतोसदायसुखस्वरूपछुं॥अनेखटरसादिकनुंजेसुखदुःखतेतोरसनाइंद्रिने
नेवरुणदेवतानेनेमननेछे॥पणमारेआत्मानेनथि॥नेहुंतोसदायब्रह्मानंदरूपछुं॥अनेसुगंधदुर्गंधनुंजेसुखदुःखतेतोघ्राणइंद्रियनेनेअश्व
निकुमारदेवतानेनेमननेछे॥नेहुंतोअरूपएवोआत्माछुं॥अनेसारानरसाबोलवानिविगतियेकरीनेजेसुखदुःखतेतोवाकइंद्रिनेनेअग्नि
देवतानेनेमननेछे॥पणमारेनथिहुंतोसदायशान्तरूपछुंनेसर्वेनोजाणनारोछुं॥नेएतोसर्वेमायाकृतमिथ्याछेनेभ्रान्तिरूपछे॥नेहुंतोसदा-
यअसंगिछुं॥नेहुंजेआत्मातेमारासुखनाउपयोगमांमाइकपंचविषयतेकांईकाममांआवतानथि॥अनेमाइकविषयतोदुःखरूपछे॥अने
नर्करूपएवोजेहुंआत्मातेमुनेजडएवाजेपंचविषयतेशुंसुखदेनाराछे॥एतोनर्करूपजछे॥अनेहुंतोब्रह्मानंदछुं॥एवोजेहुंआत्मातेमने
तोपरमात्मानुंसुखएजशान्तिउपजावेएमछे॥अनेतेणेकरिनेजहुंसुखियोथाउं॥एवोछुं॥पणमाइकसुखेकरिनेहुंसुखियोथाउंएवोन-
थि॥नेहुंतोपरमात्मावतेजसुखियोथाउंएवोछुं॥माटेब्रह्मरूपपोतानाआत्मानेमानिनेप्रगटप्रमाणएवाजेभगवानतेनुंभजनकरवुं॥तेभग
वानकेवाछे॥तोमनुष्यजेवादेखायछेतोपणदिव्यरूपछे॥नेमायापरछेअनेमनुष्यजेवाछे॥तोपणजडनेचैतन्यबेनाआधारछेअनेमाराआ
त्मानेविषेपणअखंडविराजमानरह्याछे॥अनेजेवाप्रगटप्रमाणप्रत्यक्षदेखायछे॥तेवानेतेवासाक्षात्कारमूर्तिमानमाराआत्मामांस
दायविराजमानछे॥माटेमारेहवेआवबुंजवुंनथि॥नेजन्मवुंमरवुंनथि॥हुंतोब्रह्मरूपछुंनेकृतार्थछुं॥एमसमजताहोयतेतोभगवाननाभ
क्तअंतरदृष्टिवालाछे॥अनेएवाजेअंतरदृष्टिवालाभगवाननाभक्तछे॥तेथकितोभगवाननेभगवाननुंधामतेअणुमात्रपणछेटेनथि॥अनेजे
बाह्यदृष्टिवालाछेतेथकितोभगवानघणाजछेटेरह्याछे॥नेतेनोतुछबुद्धिवालाछे॥अनेतेनेमाइकदृष्टिवालाजाणवा॥नेतेनेकोईकालेशां
न्तिथायनहिं॥केमकेशान्तितोअंतरदृष्टिमांछे॥तेएमारगतोभूलिगयाछेतेक्यांथिशान्तिथाय॥जेमकोईकपुरुषनेउगमणेगामजवुं-
होयनेचालवामांडेआथमणुं॥तेजेमजेमचालेतेमतेमछेटुंपडतुंजाय॥पणतेगामआवेनहिं॥तेमबाह्यदृष्टिवालापुरुषजेमजेमसाधनकरे

।।तेमतेमतेनेभगवानथिउलटुंछेटुंथतुंजायछे।।केमकेएणेतोपरमेश्वरनिदिशाजदिठिनथि।।अनेपरमेश्वरनिदीश तो अंतरदृष्टिमांछे।।नेएतोबा
रद्रष्टिवालाछे।।माटेजेभगवाननाभक्तहोयतेनेतोसदायअंतरद्रष्टिराखिनेपोतानीदशइंद्रियोनेअगियारमुंमनतेनेभगवाननास्वरुप
मांजोडिदेवा।।तेकानेकरिने भगवाननी कथाकिर्तन सांभलवां।।नेतेणेकरिनेपोतानेपूरणकामथावुं।।ने त्वचाए करिनेभगवाननाचरण
नोस्पर्शकरिनेज आनंदपामवुं।।अनेनेत्रेकरिनेभगवाननेभगवाननासंतनादर्शनकरिनेजत्रप्तथावुं।।नेरसनायेकरिनेभगवाननागुण-
गाथा।।तेणेकरिनेपरमआनंदमानवो।।नेनासिकायेकरिनेभगवाननेचड्याजेचंदनपुष्पतेनिसुगंधियेकरिनेज सुखमानवुं।।अनेहाथेक-
रिनेप्रत्यक्षभगवाननेभगवाननासंतनिसेवाकरिनेजसुखपामवुं।।एविरीतेदशइंद्रियोनेचारअंतःकरणतेणेकरीनेभगवाननीमूर्त्तिमां
जोडावुं।।नेतेमांअतिशेआनंदपामवुं।।पणमाईकपंचविषयनासुख तेणे करिनेसुखनमानवुं।।अनेतेमाईकविषयनेदेखिनेतोग्लानि
पामवुं।।जेमविष्टानेदेखिनेग्लानिपमायछेतेममाईकविषयनेदेखिनेग्लानिपामवुं।।अनेतेमाईकविषयथकितोदूरजभागीजावुं।।जेमसर्प
थिभागियेछैयेत्तथाइडकायाकुतराथिभागियेछीये।।तेममाईकपंचविषयथकिभगवाननाभक्तनेपाछाभागवुं।।केमकेविषयनासुखतो
अतिषेदुःखरुपछे।।माटेअतिशेपापरुपजाणिने।।तेनोत्यागकरिनेपोतानेब्रह्मरुपमांनिनेअंतरद्रष्टि करिनेपोतानाआत्मानेविषेशांति
पामवुं।।अनेपोतानेमल्याजेप्रत्यक्षभगवानतेनेसुखरुपजाणिनेतेनुंभजनकरवुं।।अनेएवि समजणवालाजे भगवाननाभक्तबाई
अथवाभाई।।त्यागिअथवाग्रहस्थ।।तेसर्वेनिवासनाटलिजायछे।।नेतेतो छतिदेहे ब्रह्मरुपछे।।नेएनेकांईकरवुंरेहेतुंनथि।। ।।

।।इतिश्रीमुख्यसिद्धांत।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। संवत।।१९।।ओगणिसे।।१४।।चौदना।।महाशुदितेरसनेदिवस।।म-
हाराज श्रीहरिकृष्णभगवान गाम श्रीचुडामध्येभटनारणजीभगवानजिनेघेरउगमणेबारओरडानिआगलचोकवचेपाटउपर गादित-
कियाबिछाविनेतेउपर विराजमान थयाहता।।अनेकिनरखापनोसुरवालनेडगलिपेर्यांहतां।।नेकसूंबलपाघधारणकरिहतिअनेके-
हेडेगुठोरेटोपहेरीनेसोनेरीकसंबलसेलुंबांध्युंहतुं।।नेएकसेलुंख भाउपर धारणकर्युंहतुं।।अनेसर्वेअंगनेविषेसुगंधिमानपुष्पना
आभूषणसोभिरह्यांहतां।।अने ललाटनेविषेकुंकुनोचांदलोकर्योहतोनेपोतानामूखारविंदनिआगलसाधुतथादेशदेशनाहरिभक्तनि

सभामराईनेबेठीर्हता॥पछेमहाराजबोल्यांजेजिवनेभगवानभज्यामांअनंतअंतरायछे॥तेअंतरायमांमुमुक्षुनेमूक्तबंधायनहि॥अने
जेअंतरायनारोक्यांरोकायछे॥तेतोपामरनेविषयिछे॥नेतेतुच्छबुद्धियालोकछे॥अनेजेमाईकपदार्थनारोक्यांरोकायछे॥तेभगवाननाम
हापदनेनथिपामता॥जेमरामचंद्रजिभगवानवनमांथिआवताहता॥तेसमेअयोध्यानामनुष्यदर्शनकरवासर्वेसामाहोड्यां॥पछेरामः
चंद्रजियेखरारखोटानापारखवांलेवासारुमायारचि॥तेगामबारआव्यात्यांतोपेसानाढगलाजणाणां॥पछेतेमांकेटलाकलोभा
ईनेलेयामंडिगया॥नेतेमांकेटलाकनलोभाणांतेआघेराचाल्यात्यांसोनामोरनाढगलादेखाणां॥त्यारेतेमांकेटलाकलोभाईनेरः
हिगया॥नेत्यांथिकेटलाकआघाचाल्या॥त्यांपारसमणियोनाढगलादेखाणा॥तेमांकेटलाकलोभाईनेरोकाईगया॥पछेतेमांजे
खरेखरारामचंद्रजिनानिरवासनिकभक्तहता॥तेभगवाननीपासेपहोच्या॥नेतेनेभगवानेअभयपदआप्युं॥नेतेनाउपरभगवाः
नघणाप्रसन्नथया॥तेमजेआजपणभगवानभजताहोय॥तेनेआलोकनाम्निछोकरांधन्यमाल्गामग्रासलोकनिलाजमतपंथादि
कआलोकनापंचविषयसंबंधिसर्वेसुखतेपेसानेठेकाणेछेअनेजेदेवलोकनांसुखछेतेतोरुपैयानेठेकाणेछे॥अनेब्रह्मानालोक
नाजेसुखछेतेसोनामोरनेठेकाणेछे॥अनेजेवेराटनुंसुखछे॥तेतोमोतिहिरानेठेकाणेछे॥अनेप्रधानपूरुषनालोकनुंसुखछे॥
तेतोरत्ननेठेकाणेछे॥अनेप्रकृतिपुरुषनालोकनुंजेसुखछे॥तेतोमणिनेठेकाणेछे॥अनेअक्षरब्रह्मनुंजेसुखछेतेतोपारसमणिने
नेठेकाणेछे॥अनेएजेसर्वेसुखकह्यांतेमांजेनलोभायतेजभगवाननाचरणारविंदनेविषेजईनेअभयस्थानेपामेछे॥नेमहासुः
खियथायछे॥तेमाटेजेभगवाननाखरेखराएकांतिकभक्तहोय॥तेतोमाईकसुखनेनासवंतनेदुःखरुपनेपापरुपजाणिनेतेनो
त्यागकरिदेवो॥केमकेएसुखतोभगवाननामार्गमांविघ्नकरनाराछे॥अनेवलिएमांसुखजेवुंजणायछे॥पणतेमांसुखजेते
लेशमात्रनथि॥केमकेमाईद्रष्टिवालाछे॥पणजेज्ञानीछेतेतोएमाईकसुखनेमहादुःखरुपनेनासवंतजाणेछे॥माटेमाईकद्रष्टिवा
लाजिवजेतेभगवाननाभक्तनीनिंद्याकरेतेणेकरिनेभगवाननाभक्तनिमोटप्यघटतिनथि॥नेतेकदापिवखाणकरेतेणेकरिने
कांईभगवाननाभक्तनिमोटप्यवधतिनथि॥केमकेभगवाननाभक्तनिमोटप्यछेतेतोअविनासिछे॥तेतोकोईकालेवधेघटेनाव

नथि॥जेमप्रह्लादनिनिंदाहिरण्यकश्यपुयेघणिककरिापणतेणेकरिनेप्रल्हादनिमोटम्यरंचमात्रओछिथई नहीं॥नेतेहिरण्यकश्यपुनो नाशथयो॥अने नरसेमेहेतानीनागरेतथामंडलिकेनिंदाकरि॥ तेणेकरिनेपणमेहेताजिनिमोटम्यघटिनथि॥एविरितेपूर्वेघणाकभ क्तोनिविमूखपजिवोएनिंदाकरिछे॥तोपणभगवाननाभक्तनोजजयथयोछे॥अनेनिंदानाकरनाराओनुंभुंडुंथयुछे॥त्यांएकसारवि छेजे॥संतसंतापेजातहे॥धर्मराज्यअरुवंश॥देख्यानहोयतोदेखल्यो॥रावण कौरवने कंस॥माटेविमूख्योजियनाशब्दसांभलिनेभ गवाननाभक्तने हरख शोक पामवुंनहि॥अनेसदायआनंदमांरहेवुं॥अनेप्रत्यक्षभगवाननेभगवाननानारदसनकादिकजेवानिरवा सनिकप्रत्यक्षनासंततेनावचननोविश्वासराखिनेजेमभगवाननीआज्ञाहोयतेमांमनक्रमवचनेसावधानवरतवुं॥पण ढोचापोचान रहेवुं॥अनेधर्मसंबंधिलाजतथाभगवाननीभक्तिनीजेलाज तेनेतोद्रढकरिनेराखवि॥केमके वर्तमान चुकियेतोसतसंगमांलाज जाय॥नेभगवानना भक्तपणामांखोटआवे॥नेभगवान कुराजिथाय॥तेसारूंएलाजतोसिरसाटेराखवि॥केमकेएलाजतोपोता नाआत्मानाकल्याणनेअर्थेछे॥अनेजेलोकीकलाजछे॥तेतोआत्मानुंभुंडुंकरे एवि छे॥माटेभगवाननाभक्त होय तेनेजगतनालो कनीलाजनोत्यागकरीनेभगवाननासुखनो लोभराखवो॥तेभगवाननुंसुख केवुंछे॥तो अपरमित छे॥अनेभगवाननाएकदरश नकरे॥तोतेमांपंचविषयनुंसुखभेगुंआवेछे॥नेतेजिवपूर्णकामथायछे॥अनेमाईकपंचविषयतोसुजेएटला भोगवेतो पण तृष्णामटेन हिं॥माटेभगवाननाभक्त होय तेने तो स्थुलसूक्ष्म नेकारणएजे त्रणशरिरतेथकिपोतानाआत्मानेजुदो नेशुद्धचैतन्यब्रह्ममानिनेप्रगटप्र माणजेभगवानतेनो द्रढआश्रयकरीने तेनावचन मांवरतिनेतेनुंभजनकरीनेभगवाननाअखंडसुखनेपामवुं॥एजमनुष्यनेदेहअवश्यज रूरकरवानुंछे अनेप्रगटभगवाननेपोतानेमनुष्यनोदेह॥एसमोअतिसेदुर्लभछे॥माटेतेसमोवृथाजवादेवोनहि॥नेभगवानभजिलेवा

॥ ॥इतिश्रीमुख्यसिद्धांतसमाप्त॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥संवत॥१९॥ओगणिसे॥१४॥चौदनामाहाशुदि१५

चौदशनेदिवससंध्याआरतिथयापछे॥महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्रीचुडामध्ये॥भटनारणजिभगवानजिनेघेरुमणेबारओरडा नीआगल चोकवच्चेपाटउपर गादितकियाबिछाविने तेउपरविराजमानथयाहता॥अनेसर्वेअंगनेविषेजरीयानिवस्त्रधारण कर्यांहतां॥

नेकंठनेविषेगुलाबनाहारपेंहेर्याहता।नेहाथनेविषेपुष्पनाबाजुबंधनेगजराधारणकर्याहता।नेफूलनातोरानेगुच्छगोमिरह्याहता।।अ-
नेयालरनेविषे।केसरनिअरचानेकंकुनोचांदलोकर्योहतो।। अनेपोतानामूरवारविंदनिआगलसाधुतथाघणाकहरिभक्तनिमोटिसभा
भरादनेबेठिहृति ।।पछेमाहाराजबोल्याजेसांभलो।।सर्वेनएकवातकरवीछे।जेभगवाननेदर्शनेआववु।।तेतोपोतानाआत्मानाक-
ल्याणनेअर्थेआववु।।पणजगतमांजेमभथायातथायेसाथेजोवाजायछेतेमभगवाननादरशनकरवां।।एभगवाननांदरशनतोस-
र्वेइंद्रियोनियममांराखिनेएकाग्रवृतिकरिनेकरवांपणफाटेलद्रष्टियेभगवाननांदरशनकरवां केमके भगवान पासेजइने तोपापनो
त्यागकरवो।। पणत्यांआविनेस्त्रियादिकनाकुद्रष्टियेकरिनेरुपजुयेतोतेनेउलटुंमहापापलागेछे।तेपापकोईकालेछुटेनहि।।ते-
कह्युंछेजे।।अन्यक्षेत्रेकृतंपापं।तिरथक्षेत्रेविनश्यति।।तिर्थक्षेत्रेकृतंपापं। वज्रलेपोभविष्यति।।एश्लोकमांएमकह्युंछेजे।।बिजेठे
काणे पापकर्यांहोयतेपापभगवाननेभगवाननासंतनेदर्शनेकरिनेनाशपामेछे।।अनेभगवाननेसंतपासेजइनेभगवाननीमू
र्त्तिनांदर्शनमुकिनेआडिअवलिकुद्रष्टियेकरिनेजोवाय। तोतेपापवज्रलेपथायछे।।केत्यांकोईकालेतेपापटलेनहि।।केमकेभ
गवाननेदर्शनेजेजेआवेछे।।नेतोमोटादेवजेवाछे।।नेबाईयोहरिभक्तछे।।तेतोराधिकालक्ष्मिपारवतिदुपदिजानकिगोपियोमि-
रांबाई।।एजेवियोछे।।अनेपुरुषछेतेतोउद्धवजिसुदामाव्रंदावननागोप।।नारदसनकादिकअर्जुनप्रल्हादएजेवाछे।।एमजाणि
नेइंद्रियोअंतःकरणनिजेव्रतियोछेतेनेनियमांराखिनेभगवाननास्वरूपमांजोडिदेवां।।काननीव्रतिनेभगवाननाशब्दमांजोडि
देवि।।नेत्वचानिव्रतिनेभगवाननाचरणनांस्पर्शमांजोडिदेवि।।नेनेत्रनिवृतिनेभगवाननारूपमांजोडिदेवि।एविरीतेदशइंद्रियोने।।
चारअंतःकरणनिजेव्रतियोतेनेप्रत्यक्षभगवाननास्वरुपमांजोडिदेवि।।अनेएमजेभगवानप्रत्यक्षमांजोडायछे।।तेनांपापसर्वेबलि
जायछे।। नेतेभक्तब्रह्मरूपथायछे।।एवोप्रत्यक्षभगवाननेप्रत्यक्षभगवाननासंतनोप्रतापछे।।माटेअमारिपासेआविने।।एक
अमारांजदरशनकरवां।।पणचपलद्रष्टिराखविनहिंतोतमारांसर्वेनांकल्याणथाशे।एमांकोईवातनोसंशयनथि।। ।।
।।इतिश्रीमुख्यसिद्धांतःसमाप्तः।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। संवत् ।।१९।।ओगणिसे।।१८।।चौदनामहापदि१पद-

वानेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवान।।गामश्रीचुडामध्ये।।झालाभावसिंगजिभाईडुंगरजिभाईनादरबारमांउगमणेबार
ओरडानीओसरिमांढोलियाउपरगादीतकीयाबिछाविनेतेउपरबिराजमानथयाहता।।अनेसोनेरीफुखालनेडगलिधारणकर्यांह-
तां।।अनेगुढोरेटोनेसोनेरिसेलुंकेडेधारणकर्युंहतुं।।नेएकसेलुंखभेनाख्युंहतुं।अनेकंठनेविषेगुलाबनेजाईनापुष्पनाहारधारण
कर्याहता।नेहाथनेविषेबाजुबंधनेगजराधारणकर्याहता।।नेकानउपरफूलनागुछशोभिरह्याहता।।अनेपाघमांपुष्पनातोराल-
टकताहता।।नेपोतानामुखारविंदनिआगलसाधुतथाघणाकहरिभक्तनिमोटिसभाभराईनेबेठिहति।।पछेश्रीहरिकृष्णमहा
राजबोल्यांजे।।आजिवनेवारंवारजन्ममरणथायछे।।तेनुंकारणशुंछे।।तोएजियनेपोतानामननोअतिशेविश्वासछे।।तेमनजे
तेजिवनेविषयमांप्रितिकरावीनेजन्ममरणनेपमाडेछे।।जेमराजानेपोतानोप्रधाननोविश्वासहोय।।नेसाहुकारनेजेमवाणोतरने
विश्वासहोय।।पछेतेप्रधानतथावाणोत्तरदगोकरिनेराजानेतथासाहुकारनेमरावीनखावे।।नेतेनाराज्यधन्यनाधणिथायछे।।तेमजे
मनछे।।तेतोसदायदगादारछे।।नेजियनामहाशत्रुजेपंचविषय।।तेनिजसदायकल्पनाकर्याकरेछे।।अनेतेविषयथकिकोईका-
लेरहितथतुंजनथी।।अनेभगवाननेमारगेतोमनजेतेचालतुंजनथि।।अनेभगवाननोमारगतोएनेअतिसेअगमछे।।अनेपंचविषयमां-
चालवुं।।तेतोमननोअनादिनोढालछे।।केमकेमनछेतमायाथकिथयुंछे।।नेपंचविषयछेतेपणमायामांथीथियाछे।।माटेतेम-
ननेविषयसनमुखचालतांअनंतदुःखपडतांहोयतोपणतेथकिमनजेतेपाछुंवलतुंनथि।।नेतेमांथिमनकायरथतुंनथि।।अनेजिव
नेतेमननेतोघणुंविलक्षणपणुंछे।।तोपणमननेवसथईनेपोतेआनंदरूपछे।।तोपणमहादुःखनेभोगवेछे।।जेमचुलाउपरचोखारां
धवामुकेत्यारेप्रथमचुलानेतापलागेछे।।नेपछेतपेलीनेतापलागेछे।।नेपछेतेमांपाणिउनुंथायछे।।नेपछेचोखानेतापलागेछे।।
तेचोखाघणाअग्निथकिजुदाछे।।तोपणतेअग्निनेसंगेकरिनेतापनेपामेछे।।नेमआत्माजेतेपृथ्विजलतेजवायु।।आकाशअहंका
रमहत्तत्वनेप्रधानएजेआवरणतेथकिपरछे।।नेचैतन्यनीराकारव्यापकछे।।तोपणपंचविषयनिआसक्तियेकरिनेजेमननो
संगकर्योछे।।तेपापेकरिनेअतिशेक्लेशनेपामेछे।।पणआत्माविषयभोगेकरिनेसुखियोथायएवोनथि।।अनेआत्मातोसर्वथ-

किथिलक्षणछेनेअसंगीछे॥नेसुखरूपछेतोपणअज्ञानथकिमननेसंगेकरिनेदुःखपामेछे॥जेमघरनोरहेनारोपुरुषघरथिनोखोछे
॥तोपणतेघरनाउपरकोईमोटापथरोनाखेतोतेपुरुषघरनिआशक्तियेकरिनेमहादुःखनेपामे॥तेमआत्माजेतेदेहरूपघरथकिजुदोछे॥
तोपणतेदेहनिआशक्तियेकरिनेअतिसेदुःखनेपामेछे॥नेदेहनेजन्मेकरिनेजन्ममानेछे॥अनेदेहनेमरवेकरिनेपोतानेमृत्युमानेछे॥ए
सर्वेमननेसंगेकरिनेआत्मानेविपरितज्ञानथईगयुंछे॥माटेसत्पुरुषनोआश्रयकरिनेशुद्धज्ञाननेपामवुं॥नेदेहनेतोदुःखरूपनेनासवं
तजाणिनेमननासंगनेछोडिनेकेतांविषयनियासनानोत्यागकरिनेइंद्रियोअंतःकरणनेपोतानास्वाधिनमांलाविनेएसर्वेनेभगवां
यानननिनवधाभक्तिमांजोडिदेवां॥जेमराजाजेतेराज्यनीतिनेभणिनेसर्वेवस्तिनेवशकरेछे॥तेमभगवानननाभक्तनेपणराजनीति
रूपज्ञांनसिद्धकरवुं॥केत्यांस्थुलसूक्ष्मनेकारणएवाजेत्रणदेह॥तेथकिपोतानाआत्मानेनोखोसमजीनेतेआत्मानेविषेपरमा
त्मासदायअखंडरह्याछे॥तेपरमात्माप्रत्यक्षछे॥एमजाणिनेअंतरद्रष्टिकरिनेनिरंतरप्रत्यक्षमुर्तिभगवाननुंध्यानकरवुं॥अनेइंद्रि
योअंतःकरणथिसदायअसंगिरहेवुं॥अनेएमसमजवुंजेइंद्रियो॥अंतःकरणतोजडछे॥नेहुंआत्मातोचैतन्यछुंनेशुद्धछुं॥नेइं
द्रियोअंतःकरणनोहुंप्रकाशकछुं॥जेमगर्बामांदीवोमुक्योहोय॥त्यारेतेगर्बोप्रकाशवानथायछे॥तेमदेहरूपगर्बोछे॥अनेते
मांआत्मारूपिदीवोछे॥तेआत्माजेतेदेहइंद्रियोअंतःकरणरूपगर्बानेप्रकासेछे॥अनेआत्मापोतेजसुखरूपछे॥जेमकस्तु
रियामृगनिनाभिमांकस्तुरिरहिछे॥तेनेभुलीने कस्तुरिनिबासलेवासारुत्रणनेसुंघेछे॥पणत्रणनेविषेलेशमात्रकस्तुरिनथि
॥तेमसुखतोपोतानाआत्मानेविषेरह्युंछे॥तेनेभुलिनेत्रणरूपजेपंचविषयतेमांसुखमानेछे॥पणविषयनेविषेसुखजे
तेलेशमात्रनथि॥केमकेविषयनांपदार्थतोजडछे॥तेजडवस्तुचैतन्यनेशुंसुखकरे॥एतोआत्मानेअनादिकालनुंअज्ञानछे॥
तेणेकरिनेविषयमांसुखमानेछे॥माटेभगवानननाभक्तनेतोचौदलोकनांजेविषयनांसुखछेतेनेकागविष्टातुल्यजाणवांजो
ईये॥अनेपोतानाआत्मानेसुखरूपजाणिनेतेआत्मानाआत्माएवाजे॥परमात्माप्रत्यक्षभगवांनतेनुंअखंडभजनस्मरणक
रवाकरवुं॥अनेपोतानेजेप्रत्यक्षभगवाननिप्राप्तिथईछे॥तेपोतानांअतिसेमोटांभाग्यमानवां॥केमकेमोटामोटायोगितपक ॥१८॥

रिकरिनेजेनासाक्षमरिजायछे।।तोपण तेनेस्वप्नामां दरसनथतांनथि।। माटेजेनेअनंत जन्मनाशुभसंस्कारहोय त्यारे तेनेप्रगट भगवांनमादर-
सनथायछे।। माटेएवाजे अतिशेदुर्लभ भगवान तेनेभजतांदेहनेकदापिस्कस्वदुःख आवेतोतेमां हरखशोक पामवुं नहि अनेजिवछेतेणे-
अनंतकुतरांगधेडांना अवतारधारणकर्या छे।।अनेत्यांअनंतप्रकारनादुःखपाम्यो छे।।माटेभगवानना भक्तने भगवान भजवामांकांई
कथोडुंघणुंदुःख आवे तोतेदुःखनेगणवुंनहि।।अनेभगवानना भक्तने तोनित्य नवोरंगराखवो।।केमकेसर्वेदुःखमात्रथकि छुटवानो
समोआव्यो छे।।एमजाणिने पोताने मल्याजे प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतते नेपोतानुंमन अरपण करवुं।।अनेएविरित्येजेभगवा
वानना भक्त समजिने प्रत्यक्ष मूर्त्ति भगवानने भगवानना एकांतिक संतनेना चरणमां मनने अरपण करेछे।। ते भक्त तत्काल
ब्रह्मरूपथायछे नेभगवानना अक्षरधामने पामछे।। ।।इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्त।। ।।श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः।।
संवत।।११।।ओगणिसे।।१४।। चौदनामाहावदी।।८।। बिजनेदिवस महाराजश्रीहरिकृष्णभगवान गामश्रीचुडामध्ये।। झालाभायसंघभा
ईडुंगरजिभाईना दरबारमां उगमणे बार ओरडानि ओसरिमां ढोलियाउपर गादितकिया बिछाविने तेउपर विराजमानथयाहता नेसर्वेसे
नेरियवस्त्र धारण कर्याहता।।अने कंठनेविषे गुलाबने चंबेलिनाहार सोभिरह्याहता।। नेपुष्पना गजराने बाजु धारण कर्याहतां।।अने
पाघमां बेकोरे तोरा लटकताहता।। नेबे कानउपर गुछ धारणकर्याहता।।अनेजमणा हस्त कमलने विषे फुलनोदडो फेरवताहता
।।अनेपोताना मुखारविंदनि आगल साधुतथा घणा कहरिभक्तनि सभा भराईने बेठीहति।। नेते समे भायसंघभाईयेषोडशउपचार लई-
नेमहाराजनिपूजा करि।। पछे महाराजश्रीहरिकृष्णभगवान कृपादृष्टि करिने सर्वे सभा प्रत्ये बोल्याजे।। आजिवछे तेदेहनेविषे एकरस रूप
थईरह्यो छे नेदेहने संबंधे करिने पापकर्मने करे छे।।ते पापकर्म कियां।।तो चोरि छिनालि जिवहिंसा जुठुंबोलवुं।।मिथ्या अपवादनाखवा-
वो।। साधुब्राह्मणनो द्रोहकरवो।।परमेश्वरने निराकार केहेवा।।इत्यादिकजे पापकर्म।।तेदेहोहंबुद्धियेकरिनेथायछे।।अनेतेनदुष्टकर्मेक
रिने।।अंतसमेअतिशेकष्टनेजिवजेतेपामे छे।।केमकेजिवने ज्यारे अंतसमो आवेछे।।त्यारेजेवांजेवांकर्मकर्यांहोय।। तेवांतेवांतेजिवनेई-
श्वरफलपमाडेछे।। तेमांजे परस्त्रिनासंगना करनाराछे।।तेनेयमनादुतजे तेलोढानीस्त्रि लालचोल बलबलति करिनेवारंवार बाथभ-

रांयछे॥अंनेजेणे चोरिकरिछे।तेने यमनादुतमुदगलेकरिने वारमवारमारेछे॥नेजेणेजिवनी हिंसा करिछे॥ तेने तो परुपाच लोहिनी
नदिमांडुबकियो खवरावेछे॥अंनेजेभगवानने निराकारना कहेनाराछे॥तेनाशरिने तो यमनादूत कुवाडेकरिने कापेछे॥ने कालि
चिथास्युंनरखावेछे॥इत्यादिकजेअधर्मछे तेनेइश्वरजेतेअंतसमेअनंतप्रकारनांदुःखउत्पन्नकरेछे॥नेपछेजेवांजेवांकर्मजिवेकर्यांहोय
॥तेवां तेवां देह चोराशिमांधरावेछे तेमांजेअतिसेकामिहोय तेनेगधेडाना कुतराना पाडानाबोकडानाअवतारधरावेछे॥अनेजेणेजिव
नेमार्यांहोय नेमांसखाधुंहोय॥तेनेतो गरजुं समलाउं कागडा कूतरादिकना जन्मधरावेछे॥ नेते तेअवतारमां महाकष्टनेपामेछेनेतेकष्ट
नोपारआवतोनथि॥एविरितेअधर्मिनेभगवानथिविमुखजिवछे॥तेनेईश्वरजेतेजिवेजेवां जेवां कर्मकर्यांहोयतेवां तेवां दुःखनेपमाडे
छे॥अनेजेणे भगवाननोआश्रयकर्योछे।तेनेतोअधर्मअनितिनोत्यागकरवो॥अनेचोरिछिनालिदारुमाटिवटलवुंवटलाववुं॥तेनोत्या
गकरवो तथाजिवहिंसानकरवि॥कोईनेमाथेमिथ्याआलमनाखवुं॥नेजुठुंनबोलवुं॥एआदिकअधर्मनोत्यागकरवो॥नेभगवाननिनवध
भक्तिकरवि॥अनेतेभक्तिनाविरोधिएवाजेकामलोभस्वादस्नेहनेमानतेनेजितवा॥तेमांज्यारेपोतानेकामनोसंकल्पथायत्यारेतेका-
मनुंमूलतपासवुं॥जेकामजेतेस्त्रिनेविषेरह्योछे॥नेजोस्त्रिहोयतेनोकामपुरुषनेविषेरह्योछे॥माटेतेस्त्रिपुरुषबेनादेहनोविचारकरवो
॥जेतेदेहनेविषेमारेकामनोसंकल्पथायछे।पणदेहमांशियस्तुभरिछे॥तोहाडमांसनाडियोलोहिपरुपाचविष्टामुत्रआदिकनठारिवस्तु
नोभरेलोदेहछे॥अंनेतेदेहउपरथीरुपवानजणातोहोय।केकरूपवानजणातोहोय॥तोपणबेमलमुत्रनाजकोथलाछे॥पणतेमांकांईसा
रवस्तुनथि॥एविरिते तपासकरीनेजुवे।तोकामनांमूलउखडिजाय॥नेदृढनिष्कामिथाय॥अनेपोताने लोभनोस्वाभावहोयतोतेलो
भनोत्यागकरवो॥ केमकेजेणेकरीनेपोतानाआत्मानुंभुंडुंथाय।तेवेठेकाणेलोभनराखवो॥अनेग्रहस्थहोय।तेनेद्रव्यहोयतेज्यांत्यां
वेश्याओभथाघादिकमांअवलेमारगेनाखिनदेवुं॥अंनेअणहकेकरीनेकोईनुंद्रव्यलेवुंनहि।अनेइकमेहनत्यथितृष्णायेरहित
पोतानाप्रारब्धप्रमाणेद्रव्यकमावुं॥नेपोतानाआत्मानुंकल्याणकरेएवासत्पुरुषहोयतेनेअंनवस्त्रादिकेकरिनेपूजवा।नेत्यांलोभन
राखवो॥एविरितेवरतेछेतेजतेनिर्लोभिथायछे॥नेस्वादनेएमजितवो॥जेजेवस्तुमांपोतानेखाधानोरागहोय।तेवस्तुनोतपासकर-

थो।।जेतेवस्तुसारिलागेछे।तिणेकरिनेमाराजिवनुंशुंसारुथायएमछे।।अनेखाधानापदार्थसजेएथांसाराहोय।।पणतेसर्वेप्रथविजलादिकपंचभूतनोविकारछे।।अनेखाधापछीपण नरक थईजायछे।।मारेंतेखाधानापदार्थमांसुखलेशमात्रनथि।।अनेएताजिवेमुखादियेकरिनेसुखमानिलिधुंछे।।पणएपदार्थआत्मानेसुखपमाडेएम नथि।।अनेखाधानांपदार्थछे तेतोअग्निनेप्राण वायुनोआहारछे।।पणआत्मानोआहारनथी।।नेतेणेकरिनेआत्मानेसुखदुखलेशमात्रनथि।।नेआत्मातोपोतेजसुखरूपछे।।नेअविनाशिछे।।मारेखाधानांपदार्थनमळेतेणेकरिनेआत्मानाशपामेएवोनथि।।नेएतोमननेरसनाइंद्रिनेभ्रांतियेकरिनेसुखजेवुंजणायछे।।अनेतेपदार्थखाधामोरसजेएथांसारांसारांपासेपड्यांहोय।।पणतेनुंसुखजरायआवेनहिं।।अनेतेपदार्थखाईरह्यापछिपणकांईसारानरसानोभेदरेहेतोनथि।।अनेकंठथिहेठुंउतर्यांपछिपणनकारुथईजायछे।।अनेघडिकजिभउपररदेत्यांसुधिभ्रांतिमात्रसुखजेवुंजणायछे।।तेपणआत्मावतेजणायछे।।तेअज्ञानेकरिनेसारासाराखाधानेविषेआशक्तिराखेछे।।पछेतेनेअंनननेविषेकिडोथावुंपडेछे।।एमसमजिनेस्वादनेजितवो।।नेजेवेतेवेखावेकरिनेभगवाननाभक्तनेदेहनिरवाहकरवो।।केत्यांसारांखावानेविषेप्रितिनराखवि।।अनेस्नेहनेएमजितवो।।जेआविश्वमांजेटलिजातनाजीवछे।।तेसर्वेजातमांजिवेअनंतफेराजन्मधर्याछे।। अनेवळिआविश्वमांजेटलिजातनीस्त्रियोछे।।तेनेजिवेअनंतअनंतफेरापोतानीमायोकरीछे।।नेस्त्रियोपणकरिछे।।नेस्त्रिनोदेहधरिनेजमनसांजेटलिजातनापुरुषछे।।तेसर्वेनेपोतानाधणिकर्याछे।।एविरिनेजोईयेतोकोणसगुनथि।।सर्वेसगांजछे।।मारेजेमकेचोरासिनासगपणनेआजनथिमानता।।तेमजआदेहनासगांनेपोतानांसगांमानवांनहिं।।केमकेचोरासिनांसगांसर्वेनाशपामिगयांछे।।तेमजआजनांसगांसंबंधिपणजरूरनाशपामिजशे।।अनेजेआत्माछे।।तेतोदेहथकिअनिशुंविलक्षणछे।।नेआत्माब्राह्मणनथिक्षत्रिनथि।।आत्मानीकोईनात्यनथिजात्यनथि।।नेएनुंकोईसगुनथि।।नेआत्मातोसर्वेथकिअसंगिछे।।जेमएरणहथोडाउपरअनंतघटघडायछे।।पणतेएरणहथोडोकोईमांभळिजतोनथि।।तेमआत्माअसंगिछेनेनिरलेपछे।।एविरितेपोतानाआत्मानेस्थुलसुक्ष्मनेकारणएजेत्रणदेहतेथकिनोखोमानिनेपंचविषयनिवासनाटालिनेअखंडभगवाननिमूर्त्तिनुंपोतानाआत्मानेविषेजाणपणामांध्यानकरवुं।।अनेभगवाननाएकांतिकविषयनात्यागिसंतछेतेनासमागममांअखंडरेहेवुं।।नेतेनीआज्ञामांवरतवुंनेतेथकिधर्मज्ञानवैराग

नेमहात्म्येसहितभक्तितेनेअतिशेदृढकरवि॥एजजिवनेमनुष्यदेहपामिनेजरुरकरवानुछे॥अनेएविरितनीसमजणवालाभगवानना भक्त
छे॥तेतोब्रह्मरूपछे॥अनेएवाभक्तज्यारेदेहमुकेछेत्यारेभगवाननतेनेदिव्यएविजेभागवतितनुतेबंधाविनेपोतानाअक्षरधामनेपमाडे
छे॥एविरितेजेनेप्रत्यक्षभगवाननेतेभगवाननासंतमलेछे॥तेअलौकिकसुखनेपामेछे॥माटेतेसमोआजतमारेसर्वेनेआव्योछे॥माटेसौ
तपोतानुंकामसुधारिलेजो॥एमकहिनेत्यांथिमहाराजउठ्यातेघोडियेअस्वारथईनेपोतानेउतारेपधार्या॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्त॥
॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्॥१९॥ओगणिसे॥१७॥चौदनामाहावदि॥४॥चोथ्यनेदिवसमहाराजश्रीह
रिकृष्णभगवानग्रामश्रीचुडामध्ये॥झालाजसाभाईडुंगरजिभाईनादरबारमां॥दक्षणादेबारओरडानीओसरिमांढोलियाउपरगादित
कियानखाविनेतेउपरविराजमानथयाहता॥नेकिनखापनोसुरयालनेडगलिधारणकर्यांहता॥अनेमस्तकउपरकसुबलसोनेरिपाघबां
धिहती॥नेसुदारंगनोरेंटोधारणकर्योहतो॥अनेकसुंबलसेलुंकेडेबांध्युंहतुं॥नेएकसेलुखभेनाख्युंहतुं॥अनेसर्वेअंगनेविषेपुष्पनांआ
भूषणशोभिरह्यांहतांनेकेसरनीअरचानेकंकुनोचांदलोकर्योहतो॥नेपोतानामुखारविंदनीआगलसाधुतथाघणाकहरिभक्तनीसभा
भराईनेबेठिहति॥पछेमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवानबोल्याजेआसर्वेजिवमात्रछेतेनेजेसुखनेदुःखथायछेतेनुंकारणशुंछे॥तोजे
जिवपोतानाआत्मस्वरुपनेभूलिनेबाह्यदृष्टियेयुक्तवरतेछे॥एजअतिशयदुःखनुंकारणछे॥अनेजेआत्मानेपोतानुंस्वरुपजाणिनेअंतरदृ
ष्टियेयुक्तवरतेछे॥एजअतिशायसुखनुंकारणछे॥जेमकोईकमहावननेविषेएकमोटोमालनोबंधकोठोहोय॥अनेतेकोठामांअन्नज
लवस्त्रादिकसर्वपदार्थमाच॥तेअखुटभर्याहोय॥अनेतेकोठामांकोईकपुरुषरेहेतोहोय॥अनेतेकोठानिबारुचारेकोरेलाह्यबल
तीहोय॥तथावलिकोठानिचारेकोरेसावजदिपडामोटामोटासर्पतथामोटामोटागांडाहाथि॥तेनांटोलांनेटोलांफरतांहोय॥तेजो
कोठामांथिपुरुषबारनिसरे॥तोतेपुरुषलाह्यमांबलिमरे॥तथासावजदिपडासर्पहाथितेपुरुषनेखाईजायजोकोठाथिबहारनि
सरेतो॥अनेजोकोठामांनेकोठामांरेहेतो॥तेमहासुखनेभोगवे॥केमकेतेकोठानिमांहेलीकोरेलाह्यकेसावजदिपडादिक
कोईप्रवेशकरिशकेएमनथि॥माटेतेपुरुषमहासुखनेपामे॥तेमएतोद्रष्टांतनेसिद्धांतएछे॥जेकीगनेठेकाणेताजियात्माने

आत्मस्थितिछे॥नेतेआत्मस्थितिनेविषेअखंडानंदब्रह्मानंदरुपअपारमहासुखरह्युंछे॥नेजेपुरुषआत्मस्थितिनेपामिनेअंतरद्द
ष्टिराखेछे॥तेमहासुखनेपामेछे॥अनेजेपुरुष पोतानाआत्मस्वरूपिकोठानोत्यागकरिने॥कहेतांपोतानुंआत्मस्वरूपभुलिने॥म
हावनरूपजेदेह तेमांप्रवर्तेछे॥कहेतांदेहनेपोतानुंरूपमानेछे॥तेपुरुषजेतेपंचविषयनीवासनारूपिअग्निज्वालामांबल्याकरेछे॥अने
वलितेदेहरूपियननेविषेसावजदिपडारूपकामक्रोधलोभादिकतेजिवनेखाईजायछे॥नेतेणेकरिनेजियजेतेमहादुःखनेपामेछे॥
अनेतेदुःखथकिमुकावानेअर्थेदेहनेपोतानुरूपमांनिनेजेटलाजेटलाउपायजिवकरेछे॥तेसर्वेउपायमांथिदुःखजथायछे॥नेतेस
र्वेजिवनीबहारदृष्टिछे॥तेबाह्यदृष्टिमांतोमहादुःखरह्युंछे॥जेमकोठाथिबहारनिसरिनेलाह्यमांबलतोहोय॥पछेतेलाह्यनादुःखनेटा
ळवासारुआघोजाय॥त्यांतोसावजदिपडांसर्पगांडाहाथितेयारथईरह्याहोय॥तेतेनेखाईजाय॥नेतेपुरुषउलटोघणुंदुःखपामे॥तेमज
जिवजेतेपोतानुंआत्मस्वरूपिकोठानेमुकिनेदेहरूपिवनमांजायछे॥त्यारेतेजिवजेतेपंचविषयनिवासनारूपिअग्निमांबलवालागेछे
॥पछेतेवासनारूपलाह्यनेओलववासारुआघोजायछे॥त्यारेकामक्रोधलोभरूपिसावजदिपडातेजिवनेखाईजायछे॥कहेतांजिवजेते
देहनेपोतानुंरूपमानिनेस्त्रीनीवासनारूपिलाह्यमांबलवामांडेछे॥त्यारेतेलाह्यनेटालवासारुआघोकहेतांवर्धौकथिस्त्रिनेपरणेता
रेतेजिवनेकामरूपिसावजखाईजायछे॥कहेतांकामभोगेकरिनेतृप्तिथतिनथिनेउलटोमहादुःखनेपामेछे॥अनेवलिदेहनेपोतानुरू
पमानेछे॥त्यारेतेजिवजेतेद्रव्यनीवासनारूपिलाह्यमांबलवामांडेछे॥पछेतेलाह्यनेओलववासारुकांईकमेहनतकरिहेरानथईनेपै
साकमायछे॥त्यारेतेजिवनेलोभरूपिदिपडासर्पतथागांडाहाथितेमारिनाखेछे॥एविरितेदेहनेपोतानुरूपमानिनेपंचविषयनेपाम-
वासारुंजेजेउपायकरेछे॥तेमांथिजिवजेतेमहादुःखनेपामेछे॥नेतेसर्वेजिवनिबाह्यदृष्टिछे॥नेतेबाह्यदृष्टिमांकोईकालेजिवनेसु-
खथायजनहि॥एमसिद्धांतवार्ताछे॥माटेबहारदृष्टिनोत्यागकरिने॥कहेतांदेहनेपोतानाआत्माथिनोख्योजाणिनेदेहनांसुखपामवा
नीआशामुकिनेअंतरदृष्टिकरवी॥कहेतांआत्मानेपोतानुंस्वरूपजाणिने॥तेनेविषेदृढस्थितिपामवुं॥नेतेआत्मानेविषेपरमात्माभ-
गवानअखंडरह्याछे॥तेनेविषेप्रितिकरवि॥अनेतेआत्मानेपरमात्माविनापिंडब्रह्मांडादिकमायामांथिउत्पन्नथया॥जेआकारमात्र

तेनेनाशवंतनेदुःखरूपनेपापरूपजाणिने।तेनोसर्वेप्रकारे त्यागकरिनेपोतानेमल्याजेप्रत्यक्षभगवान॥तेनेआत्मानेविषेधारिनेते-
नीनवधाभक्तिकरवि।अनेतेभगवानप्रत्यक्षछे।।तेभगवान सर्व सुखनासिंधुछे।।नेकृपानासागरछे।।एमभगवाननेसुखनाधामजा
णिनेतेनिजेजेआज्ञाहोय।तेप्रमाणदृढपणेवरतवुं।नेतेभगवाननुभजनस्मरणकथाकिर्तनादिकजेनवधाभक्तिकरवी।।तेसर्वेअं-
तरदृष्टिछे।।नेतेअंतरदृष्टिवालापुरुषजेतेमहाअलौकिकसुखनेपामेछे।माटेजेनेपरम सुखियाथवुंहोय।तेनेपूर्वेकहिएविजेब-
हारदृष्टि।।तेनोत्यागकरिनेपोतानाआत्मानेविषे प्रत्यक्षभगवाननीमूर्त्तिनेधारिने॥अखंडध्यानकरवुं।अनेएमसमजवुंजेमाईकपंचवि-
षयमांसुखजेतेलेशमात्रनथि।।अनेसुखतोपोतानाआत्मानेविषेरह्युंछे।।तेआत्माकेवोछे तो अछेद छे अभेदछे।।सुखरूपछे।।चैत-
न्यछे ज्ञानरूपछे।तेज्ञानकेवुंछे।।तोजेममहासमुद्रनेविषे।।मघरमच्छरहेतोहोय।तेनेकोईकमछिमारमारवाआवे।।तोतेमघरमछस
मुद्रमां।।डुबकिमारिजाय।।एटलेतेनेकोईमारिशकेनहि।।तेमज्ञानरूपिमहासमुद्रछे।।तेमांअंतर दृष्टिकरिनेडुबकिमारिजाय।।तेनेकाल
कर्ममायारूपजेमछीमार।।तेमारवानेसमर्थथायनहि।नेतेअद्भुतआनंदमांवर्त्याकरे।माटेजेभगवानना भक्तहोयतेनेतोनिरंतर-
अंतरदृष्टिजराखवी।।अनेजेअंतर दृष्टियेयुक्त वरतेछे।।तेनेप्रत्यक्षभगवाननेभगवानना संतनोमहिमापण अपारनोअपारजणातो-
जायछे।।नेतेनेपंचविषयनुंअतिशेतुच्छपणुंथईजायछे।नेदेहनेविषेतेनेअतिशेवैराग्यथायछे।।नेअज्ञानरूपिअंधकार टलिनेज्ञानरू
पिप्रकाशथायछे।।जेमदिवसउगेनेसहेजेजरात्रिनोअंधकारटलिजायछेतेमज्ञानरूपिसूर्यप्रगटेछे।। त्यारेदेहनेविषेजेअहं बुद्धिनेदेह
संबंधिपदार्थनेविषेममत्वबुद्धितेरूपजेमहामायानोअंधकारतेनोनाशथईजायछे।।अनेज्यारेज्ञानरूपिप्रकाशथायछेत्यारेतेनेएमज-
णायछेजे।।मारेविषेमायाकोईकालेहतिजनहिं।।एमतेनेजणायछे।।अनेएवोजेज्ञानीतेअखंडपोतानाआत्मानेदेखेछे।अनेआत्मा
नाप्रकाशकएवाजेपरमात्माप्रत्यक्षमूर्त्तिज्ञानदाता।।भगवाननेभगवाननासंतनेनेपोतानाआत्मानेमध्येदेखेछे।। नेपरमात्माकेवाछे
।।तोसर्वेनाकारणछे।निसरवनाआधारछे।।नेअनंतकोटिमुक्तेविंटाणाथकासदायअक्षरधाममांधिराजमानछे।।अनेतेजभगवा-
नप्रत्यक्षमुनेआजसाक्षात्कारमल्याछे।।नेतेमाराआत्मानेविषेअखंडरह्याछे।।अने तेजभगवान् मनुष्यरूपधारणकरिनेअनंतजि-

वोनोउद्धारकरवा सारु सर्वेनेदरसनआपेछे।।एमजाणिने प्रत्यक्षभगवाननिमूर्त्तिनेअंतरमांधारिनेहा लताचालतां खातांपितां उठतांबेस-
तां सर्वे क्रियानेविषे।। अखंडध्यानकरेछे।।अनेएवरितनाध्यानयोगवाला भक्तछे।।तेने ब्रह्ममयतनुं बंधायछे।। नेतेभगवाननासा-
धर्म्यपणानेपामेछे।।केहेतां भगवानजेधासरु खियाछे तेवोज तेमुक्तपण सुखियोथायछे।। माटेपरमसुखनुं कारण अंतरदृष्टि छे।।नेअ
पार दुःखनुं कारण बाह्यदृष्टिछे।। ।।इतिश्री मुख्यसिद्धांतसमाप्त।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ।।संवत्।।
१९।।ॐ मागसिरे।।१८।।चौदनामहा वदि ५।।पंचमिने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्णभगवान् गामश्रीचुडामध्येजालाजसाभाईडुंगरजि
भाईनादरबारमां दक्षिणादे बारमेडिनिओसरिमांढोलियाउपर गादितकियाबिछाविने विराजमानथया हतानेहिरकोरिस्वेत धोतियुंपे-
हेर्युंहतुं।। नेगुलाबिरंगनुं अंगरखुं धारण कर्युंहतुं।। नेकसुंबल फेंटामस्तके धारणकर्याहतो।। नेगुलाबि कोरनो खेस खभाउ
परनाख्योहतो।। नेकंठनेविषे पुष्पनाहारधारणकर्याहता।।नेपोतानामुखारविंदनिआगल साधुतथाघणाकहरिभक्तनिसभाभरा
ईनेबेठीहति।।पछे महाराजश्रीहरिकृष्णभगवानकृपादृष्टि करिने सर्वे साधुहरिभक्तप्रत्येबोल्या।।जे आज तो अमे मोहनुंरुपवि-
चार्युं जे मोह ते शुंछे।।तो भगवानना स्वरुपनेयथार्थनजाणवापणुं।।एजमोहछे।।अने तेभगवानना स्वरुपनुंसाक्षात्कारज्ञानथा
य।।एजमोहटलवानोउपायछे।।अनेतेज्ञानथवामांअंतरायछे।।एजमोहछे।। तेमोहपंचविषयनिवासनायेकरिने चौदलोकनुं
एकब्रह्मांड।।एवांअनंतकोटि ब्रह्मांडनेविषेछे।।जेमवडनुंवृक्षजेतेवडवाईने मुलेकरिने पृथ्वीमां छवराई रह्यूंछे।। तेमजिवजे
तेवासनारुपिवडवाईने मूलेकरिने पिंडनेंब्रह्मांडनेविषे छवराई रह्योछे।।अने पोतानाआत्मस्वरुपने भुलिगयोछे।। नेमोहेकरि
नेअनंतकोटिब्रह्मांडनेविषेजोडाणोछे।। तेकेविरितेजोडाणोछे।। तोनेत्रनिवृत्तियेकरिने जिवजेतेसूर्यनालोकसुधिजोडा
ईगयोछे।। नेश्रोत्रनिवृत्तियेकरिनेदिगपालनालोकसुधिजोडाईगयोछे।। नेत्वचानीवृत्तियेकरिनेवायुनालोकसुधिजोडा
ईगयोछे।।अनेरसनानिवृत्तियेकरिनेवरुणनालोकसुधि जोडाई गयोछे।।नेनासिकानिवृत्तियेकरिनेअस्विनिकुमारनालो
कसुधि जिवजेते जोडाईगयोछे।। नवाणिनीवृत्तियेकरिने अग्निनालोकसुधिजोडाईगयोछे।। नेहाथनिवृत्तिएकरिनेइंद्रना

लोकशुधि जोडाईगयोछे।।नेपगनीवृतियेकरिनेविष्णुनालोकस्कधिजोडाईगयोछे।।नेशिस्नुनिवृतियेकरिनेप्रजापतिनालोकस्कधि
जोडाईगयोछे।।नेगुदानीव्रतियेकरिनेजिवजेतेजमनालोकस्कधिजोडाईगयोछे।।नेदेहमांहाडकादिक पृथ्वि छे।। तेनीवृतियेक
रिनेजिवजे तेगंधमांजोडाईगयो छे।।ने जळनिवृत्तियेकरिनेजिव जेतेरसमांजोडाईगयो छे।।नेअग्निनिवृतियेकरिनेरूपमांजोडाई
गयो छे।।नेवायुनिवृतियेकरिनेजिव जेतेस्पर्शमांजोडाईगयो छे।।नेआकाशनिवृतियेकरिनेशब्दमांजोडाईगयो छे।।नेअहंकारनिवृ
तियेकरिनेजिवजेतेरुद्रनालोकशुधिजोडाईगयोछे।।नेचितनिवृत्तियेकरिनेवासुदेवनालोकस्कधिजोडाईगयोछे।।नेमननीवृतिये
करिनेजिव चंद्रनालोकना स्कधिजोडाई गयो छे।।नेबुद्धिनिवृतियेकरिनेजिवब्रह्मानालोकस्कधि जोडाईगयो छे।। ने अहंकारे करिनेजि-
ववैराटमांजोडाई गयो छे।।नेचित्ते करिनेजिवमहत्तत्वमांजोडाई गयो छे।।नेमने करिनेप्रधानपुरुषमांजोडाईगयोछे।।नेबुद्धियेकरिने
जिवप्रकृतिपुरुषमांजोडाईगयो छे।।एविरितेजिवजे तेवासनारुपिवडवाईनेमूळतेणेकरिनेपिंडब्रह्मांडमां एकरसथई रह्योछे।।अने
तेजिवनेएवासनारुपिवडवाईनोजआधारछे।।तेणेकरिनेजिवजेते चालेहालेछे।।एविरीतेजिवनेमोहछे।।अनेतेमोहेकरिनेजिवस्व-
र्गमृत्युपाताळनेविषेजायछे।।नेजन्ममरणनेगर्भवासनामहादुःख तेनेवारंवार भोगवेछे।।हवेतेजिवनेवासनारुपिमोह क्यारे टळे।।तो
जेनेविषे कोई कालेमोहहतो जनहि।।एवाजे सदायनिरमोहि।।जेपरमात्माभगवान्‌तेभगवाननास्वरूपनोउत्तमनिरविकल्पनिश्चय
थाय।।त्यारेजिवनिरमोहिथाय।।केहतांमोहटलिजाय।।हवेतेपरमात्मानास्वरूपनोनिरविकल्पनिश्चयकेमथाय।।तो कर्तुमकर्तुंनेअन्य-
थाकर्तुंसमर्थ।।एवाजेपरमात्माभगवान्।।तेजेनेअनंतजिवोनेनिरमोहिकरिने पोतानाअक्षरधामनेपमाडवासारु।।मनुष्यस्वरूपनुंध
रणकरिनेपृथ्विउपर आवेछे।।अनेतेप्रत्यक्षभगवान्‌ज्यारेकृपाकरिनेपोतानास्वरूपनोनिश्चयकरावेछे।।त्यारेजिवनेभगवाननास्वरू
पनोनिश्चयथायछे।।अनेतेनिश्चयज्ञानेकरिनेकरावेछे।।अनेजिवनेज्यारे ज्ञानेकरिने भगवाननास्वरूपनोनिश्चयथायछे त्यारेजिव
यनीजेकबुद्धिहति।।तेटलिनेस्कबुद्धिथायछे।।नेजिवनेजेमोहहतोतेनांमूळउखडिजायछे।।नेब्रह्मरूपथईनेपरब्रह्मनेसाक्षातकार-
प्रत्यक्षदेखेछे।।हवेएवुंज्ञानकेमकरावेछे।।तोतेनिरित्यकहियेछिये।।जेप्रथमतोजिवनेसांख्यशास्त्रनेज्ञानेकरिनेआत्मानेपरमा ॥१८॥

त्माविनासर्वेमाईकआकारमात्रतेनेमिथ्याकरिदेखाडेछे॥अनेपछियोगशास्त्रनेज्ञानेकरिनेपोतानाआत्मानेब्रह्मनेविषे
एकत्वपणुंकराविने॥तेब्रह्मनेविषेपरब्रह्मनीस्थितिकरावेछे॥अनेत्यारपछिवेदांतशास्त्रनेज्ञानेकरिनेतेपरमात्मानोअपरमित
महिमाकहिदेखाडेछे॥जेतेपरमात्मा केवाछेतोसर्वकर्ताछे॥सर्वनाआधारछे॥नेसर्वव्यापकछे॥निरगुणछे॥अंतरजामिछे
अद्वितछे॥पूरणब्रह्मछे॥सर्वसाक्षिछे॥नेकर्ताथकाअकर्ताछे॥निरलेप॥असंगीने॥कर्तुमकर्तुंनेअन्यथाकर्तुसमर्थछे॥एवापरमा
त्माछे॥अनेपछेपंचरात्रशास्त्रनेज्ञानेकरिने॥वेदांतमांकह्या एवामहिमायेजुक्तजेपरमात्माभगवान॥तेजभगवान्मनुष्यस्वरूपनुं
धारणकरिने॥जिवोनांकल्याणकरवानेअर्थेनवधाभक्तिनुंग्रहणकरेछे॥तेभगवानजेतेमूरख्याथायएवानथि॥तोपणपोतानाभक्त-
जननोथालजमेछे॥नेतरस्याथायएवानथि॥तोपणजलपियेछे॥नेउंघेएवानथि॥तोपणउंघेछे॥नेपोतानेविषेकामनथि॥तोपणका
मजेवुंजणावेछे॥नेपोतानेविषेत्रिकालमांक्रोधनथि॥तोपणजिवोनाकल्याणनेअर्थेक्रोधजणावेछे॥अनेतेभगवाननेविषे॥
पोतानुपारकुनथि॥तोपणपोतानुंपारकुंजणावेछे॥नेपोतानेविषेलोभनथि॥तोपणलोभजेवुंजणावेछे॥एवीरित्येभगवानपोतेतो॥अ
खंडानंदनेपूरणकामछे॥तोपणजिवोनेपोतानेविषेहेतथायतेनेअर्थेअनेजिवोयेविषयनीवासनायेकरिनेतेविषयनेभोगवथासा
॥अनंतपापकर्यांछे॥तेपापनेपोतानीसेवाकराविने॥बालवानेअर्थेसेवानुंग्रहणकरेछे॥अनेएविरितेजिवोनाकल्याणनेअर्थेप्रत्य-
क्षभगवान्जेतेपोतानेविषेकामक्रोधलोभस्वादस्नेहमानं॥पारकुंपोतानुपक्षपात॥एसर्वेगुणदेखाडेछे॥तेभगवाननासर्वे
दिव्यगुणछे॥नेजिवोनाकल्याणनेअर्थेजणावेछे॥नेतेगुणेकरिनेअनंतजिवोनोमोक्षथायछे॥तेसारुंभगवानजेतेएगुणनुंधारण
करेछे॥अनेवलिभगवानतो॥एसर्वथीअसंगीछे॥नेगुणातितछे॥पणभगवानज्यारेजिवोनाकल्याणकरवानेअर्थे॥मनुष्यदेहनुंधारण
करेछे॥त्यारेमनुष्यनाजेवीजचेष्टाकरेछे॥नेपूर्वेपणभगवानना अवतारथईगया तेणेचरित्रकर्यांछे॥जे रामाअवतारमां॥जान
किजिनेरावणहरिगयो॥त्यारेरामचंद्रजिझाडझाडप्रत्येरोताफर्या॥अनेमनुष्यपणकोईभेगांचाल्यांनहि॥पछेवांनरांभेगांक-
र्यां॥नेसमुद्रनेकांठेजईनेत्र्पादियसरूपिभूख्यारह्या॥नेलक्ष्मणजिनेमोरछाथई त्यारेरामचंद्रजिरोया॥अनेवलिरामलक्ष्मण

बेयंने अहिरावणपातालमांहरिगयो॥त्यारेत्यांथिहनुमानजिमुकावीलाव्या॥अनेरामचंद्रजिनेइंद्रजितेनागपासेबांध्यां॥त्यारेतेथकिग
रुडजियेमुकाव्या॥अनेअयोध्यामांधोबियेनिंदाकरि॥केहुंदशरथनारामजेवोनथि॥जेकोईकलईगयेलीस्त्रिपाछीराखुं॥एवुंसांभळी
नेरामचंद्रजियेसितानोत्यागकर्यो॥तेवाल्मिकरुषिपासेवनमांजईनेसिताजिरह्यां अनेत्यांसिताजिनेबेपुत्रथया॥तेणेरामचंद्र
सामिलडाईकरि॥इत्यादिकरामचंद्रजिनांमनुष्यचरित्रछे॥अनेश्रीकृष्णभगवानजेते॥जन्मधारणकरिनेमथुरामांथीगोकुलमां
गयानेत्यांछानारह्या॥अनेपोतानांमाबापजेवसुदेवदेवकितेबंधिखानेपड्यां॥अनेपोतेनंदजिनाघेरचार्‍यां॥नेगोवालियानुंउचि
ष्टजम्या॥नेदहिंदूधनिचोरियोकरि॥गोपियोसाथेविहारकर्यो॥गोपियोनांवस्त्रहर्‍यां॥अनेजरासिंधआगलहार्‍या॥तेभागिनेस-
मुद्रनाबेटमांवस्या॥इत्यादिकजेचरित्र॥श्रीकृष्णभगवाननांमनुष्यचरित्रछे॥अनेभगवाननांदिव्यचरित्रतोअनंतछे॥तेदिव्यचरित्र
नतोभगवाननाएकांतिकभक्तहोयतेजाणेछे॥अनेजेमाईकबाह्यदृष्टिवालाछे॥तेनेभगवाननादिव्यचरित्रजाण्यामांनथिआवतां
॥अनेभगवाननांमनुष्यचरित्रतोसौनेजाण्यामांआवेछे॥माटेतेणेकरिने॥अज्ञानिजिवोनेमोहथायछे॥तेकृष्णअवतारमांभगवान-
नांमनुष्यचरित्रजोईनेरुषिनेमोहथयो॥माटेतेनाओलख्यामांभगवानआव्यानहि॥नेयादवोनाओलख्यामांपणनआव्या॥नेराम
अवतारमांपणकोई॥ज्ञाझ्मनुष्येनओलख्या॥माटप्रत्यक्षभगवानने ओलखवातेतोबहुजकठणकामछे॥केमकेजेनेवेदनेतिनेति
कहेछे॥नेमोटामोटायोगितेपणतपनेध्यानकरिकरिनेथकाईजायछे॥तोयपणजेनास्वरूपनामांदरशनथतांनथि॥एवामहादुर्लभजेभ
गवान्ते॥मनुष्यजेवाथईनेमनुष्यनाजेविक्रियाकरताहोय॥तेभगवानजिवोनाओलख्यामांकेमआवे॥नजआवे॥माटेतेभगवान
ओलखवानोएकउपायछे॥जेतेभगवानपृथ्विउपरप्रगटथयाहोय॥अनेतेभगवाननीपासेनारेहेनारातेभगवाननाएकांतिकसंततेनो
॥जेनेविस्वासहोय॥नेतेनोसमागमकरे॥तोतेभगवाननास्वरूपनुंज्ञानआपे॥त्यारेतेजिवनेप्रत्यक्षभगवानओलखायछे॥पणतेवि-
नाप्रगटभगवानने ओलखवानोबीजोउपायनथि॥माटेप्रगटभगवाननासंतथकिजप्रगटभगवान्ओलखायछे॥पछेजेनेप्रगटभग-
वान्ओलखाणातेनांइंद्रियोअंतःकरणादिकचोविसतत्वनिवृतियोछे॥तेपोतपोतानाविषयनुं॥प्रमाणकरिनेतेथकिपाछिवलि-

नेप्रत्यक्षभगवांननीमूर्त्तिमांजोडायछे॥हवेतेकेविरितेजोडायछे॥तोश्रोत्रजेकांनतेनिवृतिछे॥तेशब्दनुंप्रमाणकरेछे॥जेकोइ युगथया
शब्दसांभल्याछे।पणहजिकानतृप्तथयोनथि॥एमजाणिनेपोते।तेनोद्रष्टाथईने॥तेशब्दनेदिगपालदेवमांलयकरिनेतेकाननिवृत्ति
जेते।प्रत्यक्षभगवाननाशब्दमांजोडायछे॥अनेत्वचाइंद्रिनिवृतिछे।तेस्पर्षनुंप्रमाणकरेछे कहेतांअनंतकालथयांसारासारास्पर्ष-
कर्यांछे॥तोयपणत्वचाइंद्रिनीतृप्तिथईनथि॥एमजाणिनेतेस्पर्षनुंप्रमाणकरिनेपोतेतेनोद्रष्टाथईने॥तेस्पर्शनेवायुमांलयकरिने
॥तेवृतिजेतेभगवान्प्रत्यक्षतेनाचरणनास्पर्षमांजोडायछे।नेनेत्रनीवृतिछे।तेपणउपरकह्युंतेप्रमाणे॥रूपविषयनुंप्रमाणक-
रिने॥पोतेआत्मातेनोद्रष्टाथईने॥तेरूपनेसूर्यदेवनेविषेलयकरिनेतेनेत्रनीवृत्तिजेतेप्रत्यक्षभगवाननारूपमांजोडायछे॥अनेर-
सनानिवृतिछेते।रसविषयनुंप्रमाणकरिनेपोतेतेनोद्रष्टाथईनेतेरसनेवरुणदेवमांलयकरिने।तेवृतिजेतेभगवाननागुणगाव
मांजोडायछे॥अनेनासिकानीवृतिछे॥तेगंधविषयनुंप्रमाणकरिने॥पोतानेद्रष्टामानिनेगंधनेअस्विनिकुमारदेवमांलयकरिने॥तेवृ-
तिजेतेप्रत्यक्षभगवांननेचड्यांजेपुष्पचंदनादिकतेनासुगंधमांजोडायछे।अनेवाकइंद्रिनिवृतिछे।तेवाणिनुंप्रमाणकरिने।पोते
द्रष्टारूपथईनेतेवाणिनेअग्निदेवतानेविषेलयकरिने॥भगवांननेविषेजोडायछे॥एमविरितेपांचज्ञानइंद्रियोनेपांचकर्मइंद्रियोनिजेवृ-
तियोछे।तेजेतेपोतपोतानाविषयनुंप्रमाणकरिनेतेनोपोतेद्रष्टाथईने॥तेविषयजेमांथिजेउपज्याहतातेमांतेतेविषयनेलयकरिनेतेवृ
तियोजेतेप्रत्यक्षभगवान्मांजोडायछे॥अनेजेदेहमांअस्तियादिकप्रथ्वीनीवृतिछे।तेपृथ्विनुंप्रमाणकरिनेपोतेतेनोद्रष्टाथईनेतेपृथ्विने
जलमांलयकरिने॥तेवृतिभगवानमांजोडायछे॥अनेदेहमांलोहिआदिकजेजलनिवृतिछे॥तेजलनुंप्रमाणकरिने।तेनोपोतेद्रष्टा
थईनेजलनेअग्निमांलयकरिनेतेवृतिभगवानमांजोडायछे।नेदेहमांजठरादिकअग्निनोभागछे॥ तेअग्निनुंप्रमाणकरिने।पोतेतेनोद्र
ष्टाथईनेतेनेवायुमांलयकरिनेतेवृतिजेतेभगवानमांजोडायछे॥अनेदेहमांजेअवकाशनिवृतिछे॥तेआकाशनुंप्रमाणकरिनेपोते
तेनोद्रष्टाथईने॥तेआकाशनेअहंकारमांलयकरिनेतेवृतिजेतेभगवानमांजोडायछे॥अनेजेअहंकारनिवृतिछे।तेअहंकारनुंप्र-
माणकरिने॥केहेतांअनंतकालथयां॥हुंहुंकरूंछुंपणतेमांथि॥कांईतृप्तिथईनथि।एमजाणिनेपोतेतेनोद्रष्टाथईनेतेअहंकारने॥

महत्तत्व मांलयकरिने॥पोतेजेते प्रत्यक्ष भगवाननिमूर्तिमांजोडायछे॥ अनेजेचितछे।तेजेतेचिंतवनादिक महत्तत्वनुं प्रमाण करिने॥
आत्मा पोतेतेनोद्रष्टाथईने तेमहत्तत्वनेप्रधानपुरूषनेविषेलयकरिने॥ पोतेआत्माजेतेभगवानमांजोडायछे॥अनेजे मनछे।तेसंकल्पवि
कल्पादिकप्रधानपुरुषनुं प्रमाणकरिने।।पोतेतेनोद्रष्टाथईनेतेमनेसहित॥प्रधानपुरूषनो प्रकृतिपुरुषनेविषेलयकरिनेपोतेआत्मा
जेतेप्रत्यक्षभगवाननीमूर्तिमांजोडायछे॥ अनेजेबुद्धिछेतेसंसेय निश्चयसहित॥ प्रकृतिपुरुषनुंप्रमाणकरिने॥पोतेआत्मातेनोद्रष्टा
थईने॥ ते बुद्धिये सहिता।प्रकृतिपुरुषने अक्षरब्रह्मजेभगवानना अंगनोप्रकाशकहेतां आतंतिकज्ञानतेनेविषेलयकरिनेपोतेआ-
त्माशुद्ध चैतन्य ब्रह्मनिराकार व्यापकथयोथको॥ भगवानपुरुषोतमनेविषेजोडाई जायछे॥पछेतेनिदृष्टिमां भगवाननीमूर्तिवि
नापिंडब्रह्मांडादिक माईक आकारमात्र आवतोनथि॥एविरित्ते प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संत॥ जिवनेज्ञानआपेछे॥त्यारेजि
वनि जे दशइंद्रियोनिवृतियो॥तथाच्यारअंतःकरणनिवृतियो॥तथापंचभूतनिवृतियो॥तथापंचतनमात्रानीवृतियोतेजेतेपोतपो
तानाविषयोनुं प्रमाण करिने॥तेसर्वेनोपोतेआत्माद्रष्टारूपथईने॥तेते तत्वोजेमांथिजेउपज्याहतांतेमांतेनेलयकरिने॥पोतेआत्माजे
ते शुद्धथईनेपछे भगवान प्रत्यक्षमूर्तितेनेविषेअंतरदृष्टि करिने॥तथाप्रतिलोमपणानुं शुद्धएवुंजेतत्वज्ञान तेणेकरिने॥भगवाननिमूर्ति
नेविषेस्थितिपामेछे॥अनेएवुंज्ञानेजेनेथायछे॥तेने प्रत्यक्षमूर्त्ति भगवाननेविषेसर्वोपरिपुरुषोत्तमपणानुंउत्तमनिरविकल्पनिश्चयथा-
यछे॥ अनेएवोउत्तमनिरविकल्पनिश्चयजेनेथयो॥तेनेज सर्वेजगतनेविषेथीवृतियोउखडिजायछे॥अनेते प्रत्यक्षभगवाननीमूर्तिने-
विषेथि॥सर्वप्रकारेमोहटलिजायछे॥केहेतां गमेतेवांचरित्रभगवान करे॥पण तेचरित्रमांतेनेलेशमात्र संशय थायनहि॥नेतेने
सर्वेचरित्रदिव्यजणाय॥ अनेतेनेप्रत्यक्षभगवाननुं स्वरुप॥अनंतऐश्वर्येसहितभासेछे॥अनेतेनेजसर्वोपरि कैवल्यपदप्राप्ति क
हेछे॥ अनेएवोजेज्ञानिछे॥तेजनिरमोहिछे॥अनेतेज साक्षात्कारसिद्धदशानेपामिरह्योछे॥अनेतेनेज तत्वदर्शिजाणवो॥ ॥
इतिश्री मुख्यसिद्धांत समाप्त॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥ संवत१९ओगणित्रो १४॥ चैत्रना माहावदी
६ छठनेदिवसमाहाराजश्रीहरिकृष्णभगवानंगामश्रीचुडामध्ये॥व्यासभलुशंकरलिखाथरने घेर आथमणे वारनाओरडानिआ

सरिमांगादितकीयेजुक्तढोलियाउपरथिराजमानथयाहता॥अनेकिनखापनोसूरवालनेडगलिधारणकर्‍यांहतां॥नेगुढोरेंटो
पेरिनेकस्कंबलसेलुंकेडेबांध्युंहतुं॥नेएकसेलुंरयमेधारणकर्‍युंहतुं॥नेमुस्तकेसोनेरिकसंबलपाघबांधिहति॥अनेसर्वेअंगने
विषेगुलाबनेजाईनेचमेलिनापुष्पनाआभुषणधारणकर्‍याहतां॥नेललाटनेविषेकेशरनिआडचानेकंकुनोचांदलोकर्‍योहतो॥
नेपोतानामूखारविंदनिआगलसाधुतथादेशदेशनाहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठीहति॥पछेमहाराजनिआरतिधून्यकरिनेसर्वेभ-
क्तजनोएमहाराजनिस्तुतिदंडवतप्रणामकरिनेबेठापछेमहाराजबोल्याजेसर्वेसांभलो॥एकवातकरिएछिये॥जेआजगतनेवि
षेदैविनेआसुरिबेप्रकारनीमायाछे॥तेमांआसुरिमायानाजेजिवछे॥तेनेतोपोतानेपणभगवानमजवानहि॥अनेकोईकजोभ-
गवानभजताहोयतोतेनिनिंदाकरेछे॥अनेतेआसुरिमायानाजीवहोयतेजतो॥चोरिछिनालिदारुमाटिजिवहिंसाचाडिचुगलि
तेमांभरपूरहोय॥अनेएवाजिवनेजोहुकमहाथहोय॥तोजेनेसिक्षानकरविघटे॥तेनेसिक्षाकरे॥अनेजेनेसिक्षाकरविघटेतेनेन-
करे॥एवोजेनालक्षणहोय॥तेनेआसुरिमायानाजिवजाणवा॥अनेजेआसुरिमायानाजिवछे॥तेजेतेदेहनेजपोतानुंरुपमानेछे
अनेतेदेहनेपोतानुंरुपमानिने॥पंचविषयनेविषेलोलुपवरतेछे॥अनेवलिविषयनेविषेलोलुपवरततोथकापणअतिशयमहा-
अज्ञानेकरिने॥अहंब्रह्मास्मिनएवोमिथ्याबकवाकरेछे॥एवामिथ्याभरमकोदात्तहोय॥तेनेपणआसुरिमायानाजिवजाणवा॥
अनेवलिप्रत्यक्षभगवाननाद्रोहनाकरनारा॥तथासतशास्त्रनेखोटाकेहनारातथासतधर्मनेमिथ्यामाननारानेतेउपरथिधर्मवाला
जेवाजणाताहोय॥तोपणतेसर्वेआसुरिमायानाजजिवछे॥एमजाणवुं॥अनेईयेजेदैविसंपतिनाजिवछेतेनेतो॥आस्तिकमति
होय॥माटेतेजिवएमजाणेजेजोभगवाननुंभजनकरसुंनेभगवाननीआज्ञापालिशुंतोआपणाआत्मानोउद्धारथसे॥अनेजोभगवा
नीआज्ञाप्रमाणेनहिवरताय॥तोआपणाआत्मानुअतिशेभुंडुथशे॥नेजमपुरिमांजईनेजमनामाररखावापडशे॥तथाचोरासिमां
जईने॥कुतरागधेडादिकनाअवतारधरिने॥महादुःखभोगववापडशे॥नेतेदुःखकह्यांजायएवांनथि॥माटेजोभगवाननेनहिभ
जियेतो॥एकह्याजेसर्वेदुःखतेजरुरभोगववांपडशे॥एमपोतानामनमांसमजिने॥जेदैविमायानाजिवछे॥तेभगवाननोदृढआ-

श्रयकरीनेजेमभगवाननिआज्ञाहोयतेमनक्रमवचनेवरतेछे॥तेभगवाननीशिआज्ञाछे तोचोरिछिनालिदारूमादीवटलवुंवटला
ववुं॥जिवहिंसा॥असत्यभाषण॥चाडिचुगलि॥दंभकपटादिकजेअधर्मनोसर्गतेनोत्यागकरवो॥अनेधर्मज्ञानवैराग्यनेमाहात्मे
सहीतभगवाननिभक्तितेनेद्रढकरवि॥नेतेनेप्रत्यक्षभगवांनमलवानीइच्छावरत्याकरे॥अनेसत्यधर्मसत्यशास्त्रने॥सत्पुरुषतेनो
द्रढविश्वासहोय॥अनेएवेलक्षणेजुक्तहोय॥तेनेदैविमायानाजिवजाणवा॥अनेएवाजिवहोयतेनेप्रत्यक्षभगवानमलेछे॥पछेएवो
दैविजिवहोय॥तेप्रत्यक्षनोआसरोकरिनेतेभगवान॥तथातेप्रत्यक्षभगवाननाभक्तसंत॥तेजेमकहेतेमकरवानेविषेतत्कालत्त्य
धायेसहितसत्यमानिनेतेनावचनप्रमाणेजवरतवामांडेछे॥एवाजेनालक्षणहोय॥तेनेदैविजिवजाणवा॥अनेएवादैविजिवहो
यतेनेजप्रत्यक्षभगवानेनेभगवाननासंतनोअखंडसबंधरहेछे॥नेतेनेभगवाननास्वरूपनोउत्तमनिरविकल्पनिश्चयपणतत्का
लथायछे॥अनेतेजन्ममरणनादुःखथकिमुकाइनेपरमपदनेपामेछे॥अनेजेआसुरिजिवछे॥तेनेतोजोकदापिप्रत्यक्षभग
वांननोजोगथयोहोय॥तोपणतेनेभगवाननास्वरूपनोनिश्चयथायजनहिं॥केमकेजेमशिंगडियोवछनागहोयतेनेभगवान
नाथालमांमुकिये॥तोपणशिंगडियोवछनागतेझेरजरहे॥पणपोतानागुणनोत्यागकरेनहिं॥तेमजजेआसुरिजिवछे॥तेपण
भगवाननासंबंधमांआव्योहोय॥तोपणपोतानाजेआसुरिसंप्रदायनाजेगुण॥तेनोत्यागकरतानथि॥अनेआसुरिजिवछे॥
तेतोनर्कचोराशिमांजजायछे॥नेजन्ममृत्युनेगर्भवासनांमहादुःखनेपामेछे॥अनेतेआसुरिमायानाजिवनुंकोईकालेक
ल्याणथतुंजनथि॥माटेजेमुमुक्षुजिवहोय॥तेनेदैविनेआसुरि॥एबेप्रकारनाजिवतेनेउपरकह्याएवेलक्षणेकरिने॥ओलखिने॥
आसुरिजिवथकिअतिशेदुररहेवुं॥नेतेनोसंगकरवोनहिं॥अनेजेआसुरिजिवनोसंगकरेतेनाजन्मनेखराबकरिनेपापनेमारगे
चलाविने॥पापनिमूर्तिबनाविमुकेछे॥नेमहादुःखनेपमाडेछे॥माटेएवुंसमजिने॥जेमुमुक्षुंकेहतोकल्याणनाखपवालाहोय
तेने॥आसुरिनासंगनेपापरूपजाणीने॥तेनोत्यागकरवो॥अनेभगवानने॥भगवाननासंतविषयनात्यागितेनेविषे॥मनक्र
मवचनेसंगसोबतेकरिनेजोडाईजवुं॥नेतेसाथेलेशमात्रअंतरायराखवोनहिं॥अनेतेनेविषेद्रढआत्मबुद्धिकरवि॥अनेतेभग

थांननेभगवाननासंतनावचननेविषेविश्वासराखीने॥भगवाननुंभजनस्मरणकरेछे॥एवोजेमुमुक्षुतेतोनेत्रमिचिनेच
ल्योजायतोपणतेकल्याणनामारगथकिपडेयनहि॥नेआखडेयनहिं॥अनेएवोहोयतेतोजरूरभगवाननाअक्षरधामनेजप
मेछे॥ ॥इतिश्रीसुखसिद्धांतसमाप्त॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्॥१९ओगणिशे॥१५॥चौदनामहा
वदि७सातमनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवान॥गामश्रीचुडामध्येव्यासभलुशंकरलिलाधरनेघेर॥आथमणाबारना
ओरडानीओसरिमांढोलियाउपरगादितकियाबिछावीनेबिराजमानथयाहता॥नेकिनखापनोसुरवालनेजामोधारणकर्यां
हतांनेसोनेरिपागमुस्तकेबांधिहति॥नेगुंदीरटोनकसंबलसेलुंकेडेधारणकर्यांहतां॥नेएकसेलुंखभेधारणकर्युंहतुं॥ने-
कंठनेविषेपुष्पनाहारघणाकधारणकर्याहता॥अनेपुष्पनाबाजुबंधमजरातोरागुछनेपोंचीयो॥तेसर्वेअंगमांधारणकर्याहतां॥
अनेललाटनेविषेकंकुनोचांदलोकर्योहतोनेपोतानामुखारविंदनिआगलसाधुतथाघणाकहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठिहति॥
पछेमहाराजसर्वेभक्तजनोप्रत्येबोल्याजे॥दुर्लभोमानुष्योदेहो॥देहीनांक्षणभंगुर॥तत्रापिदुर्लभ्यंमन्ये॥वैकुंठप्रियदर्शन॥एश्लो
कमांएमकह्युंछेजे॥मनुष्यनोदेहमहादुर्लभछे॥पणतेदेहक्षणमात्रमांनाशथईजायएवोछे॥तोपणजोतेदेहेकरिनेप्रत्यक्षभग-
वानमले॥अनेकांभगवाननाएकांतिकसंतमलेनेतेनुंदर्शनथाय॥तेअतिदुर्लभछे॥पणतेभगवाननेभगवाननासंतमल्या-
विनाएकलोमनुष्यनोदेह॥तेकांईयेदुर्लभनथी॥केमकेदेहतोमुत्रनोविकारछे॥माटेदेहमांकांईसारवस्तुनथि॥अनेतेदे-
हनोपलमात्रनोनिरधारपणनथी॥जेमपाणिमांपरपोटाथायछे॥नेनाशपामिजायछे॥तेमदेहपणपाणिनापरपोटारूपछे
॥माटेजेनेकल्याणनोखपहोय॥नेपोतानाआत्मानेजन्ममरणनादुःखथकिमुकाववोहोय॥तेनेदेहनोपलमात्रनोनिरधारन-
राखवो॥अनेदेहसारोहोयतेवामांसावधानथईनेप्रत्यक्षभगवान्॥तथाभगवाननासंत॥तेनोसमागमकरिने॥धर्मज्ञानवै
राग्यनेमहात्म्येसहित॥भगवाननीभक्तिसिद्धकरिने॥पोतानाआत्मानेअनादिकालनुंमायानुंबंधनछे॥तेथकिमुकावीने॥
निर्वासनिकथईने॥परममोक्षनेपामवुं॥तेपणमनुष्यदेहेकरिनेमोक्षनेपमायछे॥तेसारूमनुष्यदेहनेशास्त्रमांदुर्लभकह्यो

छे॥पणनेमनुष्यदेहपामिने जेविषयभोगवेछे॥नेसत्पुरुषनोसमागमनथिकरता॥तेतोमहापापिछे॥ केमकेस्त्रियादिकविषय-
भोगतोकुतरागधेडानेपणछे॥माटेविषयभोगवासारुंमनुष्यनोदेहनथि॥अनेमनुष्यदेहनेदेवताइछेछे॥तेपणकांईविषयभोग-
ववासारुंनथिइछता॥केमकेमनुष्यनाकरतांतोदेवतानेकोटिघणाविषयउत्तमछे॥अनेदेवतानाविषयआगलतोमनुष्यनाविषय
नेनर्कजेवाकह्याछे॥जेममनुष्यनुनर्कछे॥तेकुतराकागडानु॥खाणुंछे॥तेममनुष्यनाविषयछे॥तेदेवतानुंनर्कछे॥माटेविष-
यभोगववासारुंदेवतानेमनुष्यनोदेहनथीइछता॥मनुष्यनोदेहतोएटलासारुइछेछे॥जेतेदेहेकरीनेप्रत्यक्षभगवान्केभगवा-
ननासंतपोतानेमले॥अनेतेनोसमागमकरिने॥ज्ञानपामवुं॥अनेतेज्ञानेकरिनेपंचविषयनीवासनानोत्यागकरिनेभगवानमं
जिनेजन्ममरणनादुःखथकिमुकाईनेभगवाननाधामनेपामवुं॥एटलासारुदेवताजेतेमनुष्यदेहनेइछेछे॥ अनेमनुष्यदेहपा-
म्याविनादेवतानालोकमांजिवनोमोक्षथतोनथि॥ तथापशुपक्षादिकनादेहेकरिनेपणभगवानभजतानथि॥तेजिवनोमोक्ष
पणथतोनथि॥एटलासारुमनुष्यनोदेहदुर्लभकह्योछे॥ माटेपोतानेमनुष्यनोदेहहोय॥अनेप्रत्यक्षभगवान्॥तथातेभगवा-
ननासंत॥पंचविषयनात्यागि॥तेनोसमागमपोतानेमले॥ त्यारेजिवनोमोक्षथायछे॥पणतेविनाएकलामनुष्यनेदेहेकरिने
जिवनोमोक्षथतोनथी॥केमकेजिवनेचोराशिफरतांफरतांअनंतवारमनुष्यनादेहआविगयाछे॥तोपणतेमनुष्यनेदेहेक-
रिनेजिवनोमोक्षथयोनथि॥केमकेजोमोक्षथयोहोततोचोराशिमांजन्ममृत्युनादुःखशुंकरवापामे॥माटेमनुष्यनादेहनेकल्या
णकारीनोसंबंध॥तेनेजअतिशेदुर्लभकह्योछे॥तेमाटेदुर्लभसमोआजतमारेप्राप्तथयोछे॥ माटेसावधानथईनेपोतानाआ
त्मानुंकामसत्संगकरिनेसुधारिलेवुं॥अनेस्त्रिछोकरांनेअर्थेजेरातदहाडोमेहेनतकरेछे॥तेनुंतोकांइयेफलनथि॥अनेएतो-
सर्वेकोईकेनुंनथि॥अनेजिवनेउलटांबंधननांकरनारांछे॥अनेजेभगवाननेभगवाननासंतनेप्रसन्नकरवानेअर्थेसेवाभक्ति
करेछे॥तेनुंतोकल्याणथायछे॥अनेअंतसमेभगवान्तेनेमोटाभयथकिरक्षाकरिनेपोतानाधामनेपमाडेछे॥तेपूर्वेपणजे-
णेजेणेप्रगटभगवाननेभगवाननासंतनेप्रसन्नकरवानेअर्थेभक्तिसेवाकरिछे॥तोतेपणपरमपदनेपामिगयाछे॥अनेतेनां

नामपणशास्त्रमां लखाणां छे॥ माटेआसमेपण जेजेअमनेप्रसन्नकरवानेअर्थेअमारिआज्ञाप्रमाणे।अमारीसेवाभक्तिक
रशे॥तेनाभाग्यनोपारनथि॥अनेतेसेवाभक्तिनाकरनारा देहछतेज ब्रह्मरूपथईजशे॥अनेतेने जन्ममृत्युनोभय देहछतांजट-
लिजशे॥अनेतेनेदेहनुंनिमित्तआविरहेशे॥ त्यारे जेम कोई कवस्त्र शरिरउपरथि उतारिनेकोरेमुके॥ तेमब्रह्मरूपदेहतेनोत्या
गकरिने॥ दिव्यएवोजेब्रह्ममयतनु॥तेनुंधारणकरिनेअक्षरधाममांभगवाननीसमिपेअखंडनिवासकरिनेरहेशे॥केमके
सर्वेअवतारनोअवतारिएवोजेहुं॥त आजमारोएवोसंकल्पछे॥जेजेमाराससंबंधनेपामिने॥मारिसेवाभक्तिधर्ममांरहिनेकर
शे तेनेमाराधाममांलेईजवा छे॥ माटेआजजेनेमनुष्यनोदेहआव्योछे॥अनेतेधर्ममांरहिनेअमारिसेवाभक्तिकरेछे॥ तेनाबहु-
जमोटांभाग्यछे॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्१९ओगणिशे१४चौ
दनामहावदि।८।अष्टमिनेदिवस॥महाराजश्रीहरिकृष्णभगवांन॥गामश्रीचुडामध्येभटहरिभाईजिवरामनेघेरउगमणाबारनाओ
रडानिओसरिमांढोलियाउपरगादितकियाबिछाविनेविराजमानथयाहता॥नेसर्वेजरियानीवस्त्रधारणकर्यांहतां॥नेपुष्पना
गुथेलाहारतोरागजराबाजुपोंचीयोविंटियोछोगलांतेधारणकराव्यांहता॥अनेललाटनेविषेकेसरनिआड्यनेकंकुनोचांदलोक
र्योहतो॥अनेपोतानामूखारविंदनीआगळसाधुतथादेशदेशनाहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठिहति॥पछेमहाराजबोल्याजेसर्वे
सांभळो॥एकतमाराहितनीवार्ताकरुंछुं॥जेभगवाननेदर्शनेआववुं॥अथवाभगवाननासंतनेदर्शनेजवुं॥त्यारेदर्शननेप्रश्न
बेकरवां॥त्यारेतेणेदरशनपुरुकर्युंकहेवाय॥तेमांदरशनतेशुंतोभगवाननेभगवाननासंतनास्वरूपनेअंगोअंगनिरखिने॥अं
तरमांउतारवुं॥तेनुंनामदर्शनकर्युंकहेवाय॥अनेहवेप्रश्नतेशुं॥तोजिवजेतेपोतानाआत्मस्वरूपनेनथीजाणतो॥तथापरमात्माने
नथिजाणतो॥अनेतेणेकरिनेदेहमिथ्याछे॥तेनेसत्यमानिनेझांझवारूपएवाजेपंचविषय।तेनेपामवानीवासनायेकरिने॥वारमवा
रजन्ममृत्युनेजिवपांमेछे॥तेरूपिजिवनेमोटोसंशयछे॥तेसंशयनेटाळवासारु॥सत्पुरुषनेप्रश्नपुछवुं॥पछेतेसत्पुरुषजीवनेजन्म
मृत्युरूपिसंशयटळे।तेनेअर्थेजेजेवार्ताकरे॥तेवार्तानिएकाग्रवृतिकरिनेपोतानेसांभळवी॥अनेतेवार्तासांभळीनेपोतानाअंतर

मांधारि राखवि॥अने तेवार्तानुं मनमां मनन करवुं॥नेतेवार्ताने नित्य नविने नविरा खवि॥नेते सत्पुरुषे॥जेविरित्येवर्तेषानुं क
हुं होय॥तेविरिते वर्तवामांडवुं॥अने एवीरिते जे दरशन प्रश्न करिने वरतवा मांडे छे॥तेने जन्ममृत्यु रूपि महारोग ते टलि जाय छे॥नेते
ने आत्मा परमात्मानुं साक्षात्कार ज्ञान थाय छे॥नेते जिवनो मोक्ष थाय छे॥माटे एविरित्ये समजिने सत्पुरुषनां दरशन करवां॥एज-
मनुष्यदेहनो लाभ छे॥अने तेनेज दर्शननुं महाफल थाय छे॥अने तेनेज जन्ममृत्युनो संशय टले छे॥अने जन्ममृत्युने टाले एवा जे
सत्पुरुष तेनुं जे दरशन तेपण अनिशे दुर्लभ छे॥अने एवा सत्पुरुषनुं दरशन थाय॥त्यारे पोतानुं मोटुं भाग्य मानवुं॥अने वलि जेने म-
हासुख वियाथवुं होय॥तेने एम समजवुं॥जे माईक पंचविषय छे॥तेतो स्वप्नानासुखडा जेवा छे॥जेम स्वप्नामां सुख जेएटलां पदार्थ
भोगविये॥पण तेजाग्यापछि मिथ्या थइ जाय छे॥तेम पंचविषयने सुख जेएटला भोगवे॥पण अंत समो आवे छे त्यारे॥तेएम जाणे जे
कोईदहाडे विषय भोगव्या जनथि॥अने ते अंतसमो तो सर्वेने एकदिवस जरूर आवनारो छे॥अने ज्यारे अंतसमो आवशे त्यारे पहेलां
॥सुख जेएटला विषय भोगव्या हशे॥तेनुं सुख जेते लेशमात्र रहेशे नहि॥एम जाणिने विषय निवासनानो त्याग करिने॥पोताने मल्या
जे प्रत्यक्ष भगवान॥तेने सुखे करिने सुखमानवुं॥नेतेनो पोताने केफ राखवो॥जे अनंतकोटि ब्रह्मांडना पति॥नेसर्वेना कारण एवा
जे परमात्मा भगवांन॥जेनी आज्ञामां सूर्यचंद्र रात्यदहाडो फरे छे॥अने कालकर्म ने माया ते जेनि आज्ञाथकि उत्पत्ति स्थिति ने प्रल
यकरे छे॥अने जेने अर्थे मोटा मोटा राजा ते राज्यनो त्याग करिने वनमां तप करे छे॥एवा जे भगवांन् तेसुं ने आज प्रगट मल्या छे॥माटे
मारा भाग्यनो पार नथि॥एम महा अलमस्त थईने॥विषयना सुखने तुच्छ जाणिने॥तेनो त्याग करवो॥अने एक भगवांनने भगवांन
ना सत ना समागमना सुखे करि निज महा आनंदमां रहेवुं॥ ॥इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्री हरिकृष्णाय नमो-
नमः॥ ॥संवत् १९ ओगणिशे चौदना महावदि ९ नवमिने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान् गाम श्री चुडामध्ये॥व्यास
वेणिराम लिलाधरने घेर॥आथमणा बारना ओरडानी ओसरि मां ढोलिया उपर गादि तकिया बिछाविने॥बिराजमान थया हता॥
ने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां॥नेमुस्तक उपर कसंबल फेंटो बांध्यो हतो॥अने सर्वे अंगने विषे॥पुष्पनां आभूषण धारण क

त्यांहता ।।नेपोतानामुखारविंदनिआगलसाधुतथादेशदेशनाहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठिहती ।।अनेतेसमेसर्वेहरिभक्तोयेभेट्य
सामग्रीजेवस्त्रआभूषणद्रव्यफलपुष्पधूपदिपेकरिनेमहाराजनिपूजाकरिनेपछे ।।सर्वेबेठा ।। पछेमहाराजसर्वेहरिभक्तप्रत्येबो-
ल्या ।।जेआजगतनेविषेबेप्रकारनाजिवछे ।। तेमांएकदैविजिवछे ।। नेएकआसुरीजिवछे ।।तेमांजेआसुरिजिवछे तेतोपोतेअधर्मे
नेमार्गेचालेछे ।।अनेपोतानांस्त्रिछोकरांकुटुंबिहोय ।।तेनेपणअधर्मनेमार्गेचलावेछे ।। नेतेनेभुंडीभुंडीक्रियाओशिखवेछे ।।अने
पोतेपणनरसिजक्रियाकरेछे ।।अनेएवाजेअधर्मिहोय ।। तेनेसत्पुरुषनोसमागमकरयोगमेज नहिं ।।केमकेअधर्मेकरिनेएनिबुद्धिभ्र
ष्टथइगईछे ।।माटेतेणेधर्मनेमार्गेचलायजनहिं ।।जेमअफिणनोबंधाणिहोय ।।तेनेएमकहियेजेतुनेसाकरनालाडवाआपियेजोअ
फिणमुंकिदेतो ।। त्यारेतेबंधाणिअफिणनोत्यागकरिने ।।लाडवालेवानोसंकल्पकरेजनहिं ।।अनेतेअफिणेकरिनेहेरानथतोहो
यतोपणतेअफिणविनालाडवानेमहादुःखरुपजाणे ।। तेमअधर्मिजिवनेसत्पुरुषनोसंगकरवोगमतोनथि ।।अनेजेदैविजिवछे ।।
तेतोपोतेपणधर्मनेमार्गेजचाले ।।अनेपोतानांस्त्रिछोकरां ।।सगांसंबंधितेनेपण धर्मनेमार्गेचलावे ।।अनेएवाजेदैविजिवहोय ।।ते
जसत्पुरुषनोसमागमकरेछे ।।नेपोतानांस्त्रिछोकरांसगांसंबंधिहोयतेनेपणसत्पुरुषनोसमागमकरावेछे ।।अनेतेपोतानांस्त्रिछो
करांजेमजेमसत्पुरुषनोवधुवधुसमागमकरे ।। तेमतेमजेदैविजिवहोय ।। तेवधुवधुराजिथाय ।।पणतेमांइरशानकरे ।। अनेपोते
भगवाननोआश्रयकरिनेभगवाननुंभजनस्मरणकथाकिरतनकर्याकरे ।।नेपोतानांस्त्रिछोकरांनेपणभगवाननुंभजनस्मरण
करावे ।।एविरित्यनांलक्षणजेनेविषेहोयतेनेदैविजिवजाणवो ।।अनेएवोदैविजिवहोयतेनाआत्मानोमोक्षथायछे ।।अनेतेनो
जेजेसंगकरे ।। तेनुंपणरुडुंथायछे ।।अनेएवादैविजिवहोय ।।तेनेप्रत्यक्षभगवाननुंस्वरूपओलखायछे ।।अनेजेआसुरिजिवहोय
।।तेनाओलख्यामांभगवाननें भगवाननासंत ।। आवताजनथि ।।अनेतेनोजेसंगकरे तेनेपणभगवाननामार्गथकिपाडिनाखेछे
।।माटेजेनेपोतानाआत्मानुंरुडुंकरवानीइच्छाहोय ।।तेनेतोउपरकह्यांजेदैविआसुरिनांलक्षणतेनेओलखीनेआसुरिनासंगनो
सर्वप्रकारेत्यागकरवो ।।अनेएवाआसुरिस्वभाववालाकोईकपोताना कुटुंबमांहोय ।। तोतेनासंगनोपणत्यागकरवो ।।अनेतेआ

स्फारिकोईकउपाधिकरेतोपणतेनोभयराखवोनहिं॥ केमकेअंतेज्यांत्यांआस्फारिनोजनासथवानोछे॥ नेभगवाननाभक्तनीजजयथ
वानीछे॥ तेपूर्वेपणभगवाननाभक्तनेआस्फारिजिवेउपाधियोकरियोछे॥ नेतेसर्वेनोनासथईगयोछे॥ नेभगवांननाभक्तनोजजयथयो-
छे॥ एमजाणिनेभगवाननाभक्तनेआस्फारिजिवनोडरतरणामात्रपणनराखवो॥ अनेआस्फारिजिवबहुबलवानजणातोहोय॥ तोपणते-
नोडरनराखवो॥ केमकेपूर्वे॥ प्रल्हादनाद्रोहनोकरनारोहिरणाकशिपुक्यांथोडोबलवानहतो॥ पणतेनोक्षणमात्रमांनासथईगयोछे
॥ नेबिजापणकेटलाकभगवाननेभगवाननाभक्तनाद्रोहनाकरनाराकंशशिशुपालजरासिंधादिक॥ महाबलवांनहता॥ पणतेसर्वेनोना
सथईगयोछे॥ नेभगवाननेभगवाननाभक्तनोजजयथयोछे॥ एमजाणिनेभगवाननाभक्तहोयतेनेआस्फारिजिवनोरंचमात्रभयराखवोनहि॥
नेअलमस्तपणेरहिनेभगवाननुंभजनस्मरणनेसत्संगकरवो॥ अनेतेआस्फारिनासंगथिछेटेरेहेवुं॥ नेतेसाथेपोतानेलेणदेणपणकरवुंन
हिं॥ अनेपोतानेविषेआस्फारभावनराखवो॥ तेआस्फारभावतेशुं॥ तोप्रत्यक्षभगवाननांचरित्रनेविषेसंशयथाय॥ एजआस्फारभावछे॥
माटेभगवाननाभक्तनेकोईकआस्फारिनेसंगेकरिने॥ अथवापोतानामननेसंकल्पेकरिनेपोतानेभगवाननाचरित्रमांसंशयथयोहो-
यतोतेसंसयनेभगवाननासंतनोसमागमकरिनेटालिनांखवो॥ अनेदैविएवाजेभगवाननाभक्ततेनोसमागमकरवो॥ अनेदिक
सेदिवसे॥ भगवाननाचरणारविंदनेविषेप्रितिकरावि॥ अनेआसंसारनास्फखतोसर्वेस्वप्नतुल्यछे॥ नेझांझवानाजल जेवांछे॥ ने
अंतेमिथ्याछे॥ अनेसाचोलाभतोपोतानेभगवाननेभगवाननासंतनिप्राप्तिथायएजछे॥ जेजेणेकरिनेपोतानाआत्मानेजन्ममरण
नोदुःखटलिजायनेजिवमहास्फखनेपांमे॥ अनेजेवुंभगवान्भजवामांस्फखछे॥ तेवुंस्फखतोचौदलोकनाराज्यनेविषेपणनथि॥
अनेतेस्फखनेपामवासारु॥ पूर्वेपणकेटलाक॥ स्वायंभुमनुआदिकराजातेणराज्यनोत्यागकरिनेवनमांजईनेभगवाननुंभजनक-
र्याकरता॥ माटेसाचोलाभनेमनुष्यदेहपाम्यानुंफल॥ तोप्रत्यक्षभगवांननेभगवाननासंतमले॥ अनेतेनीआज्ञामांरहीने॥ ते
नुंभजनकरवुंएजछे॥ अनेजेस्त्रिछोकरांछे॥ तेनोजोभगवाननहिंभजाय॥ तोचोरासिमांकुतरानोअवतारआवसे॥ त्यारेकुतरि
योघणियोमलशेनेकुतरिओनोअवतारआवशे॥ त्यारेकुतराघणायमलशे॥ अनेगलुडियांनोपणपारनहिरहे॥ अनेभुंडियानोअव

तारआवशेत्यारेपणघणांकस्त्रिछाकरांथाशे।।अनेभालोकमांपणराजारंकसौसरखेमाथेछे।।केमकेराजानेपणएकशेरअन्नखावाजो
ईये अनेरांकनेपणशेरअंनजोईये।।अनेवधुहोयतेतोपडयुंरहेवानुंछे।।अनेतेनेमोहेकरिनेदेखिनेराजिथायछे।।केमकेसोमणस्करवडुंहोय।।
तोपणतेमांथिएकसेरस्करवडुखवाय।।पणवधुखवायनहिं।।अनेजोरसनिआशक्तियेकरिनेरसनाइंद्रिनेवसथईनेवधुखायतोडलटुंमहादुः
खथाय।।माटेदेहनिरवाहनेअर्थेअवस्यजोईयेतेटलुंतोराजारंकसरवेनेसरखुंमलेछे।।नेबाकितोमोहेकरिनेपंचविषयनांपदार्थनेदेखिनेदुः
खनेविषेसुखमनायछे।।पणविषयमांसुखजेतेलेशमात्रनथि।।माटेभगवाननाभक्तहोयतेनेतोस्थुलसूक्ष्मनेकारणएत्रणदेह।।अनेजाग्रत
स्वप्ननेसुषुप्तिएत्रणअवस्था।।नेरजतमनेसत्व।।एत्रणगुण।।तेथकिपरावुंजेगुणातितअक्षरब्रह्म।।तेनेपोतानुंस्वरुपजाणवुं।।अनेपंचविष
यनिजेअसूमवासना।।तेनोत्यागकरिनेभगवाननेभगवाननासंतनेविषेप्रितिकरवि।।अनेजेएविरितेसमजिनेभगवाननेभगवाननासंतने
विषेप्रितिकरेछे।।तेतोदेहछतेब्रह्मरुपथायछे।।अनेतेनेपंचविषयभोगव्यानिआशक्तिरेहेतीनथि।।केमकेएणेतोसर्वेनुंप्रमांणकरिराख्युंछे
।।माटेतेनेकोईविषयमांमोहपांमेनहिं।।अनेएविसमजणवालाभगवाननाभक्तछे।।तेतोबिजाघणाकजिवोनोउद्धारकरेछे।। ।।इतिश्रीमु
खसिद्धांत।।समाप्त।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ।।संवत।।१९।।ओगणिशे।।१४।।चौदना।।माहावदि।१०दशमिनेदिवस मा
हाराजश्रीहरिकृष्णभगवान्‌गामश्रीचुडामध्येव्यासवेणिरामलिलाधरनेघेरआथमणाबारनाओरडानीओसरिमांढोलियाउपरगादितकि
यानखावीनेविराजमानथयाहता।।अनेसर्वेकसुंबलवस्त्रधारणकरयाहतांनेसर्वेअंगनेविषेपुष्पनाआभूषणशोभिरह्यांहतांअनेकंकुनो-
चांदलोकरयोहतो।।नेपोतानामुखारविंदनीआगलसाधुतथादेशदेशनाघणाकहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठीहति।।पछेमहाराजबोल्याजे
आजिवेकेटलाकतो।।रजोगुणिकर्मेकरिनेविषयभोगव्याछे।।अनेकेटलाकतमोगुणिकर्मेकरिनेविषयभोगव्याछे।।अनेकेटलाकसत्व
गुणिकर्मेकरिनेविषयभोगव्याछे।।एविरित्येजिवेचोराशिमांविषयवासनायेकरिनेअनंतभोगभोगव्याछे।।तेविषयनारागरुपिजिवमां
कांटोवाग्योछे।।अनेतेविषयनारागरुपिकांटानीपिडायेकरिनेजिवजेतेजन्ममृत्युरुपिमहाकष्टनेपांमेछे।।अनेएरागरुपिकांटोकोईदे
वब्रह्मादिककाढवानेसमर्थनथि।।केमकेजिवजेतेअतिशेसूक्ष्मछे।।अनेतेजिवमांविषयनारागरुपिकांटोवाग्योछे।।मातेतेकांटा-

नेकाढवानेकोइ्समरथनथि॥ केमकेजिवतोसर्वेनोद्रष्टाछे॥ तेघस्यद्रष्टानिपिडानेकेमटालिशके॥ नजटालिशके॥ अनेद्रष्टाहोयतेघस्यनि-
पिडानेटाले छे॥ तेमपिंडब्रह्मांडादिक॥ तथादेवब्रह्मादिक॥ तथावैराटप्रधानपुरुषनेमुलप्रकृतिपुरुषस्कधिनासर्वेआकारमात्र॥ तेसर्वेआ-
त्मानाघस्यपदार्थछे॥ अनेआत्मातेनोद्रष्टाछे॥ माटेदेवब्रह्मानेप्रकृतिपुरुषनालोकमांहेनोकोईपुरुष॥ तेजेतेआत्मानेरागरुपिजेकांटोतेने
काढवानेसमर्थनथि॥ माटेतेजिवनेजेरागरुपिकांटोछे॥ तेनेकाढवानेतो तेजिवनाद्रष्टाएवाजेपरमात्माभगवान॥ तथातेभगवाननासाध-
र्म्यपणानेपाम्याएयाजेनिर्वासनिकसंत ब्रह्मरुपमुक्ततेकाढवानेसमरथछे॥ केमकेभगवाननेभगवाननासंततेतोजिवनाजिवनछे॥ ने
आत्मानाआत्माछे॥ नेअक्षरनाआधारछे॥ नेसर्वेआत्मानाअंतरजामिछे॥ नेसर्वेनाआत्मानाप्रकाशकछेएवाजेभगवान्नेभगवाननासंत॥
तेजेतेजिवोनीउपरदयाकरिनेमनुष्यस्वरुपनुंधारणकरिने॥ पृथ्विउपरपधारेछे॥ अनेजिवनेविषयनारागरुपिकांटोचेतन्यमांवाग्योछेतनेज्ञां
नरुपिशस्त्रेकरिनेकाढेछे॥ अनेज्यारेवासनारुपिकांटोजिवनाचेतन्यमांथिनिसरिजायछे॥ त्यारेजिवजेतेमहाशान्तिनेपामेछे॥ नेजन्ममृत्यु
रुपिजेमहापिडातेटलिजायछे॥ तेज्ञानरुपिशस्त्रकेवुंछेतोअतिशेसूक्ष्मथिपणसूक्ष्मछे॥ नेसुध्यछे॥ नेप्रकाशवानछे॥ अनेतेज्ञाननाआ
धारनेप्रकाशकपणप्रत्यक्षभगवाननेभगवाननासंतछे॥ पणतेप्रत्यक्षभगवाननेभगवाननासंतविनाबिजाकोईपासेएवुंज्ञाननथि॥ मा
टेआसमेजेनेमनुष्यनोदेहआव्योछे॥ नेजेनेआसत्संगनोजोगमत्योछे॥ तेनांबहुजमोटांभाग्यछे॥ केमकेपोतानेमनुष्यनोदेह॥ नेप्रगटभ-
गवाननेभगवाननासंतनिप्राप्तिथई॥ एजअतिशेदुर्लभलाभछे॥ माटेलाभनेअतिजतनकरिनेराखजो॥ पणअणसमजणेकरिनेगाफलाईने
राखवि॥ नेसत्संगनोजोगअखंडराखवो॥ एजसर्वेजीवनीहितवार्ताछे॥ एमकहिनेमहाराजउठ्यातेपोतानेउतारेपधार्या॥ ॥
इतिश्री सुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत् १९ओगणिशे १४ चोदनामहावदी ११एकादशिनेदि
वसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवान्गामश्रीचुडामध्येव्यासदयालजिलिलाधरनेघेरआथमणाबारनाओरडानीओसरिमांगादितकियेजुक्त
ढोलियाउपर॥ विराजमानथयाहता अनेसर्वेजरियानीवस्त्रधारणकर्यांहतां॥ नेपुष्पनांआभूषणसर्वेअंगमांशोभिरह्यांहतां॥ नेललाटने
विशेकेसरनिअस्चानेकंकुनोचांदलोकर्योहतो॥ नेपोतानामूखार्विंदनिआगलसाधुतथादेशदेशनाहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठिहति॥

पछेमहाराजबोल्याजेसर्वेसांभलजो॥एकवार्ताकरियेछियें॥जेआसर्वेजिवछे॥तेनेपंचविषयनिवासनाअनादिनीछे।तेवासनायेकरिने
आत्मापरमात्मानास्वरूपनेभूलिने॥तेविषयनेपांमवासारुं॥वीषयनीउपासनाकरेछे॥जेमभगवाननाभक्तभगवाननेपांमवासारुंभगवान-
निउपासनाकरेछे॥तेमवासनावालाजिवविषयनेपामवासारुंविषयनिउपासनाकरेछे॥तेकेविरितेउपासनाकरेछे॥तोकामभोगनेपामव
सारुं॥वेश्याओनेभवायातेसारांसारांवस्त्रनेघरेणांपेहेरिनेजेनानाप्रकारनांगानतानकरेछे।नेतेनेजेजुवेछे॥तेकामनेजउपजाववासा-
रुंजुवेछे॥अनेजेविवाहमांसारांवस्त्रघरेणांपहेरेछे॥तथासारासारारसजमेछे॥तथाफटाणांगांणांस्त्रियोगायछे॥नेतेनेपुरुषसांभलेछे
॥तेसर्वेकामनेउपजाववासारुंजसांभलेछे॥अनेजेसोनिनानाप्रकारनांघरेणांघडेछे॥तेपणकामनेजउपजाववासारुंघडेछे॥अनेजेटला-
चिचोडाबोलेछे।तथाकोसनांपईडांफरेछे॥तेसर्वेकामनिजउपासनाछे॥अनेढोलनगारांसरणाईआदिकवाजिंत्रवाजेछे।तेपणकामने
जउपजाववासारुंवागेछे॥अनेलिलापिलादिकचित्रविचित्रभातनारंगबनाव्याछे॥तेपणकामनेजउपजाववासारुंबनाव्याछे॥अनेखाटा
खारातिखानमतमागल्याचिकणादिकरसबनाव्याछे॥तेपणकामनिजउत्पत्तिनांकारणछे॥अनेअंतरचंदनादिकसुगंध।तेसर्वेकाम
निजउत्पत्तिसारुंछे॥अनेनानाप्रकारनिसेजाओढोलियाहिंडालाखाटो॥मेडियोबंगलाएआदिकसर्वेपदार्थतेपणकामनिउत्पतिकर-
वासारुंछे॥अनेघोडाहाथिपालखीओमेंनावेहेलोआदिकसर्वेकामनेजउपजाववासारुंछे॥एविरितेआविश्वमांपंचविषयनीकामना
रूपिफांसियोरचिछे॥अनेतेफांसियोमांअज्ञानिजिवतेपडेछे॥नेतेमांविषयिजिवरचिपचिरहेछे॥जेमबोकडोकसाइनेघेरनिलिधोखाई
नेरचिपचिरहेछे॥तेमजिवजेतेकालरूपिकसाईनेघेर॥निलिधरोरूपपंचविषयनापदार्थनेभोगविनेरचिपचिरह्योछे॥पणजेमबोकडानेक
साईहलालकरनारोछे॥तेनिबोकडानेखबरनथितेमकसाईरूपजेकाल॥तेजिवनेहलालकरशेकहेतांकालअचानकउपाडिजासे॥
पणतेनीबोकडाजेवाजेअज्ञानिजिवतेनेखबरनथि॥अनेपंचविषयनेभोगववेकरिनेजिवनिविप्रितभावनाथईगईछे॥अनेतेविप्रितभा
वनायेकरिनेआत्मापरमात्मानेभूलिनेविषयरूपिफांसिमांजडाईरह्योछे॥अनेतेजिवजेतेविषयनेजजिवनरूपमांनेछे॥अनेजेभगवानने
भगवाननाएकांतिकसंत॥प्रगटथायछे॥तेतोजिवनेविषयथकिमुकाविनेमायापरकरवासारुंप्रगटथायछे॥तेभगवाननेभगवान-

नासंतज्यारेपंचविषयनुंखंडनकरिने तेथकिमुकाव्यानुंकरेछे॥ त्यारेजेदैविनेमुमुक्षुजिवहोय॥ तेतोघणाखुशिथायछे॥अनेतेजिवजे
ते भगवाननीआज्ञाएकरिने॥अधर्मअनितीफेलफितुरादिकनोत्यागकरिने॥धर्मज्ञानवैराग्यभक्तिशिलसंतोषादिकजेरूडागुणतेनेदृढक
रिनेराखेछे॥अनेपोतानांइंद्रियोअंतःकरणनेवशकरिनें॥परमेश्वरजेप्रत्यक्षमूर्त्तितेनेविषेजोडिदेछे॥अनेतेनोमोक्षथायछे॥अनेजेआसु
रिजिवहोय॥तेनेतोज्यारेभगवानप्रगटथायत्यारेउलटुंदुःखथायछे॥नेतेतोएमजाणेजेअमाराकालप्रगटथयोछे॥तेकृष्णाअवतारमांकंस
नेपणएमजजणायुंहतुंजेकृष्णतोमारोकाल॥प्रगटथयोछे॥एमजाणतो॥अनेभगवानपणआसुरिनातोकालछे अनेआसुरिजिवकोईद-
हाडेपरमेश्वरनोभक्तथायजनहि॥जेमअफिणतेसाकरथायजनहि॥तेमआसुरिते भगवाननेभजेजनहिं॥नेतेआसुरिजिवतोनर्कचोरासि-
मांजईनेजन्মमृत्युनादुःखनेभोगवे॥माटेज्यारेज्यारेभगवाननाअवतारथायछे॥त्यारेआसुरिजिवतोमहादुःखनेजपामेछे॥केमकेपरमेश्वर
विनाबिजोकोईएवादुष्टोनेडंडदेवानेसमरथनथि॥माटेपरमेश्वरजतेनेप्रगटथईनेदंडआपेछे॥अनेजेदैविनेमुमुक्षुजिवछेतेनेतोपरमेश्वरप्रग
टथईनेअतिशेसुखआपेछे॥नेएवाअसुरोनाभयथकिरक्षाकरेछे॥तेगितामांकह्युंछे॥परित्राणायसाधूनां॥विनाशायचदुष्कृतां॥धर्म
संस्थापनार्थाय॥संभवामियुगेयुगे॥ माटे आजतमारे सर्वने सुखियाथवानोसमोआव्योछे॥नेतमाराभाग्यनोपारनथि॥माटेअधर्मअनिति
नोत्यागकरिने॥हरिकृष्णहरिकृष्णभजनकरजो॥एजअतिशेतमाराहितनिवार्ताछे॥अनेतमारेआजसमोआव्योछे॥तेसमोचुकवोन
हि॥केमकेजेमलेटाणे,तेपछेनमलेखरचेनाणे॥माटेआदेहनोपलमात्रनोनिरधारनथि॥तेसारुतत्कालपोतानुंकामकरिलेवुं॥अनेपूर्वेभग-
वानंनेपामवासारुंभगवाननाभक्तकेवाकेवादावखडाकरता॥अनेतपकरवानेबेसता॥ त्यारेमाथेराफडाचडिजता॥तथाकानमांसुघरि-
ओमाळाघालति॥तथावनमांआसनवाळिनेबेसता॥त्यारेसाथलमांदर्भनिसळिओसोंसारिनिसरिजाय॥तोपणशरिरनेचोरतानहिं॥
एवापरमेश्वरभजवानाआग्रहराखता॥अनेध्रुवप्रल्हादहरिचंद्रगोपिचंदनमोरध्वजआदिकमोटामोटाराजाओ॥तेणेपणभगवानभज-
वासारुंकेवांकेवांकष्टसहनकर्यांछे॥त्यारेभगवान्तेनाउपरप्रसन्नथयाछे॥अनेआजतोएवडोदावखडोकरवोपडेएमनथि॥केमके
आजतोअमारोएवोसंकल्पछेजेअधर्मअनितिनोत्यागकरिने॥जगतनांमानमोटप्यथकिनिवर्त्तिपामिनेअमारोनेअमारासंतनोसमागमकरो॥

तोतेनेअमेज्ञानआपिनेनिरवासनिककरिने॥ ब्रह्मनेविषेस्थितिक राविने॥आत्यंतिकमूक्तिआपियेछिये॥माटेविषयभोगरूपिकामनानि
उपासनानोत्यागकरिनेसत्संगकरवो॥ तोतेनोसाक्षात्कारमोक्षथशे॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥
॥ ॥संवत्।१९।ओगणिशे।१४।चौदनामहावदि।१२।द्वादशिनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीचुडामध्येव्यासदयालजिलि-
लाघरनेघेरआथमणेबारओरडानिओसरिमांपाटयउपरगादितकियानखावितेविराजमानथयाहता॥अनेसर्वेकसंबलवस्त्रधारणकर्यांहता॥
नेपुष्पनाहारकंठमांधारणकर्याहता॥अनेफुलनाबाजुगजरातोरानेगुछवोभिरह्याहतानेकंकुनोचांदलोकर्योहतो॥नेपोतानासूखार्विदनिआगल
साधुतथादेशदेशनाहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठिहती॥पछेमाहाराजश्रीहरिकृष्णभगवानबोल्याजेजिवनिमुक्तिथवितेज्ञानविनाथायनहिं॥
तेवेदमांकह्युंछे॥ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः॥ए॥श्रुतिमांपणएमजकह्युंछे॥जेभगवाननास्वरूपनाज्ञानविनामूक्तिथायनहिं।हवेतेभगवाननास्वरूप
नुंज्ञानकेमथायतो॥भगवाननास्वरूपनुंज्ञानभगवाननेभगवाननासंतथकिजथायछे॥तेज्ञाननेकहियेछिये॥जेजेमआपंचासक्रोडजोजन
पृथ्विछे॥तेनुज्ञानकराववुंहोयत्यारेतेपृथ्विनेवनपरवतनदियोसमुद्रद्विपखंडशेहेरपरगणांसहितप्रथ्वीनीआकृतिकागलमांलखिनेदेखा-
डिहोय॥तोपृथ्विनुंज्ञानथाय॥तेमभगवाननास्वरूपनुंज्ञानसिद्धकराववासारुं॥चारशास्त्रमांभगवाननास्वरूपनि॥आकृतिलखिछे॥तेएचार-
शास्त्रनाज्ञाननेप्रत्यक्षमहात्मापुरुषपासेथिसिद्धकरे॥तोभगवाननास्वरूपनुंज्ञानसाक्षात्कारथायछे॥तेचारशास्त्रकियां॥तोएकनिरबिजशां
ख्य॥नेबिजुंनिरबिजयोग॥नेत्रिजुंसबिजसांख्य॥अनेचोथुंसबिजयोग॥एचारप्रकारनासांख्ययोगेकरिनेभगवाननास्वरूपनुंयथार्थज्ञानथाय
छे॥अनेएचारेप्रकारनाज्ञाननेसत्पुरुषपासेथिसिद्धकरे॥तोनिरबाधपणेसवलुंज्ञानसमजाय॥पणजोअसतपुरुषपासेथिसांभलेतोतेनेभग
वाननास्वरूपनुंज्ञानमुदलथायजनहिं॥अनेअसत्पुरुषनेउपदेशेकरिनेरंचमात्रवासनापणटलेनहिं॥अनेवासनाटल्याविनाज्ञानथायनहिं।माटेपंचविषयनाश
गकर्यारेहलेतोसत्पुरुषथकीसद्धसंप्रदायनुंज्ञानतेशे॥तोप्रथममुमुक्षुनेएटलुंतोपोतानीमेलेसमजवुंजोईए॥जेजेजगतनेविषेउपदेशाकहेवाताहोयतेनिपरिक्षा
करविते शिपरिक्षाकरवि॥तोप्रथमतोजेपंचविषयनोमूलमांथिदेहेकरिनेत्यागकरताहोय॥नेबिजाकेटलाकमुमुक्षुनेपंचविषयनात्यागकरावताहो
य॥अनेदेहआत्मानोविवेककरिनेआत्मापोतानुरूपमनावताहोय॥अनेआत्माथीजुदाअनेआत्मानाप्रकाशकनेसर्वेजगतनाकर्ताहर्ताएवापर

मात्माछे।।तेआत्माअनंतछे।।नेपरमात्माएकछे।।एमसमजिनेतेपरमात्मानिउपासनाकर्तांकरावताहोय।।नेतेनेधर्मपालवापरआवथानोममत्वहोय।।पणजगतनांपदार्थनोममत्वहोयनहिं।।एवांलक्षणजेनेविषेजणायतेनोसमागमकरवो।।नेतेथकिज्ञानपामवुं।।तेमांप्रथमतोधर्मेकरिनेइंद्रिओनाजेरमणिकसारासाराविषयतेनोत्यागकरवो।।अनेज्यारेइंद्रिओविषयनोत्यागउपरथिनिमेकरिनेद्रढपणेकरेछे।।त्यारेअंतःकरणमांथिपणविषयपामवानासंकल्पबंधथइजायछे।।नेअंतःकरणनिवृत्तिपरथायछे।।पछेतेनेमहात्मापुरूषनुंज्ञानजिवमांउतरेछे।।पणज्यांसुधिइंद्रिओनाविषयनोत्यागकरेनहिंत्यांसुधितेनेज्ञानकोईकालेथायनहिं।।अनेज्ञानविनाआत्यंतिकमूक्तिजेअक्षरधांमतेनेनपमाय।।माटेज्ञानपामवानेअर्थेउपरथितोविषयनोत्यागकरवोअनेपछेतेनेमहात्मापुरूषजेतेइंद्रियोनोनियमकरावनेनिरबिजसांख्यनुंज्ञांनआपेछे।।तेनिरबिजसांख्यनुंज्ञानएमछे।।जेमायानाचोविसतत्वात्मकजेपिंडनेब्रह्मांड।।तेनाआकारमात्रतेथिआत्मानोरवोछे।।नेचैतन्यछे।।नेनिराकारछे।।नेव्यापकछे।।नेतेआत्मापोतानुंस्वरुछे।।अनेपिंडनेब्रह्मांडतेजडछे।।नेमिथ्याछे।।नेदुःखरूपछे।।एमजाणिनेआत्मानेविषेस्थितिपामवि।।तेनुंनामनिरबिजसांख्यनुंज्ञानछे।।अनेपछेनिरबिजयोगनेज्ञानेकरिनेपिंडब्रह्मांडादिकनेचारप्रकारनाप्रलयवडेकरिनेनासपमाडिनेपछेपोतानाआत्मानेअक्षरनेविषेएकत्वपणुकरवु।।कहेतांहुअक्षरब्रह्मछुं।।एमसमजिनेब्रह्मनेविषेस्थितिपामवि।।अनेज्यारेअक्षरब्रह्मनेविषेस्थितिथायछेत्यारेपिंडब्रह्मांडादिकमाईकआकारमात्रतेनिद्रष्टिमांरहेतांनथि।।तेनुंनामनिरबिजयोगनुंज्ञानछे।।अनेपछेसबिजसांख्यनुंज्ञानकरावेछे।।तेसबिजसांख्यनुंज्ञानएमछे।।जेनिरबिजसांख्यनेनिरबिजयोगेकरिनेअक्षरब्रह्मनिस्थितिनेपाम्याएवाअनंतकोटिमूक्तछे।।तेएसर्वमुक्तनाआधारनेप्रकाशकनेतेनेभजवाउपासनाकरवायोग।।एवापरब्रह्मपरमात्माछे।।अनेतेपरमात्माअक्षरधामनेविषे।।दीव्यसाकारमूर्त्तिअखंडविराजमानरह्याछे।।एमसमजवुं।।तेनुंनामसबिजसांख्यनुंज्ञानछे।।अनेहवेसबिजयोगनुंज्ञानएमछेजे।।सबिजसांख्यमांकह्याएवाजेपरमात्माभगवान्दिव्यमूर्त्तितेजेतेजिवोनेज्ञानआपवासारूपृथ्विउपर।।मनुष्याकृतिनुंधारणकरिनेपोताना।।आश्रितोनेज्ञानआपेछे।।एमजाणिनेप्रत्यक्षमूर्त्तिभगवान्तेनेविषेनवधाभक्तियेकरिनेजोडाईजवुं।।नेतेप्रत्यक्षभगवाननिमूर्त्तिविनाकांईसत्यदेखवुंनहिं।।तेनुंनामसबिजयोगनुंज्ञानछे।।अनेएविरितेजेनेप्रत्यक्षभगवाननास्वरूपनुंज्ञानथायछे।।तेनेकारणवासनाजेमूलाज्ञांना।।

तेनासपामिजायछे।।नेभगवाननासाधर्म्यपणानेपामेछे।।अनेकाईकनेएविरितेसांख्यभोगनुंज्ञानतोथयुंनहोय।।पणजोतेनेएवाज्ञाननाआपना
राप्रगटभगवान्‌अनेएवांज्ञाननेपामिनेसिद्दथयाएवाजेतेभगवानना निरवासनिकपंचविषयनात्यागिसंततेनोसंगमल्योछे।।अनेतेदेहेकरि
नेपंचविषयनोत्यागराखेछे।।तोतेनेपणतेवुंज्ञानंजरूरथशे।।अनेतेनेकदापिजाडिबुद्धिहोय।।नेदेहपर्यंतएवुंज्ञाननथयुंतोतेनेअंतसमेएवुं
ज्ञानभगवानजेतेजरूरकरावेछे।।नेपोतानाअक्षरधामनेपमाडेछे।।माटेजेनेप्रत्यक्षभगवान्‌नेभगवाननासंतमल्याछे।।नेजेनेभगवानने-
भगवाननासंतनेविषेप्रितिथईछे।।अनेतेभगवाननिआज्ञायेकरिने।।पंचविषयनोत्यागकरिनेभगवाननेभगवाननासंतनिसेवाकरेछे।।
नेतेअखंडसमागममांपड्योरहेछे।।तेनेपणतेज्ञानिनाबरोबरप्राप्तिथायछे।। ।।इतिश्रीसुखसिद्धांतसमाप्तः।। ।।श्रीहरिकृष्णा
यनमोनमः।। ।।संवत्‌।।१९।।ओगणिशे।।१४।।चौदनामाहावदि।।१३।।तेरसनेदिवसमाहाराजश्रीहरिकृष्णभगवान्‌ गामश्रीवुडाम
ध्येदवेमोनजिनथुरामनेघेर।।आथमणेबारओरडानिओसरिमांढोलियाउपरगादितकियानखावीनेबिराजमानथयाहता।।अनेसर्वेजरिया-
निवस्त्रधारणकर्यांहतां।।नेसर्वेअंगनेविषे।।पुष्पनांआभूषणशोभिरह्यांहतां।।अनेपोतानामुखारविंदनीआगल।।साधुतथाघणाकहरिभक्त
निसभाभराइनेबेठिहति।।पछेधर्मानंदस्वामीएप्रश्नपुछ्युंजेहेमहाराज।।एकांतिकधर्मकेमपमाय।।पछेमहाराजबोल्याजेएकांतिधर्मना
पमाड्नाराएवाजेमायाथिपरपरमात्माभगवान्‌तेजिवनेप्रत्यक्षमले।।अनेतेभगवाननोमनक्रमवचनेदृढआसरोकरे।।नेतेनिआज्ञाप्रमाणे
वरते।।अनेतेनेएकांतिधर्मपामवानेविषेउत्तमश्रद्धाथाय।।तोतेनेप्रत्यक्षभगवान्‌एकांतिकधर्मपमाडेछे।।तेकेविरितेएकांतिकधर्मपमाडेछे
तोप्रथमतोजिवनेचोरासिमांअनंतप्रकारनाविषयवासनाएकरिनेदुःखभोगववांपडेछे।।तेनुंइंद्रियोअंतःकरणमांअनुभवेकरिनेसाक्षात्‌का
रज्ञानकरावेछे।।पछेतेनेपंचविषयनेविषेदुःखदेखिनेवैराग्यथायछे।।त्यारपछेज्ञानदातातेनेस्व धर्मनुंआचरणकरावीनेइंद्रिओअंतः
करणनेनियममांराखाविनेधर्मनेविषेस्थितिकरावेछे।।जेतेकोईरितेदेशकालेकरिनेपणधर्मथकितेपडेनहिं।।पछेतेनेजडचैतननोविवे
ककरावेछे।।नेमायामांथिथयाजेचोविसतत्व।।तेथकिआत्मानेनोखोपाडेछे।।तेआत्माकेवोछे।।तोअछेदछे।।अभेदछे।।अविनासिछे।।सु-
खरूपछे।।ज्ञानरूपछे।। चैतन्यछे।।व्यापकछे।।अनेचोविसतत्वनोजेदेहछे।।तेदेहजेतेजडछे।।दुःखरूपछे।।नासवंतछे।।विकारवानछे।।

एविरितेजडचैतन्यनोविवेककरावीनेदेहनेविषेवैराग्यपमाडिनेआत्मानेविषेद्रढस्थितिकरावेछे॥पछेतेनेभगवानना स्वरुपनोमहात्म्येसहित॥
उत्त मनिर्विकल्पनिश्चयकरावेछे॥पछेभगवाननाश्रवणकिर्तनसेवादिक॥नवप्रकारनिभक्तिकरावीनेजिवनेशुद्धकरेछे॥तेभक्तिकेविछे॥तो
जिवनेपापनासमोहछे।तेनेनासकरिनेजिवनेतत्कालब्रह्मरुपकरेएविछे॥एविरितेवैराग्यधर्मज्ञानने॥भक्तिएचारसाधननिअडगस्थितिकरा
विनेइंद्रीओअंतःकरणनिवृतिओनेप्रतिलोमकहेतांविषयथकिपाछिवलावीने॥आत्मानेविषेपोतापणानिद्रढताकरावीने।तेआत्मामां
परमात्मानिस्थितिकरावेछे॥ नेअखंडसेहेजसमाधिमांलक्षबंधावेछे।नेप्रत्यक्षभगवाननिजेमूर्त्तितेनुंध्यानकरावेछे।पछेएध्याननाकरना
रानेमायानुंआवरणटलिजायछे।अनेतेनेमहाब्रह्मानंदसुखप्राप्तथायछे॥अनेतेमुक्तथईनेअक्षरनासाधर्म्यपणानेपामेछे॥नेतेनेएकांति
कधर्मनेविषेस्थितिथायछे॥अनेतेभगवाननाअक्षरधाममांअखंडरहेछेमाटेप्रगटभगवानने तेनाएकांतिकसंततेथकिजएकांतिकधर्मपमाय
छे॥पणप्रगटभगवानने भगवाननाएकांतिकसंतनासंगविनाजपतपदानपुन्ययज्ञादिकसाधनेकरिनेएकांतिकधर्मपमातोनथि॥अनेबीजाकेट-
लाकलोकवेहेवारमांमोटागुरुकेहेवाताहोयतथाआचार्यकेहेवाताहोय॥तोपणतेनेएकांतिकधर्मनिगमपडतीनथि॥केमकेवेदशास्त्रनाअर्थ
नेजाणवेकरिने॥एकांतिकधर्मनथिपमातो॥अनेकोईएकांतिकधर्मनिवातसांभलिनेकहेवाजाय॥ तोकहेतांपणआवडेनहिं॥माटेजेनेएकां
तिकधर्ममांस्थिति थईहोय तेथकिजएकांतिकधर्मपमायछे।माटेमनुष्यदेहपामिने भगवानने भगवाननासंतनोसमागमकरिनेएकांतेकधर्मने
पामवुं॥एजमनुष्यनोदेहपाम्यानुंफलछे॥ माटेतेएकांतिकधर्मपामवानोतमारेसमोआव्योछे॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥
॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत् १९ओगणिशो १४चौदनामहावदि१४ चतुरदसिनेदिवस॥महाराजश्रीहरिकृष्णभग
वान गामश्रीचुडामध्येझालाआसाभाईडुंगरजिनेघेरओरडानिओसरिमांढोलियाउपरगादितकियाबिछावीनेबिराजमानथयाहता॥अनेस-
फेजरियानिवस्त्रधारणकरयांहतां॥अनेपुष्पनाआभूषणसर्वेअंगमांशोभिरह्यांहतां॥नेललाटनेविषेकेशरनिअरचानेकंकुनोचांदलोकर्यो
हतोअनेपोतानामुखारविंदनिआगलसाधुतथादेशदेशनाहरिभक्तनिसभामराईनेबेठिहति।।पछेमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवान्बोल्या
जेआजगतमांकेटलाकसमैयाथायछे॥तथामेलाथायछे॥तथाकेटलाकतिर्थेजायछे।तेतीर्थमेलानेसमैयेजावानोशोअर्थछे॥तोजेस्थानके-

सत्पुरुषनो मेलापथाय ।। तेनुंनाम मेलोकहेवायछे ।। अनेजेठेकाणेजिवनेसत्पुरुषनोसमागमथाय ।। तेनुंनामसमैयोकहेवायछे ।। अनेजेठेकाणे
कल्याणकारीसत्पुरुषरहेताहोय ।। तेवेठेकाणेतिर्थकहेवायछे ।। माटेपूर्वेजेजेठेकाणेसत्पुरुषएवाजेप्रगटभगवांनू ।। केमभगवानना एकांतिक
संत ।। तेरह्याहोयतेठेकाणेसमैयामेलानेतिर्थकहेवायछे ।। माटेसमैयेजवुं ।। तथातिरथेजवुं ।। तथामेलेजवुं ।। तेतोपोताना आत्मानुंकल्याणकरे
।। एवासत्पुरुषनोसमागमथाय ।। अनेतेनेसमागमेकरिनेपोतानाकामक्रोधलोभादिकदोषटले ।। अनेधर्मज्ञांनवैराग्यभक्तिआदिककल्याणका
रि ।। गुणपोतानेआवे ।। अनेतेगुणेकरिनेभगवानने भगवानना संतनेविषेपोतानेप्रितिथाय ।। नेपंचविषयनिवासनाटलिजाय ।। तेनेअर्थेमेलेसमै
येतिर्थेजवुं ।। पणतेवागुणतोनथिरवे ।। अनेमेलेसमैयेतिर्थेजईनेपावासरणाईओवगाडेछे ।। तथातेनेसांमलेछे ।। नथाडुवाकहेछे ।। तथाकुदृष्टि-
येकरिने ।। परस्त्रिओनांमोंढांजुवेछे ।। तथास्त्रियोपरपुरुषनांमोंढांजुवेछे ।। तथाहांसिमश्करिठठाठेकडिआदिकअधर्मनेमार्गेचालेछे ।। तेनेतो
महापापलागेछे ।। केमकेशास्त्रमांकह्युंछेजे अन्यक्षेत्रेकृतंपापं ।। तिर्थक्षेत्रेविनस्यति ।। तिर्थक्षेत्रेकृतंपापं ।। वज्रलेपोभविष्यति ।। अर्थ ।। जेबिजेठे
काणेपापकर्यांहोय ।। तोतेपापतिर्थमांगयेनाशथायछे ।। अने ।। तिर्थमांजईनेजेपापकरेछे ।। तेपापतोवज्रलेपथायछे ।। कहेतांतेपापकोईकाले
टलतुंनथि ।। माटेसमैयेमेलेतिर्थेजवुंतेतोपोतानाजीवनाकल्याणनेअर्थेशुद्धभावेजवुं ।। पणसमैयेजईनेपोतानाआत्मानुंउलटुंभूंडुंथाय ।। एवि
मतिनराखवि केमकेपहेलांकांईककृतकर्युंहोयतेपणउलटुंनासपामिजायछे ।। माटेतेथितोपोतानेघेरबेशिरहेवुंतेसारुंछे ।। अनेअमारेअन्न
कुटवसंतफुलडोल ।। रामनवमिजन्माष्टमि ।। अमाराजन्मनिचतुरदशिआदिकव्रतोनाउच्छवसमैयाकरवा ।। तेनुंपणएजकारणछे ।। जेजि
वनेज्ञानआपिने गमेलेवोकामिक्रोधिलोभिहोयपण तेनेअधर्मनोमार्गमुकविने ।। धर्मनेमार्गेचलाविने तेनाआत्मानोमोक्षकरवोएजसमै-
याउच्छवकरवानुंप्रयोजनछे ।। पणतेसमैयेउच्छवेकरिनेअमारिमोटप्यवधेएमनथि ।। अनेसमैयानकरीएतेणेकरिनेअमारिमोटप्यघटेएमपण
नथिकेमकेअमारिजेमोटप्यछेतेतो कोईकालेवधेघटेएविनथि ।। तेअमारिमोटप्यनेतोज्ञानिएवाजेमायापरमुक्तसाधु ।। तेजाणेछे ।। पणजेबा-
हारदृष्टिवालामाणसनाजियछे ।। तेनाजाणवामांअमारिमोटप्य आवतिनथि ।। माटेअहिंअमारिपासेसमैयेआववुं ।। त्यारेतोएकाग्रहचित्तेकरि
नेअमारांजएकदरशनकरवांअनेकानेकरिनेअमारिजवातसांभलवि ।। अनेजेनिवर्त्तिपामिनेएकाग्रहमनेकरिनेअमारिज्ञानवाता

साभलसेतोतेनादोषमात्र टलिजशे।।अनेतेनाउरमांधर्मज्ञानवैराग्यादिकजे रुडा गुण तेप्राप्तथशे।।नेतेना अंतरमांप्रकाशथशे।।अनेतेप्रकाशे करिनेपोतानो आत्मातेनेदखाशे।।अनेतेआत्मानेविषे परमात्मा प्रत्यक्षअमारिमूर्त्तिसाक्षात्कारअनंतप्रतापेजुक्त तेनेदेखासे।।अनेतेदेहछते जन्ममृत्युनुंदुःखटलिजशे माटे अमारिजेज्ञानवार्ताछे।।तेतोसर्वेशास्त्रनोसारछे।तेसारुअमारिज्ञानवार्तानेसावधानथईनेसांभलवि।।अनेजे तेवार्तानेअतिशेजतनकरिनेराखशे तोतेनेकल्याणनामारगमांकोईरित्यनुंविघनआवशेनहिं।।अनेआजेविवेकछे।।तेनेपोताना आत्मानाक ल्याणनेअर्थे सर्वेजरुरराखजोः।।

॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥

॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥

॥संवत् १९ओग- णिशे।।१५।।चौदनामहावदि।३०।अमासनेदिवस।।महाराजश्रीहरिकृष्णभगवान्गामश्रीचुडामध्येमटविरेशारजिवरामनेघेरउगमणेबार।। ओरडानिओसरिमांगादितकियेजुक्तढोलियाउपरबिराजमानथयाहतानेसर्वेजरियानीवस्त्रधारणकर्यांहतानेसर्वेअंगमांपुष्पनांआभूषणसो भिरह्यांहतां।।नेललाटनेविषेकेशरनिअर्चानेकुमकुमनोचांदलोकर्योहतो।नेपोतानामुखारविंदनिआगलसाधुतथाघणाकहरिभक्तोनि- सभा भराईनेबेठिहति।।पछे महाराजबोल्याजे जिवजन्ममृत्युनादुःखनेपामेछे।।तेनुंशुंकारणछे।।तोजीवजेतेपोतानुंस्वरुपजेअखंडानंदनेब ह्मानंद तेनेभूलिनेनासवंतनेदुःखरुपएवोजेपंचभूतनोदेह।।तेनेपोतानुस्वरुपमानिनेबाह्यद्रष्टिएकरिने।।माईकपंचविषयनेभोगवेछे।।ते णेकरिनेजन्ममृत्युनांदुःखनेपामेछे।।अनेदेहनेपोतानुरुपमानिनेजपतपादिकजेजेसाधनकरेछे।।तेमांथिउलटुंदुःखजथायछे।।नेभगवान् थिछेटुंपडतुंजायछे।।जेमकोईकपुरुषनुंमाथुंफर्युंहोय।।नेतेनेजवुंहोयउगमणेगाम।।नेचालवामांडेआथमणो।।तेजेगामजवुंहोयतेगा मनथिआवतुं।।नेतेजेमजेमचालेतेमतेमउलटुंछेटुंपडतुंजाय।तेमसुखनुंस्थानकएवुंजेपोतानुंआत्मस्वरुपतेनेजिवजेतेअज्ञानेकरिने भूलिनेमिथ्याभ्रांतिरुपएवोजेदेह।।तेनेपोतानुरूपमानिनेविषयनिवासनायेकरिनेजन्ममृत्युनेचोरासिरूपजेमहारणवगोडोतेनेविषेम- हाकष्टनेपामेछे।।अनेतेदेहनेपोतानुंरुपमानिनेजेजेसाधनकरेछे।।तेमतेमभगवानथिउलटुंछेटुंपडतुंजायछे।।अनेमहावनरुपजेजन्ममरणनोग भवास।।नेचोरासिनेजमपुरितेनेविषे महादुःखनेभोगवेछे।।माटेजेनेमनुष्यनोदेहआव्योछे।।तेनेतोएदुःखथकिछुटवानोउपायकरवो।।अने तेदुःखथकिछुटवानोशोउपायछे।।तोमायाथिपरएवाजेसत्पुरुषतेनोसमागमकरिनेतेथकिज्ञानपामिनेतेमांजिवनेजोडिदियेतोतेजिवज-

न्ममृत्युआदिकदुःखथकिमुकाईनेपरमसुखनेपांमे।।जेममाथाफरेलपुरुषनेकोईकवगरमाथाफरेलपुरुषमले।।नेतेपुरुषनेवलगिपडे।।तोतेपुरु-
षतेने।।ठेकाणेपुगाडेनेसुखियोकरे तेमजिवजेतेमायामांमटकेछे।।तेनेमायाथिपरएवाजेपरमात्माभगवान्तथाभगवाननासंततेजिवनेमले
नेतेनाविषेजिवतेनेइंद्रिओअंतःकरणेकरिनेजोडाईजायतोतेजिवजेतेमायानेतरिनेपरमपदनेपामे।।माटेजेनेमहासुखियाथवुंहोयतेनेप्रत्य-
क्षसत्पुरुषनेविषेजोडाईजवुं।।तेकेरितेजोडावुं।।तोश्रीचमीवृतियेकरिनेप्रत्यक्षमहात्मापुरुषनाशब्दमांजोडाईजवुं।।कहेतांसत्पुरुषजेजेव-
चनकहे।।तेवचननेअंतरमांधारिनेतेप्रमाणेदृढपणेसमजिनेवरतवामांडवुं।।अनेजेएविरितेप्रत्यक्षभगवाननेतेनासंतनाशब्दनेविषेजोडावछे
।।तेनेआत्मानेपरमात्मानाज्ञानरुपि।।तथाभगवाननामहात्मरुपिइंद्रियोअंतःकरणमांखटाईचडिजायछे।।नेतेनेपछेदेहपोतानुंरुपमानिनेइं-
द्रिओअंतःकरणरूपडाढेकरिनेविषयरुपीचणाचवातानथि।।जेमसुजेएवोबलवानपुरुषहोय।।नेतेदांतेआखिसोपारिभांगिनाखतोहोय।।
नेतेनेआंबानिकेरिनाखाटाभडदाखवराव्याहोय।।तोतेपुरुषेपछेसेकेलाचणापणचवायनहि।।नेरांधेलाचोखापणमांडमांडखाईशके।।तेम-
जेनेआत्मानेपरमात्मानाज्ञानरुपितथामहात्मरुपिखटाईचढे।।तेनेपंचविषयनांसुखतेदुःखरुपथईजायछे।।नेतेविषयभोगवावानेसमरथथा-
यजनहिं।।माटेएविरितेजेभगवाननास्वरुपमांजोडायछे।।तेनेकांईकरवुंरहेतुंनथि।।अनेतेनाइंद्रियोअंतःकरणसर्वेदिव्यभावनेपांमिजायछे।।
अनेएवाभक्तनादरशनेकरिने बिजाअनंतजिवोनाकल्याणथायछे।। ।।इतिश्रीमुख्यसिद्धांतसमाप्तः।। ।।श्रीहरिकृष्णायन-
मोनमः।। ।।संवत्१९ओगणिशे।।१५।।चौदनाफागणशुदि।।१।।पडवानेदिवसमाहाराजश्रीहरिकृष्णभगवान्गामश्रीचुडामध्ये।।ठा
कोरश्रीमहाराणाबेहेचरसंघजीरायसंगजिनादरबारमांउगमणाबारनिमेडिओनेओसरिमांगादितकीयानखाविनेढोलियाउपरविराजमानथया-
हता।।नेसर्वेकसुंबलवस्त्रधारणकर्यांहतां।।नेकंकुनोचांदलोकर्योहतो।।नेपोतानामुखारविंदनिआगलसाधुतथादेशदेशनाहरिभक्तनिसभाम
राईनेबेठिहतिपछेमहाराजकृपाकरिनेबोल्याजेजेनेसत्संगकरवोतेनेपोतानाआत्मानाकल्याणनेअर्थेकरवो।।पणनाशवंतपदार्थजेस्त्रि-
छोकरांधंनमालगामग्रासइत्यादिकजेमाईकपदार्थमुनेमलेएवीईछाराखिनेसत्संगनकरवो।।नेसत्संगतोपोतानाआत्मानेअविनासिसु-
खप्राप्तथाय।।तेसारुंकरवो।।पणजेपदार्थनेकालनाशकरेएवापदार्थसारुं।।सत्संगनकरवो।।केमकेआजिवछे।।तेणेअनंतफेरादेवताथईनेदे

वलोकनासुखभोगव्याछे।।तथामृत्युलोकमांपणकेटलाकफेराचक्रवर्तिराजानादेहधरिनेअनंतराणियोभोगविछे।।तथाबिजास्वानपानादि
कपणअनंतभोगभोग्याछे।।तथातेनेतेजिवेअनंतफेरास्त्रिनादेहधरिनेराजादेवादिकअनतपुरुषकर्याछे।।एविरितेआजिवेस्वर्गमृत्युनेपाता-
लएत्रणलोकमांजईनेअनंतवारविषयनाभोगभोगव्याछे।।तोपणए।। जिवनेविषयथकिजरापणतृप्तिथईनथिकेमकेविषयथकिकोईकाले
कोईनेतृप्तिथतिजनथि।।तेराजादेवताइंद्रब्रह्मादिकसुद्धिकोइनेविषयथकितृप्तिथईनथिअनेजेमजेमझाझाविषयनेभोगवेछे।।तेमतेम
झाझासंतापनेपामेछे।।एविरितेचौदलोकमांविषयनितृष्णारुपिअग्निमांजिव।।प्राणिमात्रबल्याकरेछे।।पणकोईजिवनेप्रकृतिनाकार्यमांशां-
न्तिनथितोहवेआमनुष्यदेहनिअल्पआयुषतेमांवरसकेबेवरसकेपांचवरसकेदसवरस।।जिववुं।तेमांविषयभोगविनेतृप्तथवायएमनथि।।के-
मकेविषयमांसुखजेतेलेशमात्रनथि।।अनेविषयभोगव्याथकिजिवनेशांन्तिथाय।।एमपणनथि।।केमकेजेमकोइपुरुषतरस्योथयोहोय।।ने
तेनेभारेभारेवस्त्रपहेराविये।।तथासोनारुपाहिरामोतीनाघरेणापहेरावीए तथाजमवानाथालभरिनेमोंढाआगलमुकिये।।तोपणतेनेजल-
विनाकोईपदार्थशांन्तिकरेनहिं।।नेएनेतोएकजलमलेतोशांन्तिनेपामे।।तेमजिवनेआत्मानेपरमात्मानेपामवारुपतरस्याछे।।तेनेभूक्तिनेबि
जासुखथवानाअनंतउपायकरे।।पणआत्मापरमात्मानाज्ञानविनाकोईकालेजिवनेसुखथवानुंनथि।।माटेजिवनेप्रत्यक्षपरमात्मानेतेनासंत
मलेनेतेनोआसरोकरिनेतेथकिज्ञाननेपामेत्यारेजिवनेपरमशान्तिथाय।।पणतेविनाजिवनेविषयभोगेकरिनेशान्तिथायनहिं।।माटेआजतम
मारेशांन्तिथवानोसमोआव्योछे।।तेनासर्वंतनेदुःखरुपएवांजेमाईकपदार्थतेनेभोगववानिवासनानोत्यागकरिनेअमारोसत्संगकरवो।
अनेअमारोजेसत्संगकरवो तेतोएकपोतानाआत्मानोमोक्षथाय।।तेपंचविषयनिवासनाटलिजाय।।तेनेअर्थेअमारोसत्संगकरवो।।अ
नेएविरितेसमजिनेजेअमारोसत्संगकरेछे तेनेअलोकिकसुखप्राप्तथायछे।।अनेतेनोपायोसत्संगमांअचलथायछे।।अनेएवानिष्कामभा
ववालानेजअमारेविषेदृढस्नेहथायछे।।अनेएविसमजणवालानेकल्याणनामारगमांकोईविघ्नआवेजनहिं।।माटेनिष्कामभावेभक्तिक
रवि।।केमकेपंचविषयनासुखनिवासनानोत्यागकरसे।।त्यारेजअक्षरधामनेपामशेमाटेजेभगवाननाभक्तहोयतेनेआलोकनांसगांकुटुं
बीधन्यमालतेमांथिवासनातोडिनेएकभगवाननेभगवाननासंतनेविषेप्रितिकरवि।।पणभगवाननाभक्तनेमाईकपदार्थमांवासना

राखविनहिं ॥अनेजेप्रत्यक्षभगवानने भगवानना संतनेविषेप्रितिकरेछे तेनेज जगतनीवासनातुटे छे ॥नेतेपरमशांन्तिनेपामेछे॥ ॥
इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत् १८ओगणिशो १६ सोलनाश्रावणशुदि ३ त्रिजनेदिवससांजनेसमयमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीभावनगरमध्येमेहेलातेजपालनिमेडियोनाचोकवचेपाटढलाविनेतेउपरगादितकियान-खाविनेविराजमानथयाहता॥अनेस्वेतरूखाल्पेहेर्योहतोनेगुलाबिछिंटनुंअंगरखुंधारणकर्युंहतुं॥अनेमस्तकउपरसोनेरिगुढारंगनिपाघ-बांधिहति॥अनेकेडेकसंबलनोनेरिसेलुंधारणकर्युंहतुं॥अनेएककसंबलसेलुंस्यंभनाख्युंहतुं॥अनेकंठनेविषेपुष्पनाहारधारणकर्या हता॥नेबेहाथनेविषेपुष्पनाबाजुनेगजराधारणकर्याहता॥नेकानउपरपुष्पनागुच्छशोभिरह्याहता॥नेएकगुच्छहस्तकमलमांधारणकर्यो हतो॥नेपाघनेविषेवेकोरेपुष्पनातोरालटकताहता॥अनेउगमणेमूखारविंदे विराजमानहता॥नेपोतानामूखारविंदनिआगलसाधुतथा घणाकहरिभक्तनिसभाभराइनेबेठिहतिअनेसर्वेहरिभक्तचकोरनिपेठमहाराजनामूखारविंदनिसामुंजोइरह्याहता॥पछेश्रीहरिकृ-ष्णभगवानकृपाकरिनेसर्वेहरिभक्तप्रत्येबोल्याजे॥जितंजगतकेनमनोहियेन॥एश्लोकमांएमकह्युंकेजेणेपोतानुंमनजित्युंतेणेसर्वजगत्जित्युं॥माटेभगवाननाभक्तहोय॥तेनेपोतानुंमनजरूरवशकरवुं॥अनेतेमनवशकर्याथिसंसारनेविषेसुखदुःखमानअपमा-नहर्षशोकहानिवृद्धि तेसर्वेसमथइजायछे॥हवेमनशेउपायेकरिनेजितायछेतोज्ञानेकरिनेमनजितायछेतेज्ञानकेवुंछे॥तोआत्मापरमा-त्मानास्वरूपनेयथार्थजाणवुं॥तेमांप्रथमआत्मनिष्टादृढकरवि॥तेआत्माकेवोछे॥तोआकाशनिपेठेव्यापकछे॥नेनिरलेपछे॥तेजे-मआकाशनाचारभेदछे॥एकघटाकाश॥बीजुंमठाकाश॥त्रिजुंमहदाकाश॥अनेचोथुंचिदाकाश॥अनेतेचिदाकाशथकित्रणप्रकारनोआकाशथयोछे॥अनेपाछोएत्रणेआकाश॥चिदाकाशमांलयपामेछे॥अनेतेमांप्रथमचिदाकाशथकिमहदाकाशथायछे॥अनेमहदाकाशथकिमठाकाशथायछे॥अनेमठाकाशथकीघटाकाशथायछे॥अनेज्यारेघडोनाशथायछेत्यारेघडारूपउपाधिनोनाशथयो अनेघडामांहतोजेआकाशतेमठाकाशमांलयपामेछे॥कहेतांघडानोनाशथयोत्यारेतेआकाशघरमांमलिजायछे॥पणघडानेनाशेकरिनेआकाशनोनाशथतोनथि॥एविरितेघटाकाशमठाकाशनेमहदाकाशएत्रणेआवर्णनाशथाय॥त्यारेएकचिदाकाशरहेछे॥अने॥

त्रणेआवर्ण होयत्यांसुधितेघटाकाशादिक त्रणेआकाशतेचिदाकाशमां भलेनहिं तेम जे आत्माछे तेतोवस्तुगते शुद्धचैतन्य ब्रह्मछे।।पण ते आत्माने विषे स्थूल सूक्ष्मनेकारण एत्रणेदेहरूपउपाधिवलगिछे।। त्यांसुधितेआत्माजन्ममरण सुखदुःखमानअपमानहानिवृद्धिहरषशोकादिक जे द्वंद्व तेनेपामेछे।।तेमां घटाकाशनेठेकाणेपंदरतत्वनुंस्थूलशरिरछे।।तेपंदर तत्वकियां तोपंचभूत पृथ्विजल तेजवायुनेआकाश।।अनेपांचज्ञान इंद्रियो।।श्रोत्रत्वचा चक्षुरसनानेघ्राण।।अनेपांचकर्मइंद्रियो।।वाकपाणिपाद वायुनेउपस्थ।।एपंदरतत्वनुंस्थूलशरिरछे तेघटाकाशनेठेकाणे छे।।अनेमठाकाशनेठेकाणेनवतत्वनुं सूक्षमशरिरछे।।तेनवतत्वकियां।।तोपंचविषयशब्दस्पर्षरूपरसनेगंध।।एपांच विषय।।नेच्यारअंतःकरण।।मनबुद्धिचित्तनेअहंकार।।एनवतत्वनुसूक्ष्मशरिरतेमठाकाशनेठेकाणे छे।।अनेमहदाकाशनेठेकाणे।।वासनाकहेतां।।अज्ञानरूपकारणशरिरते छे।।अनेचिदाकाशनेठेकाणे शुद्धचैतनजिवात्माछे।।अनेजेम चिदाकाशछे।।तेममहदाकाशमठाकाशनेघटाकाशनेविषेउपाधियेंकरिनेरह्योछे।। तोपणनिर्लेपछे केमकेघडोनाश पांमे।।तेणेकरिने तेमांरह्योजेआकाशतेनासपामतोनथिअनेज्यांसुधिघडो नाशनपामे त्यांसुधितेआकाशनेआवर्णरहे छे।।अने ज्यारेत्रणेआवर्णटले।।त्यारेतेआकाशचिदाकाशमांभलेछे।।तेमजिवात्मानेस्थूलसूक्ष्मने कारण।।एत्रणदेहरूपजेआवर्णछे।।तेआवर्णनेअज्ञानेकरिनेपोतापणुंमाने छे।।त्यांसुधिजिवात्माजेतेदिनतानेपामतोथकोजन्ममृत्युनेपामे छे।।जेमकोइकसिंहवननेविषेअजानासमूहनेपामिनेतेनेसंगकरिनेपोतानिजातिनुंस्वरूपभूलिगयोनेपछेअजानीसंघातेत्रणखावालाग्यो।।अनेअजानीपेठेसिंहादिकथकिभयपामिने।।पलायणकरतोहवो।।पछेकेटलेकदिवसेतेनेकोइबिजोसिंहमल्योतेणेकह्युंजेअजातोतारोभक्षपदार्थछे।।पछेतेनाविश्वासनेअर्थेनदिनात्रटउपरउभोराखीनेतेनुस्वरूपदेखाड्युं।।त्यारेतेणेकरिनेतेणेएमजाण्युंतेहुंतोसमरथछुं।।एमजाणिनेसिंहनादकर्यो।। त्यारेबकरांभागिगयांनेपोतेमहावननेविषे निर्भयथकोफरवालाग्यो।।तेमएतोदृष्टांत।।नेएनुंसिद्धांतएछेजे।।सिंहनीपेठेजिवात्मातोमहासमरथछे।। नेइंद्रियोअंतःकरणतोजडछे।।तेबकरारूपइंद्रियोअंतःकरणनेसंगेकरिनेआत्मातेरूपथइगयोछे।।पणजिवात्मातोचैतन्यछे।।नेभगवाननाअंगनोप्रकाशछे।।नेनिर्लेपछे।।नेआनंदरूपछे।।नेसुद्धछे।।नेअविनासिछे।। अनेदेहादिकजेपिंडब्रह्मांडछेतेतोनासवंतछे।।नेदुःखरूपनेजडछे।।नेनरकरूपछे।।माटेएयोमहापापरूपजेदेह।।तेथिकिपोतानाआत्मानेजुदोसमजि

ने अक्षरब्रह्मनेविषेएकत्वपणुंकरवुं।।कहेतांमहावाक्यनेविचारेकरिनेसमजवुं।।जेअक्षरब्रह्मतेजहुंछुं।।त्यांवेदनुंवाक्यछे।।जेतत्वमसि।।अर्थ
।।तेजेब्रह्मतेतुंछो।।एविरितेपोतानेअक्षरब्रह्मरुपथवुं।।तेअक्षरब्रह्मकेवुंछे।।तोअनंतकोटिब्रह्मांडनिउत्पत्तिस्थितिनेनाश।।तेअक्षरनिलेश
संतायेकरिनेथायछे।।अनेतेअक्षरनासुखनोलेशप्रकृतिपुरुषमांआव्योछेतोतेणेकरिनेप्रकृतिपुरुषअनंतकोटिब्रह्मांडसरजवानिशक्तिने
पाम्योछे।।अनेवलितेअक्षरनालेशसुखेकरिनेअनंतकोटिप्रधानपुरुष।।तथाअनंतकोटिवैराटादिकइश्वर।।तथाअनंतकोटिब्रह्मादिक।।
तथाअनंतकोटिइंद्रादिकदेवरुषिप्रजापतिगांधर्व।।अपसरायो।।तथाराजाप्रजा।।पशुपक्षि।।तेसर्वअक्षरनासुखनोजेलेशतेणेकरिनेसर्वे
सुखियाथयाछे।।अनेएवुंजेअक्षरब्रह्म।।तेनेविषेभगवानपुरुषोत्तमसदायअखंडरह्याछे।।तेभगवान्केवाछे।।तोपिंडब्रह्मांडादिकक्ष
रअनेतेथीपरएवुजेअक्षरएबेनाआधारछे।।अनेअनंतकोटिब्रह्मांडनापतिछे।।अनेराधिकानेलक्ष्मिआदिककोटिशक्तियोनास्वामिछे।।अनेए
भगवाननासुखआगलअनंतकोटिब्रह्मांडनाजेविषयनांसुख।।तेतोनर्कजेवांछे।।अनेअनंतकोटिब्रह्मांडनाविषयसुखभेगाकरिये तो-
पणभगवाननारोमसुखनाकोटिमाभागनिबरोबरथायपणनहि।।अनेभगवाननासुखउपरतोअनंतकोटिब्रह्मांडनाजेविषयनासुख
तेवारिफेरिनेनाखिदइये।।एवाजेभगवानतेमाराआत्मानेविषेअखंडरह्याछे।।अनेब्रह्मारपणकृपाकरिनेअनंतकोटिजीवोनांकल्याणकरवाने
अर्थेमनुष्यजेवाथइनेदरशनआपेछे।।अनेतेजभगवानमाराजिवात्मामांरह्याछे।।अनेतेजसर्वेनाकर्ताहर्तानेपालकछे।।अनेतेभगवान्सुनेप्र
त्यक्षआजमल्याछे।।तेमारेहवेकांईकरवुंरह्युंनथि।।केमकेसर्वेसुखनाधामनेसर्वेनाआधारतेजसुनेआजप्रत्यक्षमल्याछेमाटेएवाजेभग
वानतेनेमुकिनेमहादुःखरूपजेसंसारनातुछएवाविषयनांसुखतेमांहुंशुंप्रितराखुं।।अनेसंसारनासुखतोअनंतदुःखेयुक्तनेअनंतक्लेशे
युक्त।।नेअनंतपापेयुक्तछे।।अनेवलिसंसारनासुखनिकेडेयमपूरिचोराशिगर्जवासादिकअनंतदुःखरह्यांछे।।एमसमजिनेसंसारना
सुखनिवासनानोसर्वेप्रकारेत्यागकरवो।।अनेपोतानेमल्याएवाजेप्रत्यक्षभगवान्तेनोदृढआश्रयकरिनेतेनीआज्ञाप्रमाणेवरतवुंअनेएवि
रितेसमजिनेजेभगवानने भजेछेतेनिवासनाटलिजायछे।।नेतेनेआत्मापरमात्मानेविषेप्रितीथायछे।।अनेतेभक्तनेअखंडभगवाननिमू
र्त्तिनुंचिंतवनथयाकरेछे।।अनेतेहुंजमनवशथायछे।।माटेजेनेपोतानुंमनवशकरिनेकल्याणनेइछवुंहोय।।तेनेतोप्रत्यक्षभगवाननोदृढ

आश्रयकरिनेतेनीआज्ञाप्रमाणेवरतवुं।तोतेयकिएनुंकल्याणसाक्षात्कारथायछे॥माटेप्रथमकह्युंजेआत्मापरमात्मानुंज्ञानतेणेकरिनेजेणे
मनवशकर्युंकहेतांप्रगटभगवाननोदृढआश्रयजेणेकर्योतेनुंकल्याणसाक्षात्कारथईरह्युंछे॥मारेतेनोदेहसमजेतोआजपडो।नेसमजेतोसोवर
सकेडेपडेनेसमजेतोबोलतांचालतांदेहपडेनेसमजेतोघणिकपिडाथईनेपडे।नेसमजेतोतिर्थादिकसारेठेकाणेदेहपडे।नेसमजेतोगमेतेठेकाणे
देहपडे।पणजेनेज्ञानेसहितप्रत्यक्षभगवाननोदृढआश्रयथयोछे।तेनोजिवात्मातोभगवाननाधामनेजपामेछे॥पणतेनेकोईजातनोसंसय
रह्योनथि॥एमजाणिनेआनंदमांरहिनेअखंडभगवाननुंभजनकर्याकरवुं॥एमकहिनेश्रीहरिकृष्णभगवान्नेवार्तानीसमाप्तिकरि।पछे
संतकिरतनगावालाग्या॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्त॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्१ओगणिश्रोर्छो
लनाश्रावणशुदि४चोथनेदिवसमाहाराजश्रीहरिकृष्णभगवान्गामश्रीभावनगरमध्येमेहेतातेजपालनिमेडियोनाचोकवचेपाटढलावि
नेतेउपरगादितकियानंखाविने।तेउपरबिराजमानथयाहता॥अनेगुडारंगनाकिनखापनोसुरवालपेहेर्योहतो।नेरिलाकिनखापनिव
गलिधारणकरिनेकसुंबलमोनेरिपाघबांधिहति॥अनेपुठोसोनेरिकोरानोरटोपेहेर्योहतो।नेकेडेकसंबलसेलुंबाध्युंहतुं॥अनेएकसेलुं
कसंबलतारालुंखभेनाख्युंहतुं।अनेकंठनेविषेपुष्पनाहारधारणकर्याहता॥नेहाथनेविषेपुष्पनाबाजुबंधनेगजराधारणकर्याहता
॥नेपाघनेविषेबेकोरेतोराल्टकताहता॥नेकानउपरपुष्पनागुच्छधारणकर्याहतानेहस्तकमलनेविषेलिंबुनुंएकफलधारणकर्युंहतुं॥अ
नेएकमोगरानापुष्पनोगुच्छलेईनेसुंघताहता॥एविसोभानेधारणकरताथकानेपोतानाभक्तजनोनेआनंदउपजावताथकाबिराजमान
थयाहता॥अनेपोतानामुखारविंदनिआगल॥परमहंसतथाहजारोहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठिहति।पछेमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवानकृपा
करिनेबोल्याजेसांभलोसर्वनेएकप्रश्नपुछियेछिये।।जेएकदोषछेतेमांसर्वदोषरह्याछेअनेतेदोषनोत्यागकरियेतोसर्वेदोषटलिजायएवो
दोषतेकियोछे॥पछेतेनोउत्तरकोईथययोजनहिं।पछेमहाराजबोल्याजेएककृतघ्निपणारूपदोषछेतेमांसर्वदोषरह्याछे॥अनेकृतघ्नि॥
पणारूपएकदोषनोत्यागकरेतोसर्वेदोषटलिजायछे॥हवेकृतघ्निपणुंतेशुं॥तोकर्यागुणनेनजाणवुं।तेनुंनामकृतघ्निपणुंछे॥माटेभ
गवानजेतेजिवोनेअनादिकालथयांमहाउपगारकरेछेतेउपकारनेभूलिनेजिवजेतेपोतानामननिखुशिप्रमाणेचालेछेनेभगवाननेनथि

भजतोमाटेतेपापेकरिनेजिवनिबुद्धि॥भ्रष्टथईगईछे॥पछेतेभ्रष्टबुद्धियेकरिनेप्रगटप्रमाणजेभगवाननुंस्वरूप॥तेएनेओळखातुंनथि॥अने
तेभगवाननेविषेहेतपणतेनेथतुंनथि॥जेमसूर्यनेचंद्रमानुंग्रहणथाय॥त्यारेतेनोप्रकाशढंकाईजायछे॥तेमकृतघ्नपणारूपदोषेकरिनेजिव
नेकल्याणनोमारगसूजतोनथि॥अनेतेकल्याणनोमारगनसूजवेकरिनेउलटोप्रत्यक्षभगवाननोजिवजेतेद्रोहकरेछे॥अनेपछेमहादु
खरूपजेयमपुरिचोरासिनेगर्भवासादिकदुःखतेनेवारंमवारभोगवेछे॥नेद्देशनथायछे॥तेमाटेजेनेपोतानाआत्मानुंकल्याणकर-
वानिइच्छाहोयतेनेतोभगवाननोमोटोउपकारजाणितेभगवाननुंभजनकरवुं॥हवेतेभगवाननाकियाउपकारछे॥तोतेश्रीभागवतपूराणमां
कह्युंछे॥तेव्यासिमाअध्यायमांदशमस्कंधनेविषे॥श्लोक॥२॥बुद्धिंद्रियमनःप्राणान्जनानामसृजत्प्रभुः॥मात्रार्थंचभवार्थंचआत्म-
नेकल्पनायच॥२॥एविरितेभगवानजेतेजिवोनामोक्षनेअर्थेइंद्रियोअंतःकरणजिवनेसृजिआपेछे॥अनेइंद्रियोअंतःकरणेकरिनेजिवजेते
सर्वक्रियाकरेछे॥अनेसर्वपदार्थनुंज्ञानथायछे॥अनेसंतसमागमेकरिनेनिरगुणभावनेपामेतो॥एजइंद्रियोअंतःकरणेकरिनेभगवान
नुंज्ञानपणथायछे॥तेभगवाननुंज्ञानभगवानवतेजथायछे॥जेमसूर्यवतेसर्वपदार्थदेखायछे॥अनेसूर्यपणसूर्येकरिनेजदेखायछे॥केमके
सूर्यविनासूर्यदेखायजनहिं॥तेमभगवाननास्वरूपनुंज्ञानतोभगवानप्रगटथईनेकरावेछे॥त्यारेजथायछे॥पणतेविनाभगवाननास्व
रूपनुंज्ञानथायजनहिं॥अनेवलिअन्नवस्त्रपणसर्वनेभगवानजआपेछे॥केमकेभगवानमेघवरसावेछेत्यारेअन्नवस्त्रनिपजेछे॥नेत्यारेसर्वे
जिवनोनिभावथायछे॥तेजेमकोईककाळपडेनेअन्नखावाक्यांईनमळतुंहोय॥नेतेकाळमांकोईकअंनआपीनेकाळमांजिवतोराखे॥
तोतेनोकेटलोपाडमाने॥तेनोतोगुलामथईनेरहे॥नेजिवतपर्यंततेनोगुणभूलेनहिं॥तेमभगवानेतोजिवोनेअनंतकाळउगार्याछे॥केम-
केवरसातनवरसेतोसदायकाळजछे॥माटेभगवानकृपाकरिनेवरसादवरसावेछे॥त्यारेसर्वेविश्वनाजिवोजिवेछे॥जेमकोईकखेडुउनाळे
खेतरमांसांतिहाकतोहोय॥तेनेगाममांथिभातआवेतोखाय॥निकरभूखेमरे॥तेमआलोकतोउनाळानाखेतरजेवुंछेतेभग-
वानवरसातनवरसावेतोसर्वविश्वनोनाशथईजाय॥मारेदयाकरिनेवरसादवरसावेछे॥नेसर्वविश्वनाजिवोनेभगवान्निभावेछे॥एमजा
णिनेभगवाननोमोटोउपकारमानिनेएभगवाननुंअखंडभजनकर्याकरवुं॥नेशासारुंभगवाननुंभजनकरवुं॥तोपोतानाआत्माना

सुखनेअर्थेकरवुंते सुख क्यारेथाय॥तोसर्वोपरिसुखनेपामे त्यारेसुख थाय॥तेसर्वोपरि सुखतो भगवानपासेछे॥तेभगवानना सुखनेक्या
रेपमाय॥ तोप्रत्यक्ष भगवानना शरण नेपामिने माईक सुखनो त्यागकरे॥ त्यारेसर्वोपरिसुख नेजिवपामे॥अनेतेमाईक सुखनोक्यारेत्या
ग थाय छे॥ तोसर्वेवस्तुनुं प्रमाण करेपछे जेवस्तुसत्यहोय तेनुंग्रहणथायछेनेजेवस्तु असत्यहोय तेनोत्यागथायछे॥माटेदेहआत्मानेवि
वेककरवो तेमांजेदेहछेते तो नाशथईजाएवोछे॥अनेतेदेह संबंधि जेपदार्थछे॥तेपण नासवंतछे॥अनेतेपदार्थमांजेसुखजेवुंजणाय
छे॥ते तोआत्मावतेजजणायछे॥अनेजोदेहमांथि आत्मानिसरिजाय॥तोसर्वपदार्थनकारांथईजायछे॥ तेमोटोपृथ्विपतिराजाहोय
नेतेनेहजारोचाकरहोय॥तथाहजारो राणियोहोय॥तथालाखोगाममरासधन्यमालहाथीघोडापालखियोआदिकसर्वपदार्थहोयपणज्या
रे तेनादेहमांथि आत्मानिसरिजाय त्यारे तेनेपछे कोईपदार्थलेशमात्र कामआवेनहि॥तेसर्वेपदार्थनकारांथईजायछेमाटेपोतेआत्माज
सुखरूप छे॥अनेप्रकृतिनुंकार्य जेपिंडनेब्रह्मांडतेसर्वेनाशवंतछे॥नेदुःखरूपछेअनेजडछे॥नेअंतेअपारदुःखनुंकारणछेजेमसोम
लखारनाखिनेखांडना मोतिया लाडवा कर्याहोय॥तेलाडयाखालांतोगल्यालागेपणपछेप्राणनेकाढेएवाछे तेमविषयनासुखभोगव-
तिवखतेतो सारांजेवाजणायछेखरांपणअंतेअपारदुःखनुंकारणछे॥अनेतेविषयमांजिवनेप्रितिहोय॥तेणेकरिनेजन्ममृत्युथायछे
॥एममाईकपदार्थनेपापरूपजाणिनेनेपिंड ब्रह्मांडादिक सर्वपदार्थनो त्यागकरिने सदाय सत्यरूपएवोजेपोतानोआत्मातेनुंग्रहणकरिवि
कहेतांआत्माने पोतानुं स्वरूपजाणिने तेआत्मानासाचाहितकारि॥एवाजेपरमात्मा भगवान्॥तेजसर्वेसुखनासिंधुछेनेकृपानासा
गरछे॥एमजाणिनेतेभगवाननोमहामोटोउपकारमानिनेतेभगवाननुंअखंड भजन करवुं॥अनेआजेविचारकह्योतेनेजेसमजेतेने कृत-
घ्नि पणारूपजेदोष तेटलिजायछे॥अनेतेनिबुद्धिमां प्रकाशथायछेअनेतेनेजप्रगट भगवाननुंस्वरूपओलखायछेअनेतेनेप्रत्यक्षभगवान
नेविषेदृढहितथायछे॥अनेजेनेप्रगट भगवाननेविषेहितथयुं॥तेनुंसाक्षात्कारकल्याणथायछेअनेतेआत्मा परमपदनेपामेछे॥तेपरमपद
तेशुं तोप्रत्यक्ष भगवाननिप्राप्तिजिवनेथाय तेजपरमपदछे॥ तेएविप्राप्तितोजेनेअनेकजन्मनांशुभसंस्कारहोयतेनेजथायछे॥माटेआजजे
नेमनुष्यदेहआव्योछे॥तेनाभाग्यनोपारनथि॥केमकेआजभगवाननुंप्रगटपणुंनेपोतानेमनुष्यनोदेह॥अनेतेभगवाननेविषेदृढहेवस

हिततेनुंदरशन।।तेजअतिशेदुर्लभछे।।तेश्रीमद्भागवतमां।।दशमस्कंधनेविशे श्रीकृष्णभगवानेबलदेवजिप्रत्येकह्युंछे।।श्लोक।।अ-
होअपिदेववरामरार्चितं।।पदांबुजंतेसुमनःफलार्हणंनमंत्युपादायशिखाभिरात्मनः।।स्तमोपदत्यैतरुजन्मयत्कृतं।।अर्थ।।जेदे
भाईआवृंदावननेविषे।।मृगलांतथागायोतथाझाडवातलेआपणेबेठियेछियें।।तेसर्वेमोटाभाग्यवालांछे।।एविरीतेपोतानेमनु
ष्यदेहनेकल्याणकारिनुंदरशनएवोसमोजिवनेआववोघणोदुर्लभछे।।अनेपूर्वेजेनेप्रगटभगवान्मल्याछे।।तेनाजसाक्षात्कारकल्याण
थयांछे।।अनेतेनागुणमोटाब्रह्मादिकगायछे।।माटेतेसमोआजतमारेसर्वनेआव्योछे।।तेतमाराभाग्यनोपारनथि।।केमकेजेसर्वो-
परिभगवानतेजतमनेआजमल्याछे।।नेतेनुजसर्वेकह्युंथायछे।।अनेमनुष्यदेहभगवानधारणकरेछे त्यारेमनुष्यजेवाजणायरवरापण
तेनेज्ञानेकरिनेजितवानेकोईसमरथनथि।।अनेआजभगवानेज्ञानशक्तिधारणकरिछे।।तेणेकरिनेघणाकजियभगवत्परायणथशे।।ने
पणभागवतमांएकादशस्कंधनेविषेपांचमाअध्यायमां।।श्लोक।।३८।।कृतादिषुप्रजाराजन्।।कलाविछंतिसंभवम्।।कलौखलुभवि
ष्यंतिनारायणःपरायणाः।।अर्थ।।शुकदेवराजापरिक्षितनेकहेछेहेराजन्।।सत्ययुगनिआद्येलेइनेमोटादेवछेतेकलियुगनेविषेजन्मने
इछेछे।।शामाटेजेकलियुगनेविषेखलुकहेतांनिश्चेघणाकजीवनारायणपारायणथाशे।।एविरितेदेवतानेदुर्लभसमोतेआजतमनेप्रा
प्तथयोछे।।कहेतांअनंतप्रतापेजुक्तजेभगवान्तेजतमनेआजप्रत्यक्षमल्याछे।।एमदृढनिश्चयराखजो।।   ।।इतिश्रीमुखसिद्धांत
समाप्त।।   ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।।   ।।संवत्।१९।ओगणिशे।।२६।।शोलनाश्रावणशुदि।।१५।।पुन्यमनेदिवसमहा
राजश्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीभावनगरमध्येदवेरणछोडजिनिबेहेनश्रीअमृतबानेघेरढोलियाउपरगादितकियाबिछाविनेतेउपरवि-
राजमानथयाहता।।नेकिनखापनोसुरवालनेजामोधारणकर्यांहता।।नेमस्तकउपरकसुंबलसोनेरिपाघबांधिहति।।अनेगुढोरेटोनेकसुं
बलसेलुंधारणकर्यांहतां।।नेएकसोनेरीसेलुंखभेनाख्युंहतुं।।अनेकंठनेविशेगुलाबनेमोगरानाहारगुथेलाधारणकर्याहताअनेहाथने
विषेगजराबाजुपोचायोनेविंटीयोफुलनांधारणकर्यांहतां।।अनेकानउपरपुष्पनागुछधारणकर्याहता।।नेपाघमांतोरालटकताहता
अनेपोतानामुखारविंदनिआगलसाधु।।तथाघणाकहरिभक्तनिमोटीसभाभराईनेबेठिहती।।पछेमाहाराजबोल्यांजे।।जियनोमो

क्षक्यारे थायछे॥ तो साक्षात्कार प्रत्यक्ष भगवानजिवनेमले॥ अनेते भगवाननास्वरूपनोउत्तमनिरविकल्पनिश्चयथाय त्यारेमोक्षथाय॥
नेमायानेतरिने भगवाननाधामनेपामे॥ए सर्वशास्त्रनोसिद्धांतछे॥पछेमेहेतात्रिभोवनधनजियेमहाराजनेहाथजोडिनेप्रश्नपुछ्युं॥जे
हेमहाराज प्रत्यक्ष भगवाननास्वरूपनोउत्तम निरविकल्पनिश्चयथवानोशोउपायछे॥ ते कृपाकरिनेकहो॥पछेमहाराजबोल्याजे॥भ-
गवाननास्वरूपनोनिश्चयतो भगवानथकिजथायछे॥तेभगवानप्रथविउपर प्रगटथायछे॥ त्यारे तेभगवाननेसरणेआव्योजेजिवछे
नेआत्यंतिकप्रलयनुंज्ञानआपिनेपोतानास्वरूपनोनिश्चयकरावेछे॥त्यारेनिश्चयथायछे॥ पछेजेनेआत्यंतिकप्रलयनुंज्ञानसिद्धथा
यछे॥तेभक्तजेतेप्रत्यक्षमूर्त्तिज्ञानदाताभगवानतेनेविषे सर्वोपरि पुरुषोत्तमपणानोनिश्चयकरेछे॥हवेतेज्ञानने कहियेछीयेजेतेभ
गवानकेवाछे॥ केमायापरएवुंजेअक्षरधाम॥तेनेविषेसदायविराजमानछे॥नेतेभगवानदिव्यस्वरूपेछे॥नेसाकारद्विभुजमूर्त्तिछे
॥नेअतिशेप्रकाशवान्छे नेमनोहरछे॥नेअनंतएश्वर्ययुक्त॥नेअनंतशक्तियोअनंतपारसदेविटाणाथका विराजमानछे॥एवाजे
भगवान्पुरुषोत्तमते कृपाकरिनेजिवोनामोक्षनेअर्थेअत्यंतिकप्रलयमांहताजेजिवोतेनेउत्पन्नकरवासारुंस्रष्टिकरवानेसमेअक्षर
सामिद्रष्टिकरेछे॥तेअक्षरकेवुंछे॥तोसर्वाधारछे॥नेतेअक्षरनाएकदेशनेविषेअनंतएवासबलब्रह्मपुरुषरह्याछे॥तेमांथीएकपु-
रुषनेअक्षरजेतेप्रकाशोछे॥तेपुरुषकेवोछे॥तोप्रकृतिनोनियंताछे॥नेअखंडछे॥नेअनादिछेअनेएनेब्रह्मकहेछे॥नेतेकुटस्थछे॥
एवोजेपुरुषतेनाअंगनेविषेप्रकृतिरहिछे॥तेनेपुरुषजेतेअक्षरनाप्रकाशवडेकरिनेजाग्रतकरेछे॥पछेतेपुरुषप्रकृतिनासंजोगेक
रिनेअनंतकोटिप्रधानपुरुषउत्पन्नथायछे॥नेतेप्रधानपुरुषथकिमहत्तत्वथायछेनेमहत्तत्वथकि त्रणप्रकारनोअहंकारथायछे॥ते
मांसत्वगुणथकिचारअंतःकरण॥नेचौदइंद्रियो॥ अंतःकरणनादेवताथयाछे॥अनेरजोगुणथकीदशइंद्रियोथायछे। ।अनेतमो
गुणथकिपंचभूतनेपंचविषयथायछे॥एविरित्येचोविशतत्वउत्पन्नथया॥पछेतेतत्वेकरिनेइश्वरनेजिवनादेह॥जेपिंडब्रह्मांडस-
र्जाणा एविरितेभगवानजेतेअक्षररूपेसर्वेमांप्रवेशकरिने॥अंतरजामिपणेरह्याछे॥पणभगवानविनाएकअणुखालिनथि॥तेश्रुति
मांकह्युंछे॥जेसर्वंखल्विदंब्रह्म॥अनेवलितेभगवान्सर्वमांरह्याथकापणजुदारह्याछे॥तेभगवानजेवाअक्षरमांछे॥तेवापुरुष ॥३४॥

मांनथि।।केमके भगवान तो अक्षरमां छे।।नेअक्षर द्वारे पुरुषमां प्रवेश कर्यो छे।।माटेअक्षररूपि पंडआडुं आव्युं।।अनेजेवा प्रकृतिपुरुषमांभ
गवानछे।।तेवा प्रधानपुरुषमांनथि।।नेजेवा प्रधानपुरुषमांछे।।तेवा महतत्वमांनथि।।नेमहतत्वमांजेवाभगवानछे।।तेवात्रणप्रका
रनाअहंकारमांनथि।।नेजेवाअहंकारमांभगवांनछे।।तेवाचोविशतत्वमांनथि।।नेतत्वमांजेवाभगवान्छे।।तेवावैराटमां नथि।।नेवैरा-
टमांजेवाभगवान्छे।।तेवाब्रह्मादिकदेवमांनथि।।नेब्रह्मादिकदेवमांजेवाभगवान्छे।।तेवामनुष्यमांनथि।।नेमनुष्यमांजेवाभग-
वान्छे।।तेवापशुपक्षादिकमांनथी।।एविरितेपात्रनितारतम्यताये।।अनवयपणे सर्वमांभगवान्रह्याछे।।अनेव्यतिरेकपणेतो सर्वथि
जुदारह्याछे।।जेमसूर्य छे तेपोतानामंडलनेविषेमूर्त्तिमानरह्यो छे।।अनेपोतानाप्रकाशेकरिनेसर्वनानेत्रमांरह्योछे।।तेमभगवान्जे
तेमूर्त्तिमानतोपोतानाअक्षरधामनेविषेरह्याछे।।नेपोतानाअंगनाप्रकाशरूपजेअक्षरब्रह्मरूपज्ञानतेरुपेकरिनेतो सर्वेविश्वमांरह्या
छे।।तेकेविरितेभगवानसर्वमांरह्याछे।।तोजेमसूर्यजेतेनेत्रमांरह्योछे।।तेनेत्रनाचारभेदछे।।तेकिया।।तोएकतोमोटिआंख्यछे नेतेआंख्य
मांरत्नछे।।नेतेरत्नमांमाणसियोछे।।नेमाणसियामांप्रकाशछे।।तेप्रकाशनेनेसूर्यनाप्रकाशनेएकजातिपणुंछेमाटेतेनेत्रनाप्रकाश
मांसूर्यनोप्रकाशआव्यो।।त्यारेदेखायछे।।अनेसूर्यनोप्रकाशनहोयनेआंखपोतानीपोतापासेहोय।।तोपणकांईदेखायनहिं।।
अनेसूर्यनोप्रकाशहोयतोपणजोपोतानीआंख्यमांप्रकाशनहोयतोदेखायनहि।।तेममोटिआंख्यनेठेकाणेतोजिवनुंस्थुलशरीरछे।।
नेरत्ननेठेकाणेसूक्ष्मशरिरछे नेमाणसियानेठेकाणे जिवनुंकारणशरिरछे नेतेमांजेप्रकाशतेनेठेकाणेपोतेजिवात्माछे।।नेसूर्यना
प्रकाशनेठेकाणेभगवाननांअंगनातेजरूपजेअक्षरब्रह्मतेछे।।अनेसूर्यनेठेकाणेपरमात्माभगवानपोतेछे तेसूर्यजेमएकछे तेम
भगवानपणएकजछे।।नेतेनाअंगनोप्रकाशजेअक्षरब्रह्मतेपणएकछे।।अनेजिवअनंतछे।।तेजेमसूर्यवडेआंख्यसर्वेपदार्थदेखे
छे।।नेसूर्यनेपणसूर्यवडेदेखेछे।।तेमभगवाननुंज्ञानपणभगवानवडेजथायछे।।जेमहिरेकरिनेहिरोविंधायछे।।नेमणियेकरिनेज
मणिविंधायछे।।तेमभगवाननोनिश्चयभगवानवतेजथायछे।।अनेवलिजेमदेहनादुःखनेजिवजाणेछे।।पणजिवनादुःखनेदेह
जाणिशकेनहिं।।तेमभगवानजेतेजिवनेजाणेछे।।पणजिवभगवाननेजाणवानेसमर्थनथि।।माटेएताज्यारेभगवानरूपाक

रिंनेराम कृष्णादिक रूपे मनुष्य जेवा थइने पोताना स्वरुपनुं ज्ञान करावे छे॥ त्यारे जिवने भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय छे॥ ने जिव जे ते पंचवि
षय थकि मुकाईने मायापर थाय छे॥ ने ब्रह्मरूप थइने अक्षरधामने पांमे छे॥ हवे ते भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान जे ते पोते एम करावे छे॥ जे जेम उत्प
ति छे॥ तेम ज प्रलय थाय छे॥ ते प्रथम जेम आकाशमांथी वायु थाय छे॥ ने वायु थकि अग्नि थाय छे॥ अने अग्निथकि जल थाय छे॥ ने जलथकि
पृथ्वि थाय छे॥ एविरिते जेम उत्पत्ति थाय छे तेम प्रलय समे पृथ्वि जलमां लय थाय छे॥ ने जल अग्निमां लय थाय छे॥ ने अग्नि वायुमां लय
थाय छे॥ ने वायु आकाशमां लय थाय छे॥ एविरिते उत्पत्तिने प्रलय थाय छे॥ तेमां जिव जे ते वारंवार जन्ममृत्युना दुःखने पामे छे॥ माटे ए-
जिव ज्यारे आत्यंतिक प्रलयना ज्ञानने पांमे॥ त्यारे ते जिव जे ते जन्ममृत्युना दुःख थकि मुकाइने ब्रह्मरूप थाय छे॥ हवे ते ज्ञान प्रलयनि-
रित्यने कहुं छुं॥ जे जेम आ मनुष्यना देह छे॥ तेम चौदलोकनुं ब्रह्मांड ते वैराजनां मे इश्वरनो देह छे॥ ते जेम मनुष्यना देहमां चोविस तत्व छे
॥ तेम वैराजना देहमां चोविश तत्व छे॥ ते वैराजना देहमां महत्त छे ने जिवना देहमां अल्प छे अने जिवने स्थुलसूक्ष्मने कारण एत्रण देह छे॥
ने वैराजने वैराटसूत्रात्माने अव्याकृत एत्रण देह छे॥ अने एथकि जिव तथा इश्वरनो आत्मा जुदो छे॥ हवे ते आत्मा जुदो छे तेने समजवा
निरित्य कहिये छिये॥ जे जिवना देहमां अस्थि जे हाडकादिक पृथ्विनो भाग छे॥ तेने महत पृथ्वीमां लय करिने पोताना आत्माने जुदो
पाडवो॥ अने महत पृथ्वि छे ते महत जलना एक अंशमांथि उपजि छे॥ माटे ते पृथ्विने जलमां लय करिने ते वैराजना आत्माने जुदो स
मजवो॥ अने जलनि दृष्टिये जोईये तो एकलुं जल देखाय॥ पण पृथ्वि देखाय नहिं॥ अने जिवना देहमां लोहोई आदिक जे जलनो भा
ग छे॥ ते महत जलमांथि थयो छे॥ तेने ते मां लय करीने ते जलथकि पोताना आत्माने जुदो पाडवो॥ अने जे जल छे ते अग्निना एकदेश
मांथि उपनुं छे॥ तेने ते अग्निमां लय करिने ते महत अग्निथकि वैराजना आत्माने जुदो समजवो॥ अने ज्यारे अग्निनि दृष्टीये जोईये तो ज
ल पृथ्वि काईये नथि देखातुं॥ एकलो अग्नि देखाय छे अने जिवना देहमां जठराग्नि छे ते महत अग्निमांथी उपन्यो छे॥ माटे तेने महत अग्नि
मां लय करिने पोताना आत्माने जुदो पाडवो॥ ने महत अग्नि छे ते वायुना एकदेशमांथि उपज्यो छे॥ तेने ते वायुमां लय करिने॥ ते इश्वर
ना आत्माने जुदो समजवो॥ अने जिवना देहमां प्राणवायु छे ते महत वायुमांथी उपज्यो छे॥ तेने ते मां लय करिने पोताना आत्माने जुदो पा

ड्वो ॥ अनेजेमहतथायुछे तेमहदाकाशनाएकदेशमांथिउपन्योछे ॥ माटे तेनेमहदाकाशमांलयकरिने तेवैराजनाआत्माने जुदोसमज-
वो ॥ अनेज्यारेआकाशनीद्रष्टीएजोईये ॥ त्यारेतो पृथ्विजलादिचारभूतनथिदेखाता ॥ एकलोआकाशजदेखायछे ॥ अनेजिवनादे
हनेपिंड ॥ प्राणादिकनिमुंगलियोनो अवकाशतेमहदाकाशमांथीउपन्योछे ॥ तेनेतेमांलयकरिनेतेथीपोतानाआत्मानेजुदोपाडवो
॥ अनेजेमहदाकाश छे ॥ तेअहंकारमांथिउपन्यो छे ॥ तेनेतेअहंकारमांलयकरिने ॥ तेइश्वरनाआत्मानेजुदोसमजवोअने जिवनादेह-
मांजेअहंकार छे ॥ तेमहत अहंकारथकिउपन्यो छे ॥ माटे तेनेतेमांलयकरिनेपोतानाआत्मानेजुदोपाड्वो ॥ अनेजे अहंकारछे तेमहतत्व
मांथिउपन्यो छे ॥ तेनेतेमांलयकरिनेतेमहतअहंकारथकिवैराजनाआत्मानेजुदोसमजवो ॥ अनेजेजीवनुंचित्तछे तेमहत्तत्वमांथिउ
पन्युछे ॥ तेनेतेमांलयकरिने ॥ तेथिपोतानाआत्मानेजुदोपाडवो ॥ अनेजेमहतत्व छे ॥ तेप्रधानपुरुषमांथिउपन्युछे ॥ तेनेतेमांलय
करिनेतेइश्वरनाआत्मानेजुदोसमजवो ॥ अनेजिवनुंजेमनछे ॥ तेप्रधानपुरुषथकिथयुं छे ॥ तेमननेप्रधानपुरुषमांलयकरिनेपोता
नाआत्मानेतेथीजुदोपाडवो ॥ अनेजेप्रधानपुरुषछे तेप्रकृतिपुरुषथकिउपन्युछे ॥ तेनेतेमांलयकरिने तेइश्वरनाआत्मानेजुदोस
मजवो ॥ अनेजिवनिजेबुद्धिछे ॥ तेमूळमायामांथिउत्पंनथईछे ॥ तेबुद्धिनेमूळमायामांलयकरिनेपोतानाआत्मानेतेथिजुदोसम-
जवो ॥ अनेजेमूलमाया छेतेसबलब्रह्मनाएकदेशमांथीउत्पंनथईछे ॥ तेमायानेसबलनेविषेलयकरिने तेइश्वरनाआत्मानेजुदो
समजवो ॥ अनेएविरीतज्ञांनप्रलयकरिनेपछे पोतानाआत्मानेनेवैराजनामेइश्वरनाआत्माने ॥ अष्टावरणरुपमायाथीजुदापा
डिनेतेमायानुंद्रष्टापणुं ॥ टालिनेशुद्धचैतन्यरुपथईनेअक्षरब्रह्मनेविषेएकत्वपणुकरवुं ॥ केहेतांपोतानाआत्मानेअक्षरब्रह्ममा
नवो ॥ अनेते अक्षरनाआधार ॥ अक्षरातितपरमात्माभगवान छे ॥ एविरितेजेमउत्पत्ति तेमप्रलयकरिनेपोतानाआत्मानेस्कंदरुपए
वुंजेअक्षरब्रह्म तेनेपोतानुंस्वरुपमांनिनेप्रतिलोमद्रष्टिकरिनेप्रत्यक्षएवाजेज्ञानदाताभगवान तेनुंआत्मानेविशेध्यानकरवुं ॥ ए
वे ॥ रितेसमजिनेजेध्यान करेछे ॥ तेनेसाक्षात्कारदिव्यमूर्तिभगवानदेखाय छे ॥ नेतेनेप्रत्यक्षमूर्त्तिभगवान तेनास्वरुपनोउत्तमनिरवि
कल्पनिश्चयथायछे ॥ जेमसूर्यनोप्रकाशनिराकार छे ॥ पणतेमांदरपणराखिये तोतेमांमूर्त्तिमानसूर्यदेखायछे ॥ तेमपोताना

आत्मा नेअष्टावरणथिपरस्मध्यचैतन्यब्रह्मरूपमानिने तेनेविषेपोतानेमल्या जेप्रत्यक्षमूर्त्तिभगवानतेनुंध्यानकरवुं॥अनेएविरितेजे
ध्यानकरेतो तेनेपोतानाआत्मानेविषेअनंतइश्वर्य॥अनंतपारसदनेअनंतप्रतापयुक्तजेभगवानतेमूर्त्तिमानप्रत्यक्षदेखायछे॥
अनेएविरितेध्यानकरतेकरते भगवानना भक्तनिदिव्यमूर्त्तिबंधायछे॥अनेतेने भागवतितनुंकेहेछे॥अनेतेभक्तजेतेभगवानना
सरखाजआकारनेपामेछे॥नेअपार अद्भुतसुखनेपामेछे॥अनेते भक्तअखंड भगवाननिसेवामां रहेछे॥ अनेतेनेकोई कालेपा
छोजन्मधरवोपडतोनथि॥एमकहिनेमहाराजबोल्याजेहवेकिरतन बोलो॥पछेसाधुकिर्तनगावालाग्या॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धा
तसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत१९शोसनाश्रावणवदि॥३॥त्रिजनेदिवस॥माहाराजश्रीहरिकृष्णभगवा-
नगामश्रीभावनगरमध्ये॥मेहेतातेजपालनेघेरमेडियोनाचोकवच्चे पाटउपरगादितकियाबिछाविनेतेउपरविराजमानथयाहता॥अ-
नेसर्वेजरियानिवस्त्रधारणकर्यांहतांअनेकंठनेविषेपुष्पनाहारघणाकधारणकर्याहता॥अनेकर्णउपरगुच्छशोभिरह्याहताअनेपाघमांपु
ष्पनातोरानेछोगलांधारणकर्याहतां॥अनेमुस्तकउपरउंचुंफूलनुंमोटुंछत्रबांध्युंहतुं॥नेललाटनेविषेकेसरनिआडपनेकंकुनोचांदलो
कर्योहतो॥नेपोतानामुखारविंदनिआगलसाधुतथाघणाकहरिभक्तनिसभाभराइनेबेठिहति॥अनेसाधुभागवतधर्मनिकथाकरताह
ता॥पछेकथानिसमाप्तिथईरहि त्यारेमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवानबोल्याजे॥जीवनेअशान्तिछे॥एजजन्ममृत्युनुंकारणछे॥अनेजे
शांन्तिछे॥तेजमोक्षनोहेतुछे॥हवेतेअशान्तितेशुंछे॥तोजिवजेतेदेहनेविषेपोतापणुंमानिनेपंचविषयनेभोगववानिइच्छाराखेछे
॥अनेतेविषयसर्वजेएटला भोगवे॥तोपण तृप्तथवातुंनथि॥एजअशान्तिनुंकारणछे॥अनेतेविषयमांप्रितिहोय॥नेदेहमुकेतोतेप्रितिये
करिनेमाछोदेहधर्वोपडेछेएविरित्येवारंवारजन्ममृत्युनेपामेछे॥अनेहवेशांन्तितेशुंछे॥तोपंचविषयनिवासनामुकिनेपोतेशुद्धआत्म
रूपथईनेपरमात्माप्रत्यक्षनेसाक्षात्कारपांमे त्यारेजिवजेतेपरमशांन्तिनेपामेछे॥पण तेविनाचौदलोकनांविषयसुखभोगवे॥तोय
लेशमात्रशांति थायनहिं॥अनेपंचविषयनांसुखतोकेवांछे॥केजेमतपतिलोढिउपरपाणिनुंटिपुंनांखेतेछमथइनेपाछुंतपवालागे ते-
ममुख्योहोयनेअंनखायत्यारेघडिकशान्तिरहे॥नेवलिपाछोभूख्योथाय॥अनेतृष्यालागिहोयनेपाणिपिये त्यारेघडिकशान्तिरहे॥

नेपछि चलितरषलागे ।।एविरितेदेहमांअनंतव्याधियोरहिछे ।।माटेपंचविषयतेणेकरिनेकोईकालेशान्तिथायनहिं ।।हवेशान्तिक्यारेथाय
।।तोमृत्युटले त्यारेशान्तिथाय ।।तेम्रत्युतोशुंछेतोअज्ञानेकरिनेमिथ्याभ्रान्तिछेतेजम्रत्युछे ।।केमकेदेहनेआत्माबेवस्तुछे ।।तेमांआत्मा
छेतेतोअविनासिछे ।।अनेदेहतोजडछे अनेमिथ्याछे ।।माटेआत्माअविनासिछेतेतोकोईकालेमरतोनथिअनेदेहतोजडछेतेजडवस्तुने
तोम्रत्युहोयनहि ।।केमकेजडएवोजेथाभलोतथापाहाणानिशत्यातेमरिजाशे ।।एमकहेवायनहि ।।तेमदेहतोथाभलावत्जडछे ।।अने
जिदेहचालेहालेछे ।।तेतोआत्माएमांहिप्रवेशकर्योछेतेणेकरिनेचालेहालेछेजेमउपानपगमांपहेर्यांहोयनेतेपुरुषविशगाउचालेतो
तेभेलांपगरखांपणविशगाउचालेछे ।।पणपुरुषविनापगरखांकांईचालवानेसमर्थनथि ।।तेपगरखांरूपजेदेहतेतोआत्मानिसत्ताये
करिनेसचेतनथायछेनेजोनेमांथिआत्मानिसरिजायतोदेहथांभलावत्जडथईजायछे ।।अनेआत्मादेहमांछेतोपणदेहजडछेमाटे
जडएवोजेदेह ।।तेतोसदायमरेलोछे ।।एनेकांईमरवुंनथि ।।अनेजेआत्माछेतेतोकोईकालेमरतोनथिअनेजेजडहोयतेमुवुंकहेवाय
नहिं ।।माटेम्रत्युम्रत्युकहेछेतेम्रत्युतेशुंछे ।।तेनोतपासकरिनेजोईयेतोत्रणेकालमांम्रत्युजनथि ।।नेएतोमिथ्याभ्रांन्तिमात्रछे ।।
माटेएविरितेम्रत्युनोविचारकरेतोम्रत्युजटलिजायछे ।।त्यारेतमेकहेशोजेम्रत्युकेनेछे ।।तोआत्माछेतेपोतानास्वरूपनेभूलि-
नेमायानाचोविसतत्वरूपजेदेह ।। तेनाभावनेपामिगयोछे ।।तेपृथ्विमांपृथ्विरूपथईगयोछे ।।नेजलमांजलरूपथईगयोछे ।।अनेअग्निमां
अग्निरूपथईगयोछे ।।अनेआकाशमांआकाशरूपथईगयोछे ।।नेअहंकारमांअहंकाररूपथईगयोछे ।।नेमनमांमनरूपथईगयोछे
।।नेचित्तमांचित्तरूपथईगयोछे ।।अनेबुद्धिमांबुद्धिरूपआत्माथईगयोछे ।।एविरितेजिवात्माजेतेमायानातत्वोमांलुब्धथईरह्योछे
।।अनेजिवनेविषेमानिताभावपडेकरिने ।।मायारहिछे ।।तेमायानेमहाकारणकहेछे ।।तेमायायेकरिनेप्रकृतिनाकार्यमांउत्पत्तिस्थि
ति ।।नेप्रलयपडेकरिनेजिवात्माजेतेजन्मम्रत्युनेपामेछे ।।माटेतत्वोनेनाशेकरिनेपोतानेम्रत्युमानेछे ।।नेतत्वनेउपजवेकरिने
जन्ममानेछे ।।माटेजिवनेज्यांसुधिअज्ञानछे ।।त्यांसुधिभ्रांन्तिरूपजन्मम्रत्युतेटलतुंनथि ।।जेमस्वप्नामांवाघेग्रह्योहोयतेस्व
प्नमांमुकायनहिं ।।अनेज्यारेजागेत्यारेजाणेजेवाघजमुदलनथि ।।तेमअज्ञानछेत्यांसुधिजिवनेजन्मम्रत्युरूपभ्रान्तिटलतिनथि

॥अनेज्यारे ज्ञान रुपिजाग्रतअवस्थानेपामे छे त्यारेमुदल जाणेजेजन्ममृत्युंहतुंजनहिं॥नेएमजाणेजेएतोमुनेअमथिगलिभ्रांन्तिहति॥म
टेज्ञानजरुरपामवुं॥हवेतेज्ञानथवानिरितकहुंछुं॥जेजडअनेचेतनएबेनाआधारएवाजेपरमात्मातेजिवनेप्रत्यक्षमले॥अनेतेपरमा
त्माजेतेपोतानास्वरुपनुंज्ञानकरावे॥अनेजिवनेतेनाआत्मानुंज्ञानकराविनेपंचविषयनासंगनेटलावेनेस्थूलसूक्ष्मनेकारणएत्रणदेह
थिजुदापाडे॥त्यारेजिवनेजन्ममृत्युटलेनेतेनोमोक्षथाय॥पणतेविनामायातराय नहि॥जेमसोहाथनोऊंडोकुवोहोयनेतेमांथिक्याई
निकलवानोउपायनहोयअनेतेकुवामांहजारपुरुषपड्याहोय॥नेतेसऊजेएवाबलवानहोय॥तोपणतेमांथिएनिमेलेएकेजणोनि-
सरिशकेनहिं॥अनेजोकोईकएकजणोकुवानिबहारहोय॥तोतेपुरुषहजारेजणानेउपरथिदोरडुंमेलिनेकाढेतोनिसरे॥पणतेविना
निसरेनहिं॥तेममायारुपितोसोहाथनोऊंडोकुवोछे॥तेकुवामांमनुष्यदेवब्रह्मादिकसर्वेजिवप्राणिमात्रपड्याछे॥तेदेवब्रह्मा
दिकनेप्रकृतिपुरुषसुधिकोईपोतानिमेलेनिसरवानेसमरथनथि॥माटेमायारुपिकुवाथिबहारकहेतांमायापरएवाजेपरमात्मा
तेप्रगटथईनेज्ञानरुपिदोरडेकरिनेकाढेत्यारेमायारुपिकुवामांथिजिवनिसरेकहेतांमायानेतरिनेजिवजेतेब्रह्मरुपथायपणते
विनाजीवनेमायातरवानोबिजोकोईउपायनहिहवेतेमायाथिपरथवानिरितकहियछियेजेआजिवजेतेपोतानास्वरुपनाअज्ञा
नेकरिनेपृथ्विमांपृथ्विरूपथईगयोछेकहेतांहाडमांसादिकनोजेस्थूलदेहतेहुंछुं॥एममानेछेपछेतेजिवनेदेहथिजुदोपाडवानेअर्थे
सत्पुरुषजेतेजलनुंज्ञानकरावेछे॥जेपृथ्वितोजलथकिथईछे॥नेपाछिजलमांलयपामशे॥त्यारेंजिवजेतेपृथ्विनोत्यागकरिनेज-
लमांप्रवेशकरेछेनेजलनेपोतानुंरुपमानेछेअनेपृथ्विनोजलनेविषेलयकरिने॥जलाकारदृष्टिनेपामेछे॥पछेतेनेअग्निनुंज्ञानक
रावेछे॥त्यारेजलजेतेअग्निमांलयपामेछे॥पछेजिवजेतेजलनाअभिमाननेमुकिनेअग्निमांप्रवेशकरेछेनेअग्निनेपोतानुंरुपमानेछे
॥पछेतेनेवायुनुंज्ञानथायछे॥त्यारेंअग्निजेतेवायुथकिथयोहतोतेपाछोवायुमांलयपामेछेत्यारेजिवजेतेअग्निनोत्यागकरिनेवायुमां
प्रवेशकरेछे॥नेवायुनेपोतानुंरुपमानेछेअनेपछेतेनेआकाशनुंज्ञानथायछेत्यारेवायुपणआकाशमांलयपामिजायछेनेजिवजेते
आकाशनिदृष्टिनेपामेछेत्यारेतेनेपृथव्यादिकचारभूतदृष्टिमांआवतांनथिनेतेनिदृष्टिमांएकलोआकाशजआवेछेनेतेआकाश

नेपोतानुंरूपमानेछे ।।पछेतेनेअहंकारनुंज्ञानथायछे ।। त्यारेआकाशजेतेअहंकारथकिथयोहतो ।।तेतेमांलयपामेछे ।।केमकेजेमांथिजेउ
पन्युंहोय तेमां तेनो पाछो लय थाय छे ।।माटेजिवजेतेआकाशनो त्यागकरिने अहंकारमां प्रवेशाकरेछेनेतेअहंकारनेपोतानुंरूपमानेछे ।।
अनेपछेतेने महतत्वनुंज्ञान थायछे ।।त्यारेअहंकारजेतेमहतत्वमां लयथईजायछे।। त्यारेजाणपणारूपजेजिवात्माजेतेमहतत्वमांप्रवेश
करेछेनेमहत त्वनेपोतानुं रूप मानेछे ।।अनेपछेतेने प्रधान पुरुषनुंज्ञान थायछे ।।त्यारे महतत्वजेतेप्रधान पुरुषनेविषेलयपामेछे ।।अनेजि
वात्माजेतेप्रधानपुरुषमां प्रवेश करिने तेनेपोतानुंरूपमानेछे ।।अनेपछेतेनेप्रकृतिपुरुषनुंज्ञान सत्पुरुषजेतेकरावेछे त्यारेप्रधानपुरुषजे
तेप्रकृतिपुरुषनेविषेलयपामेछे ।।नेजाणपणारूपआत्माजेते प्रकृति पुरुषमांप्रवेशकरिनेतेनेपोतानुंरूपमानेछे।।अनेतेनेपछेअवारिररू
पएवुंजेअक्षरब्रह्म तेनुंज्ञानथायछे त्यारेअष्टावरणजेप्रकृतिनुंकार्यपिंडब्रह्मांड तेसर्वेलयथईजायछे नेएकलिचैतन्यनिराकारव्यापक
दृष्टि रहे छेनेते अक्षरब्रह्मनेपोतानुं रूपमानिनेअखंडस्थितिनेपामेछे ।।नेजन्म मरणथिरहितथायछे अनेएने ।। सर्वंखल्वीदंब्रह्म।नेह
नानास्तिकिंचन।एश्रुतिनोअर्थतथातत्वमस्यादिक महावाक्यनोअर्थ ।।पणपूरो थईरह्योछे ।।अनेतेने निर्बिजसांख्य ।।नेनिर्बिजयो
गनुंज्ञानसिद्धथयुंजाणवुं ।।अनेहवे सबिज सांख्यने सबिजयोगनुंज्ञानकहियेछीये ।।जेनिर्बिजसांख्यने निर्बिजयोगे करिनेपिंडब्रह्मां
डादिकना आकार ।।तथाजिवईश्वर ।।नेपुरुषादिकनाजेआकार ।।तेसर्वेतुंनिराकरणपणुंकरिनेपोतानाआत्मानेशुद्धचैतननिराकारव्या
पकजाणिने अक्षरब्रह्मनेविषेएकत्वपणुंकरिनेतेमांदृढस्थितिपाम्यानेपछे तेअक्षरब्रह्मनिराकार एकरसचैतन ।।तेनाआधारएवाजे
परब्रह्मपरमात्मादिव्यमूर्त्तिभगवानतेनेजाणिनेतेमूर्त्तिनुंअक्षरनेविषे ध्यानकरवुंतेध्यानशा सारुंकरवुं ।।तोसाकारमूर्त्तिनाआधारविना
चैतन्यब्रह्मनिराकारपणे।।अधर्पधर रहेवातुंनथिअनेअनादिमूल अक्षरब्रह्म छे ।।तेपणदिव्यमूर्ति ।।एवाजेपरब्रह्मपरमात्मा तेनाअंग
नोप्रकाशछे ।।अनेजिवमात्रनुं व्यतिरेकमूल स्वरूप अक्षरब्रह्म छे ।। पणतेजिवने अनादिनुंअज्ञानेकरिनेमायानुंआवर्ण छे तेणेकरिनेअ
क्षरथिजिवजुदारह्याछे ।।अनेज्यारेज्ञानेकरिनेमायानुंआवर्णटलेछे ।।त्यारेअक्षरब्रह्मरूपथईनेअक्षरातितपरब्रह्म परमात्मादिव्यमूर्त्ति
ने साक्षात्कारदेखे छे ।।पछे तेनेतोदिव्य मूर्त्तिविनाबिजुंकाईभासतुंनथि।। माटेतेमूर्त्तिनुं अखंडध्यानकर्याकरेछे।। केमके ते निद्रामां

भगवाननि मूर्तिविनापिंडब्रह्मांडादिक कोई आकार रहे तो नथि नेएक भगवानने जदेखे छे अने एवा ज्ञानने पामिने सिद्ध थयो एवो जे मुक्त ते देह
नो त्यागकरिने अक्षरधामने पामे छे ।। ने तेपाछो कोई काले जन्मने धरतो नथि ।। तेएवुं ज्ञान क्यारे थाय छे ।। तोए अक्षरना आधार एवा जे अक्षराति
त परमात्मा भगवान ते कृपा करिने अनंत जिवोने महा सुखिया करवा सारु पोताना सत्य संकल्पे करिने आ पृथ्विउपर मनुष्य देह धारण क-
रिने जिवने ज्ञान आपे छे ।। त्यारे पूर्वक ह्युं एवुं ज्ञान थाय छे ।। पणते विना विजा कोई देव ब्रह्मा ने प्रकृति पुरुषादिक थकि तथा पोतानि मेले ए
वुं ज्ञान थाय नहिं ।। केमके देव ब्रह्मादिक तो सर्वे मायाना पडदामां रह्या छे अने ब्रह्मने पर ब्रह्म तो माया थि पर छे माटे मायामां होय ।। तेणे माया
परनुं ज्ञान केम आपि शकाय ।। नज आपि शकाय ।। अने ब्रह्म तो निराकार छे ने ते ब्रह्मनी दृष्टिमां तो जिव इश्वर माया छे ज नहिं ।। अने जो ब्रह्म-
नि दृष्टिमां जिव इश्वर माया होय तो ते ब्रह्म केहेवाय नहिं ।। माटे ब्रह्म पण ज्ञान देवाने समर्थ नथि अने ज्ञानने पामिने ब्रह्मरूप थईने अक्षर धा
ममां गयो जे मुक्त ते पण पाछो मनुष्य देह धारण करिने ज्ञान देवा आवतो नथि ।। ते पण गितामां श्री कृष्णे कह्युं छे जे ।। श्लोक ।। न तद्भासयते
सूर्यो न शशांको न पावकः यद्गत्वा न निवर्त्तंते । तद्धाम परमं मम ।। तेनो अर्थ जे ।। मारा धामने पाम्यो ते पाछो पृथ्विउपर आवतो नथि अने जि-
वने ज्ञान आपवुं ।। ते पण कोई कि मनुष्य जेवो सजातिथईने ज्ञान आपशे ।। त्यारे ज्ञान थशे पण ते विना अपर पपर ज्ञान थवुं नथि ।। माटे
कर्त्तुम कर्त्तुं ने अन्यथा कर्त्तुं समर्थ एवा जे परमात्मा भगवान् तेजे ते पोताना सत्य संकल्पे करिने ।। मनुष्य स्वरूपनु धारण करिने जिवने मा-
यापर ज्ञान करावे छे ।। त्यारे जिवने ज्ञान थाय छे ।। पछे जेने ज्ञान थयुं ।। एवो जे ज्ञानि ते एम जाणे छे जे मायापर एवुं जे निर्गुण ब्रह्म ते तो मारुं
स्वरूप छे कहेतां ते ज्ञानि छे ।। एम जाणे छे जे हुं ब्रह्म छुं ।। एवुं ज्ञान थाय छे ते तेनि दृष्टिमां माईक आकार जे देव ब्रह्मा ने प्रकृति पुरुष सु-
धिना आकार आवता नथि ।। तो पण तेने एम भासे छे जे ।। आवुं मायापर जे निर्गुण ब्रह्म तेनुं जे ज्ञान ते मुने जेणे आप्युं एवा जे पुरुष ते तो ब्र-
ह्मना पण आधार छे केमके ब्रह्मपर होय ते ज ब्रह्मनुं ज्ञान करावि शके ।। पण ते विना ब्रह्म पोते पण पोतानुं ज्ञान करावि शकतुं नथि ।। तो
ब्रह्म थि ओरा होय तेने तो ते ब्रह्मना ज्ञाननी गम होय ज क्याथि ।। न ज होय ।। माटे प्रत्यक्ष ज्ञानदाता ते ज सर्वोपरि परमात्मा परब्रह्म छे एम
ते ज्ञानि जाणे छे ।। माटे एम जाणिने ते प्रत्यक्ष मूर्त्ति भगवान तेने अक्षरना आधार जाणिने अखंड ध्यान करे छे ने ते प्रत्यक्ष मूर्त्तिने ध्याने क-

रिनेते भक्तनिब्रह्ममयतनुंबंधायछे॥नेतेमहाशान्तिनेपामेछे॥नेभगवाननासरखासुखनेपामेछे॥कहेतांजेमभगवानकाळकर्ममाया-
येरहितछे तेमते भक्तपण काळकर्ममायाये रहितथायछे॥अनेएवुंज्ञानपाम्याविनातोसर्वेदेव ब्रह्मादिकनेअशान्तिछे॥माटेमनुष्यदेहधा
रिजिवमात्रनेज्ञानजरूरपामवुं॥एजमनुष्यदेहनोलाभछे॥अनेजेनेज्ञानपामवानिईच्छानथितेतोपशुतुल्यछे॥ ॥इतिश्रीमुख्य
सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्१९ओगणिशो॥१६सोळना श्रावणवदि॥२॥बिजनेदि
वसमहाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्रीभावनगरमध्ये नवाडि प्रमान्होकरत्रिकमजिनीवेदे नश्रीज्ञांमवानेघेरगुगमणे बारओरडानि
आगळचोकमां पाटउपरगादितकियानखाविनेतेउपरविराजमानथयाहतानेसर्वेस्वेतवस्त्रधारणकर्यांहतांनेमस्तकेकसुबळफें
टोबांध्योहतोनेळलाटनेविषेकुमकुमनोचांदलोकर्योहतोनेसर्वेअंगमांपुष्पनांआभूषणशोभिरह्यांहतांनेपोतानामुखारविंदनिआ-
गळसाधुतथाघणाकहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठिहति॥पछेधर्मानंदस्वामियेहाथजोडिनेप्रश्नपुछ्युंजेहेमहाराज आजगतनिउत्पत्ति
केईरितेथायछे॥अनेजिवमायानाबंधनथकिमुकाईनेमुक्तथायतेनोशोउपायछेतेकहो॥पछेमहाराजबोल्याजेजगतनिउत्पत्तितथापु-
रुषप्रकृति तथाकाळमायातथामहदादिक चोविसतत्वतथाप्रलयतेसर्वेनारूपनेजाणे त्यारेजिवमायानाबंधनथकिमुकाईनेब्रह्मरूपमु
क्तथायछे॥हवेतेसर्वेनांरूपकहियेछियेतेनेसावधानथइनेसांभळो॥जेपुरुषोत्तमभगवानजेतेआत्यंतिकप्रलयनेअंतेअक्षरधामनेविषे
अखंडरह्याथकाउत्पत्तिसमेअक्षरद्वारेपुरुषसामिद्रष्टिकरेछे॥अनेतेपुरुषजेतेजाग्रतनेपामिनेमायानेविषेगर्भनेधरेछे॥अनेतेमायाथकि-
अनंतकोटिप्रधानपुरुषथायछे॥तेप्रधानपुरुषकेवाछेतोअनंतकोटिब्रह्मांडनिउत्पत्तिनाकारणछे॥हवेतेमांएकब्रह्मांडनिउत्पत्तिनि
रितकहुंछुं॥अनेतेएकब्रह्मांडनिउत्पत्तिप्रमाणे सर्वेब्रह्मांडनीउत्पत्तिनिरितजाणवि॥हवेतेप्रधानपुरुषथकिमहतत्वथायछे॥अनेमह
तत्वथकित्रणप्रकारनोअहंकारथायछे॥तेमांसात्विकअहंकारथकि चारअंतःकरणथायछे॥नेराजसाअहंकारथकिदशइंद्रियोथाय-
छे॥नेतामसाअहंकारथकिपंचभूतनेपंचतनमात्राएटलेपांचविषयथायछे॥एविरितेचोविसतत्वथयातेनांनाम॥पृथ्विजलतेज
वायुनेआकाशएपांचभूत॥शब्दस्पर्शरूपरसनेगंधएपांचविषय॥श्रोत्रत्वचाचक्षुरसनानेंघ्राण॥एपांचज्ञानइंद्रियो॥नेवाक

पाणिपादवायुनेउपस्थ ।।एपांचकर्मइंद्रियो ॥अनेमनबुद्धिचित्तनेअहंकार एचारअंतःकरण ॥एयिरितेचोविसतत्वनांनामकह्यां ॥ह
वेपुरुषप्रकृतिकालनेमहत्तत्वादिकचोविसतत्वनांलक्षणकहियेछियेतेनेतमेसांभळो ॥ तेमांपुरुषनुंलक्षणएछेजे ।।पुरुषजेतेप्रकृति-
नोनियंताछे ।।नेप्रकृतिथकिविजाति ।।नेअखंडनेअनादिनेअनंतनेस्वयंजोति ॥ नेसर्वज्ञनेदिव्यविग्रह नेसमग्रआकारमात्रनिप्रवृति
नाकारणनेक्षेत्रज्ञएवोपुरुषछे ।। हवेप्रकृतिनांलक्षणकहियेछिये ॥जेप्रकृतिजेतेत्रिगुणात्मकछेनेजडचिदात्मकछेनेनित्यछेनेनिर-
विशेषछे ।।नेमहदादिकसमग्रतत्व ।।नेजिवमात्रतेनुंक्षेत्रछे ॥नेभगवाननिशक्तिछे ।।तेनेप्रकृतिकहिये ।।नेहवेकालनुलक्षणकहिये
छिये ॥जेतेकालकेवोछे ॥तोगुणसांम्पनेनिरविशेषएविजेमायातेनोजेक्षोभकरेछे तेनेकालकहिये ।।हवेतत्वनांलक्षणकहियेछिये
॥तेमांप्रथमचित्तनुंलक्षणकहेवाशे ।। चित्तनेनेमहततत्वनेअभेदपणेजाणवुं ।।अनेतेमहततत्वनेविषेसूक्ष्मरूपेकरिनेसमग्रजगतरह्युं
छे॥नेपोतेनिरविकारीछे।।नेप्रकाशवानछे ॥नेस्वछंदछे।।केहेतांनिर्विकारिनिर्मलछे।।नेसत्वसत्वमयछे।।नेशान्तछे।। एचितनुंलक्ष
णकह्युं॥ हवेअहंकारनुंलक्षणकहीयेछिये ।।अहंकारजेतेत्रिगुणात्मकछे।।नेभूतमात्राइंद्रियोअंतःकरणदेवताने प्राणएसर्वेनीउ-
त्पत्तिनुंकारणछे।।नेएनेविषेशान्तपणुंघोरपणुनेविमुढपणुंरह्युंछे।।एअहंकारनुंलक्षणछे।।हवेमननुंलक्षणकहेछे।।मनजेतेस्त्रि
यादिकजेसमग्रकामनामात्रतेनीउत्पत्तिनुंक्षेत्रछे ।।नेसंकल्पविकल्परूपछे ।।नेसमग्रइंद्रियोवुंनियंताछे।।एमननुंलक्षणछे।।ह
वेबुद्धिनुंलक्षणकहेछे।।बुद्धिनेविषेपदार्थमात्रनुंज्ञानरह्युंछे ।।अनेसमग्रइंद्रियोनेविषेजेविषयज्ञानछेतेबुद्धिवतेछे।।नेबुद्धिनेविषे
संसयनिश्चयनिंद्रानेस्मृतिएरह्यांछे।।एबुद्धिनुंलक्षणकह्युं॥हवेइंद्रियोनांलक्षणकहेछे।।श्रोत्रइंद्रियेकरिनेशब्दशोभलायछे।।ने
त्वचायेकरिनेस्पर्शनुंज्ञानथायछे।।नेचक्षुइंद्रियेकरिनेरूपनुंज्ञानथायछेनेजिव्हायेकरिनेरसनुंज्ञानथायछे।।नेघ्राणेकरिनेगंध
नुंज्ञानथायछे ।।एपांचज्ञानइंद्रियोना लक्षणकह्यां ।।हवेकर्मइंद्रियोनांलक्षणकहेछे।।वाणियेकरिनेबोलवारूपकर्मथायछे।।नेहाथे
करिनेलेवादेवारूपकर्मथायछे।।नेपगेकरिनेजवाआववारूपकर्मथायछे।।नेशिष्णुयेकरिनेविर्यमूत्रादिकत्यागकरवारूपकर्मथाय-
छे।।नेगुदाइंद्रियेकरिनेमलादिकत्यागकरवारूपकर्मथायछे।।एपांचकर्मइंद्रियोनांलक्षणकह्यां॥हवेपांचमात्रानांलक्षण

कहे छे ॥ शब्दजे तेअर्थमात्रनोआश्रयछे।नेव्यवहारमात्रनोकारणछेनेबोलनारानिजातिनेस्वरूपतेनोजणाववापणुछे।नेशब्दनेआका
शनेविषेरहेवापणुं छे॥ नेआकाशनितनमात्राछे।नेश्रोत्रइंद्रियेकरिनेग्रहणकरवामांआवे छे।एशब्दनुंलक्षणकह्युंहवेस्पर्शनुं लक्षण
कहे छे॥ स्पर्शजेतेवायुनितनमात्रा छे ॥ नेतेनेविषे कोमलपणुं॥ कठणपणुंसितलपणुउष्णपणु ॥नेत्वचाएकरिनेग्रहणकरवापणुं॥ए
स्पर्शनुं लक्षणकह्युं॥ हवेरूपनुं लक्षणकहे छे ॥ रूपजे तेपदार्थमात्रना आकारनेजणाविदेवापणुं॥ नेतेपदार्थनेविषेगौणपणे रहेवापणुं॥
नेपदार्थनीरचनाएकरिने परिणामपणुं ॥नेतेजतत्वनुंतनमात्रापणुं ॥नेचक्षुइंद्रियेकरिनेग्रहण करवापणुंएरूपनुं लक्षण कह्युं॥ हवेरसनुं
लक्षणकहे छे॥ रसजे तेमधुरपणुं तिखापणुं॥खारापणुं खाटापणुं कडुवापणुंकसायलापणुं गल्यचिकणापणुंनेजलनुं तनमात्रापणुं॥ने
जिव्हाइंद्रियेकरिनेग्रहणकरवापणुं॥एरसनुंलक्षणकह्युं॥ हवेगंधनुंलक्षणकहे छे ॥गंधजेतेसुगंधपणुं दुर्गंधपणुंनेपृथ्विनुंतनमात्राप-
णुं॥ नेनासिकाइंद्रिये करिने ग्रहणकरवापणुं॥एगंधनुंलक्षणकह्युं॥हवेपंचभूतना लक्षण कहे छे॥ पृथ्विजेतेजिवमात्रनेधारणक-
रवापणुं नेलोकरूपे करिनेस्थानपणुं॥नेआकाशादिकचारभूतनुंविभागकरवापणुं नेसमग्रभूत प्राणिमात्रनाशरिरनुंप्रगटकरवापणुं
॥एपृथ्विनुं लक्षणकह्युं ॥ हवेजलनुंलक्षणकहे छे ॥ जल जेतेपृथ्व्यादिक द्रव्यनुंपिंडिकर्मकरवापणुंनेपदार्थनेकोमलकरवापणुं
नेभीनुंकरवापणुंनेतृप्तिकरवापणुं॥ नेप्राणिमात्रनेजिवाडवापणुंनेतापनेटालवापणुंनेतृष्णानिनिवृत्तिपमाडवापणुंनेबहुपणुं॥
एजलनुं लक्षण छे॥ हवेतेजनुंलक्षणकहे छे॥ तेजजे तेप्रकाशपणुं॥नेअन्नादिकनेपचाववापणुंनेकाष्टनेहुतद्रव्यादिकनुंग्रहणकर-
वापणुं॥ नेदाहनेहरवापणुंनेशोषणकरवापणुंनेक्षुधानेतृशा॥एतेजनुंलक्षणछेहवेवायुनुं लक्षणकहे छे॥ वायुजे तेवृक्षादिकनेकं-
पाववापणुं॥नेतृणादिकनेभेलाकरवापणुं॥ नेशब्दस्पर्शरूपरसनेगंध ॥एजेपांचविषयतेनेश्रोत्रादिक पांचज्ञानइंद्रियोप्रत्येपमा-
डिदेवापणुं॥ नेसर्वेइंद्रियोनुंआत्मापणुं ॥एवायुनुंलक्षण छे॥हवेआकाशनुं लक्षणकहे छे॥आकाशजे तेसमग्रजिवमात्रनेअ-
वकाशदेवापणुं ॥नेभुतप्राणिमात्रनोजेदेहतेनामांहेनो वेहेवार नेदेहनेबहारनोवेहेवार तेनुंकारणपणुं । नेप्राणइंद्रियोअंतःकरणने
जिव ॥एसर्वेनुंस्थानपणुं ॥एआकाशनुंलक्षण छे॥॥ एविरिते चोविसतत्वप्रकृतिपुरुषने कालतेनास्वरूपनेजाणवापछेतेतत्वजे

तेपरमेश्वरनिइच्छायेपेस्यांथकांपोतपोतानाअंशेकरिनेइश्वरनेजिवनादेहनेसरजतांहवां॥ तेमांइश्वरनोदेहजेवैराटस्तत्रात्मानेअ-
व्याकृत॥अनेजिवनोदेहजेस्थूलसूक्ष्मनेकारणअनेवैराटनामेजेइश्वरतेनादेहनीद्विपारधकालनिआयुष्यछे॥नेतेवैराटपुरुषनाएकदिव-
समांचउदमन्वंतरथायछेतेजेवडोएनोदिवसछे॥तेवडिजएनिरात्रिछे॥अनेज्यांसुधिएनोदिवसहोयत्यांसुधित्रिलोकिनिस्थितिरहेछे
॥अनेज्यारेएनिरात्रिपडेछेत्यारेत्रिलोकनोनाशथायछे॥तेनेनिमितप्रलयकहिये॥अनेज्यारेवैराटपुरुषनोद्विप्रारधकालपुरोथाय-
छे॥त्यारेएवैराटदेहनोसत्यादिलोकेसहितनाशथायछेनेमहाद्दादिकजेचोविसतत्वनेप्रधानपुरुषतेसर्वेप्रकृतिनेविषेलयथायछे
॥तेनोप्राकृतप्रलयकहिये॥अनेजेप्रकृतिछेतेपुरुषनाएकदेशनेविषेलयथईजाय॥अनेनेपुरुषजेतेज्ञांनपामिनेप्रकृतिनोत्याग
करिनेअक्षरब्रह्मरूपथईनेपुरुषोत्तमभगवाननिसेवामांरहे॥तेनेआत्यंतिकप्रलयकहिये॥नेतेनेज्ञानप्रलयकहिये॥अनेदेवदैत्यने
मनुष्यादिकनादेहनोजेक्षणक्षणप्रत्येनाशथायछेतेनेनित्यप्रलयकहिये॥एविरितेविश्वनिउत्पत्तिनेप्रलयथायछेतेनेजोजिवजाणे
तोतेनेसंसारनेविषेवैराग्यथायछे॥नेमायानाबंधनथकिमुकाईनेभगवाननेविषेतेनेभक्तिथायछे॥नेतेनोमोक्षथायछेहवेएवुंज्ञान
क्यारेथायछे॥तोज्यारेप्रगटभगवानपोतेपोतानेश्रीमुखेज्ञानआपेतथाप्रगटभगवानथकिज्ञानपामिनेनिरवासनिकथईएवाजेएका
तिकतत्ववेतासंत॥पंचविषयनात्यागि॥तेनाथकिएवुंज्ञानथायछे॥पणतेविनांविषयनिवासनावालाथकितथाएकलांशास्त्रनेव
चवेशांभलवेकरिनेएवुंज्ञाननथिथतुं॥अनेएविरित्यनाज्ञानविनाजिवनोमोक्षपणथायनहिं॥एसिद्धांतवार्ताछे॥ ॥इतिश्रीमु
खसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्॥१९॥ओगणिशें॥१६॥शोलनाश्रावणवदि।५।पंच-
मिनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवान्॥गामश्रीभावनगरमध्येजोसिधनजिजादवजिनेघेरआथमणाबारनिमेडिउपरगादितकि
यानरवाविनेढोलिगाउपरबिराजमानथयाहता॥अनेसर्वेजरियानिवस्त्रधारणकर्यांहतां॥अनेपुष्पनांआभूषणसर्वेअंगमांशोभिरह्या
हतां॥नेकेशरनिआडयनेकंकुनोचांदलोकर्योहतोनेपोतानामूखार्विंदनिआगलसाधुतथादेशदेशनाहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठि
हति॥पछेतेधनजिनिमातुश्रीमाणकबातेणेमहाराजनिपुजाकरिनेपोतेवरतमानलिधां॥नेमहाराजनोद्रढआसरोकर्योपछेम

हाराजबोल्याजेसर्वेसांभलो॥एकवार्त्ताकरियेछियेजेआजगतनेविषेमनुष्यनेबेप्रकारनोलाभछे॥तेमांएकअविनासीलाभछेनेएक
नाशथईजायएवोलाभछे॥तेमांअविनासिलाभतेकियो॥तोपोतानेसत्पुरुषनोसमागमथायनेतेसमागमेकरिनेपोतानेआत्मापरमात्मा
नास्वरूपनुंज्ञानथायतथापोतानेमहादुःखनिदेनारिनेजन्ममृत्युनेगर्भवासनेचोरासिमांरखडावनारिजेपंचविषयनिवासनातेथकि
निवृतिपमायकहेतांजगतनिवासनोटलिजाय॥तथाइंद्रियोपोतानेस्वाधिनेथायतथामनवशथाय॥तथानिरवासनिकपणेरहीने
प्रत्यक्षभगवाननुंभजनस्मरणकथाकिरतनसेवाकरवि॥तथाप्रत्यक्षभगवान्अनेतेभगवाननासंततेवुंपोतानेदरशनथाय।एसर्वे
अविनासिलाभछेनेअलोकिकदुर्लभलाभछे॥अनेहवेअसत्यलाभतेकियो॥तोजिवनेमाईकपदार्थजेधन्यमालगांमगरास
स्त्रिछोकरांसगांकुटुंबिघणांकमेले तेसर्वेमिथ्यालाभछेअनेतेपदार्थनेमलवेकरिनेथयोजेजिवनेहरष॥तेपणमिथ्याहरषछे॥
नेनासवंततेलाभछे॥नेतेहरषपणनासवंतछे॥केमकेतेपदार्थअंतेएकदहाडेजरूरनासथईजसे॥अनेकदापितेपदार्थपांचद
हाडारह्यांतोपोतानेतोएकदिवसदेहमुकिनेजरूरजवुंपडशे॥त्यारेपणकोईपदार्थभेगांनहिंआवे॥माटेआलोकमांमाईकपदार्थ
नोजेटलोजेटलोलाभछेतेसर्वेनासवंतलाभछेअनेवलितेमाईकपदार्थनालाभनिकेडेअपारदुःखरह्यांछे॥केमकेतेपदार्थप्राप्तथा
य॥त्यारेजिवराजिथायछे॥अनेतेपदार्थनेतोनाशथवानोधर्मछे॥तेपाछुंनासथायत्यारेतेजिवनेतेनुंदुःखथायछे॥एविरितेअनंतप
दार्थनाअनंतदुःखथ्याकरेछे॥अनेतेएविरितेजिवनेमाईकपदार्थघणाकफेराप्राप्तथयाछेनेपाछानासपामिगयाछेकेमकेजिवेज्यां
ज्यांचोरासिमांजन्मधर्याछे॥त्यांत्यांस्त्रिछोकरांकुटुंबपरिवारप्राप्तथयाछे॥नेपाछानाशपामिगयांछे॥अनेवलिमनुष्यदेहपामिनेप्र
भुनीभक्तिनहिकरे॥तोतेनेचोरासिमांजेजेयोनिमांजासेत्यांत्यांसहेजेजवगरमेहेनतेस्त्रिछोकरांमलशेकेमकेकुतरानोअवता
रआवशे॥त्यारेजेटलिकुतरियोतेसर्वेतेनिजस्त्रियोछे॥नेजोकुतरिनोअवतारआवशेतोजेटलाकुतराछेतेटलातेनाधणिथशे॥
एविरितेहाथिघोडागधेडांउंटपाडाबोकडादिकसर्वेजातनेविषेअनंतस्त्रियोपुरुषतेतेजातमांरुपवाननेजोबनवानपरस्परजियनेअ
नंतअनंतमल्याछेनेवलीमलशे॥पणतेणेकरिनेजिवनेलेशमात्रतृप्तिथईनथि॥नेतृप्तिथशेपणनहिं॥माटेजेनेकालखाईजाबए

वोजेलाभ तेसर्वेमिथ्यालाभछे॥एमसमजिनेमनुष्यदेहनेपाम्योएवोजेजिवतेनेतोमिथ्यालाभनिआशानेमुकिनेअविनासिएवोजेपोता
नाआत्मानामोक्षनोलाभतेनेसावधानथईनेलेवो॥अनेनासवंतलाभनेविषेथिव्रतियोनेपाछियालिनेभगवाननास्वरूपनेविषेजोडि
देवि॥कहेतांकानेकरिनेभगवाननिकथासांभलवि॥नेआंख्येकरिनेभगवाननुंरूपजोवुं॥नेरसनाएकरिनेभगवाननागुणगावा॥ए
विरितेइंद्रियोअंतःकरणनेभगवाननासंबंधनेपमाडिनेपोतानेदृढपणेधर्मनेविषेरहिनेपरमेश्वरनिनिष्कामभक्तिकरविअनेतेनिष्काम
भक्तियेकरिनेजिवनोमोक्षथायछे॥माटेदुर्लभएवोजेमनुष्यनोदेहतेपरमेश्वरेकृपाकरिने॥भगवानभजवासारुंआप्यो छे तेमनुष्यदे
हनेनासवंतनेअसत्यएवोजेआजगतनांसुखतेमांव्रथाखोवोनहिं॥अनेमनुष्यदेहेकरिनेतो परमेश्वरभजिनेपोतानाआत्मानेजन्ममर
णनांदुःखथकिमुकाविनेभगवाननाअक्षरधामनेजपामवुं॥अनेएविरितेजेपोतानाआत्मानेमायानाबंधनथकिमुकावेछे तेनेजमनु
ष्यनोदेहआव्योप्रमाणछे॥अनेजेएविरितेपोतानाआत्मानुंतोसारुंनथिकरतोनेकेवलपंचविषयमांलोलुपथईरहेछे॥तेनेतोपामर
जाणवो॥नेतेतोकेवलपशुतुल्यछे॥माटेपशुपणानोत्यागकरिनेमनुष्यदेहेतोभगवाननुंभजनकरवुंअनेवलिआसमेतोपोतानेमनुष्यनोदेह
नेकल्याणकारिनोसमागमप्राप्तथयोछे॥एतोअतिशेजदुर्लभलाभछे॥माटेसावधानथईनेकल्याणनाखपवालानेएवोठेरावकरवो॥
जेआदेहेकरिनेतोएकभगवाननेजभजवा॥पणनासवंतनेदुःखरूपनेजन्ममृत्युनेपमाडनारा॥एवाजेमाईकपंचविषयतेनेनथिभो
गववा॥नेनिरवासनिकपणेरहिनेजेवातेवाअन्नवस्त्रादिकेकरिनेदेहनिरवाहकरवोछे॥पणसारांविषयनेतोभोगववाजनथिनेभ
गवानभजिनेभगवाननाधाममांजवुंछे॥एवोठेरावकल्याणनाखपवालानेकरवो॥अनेवलिएमविचारकरवोजेमाईकपंचविष
यनापदार्थनेभोगववेकरिनेहुंजेआत्मातेसुखिथाउंएवोनथी॥केमकेविषयनांपदार्थतोनासवंतछे॥नेहुंआत्मातोअविनासिछुं
माटेनासवंतपदार्थअविनासिनेशुंसुखकरे॥जेमरांकहोयतेराजानेशुंसुखकरे॥तेममाईकपदार्थतेआत्मानेशुंसुखकरे॥केमके
आत्मातोपोतेजसुखरूपछे॥नेअखंडानंदछेअनेतेआत्मापोतानुंस्वरूपछे॥एमसमजिनेआत्मारूपथईनेपछेअपरमितछेमहिमा
जेनोएवाजेप्रत्यक्षपरमात्माभगवानतेनेअखंडपोतानाआत्मानेविषेजाणपणामांमूर्त्तिजेविवरूपपुष्पादिकेसहितदेखायछे॥ते

मूर्त्तिनेधारिनेते भगवाननिअखंडस्मृतियेसहित भजनस्मरणकस्याकरवुं॥एजमनुष्यदेहनो परमलाभछे अनेतेविनाना बीजामाई
कपदार्थनालाभछे तेतो केवलमिथ्यालाभछे नेजिवनुंउलटुं भुंडु करेएवो नेजिवनेबंधनकरेएवोमाईकलाभछे॥माटे तेने तोउलटाअं
न्धनिपेठेत्यागकरिनेएकभगवाननुंभजनकरवुं॥अनेभगवाननोमहिमासमजिनेभगवाननाचरणार्विंदनेविषेपोतानामननेदृढकरि
नेराखवुं॥जेमवज्रनिपृथ्विमांवज्रनिखिलिचोडिहोयतेकोईरितेउखडेनहि॥ तेमपोतानामननिवृत्तिनेभगवाननाचरणार्विंदमांचो
टाडिदेवि॥अनेएविसमजणनेपाम्योजेभक्त ते तो सर्वसुखनेपामिरह्योछे नेतेनेकोई लाभपामवोबाकिरह्योनथि। माटे ते लाभने-
लेवासारुंसंतनोसमागमअखंडराखवो॥ ॥इतिश्रीसुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥
॥ ॥संवत१९ओगणिसें १६शोलना भादरवाशुदि१०दशमिनेदिवस महाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीमंडारियामध्ये
भक्तशादिराबोघानेघेर आथमणेबारओरडानिओसरिमांसांजनेसमेगादीतकियाथिछावेलाढोलियाउपरविराजमानथयाहता॥
अनेसर्वेजरियानिवस्त्रधारणकस्याहतां॥नेपुष्पनाआभूषणसर्वअंगमां धारण कर्यांहतां॥नेकंकुनोचांदलोकस्योहतोअनेपोताना
मूखार्विंदनिआगलसाधुतथादेशदेशनाहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठिहती॥ पछेमहाराजबोल्याजे जिवनेअतिशेदुर्लभलाभतेत्र
तिशेजसुलभकेमथाय॥तोजिवने प्रत्यक्षभगवाननेभगवाननासंतमले॥अनेतेभगवाननेप्रत्यक्षभगवाननासंत तेनेविषेजिवनेआत्म
बुद्धिथाय॥तोतेजिवनेअतिदुर्लभजेमोक्षनोलाभतेअतिशेजसुलभथायछे॥अनेतेआत्मबुद्धिकेमनिकराय तोजेथिजिवनेदेहने
देहनासंबंधिमांआत्मबुद्धिथईछे॥तेविभगवाननेभगवाननासंतनेविषेआत्मबुद्धिकरावि। तो तेनेमोक्षमार्गमांकोईविघ्न
आवेजनहिं॥केमकेजिवनेजोदेहनेदेहनासंबंधिमांआत्मबुद्धिथईछे॥तोतेदेहनेअनंतरोगथायतथादेहपोतानोकालोलुलो
वेहेरोबाडोहोय तोपणतेदेहनोलगारेपणअवगुणआवेनहि॥अनेबिजानोदेहसारोहोय॥पणतेनाकरतांपोतानोदेहपोताने
वहालोलागेछे॥ तेशानेकरिनेवहालोलागेछे॥तोपोतानादेहनेविषेजिवनेआत्मबुद्धिथईछे॥ मादेवहालोलागेछे॥अनेवलि
देहनासंबंधिनेविषेजिवनेजोआत्मबुद्धिथईछे॥तो तेनोपणजिवनेअवगुणनथिआवतोकेमकेपोतानोदिकरोहोय॥नेतेसु-

रखहोय तथा कुफलिहोय।। तोपण पोतानुं गामगरास धनमाल घर खोरडा घरेणां वस्त्रादिक सर्वे पदार्थ तेने आपे छे।। तथा तेपोतानो
दिकरो क्यांईक जारकर्म करिआव्यो होय तो तेना छानादंड भरे छे।। ने तेनी फजेनि थवा देता नथि ने तेनो अवगुणपण लेनहिं।। कांके तेने दि
करा ने विषे आत्मबुद्धि छे।। तेमकल्याणना खपवाळाने भगवानने भगवानना संतने विषे आत्मबुद्धि करवि।। अने जेने भगवानने भगवा
नना संतने विषे आत्मबुद्धि थई।। तेने अति दुर्लभ जे मोक्षनो लाभ।। ते अति शेजसहल भपण प्राप्त थाय छे।। जेम समुद्र तरवो ते अतिक
ठण छे।। पण जो वहाणमां बेसि जाय तो सेहेजमां समुद्र तरि जाय।। तेम मोक्ष थवो ते तो जपतपादिक अनंत साधन करे तो पण मोक्ष थाय नहिं
।। एवो मोक्ष महादुर्लभ छे।। पण जो वहाणरूप एवा जे प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना निरवासनिक संत तेने विषे जिवने आत्मबुद्धि था
य।। तो ते जिवनो सेहेजमां मोक्ष थाय छे।। हवे ते आत्मबुद्धि थवानो शो उपाय छे।। तो जेम देहने देहना संबंधिमां आत्मबुद्धि थई छे।। ते तेना भगा-
अखंड रहेवाने संबंधे करिने तेने विषे आत्मबुद्धि थई छे।। तेमज भगवानने भगवानना संतनो अखंड संबंध राखे तो तेने भगवानने भग-
वानना संतने विषे आत्मबुद्धि थाय छे।। अने ते भगवानने भगवानना संतनो संबंध केविरिते राखवो।। तो काने करिने भगवानने भगवा
नना संतना शब्द हेते करिने सांभळवा।। अने आंख्ये करिने भगवानने भगवानना संतना हेते सहित दरशन करवां ने जिभे करिने भगवा
नने भगवानना संतना गुण गावा।। तथा भगवानने भगवानना संतनि प्रसादि जमवि।। अने हाथे करिने भगवानने भगवानना संतनि
सेवा करवि।। तथा बे हाथ जोडिने माथुनमाविने भगवानने भगवानना संतने पगे भावे सहीत लागवुं।। अने पगे करिने वारेवारे भगवा
नने भगवानना संतपासे चालिने दरशन करवा जवुं।। ने मने करिने भगवानने भगवानना संतने प्रसन्न करवाना संकल्प करवा
ने चित्ते करिने हालतां चालतां भगवानने भगवानना संतनुं चिंतवन करवुं।। ने बुद्धिये करिने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतना स्वरू
पनो द्रढपणे निश्चय करवो।। ने अहंकारे करिने भगवानने भगवानना संतना दासपणानुं अभिमान धरवुं।। जे हुं भगवानने संतनो दास
छुं।। एविरित्ये इंद्रियो अंतःकरणे करिने भगवानने भगवानना संतनो अखंड संबंध राखे तो तेने भगवानने भगवानना संतने विषे द्रढप
णे आत्मबुद्धि थाय छे।। अने जेने भगवानने भगवानना साधुने विषे आत्मबुद्धि थई।। ते जिवनो साक्षात्कार मोक्ष थाय छे।। अने तेने

पछे मोक्षनामारगमां कोई विघ्न आवतुं नथि ।। ते भागवतमां कह्युं छे ।। महत्सेवां द्वारमाहु र्विमुक्ते ।। द्वारयोषितां संगिसंगं ।। तेनो अर्थ ।। जेने भगवानने भगवानना साधुने विषे आत्मबुद्धि ये कारिने सेवा प्राप्त थई ।। ते जिवनो मोक्ष थयो छे ।। अने स्त्रिना संगिनो जे संग ते नरकनो द्वार छे ।। माटे भगवानने भगवानना साधुने विषे जे आत्मबुद्धि करवि ।। एवो कोई जिवने लाभ नथि ।। केम के जेने जेनि साथे आत्मबुद्धि थाय छे ते ना गुण तेमां आवे छे ।। तेम भगवानने भगवानना संतने विषे जेने आत्मबुद्धि थाय छे ।। ते जिव तो ब्रह्मरूप थाय छे ।। माटे भगवानना भक्त जेने थवुं होय ।। ने पोताना आत्माने जन्ममृत्युना दुःख थकि मुकाववो होय ।। तेने तो सर्वे माईक एवा जे पंचविषयना सुख तेनी आशाने मुकिने एक भगवानने भगवानना संतने विषे दृढपणे सर्व प्रकारे प्रिति करवि ।। पण कोई लोकलाजमां तथा मिथ्या सुखमां लोभावुं नहिं ।। केम के लोकनि लाज ने संसारना सुख ती केवल मिथ्या छे ।। ने ना सवं त छे ।। माटे तेमां लोभावुं नहिं ।। अने अलोकिक लाभ जे भगवानने भगवानना संतनो संबंध ।। तेने अतिशे जतन करिने राखवो ।। अने जगतना सुख थकि निरवासनिक थवुं ।। अने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना एकांतिक साधु ।। जे सर्वे प्रकारे पंचविषयना त्यागि ।। तेने विषे कल्याणना खपवालाने मन क्रम वचने जोडाई जवुं ।। अने जगतना सुख थि अतिशे वैराग पामिने पोतानां इंद्रियो अंतःकरणनि वृतियोने भगवाननि मूर्त्तिने विषे जोडि देवि ।। ने जगतना सुखने तो उलटा अन्न जेवां जाणवां ।। एम समजिने जे भगवाननुं भजन करे छे ।। तेना भाग्यनो पार नथि ।। अने एवा भक्तने ने भगवानने कांई अंतराय रहेतो नथि ।। अने एवा भक्तना गुण तो मोटा ब्रह्मादिक पण गाय छे ।। ।। इति श्री मुखसिद्धांत समाप्तः ।। ।। श्री हरिकृष्णाय नमो नमः ।। ।। संवत् १९ ओगणिशो १६ शोलना भादरवा शुदि ११ एकादशिने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान ।। गाम श्री भंडारियामध्ये मेहेता गांडा वजाने घेर उत्तराद्दे बारओरडानि ओसरि आगल फलिमां ढोलिया उपर गादि तकिया नखाविने विराजमान थया हता ने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ।। ने मुस्तके सोनेरी मोटि पाघ बांधि हती अने गुलाब ने मोगराने जाईना पुष्पनां आभूषण धारण कर्यां हतां ने ललाटने विषे केशरनि अरचा ने कंकुनां चांदलो कर्यो हतो ।। ने पोताना मुखारविंदनि आगल साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति ने साधु किरतन गाता हता

॥पछेमहाराज बोल्या जेकिरतनकिरतनरहेवाद्यो॥ नेअमेवार्ताकरियेछिये॥ जे आविश्वमांजिवछेतेअवश्यपोतानुंकामजेभग-
वानभजवा॥ तेनेभूलिने जिवजेतेशुंकाम करेछे॥ तोपोतानुंस्वरुपजेआत्मातेनेभूलिनेजेपोतानुंरुपनथिएवोजेपंचभूतनोदे-
हतेनेहुंछुंएममानिने तेदेहनेपालवो तेनाजउपायमां सर्वेजिवप्राणिमात्रारात्यदहाडो तत्परथईनेमंड्याछे अनेतेमिथ्यादेहनार-
क्षण सारुंकेवांकेवां घरबारबनावेछे अनेतेमां केवा केवा दावखडा करवापडेछे॥ अनेतेदेहनारक्षणसारुंअन्नजोईये तेसारुपण
केवाकेवाउपायजिवकरेछे॥ तथादेहनारक्षणनेअर्थेवस्त्रजोईये॥ तेनासारुं पणकेटलिकयुक्तियोकरेछे॥ तथारसनाइंद्रिना
स्वादसारुंगायभेंसनेराखेछे नेतेनिरक्षाकरवासारुंकेटला क्लेश करवापडेछे॥ अनेगोलघिखांडसाकर आदिकअनंतप्रकार
नारस तेनासारुं पणजिवकोटानकोट दावखडा करेछे॥ अनेत्वचानास्पर्श सारुं जिवजेतेस्त्रिनोगुलामथायछेनेस्त्रिछे तेपुरुषनि
दासिथईरहेछे॥ तेत्वचानास्पर्षसारुंदासिथायछे॥ तथानेत्रइंद्रिनारुपसारुंअनंतप्रकारनाचित्रविचित्रभातनापदार्थनोरंगब
नावेछे॥ ने तेमांपणजिवकेवाकेवादावखडाछे॥ एविरिते जिवजेतेखोटादेहनासुखनेपामवासारुं कोटिकोटिउपाय करेछे॥ अ
नेतेणेकरिनेजिवमहाकष्टनेपामेछे॥ तोपण तेमांजिवप्राणि मात्रमंड्याछे॥ पणतेमांथिकोई जिवकायरथतो नथि॥ तेकिडि
थितेब्रह्मापर्यंतदेहनारक्षणमांमंड्याछे॥ अनेअनंतप्रकारनियुक्तियो करिने पृथ्वीमांथि विषयना पदार्थरुपि धूळ उत्पन्नकरि
नेजिवजेतेदेहरुपिराफडाउपरनाखेछे॥ नेतेणेकरिनेदेहरुपि राफडो वृद्धिपामेछे॥ अनेवळिदेहरुपिउकरडो छेतेमांविषयनांपदा-
र्थखानपानादिकरुपपुंजोनाख्याकरेछे॥ तेणेकरिनेदेहरुपिउकरडो वृद्धिपामेछे॥ अनेवळिजिवमात्रछे तेशुंकामकरेछे॥ तोधूळ
मांथिधानउपजावेछे॥ ॥नेपाछुं धांननेखाईने धूळकरेछे॥ एविरितेझांझवानाजळरुपजेसर्वजगततेनेविषेजिव प्राणिमात्र
जेतेमहादुःखनेभोगवेछे॥ पणपलमात्रकोई जिवअंतरमांशान्तिपामतानथिकेमकेजिवजेतेपोतानुंस्वरुपजेसुखरुपतेनेभूलिने
मिथ्यादेहनासुखसारुं प्रकृतिनाकार्यमां मोहपामिनेमहादुःखनेभोगवेछे॥ पणतेमां कोई काळे जिवनेसुखथतुंनथि॥ अनेघणुंक
होजिवजेतेतृष्णायेकरिनेमहादुःखभोगवेछे॥ अनेदेहनुंजफकतरक्षण करवुंहोयतेनेतोदेहनेजेवुंतेवुंअन्नमात्रजोईये॥ नेज

डुंबरुजोईयेतेणेकरिनेदेहरहेछे॥पणजेखाटाखारागल्याचिकणादिकरसतेदेहनेनथिजोइतांनेदेहनेतोअहारमात्रजोईयेछिये॥अनेस्व
रूपसेकरिनेआत्माछेतेपणसुखिथायएवोनथितथाबिजांहरेकमाईकपंचविषयनांपदार्थतेणेकरिनेपणआत्मासुखिथायएवोनथि॥
अनेआत्मातोपोतेजसुखस्वरूपछे॥नेअविनासिछे॥पणआत्माजेतेपोतानुंस्वरूपअज्ञानेकरिनेभूलिनेपोतानुंरूपनथिएवाजेपंचभूतनो
देह॥तेनेहुंपणुंमानिनेझांझवानाजलजेवाजेशब्दादिकपंचविषयनांसुखतेनेभोगववा जायछे॥पणतेणेकरिनेतृप्तिथतिनथि॥के
मकेपंचविषयनेविषेतोसुखजेतेलेशमात्रनथि॥जेमझांझवानेविषेजलएकटिपुंनथि॥तेमविषयमांसुखनोछांटोनथि॥अनेतेविषय
नासुखनेपामवानाउपायकरेछे॥तेमांथितोउलटोमहादुःखनेजपामेछे॥जेमस्वप्नामांकोईकमोटामोहोसुंभसुंदेखडुंदेखाणुं॥पछेते
देखडानेउपारवासारुंखाटलानुंपांतरझालिनेबहुबलकर्युं॥तेबलेकरिनेजाडेफरिजवाणु॥नेआंख्यपणउघडिगई॥पछेजागिनेजु
वेत्यांतोदेखडुंतोनेमले॥अनेजाडेफराणुंनेलुगडुंबगडिगयुं॥तेतोसाचुंथयुं॥तेमस्वप्नरूपएवोजेसंसारतेनेविषेदेखडारूपपंचविषयनांसु
खतेसुखनेपामवानिईछाकरेछे॥नेतेनेपामवानाअनंतउपायकरेछे॥पणतेमांथिसुखतोरंचमात्रमलतुंनथि॥पणतेविषयनिवा
सनायेकरिनेकर्यांजेपापतेजिवनेसाचाथईनेवलगेछे॥अनेतेपापेकरिनेजन्ममृत्युनेचोरासिनेयमपुरिनांमहादुःखभोगववापडेछे
॥नेतेदुःखमांथिपाछोछुटकोथतोनथिएरीतेजिवजेतेपोतानाआत्मस्वरूपनेभूलिनेबाह्यदृष्टीयेकरिनेदेहनांसुखमांकंविविध
नातापमांसंतापनेपाम्याकरेछे॥माटेजेनेप्रत्यक्षभगवाननेभगवानना संतनासंबंधथयोछेतेनेअज्ञानिजिवनिपेठेविषयनासुखसा
रुं दुःखनेपामवुंनहिअनेभगवाननाभक्तनेतोविषयथकिनिवृत्तिपामवुं॥अनेपोतानाआत्मावाकल्याणनेअर्थेतत्परथवुं॥नेसत्समा
गमकरिनेधर्मज्ञानवैराग्यनेपामिनेप्रत्यक्षभगवाननिमहात्मेसहितेभक्ति॥सेवासमरणअखंडकर्यांकरवुं॥अनेमनुष्यदेहपामिनेभग-
वाननीभक्तिनिष्कामभावेकरवि॥एजमनुष्यदेहनोउत्तमलाभछेअनेजेभगवाननिभक्तिकरेछे॥तेनेजमनुष्यनोअवतारआव्यो
जाणवो॥पणइंद्रियोनेआधिनथईनेविषयभोगववाएमनुष्यदेहनोलाभनथि॥अनेविषयभोगथिनेजेसुखमानेछेतेतोपामरनेपशु
जेवोजिवछे॥पणजेभगवाननाभक्तहोयतेतोविषयनेतुच्छनेनरकजेवाजाणे॥तेभगवाननोखरोभक्तछे॥केमकेभगवान

नो भक्त होय ते तो एम जाणे जे मुने साक्षात्कार भगवान ने भगवानना संत मल्या छे ॥ ते भगवान ने संत सर्व सुखना धाम छे ने पोताना
भक्त ने सर्व सुखना दाता छे ने अनंत कोटि ब्रह्मांडना पति छे ते तिछे ॥ ने गोलोक वैकुंठ स्वेतद्वीप ब्रह्मपुर ॥ ए सर्वे धामना अधिपति छे
॥ अने जे ना सुख आगल ए देवादिक लोकनां सुख ने नर्क तुल्य मोक्षधर्म ने विषे कह्यां छे ॥ माटे एवा जे भगवान ने भगवानना संत तेने
पामिने आ लोकनां जे दुःखरूप ने नर्करूप ने नासवंत एवां जे विषयनां सुख ते मांहुं प्रिति राखवुं ॥ एम जाणिने ते जगतना सुखनि वा
सनानो त्याग करिने पोताना आत्माने देहथि प्रथक जाणिने ते पोताना आत्माना साचा सगा एवा जे परमात्मा भगवान ने भगवानना
संत पोताने मल्या ॥ ते ने विषे निष्काम भाव राखिने तेनि भक्ति करवि ॥ अने अविनासि एवुं जे भगवानना धामनुं सुख ते ने पामवुं ॥
एज मनुष्य देह पाम्यानो उत्तम लाभ छे ॥ ॥ इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः ॥ ॥
संवत् १९ ओगणिस्सो १६ सोलना भादरवा शुदि १२ द्वादशिने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री भंडारिया मध्ये देवे शांम सि
नरसिराम ने घेर उगमणे बार ओरडानि ओसरि मां ढोलिया उपर विराजमान थया हता ॥ अने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ ने मस्तक उ
पर कसुंबल फेंटो बाध्यो हतो ॥ ने कंठ ने विषे पुष्पना हार धारण कर्या हता ॥ ने ललाट ने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ ने पोता
ना मुखारविंदनि आगल साधु तथा देश देशना हरिभक्तनि सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे महाराज बोल्या जे आ जगतना करता ते
कोण हसे ॥ पछे ते गामना दरबार अभेसंघजिये कह्युं जे हे महाराज तमेज आ सर्व जगतना कर्त्ता छो ॥ एम अमे तो जाणिये छिये ॥ प
छे महाराज बोल्या जे जगतना कर्त्ता तो मायाथि पर एवा जे परमात्मा ते छे ॥ अने अमे तो माणस जेवा छिये ॥ पछे वलि अभेसंघजिए क
ह्युं जे ॥ जे मायाथि पर परमात्मा छे ॥ ते जत मे अनंत जिवो ने ज्ञान आपिने मायापर करवा सारु तमारि इछाए करिने मनुष्य जेवा देखा
ओ छो ॥ पण तमे तो सदाय मायापर दिव्यमूर्त्ति छो ॥ माटे तमेज जगतना कर्त्ता छो ॥ पछे महाराज बोल्या जे ते जगत केवि रिते थाय छे
॥ ते कहो ॥ पछे ते नो उत्तर कोईये थयो नहिं ॥ त्यारे पोते महाराज बोल्या जे ल्यो अमे कहिये ॥ जे भगवान छे ते ने अनंत शक्तियो छे
॥ ते शक्तियो द्वारे पोतानि इछा प्रमाणे जगतनि उत्पत्ति करावे छे ॥ ते उत्पत्तिने कहे छे जेम खेडु खेतरमां दाणा वावे छे ॥ अने ते थोडाक

दाणावाव्याहोय।।तेमांथिघणाकदाणाथायछे।।तेदाणाखेडुनिपजावतोजणायछे।।पणतेनाकरतासूर्यछे।।केमकेसूर्यनाप्रका
शेकरिनेखेडुखेडुकरेछे।।नेसूर्यनाप्रकाशेकरिनेखेडुंबिजवावेछे।।अनेसूर्यनाकिरणेकरिनेआकाशमांजलचढेछे।।नेसूर्यवडे
करिनेवरसादथायछे।।अनेछोरतुनाभेदपणसूर्यवतेथायछे।।अनेबिजऊगवुंवृद्धिपामवुं।।नेतेनेफलपाकवुंतेसर्वेसूर्यवतेथाय-
छे।।अनेतेमजअनंतओषद्धियोपणसूर्यवतेपाकेछे।।नेतेमांथिमनुष्यअन्नरूपिओषद्धिखायछे।।अनेतेसूर्यनिअग्निएकरिनेपेटमां
पचेछे।।अनेतेमांथिविर्यथायछे।।अनेतेविर्यजेतेसूर्येकरिनेस्त्रिनाउदरमांपकवताने पामिनेबालकथईनेजन्मेछे।।एविरिते
सर्वेसृष्टिनाकर्तासूर्यजणायछे।।तोपणसूर्यकांईकरतोनथि।।केमकेसूर्यतोपोतानामंडलनेविषेसदाथिररह्योछे।।तेमअक्ष-
रातितएवाजेमायाथिपरपरमात्मापुरुषोत्तमभगवानतेतोपोतानाअक्षरधामनेविषेदिव्यमूर्त्तिथकाअनंतअक्षररूपमुक्ते
विटाणाथकाअखंडविराजमानछे।।तेभगवानने ज्यारेसृष्टिकरवानिइच्छाथायछेत्यारेअक्षरसामिदृष्टिकरेछे।।कहेतांपोतानो
ज्ञानरूपिप्रकाशकरेछे।।पछेतेज्ञानरूपिप्रकाशनाकोईकदेशनेविषेअनंतकोटिमायासबलब्रह्मकहेतांरागात्मकसंकल्पेयु-
क्तएवापुरुषघणाकलिनहता।।पछेतेअक्षरब्रह्मरूपजेज्ञान।।तेनाप्रकाशवतेकरिनेपुरुषजेतेजाग्रतनेपामेछे।।नेपछेतेपुरु
षनिइच्छायेकरिनेप्रकृतिजागेछे।।अनेतेपुरुषप्रकृतिनासंबंधथकिअनंतकोटिप्रधानपुरुषथायछे।।अनेतेप्रधानपुरुषथकि
महत्तत्वथायछे।।नेमहत्तत्वथकित्रणप्रकारनोअहंकारथायछे।।अनेतेमांथीएकअहंकारथकिचोविसतत्वथायछे।।तेमांता-
मसअहंकारथकिपंचभूतनेपंचविषयथायछे।।नेराजसअहंकारथकिदशइंद्रियोथायछे।।नेसात्विकअहंकारथकिचारअं-
तःकरणनेचौददेवताथायछे।।अनेतेचोविसतत्वथकिवैराटथायछे।।नेतेवैराटथकिब्रह्माविष्णुंनेशिवथायछे।।अनेब्रह्मा
विष्णुशिवथकिमरिच्यादिकदक्षथायछे।।नेमरिच्यादिकथकिकश्यपादिकथायछे।।नेकश्यपादिकथकिदेवदैत्यमनुष्यप-
शुपक्षिझाडपहाडवननेवेलिआदिकसर्वेथायछे।।तेसर्वेनाकर्ताएकपरमेश्वरकहेवायछे।।तेकेविरितेकर्ताकहेवायछे।।
तोजेमअंग्रेजसाहेबछेतेविलायतमांरह्याथकाकोईकचाकरराखिनेतेनेआज्ञाकरेछे।।पछेतेचाकरजेतेसाहेबनिआज्ञा

लेईने कलकत्तामां आवेछे॥ पछे तेपण कलकत्तानो साहेब कहेवायछे॥ अनेते कलकत्तावाळा साहेबनि आज्ञाये करिने तेनो चा
कर मुंबाईमां आवेछे। नेते पण साहेब कहेवायछे॥ अनेमुंबाईवाळानि आज्ञाये करिने अमदावाद आवे। तेपण साहेब कहेवाय-
छे॥ अनेत्यांथि राजकोट आवे। तेपण साहेब कहेवायछे॥ अनेते सर्व पोतपोताना अख्तियारमां हुकम चलावेछे॥ तेमपुरुषोत्त
म भगवानतो सदाय अक्षरधाममां रह्याछे॥ तेतो जेम प्रथम कह्यो जे विलायतनो साहेब तेने ठेकाणेछे॥ अनेतेनेपासे अखंड
रहेनारा जे अक्षरब्रह्मरूप मुक्त तेहोलियाना चाकरने ठेकाणेछे॥ ते अक्षरब्रह्मरुपमुक्तद्वाराये परमात्माजे तेपुरुषने प्रेरणाकरे
छे॥ तेपुरुषजेतेकलकत्तानासाहेबनेठेकाणेछे॥ तेजेमविलायतनासाहेबनिआज्ञाविनाबिजो कोई साहेब कहेवायनहिं॥
नेकोईनो हुकमरंचमात्र चाले नहिं॥ तेमपुरुषप्रकृति जेते अनंत कोटिब्रह्मांडनि उत्पत्तिस्थितिनेप्रलयकरेछे॥ तेअक्षर ब्रह्मनेप्र-
काशवडे करिने करेछे॥ पण अक्षरनाप्रकाश विनापुरुषप्रकृति जेते कांई करवाने समरथनथि जेमसूर्यनो प्रकाशथायछे॥ त्या
रेराश्रिमांसूताहोय॥ तेसर्व मनुष्य जागिनेपोतपोतानो उद्यमकरवामंडेछे॥ पणसूर्यनाप्रकाशविना कोई उद्यमकरिशकवुंनथि
॥ तेमअक्षरनाप्रकाशेकरिने अनंतकोटिब्रह्मांडनिउत्पत्तिनेएक लो पुरुषजेतेकरेछे॥ जेम एकरवेहु होय॥ तेअनंत करसडांनेउप
जावेछे॥ तेमएकपुरुषपण अनंतकोटि ब्रह्मांडनेउपजावेछे॥ तेजेमखेडुं सूर्यने अजवाले करसडांउपजावेछे॥ पणसूर्यनाप्रका
शविनाखेडुंकांई करवानेसमरथनथि॥ तेमपुरुषपण अक्षरनाप्रकाशविना कांई करवाने समरथनथि॥ अनेते अक्षर ब्रह्मना
प्रकाशकनेआधार तेप्रत्यक्षपरमात्माछे॥ माटेसर्वकर्ता नेसर्वकारण एक परमेश्वरछे॥ अनेवलि कर्त्ता थकापोतेतो कांई नथि
करता॥ अनेपोतेतोपोतानुंअक्षरब्रह्मरूपधाम तेनेविषे अखंड॥ रह्याछे॥ अनेपुरुषद्वारायेउत्पत्ति करावेछे॥ माटे भगवानकर्ताछे
अनेएवाजे परमात्मापुरुषोत्तमभगवान ते जिवोना कल्याणने अर्थे ने जगतनिउत्पत्तिने अर्थे अनेएकांतिकधर्मना स्थापनने अर्थे
ने अधर्मनो नाश करवाने अर्थे॥ ब्रह्मांड ब्रह्मांड प्रत्ये॥ नेयुगयुगने विषे पोतानी ईच्छामात्र तेणे करिने मनुष्यदेह नेदेखाडता थका
पृथ्विमां॥ अक्षरमांरह्याथकाहमेशा विचरेछे॥ ने अनंतजिवोने आत्यंतिककल्याणआपिने मायापरकरेछे॥ ने पोतानाअक्षरधाममां

स्थिति करावे छे ।। एवा जे महाउपकार्य रूप ।। प्रत्यक्ष भगवानने तेना संत तेनो जेने संबंध थयो छे ।। अने जेना जिवमां प्रत्यक्ष भगवान
ने भगवानना संतना स्वरूपनो निश्चय थयो छे ।। ते तो सर्वाधार ने सर्वव्यापक एवुं जे अक्षर ब्रह्म भगवाननुं धाम ते रूप थई रह्यो छे
केमके अक्षरमां भगवान रह्या छे ।। माटे जेणे पंचविषयनो त्याग करिने ।। पोते देहथि जुदो जे आत्मा तेने पोतानुं रूप जाणिने प्रत्यक्ष
भगवाननो दृढ निश्चय करवो रह्यो छे ।। तेना उरमां पण भगवान निवास करिने रह्या छे ।। केमके ते तो अक्षररूप छे ।। माटे तेने विषे ।।
भगवान अखंड रह्या छे ।। माटे एवा निश्चयवाला भगवानना भक्त थवुं होय तेनो पण सर्व प्रकारे त्याग करिने अलौकिक एवुं जे पो
ताना आत्मानुं सुख ।। तथा परमात्माना स्वरूपनुं जे सुख ।। तेनुं अतिशे जतन करवुं ।। अने ते सुखपामवा निइच्छा राखवि ।। अ
ने ए आत्मा परमात्माना सुखने पामवुं होय तेने मांईक सुखने तो उलट्या अन्न जेवा ने विष्टा जेवा जाणवा जोइये ।। केमके जेने
प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतनो संबंध थयो छे ।। तेने तो भगवानना सुख विना बिजे क्यांई सारप्य मनाय ज नहि ।। अने
तेने बिजे सारप्य मनाय छे तो अतिशे खोट कहेवाय ।। माटे जेने खरा भगवानना भक्त थवुं होय तेने तो भगवानने भगवानना सं
त विना सर्व मांईक पदार्थने बलता अग्नि रूप देखवुं ।। अने प्रथम कह्यो जे भगवानने संतनो अपरमित महिमा तथा पोताना आ
त्मस्वरूपनो महिमा तेने जाणिने आत्मारूप थईने ।। प्रत्यक्ष एवा जे परमात्मा भगवानने तेना संतने विषे दृढ प्रिति करवी ।।
अने जेने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना निरवासनिक संतने विषे प्रिति थई छे ।। तेना तो सर्वे साधन पुरां थई रह्यां छे ।। ।।
इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः ।। ।। श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः ।। ।। संवत् ।। १९ ।। ओगणिशे ।। १६ ।। शोलना
भादरवा सुदि तेरशने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री भंडारिया मध्ये भट अंबाशंकर विरेश्वरने घरे ।। उगमणे
बारओरडानि ओसरिमां ढोलिया उपर गादितकिया बिछावि ने विराजमान थया हता ।। ने सर्वे श्वेत कंबल वस्त्र धारण कर्यां ह
तां अने मोगराना पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता ने गुलाबना पुष्पना बाजु ने गजराने तोराने गुच्छ धारण कर्या हता
ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ।। अने पोताना मुखारविंदनि आगल साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनि सभा भराईने बेठी हति

॥पछीमहाराज कृपाकरिनेसर्वे हरिजनप्रत्येबोल्याजे॥ जे भगवानना भक्त होय॥ तेने तो धर्मनेअधर्मनोतपास करवो तेमां
अधर्मनोएमतपासकरवोजे जेअधर्मकरेछे तेने आलोकमांपणमहादुःखभोगववांपडे छे॥ केमके जे व्यभिचारनुं अधर्म
कर्मकरे छे ॥तेने वेहेवारमांपण घरखालिथायछे ॥नेतेनि जगतमांअपकीर्तिपण बहु थायछे ने तेनेदंडपण भरवापडे छे॥अ
ने तेपरस्त्रितो धणि भाले तो नाक कानकापिले छे॥ तथामाथुपण कापिनाखे छे नेते॥ व्यभिचारिपुरुष तथा व्यभिचारणि
स्त्रि होय तेनेकोईसारांमाणस आंगणे आववादे नहि॥ ने जाणेअजाणे आवेतो कोई राजि थायनहि॥ अने तेना अंतरमांप-
ण घडिएक शान्तिरहे नहि ने तेरघवाया कुतरानिपेठेफरतोफरेछे॥ नेतेनो वेहेवारमांपण कोई अतबार करे नहि नेतेमहादु
खनेजिवता॥ पणपामेछे॥ नेमरिनेपण ॥ घोरनर्कमांपडेछे॥ अनेजे चोरकर्मना करनाराछे॥ तेपणमहा सेतापनेपामे
छे॥ नेतेनो अंतरिआलमो तथायछे॥ नेमारिनेजमनामार खायछे ॥ अने जे दारूनापिनाराछे तेनि बुद्धिपण केफे करिनेमलिन
थईजायछेनेमरिने तेरौरवनरकमांपडेछे ॥अनेजे मासना खानाराछे ॥तेनि बुद्धिपण भ्रष्ट थईजायछे॥ अने तेपापे करि
नेआलोकमां पण महादुःखनेपामे छे ॥नेमरिनेयमपुरिनां कष्टनेभोगवेछे नेते अधर्मनाकरनाराजिवजे तेगर्भवासनेचो
रासिनां महादुःखनेपामेछे॥ नेतेअधर्मनाकरनारानुंकल्याणकोई काले थतुं नथि अनेजेधर्मवाला छे तेतो आलोकमांप-
ण सुखनेपामेछे॥ अनेदेहनेमुकिनेभगवानना धामनेपामेछे॥ अनेजेधर्मवाला मनुष्यहोय तेनीजउपर भगवाननिपणकृ
पाथायछे ॥अनेएवा धर्मवाला होय तेनी वेहेवारमांपण भगवानरक्षाकरेछे॥ अने तेने अवकुंदेह रक्षणसारु अन्नवस्त्र
जोईयेतेपण भगवानतेनेआपे छे माटेजो॥ भगवानना भक्त होय तेनेतो ज्यांथि पोतानेसत्संग थयो होय त्यांथितपासक
रवो॥ जेदिवसेदिवसे भगवानभजवामां तथाधर्मपालवामांवृद्धिपमायछे॥ के कांई आलसरहे छे ॥एमतपासकरिनेजोवुं॥
पछीजोआलसरहेती होय तो तेनोत्यागकरवो ॥अनेधर्मज्ञानवैराग्यभक्ति तेनेअतिशेदृढ करवां अनेएविसमजणवाला
प्रत्यक्षभगवानना भक्त छे॥ तेतो भगवाननिआज्ञायेकरिने वेहेवारमां रहिने वेहेवारनुं कामकाज करेछे॥ तोपणतेने वेहे

वारमां बंधन थतुं नथि ।। केमके जेम नोलियो होय ते सर्प साथे लडे छे ।। ने ते नोलियाने सर्प करडे छे ।। त्यारे नोलियो पोताना
दरमां नोलवेल होय ते ने सुंघे छे ।। एटले तेने सर्पनुं झेर चडतुं नथि ।। तेम भगवानना भक्त छे ते तो नोलियारूप छे ।। अने सं
सारनो वेहेवार छे ते काला सर्प जेवो छे ।। ते संसारमां भगवाननि आज्ञा प्रमाणे जेटला देहनिरवाहने अर्थे वेहेवार जरुर क
रवो घटे तेटलो वेहेवार करिने पछे नोलियानि पेठे नोलवेलरूप जे प्रत्यक्ष ज्ञानदाता सत्पुरुष ।। तेनो समागम करे छे ।। त
था भगवाननि मानसि पूजा ।। तथा निमनि माला फेरववि ।। तथा भगवाननि मूर्त्तिनुं ध्यान करवुं ।। ए रूप जे नोलवेल ।। ते
णे करिने भगवानना भक्तने संसार वेहेवारनुं झेर चड्युं होय ते उतरि जाय छे ।। ने अंतःकरण शुद्ध थाय छे ।। अने ए बिरित्ते सम-
जिने जेणे प्रत्यक्ष भगवाननो आसरो कर्यो छे ।। तो तेनि वासना सर्वे टलि जाय छे ।। अने तेने देह राख्या सारु अथवा जोईये ते
टला अन्न वस्त्रादिकनुं ग्रहण करे ।। पण तेणे करिने तेने जन्म धरवो पडतो नथि ।। जेम सेकेला चण्या होय ते खाय तो भूख
जाय ।। पण वाये तो उगे नहिं ।। तेम भगवानना भक्तने जन्म धराविए एवि वासना रहेति नथि अने देहनिरवाहने अर्थे घटे तेटलो
वेहेवार करे छे ।। पण देह नसुके त्यारे भगवानना भक्त ने भगवानना ध्याने करिने ब्रह्ममय तनुं बंधाईने भगवानना धाम
ने पामे छे ।। ने ते भक्त अखंड सुख ने पामे छे ।। ।। इति श्री मुखसिद्धांत समाप्तः ।। ।। श्री हरिकृष्णायनमो नमः ।।
।। ।। संवत् १९ ओगणिशो १६ शोलना भादरवा शुदि १५ पुरणमासिने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम-
श्री भंडारियामध्ये ठाकोर अभेशंगजि करशाला भाईना दरबारमां उगणे बार ओरडानि ओसरिये होलियाउपर गादितकिया
बिछाविने विराजमान थया हता ।। अने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ।। ने पुष्पना आभूषण सर्वे अंगने विषे शोभि
रह्यां हतां ।। ने पोताना मुखारविंदनि आगल साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनि मोटि सभा भराईने बेठि हति ।। पछे अभेशंग
जिये महाराजनि पूजा करिने आरति उतारि पछे महाराजने बोल्या जे जिवनो मोक्ष थवो ।। ने जन्म मरण टलवुं ते अति घणो कठण
छे केमके ज्यां सुधि जिवने भगवान अदृश्य छे ।। त्यां सुधि मोक्ष थाय नहि ।। अने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतनो जिव

ने साक्षात्कार संबंध थाय त्यारे ज मोक्ष थाय छे जेम समुद्र तरवो होय त्यारे नाव मले ने तेमां बेसे त्यारे समुद्रने तराय छे ॥ प
णनाव विना समुद्र तरायनहि ॥ तेम प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतनो जिवने संबंध थाय ॥ ने तेनो दृढ आसरो करे त्यारे
ज जिव मायाने पार थाय ॥ ने तेनो मोक्ष थाय ॥ पण प्रगट भगवानने भगवानना संत संबंध विना बिजो जिवने माया तरवानो
उपाय नथि ॥ केम के मायाना आठ आवरण छे ॥ ने तेथि पर भगवाननुं धाम छे ॥ माटे आठ आवरणने ओलंघाय त्यारे भगवा
नना धाममां जवाय छे ॥ ते आठ आवरण कियां ॥ तो एक पेहेलुं प्रथ्वीनुं आवरण छे ॥ ते प्रथ्वि जे ते पंचाश क्रोड योजन
पोहोलि छे ॥ अने तेथकि दशगणुं जलनुं आवरण छे ॥ अने जल थकि दशगणुं अग्निनुं आवरण छे ॥ अने अग्निथकि दशग
णुं वायुनुं आवरण छे ॥ ने वायु थकि दशगणुं आकाशनुं आवरण छे ॥ ने आकाश थकि दशगणुं अहंकारनुं आवरण छे ॥
ने अहंकार थकि दशगणुं महत्तत्वनुं आवरण छे ॥ ने महत्तत्व थकि दशगणुं प्रधानपुरुषनुं आवरण छे ॥ अने प्रधानपुरु
ष थकि अनंतगणुं प्रकृतिपुरुषनुं आवरण छे ॥ अने तेथि पर थवाय त्यारे भगवानना धाममां जवाय छे ॥ माटे त्यां तो कोई देव
ब्रह्मादिकनि पण गति पुगे एम नथि ॥ तो मनुष्यनि तो गति पुगे ज क्यांथि न ज पुगे ॥ माटे ते आवरणथि पर थवानो तो एज उ-
पाय छे ॥ जे ते आवरणथकि पर एवा जे परमात्मा भगवानने भगवानना संत ते जे ते जिवोनि उपर कृपा करिने जिवोने आवर
णपर करवाने अर्थे पोताना दिव्यभावने छुपाविने प्रथ्वि उपर मनुष्याकृतिनुं धारण करे छे ॥ त्यारे ते भगवानने भगवानना
संतनो जे जिवने संबध थाय ॥ ते जिवनो मोक्ष थाय छे ॥ केम के मायाथि पर होय ते ज मायाथि पर करे छे माटे मायाथि पर तो एक
परमात्माने तेना संत छे ॥ माटे पोतानि स्व इच्छाये करिने जिवोने मोक्ष आपवा सारु मनुष्यदेहनुं धारण करे छे ॥ पछे प्र
त्यक्ष भगवानने भगवानना संतने शरणे जे जिव आवे छे ॥ ते सर्वेनो मोक्ष थाय छे ॥ ते पूर्वे रामावतारमां पण वानरां तथ
घोरा ज्ञाभिल तेने जो रामचंद्रजिनो संबंध थयो तो तेना साक्षात्कार मोक्ष थया छे ॥ अने कृष्ण अवतारमां पण गायोना
चारनारा गोवालिया तथा व्रजवासिनि वेचनारि गोपियो तेने जो श्रीकृष्णनो संबंध थयो तो ते पण मायापर जे भगवाननुं धाम ते-

नेपामियाछे॥ तथाध्रुवप्रल्हादादिकजेजेभक्तो नेभगवाननेभगवाननासंतमल्या छे तेसर्वेनो मोक्षथयो छे॥ माटेप्रत्यक्ष
भगवाननेसंतजिवनेमले॥अनेतेनिभक्तिकरे॥ त्यारेजजिवमायापरथायछे।पण प्रगट भगवाननेभगवानना संतमल्या
विना जिवमायापरथायजनहि॥अनेप्रत्यक्षभगवानने भगवाननानिरवासनिकसंत पृथ्विउपर नहोय॥त्यारे तेभगवानने
संतसाक्षात्कारमलवानिइछाराखिनेपोतपोतानाधर्ममांरहिनेनिष्कामभावराखिने ते भगवाननीश्रवणकिरतनादि-
कभक्तिकरे तेनेएकजन्मे पणप्रत्यक्ष भगवाननेभगवाननासंतमले छे॥नेज्यारेप्रत्यक्ष भगवाननेसंतमलेछे त्यारेजि-
यानेतरिनेजन्ममरणाथिरहितथायछे॥तेप्रगटभगवाननेभगवाननासंतमल्या पण केनेकहेवायछे॥ तोजेमायापर
व्यसाकारमूर्त्तिभगवाननेभगवाननासंत छे॥तेजभगवाननेसंतआप्रत्यक्षछे॥एवुंजेजिवजाणतोहोयनेएमजा-
णिनेपंचविषयनोत्यागकरे तेनेजप्रत्यक्षभगवाननेसंतमल्या छे॥ नेतेनांजन्ममरणटलिजायछे।नेतेजिव ब्रह्मरूपथई
नेअक्षरधामनेपामे छे॥अनेजेनेएवोनिश्चयनहोय॥अनेतेप्रत्यक्षनासंबंधमां तोआव्यो छे॥ तोतेनेजन्ममरणतोरहेछेअवसं
पण तेजिवनर्कचोरासिमां तोजायनहि॥अनेतेनेएकबेजन्मेएवोनिश्चयथायछे।नेपछेतेजिवमोक्षनेपामेछे॥एवोप्रत्य-
क्षभगवाननेभगवाननासंतनासंबंधनेपाम्यानोप्रतापछे॥माटेआसमेजेनेमनुष्यनोदेहआव्यो छे॥नेजेनेअमारोसंबं
धथायछे॥तेनाभाग्यनोपारनथि॥केमकेतमेसर्वेअमनेभगवानजाणोछो॥ अनेअमारेवचनेकरिनेअधर्मथकिदुररहि
नेअमारुंभजनकरोछो॥माटेतमारेतोमहाअलोकिकलाभप्राप्तथयोछे॥अनेतमारागुणतोमोटाशिवसनकादिकने
ब्रह्मादिकपणगासे॥माटेआजेअलोकिकलाभमल्यो छे तेनेअतिशेजतनकरिनेराखजो॥ पणकोईरितनदिशकाले
करिने॥तथागाफलाये करिनेते लाभनेविसारशोनहिं॥ केमकेजेमबालकनाहाथमांचिंतामणिआपिहोयतेबालक
चिंतामणिनोमहिमानजाणेएटलेज्यांत्यांनाखिदे॥अनेजेणेचिंतामणिनोमहिमाजाण्योहोय।नेतेनेचिंतामणिआपि
यतेतोअतिशेजतनकरिने चिंतामणिनेराखे छे॥ तेमजेनेमहातमेसाहितप्रत्यक्षभगवाननेभगवाननासंतनास्वरू

भंडारिया.
सि० ३५

नोनिश्चयथयोहोय ॥ तेतोभगवाननिमूर्त्तिनेसिरसाटेजतनकरिनेराखेछे ॥ अनेतेनेप्रत्यक्षभगवाननाभजनमांकोई
अंतरायकरवाआवेतोतेनेशत्रुजाणिनेतेनोत्यागकरिदेछे ॥ जेमकोईकराजायेब्राह्मणनेएमकह्युंकेकालसवारमांमा-
रिपासेआवजेनेमारेतुनेएकपरगणुंनेलाखसोनामोरोतेकुलारपणआपवुंछे ॥ अनेजोसवारमांदिवसउग्यामोरनहिंआ
वेतोपछीबिजाब्राह्मणनेआपिदेईश ॥ पछेतेब्राह्मणसवारमांराजानादरबारमांजवानेतैयारथयो ॥ त्यारेतेनेकोईकजज
मानहतोतेणेकह्युं ॥ जेगोरमारेघेरचालोनेमारेतमनेपांचरुपैयाआपवाछे ॥ नेसाकरनुंचुरमुंजमाडिश ॥ अनेजोअतार-
मांमारेघेरनहिंआवेतोतुनेअमेगोरनहिंराखिये ॥ नेबिजाब्राह्मणनेगोरकरिशु ॥ त्यारेतेब्राह्मणनेतेजजमानशत्रुजेवो
लाग्यो ॥ नेतेनेएमकह्युंजेतारापांचरुपैयानेसाकरनुंचुरमुनथिजोईतुं ॥ एमकहिनेतेनोतत्कालत्यागकरिनेचालि-
निसर्यो ॥ नेराजानादरबारमांदिवसउग्यानिमोरजईपुग्यो ॥ पणतेब्राह्मणनुंमनतेमांलोभाणुंनहिं ॥ नेतेनेतोतेजजमानउ
लटोशत्रुजेवोलाग्यो ॥ केमकेतेब्राह्मणेएमजाण्युंछेजेपांचरुपैयानेसाकरनाचुरमाकरतांलक्षसोनामोरनेएकपरगणानुं
राज्यतेतोघणोजअधिकलाभछे ॥ तेमजेनेभगवाननोसंबंधथयोछे ॥ तेनेतोलक्षसोनामोरनेपरगणानुंराज्यतोशुंपण-
कोटिब्रह्मांडनांसुखपणएभगवाननासुखआगळकशिगणतिमांनथि ॥ एवुंजेमहाअद्भुतसुखतेनिआगळआलोक
सुखतथादेवलोकनांसुखतेतोनरकजेवांछे ॥ माटेजनेप्रत्यक्षभगवाननेतेनासंतमळ्याछे ॥ तेनेतोआलोकनां
तुच्छजेवांनेनासवंत ॥ अनेअंतेअपारदुःखनुंकारणनेभगवाननाभजनमांअंतरायनाकरनाराएवांजेपंचविषयनां
सुखतेनोतोमहापापरूपजेजिवनाशत्रुजाणिनेत्यागकरवो ॥ अनेपोतानेमळ्याजेप्रत्यक्षभगवाननेतेनासंततेनि
मूर्त्तिनेविषेपोतानामननिवृत्तिनेअखंडराखवि ॥ अनेतेमूर्त्तिनेखातांपितांहालतांचालतांउठतांबेसतांनाहातां
धोतां ॥ सर्वक्रियामांअखंडसंभार्याकरवि ॥ जेमकोईकअतिशेलोभियोहोयअनेतेनेपोतानुंद्रव्यहोयतेनेघरमांदा-
ट्युंहोयपछेतेलोभियोपुरुषकामेकाजेगामगामतरेजाय पणतेनुंमनद्रव्यमांअखंडरह्याकरेछे ॥ पणतेनेघडिएकते ॥५८॥

पन्यथिसरेनहिं॥ तेमजेभक्तनेभगवाननेभगवाननासंतनेविषेअखंडप्रतिरहेतिहोयतेनोतोसाक्षात्कारमोक्षथई
रह्यो छे॥ नेएनेंकांईकरवुंरह्युंनथि॥अनेएवाभक्तनेतोमायानाआवर्णसर्वेटलिगयांछे॥ अनेतेभक्तनादेहमांमाया
नाआवरणदेखायखरां॥पणतेनिरजिवपणेदेखायछे॥ कहेतां तेनिवासनायेरहितदेखायछे॥ जेमसिंदरिअग्नि
मांबलिगईहोयतोपणतेसिंदरिनावलदेखायखरा॥पणतेसिंदरियेकरिनेसावरणिबंधायनहिं॥ तेमप्रत्यक्षभगवा-
ननेसंतनास्वरुपनानिश्चयवालाभक्तनादेहमांमायानांअष्टावरणदेखायछे॥ पण तपेकरिनेपाछोफरिनेदेहधर
वोपडतोनथि॥अनेतेभगवानना भक्तनादेहमांजेनिरजिवआवरणजणायछे॥ तेभक्तनोदेहमुकवासमेदेहमांजेपृ
थ्विनुंआवरण छे॥ तेमहतपथ्विमांलयथईजायछे।नेमहतपृथ्विछेतेमहतजलमांलयथईजायछे॥एविरितेजेमांथि
जेउपज्यांहतां॥ तेमांतेलयपामिजायछे॥अनेभगवाननाभक्तनिभगवाननिमूर्त्तिनेध्यानेकरिने॥ ब्रह्ममयतनुबं
धायछे॥ नेतेभगवाननाअक्षरधामनेपामेछे॥अनेतेभक्तअखंडभगवाननिहजुरमांरहेछे॥ ॥इतिश्रीसुख
सिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्॥११॥ओगणिशे॥१६॥शोलना भादरवावदि
॥१॥पडवानेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीभंडारियामध्येजोसिहतुविरेश्वरनेघेरउगमणाबारनाओर-
डानिओसरिमांगादितकियानखावितेढोलियाउपरविराजमानथयाहता अनेसर्वेसोनेरिवस्त्रधारणकर्यांहतांनेपुष्पना
हारतोराभजरानेगुच्छसर्वेअंगमांधारणकर्यांहतांनेकेशरनिअरचानेकंकुनोचांदलोकर्योहतोनेपोतानामुखार्विंद-
निआगलसाधुतथाघणाकहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठिहतिपछेमहाराजकृपाकरिनेसर्वेसभाप्रत्येबोल्याजेआ॥
जिवछेते॥जेतेचारप्रकारेभगवाननिकृपामानेछे॥ तेमांजेनेधर्मनेविषेजएकआस्ताहोयतेनेतोवरणाश्रमनो
धर्मपालवोतथानहावुंधोवुंचोकापाटलाअबोटियांइत्यादिकदेहेकरिनेतेप्रमाणेवरतायतेणेकरिनेभगवाननि
कृपामानेछे॥अनेजेकामभोगनिआसक्तिवालाछेतेनेतोस्त्रियोभोगववि खावांपिवांवस्त्रघरेणांपेरवां॥घोडेपा

लखियेबेसवुं ॥ इत्यादिक सारासार भोगभोगववा तेणे करिने भगवाननि कृपा माने छे ॥ अने केटलाकने तो आ लोकमां
द्रव्यादिक पदार्थ प्राप्त थाय ॥ तेणे करिने भगवाननि कृपा माने छे ॥ एविरिते जेने जेवि वासना होय ॥ ते विरिते धर्म
अर्थ ने काम ते णे करिने भगवाननि कृपा माने छे ॥ पण ए भगवाननि खरेखरि कृपा नथि केम के ए तो सर्वे मिथ्यासुख
बते करिने कृपा माने छे ॥ माटे जेना उपर भगवाननि खरि कृपा थाय छे ॥ ते तो अविनासि सुखने पामे छे ॥ अने ते जिव
कालकर्मने माया थि रहित थईने अभय पदने पामे छे ॥ अने तेने पंचविषयनि वासना टलि जाय छे ॥ अने धर्म अर्थ ने का-
म तेनो त्याग करिने एक भगवानने विषे द्रढ प्रिति थाय ते ज भगवाननि कृपा छे ॥ पछे अखंडानंद स्वामिये पुछ्युं ॥ जे ए
वि भगवाननि कृपा केम थाय ॥ पछे महाराज बोल्या जे एवि कृपा तो सत्संगे करिने थाय छे ते सत्संग ते शुं ॥ तो सत्यनो
संग करवो ॥ तेनुं नाम सत्संग छे ॥ हवे सत्य ते शुं छे ॥ तो सत्य एक तो आत्मा छे ॥ अने बिजा परमात्मा सत्य छे ॥ अने त्रि
जा भगवान प्रत्यक्षना एकांतिक संत ॥ ते सत्य छे ॥ अने चोथो भगवानना श्रीमुखनां वचन जे शास्त्रमां होय ते शास्त्र
सत्य छे ॥ अने ते आत्मा परमात्मा संतने शास्त्र ए चार मलिने सत्य कहेवाय ॥ अने तेनो मन क्रम वचने संग करवो ॥ ते-
नुं नाम सत्संग छे ॥ अने ते सत्संगे करिने जिवनि उपर भगवाननि खरेखरि कृपा थाय छे ॥ ने तेनि मुक्ति जे अक्षरधाम ते-
ने पामे छे ॥ हवे ते चारनो संग केवि रिते करवो ॥ तो प्रथम आत्मानो संग एम करवो जे आत्मा छे ते जे ते स्थूल सूक्ष्मने का-
रण ॥ ए वा जे मायाना त्रण देह ॥ ते थकि नोखो छे ॥ अने ए त्रणे देहनो प्रकाशक छे ॥ ने अछेद अभेद ने अमर छे ॥ ने आत्मा
अविनासि छे ॥ ने सुखरूप छे ॥ ने देह छे ते नाशवंत छे ॥ जड छे दुःखनुं मूल छे ॥ ने नर्करूप छे ॥ एम जाणिने ते देह मां-
थि प्रितिनो त्याग करिवि पोताना आत्माने विषे ॥ पोतापणुं मानिने तेने विषे प्रिती करवि ॥ कहेतां हुं आत्मा छुं एम स-
मजिने ते आत्मानुं जेम रुडुं थाय तेम वरतवुं ॥ अने माईक पंचविषयना सुखमां तथा मानअपमान मां लेवावुं नहि ॥ के
हेतां मानअपमाने करिने तथा हाण व्रधे करिने हरखशोकने पामवुं नहि ॥ एविरिते समजिने वरते तेने आत्मानो संग

थयो जाणवो ॥ कहेता तेने आत्मनिष्टा द्रढ थई जाणवि ॥ अने बिजो परमात्मानो संग थयो केम जाणवो ॥ तो जे परमात्मा छे
ते सदाय मायाथि पर छे ॥ अने अष्टप्रकारनि जे जडप्रकृति अने ते जडप्रकृतिने धरि रहि ॥ एथि जे चैतन्य प्रकृति ॥ एबेना
आधार छे ॥ अने एबेना प्रकाशना करनारा छे ॥ ने सर्व जगतना कारण छे ॥ ने सर्व जगतना कर्ता छे ॥ ने कृरता थका अक-
रता छे ॥ ने दिव्यमूर्त्ति छे ॥ ने अनंत अक्षररूप पारसदे विंटाणा थका सदाय अक्षरधामने विषे रह्या छे ॥ अने एवा जे परमा-
त्मा भगवान ॥ ते जे कृपा करिने अनंत जिवोनां कल्याण करवाने अर्थे आ पृथ्विने विषे प्रगट थाय छे ॥ ते परमात्मा आ
ज मुने प्रत्यक्ष मल्या छे ॥ एविरिते महात्मे सहित प्रत्यक्ष भगवानना स्वरुपनो जेने निश्चय थाय ॥ तेने परमात्मानो संग थ-
यो जाणवो ॥ अने त्रिजो साधुनो संग थयो केम जाणवो ॥ तो जेने धर्म ज्ञान वैराग ने महात्मे सहित परमात्मानि भक्ति ॥
ए चारवानो जेमां संपूरण होय तथा साधूनां चोसठ लक्षण जेमां संपूरण होय ॥ एवा जे साधु तेना वचन मां मन क्रम वचने
वरतवु ॥ अने ते साधुने गमे एवा जे काम लोभादिक दोष तेनो सर्व प्रकारे त्याग करवो ने श्रधाये सहित एवा साधुनि सेवा-
करवि ॥ ने जेवि देहने देहना संबंधिने विषे जिवने आत्मबुद्धि ने द्रढ प्रिति छे ॥ तेवि ते साधुने विषे आत्मबुद्धि ने द्रढ प्रि-
ति थाय ने ते साधु साथे पोताना जिव जोडाई जाय एविरिते वरतातोय त्यारे तेने साधुनो संग थयो जाणवो ॥ अने चोथा शा-
स्त्रनो संग थयो केम जाणवो ॥ तो जे शास्त्रने विषे प्रत्यक्ष परमात्माना श्रीमुखनां वचन होय ने जेमां धर्म ज्ञान वैरा-
ग ने महात्मे सहित भक्ति तेनुं प्रतिपादन करयुं होय ॥ तथा मायापर एवा जे जगतना कर्ता हर्ता परमात्मा ते ज जिवो-
ना कल्याण करवाने अर्थे रामकृष्णादिक रूपने धारण करे छे ॥ एविरिते प्रत्यक्ष परमात्मानुं प्रतिपादन जे शास्त्रमां क-
र्युं होय ॥ तथा सत्य एवा जे प्रत्यक्ष परमात्मा नानिरवासनिक साधु ॥ तेनुं जे शास्त्रमां प्रतिपादन कर्युं होय ॥ एवां जे
शास्त्र ते सत्य शास्त्र कहेवाय ॥ अने ते शास्त्रने सांभलिने ते शास्त्रमां जेम कह्युं होय ते प्रमाणे वरतवा मांडे ॥ अने
तेने नित्ये वांचवा सांभलवानो अभ्यास राखे ॥ अने ते शास्त्रनुं पोताने व्यसन थाय जे तेने वांच्या सांभल्या विना

रहेवायजनहिं एविरितेजेनेवरताय तेनेतेशास्त्रनो संग थयो जाणवो ॥ अनेएविरितेसमजिनेजेतेवारनो संग करे
तेनेसत्संगकहिये॥ अनेतेसत्संगेकरिनेजिवनिउपर भगवाननिमहाक्रुपाथायछे॥ अनेतेक्रुपायेकरिनेजिवजेते
मायानेतरिनेअधिनासिपदएवुंजेभगवाननुंअक्षरधाम तेनेपामेछे माटेआकह्योजेसत्संग तेनेओळखिनेतेनोजे
संगकरशे तोतेनेतत्काळपंचविषयनिवासनाटळिजशे॥ अनेतेजिवदेहछतां ब्रह्मरूपथईजशे॥ माटेसत्संगक
रिनेपंचविषयनिवासनानोत्यागकरवो॥ अनेवासनानो त्यागथशेत्यारेजजिवनुंआत्यंतिककल्याणथशे॥ माटे
जेदहाडेतेदहाडेवासनामुक्याविन्याछुटकोनथि॥ तेगमेतोसंसारनेमुकिनेत्यागि थयो होय॥ तोपणपंचविषयनिवा-
सनामुकशेत्यारेजत्यागिनुंपणकल्याणथशे॥ अनेग्रहस्थहशेतेपणपंचविषयनिवासनामुकशे॥ त्यारेतेग्रहस्थनुं
पणकल्याण थशे॥ पणवासनामुक्याविनात्यागिकेग्रहस्थकोईआत्यंतिकमोक्ष जेअक्षरधाम तेनेनहिंपामे॥ एसि-
द्धांतथयतोछे॥ पछेतेगामनामेहेताहाथाजसमतेप्रश्नपुछ्युं॥ जेहेमहाराजग्रहस्थनेनिरवासनिककेमथवाय॥
पछेमहाराजबोल्याजेग्रहस्थनेपोतानाआत्मानाकल्याणनो खपहोयतोतेनेअमारिआज्ञाप्रमाणेवरतवुं॥ तेअमा
रिशिआज्ञाछे॥ तोग्रहस्थनेपरणेलिस्त्रिहोयतेस्त्रिनेतेविनाबिजिस्त्रिमात्रतेनेमाबेहेनजेविजाणवि॥ अनेपोता
नाहकमेहेनतनुंजेद्रव्य तेणेकरिनेपोतानोदेहनिरवाहकरवो॥ पणचोरिनकरवि॥ तथाकुडकपटविश्वासघात
नकरवो॥ तथावटलवुंवटलाववुंनहिं॥ तथादारुमाटिगांजाअफिणमफरमाजमआदिकमादकवस्तु॥ तथाअभक्ष
वस्तुनखावि॥ अनेएवाकेफनाकरनाराहोय॥ तेनासंगनोपणसर्वप्रकारेत्यागकरवो॥ अनेएविरितेदेहेकरिनेस्व-
रूपपाळिनेपछेपोतानाआत्मानेतेदेहथकिजुदोजाणवो॥ अनेएआत्मानाआत्माएवाजेपरमात्माभगवानतेमुने
प्रत्यक्षमल्याछे॥ एमजाणिनेतेप्रत्यक्षभगवाननोद्रढआसरोकरिनेतेभगवाननेसुखनाराशिजाणिनेतेभगवान
निमूर्त्तिविनामाईकपदार्थमात्रनेनाशवंतनेदुःखरूपजाणिनेतेनेविषेवैराग्यपामवो अनेप्रत्यक्षभगवाननेभग-

वाननासंतनेविषेमहात्मेसहितद्रढप्रितिकरवि।।एविरितेसमजिनेवर्त्ते तो तेग्रहस्थपणनिरवासनिकथाय।।नेअक्षर
धामनेपामे।।अनेत्यागि होयतेपणत्यागिनाधर्मप्रमाणेनिष्कामनिर्लोभनिरस्वादनिरमाननिस्नेहतेनेद्रढकरे।।
तथाआत्मनिष्ठानेवैरागतेनेपणसुधांद्रढकरिनेप्रत्यक्षभगवाननिमहात्मेसहितभक्तिकरे।।तोतेत्यागिपणनिरवा
सनिकथाय।।नेअक्षरधामनेपामे।।माटेआवार्ताकरितेप्रमाणेत्यागिनेग्रहस्थबेतेपोतपोतानाधर्मकह्यातेनेअंतर
मांउतारिनेतेरितेवरते।।तोग्रहस्थपणआजभगवाननेप्रतापेकरिनेनिरवासनिकथाय।।अनेत्यागिनाधर्मप्रमा-
णेत्यागिवरते।।तोतेत्यागिपणआजप्रत्यक्षभगवाननाप्रतापेकरिनेनिरवासनिकथाय।।पणप्रत्यक्षभगवाननेभग
वाननासंतसमस्याविनात्यागिकेग्रहस्थकोईनिरवासनिकथायनहि।।जेमरांकहोयनेतेखोरीजारनिरवाटिरावखातो
होय।।पछेतेनेएमकहिये जेरवाटिराबतोसारिनथि।।माटेनाखिदे त्यारेतेरांकएमकहेजेमारेतोतेरवाटिराबअमृतजे
विछे।।केमकेतेराबनेखाउनहितोमरिजाउ।।माटेमाराथितेराबनेनाखिदेवाय नहि।।पणतेरांकनेजोमोतैयालाडुवा
नोथालभरिनेमोंहागलमुक्योहोय तोतेरांकजेतेरवाटिराबनेवगरकहेनाखिदे।।नेकांईक रव वाणिहोयतेनो
पणरपररवरोकरेजेएविनकारिराबक्यांथिरवधाणि।।तेमरंकजेवाजेवासनावाळाजियतेरवाटिराबरूपजेपंचविषय
तेनेभोगवेछे।।तेनेसंतजेएटलिविषयनारवंडननिवार्ताकरेपणतेविषयनेतोजिवनप्राणमान्याहोयतेकोईरितेमुकिशा-
केनहि।।पणजोतेनेमोतैयालाडवारूपप्रत्यक्षभगवाननेतेनासंतनोमहात्मेसहितनिश्चयथायतोतत्कालपंचविष
यनोत्यागकरिदे।।नेनिरवासनिकथईनेप्रत्यक्षभगवानमांजिवजोडाईजायछे।।जेमरांकराबनोत्यागकरिनेलाडवा
जमवामंडिपडेछे।।तेमजिवजेतेपंचविषयनोत्यागकरिनेप्रत्यक्षभगवाननेभगवाननासंतनेविषेद्रढप्रितिकरेछे।।अ
नेतेनिरवासनिकथईनेअक्षरधामनेपामेछे।।माटेआसमेजेनेनिरवासनिकथवुंहोयतेनेआकह्युंतेप्रमाणेसमजिनेव-
५ रतसेतोतेतत्कालनिरवासनिकथशे।।माटेआवार्ताछेतेसर्वेशास्त्रनोसारछे।।पछेवळिपटेलपोलाआवायेप्रसपु-

छ्युं ॥ जेहेमहाराज ॥ आमाणस मरि जाय छे तेने ते पाछो माणसनो ने माणसनो अवतार आवतो हशे के बिजो अवतार आ भंडारिया.
वतो हशे ॥ के अवतार फरिने आवतो ज नहि होय ते अमने जेम होय तेम कहो ॥ पछे महाराज बोल्या जे सारु प्रश्न पुछ्युं ॥ सिं०३५
माटे सांभळो एनो उत्तर करिये ॥ जे जिव छे ते तो अविनासि छे ॥ अने ते जिवने मायाना त्रण देह छे ॥ ते कियात्रण देह तो ॥
स्थूल सूक्ष्म ने कारण ए त्रण देह छे ॥ ते मांजे स्थूल देह छे ॥ तेने मुके छे अने सूक्ष्म ने कारण तो जिवनि भेगा ने भेगां रहे छे ॥ पछे
स्थूल देह मुकवा समे जिवने ॥ जेवि वासना होय ॥ तेवो पाछो देह धरे छे ॥ जेम आंबलिनो आंबलियो होय तेने विषे आंब-
लि रहि छे ॥ ते जो आंबलियाने वावे तो मोटुं झाड थाय ॥ ते मोटुं झाड थयुं ते आंबलियानुं स्थूल देह छे ॥ ने आंबलियो सूक्ष्म
देहने ठेकाणे छे ॥ ने ते आंबलिया उपर जे फोतरुं छे ॥ ते कारण देहने ठेकाणे छे ॥ ते मां ज्यां सुधि आंबलिया उपर फोतरुं
होय त्यां सुधि ते मांथि ॥ झाड थाय छे ॥ अने जो ते आंबलियाने अग्निमां शोकिने फोतरुं उतारि नाखे तो ते आंबलियामां
थि पाछुं झाड थाय नहिं ॥ तेम जिवने आ बलियाना फोतरा रूप कारण देहमां वासना होय त्यां सुधि जन्म मरण टळतुं न-
थि अने ज्यारे फोतरा रूप जे वासना तेने ज्ञानरूपि अग्नियेकरिने बालि नाखे त्यारे तेने जन्म मृत्यु टळि जाय छे ॥ ने ते जिव भग
वानना धामने पामे छे ॥ पण ते विना जन्म मृत्यु टळतुं नथि ॥ अने जिव छे ते सूक्ष्म ने कारण ॥ देहमां रह्यो थको ज्यां ज्यां वा
सना होय त्यां त्यां स्थूल देहनुं वारे वारे धारण करे छे ॥ जेम भरतजिने देह मुकवा समे मृगला ना बच्चांमां दयाये करिने
वासना रहि हति ॥ तो ते भरतजिने मृगनो देह धर्यो पड्यो हतो ॥ ते एवा मोटाने एम थयुं ने माणसमांथि मृग थया तो बि
जा जिव जेने अनंत वासना होय ॥ तेने ते क्यांथि पाछो फरिने मनुष्यनो अवतार आवे ॥ न ज आवे अने ते वासनावाळा जि
वो ने तो स्थूल देहनो त्याग करिने प्रथम तो यमपुरिमां जई ने केटलाक युग सुधि तो ॥ छ लाख ने चोरासि हजार नरक-
ना कुंड छे ॥ तेमां महा कष्टने भोगववुं पडे छे ॥ ने पछे लख चोरासिमां जाय छे ॥ ने तेमां कुतरा गधेडा दिकनो अनंत ज-
न्म धरवा पडे छे ॥ अने जे मनुष्य देहमां पुरुष होय ने ते देह मुकवा समे स्त्रिमां बहु हेत होय ॥ तो ते पुरुष स्त्रि थई जाय छे ॥

नेस्त्रिनेपुरुषमांप्रितिबहु होय ।। तोतेस्त्रिनो पुरुषथायछे ।। अनेजेमनुष्यनेप्रत्यक्ष भगवाननेसंतनो संबंधथाय छे ।। नेजे प्रत्य
क्षभगवानना भक्तथायछे ।। अनेतेनेकांईक वासनारही गई होय ।। तो तेनेपाछोफरिनेमाणसनोअवतारआवेछे ।। पणतेनर्क
चोराशिमांजायनहि ।। नेतेप्रत्यक्षभगवाननाभक्तनेथोडि घणिवासनारहि गई होय ।। तेनेतोभगवानदेवतामांनेमनु
ष्यमांजन्मधरावे छे ।। अनेज्यारे ज्ञान अग्निये करिनेवासनारुपकारण देहने बालिनाखेछे ।। त्यारे जिवजे ते ब्रह्मरुप थई-
ने भगवान नाअक्षर धामनेपामेछे ।। एतमाराप्रश्ननोउत्तर छे ।। ।। इति श्री मुखवाणि ९३ तसमाप्तः ।। ।।
।। श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ।। ।। सवत १९ओगणिशो ।। १६ ।। शोलनाभादरवावदि ।। २ ।। बिजनेदिवस महाराजश्रीह
रिकृष्णभगवान ।। गामश्रीभंडारियामध्ये ।। भटगलागोविंदजिनेघरउतरादेबारओरडानिओसरिमा होलियोउपर गादि
तकियानखाविनेविराजमानथयाहता ।। नेसर्वे स्वेतवस्त्रधारणकर्याहता ।। नेमस्तकउपरगुहारंगनीपाघबांधिहति
।। नेपुष्पनाहारकंठमांधारणकर्याहता ।। नेकंकुनोचांदलोकर्योहतो ।। नेपोतानामुखारविंदनिआगलसाधुतथादे-
शदेशनाहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठिहति ।। पछिदवेशांमजिप्रश्नपुछ्युं ।। जेहेमहाराजश्री भागवतमांवसूदेवकेसम
स्येकह्युं छे ।। जेतारिबेननेतुमारिसखरो ।। पणाजिवमरतोनथि ।। अनेआदेहनेमुकवानोसमोथायछे ।। त्यारेबिजादेहमां
प्रवेशकरीनेआदेहनोत्यागकरेछे जेमखडमांकडिआगल्या तरणाउपरबेपगमांडिनेपछीपाछल्यापगउपाडे छे ।। तेमजि
वजे तेआगल्यादेहमांप्रवेशकरिनेआदेहनेमुकेछे ।। अनेवलिगरुडपुराणमांएमकह्युं छे ।। जेजिवज्यारेदेहमुकेछे ।। त्यारे
प्रथमयमनादूतजिवनेचारघडिमांधर्मराजापासेलेईजायछे ।। नेतेजिवनापापपुन्यजोईनेपाछोमोकलेछे ।। अनेतेजिवबार
दिवससुधिर्त्यो रहिने ।। पछेपाछोयमपुरिमांलेईजायछे ।। अनेतेयमपुरिमांकेटलाकयुगसुधिरहिनेतेजिवनापापनुंनिवा
रणथायछे ।। त्यारपछी आकाशमांजायछे ।। नेपछीमेघभेलोवरसिनेअन्नखडमांआविने ।। तेअन्नखडनेमनुष्यपशुखा
य ।। तेमेगेपुरुषनापेट मांजईने पछेविर्यमांआविनेस्त्रिनाउदरमांआविनेदेहधरेछे ।। एविरितेघणो कालदेहधरेछे ।।

अनेवेयव्यासजिएकधणिनावचन तेपरस्परविरुध आवेछे ॥ तेएकवचनसाचुंकरिये ॥ तोबिजुंवचन खोटुं थाय छे ॥ मा
टे तेनुंकेम हशे तेक्रुपाकरिनेकहो ॥ पछे महाराज बोल्या जे ल्योएनोउत्तरकरियें ॥ जेएबेप्रकारनावचनने सांभलिने केट
लाकजिवनेशास्त्रनेविषे नास्तिकभावआविजायछे ॥ माटे तेनोउत्तरएमछे ॥ जेजिवने त्रणदेहछे ॥ स्थूलसूक्ष्मनेका
रण ॥ तेमां कारणनेसूक्ष्म तोअनादिनाछे अनेते बेदेह वासनामयछे ॥ ते जेपदार्थनी वासनाहोयतेठेकाणे स्थूलदेहनुंधार
णकरिने तेपदार्थनेभोगवेछे ॥ अनेपदार्थने भोगवेछे ॥ त्यारे जिवजे तेस्थूलदेहमांमुख्यपणे वरतेछे ॥ अनेतेस्थूलदे-
हनिआवरदाआविरहे ॥ त्यारेवासनालिंगएवोजेनवतत्वनो सूक्ष्मदेह तेमां जिवप्रवेशकरिनेस्थूलदेहनेमुकिने यमपुरि
प्रत्येजायछे ॥ अनेनित्यनिमितप्रलयमांस्थूलदेहनोनासथायछे ॥ पण सूक्ष्मनेकारणएबेदेहनो नाशथतोनथि ॥ अनेज्या
रेप्राकृतप्रलयथायछे ॥ त्यारेस्थूलदेहनेसूक्ष्मएबेदेहनो नास थाय छे ॥ अने कारणदेहएकरहे छे ॥ अने ते कारणदेहनो
नाशकोईकाले थतो नथि ॥ अनेप्राकृतप्रलयने अंते पाछि सृष्टि थ्रजायछे ॥ त्यारेस्थूलने सूक्ष्म बेदेह उत्पन्नथायछे ॥
अनेजिवनेजेविवासनाहोयतेवादेहनुंधारणकरिनेस्थूलदेहना भोगने भोगवेछे ॥ नेपापपुन्यने करेछे ॥ अनेवलि स्थूलदेहनि
आवरदा आविरहे छे त्यारे सूक्ष्मदेहमांप्रवेश करिने तेपापपुन्यनाफलनेभोगवेछे ॥ पणदेहविनाजिवरहेतोनथि ॥ त्यांदृष्टां
तछे ॥ जेजेमदिवो घरनीमध्येमुक्यो होय ॥ ते घरबधामां तेनो प्रकाश व्यापि रह्यो छे ॥ तेघरमांप्रकाशव्यापो ते दिवानुंस्थू
लशरिर कहेवाय ॥ अने दिवेटने विषे वलगिने रह्यो छे ॥ ते दिवानुं सूक्ष्मशरिरछे अने दिवेलछे ते दिवानी आवरदाछे ॥
अनेज्यारे दिवेलआविरहे ॥ त्यारेघरमांजे प्रकाश होय ते संकोच पामिने कोडियामां आवे ॥ कहेतां स्थूलदेहरूप घरनो
त्याग करिने सूक्ष्मदेहरूप जोतिनेविषे प्रवेश करेछे ॥ अनेज्यारे दिवो आलाईजायछे ॥ त्यारे कारणदेहरूप वायुरूप धु
मा डोतेमा प्रवेशकरे छे ॥ तेमजिवने त्रणदेहछे ॥ ते देह विनाजिवजे ते रहेतो नथि ॥ ते मांजेस्थूलदेहनी दृष्टी वालाछे
॥ तेनेदेहनो नाश थाय त्यारे कहे जे मरिगयो ॥ अने चरुदेवे तो ज्ञानदृष्टियेकराने कह्युं ॥ जेजिव मरतोनथि ॥ अने- ॥५२॥

स्थूलनेसूक्ष्मएबेदेहमारदिनेजन्ममृत्युयमपुरिनेचोराशिगर्भवासतेनेभोगवेछे॥ मांटजिवमरतोनथि॥तेपणसत्यछे॥
अनेखंडमांकडिनिपेठेसूक्ष्मदेहमांप्रवेशकरिनेस्थूलदेहनोत्यागकरिनेयमपुरिनांदुःखनेभोगवेछे॥ तेपणसत्यछे॥
एतमाराप्रश्ननोउत्तरछे॥अनेनित्यनिमितप्रलयमांस्थूलदेहनोनाशथायछे॥अनेवलिउत्पत्तिसमेउपजेछे॥अनेज्यारेप्राकृ
तप्रलयथायछेत्यारेसूक्ष्मनेस्थूलएबेदेहनोनाशथायछे॥अनेउत्पत्तिसमेपाछांउपजेछे।अनेत्रिजोकारणदेहछे ते
तोअनादिनोछे॥नेतेनोनाशथतोनथि॥अनेतेनोनाशक्यारेथायछे॥तोज्यारेज्ञानप्रलयथायछे॥त्यारेकारणदेहनो
नाशथायछे॥तेज्ञानप्रलयक्यारेथायछे॥तोज्यारेजिवनेमनुष्यदेहहोय॥अनेमायापरएवाजेब्रह्मनाआधारपरब्रह्म
दिव्यमुर्त्तिभगवानतेपोतानिस्वइच्छायेजिवोनोमोक्षकरवासारुप्रथ्वीनेविषेभासमानरामकृष्णऋषभकपिलादि-
करुपेथयाहोय॥तथातेनासंततेप्रगटथयाहोय॥ पछेतेभगवाननेसंततेनेशरणेजिवआवे॥नेतेनिआज्ञाप्रमाणेम-
नकर्मवचनेवरते॥नेतेनेविषेसर्वेअंतरायनोत्यागकरिनेदृढप्रितिकरे॥तोतेनेआत्यंतिकप्रलयनुज्ञानथायछे॥कहे
तांतेजिवनेज्ञानप्रलयथायछे॥नेतेआत्यंतिकमोक्षनेपामेछे॥त्यारेतेनेकारणदेहनोनाशथायछेनेजिवनुंजिवप
णुंमटिनेब्रह्मरुपथायछे॥नेअक्षरधामनेपामेछे॥पणभगवाननेभगवाननानिरवासनिकपंचविषयनात्यागिसंतम
ल्याविनाकोटिसाधनकरेतोयतेनेकारणशरिररुपजेमहामायातेटलिनथि॥त्यांभगवद्गितानो॥श्लोक॥दैविए-
षागुणमयिममम्मायादुरत्यया॥मामेयवेयेप्रपदंतेमायामेतांतरंतिते॥अर्थ॥श्रीकृष्णकहेछे॥जेदैविनेगुणमयिएवि
जेमारिमायातेदुःखेकरिनेतरविकठणछे॥पणमाराचरणनेजिवपामेतोसुखेकरिनेतेमायानेतरिजाय॥माटेआस-
मेजेनेमनुष्यदेहआव्योछे॥अनेआसत्संगनोजोगजेनेथायछे॥तेनाभाग्यनोपारनथि॥केम केआजदेशकालबहु
सारोछे॥तेसारादेशकालमांसुखेप्रभुभजायछे॥अनेपूर्वेरामकृष्णादिकभगवाननाअवतारथयाहता॥त्यारेउपाधि
घणिथतिइति॥तेभक्तजननेप्रभुभज्यामांबहुभूंडादेशकालहता॥अनेआजतोसर्वेप्रकारेरुडादेशकालवरतेछे॥

माटे जेने पोताना आत्मानाकल्याणने इच्छवुं होय ॥ तेने तो द्रढ मन करिने भगवानने संतनो आसरो करवो ॥ ने पोताना आत्मा
नो मोक्ष करि लेवो ॥ एज मनुष्य देह पाम्यानो परम लाभ छे ॥ अने आवो समो आव्यो छे ॥ जे सत्संग नथि करता ते तो महा मूर्ख छे ॥
ने आत्म घाति छे ॥ ॥ इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ॥ ॥ संवत् ॥
१९ ॥ ओगणिशें ॥ १६ ॥ शोलना भादरवा वदी ॥ ३ ॥ त्रिजने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री भंडारियामध्ये
पटेल पोठा आंबाने घेर उगमणे बार ओरडानि ओसरिमां ढोलिया उपर गादि तकिया न खावि ने विराजमान थया हता ॥
अने सर्वे स्वेतवस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ ने मस्तक उपर कसंबल फेटो बाध्यो हतो ॥ अने सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषण शो
भि रह्यां हतां ॥ अने पोताना मुखारविंदनि आगल साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनि सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे महाराज
कृपा करि ने हरिजन प्रत्ये बोल्या जे आस्तिक जिव होय ने तेने द्रव्य मल्युं होय ॥ तो ते द्रव्य तेने दुःखज दे छे ॥ ने ते द्रव्य ने अध
र्मिने मारगे वावरे छे ॥ ते केवि रिते वापरे छे ॥ तो वेश्याओने खवरावे ॥ तथा भवैया रमाडे ॥ दारू मांस खाय ॥ एआदिक घणा
क प्रकारना फेलने मारगे द्रव्यने वावरे छे ॥ ने ते पापे करिने ॥ पछे ते महा दुःखने पामे छे ॥ पण एवा अधर्मि पासे द्रव्य होय ते स्
पात्रने ठेकाणे ववराय नहिं ॥ अने एवा आस्तिक जिव होय ॥ ते धर्मवाला मनुष्यने देखिने बलि मरे छे ॥ अने साधु अष्टप्रकारे
स्त्रिनो त्याग करावता होय ॥ तथा सर्व प्रकारे द्रव्यनो ने रसास्वादनो त्याग राखता होय ॥ तेने देखिने आस्तिक जिव दाझेब
ले छे ॥ पण तेनो आस्तिक जिवनि महिमा न समजाय ॥ ने एम न समजे जे आवा मायापर ने पंचविषयना त्यागि साधु तेनां तो
दर्शन पण घणां दुर्लभ छे ॥ अने एवा साधुने दर्शने करिने अनंत जिवनुं कल्याण थाय छे ॥ एम आस्तिक जियने समज्या मां आ
वे नहिं ॥ अने आस्तिक जिव तो पंचविषयना रागि ने वेषधारि एवा जे अधर्मि तेने देखिने राजि थाय छे ॥ पण विषयना त्यागि
ने धर्मवाला साधु तेने देखिने राजि थाय नहिं ॥ ने उलटा दुःख पामे ॥ केम के जे धर्मवाला होय ते अधर्मने खोदे ने विषयनुं
खंडन करे ॥ माटे अधर्मि अवगुण ले छे ॥ पण एम गुण न ले जे एने धन्य छे ॥ जे स्त्रि द्रव्य रसादिक पंचविषयनो त्याग करिने

वरतेछे॥एवोअधर्मिनेगुणनआवे॥अनेअधर्मिने तो चोरकपटिफेलि व्यसनिएवामुंडास्वभाववालागमे छे ॥ अनेएवाअध
र्मिनाअंतःकरणमांपण मदाक्लेशवरत्याकरे छे।कहेतां तेनेशान्तिथायनहिं अनेदेहनेमुकिने महाकष्टनेपामे छे॥ माटेजे
नेपोतानाआत्मानुंरुडुं करवुहोय तेनेतोएवाअधर्मिना संगनोत्यागकरवो॥अनेधर्मवालाने विषयनात्यागिएवाजे भग-
वानने विषेदृढस्नेहवाला जे साधु तेनो मन कर्मवचनेसंगकरवो ॥अनेतेनिआज्ञाप्रमाणे वर्तवुं॥अनेएविरितेसमजिने
॥सत्यसाधुनिआज्ञाप्रमाणेवरते छे॥तेनांअनंतजन्मनापापसर्वे बलिने भस्मथईजायछे।।नेतेआनेआदेहे मायापरथईने
भगवाननोधामनेपामे॥माटेअधर्मिना संगने तोहडकायाश्वानने सर्परुपजाणिने त्यागकरवो ॥पणकोई रित्येगाफला
ईयेकरिनेअधर्मिनोसंगनकरवो॥अनेजोगाफलाई राखिने कहेतां मुनेतेनुं करशो॥एमजाणिनेअधर्मिनोसंगराखे तोते
नुंकोईरित्ये कल्याणथायनहिं॥अनेतेगाफलनेआवो अतिशादुर्लभमनुष्यनो देह तेपशुनापाडमां जायछे।अनेजेसावधान
छे॥तेतोपोताने भगवानेकृपाकरिने आप्यो जेमनुष्यनोदेह॥तेदेहे करिने अधर्मिनो तथा अधर्मनो त्याग करिने॥ धर्मज्ञान
वैराग्यनेमहात्मेसहितभगवाननि भक्तिदृढ करिने पंचविषयना त्यागिसंततेनोसमागमकरिनेविषयनिवासनानेमुकिनेभ
गवाननाधामनेपामवुं॥एजमनुष्यदेहनोलाभछे।अनेतेविनातोपशुनापाडमां मनुष्यनोदेह जायछे॥ ॥इति श्रीमु
ख्यसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमो नमः॥ ॥संवत॥१९॥ओगणिशे॥१६॥शोलना भाद्र-
वावदि॥४॥चोथने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवानगामश्रीटाणामध्ये भटजदुराम जगजिवनने घेरउगमणेबारमेडि
निओसरिमांहोलियाउपरबिराजमान थयाहता॥अनेसर्वे स्वेतवस्त्र धारणकर्यांहतां॥अने कसुंबलफेंटोमस्तके बांध्यो
हतो॥अनेगुलाबनापुष्पना हार धारण कर्याहता॥ नेपुष्पना बाजुगजरा तोराने गुच्छ सोभिरह्याहता॥अने कंकुनोचांदलो
कर्योहतो।।नेपोतानामुखारविंदनिआगल साधुतथादेशदेशना हरिभक्तनिसभाभराइनेबेठिहती॥पछेमहाराज श्रीहरिकृ-
ष्णभगवानकृपाकरिनेबोल्याजेजिवकेवोछे॥केजेवोपाणिनोघुंडो थयोहोय॥तथामथनो घडो होय।।तथाहरणियोपारो होय

॥ते जेवो जिव छे॥ तेजिव देहमां हृदयने विषे रह्यो थको अनंतप्रकारनी व्रत्तियो द्वारे करिने आविश्वना विषयने भोगवे छे॥ जेम कान रवजुरो पोताना सर्वेपग नेएकसाथे चलावे छे॥ तेम जिवपण हृदयमां रह्यो थको कान इंद्रिनि वृत्ति द्वारे करिने अनंत प्रकारना शब्दना विषयने भोगवे छे॥ अने नेत्र इंद्रिनि वृतिये करिने अनंतप्रकारना रूपाविषयने भोगवे छे॥ अने रसना इंद्रिनि व्रत्तिये करिने अनंतप्रकारना रसविषयने भोगवे छे॥ ने नासिका इंद्रिनि व्रतिये करिने अनंतप्रकारना गंधविषयने भोगवे छे॥ एविरिते जिवजे ते हृदयने विषे एकठे काणे रह्योथको दशइंद्रियोने चार अंतःकरणने चोददेवताए सर्वेने प्रकाशे छे॥ अनेपोते जिवजे ते विषयनि भुक्ता बुद्धिये करिने भोगने भोगवे छे॥ अने ते विषयभोगनि भुक्ता वृती द्वारे॥ एकेकी व्रतिमां अपारने अपार दुःरवने पामे छे॥ एविरिते जिवजे ते पोताना आत्मस्वरूपने भूलिने॥ तथा आत्माने सुरवना आपनारा एवाजे परमात्माने तेना संत तेना स्वरूपने भूलिने महादुःरवरूप जे पंचविषय तेमां सुरवमानिने विषयने भोगवे छे॥ ने महाक्लेशने पामे छे॥ ने विषयनि वासनाये करिने जन्ममृत्युने वारंवार पामे छे॥ एविरिते जिवजे ते अनादिकालनो अज्ञाने करिने अपार कष्टने भोगवे छे॥ नेते दुःरवथकि पोतानि मेले कोई जिव छुटवाने समरथ नथि॥ अनेजिवने पोतानि मेले कल्याणनो मारग पण कोइने जडतो नथी॥ अने विषयनि वासनापण कोइ पोतानि मेले टालवाने समरथ नथि॥ माटे ते वासना केम टले॥ ने कल्याणनो मारग क्यारे सुझे॥ तो सदाय अनादि मायाथि पर एवाजे परमात्मा भगवानने तेना संत तेज जिवोनि उपर कृपा करिने मनुष्यस्वरूपनुं धारण करिने पोतानो संबंध कराविने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान करावे छे॥ त्यारे जिवजे ते पंचविषयथकि मुकाय छे॥ ने आत्मा परमात्माना स्वरूपने साक्षात्कार जाणे छे॥ ने जन्ममरणना दुःरवथकि मुकाईने अविनाशि सुरवने पामे छे॥ हवे ते परमात्माने तेना संत ते जिवने केविरिते ज्ञान आपे छे॥ तो पोताना ज्ञानरूपि प्रकाशे करिने [illegible] नी त्यनिमित्त प्राकृतने आत्यंतिक प्रलयनुं रूप देरवाडिने जिवने ब्रह्म संघाते एकताभाव कराविने ते ब्रह्मना प्रकाशक एवाजे परब्रह्म तेना स्वरूपनो प्रत्यक्ष निश्चय करावे छे॥ त्यारे तेना श्रोत्रनि व्रति छे तेनो माईक भाव टलिने दिव्यभावने पामे छे

॥अनेतेविजारितेनेत्रइंद्रिमांथिमाईकआकारमात्रनोप्रलयकरावितेपोतानुंमत्यक्षदरसनआपिनेदिव्यभावनेपमाडेछे॥
अनेरसनाइंद्रिनिव्रतिछेतेनेमाईकरसमात्रनोप्रलयकराविनेपछिपोतानीप्रसादिजमाडिने॥तथापोतानांचरित्रगवरा-
विनेदिव्यभावनेपमाडेछे॥अनेपोतानेचड्यांजेचंदनपुष्पादिक॥तेनिसुगंधियेकरिनेनासिकाइंद्रिनिव्रतिनेदिव्यभाव
नेपमाडेछे॥एविरितेदशइंद्रियोनेचारअंतःकरणतेनेभगवाननेभगवाननासंतजेतेपोतानोसंबंधकरावितेतेनेज्ञान
आपिनेइंद्रियोनामाईकविषयनोप्रलयकराविनेपोतानास्वरूपमांजोडाविनेदिव्यभावनेपमाडेछे॥पूछेतेजिवनेभगवा-
ननेसंतनास्वरूपनोनिश्चयथायछे।जेमहिरेकरिनेहिरोविंधायछे॥नेमणियेकरिनेमणिविंधायछेतेमभगवाननेभगवा
ननासंतनास्वरूपनोनिश्चयतेभगवाननेभगवाननासंतवतेजथायछे॥पणमाईकइंद्रियोअंतःकरणनिसमजणेक
रिनेभगवाननेसंतनुंस्वरूपओलख्यामांआवतुंनथि॥तेमाटेदशइंद्रियोनेचारअंतःकरणतेनिजेव्रतियोतेनेभगवा-
ननेभगवाननासंतनास्वरूपमांजोडिदेवि॥अनेअशुभपंचविषयनोत्यागकरवो॥अनेएविरितेभगवाननेसंतनासंबंधने
जिवपामेछे॥तेनाअंतरमांप्रकाशथायछे।नेतेप्रकाशनेमध्येभगवाननेसंतनुंस्वरूपअनंतप्रतापेयुक्तदेखायछे॥अने
तेजिवात्मामहाबलनेपामेछे॥कहेतांमोटाब्रह्मादिकनेकामादिकदोषलडथडियांलेवरावेछे॥तेकामादिकनिग-
णतरि॥भगवाननाभक्तनेरहेतिनथि॥नेतेनेतोतुछकरिजाणेछे॥नेब्रह्मानंदसुखनेपामेछे॥नेस्वतंत्रथायछे॥
कहेतांमायानुंआवरणअनादिनुंहतुंतेटलिजायछे॥नेमायानुंआवरणटल्युंत्यारेतोतेआत्माअक्षरब्रह्मरूपथायछे
॥अनेतेअक्षरमांतोभगवानअखंडरह्याछेमाटेएवाअद्भुतसुखनेपामेछे॥अने तेआत्मापोतानासुखनापारनेपामतो
नथि॥अनेपोताथकिपरएकपरमात्मातेअधिकरहेछे॥नेतेपरमात्मानासुखेकरिनेजपरमआनंदपामेछे॥तेपरमात्मा
नेतेनामंतनोआजतमारेसाक्षात्कारसंबंधथयोछे॥अनेजेनेभगवाननेभगवाननासंतनास्वरूपनोनिश्चयथायछेते
आत्मातोअक्षरब्रह्मनाभावनेपामेछे॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमो-

नमः॥ ॥संवत् ।१९। ओगणिशे॥१६॥ त्रोलना भादरवा वदि॥५॥ पंचमिने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण
भगवान गाम श्री टापामध्ये भट प्रभुरामनेघेर उगमणेबार ओरडानि ओसरिमां। ढोलियाउपर गादितकिया नखावि ने
तेउपर विराजमानथया हता। अने सर्वे श्वेतवस्त्र धारण कर्यां हतां। नेमुस्तकउपर गुढा रंगनिपाघ बांधि हति। अने कंठमां
पुष्पना हार धारण कर्या नेपाघमां तोरा धारण कर्या हता। ने पोताना मुखारविंदनि आगल साधु तथा घणा कहरिभक्तनि
सभा भराइनेबेठि हति। पछि संध्या आरति थया पछि। महाराज बोल्या जे सर्वे सांभलो। एक वारता करविछे। जे आजिवस
र्वे छे। ते त्रणगुणमां मलिने माईक एवा जे पंचविषयना भोगभोगवे छे। अने तेना कर्मना फलेकरिने सुखदुःखने पामे छे
॥तेमां रजोगुणनी दश इंद्रिछे॥ने तमोगुणनां पांच भूत नेपाच विषयछे॥ नेसत्वगुणनां चार अंतःकरण॥ इंद्रियो अं
तःकरणना देवता छे॥अने ते इंद्रियो अंतःकरणे करीने जिवजे ते त्रिगुणात्मक कर्म करे छे॥ अने ते कर्मानुसारे कर्मनुंफ
ल आकाश पाताल नेमृत्युलोकने विषे रहिने भोगवे छे॥ अने ते फल धर्म अर्थ ने काम रुप छे। तेमां सत्वगुणि कर्मनुं फल
स्वर्गादिक छे॥ नेरजोगुणनुं फल मध्य लोक छे ने तमोगुणि कर्मनुं फल पाताल लोक छे। एविरिते विश्वनि उत्पत्ति स्थिति ने
प्रलय तेने विषे जिवजे ते॥परमेश्वरने नजाणवा रुप मायायें करिने मोहने पामतो थको सुखदुःखने भोगवे छे॥ अनेसर्वे-
जिवजे ते धर्म अर्थ नेकाम परवर्त्ते छे॥ पण मोक्षने मारगे चालवुं घणुं कठण छे। अने मोक्षना दाता जिवने मलवा अतिशेज
दुर्लभ छे अने मोक्षना दाता भगवान के॥ भगवानना एकांतिक संत॥ तेनो संबंध नेतेनि आज्ञा पालवि। तेणे करिने जिव
कृतार्थ थाय छे। अने जेने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतनो संबंध थाय ने ते तमोगुणि जिव होय॥ तोपण ते जिवनुं क-
ल्याण थाय छे॥अने तेनां जे तमोगुणि कर्म ने तेनुं फल जे नर्कमां जवुं ते सर्वे भगवानने संतना संबंधे करिने बलिने भस्म थ
ईजाय छे। अने सत्वगुणि कर्मे करिने स्वर्गमां जवानो होय॥ ने ते नेजो कल्याणकारि एवा जे भगवान के भगवानना संत
नो अवगुण आवे। तो तेने मोटुं पाप लागे छे। नेतेने सत्वगुणनुं फल जे स्वर्गादिकमां जवुं॥ तेनो नाश थई जाय छे। नेते

महाअधोगतिने पामे छे ।। माटे पोताना आत्माना मोक्षने इछता होय तेने तो अति निरमानि निष्कामादिक गुण राखिने पोताना
मननुं गमतुं मुकिने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतना दासानुं दास थईने तेनो समागम करवो अने एम समजे छे तेने ज म-
नुष्य देहनो परम लाभ थाय छे ।। अने ते थि उलटुं चालवुं ।। ने प्रत्यक्ष परमात्माने तेना संतनो अवगुण लेवो ने द्रोह करवो ।। एज मो-
टुं पाप छे ।। केमके अन्यक्षेत्रे कृतं पापं ।। तिर्थक्षेत्रे विनश्यति ।। तिर्थक्षेत्रे कृतं पापं ।। वज्रलेपो भविष्यति ।। ए श्लोकनो
एज अर्थ छे ।। जे बिजे ठेकाणे पाप कर्यां होय ।। ने ते जो तिर्थरुप जे प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संत तेनो गुण लेईने तेने
शरणे जाय तो तेना पाप सर्वे नास थई जाय छे ।। अने तेनो जो द्रोह करे तो ते पाप कोई काले छुटे नहि ।। माटे तिर्थरुप जे माहा-
त्मा पुरुष तेनो सदाय गुण लेवो ।। ने अवगुण तो क्यारेय लेवो नहि ।। अने पोताना दोष जोवा ।। ने ते दोषनो त्याग करवो ।। ए-
वि रिते समजे तेनुं ज कल्याण थाय छे ।। अने ते ज साचो भगवाननो भक्त छे ।। इति श्री मुखसिद्धांत समाप्तः ।।
।। ।। श्री हरिकृष्णाय नमो नमः ।। ।। संवत् १९ ओगणिशे १६ शोलना भादरवा वदि ६ छठ
ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री दाणा मध्ये ।। भट यदुराम जगजिवनने घेर दुगमणे वार ओरडानि ओसरि
मां ढोलिया उपर गादि तकिया नखाविने विराजमान थया हता ।। अने सर्वे श्वेत कंबल वस्त्र धारण कर्यां हता ।। ने पुष्पना हा-
र धारण कर्या हता ।। ने बे हाथने विषे बाजुबंध ने गजरा धारण कर्या हता ।। ने बे कान उपर गुच्छ शोभि रह्या हता ।। ने पाघमां
तोरा लटकता हता ।। ने हाथमां रुमाल धारण कर्यो हतो ।। ने पोताना मुखारविंदनि आगल साधु तथा घणाक हरिभक्त-
नि सभा भराईने बेठि हति ।। पछे महाराज कृपा करिने बोल्या ।। जे आ सर्वे मनुष्यमात्र छे ।। ते पोताना देहना रक्षणने अ-
र्थे ज दाणा भेगा करि राखे छे । ते ज्यारे दुकाल पडे त्यारे ते दाणाने सुखे थि खाय छे ।। ने तेने दुःख थतुं नथि तेम पोताना जि-
वना मोक्षने अर्थे जतन करवुं ।। केमके अंत समो छे ।। ते अति घोर कठण छे ।। ते सेठ साहुकार राजा रंक हिंदु मुसलमान आदि-
क जिवप्राणि मात्रने काळनो भय छे ।। केमके देह छे ते तो जरुर नाश पामशे ।। अने ज्यारे देह नाश पामशे त्यारे दुःख पण

थयाविनारहेशेजनहिं॥ माटेतेदुःखथकिउगरवानोउपायहमणांततकालकरवो केमकेदेहनोएकपलनोपणनिरधारनथि॥माटेहमणांततकालएवोउपायकरवो जेअंतसमेकाम आवेनेदुःखनथायनेआत्माअविनासिसुखनेपामे॥त्यारेकोईएमकहेशे जेअंतसमो आवशेत्यारेउपायकरिवुं॥ तो तेवखतेउपायेथतोनथि॥ जेम घरमांलहायलागेनेतेलहायनेओलववासारुंकुवोगालवामांडे॥ तेकुवानेपाणियेकरिनेघरओलायनहिं॥ नेजेकुवोघरसलग्यामोरगालिमुक्योहोय॥तेनेपाणियेकरिनेलाहायओलायछे॥ तेमअंतसमोआव्यासुगाउहमणांततकालभगवानकेभगवानना एकांतिकपंचविषयनात्यागिसंत तेनेखोलिकाढिनेतेनोआशरोकरवोनेतेनीपासेथी ज्ञानपामिने निरखासनिकथईनेदेहछतेपोतानाआत्मानामोक्षनोनिश्चयकरिलेवो॥पणतेवातमांगाफलाईराखेनहिंतेजबुद्धिवालोछे॥अनेतेनेअंतसमोआवशेत्यारेदेहनेमुकिनेभागवतितनुंयेकरिनेभगवानना धामनेपामशे॥ तेकोईरांकहोयनेतेप्रगटभगवानने भगवानना संतनोआशरो करेनेआज्ञापाले॥ तोतेनुंपणसाक्षात्कारकल्याणथायछे॥अनेराजाहोयतेनेपणप्रगटभगवानने तेनासंतमले॥ने तेनिआज्ञापाले त्यारेतेराजानुंपणकल्याणथाय॥ अनेनिचवरणहोयनेतेने जोप्रगट भगवाननेसंतमलेनेतेनावचनमांवरतेतो तेनोपणसाक्षात्कारमोक्षथायछे॥ माटेउचनिचनोकांईमेलनथि॥केमकेवांदरापशुजातिनेसर्वेथिनगारिजातकेहेवाय॥नेकोईनेवांदरो कह्यो होयतो तेनेवसमुंलागे ॥पणजोरघुनाथजिनासंबंधनेवांदरापाम्यां तो तेसर्वेनुंकल्याणथयुं॥नेतेनाचरित्रनेकेटलाकगायछे॥अनेहनुमानजिनेपण गामोगामपुजेछेतेप्रगटभगवानना संबंधनोप्रताप॥अनेकृष्णअवतारमां॥रबारिभरवाड॥छासनांवेचनारां॥ तेनेजो श्रीकृष्णभगवाननो संबंधथयो तोते भगवानना धामनेपामिगयां॥अनेपंडितपुराणिसर्वेतेनागुणगायछे॥अनेकथावांचवानो आरंभकरेछे॥त्यारेपणएमकहेछे जेगोपिजनवल्लभायनमः॥अनेश्रीकृष्णनासंबंधनेपाम्याजे वृंदावननिवृक्षवेलितेनेपणपरमपदनांअधिकारिकह्यांछे॥माटेजेनेप्रत्यक्षभगवानने भगवानना संतनोसंबंधथायछे॥तेनाभा

ग्यनोपार आवे एमनथि ॥ अने जे आलोक निमोटप्य छे । ते तो सर्वे नासवंत छे । ने मिथ्या छे ॥ अने राजा होके रांक होयपण
जेने प्रत्यक्ष भगवानने संतनो संबंध नथि थयो ॥ तो ते सर्वे कालना कोलिया छे ॥ नेयमपुरिने चोरासिमां भटकशे ॥ के
मके आ लोकनिमोटप्य तथा आ लोकनां पदार्थ तथा देह धन्यमाल ए सर्वेने काल खाई जशे ॥ माटे नासवंत वस्तुनि वा-
सनानो त्याग करिने अविनासि एवो जे पोतानो आत्मा ॥ तेनाकरवसारु जे जे जतन करवुं ते ज एक साचो लाभ छे ॥ अने ते
लाभ कोई काले नाशपामतो नथि ॥ माटे ते लाभ आजतमने आ समामां सर्वेने प्राप्त थयो छे । ते तमारा लाभना महिमा
ने कोई ब्रह्मादिक पण कहेवाने समरथ नथि ॥ अने आ लोकमां दिकरादिकरियो परणाववासारु केटलाक खरच क
रेछे ॥ तथा माबाप मरि जाय ते नेवांसे पण केटलाक खरच करे छे ॥ अने लोक निमोटप्यसारु केटलाक नातो जमाडे छे
॥ पण ते सर्वे नासवंत छे ॥ ने तेनुं फल आलोकमां मोटप्य तथा किरति यथे पण तेणे करिने आत्मानुं कांई रुडुं थतुं नथि
॥ अने आत्मानु रुडुं तो प्रगट भगवान के भगवानमां एकांतिक विषयना त्यागि संत ते निसेवामे तेने सतसंग करिने था
य छे माटे तमारे आ समे महा अविनासि लाभ लेवानो समो मल्यो छे ॥ ते सावधान थईने ते लाभ लेवो ने काल कर्म मा-
यानो भय राखवो नहिं ॥ अने तमे सेवाने सतसंग करशो तो तमारां दरशने करिने केई क बिजाजिवोनां कल्याण थ-
शे ॥ एवो प्रत्यक्ष भगवानने भगवान नासंतनि सेवाने सतसंगनो प्रताप छे ॥ माटे प्रगट भगवानने भगवानना एकांति
क पंच विषयना त्यागि संत तेनि सेवाने तेनो सतसंग मले त्यारे तो पोतानु अति मोटुं भाग्य मानवुं ॥ ॥ इति श्रीमुख
सिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ॥ ॥ संवत १९ ओगणिशे ॥ १६ ॥ शोलना भाद
रवा वदि ॥ ७ ॥ सातमने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीटाणा मध्ये ॥ सोनि गोविंदने घेर उत्तरादे बार
ओरडानि ओसरिमां ढोलिया उपर गादि तकिया नखाविने विराजमान थया हता ने सर्वे जरियानिवस्त्र धारण कर्यां
हतां ॥ जाईने गुलाबना पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगने विषे धारण कर्यां हतां ॥ ने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो

हतो।। नेपोताना मुख्या विंदनि आगल साधु तथा घणा कहरि भक्तनि सभा भराई नेबेठि हति।। पछे महाराजश्रीहरिकृ-
ष्णकृपा करिने बोल्या जेआजिवने अनादिनु मायानुं बंधन छे।। नेतेमज वैराज नामेजे ईश्वर तेनेपण मायानि उपाधिवल-
गि छे।। तेमां जिवने केवि रिते वलगि छे।। नेवैराजने केवि रितेवलगि छे।। तेने कहे छे।। जे स्थुल सूक्ष्म नेकारणरूपे।। जि-
वनेवलगि छे।। अनेवैराट सूत्रात्मा नेअव्याकृतरूपे ईश्वरने माया वलगि छे।। तेजेम स्थूल शरिर देखाय छे तेमज स्थूलनि-
मां हे सूक्ष्म शरीर स्थूल जेवडुज मूर्त्तिमान रह्युं छे।। अनेसूक्ष्मशरिरमां कारण शरिर तेपण मूर्त्तिमान रह्यु छे।। अनेजेम स्थूल
शरिर देखाय छे।। तेम सूक्ष्मनेकारण देखातां नथि।। पण स्थूल शरिरकरतां सूक्ष्म शरिरमां कोटिघणु बळ वधारे छे।। केमके
स्थूल शरिर तो अनंतवद लाई जाय छे।। नेसूक्ष्म तो एकनु एकरहे छे।। अने तेनुं स्वप्नमां मूर्त्तिमान देखाय छे।। अने स्थूल
सूक्ष्मनेकारण।। एत्रण शरिर रूपे अविद्या माया थई छे।। तेमां स्थूल शरिरकरतां सूक्ष्म शरिरनो पास अतिशे बलवान छे।।
अने तेथकि कारण शरिरनो पास तेतो अनंतकोटिघणो बलवान छे।। नेतेपास वज्रसार जेवो छे।। अनेअज्ञानमय छे अने
विप्रितभावना थकि बने लो छे।। एवो जे स्थूलसूक्ष्म नेकारणरूपि पास।। तेमां जिव महाकष्ट ने पामे छे।। अनेजिवात्मा
तो अछेद अभेद अविनासि सुखरूप सत्तारूप एवो अखंड छे।। तोपण पोताना अज्ञाने करिने जडरूप नेदुःखरूप नेनास
वंत एवो जे देह तेना भेगो जन्ममृत्युने पामे छे।। नेमहादुःखनेभोगवे छे।। अनेते दुःखथकि जिव पोतानि मेले मुकावाने स
मर्थनथि।। माटेए अविद्या मायाथि परएवा।। अनेजड नेचैतन बेनाआधारएवा जे परब्रह्म परमात्मा भगवान नेभगवानना संत
।।तेज पोते जिवो उपर कृपा करिने मनुष्यरूपे जिवोनां कल्याण करवाने अर्थे प्रथ्वीने विषे।। प्रगट थईने जिवने मले।। नेतेप्रग
ट भगवान के तेना संत।। तेआत्मा परमात्माना स्वरूपनु ज्ञान करावे तथा जिवने बहार दृष्टिये करिने देहमां व्रतियो जोडाई
गई छे।। तेने चोविस तत्व देहमां छे।। तेनुं ज्ञान कराविने तेथि जिवने जुदो पाडे छे।। तेचोविस कियां।। तो पांच ज्ञानइंद्रियो।।
श्रोत्र त्वचा चक्षु रसना नेघ्राण।। नेपांच कर्मइंद्रियो।। वाक् पाणि पाद वायु नेउपस्थ।। अनेपांच भूत।। पृथ्वि जल तेज वायु।।

आकाशअनेपंचविषय।।शब्द,स्पर्श,रूपरसगंध।।नेचारअंतःकरण।।मनबुद्धिचितनेअहंकार।।एविरितेजेमायानांचोविस तत्वतेजूडछे।।माटेतेनुंयथार्थजेमछेतेमज्ञानकरावे।।तेकेविरितेज्ञानकरावे।।तोप्रथमनिरबिजसांख्येकरिनेआत्मनिष्ठा द्रढकरावे।।ते निरबिजसांख्य।।एटलेएककुंजिवात्मानुंज्ञानपणतेमादिव्यमूर्तिएवाजेपरमात्मापरब्रह्मभगवानतेनुं ज्ञाननहि।।माटेनिरबिजअनेनिरबिजसांख्यनेज्ञानेकरिने।।मायानाआकारजेनामरूपतेनोनिषेधकरिनेपछेनिरवा सनिकथयोजेआत्मातेनेनिरबिजयोगनुंज्ञानकरावेछे।।निरबिजयोगएटलेशुं।।तोदिव्यमूर्त्तिएवाजेपरमात्मातेनाअं गनोप्रकाश।।जेनिरगुणनिराकारएकरसचैतन्यएवुंजेब्रह्मतेनेविषेजियात्मानेएकताकरावेछे।।कहेतांआत्माजे तेब्रह्मरूपछे।।निरगुणछे।।सर्वव्यापकछे।।पुरणछे।।सुखरूपछे।।आनंदरूपछे।।अक्षरछे।।एविरितेनिरबिजयोगनेज्ञा नेकरिने।।आत्मानेब्रह्मनाभावनेपमाडेछे।।अनेजेनेप्रत्यक्षभगवानकेभगवानननानिरवासनिकसंततेनामुखथकिनिर बिजसांख्यने।।निरबिजयोगनुंज्ञानसिद्धथयुहोयतेआत्माजेतेपांचविषयनोत्यागकरिनेनिरवासनिकथायनेअखंडब्र ह्मस्थितिमांवरते।।कहेतांतेनेसुखदुःखमानअपमानहाण्यवृद्धि।।तेनेविषेसमभावथईजायपणसुखदुःखादिकेकरिने हरषशोकनेपामेनहि।।अनेएवोब्रह्मभावनेपाम्योजेआत्मातेनेपछे।।सबिजएवुंजेसांख्यतेनुंज्ञानकरावे।।कहेतांएब्रह्म नाप्रकाशकनेदिव्यमूर्त्तिनेब्रह्मनेविषेअखंडरह्याछे।।एवाजेपरब्रह्मपरमात्मा।।करतुमकरतुने।।अन्यथाकरतुं।।समरथभ गवानतेनेप्रत्यक्षदेखाडे।।अनेतेप्रत्यक्षभगवानननास्वरूपनोउत्तमनिरविकल्पनिश्चयकरावेनेपछेतेनेसबिजयोगनेज्ञा नेकरिनेप्रत्यक्षपरमात्मानिमूर्तिनेविषेनवधाभक्तियेकरिनेजोडावे।।एविरितेजिवनेप्रत्यक्षभगवानकेभगवाननानिर- वासनिकसंतमलेनेतेनोजिवनिरमानिथईनेआसरोकरेनेतेनिआज्ञामांवरतेपछेभगवाननेभगवानननासंततेनाउ- परकृपाकरिने।।तेनेनिरबिजसांख्यनेनिरबिजयोग।।तथासबिजसांख्यनेसबिजयोगएचारप्रकारनुंज्ञानकरावे।। त्यारेतेजिवनेत्रणशरिररूपजेअविद्यामायानोपासअनादिकालनोछेतेटलिजायछे।।नेतेनेब्रह्ममयतनुंबंधायछे

॥पछे तेमुक्तने एम भासे छे जे मारे विषे माया कोईकाले हतिजनहिं॥एवो अखंडानंद अद्भुत आनंद नेपामे छे॥नेभगवानना साधर्मपणाने पामिने स्वतन्त्र थायछे॥कहेतां भगवानजेम कालकर्ममायायेरहित छे॥ तेमतेभक्तपण कालकर्ममायायेरहित थायछे॥माटेएवोजे भगवानने भगवानना संतनो संबंधनो मोटो लाभ तेने जाणिने तेनिआगलनिरमानिपणेदिन-आधिनरहिनेसेवानेसमागम करवो॥तोतेनेएवा अलौकिकसुखनि प्राप्तिथायछे।पणमानतथा कोईप्रकारनुंअभिमानराखिने सतसंगकरे तेने तेसुखनि प्राप्ति थतिनथि॥ ॥इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥

॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत ।१९।ओगणिशे।१६।शोलना भादरवा वदि।८॥अष्टमीनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगामश्री वरतलमध्ये भटपरजाराम लाल जिने घेरउतरादे बारओरडानिओसरीमांगादितकियानरवाधिनेढोलियाउपरबिराजमानथयाहता॥अनेसर्वेस्वेतवस्त्रधारणकर्यांहतां॥नेमस्तकेसोनेरिकसुंबलपाघबांधिहतिनेसर्वेअंगनेविषेपुष्पनांआभूषणधारणकर्यांहतां।निपोतानामुखारविंदनिआगलसाधुतथाघणाकहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठिहतिपछेमहाराजहरिकृष्णभगवानबोल्याजेसर्वेसुरतदेईनेसोभलोएकवारताकरियेछियेजेमकोईकनेमहारोगथयोहोयअनेतेकोईरितेटलतोनहोयपछेतेनेकोईभारेवैदमलेनेतेवैदओषधखवरावेनेतेनिकरिपालवानिकहे तेप्रमाणे करिपालेतोतेनोरोगमटिजायनेतेमहासुखियोथाय॥अने ओषधखवाय।पणवैदनाकह्याप्रमाणे करिपाले नहि।तो तेनो रोगमटेनहि ने उलटोविकारथाय।तेनिश्चेमरे॥केमकेएकतो रोगहतो ने बिजुं करिनपालि।ते विसफुटकथाय॥माटेओषधखायने तेनि करिनपाले तेनो रोगमटे नहि॥तेम सर्वेजिवनेपंचविषयनिवासनाये करिनेजन्ममृत्युरूपिमहारोग थयो छे॥तेरोग कोईरितेटलेएमनथि॥नेकोईदेवब्रह्मादिक॥प्रकृतिनाकार्य मांहेनो एरोग नेटालवाने समरथनथि॥अनेएरोगनेटालवासारुं जे जेवैदरूपिगुरुमले छे॥तेसर्वेधन्यधुता तथाकामिलोभिस्वादियामले छे॥तेकोईएरोगटालवानेसमरथनथि॥केमके तेनेपोतानो रोगटल्यो नथि॥तेबिजानोरोगकेमकाढिशके।अनेएवारोगियावैदनेओषधरूपउपदेशकरिने तोउलटोरोग वृद्धिपामेछे॥केमके पंचविषयनिवासनारूपिरोगछे॥ते

जेजेआलोकमांगुरुमलेछे।। तेनेपोतानीवासनाटलिनहोय।।तेबिजानिवासनाशुंटाले।।मारेतेथकितोवासनाउलटिवृद्धिपा-
मेछे।। तेमाटेएरोगनेटालवानेतोमायाथिपरएवाजेपरमात्मातेजएकसमरथछे।। कांतेपरमात्माना ज्ञानने पामिनेपंचविष
यनोत्यागकरिनेनिरवासनिकथयाहोय।।एवाजेपरमात्मानासंत।।तेएरोगटाळवानेसमरथछे।।पणजेस्त्रिधन्यना ला-
लचुहोय।।तथासारासारारस।।घिगोळदूधदहिंखांडसाकर।।तेनेखावाना लालचुहोयएवागुरुथकिपंचविषयनिवास
नारूपिरोगतेकोईकालेकोईनोटलेनहिं।। अनेसतगुरुएवाजेप्रगटभगवान्केभगवाननासंततेएरोगनेटाळवानेसमर
थछे।।तेकेविरितेरोगटालेछे।।तोजेमवैदऔषधआपिनेकरिपळावेछे।।अनेतेवैदनाकह्याप्रमाणेकरिपालेतोतेनेमोम
हारोगटलेछे।।नेतेजिवसुखनेपामेछे।।तेमप्रत्यक्षभगवान।। कांतेभगवाननानिरवासनिकसंततेमलेनेतेनोआसरो
करिनेतेभगवाननेसंततेजेजेआज्ञाबतावेतेप्रमाणेवर्तवुं।। तेरूपिकरिपाले।।अनेभगवाननिनवप्रकारनिभक्तिरूपिऔ
षधखाय।।कहेतांइंद्रियोनेनियममांराखिनेपंचविषयनोत्यागकरिनेभगवाननिनवप्रकारनिभक्तिकरे।। तोतेनो
जन्ममृत्युरूपिजेमहारोगतेटलिजायछे।।नेतेजिवब्रह्मरूपथईनेभगवाननाअक्षरधामनेपामेछे।।अनेभगवाननिभ
क्तिरूपिऔषधखाय।।पणविषयनात्यागरूपिकरिनपाले।।तथाचोरिछिनालिदारूमाटिगांजोतुमाकुआदिकजेअधर्म
कर्म।।तेनोत्यागनकरे।।तोतेनोजन्ममृत्युरूपिरोगकोईकालेटळेनहि।। नेसामुंरोगवृद्धिपामेछे।जेमरोगिऔषधखा
यनेकरिनपालेतेनोरोगवृद्धिपामेछे।।तेमभगवाननिभक्तिधर्मेरहितकरेतेनेजन्ममृत्युरूपिरोगवृद्धिपामेछे।।अनेतेधर्मसहितभगवाननिभक्तिकरेतेनो
जन्ममृत्युरूपिटलेछे।।मारेजेनेजन्ममृत्युरूपिरोगनेटालिनेमहासुखियाथवुंहोयतेनेप्रत्यक्षअमारोकांअमारानिरवासनिसंततेनोदृढआसरो
करिनेसर्वेप्रकारेअधर्मनोत्यागकरिनेमनक्रमवचनेआज्ञाप्रमाणेवर्तवुं।।अनेज्यारेअधर्मनोत्यागकरिनेधर्मनेमारगे।।चालेछे
त्यारेतेआत्मानिसतवासनारूपिछे।।अनेअसत्यवासनाजेपांचविषयनारोगतेटलिजायछे।।नेतेनेअमारेविषेने।।
अमारानिरवासनिकसंततेनेविषेअतिशेप्रितिथायछे।।अनेमाराविनानेमारासंतविनाबिजामाईथिपंचविषयना

पदार्थमां वैराग्य थाय छे ॥ माटे जेने जन्ममृत्युरुपि रोग मटाडिने महासुखियाथवुं होय ॥ तेने धर्मे सहित मारि भक्तिकरवि ॥ ने मारा निरवासनिक संतनि सेवा ने समागम करवो ॥ अने धर्मे सहित भक्ति सेवा ने समागम करे छे ॥ तेना भाग्य नो पार नथि ॥ अने ते तो देह ने मुकिने भगवानना धामने पामशे ॥ अने जेने धर्म पालवामां कसर हशे ॥ के अमारा अथवा अमारा निरवासनिक साधुना वचनमां विश्वास जेने नहि होय तेने तो घणि जरवो टजशे ॥ ॥ इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः ॥ ॥ संवत् १९ ओगणिशे ॥ १६ ॥ शोलना भादरवा वदि ॥ १ ॥ नवमिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीवरतालमध्ये ॥ भटगवरिशंकर लखमिरामने घेर दिवसना बारक लाकवागते जमवा पधार्या हता ॥ ने त्यां उतरादे बार ओरडानि ओसरिमां खुरसि उपर विराजमान थया हता ॥ अने सर्वे श्वेत कंबल जरियानि वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे पुष्पना हार पहेर्या हता ॥ ने हाथने विषे बाजुबंधने गजरा धारण कर्या हता ॥ ने पाघमां तोरा लटकता हता ॥ ने कान उपर गुलाबना पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता ॥ ने केकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ ने पोताना मुखारविंदनि आगल साधु तथा घणा क हरिभक्तनि सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे भटहरिजियेहाथजोडिने कह्युं जे हे महाराज ॥ धर्म अर्थ काम ने मोक्ष तेनुं शुं रुप छे ॥ एक तो ए प्रश्न छे ॥ अने बिजुं प्रश्न ए छे जे जिवथकि जिवमुक्त थाय छे ॥ एम कोई क शास्त्रमां कह्युं छे ॥ तेनुं केम हशे ॥ अने त्रिजुं प्रश्न जे भगवान ख्व रस के विरीते भोगवे छे ॥ ते सर्वे क्रपा करिने कहो ॥ पछि श्रीहरिकृष्ण महाप्रभुजि बोल्या जे सांभलो तेनो उत्तर करिये छिये ॥ जे वरणाश्रमनो धर्म बराबर शास्त्रप्रमाणे पालवो ॥ तेने धर्म कहिये ॥ अने ते धर्म पालनाराने धनादिक पदार्थनि प्राप्ति थाय छे ॥ तेने अर्थ कहिये ॥ अने ते पदार्थने देह करिने भोगववा ॥ तेने काम कहिये अने धर्म अर्थ ने कामे करिने माईक पंच विषयने भोगववानि जे वासना तेनो त्याग करिने प्रत्यक्ष भगवाननि भक्ति करवि ॥ तेने मोक्ष कहिये ॥ अने हवे बिजा प्रश्ननो उत्तर करिये छिये ॥ जे जिवथकि जिवमुक्त केम थाय छे ॥ तो जे माईक पंच विषयनि वासनाए करिने जन्ममृत्युने पामे छे ॥ तेने जिव कहिये ते जिवने भग

यान के भगवान ना निरवासनिक संत मले ॥ ने तेनो आसरो करिने ते थकि ज्ञानने पामिने पंच विषयनि वासना मुकिने भगवाननि भ-
क्ति करे ॥ तो ते जिव थकि मुक्त थाय छे ॥ कहे तां जिव हतो ते मुक्त थयो माटे माईक पंचविषय भोगववानि जेने वासना ते जिव
अने जेने सत संगी करिने वासना टलि ॥ ते ज जिव थकि जिवमुक्त थयो कहे तां जिवरूपि जे वासना ते थकि जिव मुकायो
॥ त्यारे जिव हतो ते मुक्त थयो ॥ ए नो ए ज उत्तर छे ॥ अने हवे त्रिजा प्रश्ननो उत्तर एम छे ॥ जे भगवान के थिरिते खटरस भोग
वे छे ॥ तो भगवान सर्वना कारण छे ॥ ने सर्वना करता छे ॥ ने सर्वना आधार छे ॥ ने सर्वे विश्वमा व्यापिने रह्या छे ॥ अने भगवानने
विषे सर्व विश्व रह्युं छे ॥ माटे तेणे करिने भगवानने सर्व रसना भुक्ता कह्या छे ॥ पण भगवान तो सदाय सर्व थि असंगि छे ने नि-
रलेप छे ॥ ने निरविकारि छे ॥ अने भगवान तो पोते पोताने स्फुरवे करिने स्फुरिया छे ॥ अने ते भगवान ज्यारे कृपा करिने पृथ्वि
उपर प्रगट थाय छे त्यारे अनंत जिवोने पोताना संबंधने पमाडिने तेने ज्ञान आपिने पंचविषयनि वासना मुकाविने ब्रह्मरूप
करिने पोताना धामने पमाडे छे ॥ माटे ते अतिशे दुर्लभ समो ते आ ज तमारे सर्वेने आव्यो छे ॥ ते तमारा भाग्यनो पार नथि ॥
ते सारु सावधान थईने अधर्मनो त्याग करिने अमारि आज्ञा प्रमाणे वरतवुं ॥ अने आज्ञा प्रमाणे वरतशो तो काल कर्म मायाने
भय ते मटि जशे ॥ अने देह मुकिने ब्रह्मरूप थईने अमारुं धाम जे अक्षर तेने पामशो ॥ माटे धर्मे सहित अमारि भक्ति करशो ॥
तेना भाग्यनो पार नथि ॥ ॥ इति श्रीमुख्यसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥

॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत् १९ओगणिशो १६शोलनाकारतकशुदि १२द्वादशिनेदिवसम-
हाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्रीरोईशालामध्ये भगवानजिलक्ष्मिरामने घेरदक्षणादे बारओरडानिओसरिमांविरा-
राजमानथयाहता ने सर्वेजरियानिवस्त्र धारण कर्यांहतां अने पुष्पनांआभूषण सर्वेअंगमां धारण कर्यांहतां॥ अनेपोताना
मुखारविंदनिआगल साधु तथा देशदेशनाहरिभक्तनि सभा भराईनेबेठिहति॥ पछे महाप्रभुजी कृपाकरिनेबोल्याजे॥ जेविजि
वने॥परोक्ष भगवान नेभगवानना संतने विषेप्रतितिछे ते पिजो प्रगट भगवानने भगवानना संतनेविषेप्रतितिआवेतो
तेजिवनुंसाक्षात्कार कल्याणथईजायपण तेवारताजाणविघणिजअटपटिछे॥ केमकेसंस्कारविना तेवातसमजा-
तिनथि॥एतोज्यारेअनेकजन्मनाशुभसंस्कारहोय त्यारेज तेवातजाण्यामांआवेछे॥ तेशुभसंस्कारते शुं॥तो पूर्वज
न्मनेविषे भगवान तथा भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागिसंत तेनासंबंधेकरिनेजे कांई सेवा स्मरण नियमधर्म
तथा तेथाकिज्ञान पाम्याहोय तेनेजशुभसंस्कार कहे छे॥ पणशुभसंस्कारविनापामरके विषयिजिवने प्रत्यक्ष भगवान
ने भगवानना संतना वचन समज्यामांआवतोनथि॥केमके एतो मायापरशब्दछे॥ तेपुणे कोई कालेसांभल्याजनथि॥
जेमकोईकपरदेशथि मनुष्यआवेनेतेना देशनिबोलिबोले॥ तोतेबोलिने तेनादेशनाहोयतेसमजे॥ पणजेणे कोईदहा
डेतेबोलिसांभलिन होय तेनेकांईसमजायनहि॥ तेमअनंतजन्मनाशुभसंस्कारि मुमुक्षु होय तेनेजप्रत्यक्षभगवानने स
नासंतना वचनसमजायछे॥नेतेनेजतेनि प्रतितिआवेछे॥अनेएवामुमुक्षुनेज्यारे प्रतितिआवेछे॥ त्यारे तेना अंतर-
मांअतिशे आनंद प्रगटेछे॥अनेज्ञानरूपिप्रकाशतेनेथायछे॥नेतेनेमायानो अंधकारटलिजायछे॥ पछे तेने भगवाननि
आज्ञामांकोईरितेफेरपडतोनथि॥ अनेएवा भक्तने आठेपहोर भगवाननी मूर्त्तिअखंडअंतरमांस्फुर्या करे छे॥ कहेता
प्रत्यक्षभगवानने अखंड संभारेछे॥ अने ते भक्तनेअंतसमो थाय छे त्यारे॥ तेनेजेवाप्रगट भगवान्ने भगवानना सं
तमल्याछे तेवानेतेवाजसाक्षात्कार आविनेउभा रहे छे॥ नेपोतानास्वरूपमां जोडा विने भागवतितनुं धरावि नेपोता

नाअक्षरधामनेपमाडे छे।। माटेप्रत्यक्षभगवाननोनिश्चयराखिने तेनावचनमांजेजेवरते छे।। तेनोज मोक्षथाय छे।।अनेपूर्वे
रामाअवतारमांवृंदाराओ तथा घोराजाभिल तथा कृष्णाअवतारमां गोपिगोवाळपांडुवउद्धवआदिक भक्तजोभगवा-
ननि आज्ञाप्रमाणेवरत्या तो ते सर्वेमोक्षने पामिगया माटे प्रत्यक्षभगवाननिजेआज्ञापाळविएज मोक्षपामवानुंमोटुं
साधनछे।। तेश्रीकृष्णभगवानेअर्जुननेकह्युंछे।।जे सर्वधरमान्परितज्य।। मामेकंशरणंव्रज।।अहंत्वांसर्वपापेभ्यो-
मोक्षयिष्यामिमाशुच।।१।।एश्लोकनो एमअर्थ छे जे सर्वेअविद्यामयधर्मनो त्याग करिने मारांशरणजे तेनेपाम्यनेहुं-
जेतेतुंजे तेनेसर्व पापथकिमुकाविश तुंशोक करिशमा।। माटेप्रत्यक्ष भगवाननावचन मां वरतवुंएजमोक्षनो अचळसिद्धांतछे।।अनेजेनेप्रत्यक्षभगवाननो आशरोनथिनेतेप्रत्यक्षनावचनमांप्रतितिजेनेनथिनेतेनीजेउलटो द्रोहकरे
छे।।अनेपरोक्षभगवाननेअर्थेशास्त्रप्रमाणेधर्मपाळे छे।। तथाजपतपव्रतदानादिक अनंतसाधनकरे छे तोपण ते
साधनेकरिनेप्रत्यक्षभगवाननेभगवाननासंतविनाकल्याणकोई कालेथतुंनथि।। केमके परोक्षपणेजेजेसाधन
करे छे।।तेसाधननामानेकरिनेप्रत्यक्षभगवाननेभगवाननासंतनेंओळखाय तोउलटिमलिनमति थईजायछे।।
तेणेकरिनेप्रगटभगवाननेसंतनोद्रोहकरे छे तेणेकरिनेजपतपव्रतादिकसाधननुंफळ तत्काळनाशपामीजाय छे।।
जेम दुधनेसाकरघणुंसारुं छे पण ते मांजो सर्पनिलाळपडे तोतेसर्वे विखरूपथइजाय तेमसाधनतो सर्वेस्वरूप छे।।
पण तेनामानेकरिनेप्रगटभगवाननेसंतओळखायनेतेनोद्रोहथाय तेरूप सर्पनिलाळ तेणे करिनेउलटुंभुंडुंथायछे।।
अनेजोसाधन करिनेकल्याणथतुंहोयतो पूर्वेऋषिघणायपरोक्षभगवानसारुयज्ञकरताहता पण प्रत्यक्ष श्रीकृष्णनेनओ
ळख्या तो तेदुरभागिकहेवाया।।अनेऋषिपत्नियो तेकांईसमजतीनहोति।।पणतेणेजोप्रगटश्रीकृष्णने ओळख्या तो
तेनासाक्षात्कारमोक्षथयानेपरमपदनेपामिगई।।अनेतेनाकुळनिस्त्रियोनीसेवाऋषिहजुसुधिकरे छे।। माटेप्रगटभ
गवाननेभगवाननानिरवासनिकसंतमळ्याविना कोईकाळेकल्याणथायनहिं।।एसिद्धांतवारता छे।।तेसारुंज

पतपआदिकसाधनकरवां।।पण प्रगटभगवानने भगवानना संतकानेसंभलायतो तत्काल तेनिपासेजवुंने तेनोसमा
गमकरिने तेनोआश्रयकरवो।।पणपछिपरोक्षनेबांधिरहेवुनहीं।।अनेजेपरोक्षभक्तिकरेछे।।तेभगवान्‌तोएनाएजछे।।
पणप्रगटविनाज्ञानकोणआपे।।अनेज्ञानविनामोक्षथायनहिं।।माटेप्रगटथकिजमोक्षथायछे।।तेसारुंआजतमारांभाग्य
नोपारनथि।।एटलिवारताकरिनेमहाराजउतारानाओरडामांपधार्या।। ।।इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः।। ।।
श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ।।संवत१९ओगणिशों१६शोलनाकार्तकशुदि१३तेरसनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृ
ष्णभगवानगामश्रीरोईशालामध्ये।।आ ज्ञा भगवानजि लक्ष्मिरामनेघेरदक्षणादेबारओरडानिओसरिमांढोलियाउपरगा
दितकियानरवाविनेविराजमानथयाहता।।अनेधोलुंअंगरखुंनेसुरवालपहेर्योहतो।।नेमस्तकेकसुंबलफेंटोबांध्यो
हतो।।अनेसर्वेअंगमांपुष्पनाआभूषणधारणकर्यांहता।।अनपोतानामुखारविंदनिआगलसाधुतथादेशदेशनाहरिभ-
क्तनिसभामराईनेबेठि।।पछिमहाप्रभुजिसाधुप्रत्येबोल्याजेसांभलोएकवारताकरियेछे।।अनेतेवातसमजायतोअंत
रमांप्रकाशथाय।।एविवातछेतेनेस्मरतदेईनेसांभलजोजेमहामायानेविषेउत्पन्नथयाएवाजेजिवईश्वरतेमायानेविषेतार-
तम्यगतिययकरिनेरह्याछे।।तेअधोगतिकहेवायछेनेतेनेबद्धकहेछे।।तेबद्धनुंशुंरुपछे।।तोजेरागात्मकविषयनिक्रिया
तेनेकरेछे।।नेतेक्रियाथकिबंधाणाछे।।एवाजेबद्धपुरुषतेपुरुषनेजेमोक्षनेमारगेचालयुं।।तेउरधगतिनेमार्गेचाल्योकहेवाय-
छे।।तेउरधगतितेशुं।।तोधर्मज्ञानवेराग्यनेमहात्मेसहितभगवाननिभक्तिएचारसाधननेपुरांकरेनेतेचारेथकिजेतत्वनिकलेने
तेतत्वनुंअतिदृढसाक्षात्कारज्ञानपोतानेथवुंएजमोक्षछे।।हवेतेमोक्षथवानुंकारणकहेछे।।तेगितामांकह्युंछेजे।।विषया
विनिवर्ततेनिराहारस्पदेहिनः।।रसवर्जंरसोप्यस्यपरंद्रष्ट्वानिवर्तते।।एश्लोकमांएमकह्युंछेजेपरमात्मानेसाक्षात्कार
जाणेत्यारेविषयथकिमुक्तथायछे।।नेतेमुक्तथयोएमपणनिश्चेकहेवायछे।।हवेतेपरमात्मानुंज्ञानकेमथाय।।तेनिकहे
छेकेतेपरमात्माकेवाछे।।तोजिवईश्वरनेमहतत्वादिक।।चोविसतत्वतथाप्रधानपुरुषनेप्रकृतिपुरुषएसर्वेनेपोताना

स्वरूपना प्रकाशरूपजेनिरगुण ब्रह्म कहे तां अमल अचलरूप जे ज्ञान तेने पुष्पादिक मांहे लो जे पामे छे कहे तां जे सर्व कारणनुं ज्ञान दृढ करे छे ॥ ते जउर्द्ध गतिने सर्वोपरि पामि रह्यो कहेवाय छे ॥ हवे उर्द्ध गतिने पाम्यो ते शा सिद्धांतने समजिने पाम्यो छे। ते जे सर्वोपरि अक्षरातित सर्वकारण स्वरूप जे भगवान तेना स्वरूपनो जे अर्थ तेने जाणवे करिने पाम्यो छे। अने ते भगवानना स्वरूपने जाणवारूप जे अर्थ ते वाणिने पारपर ह्यो छे ॥ ने वाणि ये करिने बोलाय छे केम के वाणिमां अर्थ रह्यो छे ने अर्थमां वाणि रहि छे ॥ ते अर्थने कहे छे ॥ अर्थरूप वाणि छे ॥ ते वाणि ये करिने सिद्ध स्वरूपनुं ज्ञान करावे छे ॥ हवे तेना कारणशब्द प्रथम कहे छे के ॥ कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुं ॥ समरथ एवा जे भगवान ते पोतानि जड ने चैतन्य ॥ एवि जे बे प्रकृति यो तेणे करिने पोते अक्षरने पार रह्या थका पोतानि सत्ताये करिने आ सर्व विश्वने धरि रह्या छे। ने सर्व जे विश्व छे ते पोताने विषे राखेलुं छे। वे पोते विश्वथकि न्यारा छे हवे न्यारा एवा जे परमात्मा ते पोतेने पोताना स्वरूपने जाणनारा एवा जे अक्षर ने अक्षरना एकदेश थकि थयो एवो जे पुरुष ते पुरुषनुं नाम मूळपुरुष कहेवाय छे ते पुरुष जे ते समष्टिने व्यष्टि ए विबे प्रकारनि सृष्टि यहे करिने सर्व जगतनि उत्पत्ति स्थितिने नाश करे छे। ते पुरुष पोते पोतानि माया संगाथे उत्पत्ति स्थितिने नास सपलीला करे छे ॥ अने ते पुरुषने शास्त्रने विषे अनादि पुरुष कहे छे ने ते पुरुषने क्षर कहे छे ने एथकि परने अतिसूक्ष्म ने पुरुषने विषे व्यतिरेक थकु अनवय एवुं जे अक्षर ते पुरुषनुं कारण छे। ने जिवन छे ने ते पुरुषने विषे सर्व शक्तियो ने ऐश्वर्य ने बल ते सर्वेनुं अक्षर प्रकाशक छे ॥ ने पोते जे अक्षर छे तेने विषे बल ऐश्वर्य ने अनंत स्वरूप गुण ए कांइ पुरुषने प्रकाशवावडे करिने लेश ओछुं थतुं नथि ॥ एवुं जे अक्षर तेनुं स्वरूप बे प्रकारनुं छे ॥ तेमां एक तो व्याप्य ने बिजुं व्यापक छे ॥ तेमां व्याप्य जे सर्वकारण दिव्यमूर्ति ब्रह्मरस तनुंमय छे ॥ अने बिजुं व्यापक जे ते दिव्यमूर्त्तिना अंगनो प्रकाशरूप छे ने एकरस चैतन्य छे ॥ ए अक्षरनुं कार्य स्वरूप छे ने कार्यकारणे सहित पुरुषने प्रकाशे छे ॥ ते अक्षरनुं अन्वयस्वरूप छे ॥ अने ते कारणरूप अक्षरने पाम्यो एवो जे पुरुष तेने तत्वमसि महावाक्यनो अर्थ सिद्ध थयो केमके ॥ तत्त्वं ने असि ते तत्पदे करिने अक्षरनुं कार्ये सहित कारणस्वरूप ने त्वंपदे करिने मूळप्रकृति पुरुष

रूपजेस्थूलसूक्ष्मनेविराटसूत्रात्मानेअव्याकृतनेउत्पत्तिस्थितिनेप्रलयनेजाग्रतस्वप्नसुखुप्तिनेतेनुंकारणएवुनेतेनेविषेअ-
हंममत्वनुंकरनारुंएवुजेचैतन्य॥तेचैतन्यनुंकारणजेअन्वयअक्षरतेनोआश्रयकरिनेकहेतांतेनागुणनेग्रहणकरिनेपोता
नादोषनेटालवा॥तेपोतानादोषतेकियातोकामलोभस्वादस्नेहनेमानतेनेटालिनेनिष्कामनिरलोभनिरस्वादनिरस्नेहनिरमा
नतेगुणनेद्रढकरिनेपछेजगतनुंकारणजेपुरुषप्रकृतिकालनेमहतत्वादिकचोविसतत्वतेनास्वरूपनेसाक्षात्कारजाण-
वाजेणेकरिनेचोविसतत्वनाबंधनथकिमुकायअनेतत्वथकिमुकायत्यारेतेअन्वयअक्षररूपथयोकहेवाय॥नेतेनेत्वंपदनो
अर्थपुरोथयोजाणवो॥अनेअसिएटलेक्रियाछे॥तेक्रियानुंशुंरूपछे॥तोजगतनिकारणउत्पत्तिकारणस्थितिनेकारणप्रल
यतेनेजाणिनेमायानेशुद्धअक्षरनेविषेलयकरिनेमायानुंद्रष्टापणुंटालिनेजेसर्वात्माजेव्यापकथवुव्यतिरेकब्रह्मजेअना
दिकारणचैतन्यतेनेअविनाशीनेसत्यएममानिनेजगतनेनाशवंतनेमिथ्याएममानेछे॥अनेतेनेविषेवैराग्यनेपामिने
सत्यएवुंजेपोतानुकारणरूपअनादिमूलअक्षरस्वरूपतेनेपामवु॥एअसिपदनोअर्थछे॥अनेएविरित्येउपरकह्याप्रमाणेपो
तानाआत्मानेनिर्दोषकरिनेकहेतांशुद्धब्रह्मरूपथईनेअखंडपरमात्माएवाजेप्रत्यक्षभगवान्तेनेबाह्याभ्यंतरभेदेरहितस
र्वव्यापकसर्वशक्तिमानपरमात्मापरब्रह्मतेनेकारणपणेभजेछे॥तेनेसर्वसिद्धांतएवुंजेवेदनुपूर्णज्ञानतेसिद्धथयुंजाण
वुं॥अनेतेज्ञाननेजेपुरुषपाम्योतेपूरणज्ञाननेपाम्योछे॥अनेजोएकलोआत्मारूपथईनेबेशिरहेनेजगतनाआधारने
अक्षरातितएवाजेपरमात्मातेनुंज्ञानेजेआत्यंतिकज्ञानतथातेनिआज्ञाजेएकांतिकधर्मतेनेजेआत्मनिष्टपुरुषनथि
जाणतोतथानथिपालतो॥तेघणोजअधूरोछेएमजाणवुं॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥
॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत१९ओगणिशे१६शोलनाकारतगशुदि१४चतुरदशीनेदिवसमहा
राजश्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीरोईशालामध्येभक्तओझाभगवानजिलक्ष्मिरामनेघेरदक्षणादेबारओरडानिओसरिमां
आदितकियेयुक्तढोलियाउपरविराजमानथयाहता॥अनेसर्वेजरियानिवस्त्रधारणकर्यांहतां॥नेपुष्पनाहारकंठमां

बोभिरह्याहता ॥ नेभालमांकेवारनिअरचाकरिहतिनेपोतानामुखारविंदनिआगरलसाधुतथावणाकहरिभक्तनिसभा भराईनेवेठिहती ॥ पछेधर्मानंदस्वामियेमहाराजनेहाथजोडिनेएकेप्रश्नपुछ्युं ॥ जेप्रगटभगवानमनुष्यजेवाजणाताहोय ॥ अनेमनुष्यनाजेविक्रियाकरताहोयतेनेकेमओलखायजेआभगवानछे ॥ तेकहो ॥ पछेमहाप्रभुजिबोल्याजेजेनेपूर्वजन्मनेविषेअथवाआजन्मनेविषेसत्पुरुषनोसंगप्राप्तथयोहोयनेतेथकि ॥ अनंतशुभसंस्कारजेनेलाग्याहोयतेनेजप्रगटभगवाननुंस्वरुपओलखायछे ॥ केमकेआलोकमांपणमाईकपदार्थजेद्रव्यहिरामणिओमोतितेनापारखुंपणकोईकविरलाथोडाछे ॥ तोमायापरएवाजेपरमात्मादिव्यमूर्त्तिभगवानतेपोतानुंऐश्वर्यछपाविनेअनंतजिवोनाकल्याणनेअर्थेमनुष्यजेवाथायछे ॥ तेनेअज्ञानिजिवकेमओलखिशके ॥ माटेजेनुंशुभसंस्कारिकरिनेअंतःकर्णशुद्धथयुंछे ॥ तेनेजप्रगटस्वरुपओलखायछे ॥ हवेतेनेओलखवानिरितकहियेछियेजेतेकेविरितेओलखेछे ॥ तोआत्यंतिकज्ञानजेनिपासेहोय ॥ तेज्ञाननेसांभलिनेसाक्षात्कारब्रह्मरुपथईजवायकहेतांअक्षरनासाधर्मपणानेपामिजवाय ॥ तेज्ञाननेसांभलिनेशुभसंस्कारवालाएवाजेमुमुक्षुतेनेमनुष्यमुर्त्तिनेविषेसर्वोपरिपुरुषोत्तमपणानोनिश्चयथायछे ॥ केमकेएवुंज्ञानभगवानबिनाबिजाकोईमनुष्यपासेहोयनहिं ॥ हवेतेज्ञाननेकहेछेकेएभगवाननास्वरुपनुंज्ञानबेप्रकारनुंछे ॥ तेमांएककारणज्ञानछे ॥ नेएककार्यज्ञानछेतेमांजेकारणस्वरुपछे ॥ तेतोअखंडनेपूर्णनेअद्वैतछेनेसदायमायापरछे ॥ अनेतेजेभगवानछेतेनास्वरुपनाज्ञाननेजेपामेछे ॥ तोतेपामनारोजेज्ञानितेमायापरथायछे ॥ अनेमायापरएवोजेमुक्ततेभगवाननेविषेसर्वविश्वनेजुवेछे ॥ नेसर्वविश्वनेविषेभगवाननेजुवेछे ॥ तेकेविरितेजुवेछेतोउत्पत्तिस्थितिनेप्रलयतेप्रनालिकायेजाणेछे ॥ हवेतेज्ञानकहेछे ॥ जेसौनाकारणनेपरात्परएवाजेभगवानतेजेतेउत्पत्तिसमेअक्षरमांप्रवेशकरेछे ॥ त्यारेअक्षररुपभगवानदेखायछे ॥ नेपोतेनथिदेखाता ॥ अनेअक्षररुपभगवानज्यारेपुरुषमांप्रवेशकरेछे ॥ त्यारेपुरुषरुपभगवानदेखायछे ॥ नेत्यारेअक्षरनेपुरुषोत्तमभगवानबेनथिदेखा

तानेएकलोपुरुषजदेखायछे॥अनेतेपुरुषजेतेप्रधानपुरुषनेविषेप्रवेशकरेछे॥त्यारेएकलोप्रधानपुरुषदेखायछे॥अनेपुरुषादिकभगवाननास्वरूपदेखातांनथि॥अनेप्रधानपुरुषरूपभगवानजेतेज्यारेमहतत्वने विषेप्रवेशकरेछे॥त्यारेमहत्तत्वरूपभगवानदेखायछे॥नेप्रधानपुरुषादिक नथिदेखाता॥अनेमहतत्वअहंकारनेविषेप्रवेशकरेछे॥नेअहंकारआकाशनेविषेप्रवेशकरेछे॥त्यारेअहंकारादिककोईदेखातानथि॥नेआकाशएकलोदेखायछे॥अनेआकाशमांवायुप्रवेशकरेछे॥त्यारेवायुएकलोदेखायछे॥नेआकाशादिकनथिदेखाता॥अनेवायुथकिअग्निथायछेनेअग्निथकिजलथायछे॥नेजलथकीपृथ्विथायछे॥अनेपृथ्विथकीअनंतप्रकारनिओषधियोथायछे॥अनेतेओषधियोथकिअनंतकोटिपिंडनेब्रह्मांडथायछे॥एविरितेउत्पतिनिसमाप्तिछे॥एविरिते॥सर्वेनाकारणनेआधारपणेभगवानसर्वविश्वमांरह्याछे॥अनेतेविश्वमांरह्याथका सर्वविश्वनोलयपोतानेविषेकरेछे॥त्यारेभगवाननेविषेविश्वकारणपणेरहेछे॥जेममालानामणकानेविषेदोरोरह्योछे॥अनेदोरानेविषेमणकारह्याछे॥तेमअन्योअन्यभावेकरिनेविश्वमांअंतरयामिपणेभगवानरह्याछे॥अनेभगवानमांविश्वकार्यपणेरह्युंछे॥एविरितनुंजेज्ञानतेकार्यस्वरूपभगवाननुंछेनेतेवुंज्ञानजेनेसिद्धथायतेजेतेपुरुषनासाधर्मपणानेपामेछे॥नेतेपुरुषकेवोछेतोअक्षररूप भगवाननुंकार्यस्वरूपछेअनेजगतनुंकारणरूपछे॥अनेसर्वेनाकारणनाकारणनेअक्षरातितएवाजेमायापरपरमात्मातेनास्वरूपनुंज्ञानसाक्षात्कारथायत्यारेनिरगुणअक्षरनाभावनेपामिनेसर्वोपरिकारणरूपएवाजेप्रत्यक्षपुरुषोत्तमभगवानतेजएकतेनेदेखायछे॥पणतेविनाजगतनुंकार्यकारणकांईदेखातुंनथि॥जेमसूर्यवडेझांझवांदेखायछे॥तेझांझवांमिथ्याछे॥नेसूर्यसत्यछे॥तेमआत्यंतिकप्रलयनुंजेज्ञानतेनेजेजाणेछे॥तेनेजगतमिथ्याथईजायछे॥नेपरमेश्वरसत्यदेखायछे॥अनेएविरितनाज्ञाननेपामिनेपरमसुखशांतिनेपामेछे॥हवेतेनुंज्ञानकोणकरावेछे॥नेतेज्ञानकेमछे॥तोजेमहिरेकरिनेहिरोविंधायछे॥तेमभगवाननास्वरूपनुंज्ञानभगवानथतेजथायछे॥हवेतेकेमज्ञानकरावेछे॥केसर्वेनाकारणएवाजेभग-

थान ते जे ते प्रथम मुमुक्षु ने पृथ्विनि द्रष्टि कराविने सर्व पदार्थ ने पृथ्वि रूपे देखाडे छे ॥ जे प्रथ्वी छे ते जलना एक अंशथकि थई छे ॥ माटे ते पृथ्वि ते जलने विषे लय करिने सर्व पदार्थ ने जलमय देखवु ॥ अने जल अग्निना एक अंसमांथि उपन्युं छे ॥ ते जलने अग्निने विषे लय करिने अग्निनि द्रष्टि ने पामिने सर्व पदार्थ ने अग्निरूपे देखवु ॥ अने अग्नि वायुना एक देशमांथि उपन्यो छे ॥ तेने वायुमा लय करिने वायुनि द्रष्टिने पामीने सर्व पदार्थ ने वायुरूपे देखवु ॥ अने वायु आकाशथकि उपन्यो छे ॥ तेने आकाशमां लय करिने ॥ आकाशनि द्रष्टिने पामिने सर्व पदार्थ ने आकाशरूपे देखवु ॥ अने आकाश अहंकारथकि थयो छे ॥ तेने अहंकारमां लय करिने सर्व पदार्थ ने अहंकारमय देखवां ॥ अने अहंकार महत्तत्वथकि थयेलो छे ॥ माटे तेने महत्तत्वने विषे लय करिने सर्व पदार्थ ने महत्तत्वमय देखवुं ॥ अने महत्तत्व प्रधानपुरुषथकि थयेलो छे ॥ तेने प्रधानपुरुषने विषे लय करिने सर्व पदार्थ ने प्रधानपुरुषरूपे देखवुं ॥ अने प्रधान पुरुष मूल प्रकृतिपुरुषथकि थयेलुं छे ॥ माटे तेने प्रकृतिपुरुषमां लय करिने सर्व पदार्थ ने प्रकृतिपुरुषमय देखवु ॥ अने प्रकृतिपुरुष छे ते जगतना कारण छे ॥ ते कारणरूप एवा जे प्रकृति पुरुष ने जे ते चिदाकाश चैतन्यमय एवु जे अक्षरब्रह्मस्वरूप भगवाननुं धाम ते एवा अनंत पुरुषनुं कारण छे ॥ ते पुरुषने अक्षरने विषे लय करिने ते पुरुषने अक्षररूपे देखवो ॥ अने एवु जे अक्षरब्रह्म तेने पोतानु स्वरूप जाणिने ॥ पोताने मत्ये एवा जे प्रत्यक्ष परमात्मा दिव्यमूर्त्ति तेना स्वरूपनु प्रतिलोम द्रष्टि करिने निरंतर ध्यान करवु ॥ पछी ते ध्यान करतो करतां तेना दोषनां बिज बलि जाय छे ॥ ने ते दिव्य अवयवने पामे छे ॥ ते दिव्य अवयवनं शुं लक्षण छे ॥ तो बाह्य तथा आभ्यंतर ॥ अने अन्वय तथा व्यतिरेक भेदे रहित जे द्रष्टि ते ज दिव्य अवयवनि द्रष्टि जाणवि ॥ अने ते विसिद्ध द्रष्टिने जे पुरुष जेना उपदेशे करिने पाम्यो छे ॥ एवी जे उपदेशदाता पुरुष ते तो स्वयं परमात्मा छे ॥ एम सिद्ध द्रष्टिवालो पुरुष देखे छे ॥ एवी रीत्ये परमभक्ति ॥ अथवा परमज्ञान ॥ अथवा परम धर्म ते जेने पुरां थयां छे ॥ ते जम नुष मूर्त्तिने विषे सर्वोपरि पुरुषोत्तमपणानो निश्चय करे छे ॥ ने बिजा जे छे तेने तो जेने जेटलि बुद्धि ने जेने जेटलो धर्म ज्ञान वैराग्य सिद्ध थाय छे ॥ ते ते टला भगवानने जाणे छे ॥ ने तेने साधनदसा वालो जाणवो ॥ अने

प्रथम कह्यो तेने सिद्धदशावालो जाणवो ॥ए प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतनो निश्चय थवानि रित्य छे॥ अने एवो निश्चय जेने थाय छे॥ तेने पंचविषयनि वासना टलि जाय छे॥ अने ए अमारो रहस्य छे॥ ने ए वात जे जाणे छे॥ तेने कांई बाकि जाणवुं रह्तुं नथि॥ए सिद्धांत छे पण एमां कांई संका नथि॥ ॥इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥संवत् ।१९। ओगणिशे ।१६। शोलना कारतग शुदि १५ पुन्यमने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्रीरोईशाला मध्ये ॥ ओझा भगवानजी लक्ष्मिरामने घेर दक्षणादे बारे ओरडानि ओसरिमां गादि तकिया नखावि तेने ढोलिया उपर बिराजमान हता॥ अने सर्वे जरिया निवस्त्र धारण कर्‍यां हतां ॥ ने पुष्पना हार कंठमां धारण कर्‍या हता ॥ अने पोताना मूखारविंदनि आगल साधु तथा घणा क हरिभक्तनि सभा भराईने बेठि हति॥ पछे महाप्रभुजि बोल्या जे मूल माया छे तेजि यनि बुद्धिरूपे थई छे ते जिवबुद्धि द्वाराये करिने इंद्रियो अंतःकर्णे करिने आ विश्वना विषयने भोगवे छे॥ ते विषयवासनाये करिने जन्ममरणना दुःखने पामे छे॥ अने ए विरिते देवता पण बुद्धिने विषे जोडाणा थका तं च विषयनि वासनाए करिने जन्म मृत्युने पामे छे॥ अने ब्रह्म पण बुद्धिने विषे जोडाणो थको जन्ममरणने पामे छे ॥ अने वैराजपुरुष पण बुद्धिने विषे जोडाणो थको प्राकृत प्रलयने विषे नाशपामे छे ॥ अने ते विरिते महतत्वादिक चोविश तत्व तथा प्रधानपुरुष ए सर्वे बुद्धिने विषे जोडाणा थका सर्वे प्राकृत प्रलयमां नाश पामे छे ॥ अने प्रकृति पुरुष पण ज्यां सुधि बुद्धिने विषे जोडाणो छे त्यां सुधि संतापने पामे छे॥ अने ज्यारे बुद्धि थकि प्रति लोमदृष्टि करिने पोतानुं स्वरूप जे आत्मा ते रूप थईने परमात्माने विशे जोडाय छे॥ त्यारे जन्ममरणना दुःख थकि मुकाय छे॥ ते परमात्मा आत्माना प्रकाशक छे॥ ते ज पोते परमात्मा कृपा करिने मनुष्यरूपे थईने पोताने मले तथा प्रगट भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागि संत तेम ले ने ते ज्यारे ज्ञान आपि ने बुद्धिने निरगुण भावने पमाडे छे॥ अने ज्यारे बुद्धि निरगुणभावने पामे छे त्यारे इंद्रियो अंतःकरणमां प्रकाश थाय छे॥ ने माईक जे पंचविषयनि वासना ते टलि जाय छे॥ ने सकृद स्वरूप जे पोताना अखंडानंद ब्रह्मानंद एवुं जे अक्षर ब्रह्म ते पोताना नुं पो

तानेदेखायछे।।नेतेनाप्रकाशएवाजेपरमात्मा तेपोतानेजेसाक्षात्कारमलिनेज्ञानआप्युं।।तेजआत्मा ने विषेदिव्यरुपमूर्त्ति-
मानथकादेखायछे।।त्यारेजजिवनोमोक्षथायछे।।नेजन्ममरणनेपामतोनथि।। ।।इतिश्रीसुखसिद्धांतसमाप्त
:।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ।।संवत १९।ओगणिशे।१६।शोलनाकारतगवदि१पडुवानेदिवस
महाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीरोईशालामध्ये।।ओझाभगवानजिलक्ष्मिरामनेघेरदक्षणादेबारओरडानिओसरिमांढो
लियाउपरबिराजमानथयाहता।।नेसर्वसोनेरिवस्त्रधारणकर्यांहतां।।अनेपुष्पनांआभूषणधारणकर्यांहतां।।अनेपोतानसुखा
र्विंदनिआगलसाधुतथाघणाकहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठिहति।।पछेअक्षरमुक्तानंदस्वामियेप्रश्नपुछ्युं।।जेहेमहाराजजिव
नेजेविपरोक्षभगवाननेविषेप्रतितिछे।।तेविप्रत्यक्षभगवाननेविषेप्रतितिहोय।।तेनशुंलक्षणहोयतेकृपाकरिनेकहो।।
पछेमहाप्रभुजिबोल्या।।जेजेनेपरोक्षनाजेविप्रतिति।।प्रत्यक्षनेविषेहोयतेनेपंचविषयनियासनानिरमूलथईनेजायछे।।अनेभं
तरमांसदायतेनेशान्तिवरते।।अनेतेनेप्रत्यक्षभगवान्नाजेमनुष्यचरित्रतेनेविषेकोईकालेसंशयथायनहि।।केमकेभ-
गवाननाचरित्रसर्वेशास्त्रमांलख्यांछे।।तेमतेवांभगवान।। चरित्रकरेतेसर्वेतेनेकल्याणकारिजभासे।।नेतेमनु-
ष्यचरित्रनेअलोकिकजाणेअनेएमसमजेजेभगवानतोसदायअसंगिछे।।नेमायापरछे।।पणतेतोकृपाकरिनेजिवोनां
कल्याणनेअर्थेभगवानमनुष्यनाजेवांचरित्रकरेछे।।एविरितेभगवाननोअतिशेमहिमासमजे।।जेमउद्धवजिनेपरो
क्षनाजेविश्रीकृष्णनेविषेप्रतितिहतितोभगवानज्यारेकुबजानेघेरगयात्यारेउद्धवजिनेभेगातेडिगया।।नेउद्धवजिने
बाहारबेसार्या।।नेपोतेकुबजानाघरमांत्रणदिवसरह्याहता।।पणउद्धवजिनेलेशमात्रसंशयथयोनहि।।अनेकुबजा
नोअतिशेमहिमाजाण्योजेअहोएनांमोटांभाग्यजेभगवानतेनेवशथईनेतेनेअलोकिकसुखआप्युं।।अनेज्यांज्यांश्री
कृष्णजतात्यांउद्धवजिनेभेगातेडिजता।।अनेउद्धवजिनेज्यारेगोकुलमोकल्या त्यारेगोपियोसगाथभगवाननेजेजेलि-
लाकरिहति।।तेगोपियोनामुखथकिसांभलिनेउद्धवजिगदगदकंठेथईगयानेगोपियोनोअतिशेमहिमासमज्या।।

ने भगवाननो पण गोपियोनां वचनसां भळिने महिमा घणो समजाणो ॥ ने पोते गोपीयोना चरणनी रजने माथे चढावि । पण उद्धव
जिने भगवानना मनुष्य चरित्र जाईने कोई दिवस संशय थयो नहिं ॥ अने पंच विषयना लिधा पण उद्धवजि लेवाता नहिं ॥ अ
ने श्रीकृष्ण जरासिंधथि नाठा ने समुद्रना बेटमां जईने रह्या ॥ अने द्वारकामां पण अनंत प्रकारनि लिला करता ॥ ते कोईकनि
दिकारिओ हरण करी लावता ॥ तथा कोईकनि स्त्रियो लईआवता ॥ एवि रिते घणाक प्रकारनि क्रियाओ लोकना दिठामां
अजोग्य जेवि करता तोपण उद्धवजिने लेश मात्र संशय थयो नहिं ॥ अने दिवसे दिवसे श्रीकृष्णने विषे अलौकिक महिमा समजता
गया ॥ अने ज्यारे यादवास्थलि करीने श्रीकृष्ण स्वधाम जवाना थया त्यारे पण पोतानुं जे रहस्य ज्ञान हतुं ते उद्धवजिने आप्युं ॥
ने श्रीकृष्णे एम कह्युं जे उद्धवजि छे ते अमारा अनन्यभक्त छे केमके मारा चरित्रने विषे कोई दिवस संशय थयो नहिं ॥ अने वळी
रामा अवतारमां रामचंद्रजिने विषे शिवजिने परोक्षनाजेवी प्रतिति हतितो ॥ ज्यारे सितानुं हरण थयुं त्यारे रघुनाथजिने वनमां
रोता दिठा तोपण शिवजिने संशय थयो नहिं ॥ ने अलौकिक महिमा जाणिने जय सच्चिदानंद कहिने शिवजिये दंडवत् कर्या ॥
अने सतीने जो निश्चय न होतो तो संशय थयो पछे पारखुं लेवा सारु आगळ जईने बेठा ॥ ते जो बिजा जिव जेवा हशे तो हुं मां मोह-
पामशे ॥ पण ए तो महा ब्रह्मचारिना पण ब्रह्मचारि छे। ते मोह पाम्या नहि । ने एम पुछ्युं जे माताजि बेहेन तमे एकलां क्यां थि ॥
पछे तो सति लाजु पामिने शिवजि पासे आव्यां ॥ त्यारे शिवजिये तेनो त्याग कर्यो ॥ पछे सति अतिशे संतापने पाम्या ॥ अने
वळि हनुमानजिने जो परोक्षनाजेवि प्रतिति रघुनाथजिने विषे हतितो ज्यारे पोते हनुमानजि लंकामां गया त्यारे सिताजिने खो
ळवा सारु अनंत प्रकारनि स्त्रियो जोई ॥ पण कोई रिते ते स्त्रियोमां मोह पाम्या नहि ॥ अने ज्यारे लक्ष्मणजिने मोरछा आवि ।
त्यारे रघुनाथजि मनुष्यनि पेठे रोया पछे ते भेगि सर्व सैन्या पण रोवा लागि त्यारे पण हनुमान रोया ने डुंगर मांजेने औषधि लावि
ने मोरछा उतारि ॥ तथा अर्धिराते अहिरावण आविने रामलक्ष्मण बेने हरि गयो त्यारे पण सर्व सैन्या वलोपात करवा
लागि ॥ ने भयभित थईगई पण हनुमानजि भयभीत थया नहिं ॥ पछे विभीषणने पुछ्युं त्यारे तेणे कह्युं जे एवो तो अहि

रावणगफामांरहे छे।। तेलईगयोहतो।।पछे हनुमानजिसोधतासोधता त्यांगफामांगयानेतेसाथेयुद्ध करिनेरामलक्ष्मणबेने
मुकाव्याएविरितनारघुनाथजिनांअनंतमनुष्यचरित्रदिठां।।पणहनुमानजिनेसंशय थयोनहिं।।अनेसर्वेचरित्रदिव्यजणायां
अनेएमसमजताजेरघुनाथजितोसदायअसंगिछेनेमायापरछे अनेकरताहरता छे।।नेएतुंजकर्युंसर्वेथाय छे।। तोपणपोता
नादिव्यभावनेछपावीनेकृपाकरिनेअनंतजिवोनाकल्याणकरवानेअर्थेमनुष्य निपेठेवरते छे।।एमजाणिनेहनुमानजि
सेवाकरताहता।।अनेरघुनाथजिपण हनुमानजिउपरअतिशेप्रसन्नथया।।अनेवलिजेनेजेनेपरोक्षेनाजेविप्रत्यक्षनेविषे
प्रतितिहोय।।तोतेनुंवचनकोईरितेलेशमात्रलोपायनहिं।।अनेतनमनधनसर्वेभगवानपरायणकरिराखेनेभगवा
ननाजेजेआश्रितहोय तेनोमहिमाबहुसमजेनेतेनोदासथईनेवरते तेपण तुलसिदासेक ह्युं छे।।तुलसिजाकेमुखसे
।।भूलेयुनिकशेराम।।ताकेपगकिपेनिया।।मेरेतनकिचाम।।१।।एविरितनालक्षणेयुक्तजेहोयतेनेपरोक्षनाजेविप्रत्य
क्षनेविषेप्रतितिवालोजाणवो।।अनेएविरितेजेनेपरोक्षनाजेविप्रत्यक्षनेविषेप्रतितिआवितेसर्वेसाधननाअंतनेपामि
रह्यो छे।।अनेतेनासंगथकिअनंतजिवनाउधारथायछे।। ।।इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः।। ।।
श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ।।संवत११ ओगणिशो१६शोलना कार्तकवदि२ विजने दिवस महाराजश्रीहरि
कृष्णभगवानगामश्रीरोईशालाडामध्ये।।ओढा भगवानजि लक्ष्मिरामने घेर दक्षण देबारओरडानिओसरिमांढोलियाउ
परबिराजमानथयाहतानेसर्वेसोनेरिवस्त्रधारणकर्याहता।।नेकंठमांपुष्पनाहारशोभिरह्याहता।।नेपोतानामुखारविं
दिनिआगलसाधुनथाघणाकहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठिहति।।पछेमहाप्रभुजिसर्वेहरिभक्तप्रत्येबोल्याजेबेप्रका
रनुंसुख छे।।तेमांएकअविनाशिसुखछे।।नेएकनाशवंतसुखछे।।हवेअविनासिसुखतेकियुं।।तोआत्मानेपरमात्मा
संबंधिजेसुखछे।।तेअविनाशिसुखछे।।नेतेसुखकेवुंछेतोअखंडानंद।।ब्रह्मानंदएवुंअद्भुतअलोकिकसुखछे
।।अनेजेमाईकसुखछे तेतोनाशवंतछे।।नेतुच्छ छे।।नेकोटिकोटिक्लेशेयुक्तछे।।नेतेसुखनेजेवासनावालाजिवछे

तेसुखमानेछे॥जेमविष्टामांकिडाहोयतेविष्टानेखाईनेआनंदमानेछे॥तेमजेवासनावालाजिवछे॥तेदुःखरूपजेमा
ईकसुखतेनेकिडानिपेठेसुखमानिछे।।पणजेनिरवासनिकछे॥तेतोतेनेदुःखियाजाणेछे॥केमकेतेमाईकसुखनिके
डेतोकोटानकोटिमहादुःखरह्याछे॥तेदुःखकीयां॥तोजेतेविषयनेभोगाकरवापडे।तेमांपणअनंतदुःखथायछे॥
अनेतेविषयभोगव्यापछीपणयमपुरीनांदुःखभोगववांपडेछे॥तथाचोरासिनांगर्भवासनांदुःखविषयवासनाये
करिनेजिवनेभोगववांपडेछे॥अनेतेदुःखथकीसत्पुरुषमुकावेछे॥त्यारेतेअज्ञानिजिवतेसत्पुरुषनोअवगुणलेछे
जेमअणसमजुबालकहोयतेअग्निनेतथासर्पनेझालवाजायत्यारेतेनिमानापाडे॥तोतेबालकएनिमाउपररिस
करेछे॥तेमसत्पुरुषविषयथकिमुकावेछे॥त्यारेअज्ञानिजिवबालकनिपेठेसत्पुरुषउपररिसकरेछे॥अनेजेमबाल
कनेएनिमाअग्निसर्पनेझालवादेतोतेबालकघणुंदुःखपामेनेमरिपणजायएमजाणिनेतेनिमाछेतेसुजेतेमयु-
क्तिकरिनेतेथिमुकावेछे।पणतेनिमानेरिसनथिचडति॥केमकेमाएमजाणेछेजेएतोअणसमजुबालकछे॥ते
मबालकजेवाजेवासनावालाजिवजेतेअज्ञानेकरिने॥अग्निसर्परूपजेपंचविषयतेनेभोगवेछे॥तेनेसत्पुरुषएम-
जाणेछेजेएमांथिएनेघणुंदुःखथशेनेएनाआत्मानुंअतिशेभुडुंथशे॥नेजन्ममृत्युनादुःखनेवारंमवारपामशे॥अनेम
नुष्यदेहमांएनेज्ञानथशे॥पणपछेपशुपंखिझाडपहाडनाअवतारमांज्ञानथायएमनथी॥एमजाणिनेतेनेआग्रहक
रिनेउपदेशआपिनेविषयथकिमुकावेछे॥अनेवासनावालाजिवनेतोविषयमुकवाबहुजकठणपडेछे॥तोपणसत
पुरुषअनंतप्रकारनाउपदेशआपिनेमुकावेछे अनेपंचविषयथिजिवनेमुकाववानेपणसतपुरुषजसमर्थछे॥पण
बिजाजिवकोईविषयमुकाववानेसमर्थनथि॥केमकेसर्वेजिवछेतेनेतोअनादिनिजाविपरितभावनाछे॥अनेपर
मेश्वरनिदिशातोजिवेदीठिजनथिमाटेतेमारगेकोईजिवपोतानिमेलेचालवानेसमर्थनथि॥जेमनानाछोकरा-
ओनेपोतानिमेलेविद्याभणवानिईछाथतिनथि॥नेतेनेतोतेनामावितरतथाविद्यानोभणाववारोमेदेतोज्ञि

तेजो छोकराओने आग्रहकरिने भणावे ।। त्यारेज छोकराने विद्या आवेछे ।। नेविद्यानुंपात्र थायछे ।। नेत्यारे तेने प्रथमनी अभणप णानिजे स्थिति तेमहादुःखरुपजाणे छे ।। अनेविद्याथकिजे ज्ञानपाम्यो तेने विषेजपरम् आनंद मानेअने एम समजेजे मारेवि द्यानआवडि होत तो मोरिआयुषकेमजात ।। माटे मेहेताजिनो नेमारामावितरनोहुं केटलोएक पाड मानु ।। अनेए उपका रमाराथि तो कोई रितेवालिशकाय एमनथि ।। तेम मेहेताजिनेठेकाणे तो सत्पुरुष छे ।। नेमावीतरनेठेकाणे सतशास्त्र नांवाक्य ।। तेजे तेसत्पुरुषना मेलापनांकरावनाराछे ।। अने विद्यानेठेकाणे धर्मज्ञान वैराग्यनेभक्ति ते छे ।। नेजेने- आत्यंतिकब्रह्मविद्या कहेछे तेजेने अनंतजन्मना शुभसंस्कारहोय तेनेसिद्ध थायछे ।। केमके वासनावाला जिवने तेथी कांई बिजुसाधनकठण नथि ।। अनेआत्यंतिक ज्ञानजेने सीद्धथयु ते निजवासनारले छे ।। अनेत्यारेजस काम पणुंटले छे ।। नेत्यारेजअलोकिक सुखयने पामिरह्यो कहेवायछे ।। एयिरिते जिवना सुखनेजेमायापरसत्पुरुषछे ते जाणेछे ।। जेआवुं सर्वोपरिअलोकिकसुख छे ।। तेमुमुक्षुजिवोने भागवत धर्मना आचरणे करिनेपमाडे छे ।। अने जिवनेतोनाना छोकरानिशालियानिपेठेजेम प्रथमविद्यानो लाभनथिजणातो ।। नेविद्याभण्यामां घणुंकठणपडतुंहतुं ।। तेममुमुक्षुनेज्यां सुधिपोताने भागवतधर्मनुं सुखनथिआव्यु त्यां सुधितेनेकठणजेवुं जणायछे ।। पण तेज्यारे स त्पुरुषनो समागमकरशे त्यारेतेने दिवसे दिवसे विषयनिवासना घटतिजशे ।। नेधर्मज्ञान वैरागभक्ति वृद्धिपामतां ।। जशे एविरिते पंचविषयनांमूलने सद्गुरुरूपप्रगट भगवान के भगवानूनासंतछे तेउखाडिने ब्रह्मरूप करे छे । जेम- अफिणनाबंधाणिने अफिणमुकाव्यानु कहिये जे अफिण रहेवादे ।। ने घिगोलखांडसाकर आपीश ।। पण तेनेअ फिणमुकवुंघणुंकठण ।। केमके एणे अफिणमां जसुखमान्युं छे ।। पणजे बुद्धियालाछे तेअफिणनेमहादुःखरुपजाणे छे ।। पछेते बंधाणि ने धिरे धिरेअफिणमुकाये छे ।। तेविषयीजीवनेसत्पुरुषसुखनिस्थितिये सत्संगमां रहेवाथिअ तिशे कठणएवोजे मोक्षते सहेजेजप्राप्तकरायेछे ।। नेते महाअद्भुतआनंदने पामेछे अनेतेथिते स्थितिने पाम्यो एवोजे

महामुक्त नेपोतानास्करवनिनेपोतानिस्थितिनेजाणिनेएममानेछेजेहुंजपरमेश्वरनिनेमोटासंतनिकृपावडेकरिनेम
हासरिवयोथयोछुं॥अनेअविनासिएवुंजेअलोकिकस्करवतेनेमेलिनेअसत्यएवुंजेलौकिकस्करवतेनेमारेकोईका-
लेइछवुंनथि॥एमजेज्ञाननिस्थितिनेपाम्योएवोजेत्यानितेपंचविषयनास्करवनेइछतोनथि॥नेविषयनेदेखिनेग्ला-
निपामेछे।जेमरणवगडामांरहेनारोएवोकोईभिलकेवाघरिहोय।तेकोठांबोरांरवातोहोय।।तथाफाटेलांलुगडां
नेज्यांत्यांपडिरहेवुं।एवाभुंडाहवालेरहेतोहोयनेतेनेकोईकराजामोजमांआविनेराजआपे॥पछेतेराज नावेभवने
भोगवेनेराजनेविषेमहासुरव पामिनेआनंदमाने।।पछेतेनेकोठांबोरांआदिकमोरनांस्करवतेदुःखरूपलागेनेते
नेसंभारेपणनहि॥नेक्यारेकसांभरिजाय॥अथवाकोईसंभारिदियेतोअतिशेग्लानिपामिजाय॥तेमजेजेमुमुक्षुहोय॥
तेकोठांबोरांरूपजेमाईकपंचविषयतेनेसंभारेजनहि॥नेतेनेकोईकविषयनोसंबंधथायतोतेनेदेखिनेग्लानिपामीने
अतिउदासथईजाय॥अनेआत्मारूपथईनेपरमात्माजिपोतानेमल्या॥प्रत्यक्षभगवाननेसंततेनास्करवमांजमहागुल
तानरहे॥अनेपोतानेअलोकिकअविनासिस्करवनेपमाड्या॥एवाजेसतगुरुतेनोमहामोटोउपकारमानेजेमुनेमहादु
स्वरूपजेपंचविषयतेथकिमुकाविनेअभयस्करवआप्युं॥माटेमारापरमहितकारिछे।एमजाणिनेअखंडभक्तिके
रेछे॥अनेतेजसत्यस्करवछे॥नेतेविनानाजेमाईकस्करवछे॥तेतोअतिशेदुःखरूपछे॥ ॥इतिश्रीमु-
खसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत१९ओगणिशे१६शोलना
कातिकवदि६छठनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीरोईशालामध्येभक्तकोठारियनमालिआणंदजि
नेघेरउत्तरादेबारओरडानिओसरिमांढोलियाउपरविराजमानथयाहता॥अनेसर्वेजरियानिवस्त्रधारणकर्याहतांनेपुष्प
नांआभूषणसर्वेअंगमांशोभिरह्यांहतांनेपोतानामुखारविंदनिआगलसाधुतथाघणाकहरिभक्तनिसभाभराईनेबे
ठाहतापछेअखंडानंदस्वामियेप्रश्नपुछ्युंजेहेमहाराजपामरजिवहोयतेआत्यंतिकमोक्षनेकेमपामेपछेमहाप्रभुजि

बोल्या जे पामर जिव होय पण तेने प्रत्यक्ष भगवान नो के भगवानना एकांतिक पंच विषयना त्यागि संत तेनो संबंध थाय ॥ अने ते मां तेनो जिव अतिदृढ हेते करिने जोडाई जाय तो ते पामर जिवनो अने आ देहे करिने आत्यंतिक मोक्ष थाय अने ते हेतपण केवुं थाय ॥ तो जेम संसारमां देहने देहनां संबंधी मां जीवने जेवुं हेत छे । ने ते मां जे वि आत्मा बुद्धि छे ते आत्म बुद्धि भगवान ने भगवानना साधुने विषे थाय तेतो ते जिव पामरमटिने मुक्त थाय छे ॥ ने आत्यंतिक मोक्षने पामे अने एवुं हेतने आत्म बुद्धि न थई होय तेनुतो जन्मांतरे कल्याण थाय छे ॥ पछे अक्षर मुक्तानंद स्वामिये कह्युं जे हे महाराज शास्त्रमां तो एम कह्युं छे जे ज्ञान विना मोक्ष थाय नहि ॥ अने तमे तो कह्युं जे हेते करिने मोक्ष थाय । ते केई रिते थाय ते कहो प छे महाराज बोल्या जे पामरने प्रथम तो ज्ञान थाय एम नथी ने पामरने तो अहार मैथुन निंद्रा ने भय ए चार वानानुं ज ज्ञान होय पण तेने सत्पुरुषने विषे आत्म बुद्धि थाय ॥ मे ते आत्म बुद्धिये करिने सत्पुरुषनि सेवा करे प छे तेनी सेवाये करिने एवुं अंतःकरण शुध थाय ॥ अने शुध अंतःकरणे करिने सतगुरुनि सेवा करे छे तेणे करिने एनो जिव वृद्धिने पामतो जाय छे ॥ पछे एने भगवानना स्वरूप संबंधि लोभ देखाडिने पामरमां थि विषयि करे छे ने विषयिने आत्म ज्ञान आपिने भगवाननो महिमा देखाडिने इंद्रियोने नियममां कराविने मुमुक्षु करे छे ॥ अने मुमुक्षुने भगवाननो अलौकिक महिमा देखाडिने प छे तेने धर्म ज्ञान वैराग्यने महात्मे सहित भक्ति सिध करावि ने आत्यंतिक ज्ञानने पमाडिने मोक्ष करे छे ॥ केनि पेठे के जेम बालकने चिंतामणि आपि होय ॥ तो ते बालक चिंतामणिनो महिमा प्रथम तो कांई समजतो न होय ने पछे एने चिंतामणिना पारखुं मले ॥ ते बालकने चिंतामणिनुं ज्ञान आपवा सारु एने प्रथम तो बदामनुं ज्ञान करावे छे ॥ पछे पैसानुं ज्ञान करावे छे ॥ पछे पारसमणिनुं पारखुं शिखवे पछे चिंतामणिनुं ज्ञान करावे छे ॥ त्यारे तेने चिंतामणिनो महिमा जणाय अने ते महा सुखियो थाय छे ॥ तेम बालक जेवा जे पामर जिव तेने चिंतामणिरूप एवा भगवानने भगवानना एकांतिक संत ते जिवने प्रगट मले त्यारे प्रथम तो कांई महात्म समजतो न होय ॥ पछे ते भगवानना महिमाना जाणनारा पंडे भगवान

तथा ते भगवान ना महिमा ना जा णनारा एवा भगवान ना एकांतिक साधु ते एने ज्ञान करावे छे॥ ते प्रथम तो वर्णाश्रमना ध-
र्मसंबंधि ज्ञान आपि ने इंद्रियो ने नियममां करावे छे॥ पछे उत्पत्ति स्थिति ने प्रलय तेनुं ज्ञान करावि ने वैराग्य आपे छे॥ ने पछे
आत्यंतिक प्रलयनुं ज्ञान करावि ने तेने अक्षररूप करे छे॥ अने पछे अक्षरने विषे सदाय अखंड नित्य विराजमान एवा जे
भगवान ते जआ प्रत्यक्ष छे॥ एम महात्मे सहित निश्चय करावि ने आत्यंतिक मोक्ष करे छे। एवि रित्ये पामर जिव होय
ने तेने प्रगट भगवान ने विषे अथवा निरवासनिक संत तेने विषे आत्मबुद्धि थाय तो तेनो मोक्ष थाय छे॥ अने आत्मबुद्धि
न थई होय त्यां सुधि एने ज्ञान थाय नहिं॥ ने ज्ञान विना मोक्ष थाय नहिं॥ माटे प्रत्यक्षने विषे आत्मबुद्धि थाय॥ एज मोक्ष
नुं अचल साधन छे॥ अने विषयि होय॥ अथवा मुमुक्षु होय पण तेने प्रत्यक्ष भगवानने भगवान ना संत नो संबंध न थाय
तो तेनो मोक्ष कोई काले थाय नहि॥ केम के केरीनुं सुख लेवुं होय त्यारे तो तेके रि प्रगट मले ने तेने ओलखिने जमे॥
त्यारे तेकेरिनुं सुख आवे छे॥ अने केरिनुं टाणुं न होय ने आंबा मां तो कारण पणे केरि रहि छे॥ पण तेने सु जेतरलि वातो
करिये ने संभारया करिये तो य तेकेरि नो स्वाद आवे नहि॥ केम केजे वस्तुमां सुख रह्युं छे॥ ते तो ते वस्तु पासे होय प-
ण ते थि जुदुं होय नहि॥ तेम भगवान कारण पणे तो पिंड ब्रह्मांड मां रह्या छे। पण प्रगट विना तेनुं सुख आवे नहिं॥
माटे भगवान के भगवान ना संत प्रथ्वी उपर प्रगट थया होय ने तेने ओलखि ने तेने विषे निष्कांम भावे प्रिति करे त्या-
रे ज भगवान ना सुख ने जिव पामे छे॥ ते संस्कारि जिव होय अथवा वगर संस्कारि होय पण प्रगट भगवान ने भग-
वान ना संत ना जोग मां आवि जाय ने तेने ते माहे तथई जाय॥ तो तेनो साक्षात्कार मोक्ष थई जाय॥ अने परोक्षनि
भक्ति करतो होय। ने प्रत्यक्षने विषे हेत न थाय तो कोई काले ते जिवनो मोक्ष थाय नहि॥ केम के परोक्ष भक्ति तो उ-
नाला नि खेड्य छे पण चोमासु आवि ने बिज न वावे तो निपज आवे नहिं॥ अने उनाले हलहाक्युं न होय ने जो चोमासे
खबरदार थईने हलहाकतो जाय ने वजवावतो जाय तो तेने निपज आवे अने उनाले तो बहु खेड्य करि होय पण चो

मासे वा वे नहि तो तेने निपज आवे नहि ।। ने ते भूखे मरे तेम परोक्ष भक्ति बहु करि होय पण प्रगटने नमाने तो तेनुं कल्या
णथाय नहि ।। केमके जे निसारु भक्ति करतो इतो ने तेने ज न मान्या माटे कल्याण कोण करे ते सारु जे ने पोताना आ
त्माना मोक्षनो खप होय तेने प्रत्यक्ष ज्ञान दाता जे भगवान ने भगवानना निरवासनिक संत ते नो दृढ आसरो करवो
ने सावधान थईने पोतानुं काम करि लेवुं ।। केमके जिवने समो आववो घणोज कठण छे ।। ते समो आज तमारे आ
व्यो छे ।। ते सारु अमारो ने पंचविषयना त्यागि एवा जे अमारा एकांतिक संत तेनो सत्संग करिने वासना टालिने ।।
अमारि भक्ति करशो तो अक्षरधामने पामशो ।। ने जो वासना रहि जशे तो तमारे ने अमारे छेटु पडे छे ने हेरान थशो ।।
अने अमे तो चिंतामणिरूप छिये ।। जेम चिंतामणि पासे जईने जे चिंतवे तेम थाय ।। ते अमारि ने अमारा संतनी पासे आवि
ने माया ने ईछे ।। तो तेने महा दुःख थाय छे ।। केमके मायामा तो दुःख जरहुं छे ।। अने जो अमारि पासे आवि ने निष्काम
भाव राखि ने निरवासनिकपणुं ईछे तो महा सुखियो थाय छे ।। केमके निरवासनिक थयो ते ज भगवाननि भक्तिनो
अधिकारि थयो छे ।। ते गीतामां कह्यु छे जे ।। ब्रह्मभुत प्रसंनात्मा न सोसति न कांक्षति समः सर्वेषु भुतेषु मद्भक्तिं ल-
भते परां ।। माटे निरवासनिक थवाना संकल्प अम पासे आविने करशो ते निवासना टलि जशे ने ब्रह्मरूप थईने अखं
ड सुखने पामसे ।। ।।इति श्री मुख्यसिद्धांत समाप्तः।। ।।श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः।। ।।
संवत् १९ ओगणिशे १६ शोलना कार्तिक वदि ८ अष्टमिने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोईशाला
मध्ये भक्त कोठारि वनमालि आणंदजिने घेर उत्तरादे बार ओरडानि ओसरि मांढोलिया उपर विराजमान थया हता ने स
र्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ।। ने पुष्पना हार पहेर्या हता ने पोताना मुखारविंदनि आगल साधु तथा घणा फकरि
भक्तनि सभा भराईने बेठि हती ।। पछे महाप्रभुजि बोल्या जे एक जिवने भगवानने मार्गे चडाववो तेमां केटलुं पुंन्य था
य छे ।। अने एक जिवने भगवानना मारगथी पाडयो तेमां केटलुं पाप लागे छे तो तेने अमे कहिये छिये जे एक जिवने भग

वानसन्मुखकर्योहोयतोकोटि ब्रह्मांडनाजिवमरिजताहोयनेतेनेजिवतारारविये नेतेनुंजेटलुंपुंन्यथाय। तेटलुंपुं
न्यएकजीवनेभगवानसन्मुखकर्यानुंथायछे॥अनेएकजिवनेभगवानना मार्गमांथिपाछोपाड्योहोयतोतेपाडना
राने कोटि ब्रह्मांडनाजिवनेमारिनारवे। निपापलागे तेटलुंपापलागे छे॥ केमके ते जिवने कोटि ब्रह्मांडने विषेजन्मवुं
नेमरवुंपडशे॥ नेलरवचोरासिमां महाकष्टनेपामसे ते पाप सर्वते भगवानना मार्गथीपाडनाराने लागे छे॥ अनेभगवा
नने मार्गेचडाव्यो तेजिवने लरवचोरासिमां कोटि ब्रह्मांडने विषे जन्मवुंने मरवुंपडत ते दुःखसर्वेमटिगयां तेपुंन्यतेने
थाय छेमाटेएकजिवने भगवानसन्मुखकरवा मां कोटि ब्रह्मांडनाजिवउगार्यानुं पुंन्यथाय छे॥ अनेएकजिवने भग-
वानना मार्गथीपाडनाराने कोटि ब्रह्मांडनाजीवबधायनेमारिनारवे एटलुंपापलागे॥ हवेभगवान सन्मुख कर्यो तेशुं
नेभगवानना मार्गथीपाड्योतेशुं॥ तो तेनोउत्तरएमछेजे जिवने संसार भोगववानो नेमाईकपंचविषयभोगववानो
उपदेशकरिने विषयनेभोगवावे छे नेसंसारकरावे छे॥ तेनेभगवानना मार्गथिपाड्योजाणवो॥ नेएवाउपदेशनाक
रनाराने महापापलागे छे॥ अनेजे जिवने संसारनोअनेपंचविषयनो त्यागकराविने भगवानने भगवानना संतविषय-
नात्यागि तेने विषेहेतकरावे छे नेते भगवान सन्मुखकर्योजाणवो॥ अनेएवा उपदेशकरिने विषयथकिने संसारथ-
किएकजिवनेमुकावे छे॥ तेने महामोटुं पुंन्यथाय छे॥ पछे महाराजे प्रश्नसाधुनिपुछ्युं जे कोईकगृहस्थहोयने तेनेअ-
मारास्वरूपनो निश्चयहोयनेअमारुंभजनकरतोहोयनेतेनो भाईकेदिकरो ते त्यागि थाय त्यारे तेनेघेरलेईजवासा
रुंदाखवडो करेतोपण ते तोवैराग्यनेपाम्योहोयते पाछो घेरजायनहि केमके जेनेसंसारनि उलटिथई तेओकेलुं
पाछुंखवातुंनथिमाटे ते तोघेरजायनहि॥ पछे ते सारुंअमारो तेनेअवगुण आवेतथाकोईक पदार्थनेलिधा दिधा सारुं
भगवानना भक्तनोअवगुणआवे तथापंचविषयनोएने रोगहोयनेतेने भगवानके भगवानना संतकहे तो टले
नहि त्यारे तेनुंकल्याणथायकेनथाय ते कहो॥ पछे धर्मानंद स्वामि तथा अक्षरमुक्तानंद स्वामियेकह्युंजे तेनुंतोक

ल्याणथायनहि ॥ पछेमहाप्रभुजीबोल्याजे अमारा स्वरुपनो निश्चय छेनेअमारुं भजन करेछे तेनाकल्याणनितमे केम नाण
हो छो ॥ पछे धर्मानंद स्वामियेकह्युंजे भगवानने भगवानना भक्तनाअवगुणनुंएनेपापलागे छे ॥ नेतेपापे करिनेएनिकबुद्धि
थाय छे ॥ माटेकबुद्धिवालानुंकल्याणथायनहिं ॥ पछे वलि महाराजबोल्याजेएनुंकोईरिते कल्याणथायके नथाय पछे धर्मा
नंद स्वामियेकह्युं ॥ जेएनेकोईक भगवानना भक्तनोविश्वास होयनेतेनेसंगे करिनेअवगुण आव्यो होय तेटलि जाय तोएनुंक
ल्याणथाय पछेमहाराजबोल्याजेएउत्तरतो खरो पणे बिजि रित्ये एनो मोक्षथायते कथि रित्येथाय ॥ तोएनेअमारा स्वरूप-
नोनिश्चयहोयनेतेविषयनिवासनायेकरिने अवगुण आव्याकर अनेअंतरमां निश्चय होयतेणेकरिने परितापपण था
यपछे निश्चयनेप्रतापेकरिने परितापथतेथते एनिअवगुण बुद्धिटलिजाय छे ॥ पछे निरमानि थईने संगमां आथि नेज्ञानने
पामिनेमोक्षनेपामे छे एविरिते निश्चयनेप्रतापे एनुंकल्याण थायछे माटे निश्चय दृढराखिने भक्तिकरशे तेनुंकल्याणथशे
नेनिश्चयविना भक्ति करजेएटलिकरशेपण तेनुंकल्याणथशे नहिं ॥ अने निश्चयनुंशुं लक्षण छे ॥ तेजेने निश्चय होयतेअ-
मारि आज्ञारूपिजे धर्म ते बराबरपालतोहोयतेनेएम जाणावुंजे निश्चय छे ॥ अनेजेने निश्चय नहोय तेने अमारि आज्ञारूपि
धर्म ते बराबरपलतो नथि त्यारे तेनेएम जाणवुंजे एनेनिश्चयमां कसर छे ॥ ॥ इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः ॥
॥ ॥ श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ॥ ॥ संवत् ।१९। ओगणिशे ।१६। शोलना कार्तिकवदि ९ नवमिनेदि
वस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्रीगोईशालामध्ये भक्तकोठारिवनमालिलक्ष्मणदजीनेघेरउत्तरादाबारनाओरडानि
ओसरिमां ढोलियाउपर विराजमानथयाहता नेसर्वेसोनेरिवस्त्रधारणकर्यांहतां नेपुष्पनांआभूषण धारणकर्यांहतां नेपो-
तानामुखारविंदनिआगलसाधु तथाहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठिहती ॥ पछे धर्मानंद स्वामियेप्रश्नपुछ्युं ॥ जेहे महाराज
जिवनेपोतानिमेलेमोक्षनिईछाथायकेनथाय पछेश्रीमहाराजबोल्याजे जिवने पोतानिमेले तो कोई काले मोक्षनिइछा
थायजनहि ॥ केमके जिवने तो अनादिनि पंच विषयनीजइछाछेनेकोइदि वस भगवानने तो जाण्याज नथि माटेजे

वातजाणिनहोय तेनिर्इछाकेमथाय अनेजिवनेतोपंचविषयनिवासनायेकरिनेजन्ममृत्युनांअपारदुःखथयाकरे छे।।मारेते-
जिवनेतो सत्पुरुषकृपाकरिनेमोक्षनिइछाउत्पन्नकरावे छो। त्यारेईछाथायछे।।अनेभरतजिनिपेठेजेनेपोतानिमेळेमोक्षनि
इछाथाय।।तेपण पूर्वेसत्पुरुषेजकरावेलीछे।। तेकेविरितेसत्पुरुषमोक्षनिइछाकरावेछे।। तोप्रथमजिवनेचोविसतत्वना
जुदाजुदाविभागकरिनेदेहनेनाशवंतदुःखरूपकहिदेखाडे छे।।नेतेदेहसंबंधिपदार्थनेदेहनांजेसगासंबंधि तेसर्वनेज्ञानेक-
रिनेखोटांकरिदेखाडे छे।।अनेचोविसतत्वथिजुदोएवोजेजिवात्मानास्वरूपनुंसाक्षात्कारज्ञानकरावे छे।।नेतेआत्मानेविषे
परमात्मारह्याछे।।तेनास्वरूपनुंज्ञानकरावेछे।। त्यारेजजिवनेमोक्षनिइछाउत्पन्नथायछे।। अनेजिवनेतोजेमकोईकमांदोप-
ड्योहोय तेपोतानिमेळेओषधकरिनेसाजोथवानेसमर्थनथिमाटेतेनेतोकोईकवैदऔषधआपिनेतेनोरोगमटाडे त्यारे तेनेअ
न्नउपररुचिथायछे।। नेपछेतोअन्नखातोपणधरायनहि।। नेप्रथममांदोहोपत्यारेतोअन्ननजरेदिठुंपणगमतुंनहोय तेमजिव-
नेपंचविषयनिवासनारूपिरोगछे।।तेणेकरिनेमोक्षनिइछाथतिनथि।। नेतेनेतोवैदरूपिसत्पुरुषमळेनेतेजिवनेधर्मज्ञान
वैराग्यनेभक्तिरूपिऔषधआपिनेपंचविषयनिवासनारूपिरोगनेटळावे छे।।पछेतेनेभगवानभजवानेविषेअतिषेरुचि-
थायछेनेपछेकोईनोरोक्योरोकातोनथि।। जेममांदोनिरोगिथायनेपराणेखाधानुंमागिले।।केमकेदेहनुजिवनअन्नछे।।ते
मनिरवासनिकथयोएवोजेजियात्मा तेनातेजिवन तोपरमात्माछे।। अनेते परमात्माविनाक्षणमात्रपणतेणेरहेवायनहि।।
अनेएवोजेश्रद्धावाळोथयो तेतोअक्षररूपथईनेभगवाननीसेवामांअखंडरहे छेमाटेप्रगटभगवाननेभगवानना एकांतिक
पंचविषयनात्यागिसंततेनासमागमथकिजजिवनेमोक्षनिईछाथायछे।।नेतेजिवनोमोक्षथायछे।। ।।इति
श्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ।।संवत्।१९।।ओगणिशो।१६शोळना
कार्त्तिकवदि१०दशमिनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीरोईशाळामध्ये भक्तकोठारियनमालिआणंदजिने
घेरउत्तरादेबारओरडानिओसरिमांखुरसिउपरविराजमानथयाहता नेसर्वस्वेतवस्त्रधारणकर्‍याहतांनेपोतानामुखारविंदनि

आगलसाधुतथा हरिभक्तनिसभाभराईनेबेठिहती।पछेब्रवाडिग्राभुरामेप्रश्नपुछ्युंजेहेमहाराजजिवनेप्रगटभगवानमल्याहो
यनेतेनोसंगथयोहोयतोपण भगवानभजवामां श्रद्धाथतिनथिनेमोलुंनेमोलुंरहेवाय छे॥ तेनुंशुंकारणहशे।पछेमहारा-
जबोल्याजेएणेमनक्रमबचनेभगवाननोसंगनथिकर्यो॥ नेएकलोइंद्रियोयेकरिनेसंगकर्यो छे नेतेविषयनेरागेकरिने
अंतःकरणमांअस्फुरभावरह्योछे॥ माटेतेविषयनेज्यारेसत्पुरुषमुकावे छे॥ त्यारे तेनेअस्फुरभावआविजायछे॥ जेमभालदे
शनोकुवोहोय तेनेउपर पाणिमीठुंहोयनेजोउंडुंखोदे तो खारुंपाणिआविजायतेमजेनेइंद्रियोमां भगवाननोसंगथयोहो
यतेनेसत्पुरुषजो विषयनेमुकावेतो अंतरनाअस्फुरभावेकरिनेइंद्रियोमां संग थयोहोयतेनेपण टालिनाखे छे माटेइंद्रियोअंतः
करणनेअनुभव एत्रणे करिनेजेसंगथाय तेजखरेखरो संगकर्यो कहेवाय छे॥ अनेतेमांइंद्रियोमां संगथयो केने कहेवाय
तोस्थूलवैराटजेवा भगवानेजाण्या तेनेइंद्रियोमांसंगथयो जाणवो अनेअव्याकृतमायानेसूत्रात्मामाया तेनेजाणिनेतेथि
परभगवाननुंज्ञानथयुंहोय तेनेअंतःकरणे करिनेसंगथयो जाणवो॥ अनेप्रकृतिपुरुषनां कार्यनेजाणिने तेथि परजेसच्चिदान
न्दब्रह्म जे अक्षर तेनेपोतानुंस्वरूपजाणिनेतेनेविषेसदाय विराजमान एवाजेपरमात्मा भगवान तेना स्वरूपनुंजेनेज्ञा
नथयुंतेनेअनुभवेकरिनेज्ञानथयुंजाणवुं॥ अनेएवाजेअक्षरधामनाअधिपतिभगवान तेकृपाकरिनेमाराजिवात्मान
कल्याणनेअर्थेपोतानो दिव्यभाव्यछपाविनेमनुष्यजेवाथयाछे॥ एमजेअनंतऐश्वर्यनेअनंतप्रतापेयुक्तभगवानतेजआ
प्रत्यक्षमुनेमल्याछे॥ एवुंजेनेज्ञानथयुंतेनेसाक्षात्कार भगवाननोसंगथयो जाणवो॥ माटेइंद्रियोअंतःकरणअनुभव
नेसाक्षात्कार एचारप्रकारना ज्ञानेकरिनेजे प्रत्यक्ष भगवाननो संगकरे तेनेजखरेखरोसंग थयोजाणवो॥ अनेएवोजेनेसंग
थयो तेकोईनो रोक्यो रोकायनहि॥ नेकोईनेशब्देकरिनेमोलो पडे नहि॥ अनेसगांसंबंधिनातजातलोकनिलाजआदि
क जेअनंतप्रकार निमायातेएनेकोईआवरण करवानेसमर्थनथि॥ नेतेभक्ततो सर्वोपरिसुखनेपामे छे॥ ॥
॥ इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्।११।ओगणिशे॥

१८॥ शोलना कार्त्तिकवदि ११ एकादशिने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्णभगवान॥ ॥ गामश्रीरोईशालामध्ये भक्तवन
मालिआणंदजिने घेर उत्तरादे बारओरडानिओसरिमांढोलियाउपर विराजमानथया हता अने सर्वेश्वेतवस्त्रधारणकर्यां
हतां॥ नेपाघमां तोरालटकता हता॥ नेएक फुलनो गुछ हस्तकमलमां धारणकर्यो हतो॥ नेपोतानामुखारविंदनीआ
गलसाधुतथा हरिभक्तनि सभा भराईने बेठिहति॥ पछे गाम बलदाणा ना शा मुलजि भक्ते महाराजने प्रश्न पुछ्युं जे हे
महाराज एक ग्रहस्थ हरिभक्त छे तेने भगवानना स्वरूपनो निश्चय तो अडग छे ने भगवाननिआज्ञा प्रमाणे वरते छे॥ ने
ते त्यागिनि बरोबर आत्यंतिक कल्याण माने छे ते एनुं त्यागिनि बरोबर कल्याण थशे के नहिं थाय ते कहो॥ पछे महाराज-
बोल्या जे एग्रहस्थाश्रममां रह्यो छे तेएने कोईक विषयमां राग छे तेणे करिने रह्यो छे॥ केमके राग विना तो प्रगट भगवा-
ननो संबंध मेलिने छेटे ग्रहस्थाश्रममां रहेवाय नहिं॥ अने ते राग तो आत्यंतिक ज्ञान पाम्या विना टले नहिं माटे ग्रहस्थने पण
संतनो समागम करिने ज्ञान जरूर पामवुं जोईये॥ अने पंचविषयनि वासना टलि गई होय तेने कोईक प्रारब्ध कर्मने जोगे करिने ग्र
हस्थाश्रममां रह्यो होय ते तो स्त्रियादिक पंचविषयनो त्याग करिने उदासथको रहे पण संसारमां लोपाय नहिं॥ अने ते तो जेम पुछ
डि लुं ढोर होय तेने सिंगडे पुछडे झालिने ऊभुं करे त्यारे थाय ने पाछुं बेसे त्यारे पोतानि मेले उठे नहि ते मजे निरवासनिक होय ते तो पु
छडिलां ढोरनि पेठे सत्संगमांथि पोतानि मेले तो संसारमां जवानो संकल्प पण करे ज नहिं अने कोईक देशकालने जोगे करिने प
रमेश्वर अथवा मोटा संत ते संसारमां मेले तो ते जाय पण तेणे संसारमां रहेवाय नहिं॥ अने जेने कोईक विषयनि वासना होय तेने
ते विषयनि वासना टालवा सारु संतनो समागम करिने ते विषयना दोष जोवा ते मां स्त्रिनो राग जेने होय तेने एम विचार करवो जे
ए स्त्रि छे ते क्यांथि बनि छे॥ ने तेना अंग मां शुं भर्युं छे॥ तो हाड मांस नाडियो त्वचा रोम मल मुत्र परसेवो लाल लोई आदिक नकारि
वस्तु भरि छे॥ ने वलि स्त्रीनो देह केवो छे॥ तो जेम लघुसंका करवानि ख्याल होय ने तेमां हजारो मनुष्य लघु करता होय ने तेरवाल
अति दुर्गंधाती होय॥ ने तेमां लघु करनारो थाय ने कदापि पडे तो मोटे आडुं लुगडुं दे ईने अभावे मुक्तकर ते मजेने स्त्रिनो राग

होय तेने समाववा सारु अतिशेपापरुपने अनंतदोषे युक्तने नरकमां लेई जवानि बारि रुप जाणिने अभावे सहित स्तुसमे स्त्रिनो संग करे अने अंते देह मुक्या मोर स्त्रिनो त्याग करवो ॥ अने तेवि जरिते द्रव्यादि पदार्थ तेमां पण अनंत दोषने देखे जेए क पैसो भेगो करे ते मां पण पनर अनर्थ थाय छे। त्यारे एक पैसो थाय छे। अने ते द्रव्यने साचववु पडे ते मां पण केटला भयने क्लेश उत्पन्न थाय छे। अने पोताने तो एक टंक अन्न देहरक्षण ने अर्थे जोईये छिये माटे मुने धिक्कार छे जे प्रगट भगवानने जो ग मेलिने द्रव्यादिक पदार्थ मां बंधाई रह्यो छुं ॥ अने जो ते द्रव्य मां मारे वासना रहि जशे तो सर्पादिकनो मारे देह धरवो पडशे। ने मारा आत्मानुं अति शे भुंडुं थशे॥ एम समजिने द्रव्यनि वासनानो त्याग करे अने तेमज सारु सारुं खावानुं तेमां पण अनंत दोषने देखे जे आजि भने गलपण लागे छे त पारवा रुं खावुं मिठुं मोलुं लागे छे। ते जिभ तो मांसनो लोचो छे ॥ अने गल्याचि कणा खाटा खारा ते ना प्रमाणना करनाराने तेना भुक्ता तो वरुण देव छे ॥ अने जे हुं आत्मा छुं ते तो सदाय असंगि छुं ते सारुं सारुं खावे करिने सुखियो थाउं एवो नथि। अने जे बुंदे बुं खावे करिने दुःखियो थाउं एवो नथि अने देहमां जे प्राण वायु छे ते ने तो जेवुं तेवुं अहार मात्र जोईये छिये ॥ माटे सारु सारुं खावा सारुं प्रथा मारि अशुषशा सारु खोउं अने कोटि वरस सुधि गल्याचि कणा खाउं तो पण जिभ्या इंद्रि तृप्त थाय एवि नथि ॥ अने जो मारे सारुं सारुं खावामां वासना रहेशे तो विष्टामां किडो थवुं पडशे एवि रिते विचार करिने सारुं सारुं खाधा नि वासनानो त्याग करे छे अने तेमज स्नेहमां पण बंधनरुपि कोटान कोटी दोष देखे जे स्त्री छोकरां सगां संबंधि ते मां मारे स्नेह करिने प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध मुकिने बंधाई रह्यो छुं ॥ माटे मुने धिक्कार छे ॥ केम के प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध छे ते तो अनंत जन्मना सुकृत होय त्यारे थाय छे ते मुने आज प्राप्त थयो छे माटे मारा जेवो कोई अणसमजु नहि जे आ जगतनां स्त्रि छोकरां सगां संबंधि ते कोई भेगुं आव्युं नथि ने कोई भेगु जवुं नथि ॥ ए तो सौ सौ ने स्वार्थे भेगां थयां छे ने सौ सौनो स्वार्थ सरि रहे छे त्यारे राख्यां पण रहे तां नथि ॥ अने आज पण मारा मांथि स्वार्थ मटे तो मारु पण वांकु बोलेने तिरस्कार करे ॥ माटे मुने अज्ञाने करिने ते मां स्नेह रहि जशे तो मारे तेना भेगो चोरासिमां जन्म धरवो पडशे। से एकुतरो थशे तो मारे पण कुतरानो अवतार आवशे ने ए गधेडा थशे तो मारे पण गधेडानो अवतार आवशे ने ते वां दरां थशे तो

मारे पण बादरानो अवतार आवशे ॥ ए विरिते तेना भेगा चोरासिमां भुंडा भुंडा अनंत जन्म धरवा पडशे केमके जेम भरतजी रुषभदेव भग
गवानना पुत्र हता ने रुषभदेव थकि ज्ञानने पण पाम्या हता ॥ ने वैराग्ये करिने राज्यनो त्याग करिने वनमां गया हता ने त्यां जो दयाये
करिने मृगना बचांमां स्नेह कस्यो तो मृगने संगे करिने मृग थवु पड्युं माटे जो मारे स्त्रि छोकरामां स्नेह करिने संसारमां रहोछुं तो
जरूर चोरासिमां तेने संगे जन्म धरवा पडशे ॥ केमके भरतजिने तो वासना न होति । ने केवल दयाये करिने स्नेह हतो तो पण मृग-
नो अवतार धरिने रखडरवावुं पड्युं ॥ तो मारे वासनाये करिने स्त्रि छोकरामां हुं जोडाणो छुं ने तेमां स्नेह थाय तेमां शुं कहेवुं ए तो थाय ज
॥ ने तेना भेगा जरूर जन्म धरवा पडशे ने मारा आत्मानुं अति भुंडुं थशे एवि रिते पापरूप जांणिने स्नेहनो त्याग करे अने तेम ज मांनमांण
ण कोटानकोटि क्लेश देखे ॥ जेमां नेकरिने मिथ्या जक्तमां लोक लाजे करिने हुं बंधाई रहीश तो मारो जन्म खराब थशे केमके म
नुष्य आयुष्यनो तो पल मात्रनो पण निरधार नथि अने लोकलाजे करिने हुं संसारमां बंधाई रहिश ते लोकनि लाज तो मिथ्या छे के-
मके आ जगतनां स्त्रि छोकरा सगां संबंधि नात जात आदिक सर्वे मनुष्य ते ज्यां सुधि तेनो स्वार्थ सरे त्यां सुधि सारुं सारुं बोलशे
अने एनो स्वार्थ नहि सरे त्यारे एनां ए स्त्रि छोकरां सगां संबंधि सौ वांकुं बोलवा लागशे माटे मिथ्या मोटम्यना मांनमां मारो जन्म शा
सारुं व्यथा खराब करुं अने आ जीवे जगतने विशे केटलाक फेरा राजानां देह धरिने मोटम्य भोगविछे ने केटलाक फेरा देवतार्थ
ईने देवलोकनि मोटम्य भोगवि छे । तथा केटलाक फेरा ब्रह्मा थईने ब्रह्मलोकनि मोटम्य भोगवि छे ॥ माटे ते मोटम्य पण नरहि ने तेनुं सुख
ते पण नरह्युं ॥ अने तेणे करिने तृप्ति पण थई नथि ॥ तो आ लोकनि तुछ जे विने अनंत दुःखे युक्त एवि जे मोटम्य तेक्यां रहेवानि छे । ए तो नाशवंत छे
ने मिथ्या भ्रान्ति मोह ने राग तेणे करिने मोटम्य लाज आवरमानि छे ॥ माटे मिथ्या माने करिने भगवानना संबंधथी छेटे रहिने मारो देह पडे छे तो तेणे
करिने भूतप्रेतनो अवतार धरवो पडशे ने हेरान थईश ॥ ने अति दुःख पामिश एवि रिते पंचविषयने दोषे युक्त विचार करि ते ते विषयने पापे
रूप जाणिने अनादि ना जिवना शत्रु जाण । ने तेनो सर्वे प्रकारे त्याग करवो ने निरवासनिक थवुं ए सिद्धांत बारता छे ॥ केमके निर
वासनिक थया विना आत्यंतिक मोक्ष थाय नहि ॥ माटे जरूर निरवासनिक थवुं ते सारु भगवानना भक्त ने जगत थकि सदाय

उदासरहेवुं॥ अनेएविरितनोजेसत्संगिछेतेनिसर्वेवासनानिरपुलथायछेनेजोकोईजातनिवासनारहेनेदेहमुकेतोतेनेजरूर जन्मधरवोपडशेअनेपूर्वजन्मनिजेपरमेश्वरनिभक्तिनोनिश्चयछे॥ तेतोटलतोनथिनेतेणेकरिनेपाछोसावधानथायछे नेधर्मज्ञानवैरागनेमहात्मेसहितभक्तितेनेसिद्धकरेछेअनेतेयोगभ्रष्टकहेवायछे॥ अनेएवायोगिनेसेहेजेएवादेशकालरू डामांजन्महोयछेजेदेहनेदेहनासंबंधिमांप्रितिहोयजनहिअनेसत्यसाधुनेविषेतेनेसेहेजेजप्रितिथयाकरेएविरितनाजेहो यतेनेयोगभ्रष्टजाणवानेतेसंसारनोत्यागकरिनेभगवाननासंबंधमांअखंडरहेछेपणएवायोगभ्रष्टसंसारमांदेहनेदेहनासंबं धिनाजोडाव्याजोडातानथिअनेतेनेउपदेशनाकरनारासाधुतेसंसारमांजोडावेतोपणएवायोगभ्रष्टसंसारमांजोडायनहि॥ अनेभगवानपोतेएमआज्ञाकरेजेतुंसंसारमांरहेनेताहरूंकल्याणकरिशुं॥ तोपणएवायोगभ्रष्टसंस्कारिनिरवासनिकहोयतेने संसारमांरहेवायनहिकेमकेजेजेज्ञानेकरिनेनिषेधकर्योतेनुंपाछुंग्रहणथायजनहि॥ माटेसंतनोसंगकरिनेसहजेतोहमणां तत्कालवासनाटालोनेसहजेतोगमेतेदिवसटालोपणवासनाटलशेत्यारेआत्यंतिककल्याणत्यागिनिबरोबरथशेपणते- विनाथायनहिअनेआवारताबाईओहरिभक्तहोयतेनेपणएविरितेविषयमांदोषदुःखदेखिनेनिरवासनिकथवुं॥ ॥ ॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्॥१९॥ ओगणिशे॥७६नाकार्त्तिकवदि॥१२॥ द्वादशिनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीबोटादमध्येपटेलपरमजि कलथिवानेघेरउत्तरादेबारओरडामांढोलियाउपरविराजमानथयाहताअनेसर्वेश्वेतवस्त्रधारणकर्यांहतांनेमस्त- केगुलाबिरंगनोफेटोबांध्योहतोनेपोतानामुखारविंदनिआगलसाधुतथाहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठिहतिपछेमोरारजि ब्यासेप्रश्नपुछ्युंजेहेमहाराजजिवछेतेज्यारेभगवाननाअवतारथायछेत्यारेतेनुंभजनकरिनेनिरवासनिकथईनेअक्षर धाममांजायछेतेतोपाछाआवतानथितेकेटलाकअवतारथईगयातेमांघणाकजिवधाममांगयाछेअनेहजिकेटलाक भगवाननाअवतारथशेत्यारेपणतेनुंभजनकरिनेधामनेपामसेएविरितेजिवओछाथताजणायछेअनेजिवनथा

यतानथिनेअनादिनाछे नेअविनाशिछेनेअजन्माछे ते एविरितेओ छाघताथता तेजिव संसारमां थि खुटिरहेछे के नहि खुटिरहे तेकहो ॥ पछिमहाराजबोल्याजेस्योएनोउत्तरकरियेजे भगवानछे ते जिड नेचैतनबेशक्तियो छे तेबेशक्तियोवडेकरिने जगतनिउत्पति स्थिति नेप्रलयकरेछे ॥ अनेतेमां चैतन्यशक्तिजेजियशक्ति तेनेविषेजडशक्तीजेमाया तेकारणपणेरहि छे अने मायानेविषे जिवअनादिनारह्या छे। तेअनंतरह्याछे।।जेमपृथ्विमां बिजरह्युं छे तेमकारणमायाने विषेशुसप्तिअवस्थामांसन्यमायेअनादिनाजियरह्या छे तेतोउत्पतिमांआव्याजनथि ॥ नेआत्यंतिके प्रलयमांअनादिना छे ॥ पणउदयथयाजनथि कहे तांश्रष्टिमांआव्या नथिनेएतो सदाय मायामांनेमायामांछे अनेज्यारे भगवाननेउत्पत्तिकरवानिइछाथाय त्यारेअक्षरसामिदृष्टिकरे छे कहे तांप्रत्यक्षमनुष्यस्वरूपएवाजे भगवान्तिजे तेमनुष्यदेहनेधारण करिरह्यो एवोजेपोतानोएकांतिकभक्त अक्षररूप तेनेआत्यंतिक ज्ञानआपे छे।।पछे तेअक्षरमुक्तजे तेमुलपुरुषनेजगाडेछे।।केहे तांवासनावाला जिव छे तेनेज्ञानआपिनेतेनेअनादिनुंजेअज्ञान तेथकिजगाडे छे पछे तेपुरुषनेविषेअनादिनिजेकारणमायारहिछे तेजाग्रतथायछे।।पछे ते मायानेविषेअनंतजिवरह्याछे तेसर्वेपुरुषनेसंबंधेकरिनेउत्पन्नथायछे कहे तांअनादिकालनाशुसप्तिरूप कारण मायानेविषेजिवहता तेनेजाग्रतकर्याकहे तांइंद्रियोअंतःकरणसृजी आप्यां तेशासारुंसृजिआप्यां तो धर्मअर्थकामनेमोक्षनेअर्थेसृजिआपेछे ।।हवेतेप्रकृतिपुरुषथकि अनंतकोटिप्रधानपुरुषथायछे कहे तांपुरुषरूपएवोजे वासनिक भगवाननो भक्त तेनोजे नेसंबंध थायछे तेसर्वे जिवजाग्रतनेपामे छे कहे तांअज्ञानरूपितमजेअंधकाररूपमायाथकिजागिने भगवाननेभजे छे अनेते प्रधानपुरुषरूपजे भगवानना भक्त तेनेविषे जेकारणमाया छे तेमायामां अनंतकोटिरह्याछे तेसर्वेजाग्रतनेपमेछे एविरितेएक जिव भगवान सन्मुख थाय तो तेने जेवासनारूप कारण मायातेमांथिअनंतकोटि जिवरह्याछे तेउत्पन्न थाय छे।। मारेजिवतो छेएटलानेएटला छे पण जेजिवमुक्त थायछे तो तेनि वासनापण मुक्तथाय छे।। त्यारेतेवासनारूप जेकारणमायातेने विषेजेअनंत कोटि जिवरह्याहोय तेसर्वेउत्पन्न थायछे। जेमवडनुंबिजहोयतेनेपृथ्विनेजलनोसंबंध

थाय त्यारे एक बिज थकि तेनां फोतरां उपजे कारण मा या ते मांथि प्रक्षथई ने अनंत नवां बिज थाय छे अने ते बिज मुक्त थाय छे।
कहे तां ते बिज फरिने उगतुं नथि तेम एक जिव मुक्त थाय छे त्यारे ते निकारण माया मांथि अनंत जिव रह्या हता ते उदय थाय छे मारे
अनंत कोटि मुक्त थई गया ने अनंत कोटि भगवान भजिने मुक्त थशे पण जिव कोई दिवस खुटि रहे एम नथि अने एम ओछा थ
ता होत तो तो आज खुटि पण रह्या होत माटे अनंत मुक्त थशे पण जिव कोई दहाडे खुटि रहे एम नथि ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे।।पं
छे अक्षरमुक्तानंद स्वामिये प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज तमे प्रथम जे उत्पत्ति कहि तेने सारि पेठे समजाणि नहि ते फरिने कहो प
छे महाराज बोल्या जे प्रत्यक्ष प्रमाण एवा जे मनुष्याकृति भगवान ते जे सर्वना कारण छे ने सर्वना आधार छे ने सर्वना स्वामि
छे अने ते भगवाननो जेने इंद्रियो अंतःकरणने अनुभवे करिने साक्षात्कार संबंध थाय छे।। ते जिव अक्षर ब्रह्मरूप मुक्त थाय छे
अने एवो जे अक्षरमुक्त ते अखंड भगवाननि सेवामां रहे छे।। अने भगवान पण तेना उरमां अखंड निवास करिने रहे छे अने एवो
जे अक्षरमुक्त ते भगवाननि इच्छाने जाणे छे ते भगवाननि इच्छा छे तो सर्वे जिवोनो मोक्ष करवो एम इच्छा छे एम जाणिने पुरु
षरूप जे वासनावाला जिव तेने अज्ञान थकि जगाडे छे ने ज्ञान आपे छे।। पछे ते पुरुषरूप जे भक्त ते पोतानि वासनारूप जे मु
ळ प्रकृति तेवडे करिने ते अक्षरमुक्तरूप साधु तेनि सेवा करे छे ने ते सेवाये करिने वासनारूप मायाने विषे अनंत कोटि
जिव रह्या छे ते सर्वे उत्पन्न थाय छे ने ते मूळ मायाथकि उत्पन्न थया एवा जे अनंत कोटि जिव तेनुं नाम प्रधानपुरुष कहेवाय
छे।। एवि रिते उत्पत्ति थाय छे अने जेने प्रत्यक्ष भगवाननो साक्षात्कार संबंध थाय कहेतां आत्यंतिक ज्ञानने पामे ते सर्वे
अक्षरधाममां जाय छे ने ते अक्षरने पाम्यो जे मुक्त ते निवासनारूप जे माया तेना त्रापामि त्यारे तेने विषे हता जे अनंत कोटि
जिव ते सर्वे प्रकृतिपुरुषना लोकने पामे छे अने ते मुक्त आ लोकमां होय त्यां सुधि जे जे जिवने संबंध थाय तथा अन्न आ
दिक देहरक्षण सारुं जमे तथा नदि तळावमां नहाय ने ते जळमां माछलां आदिक जिव होय तथा ते जळने जे जे पशु पं
खि मनुष्य ना आदिक पिये एवि रिते जे जे जिवने संबंध थाय ते सर्वे जिव मोक्षने मारगे चाले छे अने एवि रिते प्रत्यक्ष भग-

वानना संबंधमां जे जे जिव आवि जाय ते सर्वे मुमुक्षु थाय छे अने पुरुषरुप जे वासना वाला भगवान्ना भक्त छे तेना संबंधमां
जे जे जिव आवे छे ॥ ने सर्वे प्रधानपुरुषना लोकने पामे छे ॥ एविरिते जगतनि उत्पत्ति थाय छे अने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना
एकांतिक अक्षररुप साधु तेना संबंधमां जे जे जिव आवे छे ॥ ते सर्वे जिव मोक्षने मार्गे चाले छे ॥ तेमां मनुष्य छे नेतेने भगवान-
ना निर्वासनिक संतनो संबंध थायने ते मन कर्म वचने करीने भगवानने भगवानना संतनि सेवा करे तो ते ज्ञानने पामीने वास
ना टालिने अक्षरधामने पामे छे अने पशु जे घोडां बलद हाथि ते भगवानने भगवानना संतनि सेवामां आवे तथा गाय भेंसनुं
दुध जमाय तथा नदि तलावमां नहायने तेमां जे जिव होय तथा तेजल उने जे जे पिये ते सर्वे बिजे जन्मे मनुष्यनो अवतार धरि
ने भगवान् भजिने मोक्षने पामे छे ॥ अने जे प्रत्यक्ष भगवानना सकाम भक्त छे नेतेना संबंधमां जे जे जिव आवे छे नेते भक्तमां
जे थो जे थो संकल्प ते ते लोकमां कर्ममार्गे जिव चाले छे अने ते भक्तने देवलोकनि वासना होय तो पोते इंद्र थाय छे ने पोतानि जे
कारण माया तेने विषे अनंत जिव रह्या छे ते सर्वे उत्पन्न थईने देवलोक बधु भराई जाय छे अने जेने ब्रह्मना लोकनि वासना हो
य ते एविरिते ब्रह्म थईने ब्रह्मलोक वसावे छे ने जेने वैराटना लोकनि वासना होय ते वैराटनो लोक वसावे छे ॥ ने प्रधानपुरुष
ना लोकनि जेने वासना होय ते प्रधानपुरुष पोते थईने ते लोक वसावे छे अने जेने प्रकृतिपुरुषना लोकनि वासना होय ते
प्रकृतिपुरुषनो लोक वसावे छे अने ए सर्वे सउ सउनि आवरदा खुटे त्यारे पाछा प्रलयमां जाय छे तेमां नित्य प्रलयमां देव दैत्य
मनुष्यना देहनो जे क्षणक्षण प्रत्ये नाश थाय तथा सुषुप्तिमां जाय ते पण नित्य प्रलय छे ने निमित प्रलयमां ब्रह्मानि रात्रि प
डे छे ॥ त्यारे अगियार लोकनो नाश थाय छे ॥ अने प्राकृत प्रलयमां वैराटना सपांमि ने प्रकृतिनुं कार्य प्रकृतिने विषे लय पा
मे छे आत्यंतिक प्रलय जे ज्ञान प्रलय थाय छे त्यारे प्रकृतिपुरुषनो लोक नाश पामे छे ॥ ने ते पुरुष अक्षरने पामे छे कहेतां प्रत्य
क्ष भगवानने मलिने जे जिव ते भगवान थकि ज्ञानने पामिने मूलप्रकृतिरुप जे वासना तेने टालि तेने आत्यंतिक प्रलय थयो
ने ते भक्त अक्षरधामने पामे छे ॥ ने तेनि मायामां रहेता जे जिव ते सर्वे मुमुक्षु थाय छे ॥ अने ते जीव एक बे त्रण चार जन्मे पण

प्रत्यक्ष भगवानने मलिने ज्ञानने पामिने अक्षरधामने पांमे छे माटे एक भक्त निरवासनिक थईने अक्षरधामने पांमे छे तो तेने वांसे अनंतकोटि जिव निरवासनिक थईने अक्षरधामने पामे छे माटे भगवाननो संकल्प जे घणाक जिवोनो उधार करवो ते एभ-क्त थकि घणाक जिवनो उद्धार थयो तेसारु निरवासनिक भक्त उपर भगवान घणा घणा प्रसन्न थाय छे अने एवा निरवासनि-क भक्त तो भगवानने प्राण जेवा वहाला छे अने पूर्वे कह्या जे सकाम भक्त ते तो पोते पण त्रण प्रकारना प्रलयमां कोटि कोटि फेरा उपजे छे अने कोटि कोटि फेरा नाशने पामे छे॥ अने महाक्लेशने पामे छे अने पोतपोतानि मायामांथि उत्पन्न थया जे जिव ते पण तेने संबंधे करिने सर्वे विषेई थाय छे॥ ने ते भेगा सर्वे जिव उत्पत्ति स्थिति ने प्रलयमां कोटि कोटि फेरा आवे छे ने महा कष्टने पामे छे माटे एक भक्त प्रगट भगवानना संबंधने पामिने सकाम रह्यो केहेतां वासना न टालि तो ते निवासना रूप जे मुलमाया ते थकि अनंतकोटि ब्रह्मांड उपज्या ते सर्वे जिव विषेई थई गया ते वारंवार उत्पत्ति स्थिति ने प्रलयमां आव्या करे छे माटे एक भक्त सकामि थयो तो अनंतकोटि जिवोने सकामि कर्या तेणे करिने भगवान् तेना उपर अत्यंत कुराजि थाय छे केमके भग-वानने प्रगट थवानुं कारण शुं छे तो जिवोने निरवासनिक करिने अक्षरधाममां लेई जवा तेसारु भगवान् प्रगट थाय छे ते तो ते भक्ते उलटा अनंत जिवोने सकामि करिने भगवानथि छेटं पाड्युं तेसारु भगवान तेना उपर अत्यंत कुराजि थईने मूलप्रकृतिपु रुप करे छे॥ ते कोटि कोटि युग वहि जाय तोपण त्यांथि छुटको थाय नहि॥ तेसारु प्रत्यक्ष भगवानने पामिने तेथकि ज्ञान सिद्ध करिने वासना टालिने ब्रह्मरूप थईने अखंड भगवाननि सेवामां रहेवुं अने आ जे वार्त्ता ते अवश्य जरुर समजवानि छे अने एवार्त्ता अमारा अंतरनो गव्हितार्थ छे ते तमने आज कह्यो छे तेने सत्संगमां प्रवरतावजो॥ ॥इति श्रीमुख सिद्धांत समाप्तः ॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत् १९ओगणिशे १६शोलना कार्तिक वदि १३तेरशने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री बोटाद मध्ये पटेल परमजि कलथिया ने घेर उत्तरादे बारओरडानि ओसरिमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता ने स्वेत सुरवालने अंगरखुं पहेर्यां हतां ने गुडोरेटो ने सोनेरि पाघ धारण करि हति ने कसुंब

लसेलुंएककेहेडेनेएकरवभेधारण कर्युंहतुं ।।अनेसर्वेअंगनेविषे पुष्पनांआभूषणधारण कर्यांहतांनेकंकुनो चांदलोकर्यो ह
तोनेपोताना मुखारविंदनिआगळ साधुतथादेशदेशनाहरिभक्तनिसभा भराईने बेठाहता तिपछे महाराज बोल्याजेआजतो
कांमरूदेशनिवातकहेवि छेजेकामरुदेशमांएमकहे छे जेते देशमां स्त्रियोनुंराज्यछे तेपुरुषनेदिवसे बलदकरेछे।तेरा
त्रिपडेछे त्यारेधणिकरे छे।।हवेतेकामरुदेशतेकियो ।। तोकामरूपिकामरुदेश छे तेकामस्त्रिनेविषे छे।।अनेकामनेवशाए
वाजेकामिपुरुष तेकामनेवश थयोथको स्त्रिनेआधिन थईने दिवसेबलदनि पेठेते स्त्रि साहुरातादिवस कमायाकरे छे.
अनेरात्रिनेविषे स्त्रि छे तेपण कामनेवस थईने पुरुषने धणि करे छे अने बलदने तो कोईकहाकनारो रखडुजोईये छिये तेतेने
रात्रोदोकरिने धोसरामांजो डिनेजो तरवालिनेपरोणोलेईहाके छे।। त्यारे चाले छे तेपण पहोरबेपहोरनुंनिमीत होय त्यां
सुधिहाकिने छोडिमुके छे।।अनेकामनेवशाएवाजेकामिपुरुषते तो कामनायेकरिने स्त्रिनेआधिन थईने वगरपरोणेनेव
गरराशेनेवगरहाकेएनिमेलेरात्यनेदिवस वह्याकरे छे तेराजा रंक शोठ साहुकार पंडितपुराणि तथा भारेभारेबुद्धिवाला
तथा योगिय तितपस्वि संन्यासिआदिक सर्वे विषयनिवासनारूपी कामनाएकरिने जेजे स्त्रिनेआधिन थया छे ते सर्वेका
मरूदेशमां छे तथा देवलोकमां तथा ब्रह्मलोकमां तथावैराटना लोकमां तथाप्रधानपुरुषना लोकमां तथामूलप्रकृतिपु
रुषना लोक सुधि सर्वे कामरुदेशमां छे।।अनेएक बाजे लोकनेतेते लोकोमां पुरुषने स्त्रिनी कामना छे तो ते कामरुदेश-
मांज छे।।अनेस्त्रिनिज्यांसुधि पुरुषनि कामना छे त्यां सुधिते स्त्रि कामरुदेशमां छे।।अनेस्त्रियो कामवश थईने पुरुषनिदा-
सियो थईछे अनेपुरुषकामनेवश थईने स्त्रियोनादासथया छे।। माटेकामनाएंकरिने स्त्रिनेवश पुरुष नेपुरुषनेवश स्त्रि तेज
कामरुदेशमां छे।।पण ते विनाबिजो कामरुदेश नथि।।अनेस्त्रिने पुरुषएबो जेआकार बंधाणो छे।।तेपण कामनायेकरि
नेबंधाणो छे अने जे आत्मा छे तेतो स्त्रियेनथि ने पुरुषे नथी अनेकामनारूपीजे माहामाया तेथिपर एवुंजे अक्षर ब्रह्म त्यां का
मरुदेशनथि।।अनेत्यां स्त्रिपुरुषएबो आकारपण नथिअने अक्षर धामनेविषे तोब्रह्ममयतनुंवाळा अनंतकोटिमुक्तर-

त्याछे ।।अनेएसर्वेनाआधारनेसर्वेनास्वामिनेसर्वेनेउपासनाकरवाजोग्यएवाजेपरमात्मापुरुषोत्तमभगवानतेनेसुखे
करिनेसर्वेमुक्तमहासुखियाछेअनेतेसुखअविनासिछे।।नेअखंडछे।।नेतेसुखमायापरछेअनेएवाजेपरमात्मातेजकृ-
पाकरिनेमनुष्याकृतिनुधारणकरिनेपृथ्वीउपरपधारेछे त्यारेतेभगवानजेतेस्त्रिपुरुषनेमलेनेतेनेसुखेकरिनेसर्वेमुक्त म-
हासुखियाछे ।।अनेतेसुखअविनासिछे नेअखंडछेअनेतेसुखमायापरछे अनेएवाजेपरमात्मा तेजकृपाकरिनेमनुष्या
कृतिनुंधारणकरिनेपृथ्वीउपरपधारेछे त्यारेतेभगवानजेतेस्त्रिपुरुषनेमलेनेतेनेज्ञानेकरिनेभगवान्पोतानास्वरूपनो
निश्चयकरावेछे त्यारेतेनिजकामरुदेशनारुपिवासनाटलेछे।अनेतेजकामरुदेशनोत्यागकरेछे अनेते मुक्तअक्षरब्र
ह्मरूपमहामुक्तथायछे माटेपूर्वेकह्याजेदेवब्रह्मानेप्रकृतिपुरुषसुधिसर्वेनेप्रत्यक्षभगवाननो साक्षात्कारसंबंधथशेअ-
नेतेभगवाननास्वरूपनाज्ञानेकरिने निश्चयथशेत्यारे तेसर्वे निकामनारुपिवासनाटलशेतेनेकामरुदेशनोत्यागकरेछेत-
था तेप्रत्यक्षभगवानथकिज्ञानने पामिने सिद्धदशानेपाम्याएवाजेभगवाननाएकांतिकसाधु तेपणजेनेज्ञानआपिनेभग
वाननास्वरूपनोनिश्चयकरावेछे तोतेनिकामनारुपिवासनाटलेछेनेतेकामरुदेशनोत्यागकरेछे नेब्रह्मरूपथईनेअक्षर
धामनेपामेछे माटे कामनेवशथईनेपुरुषस्त्रिनेवशनेस्त्रिपुरुषनेवश तेजकामरुदेश छे।।अनेकामरुपिवासनाजेनिटलेते
कामरुदेशमांनथि पणएमकोईकहेजे क्यांकबिजामुलकमांकामरुदेशछेएवातखोटिछे नेकोईएमकहेजेहुंजोईआव्यो
छुं।।तेएमकहेनारोदंभिछे।।नेधुत्तोछे।।पणबिजेकांईकामरुदेशनथिअनेकोईकमोटेपुरुषे कामरुदेशकह्योहशे तेपण
आअमेकह्योजे कामरुपिकामरुदेशतेजकह्योछे पणबिजेक्यांई कामरुदेश नथि मारेतेमहत्पुरुषनोआश्रयकरिनेज्ञा
नपामिनेकामरुपिवासनाटालेतेजकामरुदेशनेतजेछे अनेजे कामनेवसछे ते कामरुदेशमांछेनेतेजन्ममरणना
दुःखनेपामेछे माटेआजकामरुदेशनोत्यागकरवानो समोआव्योछे ।।तेसावधानथईनेप्रत्यक्ष भगवाननोदृढआसरो
करिनेधर्ममांरहिनेदेहथिजुदापोतानाआत्मानेमानिनेप्रकृतिनुंकार्यसर्वेनेनाशवंतजाणिनेपंचविषयनीवासना

रुपिकामरुदेशनोत्यागकरिनेभगवानभजिनेअक्षरधामनेपामधुं॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥

॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्।११। ओगणिशे ॥१६॥ शो ऌना कार्त्तिकवदि १४ चतुरदशिनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवान्गामश्रीबोटादमध्येपटेलबाईसोनबाने घेरजमवापधार्याहताने उगमणेबारओरडानिओसरिमांसेजनेसमेढोलियाउपर विराजमान थयाहताने सर्वेसोनेरिवस्त्रधारणकर्याहतां अनेपुष्पनांआभूषण सर्वेअंगमां धारण कर्याहतां नेपोतानामुखार्विंदनिआगलसाधुतथाहरिभक्तनिसभा भराईनेबेठिहति पछेमहाराजनिआरत्तिधून्यकरिनेसर्वेसभाबेठि पछेहरखचंदनेमोतीबेभाईबोल्याजेहेमहाराज जिवनुअतिशेसारुंकेमथाय तेकृपाकरिनेकहो पछेमहाराजबोल्याजेजिवनेसारुंतेशुं छे तो सुखथाय तेसारुं छे॥ अनेदुःखथायतेभुंडुं छे॥ मांटेदुःखशुं छेतो जिवनेपंचविषयनिवासनायेकरिनेजन्ममृत्युनेपामे छे। एजमहादुःख छे॥ जेमकोईक मनुष्यनेआलोकमांलाखोरुपियानुंकरजथइगयुंहोयनेतेजेमकरजमांबंधाईजायनेतेमहादुःखनेपामे छेअनेतेने लाखरुपियानुंकरज छे ने सोरुपियानुंघरमांखरच छे नेपचासरुपियानोकमाउ छे। तेकोईदिवसकरजबहारथायजनहि मांटेएनेकरजबहारथवानो एकउपाय छे जेतेकरजनोमागनारो जेशाहुकार छे तेप्रोकोईक रितेराजिथईनेतेएमकहेजेतुंअमाराभेगोरहेनेअमारुंकामकाजकहियेतेप्रमाणेकरनेतारेमाथेकरजछे तेसर्वेबालिनाखिशुनेअन्नवस्त्रपणआपिशुं॥ मांटेएविरितेनकरजोथईनेसुखियोथाय॥ पण तेविनासुखीयोथायनहि॥ एदृष्टांतनुंसिद्धांतएछे जेजिवेअज्ञानेकरिनेविषयवासनावडेअनंतपापकर्या छे॥ तेपापरुपिजेकरज तेमांजिवगुंथाणो छे॥ अनेतेपापेकरिनेजिवनिबुद्धिअतिशेमलिन थईगई छे॥ तेणेकरिनेसुकृत करवानेसमर्थथतोनथि अनेउलटोजिवदिवसेदिवसेपापकर्मकरिनेवधारेवधारेबंधातोजाय छेनेतेणेकरिनेजन्ममृत्युरुपमहाकष्टनेपामे छे तेकष्टरुपिकरजथकि पोतानिमेलेकोईजिवमुकावानेसमर्थनथि॥ एतोसर्वकारणएवाजे॥ कर्त्तुमकर्त्तुमन्यथाकर्त्तुंसमर्थजेहरितेजिवनिउपरकृपाकरिनेतेनांपापरुपिकर्मनेज्ञानेकरिनेबालेत्यारेजतेजिववासनारुपिमहाकरज थकिमुकाय छे ने जिवनुं अतिशेसारुंथाय छेनेम-

हास्क रवियो थाय छे माटे पंच विषय नि वासना टळे ते जजिवनुं अतिशे सारुं छे ।। ने विषय नि वासना छे एजजिवनुं अतिशे भुं
डुं छे ।। तेके थि रि ते वासना थ कि जिवने मुकावे छे ।। तो पोताने शरणे आव्यो जे जिव तेने अधर्मे करिने इंद्रियो भ्रष्ट थई गयां छे ।।
तेने ज्ञानदाता छे ते नियमे करिने धर्म मां रखावे छे ।। तेणे करिने इंद्रियो नां पाप बळे छे ।। अने अज्ञाने करिने आत्माना स्वरुपने
भुलिने देहने विषे अहंबुद्धि ने देहसंबंधि पदार्थने विषे ममत्वबुद्धि तथा देहनां सगां संबंधि मां अज्ञाने करिने जिव एकरस थई
गयो छे तेने शांख्य शास्त्रने ज्ञाने करिने आत्माने विषे स्थिति करावे छे ।। ने देहादिक सर्वे थी जिवने जुदो पाडे छे तेणे करि
ने अंतःकरण नां पाप बळे छे अने जिवने जे अनादिनि कारण वासना छे तेने भगवाननो अलौकिक महिमा तथा भगवान
ना धाम नुं जे अलौकीक स्रख तेनुं ज्ञान करावि ने पछे भगवानना स्वरुपनुं इंद्रियो अंतःकरण अनुभवने साक्षात्कार प्रत्यक्ष ज्ञा
न करावि ने कारण वासना टळावे छे ।। तेणे करिने जिवनां सर्वे पाप बळि जाय छे ।। अने एवो जे निरवासनिक भक्त थयो ते भगवा-
नना स्वरूपमां महात्मे ज्ञाने सहित जोडाय छे ।। ने ते भक्त ब्रह्मरूप थईने भगवानना साधर्मपणाने पामे छे ने अपार स्रखीयो
थाय छे ।। माटे भगवान् भजिने वासना टाळिने भगवानना एकांतिक भक्त थवुं एजजिवनु अतिशे सारुं छे ।। ।।
इति श्रीमुख्यसिद्धांत समाप्तः ।। ।। श्रीहरिकृस्णाय नमो नमः ।। ।। संवत १९ ओगणिशे १६ शोल-
ना कार्त्तिकवदि ३० अमासने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान ग्राम श्रीबोटाद मध्ये पटेल सुरिबापुतलिने घेर उत्तरादा ब
रओरडानि ओसरिमां ढोलिया उपर विराजमान हता ने स्वेत स्रखाल नेअंगरखु धारण कर्यां हतां ।। अने गुढो रेटो पहेरिने उपर क
संबल से लुंबाध्युं हतुं ।। ने एक रवभे नाख्युं हतु ।। ने सोनेरि पाघ बांधी हति ने तेमां फुलना तोरा लटकता हता ने कंकुनो चांद लो
कर्यो हतो ।। ने कंठमां घणांक पुष्पना हार धारण कर्या हता ने बे कान उपर पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता ।। ने पोताना मुख्या
रविंदनि आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनि सभा भराईने बेठि हति पछे जाळाजसा भाईए प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज भग-
वान प्रगट थाय त्यारे ते भेगा मुक्त पण केटलाक जन्म धरता हशे तेशा लक्षणे करिने ओळखयाजे ओ मुक्त छे ते कहो ।।

पछे महाराज बोल्या जे जे मुक्ते देह धर्यो होय तेने यथार्थ तो भगवान एक जाणे छे पण बिजो थायथी न जाणे अने ते मुक्त ने पण ख-
बर न पडे जे हुं मुक्त छुं के मके भगवाने एनुं ऐश्वर्य छपावि राख्युं छे अने जे दैविने मुमुक्षु जिव होय ते उपला आचरणे करिने ओल-
खे छे ।। ते उपला के बोल लक्षण होय तो जे मुक्त होय ते संसारमां उदास रहेतो होय ने देहने देहना संबंधिमां बहु हेत न होय अने पंच
विषयमां पण लोलुप न होय ने भगवान नि कथा वार्ता सांभलवामां तेने हेत होय ने देवमंदिर दर्शने जवुं तथा साधुनि परिक्षा क-
रिने धर्मवाला होय तेनो समागम करिने ज्ञान पामवानो ईसक होय अने तिर्थ व्रतादिक कर्यामां स्रधा होय अने सर्वे इंद्रियो तेने नि-
यममां होय अने मनुष्याकृति एवा जे राम कृष्णादिक भगवानना अवतार तेने विषे तेने अतिशे आस्था होय अने पूर्वे राम कृष्णादि-
क प्रगट भगवानने पाम्या जे भक्त तेनो पण महिमा बहु समजे अने पोताने प्रगट भगवान मलवा नि अतिशे मनमां आतुरता होय
अने ते भगवान प्रगट थया एवुं काने संभलाय तो तत्काल संसारनो त्याग करिने प्रत्यक्ष भगवान पासे जाय ने तेने विषे हेत करि-
ने अतिशे चोटि जाय पण कोई मत पंथनो रोक्यो रोकाय नहिं ।। तथा मा बापनो रोक्यो रोकाय नहिं ।। एवां जेनां लक्षण होय ।।
तेने एम जाणवुं जे आ पूर्वनो मुक्त छे ते आ धर्मानंद स्वामि तथा अक्षरमुक्तानंद स्वामिने विषे एवां मुक्तनां गुण सर्वे छे माटे ए
बे साधु पूर्वना मुक्त छे ।। अने ए बे साधुने विषे कोई काले माया प्रवेश करि शके एम नथि माटे ए बे साधुने विषे जेने प्रिति पशे ।।
ते जियमां याथि मुकाईने महामुक्त थईने मारा अधिना सिधामने पामशे एम उत्तर करिने पछि वलि महाराज बोल्या जे चि-
दाकाश छे तेने विषे पुरुष रह्यो छे ।। ते पुरुषना संकल्पे करिने अनंत ब्रह्मांडनि उत्पति थाय छे ।। जेम आकाशने विषे वायु रह्यो छे
ते एकएवो वायु वाय ते आकाशमां अनंत वादलां उपजे छे ने वलि एकएवो वायु वाय ते सर्वे वादलांनां नाश थई जाय अने ज्यारे वाद-
लां थाय छे त्यारे आकाश भराई जाय छे ।। ने सूर्य पण ढंकाई जाय छे ।। ने सूर्य नो प्रकाश तो घणो छे तोपण वादलां घडे करिने दे-
खातो नथि तेम सूर्य ने ठेकाणे जिवात्मा छे ने वासना रूपि वायु छे ते वासना रूपि वायुये करिने वादलां रूपि देह उत्पन्न थाय छे ।।
ने देह देखाय छे पण आत्मा नथि देखातो अने ज्यारे शुद्ध विचार जे ज्ञान ते रूपि वायु वाय तो वादलां रूपि जे देह तेनो अहंकार टलि जा-

यछे॥ त्यारे सूर्यरूपजे आत्मा तेसाक्षात्कारदेखायछे॥ने ते आत्मा ब्रह्मरूपथाय छेनेपरब्रह्मजे भगवान् ते साक्षात्कारदेखा
यछे॥ ने ते भगवानना स्वरूप मांहे ते करिने जोडाईजायछे मारे शुद्धविचाररूपि वायुयेकरिने वादलांरुपिवासनाथकी उ
पन्यो जे देह तेनो अहंकार टलिजायछे॥ ते शुद्धविचाररूपिवायुतो मायापरजे चिदाकाश कहेतां अक्षरब्रह्म तेमां रह्यो छे जेम
वायु आकाशमां रह्यो छे तेम शुद्धविचार अक्षरथकि आवेछे पण तेविना शुद्धविचार आवेनहि अने अक्षर छे ते तो भगवानपु
रुषोत्तमना अंगनो प्रकाशछे कहेतां प्रत्यक्ष भगवाननो जे प्रकाश जे आत्यंतिक ज्ञान ते जेना आत्मामां साक्षात्कार थयुं एवा
जे संत तेने विषे शुद्ध विचार रह्यो छे अने ते संतने ने भगवानने अखंड संबंध छे मांटे भगवानपासेज शुद्धविचार छे ते भगवान
ज्यारे कृपा करिने अनंतकोटि जिवनो उद्धार करवासारु पोतानासंत सहित मनुष्याकृतिनुं धारण करेछे पछे भगवानने भग
वानना संतने शरणेजे जिव आवेछे तेने शुद्धविचार आपिने अधर्मथकि मुकाविने त्रणदेहने त्रण अवस्थाने त्रणगुणने तेपु-
णथकि थयांजे चोविसतत्व ते सर्वे वादलांरुपिमाया छे तेने ते आंख्य विचाररूपीवायुयेकरिने नाश कराविने सूर्यरूपि
जे आत्मा तेनेशुद्ध करिने पोताना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय करावेछे॥ त्यारे ते जिव माया ने तरिने ब्रह्मरूप थईने
अक्षरधामने पामेछे॥ मारे कुविचार ने दुराचरण तेनो त्याग करिने सदाचरण ने शुद्धविचार राखिने भगवान भजवा ए
ज जिवनि अतिहित वारता छे॥ ॥इति श्री मुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्री हरिकृष्णायनमोनमः
॥ ॥संवत् १९ ओगणिशे १६ शोल ना मागसर शुदि १ पडवाने दिवसे महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम
श्री बोटाद मध्ये भक्त खेताजिनि स्त्रि जामबाने घेर जमवा पधार्या हता ने त्यांउगमणे बारओरडानिओसरिमां ढोलियाउ
पर विराजमान हता अने सर्वे जरियानि वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनि आगल साधु तथा देशदेशना हरि
भक्तनि सभा भराईने बेठि हति पछे भक्त खेताजि भाथि महाराजने पगे लागिने एकजाईना पुष्पनो गुछ करेणनि कांब-
मां गुंथेलो ते महाराजना हस्तकमलमां आपिने सभामां बेठा पछे तेणे हाथ जोडिने प्रश्न पुछ्युं॥ जे हे महाराज शास्त्र

मांएमकहे छे जे भगवानना धाममां अहिंथि पाधरुंनथिजवातुं नेप्रथम देवलोकमां जवुंपडे छे ने पछे वैराटना लोकमां जवाय छे नेपछे प्रधानपुरुषना लोकमां जवुं पडे छे॥ नेपछे प्रकृतिपुरुषना लोकमां जवायछे नेपछे अक्षरधाममां जवायछे माटेत मेअक्षरधामना अधिपति मल्याछो ने त्यांजवुं पडे त्यारे तो हेरानथाय तेकेमहशे तेकहो ॥ पछे महाराजबोल्याजे जेमअहिंथी भावनगर जवुं होय त्यारे वचमांजेजे गाम आवे त्यांथईनेजजवाय पण ते विनापाधराजवाय नहिं॥ तेम भगवानना धाम आडा जिवने नवआवरण छे ते आवरण भेदीने भगवानना धाममां जवायछे॥ तेनवआवरण कियां तो पृथ्विजल तेजवायु आकाश अहंकार महत्तत्व प्रधानपुरुष ने प्रकृतिपुरुष ए रिते नव आवरणछे हवे ते आवरण कहियेछियेजे जेम ब्रह्मांडमां आवरण कह्यां ने तेथि पर भगवाननुं धामछे॥ नेतेमां भगवानरह्या छे॥ तेम आ पिंडमां पण नवआवरण छे ने तेथि पर जिवात्मा छे ने ते जिवात्मा ने विषे भगवानरह्या छे॥ नेते भगवान अक्षरधामने विषे रह्याथका अनंतकोटि ब्रह्मांडमां सर्वे जिवो प्रत्ये अंतरयामि पणे रह्याछे पण जिवने ज्यां सुधि मायानुं आवरण छे त्यां सुधि जिव भगवानने जाणतो नथि अनेपंचविषय निवासनाये करिने जन्ममरणना कष्टने पामे छे॥ तेकष्टने भगवान जाणे छे ते भगवान महादयालुंछे तेकृपाकरिने अनंतकोटिजिवोनां कष्टटालवासारुं पृथ्विउपर मनुष्याकृतिनुं धारण करे छे त्यारे ते भगवानने शरणे जे जिव आवेछे तेनेपोताना स्वरूपनो निश्चय करावीनेमायानां आवरण भेदावेछे तेमां प्रथम इंद्रियोमां निश्चय करावेछे नेपछे अंतःकरणमां निश्चयकरावेछे नेपछे जिवमां निश्चय करावे छे तेमां जेने इंद्रियोमां भगवानना स्वरूपनो निश्चय थयो होय ते निइंद्रियो सर्वे नियममां होय पण भगवाननि आज्ञा कोई रिते लोपे नहिं कहेतां माईक उत्तम पंचविषयनुं ग्रहण इंद्रियो करे नहि त्यारे तेने देवलोकनुं आवरण टल्युं जाणवुं अने भगत भगवानने शरणे आव्यो होय ने भजन करतो होय पण जो इंद्रियो नियममां नहोय कहेतां माईक उत्तमविषयनो त्याग कर्यो न होय तो ते देवलोकमां जायछे अने वैराटनुं आवरण टल्युं केम जाणवुं तो आदेहनो अहंकार टले तथा नातजातनो तथा वर्णाश्रमनो तथा गामगरास मोटम्यमान ल्याजआबरूनो तथामतपंथादिक सर्वेनो अहंकार मेलिने प्रत्यक्ष भगवानने दास

थईनेतेनिआज्ञाप्रमाणेवरतेछे तेने वैराटनुं आवर्णटल्युंजाणवुंअनेअंतःकरणमांपोतानेमल्याजेभगवान तेनुं चिंतवन थयाक
रेअनेपंचविषयनेदुःखरूपनेनाशवंतजाणीनेतेनुचिंतवनकरेनहि।। तेनेमहतत्वनुंआवर्णटल्युंजाणवुंअने प्रत्यक्षभगवान
गमेतेवांमनुष्यचरित्रकरेतथाकोईककुसंगिनांगमेतेवां निंदानांवचन सांभले तोपण कोईदिवस मनमां संशयथायनहिएं-
वोअडगहिरसाटेप्रत्यक्षभगवानना स्वरूपनो निश्चय होय अने कोईकाले पंचविषयमां लेवायनहि।। तेनेप्रधानपुरुषनुंआ
वरणटल्युंजाणवुं अनेत्रणदेहनेत्रण अवस्था ते थकि जुदोएवोजेशुद्धचैतन्यआत्मा तेनेपोतानुंस्वरूपजाणिने पछेअनंतकोटि
ब्रह्मांडनिउत्पत्तिस्थितिनेप्रलयथायछेजेनेविषेएवुंजेअक्षर ब्रह्मतेनेपोतानुंस्वरूपमा नवुं कहेतां अक्षररूं छुंएमसमजिने
तेअक्षरनाअधिपतिएवाजेपरमात्मा पुरुषोत्तम भगवान तेजआप्रत्यक्षमुनेमल्या छे।। एमजाणीने ते भगवाननीमहात्मेसहि
तभक्तिकरे छे तेने सर्वआवर्णटलिगयांजाणवां अने ते छतिदेहे ब्रह्मरूपमुक्तथईरह्यो छे नेतेदेहमुकिनेअक्षरधामनेपाम
शे पणतेनेक्यांई बिजा लोकमां नहिंजवुं पडे केमकेएनेज्ञानादाता महात्मापुरुष तेणेअहिंजज्ञाने करिनेसर्वलोकदेखा-
डिनेतेनो त्यागकराव्यो छे तेकेविरिते लोकदेखाडे छे।। तोजेइंद्रियोना विषयछे ते देवलोकछे तेमांबेप्रकारना भक्तछे एक
निष्कामभक्तछे नेएक सकाम भक्तछे।। तेमांजेसकाम भक्त छे तेतोइंद्रियोनाविषयमांलोलुपथका वर्त्ते छे पण ते नियममांरहि
नेविषय भोगववाउपर प्रितीहोय ते देवलोकनेपामे छे अनेदेवलोकनिआवदीपुरिथाय त्यारे पछे वैराटना लोकमांजा
यछे एविरिते सकाम भक्तने तोते ते लोकोमां जवुं पडे छे।। नेते सकाम भक्त तो अक्षरधामनेपामतोजनथि।। एतोज्यारे
त्यारे प्रत्यक्ष भगवानना चरणनेपामिनेतेनि निष्काम भक्ति करशे त्यारे ज अक्षरधामने पामशे।। माटेजेनिष्काम भक्त
छे ते इंद्रियोनाविषयमां नथि लेवाता त्यारे तेणे देवलोकनो त्याग कर्योकहेवाय अने कोई प्रकारना अहंकारेकरिनेभ
गवानना मार्गथि मोलोनपडे तेणेवैराटना लोकनोत्यागकर्यो जाणवो अने चित्तमां भगवाननुंजजेने चिंतवन थया करेप
णविषयनुंचिंतवनन थाय तेणेमहतत्वनोत्यागकर्योजाणवो अनेमनमांकोई दिवस प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपमांसं

नाय थायनहि तेणे प्रधानपुरुषनो त्याग कर्यो जाणवो अने कोटि कोटि ब्रह्मांड रह्यांछे जेना कोक देशने विषे एवाजे अ-
क्षरब्रह्म तेरूपपोते थईने ते अक्षरने विषे एवा अनंत कोटि अक्षरमुक्त रह्या छे ते सर्वमुक्तना स्वामिजे पुरुषोत्तम भगवान तेज
भगवान आ प्रत्यक्ष मल्या छे एम जाणिने आश्रय कर्यो छे तेणे प्रकृतिपुरुषनो लोक त्याग कर्यो छे ने एवा भक्तने क्यां
ई जवुं पडतुं नथि ने तेनां सर्वसाधनपुरां थई रह्यां छे अने जे बिजा लोकमां जवुं पडे छे एम कह्युं छे ए तो जेम कोईक बे पुरु
ष काशिए चाल्या तेमां एक तो तिर्थ करवा गयो ने एक तो रुपैया कमावा गयो ते मां जे तिर्थ करवा गयो ते तो वच्चमां क्यां
ई रोकाय नहिं ने ठेठ काशिये पुगि रहे अने क्यांईक मांदो पडे ने पांच दिवस रहेवुं पडे तो पण उदास थको रहे ने साजो थाय के तरत
चालिने काशिये जाय ॥ अने जे रुपैया कमावा चाल्यो छे ॥ तेने तो ज्यां ज्यां कमाणि मले छे ॥ त्यां त्यां रहि जाय । पण काशिये पुगे
नहिं ॥ तेमज जे सकाम भक्त छे ते तो पंचविषयने भोगववा सारु भगवान भजे छे ॥ ते देवादिकमां जाय छे ॥ अने जे निष्काम
भक्त छे । तेने तो एम होय ते पंचविषयनि वासना टालिने भगवानना धाममां जवुं छे ॥ तो ते आ ने आ देहे ब्रह्मरूप थईने अक्षरधा
मने पामे छे ॥ अने कोईक भक्त अमारे शर्णे निष्काम भावे आव्यो होय ने तेनो देह तरत पड्यो अथवा कोईक देशकाले करिने
वासना टालतां टालतां थोडिक वासना रहि गई ने तेनो देह पड्यो तो ते भक्त योगभ्रष्ट कहेवाय छे ॥ तेने भगवान बिजो तत्
काल देह धरावे छे ॥ ते जे ब्रह्मांडमां भगवान प्रगट होय त्यां जन्म धरावे छे पछे भरतजि नि पेठे तत्काल ज्ञानने पामिने ब्र
ह्मरूप थईने अक्षरधामने पामे छे माटे भगवाननो आश्रय करवो ते निष्काम भावे पोताना जिवना कल्याणने अर्थे क
रवो ॥ अने पंचविषयनि वासना टालवि एम इच्छा राखिने जे अमारे आशरे आव्या छे तेने तो क्यांई नहिं जवुं पडे ने तेने तो
कांई करवुं रह्युं नथि अने अनंत जन्मनो जे नेक्रम संस्कार होय तेने ज अमारो जोग बने छे माटे पंचविषयमांथि प्रिति
टालिने अमारु भजन करवुं ते जत मारा हित नि वारता छे एवि रिते महाराजे तो घणिक वारता करि छे ॥ पण तेमांथि आ तो
लेश मात्र लखि छे ॥ ॥ इति श्री मुख्यसिद्धांत समाप्त ॥ ॥श्री हरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥

॥ ॥संवत्।१९।ओगणिसो।१६।शोलनामागशरशुदि २ बिजनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगाममश्रीबोटा
दमध्येशाकांहानजिपितांबरनेघेरउगमणेबारमेडिनीओसरिमांढोलियाउपरगादितकियाबिछाविनेविराजमानथया
हताअनेसर्वेजरियानिवस्त्रधारणकर्याहतांनेपुष्पनांआभूषणसर्वअंगमांशोभिरह्याहतांनेकंकुनोचांदलोकर्योहतो
॥नेपोतानामुखारविंदनिआगलसाधुतथाघणाकहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठिहतिपछेशाबेलसिपितांबरेमहाराज
नेप्रश्नपुछ्युं॥जेभगवाननाधामनेपाम्याजेमुक्ततेनेत्यांवधारेसुखहशेकेतेभगवानप्रगटपृथ्विउपरपधार्याहोयतेते
भेगाभक्तहोयतेनेवधारेसुखहशेतेकहो॥पछेमहाराजबोल्याजेएनोउत्तरएमछेजेभगवाननाधामनेपाम्याजेमुक्त
तेतोधर्मज्ञानवैरागनेमहात्मेसहितप्रगटभगवाननिभक्तिसिद्धकरिनेनिरवासनिकथईनेब्रह्मस्थितिनेपामिनेभग-
वाननाधाममांगया॥तेनुंसुखतोअपरमितछेनेअविनासीछेनेतेसुखनेकोईउपमादेवायएमनथिजेमबिजाद्रव्यजे
रूपैयासोनामोरमोतिहीरामणियोतेसर्वेनुंप्रमाणथायजेआटलानोमालछेपणचिंतामणिनुंप्रमाणथायनहितेमबु-
ध्यदेवब्रह्मानेप्रकृतिपुरुषनालोकसुधिसर्वेलोकनासुखनुंप्रमाणथायपणएकभगवाननाअक्षरधामनासुख-
नुंप्रमाणथायनहि॥माटेअक्षरधामनेपाम्याजेमुक्ततेनुंसुखतोसर्वोपरिछेपणतेसुखनिबरोबरकोईसुखथायन
हिनेएवुंअक्षरधामतेनाराजाधिराजएवाजेपरमात्माभगवानतेपोतेअनंतजिवोनोउद्धारकरवानेअर्थेत्यांरह्याथका
पोतानासत्यसंकल्पेकरिनेपृथ्विउपरमनुष्यस्वरूपेप्रगटथायछेपछेतेभगवाननेशरणेआव्याएवाजेभक्तजनतेका
मक्रोधादिकदोषनेटालिनेधर्मज्ञानवैराग्यनेमहात्मेसहितभगवाननिभक्तिसिद्धकरिनेनिरवासनिकथईनेप्रत्य-
क्षभगवाननेविषेजोडाणोहोयतेनेतोजेवुंअक्षरधामनामुक्तनेसुखछेतेवुंजसुखअहिंप्रगटभगवाननेविषेभक्तने
छतिदेहेसुखआवेछे॥केमकेअक्षरधाममांनेअहिंएबेठेकाणेभगवानतोएकजछेपणभगवानबेनथिअनेअहिंने
त्यांएमजेकहेवायछेतेतोजेनेमायानुंआवरणछेतेनिदृष्टिनेभेदेकरिनेकहेवायछे॥पणजेनीज्ञानेकरिनेनिवारणदृष्टि-

थई होय तेनेअहिंने त्यां एवो भेद रहे तो नथि माटे जे निज्ञाने करिने निवारण दृष्टि थई छे एवा जे प्रगट भगवान ना भक्त संत
तेने तो जेवुं अक्षर धाम ना मुक्त ने अक्षर धाम मां सुख छे तेवुं तेने पण आवे छे अने बिजा साधन दशावाला प्रगट भगवा-
नना भक्त छे ॥ तेने तो जेने जेटलो भगवान ना स्वरूप नो निश्चय अने जेटला जेने कामादिक दोष टल्या होय तेटलुं तेने
सुख आवे छे केमके भगवान छे ते समदृष्टिवाला छे ते जेटलो जेने वैराग ने जेटलि जेनि श्रद्धा ने जेटलि जेनि सेवा तेटलुं
ते भक्त ने भगवान सुख आपे छे ते उपर एतुलसिदासनि साखि छे ॥ राम जरुं खे बेसके ॥ सब का मज राखे त ॥ जा-
कि जेसि चाकरि ॥ ताकुं तेसा देत ॥ १ ॥ ए तमाराप्रश्न नो उत्तर छे ॥ ष छे वलि शाकद्दांनजिए प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज
अमारे तो तमारा स्वरूप नो निश्चय जे तमे साक्षात्कार अक्षर धाम ना राजाधिराज परमात्मा छो पण बिजा माणसने के
म भगवानपणानो तमारा स्वरूप नो निश्चय थाय ॥ अने शे लक्षणे करिने भगवान ओलखाय ते कृपा करिने कहो ॥ प-
छे महाराज बोल्या जे ज्ञाने करिने भगवान ओलखाय छे पण जेने ज्ञान न होय तेने भगवान कोई काले ओलखाता न
थि जेम सूर्य उदय थाय त्यारे जगतमां प्रकाश थाय छे पण ते प्रकाश घुड ने तथा आंधलि चाकोर ने तथा चामाचिडियां आ-
दिक जे दिवसअंधा जिव तेने सूर्य देखाता नथि अने जे देखता प्राणि होय तेने सूर्य तथा सूर्य नो प्रकाश देखाय छे तेम सूर्य-
नी पेठे भगवान पृथ्वि उपर प्रगट थाय छे त्यारे जे दिवस अंधा जेवा जे आसुरि जिव तेने तो कोई काले प्रगट भगवान ओलखा
ता नथि ॥ जेम घुड आदिक ने सूर्य नो प्रकाश देखातो नथि तेम आसुरि जिवने भगवान नो अलौकिक एवो जे ज्ञान
प्रकाश ते जाण्यामां आवतो नथि ॥ ते कृष्ण अवतार मां पण रुषिने विषे विद्या ने कुलना अभिमानरूपि आसुर भाव हतो
तो तेणे श्रीकृष्ण भगवानने ओलख्या नहि अने जरासंध ने पण राजने परोक्ष भगवाननि भक्ति ने सदाव्रत आपतो ॥
ने सतवादिपणुं ते ना मानरूपि जे आसुर भाव तेणे करिने प्रगट श्रीकृष्ण भगवानने ओलख्या नहि ने घुलटो घणो कद्रोह
कर्यो ॥ तेम आज पण जेने मतपंथनुं मान तथा परोक्ष भगवाननि भक्तिनुं राजनुं द्रव्यनुं विद्यानुं दत्यादिकनुं मान जेने हशे

तेनेप्रगटभगवाननहिओलखाय॥ अनेजेदैविजिवहशे तेने भगवानओलखाशे अनेदैविजीवहोयतेनेज प्रगटभगवान-
नोज्ञान प्रकाशरूपिअलौकिकप्रतापजाणवामा आवे छे तेकेविरितेजापोछे तो प्रगटभगवानपासे सर्वोपरिज्ञानहोय
तथा सर्वदेशिज्ञानहोयअनेतेसर्वेना मतना सिद्धांतनेजाणतो होयअनेजेनिपासेसर्वेसास्त्रनुंसंपुर्णज्ञानहोयने
वलिअपारज्ञानहोयअनेते ज्ञाननेजेजे मनक्रमवचने सांभले तो ते सांभलनाराना अंतरना संशयमो टलिजाय।
अनेतेनाअंतरमांपरमशान्तिथाय॥ अनेतेने पंचविषय पामवानिजेतृष्णा ते टलिजाय छे तेणे करिने जेदैविनेमुमुक्षु-
जिवहोय तेनेप्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चयथाय छे अने ज्यारे भगवान प्रगटथाय छे त्यारे केटलाक मुक्तदेहधरे
छे तेमुक्त जे ते कामलोभादिक अंतरशत्रुनो त्याग करिने प्रगट भगवाननेशरणेआविने भगवानथकिआत्यंतिक ज्ञान
सिद्धकरिने अक्षर ब्रह्मरूपथईने भगवाननिसेधामां अखंडरहे छे अने एवा ब्रह्मरूपमुक्त तो ज्यांप्रगट भगवानहोयत्यांज
होय छे पण भगवानविना बिजेठेकाणे एवापंचविषयना त्यागिने आत्यंतिक ज्ञाननेपामिने सिद्धदशाने पामेलासंत ते
प्रगटभगवानविना होयनहि॥ जेम मान सरोवर होयत्यां हंसहोय अनेज्यां हंसहोय त्यांजरूरमानसरोवर होय तेमज्यांप्र
गट भगवानहोय त्यांज एवाहंसरूप पंचविषयना त्यागिने ब्रह्मरूप साधु होय॥ अनेज्यांएवासाधुहोयत्यांजरूरभग-
वान होयएविरिते ज्ञाने करिने प्रगट भगवान ओलखाय छे अने ते ज्ञानवडेअनंतप्रतापने अनंतऐश्वर्यनेअनंतशक्ति
योने अनंत सिद्धीयो रहि छे ॥अनेपुर्वे जेजे भगवानना अवतारथईगया तेणेपणपोताना भक्तोने ज्ञानजआप्युंछे॥ तेश्री
कृष्णेउधवजिनेतथा अर्जुनने ज्ञान आप्युं छे॥ ते ज्ञाने करिने पोताना स्वरूपनोनिश्चय कराव्यो छे अने कपिलदेव भगवा
ने देवहुतीने पण ज्ञानेकरिने निश्चयकराव्यो छे॥ अनेरामचंद्र भगवाने पण लक्ष्मणनेतथा भरतजिने ज्ञान आ
पिने पोताना स्वरूपनो निश्चयकराव्यो छे अने रुषभदेवभगवाने पणपोताना पुत्रोने ज्ञानआप्युं छे अनेवेदमांपण भ
गवानना स्वरूपने जाणवाने अर्थे ज्ञानज कह्युं छे अनेशास्त्रमांपण परमात्माने जाणवाने अर्थे ज्ञानज कह्युं छे माटे ज्ञाने

करिनेज प्रगट भगवान ओळखाय छे॥ अने जेणे ज्ञाने करिने भगवानने ओळख्या तेणेज नक्कि ओळख्या छे अने तेनिजमु-
क्तिथाय छे ते वेदमां पण कह्युं छे ॥ ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः ए श्रुतिनो एम अर्थ छे जे परमात्माना स्वरूपना ज्ञान विना मुक्ति
थायनहि माटे ज्ञाने करिने भगवानने जाणया ए सर्वे सास्त्रनो तथा चारवेदनो सिद्धांत छे अने ते ज्ञान विना जे परचा म्हो
छे ॥ ते तो सुरख छे ते ज्ञान हिण छे॥ केमके परचा छे ते तो मायानो खोटो परपंच छे॥ ते ढोंगि जगतने धुतनारा होय छे ते
करे छे पण खरा सत्पुरुष एवा ढोंग करे नहि॥ अने पुर्वे जे जे सत्पुरुष थई गया छे तेणे ज्ञान सिवाय बिजो परचा आपवानो ढोंग
कर्यो ज नथि ॥ माटे ज्ञाने करिनेज प्रगट भगवान ओळखाय छे पण बिजे कोई प्रकारे भगवान ओळखाता नथि। त्यारे ते-
मां कोई ने एम शंका थाय जे भगवान विना बिजा कोई पासे ज्ञान नहि होय तो तेनु एम छे जे भगवान विना बिजा मनुष्य देवने ब्र
ह्मादिक पासे पोताना घरनुं वगरशिख्युं ज्ञान कोई पासे नथि ने ज्ञान कियुं तो जे ज्ञानने समजवे करिने जगत मिथ्या थई जा
य ने जिवात्मा ब्रह्मना भावने पामिने साक्षात्कार देखे एवुं ज्ञान भगवान विना बिजा कोई पासे नथि केमके एवु ज्ञान जे-
ने प्रगट भगवानना सत्संगे करिने थयुं ते देहने मुकिने भगवानना अक्षरधामने पामे छे ते पाछो जन्मने धरतो नथि॥ अने
जे देह धरे छे तेने एवुं ज्ञान थयुं नथि माटे पोताने ज्ञान थयुं नहोय ते बिजाने ज्ञान केम आपि शके नज आपि शके ते सारु॥
कर्तुंम कर्तुंने अन्यथा कर्तुं समर्थ एवा जे परमात्मा ते जियोने ज्ञान आपिने मुक्त करवाने अर्थे अक्षरधाममां रह्या थका पो
ताना सत्यसंकल्पे करिने पृथ्विने विषे मनुष्याकृतिनु धारण करे छे ने पोताने आशरे आव्या एवा जे दैविने मुमुक्षु जिव॥
तेने ज्ञान आपिने निरवासनिक करे छे ने प्रगट पोतानु भजन करावे छे ने जियोने ब्रह्मरूप करिने अक्षरधामने पमाडे छे
एवि रिते जेना ज्ञाने करिने पंचविषयनि वासना टळि ने ब्रह्मस्थितिने पमाय ने जगत संबंधि पंचविषयनां सुख ते जेने
संगे करिने डळल्या अन्न जेवां थई जाय ने जे वे ते वे अन्न वस्त्रादिके करिने देह निरवाह करे पण उत्तम भोगनुं तो स्वप्नामां
पण ग्रहण करता नहोय एवा जे ने ज्ञाने करिने तेना आश्रित निरवासनिकपणे वर्त्तता होय ने ते भक्तजन संत तेने आलो-

कमां कोईजातनापदार्थसंबंधिसुखपामवानिइछानहोय तोपणतेज्ञानदातानिआज्ञामांतत्पररहेताहोयनेतेनुंभज
नकरताहोय त्यारेएमजाणवुंजे तेजरूईज्ञानदाता परमात्माभगवानछे एमप्रगट भगवानज्ञानेकरिनेओळखायछे ॥
पणते विनाबिजुकांई भगवाननेंओळखवानुंएधाणनथि माटेआजअथवा आगळआविरितेजिवोनेज्ञान आपताहो-
यजेपरमात्मातोएकजछे अनेमायापरदिव्यमूर्त्तिमानछे अनेजिवअनेकछेनेअनादिनाछेनेतेअनादिनामायामांछेनेते
आत्मापरमात्मानास्वरूपनेजाणतानथि माटेअज्ञानिछे तेनेज्ञानआपवासारु प्रथमधर्मपळावेछेपछेदेहआत्मानाविवे-
करूपिज्ञानकरावेछे पछे चार प्रकारनोप्रळयकराविने जगतनाभोगसुखमांथिवैरागकरावेनेपछेतेआत्मानेब्रह्मनाभा
वनेपमाडिनेतेब्रह्मनाआधारनेप्रकाशकएवा जेपरब्रह्म तेनिमाहात्म्यसहितभक्तिकरावताहोय अनेएवाज्ञाननेजेपाम्या
एवाजेज्ञानिपुरुष तेजेनुंप्रगटभजनकरताहोयएवीरितनुंधर्मज्ञानवैरागनेभक्तियेसहितआत्यंतिकज्ञानजेपुरुष-
आपताहोयनेपोतानुंभजनकरावताहोयतेनेपरमात्माजाणवा अनेतेनोआश्रयकल्याणनाखपवाळानेकरवो
माटेजेजेजगतनेविषे कोईज्ञानदातामहात्मापुरुषप्रगटथायत्यारे तेनीपासेकल्याणनाखपवाळानेनिरमानिथ
ईनेजवुंनेतेनोदेहतेकरिनेसमागमकरवो नेतेनुंज्ञानसांभळवुं पछेपूर्वेकह्युंएवुंसहुधर्मसहितआत्यंतिकज्ञान
होयतेजेज्ञानेकरिनेजगतनापदार्थनिवासनाटळतिजाय त्यारेएमजाणवुंजेतेथकिआपणुंकल्याणथशेएम
जाणिनेतेनोआश्रयकरवोअनेजोपूर्वेकह्युंजे धर्मेसहितज्ञान तेथिविरुद्धज्ञानकहेतोहोय तोतेनासंगनोत्यागकर
वो॥ पण कोईनोद्रोह तोकल्याणनाखपवाळानेकरवोनहिं अनेजेद्रोहकरवानोस्वभावछे एतोपोतानाआत्माना-
नाशनोकरनारोछे माटेद्रोहकरवानास्वभावनोत्यागकरिनेपर्चाआपे तेनेजुठाजाणिने जेज्ञानआपे तेनोसमागम
करवो नेपोतपोतानावर्णाश्रमनोधर्म पाळवो एविरितेनिरमळपणेवरतशे तेनेप्रगटभगवानओळखाशे अनेतेविना
जेमतपंथमांबंधाईरहेशे नेअमारोपंथसाचोनेबीजानोधर्मखोटोएमसमजशे तेनेकोईकाळेभगवानओळखाशे

नहि माटे जे अमारा आश्रित होय तेने अमारा पछि एवो रखोटो ममत राखवो नहि ने कोई सद्‌ज्ञानदाता प्रगट थाय तो ते-
नि पासे सरखे थिज जोने ते खरो ज्ञानदाता जणाय तो तेनो सिरसाटे आश्रय करजो अने तेनो आश्रय कर्यो तेज अमारो आ-
श्रय छे के मके सत्पुरुष तो तेना ते छे माटे जिवो ने ज्ञान आपवा सारु वारंवार प्रगट थाय छे एवि रिते समजे छे तेने कोई कदि प्र-
गट भगवान ओळखाशे ने तेनुं कल्याण थशे॥ ॥इति श्री मुख्यसिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णा-
यनमोनमः॥ ॥संवत्।१९।ओगणिशो।२६।छोतेरना मागशर शुदि ३ त्रिजने दिवसे महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान् गा-
मश्री बोटाद मध्ये भक्त खेता शिवलिंगा जामबाने घेर उगमणा दे बार ओरडानि ओसरिमां ढोलिया उपर विराजमान हता अने
सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हता अने मुस्तक उपर गुलाबि रंगनो फेंटो बांध्यो हतो अने सर्वे अंगने विषे पुष्पनां आभूषण धारण
कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनि आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति पछि महाराजे साधुने
प्रश्न पुछ्युं जे तत्वे करिने भगवानने जाणे तेने पछे कांई जाणवुं रहे तुं नथि ते तत्वे करिने केम जाणवा ते कहो एव्हे अक्षर मु-
क्तानंदस्वामिये कह्युं जे क्षर अक्षरने अक्षरातित ए त्रणने जाणे त्यारे ते जाणि रह्यो कहेवाय पछे महाराज बोल्या जे एपण उत्त-
र खरो एम कहिने रह्या॥ त्यां मशाल थई पछे महाराजनि आर्ति धून्य करिने सर्वे सभा बेठि पछे परमसिद्धानंद स्वामिये प्रश्न
पुछ्युं जे हे महाराज जिव ईश्वरने माया तेना स्वरूपने जाणे त्यारे ते जाणि रह्यो के तेने कांई बाकि जाणवुं रहे छे॥ पछे महारा-
ज बोल्या जे जिव ईश्वर माया ने परमेश्वर ते ना स्वरूपने तत्वे करिने यथार्थ जेम छे तेम साक्षात्कार प्रत्यक्ष जाणे त्यारे ते
जाणि रह्यो कहेवाय पण तत्वे करिने न जाण्युं होय ने अमथुं जाण्युं होय त्यां सुधि यथार्थ न जाण्युं कहेवाय ते तत्व ते शुं
तो जेम छाश करे ते मांथि माखण निसरे ते तत्व कहेवाय पण अमथि डखो लिने छाश करे ने माखण न नीसरे तो तेने॥
छाश तो कहेवाय पण तत्व न निसर्युं तेम भगवानना स्वरूपने तत्वे करिने जाणवुं हवे तेने जाणवानि रित कहिये छिये॥
जे परापरने सर्वेना कारणने सर्वेना आधार ने अक्षरातित ने दिव्यमूर्त्ति परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान ते अनंत ऐश्वर्य ने अनंत शा-

क्तिओने अनंत पारसुद तेणे विंटाणा थका सदाय अक्षरधाममां विराजमान छे ॥ अने एवा जे भगवान ते जे ते अक्षरधाममां रह्याथका आ सर्व विश्वरूपे थाय छे जेम सूर्य पोताना मंडलमां रह्यो थको ब्रह्मांडमां व्यापो छे ॥ ते भगवान अक्षरमां रह्याथका विश्वमां व्याप्या छे ते के वि रिते विश्वरूपे थाय छे तो एवा जे परात्पर भगवान ते जे ते उत्पत्तिसमे अक्षरमां प्रवेश करिने अक्षररूप भगवान थाय छे अने पछे अक्षररूप भगवान प्रकृतिपुरुषमां प्रवेश करिने प्रकृतिपुरुषरूपे थाय छे ने प्रकृतिपुरुषरूप भगवान प्रधानपुरुषमां प्रवेश करिने प्रधानपुरुषरूप थाय छे नेपछे प्रधानपुरुषरूप भगवान महत्तत्वमां प्रवेश करिने महत्तत्वरूप थाय छे नेपछे चोविश तत्वमां प्रवेश करिने तत्वरूप भगवान थाय छे नेपछे वैरा रूपे भगवान थाय छे नेपछे ब्रह्मा विष्णु ने शिवरूपे भगवान थाय छे ॥ नेपछे देव दैत्य मनुष्य पशु पंखि झाड पहाड स्थावर जंगम सचराचर सर्व विश्वरूपे भगवान थाय छे ते श्रुतिमां कह्युं छे ॥ सर्वं खलुइदं ब्रह्म नेह नानासति किंचन ॥ एवि रिते विश्वरूपे भगवान थाय छे जेम राजा दिवान वजिर कामदार पटेल वस्ती खेतर वाडी गाम शेहेर आदिक सर्वरूपे थाय छे तेम ते भगवान जेवा पोते छे तेवा अक्षर नथि ॥ जेम जेवा सूर्य पोते छे तेवो तेनो प्रकाश नथि अने प्रकाश सर्व ब्रह्मांडमां व्याप्यो छे तेणे करिने सर्व जिवमात्र क्रिया करवाने समरथ थाय छे तेम भगवान अक्षररूपे पुरुषमां ज्यारे आव्या त्या अनंत कोटि पुरुष जाग्रतने पाम्या ने तेमां एकुको पुरुष अनंत सामर्थि बल ऐश्वर्यने पाम्यो ने अनंत कोटि तेना पारसदे सहित तेनो लोक वसाव्यो ते सर्वरूपे पुरुष ज थया छे अने ते पुरुषरूप भगवान ज्यारे प्रधानपुरुषमां आव्या त्यारे ते प्रधानपुरुष जे ते अनंत ऐश्वर सामर्थिने पामिने अनंत पारसदे सहित तेनो लोक वसावे छे ॥ अने ते भगवान जेवा अक्षरमां छे तेवा प्रकृतिपुरुषमां नथि ने जेवा प्रकृतिपुरुषमां भगवान छे तेवा प्रधानपुरुषमां नथि अने ते प्रधानपुरुषरूप भगवान ज्यारे महत्तत्वमां आव्या त्यारे महत्तत्व अनंत ऐश्वर्य सामर्थिने पामिने अनंत पारसदे सहित पोतानो लोक वसाव्यो अने महत्तत्वरूप भगवान ज्यारे चोविस तत्वमां आव्या त्यारे ते तत्व जे ते अनंत सामर्थिने पामिने पोतानो

लोकवसाव्यो अनेचोविश तत्वरूप भगवानज्यारे वैराटमां आव्यात्यारे वैराटपुरुष अनंतऐश्वर्य ने पामिने तेनो लोक भराईगयो अने वैराजपुरुषरूप भगवानज्यारे देवदैत्यमनुष्यपशुपंखि सर्वविश्वमां आव्यात्यारे सर्वे पोतपोतानिक्रियाओ करवाने समर्थ थाय छे एविरिते एक भगवानछे तेजे ते अक्षररूपे करिने अनंतकोटि ब्रह्मांडमां जिवजिवप्रत्ये रह्या छे तेपात्रनितारतम्यतायेकरिने रह्या छे तेजे वुंजे पात्र तेवातेमां भगवान रह्या छे॥ जेमजलनो रसछे ते सर्वे पदार्थ मां रह्यो छे तेजेवुंजे पदार्थ ते मां तेते रुपे रस रह्यो छे ते केरि मां मधुरपणे रह्यो छे॥ अने शेरडिमां गलपणरूपे रह्यो छे ने आंबलिमां खटासरूपे रसरह्यो छे नेमरचामां तिखाशरूपेरस रह्यो छे॥ अने एलचिमां एलचिना भावने पामिने रह्यो छे एविरिते अनंत ओषधियो मां अनंतरूपे रसरह्यो छे तेम भगवानपण अक्षररूपे करिने पुरुष प्रकृतिथिलईने अनंतकोटि ब्रह्मांडने विषे रह्या छे तेप्रकृति पुरुषमां प्रकृतिपुरुषरूपे रह्याछे ते अनंतकोटि ब्रह्मांड स्रजवानि शक्तिने आपे छे अने प्रधानपुरुष ने विषे प्रधानपुरुषरूपे भगवान रह्या छे ने वैराटने विषे वैराजपुरष रूपे भगवान रह्या छे अने ब्रह्मा विष्णु शिवने विषे ब्रह्माविष्णु शिवरूपे भगवानरह्या छे ने देवमां देवरूपे भगवान रह्या छे ने दैत्यमां दैत्य रूपे भगवानरह्या छे ने मनुष्यमां मनुष्यरूपे भगवान् रह्या छे ने पशुमां पशुरूपे भगवान रह्या छे॥ ने झाडमां झाडरूपे भगवानरह्या छे ने पक्षिमां पक्षिरूपे भगवानरह्या छे ने परवतमां पर्वतरूपे भगवानरह्या छे जेम आकाश वायुमां वायुरूपे रह्यो छे ने अग्निमां अग्निरूपे आकाशरह्यो छे ते अग्निदेखाय छे पण तेमां रह्यो एवोजे आकाश तेनथि देखातो नेजलमां जलरूपे आकाश रह्यो छे तेजलदेखाय छे पण तेमां रह्यो एवो आकाश तेनथि देखातो अने प्रथ्विमां प्रथ्वीरूपे आकाशरह्यो छे तेप्रथ्वी देखाय छे पण तेमां रह्यो एवोजे आकाश तेनथि देखातो तेम भगवान सर्वविश्वमां रह्या छे ते विश्व देखाय छे पण विश्वमां रह्या एवा भगवान ते नथि देखाता अने जेम आकाश चार भूतमां आव्यो छे तोपण असंगि छे ने नोखो छे॥ ने चारभूतना नाशपामे तोपण आकाश नाश नथि पामतो तेम भगवान विश्वमां रह्या पण असंगि ने न्यारा छे ने विश्वने भ

गवाननो नाशनथि थातो एवीरिते भगवान अनंत कोटिब्रह्मांडमां रह्या छे ते भगवानने साक्षात्कार जाणवा तेके
म जाणवा तो सर्वे व्यापक सर्वाधार सर्वकारण सर्व नियंता एवा जे अक्षरातित परब्रह्म पुरुषोत्तम परमात्मा दिव्य मुर्त्ति
सदा यसि सूक्ष्म रूप जे निएक देशा सतापाये करिने अनंत कोटि विश्वने धरि रह्या छे एवा जे भगवान तेजे ते रूपा
करिने पोतानुं स्वरूप जणाववा साटु मनुष्यने जाण्यामां आवे एवा मनुष्य जेवा थईने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान करा
वे त्यारे ज जीव भगवानने जाणि शके पण ते विना कोई काले जिव पोतानि मेले भगवानने जाणवाने समर्थ नथि
माटे ते भगवान् मनुष्य जेवा थईने जिवने पोतानु स्वरूप तत्व करिने जणावे छे ते तत्व ते शुं तो जे विरिते विश्वमां
भगवान जे ते अक्षररूपे करिने रह्या छे ते विज रिते पिंडमां भगवान रह्या छे ते पिंड देखाय छे पण तेमां रह्या एवा भगवा
न ते नथि देखाता ते केवि रिते रह्या छे॥ तो जेम नानि चेंसनि पाडि होय तेमां जेम घिरहुं छे ते घि जो ईवुं होय ने पाडिमां-
थि काढवा जईये तो एक टिपुं घि निसरे नहि अने पेट चिरिने मांहेली कोरे जोवा जाय तो पण घि हाथ न आवे ने उलटि
पाडि मरि जाय ते पाछु कोई दिवस घी पामिये ज नहिं तेम पिंडने ब्रह्मांडमां भगवान रह्या छे ने ते अज्ञाने करिने शास्त्र
ना शब्द ना मरम ने जाण्या विना अने असमर्थ ने देहने ज पोतानु रूप माने छे अने अज्ञाने करिने मति अवराई गई छे
जे निएवा जे मिथ्या ब्रह्मज्ञानि ते जे तएम जाणे जे सर्वमां भगवान रह्या छे एम जाणिने पोताने पण एम माने जे हुं पण
भगवान छु ते मारे हवे कांई करवुं नथि एम जे समजे छे तेने तो कोई काले भगवान मलता नथि अने तेनुं कल्याण पण को
ई काले थाय नहि अने तेना तो जीवनो नाश थई जाय छे जेम पाडिमांथि चिरिने घि काढतां पाडि मरि गई तेम सर्वमां
भगवान छे एम जाणिने पोताने भगवान माने तो तेना जिवनो नाश थई जाय छे के हेतां कोई काले तेने फरिने मनुष्यनो
देह न आवे ने सदाय पर्वतादिक स्थावरमां पड्यो रहे पण तेने जंगम जातमां जन्म नो आवे माटे जे रिते अक्षररूपे करिने सर्व
मां भगवान रह्या छे तेने साक्षात्कार जाणवा तेने कहे छे जे जेम पाडिमां घिरहुं छे तेने बुद्धिये करिने काढवुं माटे प्रथम

तो ते पाडिनेचाकरिकरिने मोटि करवि पछे ते पाडि वियाय तेनेदोईने दुधकाढिने तेमांघटे तेरदुं मेलवण नाखिने तेने
चारपहोरराखिने तेद दहिं थयुं तेनेगोलिमांनाखिने रवैयेवलोविने तेमांथि मांखण काढिने तेने ताविने घि करवुं ते घि
नेकुल्लामां भरवुं त्यारे ते घि तरत जमाय एवुं थयुं ए द्रष्टांतनुं सिद्धांत ए छेजे पाडिने ठेकाणे तो पिंडने ब्रह्मांड छे ने घि ने ठेका
णे भगवान छे ते भगवानने साक्षात् कारपामवा सारु प्रथम तो इंद्रियो अंतःकरणादिक चोविसतत्वनिजे प्रवृति यो
तेने पंचविषयथकि पाछिवालिने नियममां करवि पछी आत्मविचार करवोजे जिवछे ते चोविसतत्वे करिने सर्वे क्रिया
करे छे ते तत्वजणायछे नेजिवजणातो नथि पणजिवविनातत्वतोजड छे ते कांईकरवानेसमर्थ नथिजेमसोनिदथोडि-
येकरिने घाट घडे छे अनेतेहथोडि सोनि विना घाटघडवाने समर्थ नथि॥ तेम तत्वतोजड छे तेमां जिवेप्रवेश कर्यो छे
तेणे करिने क्रिया करवानेसमर्थ छे तेजिवजसर्वे क्रियाकरे छे जेमगरबामां दिवो मुक्यो होय तेगरबाना फाकोरामां
प्रकाश निसरेछे ते दिवानोज प्रकाश निसरे छे पणते दियो देखातो नथि नेगरबो देखाय छे तेमतत्वजेते देहरूपगर
बानां फाकोरां छे ते गरबारूपदेह देखायछे पण जिवदेखातो नथि तेजेमदिवाने गरबानुंआवरण छे त्यां लगि दिवो
साक्षात्कार देखातो नथि अनेगरबानुं आवरणटलिजाय तो दियो साक्षात्कार देखाय तेमआत्माने देहाभिमाननेवि
षेआशक्तिरूप आवरण छे त्यां लगिआत्मासाक्षात्कार देखातो नथि॥ अनेजो देहाभिमाननो नाश थाय तो आत्मा
साक्षात्कार ब्रह्मरूप थाय छे माटेजेम पिंडने ब्रह्मांडनी उत्पति छे तेम प्रलय करिने पोतानेआत्माने विषेदृढ स्थिति
नेपामवुं तेआत्मा केवो छे तो अखंड छे अविनाशि छे सुखरूप छे चैतन्य छे प्रकाशवान छे ने आनंदरूप छे सातरूप छे
ने अछेद अभेद छे ने पोताने सुखे करिने जसुखियो थायएवो छे पण नाशवंत एवांजे पंचविषयसंबंधि माईकपदा
र्थ तेणे करिने सुखियो थायएवो आत्मा नथि अनेते माईकपदार्थने भोगववे करिने तो पोतेसुखरूप छे तोपण जन्म
मृत्युने पामिने महाकष्टने पामे छे माटे ते पिंड ब्रह्मांडादिक सर्वेने चार प्रकारना प्रलय करिने पोताना आत्माने

विषे द्रढ स्थिति पामचि ।। कहेतां अक्षर ब्रह्मने विषे पोताना आत्माने एकत्व पणुं करवुं जे अक्षर ते हुं छुं एम समजवुं ते अक्षर के
वुं छे तो अनंत कोटि ब्रह्मांडनि उत्पत्ति स्थिति ने प्रलय ते जे निलेद्रास ताये करिने अक्षरना कोक देशने विषे थाय छे एवुं जे अ
क्षर ब्रह्म तेने पोतानुं स्वरुप जाणिने ते अक्षरना आधार एपा जे अक्षरातित परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान ते अक्षरने विषे सदाय
अखंड विराजमान छे ।। तेज भगवान आ प्रगट छे एम जाणिने ते भगवानने विषे इंद्रियो अंतःकरणादिक नि वृतियोने नव
धा भक्तिये करिने जोडि देवां तो तेनां इंद्रियो अंतःकरण भगवानने विषे जोडावे करिने भगवानरूप थई जाय छे त्यारे तो
ते भक्त एक भगवानने जदेखे छे प छे ते भक्त भगवानना साधर्म पणाने पामे छे कहेतां जेम भगवान काल कर्म मायाने
माईक पंचविषयनो त्याग करिने प्रगट भगवानने भगवानना एकांतिक संतना संगमा रहिने अखंड ब्रह्मस्थितिमां वरते छे
अने एवा मुक्त देहमां होय तो पण ब्रह्म निज मूर्ति छे ।। जेम कुल्लामां घि भर्युं होय ते साक्षात घी कहेवाय तेम जेणे पंचवि
षय निवासनाटालिने तत्वे करिने भगवानने जाण्या छे तेने विषे तो साक्षात्कार भगवान रह्या छे अने बिजा जिवने विषे
जे भगवान रह्या छे ते तो जेम पाडिमां घि रह्युं छे तेम सर्वने विषे भगवान रह्या छे ।। मारे आ विरिते तत्वे करिने जे भगवानना
स्वरूपने जाणे ते जमायाने तरिने महामुक्त थाय छे अने आ वार्ता सर्व शास्त्रनो रहस्य छे ।। ।।इति श्रीमुख
सिद्धांत समाप्तः ।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ।।संवत् १९। ओगणिशो १६ सोलना माग-
शर शुदि चोथने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री बोटाद मध्ये भक्त खेताजिनि स्त्री बाजामबाने घेर उत्त
रादे बार ओरडानि ओसरिमां गादी तकिया नखाविने ढोलिया उपर विराजमान थया हता ने सर्वे कसुंबल वस्त्र धारण क
र्या हतां अने कंठमां गुलाबना पुष्पना हार धारण कर्या हता ने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना
मुखारविंदनि आगल साधु तथा घणा कहरि भक्तनि सभा भराईने बेठि हति पछे धर्मानंद स्वामिये प्रश्न पुछ्युं जे हे महारा
ज भगवान तो सदाय अक्षर धाममां विराजमान छे ते भगवान् रामकृष्णादिकरूपे मनुष्यदेह धारण करिने आ पृथ्वि उप

रत्न्या सारुं पधारतां हशे पछे महाराज बोल्याजे भगवद्गीता मां श्रीकृष्ण भगवाने कह्युं छे ॥ श्लोक ॥ यदायदाहि धर्मस्यग्लानि-
र्भवति भारत अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहं ॥१॥ परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दु-
ष्कृतां धर्मसंस्थापना ॥२॥ ए बे श्लोकनो अर्थ एम छे जे ज्यारे ज्यारे एकांतिक धर्मनो लोप थाय छे ने अधर्मनो उदय थाय छे
त्यारे ते धर्मना स्थापनने अर्थे अने पवित्र एवा जे एकांतिपंचविषयना त्यागि एवा जे भगवानना भक्तजन संत ते नि रक्षा कर-
वा सारुं श्रीकृष्ण भगवान के हुं प्रगट थाउं छुं माटे एकांतिक धर्मनो ज्यारे ज्यारे लोप थाय छे त्यारे ते धर्मना स्थापनने अर्थे अ
ने मुमुक्षु एवा जे जिव ते नां कल्याण करवा सारुं ने आसुरि एवा जे पापि जिव ते गामनो नाश करवा सारुं भगवान जे ते मनु-
ष्य देहनुं धारण करे छे पछे अक्षरमुक्तानंदस्वामिये प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज भगवानने प्रगट थवानुं मुख्य कियुं निमित्त हशे ते
कहो पछे महाराज बोल्या जे आ सृष्टिमां चार प्रकारना जिव छे तेमां केटलाक पामर जिव छे अने केटलाक विषयि छे ने केटला
क मुमुक्षु छे अने केटलाक मुक्त छे तेमां जे मुमुक्षु ने मुक्त छे तेने जे भगवानने मलवानो अतिशे विरह ने ते विरहे क-
रिने भगवानने मल्या सारुं अंतरमां अतिशे ताप हे ते तापने जाणिने भगवान पण तेना उपर अतिशे प्रसन्न थईने तेने दरशन
आपवा सारुं उतावला थका पृथ्वि उपर प्रगट थाय छे ने तेने दरसन आपिने तेना अंतरना तापने टालिने शांति पमाडे छे अने ते-
ने वांसे बिजा विषयि पामर जिव छे तेनुं पण कल्याण करे छे माटे अतिशे प्रेहेवाला एवा जे भगवानना भक्त तेना सारुं भ
गवानने प्रगट थवानुं मुख्य कारण छे पछे वलि अक्षरमुक्तानंदस्वामिये प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज भगवानने अतिशे म
लवानी जे प्रेहे ते शेणे पुन्ये अथवा शेणे साधने करिने थतो हशे पछे महाराज बोल्या जे अनंत जन्मना निष्काम भावे भगवान
ने मलवा सारु जप तप तथा अनंत जन्मना साधन तथा अनंत जन्मनि भगवाननि निष्काम भावे नवधा भक्ति तथा ते भ-
क्तिना विरोधि एवा जे काम क्रोधादिक दोष तथा शब्दादिक पंचविषय तेनो सर्व प्रकारे त्याग करयो ते णे करिने सुध थ
यां छे अंतःकरण जेमनां एवां अने शिल संतोष दया स्रद्धादिक जे सद्गुण ते थकि थया जे सत्संस्कार ते पुन्यने ते सा

धनतेणेकरिनेएवोअतिशेभगवाननेविषेस्नेहप्रगटथायछे ते भगवद्गीतामांकह्युंछेजे अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति
परांगति ॥ एश्लोकमां एमकह्युंछेजे अनंतजन्मनाशुभसंस्कारथायछे त्यारेपरांगतिनेपामेछे कहेता भगवानने विषेअ
तिशेस्नेह प्रगटथायछे नेतेनेप्रगटभगवानमलेछे नेते भगवान थकि आत्यंतिकज्ञान पामिने अक्षरब्रह्मरूपथईनेप
रमपदनेपामेछे अनेएवाजेवा प्रेमिभक्तजनछे तेने भगवाननिमूर्त्तिविनाबिजुं कोईशांतिपमाडेएमनथिए
नेतोआत्मानाआत्माएवाजेपरमात्मा परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान तेजएकशांतिपमाडवाने योग्य एवाछे माटेपर
मात्मानेदर्शनेकरिनेजप्रेमीभक्त अतिशेशांतिपामेछे तेसारु भगवान तेनोतप श्रद्धा भक्ति ने प्रेमजोईनेतेनिउ
परकृपाकरिनेतेनेसुखआपवासारुं भगवान अक्षरधाममांथिपधारेछे अनेपोतानाएकांतिकभक्तनेसुख
आपेछेने धर्मज्ञानवैरागनेमहात्म्यसहितभक्ति तेनेसिद्धकरावेछे नेतेनेआत्यंतिकमोक्षपमाडेछे अनेतेना भेगुंअ
नंतजिवोनुंकल्याणकरेछे माटेनिष्कामभावेपोतानाजिवनांकल्याणनेअर्थेपंचविषयनो त्यागकरिने भगवान-
निनवधाभक्तिकरेछे तेने भगवानने विषेस्नेहरूपिप्रेमलक्षणाभक्तिप्रगटथायछे पछे जिवरामभाईयेप्रश्नपुछ्युं
जे हे महाराज ग्रहस्थनेप्रत्यक्ष भगवाननोआशरोथयोहोय तेनोभगवाननिकृपायेकरिनेकेटलोमोक्षथायछे ॥
अनेतेनेसाधनशांशांकरवापडेछे अनेतेग्रहस्थनेकेईरितेनिरवासनिकथईनेआत्यंतिकमोक्षनेपामे छे महाराज
बोल्याजे जिवनेअनंतजन्मनांपापछेतेपाप थकिमुकाविने भगवाने पोतानोआश्रयकराव्यो अनेअधर्मनोमारग
मुकाविनेधर्मनेमार्गेचलाव्योएसर्वे भगवाननीकृपाछे तथा अंतरनाजे तापतेनेज्ञानेकरिनेशान्तपमाडेतेसर्वे
भगवाननिकृपाजाणवी जेमकोईकगुनेगारनेकालिटेकरियेमुकताहोयअनेतेनेकोईकपाछोवालेनेएमकहेजे
तुंनेपुछवुंछेनेतुंहमणां तारेघेरजा त्यारेतेगुनेगारएमजाणेजेमारुंतो मोतआव्युंहतुंपणहमणांतोउगर्योतेमजि
वनेतोजोप्रगट भगवानने भगवाननानिरवासनिकसंतनोआश्रयथायतोकालिटेकरिरूपनरकचोराशिमांजाय

नेजमनामाररवातांरवातांपारआवतनहि माटेजेनेप्रगटभगवानमल्याछे नेतेभगवाननानिरवासनिकसंतनोआश्रयजेणे
कर्योनेमोक्षनिआशाथई एजभगवाननीकृपाजाणवि अनेजेभगवानेकृपाकरिनेजेजेआज्ञाआपिहोयतेआज्ञानेभगवान
निकृपाजाणिनेअतिशेदृढकरिनेपालवि अनेतेआज्ञामांलेशमात्रपणफेरपडवादेवोनहि ॥ तेक्रियासाधनकहेवायछे
अनेनिरवासनिकथवुंतेतोपंचविषयनोत्यागकरेत्यारेजनिरवासनिकथायपणविषयनोत्यागकर्याविनाकोईकाले
निरवासनिकथायनहिं तेब्राह्मणहोयतेपणपंचविषयनोत्यागकरेत्यारेतेनिरवासनिकथायतथाक्षत्रिहोयवैश्यहोय
शुद्रहोयतथात्यागिकहेवातोहोयभेखवलिधोहोयअथवागमेतेआश्रमि ॥ कहेवातोहोयपणतेसर्वेज्ञानपामिनेपं
चविषयनोत्यागकरशेत्यारेजतेनिरवासनिकथशे अनेजेआत्यंतिकमोक्षनेपामवुंतेपणनिरवासनिकथयाविनाकोई
कालेपमायनहिं ॥ मारेवासनातोसर्वनेजरूरटालविजोईशे अनेग्रहस्थनेत्यागितेतोश्रधानाभेदछे माटेजेनेवलिश्र-
धाउत्पन्नथायतेतत्कालविषयनोत्यागकरिनेत्यागीथाय अनेजेनेमंदश्रधाछे तेग्रहस्थाश्रममांरह्याछे तेग्रहस्थाश्र-
ममांरह्याजे स्त्रिपुरुषतेसर्वनेपणपंचविषयनिजेवासनातेनोत्यागकरे छुटकोछे ॥ जेमतिरथेजायछे तेजेवधारेचा-
लनाराहोयतेवेहेलापुगेछे अनेजेथोडुंथोडुंचालनाराहोयतेघ्राघेदिवसेपुगेछेपणसौनेतिर्थेपुगे छुटकोछे ॥ नेसर्वेने
सरखोजपंथपडशे तेमजेश्रद्धावालाछे तेतोवेहेलापंचविषयनोत्यागकरिनेनिरवासनिकथईनेभगवाननाअलौकि-
कसुखनेपामेछे अनेजेनेथोडिश्रधाछे तेनेघ्राघेदहाडेवासनाटलशे नेवासनाटलेछेत्यारेभगवाननाअलौकीकसुख
नेपामेछे अनेज्यांसुधिकामक्रोधलोभस्वादस्नेहनेमानएजेपांचशत्रुतेजेनेविषेअतिशेहोयतेनेअंतरमांसुखआववादेनु-
हिं ॥ नेतेनेदुःखआपेछे ॥ केमकेजेनेजेजेविषयमांआशक्तिहोयनेतेविषयनुंकोईआवेखंडनकरेत्यारेतेमांथितेने
जरूरक्रोधथायअनेज्यारेक्रोधथायत्यारेतेमांथिमोहथायअनेमोहथकिबुद्धिनोनाशथायछे अनेज्यारेबुद्धिनोना-
शथायछेत्यारेकरवानकरवानोतेनेविवेकरहेतोनथि अनेतेपशुपणानाभावनेपामिजायछे माटेपंचविषयनिजे

वासना तेने खटको राखिने जरुर टालवि अने पंचविषय निजे वासना जे जेम मुके छे तेने ज अमारा स्वरूपनो निश्चय थाय छे ॥
अने जेने पंचविषयना राग छे तेने तो अमारो पण जरुर अवगुण आवे छे जेम महाराजने आ हरिभक्त उपर वधारे हेत छे ने मा
रा उपर थोडुं हेत राखे छे ए विरिते विषयनि वासनावाला अमारो पण अवगुण ले छे ने अमारे तो बाई भाई ग्रहस्थ त्यागि
सर्वे उपर सम दृष्टि छे तेने अमारा निरवासनिक भक्त संत छे ते जाणे छे जेम महाराजने कोईना उपर पक्षपात नथी अने ॥
जेने जेने महाराज कांई कहे छे ते तो तेना उपर कृपा करिने कहे छे एवी रिते निरवासनिक भक्त समजे छे अने अमारि जे
कृपा ते पण निरवासनिक भक्त उपर ज थाय छे माटे भगवानना भक्तने तो स्थूल सूक्ष्म ने कारण ए जे त्रण देह तेथकि
नोरवो एवो जे आत्मा तेने पोतानु स्वरूप मानवुं अने एम समजवुं जे हुं ब्रह्मरूप छुं ने सुखरूप छुं अने अछेद अभेद अ
विनाशि चैतन्य ने जाणनारो ने अमर अखंड आत्मा छुं माटे दुःखरूप ने नाशवंत ने तुछ ने जड एवा जे मायिक पंचवि
षय ते मुने शुं सुख करे ए तो दुःखरूप छे ते ए तो मुने भ्रान्तिये करिने अज्ञान थकि सारप्य मनाति हति पण हवे मारे सा
क्षात्कार ज्ञान थयु माटे हवे मारे पापरूप एवा जे पंचविषय तेने शत्रु जाणिने त्याग करवो छे अने जेनि एवि समजण छे
जे हुं ग्रहस्थ छुं अने आ त्यागि छे ते त्यागि होय ते विषयनो त्याग करे ने ग्रहस्थने तो त्याग थाय नहि एम जे समजे ते निवासना
कोई काले टले नहि अने जे आत्मा छे ते तो ग्रहस्थ नथि ने त्यागिये पण नथि अने आत्मा तो अविनाशि छे ने ब्रह्म छे ने अ
क्षर छे माटे भगवानना भक्तने तो वरणाश्रम नि जे मिथ्या भावना तेनो त्याग करिने निरमानी थई ने सत्संग करिने ध
र्म ज्ञान वैराग ने महात्मे सहित भक्ति सिद्ध करिने पंचविषय नि जे वासना तेनां मूल उखाडिने निरवासनिक थवुं अने
आत्मारूप थईने प्रत्यक्ष एवा जे परमात्मा भगवान तेना स्वरूपमां जोडावुं अने ज्यारे भगवानना स्वरूपमां जिव जोडाय-
छे त्यारे ते निवासना सर्वे बलि जाय छे अने तेने ब्रह्ममय एवो दिव्य देह बंधाय छे अने ते आत्यंतिक मोक्षने पामे छे ॥
ने अखंड भगवाननि हजुरमां रहे छे ॥ ॥इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमो

नमः॥ ॥संवत् ॥१९॥ओगणिशे १६ शोलना मागशर शुदि ९ पंचमिने दिवस महाराजश्री हरिकृष्णभग
वान गाम श्री बोटादमध्ये भक्त रवेताजिनी स्त्रि बाजामथाने घेर उगमणे बार ओरडानि ओसरिमां ढोलिया उपर गादितकि
याथिने बिराजमान थया हता अने सर्वे कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोतानां मुखा
र्विंदनि आगल साधु तथा घणा क हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हती पछे धर्मानंद स्वामिये प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज मो
क्षने अर्थे शास्त्रमां अनंत साधन कर्यां छे पण तेमां एवुं कियुं एक सुलभ साधन छे जे जेणे करिने तत्काल थोडे कदाहा
डे जिवनो मोक्ष थाय पछे महाराज बोल्या जे जिवनो मोक्ष थवो ते अतिशे कठण छे अने जिवने मोक्षने मारगे चालवु
ते पण घणुं कठण छे अने अग्निमां बलिमरवुं तेथि पण जिवने मोक्षने मारगे चालवुं ते कठण छे केम के जगतमां केटलाक
ने स्त्रिने पुरुषमां हेत होय तो ते पुरुष मरे त्यारे तेने वांसे स्त्रि अग्निमां बलि मरे छे पण तेने मोक्षने मारगे नथि चलातुं
अने कुवामां पडवुं तेथि पण मोक्षने मार्गे चालवुं ते अतिकठण छे केम के कुवामां पण घणां थ बुडि मरे छे अने माथुं कपावि
ने मरवुं तेथी पण मोक्षने मार्गे चालवुं ते कठण छे केम के पैसाने लोभे करिने घणा य माथां कपावे छे माटे सर्वे करतां मो-
क्षने मार्गे चालवुं ते घणुं कठण छे अने तिर्थ व्रत तप दान पुन्य इत्यादिक साधन करिने मोक्ष थवो घणो क कठण छे॥ केम
के मोक्ष तो पंचविषयनी वासनानो त्याग करे त्यारे ज जिवनो मोक्ष थाय ते वासना टलवि घणि कठण छे केम के वासना
तो जिवने अनादिकालनि छे अने एत्रण देहमां जिव एकरस थई रह्यो छे माटे जिव ते देह तेने संगे करिने जन्ममृत्युना दुः
खने वारंवार पाम्या करे छे माटे जे पंचविषयनि वासना टाले छे तेनो ज मोक्ष थाय छे अने ते वासना क्यारे टले छे तो परमा-
त्माना स्वरूपने साक्षात्कार पामे छे त्यारे वासना टले छे ते गीतामां कह्युं छे॥ श्लोक॥ विषया विनिवर्त्तंते निराहारस्य दे-
हिनः॥ रसवर्जं रसोप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्त्तते॥ अर्थ॥ जे परमात्माने देखे त्यारे वासना टले अने ते परमात्मा तो मायापर
छे॥ अने जिवमात्र मायामां छे माटे तेनां इंद्रियो अंतःकरण पण माईक छे ते माईक इंद्रियो अंतःकरणे करिने मायापर

एवाजे परमात्मा भगवान तेपना जाण्यामां आवतानथि तेपण कह्युं छे जे ॥ यतोवाचो निवर्त्तंते अप्राप्य मनसासह ॥ अर्थः ॥
जिवनां इंद्रियो अंतःकरणना जाण्यामां परमात्मा नथि आवता अने ते भगवानने जाण्याविना जिवनो मोक्ष थायनहि ते
पणवेदमां कह्युं छे जे ॥ रतेज्ञानात्नमुक्ति ॥ अर्थः ॥ जे भगवानना स्वरूपना ज्ञानविनाजिवनि मुक्ति थतिनथि माटे भग
वानना स्वरूपनुं साक्षात्कार ज्ञान थाय त्यारे जीवनो मोक्ष थाय हवे ते भगवानने जिव केम पामे तो मायापर एवाजे भगवा
नते कृपाकरिने जिवनां इंद्रियो अंतःकरणना जाण्यामां आवे एवा मनुष्यरूपे जिवोना कल्याणने अर्थे आपृथ्विउपर प-
धारे त्यारे जिवने काने करिने ते भगवानना शब्द सांभल्यामां आवे छे ॥ अने त्वचाए करिने भगवाननो स्पर्ष कर्यामां आवे
छे ॥ नेने नेत्रे करिने जिवने भगवाननुं रूप जोयामां आवे छे अने रसनाये करिने भगवाननो प्रसाद जमाय छे तथा भगवान-
नि लिलागवाय छे नेनासिकाये करिने भगवानना हारचंदनादिकनो सुगंध लेवाय छे ॥ अने हाथे करिने भगवाननि सेवा
कर्यामां आवे छे एविरिते इंद्रियो अंतःकरणे करीने जाण्यामां आवे एवा मनुष्यस्वरूपे भगवान ज्यारे पृथ्विउपर प्रगट
बिराजता होय अने ते भगवानने बिषे जेने आत्मबुद्धि थाय तेने आत्मबुद्धिये करिने अतिशे हेत थई जाय जेम बापने दिक
रा उपर हेत थाय छे तो ते दिकरानो एके अवगुण नजरे आवतो नथि तेमजेने भगवानने विषे आत्मबुद्धि थाय तेने प्रगट
भगवानना मनुष्य चरित्रने विषे दोष भांसे जनहिं ने तेने तो भगवान जेजे चरित्र करे ते अलोकिक ने दिव्य जाणे ने क-
ल्याणकारि जाणे अने जेने जेने विषे आत्मबुद्धि थाय छे तेना गुण तेमां आवे छे माटे जेने भगवानने विषे आत्मबुद्धि था
य छे त्यारे भगवानने विषे रह्या जे कल्याणकारी दिव्य गुण ते सर्वे भगवानना भक्तने विषे आवे छे अने ते भगवानना गुण
भक्तमां आवे छे त्यारे ज तेनि वासना टले छे जेम सूर्य उगे छे त्यारे नेत्रने सूर्यनो संबंध थाय छे ते संबंधे करिने सूर्यनो गुण
जे प्रकाश ते नेत्रमां आवे छे ने रात्रिनो जे अंधकार ते नेत्रमांथि नास पामि जाय छे तेमजेने प्रगट भगवानने विषे आत्मबुद्धि
ये करिने संबंध थयो तेने विषे भगवानना गुण आवे छे त्यारे महा अंधकाररूप जे पंचविषय निवासना ते टलि जाय छे ने तो

जिवात्मा ब्रह्मरूप थाय छे ने परम मोक्षने पामे छे माटे सर्व साधनमां एक साधन मोक्षनुं सुगम एज छे जे प्रत्यक्ष भगवान जि-
वने मले अथवा ॥ ॥ प्रगट भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागि संत मलेने तेने विषे आत्माबुद्धि थाय एज सर्व विमोक्ष
नो मारग सुलभ छे जेम वहाणमां बेसिने समुद्र तर्यो तेमां कांई पेदा रवडो पडे नहिने बेठा बेठा ने सुतां सुतां समुद्र तरिज
वाय तेम प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतने विषे आत्मबुद्धि पेकरिने वगरे दाखडे करिने सुगमरिते मोक्ष थाय छे अनेजे
साधने करिने मोक्षने पामवुं ते तो जेम तुंबडां बांधिने समुद्र तर्यो तेवुं कठण छे अने मिथ्याज्ञाननी ओथ लेईने धर्म रहीत ने
प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संत मल्या विना अमथि भक्ति पे करिने मोक्ष माने छे ते तो जेम कंठमां पथरो बांधिने समुद्र तरवा
जएवा जाणवा माटे प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतने संबंधे करिने ज जिवनो मोक्ष थाय छे ए सर्वे शास्त्रनो ने सर्व सत्पु
रुषनो सिद्धांत छे पछे रघे ते भाईये प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज सर्वना कारण तो तमे एकज भगवान छो अने जिवनुं कल्या-
ण पण तमने ओलखे त्यारेज थाय पण तमे प्रगट मल्या विना कल्याण थाय नहि ने एम सर्व शास्त्र कहे छे जे भगवानने भ-
गवानना निरवासनिक संत मल्या विना मोक्ष थाय नहि अने बिजा जे सर्वे मतपंथ छे तेमां सौ सौना मतमां सौ वे एम क
हे छे जे अमारा गुरु छे ते ईश्वर छे अने ते थकि कल्याण माने छे तेनुं केम समजवुं पछी महाराज बोल्या जे सर्वे मोटे विराम
कहेता हता जे अमारुं कल्याण थयुं ने अमने अमारा गुरु ईश्वर छे पण एना अंतरमां खबरे खरो निश्चय कल्याणनो नथि अने
गुरुने पण यथार्थ ईश्वर मानता नथि अने वलि सउ सउना मतना जे गुरु छे ते पण पोतपोताना मतमां राखवा सारुं ने पोता
नि सेवा कराववा सारुं खोटुं खोटुं वढेम वताविने राजि राखे छे जेम कोईक राजाना दिकराने ने रुषिना दिकराने मित्रा-
ई थई हति पछे राजाने दिकरे रुषिना दिकराने पुछ्युं जे तमे शुं जम्या त्यारे रुषिये कह्युं के जवनि रोटलि ने भाजि जम्या
पण तमे शुं जम्या त्यारे राजाने दिकरे कह्युं के अमे तो दुधसाकर ने चोखा जम्या पछी रुषिने दिकरे घेर जईने एनि माने क
ह्युं के मारो भाईबंध राजानो दिकरो दुधसाकर ने चोखा जमे छे तेमुने पण दुधसाकर ने चोखा आप तो जमित्र निक

रनहिं जमुं पछे तेनि मायें तेनो सनो भांगवासारु जयनां मिंज काढिने वाण्यां नेजवना ख्रोरनुं धोएुं पाणि कस्युं अने बडागरा
मिठाने वादिने साकस्यें जे बुं कस्युं पछे ते छोकराने समजाव्यो जे जवनां मिंज हतां तेने कह्युं के चोरवा छे ने धोला पाणिने
कह्युं के दुध छे ने मिठाने कह्युं के साकर छे पछे ते तो दुधसाकर चोरवाने ओलखतो नथि ते जमिने राजि थईने राजाना दिक
रापासे गयो त्यारे राजाने दिकरे पुछ्युं के आज शुं जम्यो त्यारे तेणे कह्युं के दुःधसाकरने चोरवा जम्या एविरिते पांचसात दिव-
स सुधि पुछ्युं तो पण रुषिने दिकरे तेनुं ते कह्युं त्यारे राजाने दिकरे विचार्युं जे एने तो दुःधसाकरने चोरवा कोई काले मलेए
मनथि ने कहे छे जे दहाडि दुधसाकरने चोरवा जमुं छुं ते वात मनाति नथि पछे तेनी परिक्षा लेवा सारुं राजाने दिकरे ब्राह्म
पासे रसोई कराविने जमवा तेडि गयो पछे तेने दुधसाकरने चोरवा पिरस्या ते जमवा मांड्युं त्यां तो रुषीनो दिकरो अतिशे लज-
जा पामिने तेनि मा उपर कोपायमान थई गयो पछी तेनि माने कह्युं जे मुने खोटुं खोटुं कहिने जे ते खवरावति के पछे ते-
नि मायें कह्युं जे दुधसाकरने चोरवा तो आपणे मले नहि ने एम तारो सनो न भागुं तो तु मारि चाकरि करेन हि॥ तेसारुं
एम कह्युं ते मए तो द्रष्टांतने एनुं सिद्धांत तो एछे जे ज्यां सुधि मायापर एवा जे परमात्मा भगवान ने भगवानना संत ते प्र
त्यक्ष मल्या नथि ने तेना मुखवार्विंद थकि ज्ञान सांभल्युं नथि त्यां सुधि जे भगवान नथि तेने विषे भगवानपणुं मानी
ने मोक्षनि इछा राखे छे पण ज्यारे मायापर एवा जे साचा भगवान ने भगवानना संत जिवने मले ने तेनि पासे थि ज्ञा
न सांभलिने अंतरमां उत्तारे त्यारे तेने रुषिना दिकरानि पेठे ग्लानि पामीने तेने अतिशे परिताप थाय जे अमे तो अज्ञाने करि
ने सउ सउना गुरु ने विषे ईश्वरभाव ठेराव्यो हतो पण जो साक्षात्कार भगवानने भगवानना संतनि प्राप्ति थई होत तो जरूर
यमपुरिमां जात ने यमना मार खात एविरिते ज्ञान थाय त्यारे सर्वे मतनो ने सर्वे गुरुनो त्याग करिने प्रत्यक्ष भगवानने भ-
गवानना संतने विषे द्रढ प्रिति करे छे माटे अज्ञाने करिने जिव जे ते मतपंथमां बंधाई रह्या छे ने ते मां मोक्ष नथि तो पण
मोक्षनि आशा राखि बेठा छे केमके जिवने ज्यां सुधि अज्ञान छे त्यां सुधि जिव जे ते ज्यां त्यां बंधाई रहे छे एवो जिवनो

ढाळछे माटे मतपंथमांना तजात मांहे त्रागाममां सगां संबंधि स्त्रि छोकरांमां ज्यां ज्यां नेह थायछे त्यां बंधाई रहे छे अने जेने थिषे जिव बंधायछे तेना दोष तेने स्फुजता नथि माटे अज्ञाने करिने जिव मतपंथमां बंधाई रहे छे अने कोईना अंतरमां खरेखरो निश्चय नथि जे आमारुं कल्याण थयुं अने जे खरेखरा सत्यस्वरूप भगवानने भगवानना संत छे तेना स्वरूपनो जेने ज्ञाने करिने निश्चय छे तेने तो पंचविषयनि वासनानां मूळ उखडि जाय छे अने तेधर्ममां पण अतिशे दृढपणे रहे छे अने देहने पोतानुं रूप मानता नथि अने देह थकि नोखो ने ब्रह्मरूप पोताना आत्माने माने छे अने जगतमांथि वासना तेने टळि जाय छे अने तेने तो कामकाज करतां पण भगवाननि मूर्त्ति अखंड सांभर्या करे छे अने वळि प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपना निश्चयवाळा जे भगवानना भक्त छे ते एम समजे छे जे मारा अंतरमां सदाय भगवान रह्या छे ते भगवान थिना मनमां बिजो भुंडो संकल्प थशे तो मारा उपर भगवाननो अतिशे कुराजिपो थई जशे अने भगवान विना बिजा अशुभ पदार्थनो बुद्धिमां निश्चय थई जशे तो मारा उपर भगवाननि प्रसन्नता रहेशे नहिं ॥ अने चित्ते करिने जो भगवान थिना बिजा पदार्थनुं चिंतवन करिस तो मारा उपर भगवाननो कुराजिपो थशे एवि रिते दश इंद्रियो ने चार अंतःकरणनि वृतियो ते जो भगवान थिना माईक पदार्थमां जशे तो मारा आत्मानुं भुंडुं थशे एवि रिते जेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय छे तेने माईक पंचविषयनि वासना टळि जाय छे ॥ एज प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संत मळ्यानुं पारखुं छे अने जे अज्ञाने करिने मतपंथमां बंधाई रह्या छे तेने तो विषयनि वासना टळति नथि अने ते इंद्रियो पण वश थति नथि अने तेणे कल्याण मान्युं होय ते पण मिथ्या छे अने जे जगतमां देहाभिमा-नि जिव छे तेने कोई वरतमान पाळवानि पण श्रद्धा नथि तथा धर्म पाळवानि पण श्रद्धा पण नथि अने देहाभिमानिने तो ते केवळ सिस्नु ने उदरपरायण व्रति होय ॥ अने शिस्नुउदरपरायण वर्तता एवा जे पामरने विषयी जिव ते जे ते दंभे करिने एम कहे छे जे सर्वे भगवान छे भगवान थिना बिजुं कांई नथि एम कहे छे तेने तो अतिशे निचने पापिने चंडाळ जाणवा केमके जो सर्वे भगवान होय तो कुतरां गधेडां तथा मा बेहेन स्त्रि छोकरां तथा बळद घोडि घोडो ए सर्वे भगवान ठर्या त्यारे बळदने हाकवो

पडे तथा घोडि घोडाउपर चडवुं पडे माटे तेनुं महापाप लागे अने वेद शास्त्र पुराण तथा तिर्थव्रतादिक सर्वे खोटां थाय अने कल्याण
कारि जे भगवानना अवतार रामकृष्णादिक ते पण एवा दुष्टने मते सर्वे खोटा थई जाय माटे एवा जे पेटभरा पामर जिव छे ते मोढे
करिने राम कहेता होय जे सर्वे भगवान छे तो तेने नारकि ने पामिने यमपुरिना अधिकारी जाणवा अने रामकृष्णादिक भगवान
ना अवतार थाय छे ते ना संबंधे करिने तो जिव मायाना बंधन थकि मुकाईने परमपदने पामे छे ते शास्त्रमां पण लख्या छे ॥ अने भग
वानना अवतार विना बिजा सर्व जिवने संबंधे करिने जिव लखचोराशिमां जाय छे ते जो सर्वे भगवान होय तो एम शुं करवा थाय
माटे बिजा जिवमां ने भगवानना रामकृष्णादिक अवतारमां तो घणो भेद छे केम के प्रत्यक्ष भगवानने आश्रये करिने जिवनि
वासना टलि जाय छे अने वासना टले छे त्यारे ज जिवनो मो[illegible]ने ॥ इति श्रीसुखसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥

श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ॥ ॥ संवत् ।१९। आग[illegible]६ ॥ शोलना मागशर शुदि ॥ ६ ॥ छठने दिवस महाराज
श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री बोटाद मध्ये भक्त खेताजि निस्थि वाजा मवा ने घेर उगमणे बार ओरडा नि ओसरिमां सांजने समे
दित किया बिछावेला ढोलिया उपर विराजमान थया हता अने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने मुस्तके कसुंबल फेंटो बांध्यो
हतो अने कंठमां गुलाबि पुष्पना हार धारण कर्या हता अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ ने पोताना मुखारविंदनि आगल साधु
[illegible] घणा कहरिभक्तनि सभा भराईने बेठि हति पछे धर्मानंद स्वामिये प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज बे जण आत मारे दर्शने आव्या
होय ते मां एक जणाने वातो सांभलिने तमारा स्वरूपनो निश्चय थाय छे अने एक जणाने न थियतो ते शुं कारण हशे पछे
महाराज बोल्या जे जेने भगवानपणानो निश्चय थाय छे तेने पूर्वजन्मना शुभ संस्कार छे अने जेने निश्चय न थियतो तेनु
अंतःकरण विषयुने योगे करिने डोलि गयेलुं छे माटे तेणे करिने तेने निश्चय न थियतो अने जो एने खरेखरो खप होये
ने दैवि जिव होय तो सत संगे करिने तेने निश्चय थाय अने जो जिव आसुरि होय तथा कोईक सत्पुरुषनो एणे द्रोह कर्यो
होय तो ते पापे करिने तेनि दोषित बुद्धि थई गई होय ने ते भगवानने संगे रह्यो होय ने नित्य ज्ञानवार्ता सांभलतो होय

तोपणतेनेनिश्चयथाय नहि जेम सूर्यनेराहु आवेछे त्यारेतेनो प्रकाशढंकाईजायछे तेमदोषितबुद्धिवालाने ज्ञानरूपि
प्रकाशढंकाईजायछे माटेदोषितबुद्धिवालाने निश्चयन थिथतो॥ पछे वलिधर्मानंदस्वामियेपुछ्युं जे हे महाराज तेनी
दोषितबुद्धि केमटलेछे पछे महाराज बोल्या जे एणे जेजे सत्पुरुषनो द्रोह कर्यो होयतेवि आगलविरमानि थईने तेनिप्रा
र्थनाकरेने तेने प्रसन्नकरे अने तेदोषनुं जेमशास्त्रमां कह्युं होयतेवि रितेतेनुं प्रायश्चितकरे तो तेनिदोषितबुद्धिटले पणते
विनाकोईरितेटलेनहि पछे वलिधर्मानंदस्वामियेपुछ्युं जे एणेपूर्वजन्मनेविषे कोईक सत्पुरुषनो द्रोह कर्यो होयअथ
वा आजन्मनेविषे कर्यो होय तेनि तेनेखबर नहोयते निदोषितबुद्धि केमटले पछे महाराज बोल्या जे एवि दोषितबुद्धिवा
ल्यानो एकउपायछे जे एने सत्पुरुषनेविषे कोईकरिते हेत थाय ने सत्पुरुषनो विश्वास आवेतो तेनाउपर सत्पुरुष कृपाकरि
नेटाले तो टलिजाय जेमकोईकने महारोग थयो होयने तेरोग कोईरिते टलतो नहोय पछे तेने कोई खरेखरो वैद मलेने
ओषध आपिने तेनो रोग मटाडे त्यारे ते निरोगि थायछे तेमदोषितबुद्धिवालानि उपर सत्पुरुष कृपाकरिने पोतानि सेवाक
रावि ने तेने ज्ञान आपिने ते निद्रंद्रियो सर्वे नियममां रखाविने ते निदोषितबुद्धिटालिने तेनेपोताना स्वरूपनो निश्चयक
रावेछे त्यारे तेनिदोषितबुद्धि टलेछे नेते प्रत्यक्ष भगवाननुं भजनसमरण किरतन ध्यानकरिने ब्रह्मरूप थईने भगवान
ना अक्षरधामनेपामेछे॥

॥इति श्रीमुख्यसिद्धांतसमाप्तः४ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥

॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत १९ओगणिसे १६ सोलना पोषसुदि ९ नवमिने दिवस महारा
जश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्रीउगामेडि मध्येराघवमाधवजिने घेरउत्तरादे बारओरडानी ओसरिमां ढोलिया उपर सांजने
समे विराजमान थया हता ॥ अनेसर्वेजरियानि वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठमां पुष्पना हार सोभि रह्या हता ॥ ने पाघमां -
तोरा लटकता हता ॥ ने बे कान उपर पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता ॥ अने जमणा हाथमां एक लिंबुनुं फल धारण कर्युं हतुं ॥
ने ते वारने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनि आगल साधु तथा घणाक हरि भक्तनि सभा भराईने बे-
ठि हति पछे महाराज बोल्या जे अमारि भेगा रहेनारा हरि भक्त सर्वे सांभलो तमने वात करवी छे ॥ पछे सर्वे हरि भक्त हाथ जोडि
ने बोल्या जे कहो महाराज ॥ पछे महाराज बोल्या जे जेने अमारि पासे रहेवुं होय तेने तो निष्काम भाव राखिने अतिसे सावध
न रहेवुं केम के अमारे तो निष्कामि निर्लोभि निस्वादि निस्नेहि निर्मानि एवा जे साधु ते साथे जबने छे माटे तमारे पण तेना जेवा
ज गुण शिखवा ॥ तो ज अमारा भेगा रहेवासे ॥ अने आगलना जेजे स्वभाव होय तेने दिवसे दिवसे त्याग करवा अने अमारा
दर्शने हजारो बाई भाई आवे त्यारे तेने विषे इंद्रियोने अतिसे नियममां राखिने बाईयोने विषे मा बेहेन दिकरिनो भाव राख
वो पण कुदृष्टिये करिने आडुं अवलुं जोवुं नहिं ॥ अने हमे वारता करता होईये के कथा वंचाति होय त्यारे एकाग्र मने करिने सां
भलवुं पण तेमां पोताने बोलवुं नहि अने कोईक बोले तो तेने हलवे रहिने छानुं राखवुं अने अमारां दर्शन थतां होय के क
था वारता थति होय त्यारे अमारा होय तेने सगडि ये तापवुं नहि ॥ अने वगर प्रयोजने अमाराने संतनां दर्शन मुकिने आडुं अव
लुं जोवुं नहिं ॥ तथा ज्या त्या फरवुं नहिं अने परस्पर भेगा रहिने सेवा करवानो स्वभाव राखवो ॥ पण भगवानना भक्ते पासे
सेवा करावि ने राजि न थवुं अने देहनि सेवा भगवानना भक्त पासे जे करावि ने राजि थाय छे तेने तो मोटुं पाप लागे छे माटे
देहनि क्रिया तथा सेवा ते तो पाताने हाथे ज करवि जेम कोईक तिर्थ करवा जाय त्यारे ते ने रसोई करवि पडे त्यारे कोईक -
सिधु लावे कोईक बलतण छाणां लावे कोईक पाणि भरि आवे कोईक रसोई करे कोईक वासण उटके इत्यादिक पर

स्परभेगा थईनेदेहनिवीहथया निक्रियाकरे छे नेतेमांकोईकोईनेपाडनथिचडावता तेमतमारे सर्वेनेखाधंजोईयेछे
एतेपरस्परहाथोहाथनिक्रियाकरवि पण आलस्रु थईनेबेसिरहेवुनहिं केमकेआवा ब्रह्मदेवतासाधु ब्रह्मचारिकेहरिभ
क्त तेनिपासेरसोईकरावि ने रखानुंगोनेदेहाभिमानेकरिनेबेसि रहेशो तोउलटिबुद्धि भ्रष्टथईजशे माटेसर्वेनेए आज्ञा छे
जेरसोईआदिकजेजेसेवाभक्ति होयतेनेतोपोतानुंमोटुंभाग्यमानिनेदेडेकरिने क्रियाकरवि पण बेसिनरहेवुं अनेमोटे-
रासाधुहोय तेनेनित्येहाथजोडिनेकहेवुंजेमुनेजेजेसेवाभक्ति होयतेकहोअनेपरस्परएकबिजानेकामबतावेतेतत्
कालकरवाये सहितकरवुंनेतेनिवारनलगाडविअनेतेविनापणपाडविनहिं एवीरितेभगवानना भक्तनोमहिमासमजवो
केमजेआलोकमांकोईकराजा होयतोतेनामाणसतेजेमराजाकहेतेमहाजरउभारहे छे अनेतेराजातोनासवंतपदार्थ
आपेएवोछे नेतेपदार्थदेहनेसुखकरे ॥ तेदेहतोपड्योरहेवानो छेनेमरिनेतोजमपुरिमांलेईजायएवो छे तोपणतेराजा
नाहजुरमांउभारहे छे ॥ तो आतोजिवनाअतिशेसाचाहितकारिएवाजेभगवाननाभक्ततेनुंवचनकेमलोपायएमजा
णिनेअतिशेनिरमानिथईनेभगवाननाभक्तजेजेआज्ञाकरेतेनेराजिथईनेकरवुं अनेपोतेघेरराजमुकिनेआव्योहोय
अथवाब्राह्मणादिकउंचकुलनाहोयतथाशास्त्रनाभणेलाहोयतोपणभगवाननाभक्तगरिबहोयनेजातिवेकरिनेउ-
तरताहोय ॥ नेकांईभणेलापणनहोयतोपणजोतेनेअमारास्वरूपनोनिश्चयहोयनेअमारिआज्ञादृढपणेपालताहोय
तोतेनोमहिमासमजिनेतेनिआगलनिरमानिथईनेतेनिसेवाकरविपण भगवाननाभक्तआगलरंचमात्रमानरा
खवुंनहिं ॥ अनेजिवचोरासिमांप्रारब्धवशथईनेवसंदनाअवतारआव्याहशे त्यारेखेडुनीआज्ञापालिहशे अनेगधे
डानाअवतारमांकुंभारनिआज्ञापालिहशे एविरितेअनंतजन्मधरिनेनिरमानिथईनेअनंतजिवनिसेवाकरीछेएमजा
णिनेकोईजातनुंमानभगवाननाभक्तआगलराखवुंनहिं अनेकर्मवशथईनेअनंतनिसेवाकरिछे तो आतोआवाब्रह्मवे-
ताप्रगटभगवानना भक्तसंततेनिसेवातोजेनेअनंतजन्मनापुन्यहोयतेनेमलेछे पणथोडापुन्यवालानेप्रगटभगवानने

प्रगटभगवाननासंतनिसेवामलतिनथि केमके तेनिसेवायेकरिने पामरजिवहोय ते ब्रह्मरूपमुक्तथईजाय छे ।। अनेप्रग
टभगवाननाभक्तनोमहिमाजो ब्रह्मायेजाण्योतो गोपिगोवालजे प्रगटनाभक्त तेनाचरणनिरजमाथेचडाविमाटेएवा
भगवाननाभक्तनिसेवातो अतिशेहे तेकरिने करविनेएमसमजवुंजे ओहोमारांमोटां भाग्यजेमुने प्रत्यक्षभगवानने
तेनाभक्तनिसेवामलिछे एमसमजिने अमारापासेनारहेनारा अमाराभक्त तेनेदेहेकरिने जिवतपरयंत भगवाननाभक्त-
नीसेवाकरयाकरवि ।। एविरितेसमजिने जेसेवाकरशे तो तेनोजिवअतिशे व्रद्धिनेपामशे अनेजेवासाधुनास्वभावछे
तेवास्वभावसर्वने शिखवा केमजे जेना भेगारहेवुंहोय त्यारे तेनाजेवागुणहोयत्यारेज तेभेगु बने छे।। पणतेवीनातेभे
गुरहेवायनहि जेमश्राद्धकार भेगारहेवुंहोयत्यारे श्राद्धकारनाजेवागुण शिखे त्यारे तेभेगुरहेवाय तेमभगवाननेभग-
वाननासाधु भेगुंरहेवुंहोय तेने तेनाजेवा निष्कामी निर्लोभि निस्वादि निस्नेहि निर्मानिएवागुण शिखवा ।। अनेएवागुणशि-
खे त्यारे तेने निर्विघ्नपणे सत्संगमांरहेवाशे अनेते अतिशे मोटिपदविने पामशे ।। पछे गामचुडानादयेमोनजियेप्रश्नपुछ्युंजे
हे महाराज भगवानने भगवानजाणताहोय तेमांतेकोईजातनोसंशयनहोय तो पण संसारनिवासनाअंतरमांथिटलतिन
थि तेनुंशुं कारणहशे पछे महाराज बोल्याजे संसारनो जिवने अनादिनो संबंधछे तेज्यांज्यां जिवजन्मधरे छे त्यांथिज तेने
संसारनाशब्द सांभलयाने तेनारूपजोयांने तेनोस्पर्शकरयो ।। एविरिते संसारने भेलिसारेकरिने जिवजेते संसारमांएक
रसथईगयो छे तेएसंसारमांथि जिवने छुटवुं ते तो अतिशे कठण छे केमके तेसंसारनो जिवमां अतिशे पासलागिरह्यो छे
।। माटे संसारनिवासनाटालवि ते घणी कठण छे तोपण तेवासनाटालवानो एकउपाय छे तेशो उपाय छे तो प्रत्यक्षएवा
जे आत्यंतिकज्ञाननाआपनारा परब्रह्म परमात्मा भगवानने तेमना एकांतिकनिरवासनिक संत तेना स्वरूपनो महा-
त्मज्ञाने सहित उत्तम निर्विकल्प निश्चयथाय त्यारेसंसारनिवासनानांमूल उखडि जाय माटे प्रत्यक्ष भगवानने संतना
स्वरूपनो निश्चय थाय तो तेने संसारनिवासनाटलि जाय केमके भगवानने संतथि जिवनुं कोण सगुं वधारे छे अने किंयु

पदार्थ जिवनिभेगुंथावेएवुंछेसर्वेपदार्थपडतररहेवानां छे अनेसंसारपण सर्वे स्वार्थियो छे केमके संसारिमात्र नेज्यां
सुधिपोतपोतानो स्वार्थसरेत्यांसुधिहेतरारवेनेस्वार्थनसरे तो कोईकोईनेआंगणेपण उभारहेवादेनहिं॥ अनेजिवछेतेमु
र्खछे नेअज्ञानि छे तेणे करिनेसंसारमांहे तरारवेछे ॥ अनेजे भगवान ने भगवान नासंत छे तेतो जिवनासाचाहितकारिछे
ने जिवनेअनादिनिरक्षाभगवानज करे छे अनेसर्वेसुरवनाधाम तेतोएक भगवानज छे अनेजिव छे ते तोसर्वेस्वार्थियाछे
ने एक बिजानेदुःरव नाआपनाराछे ॥ अनेभगवानने संतछे तेतो महा परमार्थि छे ने अनंतकोटिब्रह्मांडनापति छेअने
जेनासुरवउपरअनंतकोटिब्रह्मांडनां जे विषयनासुरव तेने वारिफेरिने नारिवदेईये अनेएवा अपरमीत सुरवनाआपनाराजे
भगवान ते भगवानने नो महिमाज्यारे भरतराजानेजणाणो तोतेणे सर्वेराज्यवैभवसंबंधिसुरवनो त्यागकरिनेवनमांज-
ईने भगवाननुंभजनकर्युंअनेगोपिचंदराजानेज्यारे भगवानने नो महिमा जणाणो त्यारे सर्वेसंसारनोत्यागकरिने भगवा
न भज्या माटे भगवानने संतना स्वरूपनो महात्मेसहितउत्तम निर्विकल्पनिश्चय थाय तो तेने संसारनी वासना टलि जाय
नेसंसारनीगणतिपणरहेनहिं ॥ अनेजेमपूर्वेजन्मथयाहताने तेनां सगां संबंधि धनमाल तेसर्वेनी वासनाआ जटलिग
ई छेने तेकोई दिवसे पूर्वेनो संसार सांभरतो नथि तेमजो भगवानने भगवाननासंतनेमहात्मज्ञाने सहितसाचासगाजा
णितो तेनेजेम पूर्वना संसारनिवासना टलि गई छे ॥ तेमतेने आजनासंसारनिवासनापण टलि जाय माटे भगवान
ना स्वरूपमांनिश्चय मां कसर छे त्यां सुधि संसारनिवासना रहे छे ॥ अने जो निश्चयथाय तो वासना टलि जाय ते सारुं संत
नो समागम करीने निश्चयकरिलेवो अने निश्चयथवानोएउपाय छेजे भगवानना संतनोमहिमा समजिने ते नि निष्क
म भावे सेवाकरविने तेमां पोताना जिवने जोडिदेवे तो तेने संसारनिवासनानामूलउरवडिजाय । ने पामरजेवो जिव
होय ते महाभक्त थई जाय अने तेने अमारास्वरुपनो निश्चयपणथाय ॥ एतमारा प्रश्ननोउत्तर छे ॥ ॥
॥ इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ॥ ॥ संवत् ।१९। ओगणिसे

१६ सोलनापोसशुदि १० दशमीनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवान गाम श्रीउगामे डिमध्ये भक्तदादाखुंजानेघेरगादि तकियेशुक्तढोलियाउपर थिराजमानथयाहताअनेसर्वेश्वेतवस्त्रधारणकर्यांहताअनेगुलाबिरंगनोफेटो मुस्तकेबांध्यो हतोनेजमणाहाथमां रुमालधारणकर्योहतो ।। अनेपोतानामुखार्विंदनिआगलसाधुनथाघणाकहरिभक्तनिसभाभ राईनेबेठिहति ॥ पछेमहाराजबोल्याजेजिवनेकल्याणनादातामलवा तेअतिदुर्लभछे अनेज्यारेकल्याणनादाता पोतानेमले त्यारे तोपोतानुंअतिमोटुं भाग्यमानिनेतेनोदृढआसरोकरयोकेमकेकोईदिवसजिवनेकल्याणनादाताप्रग टभगवानने भगवाननासंतमल्यानथिअनेजोमल्या होयतो जिवचोरासिमां शुंकरवाभटके ।। अनेबिजांस्त्रिछोकरांस गांसंबंधिनातजातधनमाल गाम ग्रासराजपाट आदिकअनंतफेराचोरासिमां जिवनेमल्याछे।। नेतेसर्वेनासपामिगयां छेनेआजनांजेछेतेपणसर्वेनासथईजशे ।। अने जिवनासाचासगानेअविनासिकरवनाआपनाराएवाजेकल्या णनादाताभगवाननेसंततेआजतमनेप्रगटमल्याछेमाटेसावधानथईनेप्रत्यक्षभगवाननेसंतनोदृढआसरोकरिने तेनिआज्ञाजेधर्मतेमांरहिनेतेभगवाननेभगवान्नाएकांतिकनिरवासनिकसाधुतेथकिज्ञानपामिनेपोतानाआ त्मानुंकामकरिलेवुं अनेअधर्मअनितिनाचालनाराएवाजेअसत्यपुरुषतेनासंगथिछेटेरहेवुं ।। अनेप्रत्यक्षभगवा ननाआसरावालाएवानेनिष्कामीनिर्लोभिनिस्वादिनिस्नेहिनिर्मानिएवाजेसाधुतेनोसमागमकरवोनेतेनावच नमांदृढपणेवरतवुं ।।अनेजगतनिमिथ्यामोटम्यमानमांलेवावुंनहि ।।अनेजगतनाअधर्मिजिवयरवाणेतेणेकरि नेपोतानेमोटम्यनमानथिअनेतेजगतनाजियनिंद्याकरेतेणेकरिनेपोतानेन्यानम्यनमानथि ।। अनेजगतनिजेना नम्यमोटम्यछेतेतोमिथ्याछेनेनासवंतछे माटेप्रत्यक्षभगवाननेसंतमल्याछेतेजअविनासिकरवनाआपनारा छेअनेसर्वोपरिमोटम्यनाआपनाराछे।। अनेअंतसमानाबेलिनेरक्षानाकरनारातेपण भगवानछेमाटेअतिदु र्लभजेभगवाननेभगवाननासंततेप्रत्यक्षमल्याछे॥ तेभगवाननेसंतनोदृढआसरोकरिने भगवाननाभक्तने

महाअलमस्तरहेवुं ॥ अनेदेहथिनोखो पोतानाजिवात्मानेमानिनेतेआत्मानेविषेपरमात्माअखंडरह्याछे ॥ तेजपरमात्माभगवाननेसंतप्रत्यक्षमल्याछे एमजाणिनेहालतांचालतांखातांपितांसर्वक्रियानेविषेभगवाननुंअखंडभजनकरवाकरवुं॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्त॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत् १९ओगणिशे १६ सोलना पोसशुदि १४ चतुरदसिनेदिवसमाहाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीउगामेडिमध्येपटेलपरमजिनेघेरउगमणेबारओरडानिओसरिमांखुरसिउपरविराजमानथयाहताअनेसर्वेश्वेतवस्त्रधारणकर्यांहतांअनेकंठमांहजारिपुष्पनाहारपेहेर्याहताअनेपुष्पनागुच्छनेतोराधारणकर्याहता ॥ अनेललाटनेविषेकेशरनिआडयनेकंकुनोचांदलोकर्योहतोअनेपोतानामुखाविंदनिआगलसाधुतथाघणाकहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठिहतिपछेतेगामनासर्वेहरिभक्तेमहाराजनेहाथजोडिनेकह्युंजेहेमहाराजआजतोरंगकर्योछेतेकृपाकरिनेरंगेरमो ॥ अनेआजउछवकरवोछे ॥ पछेमहाराजबोल्याजेबहुसारुंलावोरंगएमकहिनेउठ्यानेचाखडियोपेहेरिनेपलवटवालिनेएकफेंटोखभेआड सोडेनाखिनेकेडसघातेताणिबांधिनेहाथमांलाकडिलेईनेरजपुतहमलनाफलिमांगाडाउपरढोलियोबिछाव्योहतोतेउपरविराजमानथयापछेरंगलाव्यातेरंगखूबउडाड्योनेहरिजननेअतिशेआनंदपमाड्यापछेमहाराजसर्वेहरिजनसहितनाहावापधार्यातेनाहाईनेजरियानिवस्त्रधारणकरिनेभक्तकाशीरामबेहेचरनेघेरउतरादेबारओरडानिओसरिमांखुरसिउपरविराजमानथयाअनेपोतानामुखाविंदनीआगलसाधुतथाघणाकहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठिपछेमहाराजबोल्याजेआजगतनेविषेजेअतिशेपंचविषयनारागिअनेअखत्तरडात्यानेअज्ञानिजिवछेतेतोभगवाननाअवतारनिलिलाजोईनेपोतेपणविषयभोगववासारुंतेविलिलाओकरेछेतेनेतोअतिशेनिचनेपापिजाणवा ॥ अनेतेलिलानाकरनाराने तेनाजोनाराबेयनारकिथायछेनेतेनेजमनादुतअतिशेमारेछेअनेजेभगवानछेतेतोसदायमायापरछेपणभगवाननेमायानुंकार्यबंधनकरिशकेएमनथीमाटेभगवानजेजेलिलाकरेछेतेनोअनंतजिवोनामोक्षने

अर्थेकरे छे पण पोताना सुखसारु तथा विषय भोगव्याने अर्थे नथि करता ॥ अने भगवान तो सदाय माया पर ने पुरण काम छे ॥
ने सदाय सुखना धाम छे ॥ अने भगवानना धाम ने सुखे करिने तो अनंत कोटि ब्रह्मांडना ब्रह्मादिक देव मनुष्य सुखिया छे
॥ माटे भगवान जे जे सारां वस्त्र तथा घरेणां तथा सारां सारां भोजन तथा पुष्पना हार तथा घोडे पालखिये बेसवुं तथा कोईक
ने बोलावबुं कोईक सामुं जोबुं तथा रंगे रमवुं ईत्यादिक जे जे सेवा अंगिकार करे छे तथा जे जे लिला करे छे ते तो जिवोना क
ल्याणने अर्थे करे छे केमके भगवान ज्यारे मनुष्य देहनुं धारण करे छे त्यारे पोते भगवान एवो संकल्प धारिने आवे छे जे मारे अ
नंत जिवोनो उद्धार करवो छे माटे पोतानो संकल्प सत्य करवा सारु जे जे भक्तजन भाव करिने जे जे सेवा करे छे ते सेवाने तेना
कल्याणने अर्थे अंगिकार करे छे ॥ अने अमे जे आज रंग उडाड्यो ते रंग जेना उपर पड्यो हशे ते जिवने मायानुं बंधन टलि जशे ॥
अने जेने जेने अमारि रंग भरेलि मूर्त्तिनां दर्शन थयां हसे ने ते मुर्त्तिनि अंत समे तेने समर्ति थै आवशे ने ते जिव महापापि होय
तो पण ते जिव अमारा धाम ने पामि जशे माटे अमारि जे जे लिला छे ते जिवोना कल्याणने अर्थे छे ने अमारि जे मूर्त्ति आलोक
मां देखाय छे ते पण जिवोना मोक्ष सारु देखाय छे पण अमारे आलोकमां बिजुं प्रयोजन नथि अने अमारा जे एकांतिक संत छे ते
तो अमने सदाय अक्षरधामने विषे देखे छे ॥ अने जे ने जेने अमारो संबंध थाय छे तेनो महिमा पण अमारा साधु जाणे छे पण तेम
रो महिमा तमे जाणवाने समर्थ नथि ॥ जेम बालकने चिंतामणि हाथ आवि होय तो पण ते चिंतामणिनो महिमा बालकने ज
णाय नहि ने तेनो पोताने आनंद पण आवे नहि अने ए चिंतामणिना पारखुं छे ते जाणे जे ए बालकने बहु लाभ मल्यो छे अने
ते बालकने पण ज्यारे समजण आवशे त्यारे घणो आनंद पामशे तेम बालकनि पेठे चिंतामणिरुप जे अमारि मूर्त्ति मलि छे।
ते ज्यां सुधि जिवने खरे खरुं ज्ञान थयुं न होय त्यां सुधि तेने अमारो महिमा जाण्यामां आवतो नथि ने अमारा महिमाना जा
णनारा एवा जे साधु तेनो समागम करिने ते थकि जेम जेम ज्ञान थतुं आवशे तेम तेम अमारो अलौकिक महिमा ज
णातो जशे अने अतिशे आनंद ने पामशे अने तेने चौद लोकनां जे [illegible]चविषयनां सुख छे ते सर्वे काग विष्टा तुल्य थई जशे

माटे अमारो महिमा समजाय ते सारु साधुनो समागम करवो अने ज्यारे महिमा समजासे त्यारे अंतरमां प्रकाश थशे अने ते
नाउरमां अमे निवास करिने रहीशुं ॥ अने ते ने मायानुं आवरण टलिट जशे ने ते भक्त देह छतां ब्रह्मरुप थशे ॥ अने बिजो
कोई जिव होय ने ते अमारो वाद लेईने रंगे रमशे के सारां सारां वस्त्र घरेणां पहेरशे तथा सारां सारां भोजनना थाल जमशे
ने अमारा जेवुं आचरण करशे तो ते घोर नर्कमां पडशे अने तेनो जे जे संग करशे तेनुं पण अतीशे भुंडुं थशे ॥ ॥
॥ इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः ॥ ॥ संवत् १९ ओगणिशे १६
सोलना पोस शुद १८ पुन्यमने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीउगामेडि मध्ये रावल भाणजिवेचर ने घेर उत्त-
रादे बार ओरडानि ओसरिमां गादि तकिया नरवावि ने ढोलिया उपर विराजमान थया हता अने सर्वे जरियानि वस्त्र धारण कर्यां
हतां ने कंठमां पुष्पना हार पहेर्या हता अने बे कान उपर गुच्छ धारण कर्या हता ने पाघमां तोरा लटकता हता अने कंकुनो चांद-
लो कर्यो हतो ॥ अने पोताना मुखारविंदनि आगल साधु तथा घणा कहरि भक्तनि सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे महाराज कृपा
करिने बोल्या जे जेने भगवानने प्रसन्न करवा होय तेने पंचविषयनि वासनानो त्याग करवो अने पंचविषयनि वासनानो त्या
ग करे छे तेना उपर ज भगवान अत्यंत राजि थाय छे केमके पंचविषयनि स्वाद मां आखो विश्व बंधाणो छे ॥ अने अधर्म अनिति-
आदिक जे जे पाप थाय छे ते पण पंचविषयनि वासनाये करिने थाय छे अने तेणे करिने जिव जे ते जन्म मृत्युने चोराशिनां महादुः
खने भोगवे छे माटे ए दुःखथकि जिवने मुकाविने पोताना अक्षरधाममां लेई जवा सारु भगवान कृपा करिने प्रगट थाय
छे ॥ ते भगवाननो जे जिव आसरो करिने पंचविषयनि वासना मुके छे ते जन्म मरणना दुःखथकि मुकाय छे अने तेना उपर
भगवान अत्यंत प्रसन्न थाय छे माटे जेने भगवानने प्रसन्न करवा होय तेने पंचविषयनि वासना जरुर मुकवि ए सर्वे शास्त्र
नो सिद्धांत छे ॥ हवे ते वासना शुं तो काम लोभ स्नेह स्वाद ने मान ते मां जे जिव प्रितिये करिने बंधाणो छे ए ज वासना
छे ॥ अने ए पंचविषय थि प्रिति जेने टले छे ते जिव मुक्त थाय छे ॥ अने तेने ज भगवानने विषे अचल प्रिति थाय छे अने

सत्पुरुषेशास्त्रमांजेजेजपतपव्रतसाधनकह्यांछे तेपण एपांचदोषनेटालिनेनिर्वासनिक थईने भगवानमांप्रितिथाय
तेसारुंकह्यांछे माटे आज अमारिआज्ञायेकरिनेपांच वर्तमान दृढराखिनेजे ग्रहस्थहोय तेने कामलोभनेस्नेह एत्रणने
जतनकरिनेजितवांअनेएत्रणनेजितेतेग्रहस्थपण निरवासनिक थायनेअक्षरधामनेपामेअनेजेत्यागिहोय तेनेत्यागिना
धर्ममांदृढरहिने स्वादनेमान एबेनेजतनकरिनेजितेतो ते त्यागि निरवासनिक थाय ॥ केमके त्यागिने कामलोभने स्नेह
नोसंबंधथोडोछेनेस्वादनेमाननोसंबंध घणोछे अनेग्रहस्थनेकामलोभनेस्नेहनो संबंधघणोछे नेसादनेमाननोसंबंधग्रहस्थनेबहुनथि
अनेजेजेविषयनो वह्यारथिसंबंधथायछे तेतेविषयनिअंतःकरणमांघधारेवासनाबंधायछे अनेजेजे विषयनो वह्यारथित्यागथायछे तेतेविषयनि
अंतःकरणमांथिवासनाटलिजायछेमाटेग्रहस्थनेस्वादनेमाननोसंबंधथोडोछे तोतेतेनेषउयाननथिजाणतातेकेम थोडोसंबंधछे ॥ तोकामेकरिने
ग्रहस्थसंसारमांरह्योछे ॥ तेगमेतेवो ग्रहस्थमोटोहोयतोपणते ग्रहस्थ त्यागिनेनमेने निरमानिरहे ॥ अनेलोभेकरिनेस्वा
दरूपिविषयनथिभोगवतो ॥ केमकेग्रहस्थनेतोखाधानिपण निवृति आवतिनथि एवो व्यवहारनोपासलोछे ॥ माटे
खेडुछेतेरातदहाडोमेहेनतकरयाकरेछे तोपणतेनेरोटलो होयतो शाकनहोय ने शाकहोयतो छाशनहोयने छाश
होयतोअथाणुनहोय एवीरितेखोईमांरोटलोनाखिनेलुखापाख्याखायछे नेमेहेनतकर्याकरेछे ॥ पण तेने स्वाद नुभा
नरहेतुनथि अने वलिनाहुकारछे तपण वेपारवणजमांसांजपडिजायतो पण खाधानि नवराई आवति नथिअनेटाढ
उनानोपण मेलरहेतोनथि ॥ अने लोभेकरिने घिगोलखांडसाकरतेपण स्वाद्दु खाय नहि ॥ माटे ग्रहस्थनेबे विषय स
हेजे थोडाछे अनेअज्ञानेकरिने कामलोभनेस्नेहमां ग्रहस्थबंधाणा छे ॥ माटेतेने ज्ञान थाय त्यारे तेबंधनथकिमुकाय छे
अनेते ज्ञानपणसत्पुरुषथकि थायछे ॥ माटेजेनेपोतानाआत्मानो मोक्षकरवानिईछाहोय नेजन्ममरणनांदुःख थकि
मुकावुहोय तेनेतोप्रत्यक्ष भगवान तथा तेनानिरवासनिकएवाजेसाधुतेनोसमागमकरिनेतेनोदृढआशरोकरवो ॥
तोतेथकिविषयनोअतिघ्नोकठणपासलोछे ॥ पण ते सहेजे कपाईजायछे ॥ ते सत्पुरुषकेविरिते विषयथकिमुकावेछे

॥ तोएमज्ञानरूपे छे जे तुं आत्मा छे ते तो चोविसतत्वनो जे जडदेह ते थकि नोखो छे अने जे आत्मा छे ते तो अविनाशि छे
पण जड एवो जे माइकदेह ते आत्मानुं स्वरूप नथि अने ते देहने सुखे करिने आत्माने सुख नथि ॥ ने देहने दुःखे करिने आत्मा
ने दुःख नथि ॥ अने जे सुखदुःख जणाय छे ते तो मोहरूपि निंद्राने विषे अज्ञानरूपि स्वप्नमां भ्रांतिये करिने जणाय छे जेम को
ईक पुरुष निंद्रामां सुतो होय ने तेने स्वप्नु आवे ने ते स्वप्नामां घणुं दुःख थाय अथवा घणुं सुख थाय ने अतिशे आनंद पामे
पण ते पुरुष जागे त्यारे ते स्वप्नानु सुखदुःख सर्व मिथ्या थई जाय छे ॥ अने स्वप्नामां पण सुखदुःख लेशमात्र नहोतुं ने भ्रा
न्तिये करिने जणातु हतुं ॥ तेम जे ज्ञानरूपि जाग्रत अवस्थाने पामे ने मोहरूपि निंद्रा टले त्यारे ज्ञानरूपि स्वप्नामां जे सुखदु
ख पामतो हतो ते सर्व टलि जाय छे ॥ जेम जाग्रत अवस्थाने पाम्यो ते ने स्वप्नतुं सुखदुःख खोटुं थई जाय छे ने ते स्वप्नानां सु
खदुःखनो हर्षसोक लेशमात्र रहेतो नथि ॥ तेम ज्ञानरूपि जाग्रत अवस्थाने जे पामे छे तेने अज्ञानरूपि स्वप्नानां जे पंचविष
यसंबंधि देहनु सुखदुःख ते मिथ्या थई जाय छे जेम जनक राजा ज्ञानरूपी जाग्रत अवस्थाने पाम्या हता तो पाछे करिने रा
ज्यमां रह्या तो पण राज्य संबंधि जे पंचविषयनां सुख तेने भोगव्या नहि ॥ अने सत्पुरुषनो समागम ने भगवाननि कथावार्ता
कीर्त्तन भजनस्मरण तेनो अतिशे अभ्यास निरंतर राखता अने संसार थकि उदास रह्या अने पोते कथा सांभलवाने बेठा हता
ते समे पोतानि मिथिलापुरि बलवा लागी त्यारे जनकराजा एम बोल्या जे मारुं कांई नथि बलतुं एवि रिते ज्ञानरूपि जाग्र
त अवस्थाने पाम्या हता त्यारे राजा जनक विदेहि कहेवाणा तेम ज्ञानि एवा जे ग्रहस्थाश्रमि भगवानना भक्त तेने विचारि
ने जोवु ॥ जे हाडमांसनो लोचो जे देह ते मारुं रूप नथि अने एम समजवु जे मुने तो प्रत्यक्ष भगवान ने भगवानना संत मल्या
छे माटे हवे तो हुं ब्रह्मरूप थयो छुं ते सारुं नरकमांथि बनि एवि जे नरकनि पुतलि स्त्रि तेमां हुं लोभाउं एवो नथि ॥ अने एमां
तो स्वान ने सुकर जेवा जे पामर जिव ते लोभाय छे ॥ अने बाईयो हरिभक्त होय तेने पण पोताने आत्मारूप मानवुं ॥ अ
ने विर्य ने रुधिर थकि बन्यो एवो जे पुरुषनो देह तेमां मोह पामवो नहि ने पोताने मल्या जे प्रत्यक्ष भगवान ने भगवानना

संत तेनाचरणारविंदमांद्रढप्रीतिकरवी अनेस्त्रिपुरुषबेनेकामरुपिवासनानो दिवसेदिवसे एविरिते समजिने त्यागकरवो॥
अनेपूर्वेपण जेनेप्रत्यक्षभगवानने संतनो॥ संबंधथयोछे तेनेसंसारमांथि प्रितिटलिगई छे तेगोपियोने श्रीकृष्णभ
गवानननो संबंधथयो नेसंसारमां रहि तोपणसंसारसंबंधि सुख भोगव्यां नहिं ॥अनेतेनेगमे तेवो रुपालो पुरुषदेखा
य तोपणतेने हाडमांसनेनर्कतुल्यजाणती नेमएविरितेविचारिने अमारा आश्रित एवाजे ग्रहस्थहरिभक्त बाईभाई
सर्वेनेकाम निवासनानो त्यागकरवो ॥अनेद्रव्यादिकपदार्थनोजे लोभ तेनोएमविचार करवोजे हुं आव्यो त्यारेशुं लाव्यो
हतो नेजईशत्यारेशुं भेगुं आववानुंछे सर्वेपडयुंरहेशे ॥अनेवेद्रव्यादिकपदार्थपण मिथ्यानासवंतछे एमसमजिने लो-
भनो त्याग करिने अधर्मअनितिकुडकपटचोरिआदिकथिदुररहिने पोतानो जे धर्म तेने द्रढराखिने जेजे हकमेहेनतथि
कमावुं तेमांथि पणपोतानाआत्मानुंरुडुं थाय तेनेअर्थे भगवानननो भागकहाडवो अनेएमसमजवुंजे मारे तो एकशेर
अन्नदेहरक्षणने अर्थेजोईयेछियेतथाजाडुमोटुंवस्त्रजोईये तेपण भगवानआपनाराछे माटे एमसमजिने लोभनो त्याग
करिने ग्रहस्थनेपणसंसारमांथि दिवसेदिवसेउदासथवुंअनेस्नेहनेटालवानोएमविचारकरवोजे मारे आत्माने नातजा
तनथि अनेदेहनेदेहनासंबंधिछे तेतो सर्वे स्वार्थियांछे माटे स्वार्थे भेगाथयाछेजेमझाडवेपंखि भेगांथायछे नेसवारेपा
छांउडिजायछे तेमसर्वेदेहनासंबंधि स्वार्थेभेगांथयां छे नेपाछां सउसउनेमार्गेवयांजाय छे ॥पणकोईकोई भेगुं आव्युंनथि
नेकोईकोई भेगुजतुंनथि ॥अनेजिवेचोरासिमांअनंतसगासंबंधिकर्यां छे अनेते सर्वे नासपामिगयां छे तेमआजनासग-
गां संबंधि पण जरुरनासपामिजशे अनेजो तेमां स्नेह रहेशे तो तेने विषे अवतार धरवोपडशे नेमहाहेरान थईश एमवि-
चारिने जेहनां जेसगां संबंधिमां थी स्नेह जे प्रिति तेनो त्यागकरिने जिवनासाचासगाजे भगवान तेमां द्रढप्रितिकरवि
तथाते प्रत्यक्ष भगवानना पंचविषयना त्यागि संततेने विषे प्रितिकरवि एविरिते ग्रहस्थ समजे तो ते निरवासनिक थई
नेअक्षरधामनेपामे॥ अनेजेणे संसारनो त्यागकर्यो होय तेनेस्वादनेमान एबे विषय बलवान रहे छे अने काम लो-

भ्रनेस्नेह एत्रण विषयगोणपणे रहे छे केमके त्यागिने कामतो ऋष्ट प्रकारे स्त्रि संबंधि नियम होयजे त्यागिने ऋाठप्रकारेस्त्रि-
नो त्याग करवो अने द्रव्यनोपण त्यागिने संग्रह न करवो ने द्रव्यने ऋडवुं पण नहि एविरिते ऋष्टप्रकारे द्रव्यना त्यागसंबंधि-
नियम होय तेज त्यागि कहेवाय अने देहनासंबंधिने घेर त्यागिने नजवुं अने तेनो संगपण न करवो एविरिते त्यागिने-
नियम होय मारे एत्रण विषय त्यागिने नथि अने स्वादने माननो त्यागिने वधु संबंध थाय छे केमके जे त्यागि थयो तेतो ग्रह
स्थने पुजवा जोग थयो मारे तेनुं महात्म जाणिने तेने घिगोल रवांड साकर दुध दहिआदिक ऋनंत प्रकारना रस ते त्यागि
ने ऋापे तेजो त्यागि रसनानो स्वादियो होय तो रसनाने वस थईने जरूर धर्ममांथि भ्रष्ट थाय केमके रसना इंद्रि छे ते सर्वे इं
द्रियोनुं मूल छे जेम झाड एक काईज तुं होय ने तेने मूलमां पाणि रेडिये तो ते झाड पाछुं लिलुं छम थाय ने डाले डाले पालवे
तेम त्यागि जे ते त्यागे ते पेकरिने झाडना पेठे एक काई गयो होय ने इंद्रियो सर्वे नियममां करि होय तो पण जो रसनाने वस थई
ने रस खाय तो जेम झाड डाले डाले को रामुके छे तेम त्यागिने पण काम लोभ स्वाद स्नेह मानरूपि कोटा फुटिने इंद्रियो सर्वे
विकार पामिने धर्ममांथि भ्रष्ट थई जाय छे अने कोई एम कहे जे पाणीमां मेलाविने रस जमे तो विकार न करे तो एवात खो
टि छे केमके जेम बाहार पाणिमां मेलावे ते मसर्वे मनुष्य मोहामां भेगुं करिने दाहे चाविने एक रस करिने गलेहे तुं उतारे छे
अने पेटमां गया केडे पण कोईनो खुं रहेतुं नथि तोपण जे वस्तुनो जेवो गुण होय ते जणाया विना रहे नहि माटे पाणीमां मे-
लाविने सारा सारा रस जमे तो रसना इंद्रिनो स्वाद कांई कओछो थाय एवो पण बिजि इंद्रियो सर्वे विकार पामिने भ्रष्ट
थई जाय एसिद्धांत वारता छे ॥ माटे जेणे संसारनो त्याग कर्यो होय तेने खटरसनो त्यागज करवो एज त्यागिनो धर्म छे
केमके जे ग्रहस्थ रस खाय तेने तो स्त्रि होय मारे तेनो धर्म रहे छे ॥ पण त्यागि थईने रस खाय तो तेने विर्य पालथया वि-
ना रहे रोज नहि ॥ केमके रसनाने ने स्त्रिस्नुने एकता छे ते रसनाये रस खाय तो शिस्नइंद्रिमां जणाया विना रहेज नहि
एसिद्धांत वारता छे अने ग्रहस्थने तो स्त्रि होय तेणे करिने तेनो धर्म रहे छे पण त्यागि रस खाय तो तेने ब्रह्मचर्य व्रत

नरहे ने काम पण जितायनहि अने तेनो सनातन त्यागिनो धर्म पण रहे नहि।। ते सारुं त्यागिने रसविषयनो विशेषे त्याग
करवो अने त्यागिने माननो घणो संबंध थाय छे।। माटे माननो पण विशेषे त्याग करवो।। केमके जे त्यागि थयो ते तो सर्वे ने न
मवा जोग ने पुजवा जोग थयो माटे जो मानने वश थाय तो भगवानना मारगथकि जरुर पडि जाय अने तेना जपतपादि
क साधन पण सर्वे विकार रुप थई जायछे ।। जेम दुधने साकरमां सर्पनी लाळ पडे तो ते झेर थई जाय ने तेने जे पिये तेना
प्राण जाय तेम जपतपादिक सर्वे साधन तो दुध साकर जेवा छे तेमां सर्पनि लाळ रुप मान भळे तो ते साधन अकल्याण
कारि थई जायछे।। अने ते मांनिनो जे जे संग करे तेना जिवनुं पण भुंडुं करे।। केमके जे मानि होय तेने कोई महात्मा पुरुष
कल्याणकारि प्रगट थया होय ते ओळखाय नहि तेकृष्णाश्रवतारमां माने करिने रुषिने भगवान ओळखाया नहिं।।
ए आदिक जे जे मांनि हता ते ने प्रगट श्रीकृष्ण भगवान ओळखाया नहि ।। अने जे मानिने स्वादियो होय तेने प्रत्यक्ष
भगवाननो संबंध थायज नहि माटे त्यागिने स्वादने माननो घणो संबंध छे ते सारु ए बेनेज तन करिने विशेषे जित-
वा केमके त्यागिने अन्य विषयनो तो संबंध नथि ने स्वादने माननो समजिने त्याग करे तो ते निरवासनिक थाय अ
ने अमने पण निरवासनिक भक्त व्हाला छे माटे ग्रहस्थने काम लोभने स्नेहमां प्रिति छे तेने साधुनो समागम करिने प्रि
ति टाळि नाखवि।। अने भगवानने भगवानना एकांतिक निरवासनिक साधु तेमां प्रिति करवी अने ए रिते समज-
जिने ज्ञानने पामे तो ते ग्रहस्थ पण निरवासनिक थईने अमारा अक्षरधामने पामशे नेतेम हारा स्विया थायछे ।। अने जो ग्रह-
स्थने काम लोभने स्नेहनुं बंधन छे ने वळि स्वादने मानजे अतिशे राखशे ते तो अस्करकहेवाय अने ते साथे अमारे बनेज न
हि।। अने जे त्यागि थयो होय तेने स्वादनो माननो संबंध ने वळि कामनिवासना राखे तथा द्रव्यादि पदार्थमां प्रीति करे ।।
अथवा देहना संबंधिमां हेत राखे तो ते त्यागिने पण असकर जाणवो अने तेनुं कल्याण पण कोई काळे थाय नहि अने जे जे ते
नो संग करे तेने पण भ्रष्ट करे अने जे पांचे विषयनो त्याग करीने अमारि भक्ति करशे तेज अमारा खरा त्यागि भक्त छे।।

अनेतेनेजअमारोअखंड संबंधरहेशे अनेतेनेजआत्यंतिकज्ञानथशे नेअमाराअक्षरधामनेपामशे ॥ ॥
इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत् १९ ओगणिशे १६ सोल
ना पोस वदि २ बिज ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री उगामेडि मध्ये पटेल बेहेचर नथुने घेर ओरडानि ओ-
सरिमां गादितकिये जुक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता ॥ अने सर्वे जरियानि वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना
मुखारविंदनि आगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनि सभा भराईने बेठि हति पछे महाराज बोल्या जे जेने पोताना आत्मा-
नो मोक्ष करवा इछा होय ने अतिशे रुचि थया थवुं होय तेने तो अतिशो विवेक राखवो पण अविवेकि न थवुं केमके अविवेकि
छे तेने सत्पुरुषनो संग सारो लागतो नथि अने भगवाननुं स्वरूप पण तेने नथि ओलखातुं अने जे विवेकि छे तेने ज सत्पुरु
षनो समागम गमे छे अने तेने ज अमारुं स्वरूप ओलख्यामां आवे छे अने जे अविवेकि छे तेने तो कोई कफुलाये ने घरखाण
करे तो तेने वढ्या थई जाय छे अने पोतानु द्रव्यादिक पदार्थ पण तेने आपि दे छे ने पोते हेरान मले छे अने ते संत असंतने ओ
लखे नहि ॥ अने पोते मतपंथमां ज्यां ज्यां बंधाणो होय तेने मुकि शाके नहि माटे अविवेकिनुं कल्याण कोई काले थाय न
हिं ॥ अने जे विवेकि होय तेने तो जे विरिते पोताना आत्मानु रुडुं थाय तेम ज करतां आवडे अने ते संत असंतने पण ओल
खे ते जे संत होय तेनो संग करे ने असंत होय तेनो त्याग करे अने जगतना जिव वखाणे तेणे करि पोतानि मोटम्य न माने
॥ अने जगतना जिव निंदा करे तेणे करिने पोतानि नानम्य न माने केमके जे विवेकि छे ते एम समजे छे जे ए तो सर्वे माया-
ना जिव छे ॥ अने जमपुरिना अधिकारि छे ॥ अने मुंने तो भगवानने भगवानना संत मल्या छे माटे हुं तो ब्रह्मरूप थयो छुं ॥
ते माटे अज्ञानि जियनी पेठे मायाना पुरमां नथि वेहेवुं ॥ अने ते सत्पुरुषनां आपेलां जे नियम तेमां कोई काले फेर पाडे न
हिं ॥ अने साधुनो समागम करिने संसारनि वासनाने दिवसे दिवसे घटाडतो जाय अने भगवानने भगवानना जे ए-
कांतिक साधु तेमां प्रिति करे एविरिते जेनी समजण होय तेने विवेकि जाणवो अने वलि जेने प्रत्यक्ष भगवान मल्या

होय ने ते भगवान नो आसरो कर्‍यो होय ते ने तो अविनासि एवुं जे भगवान नुं धाम ते नि प्राप्ति थइ रहि छे ॥ अने ते ने एवुं अखंडानंद सुख मेलि ने मायिक ने नाशवंत एवा जे संसार ना सुख ते नि इछा रहे छे के ते मां प्रिति रखे छे ते ने पण अविवेकि जाणवो माटे अमारा जे जे आश्रीत होय ते ने तो संत नो समागम करि ने ना सवंत ने अनंत दुःखे युक्त एवा जे मायिक सुख ते नी इछा नो त्याग करि ने पोताने त्रण देह ने त्रण अवस्था थकि नोखो ने अछेद अभेद अमर अजर अविनासि एवो जे आत्मा ते रुप मानवुं अने धर्म ज्ञान वैराग ने महात्मे सहित भक्ति ते ने सिद्ध करि ने ब्रह्मरुप थइ ने भगवान ना स्वरुप मा जोडावुं अने एवि रिते समजि ने भगवान ने भगवान ने भगवान ना संत मां प्रीति करे छे ते ने ज विवेकि जाणवो ॥ अने ते विना बिजा सर्वे अविवेकी छे ने मूर्ख छे अने ते अतिशे दुःख ने पामे छे ॥ अने जे विवेकी छे ते ज महा सुखिया थाय छे ॥ अने ते भगवान ना धाम ने पामवा माटे विवेक राखवो ने अविवेक नो त्याग करि ने आत्मा रुप थइ ने भगवान नुं भजन करवुं ॥ ॥ इति श्री मुखसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्री हरि कृष्णायनमो नमः ॥ ॥

संवत १९ ओगणिसे १६ सोळ ना पोस वदि ८ अष्टमि ने दिवस महाराज श्री हरि कृष्ण भगवान गाम श्री खोपाळा मध्ये पटेल धरमसि केशव ने घेर ओसरि मां गादित किये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता अने सर्वे जरियानि वस्त्र धारण कर्‍यां हतां ने गुलाब ना पुष्प ना हार कंठ मां धारण कर्या हता ने पोताना मुखारविंद नि आगळ साधु तथा घणा क हरि भक्त नि सभा भराइ ने बेठि हति पछे महाराज कृपा करि ने बोल्या जे आज तो प्रश्न पुछो तो वारता करीये पछे धर्मानंद स्वामि ये प्रश्न पुछ्युं जे त्यागि नुं ने ग्रहस्थ नुं हारे कल्याण केम थाय पछे महाराज बोल्या जे आत्मा छे ते तो त्यागि ये न थि ने ग्रहस्थे नथि ॥ अने आत्मा तो चैतन्य ब्रह्म छे ने आकाश नि पेठे निरलेप छे ने ग्रहस्थ ने त्यागि ए तो सर्वे देह नो व्यवहार छे अने जे आत्मा देह मां भासे छे ते तो मिथ्या भ्रांतिये करि ने पोताना स्वरूप ने भुलि ने पंच विषय नि वासनाये करि ने जन्म मृत्यु ना दुःख ने पाम्या करे छे अने जो पोताना स्वरुप ने विचारि ने जुवे तो लेश मात्र दुःख रहे नहि ॥ ने परम शान्ति ने पामे ॥

जेम स्वप्नमां एम जणाय जे कोणेक तरवारोना घा मार्याने तेनि पिडा बहु थति होय पण ते स्वप्न मांथि जागे तो लेशमात्र पि-
डा रहे नहि तेम जिवने मोहरूपि निंद्राने विषे पंचविषयमां आसक्तिरूपि घा वाग्यो छे तेणे करिने अनंत प्रकारना क्लेशने
पामे छे ॥ पण जो जिव ज्ञानरूपि जाग्रत अवस्थाने पामे तो पंचविषयमां आशक्तिरूप घा वाग्या होय तेनी पिडा टलि जाय छे
ने परम शान्तिने पामे अने ब्रह्मानंद अविनासि सुखने भोगवे पण एवुं ज्ञान क्यां थाय तो एवा ज्ञानना आपनारा एवा जे प-
रमात्मा भगवान ते कृपा करिने पोताना दिव्यभाव छपाविने मनुष्य जेवा रूप जाति थईने जिवने मले ने ज्ञान आपे त्यारे
जिव मोहरूपि निंद्रामांथि जागे छे ते भगवान केवि रिते ज्ञान आपे छे तो जिवने विषे अनादिकालनि माया वलगि छे
ते माया जे ते त्रण देहने त्रण अवस्था रूपे थई छे तेमां स्थूल सूक्ष्म ने कारण ए त्रण देहने जाग्रत स्वपन ने सुसोपति ए त्रण
अवस्था ते ए त्रण देहने त्रण अवस्था थि जिवने ज्ञाने करिने नोखो पाडे छे ते ज्ञानने कहे छे जे आ देह छे ते जड छे अने तुं
तो आत्मा छो ते चैतन छो ने ब्रह्म छो अने देह तो नासवंत छे ने दुःखरूप छे अने तुं आत्मा तो अविनासि छो ने आनंदरू-
प छो ॥ अने आ देहने देहनां सगां संबंधि तथा देह संबंधि पंचविषयना भोगनां पदार्थ ते तो सर्वे मिथ्या छे ने तुछ छे ॥
अने जिवने अज्ञाने करिने साचा जेवां जणाय छे पण ए सर्वे भ्रान्तिमात्र छे ने असत्य छे पण कोई सत्य नथि अने जिवने मोहे
करिने उलटां दुःखनां देनारां छे माटे ते सर्वेनुं प्रमाण करिने देहादिक मायाना परपंच थकि असंगिपणे रहे ने तारुं जे ते
माने लुं तन मन धन्य ते भगवानने अरपण कर अने भगवाननि आज्ञा प्रमाणे वर्त्य एवि रितनी समजण ने प्रत्यक्ष भग-
वान आपे तेने ग्रहण करिने ते त्यागि थाय तो वते ब्रह्मरूप छे अने एवि समजणने पामिने भगवाननि आज्ञाये अथवा
प्रारब्धे करिने ग्रहस्थाश्रममां रह्यो होय तो पण तेने ब्रह्मरूप जाणवो केमके पूर्वे पण जनकादिक राजा केटलाक
एवि रितनी समजणने पामिने ग्रहस्थाश्रममां रह्या हता अने व्रजनी गोपियो पण एवि रितनी समजणने पामिने संसा-
रव्यवहारमां रहि पण तेने लेशमात्र संसारव्यवहार अड्यो नहि मारे जेने प्रत्यक्ष भगवान मल्या होय ने ते भगवानना

स्वरूपनो ज्ञानेसहितउत्तम निर्विकल्प निश्चयथाय छे तेनां अनंतजन्मनां पापनासमुह ते सर्वे बलिने भस्म थई जाय छे॥
पछे ते भक्त भगवाननि इछाये करिने त्यागि थाय अथवा इछाये करिने ग्रहस्थाश्रममां रहे पण ते बेनो मोक्ष बरोबर छे॥
॥त्यारे तमे कहेशो जे त्यागि थया तेणे शुखोर खाधि जे काम लोभ स्वाद स्नेह ने मान ए जे पंचविषय तेनो त्याग करिने अ-
तिशे असंगिपणे वरते छे अने कोई प्रकारनी वासना राखता नथि ने देह इंद्रियोने दम्या करे छे ने ग्रहस्थ तो कांए योदा खडो
करता नथि ते बेनो मोक्ष बरोबर केम थाय एम कहेश्यो तो त्यां कहियें छियें जे त्यागि छे ते तो अमारि प्रसन्नताने अर्थे अनंत
जिवोनां कल्याण करवासारु ए विरिते वरते छे पण एने कोई जातनो संषय रह्यो नथि अने ए यानि रवा सनिक साधु छे ते तो
देह छतां ब्रह्मनि मूर्त्तियो छे अने तेना संबंधे करिने अनंत जिवोनो मोक्ष थाय छे अने ग्रहस्थ छे ते ने एना मोक्षमां तो सं
षय नथि पण एथकि घणा जिवनो मोक्ष थतो नथि॥ ॥इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥
श्रीहरिकृस्णायनमोनमः॥ ॥संवत १९ओगणिसो १७सत्तरना चैत्रवदि ११ एकादशिने दिवसे महाराज
श्रीहरिकृस्न भगवान गाम श्री टिंबामध्ये पोतानां मंदिरमां हिंडोलाखाट उपर विराजमान थया हता ने सर्वे स्वेतवस्त्र धारण
कर्यां हतां अने कंठमां गुलाबने मोगराना पुष्पना हार धारण कर्या हता ने बे कान उपर गुछ खोभिरया हता अने मुस्तके
गुलाबि रंगना फेटामां तोरा लटकता हता अने ललाटने विषे केशरनि आड्य ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोतानां मु
खाविंदनि आगल साधु तथा घणा कहरि भक्तनि सभा भराईने बेठि हति पछे गाम अक्केवालियाना राणा देवसिंघ अमरसिंघे प्रश्न
पुछ्युं जे जियनुं शुरुप छे॥ ईश्वरनुं शुरुप छे॥ मायानुं शुरुप छे॥ ब्रह्मनुं शुरुप छे ने परब्रह्मनुं शुरुप छे॥ ते हे महाराज कृपा
करिने कहो पछे महाराज बोल्या जे सारां प्रश्न पुछ्यां॥ सांभलो एनो उत्तर करियें॥ जे जिवनुं रुप तो एवुं छे जे स्थूल सूक्ष
म ने कारण ए त्रण शरिरने जाग्रत स्वप्न ने सुसोपती ए त्रण अवस्था तेने विषे अहं प्रतिये करिने रह्यो ने तेना सुख दुःखनो-
भोक्ता तेने जिव कहिये॥ अने ईश्वर केवो छे तो मायानो नियंता छे ने मायाथकि विजाति ने अनादि ने सत्य ने स्वयं ज्यो

तिनेसर्वज्ञंनेदिव्यविग्रहनेसमग्रआकारमात्रनिप्रवृतिनाकारणनेक्षेत्रज्ञएवोईश्वरछे ।।अनेवलिविराटस्वरूपात्मानेअ-
व्याकृतएवात्रणशरिरनेउत्पत्तिस्थितिनेप्रलयएत्रणअवस्थातेनेविषेअहंभावनोधरनारोनेतेनोभोक्तातेनेपणइ-
श्वरकहिये ।। अनेमायाजेतेत्रिगुणात्मकछे ।।जडचिदात्मकछेनेनित्यछेनेनिरविषेषछेनेमहदादिकसमग्रतत्वनेजिव
मात्रतेनुंक्षेत्रछेअनेभगवाननिअनादिशक्तिछेतेनेमायाकहिये ।।अनेब्रह्मजेतेमायाथकिपरछेअनेअखंडछेसर्व-
व्यापकछेनेसर्वाधारछेनेसर्वेनाआत्माछेअनेसर्वमांअन्वयथकाव्यतिरेकछेनेपरब्रह्मनाअंगनोप्रकाशछेनेपरब्र
ह्मनेरह्यानुंठेकाणुंछे ।। तेनेब्रह्मकहिये।।अनेपरब्रह्मजेतेकेवाछेतोतेजोमयएवुंजेदिव्यसिंहासनतेनाउपरसदायदि
व्यमूर्तिमानथकाविराजमानएवानेअनंतऐश्वर्यअनंतशक्तियोनेअनंतपारसदेषिंटाणाथकासदायपोतानाए-
कांतिकभक्तनेअलौकिकअखंडसुखआपेछे ।।अनेवेदजेनेनेतिनेतिकहेछे ।।नेकर्तुमकर्तुंनेअन्यथाकर्तुंसमर्थ
छेएवाजेपरब्रह्मतेजेतेपुरुषप्रकृतिनेकालएविजेपोतानीशक्तियोतेवडेकरिनेअनंतकोटिब्रह्मांडनिउत्पत्तिस्थिति
नेप्रलयतेनेकरावेछेनेपोतेतोपोतानाअक्षरधामनेविषेसदायविराजमानरहेछेतेनेपरब्रह्मकहिये।।एविरितेजिव
ईश्वरमायाब्रह्मनेपरब्रह्मनांरूपछे।। ।।इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः।। ।।श्रीहरिकृष्णायन
मोनमः।। ।।संवत१९ओगणिशे१७सत्तरनाचैत्रवदि१२द्वादशिनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवान
गामश्रीरिंथामध्येपोतानामंदिरमांहिंओलारवाउपरविराजमानथयाहता।।अनेसर्वेजरियानिवस्त्रधारणकर्यांह
तांअनेपुष्पनांआभूषणसर्वेअंगमांसोभिरह्याहतां।।अनेकंकुनोचांदलोकर्योहतोनेपोतानामुखारविंदनिआगलसा
धुतथाघणाकहारभक्तनिसभाभराईनेबेठिहूति।। पछेराणादेवीसिंगेसोलप्रश्नलखिनेपोतानेउतारेथीतेनागोर
कानजिनेतथाखवासबसरामनेमाहाराजपासेमोकल्यातेतेपोआविनेहाथजोडिनेमहाराजनेकह्युंजेआसोलप्रश्न
नोखरडोलखिनेदरबारेआप्योछेतेनाउत्तरकृपाकरिनेकरोपछेमहाराजेतेप्रश्नवांच्यांतेतेनांनामजेपरमशक्ति

केनेकहिये १शक्तिकेनेकहिये २ विद्याकेनेकहिये ३ अविद्याकेनेकहिये ४ ब्रह्मकेनेकहिये ५ पुरुषोत्तमकेनेकहिये। ६ धर्मकेनेकहिये ७ अधर्मकेनेकहिये ८ ग्रहस्थकेनेकहिये ९ त्यागिकेनेकहिये १० मुक्तकेनेकहिये ११ बधकेनेकहिये १२ परमार्थकेनेकहिये १३ स्वार्थकेनेकहिये १४ क्षत्रिकेनेकहिये १५ ब्राह्मणकेनेकहिये १६ एविरिते विनति महाराजाधिराज महाराजश्री ७ सातहरिकृष्णजि महाप्रभुतमे कृपाकरिने आसोल प्रश्ननो उत्तर करयो ते थि संषय मटयो अने आपतो दयालु छो ते मारा उपर कृपा राखजो पछे महाराज कागल वांचिने हसता थका बोल्या जे बहु सारा प्रश्न लख्यां छे ते ल्योए नाउत्तर करिये ते सर्वे सांभलो॥ जे परमशक्तितो तेने कहिये जे परमेश्वरनुं कर्तुमकर्तुनेमन्यथाकरता रूपजे ऐश्वर्य ते परमशक्ति छे १ अने शक्तितो एजे मूलमाया कहेतां त्रिगुणात्मक छे ने जड चिदात्मक छे॥ नेनीत्य छे ने निरविषय छे तेने शक्ति कहिये २ अने विद्यातो एने कहिये जे जेणे करिने आत्मा परमात्मानुं ज्ञान थाय ते मां विद्या ओअढार छे ते केटलिक व्यवहार साधक छे ने केटलिक मोक्ष साधक छे ते मां आ लोकमां फल मले ते व्यवहार साधक ने परलोकमां फल मले ते मोक्ष साधक छे॥ ॥ ते मोक्ष साधकमां पण एक कर्म विद्या छे ने एक ब्रह्म विद्या छे ते कर्म विद्या पाप क्षय ने करे छे ने ब्रह्मविद्या मोक्ष आपे छे तेने विद्या कहिये॥३॥ अने अविद्यातो एने कहिये जे पंच विषयनी प्रवृतिनी जेजे कथावारता ते अविद्या कहेतां आत्मा परमात्माना ज्ञानमां विरोधि ते ने अविद्या कहिये॥४॥ अने ब्रह्मतो तेने कहिये जे परब्रह्म पुरुषोत्तमना अंगनो प्रकाश तथा ज्ञानने पामिने निरवासनिक थया एवा जे मुक्त ते पण ब्रह्म छे ५ अने पुरुषोत्तमतो तेने कहिये जे अक्षरातित एवा जे अक्षररूप पुरुष ते मध्ये उत्तम एवा जे परमात्मा तेने पुरुषोतम कहिये ६ अने धर्मतो तेने कहिये जे इंद्रियो अंतःकरणनो निग्रह करयो तथा श्रुति स्मृतिये प्रतिपादन कर्यो ते धर्म छे॥७॥ अने अधर्मतो एजे सतशास्त्रना वचनथि विरूद्ध वरतवुं तेने अधर्म कहिये ८ अने ग्रहस्थतो एजे पंचविषयने भोगवतो छतो स्त्रि छोकरांवालो ने वेदना धर्मने पालतो तेने ग्रहस्थ कहिये॥९॥ अने त्यागितो तेने कहिये जे पंचवि-

षयनो त्यागकरिनेतथास्त्रि छोकरांनो त्यागकरिने आत्मारूपथईने परमात्मा नेभजे तेने त्यागिकहिये ॥१०॥ अनेमुक्त तोते नेकहिये जे पंचविषयनिवासनाथकि मुकाईने ब्रह्मरूपथईने परब्रह्मने साक्षात्कारपाम्या तेने मुक्तकहिये ११ अनेबध तो एजे पंच विषय ने विषेआशक्त कहेतां विषयनो भोगवनारो तेने बधकहिये १२ अनेपरमार्थ तो एजेपरनेउपगारकरवो तथा पोताना आत्माने मायानाबंधनथकि मुकाववासारु सत्पुरुषनो समागमकरवो तथा जेजे शुभकर्मरूपसाधन करवां ते सर्वेपरमार्थ छे १३ अनेस्वार्थ तो एजे देहनेदेहना संबंधिना पोषणनेअर्थेजे जेउपाय करवो तेनेस्वार्थकहिये १४ अनेक्षत्रि तो एजे ब्राह्मणसाधुनेगायते नि रक्षाकरविने सूरविरपणुं राखवुं धिरजराखविने उदारपणुं राखवुं नेप्रजानुं पालण करवुं तेनेक्षत्रिकहिये ॥१५ अनेब्राह्मण तो एजे समदम संतोष्यादिक दशलक्षणेयुक्त तथाब्रह्मरूपथईनेपरब्रह्मने जाणे तेने ब्राह्मण कहिये ॥१६ एरीतिरिते उत्तरकरिने पछे अक्षरमुक्तानंद स्वामिने आज्ञा करिके जेतमेएसोळ प्रश्ननो उत्तर लखि आपो पछे अक्षरमुक्तानंदस्वामिये कह्युंजे बहुसारुं महाराजहुं लखि आपिश ॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥सवंत १९ ओगणिसे १४ चौदना श्रावण शुदि ६ छठने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीधुफणियामध्ये पटेल राणा भक्तने घेर उगमणे बारने ओरडानि ओसरिमां गादितकीये युक्त ढोलियाउपर विराजमानथयाहता अने सर्वे जरियानिवस्त्र धारण कर्यां हतां ने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमांशोभि रह्यां हतां ॥ अनेपोतानामुखारविंदनि आगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनि सभा भराईने बेठि हति पछे श्रीहरिकृष्णभगवान कृपाकरिने बोल्या जे सांभलो एक वारता करिए छिये जे आ जक्तमां बे वस्तु छे एक कल्याणरूप छे ने एक अकल्याणरूप वस्तु छे तेमां ज्ञानादिक वस्तु छे ते कल्याण रूप छे अने अज्ञानादिक छे॥ ते अकल्याणरूप छे अने ज्ञानादिकने विषे अपार सुख रह्युं छे ने अज्ञान मां अपार दुःख रह्युं छे माटे एवुं सुखदायक जे ज्ञान ते ग्रहण करवुं ॥ तेएवुं ज्ञान क्यां छे ॥ तो मायापर एवा जे परमात्मा भगवान् तेनि पासे एवुं ज्ञान छे ते भगवानने जिवनी उपर

कृपाकरिने मनुष्याकृति धारण करिने जिवने मले अने ते भगवाननो जिव आसरो करिने ते पासेथि ज्ञान सिद्ध करे त्यारे
जिवने विषे जे अनादिनुं अज्ञान रह्युं छे ते टलि जाय छे अने ते जिवनु कल्याण थाय छे पण ते विना बिजा अनंत उपाय करे
तोपण जिवनुं कल्याण थाय नहिं ॥ ने अज्ञान टले नहिं अने प्रत्यक्ष भगवान मल्या विना ज्ञान थाय पण नहिं ॥ माटे जेने कल्या
णनो खप होय तेने मायाथि परा एवा जे कल्याणकारि सद्गुरु ते जरुर खोलवा पडशे ॥ ते पण मनुष्यदेहे करिने सत्पुरुष ओ-
लखाय एम छे अने मनुष्यदेहे करिने ज आत्मानुं कल्याण थाय छे माटे ते समो आज तमारे सर्वेने आव्यो छे अने पोताने मनु
ष्यनो देह ने मायाना पार एवा जे प्रगट सत्गुरु ज्ञानदाता तेनो संबंध ते तो अति शो दुर्लभ छे माटे ते दुर्लभ वस्तु प्राप्त थइ
छे तेनुं अति शो जतन करिने तेनो आसरो राखिने पोताना आत्मानुं काम सिद्ध करि लेवुं अने सावधान थइने मन कर्म वच-
ने सत्संग करवो अने ते सत्संग थकि ज अज्ञान टले छे ने आत्मानो मोक्ष थाय छे माटे जे जे मुमुक्षु होय तेने पोताना आत्मा
नुं रुडुं थाय ते सारु अधर्म अनितिनो त्याग करिने धर्म ज्ञान वैराग भक्ति आदिक जे रुडा गुण तेने सत्संग करिने शिखवा
पण आलस ने परमाद न राखवो अने मनुष्यदेहनि आवरदा व्यर्थ जवा देविन हि अने मनुष्यदेहे करिने ज्ञान पामिने अज्ञा
नने टालिने पोताना आत्मानु कल्याण करे छे एज बुद्धिवालो छे अने एनेज मोटा मोटा सत तने शास्त्र वखाणे छे ॥ ॥
इति श्री मुख सिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्री हरिकृष्णाय नमो नमः ॥ ॥ संवत् १९ ओगणिशो ९६
अढारना श्रावण शुदि ७ सातेमने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री धुफणियामध्ये शा गोपालजिने घेर गादि
तकिये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता ने सर्वे कसुंबल सोनेरि वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठमां पुष्पना हार सो
भि रह्या हता ॥ ने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ ने पोताना मुखारविंदनि आगल साधु तथा घणा क हरिभ-
क्तनि मोटि सभा भराइने बेठि हति पछे महाराज कृपा करिने बोल्या जे जेने मनुष्यदेह परमेश्वरे आप्यो छे ते मनुष्य
देहे करिने भगवाननु भजन स्मरण सेवा करे छे ॥ तेना उपर भगवान प्रसन्न थाय छे ने तेनु कल्याण थाय छे अने ते बु-

हिवान कहेवायछे अने जे मुरखछे ते तो मनुष्यदेह पामिने पोताना आत्मानुं रुडुं थाय तेने अर्थे कांई सकृत नथि करतो॥
तेना उपर भगवानना कोप थाय छे॥ अने ते जिवने पछे जन्म मृत्यु गर्भवास ने चोरासिनां महादुःख भोगववां पडे छे॥ जेम-
राजा छे ते पोतानि जमिन खेडुने आपे छे ते जे बुद्धिवाला खेडु छे ते खबडदार थईने खेतर खेडिने घणा कदाणा निपजा-
वेछे॥ ने राजाने वजे वेरो आपेछे॥ ने ते राजा तेना उपर घणा राजि थायछे ने तेने गाम निपटलाई आपे छे ने पछे पोतानि पा
से राखे छे॥ अने जे खेडु बुद्धिहिणने आलशु छे ते तो खेतर खेडतो नथि ने खेडुं आविना मांहे बिज वावे छे तेने निपज
आवती नथि ने राजानां माणस वजे वेरो लेवा आवे छे त्यारे घणो पस्तावो थाय छे ने वेरो वजे आपि शकातो नथि पछे
ते राजा तेना उपर कोपायमान थईने तेनुं घर लुटि ले छे ने ते महादुःखने पामे छे॥ तेम ए तो द्रष्टांत ने एनुं सिद्धांत ताए
छे जे राजाने ठेकाणे तो भगवानछे॥ अने खेडुने ठेकाणे जिवात्मा छे॥ तेने भगवाने कृपा करिने पोतानी जमीनरूप
जे माया तेमांथि खेतररूप मनुष्यनो देह आप्यो छे॥ ते देह आप्यानुं शुं प्रयोजन छे॥ तो ते मनुष्यना देहरूप जे क्षेत्र तेने ध
र्मज्ञान वैराग्यादिक जे साधन तेणे करिने खेडिने देहरूप क्षेत्रने सदुके हेतां निरवासनिक थईने ते मांहे भगवाननि भक्ति
रूपि अन्न निपजाववुं॥ ने पोताना आत्माने मायाना बंधनरूपि करज थकि मुकाविने भगवाननी सेवारूपी वेरो वजे ते अ
खंड आपवो कहेतां भगवाननि सेवामां अखंड रहेवुं ते सारु भगवाने मनुष्यनो देह सजि आप्यो छे ते भागवतमां कह्युं छे
जे बुद्धिइंद्रिमनःप्राणां जनानामसृजत्प्रभु मात्रार्थं च भवार्थं च आत्मनेकल्पनाय च ११ श्लोकमां एम कह्युं छे जे बुद्धि इंद्रि
मन प्राणादिक देह जिवने भगवाने सजि आप्यो छे ते विषयभोगादिक देहरक्षण करिने ज्ञान पामिने अंते मोक्ष पामवो
ते सारुं मनुष्यदेह भगवाने सजि आप्यो छे माटे एवो परमेश्वरनो उपकार तेने भूलिने अज्ञाने करिने बुद्धि इंद्रिओने केव
ल विषयने मार्गे प्रवर्तावे छे ने भगवानने पामवा सारु धर्मज्ञानादिकमां नथि प्रवरतावतो तेना उपर भगवाननो अतिशे
कोप थाय छे ने ते जिव महा कष्टने पामे छे अने तेने मनुष्य देह गया पछि क्यांई ठरवानुं ठेकाणुं नहिं रहे अने ज्यां ज्यां

जन्म धरशे त्यां त्यां अपार दुःखने पामशे केमके परमेश्वर छे ते तो सर्व कारण ने सर्वाधारने सर्वोपरि राजाधिराज छे अने ए
तेज सर्वे करतुं थाय छे तेए वा क नाघ्रि जिवने क्यांई सुख आयवा देता नथि ।। अने जे मुमुक्षु ने देषिए वा जे बुद्धि वाला जिव
छे ते तो बुद्धि वाला खेडुनि पेठे जे ता नि साधु तथा ग्रहस्थ छे ते जे ते पोताना आत्मा नो मोक्ष थाय ते सारु इंद्रियो अंतःक-
रणने पंचविषय थकि पाछां वालि ने धर्म मां दृढ रारवे छे अने भगवाननि भक्तिने विषे प्रवर्तावे छे तेना उपर परमेश्वर अ
तिशे प्रसंन्न थाय छे अने तेने अपार सुख आपे छे अने ते जिव अतिशे मोटम्यने पामे छे माटे जेणे अमारो आसरो कर्यो
होय तेने पण सत्संग करिने ज्ञानने पामिने दुराचरणनो त्याग करिने देह छतां देहथि नो खो एवो जे जिवात्मा तेने पोत
नुं स्वरुप जाणिने देह इंद्रियो अंतःकरणने भगवान सन्मुख करवां ।। ते के विरि ते भगवान सनमुख थाय छे तो कानेकरि
ने भगवाननि कथा वारता किर्तन सांभलवानुं नित्ये नियम राखवो अने हाथे करिने भगवानने भगवानना संतनि से
वा तथा माला फेरववानो नियम राखवो अने नेत्रे करिने भगवानने भगवानना संतनां दरसन नो नित्ये नियम राखवो
अने मोढे करिने पण भगवाननां किरतन तथा नामरटण तेनुं पण नित्ये नियम प्रमाणे करवुं ए विरि ते दश इंद्रियोने चार
अंतःकरणनि व्रतियो ने भगवानना स्वरुपमां जोडि दिये तो ए जिवने अनंत जन्मनां पाप वलग्यां छे ते सर्व नाश पामि जा
य छे ।। ने तेने अंतरमां प्रकाश थाय अने तेने भगवानना स्वरुपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय ने ते जिव ब्रह्मरुप थईने
भगवानना साधर्मपणाने पामे छे जेम आ लोकमां बुद्धिवालो खेडु होय तेने राजा प्रसन्न थईने गामनि पटेलाई सोंपे छे
अने तेथि वधारे बुद्धिवालो जणाय तो प्रगणानो पटेल करे छे अने तेथी पण वधारे बुद्धिवालो जणाय छे तो तेने सर्वे पोत
ना राज्यनुं काम सोंपि दे छे तेम भगवाननो भक्त छे तेने विषे धर्म ज्ञान वैराग्य ने भक्ति आदिक रुडा गुण सत्संगे करिने आ
वता जाय छे ने पंचविषयनि वासना टलती जाय छे तेम तेम भगवानए भक्तने मोटम्यपमाडता जाय छे ने जे भक्त इंद्रि
योना विषयनो त्याग करे छे त्यारे तेने वैराटना साधर्म पणाने पमाडे छे अने अंतःकरणना विषयनो त्याग करे छे तेने

मूलप्रकृति पुरुषना साधर्मपणाने पमाडे छे अने ज्यारे कारण माया जे वासना तेनो त्याग करे छे त्यारे अक्षर ब्रह्म जे भगवानना अनन्य दास तेना साधर्मपणाने पमाडे छे अने अखंड भगवान पोतानि सेवा मां राखे छे अने पोताना अनंत ऐश्वर्य ने अनंत शक्तियो ते एसर्वे ए भक्तने भगवान आपि दिये छे अने पोताना जेवो ज स्फ़विपो ने स्वतंत्र करे छे ॥

॥ इति श्री मुखसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्री हरिकृष्णायनमो नमः ॥ ॥ संवत १९ ओगणिशे १८ अ-
हारनापोसवदि ९ नवमिने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री ख्योपाला मध्ये पटेल धर्मसि भक्तने घेर उगमणे बार ओरडानि ओसरिमां ढोलियाउपर विराजमान थया हता अने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हुतां अने मस्तके-कस्कंबल फेटो बांध्यो हतो ने पोताना मुखारविंद नि आगल साधु तथा घणा क हरिजननी सभा भराईने बेठि हति पछे महाराज बोल्या जे भगवानना भक्त होय तेने एम विचार करवो जे परमेश्वरे आ जन्तु बनाव्युं छे ते शा सारुं कर्युं हशे अने ते मां हुं ते कोण छुं ने क्याथि आव्यो छुं ने पाछो क्यां जइश ते नो पोताने तपास करवो अने वलि आ मनुष्य नो देह ते परमेश्वरे शा सारुं आप्यो छे ॥ अने तेणे करिने शुं लाभ ले वाय छे तथा सर्वे इंद्रियो अंतःकरणे करिने शुं लाभ लेवाय छे अने देह इंद्रियादिक नो कोण प्रकाशक छे ॥ केमके इंद्रियो अंतःकर्ण तो जड छे ने ए तो गोलक मात्र छे एम अंतर दृष्टि करि ने जोइये तो पोताने खबर पडे जे ए देह इंद्रियादिक नो प्रकाशक तो हुं जिवात्मा छुं ॥ अने मारा प्रकाशक परमात्मा भगवान छे पण हुं स्वतंत्र प्रकाशक नथि केमके इंद्रियो अंतःकर्ण भगवान स्रजि आपे छे अने ते इंद्रियो अंतःकरणने देवरुपे करिने प्रकाशे छे ॥ तेणे करिने हुं जिवात्मा प्रकाशवा नथयो छुं ने इंद्रियो अंतःकरणे करिने जे जे करवुं होय ते थाय एम छे ॥ माटे एवो जे भगवाननो उपकार ते भगवानना भक्तने विचारवो अने पोताने भगवानपरायण थावुं पण कृतघ्नि न थवुं अने जे भगवानना उपगारने नथि विचारतो ते जिवने तो अतिशे मोटुं पाप लागे छे अने ते जिव चोराशी मां जन्म मरणनां वारंवार दुःख पामे छे माटे जेने सुखि या थवुं होय तेने अधर्म अनिति नो त्याग करिने धर्मे करिने इंद्रियोने नियममां करिवे

कानेकरिनेभगवाननागुण सांभलघा नेनेत्रेकरीनेभगवानने भगवानना जंननांदर्शनकरवांनेवाणियेकरिने भगवानना
गुणगायाएविरितेदशइंद्रियोनेचार अंतःकरणनीव्रतियो तेने भगवाननास्वरूपमांजोडिदे तोजिवने अनंतजन्मनां
जेपापवलमांछे तेसर्वेनाश पामिजायछे अने तेने अंतरमांज्ञानरूपिप्रकाश थाय छे अने आविश्वनाकरता जेपरमात्मा
तेनास्वरूपनो उत्तमनिर्विकल्पनिश्चयथाय छे अने तेजिव ब्रह्मरूपथईने भगवानना अक्षरधामनेपामे छे।। माटे आजेविश्व
परमेश्वरेकर्युंछे तेजीवोनाकल्याणने अर्थेकर्युंछे एमर्मनेजिवसमजे तोतेने पंचविषयनिजेवासना तेसर्वे टलिजाय
नेभगवाननीस्वरूपमांअतिशेस्नेहथायछे।।अने ते भक्त देहनेमुके त्यारे भगवानना धामनेपामे अनेएवोभक्त होयते
नेमायानुंपदार्थकोई बंधनकरवानेसमर्थनथि।। ।।इति श्रीमुखवसिद्धांत समाप्तः।। ।।
श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ।।संवत् १९ ओगणिसो १८ अढारना पोषवदि १० दशमिनेदिवस महाराजश्रीहरि-
कृष्णभगवान गाम श्रीखोधालामध्येपटेल सवजीभक्तनेघेर उगमणे बार ओरडानिओसरिमां गादितकियानखावीने ढोलि
याउपर विराजमानथयाहता।। अने सर्वेस्वेत वस्त्रधारणकर्यांहतां नेमस्तकउपरकसुंबलफेंटो बांध्योहतो नेपोतानामु
खारविंदनिआगल साधु तथाहरिभक्तनिसभा भराईनेबेठिहति।। पछे महाराज बोल्याजे जिवमात्रसुखनेइछेछे अनेदु
खनेकोईइछतुंनथी ते मनुष्यपशुपंखिकीडीमंकोडीआदिकसर्वेप्राणीमात्र सुखनेचहायछेनेदुःखनेकोई चहातुंन-
थितोपणपूर्वनेप्रारब्धे करिने सुखनेदुःखबेय आवेछे ते सुखदुःख आवे छे तेनुंकारण शुं छे तोजेजे सुख आवेछे तेस
त्संगेकरिनेआवेछे अनेजेजेदुःखथायछे तेकुसंगेकरिने थाय छे माटे पूर्वेजेणेसत्पुरुषनो समागम कर्योछे ने सत्पुरुषनी
सेवाकरिछे अने तेनीआज्ञाजेणे पालिछे तेने सुख प्राप्त थयुंछे अनेपूर्वेजेणे असत्यपुरुषनोसंगकर्यो हशे तेनेदुःख
प्राप्तथयुंछे अनेआजपण जे जे सत्पुरुषनो सत्संगकरशे अनेजे तेनिसेवाकरशे अनेजेसत्पुरुषनीआज्ञापालशे तेनेम-
हासुखप्राप्तथशे अनेजे कुसंगकरताहसे तेनेमहादुःख जरूरप्राप्तथशे माटेजेने महासुखियाथवुं होय तेने सत्पुरुष

नो समागम करवो अने सत्पुरुषनी सेवा करवी ने ते नि आज्ञा पालवि अने कुसंगनो संग करवो नहिं ने ते कुसंगिनी सेवा पण
न करवी ने तेनी आज्ञाये पालनहि ॥ केमके जे भगवाननी आज्ञा पालता नथि तेनुं नाम कुसंग छे ते भगवाननी शी आज्ञा छे
तो मार्दकए था जे पंचविषय तेनो त्याग करवो अने निरवासनिक थवुं ए ज भगवाननी अनादी अचल आज्ञा छे ते जे जे पंचविष
यनो त्याग करता होय ने त्याग कराबता होय अने आत्मा रूप पोताने जाणिने परमात्मानी उपासना करता होय ते पुरुष-
नो जे समागम करवो ते नुं नाम सत्संग कहेवाय॥ अने जे पुरुष पंचविषयने विषे आशक्त होय अने पोतानो जे संग करे तेने
विषय भोगावता होय ॥ अने त्यागि थईने स्त्रियोने उपदेश करता होय अने द्रव्यनो संग्रह करता होय अने सारां सारां भोजन क
राविने खाता होय ने आत्मारूप थईने परमात्मानि उपासना न करता होय ते सर्वेने कुसंगि जाणवा अने तेनो जे संग करे तेने
आ लोक परलोक मां महा दुःख थाय छे अने जे सत्संग करे छे तेने आ लोक परलोक मां महा सुख थाय छे अने सत्संगे करि
ने बुद्धि मां प्रकाश थाय छे अने ते बुद्धिने प्रकाशे करिने आत्माने सुख थाय ए विक्रिया कराय छे अने कुसंगे करिने बुद्धि मां अं
धकार थाय छे ने ते अंधकारे करिने जिवने दुःख थाय ए विक्रीया कराय छे जेम अंधलो चालवा जाय ते ज्यां त्यां खाडामां
कांटामां पडिने दुःख पामे तेम कुसंगे करिने जे जे काम करे ते मां दुःख ज थाय छे अने जे मदेखतो पुरुष चाले छे ते दुःखने
नथि पामतो तेम सत्संगे करिने जे जे काम करे छे तेने महा सुख थाय छे केमके बुद्धिना प्रकाशे करिने आ लोक पर लोक मां
सुख थाय छे अने बुद्धिने अंधकारे करिने आ लोक परलोक मां दुःख थाय छे केमके आ लोक मां पण जे जे बुद्धिना प्रकाशवा
ला छे ते राठे ठांये बेठा बेठा कोई सो रुपियानो महिनो खाय छे ने कोई पांचसें रुपियानो महिनो खाय छे अने कोई हजार रुपैया-
नो महिनो खाय छे ॥ अने जे बुद्धिहिण छे ते तो दिवस आखो खरे तडके कोदालि लेईने खेडुनुं काम करे त्यारे एक दिवस
खाय एटलुं अंनमले माटे बुद्धिप्रधक एवो जे सत्संग ते सदाय करवो ॥ अने सत्संगनो महिमा घणो मोटो छे अने सत्संगे क-
रिने जे सुख प्राप्त थाय छे ते सुख कोई काले नाश पामतुं नथि ते सारु मोटे मोटे पण सत्संग माग्यो छे ते रामकथामां तुलसी

जीनां वचन छे जे वारवार वरमागुं हुं हरखदियो श्रीरंगपदसरोजअनुंपायनी भक्तिसदायेसत्संग १ माटे जेने कल्याण पामवुं होय ते
ने जरुर सत्संग करवो अने सत्संग थकी वीवेक आवे छे अने वीवेके करिने धर्म पलाय छे अने धर्मे करिने ज्ञान प्राप्त थाय छे अने
ज्ञानने विषे सर्व सिद्धि रहि छे केमके ज्ञान छे ते तो भगवानना अंगनो प्रकाश छे ते भगवानना ज्ञानरुपि प्रकाशे करिने
वैराग्य प्राप्त थाय छे अने वैराग्य थकि भगवाननी एकांतिक भक्ति प्राप्त थाय छे अने ते जिवनुं जिवपणुं मटिने ब्रह्मरुप
थाय छे ॥ अने ते अखंड सुखने पामे छे अने ते सुखने काल कर्मने माया कोई नासपमाडि शकतां नथि माटे जेने मनुष्य दे
ह आव्यो होय तेने अवश्य जरुर सत्संग करवो ते सर्व कामनो त्याग करिने सत्संग करवो अने पूर्वे पण नारद सनकादिक
शुकजि जडभरतादिक जे जे मोटि पदविने पाम्या छे ते सत्संगे करिने पाम्या छे माटे आज पण जेने मोटि पदविने पामवुं होय
तेने मन क्रम वचने करिने सत्संग करवो ॥ ॥इतिश्री मुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृ-
ष्णायनमोनमः॥ ॥संवत् १९ ओगणिशो १८ अढारना पोषवदि ११ एकादसिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण
भगवान गाम श्री अमरेलिना दिवान सवजीबेसाईने घेर ओरडानी ओसरिमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता अने
स्वेत धोतीयुं पहेर्युं हतुं ने किनखापनि डगलि धारण करि हतीने मुस्तकेक सुंबल फेंटो धारण कर्यो हतो ने गुलाबि रंगनी-
शाल ओढि हति ने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मूखारविंदनी आगल साधु तथा घणा कहरि भ-
क्तनी सभा भराईने बेठि हती पछी महाराज बोल्या जे आ शरिर छे ते मां सर्व इंद्रियो अंतःकरण छे तेमां बुद्धि सर्वे थी उत्तम छे
ने ते थी उतरतुं मंन छे ने मनथि उतरतुं चिन्त छे ने चित्तथी उत्तरतो अहंकार छे ने ते थी उतरता कान छे ने ते थी उतरती त्व-
चा छे ने ते थी उतरतां नेत्र छे ने ते थी उतरती रसना छे ने ते थी उतरती नासिका छे ने ते थी उतरती वाणि छे ने ते थी उतरता हाथ छे
ने ए सर्वे थी उत्तरता पग छे माटे सर्वे अंगमां थी माहात्मा पुरुषना चरणनो महिमा बहु कह्यो छे ॥ अने जे जे भक्तजन छे ते पण-
भगवानना चरणने पुजे छे ने चरणने धोईने तेनुं जल पीये छे अने भगवाननी स्तुती करिने एम मागे छे जे तमारा चरणारविं-

द माटे सबजो एविरीते सर्वे शास्त्रमां मोटेमोटे पण चरणनो जमहिमा बहु कह्यो छे तेनुं शुंकारण हशे एसर्वेने अमे पुछियेछिये तेकहो पछी कोईक हरिभक्ते कह्युं जे चरणमां भगवाननो निवासछे ॥ पछे महाराज बोल्या जे बीजा कोई अंगमां नीवासन हिने एक चरणमां भगवाननो नीवास केम होय एवात तो संभवे नहिं ॥ माटे तमने उत्तर आवड्यो नहि हवे अमे एनो उतर करि येछियेजे जिवने जन्ममरणने चोरासिनां जेमहा दुःख तेथकि मुकाववाने प्रथवी उपर चालतुं एवुं जे महत्मापुरुषनुं चरणारविंद ते समर्थ छे ॥ पण प्रगटसत्पुरुषना चरणारविंदनो आसरा विना बिजा अनंत उपाय करे तो पण जन्म मरण ने चोराशि टलेनहि ॥ केमके जन्ममरण तो ज्ञाने करिने टले छे ते ज्ञान तो प्रथ्वी उपर विचरता एवा जे प्रत्यक्ष परमात्मा भगवान तेनी पासे छे ॥ ते भगवानना चरणमां जिवने प्रीति थाय अने तेनी सेवा करे त्यारे तेने भगवान ज्ञान आपे तो जिवने ज्ञान थाय ने जन्म मरण टले माटे चालता एवा जे महात्मा पुरुष तेना चरणारविंदनो महिमा बहु कह्यो छे अने ते प्रगट भगवानना चरणनी सेवा मोटे मोटे मागि छे अने प्रगट भगवानना चरणने धोईने चरणामृत पिधानुं कह्युं छे अने चालतुं एवुं जे प्रगट भगवाननुं चरणारविंद ते ज्यां ज्यां फरस्युं होय ते सर्वे तिर्थ कहेवाय छे ॥ अने वलि बिजुं जे भगवाननो महिमा तो अतिशे अपार छे ॥ ते जेने मायाना बंधन थकि मुकावुं होय तेने अतिशे दीन थईने ते प्रत्यक्ष भगवानना चरणारविंदने सेवे तो तेना उपर भगवाननी अतिशे दया थाय छे पछे तेने पोतानो दास जाणिने ज्ञान आपिने ब्रह्मरूप करे छे अने भगवान ते भक्तने पोताना जेवो सुखियो करे छे केमके निरमानी भक्त भगवानने बहु वहाला छे ते निरमानिनुं ए लक्षण छे जे तेने भगवानना चरणनी सेवा करवी बहु गमे अने जे मानी होय तेणे चरणनी सेवा थाय नहि माटे भगवाननी कृपानुं पात्र एवुं जे नीरमानीपणुं तेने प्रगट करवा सारु चरणनो महिमा बहु कह्यो छे

॥ ॥इति श्रीसुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥

संवत् १९ ओगणीशे १८ अढारना माहा शुदि ९ नवमिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीचुडामध्ये भटहरिने धेर फलियामां गादि तकीया नखाविने ढोलिया उपर उगमणे मुखारविंदे विराजमान थया हता ने श्वेत धोतियुं हिरकोरि

पेहेर्युं हतुं ।। ने मस्तके गुलाबि रंगनो फेटो धारण कर्यो हतो ने बुटादाररे समिश्रंगारखुं पहेर्युं हतुं अने गुलाबी रंगनी शाल-
ओढि हती अने सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषण धारण कर्यां हतां ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आग
ळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनि सभा भराईने बेठि हती पछे महाराज बोल्या जे सर्वे साधुने तथा हरिभक्तने अमे प्र
श्न पुछिये छिय जे सर्वे दोषमां मोटो दोष ते कियो छे अने ते दोषथी अतिदोष ते कियो अने सर्वे गुण छे तेमां मोटो गुण कियो छे अने
ते गुणथी पण अतिगुण ते कियो हशे ते कहो ।। पछे भजनानंद स्वामिये कह्युं जे ।। भगवाननो द्रोह करे ते थी कोई दोष नथी अने
भगवाननी सेवा करवि एथी कोई गुण नथि पछे महाराज बोल्या जे अमे पुछ्युं ते प्रमाणे उत्तर न थयो पछे अक्षरमुक्तानंदस्वा
मिये कह्युं जे काम क्रोध स्वाद स्नेह ने मान ए तो मोटा दोष छे अने प्रत्यक्ष भगवाननो द्रोह करवो ते अति दोष छे अने ध-
र्म ज्ञान वैराग ने भक्ति ते तो मोटा गुण छे ।। अने प्रत्यक्ष भगवानने विसे महात्म्यज्ञाने साहित जे अतीषे प्रीति करवि ते अति गु
ण छे पछे महाराज बोल्या जे ए उत्तर खरो पण हवे हुं उत्तर करुं छुं जे आ सर्वे देह देह प्रत्ये आत्मा रह्यो छे ते आत्मा देहथि नोखो
छे ते आत्मा पोतानुं स्वरूप छे ते पोताना स्वरूपने भूलिने आ देह ते ज हुं छुं एम जे माने छे अने ते देहने सुखे सुख ने देहने
दुःखे दुःख माने छे अने देहने पुष्ट करे एवा जे पंच विषय तेने भोगविने आनंद पामे छे अने ते विषयनां पदार्थ नास पामे ते
भोगो पौते पण महा दुःखियो थाय ।। अने वर्णाश्रम नात जात तेनो ज अहंकार होय पण देहथी नोखो जे आत्मा तेने जे पोता-
नुं स्वरूप नथि जाणतो तेज सर्वे दोषमां मोटो दोष छे अने जे एम समजे जे स्त्रिनुं रुधिर ने पुरुषनुं विर्य ते थकी बन्यो एवो जे दे
ह ते मारुं स्वरूप नथि अने हुं तो देहनो प्रकाशक एवो ने अखंड अविनासि ने चैतन्य ब्रह्म ते छुं अने देह तो जड ने पंच
भूतात्मक छे अने ते देह तो पंच भूतना पोषणथकि रहे छे अने पंच भूतमांथि एके भूत जो बंध थाय तो ते देह नास थई जाय ।।
केमके अन्नजळादिके करिने देहनुं पोषण थाय छे एवो जे देह ते थि आत्मा जुदो छे ।। ते आत्मा केवो छे तो चैतन्य छे जाण
नारो छे व्यापक छे ने निराकार छे ने देह तो इंद्रियो ने अंतःकरण तेनो प्रकाशक छे अने अज्ञाने करिने दश इंद्रियोने व

र अंतःकरण नाजे विषय तेने भोगवनारो छे ।।पण तेमाईक ए वाजे पंचविषय तेणे करिने आत्माने सुख थाय एम नथि अने आ त्मा तो पोते ज सुखरूप छे ने अवीनासी छे ए विरिते देहथकि नोखो ने असंगि एवो जे चैतन्य प्रज्ञान रूप आत्मा तेने पोता नुं स्वरूप मानवुं तेने गुण कहिये अने सर्वे ना कारण ने सर्वे ना आधार एवा जे दिव्य स्वरूप भगवान ते पोताना अक्षरधामने विषे सदाय विराजमान छे ते भगवान उत्पतिसमे जिवो ना कल्याणने अर्थे इंद्रियो अंतःकरण सरजि आपे छे।। बुद्धि इंद्रि मनप्राणाजनानं श्रजतप्रभु मात्रार्थंच भवार्थंच आत्मने कल्पनायच ।।ए श्लोकमां कह्यो एवो जे भगवाननो उपकार अने आजपण सर्वे जिवोने भगवान जजिवाडे छे केमके भगवान वरसाद वरसावे छे त्यारे सर्वे जिव जिये छे अने जो पांच वर्ष मेघ न वरसे तो कोई राजा रंक कोई जिवे नहिं अने झाझां वरस वरसाद न थाय तो पृथ्वि घनो पण नास थई जाय माटे सर्वे जिव नी निरंतर भगवान ज रक्षा करे छे एवो जे भगवानने उपकार तेने जाणवो जाणतो तेमाअनि दोष छे अने कर्तुं मकर्तुं मन्य था कर्तुं एवा जे भगवान तेनी जे अनादि आज्ञा जे वर्णाश्रमधर्म तेमां द्रढपणे रहिने परउपकारि एवा जे प्रत्यक्ष भगवान ते थकि धर्म जे इंद्रियोनुं नियमकरवुं अने ज्ञान जे देहथकि नोखो एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं अने वैराग जे प्रकृति ना कार्यने विषे अरुचि अने भक्ति जे भगवाननुं साकारपणुं ने निराकारपणुं ने सगुणने निर्गुणपणुं ने करतापणुं ने अक रतापणुं अने दिव्यभाव ने मनुष्यभाव ए आदिक जे भगवानना अनंत ऐश्वर्य तेनुं ज्ञाने करि जाणिने भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्वीकल्प निश्चय ने पामवुं ए छे ए भक्तने ने भगवानने कांई अंतराय रहे तो नथि अने भगवानना स्वरूपमां अति तो हेत करिने जोडाई जाय।।ने ए भक्त भगवानना साधर्मपणाने पामे तेवुं नाम अविनो ज गुण छे अने आ कह्यो एवो जे अति गुण ते तो प्रत्यक्ष भगवान होय त्यारे ज जिवने प्राप्त थाय छे पण ते विना ए गुण पमाय नहिं ।। ।।इतिश्री मुख सिद्धांत समाप्तः।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमो नमः।। ।।संवत १९ ओगणीसें १८ अढारना महा शुदि १० दसमिने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री चुडामध्ये भट नारणजि भक्तने घेर फलिमां गादि तकिये जु

त्त ढोलिया उपर उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान थया हता ने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्या हता अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभि रह्यां हता अने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा क हरि भक्तनी सभा भराई ने बेठि हती पछे महाराजनी आरति धुन करिने सर्वे हरि भक्त पगे लागिने बेठा पछे महाराजे साधुने प्रश्न पुछ्युं जे सर्वे सुखना धाम ने कृपाना सिंधु एवा जे भगवान तेने जिव नथि भजतो अपार दुःखनुं मूल एवा जे पंचविषय तेमां जिव रचिपचि रह्यो छे तेनुं शुं कारण हशे ते कहो पछे धर्मानंद स्वामियेकह्युं जे जिवे भगवाननो मारग कोई काले दिठो नथि माटे एने भगवान भजवा कठण पडे छे ॥ पछे महाराज बोल्या जे पंच विषयमां ते सुख छे के दुःख छे पछे धर्मानंद स्वामियेकह्युं जे पंचविषयमां सुख तो छे पण दुःखे सहित छे पछे महाराज बोल्या जे पंच विषयमां तो लेश मात्र सुख नथि अने जे सुख जेवुं जणाय छे ते तो अज्ञानि करिने भ्रान्ति मात्र जणाय छे अने सुखरूप तो पीते आत्मा ज छे ॥ ते आत्मा पोतानुं स्वरूप जे सुख भुलिने विषयमां सुख माने छे जेम कस्तुरीया मृगनी नाभिमां कस्तुरि छे ते कस्तुरिने भूलिने तरणने सुंघीने सुख माने छे पण तृणने विषे कस्तुरि लेश मात्र नथी तेम कस्तुरिनी पेठे सर्वे सुखना धाम एवा जे परमात्मा ते आत्माने विषे रह्या छे तेने जीव नथी जाणतो पछी ते परमात्मानुं जे सुख छे ते इंद्रियो अंतःकरण द्वारे चुई जाय छे तेने भोगवीने जीव सुख माने छे पण ते विषयमां तो सुख ज नथि केमके विषय तो जड छे ते चैतन एवो जे आत्मा तेने शुं सुख उपजावे अने सुख तो ज्ञानने विषे रह्युं छे ॥ ते एवुं ज्ञान तो परमात्मा पासे छे ॥ पण ते विना बिजा कोई जीवनी पासे एवुं मायापर ज्ञान नथि अने जीवने विषे परमात्मा रह्या छे ॥ पण जिव पोतानी मेले परमात्माने जाणवाने समर्थ नथी थतो माटे एतो परमात्मा पोते कृपा करिने जिवने इंद्रियो अंतःकरणने अनुभवे करिने जाण्यामां आवे एवा मनुष्य रूपे थईने पोतानुं स्वरूप जणावे छे ॥ त्यारे ज जीव जाणि शके छे पछे परमात्मानुं जे सुख इंद्रियो अंतःकरण द्वारे पृथक पृथक पंच विषयमां रह्यि छे अने तेने विषे भुक्ता बुद्धि मानि छे ॥ तेने टलाववा सारु विषयनुं प्रमाण ज्ञाने करिने करावे छे अने ज्यारे जीवने विषयनुं प्रमाण जेम छे तेम इंद्रियो

अंतःकरणने अनुभवे करिने थाय छे त्यारे अनंत दुःखदोषने क्लेशाने देखे छे पण ते विषयमां सुख लेवामात्र नथि देखातो पछे
ते विषयमांथि जीव वैरागने पामे छे ॥ अने इंद्रियो अंतःकरणनी जे व्रतियो छे ते भगवानना स्वरूपमां जोडाय छे पछे तेने भग-
वाननुं अलौकिक सुख ने अपरमित महिमा ते अधिक अधिक जणातुं जाय छे अने भगवानमां जे दिव्य गुण रह्या छे ते गुण जे
म जेम महिमा समजतो जाय छे तेम तेम ते गुण जियने विषे आवता जाय छे माटे जेने जेने महा सुखिया थवुं होय तेने पंचविष
यनी वासनानो त्याग करवो अने भगवानने भगवानना नीखासनीक संत ते मां जोडावुं अने ए विरिते समजीने जे भगवान
मां जोडाय छे ते जसर्व सुखना पारने पामे छे अने ते जीव ब्रह्मदशाने पामे छे ॥ ॥इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्त
॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत् १९। ओगणिशो १८ अढारना महावदि एकादशि
ने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री सरवै मध्ये पटेल दुदाभक्तने घेर उत्तरादि बार ओरडानी ओसरिमां गादित
किया बिछाविने ढोलिया उपर विराजमान थया हता अने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठमां जाईना पुष्पना हार धा
रण कर्या हता ॥ अने कान उपर गुछ खोस्या हता ने पोताना मुखार्विंदनी आगल साधु तथा हरिभक्तनी मोटी सभा भराईने बे
ठि हति पछे महाराजनी आरति धून्य करिने सर्वे सभा बेठि पछे महाराज बोल्या जे मूल कारण माया छे तेने विषे अपरमित जि
व रह्या छे जेम पृथ्विमां बिज रह्यां छे ते वरसातने जोगे करिने उगि नीसरे छे तेम मायामां जीव छे ते मूलपुरुषने संबंधे करिने मायाम
थि जन्मने धरे छे ते चार प्रकारनी योनिमां जन्म थाय छे ते चार प्रकारनी योनि जे ईंडज उदभिज स्वेदज ने जरायुज ए चार खाण-
ने विषे जिव जे ते महा कष्टने पामे छे ॥ अने ए कष्ट थकि जिव पोतानी मेले कोई काले छुटवाने समर्थ नथि अने ए दुःख थकि जि
व ज्यारे छुटे तो परमेश्वर कृपा करिने जीवने मनुष्यनो जन्म आपे अने ते मनुष्य देहे करिने प्रगट कल्याणकारि एवा जे सत्पुरु-
ष तेनो समागम जिव करे तो ते सत्पुरुष एने ज्ञान आपि ते जन्म मरणना कष्ट थकि मुकावे छे अने जो मनुष्यनो देह पामिने अध-
र्मि पुरुषनो संग करे तो अति अमूल्य एवो जे मनुष्यनो देह ते खराब थई जाय छे माटे अधर्मिनो संग करवो नहिं अने मनुष्य-

देहे करिने जे जे करे ते थाय एम छे केम के मनुष्य देहनां इंद्रियो अंतःकरण छे तेणे करिने भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान थाय पण
पशु पंखि विना अवतारे ज्ञान थाय नहि अने मनुष्यना कान छे तेणे करिने भगवानना गुणनी कथा संभलाय छे नेनेत्रे करिने भ-
गवानने भगवानना संतनां दरशन थाय छे अने हाथे करिने भगवाननी सेवा थाय छे ॥ एवी रीते दस इंद्रियो ने चार अंतःकर-
ण ते मनुष्यनां भगवाननी भक्तिना उपयोगमां आवे छे अने ते भक्तिये करिने जीवनो मोक्ष थाय छे ॥ अने ते ज इंद्रियो-
अंतःकरणे करिने अधर्मनो संग्रह करे तो ते पापे करिने जिव जे ते जन्म मृत्युने पामे छे ॥ ने महा दुःखने भोगवे अने अमू-
ल्य एवो जे मनुष्यनो देह ते वृथा खराब थई जाय छे माटे आ मनुष्य देह छे ते पंचविषय भोगववा सारु परमेश्वरे नथि आप्यो
अने पंचविषय तो कुतरां गधेडांना अवतारमां मले छे ते सारु मनुष्य देहे करिने तो सत्पुरुषनो समागम करीने पंचवि-
षयनो त्याग करवो अने भगवाननी भक्ति करवी ने सत्संग करिने ज्ञान पामिने नीरवासनीक थवुं अने पछि देह मुकवो
एवो आज थी ज मनुष्यमात्रने बाई भाई सर्वेने ठराव करवो अने एम वासना टालतां टालतां अंत समे वासना टली जाय
तो ते जिव आत्यंतिक मोक्षने पामे छे अने जो थोडिक वासना रहि जाय ने देह मुके तो तेने जन्म धरवो पडे माटे सावधान थईने
सत्संग करिने ज्ञान पामिने नीरवासनीक थवुं ने पोताना आत्माने ब्रह्मरूप जाणीने परब्रह्म जे प्रत्यक्ष भगवान तेनी एका-
कांतिक भक्ती सिद्ध करिने देह मुकवो एज मनुष्यदेहनो लाभ छे ॥ ॥ इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः
॥ ॥ श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः ॥ ॥ संवत ॥ १९ ॥ ओगणिसें १८ अढारना फागण शुदि
८ अष्टमिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोजिद मध्ये पटेल जिवा भक्तने घेर उत्तरादे बाओरडानी
ओसरिमां ढोलिया उपर विराजमान थया ॥ अने श्वेत धोतियुं हिरकोरि पहेर्युं हतुं ने धोलुं अंगरखुं धारण कर्युं हतुं
अने मुस्तके गुलाबि रंगनो फेटो धारण कर्यो हतो अने गुलाबिको रालो स्वेत रेसम खभे नाख्यो हतो अने पोताना मु-
खारविंदनी आगल साधु तथा घणा क हरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हती अने रात्रि घडि छ गई हती पछे महाराज

बोल्या जे जे भगवानना भक्त थया होय तेने हाड मांसनो देह पोतानुं रूप मानवुं नहि ने ते देह थकि नोखो ने चैतन अरूप
अविनाशि एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं अने जे देहने पोतानुं रूप माने छे ते तो अतिशे अज्ञानी छे अने
तेने निच जाणवो अने ते देहने पोतानुं रूप माने छे तेने जन्ममरणनां दुःख कोई काले टलतां नथि केमके आत्मा अ-
विनासि छे ने देह नाशवंत छे ते देहने संगे करिने आत्मा मृत्युने पामे छे ॥ अने आत्मा अविनासि छे ते पाछो जन्मने पामे छे
केमके आत्मानी घणीक आवरदा छे पण देहने संगे करिने मरी गयो कहेवाय छे अने देहने संगे करिने जीवतो कहेवाय
छे एवी रीते देहने संबंधे करिने कटके कटके आयुष्यने भोगवे छे ने जिव अपार क्लेशने पामे छे माटे भगवानना भक्तने
सत्पुरुषनो आसरो करिने स्वधर्ममां रहिने ज्ञान पामिने दिवसे दिवसे देहमांथी प्रीति टालीने आत्मारूप थवुं अने ते
आत्मा साचा हेतकारि एवा जे भगवान तथा भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागि निरवासनिक साधु तेनी संघाते
पोताना आत्माने प्रीतिये करिने जोडि देवो अने तेना वचन मां मन क्रम वचने वर्तवुं अने ते भगवानने भगवानना साधु-
थकि ज्ञानने पामिने पंचविषयनी वासना टालिने देह थकी नोखो एवो जे पोतानो आत्मा तेने साक्षात्कार पामिने ते आ-
त्माने विषे रह्या एवा जे परमात्मा भगवान तेना प्रत्यक्ष स्वरूपमां अखंड स्थिति पामवि ए ज मनुष्यदेहनो लाभ छे। अने तेने
जन्ममरणनां दुःख टलि जाय छे ॥ अने ते ज अविनासि एवुं जे भगवाननुं अक्षर धाम तेने पामि छे। ॥

इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥संवत १९ ओगणिशे
१९ अढारना फागण शुदि ९ नवमिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीरोजिद मध्ये पटेल काला भक्त
ने घेर उत्तरादे बारओरडानी ओसरिमां ढोलिया उपर गादि तकिया नखाविने बिराजमान थया हता ने किनखापनो सुर-
वाल ने डगलि पहेर्यां हतां अने मुस्तक उपर कसुंबल सोनेरि पाघ बाधि हति अने गुहोरंगो पहेरीने केडे सोनेरी को-
राहुं कसुंबल त्रोलुं धारण कर्युं हतुं अने एक कसुंबल त्रोलुं खभे नाख्युं हतुं अने केसरनी अरचा करिने केकुनो

च्यादलोकबेठोनोनेपोतानामुखार्विंदनीआगलसाधुतथादेशदेशनाहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठीहतीपछे
सेज्या आरतिथयापछीमहाराजबोल्याजेजेनेअतिशेसुखियाथवुंहोय तेनेपरमेश्वरनीआज्ञालेशमात्रलोपवि
नहिं ॥ अनेजेपरमेश्वरनीआज्ञाप्रमाणेवरतशे ते आ लोकमांनेपरलोकमांअपारसुखनेपामशे अनेजेपरमेश्वर
नीआज्ञालोपेछे तेतो आलोकमांपणमहाकष्टनेपामेछे अनेमरिनेजमपुरिमांजईने अपारदुःखनेपामशे जेमआ
लोकमांराजानोकायदोलोपेछे तेनेराजादंडआपेछेनेतेमहाहेरानथायछे ॥ तेमसर्वकारणनेसर्वाधारएवाजे
भगवान्तेनीजेआज्ञालोपेछे तेजिवकोटिकोटिकष्टनेपामेछे माटे परमेश्वरनीआज्ञाजेवर्णाश्रमनोधर्मतेमांअति
दोढदपणेवर्तवुंअनेभगवाननोअतिशेउपकारमानवो ॥ जेजलनाबिंदुमांथिमहामनोहरदेहतेमुनेसरजि
आप्योतेजेदेहेकरिनेपोतानोजिवअतिशेवृद्धिनेपामेछेनेमायानाबंधनथकि छुटिनेमुक्तथायछे अनेमाया
नादोषजेकामक्रोधलोभस्नेहस्वादमानदंभकपटादिकजेअधर्मनोसर्गतेसर्वनाशपामिजायछे अनेभगवाननितेजि
वनाउपरकृपाथायछे ॥ अनेधर्मज्ञानवैरागसिलसंतोष्यादिकजेरुडागुणतेतेनाउपरमांनीवासकरेछे माटे भग
वाननागमताप्रमाणेवरततावर्तायतोहोयएवाजेसत्पुरुषतेनोमनक्रमवचनेसमागमकरवो अनेतेथकीज्ञा
नपामवुं अनेजेभगवाननामारगथकीपाडेएवाजेअधर्मतेनासंगथीछेटेरहेवुं अनेवलिकेटलाकजक्तमांईर्ष्या
वालाजिवछेतेपोतानेप्रभुभजवानहिनेकोईकप्रभुभजताहोयतेनाउपरइर्षाकरिनेतेनेभगवाननामारगथीपाड
वानाअनंतउपायकरेछे माटेएवापापिनाशब्दभगवाननाभक्तनेसांभलवानहिं अनेअमारेतोकोईनाउपर
वैरनथिनेपक्षपातपणनथि अनेजेजेअधर्मअनितिनोत्यागकरिनेअमारेशरणेआवेछेतेनेज्ञानआपिनेमायाना
बंधनथकिमुकावीनेतेनोमोक्षकरियेछीयेनेतेजीवमहासुखियोथायछे अनेएवाधर्मवालाहोय तेअमनेभावेक
रिनेतेनेघेरतेडिजाय त्यांजईयेछीये पछेजेनेतेनाउपरईर्ष्याहोयतेएमकहेजेएनेघेरमहाराजउतर्याछे तेअ

मेमहाराजपासेनहिजईयेंएमजाणिनेजे अमारिपासेनथीआवता तेनेतो बहुजखोटजशे॥ अनेजेएमसमजेछेतेने तोमहापापिजाणवो अनेते जिवनुंकोईकाले कल्याणथायनहिं॥ केमकेजेनासमागमेकरिने जिवनुंकल्याण थायतेनीजपासेनजावुंत्यारे बिजे कल्याणनुंठेकाणुंक्यांमलशे जेमतरशालागिहोयनेतेपाणीसाथेरूषणुंरा खेतेमजिवनुंकल्याणकरेएवाजेसत्पुरुषतेनीपासेजवुंनहिनेउलटोतेनोद्रोहकरेतेनुंतोबहुजभुंडुंथायछे माटेपोताना जिवनाकल्याणसारुंएवोईर्ष्यानोत्यागकरिनेजेनेघेरमहात्मापुरुषआव्याहोयतेनेघेरनिरमानीथईनेजवुं अनेईर्ष्या करवीतोएविकरविजेजेनाउपरईर्ष्याहोयतेनाजेवारूडागुणशिखवा अनेजेमतेणेसत्पुरुषनेतेडिआवीनेएकदिवस राख्याहोयतोपोतेपोतानेघेरतेडीआविनेबेदिवसराखियेकेमकेजेथकिपोतानाआत्मानुंकल्याणथायपणउलटुंभुंडुं थायएविईर्ष्यानकरवी॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ॥ ॥संवत्१९ओगणिशे ३९अडारनाफागणशुदि१५पुनमनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगाम श्रीवरतालमध्येविप्रवजेराममेहेतानेघेरउगमणेबारओरडानीआगलपाटउपरगादितकियेयुक्तहोलियोनखा विनेतेउपरविराजमानथयाहताअनेसर्वेसोनेरियवस्त्रधारणकर्यांहतांअनेकंठमांहजारीगोटानापुष्पनाहारधारण कर्याहतानेकंकुनोचांदलोकर्योहतोनेपोतानामुखारविंदनीआगलसाधुतथादेशदेशनाहरिभक्तनीसभाभराई नेबेठिहति॥पछेसंज्याआरतिथयापछीवजेराममेहेतेप्रश्नपुछ्युंजेहेमहाराजप्रगटभगवाननास्वरूपमांजीवनेसंषय थायछेतेसंषयमटिनेनिर्विकल्पनिश्चयकेमथायछेतेकहोपछेमहाराजबोल्याजेसतशास्त्रनेसमजवेकरिनेप्रगटभग वाननास्वरूपनोनिर्विकल्पनिश्चयथायछेतेकहुंछे॥ जेयथायथाहिपुरुषशास्त्रसंबंधिगच्छति तथातथाविता नातिविज्ञानंचासरोचते॥एश्लोकमांएमकह्युंछेजजेपुरुषशास्त्रनोअभ्यासजेमजेमकरेछेतेमतेमतेनेज्ञानज रूचेछेनेज्ञानेकरिनेअंतरमांप्रकाशथायछेअनेतेपछेतेनेप्रगटभगवाननास्वरूपनोनिर्विकल्पनीश्चेथायछेअने

जेनेशास्त्रनुं ज्ञाननथीतेनी मतिमां संषयथायछे केमकेशास्त्रमां भगवानने क्यांईककर्ताकह्याहोय ने क्यांईकअकर्ताक ह्याहोय ने क्यांईक साकारकह्याहोयने क्यांईकनिराकारकह्याहोयने क्यांईकसगुणकह्याहोय ने क्यांईकनिर्गुणकह्या होय तेजेनेसर्वशास्त्रमां द्रषिपहोंचतिहोयतेतोएमजाणेजेकरताअकरतासगुणनिर्गुण साकारनिराकारए आदिक एवाअनंतगुणतेसर्वे प्रत्यक्षभगवाननेजकह्याछे केमके भगवाननिइछाविना कांईजथतुंनथि माटेभगवानकरता छे अनेप्रकृतिपुरुष द्वारेअनंतकोटिब्रह्मांडनिउत्पतिस्थितिनेप्रलयकरावेछेनेपोतेतो अखंड अक्षरधाममनेविषे पोताना एकांतीक भक्तनेसुखआपेछे पण पोते कांईकरतानथि माटे अकरता छे अने दिव्यअवयवेकरिने भगवानमूर्त्तिमानछे माटेसाकारछे अनेसर्वजिवोनेजेम मायानाआकारबंधाणाछे तेमभगवाननेविषे मायानोआकारनथि माटेभगवानने निराकारकह्याछे अनेभगवाननेविषेमायानागुणजेरजतमनेसत्व तेनथि माटे भगवानने निर्गुणकह्याछे अने भगवानने विषे अनंतकल्याणकारीगुणरह्याछे माटे भगवान सगुणछे एवीरीतेजेमुमुक्षुनेदैविजिवहोयने जेणे अनंतजन्मथया भगवानसारुंजपतपव्रतादिकनिष्कामभावे साधनकर्याहोय तेनेजशास्त्रना अर्थसमजायछे अनेतेजप्रगटभगवान ना स्वरूपनो निश्चयकरेछे पणजेनीमतिकामलोभादिकदोषेकरिनेअवराईगईहोय एवाजे भ्रष्टमतिवालाहोयनेते चारेवेदनाभणेलाहोय ने खटशास्त्रना पाठकरताहोय तोपण तेनेशास्त्रनामर्मजेमछे तेम समजाता नथि नेउलटाभर माईजायछे तेपणपूर्वे मोटामोटा ने भ्रमथया छे॥ अनेजेदैविनेमुमुक्षुहोय तेनेजप्रगटभगवानओलखयामांआवे छे॥ अनेआजपण जेदैविनेमुमुक्षुहशेतेनेज अमारास्वरूपनोनिश्चयथशेपणमतवादितथा भ्रष्टमतिवाला होयतेने अमा रुंस्वरूपनहिओलखाय अनेजेसकामिहोयनेते अमारासमिपसंबंधमां रह्याहोयतोपणतेने अमारास्वरूपनोनि-श्चयथायनहि॥ ॥इतिश्रीमुख्यसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥

॥ ॥संवत्॥१९॥ओगणिशो १८ अढारना फागण वदि ३ त्रिजनेदिवस महाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगाम

श्री बरवालामध्ये मेहेताबजेरामनेघेरउगमणेबारओरडानी ओसरिमां ढोलियाउपरगादितकीयानखाविने विराजमान
थयाहता अनेधोलोस्फरवालनेरातिउगलिपडेस्यां हता नेमस्तकेमलमलनोतारालोफेंटोबांध्योहतो अनेगुदडारंग
नोरेटोपहेरिनेउपरकेहेडकसंबलसेलुंधारणकर्युंहतुं।। अनेधोलिशालखभेनाखिहतीनेपोतानामुखारविंद
नीआगलसाधुतथादेशदेशनाहरिभक्तनीसभाभराइनेबेठिहती पछे आरतिधून्यकरिनेपछीमहाराज पोतानीमे
लेबोल्याजे एकप्रश्नपुछीयेछीयेजेएक निरबिजमुक्तिछे नेएक सबिजमुक्ति छे ते मुक्तिपक्षेतो अभेदछे ने निरबिजने
सबिजपक्षेतो भेदछे माटे तेनारूपकहो अनेतेनाउपदेष्टा कोणछे ने तेनांशां लक्षणछे ते कहो पछे धर्मानंदस्वामिये
कह्युंजे निरबिजमुक्ति तोनिरबिजसांख्यनेनिरबीजजोगेकरिनेथायछे अनेतेनाआचार्य्य संकराचार्यछे।। अनेनिर-
बिजसांख्यनेनिरबिजयोग तेनेसिद्धकरिनेपूछे सबिजसांख्यनेसबिजयोगनेसिद्धकरे त्यारेसबिजमुक्तिनेपामे।।
अनेतेनाआचार्यतमेछो पछेमहाराजबोल्याजेएवातमां कांई आश्चर्यजेवुं जणातुं नहिं अनेनिरबिजमुक्ति बेप्रकारे
पमायछे तेमांएकतोकर्ममार्गेकरिनेपमायछे अनेएकनिरबिजसांख्यनेनीरबिजयोगेकरिनेपमायछे पणए सर्वे
आत्मानीस्फद्धिकहिछे अनेदेवादिकलोकनेपामवुंतेनीआगलतोएनिरबिजमुक्तिउत्तमछे।। जेमकोडिबदामनेपैसो
तेनीआगलरूपैयोउत्तमछे पणचिंतामणिआगलतोरूपैयोअतिशेतुछछे तेमकोडिबदामनेपैसानेठेकाणेतोदेवादि
कनालोकछे नेरूपैयानेठेकाणे निरबिजमुक्तिछे अनेसबिजमुक्ति छे तेतोचिंतामणिनेठेकाणे छे अनेकपिलदेवसंकरा
चार्यनेगौतम तेणे जे निरबिजमुक्तिनोबोध आप्योछे तेनोउपासकनिस्फद्धिसारु आप्योछे अनेतेबोधेकरिनेतेमां
आश्चर्यजपामिनेसंतोषपामेछे तेनेतोघणीखोटरहेछे केमकेएकाइंगौतमनेसंकराचार्यना अंतरनोअभिप्राय
नथि अनेएनोअभिप्रायतोएमहतोजे निरबिजसांख्यनेनिरबिजयोगनेज्ञानेकरिने जिवजेते ब्रह्मरूपथायछे
अनेजेब्रह्मरूपथयो तेनेपछेसबिजसांख्यनेसबिजयोगसिद्धकरिनेपरब्रह्मएवाजेप्रत्यक्षभगवानतेनेसा-

क्षात्कार पामवुंने ब्रह्मरूप थयो होय ते जपर ब्रह्मने पामे छे ने ते ज सर्वोपरि सुखने भोगवे छे ने ते दिव्यमूर्त्तिमान थ-
यो थको अनादि दिव्यमूर्त्ति एवा जे परमात्मा परब्रह्म ते निसेवा अक्षरधामने विषे अखंड करे छे अने जेनी रबिज मुक्ति
पामिने बेसि रहे छे एया जे शुस्क वेदांति तथा जे कर्मने ज करता कहे छे एया जे जैन मतना सिद्धांतने न जाणनारा
अने अतिशे आलस्कने परमादी तेने मोटि खोट जाय छे जेम मे हेताजी भणवा बेठा होय ते अरधि विद्या भणिने आल
सि बेसे ते मुरख कहेवाय केमके अरधि विद्या कांई उपयोगमां आवती नथी ने ते हेरान थाय छे तेम जे निरबिज सां
ख्य ने निरबिज योग तेणे करिने आत्मारूप थईने परमात्मा एवा जे दिव्यमूर्त्ति भगवान तेने आत्माना आधार जा
णिने नथि भजता ते तो ब्रह्मशुसोपत्तिने विषे लिन थाय छे ने उलटो महाक्लेशने पामे छे पण तेने परमात्मा परब्रह्मनुं जे अलौ-
कीक सुख ते आवतुं नथि अने जे रामकृष्णादिक भगवानना अवतार तेने भजि भजीने मोक्षने पाम्या एवा जे प्रल्हाद
नारद नवयोगेश्वर अमरिष अर्जुनादिक ते तो एम समजता जे सर्वेना कारण ने सर्वेना आधार एवा जे परमात्मा भगवा
न वे जे ते दिव्यमूर्त्तिमान छे अने तेनि ईछाए करिने अनंतकोटि ब्रह्मांडनी उत्पत्ति थाय छे अने जेनी शक्ति काल
छे ।। माया छे पुरुष छे अने जेनी शक्ति अक्षर छे एथि अनंत शक्तिये युक्त एवा जे परमात्मा भगवान ते ज आ पृथ्वि उपर
कृपा करिने मनुष्याकृतिनुं धारण करे छे ते भगवानना जे जे जीव आसरो करिने तेनी आज्ञा प्रमाणे वरत्या छे ते जस-
बिज एवि जे आत्यंतिक मुक्ति तेने पाम्या छे मारे सबिज मुक्तिने पमाय त्यारे ज जिव ठरिने बेसे पण ते विना जिवने
ठरवानुं ठेकाणुं बिजे क्यांई नथि ।। ते सारुं जेने स्कारविया थवुं होय तेने सबिज मुक्तिने जरुर पामवुं ते सबिज मुक्ति
केम पमाय छे तो सबिज मुक्तिना पमाडनारा एवा जे प्रत्यक्ष सत्गुरु रूपे हरि तेने शरणे जईने ते थकि नीरबिज स-
बिज सांख्य योगने सिध करवा ते मां निरबिज सांख्यने बिचारे करिने देहथकि आत्माने नोखो देखाडिने पछे नि
रबिज योगे करिने आत्माने विषे स्थितिने पमाडे छे अने ज्यारे आत्माने विषे स्थितिने पामे छे त्यारे जिवनु जिवपणुं मटि

जायछे अनेतेनेपंचविषयनीपिडाटलिजायछेनेतेजिवशांतिनेपामेछे अनेपरमात्मानेभजवानोअधिकारी थायछे पछेतेनेसबिजसांख्येकरिने प्रत्यक्षभगवाननास्वरूपनो महात्म ज्ञानेसहित उत्तमनिर्विकल्पनिश्चयकरावेछेनेपछीसबिजयोगेकरीने आत्मा निजे दिव्यवृतियो छे तेनेपरमात्मानास्वरूपमां जोडावे छे अनेतेपरमात्माने विषे जोडावे करिनेभुक्तजे तेअक्षरातित दिव्यरूप थायछे अनेपोताथीपरएवा परमात्मा तेनेसाक्षात्कार देखे छे अनेतेनुंसुख मनवाणीनाकह्यामां आवेएमनथि नेतेसुखअलोकिक छे ने अविनासि छे अनेएनेसबिजमुक्तिकहेछे ने तेनेअत्यंतिकज्ञानकहेछे॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥

॥ ॥संवत १९ओगणिसें १८अढारनाफागण वदि ४ चोथने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीलारवेणिमध्ये विप्रआशाराम ने घेरउतरादे बार ओरडानिओसरिमांगादितकियानखाविनेहोलियाउपर विराजमानथयाहता अनेसर्वे स्वेतवस्त्र धारण कर्याहतां नेपोतानामुखारविंदनिआगल साधुतथाघणा हरिभक्तनी सभा भराईनेबेठिहति पछे महाराज बोल्याजे जिवने भगवान भज्यामां जेजेअंतरायकरे ते जेवो कोई शत्रु नथिअने कोई कपोतानुं धन्यमाल लेईजाय तथा गाम ग्रास लेईजायतथापोतानुंमाथुवाढिनाखे ते सर्वे करतां पण भगवान भजवामां अंतरायकरे तेवधुशत्रु छे केमके शरिरआदिकतो विजांपदार्थतोनासवंतछे तेनासवंतनेकोईकनाशकरोअथवालेईजाय तेनो तो कांई जखर खरो नहि पण अविनासिएवुंजे भगवान भज्यानुंसुख तेमांजेअंतरायकरेते-तो जिवनोमोटो शत्रु छेमाटेजेनेपोतानांआत्मानामोक्षनोखपहोय तेनेतो जेजे भगवान भज्यामांअंतरायकरेतेनेमाहामोटोशत्रुजाणीने ततकाल त्यागकरवो ते माबाप अंतराय तो तेनो त्यागकरवो तथासगासंबंधिनातजात स्त्रि छोकरां धन्यमाल गामगरास आदिक जे जेपदार्थ भगवान भज्यामांअंतरायकरेतेनो त्यागकरवो अनेपूर्वेपण भगवानने भक्ते भगवानभज्यामां जेणे जेणे अंतराय कर्याछे तेना त्याग करिदिधा छे तेप्रल्हादजिनेतेने

बापे अंतराय कर्यो तो तेनो त्याग करि दिधो तथा भरथजिये पोतानी मातानो त्याग कर्यो तथा विभिषणे भाईनो त्या
गकर्यो ने ऋषिपत्निये पोताना पतिनो त्याग कर्यो ने नारद सनकादिक शुकदेवादिक घणा ये क भगवान भजवामां-
अंतराय करे ते सारुं सर्वे संसारनो त्याग करिने अभयपदने पाम्या छे माटे जेने जेने पोताना आत्मानुं रुडुं करवानी
इछा होय तेने तो संसारनां जे सुख ते मां लोभावुं नहि ॥ अने मनुष्य देहे करिने तो अविनासि एवुं जे भगवानना धा
मनुं सुख तेने पामवुं अने जे पंचविषय संबंधि सुखछे । ते तो नासवंत छे ने दुःखरुपछे केमके जीव छे ते णे राजानो
जन्म पामिने घणाक फेरा वारेवारे अनंत भोग भोगव्या छे ने देवलोक मां जईने देवताना भोगपण जिवे घणाक
भोगव्या छे तथा ब्रह्मा थईने ब्रह्मलोकना जिवे घणाक भोग भोगव्या छे तो पण हजि जिवने तृप्ति थई नथी तो हवे
आ मनुष्य देहनि जे अल्प आवरदा तेणे करिने क्यां तृप्ति थवानी छे अने वलि जो जीव मनुष्य देह पामिने भगवान नहि
भजे तो अतिशे भुंडा भुंडा अवतार गधेडा कुतरा बोकडा पाडा वांदरा ना आवसे अने ते ते अवतार मां सगां संबंधि
स्त्रि छोकरा घणाक थाशे पण तेणे करिने आत्माने शान्ति थाय एम नथि अने शान्ति तो सत्पुरुषनो आशरो करि
ने काम लोभ स्वाद स्नेह ने मान ए जे पांच अंतरशत्रु तेनो त्याग करे त्यारे थाय पण ते विना विषयना पदार्थे करिने
आत्माने सांति कोई काले थाय नहि ॥ अने वलि एम समजवुं जे मा बाप सगां संबंधि ए सर्वे देहनां संबंधि छे पण आ
त्मानां सगां कोई नथी अने आत्माना सगा तो एक भगवान छे केमके जिवने गर्भवासमां अतिशे पिडा थाय छे त्यारे
पण भगवान रक्षा करे छे अने आज पण भगवान जिवने जिवाडे छे त्यारे जिवे छे पण जो भगवान रक्षा न करे तो एक
पल वार पण जिवने सुख रहे नहि अने जो एक लघु सख्या बंध थाय तो देह न रहे अने ज्यारे अंत समो थशे त्यारे प
ण जो भगवान नहि भज्या होय तो एक एक रुंवाटे कोटान कोटि विंछिनी वेदना थशे त्यारे पण ते समे कोई मा बाप
सगां संबंधि सहाय नहिं करे अने कोईनुं त्यां बल पण चाले एम नथि अने ए टाणे तो एक भगवान सहाय करे त्यारे

एदुःखथकि छुटायपण बिजो कोई उपाय नथि माटे साचा हितकारीने साचा सगा तो जिवना एक भगवानज छे ते-
शास्त्रमां पण कह्युं छे जे तमेव माता च पिता च तमेव तमेव बंधुश्च सखा च तमेव तमेव विद्या च द्रव्यं तमेव तमेव स
र्वंमम देवदेवा १ माटे जे जन्ममृत्युना दुःखथकि मुकावे एज आत्माना अतिशेज हितकारि छे अने तेज मातापि
ताबंधु सखा विद्या द्रव्यने सर्वदेव छे माटे आत्मानुं रुडुं करे तेने जहितकारी जाणवा अने ते विनाना सर्व जिवनां
शत्रु छे ।। ।।इति श्रीमुख सिद्धांत समाप्तः।। ।। श्री हरिकृष्णायनमोनमः।। ।।
संवत् १९ ओगणिशो १८ अढारना फागण वदि ७ सातमने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री लाखेणि
मध्ये सुतारथिरानेघेर उगमणे बारणे ओरडानी आगलफलि मां ढोलिया उपर गादितकिया नखाविने विराजमान थया
हता अने सर्व जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठमां पुष्पना हार धारण कर्या हता अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो
ने पाघमां तोराने कान उपर गुछ धारण कर्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा क हरिभक्तनी स
भा भराईने बेठा हता पछे संज्या आरति थया पछी महाराज कृपा करिने सर्व हरिभक्त प्रत्ये बोल्या जे परमेश्वरे जे दि
वसथि सृष्टि करि छे ते दिवसथि विद्याने ने अविद्याने लडाई थया करे छे ते शासारु लडाई थाय छे तो अविद्या
माया ये जिवोने अनादिना आवरि लिधा छे ने ते मां जिव जन्म मरणना दुःख पाम्या करे छे ।। ते दुःखने देखिने सत्पुरु
ष कृपा करिने ए दुःखथकि जिवोने मुकाव्यानुं करे छे त्यारे अविद्या माया संतापने पामे छे केमके त्यारे सत्पुरुषनो
आसरो करे त्यारे जिव अविद्या मायाना बंधनथकि बहार थाय छे ने अविद्या मायानो जिव टलि जाय छे अने ते जि
व ब्रह्मरुप थईने भगवानना धामने पामे छे ते जिव पाछो कोई काले अविद्या मायाना बंधनमां आवतो नथि ते सा
रु अविद्याने दाझ थाय छे माटे विद्याने ने अविद्याने लडाई थाय छे केमके विद्या अविद्याने भेगुं कोई काले बनेज
नहिं ।। जेम दिवसने ने रात्रिने भेगु बने नहि ने जेम चोरने ने साहुकारने भेगु बने नहि तेम विद्याने ने अविद्याने ब

नेनहिं ते विद्यानुं शुद्धरूप छे ने अविद्यानुं अशुद्धरूप छे तो काम लोभ स्वाद स्नेह मान दंभ कपट ईर्ष्या असूया मछरादिक जे
अधर्मनो सर्ग ते सर्वे अविद्या छे तथा गांजो भांग्य अफिण मफर माजम लिलागर दारु माटि आदिक जे जे केफादिक
व्यसन ते सर्वे अविद्या माया छे अने धर्म ज्ञान वैराग भक्ति शिल संतोष क्षमा दया धीरज विवेक विचार श्रद्धा शान्ति आ-
दिक जे धर्मनो सर्ग ते सर्वे विद्या छे ।। तथा निष्काम निर्लोभ निस्स्वाद निस्नेह निर्मान ते पण विद्या छे ते निष्कामिने ने
कामिने कोई काले भेगुं बने ज नहि ।। तेमज लोभिने ने निर्लोभीने भेगु बने नहि तथा स्वादिने ने निस्स्वादिने बने नहि
एवि रीते धर्मने ने अधर्मने भेगु बनतुं ज नथि केमके धर्मना सर्गने विषे वर्तता एवा जे जिव तेने विषयनो त्याग करवो ज गमे छे ।।
अने अधर्म सर्गने विषे वर्तता एवा जे जिव तेने पंचविषय भोगववा गमे छे माटे त्यागिने ने रागिने बने नहीं एथि रिते ए बेने अ-
नादिनो कजियो चाल्यो आवे छे ते प्रल्हादे पंचविषयनो त्याग करिने प्रभुनुं भजन कर्युं तो विषयनो ए जे हरणाकंस तेणे
प्रल्हादनो द्रोह कर्यो अने विभिषणे विषयनो त्याग करीने भगवान भज्या तो रावणे तेनो अतिशे तिरस्कार कर्यो ए आ-
दिक घणाक भक्तोने ने अभक्तोने लडाई थति आवे छे माटे जेने पोताना आत्मानुं कल्याण इछवुं होय तेने तो अभक्त जे
आसुरि जिव तेनो संग करवो ज नहि ।। ने ते आसुरिनि कोई जात नथि ए तो आसुरि स्वभावे करिने ओलखाय छे ते एवा
आसुरि साधुमां पण होय ते तिलक मालानुं धारण करे तथा किर्तन पण स्त्रियोने रीझवा सारुं गाता होय तथा द्रव्य सारु
ने सारुं सारुं खावा सारुं कथा वांचता होय पण एया पंचविषयना रागि होय तेने साधु जाणवा नहिं तेने तो असाधु जाणवा
ने एवा असाधु होय तेनो विश्वास न करवो अने ब्राह्मणमां एवा आसुरि स्वभाव होय तो तेने ब्राह्मण न जाणवो तथा पंडि
त होय पुराणि होय तपस्वि होय त्यागि होय संन्यासि होय ब्रह्मचारि होय तो पण पूर्वे कह्यो जे अधर्मनो सर्ग ते जेमां होय
तेनो संग करवो नहिं अने जे अष्टप्रकारे स्त्रिनो त्याग राखता होय ने सर्वप्रकारे द्रव्यनो पण त्याग करता होय तथा खटरस
नो सर्वे प्रकारे त्याग करता होय तथा देहने पोतानुं रुप मानता न होय ने कोई जातनुं मान होय नहिं एवा जे पंचविषयना

त्यागिसाधुतेनो मनक्रमवचने संगकरवो तथा भगवानजिवोउपरकृपाकरिने पोतेपृथ्विउपरपधार्याहोयतो तेनोसंगकर-
वोकेमकेजे निरवासनिकहोयतेज निरवासनीककरे छे पणरागिने संगे निरवासनिक थवायनहि एसिद्धांतवारताछे॥
केमकेजेवागुणगुरुमांहोयतेवागुण शिष्य मां आवे छे माटेकल्याणकारिगुणवानएवाजे सत्पुरुष तेनोसंगकरवो अने
अकल्याणकारिगुणयुक्तएवाजेअसत्पुरुष्य तेनोसंग न करवो अनेपूर्वे पणजेनाजेनामोक्ष थया छे तेपण सत्पुरुषने सं
गेकरिनेजथायछे एचारवेद ने खटशास्त्रने जेजेमोटापुरुषथईगया ते सर्वेनोए सिद्धांत छे॥ ॥इतिश्रीमु
खसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्१९ओगणिशो १८ अढारनाफागण
वदि ८ अष्टमिनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवान गामश्रीलारवेणिमध्ये विप्रजेठारावळनेघेरउगमणे बारओरडा-
नीओसरिमां गादितकिये युक्तढोलियाउपर विराजमानहता अनेसर्वेजरियानीवस्त्र धारणकर्याहता नेसर्वे अंगमां
पुष्पनांआभुषण सोभिरह्याहतां नेकंकुनोचादलोकर्योहतो नेपोतानामुखारविंदनीआगळसाधुतथाघणाकहरिभक्त
नी सभा भराईनेबेठिहति पछेमहाराजनी आर्त्तिधुन्यकरिनेपछी गामसिहोरनाभक्त भिमभाईयेमहाराजनेप्रश्नपु
छ्युंजेपरमेश्वरभजवानुंतो जिवप्राणिमात्रने मन मां छे पण तेमां केटलाएकप्रभु भजेछे नेकेटलाकतो मुदलप्रभुभजता-
जनथी॥ तेमां कोई भजे छे नेनथि भजतातेनुंशुंकारणहशे॥ अनेवळि जिव भगवान भजिनेमुक्तथाय तेनुं मुख्यसाध
नशुछे ते कृपाकरिनेकहो पछेमहाराजबोल्याजे जिवमात्रने भगवान भज्यानुं तो भानजनथी॥ अने जिवने तो अनादि
नुं पंचविषयनुंजह्ज्ञानछे तेकानेकरिने स्त्रियादिकना शब्दमां जिवआशक्त थई रह्यो छे॥ ने नेत्रेकरिने स्त्रियादिकना
रूपमां जिवजोडाईरह्या छे अनेरसनायेकरिने सारुसारुखावाने विषे जिवआशक्तथईरह्या छे माटे तेणेकरिने जिव
भगवाननेनथी भजता अने भगवानपण तेथि वेगळारहे छे त्यां श्लोकछे॥ परांमुखानांगोविंदो विषयाशक्तचेतसां ते
सांतत्परंमब्रह्म दुरादुरेस्थीतां १ एमां एम कह्युं छे जेपरमेश्वरथी विमुखथईने विषयने विषे आशक्तथाय छे तेथकिप

रमेश्वर घणा ज वेगळा रहे छे अने जे नाथि परमेश्वर वेगळा रहे छे तेने मोक्षनुं साधन कोई हाथ आवतुं नथि अने ते जिव स-
दाय जन्म मृत्यु ने पाम्या करे छे अने जे दैवि ने संस्कारि एवा जे भगवानना भक्त छे ते तो चितमांथि विषयनो त्याग करिने परमे
श्वरने विषे जोडाई जाय छे तेना समिपे परमेश्वर थाय छे त्यां श्लोक छे जे तन्मयत्वेन गोविंदो ते नरा
एमां उपर कह्यो एभाव छे माटे एवि रिते विषयनो त्याग करिने परमेश्वरने भजता एवा जे संस्कारी भगवान
ना भक्त तेने समीपे थवासारु परमेश्वर मनुष्याकृतिनुं धारण करे छे पछे ते संस्कारी एवा जे भक्तजन छे ते तो परमेश्व
रने ओळखिने अखंड सेवा सबंधमां रहे छे अने ते प्रत्यक्ष परमेश्वर थकि ज्ञानने पामिने ब्रह्मरूप थईने अक्षरधामने पा
मे छे अने ते मुक्तने वांसे बिजा पूरवे कह्या जे विषयने विषे आशक्तिवाळा जिव ते परमेश्वरने मार्गे चाले छे जेम गोपियो
ने अर्थे श्रीकृष्ण प्रगट थया हता तो ते गोपियोने संगे करिने ऋषिपत्नियोनुं पण कल्याण थई गयुं अने रामावतारमां
लक्ष्मणजानकि ने हनुमानजि आदिक संस्कारि भक्त सारु रामचंद्रजी प्रगट थया हता तो तेनी केडे घणा एक वांद
रां आदिक जिवोनुं कल्याण थयुं एवि रिते संस्कारि भक्त जे जे देशमां अथवा जे जे गाममां रहेता होय ते ते देशना तथा
ते ते गामना जे बिजा जिव तेने पण तेनी वाते चित्ते करिने भगवाननो महिमा कहि देखाडिने प्रत्यक्ष भगवाननो संबं-
ध करावे छे पछे ते प्रत्यक्ष भगवानने संबंधे करिने ते जिवनी मलिनता टळि जाय छे अने जिवे विषयनी आशक्तिये
करिने जे स्त्रियादिकनां रूप जोयां होय तेणे करिने जे पाप लाग्यां होय ते जिव ज्यारे प्रत्यक्ष भगवानने ते भगवानना
एकांतिक पंचविषयना त्यागि निरवासनिक साधु तेनां दरशन करे ते पो करिने तेना नेत्रनां पापना सपांमे छे अने
भगवानने साधुना शब्द सांभळवे करिने कानना पापना सपांमे छे अने भगवानने संतनी पासे चालिने जाय ते
णे करिने पगनां पाप बळि जाय छे एवि रिते प्रत्यक्ष भगवानने संबंधे करिने पापना सपामे छे ते शास्त्रमां कह्युं छे जे ॥
अन्यक्षेत्रे कृतं पापं तिर्थक्षेत्रे विनस्यति तिर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति १ ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे भगवा

ननेभगवानना भक्त विना बिजे ठेकाणे जे जे पापकर्यां होय ते जो प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संत तेनी पासे जईने
तेनो गुण ग्रहण करे तो ते जिवनां आगलां पापनास पामिजाय छे अने जो भगवानने संतनि पासे जईने तेनो अवगुण लि
ये तो तेनुं एवुं पाप लागे ते कोई कालेनास पामतुं नथि अने आ जक्तने विषे बे प्रकारना जिव छे तेमां एक आसुरिजीव छे
ने एक दैविजीव छे ते जे दैविजीव छे ते तो महात्मापुरुष पासे जईने गुण ले छे अने ते एम जाणे छे जे महात्मापुरुष तो कृ
पा करिने आपणने सुखिया करवा सारु दर्शन आपे छे अने कृपा करिने ज्ञाननी वातो करे छे अने आपणा कल्याणने
अर्थे सेवा अंगिकार करे छे अने महात्मापुरुष तो सदाय पूर्णकाम छे अने एम समजीने दैविजीव छे ते महात्मापुरुषनी
सेवा करे छे अने जो आसुरिजीव होय ते तो एम जाणे जे अमारे जेम विषयनी आशक्ति छे तेम मोटापुरुषने पण आशक्ति
हशे ते अने ते आशक्तिये करिने सारां वस्त्र पहेरता हशे अने फुलना हारने गादि तकिये बेसता हशे ते मोटप्य जणाववा सा
रु बेसता हशे अने सारां सारां भोजन करावि ने जमे छे ते पण तेमां प्रिति हशे त्यारे जमता हशे अने मुलकमां फरे छे ते कमा-
वा सारु फरता हशे एविरिते आसुरी जिव छे ते महात्मापुरुषनो अवगुण ले छे ने पोताना आत्मानुं भुडुं करे छे अने अमारे
तो चौद लोकनां जे पंचविषयनां सुख छे ते कागविष्टा तुल्य छे अने जे सारां सारां वस्त्र छे ते तो अमने बलता अग्नि जेवां ला
गे छे ने पुष्पना हार ले तो सर्प जेवा लागे छे अने सारां सारां भोजन ते तो झेर जेवां लागे छे अने द्रव्यने तो अमे विष्टातुल्य
जाणिये छिये त्यारे कोई एम आशंका करे जे जो गमतुं न होय तो एनुं ग्रहण शुं करवा करता हसे॥ तो एनुं एम छे जे अ
मारुं प्रगटपणुं छे ते जिवोना कल्याणने अर्थे छे पण अमारा स्वार्थने अर्थे नथी अने अमारा स्वार्थने अर्थे जणाय तो तेनो वि
ष्टानी पेठे त्याग करि देईये अने कोई आसुरिजीव होय ने ते एम जाणे जे महाराजने कोईक जोतुं हशे एम जाणीने कोई कप
दार्थ लावेने अमने आपे तो ते अमने गमे नहि अने जे एम जाणे जे महाराजने तो कांई नथि जोईतुं पण मारा आत्माना कल्या
णने अर्थे महाराज कृपा करिने सेवा अंगिकार करे छे एम समजे तेनी सेवा गमे छे ते कृष्णावतारमां दुरजोधने लोकला

जे करिने श्रीकृष्णने जमवानुं नोतरुं आप्युं हतुं तो तेनो त्याग करिने भाविक एवा जे विदुरजी तेनी भाजि जम्या माटे दैवि जिव होय तेने तो ज भगवानना भक्तने संगे करिने मोक्ष थाय छे पण भगवानना भक्तना संग विना जियनुं कल्याण थाय नहिं॥ अने भगवानना भक्तने विषे जे जे जिवने हेत होय ते सर्वे जीवनुं कल्याण थाय छे केम जे भगवानना भक्त साथे जेने हेत होय तो तेने भगवान साथे हेत करावे छे जेम आ वजेराम मेहेताने विषे जोकरवान पटेलने हेत हतुं तो ते वजेरामे करवान पटेलने अमारे विषे हेत कराव्युं अने तेनुं कल्याण थयुं माटे भगवानना भक्तने विषे जिवने हेत थाय एज कल्याणनुं मुख्य साधन छे अने जेने भगवानना भक्तमा हेत न होय तेनुं कल्याण कोई काले थाय नहिं॥ ॥इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्त॥

॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥

॥संवत् १९ ओगणिशे १८ अढारना फागण वदि ९ नवमिने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री लोयेणी मध्ये पटेल नथुने घेर रात्रि पाछलि घडि चार हती तेसमे जागिने दातण करिने स्नान करिने शरिरमां गरमि जेवुं हतुं ते टाढक्य करवा सारुं साकर हद्दुं ने भात जम्या पछे उगमणे बारणे ओरडानी ओसरिमां ढोलियो बिछाविने ते उपर बिराजमान थया ने स्वेत खेस पहेरीने धोळुं अंगरखुं धारण कर्युं हतुं अने गुलाबि रंगनो फेंटो मुस्तके बांध्यो हतो अने स्वेत चादर ओढि हति अने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति पछे महाराज बोल्या जे आज तो भिम भक्तने एक प्रश्न पुछीयेछियेजे परम विवेकनुं शुं रूप छे तेने शास्त्र प्रमाणे कहो पछे भिम भक्ते कह्युं जे त्रण प्रकारनो विवेक छे ते मां एक तो विवेक एजे वरणाश्रमने विषे अविरुद्धपणे निरबाध वर्तवुं तेनुं नाम विवेक छे अने बिजो विवेक एजे सत्शास्त्र प्रमाणे भागवत धर्मप्रमाणे वर्तवुं अने पोताना आत्मानी स्काईं सरल स्वभावे करि होय तो पण तेने विषे तत्पर रहेवुं पण तेमां तृप्ति पामवि नहि॥ ने नित्य नवि श्रद्धा राखवि के मके तेतो हजि सर्वे साधन छे एम समजवुं तेनुं नाम बिजो विवेक छे अने त्रिजो विवेक जे प्रत्यक्ष भगवानने ओळखिने तेनो आसरो करवो ने तेना वचन प्रमाणे वर्तवुं अने ते विगर भगवान जेम कहे

तेमम नक्रम वचने करवुं पणते मां कोई रिते लेश मात्र संषय थाय नहि ॥ केमजे सत्य संकल्पने जिवनापरमहेतुने आ
त्यंतिक मोक्षना दाता तो प्रत्यक्ष भगवान छे माटे तेना वचनमां मन प्राणनि आरोप करवो अने पोताना मनमतानेमु-
कि देवो एविरिते समजवुं तेनुं नाम परम विवेक छे पछे महाराज बोल्या जे एपण उत्तर खरो ने हवे एनो उत्तर एमे कारिये
छिये जे परम विवेक तेतो भगवानना दिव्य भाव ने मनुष्य भाव तेने जेम छे तेम निरबाधपणे अभिरुद्रयमार्थ जाण
वो अने कोई दहाडे भगवाननां मनुष्य चरित्र जोईने लेशमात्र संषय थाय नहिं ते परम विवेकनुं रूप छे पछे वलि महारा
जे बिजुं प्रश्न पुछ्युं जे भगवान शब्दनो शो अर्थ छे पछे तेनो उत्तर पोते जकह्यो जे षड्भग जेने विषे होय तेने भगवानकहि
ये ते षडु भग ते शुं तो त्यां श्लोक छे ॥ जे उत्पतिं विनासंच लोकानामांगतिगतः वेत्तिविद्यामविद्यांचसवाच्यो भगवा-
नइति ॥१॥ एमां एम कह्युं छे जे जक्तनि उत्पत्ति जेम थई छे तेम यथार्थ जाणे तथा नित्य निमित प्राकृत ने आत्यंति-
क एचार प्रकारना प्रलयने पण यथार्थ जाणे तथा गतिने ने अगतिने पण यथार्थ जाणे तथा विद्याने ने अविद्याने पण
जेम छे तेम जाणे ए छवानां ने यथार्थ जेम छे तेम प्रत्यक्ष जाणे ने कहि देखाडे तेने भगवान कहिये अने ए छ वानां
यथार्थ जाणवाने ने कहेवाने पण भगवान ज समर्थ छे ॥ ॥ इतिश्री मुख सिद्धांत समाप्तः ॥ ॥
श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः ॥ ॥ संवृत १९ ओगणिशें १८ अढारना फागण वदि ९ दशमिने दिवस महारा-
ज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री लारवेणि मध्ये फुला भक्तने घेर जमवा पधार्या हता ने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण क
र्यां हतां अने पुष्पना हार तथा बाजु गजरा तोरा ने गुछ धारण कर्या हता ने धर्मशाला मां कुई उपर ढोलियो बिछा-
विने ते उपर विराजमान थया हता अने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हता ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु
तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति पछे महाराजनी संध्या आरती थया पछी महाराज बोल्या जे आ सं
सार छे ते धूळ जेवो छे अने भगवान छे ते तो चिंतामणि रूप छे अने जेम धूळ मांथि धान्य निपजे छे तेम संसार मांथि

मुमुक्षु जिव थाय छे अने ते मुमुक्षु होय तेने तेने चिंतामणि रूप एवा जे अरिहंत परमात्मा ते प्रत्यक्ष मले तो ते मुक्त थाय छे।
केमके संसारनदी यतो आ धर्मानंद स्वामि तथा अक्षर मुक्तानंद स्वामि जे वा महामुक्त ज्यां थी थाय।। अने जेम धुळ मां
मांथी धान्य थाय छे तेम धान्य घणुंक आपे त्यारे एक रुपैयो आवे अने घणाक रुपैया आपे त्यारे एक सोनामोर आवे।।
अने घणीक सोनामोरो आपे त्यारे एक मोति आवे अने घणांक मोति आपे तो पण एक पारसमणि मळवी घणी कठ-
ण छे अने घणिक पारसमणियो आपिये तो पण एक चिंतामणि मले नहिं।। ए तो दृष्टांत ने एनु सिद्धांत तो ए छे जे आ-
आलोकनां पंच विषयनां सुख छे ते धुळने ठेकाणे छे अने देवलोकनां सुख ते दाणा तथा रुपैया ने ठेकाणे छे अने
ब्रह्मादिकनां सुख सोनामोहोरने ठेकाणे छे ने वैराटनां सुख मोतिने ठेकाणे छे ने अक्षर रूप जे केवलि तेनुं सु-
ख पारसमणि ने ठेकाणे छे ।। अने भगवान पुरुषोतमनुं सुख छे ते तो चिंतामणि तुल्य छे एवी रीते प्रमाण करिने ज-
क्त छे ।। आ देहने प्रकृति पुरुष छे अने ते तेनी वासनानो त्याग करिने तेथी पर एवुं जे अक्षर ब्रह्म तेने पोतानुं स्वरूप जाणीने
ते वा ज्ञानना आपनारा एवा जे अरिहंत परमात्मा भगवान तेनुं अखंड ध्यान करवुं ते कह्युं छे जे ॐ नमो अरिहंताणं ॐ-
नमो सिधाणं ॐ नमो आरियाणं एमां एम कह्युं छे जे ॐ कहेतां परमात्मा अने अरि कहेतां जिवना अंतरना शत्रु जे काम
लोभ स्वाद स्नेह मान तेना नाश ना करनारा एवा जे अरिहंत भगवान तेने नमस्कार करवो अने जेना अरि जे शत्रु ते नाश पा-
म्या होय एवा जे सिद्ध पुरुष जे केवलि तेने नमस्कार करवो अने आलोकने विषे अथवा परलोकने विषे जे जे केवलि
होय ते सर्वेने नमस्कार करवो अने एवा जे महात्मा पुरुष तेनो सत्संग करवो तो ते थकि जिव जे ते केवलपद ने पा-
मे छे हवे ते केवलपद ने सत्पुरुष के विरिते पमाडे छे तो जीव पंच विषयनी वासनारूपी महाकर्म अनादिनुं वलग्युं छे
ने ते थकि जीव जे ते जन्ममृत्यु रूपि कष्टने पाम्या करे छे ते कष्टने टालवा सारु भगवाने जिवने इंद्रियो अंतःकरण ते
जि आप्यां छे ते इंद्रियो अंतःकरणे करीने भगवानना स्वरूपने जाणे तो ते जिव मुक्त थाय ने महासुखने पामे जेम

मनुष्य घर करे छे ते थकि उनाला ना ताप नुं दुःख टले छे ने चोमासाना वरसाद ना दुःखने टाले छे ने शियालाना टा
ढनुं दुःख टाले छे ने सुखने पामे छे ते मदेहरुपि घर छे तेणे करिने त्रिविधीना तापरुपी जे दुःख ते इंद्रियो अंतःकरणे
भगवान सन्मुख चलावे तो टलि जाय अने जो भगवानने मारग बंध करिने देहमां आसक्त थाय तो ते जिव महा दुः
ने पामे जेम घर बांधिने तेनुं बारणुं बंध करे तो तेने दुःख टले नहिं॥ तेम जिव जे ते देहरुपि घरमां रहिने स्त्रियादिक-
ना शब्द शाभले छे ते पापे करिने श्रवण इंद्रिनुं बारणुं भगवान नी कोरे बंध थई जाय छे अने नेत्रे करिने स्त्रियादिक
नां भुडां भुडां रुप जुवे छे ते पापे करिने भगवान निरखवा रुपि बारणुं बंध थई जाय छे अने त्वचाये करिने स्त्रियादिकना
भुडा भुडा स्पर्श करे छे, ते पापे करिने भगवानना चरणनो स्पर्श करवा रुप बारणुं बंध थई जाय छे अने दारु माटि गांजा
दिक भुडा भुडा अस्त भरस जमे छे ते पापे करिने भगवानना गुण चरित्र गावानी कोरनुं बारणुं बंध थई जाय छे एवि रितअ
धर्मने मार्गे चाले वे करिने इंद्रियो अंतःकरणादिक चोविस तत्वरुपि बारणां भगवाननी कोरे बंध थई गयां छे पछे ते-
जिवने सतपुरुषनो संबंध थाय तो तेने प्रथम सत्पुरुष जे ते निमरुपि तपे करिने इंद्रियोरुप बारणामां थी पाप रुपिक-
चरा ने कढाविनखावे छे अने ज्ञान रुपि दयाये करिने अंतःकरण रुप बारणामां थी पापरुपी कादवने कढावीनखावे छे
अने वैराग रुपि सीले करिने कारण रुपि बारणा मांथी पापरुपि कादवने कढाविनखावे छे त्यारे एजिव सुद्ध थाय
छे ने भगवानने भजवानो अधिकारी थाय छे पछे एवा ज्ञाननाआपनाराएवा जे अरिहंत परमात्मा भगवान तेनुं भ
वे करिने ध्यान करवुं तुवे ते ध्यान करवानी रीत कहे छे जे प्रथम कह्युं ते विते सद्गुरुने शरणे जईने तेथकि तपदयासि
लने भावते ने सिद्ध करिने पछे एकांत जगा होय त्यां जईने पृथ्वि उपर धाबलिनुं आसन नाखिने ते उपर बेसिने स्थि
रायमान थईने ध्यानमां बेसवुं अने ध्यानमां बेसिने प्रथम तो चोविसतत्वनी जे व्रतियो छे तेने पिंड ब्रह्मांडादिक सर्वे
पदार्थमां थी पाछि वालिने ते सर्वे नो पोते द्रष्टारुप थईने ते व्रतियोने आत्माने विषे लय करीने ते गुरुरुप अरिहंत

नुंध्यान करेछे ते केवलपदने पामे छे अने तेने सातमिनेनो सिद्धांत कहेछे माटे आजपण जेने केवलपदने पामवुं हो
य तेने एगमरिते सत्संगमां रहेवा थकि पमाडियेछिये॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥
॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥ संवत् १९ ओगणिशो १८ अढारना फागण वदि ११
एकादशिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सरधे मध्ये पटेल कालागिगाने घेर उतरादा बारना ओर
डानी ओसरिमां सांजने समे गादि तकिया बिछाविने विराजमान थया हता ने सर्वे सोने रिवस्त्र धारण कर्या हता अने
कंठने विषे घणाक पुष्पना हार धारण कस्या हता ने पाघने विषे तोराने कान उपर गुच्छ ज्ञो भिरह्या हता ने कंकुनो चांदलो
कस्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराई ने बेठि हति पछे गाम थलेना
विप्र लक्ष्मिरामे महाराजने प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज तमारा स्वरूपमां तो संशय नथि तो पण तमने मुकिने वेहेवारमां
वृत्तियो जाय छे ते शुं कारण हशे अने ते संसार वेहेवारमांथी वृत्तियो उखडिने तमारि सेवामां अखंड रहे ते नो उपा
य छे ते कृपा करिने कहो पछे महाराज बोल्या जेम आ यावुं रूप ज एवुं छे ते सत्पुरुषनो समागम मुकीने व्यवहारमां जोड
य छे तो ते मां जिवनी वृत्तियो जरूर चोटि जाय जेम जे दारू पिये तो ते ज्ञानि होय के अज्ञानी होय ते बेय गांडा थाय छे॥
तेमजे वेहेवार रूपि माया मां वसे तो तेमां चोट्या विना रहे ज नहि माटे वेहेवारना संगनो सर्वे प्रकारे त्याग करिने निरव
सनिक एवा जे भगवानना एकांतिक साधु तेना संगमां अखंड रहेवुं अने जे विदेहने देहना संबंधिमां जिवने आत्म
बुद्धि छे ने दृढप्रिति छे ते वि भगवानने भगवानना साधुने विषे आत्मबुद्धि ने दृढप्रिति करवि अने एवि रिते करते तो
तेने थोडाक कालमां जगतनि वासना टलि जाय छे अने तेज भगवाननी अखंड सेवानो अधिकारी छे अने मुक्त मुमुक्षु
विषयी ने पामर ए च्यार प्रकारना जिव होय ने तेने भगवानना एकांतिक साधुमां दृढप्रिति थाय तो ते निरवासनिक थ
ईने महामुक्त थाय अने मुक्त मुमुक्षु होय ने ते प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतमां प्रीति न थाय तो ते आत्यंतिक मोक्षने

नपामेअनेविषयीनेपामरजिवहोयतोपणजोतेनेभगवाननेभगवाननासंतनेविषेदृढप्रितिथायतोतेमहामुक्तथायछे॥
नेआत्यंतिकमोक्षनेपामेछेमाटेतेमेंपणसर्वेउपाधिनोत्यागकरिनेधर्मानंदस्वामितथाअक्षरमुक्तानंदस्वामि
नामंडळमांरहोतोकोईयातनीकसररहेशेनहिं॥एतमाराप्रश्ननोउत्तरछेपछेलक्ष्मीरामेकह्युंजेहेमहाराज
मारेपणएमजकरवुंछेअनेस्वामिपंथमांथीमारुंमनउदासथयुंछेमाटेकृपाकरिनेतमारिसेवामांमुनेअखंडरा-
खोएजविनतीकरुंछुं॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोन-
मः॥ ॥संवत्१९ओगणीसे१८अढारनाफागणवदि१२द्वादशिनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगा-
मश्रीसरधेमध्येपटेलवस्तादेवजिनेघेरउत्तरादेबारओरडानिओसरिमांगादितकियेजुक्तढोलियाउपरविराजमानथ-
याहताअनेसर्वेजरियानीवस्त्रतथापुष्पनाघणाकहारधारणकऱ्याहताअनेकंकुनोचांदलोकऱ्योहतोनेपोता-
नामुखारविंदनीआगळसाधुतथाघणाकहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठिहतीपछेमहाराजबोल्याजेआजतोभवानी
शंकरनेप्रश्नपुछीयेछियेजेनिरबिजसांख्यनेनिरबिजयोगसबिजसांख्यनेसबिजयोगतेनांशांलक्षणछेतेकहोपछे
भवानीशंकरभाईबोल्याजेचोविसतत्वनारूपयथार्थजाणिनेतेथकिनोखोनेअखंडनेअविनासीएवोजेपोतानोआ-
त्मातेनास्वरूपनेसाक्षात्कारजाणवुंतेनिरबिजसांख्यकहेवायअनेएवोजेआत्मातेनेअक्षरब्रह्मसाथेअभेदपणे
समजिनेतेअक्षररूपएवुंपोतानुंस्वरूपमानीनेतेनुंनीरंतरमननकरवुंनेतेपोतानाआत्मानोसाक्षात्कारथायतेनेनि-
रबिजयोगकहिये अनेएअक्षरथकिपरनेअक्षरनाआधारनेसर्वेनाकारणनेकर्तुमकर्तुनेमन्यथाकर्तुंएवाजेपरमा-
त्माभगवानतेनुंस्वरूपजेमछेतेमजाणवुंतेनेसबिजसांख्यकहियेअनेसबिजयोगएनेकहियेकेएवाजेपरमा-
त्मातेनाअनंतऐश्वर्यनेअनंतदिव्यगुणएविरितेभगवाननोअपरमितअलौकीकमहिमाजाणीनेअक्षरब्रह्मएवुं
जेपोतानुंस्वरूपतेनेविषेध्यानेकरिनेनीरविकल्पस्थितिपामवितेनेसबिजयोगकहियेपछेवलिमहाराजबो-

त्याएउत्तरखरोपणहवेतमेअमनेप्रश्नपुछोपछेभवानीदासकरभाईयेप्रश्नपुछ्युजेआत्यंतिकमोक्षकेमथायतेकहो॥
पछेमहाराजबोल्याजेतमेकह्याजेनिरबिजसांख्ययोगनेसबिजसांख्ययोगतेनेयथार्थजेमछेतेमप्रत्यक्षएवाजे
परमात्माभगवानतेथकिसिद्धकरवाअनेतेमांकोईरितनोअंतरायनरहेअनेजाग्रतस्वप्ननेसिखोपतीएत्रणेअव
स्थानेविषेसाक्षात्कारपरमात्मानुंस्वरूपदेखायाकरेतेनेआत्यंतिकमोक्षकहिये॥ ॥इतिश्रीमुख
सिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्१९ओगणिशेअढारना
फागणवदि१३तेरशनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीरतनपुरमध्येत्रवाडिरूपजिनेघेरदक्षणादेबा
रओरडानीओसरिमांढोलियाउपरविराजमानथयाहताअनेसर्वेसोनेरिवस्त्रधारणकर्यांहतांअनेपुष्पनाहारते
रानेगुछधारणकर्याहतानेकंकुनोचांदलोकर्योहतोनेपोतानामुखारविंदनीआगलसाधुतथाघणाकहरिभक्त
नीसभाभराईनेबेठिहतीपछेमहाराजसर्वेसभाप्रत्येबोल्याजेपरमार्थतेकेनेकहियेअनेस्वार्थतेकेनेकहियेएप्रश्नस
र्वेनेपुछीयेछियेपछेतेनोउत्तरपोतेजेकर्योजेपरमार्थतेशुंछेतोपोतानाआत्मानामोक्षनेअर्थेजेजेनिष्कामभावे
दानपुन्यसेवास्मरणतपतिर्थव्रतकरवांतथासत्पुरुषनोसमागमकरवोतथाभगवाननीनवधाभक्तिकरवीएसर्वे
परमार्थछेअनेदेहनेसारुजेजेकरवुंतेसर्वेस्वार्थछेत्यारेकोईएमआशंकाकरेजेपोतानाआत्मानुंसारुंकरेतेमां
तेशुंपरमार्थछेतोएनुंएमछेजेजेपोतानाआत्मानुंसारुंकरेछेतेतोआखाविश्वनुंसारुंकरेछेकेमकेजेपोतानाआ-
त्मानेरूडुकरिनेभगवाननेसाक्षात्कारपाम्योएवोजेमुक्ततेनिसेवायेकरिनेतथाएवामुक्तनेदर्शनेकरिनेतथा
समागमेकरिनेअनंतजिवोनुंसारुंथायछेकेमकेपूर्वेपणप्रल्हादनारदअमरिखआदिकघणाकभगवाननाभक्तते
णेपोतानाआत्मानुंरूडुंकर्युंतोतेनेसमागमेकरिनेपणघणाकजिवोनुंसारुंथयुंछेअनेआजपणतेनांवचनसांभलि
नेकेटलाकजियमोक्षनेमार्गेचालेछेमाटेमोक्षनेअर्थेनिष्कामभावराखिनेसत्पुरुषनोआश्रयकरिनेतेथकि

आत्मा परमात्मानुं स्वरूप एवुं जे आत्यंतिक ज्ञान तेने सिद्ध करवुं ने तेने विषे दृढ स्थिति पामवुं तेनुं नाम परमार्थ छे अने एवुं
ज्ञान सिद्ध करिने पछि बिजा जिवोने ए ज्ञान सिद्ध कराववुं तेनुं नाम परमपरमार्थ छे अने देहने पोतानुं रूप मानी-
ने जे जे दानपुण्य तप तिर्थ व्रतादिक करयां ते सरवे स्वार्थ छे माटे स्वार्थियो तो सर्वे संसार छे अने स्वार्थिया संसारमांथि
परमार्थि थाय छे जेम धूळ मांथि धान्य निपजे छे तेम संसारमांथि मुक्त थाय छे अने जे स्वार्थियो होय तेनुं कल्याण कोई का-
ले थाय नहि अने तेने आस्करि संप्रदायना जिव जाणवा अने अमे तो अनादि परम परमार्थि छिये अने परम परमार्थने अर्थे
अमारुं शरिर अर्पण करि राख्युं छे अने आ धर्मानंद स्वामि पण परमार्थ सिध करिने परम परमार्थने अर्थे सावधान थईने
मंड्या छे अने अक्षरमुक्तानंद स्वामि पण परमार्थ रूप तो थया छे पण परम परमार्थमां कसर राखे छे माटे एने एटलि खोट
छे ते एवी खोट राखवि घटे नहि केमके परम परमार्थ करवो एज अमारि खरेखरि सेवा छे अने जे परम परमार्थ करे तो थाय एम छे
पछे अक्षरमुक्तानंद स्वामिये कह्युं जे हे महाराज एटलि हुं मां खोट छे ते हवे जेम महाराजनि मरजि होय तेम करवुं छे
पछे महाराज बोल्या जे परम परमार्थ करवो एज आ पण्युं काम छे पण ए काम बिजा कोईथी थाय एम नथि॥ ॥
इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत १९ ओगणिसें
१९ अढारना चैत्र शुदि १ पडवाने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री रतनपुर मध्ये त्रवाडि भवानीशंकर कुबेर
जीने घेर उगमणे बारे ओरडा नि ओसरि मांहो लिया उपर गादि तकिया नखावि ने विराजमान थया हता अने सर्वे जरियानी
वस्त्र धारण करयां हतां अने सर्वे अंगने विषे पुष्पनां आभूषण सोभि रह्यां हतां अने ललाटने विषे केसरनी अरचा ने कंकुनो
चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणा कह्री भक्तनी सभा भराईने बेठि हति पछे मह-
राज बोल्या जे अविवेकी मनुष्य छे ते सुख पामवाना उपाय करे छे पण ते मांथि उलटुं दुःख थाय छे ते केवि रिते सुखना उ-
पाय करे छे तो देहने पोतानुं रूप मानिने इंद्रियोने प्रिय लागे एवा जे पंच विषय तेने भोगविने सुख माने छे तो पण ते विष-

य भोगे करिने त्रप्ति थतिनथि अने वलि एवि षयनुं सुख छे ते आत्माने अपार सुख जे ब्रह्म सुख तेने नास करनारुं छे ॥
जेम सोमलखार ना खीने साकरना लाडवा कर्या होय ते लाडवा खातां तो गल्या लागे पण जे खाय तेना प्राण जाय
तेम मार्इक पंचविषयनां सुख भोगवतां वखते तो सारा जेवुं लागे छे पण तेनी केडे जन्म मृत्यु गर्भवास चौरासि ने
यमपुरिनां अपार दुःख भोगववां पडे छे ने ते अविवेकि जिवमहा हेरान थाय छे अने जे विवेकि छे ते मार्इक पंचविष-
यना सुखनी ईछा नथि अने अविनासी एवुं जे भगवानना धाम संबंधी सुख तेनुं जतन करे छे तो तेने दुःख मात्र टलि-
जाय छे ने अपार सुखने पामे छे माटे जेने अविनासि सुख पामवुं होय तेने तो अविवेक ने असत्पुरुषनो संग तेनो त्या
ग करवो अने सत्पुरुष एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तथा पंचविषयना त्यागि एवा जे निरवासनीक प्रगट भगवानना साधु तेनो
समागम करवो अने ते पासे थि ज्ञान पामि ने इंद्रियोने पंच विषय थकि पाछां वालि ने अंतःकरणने वस करवुं अने देहने
देहनां जे संबंधि तेमा थि प्रिति ने टालि ने ते देह थकि नोखो एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप जाणीने पोते सुख रूप थ
ईने मार्इक एवां जे जक्तनां पंचविषयनां मिथ्या सुख तेनी वासनानो त्याग करि ने निरवासनीक थवुं अने पछे जेणे करि
ने भगवान प्रसन्न थाय एवा जे सिल संतोष दया क्षमा श्रधा सत्य ब्रह्मचर्य साधिक जे सुभ गुण तेनुं ग्रहण करवुं तथा तप जे शास्त्र
विहित भोगनो संकोच तथा व्रत जे एकादशि रामनवमि जन्माष्टमि जन्मचतुरदशी आदिक उपवास आस्तिक भाव
राखिने आत्माना मोक्षने अर्थे निष्काम भावे करवा जेम खेडु परमेश्वरनो विश्वास राखि ने खेतरमां अन्न वावी आवे
छे तो ते एक दाणामां थि सहस्र दाणा थाय छे तेम भगवाननो द्रढ विश्वास राखि ने पोताना जिवना कल्याणने अर्थे जे जे जप
तप व्रत दान पुन्यादि कदेहने कष्ट देईने करे छे तेने अपार एवुं जे अविनासि सुख तेमा प्रथाय छे ते उपर एक साखि छे
जे घरबाले घर उगरे ॥ घर राखे घर जाय ॥ एक अचंबो मैं सुण्यो ॥ मडा कालकुं खाय ॥ १ ॥ एमां एम कह्युं छे जे देहरूपि
घर छे तेने तपने ज्ञानरूपि अग्नियें करिने बाले छे तेने आत्मा रूपी घर उगरे छे ने ते अभयपदने पामे अने देहरूपी घरने जो

प्रितियेकरिनेराखे छे नेइंद्रियोनेखुसिपडे एमचाले छे तेनेआत्मानामोक्षरूपिघरजाय छे कहे तां तेआत्मा क्यांईगरि
नेबेसतोनथिअनेमडारूपकहेतांवासनायेरहितआत्मारूपथया छे ते तोकालनापणकालछेमाटेअविवेकअनाचर
णनेअसतपुरुषतेनो त्यागकरिनेस्र विवेकसदाचरण राखीने सतपुरुषनो संगकरिनेपरमेश्वरनुं भजनकरे छे तेमहा
सुखनेपामे छे॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥

संवत१९ओगणिसें १९ अढारनाचैत्र शुदि२ बिजने दिवसमाहाराज श्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीरत्नपुरमध्ये त्रवाडि भु-
यानिसंकरकुबेरजिनेघेरउगमणेबारओरडानीओसरिमांगादितकियाबिछावीनेढोलियाउपरविराजमानथयाहतांअने
सर्वेजरियानीवस्त्रधारणकर्याहतां नेपुष्पनांआभूषणसर्वेअंगमांसोभिरह्यांहतांअनेलल्लाटने विषे केसरचंदननी
आड्यकरिनेकंकुनो चांदलोकर्योहतोअनेपोतानामुखारविंदनीआगलसाधुतथाघणाकहरिभक्तनीसभाभराईनेबे-
ठिहतिपछे महाराजश्रीहरिकृष्णभगवानकृपाकरिनेपोतानाभक्तजनप्रत्येबोल्याजे॥कोवाहिबधोविषयानुंरागी को
वाहिमुक्तो विषयेविरक्तः॥एश्लोकमांएमकह्युं छे जे विषयनेविषेआसक्तिवालोजिवतेबध छे अनेविषयनेविषेजे
नेप्रितिनहितेमुक्त छे पणतेमांसर्वेनेएटलुंपुछीये छिये जेबधनेमुक्त बेयविषयनेतोइंद्रियोद्वारे सररवा भोगवे छे
केमके बधहोयते कानेकरिनेशब्दसांभले छे तेमजमुक्त होय तेपणकानेकरिनेशब्दसांभले छे एविरिते आंखे रूप-
त्वचाये स्पर्शरसनायेरस नासिकायेगंध ते बधनेमुक्तबेय सररवाग्रहणकरे छे पणतेमां कांई भेद छे के नथि तेकहो॥
पछे तेनोउत्तरपोतेजकर्योजेबधनेमुक्त बेयइंद्रियोद्वारे विषयनेतो भोगवे छे पण तेमां भेद घणो छे केमकेजे बध छे ते
अविवेकेकरिनेविषयनेभोगवे छे अनेजेमुक्त छे ते विवेकवडेकरिने विषयने भोगवे छे केमके मुक्तहोय तेनेपणदेहनि
रवाहसारुं विषयभोगव्याविना देहरहेजनहिं माटेबधनेअज्ञानिजिव छे तेजेते कानेकरिने वेश्यायोनां तथाभवायानां
शब्दसांभलवामां आसक्तथाय छे तेणे करिने आत्माने विषे पापकादव भराय छे अनेत्वचायेकरिने स्त्रियादिकनास

र्वआसक्त थाय छे तेणे करिने आत्माने विषे पापका उदय भराय छे एवि रिते अज्ञानि ने बध जिव जे ते दस इंद्रियो चार अंतः
करण ते ने विषय ने विषे आसक्ति ये करिने आत्माने विषे पापका उदव भरे छे ते आत्मा शब्दे करिने आ ठेकाणे अंतःकरण
ने जाणवुं ते माईक असत्भ विषय ने भोगववे करिने अंतःकरण भ्रष्ट थई जाय छे अने अंतःकरण भ्रष्टे करिने भगवान नी अ
त्यंत विस्मृति थाय छे अने ते जिवनुं कल्याण थाय नहिं अने जे मुक्त ने ज्ञानि एवा जे भगवानना भक्त छे ते तो एम जाणे
छे जे भगवान ना स्वरूप विना बिजे मारां इंद्रियोनी व्रतियो जस्ये तो मारुं अंतःकरण भ्रष्ट थई जस्ये ने कल्याण ना मार्ग थकी
पडि जईस एम जाणिने काने करिने माईक स्त्रियादिकना शब्द नो त्याग करिने भगवाननी कथा वारता सांभळिने आनंद
पांमे छे अने त्वचाये करिने भगवाननो स्पर्श करिने आनंद पांमे छे अने नेत्रे करिने भगवानने भगवानना एकांतिक निरवा-
सनिक साधु तेनां भावे सहित दरशन करिने परम आनंदने पामे छे अने रसनाये करिने भगवाननी प्रसादि जमिने आनंद-
पामे छे एवी रिते भगवान सबंधी पंच विषयने भोगविने देह निरवाह करे छे पण पापिने असत पुरुषना संबंधने पामेला
एवा जे पंच विषय तेने नथि भोगवता अने कोईक जातिये करिने उत्तम होय ने ते विषय ने विषे आसक्त होय तो तेनुं एठुं
भगवानना भक्तोने खावुं नहिं केमके पापिनुं एठुं जमवे करिने अंतःकरण भ्रष्ट थई जाय छे ते सारुं अहार शुद्ध करवो॥
अने अहारनी शुद्धिये करिने अंतःकरण शुद्ध थाय छे अने अंतःकरणनी शुद्धिये करिने भगवाननी अखंड स्मृति रहे छे
अने तेने कल्याणना मार्गमां कोई विघ्न आवे नहिं॥ माटे शुद्ध अहार करवो अने जो कुसंगनो संग करिने विषयने भोगवे तो
ते गमे एवो मोटो कहेवातो होय तोपण ते विषयमां बंधाणा विना रहे ज नहिं॥ माटे कुसंगथी छेटे रहिने माईक विषयनो
त्याग करे ते ज मुक्त थाय छे अने अमे तो कुसंगमां जईये तो तेनुं कुसंग पण टळि जाय अने विषयमां रहिने निरलेप रहेवा
ने तो एक अमे समर्थ छुं अने अमारि जे सर्वे क्रिया छे ते भक्तजनना कल्याणने अर्थे छे अने अमने माईक पदार्थ मोह उप
जावे एम नथि अने अमे तो सदाय मायापर छिये अने आ जे जरियानी वस्त्र पहेरिये छिये ते केथाल्य करावीने जमीये छीये॥

तथागादितकियेबेसीयेछिये तेप्रण भगवानना भक्तने निरयासनिककरवा सारुंग्रहण करियेछीये पण अमारा सुख
सारुनथिग्रहणकरता अने अमारे तो सारांवस्त्र तथा फाटांतुटां चिथरां तथा भारे भारे पकवान तथा टाढा टुकडा तथा
गादितकियेबेसवुं तथा भोंयेसुइरहेवुं तथा भारे भारे हवेलियो तथातरणनीझुंपडि एसर्वे अमारे समवर्ते छे माटे अमने
कोईपदार्थ बंधनकरे एम नथि अने कोई अममरि क्रिया जोईने ते प्रमाणे करवा जस्रो ने ते मोटो मुक्त हस्रो तो पण ते भ्रष्ट
थयाविनारहे जनहि एसिद्धांतवारताछे तेसारु जेनेपोतानाआत्मानामोक्षनो खप होय तेने अमारि आज्ञा प्रमाणे व
रतवुं अनेजे आज्ञाप्रमाणे वरतस्रो अने तेजे वो तेवोजीव हस्रो तो पण तेने कोई पदार्थ बंधनकरवाने समर्थनथि अने ते
ने भगवाननि अखंड स्मृति रहेस्रो माटे भगवान ना भक्त होय तेने अधर्मि नासंगनो त्यागकरिने साचा साधुनो स
मागम करवो अने संतना समागम थकी अहंकार सुद्ध थाय छे अने अहंकारनी सुधिथकी जआत्मानो आत्यंतिक मो-
क्ष थाय छे॥ ॥ इतिश्री मुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥ श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥
संवत् १९ ओगणिस्रो १८ अढारना चैत्र शुदि चोथने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री रोईशालामध्ये आ
व्या भगवानजि लक्ष्मीरामने घेर सांजनेसमे उगमणे बारओरडानी आगळ फळिमांढोलियाउपर बिराजमान थया
हता अने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कस्यांहतां अने सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषण सोभि रह्यां हतां अने ललाटने विषे
कंकुनो चांदलोकस्योहतो अनेपोतानामुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईनेबेठि हति॥
पछे महाराजे साधुने प्रश्नपुछ्युं जे निष्कामव्रत केम द्रढ थाय ते कहो पछे धर्मानंदस्वामिये कह्युं के निष्कामी एवा जे-
साधु तेनो समागम ने तेनां आपेलां जे नियम तेने द्रढपणे पालवा तेणेकरिने निष्कामव्रत द्रढ थाय छे पछे महाराज बो
ल्या जे निष्कामव्रत द्रढ थवाना उपाय छे तेमां एक तो प्रत्यक्ष भगवाननि द्रढ उपासना करवी अने प्रत्यक्ष भग-
वाननी उपासनावाळा एवा जे साधु तेनो संग राखवो अने पोताना गुरुए जे जे नियम धराव्या होय तेने द्रढ करिने पाळवा

अनेस्त्रिना देहनो तथा पुरुषना देहनो वस्तु विचार करवो जे स्त्रि पुरुषनो देह छे ते विर्यने रुधिर थकि बन्यो छे अने हाड मां-
स नाडियो त्वचा रोम मलमुत्रनो भरेलो स्त्रि पुरुष बेनो देह छे माटे एवि नकारि वस्तु मांहं शुं मोह पामुं अने एवि वस्तु मां
तो अतिशे निच ने चंडाल होय ते मोह पामे ने ते मां सुख माने तथा स्वान ने सूकर होय ते मलमुत्र परुपाच मां लोभाय॥
पण मनुष्य ते मां लोभाय ज नहि ते मलमुत्र परुपाच रूप जे स्त्रि पुरुषनो देह ते मां भगवानना भक्त होय ते मोह पामे
नहिं॥ अने स्वान सूकर जेवा जे आसुरि जिव होय ते मोह पामे छे॥ एम द्रढ विचार करिने स्त्रि पुरुषना देहनी अरुचि
करवि अने आत्मा अनात्मानो द्रढ विवेक करवो कहेतां अनात्मा जे देह ते थकि आत्मा जे चेतन ते नोखो छे अने ते आ
त्मा पोतानुं स्वरूप छे पण देह पोतानुं स्वरूप नथि एम समजिने देहना सुखनो त्याग करवो अने आत्माने सुखे करिने
सुख मानवुं ते आत्मा केवो तो अखंड छे ब्रह्म छे सुखरूप छे पण जड एवो जे देह तथा जड एवा जे मायिक पदार्थ तेणे-
करिने आत्मा सुखियो थाय एवो नथि अने एतो भगवानने सुखे करिने महा सुखियो थाय एवो छे॥ एम द्रढ समजवुं
अने आसुरि एया जे कामि पुरुष तथा कामि स्त्रियो तेना संगनो सर्व प्रकारे त्याग करवो तथा कामने उपजावे एवां जे
शास्त्र तथा कामने उपजावे एवां किरतन तथा ते वि वारताओ तेनों पण सर्व प्रकारे त्याग करवो तथा कामने उपजावे ए
वा जे रस तेनो पण त्याग करवो एवी रीते आ कह्या जे छ उपाय तेने जे द्रढ करे तो ते द्रढ निष्कामि थाय छे अने तेमां बे प्रकार
छे ते एक वरण ने एक आश्रम तेना धर्म नोखा नोखा छे ते मां जे त्यागि थयो होय तेने तो अष्ट प्रकारे स्त्रिनो त्याग करवो
त्यां श्लोक छे श्रवणं किर्तनं केलि पेक्षणं गुह्य भाषणं संकल्पो ध्यवसायस्य क्रिया निवर्त्तिरेवच॥१॥ एतन्मैथुनमष्टांगं
प्रवदंति मनिषिणः विपरितं ब्रह्मचर्यमेतदेवाष्टलक्षणं॥२॥ एवि रिते आठ प्रकारे स्त्रिनो त्याग करे तेनुं नाम त्यागिनुं
ब्रह्मचर्य व्रत कहेवाय छे अने अंतरमां वासना छे जेने एवा जे ग्रहस्थाश्रमि स्त्रीयो पुरुष ते मने पण ब्रह्मचर्य कह्युं छे ते जे
सधवा स्त्रि होय तेने पोताना पति विना बिजा पुरुषमात्रने भाई बाप ने दिकरा जेवा जाणवा अने जेने स्त्रि होय एवा

जेपुरुष तेने पोतानी परणेलि स्त्रि होय ते स्त्रिअने ते विना बिजी स्त्रियो मात्रतेने माबेहेन नेदिकरि तुल्यजाणवीतो
ते ग्रहस्थनु ब्रह्मचर्यव्रत कह्युं छे अने तेनेज भगवाननो संबंधथाय छे त्यां सारिखछे ॥जे॥ परधनपथ्थर करिजाणे पर स्त्रि
मातसमान एता पाले हरिनमले तो तेना तुलसीदासजमान ॥१॥ माटेजेने भगवानने पामवुं होय तेनेएथिरि ते ब्रह्मच
र्यव्रतदृढराखवुं अनेजेविधवा स्त्रि होय तेने अष्ट प्रकारे पुरुषमात्रनो त्याग करवो अनेवलि जिवनी स्रधानापण त्रणभेदछे
उत्तममध्यमनेकनिष्ट तेमांजेने उत्तमश्रधा होय तेनेतो वासनाटालवा सारु स्त्रिना कामनुंप्रमाण करिने एककेबे पुत्रपु
त्रिथाय त्यारपछि स्त्रिनो त्यागकरिदेवो अनेजे मध्यम श्रधावाला होयतेने अरधिअवस्था थाय त्यारे स्त्रिनो त्यागजरुरक
रवो अनेकनिष्ट श्रधावाला होयतेने पण देहमुक्या मोर स्त्रिनो त्यागकरिनेनिरवासनीक थवुं माटे आवि समजणवालाजे
भगवानना भक्तग्रहस्थाश्रमि होयतेनेनीष्काम व्रतदृढथाय छे नेतेदेहने मुकिने अक्षरधामने पामे छे अनेजेने ब्रह्मचर्य व्रत
दृढ नहोय त्यांसुधि ते त्यागि कहेवातो होय अथवा ग्रहस्थ होय तथावैरागवानजणातो होय पंडित होय तपसि होय तोपण
तेनो आत्यंतिक मोक्षथायनहि ए सिद्धांतवारता छे ॥ ॥इति श्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥
श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत् १९ओगणिशेअढार ना चैत्रशुदि ८ पांचमने दिवसमहाराज श्रीह
रिकृष्ण भगवानगाम श्रीरोहीशालामधे ओझा भगवानजी लक्ष्मिरामने घेरउगमणा बार ओरडानी ओसरिमां गादि
तकियान खाधिने ढोलिया उपर विराजमान थयाहता अनेसर्वे जरियानी वस्त्र धारणकर्यांहतां अने पुष्पनां आभूक्षण सर्वे
अंगमां शोभिरह्या हतां नेकंकुनो चांदलो कर्योहतो नेपोताना मुखारविंदनी आगल साधुतथा घणा कहरिभक्तनीस
भाभराईनेबेठिहति पछे महाराजबोल्याजे एक अविनासि पुंन्य छे नेएक नासवंत पुंन्य छे अनेवलि एक अविनासि पा
प छे नेएक नासवंतपाप छे तेमां नासवंत पुंन्य तोकियु तो धर्मार्थकाम संबंधीजे जे सकामपुंन्य छे तेनासवंत पामेए
बु छे केमके सकाम पुंन्यनुं फल देहे करिने भोगवाय छे माटे ते देह नास थाय त्यारे तेदेह प्राप्तथयुंजे पुंन्यनुं फल ते ॥१२०॥

पण नाशपांमे छे ते कह्युं छे जे क्षीणे पुन्ये मृत्युलोके वसंति ए मां एम कह्युं छे जे सकाम पुंन्य करिने देवलोकमां जाय ॥
ने ते पुन्य खुटे त्यारे ते जिव पाछो चोरासिमां जन्ममृत्युने भोगवे छे माटे देह ने पोतानुं रूप मानीने जप तप व्रत यज्ञ दानादी
क जेजे पुन्य करे छे ते पुन्य सरवे नासवंत छे अने अवीनासि पुंन्य ते कियुं तो निष्काम भावे आत्मानामोक्षसारुं भगवा
ननी भक्तिये सहित जप तप व्रत दानादिक पुंन्य करिने निरवासनीक थाय अने धर्मार्थ कामरूप फलनो त्याग करि
ने आत्यंतिक ज्ञान पामिने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय करिने जे मोक्षने पाम्यो होय तेनुं
पुंन्य अविनासि छे ने ते पाछो कोई काले जन्ममृत्युने पामतो नथि ते गितामां कह्युं छे जे न तद् भासयते सूर्यो न श
शांको न पावकः यद्गत्वा न निवर्तंते तद्धाम परमं मम १ ॐ ए श्लोकमां श्रीकृष्ण भगवाने अर्जुनने कह्युं छे जे हे अ-
र्जुन मारि निष्काम भक्ति करिने जे मारा धामने पाम्या ते पाछा आवता नथि ते मारुं धाम केवुं छे तो जेने सूर्य चंद्र-
माने अग्नि प्रकाश करि शकतां नथी कहेता ते धाम स्वयं प्रकाश छे अने ते धामने पाम्यो जे मुक्त ते फेर जन्ममृ-
त्युने पामतो नथि माटे देह थि नोखो एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप जाणिने निष्काम भाव राखीने प्रत्यक्ष भग
वाननी भक्ति संबंधि जेजे पुंन्य करे छे ते अविनासी पुंन्य छे अने नासवंत पाप ते कियुं छे तो गौहत्या करि होय ब्रह्मह
त्या स्त्रिहत्या बालहत्या अने पांचमि धर्मवाला पुरूषनो नाश करे ए पांच महापाप कर्यां होय पण तेने जो प्रत्यक्ष-
भगवान के ते भगवानना एकांतिक संत तेनो संबंध थायने तेनो गुण ग्रहण करिने तेनी आज्ञा प्रमाणे वरते तो ते नां पं
च महापाप ते सर्वे नास पामि जाय छे अने जे नास न पामे ते कियुं पाप छे तो प्रत्यक्ष भगवानने प्रत्यक्ष भगवानना सा
धु तेनो द्रोह करे तेनुं एवुं पाप लागे छे जे आगल परोक्ष भगवाननी भक्ति करि होय जप तप कर्यां होय तथा व्रत
दानादिक करिने देवलोकमां जवानो होय ब्रह्मलोकमां जवानो होय अथवा प्रकृतिपुरुषना लोक सुधि जवानो
होय तो पण ते पुन्य सर्वे नास पामि जाय ने ते नर्क चोरासिमां जाय अने प्रत्यक्ष भगवानने तेना संतना द्रोहनुं एवुं

पाप लागे छे जे ते पाप कोई काले नाश पामे ज नहिं ते कह्युं छे जे अन्यक्षेत्रे कृतं पापं तिर्थक्षेत्रे विनस्यति ।। तिर्थक्षेत्रे-
कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति ।।१।। ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे बिजे ठेकाणे अनंत पाप कर्यां होय ने तेने तिर्थरूप ए
वा जे प्रत्यक्ष भगवान ने तेना भक्त नो जोग थाय तो तेना सर्वे पाप नाश पामे छे अने अनंत पुन्य करिने तथा ज-
पतप यज्ञादिक करिने भगवानना धाममां जाय एवुं पुन्य कर्युं होय पण तेने प्रत्यक्ष भगवानने ते भगवानना भक्त तेनो
अवगुण आवे तो तेनां सुकृत सर्वे नास पामि जाय छे ने तेनो नरकमां निवास थाय छे अने ते पाप वज्रलेप थाय छे कहे
तां कोई काले भगवाने ने भगवानना भक्तना द्रोहनुं पाप नाश पामतुं नथि केमके ते पापे करिने तो जिवनो नास थई
जाय छे अने ते पाप नास पामवानुं कारण जे तेणे बंधकर्युं जेम काने करिने संभलाय छे पण तेना देवता जाय तो सं
भलाय नहिं तेम जिवने भगवाननो आधार होय त्यां सुधि जिव जिवे छे अने जो भगवान पोतानी सत्ता ने हरि ले तो
ते जिवनो नास थई जाय छे ते बिजा कोई पापे करिने जिवनो नास थतो नथि अने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना भक्त
ना द्रोहे करिने जिवनो नास थाय छे ते के विरिते जिवनो नास थाय छे तो जेम देहमां सर्वे अवयवो होय पण तेना देव
ता जाय तो पछे ते अवयवो कांई ज उपयोगमां आवे नहिं तेम प्रत्यक्ष भगवानने तेना भक्तना द्रोहे करिने आत्मा
ने सुकृत थवानां उपकरण सर्वे नास पामि जाय छे अने ते जिव मायाने विषे सदाय लिन थई रहे छे माटे जेने पोता-
ना आत्मानुं रूडुं करवानी ईछा होय तेने तो प्रत्यक्ष भगवानने तेना भक्तनो कोई काले कोई रीते द्रोह करवो ज नहिं
केमके तेना द्रोहनुं पाप ते बिजा कोरि उपाय करे तो पण ते पाप नाश पामतुं नथि माटे ए पापथि अतिशे बिहिवुं ने द्रोह
न करवो ।। ।। इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्त ।। ।। श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ।। ।।

संवत १९ ओगणिशो ९८ अठाणनाचैत्रशुदि ६ छठने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोईशालामधे श्री
मा भगवानजि लक्ष्मिरामने घेर उगमणे बार ओरडानी आगल फ लिमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता अने सर्वे

जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखा-
विंदनी आगल मुनि मंडल तथा हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हती पछे गाम रतनपुरना भरवाड रामो तथा रजपुत
संघभाई तेणे महाराजने हाथ जोडिने कह्युं जे हे महाराज अमने तमारा शरण मां राखजो पछे महाराज बोल्या जे॥
अमे तो शरण मां राखवी तुं पण तमे शरण मां होय ता गुण शिखजो केम के जेना भेगु रहेवु होय तेने गमे एवा गुण शिखिये
त्यारे ते भेगुं रहेवाय जेम शाहुकार भेगुं रहेवुं होय त्यारे तेने गमे तेवा गुण शिख्या जोईये तो ते शाहुकार भेगुं रहेवाय
तेम अमने गमे एवा गुण शिखे त्यारे अमारे शरणे रहेवाय ते अमने केवा गुण गमे छे तो अमने धर्म गमे छे ते धर्म ते
शुं तो अमारी आज्ञा प्रमाणे वरतवुं तेनु नाम धर्म छे जेम राजानो कायदो होय ते प्रमाणे वरते ते एने गमे छे अने ते कायदाने
लोपे तेने राजा दंड आपे छे तेम भगवाननो कायदो वेद छे ते वेद प्रमाणे वरते ते अमने गमे छे अने जे वेदने लोपे ते ने अ-
मारा भेगु रहेवाय नहि ने ते अमने गमे पण नहि हवे ते वेदमां शुं कह्युं छे तो चार वरण ने चार आश्रमना जे मनुष्य तेने वर-
तवानी रीत कहि छे ते चार वरण किया तो ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य ने शुद्र ए चार वरण अने ब्रह्मचारि ग्रहस्थ वानपरस्थ ने
संन्यासि ए चार आश्रम ते पोतपोताना धर्म प्रमाणे वरते ते अमने गमे छे अने ते उत्तरति जातीनो होय के उत्तम जातिनो हो-
य ने राजा होय के रांक होय पण जे धर्ममां वरते ने ते अमारा भेगो रहे तो होय अथवा अमारी आज्ञाये करिने छेटे रहे तो
होय तो पण ते अमारे शरणे छे अने अमारी भेगो रहे तो होय ने जो तेने धर्म मां द्रढता न होय तो ते अमारे शरणे नथि माटे
तमे पण धर्ममां द्रढ रहेजो ते धर्म बे प्रकारनो छे एक त्यागिनो धर्म छे ने एक ग्रहस्थनो धर्म छे ते मां जे त्यागि छे ते ने तो
निष्कामिपणुं निर्लोभिपणुं निरस्वादिपणुं निस्नेहिपणुं ने नीरमानपणुं ए पांच व्रतमान ने द्रढपणे राखवां ते त्या-
गिनो धर्म कहेवाय अने ग्रहस्थाश्रमि होय तेने वेदनी साखे करिने परणीने स्त्रि राखे अने ते विना ना बिजी स्त्रि मात्र
तेने मा बेहेन दिकरि जेवी जाणवी अने स्त्रि होय तेने वेदनी साखे करिने पोताना मा बापे परणाव्यो जे पुरुष ते पति

अनेतेविनाबिजा पुरुष मात्रने भाईबापनेदीकराजेवाजाणवाअनेग्रहस्थनेदकमेदेनतेकरिने जे द्रव्यप्राप्तथाय तेणेक
रिने देह निरवाह करवो तथा तेणे करिनेदानपुण्य करवुं पण चोरिनकरवि थापणन ओलवबीलांचन लेवीकुडकप
टविश्वासघातनकरवो अनेरसनायेकरिनेदारूमादिगांजो भांगमफरमाजम अफिणादिक जेणे करिने बुद्धि भ्रष्टथ
ई जाय तेनेरवावुंनहिं अनेदेहनेदेहना संबंधीमां अतिशेप्रितिराखवीनहि केमकेदेहनेदेहनासंबंधि थकि आत्मानो
रवो छेने आत्मा अविनासि छे नेदेहनेदेहनासंबंधिनासवंत छे माटे नासवंत पदार्थ मांप्रितिनराखवि अनेवरणनुं
आश्रमनुं नातजातनुं द्रव्यनुं राज्यनुं कुलनुं जोबननुं विद्यानुं ईत्यादिक कोई जातनुं मानन राखवुं अनेए सर्वे थकि
पोताना आत्माने नोखो जाणि ने ए आत्माना आधार एवा जे परमात्मा भगवान तेने विषे दृढ प्रिति करवि एथि रितेस
मजिने जे अमारे शरणे आवे छे तेने अमे अखंड चरणोमां राखिये छैये अनेए विरिते समजिने निरवासनीक थईनेब्र
ह्मरुपथाय तेज अमारा अक्षरधामने पामे छे पणतेविना अक्षर धामनेपामेनहि ॥ ॥ इतिश्री मुखसि
द्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः॥ ॥संवत १९ओगणिशो १९अढार-
ना चैत्रशुदि ७ सातेमने दिवसमहाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री सापुरमध्ये पटेल सवजि घाघाणी नेघेर गामन
घागामना संघवि राघवजियेमाहाराजनेरसोई आपिहति तेमहाराज थालजमिनेसंजनेसमे फलिमासभाक-
रिने होलियाउपर विराजमान थयाहता अनेसर्वेजरियानीवस्त्र धारणकर्यां हता अनेपुष्पनां आभूषण सर्वे अं
गमां शोभि रह्यां हता अनेपोतानामुखार्विंदनि आगल साधुनुमंडल तथा घणाक हरि भक्तनि सभा भराईनेबेठि
हति पछे गाम भादरनाजो शीपुरुषोतमभाईये प्रश्नपुछ्युं जे हे महाराज केटलाक एमकहे छे जे रामचंद्रजिये सक
र कर्यो हतो ते क्षत्रिनेपण सीकार करवो एमकहे छे ते नुं केमछे पछे महाराज बोल्या जे जे भगवाननी क्रिया जोईनेते
प्रमाणे करवानुं बिजा जिवने जे कहे छे तेने तो महापापी जाणवा अने भगवानना बादलेई नेजेतेप्रमाणे करे छे तेना

आत्मानुं अतिशे भुंडुं थाय छे ।। अने ए तो आ जक्त मां छ प्रकारना गुरु छे ते मां पांच प्रकारना असत गुरु छे अने एक
प्रकारना सत् गुरु छे ते मां जे असतगुरु छे ते असत मार्गना प्रवर्तावनारा छे अने अने ते असतगुरुनी कोई नात
जात वरण आश्रम नथि ए तो त्यागि मां पण असत गुरु होय ने ग्रहस्थ मां पण होय अने ते असत्यगुरु मां ढोंगि होय
ने कपटि होय ते उपरथी तो नाहावा धोवा तिलक माला ठाकोरजिनी पुजा यो करथि तथा शास्त्र ना पाठ करे अने
उपरथि भक्ति नो आडंबर करिने जक्त ना भोला लोकने धूते छे अने ते पांच प्रकारना असतगुरु कीया तो एक
कामि बिजो लोभि त्रीजो स्वादि चोथो स्नेहि ने पांचमो मानी ते मां जे कामी गुरु छे ते स्त्रियो ना काम भोगवे छे ।।
अने जे लोभि गुरु छे ते धन्य धुते छे अने जे स्वादिया गुरु छे ते नाना प्रकारना रस भोगवे छे अने जेने देह ने विषे
स्नेह होय ते देहनी चाकरि करावे छे अने जे मानी गुण होय ते ढोंग करिने पोतानि कीर्त्ति वधारे छे तथा मोटम्य ज
णावे छे ।। हवे कामी गुरु छे ते केवि रिते काम भोगवे छे तो जेने सत् शास्त्रनुं ज्ञान न होय एवा जे भोला ने पामर लोक तेने
भक्ति नो भाव जणावीने तेने एम कहे जे तमे भगवानने जाणो छो त्यारे भोला लोक कहे जे अमे तो भगवानने
नथि जाणतां मारे ते कृपा करिने जणावो त्यारे ते ढोंगि गुरु कहे जे ए वात एकांतमां कहेवाय मारे राते आवजो
पछे ते राते पोते ढोंग करि दुगंमर थईने बेठो होय त्यां भोला मनुष्य होय ते आवे ने तेने पगे लागिने कहे जे महा
राज मुने भगवाननां दरशन करावो पछे ते असत गुरु कहे जे सांभलो भाई आ घटपटमां बोले छे ते ज भगवान छे
पण बिजो कोई नथि अने वर्ण आश्रम नात जात कांई नथि सर्वमां भगवान सभर भर्या छे अने पाप पुन्य पण कांई
छे नहिं अने जेने पाप पुंन्यनी भ्रान्ति टलि गई छे अने जे निषंक थईने विषयने भोगवे छे तेनु कल्याण थई रह्युं छे पछे ते भो
लां लोकने पण संषय थाय तेहाथ जोडिने कहे जे शास्त्रमां तो वरणाश्रम ना धर्म कह्या छे ते ज धर्मने पाले छे तेनुं
कल्याण थाय ने ते भगवान ना धाममां जाय अने जे अधर्मने मार्गे चाले ते ना आत्मा नुं भुडुं थाय ने ते जिव न

श्रीमुख सिद्धांत ॥१२३॥

रकमांजाय एम सर्वे सात्क्रमां संभलाय छे तेनुं केम समजवुं पछे असतगुरु कहे जे में तमने तत्व कह्युं तेनो वेदशास्त्र
नेपूराणथि बहार छे पण एतत्वनी वेदशास्त्र नेगम नथि अने वेदशास्त्र तो व्यासे ब्राह्मणोने पेट भराईनी कमाणी सारु
करि आप्यां छे माटे एवातनो संषय राखिशमांहि अने मारा वचनना विश्वास राख पछे असतगुरुनो शिष्य कहे जे हे महा
राज तमे तो मारा उपर कृपा करिने सर्वे संषय टाल्या अने मुने तो तमे न्याल कर्यो अने हुं तो आटला दहाडा पापथी बि-
बिनेमरि जतो माटे हवे हुं निःसंक थयो पछे असतगुरु बोल्यो के हुं हवे हुं तारा ऊपर राजी थयो माटे हवे तने परमेश्वरनुं
स्वरूप साक्षात्कार देखाडुं पण एक थोगमाया जे से माटे तारि मा बेहेनादि करि बहु जे होय तेने तेडि आव पछे ते मूरख
शिष्य तेडि आवे त्यारे तेने असतगुरु उपदेश करे जे बाई भाई सांभलो जे जे पेदा करे तेनुं नाम भगवान छे माटे स्त्रिपुरु
षना संगथकि थयुं जे विर्य तेथकि सर्वे पेदा थाय छे माटे तेज भगवान छे एवि रितना अवला उपदेश आपीने ते स्त्रियो
ना संग करिने पुरुषनी दृष्टिने स्त्रिनी योनि धोईने तेनुं चरणामृत करिने पाय छे ने सर्वेने भ्रष्ट करे छे अने वली कामिगु-
रु के विरिते स्त्रियो भोगवे छे तो एम उपदेश आपे छे जे परमार्थ ते शुं छे तो स्त्रियोनुं दान करवुं ते ज परमार्थ छे अने स्त्रि
नो संग करिने तेनुं चरणामृत लेवुं ते मोटुं पुन्य छे एवि रिते महापापी एवा जे कामी गुरु ते विषयने भोगवे छे अने ए-
कामिगुरुने तेना शिष्य ते नरकमां पडे छे ने महादुःखने पामे छे अने जे लोभिया गुरु छे ते जे ते महालोभिया जे पाम
र मनुष्य तेने घेर उतारा करे पछे तेने धिरवा सारु एक सोनानो होरझो छि मांथि काढीने आपे पछे ते लोभि शिष
घणो गदगद थई जाय ने तेनि सेवा करवा मांडे पछे वलि तेने सारि पेठे पोतानो विश्वास आणाववा सारु एक सोनानि
ईट काढिने देखाडे अने पोते शास्त्रनां पानां खोटां खोटां फेरवे अने भोला शिषने कहे जे आज तो हुं तारा उपर राजि थ-
यो छुं माटे रुपुं लाव तो तेनुं सोनुं करि आपुं अने सोनुं लाव तो तेनुं सोलघणुं करि आपुं पछे ते लोभी शिष्य पोताना
घरमां जेटलुं सोनुं रुपुं होय ते धूर्ता गुरुने आपे तथा आडोसि पाडोसिना घरमां सोनुं रुपुं होय ते पण तेने आणि आपे पछे

सापुर. सि.९६

तेढोंगि गुरु जे ते शिष्यपासे भाठि खडकावेने खोटि खोटि बुटि खंडाविने ते सोनारूपाने चोपडावे एणिरिते अनंत प्रकारे
कपट करिने तेनुं द्रव्य हाथ करिने ते भोला शिष्यने कहे जे चार दहाडे भाठि पाकशे एम बताविने रातमां सर्व द्रव्यनो गोटो
वालिने सवारे कहे जे हुं वगडामां एक बुटि लेवा जाउं छुं एम कहिने सटकावी मुके पछे ते लोभि शिष सांज सुधि तेनी
वाट जुवे पण आवे नहि त्यारे तेने वगडामां सोधवा जाय ते भाटकि भाटकिने मरे पण हाथ आवे नहि पछे घेर आविने
भाठि संभाले त्यारे तेमांथि तो राख नीसरे पण सोनुं रूपुं कांई निसरे नहि त्यारे ते लोभियो एम कहे जे हाय हाय
मारुं घर गयुं अने मुने बावो कर्यो एम कहिने माथुं कुटिने घणो पस्तावो करे छे माटे कि मियो खोटो छे अने वलि लोभि गुरु जे ते
जेने दिकरानो लोभ होय तेने कहे जे हुं तुने दिकरो आपुं ने तारा सारु देवनी आराधना करुं छुं माटे ते देवनी पूजा जोईशे ।।
ए छे पूजा तुं नामले ईने केटला करूपीयानु खरच कराविने तेनो लोटो लईने रातमां उठिने नासी जाय छे अने दिकरो-
तो थनारो होय तो थाय अने न थनारो होय तो कोईनो कर्यो थतो नथि माटे जेने परमेश्वरनो विश्वास नथि ते चालाकु
थे छे अने वलि जेने पारका राज्यनो लोभ होय एवा जे लोभि राजा तेने लोभिया जे असत्यु रूष ते एम कहे जे मारे
तो सर्व देव आधिन छे माटे तुने राज्य अपावुं पछे जेने राज्यनो अतिशे लोभ होय ते ने एवा पाखंडिनो विश्वास आवे
छे ते जेम कहे ते म करे पछे ते पाखंडि एम कहे जे तारा सारुं मंत्र करुं छुं माटे तारो शत्रु राजा नास पामशे ने तारे राज्य आ
वशे पण देवनी पूजा सारु ने मंत्र जपवामां बे त्रण चार हजार रूपैयानुं खरच थशे पछे ते पासेथि द्रव्य लईने जेने मारवो
होय तेना होलियानो चाकर होय तेने केटलुंक द्रव्य आपिने तेने खुटविने तेने कहे जे तुं दरबारने जमवामां छानुं झेर
आपजे अने ते काम थशे तो तारा भवनी भावठ काढीशुं एम करिने तेनो बंदोबस्त करिने जेने राज्यनो राज्यनो लोभ
होय तेने एम कहे जे हुं तारा मंत्र जपुं छुं ।। ते तारा शत्रुने नाश पमाडिश पछे पोते दंभि गुरु खोटा खोटा मंत्र जपे अने ओ
त्या राजानो चाकर लाग पडे त्यारे छानुं झेर आपीने राजाने मारि नाखे पछे दंभि गुरु कहे ए तो में मंत्र जप्या तेम-

रिगयो एम जुक्ति करिने मारे छे पण ए मंत्र जपे मरे नहिं अने जो मंत्र जपे मरतां होय तो मोटा मोटा राजा लाखो रुपैयानो
खरच करिने लडाई शुं करवा करे अने पूर्वे पण रामचंद्रजिये रावणने मार्यो ते पण हथियारे करिने मार्यो छे अने पांडवे
कौरवने मार्या ते पण शस्त्रे करिने मार्या छे पण मंत्रे करिने मार्या नथि अने मंत्र जपे मरे पण नहिं ए सिद्धांत वारता छे॥
माटे मंत्रने मुठने विरते सर्वे खोटां छे॥ अने वेदना मंत्र छे ते साचा छे ते ए मंत्रे करिने आत्मानुं कल्याण थाय पण जिवता
ने मारवुं के मुवाने जिववुं करवुं ते तो एक भगवानना हाथमां छे पण बिजा कोई मनुष्यना हाथमां नथि माटे लोभिए वा
जे असत पुरुषं ते एवा ढोंग करिने धन्य धुते छे अने वलि द्रव्यना लोभ सारु केटलाक समाधियो खोटि खोटि करिने सा
करो काढे छे अलचिलु धिंग सोपारि श्रोनालिएर जुक्तीयो करिने काढे छे ते सर्वे परपंच छे पण सत्य नथि अने के
टलाक कहे छे जे अमारे तो अग्निदेव वश छे ते वगर देवता ए अग्नि प्रगट करिये छिये पण ए सर्वे परपंच छे केमके
एतो अंग्रेज सरकार छे तेएवो अरघ काढे छे ते अरघने तपेलिने तले चोपडिने तेमां खिचडिने पाणी नाखिने अग्नि-
वगरना चुला उपर तपेलीने मुके तो तत्काल खिचडि चडि जाय अने एविरीते पाणि छांटिने अग्नि करे छे ते पण जु-
क्ति करे छे अने जे एवा परपंचने माने छे तेने महात्मा पुरुष कोई काले ओलखता नथि अने तेनुं कल्याण पण था
य नहिं अने जे स्वादिया गुरु छे ते सारुं सारुं खावा सारु तथा रसना इंद्रिने वस थईने अनंत जुक्तियो करिने दारु
माटि गांजा भांगादिक केफ करे छे ने पोते भ्रष्ट थाय छे अने बिजा अनंतने भ्रष्ट करे छे ते केवि रीते भ्रष्ट करे छे॥ तो
पोते दारु पितो होय तथा मांस खातो होय पछे बिजा भोला लोकने भ्रष्ट करवा सारु धर्मनी ओथ लेईने दंभ क
रिने ते भोला लोकने धिरववा सारु भक्तिनो भाव बहु जणावे पछे तेनो घणा मनुष्य विश्वास करे छे पछे ते दंभि
गुरु जे ते भोला मनुष्यने उपदेश करे जे तमे करता ने जाणो छो करता तो जोग माया आद्य शक्ति छे माटे तेने प्रसन्न
करवा दारुने माटि जो ईस्रोप छे तेमां कोईक संषय करे जे तेमां तो पाप लागे त्यारे कपटि स्वादियो कहे जे सांभलो-

भाईएतो आद्यशक्तिनो प्रतापछे तेदारूनुंदुधथईजायछेने मांसनो पकवानथायछे माटे पापलागेनहिं पछेतेनांपा
रखां लेवासारुदारु अनेमांसलावे त्यारेतेकपटिपुरुष जेतेप्रथमथिजएवा ढोंगकरवा सारुएकक्षिणवस्त्रनुंगरणुं
दुधसाकरमां पलालिनेसककवीरारव्युंहोयपछे तेदारुमाटिलावनाराने कहेजे जुवो आदारु केघो छे अनेपछे आद्यश
क्तिनेनैवेद्य धर्यापछी केवोथयो माटेएकलगारेकचाखिजुवो पछे तेचाखिजुवेत्यारेतो बिजीजातनोहोयपछे-
स्यादियोगुरुजे तेपडदोबंधाविनेमांहेनीतरफपोताजेवीस्त्रीहोय तेनेबेसारे पछेदारुने माटियांहेनीतरफलेई
जईनेदुधसाकरवालुंगरणुंहोयतेनेदारुमांबोलिंने मांहेनीतरफनिचोवे एटलेतेमांदुधसाकरनोपासलागिजाय
अनेमाटीमांपणधोयेलिसाकरनारवे अनेपछे असत्गुरुनेविभिचारणिस्त्रितेबेयेजणादारुनेमाटिनुंभक्षणक
रेनेतेविभिचारपणकरेपछे तेदारुमाटिलेईनेबहार आविनेकहेजेजुवोजोगमायानोप्रतापदारुनुंदुधथयुंने
मांसनांपकवानथयो पछे भोलालोक तेनेजुवेत्यारे आगलनाकरतांवानपणधोलोजणायनेपछेबाटकोभरि
नेतेनेपायत्यारेपणआगलनाकरतांगल्योलागेत्यारेतो राजिथायने कहेजे आतोसाक्षात्कार पर छोदेखा-
ड्योपछेदारुपिवेकरिनेमत्तिथई भ्रष्ट माटेमांसपण खवरावेतेखाय पछे असत गुरुकहेशे जोगमायानांदर्शा-
नकरयांछे त्यारेतेत्यांवाटजजोईरह्यो होय पछे असत्गुरुएमजाणे जे दारुपिधो छे ने माटिखाधिछे तेस्त्रिनेदे
खिने रहिनहिशकेपछे ते भोलाशीष्यनेकहेजे भाई आव तुंनेएकमंत्र आपुं ते मंत्रकहिश त्यारेजोगमायानांद
र्शनथशेजे चडतांपुरुषकुतरतांभाई पडदारवो लोसतिमाईपछे तेभ्रष्टमतिबालोजेतेएविरितेकहे त्यारेतेतोदा
रुमाटिभक्षणकरिनेतैयारथईरहिहोयपछे मांहेनीतरफजईनेभ्रष्टथायछे अनेएविरितेस्यादियाएयाजे असत्पु-
रुषतेकेटलाकनेभ्रष्टकरेछे अनेपछेनाकवढानापंथनीगाडेचालेछे जेमएकनाकवढोहतोतेणेएमजाण्युंजे
मारुंदुंएकजनाकवढोछुं माटेघणाकनेनाकवढाकरुंपछेपोतानोमुखकमुंकिने बिजामूलकमांजईने भक्तव-

निने बेठो पछे भोला लोक होय तेने कहे जे हुं तो साक्षात्कार भगवानने देखुं छुं पछे ते लोक कहे छे जे अमने भगवान-
नां दरशन करावशो त्यारे ते नाक वढो कहे जे हुं कहुं एम करी तो दरशन थाय पण ए काम कठण छे पछे ते भोला मा
नुष्य होय ते कहे जे हे महाराज तमो जेम कहेशो तेम करीशुं जो भगवाननां दरशन थाय तो पछे ते कपटि एम कहे जे
भगवाननां दरशन तो थाय पण जराक नाक आडुं आवे छे अने मारे पण नाक आडु आवतुं हतुं ते सारुं वढाव्युं छे
पछे भोलाने विश्वास होय ते नाक वढावे ने जुवे तो पण भगवाननां दरशन तो थाय नहि पछे ते कपटिने कहे जे भगवान
नां दरशन तो नथि थतां त्यारे ते कपटि कहे जे बोलिश मां निकर तारी ठेकडी करशे पछे ते पण तेमज कहे जे ओहो
हो साक्षात्कार भगवाननां दरशन थाय छे पछे तो केटलाक वढावीने ते पंथमां भल्या ने नाकवढानो पंथ चाल्यो
तेम एविरीते जगतमां एके दारू पिधो माटि खाधि बीजे दारू पिधो माटि खाधि एम पंथ चाल्यो छे त्यारे कोईक एम
आशंका करे जे केटलाक बुद्धिवाला छे ते केम दारू माटी खाता पिता हशे तो प्रथम बुद्धिवाला होय पण तेने एवा
दारूमाटिना स्वादियानो संग थाय पछे ते दारूमाटिना गुण ने महिमा कहि देखाडिने जराक दारूमाटी चखाडे पछे
चाखतां वेत बुद्धिवालानी पण बुद्धि भ्रष्ट थई जाय छे अने ज्यारे बुद्धि भ्रष्ट थाय त्यारे करवा न करवानो विवेक रहे नहि
त्यां एक वारता छे जे एक ब्राह्मण काशियेथी भणिने चाल्यो आवे तेने एवो नियम जे ज्यां शिवनुं स्थानक होय त्यां
शिवनी पूजा करिने अन्न जमवुं पछे मारगमां उजाडु आवि ते त्रण दिवस सुधि शिवनुं स्थानक आव्यु नहि पछे चोथे दि
वसे एक चार बारणांवाली शिवनी देरि आवी त्यारे ते ब्राह्मण चोथे उपवासे स्नान करिने शिवनी पूजा करवा गयो
त्यां तो एक कसाई मांस लेईने बेठो हतो तेणे कह्युं जे आ मांस खाय तेने आ बारिए चालवा दईये छीये पछे ते ब्राह्मण
बोल्यो जे हाय हाय मांस ते खवातु हशे एम कहिने बिजि बारीये गयो त्यारे त्यां एक स्त्रि बेठि हति तेणे कह्युं जे मारो
संग करे तेने जवा देऊं छुं पछे ब्राह्मण बोल्यो जे अररर ए वातमां तो शास्त्रमां घणुं पाप कह्युं छे एम कहिने त्रीजा बा

रिये गयो त्यां एक ब्राह्मण बेठो हतो तेणे कह्युं जे मुने मारी नाखे तेने ज या देउं छुं पछे ब्राह्मण बोल्यो के ए तो ब्रह्महत्या ला-
गे एके म थाय एम कहिने चोथी बारिये गयो त्यां एक कलाल दारूनो प्यालो भरिने बेठो हतो तेणे कह्युं के दारू पिये ते-
ने ज धारी धानो हुकम छे पछे ब्राह्मण बोल्यो जे दारू पिधानुं तो बहु पाप छे माटे ते तो पिवो नहिं एम कहीने चालि निस-
र्यो पण चार उपवास थया ते मनमां विचार थयो जे मृत्यु आव्युं होय ने आफतकाले थोडुंक पाप थये जिववुं रहे वातुं होय-
तो ठीक छे माटे दारू पिये पछे दारू पिने शिवनी पुजा करवा बेठो त्यां तो क्षुधा व्यापि ने दारू पिवे करिने मती पण भ्रष्ट थई
पछे मांस पण खाधुं पछे दारूने मांसनो केफ चड्यो त्यारे काम वाप्यो पछे स्त्रिनो संग करवा गयो त्यारे ब्राह्मण आ-
डो आव्यो तेने मारिनाखीने स्त्रिनो संग कर्यो एवी रीते ते ब्राह्मण महा भणेलो ने बुद्धिवालो ने धर्मवालो हतो पण जो
एक दारू पिधो तो मति भ्रष्ट थई गई ने पछे चारे पाप कर्यां माटे जक्तमां बुद्धिवाला होय पण एवि रिते प्रथम थोडुंक पाप
करे पछे मति भ्रष्ट थाय ते कोई पापथि बिये नहिं पछे एवा स्वादिया गुरु थईने पोते पण दारू माटि गांजालि खाग र-
खाय पिये ने तेना संगिने पण दारू माटि गांजादिक खवरावे ने पिवरावे माटे दारू माटिने गांजाना खानाराने पिना-
नारा एवा जे स्वादिया गुरु ते जे ते खोटा खोटा ग्रंथना अर्थ करिने तथा खोटा खोटा श्लोक बनाविने केटलाक मनु-
ष्यने भ्रष्ट करे छे अने ते पापे करिने एवा गुरुने तेना शिष्य बेय रुरु रुउ नर्कमां पडे छे अने ते स्वादिया गुरु जे ते मोटा
मोटा राजाओनेने मोटा मोटा आचार्योने मांसादिकने केफादिके करिने भ्रष्ट करे छे ते केवि रिते भ्रष्ट करे छे तो क-
हेतो मृगिया करिने मांस खावुं ए क्षत्रिनो धर्म छे तथा यज्ञ करिने मांस खावुं ए पण राजानो धर्म छे एवी रिते जे अती
नीचने पापि एवा जे रसनाना स्वादिया ब्राह्मण तथा बावा ते कहे छे अने एवा उपदेशने पण जे आसुरि ने भ्रष्टमति-
वाला जिव छे ते माने छे पण जे दैविने सद्क्षत्रि छे ते एवा उपदेशने नथि मानता अने मांस तो चंडालने पापिनु खा-
णुं छे तथा हेडझा पडा वाघरि थोरि तथा सावज दिपडाना हार जरख तथा कुतरा कागडा ए आदिक निच जाति

होयतेनेमांसनोआहार छेपण मांस खावुंते स्हद्र क्षत्रिनो धर्म नथि अने जे अष्टम त्तिवा ळाएवाजेपंडित पूराणि एम कहे छे
जेरामचंद्रजि मृगिया करता ते क्षत्रिने पण मृगिया करथाएमजेकहे छे ते तो रस ना नास्वादिया ने महापापि छे ते केहे छे
केम के रामचंद्र तो भगवान छे ने सर्वेना करता हर्ता छे अने कोटि ब्रह्मांडना जिवने उपजावे छे ने सर्वेनो नास करे छे
तेउपजावे छे तेनुं ते भगवानने पुन्य नथि अने नास करे तेनुं पाप नथि अने भगवाननुं स्वरूप छे ते तो अविरुद्ध छे माटे
धर्मि कहिये पापी साथे विरुद्ध आवे ने पापी कहिये तो धर्मि साथे विरुद्ध आवे अने कर्ता कहिये तो अकरता साथे विरुद्ध-
आवे ने अकर्ता कहिये तो करता साथे विरुद्ध आवे ने निरगुण कहीये तो सगुण साथे विरुद्ध आवे ने सगुण कहीये तो
श्री निरगुण साथे विरुद्ध आवे ने साकार कहिये तो निराकार साथे विरुद्ध आवे ने निराकार कहिये तो साकार साथे विरुद्ध
आवे माटे भगवान तो पापी नथि ने पुन्ये नथि ने करता नथी ने अकर्ता नथि ने कर्ता पण छे ने अकर्ता पण छे अने भगवान
नीरगुण नथि ने सगुण नथि ने निर्गुण पण छे ने सगुण पण छे अने साकार नथि ने निराकारे नथि अने साकार पण छे ने नि
राकार पण छे एवी रीते भगवान जेवा तो एक भगवान ज छे पण बिजो कोई तेजेवो थवाने समरथ नथी अने ते भगवाननी
क्रीया जोईने ते प्रमाणे क्रिया करे छे ते तो महापापि ने असुर छे अने जे भगवाननी आज्ञा प्रमाणे वरते छे ते तो दैवि ने भ
गवानना भक्त छे माटे रामचंद्रजिनो वाद लेईने जे मांस खाय छे ते तो असुर ने पापि छे अने लोकमां पण प्रसिद्ध छे
जे पापि जिव होय ते ज दारू माटिनुं भक्षण करे छे अने एवो पापि होय ने तेने कोई सत्पुरुषनो जो संग थाय ने भगवान-
नो भक्त थाय तो ते तरत दारू माटिनो त्याग करे छे माटे जो रामचंद्रजीने एवा लगमति होय तो तेना भक्त जेटला ज-
क्त मां छे ते सर्वे दारू माटिनो त्याग करे छे ते त्याग शुं करवा करे अने जो त्याग करे छे तो एवात जरूर भगवानने नहि
गमति होय त्यां कोई एम आशंका करे जे भगवानने एवात गमति नथि त्यारे पोते शा सारू एवुं आचरण कर्युं हशे
तो तेनुं एम छे जे सर्वे जिवमात्र दोषवान छे माटे तेना दोषने टाळवा सारू पोताने विषे दोष जणावीने ते जिवोना दोष

नांमूलऊरवाडिनारवया सारुं तेवुंआचर्णकरे छे जेम कोईकना पगमां कांटो वाग्यो होय त्यारे ते कांटाने काढवा सारुं बिजो पुरुष जेने कांटो नथि वाग्यो ते कांटानुं ग्रहण करिने तेना कांटाने काढिने पछे बेय कांटानो त्याग करे छे तेम भगवानपण कामि जिवनी काम काढवा सारुं कामनुं ग्रहण करे छे अने लोभिनो लोभ काढवा सारु भगवान लोभनुं धारण करे छे॥ ते बलिराजानो लोभ काढवा सारु पोते भगवाने अतिशे लोभ करिने तेनुं सर्वस्व लै लिधुं अने गोपीयोनो कामटा-लवा सारुं श्रीकृष्ण भगवाने कामनुं ग्रहण करिने तेनेनीष्कामि करि मुकियो अने पोते भगवानेपण वलि ब्रह्मचारि कहे वाणा एवि रिते पोताना भक्तने निरदोश करवा सारु पोताने विषे भगवान दोष जणावे छे॥ पण भगवानने विषे तो कोई दोष मात्र नथि जेम दरपण छे तेने विषे तो कोई विकार मस्य कचरो नथि पण ते दरपणने जोनारा नामोढाने विषे जेजे विकार मस्य कचरो वलग्यो होय तेने देखाडवा सारु दरपणमा विकार जणाय छे॥ तेने जे बालक अण-समजु होय॥ ते तो एम जाणे जे॥ दरपणमां मस कचरो वलग्यो छे॥ ॥अने जे समजु होय ते तो दरपणमा जोईने पोताना मोढा उपर समजीने ते विकारने जलेकरिने धोईने टालिनाखीने पछे दरपणमा जुवे तो कांई विकार जणाय नहि तेम भगवानने विषे तो कोई दोष नथी पण बिजा जिवने विषे ज्यां सुधि दोष छे त्यां सुधि ते जिव भगवानने विषे दोषने देखे छे पण तेमां जे दैवि जीव छे ते तो एम समजे छे जे भगवानने विषे जे जे काम लोभ स्वाद स्नेह मान आदिक जणाय छे ते तो अमारा कल्याणने अर्थे जणाय छे पण भगवानने विषे कांई ज दोष नथी ने भगवान तो सिद्धस्वरूप छे ने अखंड आनंदने पूरणकाम छे एम जाणिने भगवाननी आज्ञा प्रमाणे वरतिने पोताना दोषने टालिने भगवानना स्वरूपने जुवे छे तेने भगवाननुं स्वरूप अति शुद्ध ने निर्दोषने अविरुद्ध जणाय छे अने जे बालकजेवा अ[illegible] करिने पापि जीव छे ते भगवानने विषे दोषने देखे छे ने तेमां मोहने पामे छे अने पोताना दोषने टालता नथि ने वलि भगवाननुं आचरण जोईने तेवुं आचरण करे छे ते तो कोटि करुप नरकमां पडे छे माटे आसुरि जिव [illegible]गवानना

दिव्यगुणजाणवामांआवतानथि केमके आकारि जीवनीमति अस्कभअहारे करिने भ्रष्ट थई गई छे अनेजेजे अस्कभआ
हारकरेछे तेनेप्रगट भगवान ओलखाता नथि माटेदारूमाटिने गांजादिकनी प्रवृतिथई छे तेतो खादियाएवाजे भ्र
ष्टपापिगुरु तथा भ्रष्टएवाजे पंडितपुराणि तेनी करेलि छे पण सत्शास्त्रने सत्पुरुषनी करेलि एवि दारूमाटिने गां-
जादिकनी प्रवृति नथि अनेजेने देहने विषे प्रिति होय ते एवा उपदेश करेछे जे सर्वेमां भगवान बोलेछे अने स्त्रिपु
रुषनीजोडछे तेतो राधे माधवनी जोडछे एवि रिते मिथ्या उपदेश आपिने विधिनिषेधने तोडिने निषंक थईने पोतेविषयने भोगवेछे ने भोलाम-
नुष्यने भ्रष्ट करेछे ने देहनी सेवा करावेछे अने एवा भ्रष्टगुरुछे ते पोताना शिष्यने एम समजावे जे गुरुने भगवानरूप
जाणवा अने कामिगुरु होय तेने कृष्णजेवा जाणवा अने लोभिगुरु होय तेने वामनजेवा जाणवा अने क्रोधिगुरु हो
य तेने नृसंघजेवा जाणवा पण गुरुनो कोई प्रकारे दोष न लेवो एवी रितना अवळा उपदेश आपीने देहनी सेवामां
तत्पर राखावेछे अने देहनी सेवामां फेर पडेछे तो ते देहाभिमानी गुरु जे ते अतिशे क्लेशने पामेछे ने महादुःखिया
थायछे एविजातना जे गुरु तथा पंडितपुराणि तेने देहाभिमानि जाणवा अने एवा देहाभिमानिने तेना संगि बेय घोर
नर्कमां पडेछे अने जे मानि गुरुछे ते पोतानुं मान वधारवा साहु खोटा खोटा परछादे खाडिने ढोंग करिने जक्तमां
पुजायछे ने भोला लोकोने भ्रष्ट करेछे ते केवि रिते ढोंग करेछे तो प्रथम भक्तिनो ओथ लेईने भक्त बनिने सदाव्रत
आपवानो मस लेईने तथा ठाकोरजिनुं मंदिर करवानो नियम तेकरीने भोला वाणियानु नामु करेपछे बेक दहाडा
तेने सुघराणि साकं आटा खवरावे ने पछे एक दिवस पोताजे वो ढोंगि शिष्य होय तेने भेगो लेईने राते वाणियाने घेर
जईने तेने रुपैया आपिने नामु वळावि पछे बिजे दिवस दस विस माणस भेगा लेईने ते वाणियाने हाटे जईने कहेजे से
ठतमारुं नामुं जुवो केटला रुपैया मागो छो ते जे मागता होय ते ल्यो त्यारे ते वाणियो कहे जे भक्त तमे ने तमारो सेवक
बेय जणा काल आविने रुपैया आपिने नामुं वळावी गया छो ने शुं ॥ त्यारे मानीएवो जे ढोंगि ते कहे जे अमे तो

एवातमांजाणतानथिअनेआमारासेवकनेपुछोजोआव्याहैयेतोपछेतेसेवकपण ढोंगिनाढोंगिहोय तेकहेजेअमेतोए-
वातमांजाणतानथिपछेवाणियोकहेजेआमारातोरुपैयापहोंचीरह्याछेत्यारेढोंगिनेमहामानीतेपोतानुमानवधारवा
सारुंकहेजेएतोमारोयाल्लोभक्तनीभिडटालवासारुभगवानआपिगयाबिजोकोईनहि।।त्यारेतोजक्तनांभोलांलो
कआश्चर्यपामिनेतेनापगमांपडेनेएमजाणेजेओहोआभक्तनेतोभगवानेपरछोआप्योएवाढोंगकरिनेमानि
गुरुजेतेजक्तमांपूजायछेअनेवलिमानीजेतेमानवधारवासारुकहेशेजेफलाणाशेहेरमांएकपाटिदारनोदिकरो
मरिगयोहतोतेनेजिवतोकर्योएमसोवसेंगाउनुंनामरवोदुखोदुखेईनेभोलालोकनेपरछोमनावेछेपणएवा-
तुकोईथीबनेजनहिकेमकेश्रीकृष्णभगवानेपणनापाडिछेजेमुवानेजिवतुंतोहुंपणनथिकरतोतेक्यारेकह्युंछे
तोपोतेश्रीकृष्णद्वारिकाथीहस्तिनापुरगयाहताअनेवांसेथिसतभामानोबापमरिगयोत्यारेसतभामाएकह्युंकेमा-
रोस्वामिभगवानछेतेआवशेत्यारेमाराबापनेजिवतोकरशेपछेतेनेतेलनीकोठीमाराखिमुक्योपछेश्रीकृष्ण
भगवानघेरआव्यात्यारेदरवाजेथिरोतारोताआव्यातेछानारहेनहिपछेसतभामायेकह्युंजेतमेरुवोमांमाराबापनेतो
राखिमुक्याछेतेजिवताकरोपछेभगवानबोल्याजेझटपटतेनेबालिदियोनहितोसडिजशेअनेमुवानेजिवतुंक
रवानीरितनथिकेमकेअनादिनीजेरितबांधिछेतेनेहुंफेरवतोनथितोबिजाथीफरेकेममाटेश्रीकृष्णभगवानेपण
मुवानेजिवतुंकर्युंनथिअनेबिजाजिवकहेजेमेमुवानेजिवतुंकर्युंतेनेतोमहामानिनेढोंगिजाणवोअनेमुवुंजि-
वतुंकोईकालेथायनहिअनेएवातनेमानेछेतेपणमुरखछेनेपापिछेअनेएवामूरखनेसाचासत्पुरुषकोईदहाडे
ओलखायनहिअनेतेनुंकल्याणपणथायनहिकेमकेतेनेतोमानिनेढोंगिपुरुषनीप्रतितिआविमाटेतेमानितोन-
र्कमांजशेतेभेगातेनाशिष्यपणजरूरनरकमांजशेअनेवलिमानीहोयतेकेवाढोंगकरेछेतोजक्तमांमनावासा-
रुंरातमांछानिछापोकराविनेपोतानेहाथेआपिनेपछेसवारेकहेजेमुनेतोआजभगवानेदरशनदिधांअने

मने छापो आपिगया ॥पछे जेभोलालोक होयतेकहेजे ओहो भक्तने भगवानेपर छो आप्योएवाएवा घणा कहोंग मानिगु-
रुजे ते करे छे नेजक्तमां पुजाय छे॥ ने भोलांलोकोनेभ्रष्ट करेछे॥ बिस्तारना भयथकिझाझा ढोंग कहेतो नथि पण जे का-
मि गुरु छे ते अनंतप्रकार ना ढोंग करिने स्त्रियो भोगवे छे अनेजे लोभि गुरु छे ते पूर्वे कह्याएप्रकारना अनंत ढोंग करिनेद्र-
व्यने हरेछे ॥अनेजेस्वादिया गुरु छे तेअनंत प्रकार नाढोंग नेयुक्तियो करिने अनंत प्रकारनारस जेदारु माटि गांजो भां
ग मफर माजम आदिकरस नाईंद्रिने वसथईने खाय छे अने तेना सेवकोनेपण खवरावे छे अनेएवा भ्रष्ट मतिवाला
गुरु छे तेएम कहे छे जे क्षत्रिने तो दारु माटि खावां अनेजे धर्म वालाएवा जे सत्पुरुष ते नथि कहेता जे क्षत्रिने दारु माटि खा
वां ॥अनेसत्पुरुषनेसतशास्त्र तो एमकहे छेजे ब्राह्मण क्षत्रिनेवैष्य एत्रणवरणनेतोदारु माटि गांजो मफर माजम खा
वांपिवां जनहि अनेजो ब्राह्मण क्षत्रिनेवैष्य तेदारु माटीनुं एक जवार भक्षणकरे तो तेनोजिव दशहजारवरस रूधिरस्र
रु नामे नर्कमांपडे छे माटेजेनेपोताना आत्मानुं कल्याण ईछवुं होय तेनेएवा स्वादियागुरुनो संग कोई कालेकरवोनहि
अनेजेदेहाभिमानी गुरु छे तेअनंतप्रकारनां अधर्मकरिने देहनि सेवा करावे छे अनेजेमानि गुरु छे तेअनंतप्रकारना
ढोंगकरिनेपोतानि मोटम्य वधारवा सारु अनंतप्रकारनां पापकर्म करे छे अनेएपांचप्रकार नागुरुजेते भगवानना मा
रग थकि विरुद्ध छे॥ अनेजिवने भगवान थकि विमुख करनारा छे केमके काम लोभ स्वाद स्नेह नेमान तेनो त्यागकर-
वो एज भगवाननेपामवानो मार्ग छे एसिद्धांत वारता छे अनेहवे छत्रा जे साचा सतगुरु छे ते तो निष्कामि छे निरलो-
भि छे॥ निरस्वादि छे निरस्नेहि छे नेनिरमानि छे अनेजे सतगुरु छे तेनुं तो सत्यस्वरूप छे माटे तेने तो सत्य एवो जे स्वध
र्म तेअतिजोगमे छे पणअसत्य मार्ग तेनेगमतो नथि॥ तेसत्यकोनेकहिये नेअसत्यकोने कहिये तो धर्मज्ञान वैरागने
महात्मे सहित परमेश्वरनी भक्तिकरवि तेसत्य मार्ग छे अनेतेनेवेदशास्त्र नेमोटापुरुष सत्संग कहे छे अने तेणेकरि
ने जिवनो मोक्ष थाय छे अनेकाम लोभ स्वाद स्नेह नेमान एजेपांचदोष तेअसत्य मारग छे अने ते मारगे करिने जिव

जेते अधोगतिनेपामे छे॥ अनेजेसतगुरु छे ते एपांचदोषनोनास करवा सारु प्रगट थाय छे अनेएपांचदोषनाउपासकए
वाजे कामिलोभिस्वादि स्नेहि नेमानि तेएवा सतग्गुरुनेदेखिनेबलिउठे छे जेम मेघनेवरसवे करिनेजवासो सुकाई
जाय छे तेमसतगुरुनाउपदेशरुपिमेघ तेज्ञानरुपिजल बरसावे छे त्यारेजवासारुप जे असतगुरु ते नासपामे छे॥
केमके सतगुरुएनी आजिवकाजे पंचविषय तेनो त्यागकरावे छे माटे जेनी आजिवका जाय ते सेहेजे नासपामे॥
अनेजे मुमुक्षुजिव होय ते तो सतगुरुने देखिने राजिथाय छे ते सतगुरु शे लक्षणे करिने ओलखाय छे तो पांचदोषे
रहितरुप तो पोताने विषे धर्म दृढ होय अने अहिंसाने विषे दृढवर्तता होय कहेतां कोई जिवनेपीडा थाय एमकरे जन-
हिं॥ अने ज्ञानजे देहथिनोखो ने सुद्धरूप ने अखंड अविनासी ने आनंदरुप जे आत्मा तेनेपोतानुं स्वरूप मानिनेनि
रवासनिकपणे वर्ते अनेवैरागजे भगवाननिमूर्त्ति विना अनंतकोटिब्रह्माडनां जेविषयनां सुख तेने कागविष्टा तुल्य
जाणे कहेतां भगवानबिना सर्वे पदार्थनेविषे वैरभाववरते॥ अनेमहात्मे सहित भक्ति जेपोते ब्रह्मरूप थईनेकहे
तां अनंतकोटि ब्रह्माड रह्यां छे एना रोमनां छिद्रने विषे एवुं जे अक्षरब्रह्म ते हुं छुं एम जाणिने एवा अनंतकोटि अक्ष
ररुपमुक्त तेनास्वामि एवा जे अक्षरातित परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान जे प्रत्यक्षमूर्त्ति तेनी पोताने अत्यंतप्रितिये
सहित अखंड स्मृति रहे तेने महात्मे सहित भक्ति कहिये अने आकह्यां जे लक्षण ते जेने विषे होय ते सतगुरु कहेवा
य अने तेनो जे समागम करे तेनुं कल्याण थाय छे॥ ॥इति श्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥
श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः॥ ॥संवत॥१९॥ओगणिशे॥१८॥अढारना चैत्रवदि १० दशमिने दिव
स महाराजश्रीहरिकृष्णभगवान गाम श्रीयले मध्ये ठाकोरमेघराजजिनादरवारमां उत्तरादेबारमेडिउपर गादि न
किया नख्याथिने तेउपर विराजमान थया हता अनेसर्वे जरियानि वस्त्रधारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगमां पुष्पनां आ
भूषण धारण कर्यां हतां अने ललाटने केशरनी आडने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोतानामुखारविंदनी

आगळसाधुतथाघणाकहरि भक्तनीसभा भराईनेबेठिहतिपछे संज्या आरतिथयाकेडेमहाराजेबोल्याजेषिनविवे
कसंसारसब ॥ भवभटकतमतिमंद॥ सारअसारविवेकजेरि॥ सो हिसा धुजगवंद॥१॥एमांएमकह्युंजे विनाविवेके
करिने संसारजे तेलखचोरासिने विषे भटकेछे कहेतां अगतिनेपामेछे अनेजेसारअसारनेजाणेछे तेस्रगतिनेपा
मेछे कहेतां परमपदनेपामेछे हवेतेदुरगतिनेस्रगतिनाचालनारानेतेनाचालावनारानां लक्षण कहे छेजेजेपुरुष
मनने वस वरते छे तेदुरगतिने मार्गे चाल्योकहेवायछे अनेजेमनने पोतानेवस्य करिनेवरतेछे तेस्रगतिनेमार्गेचा-
ल्योकहेवायछे तेमां प्रथम दुरगतिनेमार्गेचलावनारानां लक्षण प्रथमकहियेछियेजे एकतो इंद्रियो अंतःकरण
नेवशवर्तताहोय अनेदेहनेपोतानुंरूपमानता होय अनेपंचविषयमां अतिशेमलिनबासनावर्ततिहोय अने तेम-
लिनवासनाये करिनेशास्त्रनीपणमरजादा राखेनहिएवांलक्षणजेमां होयतेनेदुर्गतिनाचलावनारा जाणवा अने-
आविश्वना कर्त्ताएवाजे परमेश्वरतेनुंभानजेनेनथिएया अनेवेदशास्त्रनिजेमरजादापरमेश्वरे बाधिछे तेनिपणखब
रजेनेनथिएयाजे पामरजिवते असत्गुरुनेशरणेजायछे तथाजेने धर्मअधर्मपापपुन्य सारअसारनिपणखबरनथि॥
अहारमैथुननिंद्राने भयपरायणवर्तता एवाजपशुतुल्यमनुष्य तेपण असत् गुरुने शरणेजायछे अनेतेजिवदूरगतिने
पामेछे अनेस्रगतिनाचालनाराएवाजेमुमुक्षुजिव तेतोस्रगतिनाचलावनाराएवाजे धर्मज्ञान वैराग ने भक्ति तेणे यु
क्तएवाजेसतगुरु तेनेशरणेजायछे अने तेजियनुं कल्याण थायछेमाटेजेने मनुष्यनोदेह प्राप्तथयो होय तेनेतोविवेक
राखिनेपोताना आत्माना कल्याणनेअर्थेजरूरअसत्पुरुषना संगनो त्यागकरिनेसत्पुरुषनोसमागमकरवो॥

॥ ॥इतिश्री मुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥

संवत् १९ ओगणिशे १८ अढारनाचैत्रवदि १२ द्वादशिने दिवसमहाराजश्रीहरिकृष्ण भगवानगामश्रीवलेमध्येठाको
र मेघराजजिपथुभाना दरबारमां उत्तरादा बारनी मेडिउपरमां हेनीकोरे गादितकियाउपरविराजमान थया हता अने

सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने गुलाबने चंबेलिना पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां सोभिरह्यां हतां अने ललाटने विषे केशर
निअरचाने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ।। ने पोतानां मुखारविंदनी आगळ संतमंडळ तथा ग्रहस्थ हरिभक्तनी मोटी सभा भराईने बेठि
हति पछे ठाकोर मेघराजजिये कांईक वस्तु मुठिमां राखिने महाराजने हाथ जोडिने कह्युं जे मारि मुठिमां शि वस्तु छे ते कहो पछे
महाराज बोल्या जे एतो हुं कहि दउं ते मां कांई आश्चर्य नथि पण एम कह्यानो मारो धर्म नथि केमके एतो जक्तमां केटलाक ढोंगि छे
ते पण कहे छे तेणे करिने तेनी कांई प्रभुताई कहेवाती नथि अने एकाम तो गाडिया नटडा पारखहिनां छे पण कोई ज्ञानादातानुं
एकाम नथि ।। अने एवुं तो हुं तमने शिखवुं तो तमे पण त्रण काळनुं जाणो एवा थाओ अने भूत भविष्यने वर्तमाननुं कहि देखाडो प
ण ते मांज्युं पामशु कांई तेणे करीने आत्मानो मोक्ष थाय नहि अने एतो सर्वे तंत्र ख्याल छे पण साचुं नथि माटे एमारो धर्म जनहिं अने
एमां तो उलटी अमारी आति हलकाई कहेवाय माटे एवुं काम अमे करता नथि अने एवि अनंत कलाओने जाणिये छिये ।।
पण एकहि देखाडवा जोग नथी जेम कोई क शाहुकारना घरमां कोड रुपैयानी समृद्धि होय अने चिंतामणि पण तेना घरमां होय
तेने कोई कएम कहे जे तमारा घरमां समृद्धि होय तो अमने दश विश फुटेलां हांडलां देखाडो तो जाणिये जे शाहुकार तमे
खरा त्यारे ते शाहुकार जो तेने फुटेलां हांडलां देखाडे तो तेणे करिने ते शाहुकारनि परिक्षा थाय नहि अने उलटो ते मूरख
कहेवाय केमके फुटेलां हांडलां तो हेडझ्यापडाना घरमां पण होय माटे एमां कांई आश्चर्य नहि तेम भगवान पासे तो आ ब्रह्मां-
डमां जे रहि कलाओ छे ते सर्वने जाणे छे अने तेथी पर पण अनंत कलायोने भगवान जाणे छे ते मां आ लोकनी जेटलीक
लाओ छे ते तो फुटेलां हांडलां जेवी छे अने देवलोकनी कलाओ छे ते कोडिओने ठेकाणे छे अने ब्रह्मादिकनी कलाओ छे
ते बदाम जेवी छे ।। अने वैराजपुरुषनी कलाओ छे ते पैसा जेवी छे अने प्रकृतिपुरुषनी कलाओ छे ते सोनामोहोर जेवि
छे अने अक्षरनी कलाओ छे ते पारसमणि जेवि छे अने भगवान पुरुषोत्तमनी कलाओ छे ते तो चिंतामणी जेवी छे माटे-
चिंतामणि रुप जे आत्यंतिक ज्ञान ते एक अमारि पासे छे पण बिजा कोई पासे आत्यंतिक ज्ञान नथि ते सारुं अमारी प-

रिक्षातोज्ञानेकरिने छे॥ अनेज्ञानने विषे तो नवनिधि ने अष्टमासिद्धी रहि छे पण नवनिधिने अष्टमासिद्धि ने विषे ज्ञान नथि माटे
अमारि मोटप्य तो ज्ञाने करिने छे ते ज्ञान केवुं छे के जेने पामिने काई बाकि पामवुं रहे नहि अने सर्वे शास्त्र नो सार ने सर्वे महा
त्मापुरुष जे ज्ञानने सा भलिने हापाडे अने बलि अधिरुढ नेवे दनुं तत्वसारए बुं जे ज्ञान तेए क अमारिपासे छे माटे ज्ञानेक
रिने अमारि परिक्षा जेने लेवी होय ते सुखेथी लियो अने ज्ञानेकरिने जे निश्चेथाय तेनिश्चे खरो छे अने ज्ञानेकरिने जे
निश्चय थाय ते निश्चय कोईनो टाल्यो टले नहिं अने ज्ञानविना बिजी कोई वाते करिने निश्चय कर्यो हतो तो तेने निश्चय रहे
वानो नथि ते सारु भगवानना स्वरूपनो निश्चय तो ज्ञानेकरिने करवो अने जिवनुं कल्याण पण ज्ञानेकरिने ज थाय छे तेवे
दमां कह्युं छे जे॥ ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः ए श्रुति मां एम कह्युं छे जे भगवानना स्वरूपना ज्ञानविना मुक्ति थाय नहि ते सारुं
महात्मा पुरुष पासे जईने ज्ञान पामवुं अने ज्ञानविना जे परछा परछि मागे छे ते तो मूरख छे अने तेनुं कल्याण कोई का
ले थतुं नथी अने जे आसुरि जिव होय ते परछो मागे छे ते पण सेहेजानंद स्वामिना साधु मुक्तानंद स्वामि तेणे किर्त्तनमां
कह्युं छे जे परछो ई छे तेने पामर जाणवो माटे दैवी जिव होय ते परछो मागे नहि अने पूर्वे भगवानना अवतार थई गया
तेणे पण कोईने परछो आप्यो नथि अने शास्त्रमां रावणादिक मार्या तथा गोवरधनादिक तोल्या समुद्रमां पाज बांधीए
म लख्युं छे ते पण ज्ञान ज लख्युं छे अने देहनी क्रिया तो बिजा मनुष्यना जेटलि ज भगवान पण करे अने बिजा मनुष्य
नेजेम भूख तरश टाढ तडको लागे तेम भगवाने पण मनुष्याकृति धारण करि होय तेने भूख तरश टाढ तडको लागे पण
एने विषे ज्ञान छे ते ज्ञान बिजा कोई मनुष्य तथा देव ब्रह्मादिक पासे नथि माटे अमारि परीक्षा तो ज्ञाने करिने छे॥ ॥

॥ ॥इतिश्रीसुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥

संवत् १९ओगणिशो १८ अढारना चैत्र वदि १४ चतुरदशि ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री वरतेम ध्ये
दवे लक्ष्मिरामने घेर उगमणे बार ओरडानी आगल फलि मां ढोलिया उपर गादि तकिया नखावि ने विराजमान थया

हताअनेसर्वेसोनेरिकसुंबलवस्त्रधारणकस्यांहतांनेपुष्पनाहारकंठमांधारणकस्याहताअनेहाथनेविषेबाजुबंधनेग-
जराधारणकस्याहताअनेकेसरनिअरचानेकंकुनोचांदलोकस्योहतोनेपोतानामुखारविंदनीआगलमुनिमंडल
तथाघणाकहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठिहतीपछेमहाराजनीसंज्याआर्त्तिधून्यदंडवत्करिनेपछेहवेलक्ष्मि
रामेहाथजोडिनेएकप्रश्नपुछ्युंजेहेमहाराजआसर्वेमनुष्यघणाकप्रकारनाआव्यांछेतेमांकेटलांकतोतमनेभ-
गवानजाणिदरशनकरवाआव्यांछेअनेकेटलांकतोमोटापुरुषजाणिनेआव्यांछेनेकेटलांकतोजगनीपुरुष-
जाणिनेदरशनेआव्यांहशेनेकेटलांकतोतमनेज्ञानीजाणिनेआव्याहशेनेकेटलांकतोतमनेबहुरूपालाजाणि
नेजोवाआव्यांहशेमाटेएसर्वेनेशुंलाभथशेअनेतेनेकेटलुंफलछेतेकहोपछेमहाराजबोल्याजेबहुसारुंप्रश्नपु-
छ्युंहवेसांभलोतेनोउत्तरकरियेजेभगवाननुंस्वरूपछेतेनेविषेतोलेशमात्रभेदनथिअनेसदायएकरीतनुंजभग-
वाननुंस्वरूपछेनेअखंडछेनेपूरणछेनेअद्वितछेनेसत्यछेअनेजक्तछेतमोहितछेमारेतेनामोहनेटालवासारुं
भगवानपोतानेविषेमोहउपजावेछेतेमांजेनेजेटलोमोहटल्योहशेतेटलोतेअमारोमहिमासमजतोहशेअने
आजक्तनेविषेचारप्रकारनाजिवछेपामरविषयीमुमुक्षुनेमुक्त॥तेमांजेमुक्तएटलेनिरमोहिपुरुषछेहवेजेपाम
रछेतेतोउपरथीफूलनाहारतथावस्त्रतथारूपजोईनेराजीथायछेनेदरशनकरेछेतेनेतोएटलुंफलथायछेजेअ-
नंतजन्मधरिनेविषयवासनायेकरिनेवेस्याओआदिकनारूपजोईनेजेपापलाग्यांहोयतेनेत्रनांपापप्रत्यक्षभ-
गवाननेदरसनेकरिनेनाशपामेछेअनेएविरितेअमाराशब्दसांभलिनेकाननांपापनाशपामेछेअनेचालिने
अमारीपासेआवेतेणेकरिनेपगनांपापनासपामेछेअनेअमारासन्मुखपगेलागवाहाथजोडेछेतेनाहाथनांपाप
नासपामेछेनेमाथुंनमावेतेथिमुस्तकनांपापनासपामेछेएविरितेअमारेदरशनेकरिनेपामरजिवनांइंद्रियोअं-
तःकरणनांपापदूरथायछेपछेतेनेअंतःकरणमांदिवसेदिवसेप्रकाशथतोजायतेणेकरिनेअमारिज्ञानवातोमां

हेतथाय अने ते ज्ञानतेना अंतरमां उतरे तेणे करिने ते जिवनो मोक्ष थाय छे अने जे विषयी जिव होय तेने तो प्रत्यक्ष ने
विषे रागे करिने प्रीति थाय छे अने ते प्रितिये करिने ते नां इंद्रियो अंतः करणनी व्रतियो भगवानना स्वरूपमां जोडाय छे।
पछे ते संसारना सुखमां थि उदास थाय छे अने तेनो पण मोक्ष थाय छे जेम गोपियो ये कह्युं जे श्रीकृष्ण भगवानना च
रणनो स्पर्श थयो ते दिवसथी संसारनां सुख झेर जेवां थई गयां छे तेम विषयी जिवने प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध थाय
त्यारे तेनां इंद्रियो अंतःकरण भगवानना रूपमां जोडाई जाय छे पछे तेने भगवानना जन्न शब्द सारा लागे तेणे करिने
तेने ज्ञान थाय छे ने ज्ञाने करिने मोक्ष थाय छे अने जे मुमुक्षु होय ते तो प्रत्यक्ष भगवाननी जे ज्ञानवार्ता तेने सांभलि
ने भगवानमां प्रीती करे छे अने तेणे करिने तेनो मोक्ष थाय छे अने मुक्त छे ते तो प्रत्यक्ष भगवानने नजरे जोईने तरत
ते भगवानने विषे प्रिति करे छे ने सर्वे अंतरायनो त्याग करिने भगवाननि मूर्त्तिने विषे चोटि जाय छे अने तेने तो भग
वान सारां वस्त्र पेहेरे अथवा जेवां तेवां पेहेरे अथवा भगवान समर्थपणे वरते अथवा असमर्थपणे वरते तो पण जे मु-
क्त छे तेने तो अलोकिक मूर्त्ति देखाया करे ते रामावतारमां शिवजि जो मूक्त हता तो रामचंद्रजिने वनमां सिता
जि सारु रोता दिठा तो पण रामचंद्रजिनुं अलोकिकमहिमा जाणिने दंडवत् कर्या तेम जे मुक्त होय ते तो प्रत्यक्ष
भगवानने संबंधमात्रेज भगवानने विषे जोडाई जाय छे माटे जे दैवि जिव होय अने ते जे जे भावे अमारि पासे आवशे
ते सर्वेनुं कल्याण थशे अने जे आसुरि जिव होय ते तो अमारि पासे आवे ज नहि अने कदापि आवे तो पोताना पाप
नुं फल लेवा सारु आवेने आविने जे ते प्रकारे अमारो अवगुण लेईने महा दुःखने पामतो थको चाल्यो जाय छे पण
तेने अमारे विषे हेत थतुं नथि जेम चोमासुं आवे त्यारे सर्वे वनस्पति नवापालव थाय छे पण एक जवासो सुकाई
जाय छे तेम भगवान प्रत्यक्ष थाय छे त्यारे दैवि एवा जे पामर विषयी मुमुक्षुने मुक्त तेनुं तो भगवानने संबंधे करिने
कल्याण थाय छे पण एक आसुरिनुं कल्याण थतुं नथी अने ते आसुरि तो भगवान प्रगट थाय त्यारे उलटा दुःखि

याथायछे माटे जेजे भाषे आमारिपासे आवेनेगुण लेईनेदरशनकरेछे तेसर्वेनुं कल्याणथशे॥ ॥

इतिश्रीमुरयसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत् १९ ओगणिसे १९ अढारना चैत्रवदि ३० अमांवास्याने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्रीवलेमध्ये ठाकोरमेघराजजिना दरबारमां उत्तरादाबारना बंगलामां उपले माले गादितकियाउपर बिराजमानथयाहता अने सर्वे जरियानीकोरबलवस्त्र धारण कर्याहतां ने पुष्पना हार कंठमां धारणकर्याहता अने पाघमां फूलना तोरा लटकताहता नेकुमकुमनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मूरवारविंदनी आगल संत मंडल तथा हरि भक्तनीसभा भराईने बेठिहति पछे महाराजे ते हरि भक्तने घणीक ज्ञानवारता करि तेमां एसिद्धांत आव्यो जे निरयासनिक थाय त्यारे जिवनो आत्यंतिक मोक्ष थाय पण ते विना अक्षरधामने नपामे पछे गामरवेरालिना परतापसिंघजिये महाराजने प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज निरयासनिक थवानो श्यो उपायछे तेकहो पछे महाराज बोल्याजे जेम कोई नानो बालकहोय तेने अंधारि कोटडिमां पुरिरारवे अने त्यां कोई मनुष्यनो प्रवेश थवादे नहि अने छेटे थि अन्नजल आपे एविरिते वीसवरसनो बालक थाय तेने पछे बहार काढे त्यारे तेने मनुष्यना व्यवहारनी रवबर कांई जपण पडे नहि अने लुगडां पहेरतां पण आवडे नहिं तेमजत्त नाजिवने भगवानना मारगनी रवबरज नथि अने जेम बिजा बालकोने जेवो जेने संग थाय तेवा गुण ते मां आवेछे ते ब्राह्मणनो बालकहोय तेने नाहावा धोवां विद्याभ्यास करयो संध्यागायत्रि करवाई त्यादिक गुण तेमां आवेछे अने वेपारिनो बालकहोय तेवेपार करवा शिरवे छे अने रवेडुनो बालकहोय ते रवेड करया शिरवे छे ने सुतारनो बालकहोयते लाकडां घडवा शिरवेछे ने सोनिनो बालक सोनुं रूपुं घडवा शिरवे छे अने ते सर्वे एकगाममां रहेताहोय तोपण ब्राह्मणना छोकरांनी बोलचानो रिविहोय अने गरासियानी बोलचानो रिविहोय नेकोलिनां छोकरांनी बोलिनो रिविहोय नेचारणना छोकरानी बोलचा बिजी जातनी होयनेमुसलमानना छोकरानी बोलिनोरवी

होय॥ ने हेडनाछो करांनी बोलि बिजी रीतनी छे ॥ तेमां जेम प्रथम कह्यो जे अंधारि कोटडिमां पुरे लाबालक ने जेम कोई
जन्तु ना व्यवहारनी खबर नथि तेम जन्तु नाजियोने भगवान ना मारगनी खबर नथि॥ माटे तेने खबर करवा सारुं भगवा
न पोते ते ते जे घास्त जाति थईने पृथ्वि उपर मनुष्याकृतिनुं धारण करेछे पछे ते भगवाननि भेगा केटला क संस्कारि जिव
छे ते पण जन्म धरेछे ते संस्कारि जिवने भगवाननो संबंध थायत्ते ते जिव निरवासनिक थायछे पछे जेने निरवासनिक थवा
नी ईच्छा होय तेने ते निरवासनिक पुरुषनो संग करवो तो ते निरवासनिक ने संगे करिने निरवासनि क थवायछे मारे नि
रवासनिक पुरुषनो समागम दृढ करिने करवो एज निरवासनिक थवानो उपाय छे पण ते विना बिजो उपाय नथि एम उत्तर
करिने महाराज त्यांथि उठ्या ते ठाकोर मेघराजजिनो हाथ झालिने बंगले थि हेठा उतरिने लिंमडाना वृक्ष हेठे एक शिवनो
ओटो हतो त्यां जईने घडिक उभा रहिने पछे महाराज घोडिये चडिने पधार्या ते गाममां नांनजि राजगरने घेर पधार्याने
आथमणा बारनि मेडिनी ओसरिमां गादितकिया बिछाविने ढोलिया उपर बिराजमान थया हता अने पोताना मुखार्विंद
नी आगल सभा भराईने बेठि हति पछे संज्या आरती थया केडे महाराज बोल्या जे परमेश्वर छे ते अपार महिमावालो छे
जेम आ लोकमां एक गामनो धणि होय ते थी पांच गामना धणिनो महिमा वधारे कहेवाय छे ने पांचगाम नाथि पचि-
स गामना धणिनो वधारे महिमा कहेवाय छे अने पचिस गामवालाना करतां सो गामवालानो वधारे महिमा कहेवा
यछे अने सो गामना करतां हजार गामना धणिनो वधारे महिमा कहेवाय छे ॥ ने हजार गामवालाना करतां लाख गाम
ना धणिनो वधारे महिमा कहेवायछे अने लाखगामवाला ना करतां क्रोडगामवालानो वधारे महिमा कहेवाय छे ने क्रोड
गामवालाना कर्तां चक्रवर्ति राजानो वधारे महिमा छे ने ते चक्रवर्ति राजानो एक लोक कहेवाय ने एवा चौद लोकनुं
एक ब्रह्मांड कहेवायछे ने एवां अनंत कोटि ब्रह्मांड तेना कर्त्ता प्रकृति पुरुष छे ने एवा अनंत कोटि पुरुष ते अक्षरनाए
क रोम ने विषे अणुंनी पेठे देखाय छे अने एवा जे अक्षर ब्रह्म तेना साधर्मपणाने पाम्या एवा अनंत कोटि मुक्त ते अ-

क्षरधाममांरह्याथका परमेश्वरनिइद्दउपासनाकरेछे तेपरमेश्वरकेवाछे तोअनंत कोटिअक्षररूपमुक्त तेनास्वामिछे॥
नितेनाआधारछे॥ नेतेमुक्तोनेअखंडसुखनाआपनाराछे॥ माटेएवाजेपरमेश्वर तेनामहिमानोअंत आवेएम नथिअ
नेजेभक्त जेटलोएपरमेश्वरनोमहिमाजाणेछे तेवोते भक्तपोतेथायछे अनेपरमेश्वरतोतेथीपरनेअपारमहिमायेयुक्त
रहेछे एवाजेअपारमहिमावालापरमेश्वर तेनुंजेअक्षरधाम तेनेपामवानाबेमारग छे तेमांएक सदाचरणनेबिजुं
ज्ञान एबेमार्गेकरिनेअक्षरधाममांजवायछे तेमांसदाचरण तेशुं तो धर्मज्ञान वैराग नेमहात्मेसहितभक्ति तेनेविषेउ
मक ह्यं होय ते प्रमाणे मनक्रम वचने दृढपणे वर्तवुं नेतेमांकोई दिवस फेरपाडवो नहिं तेनुंनाम सदाचरण छे॥ अने
तेधर्मज्ञानवैरागनेमहात्मेसहितप्रत्यक्षभगवाननी भक्ति तेनास्वरूपनेयथार्थजेमछे तेम सत्पुरुषथकि जाणवुं॥
नेतेमांकोई दिवससंशयथाय नहिं तेनुंनाम ज्ञानछे हवे तेमां धर्म तेशुं तोइंद्रियोनीवृतियोनेमाईकपंचविषय थकी
पाछिवालिने भगवाननी भक्तिमांजोडिदेवियो तेनुं नामधर्म छे अनेज्ञाननुंरूप एछे जेदेहथिनोरवोजे आत्मातेने
पोतानुंरूपजाणिने भगवाननीउपासनाकरवि अनेवैरागजेप्रकृतिनाकार्यनेकागविष्टातुल्यजाणीने भगवानने
विषे अचलप्रित्तिकरवि नेमहात्मेसहितभक्तिनुंएरूप छे जे सर्वजक्तना कर्ता हर्ता नेपालक नेसर्वेनाआधार
एवाजे परमात्मा भगवान तेप्रत्यक्षमुनेमल्या छे एमजाणिनेते भगवाननीश्रवण किर्तनादिक नवधा भक्तियेस
हित प्रत्यक्षभगवाननीमूर्त्तिनेविषे अनंतप्रितियेसहित जोडाईजवुं तेनुं नाम माहात्मेसहित भक्ति कहेवाय
एरिते समजिने भगवाननीभक्तिकरे ते भगवानना अक्षरधामनेपामे छे॥ ॥इतिश्रीमुख
सिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत॥१९॥ आगणिशे॥१९
॥ओगणिसनाअषाडशुदि २ बिजनेदिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्रीकमलेजमधे जोशीजेठाने
घेर उगमणेबारओरडानीओसरिमां हिंडो ल्यारयाटउपर गादितकियाबिछावीने बिराजमानथयाहता अनेश्री

तखेसपेहेर्योहतो नेमधरासियानुं अंगरखुं धारण कर्युंहतुं अनेगुलाबिरंगनौ फेंटो मुस्तकेबांध्यो हतो नेकसंबल
पटको रवभेनाख्योहतो नेपुष्पनाहार तोरा नेगुछ धारण कर्याहता नेपोताना मूर्त्यार्विंदनिआगळ साधुतथा घणाक
हरिभक्तनी सभा भराईनेबेठिहती पछे धर्मानंदस्वामियेप्रश्न पुछ्युंजे हेमहाराज पूर्वेरामकृष्णादिक भगवान तथा
नारदसनकादिक संत तथाजेजेमहात्मापुरुषथई गया तेणेएम कह्युं छे जेदेह खोटो छे नेदेह संबंधीपदार्थ तेपणना-
सवंत छे अने पंचविषय छे ते हलाहलथि रव छे ने तेने भोगववेकरिने जिवनेजन्ममृत्यु चोरासिगर्भवासादिकना
अपारकष्ट भोगववां पडे छे अने सर्वे प्रत्यक्षपण देखे छे जे देहपण सर्वेना नासथई जाय छे अने पदार्थ पण नासपामी
जायछे तो पण जिवनेदेहमांथिप्रितिटळति नथि नेपंचविषयनो त्यागथतो नथि अनेदेहनेकांईक रोग थयो होय अ-
थवा कोईएम कहेजे तारो देह पांचदिवसमां पडि जशे तो तेनि घणिक चिंताथाय अनेतेना अनंतउपाय करवा मंडिप
डे पण आत्मा नेपंचविषयनिवासना रूपिमहारोग थयो छे तेने टाळवानो उपाय जिव करतो नथि॥ तेनुं शुंकारण
हशे तेकहो पछेमहाराज बोल्या जे एजिवने अनादिकाळथि विपरीतभावना थई छ तेनेसतपुरुष मोह कहे छे माया
कहे छे अनेतेमोहनेमाया तेने जिवपोतानि मेळे कोईकाळे टाळवाने समर्थनथि माटे एमोहनेमाया टळवानो तो ए
कजउपाय छे जे मायापर एवा जे परमात्मा तेप्रथ्वी उपर प्रगट थया होय अने ते परमात्माने शरणे जेजे जिव आवे तेनपर
मात्मापोते पोताने श्रीमुखेकरिने जिवनेदेहना मिथ्यापणानुं ज्ञान करावे तथा पंचविषयनुं दुःखरूपपणानुं ज्ञान
करावे तथा आत्माना स्वरूपनुं ज्ञान करावे तथा परमात्मा पोताना स्वरूपनुं ज्ञान करावे त्यारे ज जिवने साक्षात्कार ज्ञा
न थाय छे पण ते विना एक लेश शास्त्रने साभळवे करिने तथा वांचवे करिने ज्ञान थाय नहि तथा पंचविषयना रागि एवा
जे असत्पुरुष तेने संगे करिने चहाय एटलां शास्त्र सांभळे ज्ञान सांभळे साधन करे पण ज्ञान थाय नहिं अने एम
बिजा कोईथकि ज्ञान थतुं होय तो भगवानने वारमवार प्रगट थवानुं शुं काम पडे अने असत्पुरुषनो समागम पण

शरीरमां अतिशे दुर्लभ कह्यो छे अने पूरवे पण जेने जेने प्रगट परमात्मा मल्या छे तेनांज कल्याण थयां छे माटे एवा मायापर स्थिति वाला जे महात्मापुरुष तेनो समागम करिने ज्ञान पामे त्यारे एजिवने मोहने मायाटले अने देहदेह्यादिक सर्व पदार्थमां वैराग थाय अने जिवने भगवानमां प्रितिथाय त्यारे ते जिवनो मोक्ष थाय हवे ते प्रगट एवा जे परमात्मा ते के विरिते जिवने ज्ञान करावे छे तो प्रथम माया नो भाग जे चोविस तत्व तेनो विवेक करावि ने ते थकि आत्माने नोखो पाडिने देहरूपि मायाटलावे छे अने ज्यारे देहरूपि मायाटले छे त्यारे ज जिव पोताना स्वरूप ने जाणवाने समर्थ थाय छे अने परमात्मा ने पामवानो अधिकारिपण त्यारेज थाय छे अने ते परमात्मानुं ज्ञान ज्यारे इंद्रियो मां थाय छे त्यारे स्थूलशरिरना विषय सर्वे निवरति पामे छे अने तेने धर्म पण दृढ थाय छे अने ज्यारे अंतःकरणमां परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे त्यारे सूक्ष्मशरिरमांथी पंचविषयनि वासना रूपी मायाटले छे अने अनुभवि जे आत्मा तेने विषे परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे त्यारे कारणशरिरनी वासनारूप जे महामाया तेनो नासपामे छे एवि रिते इंद्रियो अंतःकरण ने अनुभवमां परमात्माना स्वरूपनु ज्ञान साक्षात्कार थाय छे त्यारे ज तेने यथार्थ जेम छे तेम पोताना स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे अने पंचविषयना राग पण निवरति पामि जाय छे अने प्रत्यक्ष एवा जे परमात्मा तेना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय छे तेएवो निश्चय आत्मानंद स्वामिने हतो तथा भाभुने पण एवो निश्चय हतो तो ज्यारे अमारि इच्छाये करिने भुंडो देश काल आव्यो तो पण तेनो रंग एषोने एवो रह्यो पण तेने लेशमात्र मनमां शोक न थयो अने अद्भूत आनंदमां अखंड रह्या अने श्री टिबामां डोसियो ने एवो अडग निश्चय हतो तो तेने ज्यारे शरिर वायेरहि गयुं ने शरिरमां पिडा थवा मांडि त्यारे अमे कह्युं जे पिडा के वि कथाय छे त्यारे अमने कह्युं जे ए तो देहने पिडा थाय छे पण हुं जे आत्मा ते मारे रंचमात्र पिडा नथि केम के देहनुं तो प्रमाण कर्युं छे जे देह तो जड ने दुःखरूप ने नासवंत छे अने जो समजणमां कोई रितनी कसर होय तेनो खरखरो थाय पण तेतो तमे कृपा करिने सर्वे कसर काढि नाखि नाखि छे

माटे देहमां रंचमात्र स्वार्थ नथि ते सारूं देह तो गमे त्यारे पडे पण तेनो हरष शोक नथि अने पूर्वे पण जे जे भगवानना भक्त
थई गया ते ने जेटलो जेने निश्चय तेटलो तेने देहनो अनादर ने तेटलि तेने पंचविषयनि वासना टलि छे एसिद्धांत
वारता छे अने जेने जेने जे विस्थिति तेप्रमाणे तेनां वचन पण शास्त्रमां लखाणां छे ते जे बुद्धिवाला होय ते ने जाण्यामां आ
वे छे एटलि वारता करिने पछे संतकिरतन गावा लाग्या ॥ ॥इति श्रीमुखसिद्धांतस मा प्तः॥
॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥ संवत् १९ ओगणिशो १९ ओगणिसना अषाड
शुदि ११ एकादशिने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री कमलेज मधे जोशि जेठाने घेर उगमणे बारओ
रडानी ओसरिमां हिंडोलाखाट उपर विराजमान थया हता अने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ने सर्वे अंगने
विषे मोगराने जाईना पुष्पनां आभूषण शोभि रह्यां हतां अने ललाटने विषे केसर चंदननि अरचा ने कुमकुमनो चांद
लो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगल मुनी तथा घणाक हरिभक्तनि सभा भराईने बेठि हती पछे महारा-
जनि संध्या आरति थया केडे श्री भावनगरना हरिभक्त जोशि अमृतलाल तेणे हाथ जोडिने कह्युं जे हे महाराज एक ब्रा
ह्मणे चार प्रश्न पुछ्यां छे तेनो उत्तर कृपा करिने कहो अने ते प्रश्नना नाम जे एक तो एम पुछ्युं छे जे भगवाननो अवतार
धर्म स्थापन करवा वास्ते थाय छे तथा साधुनां रक्षण ने अर्थे तथा दुष्टने दंड आपवाने अर्थे थाय छे एम गितामां क
ह्युं छे ते हजु सुधि धर्म स्थापन तथा साधु पिडानी निवृति केम थई नथि तेनुं शुं कारण १ एक तो ए प्रश्न अने वलि भग-
वाननो अवतार गंगा यमुनादिक महानदिने तीरे थशे एवुं भागवतना द्वादस स्कंधमां कह्युं छे अने ते विना अव
तार थयो तेनुं शुं कारण ए २ बिजु प्रश्न अने भगवाननि मूर्ति जेटला अवतार धारण करे छे त्यारे संस्कृत वाणी
ये चार वेदनो अर्थ प्रकाश करे छे अने आ अवतारमां प्राकृत वाणि थि व्याख्यान करे छे तेनुं शुं कारण ए ३ त्रिजुं प्र
श्न अने भगवाननो अवतार थाय छे त्यारे अति मानसिक पराक्रम प्रकाश करे छे ते हजु सुधि कसुं नहि तेनुं कारण

भुंएध चोथुं प्रश्न छे पछे एप्रश्नमां भक्तिने महाराज बोल्या जेमां भलो एनो उत्तर करिये जे धर्म स्थापवा अवतार थाय छे ते धर्म कियो तो एकांतिक एवो जे भागवत धर्म तेने स्थापवा अवतार थाय छे ते भागवत धर्म नुंशुं रूप छे तो धर्म ज्ञान वैराग ने महात्मे सहित भक्ति ते भागवतधर्मनुं रूप छे हवे तेमां धर्म ते शुं तो श्रुति स्मृति मां कह्या जे वर्णाश्रम ना धर्म तेमां दृढपणे रहिने पंचविषय थकि इंद्रियोने पाछां वालिने भगवानना सेवामां राखवां ते नुं नाम धर्म कहेवाय अने ज्ञाननुं रूप ए छे जे चोविस तत्वरूप जे मायानुं टोलुं तेनां रूप जेम छे तेम यथार्थ जाणिने ते थकि नोखो ने सद्रूप ने प्रकाशवान ने जाणपणे युक्त ने अमर अजर सुखरूप सत्तारूप एवो जे आत्मा तेने विषे दृढ स्थिति पामिने मायाना रोला ने क्षोभ पमाडे एवा जे माईक पंच विषय संबंधि सुख दुःख तेमां सम भाव अखंड रहे के हेतां माईक सुख दुःखे करिने तथा मान अपमान तथा हानी लाभ ने विषे लेशमात्र हरख शोक ने पामे नहिं तेनुं नाम ज्ञान कहेवाय अने वैरागनुं एरूप छे जे देह देहादिक मायामांथी उपन्या जे आलोक परलोक संबंधि पिंड ब्रह्मांड तेने चार प्रकारना प्रलये करिने नासवंत जाणिने तेनो अंतरमां राग जे प्रिति तेनो त्याग करिने ने ते पिंड ब्रह्मांडादिकने अतिशे महा दुःखरूप ने काग विष्टा तुल्य जाणिने ते थकि अतिशे उदास थईने पोताने मल्युं जे भगवाननुं स्वरूप तेने विषे अखंड प्रिति रहे केहेतां प्रगट महात्मा पुरुष जे नेम ले अने अनंत जन्मनो जेने सुभ संस्कार होय तेने ज एवो वैराग प्रगटे छे ते पूर्वे देहूतिने प्रगट भगवान मल्या तो तेने एवो वैराग प्रगट्यो हतो तो तेणे कपिलदेवने कह्युं के हे महाराज हुं पंचविषयने दुःखरूप जाणिने तेनो त्याग करिने तमारा चरणने पामी छुं एविरिते घणाक भक्त गोपियो तथा प्रल्हादादिक ते प्रगट भगवानने पामिने पंचविषयनो त्याग करिने भगवान पासे अखंड एकांतिक भक्ति मागि छे पण ते भगवाननि मूर्त्तिनी सेवारूप जे एकांतिक भक्ति ते विना बिजुं कांई माग्युं नथि एम जेने वरते तेनुं नाम वैराग कहिये अने धर्म ज्ञान वैराग ने दृढ करिने अनंत कोटि ब्रह्मांड उडे छे जेना एक देशने विषे एवुं जे अक्षर ब्रह्म ते रूप पोते थईने

ते अक्षरना आधार एवा जे परब्रह्म पुरुषोत्तम पोताने मल्या जे प्रत्यक्ष भगवान तेने विषे महात्मे सहित अतिशे प्रिति
तेने भक्ति कहे छे अने तेने एकांतिक धर्म कहे छे तथा आत्यंतिक ज्ञान कहे छे माटे ते धर्म स्थापवा सारुं भगवानना अ
वतार थाय छे पण ते धर्म सत्संग कर्या विना जाण्या मां आवे एम नथि अने दुष्टने दंड देवाने अर्थे अवतार थाय छे
ते दुष्ट कोण छे तो जिवने दुःख आपे ते दुष्ट छे ते जिवने दुःख कोण आपे छे तो जिवना अंतरशत्रु जे काम लोभ स्वाद स्नेह
ने मान ते अनादि कालथयां जियने दुःख आपे छे माटे काम लोभादिक तेज दुष्ट छे पण बिजो कोई जक्तने विषे दुष्ट
नथि माटे ते दुष्टनो भगवान नाश करे छे ते भगवान प्रगट थाय छे त्यारे तेने शरणे जे जिव आवे तेने पूर्वे कह्यो जे एकां
तिक धर्म तेने दृढ करावे छे त्यारे ते भक्तजन एवा जे साधु तेने आ लोक परलोकने विषे कोई दुष्ट रहे तो नथि ते पण
श्रीमद भागवतने विषे कपिलदेव भगवाने माता देवहूतिने कह्युं छे जे हे मात साधु केवा छे तो नथि उतपंन्न थयो
शत्रु ते जेमने एवा छे माटे जेने शत्रु ज कोई जक्तमां नमले त्यारे तेने पिडा पण होयज नहि अने जे लौकिक दृष्टिवाला
छे ते पिडा देखे छे अने जे साधु छे ते तो एम जाणे छे जे अमारा शत्रु जे कामादिक ते ना शत्रु जक्तना जिव छे माटे श
त्रुना शत्रु ते तो मित्र ओलखवाय अने जे जे असुर कहेवाया छे ते पण जेने विषे कामादिक अतिशे वृद्धि पाम्या छे
तेणे करिने असुर कहेवाया छे माटे ए कामादिक दुष्टने ज्ञाने करिने भगवान नास करे छे अने भगवानना अ
वतारनी रित पण जुदि जुदि छे केमके रामावतारनि जुदि रिति हति ने कपिलदेवनी जुदि रित हति ने ऋषभदेव
नि जुदि रित हति ने वामनजिनी जुदि रित हति ने श्रीकृष्णनी जुदि रित हति माटे भगवान छे ते तो स्वतंत्र छे ने कर
वुं म करवुं ने अन्यथा करवुं छे ते पोतानी ईछामां आवे तेम करे छे अने पूर्वे कह्यो जे एकांतिक धर्म ते तो सर्वे अवता
र स्थापन करे छे अने गौरक्षा करवुं कह्युं ते गायो चार विए मन थि केमके कृष्णावतार विना बिजे किये अवतारे
गायो चारि छे त्यारे तेनो एम अर्थ छे जे वरसातादिके करिने पण रक्षा करे छे अने वलि गौ कहेतां पोताने शरणे

आव्याएवाजेदेहे विनेमुमुक्षुजिव तेनेकामादिकथकि रक्षाकरेछे अने बिजाप्रश्ननोउत्तर जेगंगायमुनानीतिरे अवतार
थशेतेतोज्यां भगवान प्रगट थाय त्यांज सर्वे तिर्थ आविने निवास करेछे एम जाणिने व्यासजिये लख्युं छे अनेशास्त्रनाम
र्मनेपण जाणिशकाय एम नथि तेभागवतमां व्यासजिये कह्युं छेजे अहंवेत्ति शुको वेति संजयो वेति वानवा भक्तिया भा-
गवतं शास्त्रनसबुद्धिनटिकया माटेजे जे अवतारथाय छे तेने एधाणराखिने कोणे यओ लख्या नथि केमकेसर्वेनेभ
गवानओलखवानोतोखपछे तेकृष्णावतारमां रुषि यज्ञकरताहता अने शास्त्रनापण भणेलाहता माटे तेणेशुं एधाण
नहिं राख्यां होय जे श्रीकृष्णअन्न लेवागयाने न आप्युं माटे सो वातनि एकवात जे प्रगट भगवानसमागमकर्यार्थीओ-
लखायछे तेपण जेदैविने संस्कारिहोय तेज्ञानेकरिने ओलखेछे हवे त्रिजाप्रश्ननो उत्तरजे भगवानना अवतारजे जेथया
तेएे चारवेदनो अर्थ प्रकाशकर्योहे ने आ अवतारमां प्राकृत वाणियेकरिने व्याख्यानकर्यांछे ते तोसमज्याफेरछे केम
के प्रथमतो प्राकृतने संस्कृत सब्दने जाण्योजोईये ते जे प्रकृतिना कार्यमां मोहपामिने चारवेद कंठेथि मुख पाठेक हिजाय
तोपण ते प्राकृत वाणि छे अने जे पुरुष मायापर स्थितिमां रह्या थका जिवोना कल्याणने अर्थे ज्ञानबोध आपताहोय तेगमे
तो संस्कृत वाणिये बोधआपे अथवा गूजरातिवाणिये आपे अनेगमे तो हिंदुस्थानिवाणिये बोधआपे अथवा आरबिमु-
सलमानि अंग्रेजि काठियावाडि बालाकि गमेतेवी वाणि बोलिने ज्ञानउपदेश आपे पण जो मायापर स्थितियेरहिने मायाप
र ज्ञान आपे छे तो ते सर्वे संस्कृत वाणी छे ने वेदनुं व्याख्यान करेछे अने ते विना जे जे बोलेछे ते सर्वे प्राकृतवाणी छे
माटे तेपण बोतकरे सत्संगा तबहोय संषयका मंगा अने श्रीकृष्णभगवाने अरजुनने तथा उधवजिने वातकरिने जे ज्ञान आप्युंछे
अने रामचंद्रजिये पण पोताना भक्तोने वाते करिने ज ज्ञान आप्युं छे तथा रुषभदेवे तथा कपिलदेवे पोतपोताना भक्तो
ने वातो करिने ज ज्ञान आप्युं छे अने श्लोक बांधिने शास्त्र तो पछे व्यासजिये कर्या छे एत्रिजा प्रश्ननो उत्तर छे हवे चोथा प्रश्न
नो उत्तर एछे जे भगवान अति मानसिक प्राक्रम अवतारधारण करिनेकरे छे तेतोजे एभगवानना एकांतिक भक्त होय ते ॥

तेजाणेछे पण बिजाने प्रगट भगवान नां अद्भूत प्राक्रम तेजाणपामां आवतां नथि अने भगवाननुं अति मोटुं प्राक्रमां छे तो जिवने ज्ञान आपिने पंचविषय नीवासनामुकाविने ब्रह्मरूप करिने जिवने पोताना धामने पमाडवो ए काम एक भगवान विना बिजाकोई थि थाय एम नथि अने ते विनाजे श्रीकृष्णे दैत्य मारया तथा गोवरधन तोल्यो एवां कांमक रयां ए कांई भगवाननुं काम नथि केमके एवां काम तो बिजा मनुष्य पण करे छे तेरामा अवतारमां हनुमानजि डुंगरोला वताह ताते मांथि कटको पडिगयो तेनुं नाम गोवरधन तेने उंचो कर्यो तेणे करिने शुं भगवान कहेवाय अने तेणे करिने जो भगवान कहेवाता होय तो तो हनुमाननि पण भगवान कहेवाय मारे भगवानना प्राक्रमने तो भगवाननाएकांतिक संत छे ते जाणे छे विस्तारना भयथी झाझुं लख्युं नथि अने कल्याण नो खप होय तो समागम करवा आवजो तो तमारा मनना संषय मात्र नेटालिने निरसंषय करिशुं ॥ ॥इति श्रीमुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥

श्रीहरिकृष्णायनमो नमः॥ ॥संवत् १९ ओगणिशे १९ ओगणिसना श्रावण शुदि १३ ते रदाने दिवसमहाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री कमलेज मध्ये जो सिजेठाने घेर उगमणे बार ओरडानि ओसरिमां हिंडोलाखाट उपर विराजमान थया हता ने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने मुस्तक उपर कसुंबल फेंटो बांध्यो हतो ने कुमकुमनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंद निआगल संत तथा घणा कहरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हति पछे महाराजनी आर्त्ति धून्य करिने सर्वे सभा बेठि पछे महाराज बोल्या जे सर्वने एक प्रश्न पुछुं छुं जे तप करवो ते देहाभिनी होय तेने करवो के देहाभिमाने रहित होय तेने करवो ते कहो पछे धर्मानंद स्वामिये कह्युं जे जेने कल्याण नो खप होय अने जेने देहाभिमाननो त्याग करवो होय तेने तप करवो पछे महाराज बोल्या जे ते तपमां कांई भेद छे के नथि पछे वलि धर्मानंद स्वामिये कह्युं जे तपमां त्रण भेद छे ते भेद कियातो उत्तम मध्यम ने कनिष्ट एवा भेदाना त्रण भेद छे पछे महाराज बोल्या जे हवे ते भेदने कहिये छीये जे प्रथम जिव सतगुरु पासे आवे छे त्यारे तेने अधर्म-

नात्यागरूपितपकरावेछे पछे तेनियमरूपीतपजेमजेमकरेछे तेमतेम तेजिवबलनेपामतोजायछे अनेदेहाभि
मानपणतेनेओछुंथतुंजायछे पणतपकर्याविनादेहाभिमानटळतुंनथि मारेजेने भगवानने प्रसन्नकरवाहोय
नेपोतानाआत्मानेअविनासिसुख पमाडवुंहोय तेने तो देहनेदुःखथाय तोपण तपजरुरकरवो अनेजेजेसतगुरुनी
आज्ञाप्रमाणेवरतेछे तेनो तपधर्मे करिनेजाणवो अने ज्ञानीछे तेणे तो देहथकिपोतानाआत्माने नोखोमान्योछे
नेदेहनेदुःखरूपजाणेछे ने तेदेहने तपे करिने सदायदंड दिधाकरे छे केमकेदेहनुं तो एऐप्रमाणकह्युं छे जेदेहनुंअं
तेकृमि विष्टाने भस्मएत्रणसंज्ञाथनारिछे पण देहमांथि कांई सारवस्तु निसरवानि नथि अनेवलि ज्ञानिएमजा
णेछे जेदेहनेजोपुष्टकरिशुं तो तेमांथि कामक्रोधादिक अंतरशत्रु जागशे एमजाणिने ज्ञानिजे ते सावधान थकोत
पव्रतादिके करिनेदेह इंद्रियोनेदम्या करेछे अनेजो ज्ञानने मानेकरिने भोलप्यराखिने तपनकरेने पंचविषयमां-
थिमांएके विषयनो संबंधराखे तो ते ब्रह्मस्थितिमांथि जरूर पडिजायए सिद्धांतथारताछे मारे एमजाणिने ज्ञानी
छे ते भोलप्यराखिने विषयनो संबंधराखेजनहि अने तपव्रतादिक नियमने दृढकरिने राखेनेतेतपनेविषेज अखंड
स्थितिरहेनेते तपमांजआनंदपामे तेतप ज्ञानेकरिनेजाणवो अने एविरिते ज्ञानिनो तपधर्मथालानाकरतांघणो
जश्रेष्ठछे अने हवेत्रिजो तपजे ते वैरागे करिनेछे अने ते तपज्ञान करतां पण अतिउत्तमछे केमकेजे वैराग्ये करिने
पिंड ब्रह्मांडनो चारप्रकारना प्रलयेकरिने नासवंतपणानो दृढठरावकर्यो छे ते मारे वैरागवानने देह इंद्रियोउपर
सदायवैरभाव वरत्याकरेछे अने वैरागनुंपण एज रूपछे जे सदाय देह इंद्रिने तपव्रतादिके करिने दंड दिधा करवो
पण ते देह इंद्रियोने कोई रिते विषयनो संबंधथवादियेजनहि ने तेने देह इंद्रियोउपरशत्रुभावज वरत्याकरे एवि
रितना वैरागवाननो तपते तो अतिउतकृष्टसुखनेपमाडेएवो छे अनेहवे चोथो तपजेते भक्तियेकरिने थायछे अ
नेतेतपतो अद्भूतएवुंजे अलोकिक अविनासिसुख तेने आपेएवो छे केमके भक्तितो ब्रह्मरूपथाय त्यारे प्राप्त

थायएविछे अनेज्यारे भक्तिप्राप्तथई त्यारे ते भक्त ब्रह्मरूपथयो थको परमात्माने विषे ध्याने करिने सलग्न जोडाई जाय
छे माटे एविरितनि भक्तिवाळानो जे तपछे ते तो अतिशे अपारसुखनो आपनारो छे माटे जेने पोताना आत्माना मो
क्ष करवानो स्वपहोय तेने तो पोतपोताना धर्ममां रहिने तप जरूर करवो अने जे तप करे छे तेने जमोक्षनो मारग जडे छे
पण तप कर्याविना मोक्षनो मारग जडतो नथि अने तपविना केटलाक देहाभिमानी छे ते चार वेदने खटशास्त्रने
अढारपूराणादिक इतिहास तथा महावाक्यना मंत्र तेने निरंतर पाठ करे अने आत्मापरमात्माना स्वरूपनुं निरूप
ण कर्या करे तो पण तप विना सर्वे वृथा छे केम के ज्यां सुधि तपे करिने पंचविषयनो त्याग नथि कर्यो अने इंद्रियो जि
तियो नथि ने जिभे करिने एम कहे छे जे हुं ब्रह्म छुं तो पण तेने तप विना ब्रह्मना देशानी गम पडतीज नथि अने तपवि
ना ने पंचविषयनो त्याग कर्या विना कहे छे जे हुं ब्रह्म छुं तेने तो ब्रह्म बकवा थयो जाणवो अने तेने तो देहाभिमानी
जिव कहिये अने जे अतिशे देहाभिमानी होय ते णे तप तपने त्याग थतो नथि माटे देहाभिमान जेवुं कोई मोटुं पाप नथि
अने तपने त्यागे रहित पुरुषने तो चंडाळतुल्य जाणिने कल्याणना खपवाळाने तेनो संग करवोज नहि अने तपने-
त्यागे जुक्त एवा जे संत तेनो संग करवो अने मोक्षना खपवाळाने एम समजवुं जे मारा आत्माने विषे भगवान रह्या छे
माटे जो माराथि भगवाननी आज्ञामां फेर पडशे तो मारा उपर भगवाननि कुमेहेरबानि थशे एम जाणिने भगवाननी
आज्ञा द्रढपणे पाळवि ते भगवाननी आज्ञा शि छे तो धर्मज्ञानवैरागने महात्मे सहित भक्ति तेने द्रढ करवां अने ते ध
र्मज्ञानादिक पण तपे करिने निर्विघ्नपणे सिद्ध थाय छे अने तपविना तो जेम विधवा स्त्रि शणगार सजे ते शोभे नहि
ने उलटुं कलंक लागे तेम तप विनाना बिजा अनंत गुणो होय ते सर्वे कलंकरूप थई जाय छे अने ते गुण तपत्यागवि
नाना होय ते विधवाना शणगार निएके शोभे नहि माटे जेने भगवानना अक्षरधाममां जवानी ईच्छा होय तेने त
पने त्याग जरुर करवो अने तपने त्याग जेने हशे तेज भक्त निर्विघ्नपणे भगवानना धामने पामशे। ॥

इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत१९ओगणिशे
१९ओगणित्रानाश्रावणशुदि१५पुन्यमनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीकमलेजमछेजोसिजेठाने
घेरउगमणेबारओरडानीओसरिमांहिंडोलाखाटउपरविराजमानथयाहतानेसर्वेजरियानीवस्त्रधारणकर्याह-
तांनेपुष्पनांआभूक्षणसर्वेअंगमांशोभिरह्याहतांअनेहस्तकमलनेविशेडोलरनापुष्पनोगुच्छधारणकर्योह-
तोनेललाटनेविषेकेसरचंदननीअरचानेकुमकुमनोचांदलोकर्योहतोनेपोतानामूखार्विंदनीआगलसाधु
तथादेशदेशनाहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठिहतिपछेमहाराजनीआरतिधून्यकरिनेसर्वेभक्तजनबेठापछे
भक्तजेठेप्रश्नपुछ्युजेहेमहाराजकेटलाकजिवभूतप्रेतादिकतथाडाकेणधिरादिकनुंनामलेईनेधूणेछेनेजि
वहिंसातथादारूमांटीआदिकनुभक्षणकरेछेनेपापनिप्रवृतिजेवुजणायछेतेएतेसाचुंहशेकेखोटुंहशेतेकहो
पछेमहाराजबोल्याजेएतोआविश्वमांबेप्रकारनाजिवछेतेमांएकदैविजिवछेनेएकआसुरिजिवछेतेजेआ-
सुरिजिवछेतेतोअसतगुरुनेशरणेजायछेतेअसतगुरुकेवाछेतोकामिक्रोधिलोभिस्वादिमानिछेअनेतेअ-
सतगुरुनेमतेविश्वनाकरताभगवानजनथिअनेकालकर्मस्वभावतेणेकरिनेविश्वएनिमेलेथायछेएमअसत
गुरुसमजेछेअनेवलिपाखंडिएवाजेअसतगुरुतेजेतेभोलालोकोनेधुतवासारुंनेपोतानेदारुमाटिनुंभक्षण
करवुंहोयतेसारुंक्षुद्रएवाजेदेवतेनेविषेभोलानेविश्वासिनेआसतार्थेधावेछेतेक्षुद्रदेवकेवाछेतोकेवलवे
हेममात्रछेपणसत्यनथिजेमनानाबालकनेकहेजेघरमांबाघड्यछेएमकहिनेबिवरावेछेनेतेबालकपणभ
यनेपामेछेपणबाघड्युवस्तुगतेनथितेमपाखंडिएवाजेअसतगुरुतेणेठराव्याएवाजेमेलडीनेसिकोतरनेभूत
नेप्रेतनेडेणनेडाकेणनेवीरनेचुडेलनेएआदिकजेसर्वेतेमिथ्याछेपणबालकजेवाजेभोलानेमूरखनेअज्ञानि
तेनेधुतवासारुंखोटांखोटांवेहेमनाख्यांछेपणएसत्यनथितोपणपाखंडिएवाजेअसतगुरुतेजेतेभोला-

लोकोने तेनी आस्ता बंधावे छे अने तेनी उपासना करावे छे त्यारे कोई एम कहे जे एवा पापरूप पंथ जक्त मां केम चाल्या
हो तो कामी एवा जे आस्करि गुरु तेने काम भोग वधा सारु एवा खोटां देव देमनां नाम लेईने एवि जे पापणि स्त्रियो जेने एक
पुरुष थकि घरपत्य थतिन होय ते एवा फेल करिने आस्करि पुरुषना संग करे छे अने वलि अति लोभि एवा जे असत
गुरु ते धन्य धूतवा सारु विसवासि ने भोला लोकोने आगल असत्य देवोनां नाम लेईने पापने मार्गे चडावे छे ते केविरि
ते पाप करे छे तो पाखंड मारगने विषे प्रतिति वाला एवा जे अज्ञानी जिव तेने पूर्वनां पापे करिने कांईक रोग थाय त्यारे
ते आस्करि एवा जे असत गुरु ते पासे जाय पछे ते लोभि गुरु एम कहे जे एने तो वलगाड वलग्यो छे ते मातानि मानता क
रो अने भूवा पासे दाणा जोवरावो पछे भूवो दाणा खोटा खोटा जोइने कहे जे डाकण मंडाव बाजोई रो अने तेनी आवर-
दा तो आ विरहि छे पण माता एम कहे छे जे मारां निवेद करो ने एना जिव साटे एक जिव आपो ने मारा पो डिया ने एक
उतार आपो तो तेने सारु थाय पछे ते पापिनां पाप भेगां थयां होय तेणे करिने असत पुरुषनी प्रतिति आवे छे ने तेवां
पाप कर्म करे छे अने आस्करि गुरु तेनु द्रव्य सर्वे भेगा थईने धुतिजाय छे अने वलि केटलि एक पापणि स्त्रियो होय
ते चार प्रकारे वलगाड नुं ल थालो तर बिरडा केण चुडेला दिकनुं नाम लेईने केवल ढोंग करे छे ते मांएक तो भोलि
स्त्रि होय ने तेने कांई रोग थाय त्यारे एम कहे जे मुने तो कोईक वलग्यु छे एम भोलपणे करिने मानिलिये छे अने
बिजि जे स्त्रि आलसु होय ते कामकस्यानि आलसे करिने एम कहे जे मुने तो वलगाड वलग्यो छे ते मारा जिवने सुखपा
ण रहेवा देतु नथि एम परपंच करिने बेसि रहे अने कोई घरनामाण सकहे तो ढोंग करिने पडिजाय ने बोलेचाले
नहि ने वलि क्यारे करवोटं खोटुं धूणे ने घरनामाणस सर्वे ने बिवरावे एवि रिते कपट करिने बेठि बेठि खाय अने त्रि
जि स्त्रि छे ते सोख कास्नैं धूणे छे ॥ ने चोटलाव धारिने बिजा पुरुषने देखाडे छे अने केटलाक देवदेविओनां
खोटा खोटा नाम लेईने जक्त मां भूवे कहे वाईने पूजाय छे एवो सोख करे छे अने जे चोथि स्त्रि छे तेने कांतो

पोतानो पुरुष होय ते गमतो न होय ने कांनांनो होय ने पोते मस्तानि होय अने पोताने विभिचार करवो होय पछे बलगाडनुंत
थालो तरनुं नाम लेईने विभिचारियाएवा जे असत्‌गुरु ने तेना संगि तेनि साथे विभिचार करे छे अने ते विभिचारिया पुरु
षने जो दारु पिवो होय के मांस खावुं होय तो पोते खोटुं खोटुं धुणिने कहे जे माताने दारु मांसनो भोग आपो नि कर कोई क
माणसनो घात थशे एम बिक देखाडिने दारु मांसना भोग धरावि ने ते असत पुरुषने भक्षण करावे छे अने जो तेने लो भ हो
य तो पोते एम कहे जे आ रस्तो उत्तार जो ईद्रो ते आपो एम कहिने तेना घरनां माणसोने हेरान करे छे अने पोते विभिचार
करे ने जे विभिचारणि स्त्रि होय तेने पोताना घरनी खेव ना होय नहि माटे एवि चार प्रकारनि स्त्रियो अने आसुरि एवा जे का
मिलोभि स्वादि मानि गुरु ने तेना शिष्य ते भेगा थईने एवां भूतप्रेतादिकनां नाम लेईने अधर्म कर्म करे छे माटे एया क
र्मना करनाराने खोटा भूतप्रेतादिक वेमने माननारा ते आलोकमां पण महादुःखने पामे छे अने मरिने घोर नर्कमां
पडे छे अने तेने जमना दूत माथामां मुदगलना मार मारशे अने तेनो कोई काले छुटको थतो नथि केमके अधर्म कर्म कर
वासारु केवल जे वस्तु भूतप्रेतादिक त्रण कालमां सत्य नथि तेनुं नाम लेईने जक्तमां केटलांक भोलां लोकोने हेरान
करे छे ते पापे करिने जमनादूत तेने नर्कमांथि पाछा काढता नथि माटे जेने पोताना आत्मानुं रुडुं करवानि ईच्छा
होय तेने एवा अधर्मि पुरुषोनो संग करवो नहि अने दैविएवा जे धर्म ज्ञान वैराग ने भगवाननि भक्तिये युक्त जे संत ते-
नो समागम मन कर्म वचने करवो अने तेनि आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं ते एवा सत्‌गुरुनि शिआज्ञा छे तो वेदमां कह्या जे व
र्णाश्रमना धर्म ते प्रमाणे दृढपणे वर्तवुं अने अधर्म जे चोरि छिनालि दारु मांसादि वटलवुं वटलाववुं तेनो त्याग कर
वो अने पोताने देहथि नोखो एवो जे आत्मा तेने ... मानवुं अने माईक एवा जे पंचविषय तेनि वासनानो
त्याग करिने प्रत्यक्ष भगवाननि नवधा भक्ति करवि ... कल्याण थवानो उपाय छे॥
॥इति श्री मुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ।। संवत् १९ ओगणिसे १९ ओगणिशना श्रावण वदि ॥ २ ॥ बिजे ने दिवसे श्रीम-
हाराजश्रीहरिकृष्ण परमात्मा गाम श्रीकमलेज मध्ये नथाडिगगल नथुराने घेर उत्तर द्वार ओरडा निरखे गामां गादि तकि-
याबिछाविने ढोलियाउपर बिराजमानथयाहता ॥ अने सर्वे जरीयानि वस्त्र धारण करयां हता ॥ पुष्पना आभूषण सर्वे
अंगमां शोभिरह्यांहतां नेकंकुनो चांदलो कर्योहतो नेपोतानामूखार्विदनि आगल साधु तथा हजारो हरिभक्तनी स
भाभराई ने बेठिहति ॥ पछे महाराज बोल्याजे आज अमे एक वार्ता करिशु तेचारवेदने सर्वे शास्त्रनो सारकहेवाशे ॥
माटे तेने जे समजशे तेने परमात्मानास्वरूपनुं ज्ञानयथार्थ थशे नेतेनेमोक्षनो मार्ग शुद्ध समजाशे माटे तेवात कहि-
ये तेने सर्वे चित्तदेईनेसांभलजो जे आजक्तने विषे केटलांक मनुष्य छे तेपरमात्माने निराकार कहे छे नेकेटलांक साकार
जाणिने भजे छे नेकेटलाक अकरताकहे छे नेकेटला क करताकहे छे एविरिते एक भगवानने जुदाजुदा समजे छे ॥
अनेचारवेद छ शास्त्रने अढार पूराण नेभारतादिक इतिहास तेने विषे तो एकभगवाननुंज प्रतिपादन कर्युं छे तथाजेजे
भगवानना अवतार रामकृष्णादिक थई गया तथा नारदादिक संत तथा व्यास याज्ञवल्क्यादि रुषियो तेणे पण एकज परमा-
त्मानुं प्रतिपादन कर्युं छे तो पण जे अतिशे अज्ञानि छे तेपरमात्माने जुदा जुदा जाणे छे नेए कबिजा वादविवाद करे छे
जेम आंधला पुरुषो हाथिने जोई नेपछे एकबिजा परस्पर लडाई करे तेमजे अज्ञानी छे नेपरमात्मानास्वरूपने यथा
र्थ जाण्याविना परमात्मानेजुदाजुदा कहे छे अनेजे ज्ञानि छे तेतो एम समजे छे जे साकार निराकार करता अकर-
तादिक अनंतगुण कह्या छे ते सर्वे गुण एकमनुष्याकृतिने धारण करता एवा जे रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवान तेनाज
गुण कह्या छे पण रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवाननि मूर्त्ति विना बिजो कोई भगवान नथि अने साकार निराकारादिक
जे अनंत गुण ते तो प्रत्यक्ष भगवाननां ऐश्वर्य छे अने ते प्रत्यक्ष भगवान छे ते तो ऐश्वर्यवान छे जेम एक राजा छे नेए
क राजानुं राज्य होय तेमराजाने ठेकाणे तो रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवान छे अने जेम राजानुं राज जे शेहेर गामडां देश

मूल कप्रगणां परत्न कामदार दिवान हाथि घोडा आदिक राजानुं राज छे तेम परमात्मानुं राज्य जे सगुण निर्गुण करता अकर्त्ता एकदेशि सर्वदेशि साकार निराकारादिक अनंत शक्तियो छे ते सर्वे प्रत्यक्ष भगवानना ऐश्वर्य छे एम जाणिने जे ज्ञानि छे ते प्रत्यक्ष भगवान निज द्रढ उपासना करे छे अने जे वेदादिक शास्त्र छे ते पण सर्व प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनुं ज वरणन करे छे ते जेम राजे करिने राजानुं नाम पडे छे जेम घोलवाडनो राजा ते गोहेल कहेवाय छे झालावाडनो राजा ते झालो कहेवाय छे काठियावाडनो राजा ते काठि कहेवाय छे मारवाडनो राजा ते मारु कहेवाय छे तेम भगवाननी जडचैतनादिक शक्तियो छे ते शक्तियोये करिने भगवानना घणांक जुदां जुदां नाम पड्यां छे तेणे करिने अज्ञानि जिव भरमाय छे जेम एक पुरुषनां बे नाम होय ते एक नाम होय गोविंद ने बिजु नाम होय गिगो पछे बे नाम ने न जाणतो एवो जे पुरुष तेने ते गोविंदने सगे कह्युं के गोविंदने घेर जई आ एक पदार्थ तेने आपजे त्यारे ते पुरुष गोविंदनुं घर पुछतो पुछतो तेने घेर जईने पुछ्युं के गोविंद घेर छे त्यारे ते गोविंद पोते ज मल्यो ने तेणे कह्युं के मारुं नाम गोविंद छे एम कहिने तेने आसन बेसवा आप्युं ते बेठो तेटलामां कोई बिजो पुरुष आव्यो तेणे कह्युं के गिगा मारा घर सुधि चालने घडिक नुं तारुं काम छे पछे ते तो त्यां गयो त्यारे पेला पुरुषने संशय थयो जे आ पुरुषनुं नाम तो गोविंद नहिं ने आनुं नाम तो गिगो छे माटे चालो आपणे घेर निकर आपणने छेतरिने आ पदार्थ लेई लेशे एम समजिने ते तो चालतो थयो ।। तेम भगवानना अनंत नाम ने अनंत गुण छे ।। तेमांथि एक नाम साकार के निराकारादिक समजाई गयुं होय तेने पकडि राखे ।। पछे बिजुं नाम के बिजो गुण कोई कहे तो ते मां तेने भरम थाय ने ते साथे लडाई करे ।। अने जे भगवानना स्वरूपने यथार्थ जाणनारा छे ते तो एम जाणे छे जे रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवान छे ते ज सर्व नामना नामि छे ने सर्व गुणना गुणि छे ।। ते श्रीकृष्ण भगवाने गोवरधन तोल्यो तेणे करिने भगवाननुं नाम गिरधारि पड्युं छे अने मुरु नामा दैत्य भगवाने मार्यो तेणे करिने मुरारि नाम पड्युं छे ।। वलि तेम भगवान निज जडचैतन एवि बे प्रकारनि शक्तियो

छे तेमां जड शक्ति जे माया ते साकार गुणादिक छे ॥ अने चैतन्य शक्ति जे आत्मा ते निर्गुण निराकार छे ते एवी शक्ति योए करिने भगवानने सगुण निरगुण साकार निराकारादिक अनंतरूपे वेदमां कह्या छे ॥ जेम राजाना वखाण राज्ये करिने कराय छे ॥ तेम भगवानना महिमा पोताना जिव इश्वररूप चैतन शक्ति तथा पींड ब्रह्मांडादिक जड शक्ति तेनी उपमा दईने भगवानने साकार निराकार सगुण निर्गुण कर्त्ता अकर्त्तादिक अनंतरूपे प्रत्यक्ष भगवानने वेद गाय छे ॥ जेम राज समर्धिये करिने राजाना वखाण चारण भाट करे छे तेम भगवानना महिमा पण पोताना जड चैतनादिक शक्तियोये करिने कहेवाय छे माटे वेदमां परमात्मानो महिमा संपूर्ण कह्यो छे अने ते वेद अनादिना छे एटले परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान जे तेनुं नाम वेद छे माटे ते वेद परमात्मा पासे छे ॥ केम के परमात्माना स्वरूपनु जे ज्ञान तेनुं नाम वेद छे ॥ ते परमात्मा पोते पोताने अनादिना जाणे छे ॥ माटे वेद अनादिना छे ॥ अने ते वेद आ पृथ्वी उपर क्यारे प्रगट थया छे ॥ ने कोणे प्रगट कर्या छे ॥ तो आत्यंतिक प्रलयने अंते परमात्माये पोते जगतनि उत्पत्ति करिने जिवोने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान आपवा सारुं प्रथम पोते लक्ष्मिनारायणना अवतार धारण करिने वेदरूप पोताना स्वरूपनुं ज्ञान ते जिवोने आपवा सारु प्रथम ब्रह्माना हृदयने विषे परमात्माये वेद प्रर्या एटले ज्ञान आप्युं पछे ते ज्ञान ब्रह्माए मरिच्यादिक रुषियोने आप्युं ॥ एवि रिते वेदरूप जे परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान ते जगतमां प्रवर्त्युं छे माटे वेदमां परमात्मानो महिमा संपूर्ण कह्यो छे ॥ केम के पोताना स्वरूपना ज्ञानने यथार्थ कहेवाने तो पोते परमात्मा ज समर्थ छे पण बिजो कोई देव ब्रह्मादिक पण परमात्माना महिमाने कहेवाने समर्थ नथि तो मनुष्य नि तो शि गणति तेपण भगवद्गिताना अध्याय १५ मां श्लोक ॥१५॥ मामां वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदांतकृद्वेदविदेव चाहम् ॥१५॥ अर्थ ॥ श्रीकृष्ण भगवान् कहे छे ॥ सर्व वेदे करिने जाणवा योग्य ते हुं ॥ अने वेदनो करता अने वेदनो वेत्ता एटले वेदनो जाणनारो ते हुं ज छुं एवि रिते परमात्मा पोते पोताने जाणनाराने वेदना करता छे ॥ अने पोते परमात्मा कृपा करिने पोतानुं स्वरूप जणावे छे त्यारे एना एका

 त्तिक भक्त होय ते जाणिश्चके छे ॥ ते आवार्त्ता तेएमज छे पण एमां काई संषय नथि केमके जे निषातजे म होय ते निषात ते
ज जाणे छे ॥ माटे वेद पण वेदना करता थकी ज सवला समजाय छे ॥ ते सारु वेद मांजे वि रितनु निरबाधपणे शुद्ध ज्ञा-
न कह्यं छे ते नेहुं कहुं छुं ॥ ग्रामाटे जे ज्यारे ज्यारे वेदना ज्ञानरुप जेएकां तिक धर्म तेनो लोप थाय छे त्यारे ते वेद धर्मना
स्थापनने अर्थे परमात्मा जे ते पृथ्विउपर प्रगट थाय छे ते पण भगवद्गिताना अध्याय ॥ ४ ॥ चोथाना श्लोक ७ सातमामां
कह्यं छे ॥ यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानि र्भवति भारत ॥ अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ ७ ॥ परित्राणाय
साधूनांविनाशायच दुष्कृतां ॥ धर्म संस्थापनार्थाय संभवामियुगे युगे ॥ ८ ॥ अर्थ ॥ जे जे समयने विषे धर्मनी ग्ला-
नी थाय छे ॥ अने अधर्म नुं प्राबल्य थाय छे ते समयने विषे श्रीकृष्ण कहे छे हुंआ जगतमां प्रगट थाउं छुं ॥ एवो हुं यु-
गयुगने विषे एटले वारे वारे साधुना रक्षणने अर्थे ॥ अने दुष्कृत एटले मोरा अवतारने मारा बांधेला धर्म ते नेन
माननारा एवा जे अस्रर तेनामतनो नाश करवाने अर्थे अने धर्मनास्थापनने अर्थे अवतारने धरुं छुं ८ ॥ ए विरिते प-
रमात्मा पोते वेदना ज्ञानने आपवाने अर्थे प्रगट थईने ज्ञान आपे छे त्यारे ज्ञान जिवोने थाय छे ॥ माटे ते वेदना ज्ञान
नियथार्थ हुं कहुं छुं ॥ जे परमात्मानुं अनादि स्वतसिद्ध स्वरूप कहेवुं छे ॥ तो द्विभूज छे ने मनुष्याकार छे ने मनोहर छे
ने पुरुषाकार छे दिव्यमूर्त्ति छे अने ते परमात्मा सत्यसंकल्पी छे ॥ ते जे जे संकल्प धारे छे ते मज तत काल थाय छे ॥ ते परमात्मा
प्रथम पोते एकला हता ने बिजो कोई आकार नहतो ॥ अने पोताना अंगनो प्रकाश एटले पोतानुं ज्ञान जेने ब्रह्म कहे
छे ॥ ते प्रकाश चिदाकाशरूप जे आकाश तेने विषे सर्वठेकाणे व्यापिने रह्यो हतो अने ते परमात्माने कोई जाणतुं नहतुं त्यां
॥ श्लोक ॥ सवेत्ति वेद्यं नचतस्य वेत्ता ॥ अर्थ ॥ परमात्मा सर्वने जाणे छे ॥ पण परमात्माने कोई जाणतुं नथि ॥ ते
नो साराष जेम अन्नादिक वृक्षादिकमां अनेक जिवो छे ते सर्वे जिवो ने मनुष्य जाणे छे ॥ पण मनुष्यने वृक्षादिकना आ
त्मा ते कोई जाणता नथि ॥ तेम चिदाकाश रुपजे आकाश तेने विषे चार भूतना परमाणो रह्यां छे ॥ ते परमाणो-

णोमां अनेक जिवरह्याछे ।।ते जिव अनादिना रह्या छे॥ ते सर्वे जिवनेपरमात्मा जाणेछे ॥पण ते जिय कोई परमात्माने जाणतानथि ॥एविरितेपरमात्मा सर्वेने अगम्यने अगोचरछे ॥एवाजे परमात्मा तेणे ते जिवोउपर दयाकरिने तेनेपोतानास्वरूपनुं ज्ञान आपिने पोताजेवासुखियाकरवाने अर्थे पोतेप्रथम संकल्पकर्यो के ॥एकोहं बहुस्यांइतिश्रुतिः ॥ अर्थः॥परमात्मा कहे छे ॥एक हुं छुं तेमारा साधर्म्यपणाने पामे एवाबहु थाओ पछे पोतानासत्यसंकल्पे करिने तत काल जगतनि उत्पत्ति थई ॥ त्यां श्रुतिः॥ सईक्षतईमान्लोकान्सृजेति ॥ अर्थ ॥ सईक्षत् एटले परमात्मा जे तेजो ताहवा केहेतां ईच्छारूप परमात्माये दृष्टिकरि ॥एटले जगतनि उत्पत्ति थतिहवि ॥तेउत्पत्ति शिरिते करितो-चिदाकाशने विषे चारभूतना प्रमाणो एसहित अनेक आत्मा अनादिकालना अज्ञानरूपे रह्याहता ते आत्माओने परमात्माये पंचभूतः।।ना देह सृजि आप्या तेशासारु देह सृजिआप्या तो तेदेहे करिने धर्म अर्थकामने मोक्ष ए चारे पुरुषारथनि सिद्धिने पामवाने अर्थे परमात्माये जिवोने देह सृजि आप्या छे ॥त्यां श्रीमद्भागवतना दशमास्कंधना सत्यासिमा अध्यायमां कह्युं छे जे श्लोक॥ बुद्धिंद्रियमनःप्राणान्जनानामसृजत्प्रभुः ॥ मात्रार्थंच भवार्थंच आत्मनकल्पनायच ॥२॥ अर्थ ॥ प्रभु जे हरि ते जे ते जनने जिव ते मनां बुद्धिंद्रियो मन अने प्राण तेमने सृजताहवा शामाटे के विषयादिकना भोग भोगववाने अर्थे अने वारेवारे जन्म लेवाने अर्थे अनेजन्म लेईने कर्म करवाने अर्थे अने परलोकने विषे जवाने अर्थे एटले परलोकमां जईने भोग करवाने अर्थे बिजुं अंतेजे पोताना मननि कल्पना तेनो नाश थवाने अर्थे एटले मोक्षने काजे परमात्मा सृजे छे एविरिते जिवोनो अज्ञानने टालिने मोक्ष करवाने अर्थे परमात्माये जगत सृज्युं छे माटे आत्माने अनादिनुं अज्ञान छे ।।एज जगत उपजवानुं कारण छे तेपण वेदमां कह्युं छे॥ श्रुतिः॥ आत्माज्ञानात्जगत्भाति।।अर्थः॥आत्माजे ते पोताना अज्ञाने करिने जगतरूप शोभे छे केहेतां जन्ममरणने पामेछे ।।वलिबिजिश्रुत्तिः॥ तस्मादात्मनः आकाशः संभूतः आकाशाद्वायुः वायोरग्निः अग्नेरापः अद्भ्यः पृथ्विपृथिव्याः

ओषधयः ओषधिभ्योन्नं अन्नात्पुरुषाः ॥ अर्थ ॥ परमात्मानिईछायेकरिने चैतन्यरुप आत्माथकि आकासरूप अंतःक
र्णनि कल्पनाउत्पन्नथईछे अने अंतःकर्णरूप आकाशथकि वायुउत्पन्नथतोहवो ॥ वायुथकि अग्निउत्पन्नथतोहवो ॥
अग्निथकिजलथतुहवुं ॥ जलथकिपृथ्वीथई ॥ पृथ्विथकि ओषधियोथति हवि ओषधियोथकि अन्नथयुं छे। नेअ
न्नथकिदेहथयाछे एविरितेपरमात्मायेपोतानी जडचैतनादिकशक्तिवडेकरिनेजगतनिउत्पतिकरिछे तेएवेश
क्तियोना आधारप्रेरक कारणने प्रकाशक परमात्माछे ॥ अनेजगत परमात्मानुंकार्य छे माटे कार्यने नामेनाम कार
णनुंपडेछे ॥ जेम घोडेचड्योहोयते अस्वारकहेवायछे अने जे बंधुकबांधे तेबंधुकियोकहेवायछे नेजे तरवारबांधेते
तरवारियोकहेवाय छे ते परमात्माजे तेजडचैतनादिकशक्तियोनाकारणछे माटे ते निरुपमादेईने वेदमां परमात्मा
नेगायाछे पण तेशक्तियो विनापरमात्मा कहेवा जाणवामां आवतानथि तेपणवेदमां कह्युं छे ॥ यतोवाचोनिवर्त्तं
ते अप्राप्य मनसा सह इतिश्रुतिः ॥ अर्थ ॥ मनसंगाथे वाणिजे ते परमात्मानास्वरूपनुं प्रतिपादन कर्त्ता स्वरूपनेपा
म्याविनापाछि वले छे एटलेमन आदिक इंद्रि अंतःकरणथीपरमात्मा परछे कहेतांजडचैतनादिकशक्तियोनुं
वर्णन थायछे पण परमात्मा वर्णन कस्यामां आवतानथि पण परमात्मानो महिमा तो अनंत अपारछे पण ते कोई
नो कस्यामां आवतोनथि ॥ माटे वेद पण परमात्मानो महिमा कहेतां कहेतां पछे मे तिनेति कहे छे। एटले जेजेमन·
वाणि आदिकइंद्रियो अंतःकर्णे करिने वर्णन कस्यामां आवे तेपरमात्मा नहि कहेतां वेदे प्रथम परमात्मानुं वि
श्वरूपे वर्णनकस्युं के विश्वरूपपरमात्मा छे पछे वलिकह्युं के नेति एटले विश्वपरमात्मा नहि परमात्मा तो विश्वना
आधारने कारणछे ने विश्वथिपरछे। पछे जिवईश्वरादिकनाचैतनरूपे परमात्मानुं वरणनकस्युं के जिवईश्वरना
आत्माते परमात्मा छे ॥ पछे वलिकह्युं के नेति एटले जिवईश्वरना आत्माते परमात्मा नहि परमात्मा तो जिवईश्व
रमां प्रकाशक छे। नेजिवईश्वरथिपरछे पछे ब्रह्मरूपे परमात्मानुं वर्णनकस्युं के ब्रह्मपरमात्मा छे पछे वलिकह्युं

के नेतिएम्टले ब्रह्म परमात्मा नहि परमात्मा तो ब्रह्मना प्रकाशक छे ने ब्रह्मथि पर छे। एवा सर्वना कारण सर्वना आ-
धार सर्वना प्रकाशक ने सर्व थी पर दिव्य मूर्त्ति परमात्मा छे पछे ते परमात्मा कोईना कह्यामां आवता नथि माटे वेद
ने तिने तिकहे छे ॥ जेम चिंतामणि ने हिरामोतिआदिक द्रव्यनि उपमा आपिने चिंतामणिनो महिमा कहिये। पण चिं-
तामणिमां जे द्रव्य रह्युं छे तेना क्रोडमां भागनुं द्रव्य पण कहेवाय नहिं केम के चिंतामणिमांथि तो जेटलुं जेटलुं द्रव्य
चिंतविये तेटलुं द्रव्य तो एक फेरे प्रगट थाय ते एवुं अनेकवार चिंतविये तो अनेकवार प्रगट थाय तो पण चिंतामणिमां-
थि द्रव्य खूटे नहिं एवि अपार द्रव्यरूप चिंतामणि छे ते द्रव्यनु प्रमाण थाय नहिं जे चिंतामणि आटलुं द्रव्य छे तेम प-
रमात्मानो महिमा पण अनंत अपार छे ते पोतानी इच्छा मात्रे करिने परमात्मा जे ते अनंत कोटि विश्वने एक क्षण मात्र
मां प्रगट करे छे तेएवा अनेक विश्वने अनेकवार उत्पन्न करे॥ तो पण जेना सामर्थनो पार आवे नहि एवा अपार महि-
मावाला परमात्मा छे ते जेनो महिमा कह्यामां आवतो नथि।। माटे परमात्माने वेद ने तिने तिकहे छे तो पण जिवोने परमा-
त्मानास्वरूपनु ज्ञान कराववा सारुं परमात्माने जडचैतनादिक शक्तियोनि उपमा देइने परमात्मानु वर्णन करे छे।। पण
परमात्मा तो एसर्वथी पर छे पण ते कह्यामां नथि आवता ॥ माटे जेम चिंतामणिनुं ज्ञान कराववा सारुं तेने हिरामोतिनि उ
पमा आपे छे।। तेम चिंतामणिरूप एवा जे परमात्मा ते जिवोने पोतानु स्वरूप जणाववा सारु रामकृष्णादिक पंचदेवरूपे
पृथ्वि उपर प्रगट थाय छे।। ते परमात्मा उपर थि बाह्यदृष्टिये जोयामां तो बिजा मनुष्य छे ते जेवा जाणता होय माटे तेनो म
हिमा देखाडवा सारुं ते प्रत्यक्ष परमात्माने जडचैतनादिक शक्तियोनी उपमा वेदशास्त्र आपे छे।। तेणे करिने प्रत्यक्ष
परमात्माने विषे जिवोने प्रिति थाय छे।। अने प्रत्यक्ष रामकृष्णादिकने विषे जे जिवने प्रीति थई ते जिव परमात्माना धाम
ने पामे छे॥ ते पण वेदमां कह्युं छे॥ मरणे या मतिः सा गतिर्भवेत्।। इतिश्रुतिः॥ अर्थ॥ जेनि मति जेने विषे होय त्यां ते निग
तिः॥ एटले त्यां ते जाय छे ने जिवने ज्यां सुधि पिंड ब्रह्मांडादिक मायाना पदार्थमां मति होय केहे तां माईक पदार्थमां

सक्त होय त्यां सुधि तेने माया मां गति थाय छे के हे तां जगतमां जन्म मरण गर्भवास ने चोरासि मां जाय छे अने जेने मा
ई कपदार्थ मां थि प्रिति टलिने माया थि परए वा जे प्रत्यक्ष राम कृष्णादिक ज्ञान दाता मनुष्य स्वरूप परमात्मा तेने विषे
मति कहेता प्रिति थई ते आत्मा परमात्मा ना धामने पामे छे ने ते निमूक्ति थाय छे के मके आत्मा जे ते परमात्मा ना स्व
स्वरुपना अज्ञाने करिने जन्म मरणने पामतो हतो।। ते परमात्माने जाणिने तेने विषे प्रिति करि एटले तेनि मुक्ति था
थाय छे माटे चार वेदने सर्व शास्त्रना ज्ञाने करिने ते ज्ञानना आपनारा एवा जे सद्गुरु रूप राम कृष्णादिक परमात्मा
जे पोताने मल्या होय तेना स्वरूपनो निश्चय करिने तेने विषे प्रिति करवि एटलो ज सर्व शास्त्र नो सार छे माटे वेद शा
स्त्रनुं ज्ञान सद्गुरु पासे थि पामवुं ह्वे ते वेद शास्त्र मां जे विरिते परमात्मा ना स्वरूपने जाणवा सारु ज्ञान कह्युं छे तेने कहे छे।।
सत्यं ज्ञानं तं ब्रह्म इति श्रुति।। अर्थ।। परमात्मा केवा छे तो सत्य छे।। एटले अ सत्य जे पिंड ब्रह्मांडादिक माया ते थि पर छे।।
अने ज्ञान रुप छे एटले द्रष्टा द्रष्य भेदे रहित छे।। अने अनंत रुप एटले जिव ईश्वर माया ब्रह्म ए सर्वना प्रकाशक आधार का
रण प्रेरक ने ए सर्वे थि पर ने जेना महिमानो अंत नथि एवा ब्रह्म एटले परमात्मा छे।। तेमां कोई ने शंका थाय जे ब्रह्म ना प्रका
शक परमात्मा छे।। पेहेलु एम कह्युं ने वलि कह्युं के ब्रह्म एटले परमात्मा एम कह्युं तेनु केम समजवु तो तेनु एम समजवुं जे
परमात्मा तो नामरूप थि पर छे पण तेना जे अनंत नाम पड्यां छे ते पोतानी इच्छा चैतनादिक शक्तियो छे।। ते शक्तियोना
कारण परमात्मा छे।। माटे कार्य ने नामे नाम कारण नुं कहेवाय छे।। माटे ब्रह्म ना कारण परमात्मा छे।। ते ब्रह्म ने नामे
करिने परमात्माने ब्रह्म कह्या छे एम समजवुं पण परमात्मा तो ब्रह्म ना आधार ने ब्रह्म थी पर छे।। ते परमात्मा प्रत्यक्ष छे
एम वेदे प्रथम प्रतिज्ञा करि छे ते वेदनु महावाक्य।। ॐ सोहं।। अर्थ।। प्रत्यक्ष परमात्मा ज्ञानदाता कहे छे ॐ एटले देह-
चतुष्टिया तित कहेतां जिव ईश्वर माया थि पर एवा जे परमात्मा ते सोहं एटले ते हुं छुं ए विरिते प्रत्यक्ष परमात्मा ये कहुं
प छे ते वातनी सिद्धि करि आपवा ने अर्थे।। सत्यं ज्ञानं तत् ब्रह्म तेना अर्थ ने प्रकाश करे छे।। जे सत्य ज्ञान अनंत ने ब्रह्म

एवा चारपदे करिनेपरमात्माने कह्या ॥पण तेणे करिनेपरमात्मानास्वरुपनुंज्ञानयथार्थथयुंनहिं पछे तेचारेपदनाचा
रयिभागजुदाजुदा करिने तेनाचारवेदकस्या एटले चार प्रकारेपरमात्माना स्वरूपनुंज्ञान कह्युं छे तेचारवेदमांचार
प्रकारे परमात्माने कह्या छे तेचारवेदनां नाम॥ रुग्वेद १ यजुर्वेद॥२॥ सामवेद ॥३॥नेअथर्ववेद॥४॥एचारवेदनुंपोते
परमात्माये लक्ष्मिनारायण नामे अवतार धारण करिने प्रथम ब्रह्माने ज्ञान आप्युं छे पछे ब्रह्मायेतेप्रत्यक्ष परमात्माना
स्वरूपनो ज्ञानेकरिने निश्चय कीनेते प्रत्यक्ष मूर्त्तिनेपोताना आत्माने विषे ध्यानमां राखिने तेचारवेदनुं ज्ञानब्रह्मा येम
रिच्यादिक रुषियोनेआप्युं ॥ ॥ पछे रुषीओएपण एवीरीते प्रत्यक्षपरमात्मानास्वरुपनो निश्चयकरिनेते-
निभक्तियेसहित थईनेपछे ते प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनुंज्ञान सर्वनेसेहेलिरिते थाय तेने अर्थे चारवेदनि सिद्धिकरि
आपवा सारु छशास्त्र कस्यांछे ॥ तेउपरशास्त्रप्रकारनोश्लोक॥ द्वौतर्कौ चैव मिमांसौ द्वौयोगा विति षड्बुधः॥ वेदार्थ
दर्शकत्वेन दर्शनानिप्रपच्यते ॥१॥ अर्थ ॥ बेतर्कदर्शनएक न्यायशास्त्रने बिजुं वैषेकि शास्त्र अने बे मिमांसा
॥एक पूर्व मिमांसाने बिजुं उत्तर मिमांसा पूर्वमीमांसा एटले धर्मशास्त्र ॥ अनेउत्तरमिमांसाएटलेवेदांतशास्त्र
॥ अनेबेयोग॥ एक सांख्यशास्त्रअने बिजुंपातांजलिशास्त्र ए छशास्त्रवेदना अर्थनेदेखाडेछे माटे तेनेपंडित
एटले ज्ञानिपुरुष षट् दर्शन कहे छे अनेए छशास्त्रेकरिने वेदनुंज्ञान साक्षात्कार थायछे कहेतां प्रत्यक्ष परमात्मा
नास्वरुपनोनीश्चयथायछे अनेए छशास्त्रमांथि सारकाढिने तेनांकपिल नारदादिकमुनियोएपरमात्मानास्वरुपनुं
ज्ञान सेहेलिरिते सर्वनेथायतेनेअर्थे बिजां चारवेदउपर चारशास्त्र कस्यां छे तेशास्त्रनां नाम॥ १॥ एकसांख्यशास्त्र
॥२॥ बिजुं योगशास्त्र ॥३॥ त्रिजुंवेदांतशास्त्र ॥४॥ नेचोथुंपांचरात्रशास्त्र॥ एचारशास्त्रेकरिने चारवेदनि सिद्धि
करिआपिछे तेमांशांख्ये रुग्वेदनी सिद्धिकरिआपिछे ॥ अने योगे यजुर्वेदनीसिद्धिकरिआपि छे॥ अने वेदांते
सामवेदनि सिद्धिकरिआपिछे॥ अनेपंचरात्रेअथर्ववेदनि सिद्धि करिआपिछे ॥एवि रिते चारशास्त्रे चार वेदनिसि

द्धि करि आपि छे ॥ माटे चार शास्त्रने जाणवे करिने चार वेदनुं ज्ञान थाय छे ॥ कहे तां परमात्माना स्वरूपमां जिव जोडाय छे अने ए चार शास्त्रे करिने चार वेदना ज्ञानने सिद्ध करिने ते ज्ञान एक ने विषे समजवुं तेनुं नाम आत्यंतिक ज्ञान कहेवाय छे ॥ केहे तां चार वेदने चार शास्त्रे करिने प्रत्यक्ष ज्ञानदाता राम कृष्णादिकनुं स्वरूप तेने विषे परमात्मापणानो निश्चय करवो तेनुं नाम आत्यंतिक ज्ञान छे ने तेने एकांतिक भक्ति कहे छे तथा तेने भागवत्धर्म पण कहे छे ॥ अने ते आत्यंतिक ज्ञाने करिने जिवनि आत्यंतिक मुक्ति थाय छे पण प्रत्यक्ष परमात्मा मल्या विना ने चार वेदे करिने तेना स्वरूपनो निश्चय कर्या विना आत्यंतिक मुक्ति थत्ति नथि केम के चार वेदे करिने जाणवा योग्य एवा जे परमात्मा ते ने जिव भूले छे तेणे करिने जिव ने मबदा कारारूप अंतःकर्ण तेउत्पन्न थयुं छे ॥ अने रुग्वेदे करिने जाणवा योग्य एवु जे आत्मानुं व्यतिरेक स्वरूप ब्रह्म तेने जिव भूल्यो छे ॥ तेथि जिवने मन उत्पन्न थयुं छे अने यजुर्वेदे करिने जाणवा योग्य एवुं जे परमात्मानुं अवयवस्वरूप जे जिव ईश्वर माया रूप जड चेतनादिक शक्तियो ए करिने कोटि ब्रह्मांडनि उत्पत्ति स्थिति ये करिने सर्वना आधार कारण प्रकाशक प्रेरक कर्मफलप्रदाता एवा जे वैराट रूपे ईश्वर जे परमात्मा तेने जिव भूल्यो छे कहे तां नथि जाणतो ते थि जिवने चित्त उत्पन्न थयुं छे ॥ अने सामवेदे करिने जाणवा योग्य एवा जे द्रष्टा स्वयंभे देरहित ब्रह्मना प्रकाशक दिव्य मूर्त्ति परमात्मा तेने जिव भूल्यो छे कहे तां नथि जाणतो ते थि जिवने बुद्धि उत्पन्न थई छे ॥ अने अथर्ववेदे करिने जाणवा योग्य एवा जे ज्ञानदाता प्रत्यक्ष भगवान परमात्मा तेने जिव भूल्यो छे केहे तां प्रत्यक्ष भगवान जिवने नथी मल्या तेथि जिवने अहंकार उत्पन्न थयो छे एवि रिते परमात्माना स्वरूपना अज्ञाने करिने जिवने अंतःकरण मन बुद्धि चित्त ने अहंकार ते रूप माया उत्पन्न थई छे। तेह वे चार वेदना ज्ञानने सिद्ध करे तो ते माया टलि जाय छे ॥ तेमां प्रथम रुग्वेदने सांख्यने ज्ञाने करिने मननी माया टले छे ॥ अने यजुर्वेदने योगने ज्ञाने करिने चित्तनि माया टले छे ॥ अने सामवेद ने वेदांतने ज्ञाने करिने बुद्धिनि माया टले छे ॥ अने अथर्ववेदने पंचरात्रने जाणवे करिने अहंकारनी माया टले छे। ।अने ए चार वेदनु एक

पणुंएवुंजे आत्यंतिकज्ञान कहे तांप्रत्यक्षभगवानपोतानेमळेने तेना स्वरूपनोउत्तमनिर्विकल्पनिश्चयथायत्यारेपांच मुंअंतःकरण रूपजेमूल अज्ञानजेमहदाकाशरूपवासनातेनाशपामेछेनेजियात्मा ब्रह्मरूपथईनेपरमपदनेसाक्षात्कारपामेछे हवे तेपरमपदनेपामवुं नेचारवेदनुज्ञानसिद्धकरवुंतेनेअर्थेचारसाधनसिद्धकरवाजोईयेछियें॥ तेचारसाधनकियांतोएकतो धर्मएटले इंद्रियोनो नियम राखवोकहेतांवर्णाश्रमनाधर्म जेनेजेमवेदमांकह्यादोय तेमांदृढपणे रहेवुंनेदेहनिरवाहथि अधिकएवाजेइंद्रियोने प्रियरमणिकविषयभोगतेथकिइंद्रियोनेपाछांवाळवां करे तोउत्तमविषयनोत्यागकरवो तेनुंनामधर्मकहेवायछे॥ अनेबिजुंसाधनज्ञान तेज्ञानएटले शुंतोस्थूलसूक्ष्मनेकारणएजेत्रणदेह तेथकिपोतानाआत्मानेजुदोजाणवो। अनेत्रणदेहनेत्रणदेहनाविषयभोगतेमारानेथिएमसमजिनि तेविषयभोगनोत्यागकरवोअनेसुखदुःखमानअपमानहाणवृद्धितेणेकरिनेहरखशोकनेपामवुंनहिं तेनुंनामज्ञान छे॥ अनेत्रिजुंसाधन वैराग तेवैरागएटलेशुंतोचारप्रकारनाप्रलयनोविचारकरिनेपिंडब्रह्मांडादिकअनंतकोटि विश्वतेनेनाशवंतनेदुःखरूपनेस्वप्नवत्जाणिनेतेनो तत्लोकभोगादिकनोअभावकरवोतेनुंनामवैरागछे॥ अने चोथुंसाधन भक्ति॥ भक्तिएटले धर्मज्ञानवैरागादिकशुभगुणआपिने विषयनिवासनातजाविनेब्रह्मस्थितिने पमाडनाराएवाजेप्रत्यक्षज्ञानदातामाहात्मापुरुषसद्गुरुरूपपरमात्मा तेनिप्रेमपूर्वकनवप्रकारे सेवाकरविने ते निआज्ञापाळवि तेनुंनामभक्ति छे॥ एविरितेधर्मज्ञाने वैराग्यनेभक्तिएचारसाधन सद्गुरुरूप प्रत्यक्षपरमात्मा थकिसिद्धकरे छे तेने धर्मअर्थकामनेमोक्षएचारेफलनि प्राप्तिथायछे॥ त्यांवेदनीश्रुतिः॥ यस्यदेवेपराभक्ति य थादेवे तथागुरौ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंते महात्मनः॥ अर्थ॥ जेदेवनिउत्तमप्रकारेभक्तिकरताहोयतेवि जरितेसद्गुरुने विषेभक्तिराखे छेतेनेगुरुजेतेवेदमांकह्याधर्मअर्थकामनेमोक्ष ते रुपीसर्वअर्थतेनेप्रकाशकरेछे एटले आपे छे माटेएवाजेपूरणज्ञानदातासद्गुरु तेथकिचारसाधने सहित चारवेदनेसिद्धकरवाअने चारवेदे

करिने चारसाधनसिद्ध थाय छे ।। तेमां ऋग्वेदने सांख्ये करिने ज्ञानसिद्ध थाय छे ।। कहेतां पिंड ब्रह्मांडादिक मायाथकि पोतानो आ
त्मा जुदो जणाय छे ।। ते आत्मा सत्य छे ।। ने अविनाशि छे अने पिंड ब्रह्मांडादिक माया ते असत्य छे ने नाशवंत छे एवुं ज्ञान ऋग्वे
दने शांख्यशास्त्रथकि थाय छे ।। अने यजुर्वेदने योगशास्त्रथकि धर्म सिद्ध थाय छे कहेतां यजुर्वेदने योगशास्त्रे आत्मा
रूप थईने परमात्मानि मूर्त्तिनुं ध्यान करवानुं कह्युं छे ।। माटे ध्यान करतां जे जे पदार्थ आडां आवे तेनो त्याग करिने तेथकि
इंद्रियोने पाछां वाले त्यारे तेने परमात्मानुं अखंड ध्यान थाय छे पण विषयनो त्याग कर्या विना ध्यान थतुं नथि माटे ध्यानना कर
नाराने धर्म जरुर राखवो जोईये छिये माटे यजुर्वेदने योगशास्त्रथकि धर्म सिद्ध थाय छे ।। अने सामवेदने वेदांतशास्त्रे
करिने वैराग्यरूपि साधन सिद्ध थाय छे ।। कहेतां सामवेदने वेदांतशास्त्रमां एम कह्युं छे ।। जे सर्वं खल्विदं ब्रह्म नेह ना-
नास्ति किंचन इति श्रुतिः ।। अर्थ ।। सर्वं खल्विदं ब्रह्म एटले प्रत्यक्ष परमात्मानी मूर्त्ति छे ते सर्वे ब्रह्म छे कहेतां प्रत्यक्ष स-
द्गुरुनि मूर्त्ति साकर नाना लियेरनि पेठे परमात्मा छे ।। अने ते परमात्मानी मूर्त्ति विना बिजुं नानाप्रकारनुं कांई नथि कहे
तां पिंड ब्रह्मांडादिक मायाना आकार मात्र ते नाशवंत एटले झांझवानुं जल तथा स्वप्नानि सृष्टि ते सम मिथ्या छे ।। एम जाणीने
पिंड ब्रह्मांडादिक आकार मात्रना असत्यता भाव करिने तेथकि प्रतियोने प्रतिलोम कहेतां पाछा वालिने पोते आत्मा शुद्ध
ब्रह्मरूप थईने प्रत्यक्ष परमात्मानि मूर्त्तिने विषे जोडाई जाय केहेतां नेत्र श्रोत्रादिक इंद्रियो अंतःकरण मां एक प्रत्य
क्ष भगवाननि मूर्त्तिनुं ध्यान अखंड थया करे पण ते विना बिजुं कांई सांभरे जनहि एवि रिते जे वरते तेने सामवेदने
वेदांतशास्त्रे मां कह्या प्रमाणे सर्वं खल्विदं ब्रह्म नेह नानास्ति किंचन एश्रुत्ति नो अर्थ सिद्ध थयो जाणवो ।। माटे शाम
वेदने वेदांतशास्त्रनुं ज्ञान पामवाथकि वैराग्यरूपि साधन सिद्ध थाय छे ।। अने अथर्ववेदने पंचरात्रशास्त्रे करिने भ
क्ति सिद्ध थाय छे ।। ते भक्ति एटले शुं तो ब्रह्मरूप थईने प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रिति करवि कहेतां धर्म ज्ञान वैराग्ये
करिने ब्रह्मरूप थईने प्रत्यक्ष ज्ञानदाता सद्गुरु रूप परमात्मा तेनि प्रेमे सहित नवधा प्रकारे सेवा करवि तेनुं नाम भ-

क्ति छे। ।अनेएवि भक्ति तो जेनेअनेकजन्मनासंस्कारहोय तेनेप्राप्तथायछे। ।पण ते भगवद्गीताना अध्याय॥ १८॥ अढारमा मा श्लोक ॥५४॥ चोपनमामां कह्यं छे ॥ ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मा नशोचति नकांक्षति समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभतेपराम् ॥ अर्थ श्रीकृष्णपरमात्माकहे छे के ब्रह्मरुपने प्रसन्नछे आत्माकहेतां मनादिक अंतःकर्णीते जेनुं॥ने हरखनेशोक तेगयाछे जेनानि भूत प्राणिमात्रने विषे समानछे दृष्टितेजेनि। ।ते उत्कृष्टएवि जेमारि भक्ति तेनेपामे छे॥ एटले तेनेज मारा स्वरुपनोभि चययथार्थ थाय छे। ।नेमारे विषेप्रिति थाय छे माटेएवि जेभक्ति तेअथर्वेदनेपंचरात्रशास्त्रथकि सिद्ध थाय छे। ।अने चार वेदने सर्वशास्त्रनो सारएटलो ज छे केअक्षर अक्षरथिपरएवाजेपरमात्मा तेरामकृष्णादिकरुपे प्रगट थाय छे तेनि मूर्त्तिनु प्रेमेसहित ध्यान करवुं एसर्व सास्त्रनो सार छे॥ तेनाउपर अथर्वेदनाउपनिषदमां भक्ति प्रकरणनोश्लोक ॥ आलोक्य सर्वशास्त्राणि विचार्यच पुनःपुनः ॥ इदमेकं सुनिष्पन्नं ध्येयो नारायणः सदा॥ १॥ अर्थ॥ सर्वेशास्त्र जोईने तथा वारेवारे विचार करिने ॥ आएकज सिद्धांत निकल्यो छे केप्रत्यक्षसद्गुरु रुप परमात्मा नि मूर्त्तिनुं भक्तियेसहित ध्यानकरवुं॥ एवि रितेअथर्वेदने पांचरात्रशास्त्रे प्रत्यक्षभगवाननि भक्ति रुपिसाधन सिद्ध करिआप्युंछे अने धर्मज्ञान वैराग्यसहित प्रत्यक्षपरमात्मानि भक्तिजेने सिद्ध थई तेआत्मा-नोआत्यंतिकमोक्ष थायछे। ।अनेचारे साधनेसहितचारवेद जाणवामां कांई पण अफरुहोय त्यांसुधि तेनो आत्यंतिक मोक्ष थतोनथि॥ केहेतां जन्ममरण टलतुं नथि अने चारसाधने सहित चारवेदनेजाणवाते जिवे पोतानी मिले कोई दहाडे जाणिशकातुं नथि जेम अभण छोकराओ मेहेताजि विना पोतानि मेले चोपडियो भणि शकता नथि तेमजिव प्रत्यक्षमायापर सद्गुरुना आश्रयविना पोतानि मेले परमात्मानाज्ञानरुपजेवेदशास्त्रनापुस्तक तेनेवांचवेसांभलवे करिने ज्ञान थतुं नथि॥ माटेमेहेताजि रुप एवाजेपरमात्मा कर्तुमकर्त्तुनेअन्यथाकर्त्तुं समर्थ॥ तेजिवोने पोताना स्वरुपनुं ज्ञान आपवा साऽरुप्रगट थईने ज्ञान आपे छे त्यारे जिवोने ज्ञान थाय छे ने तेनो मोक्ष थाय छे ॥ पण ते विना पोतानिमे-

छे आपे आप कोई दहाडे मोक्ष थतो ज नथि माटे मोक्षना खपवाळा ने प्रत्यक्ष ज्ञानदाता पासे जईने ज्ञान सांभळवुं ॥ प-
ण तेमां प्रथम ज्ञान दाता नि परिक्षा करवि जे ते ज्ञान नो आपनारो ते पोताना शिष्योने धर्म ज्ञान वैराग्य ने परमेश्वरनि भक्ति
ये सहित ज्ञान आपे छे के धर्म ज्ञान वैराग्य ने भक्ति विना विषय भोग नि छुटमुकि ने ज्ञान आपे छे एटलो विचार जिवे पोता
नि मेळे करवो ॥ पछे जे धर्म ज्ञान वैराग्य ने भक्तिये सहित विषय भोगनो त्याग करावीने ज्ञान आपता होय तो तेनो दृढ वि
श्वास आणिने तेनो समागम करवो ॥ अने धर्म ज्ञानादिक साधन कराव्या विना विषय भोग नि मोकळमुकीने ज्ञान आपता हो
य ने ते सर्व शास्त्रना भणेल होय लोकमां मोटा कहेवाता होय तो पण तेनुं ज्ञान सांभळवुं नहिं ॥ एविरितनो विवेक जाणिने
जे ठेकाणे धर्म ज्ञान वैरागे सहित इंद्रियोने विषय भोग थकि पाछां वळाविने ज्ञान आपता होय ते ठेकाणे जईने तेनुं ज्ञान
श्रद्धाये सहित सांभळवुं ॥ अने एविरितना सद्‌ज्ञान आपनारा तो आ जगतमां मळवा घणा ज दुर्लभ छे एतो जेने घ-
णा क जन्मनां सुकृत होय तेने मळे छे ने तेने ज तेनो विश्वास आवे छे ॥ एविरिते तपास करिने ज्यां सद्‌ज्ञानदाता जण-
य तेनि पासे वेदादिक शास्त्रनुं ज्ञान सांभळवुं तो तेने परमात्माना स्वरुपनुं ज्ञान साक्षात्कार थाय छे ने ते आत्मा मोक्ष
ने पामे छे ॥ हवे ते वेदनुं जे सद्‌ज्ञान तेने कहुं छुं ॥ तेमां प्रथम ऋग्वेदने सांख्य शास्त्रनुं ज्ञान कहेवाने ॥ जे ऋग्वेद मां प-
रमात्माने मायापर कह्या छे ॥ ते नि श्रुतिः ॥ यतो वाचो निवर्त्तंते अप्राप्य मनसा सह ॥ अर्थ ॥ मन संघाते वाणि ते जेना
स्वरुपनुं प्रतिपादन करतां स्वरूपने पाम्या विना पाछि वळे छे एटले मन आदिक इंद्रियो अंतःकर्णना ग्रहण करवामां
आवे एवा परमात्मा नथि ॥ एविरिते ऋग्वेदमां आठ शाखाये करिने परमात्मानुं वर्णन कर्युं छे जे परमात्मा केहेवा छे ॥
तो कानना सांभळ्यामां आवे एवा नथि ने त्वचाना स्पर्शमां आवे एवा नथि ॥ नेत्रना जोवामां आवे एवा नथि ॥ रसना
ना वर्णनमां आवे एवा नथि ने नासिकाना सुंघवामां आवे एवा नथि ॥ मन ना संकल्पमां आवे एवा नथि ॥ बुद्धिना निश्चय
मां आवे एवा नथि अहंकारना अभिमानमां आवे एवा नथि ॥ ॥ एविरिते ऋग्वेदमां सत्यपदे करिने मायापर परमात्मानु

वर्णनकर्युं छे तेमां ऋग्वेदने सांख्यशास्त्रनो सार एटलो छे के ज्यांसुधि जिवने इंद्रियो अंतःकरणरूप मायानुं आवर्ण होय त्यां सुधि तेने प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनो निश्चय थतो नथि केदेतां इंद्रियो अंतःकरणमां माईक पंचविषय भोगववानि वासना होय त्यां सुधि तेने प्रत्यक्ष भगवाननुं स्वरूप ओळखातुं नथि अने ज्यारे ऋग्वेदने सांख्यशास्त्रने ज्ञाने करिने पिंड ब्रह्मांडादिक मायानुं निराकरण करिने केहेतां नित्य नि मित्य प्राकृतने आत्यंतिक प्रलये करि पिंड ब्रह्मांडने नाशवंत जाणिने तेनि वासनानो त्याग करिने पोते आत्मा शुद्ध ब्रह्मरूप थाय छे ॥ तेने प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनो निश्चय थाय छे केमके मायापर एवुं जे निर्गुण ब्रह्म तेने विषे परमात्मा अखंड रह्याथका पोताना संकल्पमात्रेकरिने मनुष्यस्वरूपे प्रगट थाय छे माटे बाह्यदृष्टिवाळाने परमात्मा प्रगट ते मनुष्य जेवा जणाय छे अने जे ज्ञाने करिने माईक भाव मिथ्या करिने निरावरणरूप ब्रह्मदृष्टिने पामें छे तेने प्रत्यक्ष परमात्मा दिव्यरूपे देखाय छे ॥ केमके जेने ज्ञाने करिने पोतानि जिवदशा टलिने ब्रह्मदशा प्राप्त थई तो ते ज्ञानदाता मनुष्य केम होय ए तो मारा ब्रह्मस्वरूपना प्रकाशक परब्रह्म छे ॥ एम तेने ज्ञानदाताने विषे परब्रह्म परमात्माना स्वरूपनो निश्चय थाय छे ॥ पण ते विना प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनो निर्विकल्प निश्चय थतो नथि अने एवो निश्चय थयो नथि ने ते प्रत्यक्ष भगवाननो समागम करवा आवे छे ॥ तेने तो प्रथम एम विश्वास होय जे कोईक मोटा पुरुष तो छे खरा एम जाणिने तेनुं ज्ञान सांभळे छे ने तेनि आज्ञारूपि धर्म पाले छे पछे धर्मे करिने तेनुं अंतःकरण शुद्ध थाय छे ॥ अने अंतःकर्ण शुद्ध थाय छे त्यारे तेने ज्ञान समजाय छे ॥ पछे जेटलुं जेने ज्ञान थाय छे तेटलो ते ज्ञानदाताने जाणे छे ते प्रथम पोते जिवदशामां वर्त्ततो होय त्यारे ते सद्गुरुने देव जेवा जाणे छे ॥ अने पोते ज्यारे तेना ज्ञाने करिने देवनाजे विस्थिति तिने पामे छे ॥ त्यारे सद्गुरुने ब्रह्म जेवा जाणे छे ॥ अने पोते ज्यारे ब्रह्मरूप थाय छे त्यारे तेने सद्गुरु परब्रह्म जणाय छे तेना ऊपर शंकरस्वामिनुं वचन ॥ श्लोकः ॥ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ॥ गुरुरेक परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥ अर्थः ॥ प्रथम जिव देहरूप वर्त्ततो होय त्यारे ते सद्गुरुने ब्रह्मादिक भुशिव जेवा जाणिने तेनि उपासना भक्ति सेवा समागम करे छे ॥ अने ज्यारे ते सद्गु-

रूनो समागम ने ज्ञान सांभळतां सांभळतां पोते आत्मा ब्रह्मरूप थाय छे ॥ त्यारे तेने प्रत्यक्ष सद्गुरुने विषे परब्रह्मपणानो निश्चय थाय छे ॥ माटे प्रथम जिवने ब्रह्मरूप करवा सारु ऋग्वेदने सांख्यशास्त्र परमात्मानुं ब्रह्मरूपे वर्णन करे छे केमके परमात्माने जेवा जाणे छे तेवो ते जाणनारो थाय छे ॥ ते वेदमां कह्युं छे ॥ श्रुतिः ॥ ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति ॥ अर्थ ॥ ब्रह्मने जाणनारो ब्रह्मरूप थाय छे ने ब्रह्मरूप थाय छे तेने परब्रह्मना स्वरूपनो साक्षात्कार अनुभवे सहित निश्चय थाय छे माटे जिवने ब्रह्मरूप करवा सारु ऋग्वेदने सांख्यशास्त्रमां परमात्मानुं ब्रह्मरूपे वर्णन कर्युं छे तेनो प्रत्यक्ष अनुभव कहुं छुं ॥ जे ब्रह्म एटले ज्ञान ॥ ज्ञान विना बिजो ब्रह्मनो अर्थ नथि माटे ज्ञान जेने थाय तेने ज्ञानदाता ओळखाय ते सारु प्रथम ज्ञानदातानां वखाण न करवां ॥ प्रथम तो ते सद्गुरुना ज्ञाननो महिमा कहेवो केमके ज्ञाननुं महात्म जाणिने ज्ञान सांभळशे ने ज्ञाने समजशे तो पछे ते सद्गुरु जेवा छे तेवा तेने वगर कहे जणाशे माटे परमात्माये ब्रह्माने प्रथम कह्युं के ॥ ईसोऽहं कहेतां हुं ब्रह्मरूप छुं ॥ एम परमात्माये कह्युं त्यारे ब्रह्माने संशय थयो के हुं केम जाणुं जे तमे ब्रह्मरूप छो ॥ त्यारे परमात्माये कह्युं के तुं मारुं ज्ञान सांभळ एटले ज्ञाने करिने मारुं स्वरूप तुंने साक्षात्कार जणाशे पछे ब्रह्माने परमात्माये ज्ञान आप्युं ॥ ते मां प्रथम ब्रह्मरूपे परमात्मानुं वर्णन ऋग्वेदमां कह्युं छे ते ब्रह्म केवुं छे ॥ तो सत्य छे मायापर छे निर्गुण छे ॥ एटले रज तम ने सत्व ए त्रण गुण जेमां नथि निराकार छे एटले मायानो आकार नथि अकर्त्ता छे एटले पोते जगत कर्युं छे ने एने कोणे य कर्यो नथि ने सर्वव्यापक छे ॥ एटले पोताना प्रकाशे करीने सर्व ठेकाणे रह्या छे एवा ब्रह्म छे ॥ ते ब्रह्मनी उपमा दईने परमात्माने निरगुण कहे छे निराकार कहे छे सर्वव्यापक कहे छे अकर्त्ता कहे छे ॥ एम ऋग्वेदने सांख्यशास्त्र परमात्माने ब्रह्मरूपे कहे छे पण परमात्मा तो ब्रह्मथि पर छे ने ब्रह्मना आधार छे ने ब्रह्मना प्रकाशक छे ॥ जेम अग्नि छे ते अग्नि प्रकाशनो आधार छे ॥ ते अग्निनां वखाण करवा होय त्यारे तेना प्रकाशनां वखाण कराय छे जे अग्निनो प्रकाश बहु सारो छे ॥ जे घरना अंधाराने दूर कर्युं एवो प्रकाश छे ॥ ते प्रकाश ते ज अग्नि छे एम कहेवाय केमके अग्निने अग्निनो प्रकाश ए

कांई बेनथि एकजछे ॥ केमके अग्निविनाप्रकाशएकलो होयनहि माटे अग्निते प्रकाशने प्रकाशतेअग्निएमकहेवा
यरवरुं तो पण अंते ते प्रकाशनो आधारछे तेमपरमात्माना अग्निनो प्रकाशजे ब्रह्म कहेतां ज्ञान तेज्ञानजिवोनाअंतःक
रण रुपिघरमांथि अज्ञानरुपिअंधाराने नाशकरेछे ॥ एवोप्रत्यक्षपरमात्मानो ब्रह्मरुपि ज्ञानप्रकाशछे ते ब्रह्मनिउपमाप
रमात्माने रुग्वेद तथा सांख्यशास्त्र आपेछे पण परमात्मा तो ब्रह्मना आधारछे ने मूर्त्तिमानछे ते मूर्त्तिमाईकनथि ॥
दिव्यमूर्त्तिपरमात्माछे ते परमात्माएकदेशि थका पोताना ब्रह्म रुपिज्ञानप्रकाशे करिने सर्वदेशमां प्रकाश करे छे कहे-
तां कोटि ब्रह्मांड ने विषे जिवईश्वर तथा देव ब्रह्मादिक सर्वने प्रकाश करेछे माटे पोताना ब्रह्मरुपिज्ञानप्रकाशे करिने
परमात्मा सर्वदेशि कहेवायछे ॥ तेथिपरमात्माने निर्गुण निराकार व्यापक कह्या छे माटे रुग्वेदने सांख्यशास्त्रमां
एकला ब्रह्मरुपि ज्ञान प्रकाशरूपे परमात्मा नेकह्याछे पण दिव्यमूर्त्तिमान परमात्माछे ते मूर्त्तिरुग्वेदमां कहिनथि॥
केमके जिवने माईक आकारने विषे वासना छे ते वासना तजाववासारु आकारमात्रनोनिषेध करिने जिवने ब्रह्मरुप
करवो छे ते जो ब्रह्मरुप निःस्थिति पाम्यामोरुय जिवने मूर्त्तिमान परमात्मा छे एमकहे तो ते जिवने माईक आकारमां थि
वासना टले नहिं ने वासना टल्या विना ब्रह्मरुप थाय नहिं अने ब्रह्मरुप थयाविना परमात्मानि मूर्त्तिनो निश्चयपण थतो
नथि अने प्रत्यक्षपरमात्मानो निश्चय थयाविना परमात्माने पमातुं नथि केमके परमात्मा तो ब्रह्म थिपरछे ॥ माटे ब्रह्मरु
प थायछे तेज परब्रह्मने पामेछे ॥ तेसारु जिवने ब्रह्मरुपकरवाने अर्थे रुग्वेदने सांख्यशास्त्र ने विषे ब्रह्मरूपे परमा-
त्माने निर्गुणनिराकार कह्याछे ॥ पण परमात्मा तो ब्रह्मना आधारछे ने दिव्यमूर्तिमानछे ॥ ने कर्त्तुमकर्त्तुने अन्यथाक
र्त्तुसमर्थछे हवे एब्रह्मनाआधार एवाजे परब्रह्म परमात्मा ते जिवोने पोताना स्वरुपनुं ज्ञान आपवासारु पोते प्रगट थईने
चार वेदनुं ज्ञान आपेछे तेने चारवेद सवलासमजायछे ने ते जिव परमात्माना स्वरुपने पामेछे अने जेप्रगटपरमात्माना
सत्संग विना अथवा ते प्रगट थकि ज्ञानपामिने ब्रह्मरुप थया एवाजे संत तेना सत्संग विना पोतानीमेले व्याकरणभ-

णिने पछे एकलुं रुग्वेदने सांख्यशास्त्रनां पुस्तको वांचे अथवा सांभले तो तेने परमात्मानुं स्वरूप उलटुं अवलुं समजाई-
ने नास्तिक थई जाय छे ते केवि रिते अवलुं समजे छे तो तेने परमात्मानुं स्वरूप एकलुं निर्गुण निराकार समजाय छे॥
अने तेने कोई एम कहे जे परमात्मा तो मूर्त्तिमान छे॥ तो तेने माने नहिं॥ ने तेने एम कहे जे चार वेदमां पेहेलो रुग्वेद थयो
छे॥ माटे ते रुग्वेदमां परमात्माने निर्गुण निराकार कह्या छे॥ माटे ते वात खरि छे॥ अने यजुर्वेदने अथर्ववेद तो पछे
थया छे माटे तेमां मूर्त्तिमान परमात्मा कह्या हशे तोपण तेनु प्रमाण नहि ने रुग्वेदमां कह्युं ते खरुं छे एम समजिने आध-
ला पुरुषोना हाथिनी पेठे एक वात नीर्गुण निराकार पकडी राखे ते आ समेए वा निर्गुण निराकार कहेनारा बहु थया छे
शा माटे के निर्गुण निराकार कहेवामां ठिक पडे छे॥ केमके जेम परमात्मा निर्गुण निराकार छे तेम आत्मा पण निर्गुण नि
राकार छे॥ माटे आत्मा एज परमात्मा छे॥ पण जिव पोताने एम निर्गुण नीराकार जाणता नथि माटे जिव कहेवाय छे
॥अने जो जिवने एवुं ज्ञान थाय तो ते जिव ज परमात्मा छे॥ एम अवलुं समजिने मिथ्या ब्रह्मवादि थईने पोताने परमात्मा खोटुं
खोटुं मानिने पछे वेदमां कह्या जे वर्णाश्रमना धर्म जे विधिने निषेध तेनो त्याग करिने निःशंक थईने कामादिक विषयने भो
गवे छे ने भ्रष्ट थाय छे॥ एवि रिते सत्पुरुषना समागम विना रुग्वेदने सांख्य अवलु समजिने पापने मार्गे चाले छे अने
वलि श्रुवेदमांथी केटला कएम समज्या छे जे हजि आपणने एवुं ज्ञान थयु नथि त्यां सुधि तो आपणे धर्म नियम अहिंसा-
ब्रह्मचर्यादिक साधन करवां खरां॥ अने साधन करतां करतां एवुं ज्ञान प्रगट थशे त्यारे आपणे पण परमेश्वर थईशुं॥
पछे धर्म नियम पालवानि ने विधिनिषेध राखवानि कांई जरूर नथि एम समजिने धर्म नियम उपरथि पाले छे पण अंतर
मां एम समजनारा नास्तिक छे ने भूला पड्या छे॥ ने ते निमूर्त्ति कोई काले थवानि नथि केमके परमेश्वरने निराकार
समजे छे पण ते एटलो विचार नथि करता जे निराकार एकलु साकारना आधार विना शि रिते अधर रहि शके नजर रही
शके॥ जेम निराकार जिवात्मा छे तो ते जिव जे ते स्थूल सूक्ष्म ने कारण त्रण देहरूपी आकार विना अधर रहि शकतो

नथि ॥ वलि जेम सूर्यनो प्रकाश निराकार छे तो ते प्रकाश सूर्य गोलना आधार विना एक क्षण मात्र पण अधर रहे तो न
थि वलि दिवामन्नालनो प्रकाश निराकार छे तो ते दिवामन्नाल रूपि मूर्त्तिने आधारे रहे छे पण ते विना एक क्षण
मात्र पण अधर रहेतो नथि माटे निराकार आकारना आधार विना अधर पधर होय नहि ए सिद्धांत वार्त्ता छे ते माटे निर्गुण
निराकार व्यापक एवुं जे ब्रह्म ते परमात्मानी मूर्त्तिनो प्रकाश छे पण मूर्त्ति विना निर्गुण निराकार अधर पधर होय नहि
माटे परमात्मा दिव्य मूर्त्तिमान छे अने तेना अंगनो प्रकाश जे ज्ञान ते निराकार छे तेनुं नाम ब्रह्म छे ॥ ते ब्रह्म सर्व व्याप
क छे माटे ते ब्रह्मनुं ज्ञान जिवोने आपवा सारुं दिव्य मूर्त्ति एवा जे परमात्मा ते रामकृष्णादिक पंचदेव रूपे प्रगट थाय छे ने जि
वोने ज्ञान आपे छे त्यारे जिव परमात्माना ज्ञाने करिने ज्ञान रूप थाय छे केहेतां ब्रह्म रूप थाय छे ने ब्रह्म रूप थईने प्रत्यक्ष पर
मात्मानि मूर्त्तिने विषे जोडाय छे ॥ त्यारे ते आत्मानि आत्यंतिक मुक्ति थाय छे अने ते मूर्त्तनी परमात्मानि मूर्त्तिने ध्याने
करिने दिव्य मूर्त्ति बंधाय छे ॥ ते मूर्त्तिने भागवति तनु केहे छे अने ज्यारे भागवति तनुं बंधाय छे त्यारे ते जिव मायाना त्रण
देह रूपि आधारे तेनो त्याग करे छे पण दिव्य मूर्त्ति बंधाया विना जिवने माईक आकार टलतो नथि मारे प्रथम रुग्वेदने
सांख्यने ज्ञाने करिने मायानो निषेध करिने जिवने निरवासनिक करिने ब्रह्मरूप करवा सारुं परमात्मानुं ब्रह्मरूपे ज्ञान
आप्युं छे ॥ पण परमात्मा दिव्य मूर्त्तिमान छे एम समजे तेने रुग्वेदने सांख्य शास्त्र सवलुं समजायुं जाणवुं ते प्रत्यक्ष परम
त्माना मूरवथ कि ज सवलुं समजाय छे पण ते विना तो अवलुं समजाय छे ते जैनमतवाला श्रावकलोको एकला रुग्वे
दना ज्ञानमां थीपोतानि मेले अवलुं समज्या छे ते शुं अवलुं समज्या छे तो रुग्वेदमां जियनि माया टालवाने अर्थे आ
कारनो निषेध करिने परमात्माने ब्रह्मरूपे निर्गुण निराकार अकर्त्ता कह्या छे ते वातने समज्या विना जैनमतवाले ते
ने पकडि राख्युं जे परमात्मा तो निर्गुण निराकार अकर्त्ता छे मारे कांई करता नथि अने आ जगत तो करमेने माया
ये करिने एनि मेले थाय छे पण एनो करता परमेश्वर नथि मारे साधन करिने कर्म क्षयावसु ॥ त्यारे आपणे परमेश्वर थ

थुं॥एविरिते जैनमतवाला अनेक परमेश्वरने माने छे पण ते निसमजणमां कोई अनादि जगतकर्त्ता परमेश्वर नथि॥ अने कर्मे करिने मोक्षने माने छे पण एकले कर्मे करिने मोक्ष थतो नथि माटे तेना शास्त्रमां एम लख्युं छे जे मोक्षनुं बारुं तो हमणे बंध छे माटे मोक्ष थतो नथि॥एविरिते दिव्यमूर्त्ति एवा जे रामकृष्णादिक जगत्कर्त्ता परमेश्वर तेना आश्रयने भूल्या छे माटे रुग्वेद तेने अवलो समजाणो छे॥अने पोतानी मेले एम समज्या छे जे चार वेदमां पहेलो रुग्वेद गणाय छे माटे ते रुग्वेद अनादिनो छे अने बिजा त्रण वेद तो पछे वांसे थि माणसे कर्या हशे माटे तेनु प्रमाण नहिं अने एक रुग्वेदमां कह्युं छे ते खरुं छे एम जाणिने एक वात पकडि राखि छे॥पण तेमां तो घणि खोट छे॥केमके चारि वेद एकथरवते ज परमेश्वरे पोते ज कर्या छे॥केमके परमेश्वरे प्रथम ब्रह्माने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान आप्युं त्यारे ब्रह्माने कह्युं के॥सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्म इति श्रुति॥अर्थ॥परमात्मा परमेश्वर केवा छे तो सत्य छे एटले माया पर छे अने ज्ञानरूप छे एटले दृष्टा द्रष्य भेद जे जीव ईश्वर ने माया तेथि पर दिव्यमूर्त्ति छे ने अनंत एटले जिव ईश्वर मायाना कारण आधार ने प्रकाशक छे ने जेना गुण महिमा ने सामर्थ्यनो अंत नथि एवा परमेश्वर छे एविरिते चारे वेदनु बिज एक श्रुतिमां कह्युं छे अने तेनो विस्तार कर्यो त्यारे सत्यपदनो रुग्वेद थयो ज्ञानपदनो सामवेद थयो अनंतपदनो यजुर्वेद थयो अने ब्रह्मपदनो अथर्ववेद थयो॥एविरिते एक वेदना चार भाग कर्या तेनु नाम चार वेद कहेवाय छे पण चारे वेद एक ज छे ने ते एक ठारे ज थया छे पण कोई मोरुक कहेवात्रो थया नथि ने एतो एक वेदना चार अंग छे तेनुं नाम चार वेद कहेवाय छे ते चारे अंगने जाणे त्यारे पुरो वेद जाण्यो कहेवाय अने एकने जाणे तो पा वेद जाण्यो कहेवाय अने बेने जाणे त्यारे अर्धो-वेद जाण्यो कहेवाय॥अने त्रणने जाणे त्यारे पोणो वेद जाण्यो कहेवाय अने चार वेदने सत्पुरुषथकि जाणे त्यारे पुरो वेद जाण्यो कहेवाय छे अने चार वेदे करिने सत्पुरुषथकि परमात्मानुं स्वरूप जाणे छे त्यारे तेनो मोक्ष थाय छे॥ पण एक वेदने जाण्ये मोक्ष थतो नथि माटे जैनमतवाले खरुं कह्युं छे जे अमारे मोक्षनुं बारुं बंध छे केमके अमारे एक

रुग्वेदनाजज्ञाननी थोडि घणि गमछे अने बिजा त्रणवेदना ज्ञानने तो अमे जाणता नथि एटले अमारा पूर्वजो कोई
कहिंया नथि माटे बिजा त्रणवेदनुं ज्ञान अमारामांनथि मारे अमारे मोक्षनु बारुं बंधछे ।। एम जैनवाले कहेछे ते रवरुं क
हेछे पण तेमांएटलो तपास करिने कोई जो तानथि ने गाडरिया प्रवाहनि पेठे चाल्याजायछे ।। अने एक वेदनुं ज्ञानतो
केवुं छे के जेमढोलियो करावयो होय त्यारे तेने अर्थे ढोलियानो एकपायो क्यांई कथि लावे तो तेएकपायेढोलियो था-
यनहिं अने कदापि चारे पायाने चारे उपलां लाव्यो होय पण जो ते सुतारपासे लेई जईने ते निमेलवणि करावि नहो-
यत्यां सुधि पण ते ढोलियो काई काममां आवे नहिं तेम आत्यंतितकज्ञानरुपि ढोलियो छे ने चारवेद ते ज्ञानना चा
रपाया छे ।। ने चार शास्त्र छे ते ज्ञानना चार उपला छे ने सद्गुरु तेना कारिगर सुतार छे ते सद्गुरु पासे जई ने चारवेदने चार
शास्त्र नि मेलवणि करावि ने आत्यंतिकज्ञानने पाम्यो नहोय त्यां सुधि तेआत्मानी मुक्ति थतीनथि जेमढोलियानो एक
पायो कांई काममां आवतो नथि तेमएकवेदे करिने आत्यंतिक ज्ञान थतुं नथी अने तेमज चारे वेदने चारे शास्त्र ने जाण्यां
होय पण जो ते नि सिद्धी ना करावनाराएवाजे सद्गुरु परमात्मा ते मल्या न होय त्यां सुधि पण सर्वे जाण्युं ते वृथा छे अने
प्रत्यक्षरामकृष्णादिक ज्ञानदाता परमात्मा ते नो आश्रय करिने तेना श्रीमुखथकि जे वेदादिक शास्त्रनां ज्ञान ने सिद्ध
करेछे तेने सर्वे वात नि सिद्धि थायछे पण प्रत्यक्ष परमात्माना चरणना आश्रयविना वेदादिक शास्त्र ने भणे सांभले तथा
जपतपादिक साधन करे पण ते सर्वे ते नांसाधन व्रथा छे पण ते शंकरस्वामिये गुरुअष्टकमां कह्युं छे।। श्लोक।। शाडंगा-
दि वेदो मुखे शास्त्रविद्या कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति गुरोरंघ्रीपद्मे मनश्चेन्नदत्तं ततः किं ततः किं ततः किं।। १।। अर्थ।।
छ अंगे सहित वेद शास्त्र नि विद्या मुखपाठे करि जाणतो होय तथा कवित्वादिक गुणे करिने रुडां गद्य ने पद्ये युक्त श्लो-
क बांधि जाणतो होय पण तेणे जो सद्गुरुरुप परमात्माना चरणने विषे मन अर्पण न कर्युं होय तो तेणे वेद जाण्या तो
य शुं ।। अने शास्त्र जाण्यां तोय शुं अने कवि थईने गद्य पद्यादिके करिने रुडा ग्रंथ बांधता आवड्या तोय शुं कांई तेणे करि

नेतेना आत्मानुं श्रेय थतुं नथि ॥ माटे वेद शास्त्रने भणवां सांभलवां विचारवां ने तेमां कह्युं होय ते प्रमाणे जपतप साधन
करवां अने तेणे करिने आत्मानि शुद्धि करवि कहेता विषय थकि निवर्त्ति पामवुं पण तेणे करिने प्रत्यक्ष परमात्मा मल्या
विना एकले साधने करिने पूर्णपणुं नमानवुं अने प्रत्यक्ष परमात्मा मल्या विना पूर्ण थवातुं पण नथि केमके आत्यंति-
क ज्ञान पाम्या विना पूर्ण थवाय नहिं ॥ अने प्रत्यक्ष परमात्मा विना बिजा कोईनी पासे आत्यंतिक ज्ञान पण नथि ॥
माटे प्रथम वेदशास्त्रना ज्ञाने करिने जे शुद्ध निरवासनिक थाय छे तेने पछे परमात्मा प्रगट थईने जरूर दर्शन आपे
छे जेम पूर्वे ध्रुवने तथा प्रह्लादने दर्शन आप्यां हतां तेम दर्शन आपे छे माटे प्रथम वेदशास्त्रना ज्ञाने करिने निरवास
क थवा सारूं वेदशास्त्रने भणवां सांभलवां अने प्रत्यक्ष परमात्मा पोताने मलवानि मनमां घणी ईछा राखवी एम समजि
नेजे वेदशास्त्रने समजशे तेने जेटलो वेद समज्यो हशे तेटलो तेने उपयोगमां आवशे ने जे एम नहिं समजे तेने वेदशास्त्र
निष्फल छे जेम खेडु खेतरने शुद्ध करे पण जो तेमां बिज नवावे तो तेने निपज्य थाय नहिं ॥ तेम वेदशास्त्रना ज्ञाने करि
ने मायाना आकारनुं निराकरण करिने चेतन द्रष्टिने पामे तथा अहिंसा ने ब्रह्मचर्यादिक धर्मे करिने इंद्रियो नियमम
करे तथा श्रवण मननादिक साधने करिने ब्रह्मना स्वरूपनो लक्ष करे पण तेणे जो पोताना आत्माने विषे प्रत्यक्ष परमात्मा
रामरूपादिक तेना स्वरूपनो निश्चय नकर्यो होय तो तेनां साधन सर्व व्रथा छे ॥ अने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो नि
श्चय पण ब्रह्मरूप थया विना थतो नथि जेम खेतरने शुद्ध कर्या विना तेमां बिज वावे तो ते बिज पण फले नहिं तेम सांख्य
विचारादिक साधन करिने शुद्ध थया विना प्रत्यक्ष भगवानने ओलखवा जाय तोपण तेने प्रत्यक्षनो निश्चय थतो नथि ॥
माटे बे साधन सिद्ध करे तेने सर्वे वातनि सिद्धी थाय छे ॥ एक आत्मानि शुद्धि करवि ने बिजुं प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूप
नो निश्चय करवो ए बे साधन पूरां थाय छे त्यारे आत्मानि मूक्ति थाय छे अने ए बे साधनमां एके अधरूं होय त्यांसुधि
जिवने जन्ममरण टलतुं नथि ॥ माटे मोक्षना खपवाळाने ए बे साधन जरूर सिद्ध करवां अने ए साधन पण जिवे

पोतानि मेले सिद्ध थतां नथि जेम एक रात्रिनुं अंधारूं टालवुं होय ने बिजुं सूर्यनुं दर्शन करवुं होय ते ए बे य काम एक सू-
र्यना दर्शनि थकि थाय छे पण सूर्यना दर्शन थया विना आंख्य पोतानि मेले अंधाराने टालवाने पण समर्थ नथि अने सूर्य
विना सूर्यने पण देखवाने पण समर्थ नथि माटे सूर्य उदय थईने प्रकाश करे त्यारे अंधारूं पण नाश थई जाय छे अने सू-
र्यनुं दर्शनि पण त्यारे थाय छे तेम आत्माने दुःखनि देनारि एवि अंधकाररूप वासना छे तेने टालिने शुद्ध थवुं अने परमा-
त्माना स्वरूपनो निश्चय करवो ते परमात्मा पोते प्रगट थईने सूर्यनी पेठे ज्ञान प्रकाश करे त्यारे अज्ञान रूपि अंधका-
रनो पण नाश थईने आत्मा शुद्ध थाय छे ॥ अने तेने पछे ज्ञानदाता प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनो निश्चय पण थाय छे। माटे
प्रत्यक्ष परमात्माना आश्रय विना जिवनो मोक्ष थतो नथि ते सारूं चार वेदने विषे त्रण त्रण कांड कह्या छे ॥ एक कर्मकां-
ड ॥ बिजो उपासनाकांड ॥ अने त्रिजो ज्ञानकांड ॥ ए त्रणे कांड चार वेदने विषे कह्या छे ॥ माटे वेद त्रै कहेवाय छे ॥ हवे
कर्मकांड एटले शुं तो आत्मानि शुद्धिने अर्थे प्रत्यक्ष सद्गुरु परमात्मा जे ते इंद्रियोने वश करावबा सारूं जे जे अहिंसाने
ब्रह्मचर्यादिक धर्म पालवानुं बतावे ते प्रमाणे तेनि आज्ञा पालवि तेनुं नाम कर्मकान्ड छे ॥ अने उपासना एटले धर्म
पलाविने आत्माने शुद्ध करनारा जे सद्गुरु तेनि प्रेमे सहित सेवा करवि तेनुं नाम उपासना छे ॥ अने ज्ञान एटले सद्गुरु
जे विरिते आत्मा परमात्मानु स्वरुप बतावे ते विरिते समजिने तेना स्वरूपनो निश्चय करवो तेनुं ज्ञानकांड छे ॥ ए वि
रिते चारे वेदने विषे कर्म उपासना ने ज्ञान ए त्रणे साधन कह्यां छे। ते त्रणे साधन एक प्रत्यक्ष सद्गुरु रुप परमात्मा ते
थकि सिद्ध थाय छे ॥ माटे त्रणे साधने सहित वेदनुं ज्ञान साभले छे तेने शुद्ध ज्ञान थाय छे पण ए त्रण साधनमां एके साध
न अधूरूं होय त्यां सुधि तेने वेदनां पुस्तको भणे साभले परिपूर्ण ज्ञान थतुं नथि अने ए त्रणे साधन क्यारे पूरा थाय छे
तो उपासना करवा योग्य एवा जे परमात्मा ते ज सद्गुरु रूपे पृथ्वि उपर प्रगट थया होय त्यारे तेनि पासे त्रणे साधन संपूर्ण
वर्त्ततां होय छे तेना आश्रय थकि त्रणे साधन सिद्ध थाय छे ॥ माटे ते आ समयने विषे त्रणे साधने सहित चारे वेदनुं ज्ञा

त्यंतिक ज्ञानने प्रगट वर्त्ते छे ते सारु चारे वेदनुं ज्ञान सर्वने से लि रिते थाय कहेतां सर्वने समज्यामां आवे तेने अर्थे नर्मगद्य
नुं भाषण करिने सर्वेने समजाविये छिये ॥ तेमां रुग्वेदने सांख्यशास्त्रनो एटलो सार समजवानो छे जे सांख्यविचारे क
रिने माया नो निषेध करिने आत्माने ब्रह्मसंघाते एक करवाने अर्थे रुग्वेदमां ने सांख्यमां मायानु निराकरण कर्युं छे॥
अने ब्रह्मने ने परमात्मा परब्रह्मने एक कह्या छे माटे जिवने प्रथम शुद्ध करवाने अर्थे ब्रह्मनुं ज्ञान आप्युं छे ते ब्रह्मनुं
ज्ञान सिद्ध थाय त्यार पछे परब्रह्मनुं ज्ञान थाय छे ते परब्रह्मनुं ज्ञान कराववा सारु बिजो यजुर्वेद छे ते एक पेला वेद
थि बिजा वेदमां ज्ञान वधारे समजवानु छे ने बिजा वेदथि त्रिजा वेदमां ज्ञान वधारे समजवानुं छे ने त्रिजा वेदथि चोथा
वेदमां ज्ञान वधारे समजवानुं छे जेम सरकारी निशालोमां सात चोपडियो भणवानि छे ॥ तेमां पेहेलीचोपडिना
करतां बिजि चोपडिमां वधारे समजण छे ॥ अने बिजिना करतां त्रिजि चोपडिमा समजण वधु होय छे ॥ अने त्रिजिना क
रतां चोथिमां वधारे समजण होय छे अने सातमी चोपडिमां तो सर्वथी वधारे समजण होय छे पण पेहेलि बिजि त्रिजि ए
म छ ये चोपडियो प्रथम भणे छे त्यार पछे तेने सातमि चोपडिनुं ज्ञान थाय छे पण पेहेलि बिजि त्रिजि चोपडि भण्या विना
सातमि चोपडिनुं ज्ञान थाय नहिं अने पेहेलि बिजि त्रिजि एम छ चोपडियो भण्यो होय पण सातमि चोपडिने जोई न होय
तो ते पुरि विद्या भण्यो कहेवाय नहि तेम सात चोपडियोने ठेकाणे चारे वेद छे तेमां पहेलि चोपडिने ठेकाणे रुग्वेदनुं ज्ञा
न छे ॥ ने बिजि चोपडिने ठेकाणे यजुर्वेदनुं ज्ञान छे ॥ अने त्रिजि चोपडिने ठेकाणे सामवेदनुं ज्ञान छे अने पाचमि छ
ठि ने सातमि ए त्रण चोपडियोने ठेकाणे अथर्ववेदनुं ज्ञान छे माटे अथर्ववेद तो त्रणे वेदनो सार छे ॥ केमके अथ
र्वेदमां प्रत्यक्ष परमात्माने देखाडिने तेने विषे भक्तिये करिने आत्माने साक्षात्कार छे लिस्थिति पमाडि छे माटे अथ
र्वेद तो सर्वनो सार छे पण जेम पेलि चोपडि भण्या विना सातमि चोपडि भणतां आवडति नथि तेम रुग्वेदादिक त्र
ण वेदने जाण्या विना अथर्ववेद करिने जाणवा योग्य एवा जे प्रत्यक्ष परमात्मा तेना स्वरूपनो निश्चय थतो नथि॥

अने प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनो निश्चय थया विना आत्मानि मूक्ति थतिनथि माटे सद्गुरु नो आश्रय करिने ते थकि
चारे वेदने सिद्ध करे छे तेनो मोक्ष थाय छे माटे सद्गुरु जे ते प्रथम रुग्वेदनुं ज्ञान आपिने आत्माने शुद्ध करि ने पछि परमा-
त्माना स्वरूपनुं ज्ञान कराववा सारुं बिजो यजुर्वेद ने योगशास्त्रनुं ज्ञान करावे छे ते यजुर्वेदमां शुं कह्युं छे तो परमात्मा
जे ते जिव ईश्वर माया ने ब्रह्म ए सर्वेना प्रकाशक छे ने सर्वना आधार छे ने सर्वना प्रेरक छे ने मूर्त्तिमान छे ने सर्वना कर्त्ता
छे ने सर्वना अंतर्यामि छे ने सर्वने कर्म फलदाता छे ने सर्वने ध्यान करवा योग्य छे एवा परब्रह्म परमात्मा छे ॥श्लोक॥
द्वौ संपूर्णौ सयौ जौ स खायौ समानवृक्षे चाति षृतौ ॥ अर्थः ॥ देहरूपि वृक्ष छे तेने विषे बे पक्षि छे ॥ एटले एक जिवने
बिजो ईश्वर ए बे रह्या छे ते बेय सयुज एटले अनादि छे ने सखा एटले मित्र छे ते मां जिव कर्म करिने तेना फलने इछे छे ने ई-
श्वर कर्म करता नथि ने जिवने फल आपे छे ॥ ए विरिते देहरूपि वृक्षने विषे बे पक्षि रूप जीव ने ईश्वर रह्या छे ते मां जिव दे-
हने विषे अहंवृत्ति ये करिने रह्यो छे ॥ कहेतां देह हुं छुं एम माने छे ॥ अने ईश्वर अंतर्यामिपणे रह्या छे ते जिव देहदेह
प्रत्ये जुदाजुदा अनेक छे ने ईश्वर सर्वना अंतर्यामि एक छे ॥ जेम जिवनि आंख्य सर्वेनि जुदि जुदि अनेक छे । अने ई-
श्वरनी आंख्य सूर्य ते एक छे ते सर्वे जिवोनि आंख्योने प्रकाश करे छे तेम जीव देह देह प्रत्ये अनेक छे ने ईश्वर सर्वनो प्र-
काशक एवो वैराटरूपे एक छे से एकथको अनंतने प्रकाशे छे । एविरिते परमात्मा एकथका बहुरूपे छे त्यां श्रुतिः
॥ एकोहं बहुस्यां ॥ अर्थ ॥ ईश्वर कहे छे ॥ हुं एक छुं ते बहुरूपे थयो छुं ॥ बहुरूपे एटले सर्वेना कारण आधार प्रकाश-
क परमात्मा छे एम परमात्माने जोशे तेने परमात्मोना स्वरूपनुं ज्ञान थशे । एविरिते यजुर्वेदमां परमात्मा ईश्वरने
बहुरूपे कह्या छे ।। पण बहुरूपे कह्या ते सर्वे जिव परमात्मा छे एम न समजवुं ॥ सर्वेरूपे ईश्वर छे एम कह्युं त्यां एम स-
मजवुं जे ईश्वर सर्वना प्रकाशक छे ने सर्वने ध्यान करवा योग्य छे ने सर्व थि पर छे ने मूर्त्तिमान छे ॥ ते परमात्मा जे ते
पोतानु अनवय स्वरूप जे सबल ब्रह्म एटले पोताने जगत करवानि ईछा रूप जे सबल पण ते ईछाये करिने जिव

ईश्वरमायासर्वे प्रकाशवान थयां छे माटे परमात्माने अनंत रूपे कह्या छे एम समजवुं माटे यजुर्वेदमां एवि रिते छा-
शिशा रवाये करिने परमात्मानुं वर्णन कर्युं छे जे परमात्मा केवा छे तो सर्वेने कर्णइंद्रिये करिने शब्द संभलावे छे॥
ने सर्वेने त्वचाये करिने स्पर्ष करावे छे ने सर्वेने नेत्रइंद्रिये करिने रूप जोवरावे छे ।। ने सर्वेने जिव्हाइंद्रिये करिने रस
चरवाडे छे ने सर्वेने नासिकाइंद्रिये करिने गंध लेवरावे छे ॥ ने मनने चंद्रदेवे करिने सर्वेने संकल्प करावे छे ने सर्वेने
बुद्धिने ब्रह्मादेव वडे करिने निश्चय करावे छे ने सर्वेने चित्तने वासुदेव देव वडे करिने चिंतवन करावे छे॥ ने सर्वेने
अहंकारने रुद्रदेव वडे करिने अभिमान धरावे छे ।। एवि रिते परमात्मा जे ते ईश्वररूपे एटले वैराट रूपे करिने व्य-
ष्टि समष्टि रूप सर्व जगतने प्रकाशे छे ।। माटे यजुर्वेदने योगशास्त्र जे ते परमात्माने अनंतरूपे गाय छे तथा शाकारक कहे
छे सगुण कहे छे कर्त्ता कहे छे ।एक देशि कहे छे॥ ईत्यादिक उपमा आपे छे पण परमात्मा तो जिव ईश्वर माया थी पर
छे जेम दिवाना प्रकाशे करिने घरनां पदार्थ प्रकाशवान थाय तेने दिवारूप कहेवाय केमके दिवाना प्रकाश विना रा-
त्रिमां एके पदार्थ देखातुं नथि ।। अने दिवाने प्रकाशे प्रकाशवान थयां माटे दिवारूप कहेवाय पण दिवो ते पदार्थथ-
कि नोखो छे तेम परमात्मा जिव ईश्वर मायादिक व्यष्टि समष्टिरूप सर्वे जगतना प्रकाशक छे माटे तेने परमात्मारूप क-
हे छे पण परमात्मा तो जिव ईश्वर माया थि पर छे ने जुदो छे एवि रिते यजुर्वेदने योगशास्त्रने विषे परमात्माने सर्वरू-
प सर्वना प्रकाशक सर्वना कर्त्ता आधार प्रेरक कर्मफलना आपनारा मूर्त्तिमान अंतर्यामि सर्वना साक्षि ने सर्वने
ध्यान करवा योग्य एवा कह्या छे ।। हवे रुग्वेदमां निरगुण निराकार व्यापक रूपे परमात्माने गाया। अने यजुर्वेदमां
सगुण साकार कर्त्ता कहिने परमात्माने गाया ।। पण तेणे करिने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान साक्षात्कार थयुं नहि पण ते
बे वेदे करिने एटलुं ज्ञान थयुं जे परमात्मा जक्त कर्त्ता सर्वना आधार कर्म फलना आपनार जे नि अनंत शक्तियो छे ॥ ए-
वा समर्थ परमात्मा छे खरा एटलो निश्चय थाय छे ।। पण ते परमात्मा केवे रूपे छे ने क्यां छे ॥ एम निश्चे थयो नहि ।।

केमके एक वेदमां सगुण साकार कह्या ने निर्गुण निराकार कह्या माटे परमात्मा सगुण साकार छे के निर्गुण निराकार छे॥
एम कांई निश्चय थयो नहिं ते मां आजगतमां जे रुग्वेद ने यजुर्वेद ए बेने जाणनारा छे ते तो एम कहे छे जे परमात्मा सा
कार छे के निराकार छे एम तो ए केवातनो निश्चय थतो नथि पण परमात्मा जगत्कर्त्ता छे खरा ने ते जगतथि पर छे एट-
लो निश्चय छे॥ एम कहे छे॥ अने जे एक रुग्वेदने जाणनारा छे ते एम कहे छे जे परमात्मा तो निर्गुण निराकार अकर्ता
छे ने ए तो कांई करता नथि॥ माटे जगत परमात्माये नथि कर्युं ने जगतथि तो परमात्मा पर छे एम कहे छे अने जे एक यजुर्वे
दना जाणनारा छे ते परमात्माने साकार गुणकर्ता एकदेशी एम कहे छे॥ माटे पछे एक बिजा ज्ञान समज्या विना वा
दविवाद करे छे पण ए वादविवाद अणसमजणनो छे॥ माटे बुद्धिमानने पुरुज्ञान शिखवा सारु महात्मा पुरुषनो स-
त्संग करवो माटे महात्मा पुरुष प्रथम बे वेदनुं ज्ञान सिद्ध करावि ने पछे त्रिजा सामवेदनुं ज्ञान करावे छे ते सामवेद
ने वेदांतशास्त्रमां परमात्माने केवा कह्या छे तो॥ सर्वं खल्विदं ब्रह्मेति श्रुतिः॥ अर्थः॥ सर्वं ब्रह्म एटले रुग्वेदमां पर
मात्माने निरगुण निराकार कह्या॥ अने यजुर्वेदमां सगुण साकार कह्या॥ ए बे प्रकारना ज्ञाननि सिद्धि करावि ने जि-
वने ब्रह्मरुप करनारा एवा जे प्रत्यक्ष सद्गुरु ते ब्रह्म छे॥ एटले साक्षात परमात्मा छे॥ अखंड मूर्त्ति छे दिव्य मूर्त्ति छे अने
ते मूर्त्तिने रुग्वेदमां निर्गुण कहि छे॥ केमके तेने विषे मायाना रज तम ने सत्व एवा जे त्रण गुण ते मूर्त्तिने विषे नथि मा
टे ए मूर्त्ति निर्गुण छे॥ तेनुं प्रमाण शुं तो पोताना आश्रित छे तेने विषे त्रण गुणरुप जे जगत छे तेनो निषेध करावि ने नि-
र्गुण ब्रह्मरुप निरवासनिक करे छे तो पोते निर्गुण होय एमां शुं कहेवुं॥ अने तेने विषे कल्याणकारि जिवने ब्रह्मरूप क
रवाने अर्थे ब्रह्मविद्याना अनंत गुण रह्या छे॥ अने ते मूर्त्तिने विषे पंचभूतात्मक माईक आकार नथि माटे निराकार
कह्या छे॥ अने यजुर्वेदमां साकार कह्या छे ते दिव्य मूर्त्ति छे माटे साकार कह्या छे॥ अने वलि निरगुण ब्रह्मरुप जे आ-
त्यंतिक ज्ञान तें जे निवृत्ति छे॥ अने सगुण शक्ति जे जगत सृजवारुप अनवयस्वरुप जे प्रकृतिपुरुषादिक सबल ब्रह्म

तेपण जेनि शक्ति छे एवा जे शक्तेश्वर परमात्मा सद्गुरु ते दिव्यमूर्त्ति छे ॥ अने ते मूर्तिने विषे अन्वयव्यतिरेक भेद नथि
कहे तां प्रत्यक्ष परमात्मानि मूर्त्तिने विषे देहदेहि एवो भेद नथि माटे परमात्मानि मूर्त्ति एक छे ते ब्रह्म छे अने प्रत्यक्ष स
द्गुरुनि मूर्त्ति विना बिजा आकार मात्र जे देव ब्रह्मा ने प्रकृतिपुरुष सुधिना आकार सर्वे मिथ्या छे एटले माया छे कहे तां
परमात्माने न जाणवा रूप अज्ञान छे माटे मिथ्या छे ॥ अने एक प्रत्यक्ष परमात्मा ज्ञानदातानि मूर्त्ति ते सर्वे ब्रह्म छे एटले
सत्य छे ॥ ते परमात्मानुं सामवेदने विषे एक सहस्र शाखाये करिने वर्णन कर्युं छे ॥ जे परमात्मा केवा छे तो सर्वे शब्दरूप
छे ॥ सर्वे स्पर्शरूप छे ॥ सर्वे रूपरूप छे ॥ सर्वे रसरूप छे ॥ सर्वे गंधरूप छे ॥ सर्वे मनरूप छे ॥ सर्वे बुद्धिरूप छे ॥ सर्वे चित्तरूप छे
सर्वे अहंकाररूप छे ॥ एवि रिते अन्वयव्यतिरेक भेदे रहित ने अन्वयव्यतिरेकना कारण आधार प्रेरक प्रकाशक सर्वश-
क्तिमान सर्वत्रपूरण अद्वैत एटले एजेवो बिजो कोई नथि ॥ अने अखंड अनादि एवा दिव्यमूर्त्तिमान परमात्मा छे ॥ जेम
आकाशथकि चार भूत उपजे छे ॥ अने पाछां चारे भूत आकाशमां लिन थाय छे तेम परमात्मानी ईछाये करि व्यष्टि समष्टि
यादिक अनंत कोटि ब्रह्मांड उत्पन्न थाय छे ने वलि पाछां परमात्मानी ईछाये करिने सर्वेनो लय थई जाय छे ते जेम आ-
काशनि दृष्टिये जोईये तो चार भूत दृष्टिमां आवतां नथि ने एकलुं आकाश ज देखाय छे तेम परमात्मानि दृष्टिये जोईये तो
व्यष्टि समष्टि यादिक कांई देखातुं नथि ने एक परमात्मा ज देखाय छे ॥ केमके परमात्मानि सगुण निर्गुणादिक शक्ति छे
तेणे करिने परमात्मा सगुणनिर्गुण कहेवाय छे ॥ पण परमात्मानि मूर्त्तिने विषे सगुणनिर्गुणपणुं कांई नथि ॥ केमके सा
कार सगुण तो पिंड ब्रह्मांडादिक माया छे ते माया परमात्मानि मूर्त्तिने विषे नथि अने निर्गुण निराकार तो आत्मा छे ते आ-
त्माथिपण परमात्मा पर छे माटे परमात्मानि मूर्तिने विषे थी मायानो निषेध करवानि अर्थे परमात्मा साकार नथि सगुण न
थि ॥ करता नथि एम वेदमां कह्युं छे ते परमात्मा साकार सगुण नथि त्यारे आत्मा जेवा निर्गुण निराकार समजाय ते माटे
आत्मा जेवा निर्गुण निराकार पण नथि ॥ माटे परमात्मानी मूर्त्तिने विषे थि निर्गुण निराकारादिक भाव निषेध कर-

वानेअर्थेपरमात्मानिर्गुणनथिनिराकारनथिइत्यादिकवेदमांकह्युंछे पणपरमात्मानिमूर्त्तिनेविषेपिंडब्रह्मांडा-
दिकमायातथाजीवईश्वरनाचैतनरूपनिर्गुणनिराकारब्रह्मतेएकेनथिनेपरमात्मातोएबेयनाआधारछेनेतेनाप्रका
शकछेनेएबेथिजुदाछेनेदिव्यमूर्त्तिमानछेनेकर्तुमकर्त्तुनेअन्यथाकर्त्तुसमर्थछे।।माटेपरमात्मानिदृष्टिये जो-
ईयेतोपरमात्मानिमूर्त्तिविनाबिजुंपिंडब्रह्मांडतथाजिवईश्वरकांईनथिएकपरमात्माजछे।।एमकहेवायपणपरमा
त्मातोजिवईश्वरतथापिंडब्रह्मांडतेथीजुदाछेनेपरमात्माजेवातोएकपरमात्माजछे।।पणपरमात्माजेवोतोकोईथ
तोजनथि।।माटेपरमात्मानिमूर्तिनेविषेथिपिंडब्रह्मांडादिकमायानोभावटालिनेतथाजिवईश्वरादिकआ-
त्मानोभावनिषेधकरिनेपछेसामवेदनेवेदांतशास्त्रजेतेपरमात्माप्रत्यक्षनिमूर्त्तिनेसगुणकहेछेएटलेकल्याण-
कारिगुणेयुक्तपरमात्माछे।।अनेनिर्गुणकहेछेएटलेमायानाजेरजतमनेसत्वएवाजेत्रणगुणतेपरमात्मानि
मूर्तिनेविषेनथि।।अनेसाकारकहेछेएटलेदिव्यमूर्त्तिमानपरमात्माछे।।अनेनिराकारकहेछेएटलेपरमात्मा-
निमूर्तिनेविषेमायानोआकारनथि।।अनेकर्ताकहेछेएटलेपरमात्मानिईछायेकरिनेअनंतकोटिब्रह्मां
डनीउत्पत्तिथायछे।।अनेकर्त्ताकहेछेएटलेउत्पत्तिस्थितिनेप्रलयतेप्रकृतिपुरुषकालमायादिकपासेकरावेछेपणपोते
कांईनथिकरता।।एविरितेसामवेदनेवेदांतशास्त्रनेविषेपरमात्मानिदिव्यमूर्त्तिसिद्धकरिआपिछे।।हवेत्रणवेदे
करिनेमहिमायेसहितदिव्यमूर्त्तिमानपरमात्मानेसिद्धकर्यानेप्रत्यक्षज्ञानदातापरमात्माछे।।एमनिश्चयथ
योपणतेतोजगतमांकेटलाएकगुरुकहेवायछेनेज्ञानपणआपेछेमाटेतेमांथिकेनेपरमात्माकहेवानेकेनेन
कहेवा।।एमकांईनिश्चयथयोनहिं।।पछेतेप्रत्यक्षपरमात्मानास्वरूपनुंसाक्षात्कारज्ञानकरावबासारुंचोथो
अथर्वेदनेपांचरात्रशास्त्रछेतेअथर्वेदनेपांचरात्रशास्त्रनेविषेपरमात्माप्रत्यक्षनेओलखावबासारुंकह्युं
छे।।अयमात्माब्रह्मइतिश्रुतिः।। अर्थ।।आज्ञानदाताप्रत्यक्षपरमात्माछे।।केहेतांसतचिदनेआनंदतेनि

पूर्णता जेने विषे छे एटले आत्यंतिक ज्ञानसिद्धतारूप गुण साक्षात्कार जेने विषे छे एवा जे ज्ञानदाता ते परमात्मा छे ॥ जे जेना
सुखथकि ज्ञानने मनकर्मवचने सांभले तो ते सांभलनारानि अपूर्णता टलिने ब्रह्मरूप थई जाय छे ॥ माटे एवुं ज्ञान जे ना
थकि थाय ते परमात्मा छे ॥ ने ते विनाना बिजा सर्वे जिव छे ॥ एम प्रत्यक्ष परमात्माने ओलखवा हवे एवा जे प्रत्यक्ष परमा-
त्मा तेनुं अथर्ववेदने विषे नव शाखाये करिने वर्णन कर्युं छे जे परमात्मा केवा छे ॥ तो जेनो पूर्ण शब्द छे एटले जेना शब्दने
सांभलवे करिने सांभलनारो जिवात्मा ते पूर्णकाम थई जाय छे ॥ एवो जेनो शब्द छे ने जेनो पूर्ण स्पर्श छे एटले जेना चर
णने स्पर्शे करिने अपूर्ण जिव ते पूर्णकाम थई जाय छे एविरिते जेनुं पूर्णरूप छे एटले जेना दर्शन करवाथि पूर्णकाम थाय छे
ने जेनो पूर्ण रस छे ने जेनो पूर्ण गंध छे ने जेनो पूर्ण अहंकार छे ने जेनुं पूर्ण मन छे ने जेनुं पूर्ण चित्त छे ने जेनि पूर्ण बुद्धि छे केहेतां
प्रत्यक्ष ज्ञानदाता परमात्माना अंग अवयवो सर्वे साकरना नालियेरनि पेठे परमात्मारूप छे ॥ जेम साकरनुं नालियेर होय ते
नां काचलि चोटलि ने गोलो सर्वे साकरनुं छे पण तेमांथि कांई त्याग करवा जेवुं नथि तेम प्रत्यक्ष ज्ञानदाता परमात्मानी मू
र्त्तिने विषे त्यागभाग करवा योग्य नथि ॥ परमात्मानि मूर्त्ति तो परमात्मा ज छे ने तेना संबंधने जे जे जिव पामे छे ते जिव ब्र
ह्मरूप थाय छे ॥ एवा रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष परमात्मा छे ॥ माटे तेना संबंधे करिने ब्रह्मरूप थया एवा जे नारद सनकादिक
ने शुकजि जेवा महामुक्त तेणे पोतानो देह ने देहसंबंधि पदार्थ तेनो निषेध करिने प्रत्यक्ष परमात्मा रामकृष्णादिक ज्ञा
नदाता तेनि मूर्त्तिनुं ज्ञानवर्ण्युं छे ने ते मूर्त्तिनुं ध्यान कर्युं छे ने तेना लिलाचरित्र बोलवुं बेसवुं रमवुं हारवुं जितवुं शुभक्रिया अशु
भक्रियादिक सर्वे ने परमात्मारूप जाणिने गान कर्युं छे ने तेना चरित्रने गाने करिने अधर्मि जिव होय तेनो उद्धार थाय छे एम
आत्यंतिक ज्ञानना आपनारा ते परमात्मा छे ॥ एविरीते चारे वेदे करिने परमात्मानुं स्वरूप ईंद्रियो अंतःकरण ने अनुभ
वमां साक्षात्कार करायो छे ॥ ने तेणे करिने आत्मानि मूक्ति थाय छे ॥ अने ए चारे वेदने चारे शास्त्रने जो जुदां पाडिने सां
भलशो तो ते चारेमां एकएक गुण छे ने एकएक दोष छे ने एकएक गुण सम जाशे ने एकएक दोष समजाशे ॥ माटे ते

गुणदोषने जाण्या विना जो असतपुरुषए वाजे नास्तिक एटले परमात्माना अवतारने न माननारा जेपा खंडि तेनापा-
सेथि सांभलशेतो तेचार वेद मां जे चार दोषछे ते दोषे करिने चारगुण छे तेने दोषरूप करिने परमात्मा ना स्वरूपने
विषे नास्तिक भाव कराविने भ्रष्ट करशे ते आस मामां केटला क जगतमां एक एक वेदने एक एक शास्त्रने असतपुरु-
षपासेथि सांभलिने नास्तिक थई गयाछे माटे वेदशास्त्रने सत्पुरुषपासेथि सांभलिने सिद्ध करेछे तो ते आत्मा ब्रह्मरूप
थईने प्रत्यक्ष परमात्माने साक्षात्कार पामेछे ॥ हवे तेमां जे गुणदोष छे तेने समजवा निरित कहुं छुं॥ जे प्रथम रुग्वेदने
सांख्यमां जे गुणदोष छे तेने कहे छे ।जे ते रुग्वेदने सांख्ये करिने पिंड ब्रह्मांडादिक मायानुं निराकरण करिने पोताना
आत्माने ते थि नो खो पाडिने तेने चैतन निराकार व्यापक ज्ञानरूप जाणवो ने ते आत्माये करिने आत्मामां परमात्मा
ने जोवा कहेतां ध्यान करवुं ॥ए तो रुग्वेदने सांख्य मां गुण छे पण पिंड ब्रह्मांडादिक मायाना आकारनुं निराकर्ण कर-
वुं कहे तां मिथ्या जाणवा तेम मायापर एवा जे ज्ञानदाता सद्गुरुरूप परमात्मा दिव्य मूर्त्ति राम कृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवा
न तेनि मूर्त्तिनुं निराकर्ण पण समजाय कहेतां मारो देह मिथ्याछे तेम तेनो देह पण मिथ्या छे एम समजाय ए रुग्वेद
ने सांख्य मां मोटो दोषछे ॥ हवे तेमां जे गुण छे तेनुं ग्रहण करिने कहे तां पिंड ब्रह्मांडादिक आकारनो निषेध करिने पोते
आत्मा शुद्ध थईने एटले पंच विषयनि वासनानो त्याग करिने पछे ते रुग्वेदमां ने सांख्यमां जे दोष आवे छे ते दोषने-
टालवाने अर्थे बिजो यजुर्वेदने योगशास्त्र मां जे गुण छे ते गुण ने रुग्वेदने सांख्यमां मेलविने ते मां दोष छे तेने टालिना
खवो हवे यजुर्वेदने योगशास्त्र मां गुण कियो छे तो यजुर्वेदने योगशास्त्र मां छविस तत्व कह्यां छे ॥ ते चोविस तत्व मा-
मायानां कह्यां छे ते चोविस तत्वनां नाम ॥ पंचभूत पृथ्विजल अग्नि वायुने आकाश अने पांच ज्ञानइंद्रियो कानचा
मडि आंख्य जिभने नासिका ॥ अने पांच कर्म ईंद्रियो ॥ वाणि हाथ पग शिस्नु ने गुद ॥ अने पांच विषय शब्द स्पर्श रूपर
स ने गंध अने चार अंतःकरण ॥ मन बुद्धि चित्त ने अहंकार ॥ ए चोविस तत्व मायानां छे ने पंचविसमो आत्मा छे॥

ने छविसमो परमात्मा छे ते जे आत्मा छे ते मायाना तत्वनो त्याग करिने शुद्ध निर्गुण निराकार थईने छविसमा परमात्मा दि
व्यमूर्त्तिने पामे छे ।। एम योगशास्त्रने यजुर्वेदमां कह्युं छे ते गुण छे ते गुणने सांख्यमां समजवो एटले सांख्यमां जे
दोष छे ते टलि जाय छे ।। ने सांख्यमां शंक कह्युं छे तो सांख्यमां पंचविस तत्व कह्यां छे ते पंचविस तत्वने जाणे ते मुक्त थाय
छे ।। त्यां श्लोक ।। पंचविंशति तत्वज्ञो तत्र यत्राश्रमे रतः ।। शिखि मुंडि जटि वापि मुच्यते नात्र संशयः ।। अर्थ ।। पंचविश
तत्वने जाणनारो मुक्त थाय छे तेमां कांई संशय नथि ने गमे ते आश्रमी होय एम कह्युं ए सांख्यनो सिद्धांत छे त्यारे त्यां-
म समजवुं जे सांख्यमां पंचविस तत्व कीधां छे ते मांचोविस तत्व मायानां कह्यां छे ते मायानां तत्व तो जड छे ने मिथ्या
छे ।। ने पंचविसमा परमात्मा ने कह्या छे ते परमात्मा सत्य छे ते मायानां तत्वोने मिथ्या जाणिने परमात्माने सत्य जाणे ते
मुक्त थाय एम कह्युं त्यारे त्यां एम विचार करवो के मायानां तत्व तो जड ने मिथ्या छे अने परमात्मा तो सत्य ने सदाय मा-
यापर छे ।। माटे मायात्याग करिने परमात्माने पामे छे कोण तेनो तपास करवो ।। केमके परमात्माने तो कांई पामवुं
नथि केहेतां परमात्मा तो मायापर ने पूर्णकाम छे ।। माटे तेने तो कांई करवुं नथि अने जे सांख्यमां अहिंसा ने ब्रह्मच-
र्यादिक धर्म पालवानुं कह्युं छे ।। तथा श्रवण मनादिक साधन करवानुं कह्युं छे ते केने करवानुं कह्युं छे केमके माया-
नां चोविस तत्वो जड ने मिथ्या छे ने परमात्माने तो कांई करवुं नथि ।। माटे त्यां योगमां जे छविस तत्व कह्यां छे ते योग
नो गुण सांख्यमां समजवो त्यारे सांख्यनि शुद्धि थाय छे पण योगनो गुण लिधा विना सांख्य अवलुं पडे छे जेम आप
णे एक बलद होय ने एक बलद आपणा पाडोशिने होय ते आपणे कांईक गाडि जोडिने गाम जवुं होय त्यारे ते पाडोशि
नो बलद मागि लेईये त्यारे गाडि जोडिने गाम जवाय ने पाडोशिने गाम जवुं होय त्यारे आपणो बलद ते मागि जाय ।।
त्यारे तेने पण गाडि जोडिने गाम जवाय ने बेनुं काम थाय पण जो एक बिजानो बलद न मागि ले तो बेमां एकेने गा-
डि जुते नहि ने काम थाय नहिं ।। तेम सांख्यमां योग भेलवे ने योगमां सांख्य भेलवे त्यारे परमात्माना स्वरूपनुं शुद्ध ज्ञा

नथाय पण ते विना एकले सांख्ये केए कले योगे करिने परमात्मानुं स्वरूप समजातुं नथि माटे सांख्यने शुद्ध करवाने अर्थे
योगनो गुण लेवो ते योगमां छविस तत्व कह्यां छे तेमां चोविस तत्व मायानां कह्यां छे ते जड ने मिथ्या छे अने पंचविस-
मा जिव ईश्वरने कह्या छे ।। अने छविसमा परमात्माने कह्या छे तेमां जिवने ईश्वर छे ते ने विषे चोविस तत्वरूप मायाव लगि
छे ।। अने परमात्मा मायापर छे ने निर्दोष छे ने ते परमात्मा जिव ईश्वर मायाना आधारने प्रकाशक छे माटे जिव ईश्वर छे
ते मायाना चोविस तत्वनो त्याग करिने पंचविसमो पोते आत्मा ब्रह्मरूप थईने छविसमा दिव्यमूर्त्ति परमात्माने पामे छे
एम योगशास्त्रमां कह्युं छे तेने सांख्यमां एम समजवुं जे सांख्यमां पंचविस तत्व कह्यां तेमां चोविस तत्व मायानां क-
ह्यां छे ते मायाना तत्व भेगा जिव ईश्वर बेने तत्वरूप गण्या छे अने पंचविसमा परमात्माने कह्या छे एम समजवुं केम-
के जिव विनानां तत्व एकलां जुदां होय ज नहि माटे सांख्यमां चोविस तत्व कह्यां ते भेगां जिव ईश्वरने तत्वरूप गण्या
छे अने पंचविशमा परमात्मा कह्या छे ।। माटे जिव ईश्वर जे ते मायानां चोविस तत्वथकि नोखा पाडिने परमात्मा
ने पामे छे एम समजिने मायामांथि थयां जे पिंड ब्रह्मांडादिक आकार मात्र तेनुं निराकर्ण करवुं कहेतां मिथ्या जाण-
वुं पण सदाय मायापर ने दिव्यमूर्त्ति एवा परमात्मा प्रत्यक्ष ज्ञानदाता रामकृष्णादिक भगवानना अवतारनी मूर्त्ति ते
नुं निराकरण न करवुं अने ते मूर्त्तिनुं तो मायानो निषेध करिने पोते आत्मा शुद्ध ब्रह्मरूप थईने ते ने विषे परमात्मानि
मूर्त्तिने धारिने तेनुं ध्यान करवुं अने जो मायानो निषेध करिने केवल आत्मारूपे पोताने मानत्रो पण तेमां प्रत्यक्ष पर-
मात्मा रामकृष्णादिकनि मूर्त्तिनुं ध्यान नहिं करे तो तेने माया कोई काले छुटती नथि ।। ते पण गीताना अध्याय २
बिजानो श्लोक ५९ ओगणसाठमामां कह्युं छे ।। श्लोक ।। विषया विनिवर्त्तंते निराहारस्य देहिनः ।। रसवर्ज्यं रसोप्य-
स्य परं दृष्ट्वा निवर्त्तते ।।५९।। अर्थ ।। केवल विषयनो त्याग करवाथकि इंद्रियो विषयथकि निवर्त्ति पामे छे पण राग
जे वासना ते नथी निवृत्ति पामति ते क्यारे निवृत्ति पामे तो प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपने देखे के हेतां प्रत्यक्ष परमा-

त्मारामकृष्णादिक तेनास्वरूपनो निश्चय थाय त्यारे ते मूळवासना जे जन्म मृत्युनुं बिज ते नाशपामे छे अने जो मायाने त
जिने केवळ आत्मारूपे मानीने प्रत्यक्षपरमात्मानि मूर्त्तिनुं ध्यान करशे नहिं तो ते शुष्कज्ञानि छे केहेतां तेने मिथ्याज्ञा-
निजाणवो माटे मिथ्याज्ञाने करिने जन्म मरण टळतुं नथि केमके परमात्मानी मूर्त्तिना आधारविना निराकाररूपणे
आकाशमां अधर रहेवातुं नथि माटे प्रत्यक्ष भगवाननि मूर्त्तिना आधारविना पिंडब्रह्मांडनुं आधारपणुं ने तेनविषे
वासना ते कोई नेटळतिज नथि माटे सांख्ये करिने पींडब्रह्मांडनुं निराकरण करवुं पण ते मांएक सद्गुरु ज्ञानदाता
प्रत्यक्षपरमात्मारामकृष्णादिक भगवाननि मूर्त्ति तेनुं निराकर्ण न करवुं अने ते मूर्त्तिने तो दिव्यरूप जाणिने तेनुं पो
ताना आत्मामां ध्यान करवुं एम समजे तेने ऋग्वेदने सांख्यशास्त्रनुं रुडु समजाणु जाणवुं अने एम समजिने जे प्रत्यक्षभ
गवाननि भक्ति करे छे तेनो ज मोक्ष थाय छे अने ऋग्वेदने सांख्यनि मूळमतलब पण एज छे जे इंद्रियोअंतःकर्णना
ग्रहण कर्यामां आवे तेने मिथ्या जाणिने तेनो त्याग करवो अने एमायानो त्याग कराविने अनुभवज्ञानना आपना
रा अनुभवि सद्गुरु तेनुं ध्यान करवुं माटे जिवने ज्यांसुधि माई कइंद्रियोनी समजण होय केहेतां मायिक पंचविषय-
मां इंद्रियोअंतःकरण ने वासना होय त्यांसुधि तेने मायापरए वा जे सद्गुरु परमात्मा प्रत्यक्ष भगवान तेनास्वरूपनो
निश्चय थतो नथि अने ज्यारे अनुभव रुप केहेतां निरवासनिक आत्मा थाय छे तेने प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भ-
गवानना स्वरूपनो निश्चय थाय छे तेउपर गीतानुं वचन ॥ श्लोक ॥ ब्रह्मभूतप्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति ॥ स-
मः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥ १५ ॥ ना अध्यायमां ५४ मो श्लोकः ॥ अर्थ श्रीकृष्णपरमात्मा कहे छे ब्रह्मरूप
ने प्रसन्न छे आत्मा केहेतां मन तेजे नुं ने हरख ने शोक तेगया छे जेनाने सर्वे भूतनेविषे समान छे द्रष्टि ते जेनि॥
एवा जे आत्मा ते मारि भक्तिनेपांमे छे केहेतां तेने मारा स्वरूपनो निश्चय थाय छे ॥ एविरीते ब्रह्मरूप थईने प्रत्यक्ष-
परमात्मानी मूर्त्तिनुं ध्यान करवुं ए ऋग्वेदने सांख्यनो अंतरभेद गळितार्थ छे ॥ अने हवे योगमां जे गुणदोष छे॥

तेनेसमजवानीरितकहे छे जे योगमां परमात्माने सगुण कह्या छे साकार कह्या छे कर्त्ता कह्या छे एकदेशि कह्या छे एवि रिते दिव्यमूर्त्ति परमात्मा छे नेते मूर्त्ति ध्यानकरवायोग्य छे॥ नेसर्वेना अंतर्यामी छे ने सर्वेनाप्रकाशक छे नेजिवईश्वरथीपर छे॥ नेसर्वने कर्मफलना आपनारा छे॥ नेजिवईश्वरने ध्यानकरवा योग्य छे॥ अनेते परमात्मा प्रत्यक्ष छे॥ एमकह्युं एतो योगमां गुण छे पण जो माई क आकारनो निषेधकरिने आत्मा शुद्ध थया विना इंद्रियो-अंतःकर्णसहित प्रत्यक्ष भगवाननुं ध्यान करे तो तेने भगवाननी मूर्त्तिने विषे प्रकृतिपुरुषादिकनो भाव रहेछे तथा भगवानने विषे एकदेशि पणुं समजाय छे॥ ए योगमां दोष छे ते दोषने टालवाने अर्थे योगमां सांख्य नो गुण लेईने योगने निर्दोष करवुं माटे सांख्यमां जे विरीते पींड ब्रह्मांडादिकनुं निराकरण करवानुं कह्युं छे ते रिते निराकरण करवुं एटले मीथ्या जाणिने पोताना आत्माने शुद्ध निर्गुण अखंड अविनाशि ब्रह्मरूप जाणिने ते मां स्थिति पामवुं पछे योगमां कह्या जे साकार सगुण कर्त्ता एवा प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवाननि मूर्त्ति तेने ब्रह्म ना आधार ने ब्रह्मना प्रकाशक जाणीने तेनुं ध्यान करवुं॥ त्यां श्रुतिः॥ घटवत्स्वर्गादि विनस्यति॥१॥ सर्वं खल्विदं ब्रह्म॥२॥ अर्थ सांख्यमां कह्या प्रमाणे समजवुं जे घटवत् एटले घडो जेम नाश थाय छे तेम पिंड थि ते स्वर्गादिक अनंत कोटि ब्रह्मांड ते सर्वे नाश छे एम समजिने पछे योगमां कह्या प्रमाणे प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्त्तिने सर्वं खल्विदं ब्रह्म एटले परमात्मानी मूर्त्ति ब्रह्म छे केहेतां परमात्मा छे एम जाणिने ते मूर्त्तिनुं पोताना आत्मामां ध्यान करवुं पण जेम जिवईश्वरनो आत्मा छे अने पींड ब्रह्मांड रूप तेनो देह छे ने ए बे जुदा जुदा छे तेम आत्मा सत्य छे ने तेनो देह मिथ्या छे॥ तेम प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिकनि मूर्त्तिने विषे त्याग भाग करवा योग्य नथि॥ केहेतां तेने विषे देह जिव एवो भेद नथि॥ परमात्मानी मूर्त्ति तो ए बेथि नोखि छे ने ए बेने प्रकाशनी करनारि छे॥ माटे परमात्मानी मूर्त्ति ज एक परमात्मा छे॥ एम समजिने पोताना आत्माने निर्गुण ब्रह्मरूप जाणिने परब्रह्म

एवा जे ज्ञाननादाता प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्त्ति तेनुं ध्यान करवुं एम समजवुं ए योगनो सिद्धांत छे ने एम समजे तेनो मोक्ष
थाय छे एटले जन्म मरणनां दुःख निवृत्ति पामे छे हवे शामवेदने वेदांतशास्त्र मां जे गुण दोष छे ॥ तेने समजवानी रित
कहिये छीये जे सामवेदने वेदांत शास्त्र जे ते एम कहे छे जे परमात्मा सगुण छे निर्गुण छे साकार छे निराकार छे
कर्त्ता छे अकर्त्ता छे एकदेशी छे सर्वदेशी छे एविरिते परमात्मा सर्व कारण सर्व करता सर्वना आधार सर्वव्यापक सर्व-
रूप संपूर्ण निर्लेप असंगि सर्वथी पर एवा परमात्मा प्रत्यक्ष ज्ञानदाता रामकृष्णादिक छे एम कह्युं एतो सामवेदने वेदांत
शास्त्रमां गुण छे पण तेमां एम समजाय जे सर्वरूप कह्या माटे पिंड ब्रह्मांड तथा जिव ईश्वर सर्वे परमात्मा छे ॥ एम समजिने
पछे पोताना जिवने परमात्मा मनाय जे हुं परमात्मा छुं एम समजाय ए वेदांतमां मोटो दोष छे माटे ते दोषने टाळवाने अ-
र्थे वेदांतने विषे सांख्य ने योग ए बे शास्त्रनी समजण लेवि ते केवि रितनी ते समजवुं तो प्रथम प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णा-
दिकनी मूर्त्तिने विषे माईक भाव समजाय ते माईक भाव टाळवाने अर्थे अने जिव ईश्वरना आत्माने विषे पिंड ब्रह्मां-
ड रूप माया टाळवाने अर्थे सांख्यमां कह्या प्रमाणे घटयत् स्वर्गादि विनस्यति कहेतां प्रकृतिपुरुषथकि उत्पन्न थयुं जे
नामरूप पिंड ब्रह्मांड ते मिथ्या छे ॥ एम जाणिने पोतानो आत्मा ते थि जुदो समजिने शुद्ध निराकार व्यापक निर्गुण अ-
कर्त्ता असंगि ब्रह्मरूप मानिने पछे योगमां कह्या जे परब्रह्म परमात्मा ब्रह्मना आधार ने ब्रह्मना प्रकाशक एवा दिव्य मू-
र्त्ति छे ते परमात्मा प्रत्यक्ष वसुदेव देवकिना पुत्र जे श्रीकृष्ण भगवान ते तेज कह्या छे ॥ माटे वेदांतमां एम समजवुं जे वेदां-
ते निर्गुण निराकार कह्या ते तो सांख्य मायानो निषेध करवाने अर्थे परमात्माने पोताना अंगना प्रकाशरूप जे नि-
र्गुण निराकार व्यापक ब्रह्म ते रूपे कह्या छे माटे तेनाते भगवानने वेदांतमां निर्गुण निराकार व्यापक कह्या छे ॥
एम समजवुं अने मायानां नामरूपने मिथ्या करिने आत्मा ब्रह्म थईने पछे योगमां प्रत्यक्ष भगवाननी दिव्य मूर्त्ति ब्र-
ह्मरूपने ध्यान करवा योग्य तेनि सिद्धि करि आपी छे ॥ केहेतां प्रत्यक्ष भगवाननि दिव्य मूर्त्तिने योगमां साकार स-

गुणकर्ता एकदेशि कह्या छे माटे योग मां कह्या ते ना ते प्रत्यक्ष परमात्मा ने वेदांतमां सगुण साकार कर्त्ता एकदेशि
कह्या छे एम समजवुं माटे सांख्ये परमात्माने ब्रह्मरूपे निर्गुण निराकार कह्या अने योगे परमात्माने दिव्य मूर्त्ति
रूपे सगुण साकार कह्या ॥ अने ए सांख्य ने योग ए बे शास्त्र ना ज्ञानने एक करिने परमात्मानुं वर्णन करिये त्यारे
एम वर्णन थाय जे परमात्मा सगुण छे निर्गुण छे साकार छे॥ निराकार छे कर्त्ता छे अकर्त्ता छे एकदेशि छे सर्वदेशि
छे इत्यादिक परमात्मा प्रत्यक्ष दिव्यमूर्त्तिनुं वर्णन थाय छे माटे सांख्य ने योग ए बेय भेगां करिने परमात्मा प्रत्यक्ष दि
व्य मूर्त्तिनुं वर्णन करवुं तेनुं नाम ज सामवेद ने वेदांत शास्त्र छे माटे वेदांतमां ने सामवेदमां कह्युं छे जे सर्वं खल्विदं
ब्रह्म नेह नानास्ति किंचन ॥ अर्थ ॥ एक प्रत्यक्ष परमात्मानी मूर्त्ति ते सर्वे ब्रह्म छे ॥ अने ते विना नाना प्रकारनुं का
ई नथि केहेनां परमात्मानी मूर्त्ति विना बिजुं नाम रूप पिंड ब्रह्मांड मिथ्या छे ॥ जेम झांझवाना जल स्वप्न नी सृष्टि मि-
थ्या छे तेम प्रकृति पुरुष थकि उत्पन्न थयुं जे नाम रूप पिंड ब्रह्मांड ते मिथ्या छे॥ अने प्रकृति पुरुष थकि पर एवा जे ब्रह्म
ने परब्रह्म ते सत्य छे॥ अने ते ब्रह्म जे परमात्मा नो प्रकाश एटले परमात्मानुं ज्ञान ने परब्रह्म एटले परमात्मा नि मूर्त्ति
ते ज्ञाने सहित एवि जे परमात्मानी मूर्त्ति ते रामकृष्णादिक रूपे पोताना स्वरूपनुं ज्ञान आपवा सारु प्रगट थाय छे॥
माटे ते मूर्त्ति सत्य छे ने ते विना बिजुं मिथ्या छे एम समजवुं तेनुं नाम वेदांत शुद्ध समजायुं जाणवुं माटे सांख्य योग
ने वेदांत ए त्रण शास्त्र ने विषे एक मूर्त्ति एवा जे प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवान तेने ज कह्या छे ए वि रिते समजवुं
तेनुं नाम त्रणे शास्त्र ने त्रणे वेद शुद्ध समजाया जाणवा अने एम समजिने जे प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति करे छे ते
ने जन्म मरण टलि जाय छे॥ ने तेनुं कल्याण थाय छे हवे अथर्वेदने पांचरात्र शास्त्र मां जे गुण दोष छे ते ने समजवानी
रीत कहुं छुं जे पांचरात्र ने अथर्वेद मां परमात्माने केवा कह्या छे तो परमात्मा सगुण छे निर्गुण छे कर्त्ता छे अ
कर्त्ता छे साकार छे निराकार छे एकदेशि छे सर्वदेशि छे ॥ वलि निर्गुण नथि सगुण नथि करता नथि अ-

कर्त्ता नथि साकार नथि निराकार नथि ॥ वलि साकार थका निराकार छे ने निराकार थका साकार छे निर्गुण थका सगुण छे सगुण थका निर्गुण छे एकदेशी थका सर्वदेशी छे ने सर्वदेशी थका एकदेशी छे ॥ एवा प्रत्यक्ष परमात्मा छे ॥ तेउपर श्लोक ॥ अपाणिपादोऽयवनोऽग्रहीतामस त्यचक्षुः सश्रणोत्यकर्णः॥ सवेत्ति वेद्यं नचतस्यवेत्तातमा-हरग्र्यंपुरुषंपुराणम् ॥ १ ॥ अर्थ ॥ परमात्माकेवा छे तो पग नथि ने पगे करिने चाले छे ॥ हाथ नथि ने हाथे करिने ग्रहण करे छे ॥ ने परमात्माने आंख नथि ने जुवे छे ॥ ने कान नथि ने काने करिने सांभले छे परमात्मा सर्वने जाणे छे ॥ तेने कोई जाणतुं नथि ॥ ने परमात्मा मायापर छे एटले अज्ञान थी पर छे ने पुराण एटले अनादि छे एविरिते परमात्माने मायानां इंद्रियो अंतःकरण नथि पण दिव्यमूर्त्तिमान परमात्मा छे एविरिते प्रत्यक्ष परमात्माथकि ज्ञान पामिने सिद्धदशाने पाम्यो एवो जे ब्रह्मरुपमुक्त तेबोल्यो छे के आप्रत्यक्ष रामकृष्णादिक ज्ञानदाता भगवान निमूर्त्ति ते परब्रह्म छे परमात्मा छे परमेश्वर छे पुरुषोत्तम छे सर्वना आधार छे सर्वना कारण छे सर्वशक्तिमान छे सर्वना प्रकाशक छे॥ सर्वने कर्मफलना आपनारा छे ने सर्वथी पर छे पण तेथि पर कोई नथि एटले एनाउपर कोई बिजो समर्थ ईश्वर नथि एविरिते सर्वत्र पूर्ण ने अद्वैत कहेता एजेवा तो एज छे पण तेजेवो कोई थतो जनथि एवा परम उपगार एरुप प्रत्यक्ष राम कृष्णादिक छे एम अथर्ववेदमा कह्यु छे एतो अथर्ववेद तथा पंचरात्र शास्त्रमां गुण छे पण ते प्रत्यक्ष भगवाननी नव प्रकारनि भक्ति करवानुं कह्यु छे ॥ तेमां प्रत्यक्ष भगवान भूख्या थाय तरस्या थाय टाढा ऊना थाय तडको लागे मांदा थाय बालक थाय जुवान थाय वृद्ध थाय कामजणाय क्रोधजणाय लोभजणाय स्वादजणाय स्नेहजणाय मानजणाय हारवुं जणाय जितवुं जणावुं पारकुंजणाय पोतानुंजणाय हसताजणाय रोताजणाय इत्यादिक अनंत प्रकारनां प्रत्यक्ष परमात्मानां लिला चरित्र तेने जोईने ते प्रत्यक्ष भगवानने विषे मनुषभाव आवे नथाए कदेशी पणुं समजाय तथा माईक भाव परठाय ए अथर्ववेदने पांचरात्र मां मोटो दोष छे तेदोषने टालवाने अर्थे पांचरात्रने विषे सांख्ययो

गनेवेदांतएत्रणेशास्त्रनो गुणमेलववो त्यारे तेपंचरात्रशुद्ध थायछे ॥ तेसांख्यनोगमगुण लेवो जे सांख्यमां-
परमात्माने व्यतिरेक पणे चैतन्यशक्ति ज्ञानरूपेनिर्गुणनिराकारादिक कह्याछे अने साकारसगुणनथि एमकह्यंछे
अने योगमां परमात्माने अनवयरूपेसगुणसाकारछे निर्गुणनिराकार नथि एमकह्यंछे अने वेदांतमां अनवय व्य-
तिरेकभेदेरहित कह्यंके परमात्मासगुणछे निर्गुणछे साकारछे निराकारछे कर्त्ताछे अकर्त्ताछे एविरिते सांख्य
योगने वेदांत एत्रणेमां कह्या जे परमात्मा तेना तेपरमात्माने अथर्ववेदमां कह्याछे ॥ ते अथर्ववेदमां प्रत्यक्षपरमात्मा
नेकह्यंके निर्गुण छे सगुण नथि ते सांख्यमां कह्याजे मायानागुण तेपरमात्मानी मूर्त्तिने विषे नथि माटे सगुण
नथि ने निर्गुणछे अने वलि अथर्ववेदमां कह्यंके परमात्मा प्रत्यक्षसगुणछे ने निर्गुण नथि एमकह्यं ते योगमां क-
ह्याजे अनवयरूपे प्रकृतिपुरुषादिक सर्वना प्रकाशक आधार कर्त्ता ने सर्वने ध्यान करवा योग्य मूर्तिमान एट
ले साकारछे निराकार नथि सगुणछे निरगुण नथि एविरिते योगमां कह्या तेना ते अथर्ववेदने पंचरात्रमां समजवा-
जे परमात्मा सगुणछे एटले अनंतकल्याणकारि गुणे युक्त परत्यक्षपरमात्मा छे अने निर्गुण नथि एटले आत्मा-
जेवो निरगुणछे तेवा निर्गुणनथि माटे दिव्यगुणयुक्त परमात्मा छे अने वेदांतमां द्रष्टाद्रश्य भेदे रहित दिव्यमूर्त्ति
परमात्मानुं वर्णन कर्युंछे जे सगुण छे निर्गुणछे सगुण एटले कल्याणकारीगुणे युक्तछे अने निर्गुणछे एटले मायाना
गुणे रहितछे ॥ साकार छे निराकार छे ॥ साकारछे एटले दिव्यमूर्तिछे ॥ ने निराकारछे एटले मायिक आकारे र-
हितछे एवीरिते प्रकाशे सहित दिव्यमूर्त्तिनुं वरणन वेदांतमां कर्युंछे ॥ तेनाते परमात्माने पंचरात्रमां प्रत्यक्ष क-
ह्याछे ॥ माटे पंचरात्रमां कह्यंके परत्यक्षपरमात्मा सगुणछे निरगुण छे कर्त्ता छे अकर्त्ता छे साकार छे निराकारछे
एविरिते प्रकाशवान दिव्यमूर्त्ति प्रत्यक्षपरमात्मा छे एमकह्यंछे हवे एत्रणे वेदने त्रणेशास्त्रे करिने प्रत्यक्षमूर्त्ति
सिद्ध करि त्यारे तेकेवा थया तो प्रत्यक्ष भगवान सगुणथका नीर्गुण छे ने निर्गुणथका सगुणछे ॥ सगुणथका नि

गुणछे एटले कल्याणकारि गुणे युक्त थका मायाना गुणे रहित छे अने साकार थका निराकार छे एटले दिव्यमूर्त्तिए युक्त
थका मायिक आकारे रहित छे कर्त्ता थका अकर्त्ता छे ने अकर्त्ता थका कर्त्ता छे एटले पोतानि इच्छाए करिने अनंत को-
टि ब्रह्मांडने कर्त्ता थका पोते काइ नथि करता प्रकृतिपुरुष पासे करावे छे माटे एवा अनंत अब गुणे युक्त जे परमात्मा-
ने पोताना चैतन्य रूप जे अक्षर धाम तेने विषे अखंड रह्या थका अनंत जिवोने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान कराविने माया
ना बंधन थकि मुकाविने पोताना अक्षर धामने पमाडवाने अर्थे पोताना सत्यसंकल्पे करिने सर्व मनुष्यने प्रत्यक्ष द्रष्टि
गोचर थाय छे ॥ कहेतां प्रत्यक्ष मनुष्याकृतिने धारण करे छे अने ते प्रत्यक्ष भगवानने शरणे जे जिव आवे छे तेने पोता
नी भक्ति करयानि ने तेनां अनंत जन्मनां पाप तेने नाश करवाने अर्थे तेनी सेवानुं ग्रहण करवा सारु पोते दिव्यरूप थ-
का मनुष्यनि पेठे वरते छे माटे पोते प्रत्यक्ष परमात्मा परिपूर्ण ने स्करक्ना धाम छे ॥ तोपण पोताना भक्तने परिपूर्ण ने-
स्करत्वरूप करवाने अर्थे कृपा करिने भक्तनी सेवानुं ग्रहण करे छे ते पोते भूख्या थाय एवा नथि तोपण भोजनना थाल ज
मे छे ने तरस्या थाय एवा नथि तोपण जल पिये छे ने जेने निंद्रा नथि तोपण निंद्रा करे छे अने पोते सर्वे सोभारूप छे
तोपण भक्तना भावप्रमाणे वस्त्र घरेणां पुष्प धारण करे छे अने पोते प्रत्यक्ष परमात्मा सर्वना आधार छे तोपण घो-
डे गाडिये पालखिये बेसे छे अने पोते लक्ष्मिना पति छे तोपण पोताना भक्तजनो नां तन मन धनादिक सर्व पदार्थ
ते पोताने शरणे अरपण करावे छे ते वामनजि भगवाने बलिराजानुं तन मन धनादिक सर्व पदार्थ लेइ लीधुं एवि रि
ते दिव्यमूर्त्ति थका मनुष्यनी पेठे वर्त्ते छे अने तेणे करिने अनंत जिवोनो मोक्ष थाय छे केमके परमात्मा पोते पूर्णकाम
छे माटे तेना संबंधने जे जे जिव पामे छे ते जिव पण पूर्ण काम थाय छे माटे प्रत्यक्ष परमात्मा मनुष्य थका दिव्यरूप छे
कहेतां जेनो पूर्ण शब्द छे ने जेनो पूर्ण स्पर्श छे ने जेनुं पूर्ण रूप छे ने जेनो पूर्ण रस छे ने जेनो पूर्ण गंध छे इत्यादिक प्रत्य
क्ष परमात्मानि सर्वत्र पूर्ण मूर्त्ति छे ॥ माटे ते प्रत्यक्ष राम कृष्णादिक परमात्माना शब्दादिकने जे जे जिव पोताना

आत्मामां धारे छे तो ते धारनारा जिवनि अपूर्णता टलिने पूर्णकाम थाय छे अने ते प्रत्यक्ष परमात्माने कोणे अपूर्णकर्या
नथिए तो पोते पोतानि मेले सेज अनादि पूर्णकाम छे अने तेनां जन्म कर्म ने चरित्र सर्वे दिव्य छे एटले कल्याणकारि
छे ॥ माटे तेनां जन्म कर्म ने चरित्र ने जे दिव्य जाणे छे तो ते जाणनारानां पण जन्म कर्म दिव्य भावने पामि जाय छे अ-
ने ते आत्मा परमात्माना साधर्मपणाने पामे छे एवि रिते चारे वेद ने चारे शास्त्रना ज्ञाने करिने प्रत्यक्ष भगवानने
जाणे छे तेने अथर्ववेदने पंचरात्र शुद्ध समजायुं जाणवुं अने तेने प्रत्यक्ष भगवाननि मूर्त्तिने विषे कोई दिवस मनुष्य-
भाव आवे ज नहिं केम के ते ना ज्ञाने करिने तेने जाण्या माटे तेने प्रत्यक्ष मूर्तिने विषे अखंड दिव्य भाव रहे छे ने तेभ
क्त पछे प्रत्यक्ष परमात्माने दिव्यरूप जाणिने तेना गुण गाय छे अने तेने सगुण नीर्गुण साकार निराकार कर्त्ता अ
कर्ता एकदेशि सर्वदेशि आदिक अनंत गुणरूप एश्वर ते प्रत्यक्ष ज्ञानदाना सद्गुरुरूप रामकृष्णादिक मनुष्या
कृति भगवाननि मूर्त्ति तेने विषे सर्वे देखाय छे अने तेने सर्व शास्त्र तथा चार वेद तथा सर्वे पुराण ते सत्य ने सव-
ला समजाय छे माटे आ विरिते प्रत्यक्ष भगवान लक्ष्मिनारायण तेना मुखथकि ज्ञान सांभलिने तेना स्वरूपनो नि
श्चय करिने पछे प्रत्यक्ष भगवानना गुण दिव्यरूप जाणिने ब्रह्माये चार वेदे करिने गुण गाया छे अने गौतमादिक
रूषीयोये पण प्रत्यक्ष भगवानना श्रीमुखथकि एवि रिते ज्ञान पामिने प्रत्यक्षना स्वरूपने दिव्यरूप जाणिने ते
ना गुण छ शास्त्रे करिने गाया छे अने ते विज रिते व्यासजिये प्रत्यक्ष परमात्मा श्रीकृष्ण भगवान तेना मुखथकि
ज्ञान सांभलिने तेना स्वरूपनो निश्चय करिने ते प्रत्यक्षना गुण व्यासजिये चार वेदे करिने गाया छे तथा अढा
र पुराणे करिने गाया छे तथा भारतादिक इतिहासे करिने गाया छे माटे चार वेद छ शास्त्र ने अढार पुराण ने ते
विना बिजा रूषीयोनी स्मृतियो उपनिषदो ए सर्वेमां प्रत्यक्ष परमात्मा पंच देहरूपे प्रगट रामकृष्णादिक भगवा
न तेना ज गुण गाया छे पण ते विना बिजो कोई परमात्मा नथि एम समजिने जे प्रत्यक्षनी भक्ति करशे ते नो

मोक्ष ततकाल थाय छे अने तेनो जगतना पदार्थ उपरथी मोह टलि जाय छे ने तेनी दृष्टि निरावरण थईने एक प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्त्तिने ज अखंड देखे छे माटे ज्ञानचक्षुवालाए वा जे प्रगट महात्मा पुरुष तेनो जेने सत्संग थाय छे तेने ज शुद्ध स्वरूप एवा जे परमात्मा तेना स्वरूपनुं यथार्थ ज्ञान थाय छे पछे जे ज्ञान थयुं एवो जे प्रगट भगवानना भक्त ते जे ते प्रत्यक्ष परमात्मानी प्रार्थना करे छे जे हे प्रभु तमारो मारा उपर अनुग्रह नो तो करे तो तमे मुने प्रगट न होता ओलखाया त्यांसुधि हुं तमने पामवा सारुं में ऋग्वेदमां तमारा स्वरूपनुं ज्ञान सांभल्युं तेमांथि मुने एम समजायुं जे पिंड ब्रह्मांडादिक नामरूप मीथ्या छे एम जाणिने तमारा अवतारनि मूर्त्तियो ते तेपण में तमारा अनुग्रह विना मिथ्या जाणिने जे पिंड ब्रह्मांडना आकार माया ने मिथ्या छे॥

तेम प्रगट भगवाननि मूर्त्तिनो आकार पण मायानो ने मिथ्या छे एम समजतो हतो ए मारो मोटो अपराध छे ते हे प्रभु! ए मारा अपराधने माफ करो अने एवि रिते ऋग्वेदना ज्ञाने करिने तमने निराकार जाणीने घणाक युग सुधि पिंड ब्रह्मांडनुं निराकरण करिने तेथि वैराग पामिने तमने पामवा सारुं उं हंसो हंउं हंसो हं एम जप कर्या पण हे प्रभु तमारा अनुग्रह विना कहेतां तमे प्रगट मल्या विना तेमां मुने लेशमात्र शान्ति थई नहिं पछे वलि बिजो यजुर्वेद में तमने पामवा सारु सांभल्यो त्यारे तेमांथि तमारा अनुग्रह विना एम समजायुं जे भगवान मूर्त्तिमान छे ने तेनुं कर्युं सर्वे थाय छे ने तेना हलाव्या विना पांदडुं हालतुं नथि माटे जे जे हुं करुं छुं ते भगवान करावे छे तेटलुं करुं छुं एम जाणिने विषय भोग करवा आशक्त थई गयो ए तमारो मोटो गुन्हो थयो छे केमके कामादिक विकार तो जिवना घर छे ते विकारने टालवा ए तमारि आज्ञा छे तेमें तमारा अनुग्रह विना समजायुं नहिं ने विषय अनियमपणे भोगव्या ए मोटो अपराध तमारो थयो छे ते हे प्रभु ए अपराधने माफ करो॥

अने वलि एक बिजो तमारो गुन्हो थयो छे के तमारा अनुग्रहने पामेलाए वा जे तमारा भक्त संत तेणे तमारा विना सर्व मायिक पदार्थनो त्याग करिने वैराग्यने पाम्या ए वा तमारा भक्त संत तेनो में उलटो अवगुण लिधो जे एतो कांई समजता नथि जे भगवान जगतना कर्त्ता छे ने प्रेरक छे माटे भगवाने जे जे पदार्थ उत्पन्न कर्यां छे ते सर्वे भोगववा सारुं कर्यां छे॥

मारे तेनो त्याग करे छे तेणे तो भगवाननी आज्ञा तोडी एम समजीने तमारा संतनो अवगुण लिधो अने में निशंक थइ
ने विषयभोग भोगव्या ए बे तमारा मोटा गुन्हा थया छे माटे हे प्रभु ए गुन्हा माफ करो ने ए विधि रिते तमारा प्रत्यक्षस्वरूपनि प्राप्ति
विना यजुर्वेद मां अवलुं समजिने घणा कजुग स्कधि विषयभोग भोगव्या अने ते विषयभोगनी वासनाये करिने जन्म मरणग
र्भवासने लक्ष चोराशिमां महा दुःख पाम्यो पण तमारा अनुग्रह विना एटले हे प्रभु तमे मगर मत्स्यादिना क्यांइ ज्ञान्तिने
ठरिने बेठो नहि पछे वलि तमने पामवा सारु त्रिजो सामवेद तेनुं ज्ञान सांभल्युं त्यारे ते मां एम कह्युं छे जे सर्व परमात्मा-
प्रत्यक्ष छे ते निश्रुतिः॥ सर्वं खल्विदं ब्रह्म॥ अर्थ॥ आ प्रत्यक्ष सर्व ब्रह्म एटले परमात्मा छे ते वेदमां तो एम कह्युं छे जे ए-
क प्रत्यक्ष राम कृष्णादिकनी मूर्त्तियो छे ते सर्वे परमात्मा छे पण ते तो तमारि कृपा विना अवलुं समजाणुं जे पिंड ब्रह्मांड
तथा जिव प्राणि पशु पक्षी सर्वे परमात्मा छे एम समज्यो हतो ए तमारो महा मोटो अपराध थयो छे ते अपराधने माफ करो
अने ते सामवेदने अवलो समजीने में एम जाण्युं हतुं जे सर्वे परमात्मा छे ते भेगो हुं पण परमात्मा छुं एम समज्यो ते पाप
हतुं माटे हे प्रभु हवे मारा उपर तमारो खरेखरो अनुग्रह हने कृपा थइ छे जे मारा सर्वे अपराध नेक क्षण मां कहे तां तमारा स्व
रूपनी मुने प्राप्ति थइ एटले जाणे मारे कोइ दहाडो दुःख हतु ज नहि माटे हे प्रभु मारा उपर तमे घणि कृपा करि घणि महेर
करि मुने कृतार्थ कृतार्थ कर्यो ए विधि रिते जेने परमात्मा प्रत्यक्षना स्वरूपनो निश्चय थाय छे ते महा आनंदने पामिने प
रमात्मानी प्रार्थनाने स्तुति करे छे पछे तेना उपर परमात्मा घणाघणा प्रसन्न थइने तेने दिव्य तनु आपे छे ने पोताना अ-
क्षरधामने पमाडे छे॥ ॥छ॥ इति श्रीमुखसिद्धांत १०६ संपूर्ण॥ ॥छ॥ ॥छ॥

॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत १८ ऋोगणिऐंशो १९ आगणिसना भादरवा शुदि २ बिजने दिवसमहारा-
ज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीसरधैमध्ये पंचरत्नवस्ता देवजिने घेर उत्तरादे बार ओरडा निओसरिमां हिंडोलारवाट उपर वि
राजमान थया हता ने सरवे स्वेत वस्त्र धारण कर्या हता ने गुलाबि रंग नो फेटो मुस्तके बांध्यो हतो ने कंठमां पुष्पना हार सो-
भि रह्या हता ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा हरी भ क्तनी सभा भराईने बेठी ह-
ति पछे महाराज बोल्या जे सर्वेने एक प्रश्न पुछियेछिये जे भगवानना भक्तने लाभनो दिवस ते कियो छे ने नकामो दि-
वस ते कियो छे॥ ते कह्यो पछे कोईनाथी उत्तर थयो नहि त्यारे महाराज बोल्या जे ल्योए नो उत्तर अमे करियेजे एक योग
निष्टा छे ने एक सांख्यनिष्टा छे ते एबे निष्टाने जे परिपूरण करि राखे छे ते भगवानना भक्त पुरो छे अने ते भक्तने आठेप
होर लाभनो दिवस छे अने बे निष्टामांथि एक निष्टा जेने होय ते ने अरधो दिवस लाभनो ने अरधो दिवस नकामो छे अने
तेमां जेने एकलि सांख्यनिष्टा होय तो ते सुन्यभावने पामीजाय छे ने भगवाननि मूर्त्ति प्रत्यक्ष तेने विषे सुस्कभा
व आवि जाय छे केमके सांख्ये करिने पिंडब्रह्मांडादिक आकार मात्रनुं निराकर्ण पणुं करे ते भेगु प्रत्यक्ष भगवाननि मूर्त्ति
तेनुं पण निराकर्ण पणुं समजाय माटे प्रत्यक्ष मूर्त्तिने विषे एकली सांख्य निष्टावालाने सुस्कभाव रहे छे ने पोताने पण
अपूरणता रहि जाय तेणे करिने सुन्यभाव बरते अने जेने एकलि योगनिष्टा होय तो तेने भगवाननि मूर्त्तिने विषे मनु
ष्यभाव आवि जाय ने एकदेशि पणुं समजाय पण दिव्यभाव न रहे माटे योगने सांख्य बेने सिद्ध करे तेने कोई वातनी
कसर रहेति नथि अने जेने सांख्यने योग सिद्ध थया ते तो अक्षर ब्रह्मरुप थाय छे ने ते भक्त तो भगवानने रह्यानुं
धामरुप थयो केमके सांख्ये करिने पिंडब्रह्मांडादिक माईक आकार मात्रनुं निराकरण पणुं करिने पोते ब्रह्म थाय छे
ने पछे योगे करिने पोताने मल्या एवा जे ज्ञानदाता प्रत्यक्ष परमात्मा तेना स्वरुपने पोताना आत्माने विषे धारिने अ
खंड ध्यान करे छे तेनुं नाम सांख्ये सहित योग कहिये अने एवो सांख्य सहित योग जेने सिद्ध थयो ते तो पूरो ज्ञानी छे

अने सांख्ययोगने अभेदपणे समजवुं तेनुं नाम वेदांत छे अने सांख्य योग ने वेदांत ए त्रणे सहित प्रत्यक्ष मूर्त्ति भगवान
तेनी नवधा भक्तिये करिने सेवा करवी तेनुं नाम पांचरात्र छे माटे अमारा आश्रीत होय तेने अभ्यास करिने सांख्ये स-
हित योग सिद्ध करवो अने जे एवि रिते योग सिद्ध करशे ते अपार सुखने पामशे अने तेमां जेटलो परमाद के आलस
रहेशे तेटलि तेने खोटर हिजशे माटे आलस के परमाद राखवो नहिं अने भगवानना भक्तने निवृतिपामिने योग
सिद्ध जरुर करवो अने कदापि कोईक भक्तने प्राईने जोगे करिने अनंत प्रकारनी प्रवृत्ति होय तोपण रात्रिने वि
षे एकांतमां बेशिने एकाग्र वृत्ति करिने सांख्य विचारे करिने पिंड ब्रह्मांडादिकनुं निराकर्ण करिने शुद्ध चैतन्य
आत्मारुप थईने य छे योग विचारे करिने पोताने प्राप्त थयुं जे प्रत्यक्ष भगवाननुं स्वरुप तेने आत्मा जे जाणपणुं तेमां
धारिने ध्यान करवुं अथवा प्रत्यक्ष भगवाननि मूर्त्ति चरणारविंदनी पूजा करवानो समे पण पूर्वे कह्यो एवो विचार करि
ने ध्यान करवुं अने एवि रिते जे ध्याननो अभ्यास करशे तेने भगवाननि मूर्तिनो साक्षात्कार थशे अने तेने पंचवि-
षयनी वासना सेहेजे ओछि थई जशे ने मायानुं आवर्ण ते निद्रष्टिमां थिटलि जशे अने एवा भक्त होय तेनो देह पडे-
त्यारे तेने एक भगवाननि मूर्त्ति अखंड देखाया करे अने तेने तो जेम अंग उपर थि वस्त्र पडि जाय तेम एवा भक्तनो देह प
डे तेनी तेने खबर पडती नथि ने ते तो एम जाणे छे जे हुं आत्मा ने परमात्मा भगवान ते अनादिना अखंड आमने आम
छे पण बुं थरते छे पण तेने पिंड ब्रह्मांडादिक कांई साभरतुं नथि केमके लेणे देहछतां पण एवो जनिश्चय कर्यो हतो जे
आत्माने परमात्मा विना पिंड ब्रह्मांडादिकने स्वप्नतुल्य ने झांझवा रुप जाण्युं हतुं ने एक प्रत्यक्ष मूर्त्ति भगवान तेने विषे
ज दृढ प्रिति हति माटे वेदमां कह्युं छे जे यामतिस्यागति भवेत एनो अर्थ देह छतां ज्यां मति होय त्यां देह मुकिने गति
कहि तां त्यां तेनो निवास थाय छे माटे जे नि मतिमां आत्मा ने परमात्मा बे ज छे तो ते देह मुकिने तेने ज पामे छे अने
जे ने एवि रीते ध्यान करवानो अभ्यास नहिं होय तेने मोटि खोटर हिजशे केम केजे ध्याने करिने भगवाननि मूर्त्ति

मांजो डाणो नहिं होय तेने अंतसमानी वखत आवे छे त्यारे सर्वे दिशाओ ते पण भयंकर लागे छे ने अनंत प्रकारना भयप्रा-
प्त थाय छे अने भगवाननी मूर्त्ति सांभर्या विना तेने देह मुकवा समे ब्रह्मांड फाटे एवा कडका थाय छे माटे जेणे अभ्यास भगवा-
नना स्वरूपनो नथि कर्यो तेने अंतसमे भगवान क्यांथी सांभरशे तेने तो नरिंजसांभरे अने जेणे जेणे आलसने परमाद-
नो त्याग करिने अभ्यासे करिने प्रत्यक्ष भगवाननि मूर्त्तिनुं ध्यान सिद्ध कर्युं हशे तेने अंतसमे पण भगवाननि मूर्त्ति साक्षा-
त्कार देखाशे अने अंतसमानी जे व्याधिनि पिडा ते एने लेशमात्र जणातिनथि माटे भगवानना भक्त होय तेने सांख्य
विचारे ज्ञान सिद्ध करिने योगे करिने ध्याननो अभ्यास नीत्ये जरूर करवो अने ते ध्यान पण समाविना थातुं नथि माटे आज
तमारे समो आव्यो छे ते लोकमां पण कहेवत छे जे जे मले टाणे ते पछे न मले खरचे नाणे माटे आज तमारे टाणुं आव्युं छे ने ब-
गरदाखडे साक्षात्कार ध्यानमां मूर्त्ति आवे एम छे अने प्रत्यक्ष मूर्त्ति भगवान न होय त्यारे तो ध्यान करि करिने सकाई
जाय तो पण स्वप्नामां क्यारे पण भगवाननि मूर्त्ति देखाय नहि केमके जे वस्तु दिठि न होय ते क्यांथि ध्यानमां आवे एतो न-
ज आवे माटे प्रत्यक्ष भगवान होय त्यारे ज ते ध्यान सिद्ध थाय छे ते सारुं जे जे प्रगट भगवानना भक्त बाई भाई होय तेने
तो पोताने मल्या जे भगवान तेना दरशन करिने अंगो अंगमां प्रतिपरोई ने पोताना अंतःकरणमां धारि राखिने पछे का-
मकाज करतां हालतां चालतां उठतां बेसतां सर्व क्रियाने विषे पोताना मननी वृत्ति भगवानना स्वरूपमां अखंड राख-
वी अने जे सावधान थईने एवि रिते अभ्यास राखशे तेने पंचविषयनि वासनानां मूल उखडि जशे अने आत्माने विषे पर-
मात्माना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थशे ने ते ब्रह्मस्वरूप थईने आत्यंतिक मोक्ष जे अक्षरधाम तेने पामशे पछे भक्त
जेठे प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज ए ध्याननो अभ्यास अखंड रहे तेनो शो उपाय छे ते कहो पछे महाराज बोल्या जे एवो अभ्यास-
नो उपाय तो ए छे जे जेने एवो अभ्यास दृढ थयो होय एवा जे संत तेनो मन कर्म वचने समागम करे त्यारे पोताने पण एवो
ध्याननो अभ्यास दृढ थाय अने जे पांच दहाडा तो अभ्यास राखे ने पछे वलि पांच दहाडा न राखे तो तेने ध्यान सिद्ध थाय-

नहिं॥ जेमविद्याभणवाबेसेते पांचदिवस अभ्यासकरेने पांचदिवस नकरे तो तेने विद्या आवडे नहिं ने पांचदिवस शिख्यो होय ते पण भूलि जाय तेम जे ध्यानिना संगमां रहिने ध्याननो अभ्यास निरंतर राखे तो तेने अखंड ध्यान सिद्ध थाय छे॥

॥इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥

संवत १९ ओगणिशो १९ ओगणिशना भादरवा वदि ६ छठने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीसरवैमध्ये पदेसनु दाभक्तने घेर उतरादा बारना ओरडानी ओसरिमां गादितकिये जुक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता ने सर्वे केसर्के बलनवस्त्र धारण कर्या हता ने पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगल संत मंडल तथा घणा क हरि भक्तनी सभा भराइ ने बेठि हति पछे महाराज बोल्या जे आज तो वेद वेदांतादिक सर्वे साहारुनो सिद्धांत कहिये तेने सरत देइनेसांभलजो जे द्रष्टा दृश्यथि पर एवा जे परमात्मा तेना स्वरुपनु जे ज्ञान पामवुं एज मोक्षनो हेतु छे अने ते परमात्मा जे ते माइका एवां जे इंद्रियो अंतःकरण तेणे करिने जणाय एवा नथि तेने जांणवा हवे तेने जाणवामां मुख्य कारणो एटले कारणो ये करिने समजायो एवो जे ते ज्ञाननो प्रकार तेने कहिये छिये जे प्रथम कारण पांच छे तेनां नाम ने तेनो अर्थ जे एक तो सत्य ने बिजुं असत्य ने त्रिजुं सत्यासत्य ने चोथुं असत्यासत्य ने उपर कह्यां जे चार कारणो ते नां आधार ने तेनां आत्मा ने ते चार थि पर जे कर्तुं म कर्त्तुं ने मन्यथा कर्त्तुं जे परमात्मा ते परमसत्य पांचमुं कारण छे तेमां प्रथम कह्यां जे चार कारण तेने अर्थे सहित पांचमुं कारण जे परमात्मा तेने जाणवा अने बाकि कारण चार सत्यादिक छे तेनो अर्थ ए छे जे सत्य एटले प्रकृती पुरुष थी पर जे अक्षर ब्रह्म ते सत्य छे॥ अने असत्य एटले सत्य थी उलटि एवि त्रिगुणात्मक माया ते असत्यनो अर्थ छे अने असत्यरुप जे माया ते पोते विकार पामिने समष्टिरुप शरिरे थइने ते शरीरनो धारण नो करनारो ईश्वर आत्मा महत उपाधिये युक्त ते सत्यासत्यनुं रुप छे अने ते जे सत्यासत्यरुप जे समष्टि तेनो विकाररुप जे कार्य जे व्यष्टि एटले स्थूल सूक्ष्म देहादिकने विषे कारण जे वासना

तेणे करिने रह्यो एवा जे अल्पबुद्धि आत्मा तेने पोतानी स्थूलादिक उपाधि ये युक्त एवुं जे जिव चैतन्य ते असत्यासत्यनुं
रूप छे हवे कारणो थकि जाणवा योग्य एवो जे ज्ञानना प्रकार तेने कहिये छिये जे मूलकारणोथी थयो जे ज्ञानना प्रका
र तेमां मूख्य त्रण कारणो छे तेनां नाम जे श्रोता वक्ता ने वेदादिक शास्त्र ए त्रणे करिने जाणवा योग्य तेने जाणिने तेत
त्वने साक्षातकार पामे छे ए सनातनने सत्य सिद्धांत छे हवे तेने पामवानो प्रकार कहे छे तेमां श्रोतादिक त्रण कार
णसंयुक्त ते प्रकार छे नेते निसिद्धांत एम छे जे शास्त्र ने सिद्ध वक्ता तेणे करिने श्रोतानी सिद्धता थाय छे अने सिद्ध श्रो
ताने शास्त्र तेणे करिने वक्ता सिद्ध थाय छे अने सिद्ध वक्ताने सिद्ध श्रोता तेणे करिने शास्त्र सिद्ध थाय छे माटे सत्पु
रूषना सत्संगे करिने श्रोता वक्ताने शास्त्रनी सिद्धता तेने सिद्ध करवि तेनुं नाम सिद्धांत छे एटले परमात्मानो पूर्ण
बोध छे ने बोधे सहित परमात्मानुं तत्वरूप जेने साक्षात्कार ज्ञान उपासनाये करिने जेणे सिद्धांत सिद्ध कर्यो ते सिद्ध छे कहे
ता ते पूर्ण तत्व ज्ञानदाता सद्गुरु उपदेष्टा छे अने तेनाथी शास्त्रनो अर्थ जाणवो ते जस द्गुरु शास्त्र छे अने एविरीते सद्गुरु उप-
देशदाता थकि सिद्धांतरूप एवुं जे परमतत्व तेने सिद्ध कर्युं ते सिद्ध छे अने तत्वने नथि जाणतो ते असिद्ध छे हवे अ
सिद्धने सिद्ध करवो तेनी रित्यनुं कहे छे जे असिद्धने सिद्ध कर्यो ते निसिद्धतामां सिद्धांत साधक साधनने साध्यने
णे करिने सिद्ध स्थितिने पामे छे अने एविस्थितिने पाम्यो ते सर्व सिद्धांतने पाम्यो छे हवे ते सिद्धांतरूप जाणवा पा-
मवा योग जे परमात्मा तेने शब्द ब्रह्मे करिने पूरण ऐश्वर्यनी सिधताये करिने सिद्ध करे छे नेने विज्ञान कहिये विद्या
कहिये कहेतां अधोने उरध एवुं जे जिव तथा ईश्वर चेतन जेनो परमात्माथी विरुद्ध व्यवहार छे ते व्यवहारमां वर्त-
नारा पुरुषनुं रूप ज्ञान विरुद्ध छे अने एवो अधो ने उर्ध भेद नथि जेने विषे ने सर्व व्यापक ने एकरस चेतन जे ज्ञानरूप
तेजनो समुह ते समुहनी मध्ये ते प्रकाशनो आधार जे प्रकाशमान परमात्मा तेनुं तेजमां ते जे करिने तेजरूप थईने
कहेतां ते तेजे अक्षर ब्रह्म आत्मा ते आत्मामां आत्माये करिने आत्मारूप थईने रहया का ज्ञानी मध्ये जाणपणा

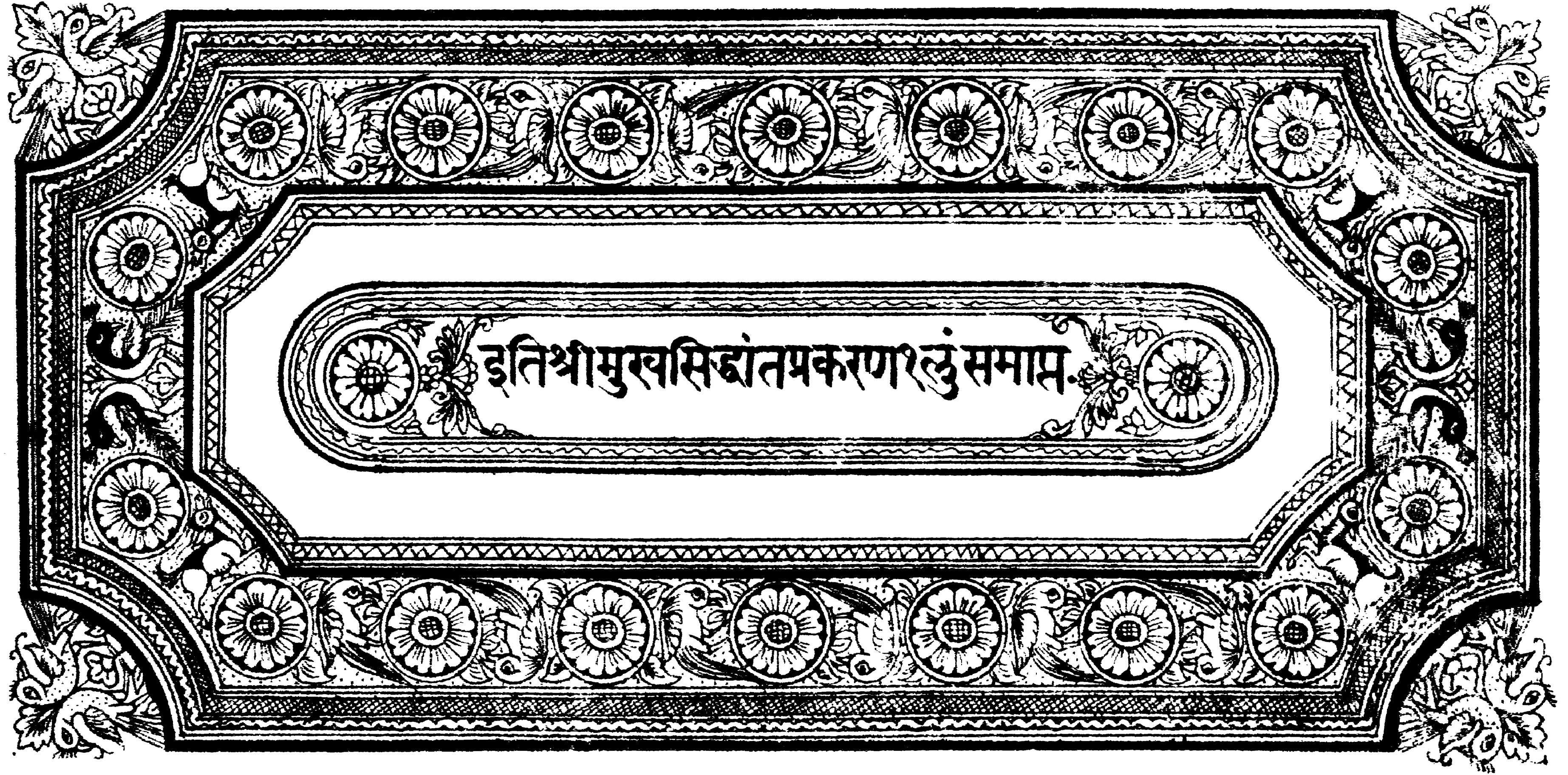
रूपद्वार ते द्वाराये जेपरमात्मापरब्रह्मप्रत्यक्ष भगवान तेनुंदरशन थाय छे ने तेनेजन्ममरणनुं कारणजे पंचविषयनेविषे
रागजेप्रिति तेरूप अविद्या माया ते नाशपामिजायछे तेगीतामांकह्युं छे विषयाविनिवर्तंते निराहारस्यदेहिनः र
सवर्जंरसोप्यस्य परंदृष्ट्वा निवर्तते द्वारे रहित प्राणिजे तेना विषयनिवृत्ति पामेछे रागनि वर्जिने रागजे तेपण परमात्मा-
ने जोईने निवृतीपामे छे अर्थ जे आत्मानेविषे परमात्मानु दरशन थाय त्यारे अविद्यारूपमाया निनिवृती थाय माटे
एविरिते आत्मा नेविषे परमात्मानेअन्वयव्यतिरेकनेजाणिने व्यतिरेकथईने तेमां तत्वजेपरमात्मा तेनुंअखंडसे
हेजसमाधिरूपज्ञान निर्विकल्पपणे पामवुं तेजवेदवेदांत सर्वशास्त्र सर्व महात्मापुरुषोनो पूर्ण मतछे हवे तेपूर्णज्ञा-
नजे व्यतिरेकआत्मा तेमां तत्व सिद्धांतने स्थितीने बुद्धिमांआपवो तेनीरितनेकहे छे जे परमात्माकेवाछे तोअमा
यारूपछे तेने मायाजे बुद्धि तेमांजुदिजुदिसारवाये करिने गुणात्मकबुद्धिमां निर्गुणनुं कलाकौशल्ये करिने माया
थिमूक्त थईने पूर्ण विद्यामयएवाज परमात्मा तेनेपरम सत्यनाआधारने आत्मा तेने देखेछे नेतेसरवने बुद्धिपरआ
त्मा तेनु ज्ञान जे अनुभव तेमां परमात्माने अखंड अनुभवेछे हवे ते सारवाओने कहेछे तेमां चारसारवानिकलाकौ-
शल्ये करिने सिद्धिदेखाडे छे जे तेपरमात्मा केवा छे तो कानेकरिनेशब्दना सांभल्यामां आवे एवा नथि नेत्वचाना
स्पर्शमां आवे एवा नथि ने नेत्रनाजोयामां आवे एवा नथिने रसनाना वरणनमा आवे एवा नथिने नासिकाना गंधमां-
आवे एवा नथिने मनना संकल्पमां आवे एवा नथिने बुद्धिना निश्चयमां आवे एवा नथि ने चित्तना चिंतवनमां आवे
एवा नथिअने अहंकारे करिने अभिमानमां आवे एवा नथि एविरिते ए सांख्यनि सारवा कहेवाणि अनेते व्यतिरेक-
आत्मा जेअक्षरब्रह्म तेणे करिने परमात्मानुं वरणन थयुं एम जाणवुं नेहवे बिजि योगनीसारवा कहिये छै येजे परमात्मा
केवा छे तोजेकाने करिने सब्दनेसंभलावे छे नेत्वचाये करिने स्पर्शकरावेछे ने नेत्रेकरिने रूपदेखाडे छे ने रसना
ये करिने रसचखाडे छे नेनासिकाये गंधलेवरावे छेनेमनेसंकल्पकरावेछे ने बुद्धिये निश्चयकरावेछे ने चित्ते चि

तचन करावे छे ने अहंकारे अभिमान धरावे छे एवा परमात्मा छे आ योगमां अन्वयरूपे परमात्मानुं वर्णन कर्युं एम जाण-
वुं हवे त्रिजि शाखा वेदांतनि कहेवाशे परमेश्वर केवा छे तो सर्वशब्दरूप छे ने सर्व स्पर्शरूप छे ने सर्व रूपमय छे ने सर्व रस
रूप छे ने सर्व गंधरूप छे ने सर्व मनरूप छे ने सर्व बुद्धिरूप छे ने सर्व चित्तरूप छे ने सर्व अहंकाररूप छे एवा परमात्मा छे॥
आ शाखामां सांख्यने योग ते जेनाऐश्वर्य छे एवा जे ऐश्वर्यवान ते रूपे परमात्मानुं वर्णन कर्युं केहेतां अद्वैत एटले ए
जेवा तो एज एक ने इंद्रियो अंतःकरणने अनुभवमां आवे एवा जेनो ऐश्वर्य तेणे करिने जाणवा योग्य एवा जे परमात्मा ते
नुं वर्णन वेदांतमां कर्युं छे एम जाणवुं हवे पांचरात्रनि चोथि शाखा कहेवाशे जे परमेश्वर केवा छे तो जेनो पूर्ण शब्द छे
ने जेनो पूर्ण स्पर्श छे ने जेनुं पूर्ण रूप छे ने जेनो पूर्ण रस छे ने जेनो पूर्ण गंध छे ने जेनुं पूर्ण मन छे ने जेनि पूर्ण बुद्धि छे॥
ने जेनुं पूर्ण चित्त छे॥ ने जेनो पूर्ण अहंकार छे॥ इति शाखा संपूर्ण॥ आ शाखामां वेदांतमां कह्या जे अद्वैत तेने अक्षरा-
तित परब्रह्म पुरुषोत्तम परमात्मा तेज प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक ज्ञानदाता उपगार्यरूप तेनुं वर्णन कर्युं छे एम जाणवुं॥
एवि रिते चार शाखारूप कलाओ छे हवे ते चार शाखानो मूलमत सब प्रथम कहेलि छे तेने दर्शाववा सारुं सांख्य
योगादिक कह्युं जे चार शाखाओ ते निशोल कलाओ करवी ने पछि ते शोल कलानुं कौशल्य थशे त्यारे परमात्माना स्व
रूपनुं पूरण ज्ञान ते असिद्धनी बुद्धिमां उतरशे त्यारे ते पण सिद्धताने पामशे हवे प्रथम कह्युं जे चार शाखाओ तेनी शो
ल कलाओ थाय छे ने ते शोल कलाओ एकने विषे समजवि तेनुं नाम कौशल्य छे अथवा शास्त्रनो पूर्ण बोध छे हवे
ते शोल कलाओने तेना नामो सहित कहेवासे जे ते परमात्मा केवा छे तो एक छे अद्वैत छे अनादि छे अनंत कहेतां
जेनो अंत नथि ने सर्वव्यापि थका व्यतिरेक छे ने सर्वशक्तिमान ते निकला पहेलि सांख्ययोगनि छे जे परमात्मा
केवा छे तो जे शब्दना सांभल्यामां आवे एवा नथि तेज सर्वने शब्द संभलावे छे ने जे त्वचाना स्पर्शमां आवे एवा न
थि तेज सर्वने स्पर्श करावे छे ने जे नेत्रना जोयामां आवे एवा नथि तेज सर्वने रूप जोवरावे छे ने जे रसनाना वरणन

मांआवेएवानथि तेजसर्वनेरसचखाडेछेनेजेनाशिकानागंधमांआवेएवानथि तेजगंधलेवरावेछेनेजेमननासंक
ल्पमांआवेएवानथितेजसर्वनेसंकल्पकरावेछेनेजेबुद्धिनानिश्चयमांआवेएवानथि तेजसर्वने निश्चयकरावे छे।।
नेजे चित्तनाचिंतवनमांआवेएवानथि तेजसर्वने चिंतवनकरावेछे नेजे अहंकारनाअभिमानमांआवेएवुं नथि
तेजसर्वनेअभिमान धरावे छे एवीरि तेजेयोगमायापर छे तेजसर्वनेशब्दादिकनादाता छे इति पेहेलिकला १।। ।।
हवेसांख्यनेवेदांतनीकहेवाशे ।।जेपरमात्माकेवा छे तोजेशब्दनासांभल्यामांआवेएवानथितेजसर्वशब्दरूप छे
नेजेत्वचानास्पर्षमांआवेएवानथि तेजसर्व स्पर्शरूपछे इत्यादिक सांख्य वेदांतनी बिजिकला २ ।। हवे सांख्यने
पांचरात्रिनीकहेवाशे जे परमात्माकेवाछे तोजेसब्दनासांभल्यामांआवेएवानथि तेनोजपूर्णशब्द छे नेजेस्पर्श-
मांआवेएवानथि तेनोजपूर्ण स्पर्श छे ने जेनेत्रनाजोयामांआवेएवान थि तेनुंजपूर्णरूपछे इत्यादिकत्रिजिकला छे
३।।हवेसांख्यमांसांख्य वरणन थशे जे परमात्माकेवाछे तोजेशब्दनासांभल्यामांआवेएवानथि तेनोजशब्द ते-
बिजानाजेवोनथि इत्यादिक सांख्य सांख्यनिचोथिकला छे ४।। हवे योगसांख्यवरणनथशे जे परमात्मा केवाछे
तोजे सर्वनेशब्दसंभलावे छे तेजशब्दनासांभल्यामांआवेएवानथि ।।इत्यादिकपांचमिकलाछे ५।। हवे योगवे
दांत जेपरमात्माकेवाछे तोजेशब्दस भ लावेछे तेज सर्वशब्दरूपछे इत्यादिक छठिकला छे ६ हवे योगनेपांचरात्र
जेपरमात्माकेवाछे तोजे सब्दसंभलावेछे तेनोजपूर्णसब्दछे इत्यादिकसातमिकलाछे ७ हवे योगमांयोगवर्णन
जेपरमात्माकेवाछे तोजेशब्दनेसंभलावेछे तेने कोईशब्द नथि संभलावतुं कहेतां तेने कोईनाशब्दनीअपेक्षा
नथि इत्यादिआठमिकलाछे८ हवेवेदांतने सांख्यवर्णन परमात्माकेवाछे तोजे सर्वशब्दरूपछे तेशब्दपर छे
इत्यादिनवमिकला ९हवेवेदांतनेयोग परमात्माकेवाछे तोजे सर्वशब्दरूपछे तेजसर्वनेशब्दसंभलावे छे इत्या
दिकदशमिकलाछे।।१०।। हवे वेदांतने पांचरात्रजे परमात्मा केवाछे ।। तोजेसर्वशब्दरूप छे तेनोजशब्दपूर्णछे

नेतेनोजस्पर्षपूर्णछे नेतेनुंजरूपपूरणछे नेतेनोजरसपूर्णछे नेतेनोजगंधपूर्णछे नेतेनोजअहंकारपूरणछे नेतेनुंज मनपूर्णछे नेतेनुंजचित्तपूर्णछे नेतेनिजबुद्धिपूर्णछे इत्यादिअगियारमीकला छे ११ हवेवेदांतमांवेदांतवर्णन परमात्माकेवाछे तोजे सर्वशब्दरूपछे तेज पूर्णशब्दछे नेतेजपूर्णस्पर्शछे नेतेजपूर्णरूपछे नेतेजपूरणरसछे ने तेजपूर्णगंधछे नेतेजपूर्णमनछे नेतेजपूर्ण चित्तछे नेतेजपूर्णबुद्धिछे नेतेजपूर्णअहंकारछे कहेतांपरमात्माना शब्दस्पर्शादिकसाकरनानात्रियेरनीपेठ त्यागकरवाजोगनथी नेसर्वे परमात्मारूपपरिपूर्णछे नेतेजेवाएएक जछे॥ इत्यादिबारमिकलाछे १२॥ हवेपंचरात्रनेसांख्यवरणन जेपरमात्माकेवाछे तोजेनोपूर्णशब्दछे तेशब्द वरजितछे कहेतांजेनास्वरूपनेविषेशब्दादिमायानोभाग लेशमात्रनथि एवा रामकृष्णादिकप्रत्यक्षपरमात्मा छे इत्यादितेरमिकलाछे १३॥ हवेपंचरात्रनेयोगवर्णन जेपरमात्माकेवाछे तोजेनोपूर्णशब्दछे तेजशब्दसंभ लावेछे कहेतांपरमात्मानांमुखनिवाणिजेवेद तेथकिज व्यष्टिसमष्टिरूप ब्रह्मांडमांशब्दादिकसर्वव्यवहार नीप्रवृत्तिथईछे इत्यादिकचौदमीकलाछे १४ हवेपांचरात्रनेवेदांतवर्णन जेपरमात्माकेवाजछे तोजेनोपू- रणशब्दछे तेजशब्दरूपछे इत्यादिकपंदरमिकलाछे १५॥ हवेपांचरात्रमांपांचरात्रवर्णनजेपरमात्माकेवा छे तोजेनोपूर्णशब्दछे नेतेसर्वनेसंभलावेछे कहेतां आत्यंतिकज्ञानआपेछे इत्यादिसोलमिकलाछे॥१६ हवेतेसोलेकलाओनीमेलवणिकरितेनुंकौशल्यकरवुं तेपरमात्माकेवाछे तोजेशब्दनासांभल्यामांआवे एवानथि तेशब्दनेसंभलावेछे नेतेशब्दरूपछे नेतेनोपूर्णशब्दछे तेणेकरिनेअपूर्णनेपूर्णकरेछे इत्यादि- सांख्यनुंकौशल्यथयुं त्यारेसांख्यनीसिद्धिथई जाणवि कहेतां सांख्यपण प्रत्यक्षभगवाननेजणायछे हवेयोग नीसिधि जेपरमात्माकेवाछे तोजेसब्दसंभलावेछे तेशब्दनासांभल्यामांआवेएवानथि नेतेजपूरणशब्द रूपछे नेतेनोशब्दपूरणछे तेणेकरिनेअपूर्णनेपूरणकरेछे इत्यादीकयोगनुंकौशल्यथयुं त्यारेयोगनिसिद्धि

थई कहेतां योगपण प्रत्यक्ष मनुष्याकृति भगवान तेने जणाय छे हवे वेदांतनि स्कृष्टि जे परमात्मा केवा छे तो जे सर्व
शब्दरूप छे ते शब्दना सांभल्यामां आवेएवा नथि ते ज शब्दने संभलावे छे ने तेनो पूर्ण शब्द छे ने ते ज अपूर्णने पूरण
करे छे इत्यादि वेदांतनुं कौशल्य थयुं त्यारे वेदांतनि स्कृष्टि थई कहेतां वेदांतमां पण प्रगट परमात्मानुं वरणन कर्युं छे
हवे पांचरात्रनी स्कृष्टि जे परमात्मा केवा छे तो जेनो पूर्ण शब्द छे ते ज शब्दना सांभल्यामां आवेएवा नथि कहेतां श-
ब्दादि मायाना भाग आने विषे दोषत्यां स्कधि प्रत्यक्षनुं स्वरूप तेने जाणवामां आवतुं नथि ए विरीते शब्दनासां भ-
ल्यामां आवता नथि ॥ ने ते ज सर्व शब्दने संभलावे छे ने ते ज पूर्ण शब्द छे ने तेना शब्दादिने जे जे धारे ते नुं अपूर्णता
टलिने पूर्ण काम थाय छे माटे प्रगट भगवान ते ज सर्व कारण सर्वाधार ने मोक्षना दाता छे अने सर्व शास्त्र पण प्रगट
भगवानने जणाय छे माटे आज अथवा अनंत युगे पण प्रगट भगवान मलशे ने तेनो आसरो करशे त्यारे ज जिवनो
मोक्ष थशे ॥ ॥इति श्रीमुख सिद्धांत संपूर्ण समाप्तः ॥१०८॥ ॥छ॥ ॥छ॥


इतिश्रीमुख्यसिद्धांतप्रकरण१लुं समाप्त.

अथश्रीमुखसिद्धांतप्रकरणबिजुं

(प्रारंभ)

श्रीहरिकृष्णमहाराजनां

श्रीमुखसिद्धांत

प्रकरण बीजुं

चुडावाळा

ओझा भगवानजी लक्ष्मिराम

विगेरे हरिभक्तोए

अमदावादमध्ये

मामानी हवेली मां अमदावाद युनाईटेड प्रिंन्टिंग अने जनरल एजन्सी कंपनी "लिमिटेड" ना प्रेस मां

रणछोडलाल गंगाराम पासे

छपावि प्रसिद्ध कर्यो

संवत १९३४

सने १८७८

॥श्रीहरिक्रस्नायनमोनमः॥ ॥संवत १९ ओगणिशे ॥ १९॥ ओगणिशना भादरवा वदि ॥१२॥ द्वाद-

शिने दिवस महाराजश्रीहरिक्रस्न भगवान गाम श्रीपिपलिमध्ये चुडासामा मुलुभाई बेचरजिना दरबार मां उगमणे बार ओरडानि ओसरिमां ढोलिया उपर गादित किया बिछावि ने विराजमान थया हता ने सर्वे जरियानि वस्त्र धारण कर्या हतां ने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां सोभि रह्यां हतां ॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगल संतमंडल तथा देशदेशना हरिभक्तनि सभा भराईने बेठी हति ॥ पछे संध्या आर्ति थया केडे महाराज बोल्या जे आ जगतने विषे बे प्रकारना वेष धारि छे ॥ तेमां एक सत्यवेश छे ॥ ने एक असत्यविस छे ॥ तेने जाणवा जोइये पण ते जाणवुं बहु कठण छे केमके उपरथि तो बे सरखा वेष जणाता होय पण तेना अंतरना आसमयमां घणा भेद छे ॥ हवे तेने ओलखवानी रित्य ए छे जे जे असत्यवेस धारि छे ते उपरथि धर्मनी ओथ्य लेईने साधना वेश बनाविने पछे पंच विषयने भोगवे छे॥ ने अज्ञानि लोकोमां पूजाय छे ॥ एवा जे असत्यवेसधारि तेना उपर भगवाननो अतिशे कोप थाय छे ॥ ने तेना जिव ने चोराशिमां जन्ममरणनो अपार कष्ट थाय छे केमके एणे धर्मनी ओथ्य लेईने अधर्मने मार्गे प्रवर्त्ति करि के हे तां साधने तो पंचविषयनो त्याग कर्यो जोइये ते ज साध कहेवाय ॥ ते तो तेणे उलटा विषयने निसंक थईने भोगव्या माटे एने जेवो कोई पापि नहि ॥ ते सारु जेने पोतानुं कल्याण इछवुं होय एवा असत्यवेसधारिना संगनो त्याग करीने वेदमां कह्या जे सउ सउना वर्णाश्रमना धर्म तेने द्रढ करिने पालवा तेमां जे त्यागि थया होय तेने तो पंच विषयनो त्याग अतिशे द्रढपणे देहपर्यंत राखवो पण कोई रिते विषयनो संबंध न करवो अने जो त्यागि थईने गाफलाई राखे तो तेनो धर्म कोई रिते रहे नहि ॥ अने ते गाफलने खरेखरो देशकाल पंच विषयनो जोग थाय तो ते जरूर भ्रष्ट थया विना रहे नहिं ॥ ते पूर्वे पण गाफलाईये करिने मोटा मोटाने कलंक लाग्यां छे माटे सत्पुरुषना आपेलां जे नियम तेने शिर साटे करिने राखवा तेमां जे ग्रहस्थाश्रमि होय तेने ब्राह्मणना धर्म वेदमां कह्या होय

ते प्रमाणे ब्राह्मणने वर्त्तवुं ॥ ने क्षत्रिना धर्म प्रमाणे क्षत्रिने वरतवुं ने वैश्यना धर्म प्रमाणे वैश्यने वरतवुं एवि रिते जेने जेम आ-
ज्ञा होय ते प्रमाणे तेनो वेश पण ते वोज राखवो अने जो ते वेशने बदलावे तो तेने दोष लागे छे ॥ जेम भवाया छे ते पुरुषनो वे
श बदलावि ने स्त्रिनो वेष धारण करे छे ॥ तो तेने जोयानु शास्त्रमां घणुं पाप कह्युं छे ॥ ते माटे सउ सउना धर्म प्रमाणे पोतपोता
नो वेष राखवो ॥ अने जे विधवा स्त्रि होय तेने तो साधु जेम पंच विषयनो त्याग राखे छे तेम विधवा स्त्रि ने पण पंच विषयनो त्या
ग दृढपणे राखवो ॥ तो ज तेनो धर्म रहेशे ने तेनु कल्याण थशे ॥ अने जो विषयनो त्याग नहि राखे ने सारां सारां वस्त्र पहेरशे
ने खट रसादिक रस जमशे ने पोताना भाई बापने दिकरा विना बिजा पुरुषने अडशे ॥ के ते साथे बोलशे ॥ तथा विवाहमां-
जशे के फटाणां गाणां गाशे ॥ तथा होलि रमशे तो ते विधवा स्त्रिनो धर्म नहि रहे ने ते जरूर भ्रष्ट थशे ने तेनुं कल्याण काई
काले थशे नहिं ॥ माटे जे विधवा स्त्रियो होय तेने तो कोई पुरुषने नेत्र भरिने जोवो पण नहि ॥ अने परमेश्वरनी कथा किर
तन सेवा स्मरण आदिक जे नवधा भक्ति ते परायण वर्तवुं अने जेने प्रत्यक्ष भगवान मल्या होय ॥ तेने ते मूर्त्तिनुं अखंड
ध्यान करवुं ॥ एवि रितनी समजण वालिओ जे विधवा स्त्रियो छे ॥ तेनो साक्षात्कार मोक्ष थाय छे ॥ अने जे सुवासणि-
स्त्रियो होय तेने पोताना पति विना बिजा कोई पुरुष सामुं जोवुं नहिं ॥ अने हांसि मस्करि पण कोई पुरुष साथे न कर-
वि ॥ अने कोई स्त्री जे तेवा मोटा साधु पुरुष कहेवाता होय तो पण पोतानो धर्म चुकि ने ते साथे भ्रष्ट थवुं नहिं ॥ अने पोताना धर्म
थि चुकि जवाय एवो उपदेश कोई करे तो तेने चंडाल तुल्य जाणीने तेने आंगणे पण उभो रहेवा देवो नहि ॥ ने जे सत्पुरु
षे पोताने जे जे नियम आप्या होय तेने दृढ करिने पालवा ॥ एवि रिते समजिने भगवाननुं भजन करशे तो ते सुवासणि बा
ईओनां कल्याण थशे ॥ अने जे ग्रहस्थाश्रमि पुरुष होय तेने पोतानि परणेलि स्त्रि होय ते विना बिजि स्त्रि मात्रने विषे-
मा बेहेन दिकरिने भाव राखवो ॥ अने पोतानी मा बेहेन साथे पण आपतकाल विना एकांतमां न रहेवुं ॥ ने कोईनी चो
रि न करवि तथा दारु माटि गांजो तमाकु आदिक अधर्म तेनो त्याग करिने परमेश्वरनो दृढ आसरो राखिने तेनुं भजन

स्मरण काम काज करतां पण कर्याकरवुं ॥ अने आ संसारनां जे सुख छे ते तो सर्व स्वप्न तुल्य मिथ्या छे ॥ केमके अनंत
कोटि जुग थयां जिवते सुख भोगवतो आवे छे तो पण हजि कोई जिवने ए सुखमां थि तृप्ति थई नथि ॥ माटे जरूर
स्वप्न तुल्य ने मिथ्या छे ॥ अने सत्य ने अविनाशि सुख तो परमात्माना चरणारविंदने विषे रह्युं छे एवि रिते समजिने
संसारना सुखनि वासनानो त्याग करिने पोताना देह थि नोखो आत्मा जाणिने ते आत्माना आधार जे परमात्मा तेनि
भक्ति करवि ॥ अने एवि समजणवाला जे ग्रहस्थ हरिभक्त होय तेनो परम मोक्ष थाय छे अने वलि तेमां कोईने
ए आसंका थाय जे महाराज बिजाने तो विषय मुकाव्या निवातो करे छे ने नियम रखावे छे ने पोते तो सारां सारां व-
स्त्र पुष्पनां आभूषण ॥ भोजन तेनुं ग्रहण करे छे तथा स्त्रियो साथे बोले छे ॥ सामुं जुवे छे पगे लगाडे छे ते शुं करवा क
रता हशे ॥ एम कोईने दोष जणाय ॥ तो तेनुं एम छे जे ए वात तो अति सुक्ष्म जवि अटपटि छे अने ए वातना मर्मने तो
अमारा एकांतिक संत छे ते जाणे छे ॥ अने अमारुं स्वरूप तो एवुं छे जे सारां वस्त्र पहेरिये तेणे करिने अमारि मोटप्य व
धे एम नथि अने जेवां तेवां फाटेलां तुटेलां लुगडां पहेरिये तेणे करिने अमारी मोटप्य घटे एम नथि ॥ अने सारां भोज
ने जमे राजि थईये ने दाडा दुकडा जमिने कुराजि थवाय एम पण नथि ॥ अने रूपवान स्त्रिने देखिने तेमां मोह पा-
मिये एम नथि अने ईं तो देव ब्रह्मादिकनी स्त्रियोने पण विष्टा मांहे लोपडियो होय तेवत देखुं छुं पण प्रकृतिजेमा
या तेना कार्यमां क्यांई मोह थाय एम नथि ॥ अने अमारुं भजन करिने सिद्ध दशाने पाम्या एवा जे निरवासनिक अ
मारा एकांतिक संत ते पण प्रकृतिना कार्यने काग विष्टा तुल्य जाणे छे ॥ अने एवा भक्तजन संत छे ते एम जाणे छे ॥
जे एक महाराजने कोई बंधन करे एम नथि ॥ एम जाणिने जिवोना मोक्षने अर्थे वस्त्र तथा पुष्पना हार पहेरावे छे ने ते ए
म जाणे छे जे कोई पापि हशे तथा कामी क्रोधि लोभि स्वादि मानि हशे ने ते महाराजनां दरशन करिने वस्त्र पुष्पादि
कने जोईने राजि थईने मूर्तिमां अति राखिने कानेक रिने जो प्रत्यक्षनात्राब्दप्रितिये करिने साभलशे तो तेनि श्री त्वदं

द्रिनीवृत्तिरुंधतानेपामशे ॥ कहेतांतेशब्दनेसांभलवेकरिने ॥ प्रत्यक्ष भगवानने विषेदोष बुद्धिनाशब्दसांभ-
ल्यां होयते निरदोष तानेपामेछे ॥ अनेनेत्रेकरिनेमूर्त्तिमांजोडायतो तेणेकरिने नेत्रइंद्रिनापापसर्वेनासपांमेएविरिते
इंद्रियोअंतःकरणेकरिनेजेजेजिवस्त्रितथापुरुषते प्रत्यक्षभगवानना स्वरूपमांजोडायतो तेने मायानुंआवरण टलि
जायछे ॥ नेदेहछतांते जिवब्रह्मरूपथईनेअभयपदनेपामे ॥ एममहामोटो उपकारजेथकी थायछे एमजाणिनेअ
माराएकांतिकभक्तसंतछे तेअमारिसेवाकरेछे ॥ तेनेपरउपकारमाटे अमेपणग्रहण करियेछिये अनेअमविना
बिजोतो सिद्धदशानेपाम्योहोय तोपणतेपोतानोधर्मचुकिनेकहेतां साधुहोय ते साधुनोवेशमुकिने अमारुं
आचर्णजोईनेतेप्रमाणेआचर्णकरेतो तेनेसिद्धदशाथकिपड्योजाणवो नेतेनेधर्मभ्रष्ट थयोजाणवो ॥ माटे
साधुनेसाधुनोवेषनेदशाराखिने भगवानभजवा ॥ अनेगृहस्थनेगृहस्थनोवेशराखिने भगवाननुं भजनकरवुं ॥
पणपोत पोतानावर्णाश्रमनाधर्मनोजेवेषतेथकिभ्रष्टथवुंनहि अनेएविरितेसमजिनेजेहरपणे आज्ञामांव
रतेछे ॥ तेनाउपरभगवानअतिषेप्रसन्नथायछे नेतेनुंकल्याणथायछे ॥ ॥ इतिश्रीमुखसिद्धांत
समाप्तः ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ॥ ॥ संवत १९ ओगणिसे १९ ओगणिशा
नाभादरवावदि १३ तेरशनेदिवसमहाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री पिपलिमध्येनवाडिपीताम्बरगो
वनजिनेघेरआथमणाबारनाओरडानिओसरिमांगादितकियानरवाबिनेहोलियाउपर बिराजमान थयाहता
नेसर्वेजरियानिवस्त्रधारणकर्यांहतां नेकंठमांपुष्पनाहारपहेर्याहता नेपाघमांतोराधारणकर्याहता ॥
नेबेकानउपरगुच्छरखोस्याहताने हाथनेविषेबाजुनेगजराधारणकर्याहता ॥ नेललाटनेविषेकेशरनीअरचानेकंकु
नोचांदलोकर्योहतो नेपोतानासुखार्विंदनीआगलसंततमंडल तथाघणाकहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठिहति ॥
पछेमहाराजबोल्याजेआजगतनेविषेजियोमांएकसजनछे नेएकदुरिजनछे तेमांजे दुरिजनछे तेतो जिवने

दुःखउपजावेएवाछे ।।नेपोतेपणदुष्टमनुष्यजेचोरराछिनालवा तथा भुंडा भुंडाव्यसनितेनोसंगकरिनेभ्रष्टथायछे ।।
नेमहा दुःखनेपामेछे नेतेना घरना मनुष्य जे स्त्रि छोकरां तथा तेनोजेजेसो बतिहोयतेनेपण भ्रष्टकरे छे ।।नेतेनेपछे
खावा अन्नपण रहे तुंनथि ।। अने तेमरिनेपण जमपुरिमां तथा चोरासि लाखयोनिमांजायछेनेत्यां अपार दुःखने
भोगवे छे ।। अनेजेसजनमनुष्य छे तेनो जिवने सुखथाय तेमपोतेपणवरते छे नेतेनाघरनांमनुष्यने पण सुखथाय
एवे मारगेचलावे छे ।।अने पोतेसत्पुरुषएवाजेकल्याणदाताभगवानने भगवाननासंत तेनो समागमकरिने धर्म
ज्ञान वैराग्य भक्ति शिलसंतोष्यादिकजेरुडागुण तेनेशिखे छे नेपोतेम हासुखियो थाय छे नेतेनांजेजे संबंधि
तथा तेनाजेसो बति होय तेनेपण रुडेमारगेचढावे ने तेनेपण महासुखियाकरे अनेआ लोकमां पण तेनी आब
रु किर्ति वृद्धिपामेनेवे हे बारमांपण तेघणुं सुखपामे ।।अनेदेहनेमुकिनेपण तेने भगवाननाधाममां प्राप्तिथायछे
।।माटेजेनेअतिशेसुखियाथवुं होय तेनेतो पोताने विषे काईदूरिजनपणुं होय तो तेनो त्यागकरिने बिजाएवा-
दुरिजन मनुष्यहोयतेना संगथि छेटेरहिने सजनएवाजे भगवानतथा भगवानना एकांतिक भक्तसंत तेनोदृढपणे
मनक्रमवचने समागमकरवो अनेजेणेकरिनेआत्मानोमोक्षथायएवाधर्म ज्ञानादिकरुडागुण तेने शिखवा अने
पोतानासगांसंबंधिहोयतेनेपणते विजरितेउपदेशआपवो जे भगवानने भगवाननासंतनोआसरो करजो तो
जसुखियाथशो ।।पण ते विना बिजे कांई सुख नथि ।।अनेपूर्वे पण जेजे मोटिपदविने पाम्याछे तेपण आ धर्म
ने दुरिजनमनुष्यनासंगनो त्यागकरिने सजनएवाजेसतपुरुष भगवानने भगवाननासंतनाआश्रयथकिज
पाम्या छे माटे मनुष्यदेहे करिने जेजे आत्मानामोक्षनुं साधनकरशो तेनो मोक्षथशे ।।पण पछे मनुष्यदेह गयाके
चोरासिमां बिजाकोई अवतारमां आत्मानुं रुडुं थाय एमनथि ।। ।।इतिश्रीमुखसिद्धांतसमा
प्तः ।। ।।श्री हरिकृष्णायनमोनमः ।। ।। संवत १९ आगणिशे ।।१९।। ओगणिसना

भादरवा वदि ॥१४॥ चतुरदशिने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री पिपली मध्ये ॥ चुडासामा नारण
जिगेमा भाईना दरबारमां आथमणा बारना ओरडानि ओसरि मांढोलिया उपर विराजमान थया हता ने सर्वे जरि-
यानि वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभि रह्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ संतमंड
ळ तथा घणा क हरि भक्तनि सभा भराईने बेठि हती ॥ पछे संध्या आर्ति थया केडे महाराजे बोल्या जे जेने मनुष्य-
देह आव्यो छे ने तेमां कोई एम कहे जे अमारे तो धर्म नियम पळे नहि तो तेने तो पापजाणवुं ॥ केम के मनुष्य देह क
रिने ज धर्म नियम पळे एम छे ॥ पण पछे पशु पक्षिना अवतारमां पळे एम नथि ते कुतरा छे ते आठे पहोर नवरां बेठां
छे ॥ पण तेने परमेश्वर भजवानुं ने वरतमान पाळवानुं भान नथि ॥ अने तेणे मनुष्य देहे भगवान भज्या नथि ने वरत-
मान पाळ्यां नथि ॥ ते हवे चोरासिमां प्रारब्धवश थईने वर्तमान पाळवां पडे छे ॥ ते कुतरां ने कडका कडका रोटला
सारु घरोघर भटकवुं पडे छे तो पण पुरुं पेट भरातुं नथि ॥ अने बळधना अवतारमां गोधला करिना खे छे ॥ त्यारे सहे
जे निष्कामि व्रत पाळवुं पडे छे ॥ अने खाधा पिधानुं पण नियम प्रमाणे धणि खवरावे पिवरावे त्यारे खवाय पिवा
य पण पोतानि मेळे खवाय पिवाय नहि ॥ अने वळि भार पण अणतोल्यो तणावे ते टळो ताण वो पडे पण ते मो-
ढा के ना कहेवाय नहि ॥ अने झाडना अवतारमां पण टाढ तडकानुं सहन करे छे । ने कुहाडो लईने कोई कापे छे तो
पण तेने ना पाडि शकतां नथि ॥ एवि रिते मुनिव्रत पाळे छे तथा बिजा घणाक जिव कर्मवश थईने अपार कष्टने भोग
वे छे ॥ एवि रिते प्रारब्धवशथई ने नियम पाळवा पडे छे पण तेणे करिने जिवनुं कल्याण थतुं नथी ॥ केम के परमेश्व
रे कृपा करिने जन्म मरणना दुःखथकि मुकाववा सारु ने पोतानुं अविनासि धाम ने अविनासि सुख तेने पमाडवा
सारु जिवने मनुष्यनो देह आप्यो हतो ॥ पण ते अमूल्य एवो जे मनुष्य देह तेणे करिने कोई भगवान के भगवानना
निरवासनिक एकांतिक संत तेनां वरतमान पाळ्यां नहि ॥ ने भगवाननुं भजन कर्युं नहि ने नाशवंत ने स्वप्नतुल्य

एवांजे संसारनां खोटां सुख तेमां रचिपचि रहि नेमिथ्या एविजे लोकनि लाज तेमां बंधाईने मनुष्यदेह व्रथा खोयो ।।पछे
परमेश्वर तेना उपर कोपायमान थईने तेने चोरासि लाख जातना अवतार धरावे छे ।।नेते ते अवतारमां अपार अपार जिवने
कष्ट भोगववां पडे छे ।।तेसारुं जेने मनुष्यनो देह आव्यो होय तेने तो सावधान थईने महात्मा पुरुषने शरणे जवुं ।। अने तेपोता
नेजे जे आज्ञा करे तेने अंतरमां उतारिने ते प्रमाणे द्रढ पणे वर्तवुं ।। अने मनुष्य देहे करिने जेजे करवानुं धारे ते थईशके एम छे
तेपण आजथीज चेतिने सावधान थईने पोतानुं तन मन धन भगवानने भगवानना संतने अर्पण करे त्यारे काम थाय ।।अने
गाफलाई राखे ने एम जाणे जे हमणां तो वरतमान पालवानी नवराई नथि ।।ने बे एक दिवस पछि वरतमान पालिशुं ने भग-
वाननुं भजन करिशुं ।।एम कहे ने एम समजे ते तो महा मुरख छे ।।ने पापि छे ।।केमके देह नो तो क्यां पलमात्रनो नीरधार छे
।।ते भागवतमां जनकराजाये कह्युं छे ।।जे दुर्लभो मानुष्यो देहो देहिनां क्षणभंगुर ।। तत्रापि दुर्लभं मन्ये।। वैकुंठप्रिय द
र्शनं ।।१।। अर्थ ।।जे मनुष्यनो देह दुर्लभ पण क्षणभंगुर केहेतां पलवारमां नासपामि जाय एवो छे ।। तोपण ते देह छतां
प्रगट भगवान के भगवानना निरवासनिक संत तेनुं दरशन ने तेनो समागम थाय ते अतिशे दुर्लभ छे ।।माटे एवो स-
मो आव्यो होय तेने तो ततकाल भगवानपरायण थवुं ।।ने सत्संग करिने पंच विषयनी वासना टालिने ज्ञान पामवुं।।
नेपोताने देहथि नोखो ने अखंड अविनाशि ने अछेद अभेद एवो आत्मा जाणिने ब्रह्मरूप थईने प्रत्यक्ष भगवाननी
भक्ति करवी ।।एज जिवने अतिशे मोटो लाभ छे ने सर्वे शास्त्रनो पण एटलोज सार छे।। ।।इति श्री मुख
सिद्धांत समाप्तः।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ।। संवत १९ ओगणिसे १९ ओगणिसना
आसो शुदि २ बिजने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री पिपलि मध्ये व्यास त्रिवराम अंबारामने घेर उग-
मणे बारणे ओरडानी ओसरिमां हिंडोलाखाट उपर विराजमान थया हता नेसर्वे कसुंबल सोनेरि वस्त्र धारण कर्यां
हता ।।नेपुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां सोभि रह्यां हता।। ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मूखारविंद नी-

आगलमुनिमंडल तथाघणाकहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठिहती॥ पछेमहाराजनीसंध्याआर्तिथई तेसमेआर्तिधून्यक-
रिने हरि भक्त सर्वबेठा ॥पछे महाराज बोल्याजे आज अमे वातकरीशुं तेमां जेनिजे बुद्धि हशे ते वितेने साक्षात्कार जाणयामां
आवशे॥ तेवातकहियेतेसांभलोजे आसर्वेघणाकप्रकारनां मनुष्य छे तेमांजेजे बुद्धिवालाहशे तेनो तोएवोठरावहशेजे
आपणेमहाराजनां तथा महाराजनासंतनां दरशनकरिने तेने नखशिख नीरखिने अंतरमां धारि राखवाछे ॥अने महा-
राजने संतजेजेवचनबोलशे॥ तेवचननेआपणा मोक्षनेअर्थेजतनकरिने धारि राखीनुंएमसमजिनेजे बुद्धि वाला
होय तेवातमां स्तरतराखिने एम विचार करेजे आजमहाराजेआटलिवात करिने तेमां आटलो सार कहेवाणो॥अने
काल आवात थईहति ॥नेपरमदहाडेआवातथईहती ॥अनेतेमां आटलुं तो आपणे जरुरकरवानुं छे॥ नेएटलुंकरि-
शुंतोजआपणाउपर भगवाननेसंत प्रसन्नथशे ने आपणाआत्मानो मोक्षथशे पण तेविना जिवनो मोक्षनज थाय॥एम
विचारिनेजेजे धर्मसंबंधिवात थईहोय तेनेसांभलिनेजे विरितेवरतवानुं कह्युं होय॥ तेप्रमाणे वर्तवानो मनमां दृढठ
रावकरे॥ अनेदेह आत्माना विवेकनीवात करिहोय तेप्रमाणे समजिने देहना भावथि जुदो पोताना आत्माने जाणि
ने॥ आत्मारूपेवर्तवालागे॥ अनेचारप्रकारनाप्रलयनीवात सांभलिने प्रकृतिनाकार्य जे पिंडब्रह्मांडादिक सर्वपदार्थ
तेनेविषे वैरागपामे ॥अने भगवानने भगवानना संतनो महिमा कह्योहोय तेने सांभलिने तेनेविषे नवधा भक्तियेक
रिने अतिशेप्रिति करे ॥अनेपोताना मनमां निरवास निकथवानिइछा करे एविरितनी समजणजेनेहोय तेने बुद्धि
वालाजाणवा ॥अनेएविसमजण जेनेहोय तेजतानसांभलिने तत्वग्रहणकरेछे ॥केमके परमेश्वरे तो जिवना मोक्षसा-
रुं सर्वने बुद्धि सृजिआपिछे ॥ पणतेमांजे सुरूति जिवछे तेतो बुद्धियेकरिने सारअसारनो विवेककरिनेतेमांजे-
असारहोयतेनो त्यागकरिने सारनुंग्रहण करिने पोताना आत्मानुं काम सुधारि लेछे॥ अनेजेकबुद्धिवालाहोय॥
तेतो अहिंआ मारिपासे आविनेपण इंद्रियोनी वृत्तियोने नियममां राखता नथि नेकबुद्धिवाला पुरुषछे ते स्त्रियोना

मोंहांजुवे ने स्त्रियो कबुद्धि वालिहोय तेपुरुषनां मोंहांजुवेने मनमां भूंडा भूंडासंकल्पकरे छे ते पापे करिने तेनाआत्मा-
नुंअतिशे भुंडु थाय छे ।। अने अमे जे ज्ञान वार्ताकरिये तेनीपण ते कबुद्धिवालाने भांनरहेनहिं जे शि वातकरि।। माटेए-
विरि ते सउसउना मन मां तपास करिने जोयो तो साक्षात्कार खबर पडशे ।। जे आपण मां तेस बुद्धि ना गुण छे के कबुद्धि
नागुण छे ।। एमविचारिने सबुद्धिनागुण पोतामां होय तोतेने द्रढकरिने राखवा ने वलि सत्संग करिने ते गुणने वृद्धि पमा-
डवा ।। अने कुबुद्धिनागुण पोता मांजणाय तो तेने पापरुप जाणिने ते नो त्याग करवो ।। ए तमारा सर्वेनी हितवारता छे
।। तेने नित्यप्रत्ये से भारि राखजो ।। ।। इतिश्री मुखसिद्धांत समाप्तः ।। ।।

श्रीहरिकृस्नायनमो नमः ।। ।। संवत ।। १९ ।। आगणिसो ।। १९ ।। ओगणिसना आशो शुदि ।। ३ ।। त्रि-
जने दिवस ।। महाराज श्रीहरिकृस्न भगवान गाम श्रीपीपलिमध्ये भक्तविरजि खिमानेघेरउगमणेबार ओरडानि -
ओसरिमां गादितकिया बिछावेलाढोलियाउपर विराजमानथयाहता ।। नेसर्वेजरियानीवस्त्र धारण कर्यांहता ।।
नेकंठमांहारनेपाघमां तोरा धारण कर्याहताने कंकुनो चांदलो कर्योहतो नेपोतानामुखारविंदनी आगल संतमंडल
तथाघणाक हरि भक्तनीसभा भराईनेबेठिहति पछेमहाराज बोल्याजे आज अमेवातकरिशु तेनेजे ज्ञानि हशे
तेसमजशे ।। नेतेनाअंतरमांघणो प्रकाश थशे।। नेतेनासंषय मात्रटलिजशे।। अनेजेअज्ञानि हशे तेने मोह थशे
तेवात कहियेतेने सांभलो जेपूर्वेजे जे सत्पुरुषथयाछे ते बेप्रकारना सत्पुरुष थयाछे ।। ते मांएकतो भगवान्सत
पुरुषकहेवायछे नेएक भगवानना भक्तएकांतिक संत तेपण सत्पुरुष छे ।। तेमां नारदादिक जे भगवानना भक्त
साधु तेतो धर्म ज्ञान वैराग्यने महात्मेसहित भगवाननी भक्ति तेणे युक्त ।। एवाजे साधुना चोसठ लक्षण तेणेसहि
तहोय।। ने निरवासनिकपणे अखंडवरते तो तेसत्पुरुषकहेवाय अने तेजो लगारेपण भगवाननिआज्ञालो
पे तो ते भ्रष्टथईजाय नेतेसतपुरुष कहेवायनहिं ।। माटेतेनेतो भगवाननिआज्ञामां दृढपणे वर्तवुं पडे छे।। तो

तेसतपुरुषकहेवायछे नेतेपोतेपण महामुक्तथायछे ने तेनोजेजेआसरोकरेतेनेपण ब्रह्मरूपकरिमुके अने बिजाजे
भगवानसतपुरुषछे ॥ते भगवाननुंबेप्रकारनुं स्वरुप छे तेमांएकतो दिव्यस्वरूपछे॥नेएक भगवाननुं मनुष्यरूपछे ॥ते
मां दिव्यरुपेतोइंद्रियो अंतःकरणथकि अगोचरथका सदायअक्षरधाममां विराजमान छे ॥अनेते स्वरूप नेवेदपणने
तिनेतिकहे छे ॥ अनेतेस्वरूपने कोईजोवाने समरथ नथि ॥ केमके ते स्वरूपतो मायापर छे ॥ अने जिवमात्रतोमा
यामांविंटायाछे॥ माटे माईक इंद्रियोएकरिने ते दिव्यरूप भगवाननुजोयामांआवेनहि ॥अनेते स्वरूपना रोमरोम
प्रत्ये कोटिसूर्यनाप्रकासनेझांखो करेतेवो तेनोप्रकास छे ॥अनेतेसर्व ना कर्त्ता छे॥ने सर्वना आधारछे॥नेस
र्वनापालक छे ॥ अने अनंतऐश्वर्य नेअनंतपारसदने अनंतदिव्यगुण तेणेजुक्तथका अक्षरधाम मां पोतानाएकां
तिक भक्तने अखंड सुखआपे छे ॥एवाजे परमात्मा पर ब्रह्मपुरुषोत्तम दिव्यमूर्त्ति भगवान ते जिवोउपरकृपा करिने
पोतानुंस्वरुपजणाववासारु पोतानोजे दिव्य भाव तेने छुपाविराखिने तेजपोते मनुष्याकृतिनु धारणकरे छे॥ ने
मनुष्यनाजेविजक्रिया करेछे॥ केमकेसजाति थयाविना जिवने स्नेह थाय नहि ॥ अने स्नेह थयाविना जिवने ज्ञान था
यनहि॥ अने ज्ञानविना जिवनो मोक्ष थायनहि॥ माटे भगवानपण जिवोने ज्ञान आपवासारु मनुष्यनीपेठेज भू
खतरखादाह तडको पोतानुंपारकुं एआदिक मनुष्यनास्वभाव तेजिवोना कल्याणने अर्थे पोताने विषेजणावेछे
पणपोतानु अलोकिकऐश्वर्य तेनेनथिजणावता अनेजो अलोकिकऐश्वर्यनेजणावे तो जिवोने ठिक पडेनहि॥ ने
तेनुंकल्याणपण थायनहिं॥केमके विजाति भावथाय॥ते विजातीमां जिवनेसुख थायनहिं॥ ते श्रीकृष्ण भगवानेअ
र्जुनने विश्वरुपदेखाड्युं॥ तोतेने जोईनेअर्जुन आकुलव्याकुलथईगयो॥ नेतेरूपजो वाने समरथन थयो॥पछेश्री
अर्जुने कह्युं॥ जे हे महाराज तमारुंमूलरुपजे मनुष्याकृतितेमुनेदेखाडोतो सुख थाय॥ माटेतेसारु भगवा-
न ज्यारे ज्यारे अवतार धारण करे छे ॥ त्यारेमनुष्यनाजे बीज चेष्टा करे छे पणदिव्य भावजणावता नथि॥त्यारे को-

ईएमकहेजेकृष्णअवतारमांगोवरधनतोल्यो ।।कुबजानावांकटाल्या ।।रामाअवतारमांसमुद्रमांपाण्यबांधि ।।एवाएवा
दिव्यभावजाणाव्यातेनुंकेमसमजवुं ।।तोएनुंतोएमछेजे भगवानतोमनुष्यनीपेठेजवरत्याछेनेदेहनीक्रियापणए स-
र्वेमनुष्यनाजेटलिजकरता ।।अनेएनेविषेसर्वमनुष्यनाकरतांविषेषभावतोएकज्ञानहतुं ।।तेएवुं भगवाननाजेवुं ज्ञा-
नकोईमनुष्यतथादेवब्रह्मादिकपासेपणनथि मारेजाडिबुद्धिवालाजे जिवतेनेसूक्ष्मज्ञानमां गमपडेनहिं तेसारुं
शास्त्रमां भगवाननो दिव्यभावने मनुष्य भाव नेअभेदपणे वरणनकरिने भगवाननो महिमा देखाडिने तेमनुष्यमूर्ति-
नेविषेजाडिबुद्धिवालामनुष्यनेप्रितिथाय तेसारु मोटेपुरुषे शास्त्रमां मर्मराख्याछे केमके भगवानतो दिव्यस्वरू-
प नेमनुष्यस्वरूप बेयतेएकज छे ।।पणते दिव्यने मनुष्यस्वरूपमां एकरोमनोयफेरनथि ।। जेमकोईकराजाहोयतेको-
ईककार्यनेअर्थे फकिरनोवेष लेईनेएकलोपरदेशमांजाय त्यारेते देशना मनुष्य कोईएमनजाणे जेआराजा छे
तेतोएमजाणेजे बिजाजगतमां फकिरफरताफरेछे तेवोज आफकिरपण हशे पणतेदेशनो जाणितो मनुष्य आवे तो
तेएमजाणेजे ।।आफकिरनेवेषेजणायछे ।।तेतोमुलकनो पादशाह छे ।।पणतेफकिरनेने पादशाहनेजुदा नसमजे
नेजुदाछेपणनहि तेमराजानेठेकाणेतो दिव्यस्वरूपभगवाननुं छे ।। नेफकिरनेठेकाणे मनुष्यस्वरूप भगवाननुंछे
ते बेयएकछे ।।तेंने ते भगवाननादेशिजे भगवाननाएकांतिकब्रह्मरूपमुक्त साधु ते भगवाननुं दिव्यस्वरूप नेमनुष्यस्व-
रूप तेनेअभेदजाणे छे माटे शास्त्रमां बेस्वरूपनेएककरिने भगवाननुंवरणनकर्यूं होय तेसारु सत्पुरुषथकिज शास्त्र-
नामर्मसमजायछे ।।पण तविनापोतानिमेले शास्त्रने भणे सां भले समजायनहि ।।तेपणशास्त्रमांज व्यासजिये कह्युं
छे जे ।।अहंवेति शुकोवेति संजयोवेति वानवा ।।भक्त्या भागवतं मशास्त्रं ।।नबुध्या ननचटिकया ।। मांटे शास्त्रनामर्मने
नजाणताएवानेपंचविषयनीवासनायेकरिने दग्धथईगयांछे ।। अंतःकर्णजेनांएवा अनेदेहाभिमानीने मिथ्यामा-
ननाधरावावालाएवाजे अज्ञानीमनुष्य तेनेतो प्रत्यक्ष भगवाननुंस्वरूपकोईकाले ओलख्यातुं नथि ।। अनेपूर्वे पण

जेने जेने प्रत्यक्ष भगवान ओलखाया छे ॥ तेपण गोपि गोवालादिके निरमानिपणे आसरो कर्यो छे तेने ज ओलखाया छे ।।पण मानि एवा जे रुषि ।। तथा मानि एवा जे राजा तेणे प्रगट भगवानने ओलख्या नथि ।।माटे मनुष्याकृति भगवान धारण करे छे ।।त्यारे मनुष्यना जे विजचेष्टा करे छे ।।पछे जे जिव निरमानि थईने ते प्रत्यक्ष भगवानने शरणे आवे छे तेने भगवान ज्ञान आपिने तेने निवारण द्रष्टि कराविने पोतानो अलोकिक प्रताप तेने ज्ञाने करिने देखाडे छे त्यारे ते जिवने मनुष्य मुर्ति भगवान तेने विषे सर्वोपरि पुरुषोत्तमपणानो निश्चय थाय छे पछे तेना आत्माने विषे प्रकाश थाय छे त्यारे ते भक्त प्रत्यक्ष एवा जे मनुष्याकृति भगवान तेनो अपरमित महिमाने ।। अनंत ऐश्वर्य तेने देखे छे अने ते भक्तने मायानुं आवरण टलि जाय छे।।अने जेने निश्चय थयो नथि ते तो भगवानने बिजा मनुष्य जेवा ज देखे छे ।।पण तेने कोई दहाडे दिव्यभाव देखातो नथि ।।माटे प्रत्यक्ष भगवाननुं स्वरूप ज्ञाने करिने ओलखाय छे।।पण बिजि कोई रिते प्रत्यक्ष भगवान ओलखाता नथि।।ते सारुं जेने पोताना जिवनुं कल्याण इछवुं होय तेने तो निरमानि थईने जेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय होय तेनो विश्वास राखिने तेनो समागम करवो ।। तो तेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय ने तेनुं कल्याण थाय ।।पण ते विना मानि थईने भगवानना निश्चयवाला जे भगवानना भक्त तेनी साथे पितराई दावो राखे तेने कोई दहाडे निश्चय थाय नहिं अने तेनुं कल्याण पण थाय नहिं ।।केमके भगवान सत्पुरुष छे ।।ते तो स्वतंत्रपणे वरते छे पण तेने माथे कोईनी आज्ञा नथि ।।माटे जे अज्ञानि होय तेने प्रत्यक्ष भगवाननि क्रियाने विषे दोष भासे छे।।तेणे करिने तेनुं कल्याण थाय नहिं ।।ते सारु सत्संग करिने ज्ञाने करिने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय करवो ए ज सर्वे जिवनी हितवारता छे ॥

॥इति श्रीमुख सिद्धांत समाप्त:॥

॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नम ॥

॥संवत् १९ ओगणिसे १९ ओगणिशना आसो शुदि ।।८।। अष्टमिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीपीपलि मध्ये भक्त विराजि विमाने घेर उगमणा बारना ओरडा निओसरिमां गादितकिये जुक्त हो।।त्या

उपरविराजमान थयाहता ।। नेसर्वेजरियानिवस्त्रधारणकस्यांहतां ।। नेपुष्पनांआभूषणसर्वेअंगमांशोभिरह्यांहतां ।। ने
कुमकुमनोचांदलोकस्योहतो ।। नेपोतानामुखार्विंदनीआगल्साधुतथाघणाकहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठिहति ।। प
छेमहाराजनीआर्तिधून्यकरिनेसर्वेहरिजनबेठा ।। पछेमहाराजकृपादृष्टिकरिनेबोल्याजेपंचविषयनुबंधनजिवनेछे
पणतेमां कियो विषय जिवनेटालवोअतिकठणछे ।। एप्रश्नसाधुनेपुछियेछियेतेकहो पछेधर्मानंदस्वामियेकह्यु
जेसर्वेविषयकरतांआबरुनुंबंधनटालवुंतेजिवनेकठणछे पछेमहाराजबोल्याजेएउत्तरखरोछे ।। केमकेबिजाबि
षयछेतेतोनिरबिजसांख्यनेनिरबिजयोगेकरिनेटलेछे पणआबरुटलवीघणीकठणछे ।। अनेतेलौकिकआबरु
तोक्यारेटले तोप्रत्यक्षभगवाननास्वरूपनोउत्तमनिर्विकल्पनिश्चयथाय ।। त्यारेजतेनेलोकनीआबरुदृष्टि
मानथिआवति ।। अनेनिश्चयमांजेनेलगारेपणकसरहोय त्यांसुधिलोकनीआबरुतथामतपंथनीजेआबरु
तेनथिटलती ।। तेपूर्वेपणमोटामोटानेलोकनिआबरुमुकविकठणपडिछे ।। तेकृष्णावतारमांभिस्मपितामहा
त्मानिहता ।। तोपणलौकनीलाजेनेआबरुयेकरिनेकौरवनापक्षमांरह्या ।। नेश्रीकृष्णसाथेयुद्धकर्युं अनेश्रीकृष्णने
भगवानजाणताहता ।। पणउत्तमनिर्विकल्पनिश्चयनहोतोतेणेकरिनेआबरुमुकाणीनहिं ।। अनेशंकराचार्यना
शिष्यहतातेरामानुजनेसत्पुरुषजाणताहता ।। तोपणमतपंथनिलाजेकरिनेतेनोद्रोहकर्यो ।। अनेवेष्णवाल
केटलाकसेहेजानंदस्वामिनेएमजाणताजेमोटापुरुषतोछे ।। तोपणकेटलाकलाजेकरिनेतेणेतेनोद्रोहक
र्यो ।। अनेआजपणकेटलाकसहजानंदस्वामिनाशिष्यछे तेअमनेएमजाणेछेजेभगवानछेनेकल्याणकरए
वाछे ।। तोपणमतपंथनिलाजतथाआबरुतेणेकरिनेबंधाईरह्याछे ।। अनेतेछानुंछानुंअमारुभजनकरेछे ।।
नेकल्याणअमथकीईछेछे ।। तोपणआबरुरूपिआवरणेकरिनेअमारिपासेआवातुंनथि ।। माटेकामलोभस्वाद-
स्नेहमाननेआबरुंतेजिवनेमुकवांअतिकठणछेतेमांप्रथमकामनुंजिवनेआवर्णछेतेकामनोत्यागकरेतोपणतेने

लोभमुकवो कठण छे ॥ केमके केटलाक लोभसारु घरने स्त्रिनो त्याग करिने परदेशमां कमावा जाय छे ॥ अने लोभक-
रतां स्वादनुं बंधन कठण छे ॥ केमके कामलोभनो त्याग करिने त्यागि थया होय तोपण तेणे स्वाद मुकातो नथि ॥ ते केट
लाक भेखधारि छे ते स्त्रि द्रव्यथि छेटे रहे छे ॥ पण ते स्वादसारु हेरान थाय छे ॥ अने लोभकामने स्वाद करतां पण स्ने
हनुं बंधन भारे छे ॥ केमके लोभे करिने परदेशमां जाय ने त्यां कोईक निचाकरि करिने हेरान थईने रुपैया कमाईने
स्नेह करिने ते रुपैया स्त्रिछोकराने सारुं घेर मोकले छे ॥ अने स्नेह करतां माननुं आवर्ण घणुं बलवान छे ॥ अने मानकर-
तां जे लोकनी आबरु छे ते तो जिवने अतिशे दुःखनी देनारि छे ते पोताना अंतरमां जाणतां होय जे आपणा मतमां तो हवे धर्म
नथि ॥ ने पंचविषयनी वासना पण दिवसे दिवसे वधति जाय छे माटे आपणा आत्मानुं कल्याण नहिं थाय ॥ अने कल्याण-
तो मायापरएवा जे प्रत्यक्ष भगवान ने तेना एकांतिक पंचविषयना त्यागि संत ॥ तेना संग थकि थाय एम जाणे ॥ तोपण
आबरुने बंधने करिने समागम करवा आवातुं नथि ॥ अने ग्रहस्थ हरिभक्त छे ॥ तेने कामलोभस्वादमान मुकावियेतो ते
ने कांई कठण पडे नहिं ॥ पण तेने एम कहियेजे लुगडां भगवां करिने साधु भेगा रहो ॥ तो जेने उत्तम निर्विकल्प निश्चय
मां कसर होय ॥ तेने कठण पडे ॥ अने जेने उत्तम निर्विकल्प निश्चय होय ॥ ते तो अतिशे राजि थईने जेम कहिये तेम करे ॥
ने एम समजे जे मारा उपर कृपा करिने मुने मायाना फंद थकि मुकाव्यो माटे प्रत्यक्ष भगवानना महात्म्ये सहित उत्तम निर्वि
कल्प निश्चय थाय त्यारे जे लोकनी आबरुरुपि महावज्रपास लोतेटले ॥ पण ते विना बिजा कोटि साधन करे तोपण ते-
आबरुरुपि पास तोटले नहिं ॥ ते सारु संतनो समागम करिने उत्तम निर्विकल्प निश्चय करवो ॥ ॥
इतिश्रीमुखसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥ संवत् १९ ओगणि
शो १९ ओगणिशोना आसो शुदि ९ नवमिने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्रीपिपलिमध्ये भक्त विराजि
रविमाने घेर उगमणे बारओरडानी ओसरिमां होलिया उपर विराजमान थया हता ॥ ने स्वेत सुरवालने रेसमि डगलि

धारण कर्यां हतां ॥ ने मस्तक उपर मलमलनो सोनेरि कोर छेडानो फेंटो बांध्यो हतो अने गुढो रेंटो ने कसुंबल से लुं केडे
धारण कर्यां हतां ॥ अने पुष्पना हार तोराने गुच्छ धारण कर्या हता ॥ ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंद-
नी आगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे महाराजनी आर्ति धून्य थया केडे महाराज बो-
ल्याजे सर्वे सांभलो एक वात करवि छे ॥ अने आ वात करीशुं ते छे तो थोडिक पण ते मां चमत्कार घणो छे ॥ ने ते वात
समजाय तो अनंत रमां अपार सुख थाय ते वात कहिये छीये जे एक एक जिवने विषे कोटान कोटि ब्रह्मांडनी समृद्धि भ
रि छे ॥ जेम एक वडना एक बिजमां अनंत कोटि वड रह्या छे ॥ ते एक बिजने वावीये ने तेनो मोटो वड थाय ने ते वडने पण
थाय ने ते मांथि घणाक अपार बिज थाय ॥ ने ते बिजमांथि वडनो पार रहे नहि ॥ तेम एक एक जिवने विषे जे कारणमा
यारूप बिज छे ॥ ते थकि अनंत कोटि ब्रह्मांड उपजे छे ॥ जेम चिंतामणि ने पृथ्वि मां उंडि डाटि होय ने ते उपर पारसमणि
योना खिने ते उपर हिरा मोतिनि पूरणि पुरि होय ॥ ने ते उपर सोना मोरोनो भरावो देईने ते उपर रूपैयानी पूरणी पुरि
होय ने ते उपर त्रांबानो भरावो देईने ते उपर लोढानी पाटो ना खिने ते उपर धूळ वाळि होय पछे ते चिंतामणि ने काढवि
होय ॥ त्यारे प्रथम धूळ निसरे ॥ ते धूळ ने काढिना खे त्यारे लोढुं नीसरे ॥ ने ते लोढाने काढिना खे त्यारे त्रांबु निसरे ॥ ने त्रां
बाने काढिना खे त्यारे रूपैया निसरे ॥ ने रूपैयाने काढिना खे त्यारे सोना मोहोरो निसरे ने सोना मोरोने काढिना खे
त्यारे मोति हिरा निसरे ॥ ने ते मोति हीराने काढिना खे त्यारे पारसमणियो निसरे ॥ ने ते पारसमणियोने काढिना खे
त्यारे चिंतामणि हाथ मां आवे ॥ पण ते विना वगर दाखडे चिंतामणि पृथ्वि मां होय पण हाथ आवे नहि ॥ तेम जिवने वि
षे चिंतामणिरूप परमात्मा भगवान रह्या छे ॥ पण जिवनि उपर हिरा मोति सोना रूपा त्रांबा लोढादिक रूप मायाना पडल
ह्यां छे ॥ ते मायानो त्याग करे त्यारे जिव परमात्माने साक्षात्कार पामे ने महासुखियो थाय ते मां जिवने पहेलुं मायानु
पडु आ लोकना सुख छे ॥ ते सुख धूळने ठेकाणे छे माटे आ लोकना सुखनो जिव त्याग करे त्यारे जिवने देवलो

कनांसुखप्राप्तथायछे॥तेदेवलोकनांसुखलोटानेठेकाणेछेनेतेदेवलोकनांसुखनिवासनानोजिवत्याग
करेत्यारेतेनेब्रह्मनालोकनासुखनिप्राप्तीथाय॥तेब्रह्मनालोकनांसुखत्रांबानेठेकाणेछे॥अनेसत्संगकरि
नेजिवजेतेब्रह्मानालोकनासुखनिवासनानोत्यागकरे॥त्यारेतेनेवैराजनासुखनिप्राप्तिथाय॥अनेतेसुखरू
पैयानेठेकाणेछे॥नेतेवैराजपुरूषनासुखनोसमजिनेत्यागकरेत्यारेतेथकिकोटिगणाजिवनेप्रधानपुरूषनालो
कनासुखनिप्राप्तिथायछे॥नेतेसुखसोनामहोरनेठेकाणेछे॥अनेतेसुखनिवासनानोत्यागकरे॥कहेतांम
नमांथिपंचविषयनिवासनानोजिवत्यागकरेत्यारेतेनेतेथकिअनंतकोटिगणाप्रकृतिपुरूषनासुखनिप्राप्ति
थायछे॥नेतेसुखहिरामोतिनेठेकाणेछे॥अनेतेसुखनिवासनानोत्यागकरे॥कहेतांसांख्यविचारेकरि
नेपिंडब्रह्मांडादिकमाईकआकारमात्रनुंनिराकर्णपणुंकरिनेबुद्धिमांथिपंचविषयनीवासनानोत्यागकरे॥
त्यारेतेनेअक्षरब्रह्मनुंसुखप्राप्तथायकहेतांपोतेजिवजेतेब्रह्मरूपथाय।नेतेसुखपारसमणिनेठेकाणेछे
अनेतेकेवलब्रह्ममांत्रप्तिनपामे॥त्यारेतेनेआत्मानाआत्माएवाजेपरमात्माप्रत्यक्षभगवानतेनासुखनी
प्राप्तिथायछे॥नेतेसुखसर्वोपरिचिंतामणिनेठेकाणेछे॥तेजेमबिजासर्वेद्रव्यनुंप्रमाणथाय॥पणपारसमणिनुंप्रमा
णथायनहि॥अनेअमूल्यएविजेपारसमणियोतेएकचिंतामणीमांअनेतलिनथईजाय॥तेमपूर्वेकह्यांजेमनुष्यदेव
ब्रह्मानेप्रकृतिपुरूषसुधिसर्वलोकनांसुखतेसर्वेनुंप्रमाणथाय॥पणअक्षरब्रह्मनासुखनुंप्रमाणथायनहि॥अने
तेअक्षरनुंसुखपणपरमात्मापरब्रह्मपुरूषोत्तमनासुखनालेशमांलीनथईजायएवाजेपरब्रह्मपुरूषोत्तमभग-
वान॥तेनासुखनेक्यारेपमायतोपूर्वेकह्यांजेसर्वेराजादेवब्रह्मानेप्रकृतिपुरूषसुधिनांसुखतेनिवासनानो
त्यागकरे॥त्यारेभगवाननासुखनेजिवपामे॥पणतेविनाभगवाननासुखनेपमायनहि॥जेमखांणमांचिंता
मणिहोयतेनेकाढविहोयत्यारे॥तेउपरदाबाजेधूळलोढुंत्रांबादिकसर्वेनेकाढिनाखेत्यारेचिंतामणिमळे॥

तेमचिंतामणिरुपआत्मानेविषेपरमात्मारह्या छे ॥ तेनेक्यारेपमायतो ॥ आत्मानिउपरदाबारुपजेकामलोभ-
स्वाद स्नेह ने मान ॥ तथाशब्दस्पर्शरुपरसनेगंध तेनो त्यागकरे त्यारेपरमात्मानेपमाय ॥ अनेत्यागकस्याविना
तोकोईसुखनेपमातुंनथि ॥ जेम खेडु छे तेजो घरमांथिएक गांगडिदाणा खेतरमांवाविआवे छे ॥ तो तेमांथिगा-
डांभरिआवे ॥ नेएक गांगडिमांथि हजार गांगडियो मले ॥ अनेजो एक गांगडिदाणानो लोभकरे ॥ कहे तुं वावेनहिं
तो ते गांगडिदाणापांच दहाडापुगे नेपछे भूखेमरे ॥ तेमजेजे विषयनो त्यागकरतोजाय छे तेमतेम जिवजेतेउरधग
तिनेपामतोजायछे ॥ कहेतां मोटप्यनेपामे छे ॥ तेजेटलो जिव विषयनो त्यागकरे छे ॥ तेथि कोटिगणि मोटप्यपा-
मे छे ॥ अनेजेकामादिकदोषतथाशब्दादिकविषय तेनो त्यागकरिने आत्मारुपथाय छे त्यारे तेने आत्माने विषेर
ह्याएवाजेपरमात्मा ते प्रगटथईने साक्षात्कार प्राप्तथाय नेते अविनाशिसुखनेपामे ॥ अनेजे जे विषयनो त्यागनथि
करता ॥ तेदिवसेदिवसे निचिनिचिगतिनेपामताजायछे ने ते जिव महाकष्टनेपामेछे माटे विषयनोत्यागकरवो ॥
एजजिवनेसुखथवानोउपायछे अने विषयनुंग्रहण करवुं एज जिवने दुःखथवानोउपाय छे ॥ अनेसर्वे विषयनो त्या-
गकरवो ते अतिसुख थवानोउपाय छे नेसर्व विषयनुग्रहण करवुं ते अतिदुःखथवानोउपायछे माटे पिंड ब्रह्मांडादि
क सर्वे विषयनासुखनोत्यागकरवो ॥ एज सर्वजिवनि हितवारता छे पण सर्वनोएकसामटोत्यागकरवो तेजिवनेब
हुकठणपडे छे ॥ ते सारुं महात्मापुरुष छे ते जे तेजिवने सुखनो लोभ देखाडिने धिरेधिरे त्यागकरावे छे ते सारुं वे-
दमां कह्युं छ ॥ जे आवां कर्म करे त्यारे तेने आवुं सुखमले ॥ अनेएक घणुं दान करे तो तेने हजार घणुं फल मले ॥ अ
नेजेयत्न करे ते देवलोकमां जाय ॥ अनेतिर्थमांजईने सुपात्रेदान करे ब्रह्मभोजन करे ॥ अथवा कोई परवणि
नो दिवसहोय नेतदिवस सुपात्रजोई नेदान्यपुण्यके ब्रह्मभोजनकरे ॥ तो तेनेबहुजफल थायने तेने बिजे अवता
रेआजना करतां घणुं क सुखमले ॥ पछे जिवजेते सुखनो तो लोभियो छे ॥ माटे ते लोभे करिने दानपुण्यव्रत

तपतिरथयत्नकरे॥पछेएमकरतां करतां त्यागकरवानो देवायो थायछे॥पछे जे सकामि जिवछे ते धर्म अर्थ काम ने पांमेछे
॥अने जे निष्काम भक्त छे॥ते जे ते मोक्षने पांमे छे॥ तेमां ज्यां सुधि जिवने सकामपणुं होय त्यां सुधि जे जे सुख प्राप्त
थायछे॥ते सुख दुःखे युक्त प्राप्तथायछे॥केमके दान्य पुन्य करिने भोगववानी इच्छा रहे छे॥त्यां सुधि जन्ममरण टलतुं नथि॥अने जे जे सुखमले छे॥ते सुख देहे करीने भोगवायछे ते देह रहे त्यां सुधि ते सुख भोगवे॥ने देहना-
सपामे त्यारे॥जे जे देहसंबंधि सुखहोयते सर्वे नासपामिजायछे अने जे निष्काम भक्त छे ते तो जे जे दान पुन्या-
दिक करे छे पण तेना फलने नथि इछता तो ते भक्त जे ते अविनासि एवुं जे भगवाननुं धाम तेने पामे छे॥माटे जेने
महासुखियाथवुं होय तेने तो पोतानुं जे सर्व तनमन धन तेनो त्याग करि देवो अने जे माईक सुख छे ते तो भगवा
नना धाम आगल नर्क जेवुं छे॥माटे नर्क तो त्याग करवा योग्य छे॥पण ज्यां स धि जिवने अज्ञान छे त्यां सुधि
तेमां मालमान्यो छे॥जेम बालक होय ते नरकने सुखरूप जाणि ने तेने चुंथे छे॥अने ते नां मा पितर ते नर्कने मु
कावे छे॥त्यारे ते बालक रूवे छे तेने घुघरादिक बिजुं पदार्थ आपिने नर्कनो त्याग करावे छे नेज्यारे पोते मोटो नेसम
जु थाय त्यारे तो ते नर्कने तो अडे ज नहिं ने देखिने ग्लानि पांमे॥अनेते तो घुघरादिक रमकडां ते नो पण त्याग करे
॥तेम बालक जेवा जे अज्ञानि जिव तेनर्क रूप जे आलोकना पंचविषयनां सुख तेने भोगवेछे॥अने तेने सत्पुरुष
त्याग करावे छे॥तो ते अज्ञानि जिवने मा धुंवा ल्या जेवुं लागे छे॥पछे तेने घुघरा रूप देवादिकना सुखनो लाभ दे-
खाडिने॥आलोकना सुखनो त्याग करावे छे॥अने पछे तेने आत्मा परमात्मा स्वरूपनुं ज्ञान कराविने देवादिकना
सुखना चार प्रकारना प्रलये करिने नासवंत देखाडिने ते नि वासनानो त्याग करावे छे॥ने जिवने ब्रह्मरूप करिने
अक्षर धामने पमाडे छे॥ त्यारे जिव महासुखियो थायछे॥माटे जेने महासुखि थवुं होय तेने तो जरूर संसा-
रना सुखनो त्याग करवो॥ ॥इतिश्री सुख सिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमो

नमः॥ ॥संवत १९ओगणिशें१९ओगणिश्शीना आसोवदि १ पडवाने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भग-
गवान गामश्रीपिपलिमध्ये ॥ भक्तविराजि रविमानेषे रउगमणा बारना ओरडानि ओसरिमां गादितकिये युक्त ढोलि
याउपर बिराजमान थयाहता नेसर्वे सोनेरिकसंबलव स्त्रधारण कर्याहता अनेपुष्पनां आभूषण सर्वेअंगमांओ-
भिरह्यां हतां नेललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्योहतो नेपोताना मुखार्विंदनी आगल संत मंडल तथाघणा
कहरिभक्तनीसभा भराईने बेठाहता पछे महाराज बोल्याजे आलोकमां एकसत्य मारग छे नेएक असत्यमार
ग छे तेमां सत्यमार्गना प्रवर्तावनारा सत्पुरुषछे नेअसत्य मार्गना प्रवर्तावनारा असत्यपुरुषछे तेमां जोजिवने
असत्पुरुषनो संगथई जायतो काम लोभ स्वाद स्नेह मानमां ॥ तथादारु मांसरिगांजातमाकु अफिणादिक अध-
र्मने विषेजोडाविने भ्रष्टकरेछे नेते जिव नर्कमांजायछे ॥ अनेजो जियने सत्पुरुषनो संगथई जायतो धर्मज्ञानवैरा
ग्यशिल संतोषादिक जेरुडागुण तेवृद्धिपामे नेतेजिव महापवित्रथईने भगवानना धामने पामे अनेते सतपुरुषना
अवतार पण बेप्रकारना थायछे ॥ तेमां एकतो कारणअवतार थायछे ॥ नेएक कार्यअवतार थायछे ॥ जेमकोईक
मोटो साहुकार होय तेनाबकिलपरदेशमां मालजेईनेजाय ॥ त्यारेत्यांना मनुष्य एमकहे जे शेठआव्या छे ॥ प
णतेपहेशेठनथि ॥ नेएतोसेठनुं कार्यस्वरूप कहेतां आज्ञाकितछे ॥ माटेते शेठपण कहेवाय ॥ अनेते बकिल
मां पणघणा भेदछे ॥ तेकोईक बकिलबे रुपैयाना महिनावालो होय नेकोईक पांचरुपैयाना महिनावालो
होय ॥ नेकोईक विसरुपैयाना महिनावालो होय ॥ नेकोईक सो रुपैयाना महिनावालो होय ॥ तेमांजेवुंज्यां का-
म होय तेने तेवा काममां मेरे छे ॥ विसरुपैयानो मालबहोरवो केवेचवो होय के विसरुपैयानी उघराणि होय ॥ तो
ते काममां बेरुपैयावालाने मोकले ॥ नेसोरुपैयानुं काम होय ॥ तोत्यां पांचरुपैयावाला बकिलने मोकले ॥
ने हजार रुपियानुं काम होय त्यां विसरुपियावालाने मोकले ॥ नेलाख रुपैयानुं काम होय त्यां सोरुपि-

याबालावकिलनेमोकले ॥ अनेकोडनुंकामपडेत्यारेतोपोतेपंडेशेठजाय ॥ अनेजेसर्वेवकिलछेतेतोशेठजे-
नेजेटलिआज्ञाकरिहोयतेटलुंतेकामकरे ॥ पणतेथिवधारेकामथायनहिं ॥ अनेजेपंडेशेठहोयतेतोपोतानि
इछामांआवेतेमकरे ॥ तेमएनोदृष्टांत ॥ नेतेनुंसिद्धांतएछेजेसेठनेठेकाणेतोसर्वकारणरूपएवाजेपरमात्मापुरु
षोतम भगवानते छे ॥ अनेतेनावकिलनेठेकाणेदेवब्रह्मानेप्रकृतिपुरुषसधितेछे ॥ तेमांबेरूपीयानावकिलने
ठेकाणेतोब्रह्माविश्नुनेशिवछे ॥ नेपांचरुपियावालानेठेकाणेतोवैराजपुरुषछे ॥ अनेविसरूपीयावालावकिल
नेठेकाणेप्रधानपुरुषछे ॥ अनेसोरुपियावालानेठेकाणेमूलप्रकृतिपुरुषछे ॥ नेजेमशेठनोदिकरोहोयतेनेठेका-
णे तो भगवाननाएकांतिकसंतअक्षररूपमुक्ततेछे अनेजेमशेठनेलईनेसर्वेवकिलशेठकहेवायपणशेठकोईन
थि ॥ नेशेठतो एकजछे ॥ तेम भगवान पुरुषोत्तमनेलईने ॥ सर्वेभगवानकहेवाय ॥ पणभगवानबिजोकोईनथि
॥ ने भगवान तोएकज छे ॥ अनेबिजासर्वेतोए भगवाननाभक्तछे ॥ अनेतेने तोभगवानेजेटलि आज्ञाकरिहोय
तेटलुंकामतेथकिथायपणवधारेथायनहिं अनेसर्वेकारणरूपएवाजे भगवानतेतोचहायतेमकरवानेसमरथछे जेम
कोईकनेमाथे ॥ साहुकारनुंलाखरुपियानुंदेवुंहोयनेतेनेवाल्लिनाखवुंहोय ॥ तो बिजाकोईवकिलथिवले-
नहि ॥ अनेपंडेशाहुकारवालेतो ततकाल तेनेमां थिदेवुंवलिजाय ॥ तेमजिवनेजन्ममरणरूपिकरजछे
तेने वाल्लवुं कहेतां जन्ममरण टालवुंहोयनेजिवनेआत्यंतिकमोक्षआपवोहोय ॥ तेतोपरमात्माएवाजेसर्वे-
कारणरुप प्रत्यक्ष भगवानने भगवाननासंततेथकिजआपायछे ॥ पणबिजाकोईथे जिवनेआत्यंतिकमोक्ष
आपायनहिं ॥ अनेभगवानने संतविना बिजा तोजे जिवने जेवाजेवामले तेटले तेने पुगाडे ॥ अनेजेनेजेमलेते
पोतानेविषेजोडावीनेपोतपोतानालोकमां लेईजाय ॥ अनेजेजिवजेमांजोडायछे त्यातेजिवनोनिवासथा
यछे ॥ जेमभरथजि मृगलीनाबचामांजोडाणा तोपोतेमृगलुथया ॥ तेमजोब्रह्मायेअवतारधर्योहोयनेतेमां

जे जिवजोडाय॥ तो ते जिव ब्रह्मानालोकनेपामे ॥एविरिते बैराजमहतत्वप्रधानपुरुषनेप्रकृतिपुरुषसुधिनोजेनो
अवतारथयोहोयनेतेमां जिवजोडाय तो तेना तेना लोकने जिवपामे ॥अनेसर्वकारणएवाजेपरमात्माभगवानते
णीपृथ्विउपरमनुष्याकृतिनुंधारणकर्युंहोय॥ नेतेमां जिव जेजेजोडाय अथवा भगवानना निरवासनिकसंतमांजो
डाय॥ तोते जिव मायापर एवुंजेअक्षरधाम तेने पामे ॥मारे बिजा सर्व मां थि प्रितितोडिने एक भगवानने भगवा-
नना संतमांजोडावुं ॥अनेजे भगवानने संतमांजोडायछे ॥ने ते कांई न समजतोहोय तोपण ते जिव अक्षरधामने
पांमे ॥जेमगोपिगोवाल कांई समजतां नहोतां ॥ने कांई भणेलां पणनहोतां ॥तोपण जो सर्वकारणएवाजेश्रीकृ
ष्णभगवान तेमांजोडाणां॥ तो तेतेना धामने पाम्यां ॥अनेवांदरां रामचंद्रजिने विषे जोडाणां तो तेपणतेना धाम-
नेपाम्यां ॥अनेरुषिपत्नियोजो श्रीकृष्णमां जोडाणि तोतेपण भगवानना धामनेपामियो ॥नेरुषिघणा भणेलाने
डाह्याहता ॥पणजो श्रीकृष्णमां नजोडाणा तो तेदुरभागि कहेवाया ॥ मारे प्रगट भगवानने भगवानना संतनास्व-
रूपमां मनकर्मवचने जोडावुं ॥ एजकल्याणनुंमुख्यअचलसाधन छे ॥मारे जे ते प्रकारे भगवानने संतमांजोडावुं
॥अनेते भगवानने संतमां क्यारे जोडावायछे॥ तो भगवानने भगवानना संतपंचविषयनात्यागि तेनोदेहे करिने
अखंड संबंधराखे तो ते थकि भगवानने संतमां जोडावायछे ॥ केमके अखंडसंबंधेकरिने जिवने॥ भगवानने भग
वानना संतने विषेप्रिति थायछे नेप्रितियेकरिने भगवानने संतमां सेहेजे जिवनेजोडाई जवाय छे॥जेमसंसा
रमां जिवमात्र जोडायाछे ॥ ते संसारने नित्यअखंडसंबंधेकरिने जोडायां छे ॥तेमजो भगवानने भगवाननासं
तनो जिव अखंडसंबंधराखेतो जिवजरुर भगवानने संतने विषेजोडायछेने ते जिवनीमुक्ति थाय छे ॥ अनेज्यारेजि
व भगवानने भगवाननासंतना स्वरूपमांजोडायछे त्यारे तेनेपंचविषयनिवासनारलिजायछे अनेतेने संसा-
रना सुखमात्रने विषे अरुचि थई जाय छे॥ केमके भगवानने संतना जेवो कोईनो शब्द नथि ॥अनेभगवानना-

जेवोकोईनोस्पर्शनथि ॥ अने भगवाननाजेवुंकोईनुंरूपनथि ॥ ने भगवाननाजेवोकोईनोरसनथि ॥ ने भगवानना
जेवोकोईनोगंधनथि ॥ अने भगवानविना बिजांजे मायिक पंचविषयनांसुख छे तेतोप्रथकप्रथक छे ॥ नेनाशवंतछे
ने अनंत दुःखेयुक्तछे ॥ अने ते मायिक सुखनिकेडे अपार दुःख रह्यांछे नेते संसारना सुखभोगव्यापछि पणस्व
प्रवत थईजायछे ॥ कहेतां भोगव्यापछि बिजोदिवस थायत्यारेजाणेजे कोई दिवस सुखभोगव्युंजनथि ॥ अने भ
गवाननुं सुख छे तेतो अखंडपूरण ने अविनाशि छे ॥ अने भगवानना एकशब्दमां ॥ पंचे विषयनुं भेगुं सुख आवे
छे ॥ ने जिवपूरणकाम थईजाय छे ॥ ने फरिने कोई मायिकविषयसुखपामवानि इछा रहेति नथि ॥ वेगोपियोए
भगवानने कह्यु छे जे हे महाराजजे दिवसथी तमाराचरणारविंदनोस्पर्श थयो छे ते दिवसथी संसारनांसुख अ
मने खारां झेर जेवां थई गयां छे तेमजे जे जिव प्रत्यक्ष भगवानने संतने विषे जोडाय छे तेने मायानुं कार्य सर्वे तुछ
थईजाय छे ॥ अने ते दिव्यएविजे भागवतितनुं तेने पामे छे अने ते भक्त देहने मुकिने भगवानना अक्षर धामने पा
मे छे ॥ अने देहमां छे तोपण जे भक्त प्रगट भगवानने भगवानना संतनास्वरूपमां मनक्रमवचने जोडाणा छे तेतो
स्त्रि अथवा पुरुष ते सर्वे भगवानना धाममांज छे ॥ ॥ इति श्रीमुख सिद्धांत समाप्तः ॥ ॥
॥ ॥ श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ॥ ॥ संवत १९ ओगणिशो १९ ओगणिशाना आशो
वदि ३ त्रिजने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पिपलिमध्ये भक्त का ना खिमानेघेरउगमणे बारणे
ओरडानि ओसरिमां ढोलियाउपर गादितकिया बिछाविने विराजमानथयाहता ॥ ने स्वेत सेसने अंगरखुं धारण कर्‍युं
हतुं ॥ ने मस्तक उपर गुलाबि रंगनो फेंटो बांध्योहतो ॥ ने धोलि चादर ने चकमो भेगां करिने ओढ्यांहतां ने पोताना
मुखारविंदनि आगल साधु तथा घणा क हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हति ॥ पछे महाराज बोल्या जे आ जतो
तमे हरिभक्तमांहोमांहे प्रश्न उत्तर करो ॥ पछे ठाकोर करशनसींग ॥ शाकाला भक्त ने प्रश्न पुछ्युं जे एकतो

भगवाननास्वरूपनो निश्चय केम थाय।।अने बिजुं भगवानना मारग थकि कोई दिवस पाछुं पडाय नहि ते कहो।। पछे कालो भक्त घडिएक विचारि रह्या ने पछे कह्युं जे भगवानना स्वरूपनो नीश्चय तो बुद्धियें करिने थाय छे ते जेने बुद्धि होय ते मगर भगवानने संतना मुख थकि वात सांभलिने एम निश्चय करे जे आवुं मायापर ज्ञान कोई पासे नथि अने ते ज्ञान सांभलिने पोताने पंच विषयनिया सनाओ छे घति जाय ने पोताना अंतरमां दिवसे दिवसे शान्ति थति जाय।। त्यारे एम जाणिये जे भगवान छे।। केमके भगवान बिना बिजा कोई ने ज्ञाने करिने वासना टलेनहिं।। ने अंतरमां शान्तिपण थाय नहि।। माटे एम बुद्धिये करिने निश्चय थाय छे।। अने भगवानना मारग थकि केम पडाय नहि।। तो शास्त्रे करिने भगवानने जाण्या होय जे।। ते भगवान गमे तेवां चरित्र करे ने गमे तेवुं आचरण करे ने प्रगट भगवान समरथपणे वरते।। अथवा अ समरथपणे वरते तो पण तेने जोईने भगवानना मारग थकि पडे नहि।। केमके सर्व चरित्र भगवानना शास्त्रमां लख्यां छे।। माटे शास्त्रे करिने भगवानने जेणे जाण्या होय ते भगवानना मारग थकि कोई रिते पडे नहिं एम जणाय छे।। पछे करसान सिंगजियें कह्यं जे उत्तर तो यथार्थ खरो पण थोडोक फेर रह्यो छे।। अने आ रीते समजे तो भगवाननो निश्चय थाय।। ने भगवानना मारग थी पडाय नहिं जे एक तो धर्ममां दृढ रहेवुं।। ने पोताने आत्मारूप मानवुं।। ने वैराग पण दृढ राखवो ने देह ने देहना संबंधिमां प्रिति राखविनहि।। अने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना साधुमां अतिशे प्रिति राखवि।। अने भगवाननो महीमा बहु समजवो ने भगवाननि आज्ञा कोई दिवस लेशमात्र लोपवि नहि।। एटला गुण जे मां होय तो तेने भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय।। ने ते भगवानना मारग थकि पडे नहि पछे महाराज बोल्या जे बे जणाना उत्तर तो ठिक उपर छे पण हवे अमे तेना उत्तर करिये ते सांभलो।। जे भगवानना स्वरूपनो निश्चय तो भगवान थकी ज थाय छे जेम हिरो तो हिरे करिने ज विंधाय छे।। ने मणिये करिने मणि वींधाय छे।। तेम भगवानना स्वरूपनो निश्चय भगवानथकी ज थाय छे।।

केमके प्रगट भगवान होय त्यारे जनिश्चय थाय छे॥ पण प्रगट नहोय त्यारे कोनो निश्चय करवो ॥जेमके रिनो स्वाद
लेवो होय॥ त्यारे केरि होय तो केरिनो स्वाद लेवाय ॥पणते विना केरिनो स्वाद आवे नहिं तेम प्रगट भगवान पृथ्विउपर
होय त्यारे तेना स्वरुपनो निश्चय थाय छे ॥ तथा ते प्रगट भगवानना निश्चयवाला एवा जे भगवानना एकांतिक सा-
धु तेने समागमे करिने पण भगवाननो निश्चय थाय छे ॥ ते पूर्वे पण गोपि गोवाल वांदरादिके जेने जेने प्रगट भगवान्
मल्या छे तेने ज निश्चय थाय छे माटे भगवान थकिज भगवाननो निश्चय थाय छे अने भगवानना मारग थकि पडाय
नहि तेनो एज उपाय छे ॥ जे भगवाननां नानां मोटां वचन तेने कोई दिवस लोपे नहि ने निरंतर भगवानना वचनउ
पर खटक रहे ॥ अने लेश मात्र वचन लोपाय तो अंतरमां अतिशे परिताप थाय ने तेनु ततकाल प्रायश्चित करे त्या
रे निरांत थाय एवुं जेने वर्ततुं होय ते भगवानना मारगथी कोई दिवस पडे नहिं॥ ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे। पछे गा
मथी धोलकाना जोशी देवशंकरे महाराजने प्रश्न पुछ्युं।जे मनमां एक एवो संकल्प थाय जे पाप करिये॥ ने वलि बि-
जो एवो संकल्प थाय जे पाप तो न करवुं ने परमेश्वर भजवा॥ माटे ते पाप करवु कहे छे ते कोण हशे॥ ने पाप न करवुं कहे
छे ते कोण हशे ते कहो॥ पछे महाराज बोल्या जे एक देविमाया छे॥ ने एक आसुरिमाया छे॥ ते एवे प्रकारनि माया
अनादिनी छे॥ तेमां धर्म ज्ञान वैराग्य भक्ति शिल संतोष दया क्षमा तथा निष्काम निर्लोभ निस्वाद निस्नेह निर्मा
नादिक जे रुडा गुण ते देवि संपतिना गुण छे॥ अने काम लोभ स्वाद स्नेह मान॥ दंभ कपट हिंसा क्रोधादिक जे दुष्ट
गुण ते आसुरि मायाना गुण छे॥ ते मां धर्म ज्ञान वैराग्यादिक गुण जेने विषे वर्तता होय ते देविजिव कहेवाय॥ अ
ने काम लोभादिक दोष जेने विषे वर्तता होय ते आसुरि जिव कहेवाय छे॥ अने बे प्रकारनी माया कारणपणु
बिजरुपे तो सर्वे जिवोने विषे रहि छे॥ पण वहारथी जो काम लोभादिकने विषे वर्तता एवा जे आसुरि जिव तेनो
संग थई जाय तो मनमां पाप करवाना संकल्प वधि पामे छे॥ अने बाह्यार थि धर्म ज्ञानादिकने विषे वर्तता एवा जे

दैवि भगवानना संत तेनो संगथाय त्यारे पापथकि पाछुवलिने परमेश्वर भजवामां श्रधाथाय छे अने जिवेजगतमांथि केटलाक आसुरिनाशब्द सांभल्यां छे केटलाक जिवेरूपिनाज्ञ् सांभल्याछे तेबेनाश रूपविज अंतःकरणमां भराणा छे त्यारेबहारथी आसुरिनोसंगथाय त्यारे अंतःकरणमां आसुरिनाशरूपि बिजते वृद्धि पांमे छे त्यारे अधर्मनेविषे प्रवर्ताय छे ॥ अने बहार थि दैविनोसंगथाय छे त्यारे पापथकि भय पमाय छे॥ नेपरमेश्वरभजवा मां प्रितिथाय छे ॥ माटे जेनेपोतानाआत्मानुं रुडुं करवानि इछा होय तेने अधर्मि एवा जे आसुरि जिव तेनो संग कोइ दिवस करवो नहि ॥ अने धर्म वाला ने भगवानना भक्त एवा जे दैवि जिव तेनो नित्यप्रत्ये संग करवो ॥ अने एविरिते आसुरिना संग नोत्यागकरिने दैविनो संगकरेछे तेनेधर्मज्ञानादिकगुण वृद्धिपामे छे॥ ने कामक्रोधादिक दोष तेनां बिजनाश पामिजाय ॥ नेतेने अंतःकरणमां प्रकाश थाय ॥ पछे तेने साचा सत्पुरुष ओलखाय त्यारे तेथकि आत्यंतिक ज्ञानने पामिने भगवानना अविनाशि धामनेपांमे छे॥ ॥ इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥ श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः॥ ॥ संवत १९ ओगणिश ७९ ओगणिसना आसोवदि ॥ ४ ॥ चोथने दिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवान गाम श्रीपीपलिमध्ये भक्त कालाखिमाने घेरउगमणेबारओरडानि ओसरिमां ढोलियाउपर गादितकिया नखाविने विराजमान थयाहता ने सर्वेजरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठमां पुष्पना हार धारण कर्या हता ने पाघमां बे कोरे तोरालटकताहता नें बे कानउपर पुष्पना गुच्छ खोस्याहता॥ ने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ नेपोताना मुखारविंदनी आगल साध, तथा घणा कहरि भक्तनी सभा भराइने बेठिहति ॥ पछे महाराजनी संध्या आर्ति धुन्य स्तुति करिने भक्तजन सर्वे बेठा॥ पछे महाराज बोल्याजे आजतो एक प्रश्नसाधुने अमे पुछियेछिये ॥ जे जगतने विषे केटलाक पाप करेछे ॥ ने केटलाक पुन्य करेछे ॥ तेएपापने पुन्य तेनास पामे केन नाशपामे ते कहो ॥ पछे धर्मानंदस्वामिये कह्युंके नासपामे छे ॥ पछे महाराज बोल्याजे एतो उत्तर खरो पणतेपापने ततकाल नाश करे एवुं कियुं पुंन्य हशे ने जिवे अनंतपुन्य कर्यां होय ॥ तेपुंन्यने ततकाल नाश करे॥एवुं कियुं पाप हशे

॥ अने वलि एक एवुं कियुं पुन्य छे । जे ते पुन्य पाछुं नाश पामतुं नथि । अने एक एवुं कियुं पाप छे ॥ जे ते पाप पाछुं नास पामतुं न
थि ॥ तेनो उत्तर जे नेजेम आवडे ते म ते कहो ॥ पछे अक्षरमुक्तानंद स्वामिये कह्युं जे जिवे बिजां अनंत पाप कर्यां होय तो प
ण ते ने प्रत्यक्ष भगवान ने तेना संत तेनो गुण आवे तो तेनां सर्वे पाप ततकाल नाश पामि जाय ने ते जिव परम पवित्र थईने
भगवानना धामनो अधिकारी थायछे ॥ अने ते पुंन्य कोई काले नाश पामतुं नथि ॥ अने जिवे बिजां अनंत पुंन्य कर्यां होय
ने तेने जो प्रत्यक्ष भगवानने तेना संत तेनो अवगुण आवे तो तेनुं पुंन्य सर्वे बलि ने भस्म थई जाय ने एनो अवगुण तेनुं एवुं-
पाप लागे जेते पाप कोई काले नाश पामे नहिं ॥ पछे महाराज बोल्या जे एनो एज उत्तर छे पण हवे हुं एज वात निर्णय करुं
छुं ॥ जे कोई एम कहेशे जे भगवानना गुण लिधामां एवडुं शुं पुंन्य थतुं हशे ॥ अने अवगुण लिधामां एवडुं बधुं शुं पाप लागतुं ह
शे ॥ जे सर्वे पापने पुंन्य ततकाल नाश पामि जाय ॥ तो तेनुं एम छे जे जेने प्रत्यक्ष भगवाननो गुण आवे छे ॥ ते तो एम समजे
छे जे भगवानना जन्म ने कर्म ने भगवाननां जेजे चरित्र ते दिव्य छे ने अलौकिक छे ॥ एम जाणिने ते प्रत्यक्ष भगवानने
तेना संत तेने विषे प्रिति येकरिने जोडाई जायछे ॥ पछे ते भगवानने संतने विषे जोडायछे ॥ त्यारे ते ना गुण ते मां आवेछे
॥ जेम जे अग्निमां जोडायछे तो ते नुं शितलपणुं मटिने तपवा लागे छे ॥ अने जे जलमां जोडाय तो तेनुं तपतपणुं मटिने सि
तल थाय छे ॥ तेमजे भगवानने संत तेना गुण ने चरित्र तेने दिव्य जाणिने भगवानने संतमां जोडाय छे ॥ तो ते पण दि
व्यरुप थई जाय छे अने ते ने विषेथी माया टलि जाय छे ॥ पछि तेने विषे उत्कृष्ट एवि जे भक्ति ते उदय थायछे अने जे प्र
त्यक्ष भगवानने भगवानना संतनि जे भक्ति छे ॥ ते तो अनंत पापने नाश करे एवी छे ॥ ते जेने प्रत्यक्ष भगवानने संतनो
गुण आवे छे ॥ तेनुं एज लक्षण छे ॥ जे जेने गुण आवे तेनां इंद्रियो अंतःकरण ने जिव ते भगवानने भगवानना संतनि
सेवामां जोडाई जायछे ॥ अने प्रत्यक्ष भगवानने संतनि सेवा छे ते तो अक्षरधाममां जवानो धकधोरंधर मारग छे ॥ वे
सारुं भगवान पण पोतानि सेवा कराववा सारुं मनुष्य जेवा सजाती थाय छे ने सजाति थईने भक्तजन पासे सेवाक-

रावे छे ॥ अने तेसेवाये करिने जीवनां अनंतजन्मनां जे पाप तेनाशपामि जाय छे अने ते जिव भगवानना धामने पामे छे॥
मारे प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतनो गुण लेवो एज सर्वे पापने ततकाळ नास करवानो उपाय छे ॥ अने प्रत्यक्ष भ-
गवानने संतनो गुण लेवाय तेनुं एवुं पून्य थाय छे ॥ जे ते पुन्य कोई काळे पाछुं नास पामे जनहिं केमके प्रत्यक्ष भगवानने
संतना गुण लिधा थकि तो भगवानना अक्षरधाममां जवारूप पुन्य थाय छे ॥ ते अक्षरधाममां जे गयो ते पाछो आपृथिवि उप
र आवतो नथि ॥ अने ते तो अविनाशि सूखने पामे छे ॥ ते पण गितामां कह्युं छे ॥ जे भगवानना अक्षरधाममां गयो ते
पाछो आवतो नथि ॥ अने बिजां अनंत पून्य कर्यां होय ने तेने देवलोकमां जवानुं होय अथवा प्रकृतिपुरुषना लोकसु
धि जवानुं होय ॥ अथवा परोक्षपणे भगवाननी सूजे एटलि भक्ति करि होय के वैराग पामिने संसारनो त्याग करिने मे
ख लिधो होय अने अनंत जप तप तिर्थ व्रत दान यज्ञादिक घणां क शुभ कर्म कर्यां होय पण जो तेने प्रत्यक्ष भगवानने संत
नो अवगुण आवे तो तेनां सर्वे शुभ कर्म करवारूप जे पुन्य ते ततकाळ नास पामि जाय छे ॥ केमके भगवान प्रगट थाय छे॥
ते तो पोतानि सेवा कराविने अनंत जिवोनां पापनाश करवा सारु ॥ ने अनंत जिवोये पोताना कल्याणने अर्थे शुभ कर्म कर्यां
होय तेने पण पोतानि सेवा कराविने अक्षरधाममां लेई जवा सारु भगवान प्रगट थाय छे ते सेवा तो न करिने उलटो अवगुण
लिधो ॥ मारे तेने एवुं पाप लागे छे जे ते पाप कोई काळे नास पामतुं नथि अने ते पापे करिने तेनां शुभ कर्म करवारूप जे सर्वे
पुन्यमात्र ते ततकाळ नाश पामि जाय छे ॥ जेम कोईक मोटो राजा होय ने ते मेहेरबानी करिने पोताना मूलकमां जाय जे
मारा राज्यमां जे मारि वस्ति छे ॥ तेने मोज आपुं ॥ ने सर्वेने सुखिया करुं ॥ एम जाणिने वस्ति दुःखने पामे ते सारु बेचा
र माणस भेगां लेईने पोताना गामोमां चोरो होय त्यां जईने उतरे ने पछे सर्वे वस्तिने तेडाविने कहे जे अमे तमारा राजा
छिये ॥ मारे तमने सर्वेने सुखिया करवा आव्या छु ॥ ते जेने जे जोईये ते मागो ॥ तेने हुं कागळमां लेख करि आपुं ॥
ते मारे घेर जईने मोकला विसु ॥ अने जे गुनेगार बंधि रखाने होय तेने अमारी पासे लावो ने तेने बंधीखाने थी मुकावि-

ये ॥ नेतेने सऊना बरोबर स्करिया करिये ॥ एम राजाये कह्युं ॥ त्यारे जे डाह्याने बिवेकि हता तेणे तो एम जाण्युं जे आप-
णने स्करव आपवा आव्या छे ॥ माटे आपणने जेजे इच्छामां आवे ते मागो एम समजिने जेने जेइ इछा हति ते माग्युं ने ते
राजानी हेते करिने सेवा करि ॥ अने जे मूर्ख ने अखतरडा ह्या हता ॥ तेणे तो कांइ माग्युं नहिं ने तेनुं सन्मान पण न-
कर्युं ॥ ने उलटुं एम कह्यं जे ए तो कोइ कपाळ खंडिने धूतारो छे ॥ माटे एने तो गाममांथि काढि मुको एवो द्वेष कर्यो ॥
अने जे कांइ सम जता न होता तेणे तो कांइ माग्युं पण नहिं ॥ ने कांइ द्वेष न कर्यो ॥ पछे ते राजा ए रिते मूलक मांफ-
रिने पोताने घेर जइने जेणे जेजे गाम गरास धन्य माल माग्युं हतुं ते प्रमाणे मोकलि दिधुं ॥ अने जे नाजेजे गुना हता तेप-
ण माफ कर्या ॥ ने तेनुं दलिद्र पण सर्वे काढि मुक्युं ॥ ने ते सर्वने अविचल पटे गाम गरास आपि दिधा ॥ अने जेणे द्वेष
कर्यो हतो तेने सिपाइ मेलिने जे साहुकार हता तथा पटेल कामदार हता तेना घरबार सर्वे लुटि लिधां अने जेटला
द्वेषना करनारा हता तेने पांच मोडियां बांधिने पोताना नगरो हेरमां लाविने केदखानामां पूरि दिधा ॥ ने ए वो हुकम क-
र्यो जे तेने कोइ दिवस काढवा नहि ॥ आ सारु के मारे सर्वने स्करिया करवा हता ते ए मूर्खपोते पण स्करिया न थया
॥ ने बिजाने पण स्करिया केटलाकने न थवा दिधा ॥ माटे तेने कोइ दिवस केदमांथि काढवा नहिं ॥ अने जेणे कां-
इ माग्युं नहिं ने द्वेष न कर्यो ॥ तेने तो कांइ लाभ न थयो ने खोट न गइ ॥ धनवान हता ते धनवान रह्या ने दालिद्रि हता
ते दलिद्री रह्या ॥ अने जेणे राजाना विस्वास आणिने ते निचा करि ते कोइ दालिद्रि हताने कोइ गुनेगार हता ॥ प-
ण तेनुं दालिद्र ने गुना ते ततकाल नाश पामिने लखेसरि थइ गया ॥ अने जेणे राजानो द्वेष कर्यो ने ते लखेसरि
हता ते सर्वे ततकाल नाश पामि गयुं ॥ ने उलटि जन्म केद मलि ॥ ते म राजाने ठेकाणे भगवान छे ॥ ते भगवान
कृपा करिने अनंत जिवोने अभयदान आपवा सारु मनुष्याकृतिनुं धारण करे छे ॥ पछे ते भगवानना गुण लेइने
जे सेवा करे छे ॥ तेनां अनंत पाप तेने नास करिने अभयपदने पमाडे छे अने जे अवगुण लेइने द्रोह करे छे ॥

तेनां अनंत सुकृत तथा परोक्ष भगवाननी भक्ति करि होय तथा जप तप व्रत यज्ञ दान पुन्य तिर्थादिक सर्व सुकृत ते तत
काल नास पामि जाय छे अने तेने पाछो भगवान देह मुकाविने जन्म धरावता नथि । ने तेने तो अक्षरना कोईक देशने
विषे ब्रह्मस्त्रिसोपतिने विषे लिन करि मुके छे ने तेने कोई दिवस पाछो काढता नथि अने ते प्रत्यक्ष भगवानना द्रोहनो-
करनारो एवो जे आसुर ते ब्रह्मस्त्रिसोपतिने विषे पण महा संतापने पामे छे ।। जेम राजाना द्वेषि जन्म केदने विषे क-
ष्टने पामे छे ।। तेम भगवानना द्रोहना करनारा एवा जे आसुर ते पण ब्रह्मस्त्रिसपतिमां महा क्लेशने पामे छे ।। त्यारे
कोईक एम आसंका करे जे ।। पुर्वे भगवाननो असुरे द्रोह कर्यो तो पण तेने भगवाने मुक्ति आपि छे एम शास्त्रमां ल-
ख्युं छे ।। तेनुं केम हसे तो एनुं एम छे जे शास्त्रने करवावाले ते निहांसि करि छे ।। जेमे केदखानामां पड्या एवा जे गुने
हगार ।। तेनि कोईक मस्करि करे ।। जे हाथमां डहकला ।। होय तेने कहेसे के डांपहेर्यां छे के ।। अने पगमां बेडि
यो होय तेने कहेसे के पगमां तोडा पहेर्या छे के ।। अने वलि कहेसे के तमारे तो मजो दिसे छे ।। जे काम काज करवुं
नहिं ने बेठां बेठां रोटला खावा ।। एम मस्करि मांथी कहे ।। तेम रावणादिक असुरनी मुक्ति शास्त्रमां लखि छे ।।
अने वलि जिवोने भगवाननी भक्तिने सेवामां जोडवा सारु भगवाननो महिमा कह्यो छे ।। जेम कोई राजानो चाकर
होय ।। ने तेने राजानो विश्वास न होय जे हुं राजानी चाकरि करुं छुं पण मने कांई आपसे के नहि आपे ।। पछे जे ने राजा-
ना गुणनी खबर छे ।। ते कहे जे राजा तो बहु जमोजि छे ।। ते पोतोना द्वेषि हता तेने पण बेठां बेठां वस्त्र ने रोटला आपे
छे ।। तो तुं चाकरि करिस तेने केम नहि आपे ।। आपसे ज ।। तेम पामर एवा जे अज्ञानि जिव जेने भगवानना महात्मनि
खबर नथि ।। तेने विश्वास आणाववा सारु शास्त्रमां पोषण वचन छे ।। जे भगवान तो अधम उधारण ने पतितपावन छे
।। जे रावण ने हिरण्यकशिपु ने शिशुपालादिक असुरे भगवाननो द्रोह कर्यो ।। तो पण भगवाने तेने मुक्ति आपि ।। तो
जे प्रितिये करिने भगवाननी सेवा करसे तेने भगवान केम मुक्ति नहि आपे ।। आपसे ।। एम कहिने जिवोने भगवा

ननिभक्ति करावि ने अखंड सुखने पमाडवा ॥ पण भक्तनि मूक्ति मां ने असुरनी मूक्ति मां तो घणो ज भेद छे ॥ जेम एक राजाना-
हो लियानो चाकर ॥ ने एक राजानो दुश्मन केदमां पड्यो होय ते बेयना सुखमां केटलो भेद छे ॥ तेम भगवानना भक्तना सुखमां
ने असुरना सुखमां भेद छे ॥ अने ए असुरना करतां तो जन्ममरण ने पामतो एवो जे जिव तेनो कोई कदहाडे रखडतां रखडतां
प्रगट भगवानने भगवानना संतनो जोग थशे ॥ त्यारे ते निभक्ति करिने भगवानना धामने पामशे ॥ पण जे असुर छे तेने तो
प्रगट सत्पुरुषना द्रोहना पापनुं फल जे ब्रह्मसशुप्ति मां लिन थवुं ॥ ते कोई दिवस छुटको थ तो नथि माटे प्रगट भगवानने संत
तनो गुणलेवो ते जेवुं बिजुं कोई मोटुं पुन्य नथि ॥ अने प्रगट भगवानने संतनो अवगुण लेवो ते जेवुं बिजुं कोई मोटुं पाप नथि
ते सारु सहजानंद स्वामियेपण शिक्षापत्रि मां लख्युं छे जे ॥ अहिंसा धर्म छे ते सौ थि मोटो धर्म छे ॥ ते अहिंसा धर्म ने शुं तो
मन्ने वचने कर्मे करिने कोई जिवने दुभवो नहि ॥ त्यारे कोई जिवने दुभवो नहि ॥ तो कोई मोटापुरुष कहेवाता होय ॥ तेने
तो दुभायज केम ॥ नज दुभाय ॥ अने वलि सहजानंद स्वामिये वचनामृत मां कह्युं छे जे ते पोते श्री कृष्ण भगवाननी पूजा
करिने नित्ये पांच दंडवत करता हता ॥ ने एक दिवस दंडवत कर्या त्यारे शुक मुनिये कह्युं जे नित्ये तमे पांच दंडवत करता ते
आज छ दंडवत केम कर्या ॥ त्यारे सहजानंद स्वामिये कह्युं जे अमे नीत्ये तो भगवानने एम कहेता जे अमारा कामादिक
शत्रुनाश करजो ॥ अने आज तो अमने एम विचार थयो जे जाणे अथवा अजाणे भगवान के भगवानना संतनो मन्ने वचने
देहे करिने द्रोह थई गयो होय ॥ तो ते अपराधने माफ करावावा सारु एक दंडवत वधारे कर्यो छे ॥ केमके बिजां पापनो कोई
काले छुटको थाय ॥ पण भगवानने भगवानना संतना अपराधना पापनो कोई काले छुटको थतो नथि अने वलि जैनम-
तना शास्त्रमां पण लख्युं छे जे जिवमात्र पासे नित्य क्षमा मागवि ॥ जे जाणे अजाणे कोई जिवनो द्रोह थई गयो होय तो ते
अपराधने माफ करजो ॥ माटे एवि रिते सर्वे जिवोनो गुण लेवानो स्वभाव होय तो कोई मोटापुरुष भगवान के भगवा-
नना संत होय तेनो पण गुण लेवाय ॥ अने तेनो गुण लेवा थकि ॥ आत्मानुं कल्याण थाय ॥ अने जो अवगुण लेवानो स्व

भावहोय॥ तो तेने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतनो अवगुण पण लेवाय॥ अने ते प्रत्यक्ष भगवानने तेना संतना द्रोह करिने तो आत्मानुं अतिशे भुंडुं थाय छे॥ माटे जेने पोताना आत्मानुं रुडुं करवानि इच्छा होय तेने तो कोईनो अवगुण न लेवो॥ ने सर्वेनो गुण ज लेवो॥ तो तेने कोई क दिवस प्रगट भगवानने भगवानना संत मलशे॥ तो तेनो गुण लेवाशे॥ त्यारे ते जिवनुं कल्याण थशे॥ ते सारु प्रत्यक्ष सत्पुरुषनो अवगुण कोई काले लेवो ज नहिं॥ अने जे ते प्रत्यक्ष भगवानने संतना अवगुण ले छे॥ ते जेवो तो कोई पापि नथि॥ ने तेजेवो कोई निच ने दुष्ट नथि॥ माटे प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतनो अवगुण ले छे ने तेजेवो तो कोई पापि नथि॥ ने प्रगट भगवानने संतनो गुण ले छे तेजेवो कोई पुन्यवान नथि॥ अने जे प्रगट भगवानने संतनो गुण ले छे तेणे ज अहिंसा धर्म संपूर्ण पाल्यो छे॥ अने जे प्रगटनो अवगुण ले छे॥ अने तेणे बिजा अनंत अहिंसा धर्म पाल्या होय ते सर्वे तेना धर्म मिथ्या छे॥ केम के जेना सारु अहिंसा धर्म पालता हता ते निज हिंसा करि॥ माटे तेना अहिंसा धर्म ते सर्वे मिथ्या छे॥

॥इति श्री मुख्य सिद्धांत समाप्तः॥

॥ श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥

संवत् १९ ओगणिशो १९ ओगणिशना आसो वदि ६ छठने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री पिपलि मध्ये ठाकोर करशनसंघजिना दरबारमां ऊगमणे बार ओरडानि ओसरिमां ढिंढोलाखाट उपर विराजमान थया हता॥ ने सर्वे जरियानि वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठमां हजारि पुष्पना हार घणा कर्सो भिरह्या हता॥ अने पाघमां बे कोरे पुष्पना तोरा लटकता हता॥ ने बे कान उपर पिला पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता ने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने संध्या आरति थया पछि पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हती॥ पछे महाराज बोल्या जे सर्वे सांभलो एक वार्ता करवि छे जे आ जगतमां केटलाक जिव सुख माने छे॥ बे केटलाक दुःख माने छे ते सुख शुं छे ने दुःख शुं छे॥ तो जिव जे ते मनने गमतुं भोगवे तेने सुख माने छे अने मनने अणगमतुं भोगववुं पडे तेने दुःख माने छे हवे ते दुःखने सुख शाथि थाय छे तो बुद्धिने विषे सद्गुण आवषे करिने सुख थाय छे ने बुद्धिने विषे

दुर्गण आववे करिने दुःख थाय छे जेम आ लोकमां विशाल बुद्धि वाला होय छे ते बेग बेठा वगर दाखडे कोईक राजानी चाकरी करि
ने हुकम चलावता थका कोईक सो रुपियानो महिनो खाय छे ॥ ने कोईक पाचसें रुपियानो महीनो ले छे॥ ने कोईक हजार रुपैय
नो महिनो खाय छे ॥ अने जेनि मंद बुद्धि होय ते घणो कदा खडो करे त्यारे मांड मांड पेट भराय ॥ अने कोईक खेडु मां चाकर रहिने रात
दहाडो टाढ तडकानुं सहन करिने वरस दहाडा सुद्धि दाखडो करे॥ त्यारे विसके पचिस रुपैया पामे ने महा हेरान थाय छे॥ तेम पर
लोकमां पण जेनी सदगुणे भरेलि बुद्धि होय ते सुख ने पामे छे॥ अने जेनि दुरगुणे भरेलि बुद्धि होय ते दुःख ने पामे छे॥ ते बुद्धिमां सद्गु-
ण ने दुर्गुण शाथि आवे छे ॥ तो पंचविषयना रागि ने देहाभिमानि एवा जे असत्पुरुष ॥ तेने संगे करिने दुर्गुण बुद्धि मां आवे छे अने पं-
चविषयना त्यागि ने निरवासनिक ने जे ने कोई जातनो अहंममत्व नहोय एवा जे भगवानना एकांतिक संत अथवा प्रत्यक्षप-
रमात्मा भगवान तेना संग थकि बुद्धिने विषे सदगुण आवे छे॥ अने जेने बुद्धि मां सदगुण आव्या होय तेने अंतःकरणमां प्रकाश
थाय छे ॥ पछे ते सत्यने अ सत्यने साक्षात्कार देखे जे माया ते असत्य छे ॥ ने आत्मा ते अविनाशी छे ने भगवान आत्माना आधा
र छे॥ ते एम ज्ञाने करिने ए सर्वना स्वरूपने साक्षात्कार देखे॥ जेम अंधारा घरमां दिवो करे॥ त्यारे सर्व वस्तु देखाय ॥ पछे जे वस्तु स
त्य ने सुखदाई होय तेनुं ग्रहण कराय छे ॥ ने जे वस्तु दुःखदाई होय तेनो त्याग कराय छे ॥ तेम जेने ज्ञान थाय ते एम जाणे जे माया
छे ते दुःख निआपनारि छे ॥ अने कोटिकल्प थया जिवने जन्म मृत्युने पमाडनारि छे ॥ अने वलि स्वप्नवत छे ॥ जेम स्वप्नामां
अनंत पदार्थ देखाय तोपण मिथ्या छे केम के मुवा पछि ए के पदार्थ साथे आवतुं नथि ॥ जेम झांझवानां जल देखाय तोपण जल
वस्तुगते नथि ॥ तेम माया नां पदार्थ अज्ञाने करिने देखाय छे ॥ पण माया मिथ्या छे एम जाणीने ते नि वासनानो त्याग करे छे ॥ अ
ने पोताने देहथि नोखो आत्मा माने छे ते आत्मा केवो छे ॥ तो सुखरूप छे ने अविनासि छे ने चैतन्य छे॥ ने ज्ञानरूप छे ॥ ने प्र-
काशवान छे ॥ ने व्यापक छे ॥ एवो जे आत्मा तेने पोतानु स्वरूप मानिने ए आत्माना आधार एवा जे प्रत्यक्ष परमात्मा भग-
वान तेने विषे प्रिति करे छे ॥ ते परमात्मा केवा छे ॥ तो आ पंचास क्रोड योजन पृथ्वि छे । ते एक लोक कहेवाय ॥ अने एवां

वांचौदलोकनुं एक ब्रह्मांड कहेवाय छे ।। ने एवां एवां अनंत कोटि ब्रह्मांड अणुनि पेठे उडे छे ।। जेना एक रोमना खाडाने विषे एवा
जे सर्वात्मा ब्रह्म अक्षर अने ते अक्षरना आधार परमात्मा छे ।। अने ए परमात्माने भजि भजिने अनंत कोटि मुक्त ते ज्ञानने पामिने
।। सर्वात्मा एवा जे अक्षर ब्रह्म ते जेवा थाय छे ने परब्रह्मनी सेवामां अखंड रहे छे ।। एवा जे परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान ते ज कृपा क
रिने अनंत जिवोने ज्ञान आपवा मा रु मनुष्याकृतिनु धारण करे छे ।। ते ज भगवान आज मुने साक्षातकार मल्या छे ।। एम जा-
णिने ते भगवाननि भक्ति करिने अभय पदने पांमे छे ।। अने जे जिव असत्पुरुषनो संग करे छे ।। ते जिव आ लोकमां महा दुःख
ने पांमे छे ।। अने मरिने परलोकमां अपार कष्टने भोगवे छे ।। माटे जेने सुखिया थवुं होय तेने असत्पुरुष एवा जे कामि लो-
भि स्वादि मानि क्रोधि तेना संगनो त्याग करिने सद्गुरु एवा जे निष्कामि निर्लोभि निस्वादि निर्मानी संत तेनो संग करवो
।। ते एवा सद्गुरु क्यां होय तो ज्यां आत्यंतिक ज्ञानना आपनारा एवा जे परमात्मा भगवान ते प्रत्यक्ष होय त्यां ज एवा सद्गुरु हो
य ।। पण प्रत्यक्ष भगवानना ज्ञान विना पंचविषयना त्यागि संत होय ज नहिं ।। जेम आंबा विना केरि थाय ज नहिं ।। तेम प्रत्यक्ष
भगवानना ज्ञान विना पंचविषयना त्यागि संत होय ज नहिं ।। माटे पंचविषयना त्यागिने निरवासनिक एवा जे सद्गुरु तेने ओ-
लखिने तेनो संग करवो ।। अने जे एवा सद्गुरुनो संग करे छे ।। ते जिव महा अलौकिक सुखने पामशे ।। ।।

इति श्रीमुखसीद्धांत समाप्तः ।।

।। श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः ।। संवत १९ ओगणिशो १९ ओगणिसना आसोव
दि ७ सातेमने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान ।। गाम श्रीपिपलि मध्ये ठाकोर करणसिंघजिना दरबारमां उगमणा
बारना ओरडानि ओसरिमां हिंडोलाखाट उपर विराजमान थया हता ने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ।। ने मस्तक उपर गु
लाबि रंगनो फेंटो बांध्यो हतो ने धोलि चादरने लाल चकमो ओढ्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगल साध तथा प-
णाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति ।। पछे गाम पछमना गढवि अलुये प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज तमने केटलाक मनु
ष्य छे ते तो साक्षात्कार भगवान जाणे छे ।। अने केटलाक मनुष्य तो तमने बिजा मनुष्य जेवा देखे छे तेनुं केम हशे तेनो

पाकरिनेकह्यां ॥पछे महाराजबोल्याजेसांभलोएनोउत्तरकरियें ॥जे बेप्रकारनीजिवनि दृष्टि छे॥ तेमांएकअंतरद्रष्टि छे॥
नेएक बहार द्रष्टिछे ॥ ते मां जे अंतर द्रष्टि वाला छे॥ तेअमने भगवान जाणे छे॥ अने जे बहार द्रष्टि वाला छे ते बिजा माणसजे
वाज अमने पण देखे छे॥ केमके बिजामनुष्यनेजेम बेहाथ छे॥ तेम अमारे पण बेहाथ छे॥ अनेबिजा मनुष्य ने जेम भूखत
रसलागे छे तेमअमनेपण भूखतरसलागेछे ॥ एवीरिते देहना भाव तो बिजा सर्वे मनुष्यनाजेवाज देखाय छे पण कांई बि
जा माणसने बेहाथ छे नेअमारेचारहाथछेएमतो नथि ॥के बिजां मनुष्य खाय छे नेअमे खाता नथि॥ एमपण नथि माटे ब-
हार दृष्टिवाला होय ते तो अमने बिजा माणसजेवाज देखे छे ॥अने जेअंतर द्रष्टिवाला छे ते तो ज्ञाने करिने जुवे छे ॥माटे
अमने भगवान जांणेछे॥ जेम राजा निकचेरि बेठि होय तेनेउपरथि मनुष्य पक्षेजुवे तो सर्वे मनुष्य सरखा देखाय पण को
ई नानो मोटो देखाय नहिं ॥अनेअंतरमां विचारिने बुद्धियेकरिने जोईये त्यारे तो एमजणायजे गादिउपर बेठो छे तेराजा
छे॥ अनेतेनि पासे बेठा छे ते राजाना होलियाना चाकर छे ॥अने तेथी पासे बेठा छे ते राजाना कारभारि छे॥ अनेतेथान
जिक बेठा छे ते गामडाना पटेल छे॥ एविरिते बुद्धिये करिने जुवेत्यारे तो सर्वे सरखा न देखाय॥ घणो भेद जणाय॥ तेम
जे बहार द्रष्टिवाला छे तेतो अमने बिजा माणस जेवाज देखेछे॥ अने जेअंतरद्रष्टिवाला छे ते तो अमने ज्ञाने करिने जु
वेछे॥ तेपो तेएम विचार करे जे आवुं ज्ञान मारि पासे तो नथि॥ त्यारे हुं करतां तो मोटा छे॥ पछे बिजामनुष्यने ज्ञाने करिने जु-
वे तो एमजाणे जे महाराजनाजेवुं ज्ञान बिजा कोई पासे नथि॥ एविरिते जे अमारुं ज्ञान सांभले छे॥ त्यारे तेने तो एमजण
य छे जे बिजा माणस जेवा तो नहिं॥ माणसकरतां तो मोटा खरा एम तेने जणाय छे माटे एविरिते ज्ञानद्रष्टिये करिने
जुवे तो तेने अमारा स्वरूपनो निश्चय थाय छे॥ पण बहार द्रष्टिवालाने अमे ओलख्या मां आवता नथि॥ माटे जगतना
सर्वे जिवोनी तो बहार द्रष्टि छे॥ पणजे जिवने अमारो संबंध थाय छे॥ नेते दैविजिव होय तेने अमे वातो करिने अमारीपासे
जे अकल छे तेएना अंतरमां उतारियेछिये ॥ त्यारे ते अमारि अकले करिने अमने जुवे छे त्यारे तेने अमे जेवा छैये तेवाओ-

लखाईये छीये ॥ माटे अमारा थकि जन्ममे ओलखाईये छिये ॥ केमके जेटलोजेटलो ताने करिने हुं तेना अंतरमां उतरुं छुं ॥ तेटली तेटलो ते मुने ओलखे छे ॥ अने जे आसुरि जिव होय ने ते अमारुं ज्ञान तो अंतरमां उतारे नहिं ॥ तेने तो अमने कोई काले ओलखाता नथि ॥ माटे बहार द्रष्टिवाला जे आसुरि जिव छे ते अमने बिजा माणस जेवा ज देखे छे ॥ अने तेनुं कल्याण पण कोई काले थवुं नथि ॥ अने अंतरद्रष्टिवाला एवा जे दैवि जिव छे ते मुने भगवान जाणे छे ने तेने आसुरिने दैवि थयानुं कारण पण एज छे जे बहार द्रष्टिवाला एवा जे कामि लोभि स्वादि मानि असत्पुरुष तेने संगे करिने आसुरि थवाय छे ॥ अने अंतरद्रष्टिवाला एवा जे निष्कामि निर्लोभि निस्वादि निर्मानि संत तेने संगे करिने दैवि थवाय छे ॥ माटे बहार द्रष्टिवाला एवा जे असुरिपुरुष तेना संगि छे ॥ ते अमने बिजा माणस जेवा देखे छे ॥ अने अंतरद्रष्टिवाला एवा जे संत तेना संगि छे ते अमने भगवान जाणे छे ॥ ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे ॥ एम कहिने पछे थाल थयो ते महाराज जमवा पधार्या ॥

॥ ॥ इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमो नमः॥ ॥

संवत ।१९। ओगणिसें ।१९। ओगणिसना आसो वदि ।८। अष्टमिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्णभगवान गाम श्रीपिपलिमध्ये चुडासामा केसाभाई कलाभाईना दरबारमां आथमणा बारना ओरडानी ओसरिमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता ने किनखापनो सुरवाल ने डगलि धारण कर्यां हतां ॥ अने गुहोरे टोने कसुंबल सेलुं केडे धारण कर्यां हतां ने मुस्तके कसुंबल सोनेरि पाघ बांधि हती ने कसुंबल सेलुं एक खभे नाख्युं हतुं ॥ अने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने कंठमां पिला पुष्पना हार धारण कर्या हता ॥ ने फूलना तोरा पाघमां बे कोरे लटकता हता ॥ ने बे कान उपर पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता ॥ ने जमणा हस्तकमलने विषे रुमाल लन्नो भर्यो हतो ॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हती पछे महाराजनी आर्त्ति धून्य थया पछी महाराज पोतानी मेले बोल्या जे जेने घणाक जन्मना सुभ संस्कार होय तेने ज प्रत्यक्ष भगवानना स्वरुपनो निश्चय थाय छे ने तेनुं कल्याण थाय छे

एमसर्वेशास्त्रमांकह्युंछे ते सत्यछे ।पण तेसंस्कारनाबेभेदछे ।। ते भेदकिया तोएकद्दरषे युक्तसंस्कार छे॥ नेएकशोकेयुक्त
संस्कार छे॥ ते संस्कारना भेदशानेकरिनेपड्याछे॥ तोपूर्वजन्मने विषे अथवा आजन्मने विषे भगवानतथा भगवानना निरवा
सनिकएवाएकांतिकसंत तेना संबंधमां प्रथमजे जे जिवआवे छे ॥तेमांजे जिव निष्कामभावे निष्कपटपणे आवे छे तेने हरषे युक्त
संस्कारबंधायछे ।अने जेनेहरखे युक्त संस्कार बंधायछे तेनेसाधुनीपेरे भगवानने विषे अखंड सेवानो संबंधरहेछे॥ अनेजे
सकाम भावराखिने भगवानना संबंधमां आवेछे॥ तेने शोकेयुक्त संस्कारबंधायछे ।।अने जेनेशोकेयुक्त संस्कार बंधायछे।।तेने
भगवाननो अखंड सेवानोसबंधरहेतो नथि॥ तेएने भगवानसे वामां राखेतो पण तेनेसकाम भावहोय तेसेवामांरहेवाय नहिं॥ प
छे तेनेबिजोजन्मआवेत्यारे भगवाननिसेवामांरहेवुंहोय तो रहेवायन हि॥एवेठेकाणे तेने भगवानजन्मधरावेछे ।तेजेमकुंडल्ला
वालिबाईने अमारिसेवामां अखंडरहेवुंहतुं पणतेनेपूर्वजन्मनो शोकेयुक्त संस्कार हतो तो सेवानो जोग बन्यो नहिं॥अने
बिजियोपण केटलिक डोसियोने अमारिसेवामांरहेवानुंहोय तोपण रहेवायनहि ।पछे तेनेसेवामां नरहेवाय तेवातनो पश्चा
त्ताप थाय तेणेकरिने तेनो सकाम भाव टलि जायछे ।पछे बिजेजन्मे तेने भगवाननी सेवामां अखंडरहेवाय॥ नेतेने
आत्यंतिक मोक्ष थायछे ।।अने जेनेहरषेयुक्त संस्कारबंधायछे ।। तेनेतो एनेएजन्मे आत्यंतिक मोक्ष थायछे॥ माटेजेनेप्र
त्यक्ष भगवाननो संबंध थयो होय ।।तेने तो निष्काम भावराखिने पोताना आत्माना कल्याणनेअर्थे अखंडसेवा करवि।प
ण तेने सकामभाव राखवोनहिं॥ अनेजे सकाम भाव राखिने प्रत्यक्षभगवाननीसेवाकरेछे ॥ तेने अंतर मांदुःखरह्याक
रेछे ।।अने जे निष्काम भावराखिने प्रत्यक्षभगवाननीसेवाकरेछे तेने अंतरमां अखंडसुखरह्याकरे छे अनेजेजेप्रत्य
क्ष भगवानने भगवाननासंतनीसेवा करेछे तेनो एवोसंस्कार बंधायछेजे ते जिव नर्कचोरासिमांतोजायजनहिं॥ अ
नेज्यांसुधि आत्यंतिकज्ञानने पामिने निरवासनिक न थाय त्यांसुधि तेने देवमांने मनुष्यमां जन्म भगवान धरावे छे॥
अनेते ज्यांज्यांजन्म धरेछे त्यांत्यां धर्म मांरहिने भगवाननि भक्तिज करेछे।पछे ज्यारेनिरवासनिक थाय छे त्यारे भग-

यानना अक्षरधामने पामे छे ॥ माटे जेने पोताना आत्मानुं कल्याण ईछवुं होय तेने तो वर्णाश्रमना धर्ममां रहिने पंचविषयनो त्याग करता करावता होय एवा जे भगवानने भगवानना संत तेनी सेवा मनक्रमवचने करवि॥ तेनि सेवाये करिने शुभसंस्कार बंधाय छे ॥ अने ते संस्कारे करिने आत्मानुं कल्याण थाय छे ॥ माटे जेने भगवानने भगवानना संतनि सेवा मलि छे तेना भाग्यनो पार नथि ॥ ॥इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्त संपूर्ण॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमो नमः ॥ ॥ संवत् १९ ओगणिसें १९ ओगणिसना कारतग शुदि ५ पंचमिने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री पिपलि मध्येशालसुवरजपालने घेरउतरादे बारना ओरडानी ओसरिमां गादितकिये जुक्तढोलिया उपर विराजमान थया हताने सर्वे कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ अने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा क हरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हती ॥ पछे सुरु भाईये महाराजने हाथ जोडिने प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज केटलाक जिव छे ते भगवानना नामनी माला ओ फेरव्या करे छे तो पण ते निवासना रंच मात्र टलति नथि। ने अ आतो दिवसे दिवसे वधति जाय छे ॥ माटे तेनुं अंत समे कल्याण पण नहिं ज थतुं होय॥ केमके त्र ष्णा टल्या विना कल्याण थाय नहिं॥ माटे भगवानना नामनी माला फेरवे छे तो कल्याण थतुं नथि तेनुं शुं कारण हशे ॥ ते कहो॥ पछे महाराज बोल्या जे ते माला तो फेरवे छे पण भगवानना आशरा विना बहार दृष्टिये करिने लोकमां भक्त जणावा सारु माला फेरवे छे ॥ तेणे करिने तेनुं कल्याण थतुं नथी॥ जेम सिपाई रजपूत होय ते धणि पासे लेख मंडाव्या विना ते गाम निचोकि पोरो कर्या करे ॥ पण तेने महिनो पूरो थये लेखना रूपिया मले नहिं॥ अने जो साचि निनिये करिने चोकि करे तो तेनां सर्वे लोक वखाण करे खरां ॥ पछे एवि रिते घणाक दिवस सुधि साचे टले चोकि पोरो कर्या करे तो तेने गामनो धणि होय ते मेहेरबानि करिने लेख करि आपे॥ त्यारे तेने तहिनो पुरो थये रुपैया मले॥ अने जो मन धारे चोकि करतो करतो लागपडे त्यारे कोई कना घरमां खातर पाडे॥ तो ते गामना धणिने हाथ आवे त्यारे तेने पांचमोडियां बांधिने हेडमां नाखेने तेनुं लुटुं घरबार लुटि ले॥ ते म ए तो द्रष्टांत ॥ ने एनुं सिद्धांत तो ए छे

जे भगवान तथा भगवानना एकांतिक निरवासनिक संत तेना आसरा विना ने ते निआज्ञाथिना स्फ जेए टलि मालाफेरव्या
करे तो पण तेनु कल्याण थाय नहिं ॥ जेम लेख मंडाव्या विना रूपैयाम ले नहिं तेम महात्मापुरुषनी आज्ञा विना ने तेना आ-
सराविना माला फेरवे जपतप करे ॥ पण तेनुं कल्याण थाय नहिं॥ अने तेनां जगतमां तो वखाण थाय जे फलाणो भक्त माला
ओ बहु फेरवे छे ॥ तथा जप तप व्रत बहु करे छे ॥ एविरिते वखाण थाय ॥ पण कल्याण थाय नहिं॥ अने वलि माला फेरवतो
होय पण जो अधर्म ने मार्गे चाले तो तेमाला फेरवतो थको पण नर्कमां जाय ॥ जेम चोकी करनारो चोकि करे ते हेड मां पडे॥
तेम भक्त कहेवाईने अधर्म करे ते नर्कमां जाय छे ॥ अने जो अधर्मनो त्याग करिने पोताना जिवना कल्याणने अर्थे माला
फेरवतो होय ॥ तो तेने कोईक दिवस प्रगट भगवान मले छे ॥ ने ते मालानो फेरवनारो ते भगवाननो आसरो करिने तेनी
आज्ञा प्रमाणे वरति नेंद्रियो नियममां करिने भगवाननी मूर्त्ति जे पोताने मलि होय तेने उरमां धारिने जे भक्त माला फेरवे
छे ॥ तेए विरिते समजिने एकके बे के पांच माला फेरवे छे तो तेनी परमेश्वर पणिक माला मानि ले छे ने तेनुं कल्याण थाय
छे ॥ अने इंद्रियोने नियममां कऱ्याथिना ने परमेश्वरनी मूर्त्तिने उरमां धाऱ्या विना घणीक माला फेरवे तो ये पण परमेश्वर ते
नी एके माला मानता नथि अने एविरिते भगवानना आसरा विना नेंद्रियोने नियममां कऱ्याथिना जप तप व्रत दान पुन्या
दिक जे जे साधन करे छे ॥ ते सर्वे साधन तेनां खोटां थई जाय छे ॥ माटे जगतमां केटलाक माला फेरवे छे तथा जप तप तिर्थ
व्रत करे छे ॥ पण कोईनी इंद्रियो नियममां नथि॥ तेणे करिने कोईनुं कल्याण थतुं नथि॥ अने जेने प्रत्यक्ष भगवानने भगवा
नना संत मले छे ॥ तेनि इंद्रियो नियममां थाय छे ने तेनुंज कल्याण थाय छे॥ ते पूर्वे पण जेने जेने प्रगट भगवानने भगवानना
संत मल्या छे तेनां कल्याण शास्त्रमां लखाणां छे ॥ केमके नामिये सहित नाम लिये तो ज काम थाय ॥ पण नामि विना -
एकले नाम लिधे रंचमात्र अर्थ सरे नहिं ॥ जेम अन्न विना अन्ननुं नाम लिधा करे पण भूख जाय नहिं॥ अने सूर्य आथम्या प-
छि सूर्यनुं नाम लिधा करे पण रात्रिनुं अंधारुं टले नहिं ॥ तेम सर्व नाम ना नामि एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेना स्वरूप ने

साक्षात्कार जाण्या विना ने तेना चरणनी सेवा विना एकलुं नाम लिधा करे ने माला फेरव्या करे तो पण तेनुं कल्याण थाय नहिं ॥ मारे नामियेसहित नाम लेईने माला फरवे तेनुं ज कल्याण थाय छे ॥ पण नामि विना नाम स्क जे एटलां लिधां करे तो पण कल्याण थाय नहिं ते सारुं नामियेसहित नाम लेवुं ॥ पछे वलि मुक्तुभाईये प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज आज तो सर्व नामना नामि तमे प्रगट भगवान छो मारे आसमे तो जेने भजन करवुं होय तेने ठिक छे ॥ ने तेनुं कल्याण पण थाय ॥ पण ज्यारे क तमे पृथ्वि उपर प्रगट न हो ॥ त्यारे मनुष्यने भजन किरिते करवुं ते कहो ॥ पछे महाराज बोल्या जे भगवान प्रगट न होय त्यारे प्रगट भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागि निरवासनिक संत तेनो आश्रय करिने तेनी आज्ञामां रहिने आमा रुं भजन करे तो तेनुं कल्याण थाय छे ॥ अने तेवा संत पण न होय त्यारे तो ते प्रगट भगवानने भगवानना संत पोताने मळे एवी र छा राखिने पूर्वे भगवानना अवतार थई गया होय तेनी आज्ञा शास्त्रमां लखि गया होय ते आज्ञा म माणे वर्तवुं ने ते भगवानने संत पोताने मले ॥ एवा साधन करता जवुं ने तेनुं नाम लिधा करवुं ॥ एवि रिते भजन करे तेने पछे प्रगट भगवान के भगवानना संत मले छे ॥ ने त्यारे तेनुं कल्याण थाय छे ॥ जेम पोताना घरमां अन्न न होय ने भूख लागि होय त्यारे ते अन्न पोताने मले एवि इछा राखिने अन्ननुं नाम लेता थका ते अन्न जे रिते पोताने प्राप्त थाय तेवा उपाय करवा ते घरमां पैसा होय तो वेचाथुं अन्न लेवुं ने पैसा न होय तो कोईकनो करज कढारो लेवो ने तेम पण न मले एम होय तो कोईकनी चाकरि करिने पैसा कमाईने तेनुं अन्न लाविने जमवुं त्यारे भूख जाय ने सुख थाय पण उपाय न करे ने अमथुं अन्ननुं नाम लिधा करे तो भूख जाय नहि॥ ने सुख थाय नहिं॥ तेम ज्यारे प्रगट भगवानने संत न होय त्यारे तो ते भगवानने भगवानना संतने पामवा सारुं तेना उपाय करवा ॥ ते शुं उपाय छे ॥ तो जेने पूर्वजन्मना घणा कसुभ संस्कार होय तेने तो पंचविषयनो त्याग करिने जपतप ने व्रत तेने खबडदार थईने दृढपणे करवां ॥ तो तेना सारुं भगवान ततकाल प्रगट थाय छे ने तेने दर्शन आपिने तेनुं कल्याण करे छे ॥ अने जेने पूर्वजन्मना संस्कार न होय तेणे पंचविषयनो त्याग तो थाय नहिं ॥ पण एवा पंचविषयना त्यागि भगवानना भक्त

होय तेनीसेवामनक्रमवचनेकरवि ॥ तोतेजिवनासंस्कारघणावधिपामिनेजिवमहाबलनेपामेछे ॥ पछेतेनेपण भगवानने
भगवाननासंतप्रगटमलेछे ॥नेतेनुंकल्याणथायछे ॥ अनेएवासंस्कारि भक्तपृथ्विउपरनहोयसारेतो भगवाननाअवतार-
नीमूर्त्तिनोआसरोकरिनेपोतपोतानाधर्ममांरहिनेअधर्मअनितिनोत्यागकरिनेपोतानामनमांप्रगट भगवानने भग-
वाननासंतमलवानीइछाराखिने भगवाननुं भजनकर्याकरवुं ॥ तोतेनेपण कोईकदिवसप्रगट भगवानने संतमलेछे ॥के
मके भगवानतोअंतरजामिछे ॥ तेजेनि जेवीइछाहोय तेईछानेपूरिकरेछे। पण जेम भगवानेकल्कहोय तेमकरेतेनीइछा
पूरिकरेछे ॥मारेघणाकजिवोनीइछाभेगिथायछेत्यारे भगवानने भगवाननासंतप्रगटथायछे॥ नेसर्वेनीइछापुरिकरेछे
नेतेजियोनांकल्याणथायछे॥ मारेतेसमोआजतमारेसर्वेनेआव्योछे ॥ तेतमाराभाग्यनोपारनथि॥ ॥
इतिश्रीसुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृस्णायनमोनमः॥ ॥ संवत् १९ ओगणिसें
१९ ओगणिसनाकारतगशुदि ६ छठनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृस्न भगवानगामश्रीपिपलिमध्ये चुडासामामुख्यु भाईबे-
चरजिनादरबारमांउगमणाबारनाओरडानिओसरिमां गादितकियेयुक्तढोलियाउपर विराजमान थयाहताने सर्वे
जरियानिवस्त्रधारणकर्याहतानेपुष्पनांआभूषणसर्वेअंगमांशोभिरह्यांहतांनेकंकुनोचांदलोकर्योहतो नेपोताना
मुखारविंदनिआगलसाधुतथाघणाकहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठिहति ॥ पछेसर्वेसभाप्रत्येकृपाकरिनेमहाराज
बोल्याजे मायानेविषे जिवमहादुःखपांमेछे ।।नेसदायमरेछाजेवापड्याछे तेनेजिवताकरवासारुंनेसुखियाकरवा
सारुं परमेश्वरजेतेआजगतनीउत्पत्तिकरेछे ॥तेपरमेश्वरकेवाछे तोसदायमायापरछे ॥ नेसर्वेनेसुखनादाताछे
नेसर्वनाआधारछे॥ नेसर्वनानियंताछे॥ अनेपरमेश्वरजेवातोएकपरमेश्वरजछे॥ अनेजिवअसंख्यछे ॥ नेतेजि
वपरमेश्वरथिघणाजुदाछे ॥हवेतेजिवनेसुखियाकरवासारुं ॥अनेजिवपरमेश्वरनेजाणतानथितेनेपोतानुंस्वरु
पजणायवासारुं ॥नेपोतानोजेअलोकिकप्रतापतेनेप्रगटकरवासारुं ॥ पोतेजगतनेउपजाविनेतेनेविषेनितिक

रिछे॥ तेनितिनेजेपाळेछेतेभगवानना स्वरूपनेपामेछे॥ नेतेनेभगवाननोअलौकिकमहिमा समजायछे॥ अनेतेजिवब्र-
ह्मरुपथईने भगवानना अखंडसुखने पामेछे॥ हवेतेनिति तेशुंछे॥ तोवरण नेआश्रमनांजे नेजेमकह्यांहोयधर्म तेप्रमा-
णे सउसउने दृढपणे वर्तवु तेनुंनामनितिछे॥ नेतेप्रमाणेवरते तेनिउपर भगवान प्रसन्नथायछे॥ जेम स्त्रिहोयतेने पोताना
पुरुषनि आज्ञामां वर्तवुं॥ अनेवस्तिहोय तेनेपोतानागामनोधणिहोय तेनिआज्ञामांवर्तवुं॥ एवीरिते एकबिजानिआ
ज्ञापाळवी॥ अनेजेआज्ञापाळेछे॥ तेसुखिथायछे॥ अनेजेआज्ञालोपेछे तेदुःखिथायछे॥ एविरितनो विधिनिषेध
नो मारगकरेलो छे॥ अनेतेमां वर्तनारा जेजिव तेनेसुखथायछे॥ अनेतेविधिप्रमाणे जे नथिवर्तता ते जिवनेदुःखथा-
यछे॥ तेउपरथिसाफ जणायछे जे विधि ते परमेश्वरनि जआज्ञाछे॥ अनेएवोजेविधितेने परमेश्वर परोक्षपणे रहिने घणाक
ाळसुधि जिवनेपळावेछे अनेतेविधियेकरिने सिधथयोएवोजेपुरुष तेसिधिनेपामेछे कहेतां परमात्मानेजाणवानो
अधिकारिथायछे॥ अनेजेपरमात्माने पामवानुंअधिकारीपणुं थायछे॥ ते पणपरमात्मानेजाणनारो एवो कोईकपुरुष
मळेत्यारे तेनासंग थकीजथायछे पण तेवीनापोतानीमेळेकोई जिवपरमात्मानेजाणवानो अधिकारिथतोजनथि॥
जेम कोईक घरघोडियागरासियानि दिकरिहोय तेनुंमोटाराजानेघेरसगपणकर्युंहोय॥ पछेतेराजारिझेएवा गुणशि
खवासारुं राजानागुणनेजाणनारिएविजेते राजानिदासी तेनेसंगेरहिनेतेगुणनेशिखे त्यारे तेमांराजारिजेएवागुण-
आवेछे॥ पणतेविनापोतानीमेळे राजारीझेएवागुण आवेनहिं॥ तेम परमात्मानास्वरूपनेजाणनाराएवाजेएनाएकांति
कसंतहोय तेनेसंगेकरिनेजपरमात्मानुंस्वरूपजणायछे॥ हवे तेपरमात्मानेजाणवानीरितकहेछे जेजेमपतिव्रतास्त्रि
पोतानास्वामिवीना सर्वपुरुषनो त्यागकरेछे॥ नेजेमवस्तिछे तेपोतानाराजानाजहुकममांवरतेछे तेम भगवानना भ
क्तनेभगवाननीमूर्त्तिवीना मायामां थिउपन्यांजे मायानाआकारमात्र तेनो त्यागकरयो॥ केमके भगवाननिमूर्त्तिछे
तेजएक सत्य स्वरूपने सुखनाधाम छे॥ नेसर्वे जिवोनासाचास्वामिछे॥ अनेभगवाननिमूर्त्तिविना बिजाजेदेव

ब्रह्माने प्रकृतिपुरुषसुधिना आकारमात्र छे ॥ ते चारप्रकारना प्रलयमां नासपामिजाय छे अने भगवाननुं जे स्वरूपछे
ते तो अखंडने अविनासि छे ॥ अने सर्वेना आदिकरता छे ॥ माटे ते परमात्माने पामवा सारुं विधिबताविछे अने ते विधिप्रमा
णे घणाक काळसुधि जिववरतेछे ॥ तेने सर्व कारणना कारण एवाजे परब्रह्मपरमात्मा भगवान ते प्रत्यक्षदरसन आपेछे
॥ पछे जेने प्रत्यक्ष भगवानना दर्शन थयां तेने विधि सर्वे पुरो थई रह्यो छे ॥ अने तेने पछे सर्वे मतपंथ तथा नातजात तथा
वरण आश्रम तथा लोकनि लाज आदिक जे आवरण तेनो त्याग करिने प्रत्यक्ष मनुष्याकृतिजे भगवान तेने विषे सर्वे-
भावे जोडाई जवुं ॥ पण प्रत्यक्ष भगवाननि मूर्त्तिने विषे कोई जातनो अंतराय तथा विधिनिषेध ते राखवो नहिं ॥ जेम पतिव्र-
ताश्त्रि होय ते पोताना पतिविना बिजा सर्वे पुरुषने विषे लाजमरजादा राखेछे ॥ ते शासारुं लाजमरजादा राखेछे ॥ तो पो
ताना पुरुषने राजी करवासारुं लाजमरजादा राखे छे ॥ अने कोई पुरुषसाथे हसी बोले नहिं ॥ ने पोतानो पुरुष गाम गयो-
होय तो पोते सारां वस्त्रघरेणां पण पहेरे नहिं ॥ ने सारां भोग जे खावां पिवां तेने भोगवे नहिं ॥ ने ते सर्वेनो त्याग करे पछे पति
व्रताश्त्रि उपर तेनो पुरुष राजि थायछे ॥ अने ते पुरुषने विषे पतिव्रताश्त्रि जंवे लाजमरजादनो त्याग करिने जोडाई जायछे
पण पोताना पुरुषने विषे लाजमरजाद राखति नथि ॥ अने जो जेम बिजा पुरुषने विषे लाजमरजादा राखिने छेटे रहेछे
॥ तेम पोताना पतिने विषे लाजमरजादा राखिने छेटे रहे तो ते उपर तेनो पुरुष राजी थाय नहिं ॥ अने तेने पुत्ररूप फल
पण थाय नहिं ॥ अने तेनुं पतिव्रतापणुं पण खोटुं थई जायछे ॥ तेम भगवानने प्रसन्न करवासारुं विधिनीषेधने पाल्व-
वो ॥ अने जे विधिनिषेधने पाले छे तेनी उपर भगवान प्रसन्न थाय छे ॥ अने ज्यारे भगवान प्रसन्न थईने पोताने प्रगट मले
त्यारे तेने विषे लाजमरजादानो तथा विधिनिषेधनो त्याग करिने भगवाननी मूर्तिने विषे जोडाई जवुं ॥ अने प्रगट भ-
गवानने विषे जोडावया सारुं तो पूर्वना कवियोये भगवानना रास्यपंचाध्यायादिक रसिकशास्त्र कर्यां छे ॥ तथा प्रगट भ
गवानना रसिक किरतन कर्यां छे ते शुकदेवजि जेवा महात्यागि होय तेणे पण ते रसिकचरित्रमां भगवान गाया छे

अनेवलिगितामां पण श्रीकृष्णभगवाने अर्जुनने कह्युं छे जे॥ ॥सर्वधर्मान् परितज्य मामेकं शरणं व्रज॥ अहं त्वां सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच॥ ॥अर्थ॥ जे विधिनिषेधनो जे धर्म तेनो त्याग करिने श्रीकृष्ण अर्जुनने कहे मारे शरण आव्य ने हुं जेम कहुं तेम कर॥ तो हुं तने सर्व पापथकि मुकाविश॥ एविरिते भगवाने कह्युं त्यारे अर्जुन वचन मानिने विधिनिषेधनो त्याग करिने गुरु गोरने कुलनो नास कर्यो॥ तो पण ते भगवानना एकांतिक भक्त कहेवाया॥ ने ऋषिपत्नियो मे लाजमरजादने मुकिने श्रीकृष्ण भगवानने थाल अमाडवा गई तो ते भगवानना धामने पामि गई अने ऋषियेजो लाजमरजादने विधिनिषेध राख्यो ने भगवानने अन्न॥ जे यज्ञनो हवन पुरो थया अगाउ बिजा मनुष्यने अन्न आपाय नहिं तेम भगवानने पण अन्न आप्युं नहिं॥ तो ते ऋषि दुरभागि कहेवाया॥ अने गंधारिये पतिव्रतानो धर्म पालवा सारु आंखे सात पाटा बांध्या हता॥ तो पण जो तेने प्रगट श्रीकृष्णसाथे अंतराय राख्यो तो ते दुरभागणि कहेवाणि छे॥ अने द्रुपदिये पांच पति कर्या॥ तथा माता कुंताजिये पण पांच देव थकि पांच पुत्र उपजाव्या हता॥ तो पण जो तेणे श्रीकृष्ण प्रगट भगवाननी लाजमरजाद मेलिने भज्या ने भगवाननी सेवा करि॥ तो ते महा सतियो कहेवाई॥ ने ते भगवानना धामने पामि गई॥ अने गोपिओए कुलनो धर्मने लाजमरजादनो त्याग करिने प्रगट श्रीकृष्ण मां जोडाईयो॥ तो ते गोपिओ वेदनि श्रुतियो कहेवाई॥ अने जरासंध हतो ते वेदना धर्म प्रमाणे वर्ततो हतो ने विधिनिषेध यथार्थ पालतो हतो॥ अने परोक्ष भगवाननी भक्ति पण करतो हतो ने महा सतवादि पण हतो॥ अने पोताना राज्यने विषे गामो गाम सदाव्रत बांध्यां हतां॥ अने साधु के ब्राह्मण आंगणे आविने जे मोढे थि मागे ते आपतो तो पण जो तेणे श्रीकृष्ण साथे अंतराय राख्यो तो ते महा असुर कहेवायो छे॥ केमके जे नासारु विधिनिषेधने जपतपादिक साधन करवां॥ ने ते ज भगवान प्रगट मल्या ने ते साथे ज अंतराय राख्यो तो तेना साधन सर्वे खोटां थई जाय छे॥ जेम पतिव्रता स्त्रि बिजा पुरुषनो त्याग करे छे॥ तेम पोताना पुरुषनो पण जो त्याग करे तो ते स्त्रि अभागणि कहेवाय॥ ने तेने पुत्ररुप फल थाय नहि॥ तेम जे भगवानना भक्त होय तेने भगवानने साक्षात्कार पामया

सारुं पंच विषयनो त्याग करवो॥ अने एवि रिते साधन करतां करतां भगवान प्रसन्न थायने पोताने प्रगट थईने मले पछे ते प्रगट भगवानसाथे पण लोक लाजे करिने तथा विधि निषेधे करिने तथा मत पंथनि आडे करिने अंतराय राखे तो तेनां साधन सर्वे खोटां थई जाय छे नेतेजिव दूरभागियो कहेवाय॥ नेते तो महापापि कहेवाय।।केमके जेने पामवा सारुं परोक्ष भगवाननी भक्ति करताहता॥ तथा वरणाश्रमनो धर्म पालताहता अने ते जे भगवान तेना साधनना फलने आपवा सारुं प्रगट थायने कृपा करिने दरशन आपे त्यारे ते नजाणतां एवां जे अज्ञानी मनुष्य ते कहेशेजे अमे तो वैस्नव धर्म मांछिये ।।ते बिजा गमते मोटापुरुष होयतो पण तेने मानियेनहि।।तथा वलि कहेशेजे अमे तो स्वामि पंथमां छिये ॥तथा जिनधर्म मांछिये तथा मारगि छिये॥ तथा कहेशे के अमेतो शिवपंथि छिये॥ तथा कहेशे के अमारे तो ओजलुं छे॥ मारे अमे तो अमारो धर्म नेकुलनि रित मुकिने बिजा कोईपासे जईये नहि नेबिजाने मानिये नहि॥ एमजे समजिने प्रगट भगवाननासंबंधथि नेतेना आशराथि छेटे रहे छे।।नेप्रगट भगवान साथे अंतराय राखे छे तथा बिजाने अंतराय रखावे छे॥ तेजेवो तो कोई पापि अनेअधर्मि नहि।।अनेतेना अनंत साधननुं फल सर्वे नाश थई जशे नेते तो मरिने जरूर यमपुरिमां जशे केमके सर्वे जगतना करता हर्ताने सर्वे मतपंथवालाजेनुं भजन करे छे एवा जे भगवान ते एकज छे पण भगवान कोई नाजुदा नथि माटे ते भगवान जिवो उपर कृपा करिने प्रगट थायने ते भगवानने नमानेअनेते प्रगट भगवान थकि छेटेरहे तेजेवो तो कोई दूरभागियो नथि माटे जेने पोताना आत्मानुं रुडुं करवुं होय तेने ज्यां सुधि प्रगट भगवान मल्यानहोय त्यां सुधि वरणाश्रमना धर्म तेजेनेजेमकह्या होय ते प्रमाणे वर्तवुं॥ अनेज्यारे भगवान प्रगट थया एमसंभलायतो ततकाल सर्वे अंतरायनो त्याग करिने प्रगट भगवानने शरणे जवुं पण भगवान प्रगट थया पछे मत पंथमां तथा लोक लाजमां कोई ठेकाणे बंधाई रहेवुं नहिं नेते प्रगट भगवान जेमकहे ते प्रमाणे वर्तवुं अनेते प्रगट भगवाननी मूर्त्तिने विषे लाज मरजादनो त्याग करिने अतिशे हेते करिने जोडाई जवुं अनेते प्रगट भगवानीज एक सेवा करवि॥ अनेप्रगटनी सेवामां जे अंतराय करे तेनो ततकाल त्याग करि देवो जेम रुषिनी स्त्रियोये श्रिकृष्णनी सेवामां अंतरा-

यना करनारा पोतानापुरुष तथा लोकनी लाज तेनो त्याग करिने प्रगट भगवानने भात लेईने जमाडवा गईयो पण कोईनी रो
किरोकाणियो नहि ।। अने बलिराजाने पोतानो गुरु शुक्राचार्य तेणे वामनजिने प्रथ्वि आपवानी नापाडि तो पण ते ना वचन
न [illegible] याग [illegible] रिने प्रगट वामनजिने प्रथ्वि अरपण करिने पछे पोतानुं तनमन धन सरवस अरपण कर्युं ।। तो ते बलि राजा उपर वा
मनजि भगवान घणा प्रसन्न थया ।। अने रुषिपत्नियो उपर श्रीकृश्न भगवान पण घणा प्रसन्न थया ने बलि राजा तथा रुषिपत्नि
यो ते भगवानना एकांतिक भक्त कहेवाणा अने जे लोक लाज मां तथा मत पंथमां बंधाई ने प्रगट भगवानथी जे छेटे रह्या छे ।।
ते सर्वे दूर भागी कहेवाया छे माटे चार वेद ने छ शास्त्र ने अढार पुराण ने भारतादिक इतिहास ए सर्वेनो एज सार छे ।। जे प्रगट
भगवान मल्या न होय त्यां सुधि अनंत साधन करवा ।। अने ते साधन करतां करतां प्रगट भगवान मले त्यारे ते प्रगट ने विषे
जोडाई जवुं ।। ए रतो सर्वे शास्त्रनो सार छे ।। अने अमारो पण एज सिद्धांत छे जे प्रगट भगवाननी भक्तिमां ने तेनि सेवामां ने
तेना समागम करवामां जे जे अंतराय करे कहेतां प्रगट भगवान पासे जतां रोके तेने चंडाल जेवो जाणिने तेनो त्याग क
रि देवो पण कोईना रोक्या रोकावुं नहिं अने प्रगट भगवानने सरणे जवुं ।। तथा जो परोक्ष मत पंथना पोताना गुरु होय
अथवा आचार्य होय ने ते लोभे करिने प्रगट भगवानने सरणे जातां रोके ने कहे जे त्यां जसो तो गुरु द्रोहि छो वचन
द्रोहि छो ।। एम सेवकने लोभे करिने कहे तो पण तेनुं वचन न मानवुं ने तेने तो पापिने असुर जाणिने तेनो त्याग करवो
त्यारे तमे कहेसो जे मा बाप गुरु आचार्यनुं वचन लोपिये तो पाप लागे नहि तो तेनुं पाप न लागे केम के बलिराजाये गुरु
ने आचार्य जे शुक्राचार्य तेना वचननो त्याग कर्यो तो पण पाप लाग्युं नहि ने सामु भगवान प्रसन्न थईने बलि राजाने व
श थया ।। अने रुषिपत्नियोए पोताना पुरुषनो त्याग कर्यो तो पण तेने पाप न लाग्युं. ने तेनुं कल्याण थयुं ।। एवि रिते घ
णा कभक्तोये परोक्ष मतपंथना गुरु आचार्यनो त्याग कर्यो छे ।। तथा मा बाप आदिक देहना संबंधिनो त्याग कर्यो छे ।।
तो पण ते सर्वे उपर भगवान प्रसन्न थई ने तेने अभय पद आप्यां छे ।। पण कोईने पाप लाग्युं नथि माटे प्रगट भगवान

पासेजतां जे जेनापाडं तेनो त्यागकरवो नेत्यागथायएमनहोयनेसंसारमां भेगारहेवुं पडे तोतेनुं वचन मानवुंनहिं अने तेकोईक भग
वानना भक्त नेनिंद्यानां वचन कहेजे तमारि लाजजवोनेफजेतिथशे एमकहे तो तेभगवानना भक्त नेहैयेधरवुंनहिं ॥ अनेपूर्वे जे
जे प्रगट भगवान नेशरणे गयांछे तेनी आसुरि जिवे निंद्याकरिछे ॥ तोपण भगवानना भक्तनि कोईनी लाजगईनथि नेफजे ति
पण थईनथि ॥ माटेएवा आसुरिजिवना संगनो ने तेना वचननो त्यागकरवो ॥ अनेजेप्रगटभगवानने विषे जोडावें तेनो समागम
करवो ॥ अनेएथी रिते समजिने सर्व अंतरायनो त्यागकरिने प्रगट भगवानने विषे जोडायछे तेनां सर्वे साधनपुरां थईरह्यां छे ॥
अने जिवनेप्रगटभगवानने विषेजोडावबा सारु धर्मानंदस्वामिये प्रगट भगवानना रसिककीर्तन कर्यां छे जे ॥ ॥
हरिकृष्ण रंगिले मेरु चित्त चोर्युरे ॥ ॥ एवां किरतन गावाथकि दैवि जिवने भगवानने विषे प्रिति थाय छे ॥ अनेज्यारे
प्रगट भगवानने विषे जेने प्रिति थई तेने भगवानने विषे कोईजातनो अंतराय रहेतो नथि जेम पतिव्रता स्त्रि पोताना पुरुषसा
थे अंतराय राखतीनथि ते सर्वसुखने पामे छे ॥ तेमजे प्रगट भगवानने विषे जोडाईजाय छे ते भक्त बाई अथवा भाईजे ते
अक्षरधामरूप फलने पामे छे ॥ अने ते भक्त जेते ब्रह्मरूप थईने महासुखने भोगवे छे ॥ अने प्रगट भगवानने मुकिने प
रोक्षमां बंधाईरहे छे नेएम जाणे छे जे अमे भक्ति करियेछिये ॥ पण तेतो सर्वे कुसकारवां डे छे ॥ ॥
इतिश्रीमुखसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः ॥ ॥ संवत १९ ओगणिसे
॥१९॥ ओगणिसना कारतग शुदि ॥७॥ सातमने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री पिपलि मध्ये चुडासामा मु
लु भाई बेहेचरजिना दरबारमां उगमणे बार ओरडानि ओसरिमां गादितकिया नखाविने ढोलिया उपर विराजमान थया हता
ने सर्वे जरियानि वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ ने पुष्पमाहार कंठमां धारण कर्या हता ॥ ने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ अ
ने पोतानां मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा क हरि भक्तनी सभा भराईनेबेठि हती ॥ पछि अक्षरमुक्तानंद स्वामिये प्रश्न पुछ्युं जे
हे महाराज आशरानुं शुंरूप छे ॥ पछे महाराज बोल्या जे आशरो ते शुं तो आधारनुं नाम आशरो छे ॥ तेजेने भगवाननो आश्र-

रोथायछे॥ तेने भगवान विना बिजे क्यांई प्रितिरहेतिनथि॥ अने ते ने भगवानना मारगमां कोई रोकवानेसमर्थनथि॥ जेमनदि
ने समुद्रनोआशरो छे तो तेनदियो कोई नीरोकिरा कातियो नथि॥ ने समुद्रमांगयेजरहे छे॥ तेमजे ने भगवाननो द्रढ आशरोहो
य तेपण भगवानना मारगमां अंतरायरुपजे कामक्रोधादिक दोष तथाशब्दादिक पंचविषयतथादेहाभिमान तथादेहनां सगांसंबंधि
आदिक माया तेनो कोई नो रोक्यो रोकाय नहि॥ अने जेने भगवाननो एवो द्रढ आशरो होय तेने काळकर्मने मायानो पण भयम
टिजाय छे॥ अने जेने एवो भगवाननो द्रढ आशरो न होय ते तो काळकर्मने मायाने वशथईनेजन्ममृत्युने पामे छे नेमहादुःख
ने भोगवे छे॥ जेम घंटिने विषे दाणा दळाय छे ते मांजे दाणा घंटिना खिलडानो आसरो करिने खिलडानी पासे पड्या रहे छे तेदाणा
ने घंटि दळि शक्ति नथि॥ अने जे ते खीलडानो आशरो मुकीने छेटे जाय छे॥ ते ने घंटि दळिने लोट करि नाखे छे तेजेम घंटिने
खिलडानो आधार छे तेणे करिने घंटि फरे छे॥ तेम आ जगतरुप घंटि छे॥ ने तेना आधार परमात्मा भगवान छे॥ ते भगवानना
आधारे करिने उत्पत्ति स्थिति ने प्रळयरुप फेरने विषे अनंत जिव जे ते जन्ममृत्युरुपि महाकष्टरुपि पीसाया करे छे अने जे जिवज
गतना आधार एवा जे भगवान तेने आशरे रहे छे अने भगवान विना बिजे कांई सोभाता नथि॥ ते जिव जे ते काळकर्म मायारुप
घंटिना पासमां आवता नथि॥ अने ते भक्त तो निर्भय थई रह्या छे॥ अने जे जिव भगवाननो आशरो मेलिने पंचविषयमां लोभा
य छे॥ ते जिव जगतरुप घंटिमां दळाय छे कहेतां जन्ममृत्युने भोगवे छे माटे भगवान विना बिजे क्यांई प्रिति न रहे ने एक भग
वानने विषे द्रढ प्रिति रहे॥ एज आशरानुं रुप छे॥ माटे जेने महासुखिया थवुं होय तेने सर्वे मायाना परपंचनो त्याग करिने ए
क प्रत्यक्ष भगवाननो आशरो राखवो॥ एज जिवनि अतिहितवारता छे॥ ॥इति श्रीमुखसिद्धांत समा
प्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥संवत १९ ओगणिसो १९ ओगणिसना कारतग शु
दि ८॥ अ एमिने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पिपलि मध्ये चुडासामा मोतिभाई वेहेचरजिनादरबारमां उगम
णे बारणे ओरडानी ओसरिमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता ने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पुष्पना आभूष

ण सर्वे अंगमां शोभि रह्यां हतां ने पोताना मुखार्विंदनी आगळ साधु तथा घणा कहरि भक्तनि सभा भराई ने बेठि हति पछे परमसि-
द्धानंद स्वामिये प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज शास्त्रमां एम कह्युं छे जे ।। जे नि कुशाग्र बुद्धि होय ।। तेने ब्रह्मनी प्राप्ति थाय छे ।। ते कुशाग्र
बुद्धि ते ।। त्यागि थयो होय तेनी कहेवाय ।। के ग्रहस्थाश्रममां बहु डाह्यो होय तेनी कुशाग्र बुद्धि कहेवाय ।। अने ते कुशाग्र बुद्धि के-
म थाय ते कहो ।। पछे महाराज बोल्या जे बुद्धि बे प्रकारनी छे ।। तेमां एक तो धर्म अर्थ ने काम परम बुद्धि छे ।। ने तेनी बुद्धि बहु जणा-
ति होय ने ते बुद्धिये करिने आ खा विश्वनुं कारखानुं चलावे एवो होय ।। तथा देवताना जे विबुद्धि होय तथा वैराज पुरुषना जे वि-
बुद्धि होय ।। तथा अनंत कोटि ब्रह्मांड उपजावे एवा जे मूळ प्रकृति पुरुष तेना जे विबुद्धि होय तो पण ते स्थूळ बुद्धिवाळा छे ।। केम
के एसर्वे सकाम भावे करिने बहार द्रष्टिये वरते छे ।। ते बहार द्रष्टिवाळाने ब्रह्मनी प्राप्ति थति नथि ।। केम के बहार द्रष्टिवाळा जेम
जेम मोटप्य ने पामता जाय छे ।। तेम तेम तेने ब्रह्म जे परमात्मा ते थि छेटुं पडतुं जाय छे ।। जेम कोई ने जवुं होय उगमणुं ने चाल-
वा मांडे आथमणो ।। ते जेम जेम चालतो जाय ।। तेम तेम वधारे वधारे छेटुं पडतुं जाय ।। तेम अंतर वृति जे आत्मा तेने विषे रह्या जे प-
रमात्मा परब्रह्म तेने भूलिने देह हुं छुं एम मानिने बहार द्रष्टिये करिने जे जे साधन जप तप व्रत दान पुन्यादिक करे छे तो पण ते स-
र्वे स्थूळ बुद्धिवाळा छे ।। अने ते चार वेद ने खट शास्त्रना अर्थ मोटे करिने कहि जता होय तथा संसारनो त्याग करिने भेख लि-
धो होय ने पोता पासे धातुं पण कांई न राखतो होय ।। तथा एकांत पकडिने बेठो होय तो पण त्यां सुधि पंच विषयनी वासनाये करि-
ने बहार द्रष्टिये वरते छे ।। तो ते सर्वे जाडि बुद्धिवाळा छे ।। अने त्यां सुधि पंच विषयनी वासनाये करिने देहना सुख सारु क्रिया-
करे छे ।। त्यां सुधि तेने ब्रह्मनी प्राप्ति कोई काळे थति नथि ।। अने जे पोताना आत्माना मोक्षने अर्थे निष्काम भावे करिने सत्पु-
रुषनो समागम करे छे ।। ने ते सत्पुरुषना समागमे करिने एम समजतो होय जे स्थूळ सूक्ष्म ने कारण एत्रण देह तथा जाग्रत-
स्वप्न ने सुषुप्ति ।। एत्रण अवस्था तथा रज तम ने सत्व एत्रण गुण ते सर्वे थकि विलक्षण कहेतां गथि न्यारो एवो जे आत्मा तेने-
पोतानुं स्वरूप जाणिने पंच विषयनो त्याग करिने ते आत्माने विषे रह्या एवा जे परमात्मा भगवान तेने पामवा सारु जप तप व्रत

दानपुन्यादिक जेजे साधनकरे छे तेने ब्रह्मनी प्राप्तिथायछे ॥ अने ते शास्त्रनो भणेलो होय अथवा वगर भणेलो होय नेतेनी झाझी बुद्धि जणातिहोय अथवाथोडि बुद्धि जणातिहोय ॥ अनेते त्यागि थयो होय अथवा संसारमां रह्योहोय पण जो ते निष्काम भावे आत्माना मोक्षने अर्थे प्रवर्ते छे ॥ तेसर्वे कुशाग्रबुद्धिवाला छे ॥ अने ते विनाना सकजे एवा मोटा कहेवाता होय तोपण ते जाडि बुद्धिवाला छे जेम कोईक अतिउंचो मोटो पर्वत होय नेतेनाउपर दिपडांके सावज चड्यां होय तोपण ते भुंचर कहेवाय कहे तां पृथ्विउपर रहेनारां छे ॥ अने मारव अथवा मत्सर ते पृथ्विथकिएक हाथ उंचा उडे तोपण ते खेचर कहेवाय कहे तां आकाशमां रहेवावालां छे । तेमजे सकाम भावे करिने देहना सुखसारु क्रिया करे छे ॥ ने तेनी घणी बुद्धि जणातिहोय तोपण तेनी जाडि बुद्धि जाणवि ॥ अने जे निष्काम भावे आत्मानामोक्षने अर्थे जतन करे छे ने तेनी थोडी बुद्धि जणाति होय तोपण तेनी कुशाग्रबुद्धि जाणवी ॥ अने तेनेज ब्रह्मनी प्राप्ति थाय छे ॥ अने ते कुशाग्र बुद्धि थवानो पण एज उपाय छे ॥ जेजेनी कुशाग्रबुद्धि छे एवा जे प्रत्यक्ष भगवान अथवा ते भगवानना उपदेशे करिने कुशाग्रबुद्धिने पाम्या एवा जे भगवानना एकांतिक संत तेनि सेवाने तेने समागमे करिने कुशाग्र बुद्धि थाय छे अने तेने ब्रह्मनी प्राप्ति पण थाय छे ॥ एतमारा प्रश्ननो उत्तर छे ॥ ॥ इतिश्री मुखसिद्धांत समाप्त ॥ ॥

श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ॥ ॥ संवत १९ ओगणिशे ।१९। ओगणीसना कारतक शुदि ९ नवमिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पिपलि मध्ये मानजि चंद मनजिने घेर उत्तरादा बारना ओरडानी ओसरि मां गादितकियेयुक्त ढोलियाउपर विराजमान थया हता नेसर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठमां गुलाबना पुष्पना हार तोरानं गुछ धारण कर्या हता ॥ ने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा कहरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हती पछे गाम पिपलीना ओसरिवलाले महाराजने हाथ जोडिने एक प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज जेने प्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चय अडग होय अने तेनुं भजन करतो होय अने पोताने आत्मारूप मानतो होय नेपंचविषयनी वासना टलि गई होय तेने फरिने जन्म धरवो पडे के न धरवो पडे ते कहो ॥ पछे महाराज बोल्याजे तेने तो जन्म धरवो प

ऊगेहिं ॥ जेमबिजनेअग्निमांनो ख्युंहोयनेबिजपाछुंउगेनहिं ॥ तेमबिजरुपजेवासनातेनेआत्मानेप्रत्यक्षपरमात्मातेनास्वरुपना
ज्ञानरुपिअग्नियेकरिनेजेनीवासनानो कांई गईहोय ॥ कहेतांजेनेज्ञानेकरिनेवासनाटलिगईहोयतेनेपाछोफरिनेजन्मधरवो
पडेनहिं॥ अनेजेनेवासनाहोयतेनेजन्मधरवोपडे छे ॥ एतमाराप्रश्ननोउत्तरछे॥ पछे वलिमहाराजबोल्याजे ॥ जेने प्रत्यक्षभगवान-
मल्याहोयनेभगवाननेभगवानजाणतोहोयनेतेनुंज्ञानसांभलिनेएमसमजतोहोयजेदेहतथादेहसंबंधीपदार्थ तेपणसर्वे मिथ्या
छे॥ अनेएदेहथकि नोखोएवो जेआत्मानेआत्मानेविषेरह्याएवाजेपरमात्माते सत्यछे। अनेतेमांजेआत्माछेतेमारुंस्वरुप
छे नेआत्मानासाचाहितकारिएवाजेपरमात्मातेमुनेप्रत्यक्षमल्याछेएमसमजतोहोय तोपण तेनेप्रमाद रहिजाय छे।।हवेप्र
मादतेशुं।। तोकरवानुंनकरवुंने नकरवानुंकरवुं तेनुंनामप्रमादकहेवायछे ।।नेकरवानुंशुंछेनेनकरवानुं शुंछे तो भगवानने
भगवाननासंतनी मनेवचनेदेहेकरिने अखंड सेवाकरविएमनुष्यदेहेकरिने अवश्यजरुर करवानुंछे।। अने भगवानने भग
वाननासंतनीसेवा विनाबिजीजेजे क्रियाथायछे तेसर्वेनकरवानुं छे।। माटे केटलाकहरिभक्त छे तेएमजाणे छे जे आत्मानेपरमा
त्मातेसत्यछे।। अनेदेहनेदेहसंबंधिजेपदार्थछे ते मिथ्याछे ।।एमजाणेछे तोपण तेनेप्रमादरुपिदोषेकरिने असत्यनो त्यागक
रिनेसत्यएवाजेआत्मानेपरमात्मातेमांजोडावावुंनथि अनेरातदहाडोसंसारमांनेसंसारमांकुदाणाकरेछे॥ नेवेठवेजुदख्याक
रेछे ।। केमके कोटानकोटिकल्प थयाजिवमात्रजेतेसंसार करता आवेछे ।।नेतेने विषे जन्ममृत्युनेगर्भवासनां महाकष्टभोग
वताआवेछे।। तोपणतेनोपार आव्यो नथि।। नेतेमांथीसुखपण कोई जिव ने थयुंनथि ।।अने कोईदहाडे संसार भोगव्याथि
सुख थायएमपण नथि।। अनेप्रत्यक्ष पणएमदेखाय छेजेराजारंकबोडशाहुकार सर्वेगलाआव्याछे।। ने भूख्याचाल्याजा
यछे।।पण कोई कांई भेगुंलाव्यानथि ने कोई कांई भेगुंलेईजता नथि ।। तोपण तेसंसारनो त्यागकरिने भगवाननीसेवामांर
हेवातुंनथि।। तेनुंनामप्रमादछे॥ एवाजेमहापापरुपजेप्रमाद तेनेटालवो तेबहुकठण छे ।।एतोज्यारेटले तोजेनेघणाकज
न्मनांपुन्यकृत होय ।।तेने संसारनां त्यागकरिनेप्रत्यक्ष भगवानने भगवाननासंतनीसेवामांरहेवाय छे।।अनेज्यारेप्रत्य-

श भगवानने संतनी सेवामां अखंड रहे छे त्यारे तेने प्रमाद रुपि दोष टलि जाय छे ।। अने प्रमाद रुपि दोषनो त्याग करिने वैराग
ने पामिने संसारनो त्याग करिने प्रत्यक्ष भगवानना संबंधमां रह्यो होय तोपण त्यां सुधि आत्यंतिक ज्ञान थयुं न होय त्यां सुधि
तेने आलस रुपि दोष रहि जाय छे ।। कहेतां जेम प्रमादे करिने न करवानी क्रिया रात दहाडो करतो हतो ।। तेनो त्याग करिने ते
बिजरिते करवा योग्य जे प्रत्यक्ष भगवाननी नवधा भक्ति रुप क्रिया तेने त्याग पणाने माने करिने सीथलपणे वरते तेनुं नाम आल
स रुपि महा मोटो दोष कहेवाय ।। अने जेमां आलस रुपि दोष होय तेना उपर भगवान प्रसन्न थता नथि ।। माटे जे त्यागि थयो हो-
य तेने आलस रुपि दोष रहि जाय छे ।। अने ज्यां सुधि आलस रुपि दोष होय त्यां सुधि ते आत्यंतिक मोक्ष जे अक्षरधाम तेने
पामे नहिं ।। अने जिवमात्रने विषे चार दोष रह्या छे ।। ते चार दोष जे ने टले ते अक्षरधामने पामे छे ।। ते चार दोष किया तो एक
मोह ।। मोह एटले सत्यने असत्य मानवुं ने असत्यने सत्य मानवुं ।। अने बिजो दोष महा मोह छे ।। महा मोह एटले सत्य असत्य
कोई वातनी खबर जेने नथि ।। अने त्रिजो दोष प्रमाद छे ।। प्रमाद एटले करवानुं न करवुं ने न करवानुं करवुं ने चोथो दोष आ
लस छे ।। आलस एटले न करवानुं छे तेनो त्याग कर्यो होय तोपण जे करवानुं छे ते नथि थतुं ।। तेने आलस जाणवो अने जे
ने विषे ए चारे दोष वर्तता होय ते पामर जिव कहेवाय ने तेने पापनी के पुन्यनी खबर होय नहिं तेनुं नाम महामोह कहिये ।।
अने ते महामोह नेटाल्यानो उपाय छे जे ।। कोई महात्मा पुरुषनो समागम करिने कर्मकांडना आस्तिक ग्रंथ सांभलवा ।। ते कर्म
कांडमां शुं कह्युं छे ।। तो विधि निषेध कह्या छे ।। तथा स्वर्ग ने नर्क कह्युं छे ।। तथा पाप ने पुन्य कह्युं छे ।। तेमां जे निषेध कर्म करे छे ।। क-
हेतां न करवानुं करे छे ।। तेने महा पाप लागे छे ।। ने ते जिव नर्कमां जाय छे ने महा दुःख तेने भोगववां पडे छे अने जे विधिनि प्रमा
णे वरते छे ।। तेने महा पुन्य थाय छे ।। ने ते जिव स्वर्गमां जाय छे ।। ने महा सुख ने पामे छे ।। पछे जिवमात्रने सुख तो सारुं ला
गे छे ।। ने दुःख भुडुं लागे छे ।। माटे निषेध कर्मनो त्याग करिने स्वर्गादिकना लोभ सारु विधि प्रमाणे पुन्य कर्मने करवामां
दे ।। पछे तेने धर्मने विषे आस्था बेसे छे ।। ने ते जिवने महा मोह टले छे ।। अने महामोह टल्यो होय तोपण तेने मोह रहे छे ।।

नेतेजिव पामरमतिने विषयिथायछे॥ अनेजे विषयीजिव होय तेनेपंचविषयनांसुखअसत्यछे॥ तेने विपसत्यतारहेछे अनेआत्माने परमात्मानेविषेअसत्यभावरहेछे ॥ अनेजेविषयिजिवहोय तेदेहनेजपोतानुंरुप मानेछे॥ तेनुंनाम मोह जाणवो॥ अनेते मोहनेटालवानोउपाय छेजे॥ प्रत्यक्षभगवान तथाभगवानना एकांतिकपंचविषयनात्यागि संत तेनामुखथकि ज्ञानकांडनुंश्रवण करवुं॥ कहेतांशास्त्रशास्त्रनेतानेकरिनेदेहआत्मानो विवेकजाणिने पिंडब्रह्मांडादिकप्रकृतिनुंकार्य सर्वे मिथ्याजाणिने तेसर्वेनोधारणनोकरनारोजे आत्मातेसत्यछेएम समजिनेआत्मारूपेवरतेकहेतां निरवासनिकपणेवरतेतेने मोहटलेछे ॥ अनेज्यारे मोहटलेछे त्यारे ते जिवविषयीमटिने मुमुक्षुथायछे॥ अनेमुमुक्षुथयो होय तोपण तेनेप्रमादरहेछे अने तेप्रमादने टालवानोउपाय छेजे प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संत तेने शरणे जईने तेनामुखथकि चारप्रकारना प्रलयनोविचारसांभलिने पिंडब्रह्मांडादिकने असत्यनेदुःखरुपनेपापरूपजाणीने तेथकि वैरागनेपामिनेतेनोत्यागकरे त्यारे तेनेप्रमादरूपीदोषटलिजायछे ॥ अनेजेनेप्रमादटलेछे तेमुमुक्षु मटिने मुक्तथायछे ॥ अनेजेजिवमुक्त थयो तेजे तेदेहनासुखसंबंधि सर्वे क्रियाथकि उदासथायछे ॥ अनेतेजेमपोतानादेहनासुखसंबंधिक्रियामांउदासथयो तेम तेने भगवानने भगवानना संतनी सेवानेविषे पणउदासपणुंरहेछे तेउदासपणुं ज्ञानेकरिनेरहेछे तो आलसरूपीदोषेकरिनेरहेछे ॥ तेआलसरूपिजेमहादोष तेक्यारेटले तोजेने आत्यंतिकज्ञानेकरिने आलसटलिगईहोय एवाजे एकांतिक संत तेनोसमागम करिनेतेथकि भगवानने भगवानना संतनीसेवानोजे अलौकिकमहिमा नेतेनोजे अपरमितलाभ तेनेसमजे नेआत्यंतिकज्ञानपामिने पोताना आत्मानेअक्षरब्रह्मरूपजाणिनेए अक्षरना आधार एवाजे परब्रह्मपुरुषोत्तम भगवान तेमुनेप्रत्यक्ष मल्याछे॥ एमसमजिने तेनास्वरूपनो उत्तमनिर्विकल्पनिश्चयथाय त्यारे तेनेआलसरुपिदोष टलेछे॥ नेतेनीउपर भगवान अत्यंतप्रसन्नथायछे॥ अनेतेआत्यंतिक मोक्षनेपामेछे ॥ हवेएवाजेचारदोष तेक्यारेटलेछे॥ तो आत्यंतिक मोक्षनादाता एवाजे सर्वेअवतारनाअवतारि परब्रह्मपुरुषोत्तम भगवान तेप्रत्यक्षमले ॥ तथा भगवानना संतमलेनेते भगवानने संत नो

दृढआसरो करे तो तेनादोषसर्वेटलि जायछे ।।माटे ते सर्वेदोषटालवानो समोआजतमारे सर्वेने आव्यो छे। तेतमारां मोटां भाग्यछे

।। ।।इतिश्रीसुखसिद्धांतसमाप्तः।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ।।

।।संवत १९ओगणिसें।।१९।।ओगणिसनाकारतगसुदि।।१०।।दसमिने दिवसमहाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्रीपिपलि मध्येसोनिलालामनजिने घेरउतरादाबारनाओरडानीओसरिमां गादितकियेयुक्तढोलियाउपर विराजमानथयाहता।। अनेसर्वेजरियानीवस्त्रधारणकर्याहतां ।।नेपुष्पनां आभूषणसर्वेअंगमांसोभिरह्याहतां ।। नेकंकुनोचांदलोकर्योहतोनेपोताना मुखारविंदनीआगलसाधुनथाघणाकहरिभक्तनीसभा भराईनेबेठीहती ।।पछे महाराजकृपाकरिने पोतानाआश्रीत जे सर्वे भक्तजनतेप्रत्ये बोल्याजे।। जेने आने आदे देकरिने आत्यंतिक मोक्षपामवोहोय तेने आमारो दृढआसरो करिनेपंचविषयनोत्यागकरवो ।।अनेतेविषयत्यागकरवामां कठणपडे।। तोपण सहनशक्तीराखिने प्रथम तो बलात्कारे देदे करिने तोपंचविषय भोगववाजनहिं।। नेएवि रिते सहनशक्तिराखिनेजे विषयनो त्याग करे छे।। तेनीउपर भगवाननीकृपाथायछे नेपछे तेने भगवाननीकृपाये करिने पंचविषयनो अंतरमांथि अनिश्चोभावथई जायछे।।अनेतेने तोपछे विषयग्रहणकरवा पणकठणपडे छे।।जेमअफिणनुंबंधाण करे त्यारे प्रथमतो कठणपडे नेपछेतो तेअफिणविनाघडिकएकचालेपणनहिं तेम प्रथम तो विषयनोत्यागकरे त्यारे कठण जेवुं जणाय ।। पणपछे तो विषयनो त्यागकरवोएजतेने परमसुख जणाय छे ।।अने विषयनेभोगववाएजतेनेमहादुःखजणाय छे।।जेम वढियारा गोधलाने प्रथम एनाटोलामांथिनोखोपाडे छे त्यारे तेनेबहुवसमुं लागे छे।।

।। नेतेनाटोलानागोधलाविनाबाबरडानाख्याकरे ने लिलिचारनेगोलनेकपासियाखवरावे पणतेने मोढामांघाले नहिं ।। अनेतेनोधणिहोय तेनेपणधिरेनहिं ने भडक्याकरे।।नेपछे तेनेसहनकरीनेथोडाकदिवसरहे ।। तोतेने गोठिजायनेजिवधरके ने पछे खडखाणपणखावामांडे।।नेतेनाधणिथी प्रथमतो भडकिने नासि जतोहतो।।नेपछेतो तेने वांसे फरतो फरे ।।अनेआगलना पोताना टोलानावाछडाने संभारेपणनहिं।। नेतेनासंगनेतो

पछेमहा दुःखरुपजाणे ॥ तेम जिवनेप्रथम तो पंचविषयनो त्याग करीने संतनासमागममां रहेवुंपडे तेकठणजेवुंजणाय छे।।पण
जो तेने सहनशक्ति राखिनेसमागममांपड्यो रहे तो तेनेदि वसेदिवसेअंतरमां आनंदउपजतोजाय ।।अनेतेनेविषयनेविषेदु
खदोषदेखातोजाय॥ अने पछेज्यारे तेमांदुःखने दोषजणाणा त्यारे तो तेने पंचविषय दिठापण गमे नहिं।।ने एता पंच विषयनो
त्याग करिनेसंतनासमागममां रहेवुं॥ तेनेज परम आनंद माने छे ।। माटे विषयनोत्यागकरवो तेमां प्रथमतोकठणजेवुंज-
णायखरुं पण पछे तेनेमहासुखनेशान्तिथाय छे ।। ने अद्भुतआनंदने पामे छे।। पण जो प्रथम सहनशक्तिराखिनेबलात्कारे
विषयनो त्याग करे त्यारे सुखनेपामे जेमआलोकमां कांईसुखपामवुंहोय तोतेपण जेजेप्रथमदाखडो करे छे त्यारेतेनेतेसु
खमलेछे ।। पण दाखडो कर्या विना तो मांईकसुख पण मलतुनथि ।। तोअलोकिकनेअविनाशिएवुंजे मायापर सुखते दा-
खडाविना क्यांमलेएमछे ।।अने पूर्वे पण जेणेजेणे देहना सुखनोत्याग करीने भगवानने पामवासारुं महातप कर्याछे नेदे
हनांदमनकर्यांछे तेनीउपरज भगवान प्रसन्नथया छे ।। पणते विनाचगरदाखडेकोईनीउपर भगवानप्रसन्नथया नथि।।तेप-
णनिष्कुलानंदस्वामिना किर्तनमांकह्युंछेजे॥ ॥तनसुखचायरा मरिजाय।।एनो वातदेकूर।।चंदे क्युंपाये परदू
र॥ ॥माटेदेहना सुखनोत्यागकरे॥ त्यारेजतेनाउपर भगवानराजिथाय छे ।।पण पंचविषयनी कोम नारुपिवासना-
नो त्यागकर्याविनाभगवानराजि थायनहिं ।।तेपण तुलसिदासे कह्युं छे ।।जे॥ ॥कांम त्यांराम नहिं।।राम त्यांनहि
काम।। तुलसि रविरजनि।। दोनुं नहि एकठांम॥ ।।माटेएवीरिते पंचविषयनो त्याग कर्याविना भगवानना पद
नेपमातुनथि तेसारुंसहनशक्तिराखिने पंचविषयनोत्याग करिने संतनासमागममांअखंडरहेवुंअनेते संतनेसमागमे
करिने जिवनेज्ञानथाय छे ।।ने ज्ञाने करिने भगवानना धामनेपमाय छे ।। ॥इति श्रीमुखसिद्धांतसमाप्त
॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ।।संवत् १९ ओगणिसे १९ ओगणीसना कारतग
शुदि ११ एकादशिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्णभगवान श्रीपीपलिमध्ये व्यास चतुरद्विज नेघेर उगमणा वारना

ओरडानी आगल फलिमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता ॥ अने सर्वे सोनेरि वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ ने सर्वे अंगमां पुष्पनां आ-
भूषण सोभि रह्यां हतां ॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराई ने बेठि हती पछे महाराज बो-
ल्या जे जिवने एक स्वतंत्रपणुं छे ॥ ने एक परतंत्रपणुं छे ॥ तेमां जे जिव परतंत्र कहेतां आज्ञामां वरते छे ते सुखि थाय छे ॥ कहे-
तां पोताना मननुं गमतुं मुकिने सतशास्त्र ने सद्गुरुना वचन प्रमाणे वरते छे ने धर्ममां दृढपणे रहे छे ॥ ते महा सुखने पामे छे,
अने जे सतशास्त्र ने सद्गुरुना वचननो त्याग करिने पोताना मननी खुशि प्रमाणे स्वतंत्र वरते छे ॥ ते तो आलोकमां ने परलोक-
मां महादुःखने पामे छे ॥ जेम धणियातुं ढोर होय ते सुखि थाय छे ने निधणियुं ढोर होय ते दुःखि थाय छे ॥ केमके निधणियां ढो-
रने शियाले चोमासे उनाले टाढ तडको वरसादनुं दुःख भोगववुं पडे छे ॥ ने कोईकना खेतरमां पडे तो तेना धणिना धोका खा-
य छे ॥ तेम जे मननी खुशि प्रमाणे स्वतंत्र वरते छे ॥ ते जिव जे ते जन्म मृत्यु गरभवास ने चोराशिनां महा कष्ट भोगवे छे ॥
अने ज्यां सुधि जिव पोताना मननी खुशि प्रमाणे स्वतंत्र वरते छे ॥ त्यां सुधि ते जिवनुं कल्याण कोई काले थतुं नथि ॥ अने
जे जिव पोताना मननुं गमतुं मुकिने निरमानि थईने प्रगट भगवान के ते भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागि एवा
जे साधु तेनी पासे थि वर्तमान लेईने तेनी आज्ञामां वरते छे कहेतां भगवानने भगवानना संतने आधिन वरते छे तेनुं ज
कल्याण थाय छे ॥ ने ते महा सुखने पामे छे ॥ अने कोई कहेशे जे अमे तो वर्तमान पलेनहीं ॥ तो तेने तो महापापि जाणशो ॥
केमके प्रारब्धवश थईने बलदनो अवतार आवशे त्यारे केम वरतमान पालवां पडशे तथा गधेडाना अवतारमां तथा उंटिया
अवतारमां के भारादिक धणिनी आज्ञा पालवि पडशे ने महा हेरान थवुं पडशे ॥ अने कर्मवश थईने पराधिनपणे जेम ध-
णि कहेशे तेम वर्तवुं पडशे तो पण जिवनुं कल्याण नहि थाय ॥ माटे जे ने मनुष्य देह आव्यो छे ने ते एम कहे छे जे अमे तो
वरतमान पलेनहि ॥ तेने तो महापापि जाणवुं अने तेने तो असुरि जिव जाणवो ॥ अने जे दैविजिव होय ते तो वरतमाननी-
ना पाडे ज नहि ॥ अने जे दैवि जिव होय ते धर्म तो पालता ज होय ॥ तो पण ते महात्मा पुरुष पासे थी राजि थईने वरतमान लेछे

नेतेजीवनुं कल्याण थाय छे ॥ अनेजे महात्मा पुरुषवरतमान लेवरावे छे ॥ तेमां कांईतेने स्वार्थ नथि ॥ नेएनां केवल पर
उपकार माटे उपदेशआपे छे ॥ केमकेचोरि छिनाळिदारुमा टिवटलवुं ॥ वटलावबुं तेनो त्यागकरावे छे ॥ तेमांमहात्मा पुरुष
ने शोस्वार्थ छे ॥ केवल परमार्थ माटेदारवडाकरिने अधर्म थकि मुकावे छे ॥ माटेजेनेपोताना आत्मानु रुडुंकरवानिईछा
होय तेनेतोसतपुरुषनो उपकारमानिने पोतानामननुंगमतुंमुकिने सत्पुरुषनी आज्ञामां मनक्रमवचने वर्तवुं एजजि
वनीअतिशेहितकारताछे॥ ॥इतिश्रीमुख सिद्धांतसमाप्तः॥ ॥ श्रीहरिकृष्णा-
यनमोनमः॥ ॥सवत १९ओगणिशो ११ओगणिसना कारतगसुदि १२ द्वादसिने दिवस महाराजश्री
हरिकृष्ण भगवान गामश्रीपिपलिमध्ये व्यासपरसोतमबोघानाओरडानीओसरिमां गादितकियानखाविनेढोलियाउ
परविराजमान थयाहता ॥ नेसर्वेजरियानीवस्त्रधारणकर्यां हतां नेसर्वे अंगनेविषे पुष्पनाआभूषण सोभिरह्यां हतां ॥
नेललाटनेविषेकंकुनोचांदलोकर्योहतो नेपोतानामुखारविंदनीआगलसाधुतथाघणा कहरिभक्तनीसभा भराईनेबे
ठिहति ॥ पछेगाम पिपलिनाव्यासदेवकरशानवेदे महाराजने प्रश्नपुछ्युंजेहे महाराज पंचविषयनीवासनाटल्यानोशो
उपाय छे तेकहो ॥ पछेमहाराजबोल्याजेविषयनी वासनाटलवानो मुख्यउपाय तोए छे जे प्रथम तोआत्माना कल्याणने
अर्थे निष्काम भावेकरिने भगवानने भगवाननासंतनो दृढआसरो करवो ॥ अनेजेनेवासनाटलिगईहोयएवाजे भगवा
नना एकांतिक संततेनो मनक्रमवचने समागम करवो ॥ अनेसंतना समागममां रहिनेयत्नकरवो ॥ अनेयत्ननेविषे
वासनारुपि बिजनेहोमिदेवुं अनेएविरितेयत्नकरवाथकि वासनाटलिजायछे ॥ जेमझाडना बिजनेअग्निमां शेकि
नेवावे तोते बिजउगेनहि ॥ तेमयत्नरुपि अग्निनेविषेवासनारुपि बिजनेबालिनाखे तोतेनेवासनारुपिबिजमांथिउप-
न्युंजेपिंडब्रह्मांड तेनीसत्यतारुपि झाडनोनास थईजायछे ॥ माटेवासनाटलवीहोयतेनेयत्नजरुरकरवा तेमांयत्न
बेप्रकारना छे ॥ एक बाहार यत्नछे ॥ नेएकआभ्यंतरयत्न छे ॥ तेमांदेहेकरिने अधर्मअनीतिनो त्याग करिने भग

वाननेभगवाननानिरवासनीकसंततेनीसेवाकरविनेतेनेजमाडवा॥ तथावस्त्रओढाडवांनेतेनेजलपावुं॥ पत्रफलफुलआदिकजेजेपदार्थअरपण करवुंतेसर्वेबहारयत्नछे॥ अनेइंद्रियोअंतःकरणनीवृतियोनेपंचविषयनापदार्थमांथीपाछिवालिनेभगवाननास्वरुपमांजोडिदेविये॥ तथा सांख्यविचारे करिने देहआत्मानोविवेककरवो तथा भगवाननीकथाकिरतनभजनस्मरण ध्यानपुजनजपतपव्रतादिकजेजेकरवुंतेआभ्यंतरयत्नछे॥ अनेएविरितेनिष्कामभावेयत्नकरतांकरतांपोतानुंस्वरुपजेआत्मातेसाक्षात्कारदेखायछे॥ नेआत्मानेविषेरह्याएवाजेपरमात्माभगवानतेतेनेप्रगटथईनेसाक्षात्कारदर्शनआपेछे॥ अनेतेनेभगवानननास्वरूपनोउत्तमनिर्विकल्पनिश्चयथायछे॥ त्यारेतेनीवासनानांबिजबलिजायछे॥ मांटेकल्याणवाजेयत्नतेकरवाथकिवासनाटलिजायछे॥ तेसारुंजेनेवासनाटालविहोयतेनेयत्नजरुरकरवा॥ अनेयत्नकर्याविनावासनाटलेनहिं॥ नेवासनाटल्याविनाजिवनुंकल्याणथायनहिं॥ तेसारुंभगवाननेभगवाननासंतनोदृढआसरोकरिनेयत्नकरवा॥ एजवासनाटालवानोउपायछे॥ ॥इतिश्रीसुखसिद्धांतसमाप्त॥

॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥

॥ संवत् १९ ओगणिसें १९ ओगणिसनाकारतग बदि ॥२॥ बिजनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवान गाम श्रीपिपलिमध्येशादेव सिमेराजनेघेरउगमणेबारओरडानीओसरिमां गादितकियेयुक्तहोलियाउपरविराजमानथयाहता॥ नेसर्वेजरियानीवस्त्रधारणकर्यांहतांनेपुष्पनाहारकंठमांसोभिरह्याहता॥ नेपोतानामुखारविंदनीआगलसाधुतथाघणाकहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठिहती॥ पछेविरजिभक्तेमहाराजनेप्रस्नपुछ्युंजेहेमहाराजआतेत्रिसक्रोडदेवताथयाछे॥ तेशुंपुन्येकरिनेथयाहसे॥ अनेनवनाथनेचोरासिसिद्धथयाछे तेशुंसाधनेकरिनेथयाहसे॥ अनेतमारिभक्तीकरेछे तेनेशुंप्राप्तिथसेतेकहो॥ पछेमहाराजबोल्याजेसांभलोएनोउत्तरकरियेछियेजे॥ तेत्रिसक्रोडदेवताथयाछेतेतोसकामभावराखिनेधर्मअर्थनेकामरुपफलनेपामवासारुंअधर्मअनितिनोत्यागकरिनेभगवाननीउपासनाकरिछेतेणेकरिनेतेत्रिसक्रोडदेवताथयाछे॥

अने नवनाथने चोरासि सिद्ध थयाछे तेनो निष्काम भाव राखिने धर्म अर्थ काम रूप फलनो त्याग करिने प्रत्यक्ष एवा जे रूषभदेव भगवा-
न तेनी भक्ति ने उपासना करिछे ॥ तेणे करिने नवनाथने चोरासि सिद्ध थया छे ॥ अने अमारि भक्ति करे छे तेने एवि प्राप्ति थाय छे ॥ जे
अमारो आसरो करिने जे अमारु भजन करे छे तेने वेदवेदांतादिक सर्व सास्त्रनो सार एवुं जे आत्यंतिक ज्ञान तेने आपिने ब्रह्म-
रूप करिने अक्षरधामने पमाडिये छिये ॥ ते आत्यंतिक ज्ञाननुं शुं रूप छे ॥ तो धर्म ज्ञान वैराग ने महात्मे सहित प्रत्यक्ष भगवान-
नी भक्ति सिद्ध थाय तेनुं नाम आत्यंतिक ज्ञान छे ॥ तेमां धर्म ते शुं तो श्रुति स्मृतिमां कह्या जे वरणाश्रमना धर्म ते प्रमाणे दृढपणे
वरतवुं ॥ अने इंद्रियो अंतःकरणनी वृतियोने विषय थकि पाछि वालिने भगवाननी नवधा भक्तिने विषे जोडि देवियो ॥ तेनुं ना-
म धर्म कहेवाय ॥ अने ज्ञाननुं ए रूप छे जे जड चेतननो विवेक करवो कहेतां जड एवि जे माया ते थकि थयो जे चोविस तत्वनो दे-
ह तेने मिथ्या जाणिने ते देहने विषे रह्यो एवो जे चेतन आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप जाणवुं ॥ अने आत्मारूप थईने सुखदुःख मा-
न अपमान हाण्य वृद्ध आदिक जे देहना भाव तेने असत्य जाणिने अखंड अविनासि एवो जे ब्रह्मरूप आत्मा तेने विषे दृढ स्थिति
पामवुं तेनुं नाम ज्ञान कहिये ॥ अने वैरागनुं रूप ए छे जे प्रकृतिपुरुष थकि उत्पन्न थयुं जे पिंड ब्रह्मांडादिक सर्व पदार्थ तेने नि-
त्य निमित प्राकृतने आत्यंतिक ए चार प्रकारना प्रलये करिने नास पमाडिने तेने दुःखरूप ने पापरूप जाणिने तेनी अंतरमां
अत्यंत अरुचि करिने पोते केवल आत्मारूप थईने भगवानने विषे अत्यंत प्रीती करवी ॥ तेने वैराग जाणवो ॥ अने भक्ति-
नुं रूप ए छे जे ॥ चौदलोकनुं एक ब्रह्मांड छे ॥ एवा एवा अनंत कोटि ब्रह्मांड तेनी उत्पत्ति स्थितिने प्रलय ते थाय छे जे थकि
एवा एक प्रकृतिपुरुष छे ॥ ने एवा एवा अनंत कोटि प्रकृतिपुरुष ते अक्षरब्रह्मना एक रोमना खाडाने विषे लिन थई जाय छे
अने एवुं जे अक्षरब्रह्म तेना साधर्मपणाने पाम्या एवा अनंत कोटि अक्षररूप मुक्त छे ते सर्वे मुक्तना स्वामि ने आधार ने सर्वे
मुक्तने सुखना आपनारा एवा जे परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान दिव्यमूर्त्ति ते कृपा करिने जिवोना कल्याण करवाने अर्थे
पृथ्वि उपर पधारे छे ॥ ने मनुष्याकृतिनुं धारण करे छे ॥ ते भगवान आजे मुने प्रत्यक्ष मल्या छे ॥ एम जाणिने तेने विषे अत्यं

तस्ने देह करिने जादाई जवुं तेनुं नाम महात्म्यसहित भक्ति छे ॥ ने तेने आत्यंतिक ज्ञानपण कहेवाय ॥ अने एविरितना ज्ञाननी प्रवृत्ति छे ते प्रमाणे समजिने जे अमारि भक्ति करे छे तेने अक्षरधामनी प्राप्ति थाय छे ॥ अने जे सकाम भाव राखिने धर्ममां रहिने जे अमारि भक्ति करता हशे ॥ ते देवादिक लोकने पामशे अने देवमांथि पाछो मनुष्य थशे ने मनुष्य थईने ज्ञानने पामिने निरवासनिक थईने पण अंतजनो अक्षरधामने पामशे ॥ अने जे अमारि पासे आविने तालियो पाडतो हशे पण जो ते धर्म थकि भ्रष्ट हशे तो ते यमपुरिमां जशे ॥ अने धर्ममां रहिने जे अमारि भक्ति करे छे तेने अक्षरधामनी प्राप्ति थशे ॥ ॥

इतिश्री मुख्यसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णायनमो नमः ॥

॥ संवत् १९ ओगणिसे १९ ओगणिसना कारतिक वदि ६ छठने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्रीपिपलि मध्ये नाग देवजि मलजीने घेर उगमणे बार ओरडानी ओसरिमा गादितकिया नखाविने ढोलिया उपर विराजमान थयाहता ने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यांहतां ॥ ने सर्वे अंगने विषे पुष्पनां आभूषण शोभि रह्यांहतां ॥ ने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा कहरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे महाराजे साधुने एक प्रश्न पुछ्युं ॥ जे भगवान छे ते तो पूरणकाम छे ने अखंडानंद छे अने सर्वने सुखना दाता छे ॥ पण भगवानने बिजो कोई सुख आपे एम नथि ॥ अने भगवान तो पोते पोताने सुखे करिने ज महासुखिया छे ॥ अने बिजा अनंतने पोते सुखिया करे छे ॥ अने भगवानने कोई वस्तुजोईति नथि एवा भगवान छे ॥ तोपण सर्वे शास्त्र तथा सर्वे जे जे महात्मापुरुष ते एम कहे छे जे भगवानने तनमनधन अरपण करो तो तमारुं सारुं थाय ॥ अने वलि जे जे आपे छे ॥ तेनुं भगवान लिये पण छे ॥ अने पोते भगवान पण एम कहे छे जे तमारुं सरवस जे जे होय ते मुने अरपण करो अने शास्त्रमां पण एम कह्युं छे जे दान्य पुंन्य व्रत तपयज्ञ जे जे करवुं ॥ ते सर्व ब्रह्मार्पण करवुं ॥ अने ब्राह्मण तथा साधुने पण सर्वने एम उपदेश आपे छे जे भगवानने अर्थे आपो ते तमारुं सारुं थाय ॥ एविरिते सर्वेनुं भगवान ग्रहण करे छे ॥ त्यारे नाएम जाता भगवान मुख्याठस्या ने सौ कर्त्ता ब्रह्मावाला भ-

गवानकहेवाय॥माटे तेनुंकेम हशेतेकहो॥ पछिधर्मानंद स्वामि ॥तथाअक्षरमुक्तानंदस्वामियेउत्तरकरवामांड्योपण
थयोनहिं ॥पछेमहाराजबोल्याजेसांभलोआमेएनोउत्तरकरियेजे भगवान् तोभूख्यानथि ॥नेत्रसा वालापण नथिने
भगवानतोपूरणकामछे ॥अनेजेजिवछे तेअपूरण छे ॥माटेए अपूरण एवाज जिवोनेपूरण करवासारुं पूर्ण कामएवाजे
प्रत्यक्ष भगवान ते जिवो नीपेठे अपूर्णजेवासजातिथईने ते जिवोनी सेवाने ग्रहण करे छे ॥अनेते प्रत्यक्ष भगवाननी
सेवायेकरिनेअपूर्णएवाजे जिवोतें पूर्णकामथायछे।।केमके भगवानछे तेजिवमात्रना आदिकारण छे नेसर्वे जिव
ना भगवान जिवन छे॥ माटेजेजे भगवाननेआपे छे॥तेआपनारोपोतेजपामेछे ॥जेमवृक्षना मूलमां पाणिरेडे तोते
पाणी वृक्षनिडालेडाले नेपांदडे पांदडे चढिजायछे नेते वृक्ष वृद्धिनेपामेछे तेमवृक्षरुपजे जिवो तेनामूलरूप भगवा-
न छे तेभगवाननेजीवजेते भावेकरिने जेजेअर्पण करेछे तेअर्पणनोकरनारोजिवपोतेज तेसुखने पामेछे नेते जिवम
हासुखियोथायछे।।वलिजेमखेडुखेतरमांबिजवावेछे।।तेवावनारो खेडुजेते एकदाणानाहजारगणा दाणापामे
छे॥ नेतेमांखेतरने कांई रुडुंरेवुंनथि॥ नेजेजे खरीमेहेनतथिखेतरमांवावे छे।।तेने निपजआवे छे॥ तेमसुद्धभा
वेकरिनेजेजेजिव भगवाननेसंतनि सेवा करे छे।। तथाजेजेअरपणकरे छे तेजेतेअर्पण नो करनारोनेसेवानो-
करनारोपोतेजसुखने पामेछे ।।अने भगवाननेतो तेमां लेवादेवानथि ॥नेभगवानजेजेग्रहण करेछे॥ तेतोकेव
लदयायेकरिनेग्रहण करेछे ।।जेममोटोचक्रवर्त्तिराजाहोय तेनेकोईक गरिबसुद्धभावेकरिनेजमवानुंनोतरुं-
आपेत्यारे तेने घेरमेहेरकरिनेराजाजमवाजाय ते रांकने घेरतोजारनां होक जांकसांहोयतेनेजमे ।।तेशुंराजा कांई-
जारनां होकसांनो भूख्योहतो तेजमवागयो ।।जे भारे भारेपोताने घेर मेवाहता तेनेमेलिने रांकने घेरगयो माटे
राजा भूख्योतो नहोतो तोपण तेरांकउपर मेहेरबानीकरिने तेरांकने घेर राजा जमवाजायछे।।अने तेराजाने जमनां
होकसांभावेएमतोनथि।।तोपण ते रांकनो भावजोईने तेने मोज आपवासारुंनेतेनेसुखियोकरवासारुंरांक-

नां लोक जांजमे छे ॥ तेम भगवान तो अनंत कोटि ब्रह्मांड ना राजाधिराज छे ॥ ने लक्ष्मि ना स्वामि छे ने सुखना तो सागर छे ॥ एवा
जे भगवान ते पोताना सुखमां थि एक सलिल भरिने प्रकृति पुरुष ने आप्युं छे ॥ ते सुखे करिने प्रकृति पुरुष जे ते अनंत कोटि ब्रह्मां
ड उपजाववानी शक्तिने पाम्यो छे ॥ अने ते ब्रह्मांड ॥ ब्रह्मांड प्रत्ये प्रधान पुरुष महत्तत्व वैराज पुरुष तथा ब्रह्मा विष्णु शिव ॥
तथा इंद्रादिक देव रुषि गांधर्व राजा रंक पशु पक्षि आदिक सर्व जे ते भगवान ना सुखमांथी एक सलिल भरिने दिपुना रखुं ॥ ते-
णे करिने सुखिया थया छे ॥ ने ते सुख पण अपार जेवुं जणाय छे ॥ तो भगवानना सुखनो तो पार केम आवे ॥ अने भगवान ना
धामनुं जे सुख छे ॥ तेनी आगल देवादिकना सुखने तो नर्क जेवुं कह्युं छे ॥ मारे देवादिकना सुखने तो नर्क जेवुं कह्युं ॥
त्यारे मनुष्यना सुखनी तो गणतरी ज शी ॥ एतो भगवानना सुख आगल कांई ज नहिं ॥ एवा जे भगवान ते तो केवल जिवोना
उपर दया करिने सेवानुं ग्रहण करे छे ॥ तथा जे जे अर्पण करे छे ॥ तेने दया करिने ग्रहण करे छे ॥ अने ते जीवने जे जे इच्छा
होय ते ते सुखने पमाडे छे ॥ ने एमां जे निष्काम भावे सेवा भक्ति करे छे ॥ तेने तो भगवान जे ते पोताना अक्षरधामने पमा
डे छे ॥ अने जे सकामी छे ॥ तेने जे जे इच्छा होय तेने ते ते आपे छे ॥ अने एवा जे भगवान ते जे ते सर्वेनी सेवाने ग्रहण करता थका पण
कोईमां बंधाता नथी ॥ ने निर्लेप रहे छे जेम राजा जे ते रांकनां जारनां लोकनांमां सुखमांनीने बंधाय नहि ने एतो रांक उपर
दया करिने जमवा जाय छे ॥ तेम भगवान जे ते राजा देव ब्रह्मा ने प्रकृति पुरुष सुधिनां सुख तेने जार ना लोकना तुल्य दे-
खे छे ॥ मारे केवल दयाये करिने जिवोनी सेवानुं ग्रहण करे छे ॥ अने ते जीवोनी सेवाने ग्रहण करिने तेने ज सुखिया करे
छे ॥ ते मारे जेने महा सुखिया थवुं होय तेने शुद्ध भावे करिने अति दिन थईने तन मन धने करिने भगवाननी सेवा करवि
तो ते जिव महासुखने पामशे ॥ अने पूर्वे पण जेणे जेणे भगवाननी सेवा करि छे ॥ तेज महासुखने पाम्यो छे मारे भगवा
नने जे जे अर्पण करशे ॥ तेज सुखिया थशे ॥ अने जे भगवानने अर्पण नहिं करे ॥ ते कोई काले सुखिया थवाना नथी ॥ जे-
म शरिरमां हाथ पगादिक इंद्रियो छे ॥ ते जे काम काज करिने रलिने पेटने खवरावे छे अने पेट तो कांई काम काज करे

नहिं।नेबेठुंबेठुं खाय ॥त्यारे हाथपगादिके विचार कर्योजे पेटतो कोई कामकाज करे नहिं॥ ने बेठुंबेठुं खायछे ॥माटेआज आपणे पेटने खावा आपवुं नहिं॥ पछे पेटने खावा नआप्युं ॥ नेज्यां बपोर थया त्यांतो हाथपग ढिला पडवा मांड्या।नेसांजपडी त्यारे हाथपगमांथी चैतन्यजतुं रह्युं॥ त्यारे हाथपगे कह्युंजे पेट भाई अमने तेशुं थयुं॥ त्यारे पेटे कह्युंजे शुंथयुं तेशुं॥ मनेतमे खावा आप्युं नहिं ॥ तेणे करिने तमने दुःखथयुं छे॥ माटेमुनेजेतमे खावा आपोछो ॥ तेतो तमाराज सुखसारुं आपोछो॥ केमके मुने जेजे खावा आपोछो तेनोरस सर्वे हाथपगादिक इंद्रियोमां नोखो नोखो वेंचाइजायछे।। तेणेकरिने तमेज सुखिया थाओछो॥ तेमां मारे लेवुंदेवुं नथी ॥तेमएतो दृष्टांत नेएनुं सिद्धांतएछेजे ॥ भगवानने जिवजेजे अरपण करेछे ॥तेअरपणनो करनारो पोतेज सुखने पामेछे॥ तेमांजेटलुंजे जीव भगवानने अरपणकरेछेतेटलुं ते सुखपामेछे अनेजेटलुंजीव लोभे करिने पोते राखेछे॥तेटलुंतेनेदुःख रहेछे ॥केमकेजे जेआपेछेते दुःखज आपेछे।। अनेदुःखने सारे भगवान तेने सुख आपेछे॥ अनेजेटलुंजे राखेछे ॥तेटलुंतेनेदुःखरहेछे॥ त्यारेकोई कहेशेजे दुःखशुंकरवा राखता हशे ॥ तोज्यां सुधिजीवने अज्ञान छे त्यांसुधि जिवदुःखनेराखेछे॥ जेमबालक होयते सोमलखारने मोढामां नाखे ॥ त्यारे तेनां मावितर तेनेकहेजे मोढामांथी सोमलखारनेकाढिनाख।नीकरमरीजईश ॥एमकहेतो पण तेबालकने सुवानी तोखबरनथी ॥ माटे सोमलखारनेमोढामांथी काढिनाखेनहिं।पछे तेनीमा होय तेतेने फोसलावीने एमकहेजे सोमलखार तुंमने आपे तो हुं तने दूधने साकर खवरावुं ॥ पछे ते बालकजो बधाय सोमलखारने मोढामांथी काढिने तेनीमाने आपीदे तो तेबालकजीवतो रहेने दूधनेसाकर खायने सुखने पामे ॥ अनेजो अणसमजणे करिनेजेटलोसोमलखार पोताना मोढामां राखे तो तेटलुंतेने दुःखथाय छे।।तेमसोमलखाररूपजगतना पंच विषयछे ॥तेजगतना विषयने बालकजेवा जे अज्ञानीजीवछे॥ तेवासनाये करिने पंचविषयने भोगवे छे ॥ अने ते विषयने भोगववेकरिने जन्म मृत्यु गर्भवासने चोराशिमां महा दुःखने भोगवे छे ॥ ते दुःखने भगवानजाणेछे॥

पणजीवजाणतोनथी ॥ जेम सोमलखारमां दुःखछे ॥ तेने जाणे नहिं ॥ अने सुख जाणीने खाय ॥ तेम अज्ञानीजीव पंचविषयमां दुःखछे तेने जाणता नथी ॥ ने सुख जाणीने विषयने भोगवे छे ॥ ते पंचविषयने मावितर रूप भगवानने भगवानना संतते मुकावे छे ॥ तो तेने बालक जेवो जे अज्ञानीजीव छे ते हलाहल विष रूप पंच विषय तेने त्याग करता नथी ॥ पछे ते अज्ञानीजीवोने देवादिकना सुखनो लोभ देखाडिने विषयनो त्याग करावे छे ॥ अने ते जीवोए पंचविषयना पदार्थमां मानमान्यो छे ॥ माटे ज्यां त्यां तो नाखि दियेनहि ॥ ते सारु तेने भगवानने संत जे ते एम लोभ देखाडे छे जे जो तुं भगवानने अरपण करे तो तेमांथी तने भगवान महा सुख आपशे ॥ पछे जेटलुं भगवानने अर्पण करे छे तेटलुं तेने सुख थाय छे ॥ अने जेटलुं जे अज्ञाने करिने बाकी राखे छे ॥ तेटलुं तेने दुःख रहे छे ॥ अने जे पोतानुं सर्व सतनमनधन भगवानने अर्पण करे छे ते जीवजे तेनी वासनीक ब्रह्मरूप थईने भगवानना अक्षरधामने पामे छे ॥ अने जेटलि जेने वासना रहे छे ॥ तेटलुं तेने जन्म मृत्यु रुपि महादुःख रहे छे ॥ माटे भगवानने भगवानना नीरवासनीक संत तेने जे जे अरपण करे छे ते पोताना सुख सारु करे छे ॥ पण भगवानने भगवानना संतने तेमां रंच मात्र स्वार्थ नथी ॥ अने ए तो जेम बालक पासे थी एनी मा सोमलखार मागि लिये ॥ तेम भगवान जे ते केवल दया करिने सर्वे जीवोनी सेवानुं ग्रहण करे छे ॥ अने ग्रहण करता थका पण तेमां भगवान बंधाता नथी ॥ ने निर्लेप थका वर्त्ते छे ॥ जेम कमल जलनुं पान छे ते जलमां रह्युं थकुं जलमां लोपातुं नथी ॥ तेम भगवान छे ते पण मनुष्याकृतिनुं धारण करिने सर्वे मनुष्यनी सेवानुं ग्रहण करता थका पण निर्लेप रहे छे ॥ अने देवमां भगवान देहनुं धारण करे छे ॥ त्यारे सर्व देवनी सेवाने ग्रहण करता थका पण तेथी पर वरते छे ॥ अने बिजा जीवजो भगवानना बादले हूने सेवा करावे ॥ अथवा कोईनुं काई पदार्थ ग्रहण करे ॥ तो ते सेवाना करावनारो पदार्थनुं ग्रहण करनारो पुरुष जे ते तेमां लोभाईने भ्रष्ट थई जाय छे ॥ तेम सुजे एवो मोटो देव ब्रह्मादिक जेवो होय तो पण ते पंचविषयनुं ग्रहण करिने उगरवाने कोई समर्थ नथी ॥ जेम बालकना मोढा मांथी सोमलखार काढि

लेईने बिजुंबाळक खावाजाय ॥ तो तेबाळक ना प्राणजाय ॥ तेमज्यां सुधिजेने पंच विषयनी वासना छे ॥ त्यां सुधि ते पंच विषयनुं ग्रहण करवा जशे तो तेजरुर भ्रष्ट थया विना रहेशे नहिं ॥ माटे सेवा करवा योग्य अने सर्वे जीवमात्रने सर्व सन्अरपण करवा यो ग्य एवा तो एक भगवानज छे ॥ केंमके भगवान एक कोई विषयमां लोभाय एवा नथी ॥ जेम बाळकनी जे मा छे ॥ ते बाळकना मोहामांथी सोमल खारने लेईने पोते तेने नाखि दिये छे ॥ पण तेने खाति नथी ॥ केमके तेनी माए सोमल खारमां मृत्युं जाण्युं छे ॥ तेम सोमल खार रूप जे पंच विषयनां पदार्थ तेने बाळकरुप एवा जे अज्ञानी वासनावाळा जीव ॥ तेनी पासेथी लेईने भगवानने भगवानना संत जे ते जिवने नीरवासनीक करिने महासुखने पमाडे छे ॥ अने भगवानने संत पोते मायापर निरलेपपणे असंगि वरते छे ॥ पण पोते तेमां कांई लोभाता नथी ॥ माटे भगवान तो जिवो उपर कृपा करिने मनुष्य जेवा सजाति थईने सर्वे जीवोनी सेवानुं ग्रहण करे छे ॥ अने जे जे जिव सेवा करे छे ॥ ने जे पोतानुं सर्व स अर्पण करे छे ॥ ते जिव महासुखियो थाय छे ॥ माटे भगवान तो पूरण काम ने अखंडानंद छे ॥ ने पोते पोताने सुखे करिने ज सुखिया छे ॥ पण बिजा जिवोने पोतानुं सुख पमाडवा सारु सर्वे जीवोनुं सर्व ग्रहण करे छे ॥ माटे जेने महासुखिया थवुं होय तेने पोतानु तन मन धनादिक सर्वस भगवानने अर्पण करवुं ॥ ॥

॥ इति श्रीमुख सिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः ॥

संवत १९ ओगणिसें १९ ओगणिसना कारतक वद ८ अष्टमिने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान ॥ गाम श्री पिपलि मध्ये श्रा त्रिकम झवेरने घेर आथमणे बारे ओरडानी ओसरिमां गादितकिये युक्त ढोलिया उपर बिराजमान थया हता ॥ ने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हता ॥ ने मुस्तके गुलाबि रंगनो फेटो बांध्यो हतो ॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे त्रा देवसी मेराजे महाराजने प्रश्न पुछ्युं जे ॥ हे महाराज ॥ आ जगतमां मनुष्य मरि जाय छे ॥ तेनी वांसे केटलाक श्राद्धादिक क्रिया करे छे ने केटलाक नथी करता ॥

माटे ते श्राद्धादिक करे छे तेए मरनारानो जीव पामतो हशे के नहिं ॥ पामतो होय ते कहो ॥ पछे महाराज बोल्याजे श्राद्धादिक क्रियाकरवी ते सत्य छे ॥ अने ते मरनारानो जीव पण सर्वे पामे छे ॥ तेपण सत्य छे ॥ केमके एश्राद्धादिक कर्मसर्वे वेदमांकहेलुंछे ॥ अने जे वेद छे ते भगवानना मूखनी वाणि छे ॥ माटे जे जे जियने वांसे वेदविधिप्रमाणे करे छे ॥ तेना फलने भगवान पहोंचाडे छे ॥ केमके भगवान छे ते सर्व जिवोना कर्मना फलना आपनारा छे ॥ ते जे जीवनां जेवां कर्म होय तेने तेवुं फल पमाडे छे ॥ केमके जो एम फल आपता नहोय तो दानपून्य जपतप व्रतादिक साधन शुंकरवाकरे ॥ माटे दानपुन्यादिक जेजे करे छे ॥ तेनुं फल मुवाकेडे बिजेजन्मे जरूर भगवान पमाडे छे ॥ तेजो न पमाडता होय तो शुंकरवाकरे ॥ माटे जे जे करे छे ॥ ते ते जीव जरूर पामे छे ॥ ते सारु सर्वेना धर्ममां जपतपादिक साधन कह्यां छे अने ते कह्या प्रमाणे जेजे करे छे ॥ तेनुं जरूर कल्याण थाय छे ॥ माटे मुवाने वांसे पण जेजे श्राद्धादिक करे छे तेना फलने पण भगवान पहोंचाडवाने समरथ छे ॥ जेम अंग्रेज सरकारे तार बांध्यो छे ॥ ते हजारो गाउनी वात ते जेनी जे प्रमाणे होय तेनी ते प्रमाणे एक पलवारमां तारमां पहोंचाडे छे ॥ तेम भगवान सर्वेना अंतरजामि छे ॥ ते जे जीव जेवां कर्म करे छे ॥ तेने ते वुं फल आपे छे ॥ माटे जे जीव मरे छे ॥ तेनी वासना ज्यां थि मुवो होय त्यां रहे छे अने ते मरनारानो पण ते घरने विषे तथा धनमाल गामगरासने विषे भाग छे ॥ तथा सगा कुटुंबिने विषे पण तेनी वासना छे ॥ ते सारु तेने वांसे जेजे करे छे ॥ ते ते मरनारो जरूर पामे छे ॥ अने जे कोईक शास्त्रमां श्राद्धादिकनी ना पाडि हशे ॥ ते तो एमना पाडि हशे जे कोईक भगवाननो भक्त होय ॥ तेणे भगवानने शरणे जईने धर्म ज्ञानने वैराग ने महात्मे सहित भगवाननी भक्ति सिद्ध करिने पिंडब्रह्मांडादिक सर्व पदार्थने विषेथी वासना टालिने पोते ब्रह्मरूप थईने सिद्धदशाने पाम्यो होय ने तेनो देह पडे त्यारे तेनो आत्मा तो महामुक्त छे ॥ माटे ते तो भगवानना अक्षरधामने पामे छे ॥ अने तेने कांई बाकि पामवुं रहेतुं नथी माटे तेने अर्थे श्राद्धादिकनी ना पाडी छे ॥ जे एवा मुक्त थया होय तेने कांई पामवुं रह्युं नथि ॥ केमके वासनाबालाजिवने पामवानी लालच होय ॥ पण

जे निरवासनि कथयां होय तेने आलोकना सुख पामवानी इछा होयनहि ॥ अने एवो जे मुक्त होय तेने वांसे कोई श्राद्धादिक कर्म करे एम पण होयनहि ॥ केमके एतो वैरागने पामिने सर्व संबंधिनो ने सर्व धन मालनो त्याग करिने भेख लेई ने बिजा जिवोना कल्याणने अर्थे पृथ्वीने विषे फरता होय तेने कोण श्राद्धादिक करे ॥ अने तेने करायवानुं पण कांई बाकि रह्युं नथि ॥ माटे एवा मुक्तनी वांसे श्राद्धादिक करवानी ना पाडि छे ॥ अने जेने वासना होय तेने वांसे तो श्राद्धादिक जरुर करवुं ॥ अने ते जिव पामे छे एवात पण खरि छे ॥ अने जे भगवान भजिने निरवासनीक थयो होय तेने कांई करवु रह्युं नथि ॥ माटे शास्त्रना मर्मने जाण्या विना एक कहे छे जे श्राद्धादिक करवुं ने एक कहे छे जे न करवुं ॥ ते समज्या विना वादविवाद करे छे ॥ पण श्राद्धादिक कर्वु ते ज सत्य छे ॥ अने ए विरीते जे जे विधि निषेधने पाले छे तेनुं ज कोई क दहाडे कल्याण थाय छे ॥ अने जे विधिनिषेधने खोटा कहिने तेने पालता नथि ते तो महापापि छे ॥ ने नास्तीक छे ॥ अने तेनुं कल्याण पण कोई काले थतुं नथी ॥ ॥ इतिश्री मुखसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्री हरिकृष्णायनमो नमः ॥ ॥ संवत् ॥१९॥ ओगणिसे १९ ओगणिसना कारतग वदि १२ द्वादशीने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री पीपलि मध्ये व्यास भगवान वालजीने घेर उगमणे बार ओरडानी ओसरिमां हिंडोला खाट उपर विराजमान थया हता ॥ ने सर्व जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पुष्पनां आभूषण सर्व अंगमां शोभि रह्यां हतां ने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ अने पोताना मुखारविंदनी आगल संतमंडल तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हती ॥ पछे महाराज बोल्या जे जिवमात्रने बे वातनो खप छे ॥ एक तो देहनी रक्षा हने अर्थे द्रव्य जोईये ॥ ते द्रव्यनो मनुष्य मात्रने खप छे ॥ अने बिजुं आत्माने जन्म मृत्युने गर्भवास रुपि महाकष्ट छे तेने टालने अर्थे ने आत्माने कल्याणने अर्थे जिवने भगवाननो खप छे ॥ अने ते द्रव्यने अर्थे ने भगवानने भजवाने अर्थे उद्यम पण जिव सर्वे करे छे ॥ पण तेमां जे रीते द्रव्य मलवानो उपाय छे ॥ ते रीते उद्यम करे तो तेने द्रव्य मले छे ॥ अने ते उपायने

मुकिने बिजीरीते द्रव्य नी इछा करे छे॥ तेने कोईकाले द्रव्य मलतुं नथि॥ हवे ते द्रव्य मलवा नो ख्रो उपाय छे॥ तो पोता
ना कुलने घटित कहे ताथ। णियाने वेपार करवो॥ खेडुने खेड करवी॥ ब्राह्मण ने विद्या भणिने यज्ञादिक करावबुं॥ क्षत्रि
ने पोताना गाम गरास होय तेमांथि॥ अथवा कोईकनी चाकरि मंडाववी॥ ने शुद्रने त्रणवर्णनी सेवा करवि॥ एवीरीते
सउ सउनो उद्यम कह्यो होय ते प्रमाणे करीने द्रव्य कमावुं॥ तो तेने द्रव्य मले छे॥ ने तेने देह निरवाह सुखेथि थाय छे अने जे
एवी रितनो सत्य उपाय छे तेने पडतो मुकिने कोई कीमियो सोधे छे॥ जे मुने किमियो मले तो हुं धनवान थाउं॥ अने कोई
कहे से जे देवदेवियो नी उपासना करुं ने ते मादारे सहाय थाय ते मुने द्रव्य आपे॥ तथा कोईक कहेशे जेमुने अंजन विद्या मले
तो प्रथविमां द्रव्य होय तेने हुं भालुं ते त्यांथि खोदि लाविने धनवान थाउं॥ तथा कहेशे के मुने कोईक योगि मले ते वचन आ
पे तो मारो भंडार भराई जाय॥ एवि रीते सत्य उपाय ने मुकिने खोटे चाले कीमियादिके करिने द्रव्य ने ईछे छे॥ तेने कोई काले
द्रव्य मलतुं नथी॥ ने ते महादेरान थाय छे॥ माटे एवा असत उपाय ने मेलीने सत्य उपाय जे वरणाश्रम ने घटित एवो उद्यम-
करिने द्रव्य कमावुं॥ ने तेणे करिने देह नीरवाह करवो॥ एज सुखेथी देह निरवाह थवानो उपाय छे ने ते ने द्रव्य पण मले छे
॥ ने सुख ने पामे छे॥ अने हवे आत्माना कल्याणने अर्थे सतुरुषनो आशरो करिने ते थकि ज्ञान पामवुं॥ ने धर्मज्ञान वै-
राग्ये सहित भगवाननी भक्ति करवि॥ अने एवि रीते धर्म ज्ञानादिके सहित जे भगवान रामकृष्णादिकनी दृढ उपासना
करे छे तेने भगवान प्रत्यक्ष मले छे॥ ने तेनुं कल्याण थाय छे। अने एवि रीते धर्म ज्ञानादिक साधन विना ने प्रत्यक्ष राम-
कृष्णादिक भगवाननी उपासना विना असत पुरुषना संगे करिने कहेशे जे सर्व भगवान छे॥ ने हुं पण भगवान छुं एम स-
जिशुं एटले आपणुं कल्याण थशे तथा केटलाक कहेशे के सर्वमां ब्रह्म भालिने वरणावरणिनो संषय टालिशुं एटले क
ल्याण थशे तथा कहेशे के भैरवजप तथा कमल पुजा रवाई ये तो कल्याण थाय॥ एविरीते असत्य उपायने मारगे
चाले छे॥ तेने कोई काले भगवान मलता नथि॥ ने तेनुं कल्याण पण कोई काले थतुं नथी॥ माटे एवा अवला मारगने

मे लिनेसत्यउपायजेवेदशास्त्रप्रमाणेसत्पुरुषनासंग थकि धर्म ज्ञानादिक साधनने दृढकरिने रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवाननी निष्कामभावे भक्ति करविनेसत्संगकरवो तोतेणे करिने तेनीउपर भगवान प्रसन्नथईने तेने दरशनआपेछे॥ ने ते जिवनुंकल्याणथायछे॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्१९ ओगणिसं१९ ओगणिसना पोस् शुदि।१।पडवानेदिवसमहाराजश्री हरिकृष्णभगवानगामश्रीपछ्मममध्येपटेलमुलानेघेरउगमणाबारनाओरडानी ओसरीमांगादितकियानखाविनेढोलियाउपर विराजमान थयाहताने सर्वे जरियानीवस्त्र धारण कर्यांहतांनेपोतानामुखार्विंदनीआगलसाधुतथाघणाकहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठिहती॥पछेमहाराजनीआर्त्ति धुन्य थयापछीमहाराजबोल्याजेजेनेकांईपुछवुंहोयतेपुछो॥पछेमुलेपटेलेपुछ्युंजेहेमहाराजजेनेआलोकमांसारुंहोयतेनुंपरलोकमांपणसारुंथायछे॥केनथिथतुं॥अनेजेनेआलोकमांभुडुंहोयतेनेपरलोकमांभुडुंथायछेएमहशेजेकेनहिहोय॥अनेअजुगहविनेनेअमारेतोआलोकमांपणबेत्रणपेढिथयोलाजआबरुनेवेवारमांसारुनेसारुंछे॥अनेपरलोकमांपणतमेसाक्षात्कारमल्यातेथिसारुंथयुं॥एमजोतांतोजणायछेजेसारेसारुंजथायछे॥पणहवेतेनुंतमेकहोतेखरुं॥पछेमहाराजबोल्याजेतेवाततोखरीछे॥केमकेप्रथमजिवज्यारे मोक्षनेमारगेचालेछे॥त्यारेतेनेपहेलोधर्मदृढथायछे॥अनेतेधर्मेकरिनेअर्थप्राप्तथायछे॥अनेअर्थेकरिनेकामभोगवेछेकहेतांआलोकमांदेहनीरवाहनोव्यवहारतेसरखीरीतेचालतोहोय॥अनेतेनेजमोक्षनादातातेप्रत्यक्षमलेछे॥माटेधर्मअर्थनेकामेकरिनेआलोकमांपणलाजआबरुनेवेहेवारमांसारुंहोयअनेतेनेप्रत्यक्षज्ञानदातामलेतेणेकरिनेपरलोकमांपणसारुंथायछे॥अनेवलिभगवानछे॥तेजेरितेजिवनुंसारुंथायतेमकरे॥एयाछेमाटेकेटलाकनेतोआलोकनांसारामांनरसुंहोयनेकेटलाकनेनरसामांसारुंहोय॥तेसारुंकोईजिवमुमुक्षुहोयनेतेनेधन्यस्त्रियादिकपदार्थबंधनकरेएमहोयतोतेपदार्थ

नोनासकरेछे।। त्यारेआलोकमांतोतेनुंभुडुंकहेवाय ।।पणतेनाआत्मानुंअतिशेसारुंछे।।माटेएविरिते भुडुंतेपण सारुंछे।।पछेवलिमुलेपरेले बिजुंप्रश्नपुछ्युंजेआत्मानेसाक्षात्कारदेखवोतेमांशुंआडुंआवेछेपछेमहाराजबोल्याजे आत्मानेदेखवोतेमांप्रथमतोदेहाभिमानआडुंआवेछेनेदेहाभिमानेकरिनेपंचविषयनुंआवरणछे।। अनेविषयनी आशक्तियेकरिनेकामक्रोधस्वादस्नेहमानतेनेविषेजिवअथराईगयोछेनेतेणेकरिनेआत्मानिष्ठातोबहारदृष्टिने पामिनेस्थूलभावनेपामिगयोछे।।माटेआत्मानेदेखवोतेमांदेहाभिमानेकरिनेपंचविषयमांआशक्ति तथाकामा- दिकदोषतेआडाआवेछे।।जेमकोईकतलावमांअतिशेझिणिवस्तुपडिहोयनेतेतलावनेभेंसोतथापाडातेणमांहे पडिनेडोलिनाख्युंहोय।। तोतेवस्तुदेखायनहिं।। तेमअंतःकरणरूपतलावछे।।तेमांअतिसूक्ष्मथीपणसूक्ष्मएवोजे आत्मातेअनादिकालनोपड्योछे।।पणतेअंतःकर्णरूपतलावनेपंचविषयरूपिभेंसोतथाकामक्रोधादिकदोषरूपिपा डातेणेडोलिनाख्युंछे।।माटेतेडोलेकरिनेआत्मादेखातोनथितेअंतःकरणनोडोलमटिजायनेअंतःकर्णनिर्मलथा य।।त्यारेआत्मासाक्षात्देखाय।।जेमतलावमांथीभेंसोतथापाडातेनेकाढिमुकेतोतलावनिर्मलथाय।।नेत्यारेतेमां जेवस्तुहोयतेदेखाय।। तेमपंचविषयमांआशक्तिरूपभेंसो तथाकामक्रोधादिकदोषरूपपाडातेनोत्यागकरेत्यारेअं तःकरणशुद्धनिरमलथाय।।अनेज्यारेअंतःकरणशुद्धनिर्मलथायछेत्यारे।।तेनेपोतानोआत्मासाक्षात्कारदेखाय छे।।अनेआत्मानेविषेरह्याएवाजेपरमात्माभगवानतेपणदेखायछे।।माटेआत्मानेदेखवामांदेहाभिमानेकरिनेपंच विषयनीवासनाआडिआवेछे।।माटेवासनाटलेतोआत्मादेखायएतमाराप्रश्ननोउत्तरछे।। ।।

इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ।।संवत१९ओ- गणिसें१९ओगणिसनापोषशुदि२ बिजनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्ण भगवानगामश्रीपछममध्येकोलिसयजि भक्तनेघेरआथमणाबारनाओरडानीओसरिमांविराजमानथयाहताअनेसवेजरियानीवस्त्रधारणकर्याहता।।

नेपुष्पनां आभूषण सर्वे अंग मां त्रो भिरत्यां हतां नेपोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा कहरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हतिपछे महाराजनी आर्त्ति धून्य थया केडे मूलेपटेलेमहाराजने प्रश्नपुछ्युं जेहेमहाराज॥ अमने एम जणाय छेजे पूर्वे भगवानना अवतार थईगयाछे तेनुंज्ञान शास्त्र द्वाराये सांभल्युंछे॥ ने आज पण तमारुंज्ञान सांभलियेछिये॥ तेआ वुं मायापरस्क शुद्ध आत्यंतिक ज्ञान बहुधा कोईए आप्युंजणातुंनथि॥ केमके बिजा अवतारमां तो ज्ञान विना बिजा कार्य कर्यांछे॥ अने ज्ञानतो कोई अवतारमां एक भक्तने आप्युंछे॥ ने कोई अवतारमां बे भक्तने ज्ञान आप्युंछे॥ ने कोई अव तारमां दसजणाने ज्ञान आप्युंछे॥ अने आजतो केवल मायापरस्क शुद्धज्ञाननि बहु प्रवृत्ति छे॥ तेनुं केमहशे ते कहो॥ पछे महाराज बोल्या जे भगवानना अवतार जेजे थायछे॥ ते जिवोने मुक्ति आपवा सारुं थायछे॥ ते मुक्ति आपवामां जि वने चोविस तत्व आडां आवरण करे छे॥ ते चोविस तत्वना आवरणने टालवा सारु भगवानना चोविस अवतार थायछे तेमां जेने चोविसे तत्वनुं आवरण होय तेने पेहेलुं प्रथवीनुं आवरण टालवा सारुं पृथ्विनुं रुप देखाडीने पृथ्विनुं आवर ण टलावे छे॥ अने ते समे ते या ज्ञाननी प्रवृति होयछे॥ ने ते पछे जलनुं आवरण टालवा सारुं जलनुं रुप देखाडिने तेनुं आवर्ण टलावे छे ने ते समे ते वा ज्ञाननी प्रवृत्ति होयछे॥ अने ते केडे अग्निनुं आवर्ण टलाववा सारुं अग्निनुं स्वरुप दे- खाडिने॥ अग्निनुं आवर्ण टलावेछे॥ ने ते समे तेवा ज्ञाननी प्रवृत्ति होयछे॥ एविरीते चोविस तत्वना आवर्णने टला ववा सारुं॥ चोविस तत्वे करिने ज्ञान आपेछे॥ अने जेने चोविस तत्वनुं आवर्ण टलि गयुं होय तेने आत्मानुं स्वरु- रुप देखाडिने॥ आत्माये करिने आत्यंतिक ज्ञान आपेछे॥ त्यारे ते समे आत्यंतिक ज्ञाननीज प्रवृत्ति बहु होय- छे॥ तेमां जेने एक आवरण टल्युं होय॥ ते पण मुक्त कहेवायछे॥ अने जेने बे आवर्ण टल्यां होय ते पण मुक्त कहेवा यछे॥ अने जेने चोविसे तत्वनुं आवर्ण टल्युं होय ते मुक्त कहेवायछे॥ अने जेने सर्वे आवर्ण टलिने आत्यंतिक ज्ञा नने पामिने अक्षर ब्रह्मरुप थईने॥ परब्रह्मने पाम्या ते खरा मुक्त छे॥ अने तेने जन्म मरण टलि जायछे॥ अने

बिजामुक्त कह्या ते तो जे एवो जिवने तत्वथि मुकायो होय तेटलो ते मुक्त कहेवाय अने बिजांबा कि जे आवर्ण रह्यां होय तेणेक
रिने जन्म धरवो पडे छे ॥ अने ते मुक्त देह धरे त्यारे तेना देह मां चोविसे तत्व तो देखाय खरां पण जेने जे आवरण टल्युं होय तेनी
वासना तेने होय नहिं ॥ ने एविरीते जेने चोविसे तत्वनुं आवर्ण टलि गयुं होय तो पण ज्यां सुधि आत्यंतिक ज्ञान थयुं न होय त्यां सु
धि ते जन्म धरे छे ॥ अने तेने विषे चोविसे तत्व देखाय खरां ॥ पण तेने तेनी वासना होय नहिं ॥ ने ते तो आत्मा रुपे वर्ते छे ॥ अ
ने तेम ज भगवान प्रगट थया होय तेने विषे पण चोविसे तत्व देखाय छे ॥ तो पण ते तो केवल्य मुर्त्ति छे ॥ अने ते प्रगट भ
गवाननी पासे तो आत्यंतिक ज्ञान छे ॥ पण जेम मे जेवा मुक्तनो समुद थणो होय तेम मे तेवा ज्ञाननी प्रवृत्ति होय छे ॥ अने
वलि जेने एक तत्वनुं आवरण टल्युं होय तेने बे तत्व जेने टल्यां होय ते ज्ञान आपे छे ॥ अने जेने बे तत्वनुं आवरण टल्युं होय
तेने त्रण तत्वनुं आवरण जेने टल्युं होय ते ज्ञान आपे छे ॥ ने ते तेनो गुरु कहेवाय छे ॥ अने जेने चोविसे तत्वनां आवरण
टलि गयां होय ते तो सर्वने ज्ञान आपे छे ॥ ने ते सर्वेनो गुरु कहेवाय छे ॥ माटे क्यारेक भगवान पोते अवतार धारण करिने
ज्ञान आपे छे ॥ ने क्यारेक भगवाननी आज्ञाये करिने जेने चोविसे तत्वनुं आवरण टलि गयुं होय ॥ तेने अवतार धरावि
ने ज्ञान अपावे छे ॥ ते पण भगवाननो भक्त अवतार कहेवाय छे ॥ अने ज्यारे चोविसे तत्वनुं आवरण टलि गये लाएवा
जे मुक्त ते पृथ्वि उपर घणाक जन्म धरिने आव्या होय तेस मे तो सर्वे अवतारना अवतारि एवा जे अक्षरातित परब्रह्म
पुरुषोत्तम भगवान ॥ ते प्रगट थाय छे ॥ ने केवल आत्यंतिक ज्ञाननो ज बोध आपे छे माटे बिजा अवतार थई गया छे ॥
तेणे तत्वनां आवरण टलाव्यानी प्रवृत्ति बहुधा करी छे ॥ ने आ ज तो केवल आत्यंतिक ज्ञाननी ज प्रवृत्ति छे ॥ अने आ
त्यंतिक ज्ञानने विषे तत्वनां आवर्ण टालवानो पण बोध आवी जाय छे ॥ अने तत्वनां आवर्ण टाल्यानो बोध होय तेमां
आत्यंतिक ज्ञान आववुं नथि ॥ जेम चिंतामणिमां सर्वे द्रव्य रह्युं छे ॥ पण बिजा द्रव्यने विषे चिंतामणि नथि रहि तेम
आत्यंतिक ज्ञानने विषे चोविस तत्वनुं ज्ञान रह्युं छे ॥ पण चोविस तत्वना ज्ञानने विषे आत्यंतिक ज्ञान नथि रह्युं ॥

अने वलिजेममेहेता जि छोकराओने भणावेछे त्यारे प्रथमतो सर्वे छोकराओने पोतेज भणावे छे॥ नेपछेजेमजेम छो-
करा भणताजाय॥ नेवलि विजानवा छोकरा भणवा बेसे छे तेमतेम पोते पेला वर्गनेभणावे छे अेपेहेला वर्गना छो
करा बिजावर्गवालाने भणावे छे अनजेनेजेभणावे छे ते तेनो मेहेताजिक हेवाय छे॥ अनेज्यारे सर्वे छोकरा परिपूरण
भणि रहेछे त्यारे तोजे सर्वो परिमेहेताजिछे ते परिक्षालेछे॥ त्यारे तेनी विद्यानुं प्रमाणथछे॥ तेम प्रथम तो आत्यंतिक
प्रलय नेअंते जिवोनेचोविसतत्वनु ज्ञान पोते भगवानज आपेछे॥ अनेआत्यंतिक ज्ञान पण पोतेज आपेछे॥ अनेपछे
तो पोताथकि ज्ञानने पाम्याएवा जे मुक्त साधु ते द्वारे चोविस तत्वनु ज्ञान करावे छे॥ अनेतेपण भगवानना भक्त अव-
तार भगवानक हेवाय छे॥ अनेज्यारे आत्यंतिक ज्ञान आपवुं होय॥ नेआत्यंतिकज्ञानना अधिकारी घणाक मुक्तज
न्याहोय॥ त्यारे तो तेसमे पंडे भगवान ज्ञान आपे छे॥ अनेमुख्यपणे आत्यंतिक ज्ञाननी ज प्रवृत्तिकरे छे॥ माटे आ-

आ त्यंतिकज्ञाननी प्रवृत्ति करवासारुं भगवाननो सर्वोपरिपूर्ण अवतार थयो छे॥ ॥इति श्रीमुख

समे

सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥संवत १९ओगणिसे १९ओ
गणिसना पोषशुदि ३ त्रिजने दिवसमहाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीपछम मध्ये सुकलकरशनजिने घेर उ
त्तरादे बारओरडानी ओसरिमां गादित किये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता नेसर्वे जरियानी वस्त्र धारण
कर्यां हतां॥ नेपुष्पना हार कंठमां पहेर्या हता॥ नेललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो नेपोताना मुखारविंदनी
आगल साधु तथा घणा क हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हती पछे महाराजनी आर्त्ति पूजा करिने भक्तजन हाथजो
डिने बेठा हता॥ पछे अलुगड विये महाराजने प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज केटलाक माणस तो तमने भगवान जाणिने दर्शने
आवे छे॥ नेकेटलाक तो तमने ब्राह्मण जाणिने तमारे दरशने आवतां हतो॥ माटे तेसर्वने शुं फल थशे ने तेने केटलो ला
भ छे॥ तेकहो॥ पछे महाराज बोल्या जे जे अमने भगवान जाणिने अमारे दर्शने आवे छे॥ तेने तो अमारे विषे दृढ स्नेह थशे

॥अने स्नेहे करिने अमारि जे ज्ञानवार्ता तेएना अंतरमां उतरसे॥ अने जेने विषे जेने स्नेह होय तेनुं वचनपण तेणे लोपाय नहिं॥मा
टे धर्ममां पण ते दृढ रहेसे॥ अने ते धर्मे करिने इंद्रियो अंतःकरण शुद्ध थसे॥ पछे ते नें इंद्रियो अंतःकरणनि निरमलताये क-
रिने ज्ञान प्रकाश थसे॥ ने ज्ञान प्रकाशे करिने तेने पंचविषयमां वैराग थसे॥ पछे तेने पोतानुं स्वरूप जे आत्मा ते साक्षात्का
र देखासे॥ अने आत्माने विषे रह्या एवा जे परमात्मा ते पण तेने प्रत्यक्ष मूर्त्ति ते आत्माने विषे देखासे अने तेने मनुष्याकृ
त्ति मूर्त्तिने दिव्यमूर्त्ति ते एक जणासे॥ ने ते भगवाननो अलौकिक महिमा जाणिने आत्यंतिक ज्ञानने पामीने अक्षर-
धामने पामसे॥ अने जे अमने ब्राह्मण जाणिने अमारी पासे आविने अमारो गुण लेसे ने अमारी वात सांभलसे तो ते-
ने एम जणासे जे बिजा ब्राह्मण करतां तो महाराज कांईक मोटा छे खरा॥ पछे तेने दिवसे दिवसे अमारे विषे हेत थतुं जा
य छे ने ते हेते करिने जेम जेम अमारुं ज्ञान सांभलसे॥ तेम तेम तेने दिव्यभाव जणातो जसे॥ ने ते पछे॥ तेने भग-
वानपणानो॥ निश्चय पण थसे॥ ने ते ज्ञानने पामिने अक्षरधामने पामसे॥ एवि रीते जे ते भावे करिने अमारी पासे आ
विने जे गुण लेशे ते सर्वेनुं अंते जतां कल्याण थसे॥ एवो प्रत्यक्ष भगवानना दरशननो प्रताप छे॥ जेम कृष्णअवतार
मां गोपि गोवाल प्रथम तो श्रीकृष्णने एम जाणतां जे बिजा मनुष्य करतां तो वधारे प्राक्रमि छे॥ पछे जेम जेम हेते करि
ने समागम करतां गया तेम तेम तेने देवनो भाव आव्यो ने पछे ब्रह्मा जेवा श्रीकृष्णने जाण्या ने पछे भगवानपणानो नि
श्चय थयो ने ते सर्वे भगवानना धामने पाम्यां तेम आज पण जे अमने भगवान जाणिने आवता हशे तेनुं पण कल्याण
थसे॥ ने जे ब्राह्मण जाणिने अमारी पासे आविने दरशन करसे तेनुं पण जो अमारो गुण लेसे तो अंते जतां कल्याण
थशे॥ एतमारा प्रश्ननो उत्तर छे॥ ॥इति श्रीमुख्यसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥

श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत १९ ओगणिसें १९ ओगणिसना पोस वदि ३ त्रिजने दिव-
स महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीपछम मध्ये पटेल कालाने घेर उत्तरादा बारना ओरडानी ओसरिमां

गादितकियाबीछावेलाढोलीयाउपर विराजमानथयाहता ।।नेसरवेजरियानीवस्त्रधारण कर्यांहतांने कंठमांपुष्पनाहा
रसोभिरह्याहता ।।नेपाघमांबेकोरेतोरालटकताहताने बेकानउपरपुष्पनागुच्छधारणकर्याहतानेपोताना मुखार्वि
दनीआगल साधुतथाघणा कहरिभक्तनी सभा भराईनेबेठिहति ।।पछं गामश्रीपिपलिनाग्रा विराजिभक्ते महाराज
नेप्रश्नपुछ्युं जेहे महाराजआत्मानुं साक्षात्कार दर्शन केम थायअनेआत्माने विषे तमेरह्याछोतेतमारुं दर्शन आत्मा
ने विषेकेमथाय ।। तेकहो ।। पछे महाराज बोल्याजे आत्मानु दरशनतो ज्ञानेकरिने थायछे तेज्ञानने कहियेतेसांभ
लो ।।जे आत्मानुं प्रथम तो स्वरूपजाण्युं जोईये ते आत्मा केवो छे ।। तोचैतन्यछे व्यापक छे जाणनारोछे निराकार
छे ।।हवे निराकारचैतनजाणनारोने व्यापक एवा जे आत्मा तेनेते आत्मानास्वरूपनुं ज्ञान करावबासारुं आत्माने
विषेरह्याएवाजेपरमात्माभगवान तेमूर्त्तिमान छे ।। नेकर्तुमकर्तुनेमन्यथाकर्तुं समर्थ छे ते भगवानजे तेजिवोने
इंद्रियोअंतःकर्ण सरजिआपेछे ।। अनेवलिपंचभूतात्मक नानाप्रकारना पदार्थजे परमेश्वरे उपजाव्यां छे तेपण
आत्मानास्वरूपने साक्षात्कार देखाडवासारुं बनाव्यां छे जेमपोतानामुखने जोवासारुं दर्पण कर्युं छे ।। ते दरपर्ण-
मां जुवेतोजेवुं पोतानुं मोढुंहोय तेवुं साक्षात्कारदेखायछे ।।तेदरपण मिथ्याछे नेदरपणे करिनेदेखाणुंजेपोतानुंमु
ख ते सत्यछे ।। केमके एकवारदर्पण मांजोईने निश्चे करेजे मारुं मुख तेआवुंछे ।।पछेदरपणविना पण पोतानुमु
खदेखायाकरे ।। जेमारुं मुख तेकालुं छे केधोलु छे ।। पछे पोतानुं मुखधोलु होयने कोईकएमकहेजे तारुं मुख
तो पिलुंदेखायछे ।। त्यारे पोतानामनमांएमविचारथायजे ।। मारुं मुखतो धोलुं छे पण कांई हलदिके चलगि हशे
एमजाणिने पोतानामुखनेजलवतिधोईने पछे तेआगलापुरुषनीआंखजो निरविकारिहोयतो तेएमकहेजे
हवेतारुं मुखधोलुंदेखायछे ।।अनेजोतेनीआंखमां कमलो होय तो तेनुं मुखपिलुंनथी तोपण पिलुं देखे त्यारेपो
तानामनमांएमजाणेजेएनीआंखमां कमलो छे ।।तेणेकरिनेमारुं मुख पिलुं देखेछे पण मारुं मुखपिलुंनथी

॥ तेमए तो दृष्टांत नेएनुं सिद्धांत एछे जे पोताना मुखने बे काणे तो आत्मा छे॥ ते आत्माने साक्षात्कार देखाडयासारु
दरपणने ठेकाणे इंद्रियो अंतःकरण भगवाने सर्जि आप्यां छे ते इंद्रियो अंतःकरणरूप दर्पणे करिने पोतानो आत्मा साक्षात्कार देखाय छे ते केवि रिते पोतानो
आत्मा देखाय छे ॥ तो नेत्र इंद्रिये करिने रूप पदार्थ देखायुं तारे तेने नेत्रने तो फकत देखावानो धर्म छे पण तेमां जे वि
भक्ति कर्वि ते तो आत्मा करे छे जे आ पदार्थ आवुं छे ॥ ने आ पदार्थ आवुं छे ने ते पदार्थना आवा गुण छे एवुं जे जाण
वुं ते जाणपणामां जणाय छे ॥ ते जाणपणुं आत्मानुं स्वरूप छे ॥ माटे आत्मा सत्य छे ने पदार्थ मिथ्या छे जेम दरपण
मां मुख बहार देखायुं हतुं ते मिथ्या देखायुं हतुं ॥ पण बहार जोईने पोताना मुखनो निर्णय थाय छे॥ तेम नमां पण पो
ताने एम खचित जणाय छे जे बहार जणातुं हतुं ते मारुं ज मुख जणातुं हतुं ॥ पण बहार कांई नथि॥ तेम बहारपदा
र्थ जे जे देखाय छे॥ ते जाणपणा माटे देखाय छे ते जाणपणारूप आत्मा ज देखाय छे अने एविरिते कान इंद्रिये क
रीने शब्द सांभल्यो ते कानने फकत सांभलवानो धर्म छे पण ते शब्दमां जे विभक्ति कर्वि ते तो जाणपणारूप आ-
त्मा बते थाय छे ते शब्द ने कान इंद्रि बेय मिथ्या छे ॥ अने जाणपणारूप आत्मा सत्य छे॥ एविरिते दश इंद्रियो ने चा
र अंतःकरणे करिने जणाय जे बहार पदार्थ ते सर्वे मिथ्या छे॥ ने तेने विषे जे जाणपणुं छे ते सत्य छे ने ते जाणपणुं
आत्मानुं स्वरूप छे॥ अने वलि ते जाणपणारूप आत्मानुं स्वरूप जणाववासारु पदार्थने विषे नानाप्रकारना जुदा जुदा
गुण परमेश्वरे देखाड्या छे॥ ते अनंत पदार्थना जे जुदा जुदा गुण तेने जे जाणवुं तेणे करिने जाणपणारूप जे आ-
त्मानुं स्वरूप ने साक्षात्कार देखाय छे ॥ अने बिजुं आत्मानुं व्यापक स्वरूप छे तेने साक्षात्कार देखाडवासारु पर
मेश्वरे केटलांक पदार्थ टुकडा जणाव्यां छे॥ ने केटलांक पदार्थ छेटे जणाव्या छे तथा अडखे पडखे ने हेठां उंचां
चारे कोरे जणाव्यां छे॥ तेणे करिने आत्मानुं व्यापक स्वरूप जणाय छे ॥ केम के सर्वे पदार्थने विषे ने सर्वे दिशाओ
ने विषे॥ जाणपणुं रह्युं छे ॥ अने जाणपणाने विषे आत्मा रह्यो छे ॥ माटे तेणे करिने आत्मानुं व्यापक स्वरूप-

साक्षात्कार देखायछे॥ तेछे टेदुकडां पदार्थ मिथ्याछे नेजाणपणा रुपआत्मा सत्यछे॥ अनंनिजुं आतमानुं चैतन्य स्वरूपछे तेनेजणा
वया सारुं परमेश्वरे हालता चालतां॥ शरिरादिक पदार्थकर्या छे॥ ने तेपदार्थउपजेछे नेवृद्धिपामेछे तेआत्मायतेहालेचाले ने वृद्धिपा
मेछे॥ अनेआत्मा तेमांथिनिसरिजाय तो तेपदार्थहालेचाले ने वृद्धिपामनहिं॥ माटे हालवुं चालवुं ने वृद्धिपामवुं तेणे करिने
चैतनस्वरूप आत्मानुं साक्षात्कार देखायछे तेहालतां चालतां पदार्थ मिथ्याछे नेतेमां जाणपणुं ने चैतन्यता जे आत्मा
तेसत्य छे॥ अनेचोथो आत्मानोनिराकारगुणछे तेनेजणावया सारुं पदार्थना आकार परमेश्वरे बनाव्या छे तेणे करिनेजाण-
पणुं तथाव्यापकपणुं तथा चैतन्यपणुं ते साक्षात्कार देखाय छे॥ जेम वायु निराकार छे तेनेजाणवा सारु साकार एवाजे वृ
क्षादिक तेनेजोईने वायुनुं स्वरुप साक्षात्कार देखायछे॥ केमके जाडवानां डालखां हाले छे ते वायुए करिने हाले छे पण
वायु विना हाले नहिं॥ एवि रिते नेत्रे करिने वायु देखातो नथि तो पण वायुना स्वरूपनुं साक्षात्कार ज्ञान थायछे पण तेमां ले-
शमात्र संषय रहेतो नथि॥ तेम आत्मा निराकार ने मायापर छे तेमाई कए वांजे इंद्रियो अंतःकरण तेणे करिने देखायए वो
नथि तो पण इंद्रियो अंतःकरणे करिने वृक्षादिकरुप जणाणा जे पदार्थ तेने विषे जाणपणुं व्यापकपणुं ने चैतन्यता जणाय
छे॥ ते आत्मा वते जणायछे॥ एवि रिते अनुभवे करिने आत्मानुं स्वरूप साक्षात्कार देखायछे॥ अने ते आत्माने विषे जा-
णपणादिक अनंत गुण रह्याछे तेनेजणावया सारुं परमेश्वरे अनंतगुणे युक्त अनंत पदार्थ देखाड्यां छे॥ जेम पोताना
मुखनी सोभा जोवा सारुं दरपणकर्युं छे तेदरपणमांजुवे त्यारे मुखनी सोभा तथा कुरूप तथा कांई विकार मस्य कचरो वल-
ग्युं होय तेदरपणमां सामुं देखाय छे॥ ते सामुं तो कोई नथि॥ पण दरपणमां एवो गुण रह्यो छे जे जेवुं पदार्थ दरपण आगल राखिये ते वुं ने
तेवुं साक्षात्कार सामुं पदार्थ देखायछे॥ पछे जे समजु मनुष्य होय ते दरपणमां जोईने एम जाणे जे सामु पदार्थ जणायछे॥
ते तो मारा मुखउपर जे जे छे तेदेखायछे॥ पण आगल दरपणमां कांई नथि एम जाणीने पोताना मुखउपर जे मस्य कचरादिक
विकार होय॥ तेनो त्याग करे छे॥ अने जे सोभा होय तेने राखे छे अने जे अण समजु बालक होय ते तो दरपणमां जोईने

एमजाणे छे जे दरपण मांसे कोई छे एमजाणिने तेने तेलेवासारुं लांबा हाथ करिने मुठि भरवा जाय छे ।। पण कांई हाथमां आवतुं नथि तोपण आवलां मारुया करे छे ।। तेम जिवने विषे पंचविषयनी वासनारुपि विकार भर्यो छे ते विकारे करिने जिव जे ते जन्ममृत्युने पामे छे ।। ते विकारने देखाडवासारुं परमेश्वरे जिवने दरपणरुप इंद्रियांअंतःकरण सृजि आप्यां छे ।। ते इंद्रियोअंतःकरणरुप दरपणने विषे अनंतकोटि ब्रह्मांडनी रचना जिवमां रहि छे ते बहार देखाय छे पण बहार कांई वस्तु नथि नेएतो सर्व आत्माने विषे देखाय छे तेने जे ज्ञानि छे ते जे ते धर्म ज्ञान वैराग ने महात्मे सहित परमेश्वरनी भक्ति ।। तेणे करिने अनंतकोटि ब्रह्मांडनी वासनारुप पोताने विषे विकार होय तेने टालि नाखे छे त्यारे तेपछे ज्ञानिपुरुष जे ते एकरुड आत्माने जदेखे छे ।। पण तेविना ते निदृष्टिमां बिजुं पिंड ब्रह्मांडादिक कांई आवतुं नथी अने देखे छे तोपण जेम झांझवां देखाय छे तेम देखे छे ते झांझवांने जाणतो एवो जे पुरुष ते जलनी ईच्छा राखिने जल भरवा जतो नथि ।। अने झांझवाने जाणतो न होय ते जलनी ईछा राखिने जल भरवा जाय छे तोपण तेने जल मलतुं नथि ।। तेम जे ज्ञानिपुरुष छे ते जे ते पंचविषयना पदार्थने झांझवारुप जाणिने ते पदार्थ भोगववानी इछा नथि राखता ।। ने तेतो एक आत्माने ज साक्षात्कार देखे छे ।। अने जे बालक जेवा अज्ञानी जिव छे ।। ते तो पोताना आत्माने विषे पंचविषयनी वासनारुप विकार भर्यो छे ।। ते विकार दरपणरुप इंद्रियांअंतःकरणे करिने बहार देखाय छे ।। तेने सत्य जाणिने तेने पामवासारुं बालकनी पेठे आवलां मारे छे ।। तोपण कांई हाथमां आवतुं नथि ।। ने तेमां त्रिपि पण तेने थति नथि ।। केमके बहार पदार्थवस्तुगने छे ज नहि ।। नेए तो आत्माने विषे पंचविषयनी वासना छे ।। तेनो आभास बहार जणायो छे ।। ते वासनानो त्याग करे त्यारे आत्मा साक्षातकार देखाय छे ।। ते केविरीते आत्मा देखाय छे ।। तो प्रथनी जिवते ते नानाबालकनी पेठे कांई समजतो नथि ।। जेम नानाबालकने इंद्रियोअंतःकरण होय तोपण कोई मनुष्यने के कोई पदार्थने ओलखे नहिं तेम जिव जे ते कोई आत्माना स्वरुपने जाणतो नथि ।। ते जेम बालकने तेना मा पितर सर्वे बहार पदार्थनुं ज्ञान करावे छे त्या-

रि ते बालक सर्वे पदार्थने ओलखे छे ॥ तेम अज्ञानि जिव जे ते बहार पदार्थ नें देखे छे पण आत्माने देखतो नथि हवे तेने-
सतगुरु रूप हरि छे ते ज्ञाने करिने आत्माने साक्षात्कार देखाडे छे ते आत्मा केवो छे तो जाणपणा रूप छे माटे जेटला मांजा
णपणुं छे ॥ तेटला मां आत्मा रह्यो छे ॥ ते जाणपणुं तो सर्वे ठेकाणे अनंत कोटि ब्रह्मांडुने विषे रह्युं छे ने ते थी पर पण अप
र जाणपणुं रह्युं छे ॥ ते जाणपणाने जिव जाणतो नथि एज जिवनुं जिवपणुं छे अने ते जाण पणा रूप जे आत्मानुं स्वरूप ते
ने जिव जाणे ॥ तो ते जिवनुं जिवपणुं मटिने अक्षर ब्रह्म रूप थाय छे ॥ हवे जाणपणा रूप जे आत्मानुं स्वरूप तेने जणा-
वे छे ॥ जे आ देहने विषे ॥ नखथि ते सिख सुधि रोम रोम प्रत्ये जे जाणपणुं रह्युं छे ते आत्मानुं स्वरूप छे अने देह तो
जड छे ॥ ने पंचभूतनो विकार छे ॥ पण ते जिवने ज्यां सुधि अज्ञान छे त्यां सुधि जिव जे ते देहने पोतानुं रूप माने छे ॥
पण देह आत्मानुं स्वरूप नथी ॥ केमके देहमांथि जाणपणुं एक उठि जाय छे त्यारे ते मरि गया कहेवाय छे ते जो देह आ-
त्मानुं स्वरूप होय तो ते देह तो नख सिख पड्यो रहे छे ॥ ने जाणपणुं एक जाय छे त्यारे ते मरि गयो कहेवाय छे माटे देह जो
आत्मानुं स्वरूप होय तो मरी गयो एम कहेवाय नहि ते उपर थी प्रत्यक्ष एम देखाय छे जे जाणपणुं छे ते ज आत्मानुं स्वरू
प छे ॥ ते आत्मानुं जाणपणुं जेम देहने विषे रह्युं छे तेम देह थि पांच हाथ छेटे कोईक पदार्थ देखाय तेने विषे पण जाणप-
णुं रह्युं छे ॥ अने तेमज एक गामने विषे पण जाणपणुं रह्युं छे ते गामने पदार्थ ते आत्मानुं जे जाणपणुं ते ने विषे देखाय
छे ॥ केमके एक बे कोणे बेठां थकां पण एम साक्षात्कार देखाय जे आ गाममां ब्राह्मणना घर आटलां छे ने वाणियाना
घर आटलां छे ॥ ने कण बिना घर आटलां छे ॥ ने आनुं घर आठे काणे छे ने आनुं घर आवहार छे अने आटलां बरस
आगाउ एक गाममां ब्राह्मण के कणबि के वाणियो हतो तेना आवा गुण हता अने ते पुरुष तो नास पामि गयो तोप
ण तेने विषे जे आत्मानुं जाणपणुं हतुं ते नास पाम्युं नहिं ॥ माटे आत्मानुं स्वरूप साक्षात्कार देखाडवा सारु परमे
श्वरे पदार्थ जणाव्या छे ॥ ते पदार्थ मिथ्या छे ॥ ने ते पदार्थने विषे रह्युं जे जाणपणुं ते सत्य छे अने ते जाणपणुं आत्मानुं

स्वरूप छे अने जेम एक गामने विषे जाणपणुं रह्युं छे ॥ ते म हजार हजार गाउने छेटे फरतां फरतां चारे कोरे जे जे गाम शोहेरने मु
लक तेने विषे पण जाणपणुं रह्युं छे ॥ ते गाम शोहेरने मुलक ते मिथ्या छे ॥ ने जाणपणा रूप जे आत्मा ते सत्य छे अने ते जे म
हजार हजार गाउ उपर जाणपणुं रह्युं छे तेमज चार लाख गाउ उंचो सूर्य छे तेने विषे पण जाणपणुं रह्युं छे ते सूर्य थकि जे जा-
णपणुं जणायुं ते सूर्यरूप पदार्थे करिने सिद्ध थयुं तेमज तेटलुं तेटलुं अडखे पडखे नेहेठे पण जाणपणा रूप आत्मा रह्यो छे
अने ते सूर्य थकि जे जाणपणुं जणायुं ते इंद्रियोए करिने जणायुं छे अने तेमज अंतःकर्णे करिने सतगुरुने शास्त्रना श्र-
वण थकि सांभलि जे एक ब्रह्मांडनी रचना एवां एवां अनंत कोटि ब्रह्मांड तेने विषे जे जाणपणुं रह्युं छे ॥ ते अंतःकरणे करि
ने रह्युं छे ॥ अने वलि तेथी दिजां अनंत कोटि ब्रह्मांड तेने विषे पण जाणपणा रूप आत्मा रह्यो छे ॥ अने एवां एवां कोटान-
कोट ब्रह्मांड ते तो जाणपणा रूप आत्माना कोक एक देशने विषे जणाय छे ॥ अने तेथी आत्मानुं जाणपणुं तो अपार ने
अपार छे ॥ केहेतां जाणपणानो पार नथि ॥ अने ते जाणपणाने कोई आवरण नथि केमके कोटानकोट ब्रह्मांड ते एक निमे
ष मात्रमां जाणपणाने विषे देखाई जाय छे जेम अहिंथी सो गाउ उपर हजार गाडां केरियोनो ढगलो पड्यो होय ते मांथि
एक केरि कोई कलावीने देखाडे ने एम केहे जे आ एक केरि जे बि हजार केरियोनो ढगलो सो गाउ उपर पड्यो छे तो ते
सांभलतां वांत हजार गाडां केरियोनो ढगलो ते जाणपणाने विषे साक्षात्कार देखाई जाय छे ॥ तेम अनंत कोटि ब्र
ह्मांड ज्ञाने करिने जाणपणा रूप आत्माने विषे साक्षात्कार देखाई जाय छे जेम हथेलिमां जलनुं टिपुं देखाय तेम जाण
पणा रूप आत्माने विषे कोटानकोट ब्रह्मांड देखाय छे ॥ अने एविरीते अनंत कोटि ब्रह्मांडने विषे जे जाणपणुं रह्युं छे ॥ त-
था ते थि पर पण अपार अपार केहेतां जाणपणानो पार नहि एवुं जे जाणपणुं ते आत्मानुं अन्वय स्वरूप छे अने ए विरीते जे
अन्वय स्वरूपनां ज्ञानने सिद्ध करे ते नो आ आत्मा अतिशो महत्ताने पामे छे ॥ केहेतां तेने पंचविषय तुछ पणुं थई
जाय छे ॥ जेम चिंतामणि जेने मले छे त्यारे तेने बिजां द्रव्यमात्र सर्वे तुच्छ थई जाय छे तेम जाणपणा रूप जे आत्मानुं

अन्वयस्वरुप तेनेसमजवेकरिने राजादेव ब्रह्मानेप्रकृतिपुरुषसुधिनांजेजेसुख ते सर्वे तुछ मात्रथईजाय छे अने अनंतको टिब्रह्मांड ने विषे रह्युं जेजाणपणुं तेनो त्यागकरिने कहे तां ए ब्रह्मांड ने चारप्रकारनाप्रलये करिनेनास पमाडिने प्रतिलोम प्रतिकरिने पछे एवा ज्ञान ना आपना राएवाजेप्रत्यक्ष भगवान तेनीमुर्तिनुं आत्मानेविषे ध्यान करवुं तेनुंनाम आत्मानुं व्यतिरेक स्वरूप कहेवाय छे अनेएविरिते ज्ञानद्रष्टिनेजे पाम्यो होय ते तो पोताना आत्माने साक्षात्कारदेखे छे नेआत्माने विषे परमात्माने पण साक्षात्कारदेखे छेअनेएविरिते आत्माने परमात्मानास्वरूपनेदेखवुं तेपणप्रत्यक्ष परमात्माजिवनेमले छे ने तेथकि ज्ञाननेपामे छे त्यारे आत्मानेपरमात्मादेखायछे पणते परमात्माप्रत्यक्षमल्याविनाआत्मादेखाय नहिं॥ नेपरमात्मापणदेखाय नहिं॥ माटेआविरितना विचारनेपंचविषयनो त्यागकरीने सिद्धकरेत्यारे तेनेपोतानोआत्मापण साक्षात्कार देखाय छे॥ अने आत्माने विषेअमारुं स्वरूपपण तेने साक्षात्कारदेखाय पणपंच विषयनो त्यागकर्या विनानेप्रत्यक्ष भगवान मल्याविना तोआत्मादेखायनहिं नेआत्माने विषे रह्याएवाजे परमात्मा तेपणदेखाय नहिं॥ जेम सूर्य उग्याविना रूपपदार्थ पणदेखातुंनथि॥ अनेसूर्य विना सूर्यपणदेखातो नथिनेएतो सूर्य उदयपामिने प्रकाशकरे नेपोतानिआंख्यो उपर लुगडां केगोदडांओढ्यां होय तेनेकोरेकरिनेआंख्योउघाडिनेजुवे त्यारे तेबिजां पदार्थनेदेखेअने सूर्यनेपण त्यारे देखे अनेसूर्यउग्यो होय पण आंख्यो नउघाडे तो पण कांई भाले नहिं अने आंख्योउघाडिने जुवे॥ तोपणजो सूर्यउग्यो नहोयतोपण कांई भलायनहिं तेमजे आत्मानेदेखवो तेपण आत्माना आत्माएवा जेपरमात्माभगवान तेप्रगटथईने ज्ञानरुपिप्रकाश करे अने जिवपण आंख्यो आडागोदडांरुपपंचविषय नो त्यागकरिनेसमागमकरे त्यारेपोतानाआत्मानेदेखे छे॥ अनेआत्माने विषे रह्याएवाजेपरमात्मातेने पण साक्षात्कारदेखे छे॥ अने भगवानप्रगटथई ने ज्ञानप्रकाश करताहोय तो पणजो जिव आंख्यो आडांगोदडांनी पेठे पंचविषय मां आशक्तथई रह्यो होय तो तेनेपोतानोआत्मा पणदेखाय नहिं अने पंचविषयनो त्यागकर्यो होयतो पण जो प्रत्यक्ष भग

वाननाज्ञान रुपि प्रकाश थयो नहोय त्यां सुधि पण आत्मा के परमात्मा देखाय नहि॥ माटे पंचविषयनो त्याग करिने प्रत्यक्ष भगवानना सुखथकि अथवा प्रत्यक्ष भगवानने पामीने सिद्ध थया एवा जे एकांतिक पंचविषयना त्यागि भगवानना संत तेना मुखथकि पूर्वे कह्यो एवो जे विचार तेने जे सिद्ध करे तो ते पोताना आत्माने साक्षात्कार देखे छे ने आत्माने विषे परमात्माने पण साक्षात्कार देखे छे॥ ॥इति श्रीसुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः॥ ॥संवत १९ ओगणिसें॥२०॥ विसना प्रथम श्रावण शुदि ९ अष्टमिने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्रीपिपलि मध्ये पोताना मंदिरमां मालउपर हिंडोलाखाटे विराजमान थया हता॥ ने सर्वे श्वेतवस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति॥ पछे ते समे व्यास भाई शंकर श्रीखंभातथि आव्या तेणे महाराजने पगे लागिने कह्युं के एक खंभातमां ब्राह्मण छे॥ तेणे त्रेविस प्रश्ननुं एक किर्त्तन लखिने तमने मोकल्युं छे अने ते ब्राह्मणने कल्याणनो घणो खप छे॥ ने तेणे घणा कमतपंथमां जईने कल्याण सारुं ज्ञान सांभल्युं पण कांई तेने शान्ति थति नथि॥ अने शास्त्रमात्र तेणे सांभल्यां ने जोयां॥ अने संसारमांथी पण उदास थईने बेठो छे॥ तो पण अंतरमां कोई वाते शान्ति थति नथी॥ पछे में तेने तमारी वात करि त्यारे ते ब्राह्मण वात सांभलिने घणो राजि थयो ने तेणे एम कह्युं जे हुं तो एवा कल्याणदाताने जखोलुं छे अने ते सारु तो स्वामिपंथमां जईने बधाय साधुने जोयाने समागम कर्यो॥ तथा गोसांई जि आदिक सर्वे धर्म जोया पण मारा अंतरना संषय कोईने टाल्या नहि॥ माटे आ किर्तनमां त्रेविस प्रश्न छे॥ तेना उत्तर महाराज करिने मुने मोकले तो मारा अंतरमां शान्ति थाय॥ ने पछे हुं महाराजने शरणे आवुं॥ एवि रिते भाई शंकरे महाराजने कह्युं ने किरतननो खरडो महाराजना हस्तकमलमां आप्यो॥ पछे ते किरतन महाराजे वांचिने कह्युं जे एना उत्तर स्यो अमे करियेछियें॥ हवे पेहेलुं प्रश्न एछे जे॥ अनादि नो जिव छे॥ के अनादी शिव छे ए प्रश्न॥ हवे तेनो उत्तर जे॥ जो शिव अनादि क

हियेतो शिवने जिव केम थाय ॥ अने जो अनादि जिव कहिये तो जिव जिवनी मले शिव थई शके नहि ॥ माटे एनो उत्तर एम छे जे जि-
व शिवने परम शिव एवा अनादि त्रण भेद छे ॥ हवे तेमां जिव ते शुं तो जेने पंचविषयनी वासना छे ने ते वासनाये करिने जन्म मृ-
त्युने पामे छे ॥ तेनुं नाम जिव कहिये ॥ ते एवा जिव अनंत अपार छे ॥ अने जे परम शिव छे ते तो एक छे ने ते अनादि मायापर छे
॥ ने जिव शिवना आधार छे ॥ ने तेने परमात्मा कहे छे परब्रह्म कहे छे पुरुषोत्तम कहे छे नारायण कहे छे ॥ भगवान कहे छे ॥
प्रभु कहे छे ॥ एवा जे मायापर परम शिव ते अनादि एक छे ॥ अने ते जेवो बिजो कोई थवाने समर्थ नथि एवा जे परम शिव
रूप परमात्मा ॥ ते परमात्मा जे ते जिवोना उपर दया करिने पोते मायापर रह्या थका मनुष्याकृतिने धारण करे छे त्यारे ते पर-
मात्मानो जे जिवने संबंध थाय छे ॥ ने जे जिव तेनो आश्रय करे छे ॥ ते जे ते जिव मरिने शिवरूप थाय छे ॥ केम के परम
शिवरूप एवा जे परमात्मा तेनुं जे ज्ञान ते शिवरूप छे ॥ ते ज्ञान परमात्मा पासे अनादिनुं छे ॥ ने ते ज्ञानने जे जे जिव पामे-
छे ॥ ते जीव मरिने शिव थाय छे ॥ पण परम शीव कोई थतो जनथि ॥ अने ते जिव शिवरूप थया ते परम शिव एवा जे परमा-
त्मा तेनो दृढ दास थाय छे माटे जिव शिवने परम शिव ए त्रणे अनादि छे ॥ ए प्रश्ननो एज उत्तर छे ॥ हवे बिजुं प्रश्न जे जल
ने पृथ्विमां पेहेलुं शुं ॥ तेमां प्रथ्वी पेहेलि संभवति नथि ॥ अने जल पात्र विना क्यां रहे ॥ ए प्रश्न हवे तेनो उत्तर ॥ जे जेम
बिजमां वृक्ष रह्या छे ॥ तेम आकाशमां चार भूत रह्यां छे ॥ ते जेम वडनुं बिज नानुं होय पण तेमां मोटो वड रह्यो छे तेम पृ-
थ्वि जल तेज वायु ते आकाश मां रह्यां छे अने ते आकाश थकि उपजे छे ने ते चारे भूतने कारणपणे आकाशनो ज आ-
धार छे ॥ तेमां प्रथम उत्पत्ति समे आकाश थकी वायु थाय छे ॥ अने वायु थकि अग्नि थाय छे अने ते अग्नि वायुने आधारे र-
हे छे ॥ ने अग्नि थकि जल थाय छे ॥ ने जल थकि पृथ्वि थाय छे ॥ ए विधि ते आकाश थकि चार भूत उपजे छे ते तो सर्वे शास्त्र-
मां पण प्रसिद्ध कहेलुं छे पण तेमां तमने ए दलिल आशंका थाय छे जे ॥ पात्र विना जल केम रहे ॥ तो ए आशंका तो अति
शोज स्थूलदृष्टिवालानी छे ॥ पण सूक्ष्मदृष्टिवालानी ए आशंका होय नहिं ॥ केम के ए तो प्रसिद्ध देखाय छे जे जलनुं का

रणअग्नि छे॥ ते अग्निनुंस्वरुप सूर्य छे॥ ते सूर्य नाकिरणोने विषे जलअपार भर्युं छे ते मांथिचोमासुं आवे त्यारे परमेश्वर
नीइछाप्रमाणे घटेतेटलुंज लवरसे छे ने बाकि किरणो मां जलअपारभर्युंछे पण पृथ्विनेआधारेजलनथिरह्युं॥ अने
वलिपात्रमां जलरहे छे तेपणजे पात्रने अग्निनो संयोग थाय छे॥त्यारे पात्रजलने राखिशकेछे॥पणजोअग्निपेपक-
व्याविना काचाप्रथ्वीनाघडामां जल भरेतो तेमांजल रहेतुं नथि अने तलाव कुवामां जेजलरहे छे तेपण जेपृथ्विमांजे-
वुंअग्नितुं जोरहोय तेप्रमाणे ते मां जलरहे छे॥अनेजे पृथ्विमांअग्निथोडोहोय तेमांजल रहेतुं नथि तेमारवाडदेशनी
पृथ्विमांअग्निथोडो छेमाटे ते देशमांजल घणां उडां छे॥ माटे जल तेअग्निने आधारेरह्युंछे अनेजलपछीपृथ्विथायछे
ए सिद्धांत छे॥ ए प्रश्ननोएजउत्तर छे॥ हवेत्रिजुंप्रश्न जेपहेलुं बिजके पेहेलुंवृक्ष तेनोउत्तर॥जे बिजने वृक्षएबेय कार्य
छे॥अने तेवुंकारणरुपतो पेहेलि पृथ्वि छे॥तेपृथ्वि गंधवति छे॥माटे तेने विषे सर्वे ओषधिनां बिजरह्यां छे तेपेलि
पृथ्विमांथि सर्वे औषद्धियोउत्पन्नथायछे॥नेतेप छे बिजमांथि॥ वृक्षने वृक्षमांथिबिजएवीरीतेउत्पत्ति थायछे॥प
णपहेलुं बिजके पहेलुंवृक्ष एमकहेवायनहि॥नेए सर्वेवुं कारण बिजरुप पृथ्वि तेपहेलिछे केमके रवरमाणिथो रत
थाहाडसांकलि॥ तथा अमरवेल तेने मुद्दलबिजजनथि॥माटे तेवुं बिज पृथ्वि छे॥ अनेतेमज सर्वे आकार मात्रनुं पहे-
लुं बिजपृथ्विछे॥ नेपृथ्विनुंकारण जल छे॥ नेजलनुंकारणअग्नि छे ने अग्नितुं कारण वायुछे नेवायुनुंकारणआका
शछे॥ नेआकाशनुं कारणअहंकार छे नेअहंकारनुं कारणमहत्तत्व छे॥ नेमहत्तत्वनुंकारणप्रधानपुरुषछे नेप्रधा
नपुरुषनुं कारण प्रक्रति पुरुष छे॥ नेप्रक्रतिपुरुषनुं कारण अक्षर ब्रह्म छे॥ नेअक्षरब्रह्मनाआधारने कारण परब्रह्म
परमात्मा छे॥अनेजेपरमात्मा भगवान छे॥तेसत्यसंकल्पछे॥ माटेचहाय तेम करवानेसमरथ छे॥अनेतेपरमा-
त्माथि पर कोई नथि॥नेपरमात्मा सर्वेनाबिजरुप छे॥ माटे पेहेलुंजेजे थयुं तेपरमात्माथकि थयुंछे ने त्यारपछि बि
जमांथिवृक्षने वृक्षमांथि बिज एवीरितेपरंपरा चाल्युंजाय छे॥ एप्रश्ननो एजउत्तर छे॥ हवेचोथुंप्रश्न जे पेहेलो दि

वसके पेहेलि रातते नोउत्तरजेएक ज्ञान छेनेएक अज्ञानछेतेमां ज्ञाननुंस्वरुप प्रकाशछे ने अज्ञाननुं स्वरुप अंधकार छे अनेते
ज्ञानपरमात्माने विषे अनादिनुं रह्युं छे॥ ने अज्ञान जिवने विषे अनादिनुं रह्युं छे ॥ ते जिव सदाय घोर सुसुप्तिने विषे महा
प्रलयमां लिनथया हता॥ तेने ज्ञानआपवासारु परमात्मायेउत्पत्ति करिने तेने विषे ज्ञानअज्ञाननां रुपदेखाडवा-
सारु दिवसने रात्रिपरमेश्वरे कर्यांछे॥ माटे दिवसने रात्रि बे पछीथयांछे॥ पण कोई मोरु के वांसेथयुंनथि अने
तेमां कार्यउत्तरएछेजे॥जजीवनो दिवसेजन्मथयोहोय तेनोपहेलो दिवसछे॥ अनेजेने रात्रिने विषेजन्मथयोहोय
तेने पेहेलिरात्यछे॥अनेकारणपणे तो रात्यदिवसकहेतां ज्ञानअज्ञान बे अनादिनुंछे॥एप्रश्ननो एजउत्तर
छे॥हवेपांचमुंप्रश्नजे॥पेहेलि स्त्रिकेपेहेलोपुरुष तेनोउत्तर॥जे स्त्रि नेपुरुष बे अनादिनाछे॥केमकेएकला पुरु-
षथकि पण उत्पत्ति थायनहिं॥ नेएकलि स्त्रि थकिपण उत्पति थायनहिं॥ मारे जीवनेमाया बे अनादिनाछे तेजिव
नेविषे मायारहिछे॥ नेमायाने विषेजिवरह्योछे॥ अनेजेपरमेश्वरछे तेतो मायापरछे नेजिवनेमायाबेयना आधार
छे॥ तेपरमेश्वरे जेते उत्पत्तिसमे पोतानो अनादिसेवक जेअक्षरब्रह्म ते द्वाराये माया नेविषे लिनहता जेपुरुष तेने
जाग्रतकरेछे॥ पछेते पुरुष जागतांवेत पोताने विषेजे प्रकृतिरहिछे॥ तेने जगाडेछे॥ मारे प्रकृतिने पुरुष बेय
सर्वजगतनांकारण छे॥एविरिते स्त्रिनेपुरुष बे अनादिनाछे॥एप्रश्ननो एजउत्तरछे॥ हवेछठुंप्रश्नजे गुणपेहे-
लोकेअवगुणपेहेलो एप्रश्न॥ तेनोउत्तरजे जिवमात्रने विषे पहेलातो अवगुणजभरेलाछे॥ अनेजे परमशिवरु-
पवाजेपरमात्माछे॥तेने विषे सदाय गुणजभरेलाछे ते परमात्मानो जिवने संबंधथाय त्यारे ते परमात्माजे तेजिव
ने ज्ञानआपिने तेनादोष मुकाविने धर्मज्ञानवैरागादिक गुणआपेछे त्यारेजिवने विषे गुणआवेछे नेदोषटलिजा
यछे॥एप्रश्ननो एजउत्तरछे॥ हवे सातमुंप्रश्न॥जे पेहेलुं शरिरके पेहेलि छाया तेनो उत्तर जेशरिरने छांया॥ति
बेय भेगाजथयाछे॥ केमके आकारउत्पन्नथयो ते भेगी छायापणउत्पन्नथायछे॥जेम वृक्षनानुं होय त्यारे तेनी

छायापणनानीहोयछे॥ अने वृक्षजेमजेममोटुं थतुंजायछे तेमतेम तेनीछायापण मोटिथतिजायछे॥ तेमजशरिरने छाया ते एकहारेजउत्पन्नथायछे॥ एप्रश्ननोएजउत्तरछे॥ हवेआठमुंप्रश्न जेधर्मनोत्यागकरिने कुकर्म आचरेछे॥ तेएविमतिशा थिथतिहशे॥ केमके अधर्म थकि तो जिवने दुःखथायछे॥ ते कोई जिवपोतानेदुःखथवाने तोचहातोनथी॥ नेप्रभुको ईने दुखदेतानथि॥ माटेजिवने दुःखशाथिथायछे॥ एप्रश्नहवे तेनोउत्तर॥ तेवातगितामां कहिछे॥ जे जिव पापकर्मने विषे जोडावेछे॥ ते कोणजोडतुं हशे॥ एमअर्जुनेपुछ्युं॥ त्यारेश्रीकृष्ण भगवानेकह्युंके कामक्रोधने लोभएजेअंतर शत्रुछे॥ ते जिवनेबलात्कारे अधर्मने विषे जोडावेछे अनेयलिजेनेकामादिक दोष अतिशो वृद्धि पाम्याहोयएवाजेआ सुरि जिव तेनोजेसंग तेथकिपण अधर्मने विषेजोडायछे अने पछि जिव जेवांजेवां कर्म करेछे तेवुंतेवुंफल तेनेपरमेश्वर आपेछे॥ अनेतेकर्म प्रमाणे जीवजे तेक्रियाने विषेजोडायछे एप्रश्ननोएजउत्तर छे॥ हवेनवमुंप्रश्न॥ जेनादबुंदमां प्राणप्रगटेछे॥ ते क्यांथि आवेछे ने क्यांजायछे॥ नेते सुरछे केकायरछे॥ अने तेनुंस्वरूप जडछे के चैतन्यछे॥ एप्रश्न हवेतेनीउत्तरजे पंचकोशात्मक आत्मानात्रणशरिरछे॥ ते पांच कोश कियातो एकअन्नमयकोष॥ बिजो प्राणमयकोश ॥ त्रीजोमनोमयकोश॥ चोथोविज्ञानमयकोश॥ पांचमो आनंदमयकोश॥ एपांचकोश॥ तेमांप्रथम जिवजेते आ त्यंतिकप्रलयने विषे महाकारणरुपजे आनंदमयकोश तेने विषे लिनहतोते जिवनेपरमेश्वर उत्पत्तिसमे बुद्धिइं योमनने प्राण तेसरजिआपेछे ते भागवतमांपणकह्युंछे जे॥ ॥ बुद्धिइंद्रियमनःप्राणान्॥ जनानांमसृजत्प्र भु॥ मात्रार्थंचभवार्थंच॥ आत्मने कल्पनायच॥ ॥एविरिते भगवानजेते जिवने आनंदमयकोशमांथिजगाडि ने प्रथमबुद्धिसजिआपेछे॥ नेपछे मनसजिआपेछे॥ नेपछेप्राण सजिआपेछे नेपछेअन्नमयकोशजेस्थूलश रिरतथाइंद्रियो ते सजिआपेछे॥ तेमां जिवजेतेपहेलो आनंदमयकोश मांरह्योथको विज्ञानमयकोशरुपजे बुद्धि तेमांप्रवेशकरेछे॥ नेपछे आनंदमयने विषेज्ञानमयकोश सहित मनरुपजे मनोमयकोश तेमां प्रवेशकरेछे॥ अनेपछे

एत्रण कोशे सहित जिव जे ते प्राणमय कोश मां प्रवेश करे छे ॥ अने पछे ए चारे कोशे सहित अंनमयकोश जे स्थूल शरिर तेमां प्रवेश करे छे ॥ ते मदश इंद्रियो ने पांच भुत तेनुं नाम स्थुलदेह कहेवाय छे ॥ अने प्राणमय मनोमय ने विज्ञानमय ए त्रणे कोश मलिने सूक्ष्म शरिर कहेवाय छे ॥ अने आनंदमय कोश रुपि जे सुषुप्ति तेनुं नाम कारण शरिर कहेवाय छे ॥ ते मां प्राणे सहित जिव जे ते स्थूल देह मां आवे छे ॥ अने ते स्थूल देहनी आवरदा आवी रहे छे त्यारे प्राणे सहित जिव जे ते सूक्ष्म देह मां प्रवेश करे छे ॥ अने जिवे स्थूल देहे करिने जेवां जेवां कर्म कर्यां होय ॥ ते वि ते वि गतिने जिव पामे छे ते वेदमां कह्युं छे जे ॥ ॥ मरणे या मति सा गतिर्भवेत् ॥ इति श्रुतिः ॥ ॥अर्थ॥ जे जे वि स्थूल देह मुकतिवखते जिवनी मति होय छे ते वि गति तेनि थाय छे ॥ कहेतां जेने पंचविषयनी वासना होय छे ॥ ते जीवने ज्यां अधिक प्रिति होय त्यां पाछो स्थूलदेह धरिने प्राणे सहित जिव जे ते प्रवेश करे छे ॥ एवि रिते स्थूलदेहने विषे प्राण आवे छे ने जाय छे ॥ पण प्राणनो जीव क्यारेय त्याग करतो नथि अने प्राण तो जिवने भेगा ने भेगा एमने एम सदा यर हे छे ॥ अने ते ॥ जिवने ज्यारे प्रगट भगवान मले छे ने तेम भगवान थकि जिव आत्यंतिक ज्ञानने पामे छे ॥ त्यारे ते जिव जे ते प्राणमय मनोमय विज्ञानमय ने आनंदमय ए जे पांच कोश रुपि माया तेनो त्याग करिने ब्रह्मरुप महामुक्त थाय छे ॥ अने ते प्राणादिक पांचे कोश जे ते जड छे ॥ पण ज्यां सुधि जिवे ते मां प्रवेश कर्यो छे ॥ त्यां सुधि ते पांचे कोश चैतन्य जेवा जणाय छे ॥ अने जे जीव भगवान थकि विमुख छे ॥ ते जिवनां प्राण जे ते काम लोभादिक दोषे करिने कायरने दिनपणे वरते छे ॥ माटे ते ना प्राण क्यांई त्रिप्ति पामता नथि ॥ अने जेने प्रत्यक्ष भगवाननो दृढ आसरो थाय छे ॥ तेना प्राण तो संतोषिने सुरविरपणे वरते छे ॥ ए प्रश्ननो एज उत्तर छे ॥ हवे दशमु प्रश्न जे जिवात्मा देहे करिने कर्म करे छे ॥ ते देहने तो बालि नाखे छे ने आत्मा तो अबंध छे ॥ त्यारे ते कर्मनुं फल कोण भोगवे छे ॥ ए प्रश्न तेनो उत्तर ॥ जे आत्मा जे जिव तेने त्रण देह छे ॥ ते मां एक स्थूल देह छे ॥ ने बिजो सूक्ष्म देह छे ने त्रिजो कारण देह छे ॥ अने ते कारण ने सूक्ष्म ए बे देहमां जे वि जिवने वासना होय ते वो स्थूल देह परमेश्वर तेने धरावे छे ॥ अने ते वासना प्रमाणे स्थूल देहे करिने कर्म करे-

छे ॥ अने तेनुं फल पण जिवात्मा जे ते सूक्ष्मदेहमां ने कारणदेहमां रहिने भोगवे छे ॥ अने जे स्थूलदेह छे ते तो वस्त्र के जेवां लुगडां पहेर्यां होय तेने ठेकाणे छे ते जेम कोईक पुरुषे कालां लुगडां पहेरीने चोरि करि आवीने पछे पोताने घेर जईने कालां वस्त्र उतारिने धोलां वस्त्र पहेरे ॥ अने पछे तेने वांसे पगिरु आवेने ते चोर हाथ आवे तो ते कालां लुगडां काढिने बिजां धोलां पहेर्यां छे तो पण ते चोरने मुकशे नहि ॥ ने तेने हेडमां नाखशे तेम जीव जे ते स्थूलदेहे जेवां जेवां कर्म करे छे तेनुं फल सूक्ष्मने कारणदेहमां रहिने भोगवे छे ॥ अने जिवने ज्यां सुधि पंचविषयनी वासना छे ॥ त्यां सुधि जिव जे ते बधपणे वरते छे अने ज्यां सुधि जिव बधपणे वरते छे ॥ त्यां सुधि जीव जे ते नरसां ज कर्म करे छे ॥ अने जे ने सद्गुरुने संगे करिने पंचविषयनि वासना टलि जाय छे ते पुरुष मुक्त कहेवाय छे ॥ कहेतां ते आत्मा अबंध छे ॥ अने जे आत्मा अबंध थयो छे ते मुक्त जे ते भगवाननी भक्ति विना बिजुं कांई कर्म करे ज नहिं ॥ माटे वासनावाला जिव छे ते बंध छे ॥ अने ते बंधपुरुष जे जे कर्म करे छे ॥ ते कर्मनुं पाप ने पुंन्य बेय जिव भेगु ने भेगु सूक्ष्मदेहमां ने कारणदेहमां रहे छे अने ते कर्मानुसारे स्थूलदेह नवा नवा धारण करिने ते ते कर्मना फलने भोगवे छे ॥ अने जे आत्मा मुक्त छे ते तो भगवाननी भक्ति संबंधि जे जे कर्म करे छे ते कर्म तो ॥ अकर्मरूप छे ॥ कहेतां ज्ञानरूप छे ॥ माटे तेने तो कांई पापपुंन्य छे ज नहिं ॥ अने ते तो स्थूलदेहनो त्याग करिने भगवाननी इछाये करिने तेने भागवतितनुं बंधाईने भगवानना अक्षरधामने पामे छे ॥ ए प्रश्ननो ए ज उत्तर छे ॥ हवे आगियारमुं प्रश्न जे विषयमां प्रिति थाय छे ॥ ते मन थकि थाय छे के ने आदिक इंद्रियो थकि थाय छे ॥ एम प्रश्न हवे तेनो उत्तर जे जिवने जे जे विषयनी वासना होय छे ते ते विषयमां मन बुद्धि चित्त अहंकार ने इंद्रियो सर्वे मलिने जिवे सहित भेगां थईने प्रिति करे छे ॥ जेम कोईक राजा होय ने ते राजाने जे जे पदार्थमां अथवा जे जे स्त्रियादिक मनुष्यमां अति स्नेह होय तो ते राजाना चाकर मात्र तेपण तेने विषे प्रिति करे छे ॥ तेम जिव जे ते कायानगरनो राजा छे ॥ अने इंद्रियो अंतःकरण तेना चाकर छे ॥ ते-जिवने जे जे विषयमां राग होय ते ते विषयमां ते जिवनां इंद्रियो अंतःकरण पण प्रिति करे छे ॥ ए प्रश्ननो ए ज उत्तर छे हवे

चारमुंप्रश्न ॥ जेअग्निन बालिशकेएवुंकियुंपदार्थछे ॥ एप्रश्न तेनोउत्तर ॥ जेअग्निबालिशकेनहिंएवो तोएक आत्मा छे ॥ ते-
पणगितामां कर्छं छे जे ॥ ॥ नदहतिपावक ॥ ॥ माटेआत्माएकअग्निथकिबलेनहिंएवो छे ॥ अने आत्मा
विना बिजापिंडब्रह्मांडादिकसर्वपदार्थ तेने माह्या प्रलयनोअग्नि छे ॥ तेबालिने भस्मकरिनाखे छे ॥ एप्रस्ननोएजउ
त्तरछे ॥ हवे तेरमुंप्रश्न ॥ जेशब्द बोलाय छे ते आत्माबोलेछे केजिभबोलेछे ॥ एप्रश्नतेनोउत्तर ॥ जेबोलवुं छे तेतो
जिभनोधर्म छे ॥ पण आत्मानी सत्ताये करिने बोले छे ॥ अने आत्मानी सत्ताविना तो जिभ एकलि बोलवाने समर्थ
नथि ॥ नेजिभतोजड छे ॥ जेम सारंगि सरोदो ने सरणाई तेने कोईकपुरुषबोलावे छे त्यारे बोले छे ॥ अने पुरुषने न-
बोलावे तो एनिमेले बोलेनहिं ॥ अने बोलावनारो पुरुषहोयपण तेधाजु नहोयतो पण बोलेनहिं ॥ तेमदेहमां जिवात्मा-
होय अनेजिभपण सारिहोय तो बोलायछे ॥ अने देहमां जिवहोयपण जो जिभनहोय नेजिभहोयनेजिवदेहमांथि
निसरिजाय ॥ तोपण बोलायनहिं ॥ एप्रस्ननोएजउत्तर छे ॥ हवेचौदमुंप्रश्नजे मायाजेने विषेनथि एवोकोणपुरुष
छेजेमायानेदेखतोजनथि ॥ एप्रस्न तेनोउत्तर ॥ जेमायाथीपर तो सदाय अनादि एकपरमात्मा छे ॥ अनेतेपरमात्माजे
ने प्रगटमले छे अने तेजिवपरमात्मानो द्रढआसरोकरे छे पछे ते जिव जे तेपरमात्माथकि निरबिजसांख्यने निरबिज
योगनेसिद्धकरेनेन छे सबिजसांख्यने सबिजयोगएवा चारप्रकारना ज्ञानने सिद्धकरे छे ॥ तेपुरुषपण मायापरथाय
छे ॥ अनेतेनीद्रष्टिमां माया आवतिनथि ॥ हवे ते निर्बिजसांख्य तेशुं ॥ तो देह आत्मानो विवेक करिने देहने मिथ्यान
सवंतजाणिने आत्माने पोतानुस्वरूपजाणवुं तेनुं नाम निरबिज सांख्य कहेवायछे ॥ अने निरबिजयोगनुं ॥ रुपएछे
जे ॥ कोटिकोटिब्रह्मांडनीउत्पत्तिस्थितिने प्रलय थाय छे ॥ जेनाकोकदेशने विषे एवुं जे अक्षर ब्रह्म तेने विषे पोताना
आत्मानेएकत्वपणुंकरिने ते अक्षरने पोतानुंस्वरूपमानवुं ॥ कहेतांहुं अक्षर ब्रह्मछुं ॥ एम समजवुं ॥ तेनुं नाम नि-
रबिजयोगजाणवो ॥ अने सबिज सांख्यनुंरुपए छे जे एवाएवा अनंत कोटि अक्षररूपमुक्त ते अक्षरधामने विषेर

ह्या छे॥ ते मुक्तना स्वामि एवा जे परब्रह्म परमात्मा भगवान ते जे ते सर्वेना प्रकाशक छे ॥ ने सर्वेने सुखना दाता ने कर्मफ-
लना आपनारा छे ने मायापर छे ॥ ने अनंत ऐश्वर्य सामर्थ्य बल गुण तेज प्रताप तेना धामरूप एवा भगवान ते दिव्यमूर्ति-
मान थका अखंड अक्षरमां रह्या छे ॥ एम समजवुं ॥ तेनुं नाम सबिज सांख्य छे ॥ अने सबिज योगनुं ए रूप जे एवा अपारम-
हिमावाला जे परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान ते पोतानी स्वइछाये करिने अनंत जिवोना उद्धार करवाने अर्थे रामकृष्णादिक
रूपे अवतार धारण करिने प्रगट थाय छे॥ ते प्रगट भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय करिने पोते आत्मा ब्र-
ह्मरूप थईने ते भगवाननि मूर्त्तिने विषे ध्याने करिने जोडाई जवुं तेनुं नाम सबिज योग कहेवाय छे ॥ अने ए विरि ते चा-
र साधनने सिद्ध करिने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपमां जे पुरुष जोडाणो छे ॥ ते पुरुष पण मायापर छे ॥ अने ते पुरुषने माया
देखती पण नथि ॥ ए प्रश्ननो एज उत्तर छे ॥ हवे पंदरमुं प्रश्न ॥ जे शब्दादिक पंचविषय छे ॥ ते ज्ञानीने पण विकल करि-
नाखे छे ॥ माटे ए ते विषय वरवाणवा योग्य छे के आत्मा वरवाणवा योग्य छे॥ कहेतां विषय बलवान छे के आत्मा बलवान
छे ॥ ए प्रश्न तेनो उत्तर ॥ जे पूर्वे उपल्या प्रश्नना उत्तरमां कह्यां जे चार साधन ॥ ते मांथि एक निरबिज सांख्यने सिद्ध करे
छे ॥ ते पुरुष पण ज्ञानि कहेवाय छे ॥ पण तेने जो विषयनो संबंध थाय तो तेने विषय जे ते विकल करि नाखे छे ॥ अने
एवा ज्ञानीनी आगल तो विषय वरवाणवा योग्य छे कहेतां एकले निरबिज सांख्यने ज्ञाने करिने तृप्ति पामिने बेसि रहे
छे ॥ ते पुरुष थकि तो विषय घणा बलवान छे । अने जे पुरुष चारे साधन सिद्ध करिने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपमां जोडा-
यो छे ॥ ते पुरुषने विषयनी गणति नथि ॥ अने ते पुरुष तो विषय आगल वरवाणवा योग्य छे कहेतां घणो बलवान छे तेगो-
पियोए श्रीकृष्ण भगवानने कह्युं छे जे हे महाराज ॥ अमने तो तमारा चरणनो दृढ आसरो थयो छे ते दिवसथी संसा-
रसंबंधि पंचविषयनां सुख ते खारां झेर जेवां थई गयां छे ॥ तेम जे पुरुषने प्रत्यक्ष भगवान मले छे अने ते भगवानना श्री-
मुखथकि आत्यंतिक ज्ञानने सिद्ध करे छे ॥ ते पुरुषनी आगल तो विषय ते तुछ मात्र छे॥ अने ते विना ना बिजा तो वा-

चकताने करिने चारवेद ना भणेला होय ॥ अढार पुराण मुखपाठे कर्यां होय ने छ शास्त्रना अर्थने जाणता होय ॥ ने भारतादिक इतिहासमां प्रविण होय अने देव ब्रह्मादिक जेवा मोठा कहेवाता होय तोपण ए सर्वे पंच विषयआगलरांक जेवा छे तेपूर्वे देव ब्रह्मादिक नेपण विषये फजेतकर्या छे॥ माटे तेनी आगलतो विषयबरयाण वायोग्यछे ॥ कहे तां बलवान छे॥ एप्रश्ननो एज उत्तरछे॥ हवे सोलमुं प्रश्न ॥ जे अक्षर आयके ब्रह्म अनादि तेनो उत्तर ॥ जे अक्षरने ब्रह्म एबे एकज छे ने बे अनादि छे॥ एनो एजउत्तर छे॥ हवे सत्तरमुं प्रश्न ॥ जे आद्यपुरुषे जगतकर्युं ॥ तेमां पवनशाथिकर्यो छे॥ एप्रश्न॥ तेनो उत्तर॥ जे पूर्वे पेहेला चरणना बिजा प्रश्नमां सर्वेनी उत्पत्ति कहि छे जे आकाश थकि पवन जे वायु ते थयो छे एनो एज उत्तरछे हवे अढारमुं प्रश्न ॥ जे पाणि शाथि थयुं छे॥ एप्रश्न तेनो उत्तर जे पाणि अग्निमांथी थयुं छे एनो एजउत्तर ॥ हवे ओगणिसमुं प्रश्न जे पृथ्वि शाथी थई छे॥ उत्तर जे पृथ्वि जलथकि थई छे॥ हवे विसमुं प्रश्न ॥ जे अंड शाथी थयुं छे॥ उत्तर जे ॥ आद्यपुरुष जे परमात्मा तेणे ज्यारे प्रथम उत्पत्ति करि त्यारे पोते अक्षरधाममां एकहता ते पोताने उत्पति करवानि इछा थई त्यारे पोते अक्षरसामुं जोयुं॥ त्यां सृष्टिथई ॥ ते वेदनी श्रुति मांपण कह्युं छे जे॥ ॥सऐक्षत इमांनं लोकाननुं सृजं इति॥ ॥एवि रिते परमात्माए अक्षरसामुं जोयुं त्यारे अक्षरे पोतानाएकदेशने विषे प्रकृतिपुरुष लिनहता तेने जगाड्यो ॥ पछे तेपुरुष जागृत नेपामिने पोताने विषे प्रकृति हति तेने जागृत करिने प्रकृतिपुरुष थकि प्रधानपुरुष थया ॥ नेप्रधानपुरुष थकि महत्तत्व थयु ॥ ने महत्तत्व थकि त्रणप्रकारनो अहंकार थयो॥ राजस तामस ने सात्विक अने ते अहंकार थकि चोविस तत्व थयां ॥ तेमां राजसा अहंकार थकि दश इंद्रियो थई छे॥ ने तामसा अहंकार थकि पांच भूत ने पांच विषय थयां छे॥ अने सात्विक अहंकार थकि चार अंतःकरण ने इंद्रियो अंतःकरणना देवता थयाछे ॥ एविरिते चोविस तत्व थयां ॥ पछे परमेश्वरनी इछाये करिने चोविश तत्वए कठांमलिने॥ तेनु ब्रह्मांडनाउदयरूप जे अंड ते थयुं छे॥ ने ते अंड थकि वैराट थयो छे॥ ने वैराट थकि देवमनुष्यादिक सचराचर सर्वे विश्व थयुं छे॥ एवि रिते उत्पत्ति

थई छे ॥ एम प्रश्न नो एज उत्तर छे ॥ हवे एक विसमुं प्रश्न जे तेज क्याथि थयुं ॥ ते नो उत्तर ॥ जे तेज तो वायु थकि थयुं छे ॥ ते पण पूर्वे उत्पत्ति-
मां कहेलुं छे ॥ एनो एज उत्तर छे ॥ हवे बाविसमुं प्रश्न जे ॥ चंद्रमा क्याथि थयो ॥ ते नो उत्तर ॥ जे जलना सत्वअंश थकि चंद्रमा थयो छे
॥ एनो एज उत्तर छे ॥ हवे त्रेविसमुं प्रश्न जे सूर्य क्याथी थयो उत्तर जे सूर्य तो अग्निना सत्वअंश थकि थयो छे ॥ एविरीते सर्वे प्रश्नना-
उत्तर करिने पछे महाराजे अक्षरमुक्तानंदस्वामिने आज्ञा करि जे आ प्रश्नना उत्तर तमे लखजो ॥ ने तेमां एटलुं लखजो जे ॥
विस्तारना भयथी संक्षेप मात्र उत्तर लख्या छे ॥ अने बाकि तमे ने अमे भेगा थयेथी तमारा अंतरना संशय मात्र हशे ते टलि जशे
॥ पण खरो कल्याण नो खप हशे तो सर्वे वातनी सिधि थशे ॥ पछे अक्षरमुक्तानंदस्वामिये कह्युं के बहु सारुं महाराज हुं
लखिश ॥ ॥ इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः ॥
॥ ॥ संवत १८ ओगणिसे २० विसना जेष्ट वदि ९ नवमिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री
पीपलीमध्ये ॥ पोताना मंदिरमां आथमणा बारनी मेडिनी ओसरिमां ढोलिडो ढालखाट उपर विराजमान थया हता ने सर्वे जरि-
यानी वस्त्र धारण कर्या हतां ॥ ने कंठमां गुलाबना पुष्पना हार धारण कर्या हता ॥ ने कान उपर पुष्पना गुच्छ शोभि रह्या हता
ने पाघमां डाबि कोर पुष्पनो तोरो लटकतो हतो ॥ ने ललारने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ ने संध्या आरति थया पछी
पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा क हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे महाराज कृपा करिने बोल्या
जे जिवने बे प्रकारनो कुसंग छे ते कुसंगनो संग करे ॥ तो जिवनुं भुंडुं थाय छे ॥ अने बे प्रकारनो सत्संग छे ॥ ते सत्संग
नो संग करे तो जिवनुं रुडुं थाय छे ॥ ते मां बे प्रकारनो कुसंग कियो ॥ तो एक प्रत्यक्ष कुसंग छे ॥ ने एक परोक्ष कुसंग छे ॥
परोक्ष एटले जिव थी छेटे ॥ अने प्रत्यक्ष एटले भेगा रह्या छे ॥ ते मां परोक्ष कुसंग ते शुं तो भगवानने भजतां जे जे अंत-
राय करे ॥ ते बहारनो कुसंग छे ॥ ते मां बाप ॥ सगां संबंधी नात जात गुरु गाम तथा पंथादिक जे जे बहारना मनुष्य भ-
गवान भज्यामां ने विषयनो त्याग करवामां रोके ने अंतराय करे ते सर्वे बहारनो परोक्ष कुसंग छे ॥ अने अंतराय शत्रु

तो कियां ने जिवने भेगां रहेनारा । एवा जे इंद्रियो अंतःकरण ते कुसंगि छे ॥ ने भगवानना मारगमांथि जिवने पाडनारा-
छे ॥ केमके जिवज्यारे भगवानने मारगे चाले छे त्यारे इंद्रियो अंतःकरण नाविषय बंध थाय छे ते सारु जिवने भगवानने मा
रगे चालवा देतां नथि ॥ माटे जेने पोताना आत्मानुरुडुं करवु होय तेने इंद्रियो अंतःकरण आदिक मांहेलो कुसंग नेसगां
संबंधि आदिक बहारनो कुसंग ए बेयनो विश्वास करवो नहि ने तेथि छेटे रहेवु अने जे ओलपरा खिने कुसंगिनो संग
करशे तेनो सत्संग रहेवानो नथि ॥ अने केटलाक एमकहे छे जे अमने तो कुसंगनो संग नलागे तेवा नरनारि छे ॥ केम
के कुसंगनो संग तो लाग्या विना रहे ज नहि ॥ अने एक भगवानने कुसंग न लागे जेमे कपिलदेवे माता ॥ देहुति प्रत्ये क
ह्युं छे जे ॥ कुसंगमां रहिने निरलेप रहेवाने तो एक हरि समरथ छे ॥ अने धर्मानंद स्वामि जेवा त्यागि होय ने जो
कुसंगनो संग करे तो भ्रष्ट थई जाय तो बिजा जिवो ने तो जरुर कुसंग लागे ॥ जेम हडकायु कुतरु जेने करडे तेने ह
डकवा हाले तेम जे कुसंग करे छे ॥ तेनो सत्संग रहेवानो नथि ॥ अने कुसंगनो करनारो सतसंगमां आवतो हशे ॥ तो
पण तेने सतसंगि न जाणवो ॥ केमके तेने ज्यारे कोईक देश काल आवशे ॥ अथवा भगवानना मनुष्य चरित्रने देखशे
सांभलशे त्यारे तेने मोह थशे ने भगवानना मारगथी पडि जशे ॥ जेम हडकाया ना करडवावालाने ॥ वायु अग्नि ज-
लादिकनो जोग थाय त्यारे तेने रगे रगे हडकवा चडि जाय छे ने तेना प्राण जाय छे ॥ तेम जे कुसंग करतो होय तेने ज्या
रे देश काल आवे त्यारे तेने कुसंगिना सब्दरुपि लाळ रगे रगे प्रवृति जाय छे ॥ ने ते भगवानना मारगथकि पडि जाय छे ॥
माटे जेने पोताना आत्मानुं रुडुं करवुं होय तेने बे प्रकारना कुसंगनो त्याग करवो त्यारे कोईक कहेशे जे बहारना कुसंगथि
तो कदापि छेटे रहेवाय खरु ॥ पण मांहेना कुसंगि जे इंद्रियो अंतःकरण तेथी छेटे केम रहेवाय ॥ तो तेथी छेटे निय-
मे करिने रहेवाय छे ॥ ते नियम शुं तो काने करिने अशुभ शब्द सांभलवा नो त्याग करवो ने भगवानने भगवानना भक्तना
शब्द सांभलवा अने त्वचाये करिने अशुभ स्पर्शनो त्याग करिने भगवानना चरणनो स्पर्श करवो ने नेत्रे करिने मा-

ईकरुपजोवानोत्यागकरिने भगवाननीमूर्तिनादरशनकरवां॥ एविरितेइंद्रियोअंतःकरणनांजेमाईकअशुभविष-
यनांआहार तेनोत्यागकरिने भगवानना स्वरुपमां राखवा॥ अनेज्यारेअशुभविषयनोत्यागकरिने भगवाननास्व
रुपमांजोडाय छे॥ त्यारेतेनांइंद्रियोअंतःकरणसुद्धभावनेपामे छे॥ नेतेनेमांहेनोकुसंगनाशथईजाय छे नेतेनेप्रत्य
क्षसत्संग वृद्धिपामेछे॥ नेतेजिवभगवाननामारगथिकोईकालेकोईनोपाड्योपडेनहिं॥ अनेपरोक्षनेप्रत्यक्षसत्सं
गतेशुंछे। तो भगवानने भगवानना भक्तसंत बहार थी ज्ञानआपे तेपरोक्षसत्संग छे॥ अनेते भगवानने भगवानना
संतनीकरेलि ज्ञानवार्ता तेनेशुद्धभावेकरिनेइंद्रियोअंतःकरणग्रहणकरे नेतेप्रमाणेसावधानथईनेवरतेतेप्रत्य-
क्षसत्संगछे॥ अनेएविरिते परोक्षने प्रत्यक्षबेयप्रकारनासत्संगनोजोगहोय त्यारेजिवनुकल्याण थायछे केम-
के बहारथि भगवानने भगवाननासंत ज्ञानआपता होयपणजोमांहेनांइंद्रियोअंतःकरण तेज्ञाननुग्रहणनकरे
तोतेज्ञानतेनेलागतुंनथि॥ अनेइंद्रियोअंतःकरण ज्ञाननुग्रहणकरेएवांहोय पणजोज्ञाननाआपनारा भगवान
केभगवाननाजननहोय तोतेनेज्ञानथायनहिं॥ माटे बहारथि भगवानने भगवाननाजन ज्ञानआपनाराहोयनेतेज्ञानने
पोतानाआत्मानाकल्याणनेअर्थे सुद्धभावेश्रीउत्तमथद्धारारविनेग्रहणकरवुंअने तेज्ञानमांहेकरिनेवर्तवानुंक-
ह्यंहोय॥ तेप्रमाणेदृढपणेवर्तवानोठरावकरवो॥ अनेअंतःकरणमां समजवानुं कह्युंहोय तेप्रमाणे समजवानोठराव
करवो॥ अनेदेहेकरिनेवर्तवाना॥ नेअंतःकरणेकरिनेसमजवानोठरावकर्योहोय॥ तेनेश्रवणमनननिदध्यासक
रीनेजिवमांसाक्षात्कारकरवुं॥ तोतेजिव ब्रह्मरुपथईने भगवाननाधामनेपामेछे॥ अनेतेभक्तकोईनोपाड्योभगवा
ननामारगथकिपडतोनथि॥ अनेजेनेसमजवामांने वरतवामांकसररहेछे तेनेउत्तम मध्यमनेकनिष्टएवाभेदरहे-
छे॥ तेमां जेजिव भगवानने भगवाननासंतनीज्ञानवार्ताकानेकरिने सांभळताहोय पणतेवातनुंमनन मनमांनक
रे॥ तोतेनेकनिष्टअधारहेछे॥ अनेजेज्ञानसांभळिने मनमां मननकरेछे। पणज्यांसुधिजिवमांनिदध्यासक-

रिने साक्षात्कार थयुं नहोय ॥ त्यां सुधि तेने मध्यम श्रद्धा रहे छे॥ अने जे श्रवण मनने निदध्यास करिने जिवमां-
साक्षात्कार करे छे तेने उत्तम श्रद्धा उपजे छे॥ अने जेने उत्तम श्रद्धा उपजे छे ते जिव आत्यंतिक मोक्षने पामे छे माटे उ
त्तम श्रद्धा पामवानो समो आव्यो छे॥ ते सावधान थईने पोताना आत्मानुं काम सुधारी लेवुं॥ ॥

इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥संवत् १९
भोगणिसे ॥२०॥ थिमना जेष्ठ वदि १० दशमने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीपीपलीमध्ये व्यास॥
अंबाराम वालजिने घेर उगमणे बार ओरडानी ओसरिमां हिंडोला खाट उपर विराजमान थया हताने सर्वे जरियानी
वस्त्र धारण करया हताने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो॥ ने गुलाबना पुष्पना हार धारण करया हताने पोताना मुखार्वि
दनी आगल साधु तथा घणा क हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति॥ पछे थिरजि भक्ते महाराजने प्रश्न पुछ्युं जे हे म-
हाराज भगवाननुं स्वरूप छे तेने विषे तो देह ने देहिए बे भेद नथि॥ अने भगवान तो दिव्य साकार मूर्ति अखंड अवि
नाशीने माया पर छे॥ अने ए भगवान बिजा जिवनी पेठे देह धरता नथि॥ ने बिजा जिवनी पेठे देह मुकता पण नथि॥ एवा
प्रत्यक्ष मुर्त्ति राम कृष्णादिक भगवान छे॥ एम सर्व शास्त्र ने सर्वे महात्मा पुरुष कहे छे अने मनुष्यना जोयामां तो एम आ-
वे छे॥ जे श्रीकृष्ण भगवाने वसुदेव देवकीने घेर जन्म धर्यो ने वलि तेणे पाछो देह मुक्यो ए थिरीते सर्वे भगवानना अ
वतार थई गया तेना देहनो व्यवहार तो बिजा जिवना जेवो दिठामां आवे छे॥ माटे भगवान देह धरता नथि ने देह मुक-
ता नथी॥ ते नुं प्रमाण शुं॥ जे जेणे करिने जिवने हा पडे॥ जे बात खरि॥ जे भगवान तो देह धरता नथि ने देह मुकता
नथी ते कृपा करीने कहो॥ पछे महाराज बोल्या जे ज्यां सुधि जिवनी माई कदृष्टि छे त्यां सुधि जिवने भगवाननुं
स्वरूप यथार्थ जाण्यामां आवतुं नथी॥ अने ज्यारे जिवने महात्मा पुरुषने विषे प्रितिथाय छे त्यारे ते जिवने तेनुं ज्ञान
अंतरमां उत्तरे छे॥ पछे तेनी दृष्टिमांथी माया टलि जाय छे ने ते जिव ब्रह्मस्वरूप मुक्त थाय छे॥ पछे एवो मुक्त थयो॥

तेपा तानेविषेपणमायानेदेखेनहिं ॥ तो ब्रह्मथिपरएवाजेपरब्रह्मपरमात्मा तेनेविषे तो मायानेदेखेज केम अनेवळिते
ज्ञानिएम जाणे जे ॥ जेनेज्ञाने करिनेहुं मायापरनेजन्ममरणरहित थयो तो नेज्ञानदाता एवाजे प्रत्यक्ष भगवान तेनेनेविषे
तो माया नेजन्ममरणहोयज केम ॥ नज होय ॥ नेए तोसदाय माया पर नेजन्ममरणरहित छे तेमायापरनेजन्ममरण
रहित तोएकपरमात्माछे ॥ पण बिजो तो कोई प्रकृतिनाकार्यमांहेनो ॥ मायापरनेजन्ममरणरहित नथि ॥ अनेजेमाया
परनहोय तेमायानुंज्ञान आपिकेमशके ॥ नजआपिशके ॥ अनेते प्रत्यक्ष परमात्माथकि ज्ञानने पामिनेएकवार मा-
यापरथाय छे ॥ तेपाछो पृथ्विउपरजन्मधारणकरतोनथि ॥ तेगितामांकह्युंछे ॥ न तद्भासयते सूर्योनशशांकोनपा
वक ॥ यद्गत्वा ननिवर्तंते तद्धाम परमं मम ॥ ॥ अर्थ ॥ जे भगवानना धामने पाम्यो ते फरिनेपृथ्विउपरजन्मधारण
करतोनथि ॥ माटेपरमात्माजएकस्वतंत्र छे ॥ ते वहाय तेम करवाने स्मर्थ छे ते सारुंजिवोनाकल्याण करवाने अर्थे
वारंवार पोतानीस्वईच्छाये करिने पृथ्विउपर प्रगटथईने मनुष्यनेजोवामांआवे ॥ एवा मनुष्यस्वरूप धारणकरिने
ज्ञानआपेछे ॥ एम तानीजाणे छे ॥ अनेवळि प्रत्यक्ष भगवानने ओळखवानुं एक बिजुंएधाण छे जेम कोई मनुष्यएक
गामथी बिजेगाम रहेवाजाय त्यारेतेनागुणविद्यासमृद्धि तेतेनाभेगुंएमनेएम तेनीभेगुं रहे छे ॥ अनेतेमनुष्यजो मरि
जायने बिजेठेकाणे जन्मधरे तो तेनेपूरवनागुण स्वभाववधनमालविद्या ते कांई भेगुंआवेनहिं नेपाछुं फरिनेदारवडो
करिने मेळवे ॥ तो मळे ॥ केम के तेने देह बादलो थाय छे ॥ अनेजेएकगाममांथी बिजेगाम रहेवाजाय ॥ तेनेदेह तेनो
तेरहे छे ॥ तो तेनेसर्वसमृद्धि तेनाभेगि रहे छे ॥ तेमसर्वदेवमनुष्यने ब्रह्मादिकनेजन्ममरणथायछे तो तेनेपूर्वेनुंज्ञान
रहेतुंनथि ॥ माटे तेने बिजागुरू करवा पडे छे ॥ अनेजेपरमात्मा पृथ्विउपर प्रगटथाय छे तेनेजन्ममरणनथि ॥ माटे ते-
नापासे वगर शिख्युंअनादिनुंअखंडज्ञान रह्युं छे ॥ अनेते प्रगट भगवानने कोई नीपासेथि ज्ञान शिखवुंपडतुं नथि ॥
केमके भगवानने देह बादलो थतोनथि ॥ एमप्रत्यक्षप्रमाण भगवानने ओळखवानुंएधाण छे ॥ अनेजेनेदेहबादलो-

थायछे तेनीपासे वगरशिख्युं ज्ञान होयनहिं ॥ अनेजे भगवानहोयतेनीपासे तोवगरशिख्युं सर्वमतसिद्धांतज्ञान होय
छे केमके भगवाननेदेहबाद लो थतोनथि ॥ एम भगवानअजन्मानेअखंडमूर्तिछे ॥ एविरिते ज्ञानेकरिने प्रगट भग-
वानना स्वरूपनोनिश्चयथायछे ॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृ
ष्णायनमोनमः॥ ॥संवत् १९ ओगणिसे॥२०॥ थिसनाजेष्टवदि॥११॥एकादशिनेदिवसमहाराज
श्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीपिपलिमध्ये भक्तविराजिविमाने पेरउगमणेबारओरडानीओसरिमांगादितकियेयुक्त-
ढोलियाउपर विराजमानथयाहता ॥ अनेस्वेतखेसपहेर्योहतो ॥ नेस्वेतअंगरखुंनेगुलाबिफेंटो धारणकर्यांहतां॥ने
पोतानामुखारविंदनीआगल साधुतथाहरिभक्तनीसभा भराईनेबेठिहति॥पछेमहाराजबोल्याजे॥जेनेनिर्विकल्प
स्थितिथईहोय ॥ तेनांशांलक्षण छेजेजेणे करिने एमजाणियेजेएनेनिर्विकल्पस्थितिथईखरि॥एप्रश्नसतमंडलने
पुछियेछैयेतेकहो॥ पछेअक्षरमुक्तानंदस्वामियेकह्युंजेजेनेप्रत्यक्षभगवाननास्वरूपनोउत्तमनिर्विकल्पनिश्चय
थायनेते प्रत्यक्षनाचरित्रनेविषेकोई दिवस लेशमात्र संशयथायनहिं॥त्यारेएमजाणियेजेएने निर्विकल्पस्थितिथईछे
॥एमजणायछे पछेमहाराजघडिकविचारीने बोल्याजे निर्विकल्पस्थितिथईहोयतेनांतोएलक्षण छेजेप्रत्यक्ष
भगवाननीआज्ञाप्रमाणेदृढपणे वरते॥ अने भगवानजेजेआज्ञाकरे॥तेनेविषेरंचमात्रमनमांसंशयकरेनहिं॥अनेभगवा
नेजेमकह्युंहोय तेमराजिथकोकरे॥पणतेमांवारलगाडेनहिं॥एमजे वरततुंहोय॥तेनेनिर्विकल्पस्थितिथईजाण
वि॥ अनेजेनेएविनिर्विकल्पस्थिति थायछे॥तेनीउपर भगवाननीकृपा अखंडरहेछे अने तेने अंतरमांपण सदायसु-
खवरत्याकरे॥अनेजेनेतेमांजेटलीकसरहोयतेनेतेटलुंदुःखरहेछे॥ पछे अक्षरमुक्तानंदस्वामियेपुछ्युंजे हेमहारा
जमनमांतोएमहोयजेजेममहाराजकहेछेतेमकरवुंछे॥ तेतमेएमआज्ञाकरोजेआजतोउपवासकरजो॥त्यारेते
नेराजिथकोउपवासकरे॥अनेपोतानेजाणेउपवासकरवामांड्योहोय॥नेतेउपवासनीतमेनापाडो॥त्यारेमनमांएम-

विचारथायजे ॥ महाराजतो छोनापाडो । पण आपणेतो उपवासकरवो ॥ केमके तपत्यागकरात्यामांतो महाराजनोराजि
पो छे ॥ एमजाणिनेतेवचननपालेनेनापाडीहोय तोपणउपवासकरे तेनुंकेमसमजवुं तेकृपाकरिनेकहो ॥ पछेमहाराज
बोल्याजेउपवासकरवानुकहे तेमांकठणपडे ॥ नेउपवासनीनापाडे त्यारेराजिथाय नेवाटजुवेजेउपवासनीनापाडेतो
ठीक ॥ एवासंकल्पनोत्यागकरीने ॥ जेमआज्ञाकरे तेप्रमाणेराजिथकांकरवुं ॥ अनेतेआज्ञानेविषेयोग्यअयोग्यकेठिक
अठिकएवोकांईकुतर्ककरवोनहिं ॥ अनेजेजेआज्ञाकरे तेनेततकालराजिथकाकरवुं ॥ एविरितेवरते तेनाउपर अमा-
मारो बहुराजिपोथायछे ॥ अनेतेनेजअमारोअखंडसंबंधरहेछे ॥ अनेजेएवोखरेखरो आज्ञाप्रमाणे वरतनारोभक्त
होयतेनेतोजेटलुंजरुरकरावानुंहोय तेटलीज तेनेअमेआज्ञाकरियेछियेनेजेनेआज्ञामांफेरपडेछे ॥ नेआज्ञाने
विषेठिकअठिकसमजेछे । तेनेअमे पण यथार्थआज्ञाकरतानथि ॥ केमके यथार्थआज्ञापालवानोअधिकारथयोन
थि ॥ माटेअमारो खरेखरो राजिपोथवानो नेखरेखरीअमारीकृपाथवानो तोएजउपायछे जेअमेजेजेआज्ञाकरीयेतेप्र-
माणे निरसंशयपणेततकालश्रद्धायेसहितकरवुं ॥ अनेतेआज्ञानेविषेपोतानुंमोटुंभाग्यमानवुं । एविरितेजेआज्ञा
पालेछे ॥ तेनाउपर अमारोबहुराजिपोथायछे नेतेनाउपरजकृपाथायछे ॥ अनेतेनेमां थेथिजन्ममरणनांदुःखटलिजाय
छे ॥ अनेएवाभक्तथातो अमे क्षणुमात्रपणवेगलारहेतानथि ॥ अनेतेभक्त तोछतिदेहेअक्षरधाममांबेठेछेएटलीवा
रताकरिनेपछेवलिमहाराजेसाधुनेएकप्रश्नपुछ्युंजे भगवाननारामकृष्णादिकअवतारथईगया तेसर्वेसरखाहशे
केकांईभेदहशेतेकहो ॥ पछे साधुयेउत्तरकरवामांड्यो पणथयोनहिं ॥ पछे महाराजबोल्याजे साभलो अमे तेनोउ
त्तरकरियें ॥ जेभगवाननाअवतारबेप्रकारनाथायछे तेमांएकतोभगवाननाअवतारकहेवायछे ॥ अनेएक-
तोसर्वेअवतारनाअवतारि अक्षरातितपुरुषोत्तमप्रगटथायछे ॥ तेमांजेटलाअक्षरातित अवतारीप्रगटथया
छे ॥ तेनेविषेतोजरारे पण भेदनथि ॥ अनेतेअवतारिअवतारजेटलाथायछे ॥ तेतोसर्वेएकजछे ॥ पणतेमां

रंचमात्र भेदनथि॥ अने ते मांजे भेदसमजे छे ॥ तेतो अज्ञानीछे॥ ने तेने सत्पुरुष नो सिद्धांत समजायोजनथि॥ माटेजेटला अवतारि अवतारथया छे तेतो सर्वे एकजछे ॥ जेम भवायो एक होय तेवेष अनंत काढे छे॥ तेम परमात्मा अक्षरातितएक छे ॥ ते जिवोनेआत्यंतिकज्ञानआपवासारुं अनंतयारप्रगटथायछे॥ माटे तेमां भेदनथि अने ते अवतारि अवतारनुं आत्यंतिक ज्ञान जेनाअंतरमां उतर्युं एवाजे प्रत्यक्ष भगवानना भक्त तेसर्वे भगवानना अवतार कहेवायछे॥ अने ते अवतारने विषे भेद छेखरो ॥ केमकेज्ञानना त्रण भेदछे ॥ तेत्रण भेद कियातो उत्तम मध्यमने कनिष्ट ॥ एत्रण प्रकारना भेदछे ॥ तेसर्वे भगवानना अवतार कहेवायछे॥ अने एसर्वेने आत्यंतिक ज्ञानना आपनाराएवाजेपरमात्मा ते सर्वे अवतारना अवतारि छे॥ अने तेप्रत्यक्षपरमात्मार्थकिजे भक्त उत्तम निर्विकल्पज्ञानने पाम्यो होय ते तो तेने ते देह ब्रह्मरुपथईने अक्षरधामने पामे छे॥ नेतेने फरिनेजन्मधरवोपडतोनथि॥ अने जेने निर्विकल्प ज्ञानमां थोडिघणिकसर रहि होय॥ तेने पाछो फरिनेजन्मधरवो पडे छे अने ते भक्त भगवाननो अवतार कहेवायछे॥ अने ते अवतारजेते धर्म ज्ञानुं वैराग भक्तिनुं प्रतिपादन करे छे॥ अने केटलाक जिवोने मोक्षने मार्गे चढावे छे ॥ ते मां जे मध्यमज्ञानवाला भक्त नो अवतारथयो होय तोतेअवतार विषेषेज्ञाननी प्रवृत्ति करे छे ॥ अने कनिष्ट ज्ञानवाला भक्त नो अवतार थयो होय-तो तेथोडिज्ञाननी प्रवृत्तिकरे छे॥ अने तेसर्वे भगवानना अवतार कहेवायछे ॥ अने ते अवतारने विषे भेद छेखरो॥ प-ण अवतारि अवतारने विषे भेदनथि ॥ अनेजेने अवतारी अवतारमलेछे॥ तेजआत्यंतिकमोक्षजेअक्षरधाम तेने पामे छे॥ पण तेविना अक्षरधाम नेपमायनहि॥ तेमां रामकृष्णते अवतारिमूर्त्तियो छे नेतेनासंबंधमां जेजे भक्तआव्याने तेमूर्त्तियोने विषे मनकर्म वचने जोडाया ते सर्वे अक्षरधामने पामिगयाछे॥ माटे आसमेजेने मनुष्यदेह आव्यो छे॥ नेजेनेआ सत्संगनो संबंध थाय छे तेनां बहु जमोटां भाग्य छे॥ केमके पोताने मनुष्यनो देहने अवतारिअवतारनो संबंध एतोघणाकजन्मनांजेने सुकृतहोय तेनेजोग मले छे माटेतेसमो आज्ञ तमारे सर्वेने आव्यो छे॥ ॥

॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥

संवत्१९ओगणिसें॥२१॥एकविसनाअषाडवदि४चोथनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीपिपलिमध्येभ-
क्तविरजितिमानेघेरउगमणेवहारओरडानीओसरिमांगादितकियेयुक्तढोलियाउपरविराजमानथयाहता॥अने
सर्वेजरियानीवस्त्रधारणकर्यांहतां॥नेपुष्पनांआभूषणसर्वेअंगमांशोभिरह्यांहतांनेकंकुनोचांदलोकर्योहतो॥
नेपोतानासुखार्थिंदनीआगलसंतमंडलतथाघणाकहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठिहती॥पछेमहाराजनीसंध्या-
आर्तिथयाकेडे॥महाराजसर्वेपोतानाभक्तजनप्रत्येकृपाकरिनेबोल्याजेसास्त्रसर्वेछेतेतोभगवाननास्वरूपने-
ओलखाववासारुंसत्पुरुषेकर्यांछे॥तथाजिवनेपंचविषयनीवासनाटलाववासारुंकर्यांछे॥पणतेमांजेसत्पु
रुषनासंगिछे॥तेशास्त्रनेसवलांसमजेछे॥अनेजेअसत्पुरुषनासंगिछेतेशास्त्रनेअवलांसमजेछे॥नेशास्त्र-
तोसर्वोकरितनांसरखांनेस्कखदाईछे।तेसवलांसमजेछे॥तेनेमहासुखथायछे॥अनेजेशास्त्रनेअवलांसमजे
छे॥तेनेमहादुःखथायछे॥जेनपृथ्विनेजलतोएकसरखांहोय।पणतेमांजेवुंबिजवावेतेप्रमाणेतेनीवृद्धिथा
यछे॥पणतेमांजेवुंजेबिजहोयतेप्रमाणेतेनीवृद्धिथायछे॥तेभिंडानुंबिजहोयनेतेनेपृथ्वीजलादिकनोजोग
थाय॥त्यारेतेमांथिभिंडानुंवृक्षथाय॥तेप्रथमतोबहुवृद्धिपामतुंजणाय।पणअंतेछिंचणजेटलुंथईनेबेमासथा
यत्यारेतेसुकाईजायछे॥तेणमांपृथ्विजलतोसंपूरणहतांनेवृद्धिकरतांहतां॥पणभिंडानुंबिजएवुंनकारुंह
तुं॥मारेनासपामिगयुं॥अनेवडनुंबिजहोयनेतेनेप्रथवीजलादिकनोजोगथायत्यारेतेमांथिमोटोवडथायछे
॥नेतेवडहजारोवरससुधिरहेछेनेतेनीछायामांअनंतजिवसुखिथायछे॥अनेवलिएकशेरडिनुंबिजछे॥ने
तेनेपृथ्विजलादिकनोयोगथाय॥त्यारेतेमांथीमीठिशेरडिथईनेतेनोगोलखांडसाकरआदिकसुखदाईरस-
निपजेछे॥अनेजोसिंगडियावसनागनुंबिजहोयनेतेनेप्रथवीजलादिकनोजोगथाय॥त्यारेतेमांथीझेरनिप-

जे छे।।नेतेनेजेरवाय।। तेनाप्राणजायछे।।अनेप्रथवीजल तोसर्वेमां सरखाछता पण जेवुंजे बिजछतुं तेवुंतेमांथीफलथा
यछे।।तेमशातशास्त्रतोसरखांनेसुखदाईछे।। पणजेवाजेवापुरुषना संगरुपि बिजपडेछे।।तेप्रमाणे तेजिवनेसुख
दुःखरुपिफलथायछे।। तेमांअसतपुरुषनामुखथकिशास्त्रनेसांभळेछे तेनेदुःखरुपफलथायछे।।अनेजेसतपु
रुषथकिशास्त्रनेसांभलेछे।।तेनेसुखरुपनेअविनाशीफलथायछे।।तेमांसत्पुरुषनासंगिशास्त्रनेकेमसमजे
छे।।नेअसतपुरुषनासंगिकेमसमजेछे।।तोजिवनेजन्ममरणगर्भवासनेचोरासिनामहाकष्टछे।।तेनेटालवाने
अर्थेनेजिवनेसुखियाकरवासारुंशास्त्रमांभगवाननुस्वरुपजणाव्युंछे।। केमकेभगवाननास्वरुपनेजिवजाण
तोनथि।।एजजिवनेजन्ममरणनेगर्भवासनुंकारणछे।। तेभगवानकेवाछे तोअपारमहिमावालाछे।।अनेतेभग
गवाननाएकएकरोमप्रत्येकोटानकोटिसूर्यनाजेवोप्रकाशछे।।तेजेमआंखनाअंधारानेसूर्यटालेछे तेमजीवना
अज्ञानरुपिअंधारानेप्रत्यक्ष भगवानटालेछे।।तेजेमसूर्यआंखनाअंधारानेटालेछे।।पणजेनीआंखनेपडलबलि
नेविकारवानथईगईहोय।।तेनेसूर्यनोप्रकाशजणातोनथि।। नेतेनेअंधारुंपणटलतुंनथि।।अनेजेनीआंखनि-
र्विकारिहोय।।तेनेसूर्यनोप्रकाशजणायछे।।नेतेनेअंधारुंटलिजायछे।। तेमकोटिसूर्यनांकर्त्ताअपारप्रकाशवा
नएवाजेपरमात्माभगवाननेभगवाननासंततेजिवोनाअज्ञानरुपिअंधारानेटालवासारुंप्रगटथायछे।।पणजे
नेअसतपुरुषनेसंगेकरिनेकामक्रोधादिकविकार जिवमांवृद्धिपाम्योहोय तेजिवनाजाण्यामांप्रत्यक्षभगवा
ननेसंतनुंस्वरूपआवतुंनथी।।अनेजेजीवेसतपुरुषनोसमागमकरिनेतेथकिज्ञानपामिनेकामक्रोधादिकवि-
कारनेटालिनेसुद्धथयाहोय।। तेनेभगवाननेसंतनुंप्रत्यक्षस्वरूप अपारमहिमातेजप्रतापगुणनेऐश्वर्यसहित
साक्षातकारभासेछे।। अनेतेनेमायानोअंधकाररुपजेपंचविषयनीवासना तेटलिजायछे।।नेजन्ममरणगर्भ-
वासनेचोरासिनांजेमहादुःखतेसर्वेनाशपामिजायछे।। अनेतेजिवब्रह्मरुपथईने अपारसुखनासागररुप-

एवुं जे अक्षर धाम तेने पामे छे ॥ माटे सतपुरुषे जिवोनी उपर कृपा करिने कामादिक दोषने टालवा सारुं शास्त्रमां तेनो उपदेश
लखि गया छे ॥ माटे ते शास्त्र प्रमाणे जे वरते छे ॥ तेना विकार टलि जाय छे ॥ ने तेने प्रत्यक्ष भगवानने संतनुं स्वरुप ओलखा-
य छे ॥ अने जेने असतपुरुषनो संग थई जाय छे ॥ तेने शास्त्र अवलां समजाय छे ॥ ने तेने कामादिक विकार वृद्धि पामे छे
हवे ते शास्त्रमां सतपुरुषे कामरुपि दोष टालवा सारुं नियम कह्या छे ॥ जे ग्रहस्थ होय तेने परस्त्रिनो संग करवो नहिं ॥ अ
ने पोतानी मा बेहेन ने दिकरी ते जुवान अवस्थावालि होय तो तेनी संगाथे आपतकाल पड्या विना एकलां बे जणाने एं-
कांतमां रहेवुं नहिं ॥ अने जे त्यागि होय तेने स्त्रिमात्र अष्ट प्रकारे त्याग करवो ॥ एवी रीते नियमने द्रढ करिने राखे तो -
तेने कामरुपि दोष टलि जाय छे ॥ ने तेनु कल्याण थाय छे ॥ अने जे तेनियमने चुके छे तेनु मन भ्रष्ट थाय छे ॥ तेनां द्रं
त्यागिनो धर्म चुकि ने राजानी कंन्यानो हाथ जोयो तो मन भ्रष्ट थयुं ॥ ने फजेति थई अने शिवजिये मोहनी स्वरुप जोयुं
तो विर्यपात थयो ॥ ने योगमारगमांथि पडि गया ॥ अने ब्रह्माये तेनी दिकरि जुवान अवस्थावालिनुं एकांतमां मोढुं
जोयुं ॥ तो मन विकारने पाम्युं ॥ ने तेनि पण मोटि फजेति थई ॥ एम्वि रीते नियम चुके छे तेनु मन भ्रष्ट थाय छे ने जे निय
म राखे छे तेना कामादिक दोष टलि जाय छे ॥ एम समजिने सतपुरुषना संगि छे ॥ ते शास्त्रमां जे जे नियम कह्या होय
तेने द्रढ करिने पाले छे ॥ ने कामनी वासनानो त्याग करे छे ॥ अने ते तुं ते शास्त्र जो असतपुरुष पासे थि सांभले छे त्या -
रे ते असतपुरुष केम समजावे छे ॥ तो कहे के शास्त्रमां एम कह्युं जे मोटा मोटा नारद शिव ब्रह्मा जेवा ते पण जो काम
ने जितवा गया ॥ तो उलटि तेनी फजेति थई ॥ माटे काम तो कोई थी जिताय नहि ॥ एम पापिएवा जे असतपुरुष ते पोता-
ना शिष्यो ने अवलुं समजाविने पोते पण निसंक थईने काम भोगवे छे ने तेना शिष्यो ने काम भोगावे छे ने गुरु शिष्य बे
नारकि थाय छे ॥ अने वलि पापि छे ते केम अवलुं समजावे छे तो श्रीकृष्ण भगवाने कृपा करिने गोपियोनो कामरुपि दोष
टालवाने अर्थे ॥ ने तेना मननी वृतियो पोताने विषे जोडाविने ब्रह्मरुप करवा सारुं भगवान गोपियो साथे रास रम्या छे

नेपोते उर्धरहेता ब्रह्मचारीरह्या॥ नेकामनो मद उत्तार्यो॥ नेगोपियोने पण निष्कामि करिमुकियो॥ तेमर्मने तो सत्पुरुष समजे छे॥ अनेजेअसत्पुरुषछे तेतो एवा महानिष्कामिने कृपानासिंधु श्रीकृष्ण भगवान तेनेविषे कामरुपि दोषपरठेछे नेते प्रमाणे पोतेपण स्त्रियोपुरुषभेगां थईनेरासरमेछे॥ नेविभिचार करेछे॥ अनेते पापिअसत्पुरुषएमकहेजे भगवान पण स्त्रिसाथेरम्याछे॥ तोआपणेशुंछे एमकहिनेपोते भूंडांकर्मकरे छे॥ नेबिजाने भुंडां कर्म करावेछे नेते पापेकरिनेघोरनर्कमांजायछे॥ अनेवलिभगवाने बलिराजानो लोभकाढवा सारुं नेतेनेअविनासीसुखपमाडवानेअर्थे भगवाने कृपाकरिपोतेवामनजिनुंरुपधारण करीने बलि राजानेयाचिनेतेनुंसर्वस लेई लिधुं॥ने बलिराजाने निर्लोभि करिने पोतानाअविनाशि सुखनेपमाड्यो॥ तेवातने तो सतपुरुषसमजेछे॥ जे भगवानतोअतिकृपालु छे॥ ते बलिराजानो फकत लोभटालवा सारुं ज तेनुंसर्वस लीधुंछे॥ नेपोतेतोपूरणकामछे नेलक्ष्मिना तोपोते स्वामिछे॥ नेसुखनासागरछे तेपोताना सुखमां थिएकसलिभरिने प्रकृतिपुरुषने सुखआप्युं॥ तोतेणे करिने प्रकृतिपुरुषअनंत कोटिब्रह्मांडसरजवानीशक्तिनेपाम्योछे॥ अनेतेनालेश सुखेकरिने अनंत कोटिब्रह्मांडना देव ब्रह्मादिकतथा राजा मनुष्यपशुपक्षादिक सर्वे जिव ते सुखेकरिने सुखियां थयां छे॥ एवाजेअपरमितसुखना धाम भगवान ते तुछजेवुंजे बलिराजानुं राज्य तेमां शुंलोभाय॥ नजलोभाय॥ एमसत्पुरुषने सत्पुरुषना शिष्यछे ते समजे छे॥ नेएमसमजिनेपोते लोभनोत्यागकरेछे नेसंसारथकि वैरागनेपामिने भगवानने तेना संतमां प्रिति करेछेअनेएवि रितनी भगवाननीकृपा ने नजाणता एवाजेअसतपुरुष ते भगवानने विषे लोभरुपी दोषपरठे छे नेपोताना शिष्योने कहेजे सांभलो भाई भगवानने पणलोभछे॥ तेबलिराजानुंसर्वस लेई लिधुं॥ तोआपणे तो लोभहोयजतो॥ एमसमजिनेद्रव्यादिकपदार्थनेविषेमहा लोलुपवर्त्याकरेछे॥ नेमरिनेघोरनर्कमांजायछे॥ अनेवलि भक्तजन भावे करिने सारा सारां भोजन भगवानने जमाडेछे तेने कृपा करिनेपोताना भक्तना स्वादरुपिदोषनेटालवाने अर्थे थालतेजमेछे नेतेभक्तने निस्वादि करिने अविनाशि

सुखनेपमाडेछे एवरीते भगवान निष्कपाने सतपुरुष जाणेछे नेएम समजेछे जे लक्ष्मिआदिक कोटिश क्तियोते भगवान
निसेवामांहाजरउभियोछे।। तोपण तेनी सेवानो त्यागकरिने अल्प जेवाजे मुमुक्षुजिव तेनी सेवाने कृपाकरिनेनेतेनोमा
वजोईनेग्रहणकरेछेनेपोतेतो सदायपूरण काम छे।। अने भगवाननेंतो आलोकनुंसारुनरसुंपदार्थद्रष्टिमानथि।।
पणभगवानतो केवलएक भावना भोगिछे।। तेसुदामाना तांदुलने विदुरनीभाजिने भिलडिनांबोर तेभावतेनोहतो
तोते भगवानजम्या अनेतेनेपोतानुं अविनासिधामआप्युं।। एवोजे भगवाननो मोटोउपकारने भगवाननीदया तेने असत्पु-
रुषतेनथिजाणता।। नेतेतो शास्त्रनेसांभलिने तेना अवलाअर्थकरेछे।। जेभगवानने पण सारुं सारुं खावाजोईयेछिये।।
तोआपणेस्वाद केमतजाय।। एवरीते अवलुंसमजिने विष्टानाकीडानी रसास्वादनेविषे लोलुपथईरहेछे।। अनेवलि
भक्तजनपोतानाकल्याणने अर्थे भगवानने भावेकरिने वस्त्रघरेणांपुष्पनांहार धारणकरेछे।। तेनो भावने भक्ति
जोईनेतेने अविनासिसुखआपवासारुं अंगिकारकरेछे ।। तथाकोईहरिभक्तदेहेकरिने भगवानना चरणार्विं
दचांपेछे।। तथापूजाकरेछे।। ईत्यादिक जेजे निष्काम भावे सेवाकरेछे।। तेने भगवान कृपाकरिने ग्रहणकरेछे
।।तेप्रमाणेशास्त्रमांथि सांभलिने असतपुरुष अवलुं समजेछे ।।जे भगवानने पण देहमांस्नेहछे ।।माटेदेहनीसेवा
करावेछे ।। एमसमजिने असतपुरुषपोते पण देहमांआशक्तथईने रातदहाडो देहनुंजतन कर्याकरेछे नेमहा-
हेरानथायछेअनेजिवोने अनंतजन्मनीवासनावलगिछे ।।तेने मुकाववासारुं भगवानपोताना आश्रीतोनेकठ-
ण वचनेकरिनेउपदेशआपेछे।। अनेजिव मायानीजालमां लुब्धथईरह्याछे तेनेमुकाववानेतोएक भगवाननेभ
गवाननाएकांतिक संत समरथछे।। तेसामदामदंडभेदेकरिने जेरिते जिवनीमायाटले तेवोउपदेश आपिने जिवने
मुक्तकरेछे।। जेमरोगिहोय तेनोरोगजेजेऔषधेकरिने मटे तेवांतेवां कडवांऔषध वैदपायछे।। तेमसत्पुरुषक
ठणवचनेकरिनेउपदेशआपेछे तेनेसांभलिनेजेअसत्पुरुषछे।। तेभगवाननेतेनासंतने विषेमानतथाक्रोधरु-

पिदोषपरठेछे॥ तथाआसुरोने भगवाने मारयाएवुंशास्त्रमांथि सांभलिने असत पुरुषएम समजेछेजे भगवानने प-
ण मानने क्रोधछे॥ तोआपणे मानने क्रोधकेम टले॥ एम समजिनेउलटा मानिक्रोधि अतिनुंथायछे॥ अनेजे स-
तपुरुषनेतेनाशीष्यछे तेनो भगवानना चरीत्रनेशास्त्रमांथी सांभलिनेतेचरित्रने दिव्यनेअलोकिक नेपरम
उपगारीयेरूपजाणेछे॥ नेते चरित्रनेसांभलिनेमायामां थी अतिशेवेरागपामिने भगवानने संतमां दृढप्रिति
करेछे॥ नेदृढथिनोरयोपोतानाआत्मानेजाणिनेब्रह्मरूपथईने परब्रह्मएवाजे प्रत्यक्ष भगवान तेनी प्रेम लक्षणाभक्ति करीने
अभयपदएवुंजेअक्षरधाम तेनेपामेछे॥ अनेजेअसतपुरुषनेतेनाशीष्यछे नेशास्त्रनेसांभलिनेउलटा विषयी थईनेनरक
मांजायछे॥ माटेजेनेपोतानाआत्मानोमोक्षकरवानीइछाहोय तेनेअसतपुरुषना मुखथकिशास्त्र सांभलवां नहि अनेतेनेते
नो संगपण कोईदहाडे करवो नहि॥ अनेतेसतपुरुषएवाजे प्रत्यक्षभगवानने॥ भगवानना पंचविषयना त्यागितेनामुख
थकिशास्त्र सांभलवां अनेतेना नित्यप्रत्ये समागम करवो तोतेथकि जिवने मायानां पडल टलिजायछे नेतेने भगवाननु
स्वरूप साक्षात्कार जणायछे॥ नेते जिवनो मोक्षथायछे॥ ॥इतिश्री मुखसिद्धांत समाप्तः
॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥ संवत १९ ओगणिसे २१ एकविसना आषाडवदि
पंचमिने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री पीपलीमध्ये भक्त विरजिविग्नेघेर उगमणे बारओरडानी ओसरिमां
गादितकिया नरवाविने ढोलिया उपर विराजमान थया हता॥ ने सर्वे जरीयानी वस्त्र धारण करयां हतां ने कंठमां पुष्पनाहार
नो भिरयाहता॥ ने पाघमां फूलना तोरा बे कोरे लटकता हता॥ ने बे कान उपर पुष्पना गुच्छ धारण करयाहता॥ नेहाथ
ने विषे बाजुने गजरा बांध्याहता॥ नेललाटने विषे कंकुनो चांदलो करयो हतो॥ नेजमणा हस्तकमलमां रुमाल धारण
करयो हतो॥ नेपोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा कहरिभक्तनी सभा भराईनेबेठि हती॥ नेमहाराजनी
संध्याआर्त्ति थया पछि अक्षरमुक्तानंद स्वामिये प्रश्न पुछ्युंजे हे महाराज जेनो चंचल स्वभाव होय तेने शान्त केम थवाय

॥अने जे अतिशे शान्त होय तेने चंचळ केम थवाय ते कहो॥ पछे महाराज बोल्या जे चंचळ ने तो शान्त थवानो तो उपाय छे-
॥जे पोताने आत्मारुपमानीने भगवाननी मूर्त्तिनुं ध्यान करवुं॥ ने भगवाननी अखंड स्मृती राखवि॥ एरिते भगवाननुंध्या
न ने स्मृतिरा खवानो अभ्यास करे तो चंचळ होय ते शान्त थाय छे॥ अने शान्त नूं चंचळ थवुं होय तेने भगवानने भगवा-
नना संतनो महिमा समजवो ने तेनी सेवा मनक्रमवचने करिने करवि॥ तो तेने चंचळ पणुं आवे छे॥ एमउत्तर करिने
पछे महाराज बोल्या जे हवे अमे तमने सर्वने एक प्रश्न पुछियें छैये॥ जे भगवानना भक्त होय तेने जप तप व्रत धर्म ज्ञान
वैराग भक्ति आदिक सर्वे साधन करिने पछे छेलावारेनुं करवुं॥ ने शुं पामवुं॥ पछे तेनो उत्तर कोई थी यथार्थ थयो नहि॥
पछे महाराज बोल्या जे ल्यो अमे तेनो उत्तर करिये॥ जे सर्वे साधन करीने अंते भगवानना स्वरूपनी अखंड स्मृति करवि
॥ ते भागवतमां पण कह्युं छे जे॥ ॥एतावान् शांख्य योगाभ्यां स्वधर्म परिनिष्टया जन्म लाभः परः पुंसां मंते
नारायण स्मृतिः॥ ॥अर्थ॥ शांख्यने योगशास्त्रे करिने ने पोताना धर्मने विषे जे निष्टा जे आस्था ते करिने पुरु
ष जे तेने एटलो जन्मनो लाभ शो तो अंने कहेतां सर्वे साधन करिने स्कद्ध ब्रह्मरुप थईने मुक्तदशाने पाम्यो होय तेने
भगवानना स्वरुपमां अखंडस्मृति राखवि॥ अने एवो मुक्त थाय छे तेने भगवानना स्वरूपनी अखंड स्मृति रहे छे
॥ अने वलि जे भगवानना स्वरूपनी अखंड स्मृति राखवानो नित्ये अभ्यास करे छे ते ज महा मुक्त थाय छे अने भ
गवानना स्वरूपनी स्मृति पण कोने रहे छे॥ तो जे अहार शुद्ध करे छे तेने अखंड स्मृति रहे छे॥ ते पण शास्त्रमां क-
ह्युं छे जे॥ ॥अहार शुद्धे अंतःकरण शुद्ध ने अंतःकरण शुध्धे॥ ध्रुवानी स्मृत्ति॥ ॥अर्थ जे इंद्रियोना अहार
शुद्ध करवा थि अंतःकरण शुद्ध थाय छे॥ अने अंतःकरण शुद्ध थाय छे त्यारे ज भगवानना स्वरुपनी अखंड स्मृति रहे छे
॥ माटे भगवानना भक्त होय तेने अहार शुद्ध करवो॥ ते के विरीते अहार शुद्ध करवो॥ तो काने करिने भगवानना शब्द
सांभलवा पण अधर्मि ने विमुख ने दुराचारी ना शब्द कानमां पेसवा देवा नहि॥ अने कोई कदे ज्ञाकाले करिने अध

र्मिनाशब्दसांभलवापडे तो जेम कोईक पोताने मा बेहेन सामि गाल्यो दे ने ते जेवुंव समुंछ्य गेने ते नेशत्रुजेवो जाणिने ते-
नी साथे वैर भाव थाय छे ॥ तेम अधर्मिने विमुखना शब्दने शत्रुरुप जाणिने ते शब्दने अंतरमां पेसवा देवा नहिं ॥ अने
तेशब्दे करिने मनमां दरखशोक ने पामवुं नहिं ॥ अने आंखे करिने भगवानना दर्शन हे ते करिने करवां ॥ अने विमु-
खने अधर्मिनां दर्शन करवां नहिं ॥ अने ऐसा काले अथवा जाणे अजाणे अधर्मिने विमुखनां दर्शन थई जाय तो जेम
सडेल कुतरु के विष्टानो ढगलो देखाय तेम अधर्मिने देखवा ॥ अने त्वचाये करिने भगवानने दे ते करिने स्पर्शकर
वो ॥ ने विमुखना स्पर्शने काला सर्परुप जाणिने तेनो स्पर्ष करवो नहिं ॥ अने रसनाये करिने भगवाननी प्रसादि महा-
त्मे करिने जमवि ॥ ने विमुख जिवनुं एठुं खावुं नहिं ॥ एरिते इंद्रियो अंतःकरणे करिने भगवाननो अखंड संबंध राखवो
ने अधर्मिने विमुखना संगनो सर्वे प्रकारे त्याग करवो ॥ अने एवि रिते सावधान थईने जे वरते छे तेनुं अंतःकरण शुद्ध थाय
छे ॥ ने तेने पंचविषयनी वासना टलि जाय छे ॥ अने जेने वासना टले छे ॥ तेने ज भगवानना स्वरुपनी अखंड स्मृति रहे
छे ॥ अने जेने भगवानना स्वरुपनी अखंड स्मृति रहेवा मांडि ते तो बाई अथवा भाई त्यागि अथवा ग्रहस्थ सर्वे हरि भक्त
करतां मोटेरो भगवान नो भक्त छे ॥ अने जेने भगवाननी अखंड स्मृति रहे छे ॥ तेने कांई करवुं रह्युं नथि ॥ ने तेने तो दर
शने करिने अनंत जिवोनो उद्धार थाय छे ॥ अने एवो अखंड स्मृतिवालो भगवाननो भक्त छे ते तो जे जे धारे ते थाय छे
जेम चिंतामणि होय ते मांथि जे जे चिंतवे ते थाय छे ॥ तेम भगवाननी मूर्त्ति चिंतामणि रुप छे ते जेना उरमां भगवान
ना स्वरुपनी अखंड स्मृति रहे ति होय तेना तो संकल्प सत्य थाय छे ॥ अने एवा भक्त तो जगतना आधार रुप छे ॥ अने तेनो
महिमा तो कह्यामां आवे एम नथि अने जेने भगवानना स्वरुपनी अखंड स्मृति रहे छे ॥ तेणे तो भगवाननी संपूर्ण सेवा
करि छे ॥ अने तेनां जप तप यादिक सर्वे साधन पूरां थई रह्यां छे ॥ अने जे भगवानना स्वरुपनी अखंड स्मृति छे ॥ ते तो अनं
त पापने ततकाल नाश करे एवि छे ॥ अने जेने अखंड स्मृति रहे छे ॥ तेने अंतरमां आठे पोहोर आनंदना फुवारा छुट्या

करे छे ॥ अने एवो भक्त तो छतिदेहे भगवानना धामने पामिरह्यो छे ॥ ते कह्यं छे जे ॥ ॥ याम तिसागति र्भवेत् ॥
॥ ॥ अर्थ ॥ जेजे निजेविमति तेनी ते विगति थाय छे ॥ माटे जेने भगवानने विषे अखंड मति रहे छे ॥ तेनीगति-
भगवानना धाममां थाय छे ॥ माटे एवा भक्तना आत्मा नामोक्षमां लेश मात्र संषय रहे तो नथी ॥ अने जेने भगवानना
स्वरूपनी अखंडस्मृति रहे तिहोय ते तो सर्व भक्तमां उत्तम भक्त छे ॥ अने एवा भक्तना दरशने करिने तो अनंत जिवो
नुं कल्याण थाय छे ॥ अने एवि भगवाननी अखंड स्मृति पण क्यारे रहे छे ॥ तो प्रत्यक्ष भगवानने ते भगवानना निस्वा
सनिसंत जेने मले छे तेने ज भगवानना स्वरूपनी अखंड स्मृति रहे छे ॥ पण ते विना जे वस्तु दिठि न होय तेनी स्मृति के-
म रहे ॥ न ज रहे ॥ माटे जेने प्रगट भगवानने तेना संतनो संबंध थाय छे ॥ तेने ज अखंड स्मृति रहे छे ॥ ने तेना भाग्यनो
पण पार नथि ॥ केम के एवो प्रगट भगवानने तेना संत मल्यानो प्रताप छे ॥ ते पूर्वे गोपि गोवालादिक तथा रामाव-
तारमां वांदरा ओने भगवान प्रगट मल्या हता तो तेने अखंड भगवाननी स्मृति रहे ति हति अने ते सर्वेनां साक्षा
त्कार कल्याण थई गयां छे ॥ माटे ते समो आज तमारे आव्यो छे ॥ ते तमारा भाग्यनो पार नथि ॥ ॥
इतिश्री मुख्य सिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः ॥ ॥
संवत् १९ ओगणिसे ॥ २१ ॥ एकविसना अषाड वदि ६ छठने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्रीपिपलि मध्ये भ-
क्त थिरजि विमानने घेर उगमणे बार ओरडानी आसरिमां गादि तकिया नरवा विने दोलियाउ पर विराजमान थया हता ने स्व
तरवेसपे हेर्या हता ॥ ने धोलु अंगरखुं धारण कर्युं हतुं ने पिलो बुटादार रूमालनो फेंटो मस्तके बांध्यो हतो ॥ ने पोताना
मुखारविंदनी आगल साधु तथा हरिभक्तनी सभा भराई ने बेठि हती ॥ पछे धर्मानंद स्वामिये हरिभक्तने कह्यं के त-
मे मां होमांहे प्रश्न उत्तर करो त्यारे महाराज बोल्या जे ल्यो अमे हरिभक्तने प्रश्न पुछीये छिये ॥ तेमां प्रथम गाम रोईशा
लाना भगवानजी लक्ष्मिरामने पुछुं छुं ॥ जेजे मुक्त होय ते पोताने विषे दोषने केम देखे छे ॥ ने ते बिजा जिवोने वि-

पे दोषनेके मदेखे छे ॥ तेनो उत्तर करो ॥ पछे भक्त भगवानजि बोल्या ॥ जे जे मुक्त होय तेने तो पोताने विषे एम वरते जे रखे मा
रे विषे कोई दोष प्रवेश करे नहि ॥ एम जाणिने धर्म नियमने विषे तथा सत्शास्त्रनी मर्यादाने विषे दृढपणे वरते छे ॥ अने पो
ताना उपर भगवाननी कृपा थई छे तेणे करिने अद्भुत आनंद मां रह्यो थको पोताने विषे कोई दोषनो तथा कोई विषयनो
प्रवेश थवा देतो नथि ॥ तथा कोई विषयनो संबंध पण राखतो नथि ॥ अने अवश्य देह निरवाहने अर्थे अन्न वस्त्रादिक
जोईये तेटलुं ग्रहण करे छे ॥ ने बिजा सर्व पदार्थनो त्याग करिने भगवाननी जेम आज्ञा होय ॥ ते प्रमाणे निसंक थको व-
रते छे ॥ अने पोताने विषे कांई दोष मात्र नथि ॥ ने बिजाने विषे जेने जेटलो दोष होय तेने यथार्थ जाणे छे अने ते उप
र दया करिने तेना दोषने टालवाना उपाय करे एवि रिते मुक्त वरते छे ॥ पछे महाराज बोल्याजे ठिक उत्तर कर्यो ॥ ने हवे क
ल्याण संबंधि ने पुछिये छैये ॥ जे मुमुक्षु जिव होय ते केवि रिते पोताने विषे दोषने देखे ने बिजाने विषे केम दोषने देखे ॥ ते
कहो ॥ पछे कल्याण संबंधि उत्तर करवा मांड्यो पण थयो नहि ॥ पछे महाराज बोल्याजे सांभलो अमे उत्तर करिये ॥ जे
जे मुमुक्षु होय तेने एम वरते छे ॥ जे पोताने विषे जे जे दोष होय तेने जाणिने ते दोषने टालवाना उपाय मां मंड्यो रहे अने
सत्पुरुषे जे जे नियम आप्या होय ॥ तेने दृढपणे पाले ॥ ने पंच विषयनो त्याग करयो पोताने गमे ने विषयना त्यागि एवा जे
भगवानना संत तेनो समागम कर्या करे ॥ अने पोताना दोष टालवा सारुं भगवानने भगवानना संतनि निरंतर प्रा-
र्थना कर्या करे अने बिजा भगवानना भक्त होय तेने विषे जे जे दोष होय तेने यथार्थ जाणे ॥ ने तेने विषे मित्रभाव रा-
खिने तेना दोषने टालेते वो उपाय करे ने तेवो उपदेश करे ॥ ने तेनुं हित करे ॥ पण कोई उपर तेने ईरखा न होय एवि रि
ते मुमुक्षु ने वरते एनो एज उत्तर छे ॥ पछे वलि महाराजे कह्या भक्तने प्रश्न पुछ्युं जे जे विषयी जिव होय ते केवि रिते
पोताने विषे दोषने देखे ने बिजाने विषे केम दोषने देखे ते कहो ॥ पछे तेनो उत्तर कह्या भक्तने आवड्यो नहि ॥ पछे
महाराजे उत्तर कर्यो जे जे विषयी जिव होय ते नियम मां रहि ने विषय भोगववा उपर प्रिति होय ने पोताने विषे दोष

होय तेने देखे नहि।।अने बिजाने विषे जे जे दोष होय तेने देखे।।अने तेना दोषने इरष्याये करिने कहि देखाडिने तेनी फजति करे छे
एविरिते विषयि जिव नेवरते छे।। पछे जवजि भक्तने प्रश्न पुछ्युं जे जे पामर जिव होय ते के विरिते पोताने विषे दोषने देखे छे
ने बिजाने विषे केम दोषने देखे छे।। पछे तेनो उत्तर जवजि भक्तने आवड्यो नहिं।। पछे महाराजे उत्तर कर्यो जे जे पामर जिव होय
ते तो पोताने विषे कोई दोषने देखे नहिं।। अने बिजाने विषे पण दोषने देखतो नथि अने कोई क बिजाना दोषने कोई कहे ने ते
दोष तेमां होय तोपण जे पामर होय ते एम कहे जे भाई आपणे कोईना दोष कहेवा नहिं।। तेन्गा सारुं एम कहे।। जो पोतामां सर्वे
दोष भर्या होय।। माटे पोताना दोष उघाडा थाय।। ते सारुं एम कहे जे कोईना दोष जोवा नहिं।। एवुं जे वर्ततुं होय तेने पामर जि-
व जांणवो।।एविरिते समाधान चारे प्रश्ननुं करिने वलि महाराज बोल्या जे चारे जणाने बिजा चार प्रश्न पुछीए छैए।।जे जे मुक्त
होय ते भगवाननो महिमा केवो समजे छे।।अने मुमुक्षु होय ते भगवाननो महिमा केवो जाणे छे।। अने विषयि जिव होय ते भगवा
नने केवा जाणे छे।।अने पामर जिव होय ते भगवानने केवा जाणे छे।। ते कहो।। पछे तेनो उत्तर हरि भक्ते करवा मांड्यो पण
थयो नहिं।। पछे महाराजे तेनो उत्तर कर्यो।। जे मुक्त छे ते तो एम समजे छे जे।।पोताने मल्या जे प्रत्यक्ष भगवान ते जे जे लि-
ला चरित्र करे।। तेने दिव्य ने अलौकिक जाणे छे।। ते प्रत्यक्ष भगवान समर्थपणे वर्ते अथवा असमर्थपणे वर्ते।। तो पण तेने
लेशमात्र शंका थाय नहिं।। ने सदाय अखंड आनंदमां वरत्या करे।। ने ते सर्वे चरित्र लिलाने गाईसां भलिने परम आनंद पा-
मे।। ने एम समजे जे प्रत्यक्ष भगवान छे।। ते जे सर्वेना करता हर्ता छे।। माटे जे जे थाय छे ते प्रत्यक्ष भगवाननी ईछा प्रमाणे था-
य छे।।एम जाणिने प्रत्यक्ष भगवाननी द्रढ उपासना भक्ति सेवा स्मरण ध्यान कर्या करे छे।।एविरिते मुक्तने प्रत्यक्ष भग-
वानने विषे सदाय अलौकिक भाव रहे छे।।अने जे जे मुमुक्षु छे।। तेने पण ते प्रत्यक्ष भगवानना सर्वे चरित्र लिलाने विषे
अलौकिक भाव ने दिव्य भाव वरत्या करे।। अने भगवाननुं समर्थपणुं असमर्थपणुं ने कोईनी निंदा स्तुतिपणुं तेने विषेप
ण तेने समभाव रहे।।अने ते मांहर खन्गोक ने पामतो नथि।।पण तेने कोई दिवस भगवानने भक्तनी द्रढता जोवा सारुं

नेपोतानीईछायेकरिनेअनित्रोभुंडोदेहाकालदेखाडे॥ त्यारेमुमुक्षुनेलगारेकमनमांसंशयथायजेमसितानुंहरणथयुंनेरा-
मचंद्रजिसितामाटेरोवालाग्या॥ त्यारेसतिनेशंशयथयो॥तेममुमुक्षुनेएवांप्रत्यक्षभगवाननांमनुष्यचरित्रजोईनेसंशयथा
य॥पछेतेसंशयनेमुक्तसंतनोसमागमकरिनेटालिनाखे॥एविरीतेमुमुक्षुनेवरतेछे॥अनेजेविषयिभक्तहोयतेनेतोएम
वरतेछेजे॥प्रत्यक्षभगवाननीउत्कृष्टतादेखेत्यारेघणोआनंदपामे॥अनेघणामनुष्यप्रत्यक्षभगवाननुंभजनकरे॥तथा
पूजापधरामणिथाय॥तथाभारेभारेवस्त्रघरेणांधारणकरेत्यारेतेविषयिभक्तहोयतेघणोआनंदपामे॥अनेज्यारेभग-
वानमनुष्यचरित्रकरे॥नेकोईमाणसनिंद्याकरेअथवाभगवानक्यांईकथकिनासे॥जेमश्रीकृष्णजरासिंधथिनासिने
द्वारकामांगया॥तेमकोईकसमेनासेतथाकोईकभगवाननेमानताहोयतेमानतांआलसिजायत्यारेविषयिभक्तहोय
तेमोलोपडिजाय॥नेएमकहेजेभगवानआमशिदकरताहसे॥एमसंसयकरे॥अनेतेनेमोटासंतज्ञानआपेतोपणते
विषयिनेसंशयटलेनहिं॥अनेवलिज्यारेभगवानपोतानीईछायेकरिनेसारोदेहाकालवरतावे॥त्यारेविषयिभक्तपा
छो॥आनंदपामेएविरितेविषयिनेवरतेछे॥एमउत्तरकरिनेपछेमहाराजबोल्याजेपामरभक्तहोयतेभगवानने
केमभजेछे॥तेनोउत्तरलघजिभक्तकरसो॥पछेलघजिभक्तेकह्युंजेपामरहोय॥तेनेतोएमवरतेजेघणाकम
नुष्यएमकहेजेभगवानप्रगटथयाछे॥तेकल्याणकरसे॥त्यारेतेभेगोपोतेपणएमकहेजेभगवानछे॥एमजाणिने
प्रत्यक्षभगवाननुंभजनकरवामंडिजाय॥अनेवलिकोईकएमकहेजेएतोभगवाननथित्यारेपोतेमोलोपडे॥नेए
मजाणेजेभगवाननहिहोय एवोहोयतेनेपामरजाणवो॥पछेमहाराजबोल्याजेठिकउत्तरकर्यो॥अनेआचारेप्र-
श्ननाउत्तरनेविचारिनेजोयुंतोजेनाजेवागुणहसेतेवातेनासाक्षात्कारदेखासे॥जेमदरपणमांमोढुंदेखायछेतेमआ
वातदरपणजेविछे॥तेजेनाजेवागुणहसेतेनातेवासाक्षात्कारदेखासे॥पछेपोतानेविषेपामरनाजेवागुणजणाय
तोतेगुणनोत्यागकरिनेविषयिनाजेवागुणनिरखवा॥अनेविषयिनाजेवागुणपोतानेविषेजणायतोतेगुणनोत्याग

करिने मुमुक्षुना जेवा गुण शिखवा ॥ अने पोताने विषे मुमुक्षुना जेवा गुण जणाय तो ते गुणनो त्याग करिने मुक्तना जे-
वा गुण शिखवा ॥ अने मुक्तना जेवा गुण पोताने विषे जणाय तो ते गुणने द्रढ करिने राखवा ने पोताने कृतार्थ मानवुं ॥
अने ते वा गुण बिजाने दया करिने आपवा ॥ अने जेने मुक्तना जेवा गुण आव्या छे ते तो सर्व साधनना पारने पामी रह्यो
छे ॥ अने तेने समागमे करिने तो अनंत जिवोनो उद्धार थाय छे ॥ माटे सावधान थईने मुक्तना जेवा गुण शिखवा ॥ ते-
ए वा गुण क्यारे आवे छे तो जे ए वा मुक्तनो द्रढ विश्वास राखिने तेनो अखंड समागम करे ॥ तेने मुक्तना गुण आवे छे
माटे आ समे धर्मानंद स्वामिनो तथा अक्षरमुक्तानंद स्वामिनो विश्वास राखिने अखंड समागम करे तो ततका-
ळ मुक्त थाय ॥ ने तेनु आत्यंतिक कल्याण थाय ॥ ॥ इति श्रीमुख सिद्धांत समाप्तः ॥
॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः॥ ॥ संवत १९ ओगणिसें २१ एकविसना ॥
अषाड वदि ७ सातेमने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीपीपलीमध्ये भक्त विराजि खिमाने घेर उगमणे बहार
मेडिनी ओसरिमां गादितकिया नखावि ने ढोलिया उपर विराजमान थया हता ॥ ने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां
हतां ने कंठमां जाईने गुलाबना पुष्पना हार धारण कर्या हता ॥ ने बे कान उपर गुलाबना पुष्पना गुच्छ खोस्या हता ॥
ने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने संध्या आरति थया पछी पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणा-
क हरिभक्तनि सभा भराईने बेठि हति ॥ ने मशालनो प्रकाश थई रह्यो हतो ॥ पछे महाराज सर्वे सभा उपर कृपादृष्टि क-
रिने बोल्या जे सर्वेने अमे प्रश्न पुछिये छिये जे आस्तिक होय तेनां केवां लक्षण होय ॥ अने नास्तिक होय तेनां केवां ल-
क्षण होय ॥ अने अर्धो नास्तिक होय ने अर्धो आस्तिक होय तेनां केवां लक्षण होय ते कहो ॥ पछे जेने जेम आवड्युं ते-
णे तेम कह्युं ॥ पण यथार्थ कोईनाथि उत्तर थयो नहिं ॥ पछे महाराज बोल्या जे सांभळो अमे उत्तर करिये जे जे नास्ति-
क होय ते तो एम जाणे जे आ जगतनो कर्ता ज कोई नथि ॥ अने जगत तो एनि मेळे थाय छे ॥ पण कोई करता नथि ॥

एमसमजे छे तेने अतिशे नास्तिक जाणवो॥ अने जे अर्धो आस्तिक ने अर्धो नास्तिक होय ते एम समजे छे जे आ जगतनो कर्ता
तो कोईक भगवान छे खरो पण अहीं आवतो नथि॥ ने कोईना जाण्यामां पण आवतो नथि॥ एम समजे तेने अर्धो आस्तिक
ने अर्धो नास्तिक जाणवो॥ अने जे आस्तिक होय ते एम जाणे छे जे मायापर ने अजन्मा ने अकर्ता निर्गुण सर्वकर्ता सर्व
कारण सर्वव्यापक निराकार अंतरजामि ने जेना एकएक रोमने विषे कोटान कोटि सूर्यना प्रकाशने झांखो करे एवो ते
जेनो प्रकाश छे॥ एवा अक्षरधामना अधिपति भगवान तेज भगवान कृपा करिने अनंत कोटि जिवोनां कल्याण करवा-
ने अर्थे मनुष्याकृतिनुं धारण करिने पृथ्वि उपर पधार्या छे॥ अने ते प्रत्यक्ष भगवाननो आश्रो करे छे तेनुंज कल्याण थाय छे
अने ते प्रत्यक्ष भगवाननुं कर्युं थाय छे॥ माटे मन वाणिने पार कह्या तेज आ प्रत्यक्ष छे॥ अने सर्वव्यापक अंतरजामि निर्गु
ण कर्ता अकर्ता निराकार अद्वैत पूरण ब्रह्म एआदिक अनंत दिव्य गुणे सहित एवा जे परब्रह्म पुरुषोत्तम परमात्मा भ
गवान तेज भगवान आ प्रत्यक्ष मुने मल्या छे॥ पण ते विना बिजो कोई भगवान नथि ने बिजा कोईनुं कर्युं थतुं नथि एम जे
समजे छे॥ तेने अतिशे आस्तीक जाणवो॥ अने जे एवो आस्तिक होय तेनो ज आत्यंतिक मोक्ष थाय छे॥ ने तेज अक्षरधाम-
ने पामे छे॥ अने जे एवो आस्तिक थयो छे॥ ते तो सर्वे साधनना पारने पामि रह्यो छे॥ अने तेने कांई करवुं रह्युं नथि॥ ए
म कहिने वलि महाराज बोल्या जे ल्यो एक बिजुं प्रश्न पुछुं छुं जे भगवाननो सतसंगि होय तेनां केवां लक्षण छे ने सा-
धुनो सत्संगि होय तेनां केवां गुणदर्शने सत्संगिनो सत्संगि होय तेनां शां लक्षण होय ते कहो॥ पछे तेनो उत्तर पण कोई
थि थयो नहिं॥ ते पोते कर्यो॥ जे जे भगवाननो सत्संगि होय तेनां आवां लक्षण छे॥ जे ते एम जाणे जे सर्वना कारण
ने सर्वना आधार ने दिव्यस्वरूप एवा जे परात्पर भगवान तेज भगवान आ प्रत्यक्ष मुने मल्या छे॥ एम जाणिने प्र-
त्यक्ष भगवानने विषे सर्वप्रकारे जोडाई जाय छे॥ अने प्रत्यक्ष भगवाननी सर्व क्रियाने विषे दिव्यभाव देखे छे॥
अने तेने प्रत्यक्ष भगवाननी पासे रहेवुं गमे छे ने प्रत्यक्षनां ज दर्शन करवां गमे ने तेने प्रत्यक्ष पोताने मल्या जे भग

वानने नोज स्वभाव गमेने तेनां जे वचन ते अमृत जेवां लागे ॥ अने प्रत्यक्ष भगवाननो जे स्पर्श करवो सारो लागे अने ते प्रत्यक्ष भ
गवान पोताने जे आज्ञा करे तेने सत्य मानीने ते प्रमाणे तत्काल करवा मंडे ॥ पण तेमां लेशमात्र संशय करे नहिं ॥ अने ते प्र-
त्यक्ष भगवानने हजारो मनुष्य मानता होय ॥ अथवा कोई मानता न होय ॥ ने कोई आंगणे उभा रहेवा न देता होय ॥ तोप
ण तेनो जे प्रेम ने आनंद ते लेशमात्र ओछो थाय नहिं ॥ अने भगवान जे जे लिला चरित्र करे छे ॥ तेने गाई सांभळीने परम
आनंदने पामे ॥ एवो जे भक्त होय ते भगवाननो सत्संगि छे एम जाणवुं ॥ अने जे साधुनो सतसंगि होय तेने तप त्याग करवो
तथा धर्म ज्ञान वैराग ने विषे वर्तवुं ॥ तथा आत्मरूप थईने भगवाननुं ध्यान करवुं ॥ तथा तप त्यागादिक लक्षणे युक्त एवा
जे साधु ॥ तेनो संग करवो गमे ने तेवा साधुने विषे तेने प्रिति होय अने पोताने पण साधु थवानुं मनमां होय पण तेने एटलो
संकल्प रहे जे महाराज तो साक्षातकार भगवान छे ॥ ने तेना चरणारविंदमां ज अखंड रहे छे ॥ मारे आपणे पण
साधु थवुं ॥ पण बे कवधारे साधु थाय तो साधु थवुं ॥ पण हमणां न थवुं केमके कदापि थोडा क साधु छे ते आलसि जाय के-
भगवाननी ईछाये करिने साधु स्व धाममां जाय तो आपणे ठिक न पडे ॥ अने कदापि एवो संकल्प करतो करतो साधु था
य ॥ ने ते वो देशकाल आवे तो ते पाछो साधु आलसि जाय ॥ अने ते प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय तो अडग होय
पण ते साधुनो सत्संगि जाणवो ॥ अने जे सत्संगिनो सत्संगि होय ते अमारि पासे आवतो होय ने अमने भगवान जा-
णतो होय तो पण ते एम कहे जे अमारे वरतमान लेवा ॥ पण अमारा हो सदार पांच सात जणा छे ते वरतमान लेशे त्यारे
मारे वरतमान लेवां छे ॥ पछे पोते ते हो सदारने वातो करिने अमारी पासे तेडि आवे ॥ ने तेने वर्तमान लेवरावीने सत
संगि करे ने पोते पण सत्संगि थाय एविरिते घणाक सत्संगि थाय त्यारे तेने बहु हुलास थाय अने कोईक सत्संगी आल
सि जाय त्यारे तेने मनमां शोक थाय ॥ एवां जेनां लक्षण होय तेने सत्संगिनो सत्संगि जाणवो माटे आ वार्ताने विचा
रिने सर्वेने जोवुं ॥ जे आपणे ते भगवानना सत्संगि छिये के साधुना सत्संगि छीये के सत्संगिना सत्संगि छिये ॥

एम तपासि जोवुं पछे जो पोते भगवानना सत्संगि थया होय तो पोतानुं मोटुं भाग्य मानवुं अने ते वा गुण पोताने विषे न होय ने साधुना सत्संगि हैये के सत्संगिना सत्संगि है ये तो पोताने विषे घणी खोट जाणवि॥ अने एम खोट जाणिने ते खोटने टालवाने अर्थे जे भगवानना सत्संगि एवा जे साधु तथा प्रत्यक्ष भगवान तेनो मन कर्म वचने समागम करिने ते खोटने टालि नाखवि॥ ने भगवानना सत्संगि थवुं। अने जे भक्त भगवाननो सत्संगि थाय छे ते तो अक्षर ब्रह्मरूप थई रह्यो छे ने ते तो भगवानने रह्यानुं धाम छे॥ माटे एवा भगवानना सत्संगि करवा सारुं तो अमे पण रात दहाडो ज्ञानवार्तानो दाखडो करिये छिये॥ अने ते सारुं तो कोईकने वढिये छिये॥ कोईकने कांइ मुकिये छिये कोईकथी रिसाईये छीये कोईकने हसिये छिये कोईकने मान आपिये छीये इत्यादिक सर्वे भगवानना सत्संगि करवा सारुं करिये छिये अने सर्वे साधन करिने तथा सर्वे ज्ञान सांभलिने सर्वे सेवा करिने भगवानना सत्संगि थवुं॥ अने जे भगवाननो सत्संगि थयो छे॥ ते सर्वो परिस्करवने पांमि रह्यो छे॥ ते भगवानना सत्संगि थवानो शो उपाय छे तो भगवानना सत्संगि थया होय॥ एवा जे संत पंचविषयना त्यागि निरवासनीक तेने समागमे करिने भगवानना सत्संगि थवाय छे॥ ॥

इतिश्री मुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥संवत १९ ओगणिसें २१ एंकविसना अषाड वदि ८ दशामिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीपिपलीमध्ये भक्त विरजि खिमाने घेर उगमणे बार ओरडानी ओसरिमां गादि तकिया नखाविने ढोलिया उपर विराजमान थया हता ने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठमां गुलाबने जाईना पुष्पना हार धारण कर्या हता ने कान उपर गुलाबना पुष्पना गुछ धारण कर्या हता॥ ने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने संध्या आरति थया पछि पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति॥ पछे महाराज बोल्या जे सांभलो सर्वे सभा ने अमे प्रश्न पुछिये छिये॥ तेनो उत्तर जेने आवडे ते करजो॥ ते प्रश्न ए छे जे केटलांक मनुष्य छे ते जेवा तेवा ज्ञ

रताविषयने भोगविनेआनंदमानेछे।। नेतेनेसारानरसा विषयनुं भान नथि ।। नेजेवाविषयमळे तेनेप्रीतियेकरिने भोगवेछे
नेतेमांथि मुक्तिअन्नपण कईनेआपतोनथि।। एवो होय तेने केवो जिवजाणवो अने एवा जिवनोदेह छुटशे त्यारे ते त्रिगति
नेपामशे।। अनेतेमुंढपणुं एवुं शाउपायेटळे तेकहेवुं ।। अनेएक बिजो मनुष्यछे तेनेतो सारासारा विषयउपर प्रिति छे
नेतेनेनरसाविषयतोगमता नथि।। ने साराविषयने भोगथिनेआनंदपामेछे ।। अने वळिअधिक साराविषयनीप्राप्ति
थाय तेनेअर्थे दानपुन्ययज्ञादिक शुभकर्म करेछे ।। तेने केवो जिवजाणवो ।। अने तेनोदेह पडशे त्यारे ते जिव शिगति
नेपामशे।। अने तेनेसाराविषयउपर प्रिति छे ।। ते प्रितिटळिजायने सारानरसा विषयसमान्य थईजाय तेनो शोउपा-
यछे तेकेहवुं अने वळिएकबिजोमनुष्यछे तेनेतोसारानरसाविषयसामान्यपणे वरतेछे तेजिवनेकेवोजाणवो।। अ-
नेतेनोदेह पडशे त्यारेतेशीगतिनेपामशे।। अने तेनेसाराविषयतेनरसाथईजाय नेजेवे नेवे पदार्थेकरिने देहनि-
र्वाह करेएवुं शाउपायेकरिनेथायतेकहेवुं।। अनेएकचोथोमनुष्यछे तेनेतोसाराविषय तेअतिशेनरसालागेछे तेनेके-
वोजाणवो।। नेतेदेहनेमुकशे त्यारे शिगतिनेपामशे।। अने तेशे साधने करिने एवो थयोछे।। तेकहेवुं।। एविरिते च्यारप्र-
कारना जिवनांरूपने ते शिशिगतिनेपामशे।। अने ते शेउपायेकरिने उर्धगतिनेपामे।। एविरिते चारतेरिबार प्रश्नथयां
तेनोउत्तरकरो।। पछेअक्षरमुक्तानंद स्वामियेउत्तर करवामांडयोपण थयोनहिं।। पछेमहाराजबोल्याजे ल्योएनोउत्त-
रअमेकरिये।। जेजेनरसाजेवातेवाविषयनेमुढपणे भोगवेछे ।। नेतेमांथि कोईनेमुक्तिअन्नआपतानथि तेनेतो पा-
मरजिवजाणवो।। नेतेनोदेह छुटशे त्यारे तेचोराशिमांजशे नेसनेकागडाकुतरागधेडादिकनो अवतारआवशे।।
केमकेतेणे मनुष्यदेहेकरिने भुंडाविषयनेप्रितियेकरिने भोगव्याछे ।। नेतेमांथिकोईनेदान्यपुण्यपण कर्युंनथि।।
माटे तेने परमेश्वर कागडाकुतरादिकनोदेह धरावशे ।। अने तेदेहे करिनेपण विष्टादिक नरसा विषयने सारामानीने
प्रितियेकरिने भोगवशे ।। नेतेमांआनंद मानशे।। अनेएवाजेपामर जिव तेनुंपामरपणुं टळ्यानोएउपायछेजे तेनेभ

गवानके भगवानना संतनो संबंधथाय॥ ने तेना मुखथकि कर्म कांडनुं श्रवण करे॥ ने ते कर्मनां फल शास्त्रमां कह्यां छे ते-
नो लोभ देखाडिने कर्मने विषे आस्था बंधावे तो ते जिव पामरमतिने विषयिथायछे माटे सत्पुरुषना संगे करिने कर्म कांड
ने विषे निष्ठा बेसे तो तेनुं पामरपणुं टलिजाय॥ ने ते कर्मफलने लोभे करिने विषयी थायछे॥ अने जे जिवने नरसावि-
षय गमता न होय॥ ने सारा विषय उपर प्रिति होय ने सारा उत्तम विषयने भोगविने आनंद पामतो होय ने वलि सारा वि-
षय पोताने प्राप्त थाय॥ तेने अर्थे दान पुन्य जप तपादिक साधन करतो होय तेने विषयि जिव जाणवो॥ अने तेनो दे-
ह छुटशे त्यारे ते देवादिक लोकने पामशे॥ अने कां आ लोकमां मोटा राजाने घेर अथवा मोटा ग्रहस्थ शाहुकारने घेर
तेनो जन्म थशे अने तेने जे सारा विषय उपर प्रिति छे ते प्रिति टलिने सारा नरसा विषय सामान्य थाय तेनो उपाय तो ए छे जे
सत्पुरुषना संगथकि देह आत्मानो विवेक पामे॥ ने पोताने आत्मारुप माने ते आत्मा केवो छे॥ तो अखंड छे पूरण छे
अविनाशि छे अमर छे॥ अजर छे अछेद छे अभेद छे॥ सुखरुप छे सत्तारुप छे प्रकाशवान छे ज्ञानरुप छे ने व्यापक छे॥ ए
वो आत्मा छे ते आत्माने पोतानुं रुप मानिने ते आत्माथि नोखो एवो जे देह॥ ने ते देह संबंधि पदार्थ तथा पंच विषय तथा
देवादिकनां लोक भोग ते सर्वे नित्यनिमित्त ने प्राकृत प्रलयमां नाश थई जायछे॥ ने मिथ्यात्व प्रवतछे॥ माटे तेमां
प्रिति करवा योग्य नथि॥ एविरीते विचार करिने सत्पुरुषने शास्त्र थकि ज्ञानने द्रढ करे तो तेने सारा नरसा विषय
सामान्य थई जाय॥ अने जेने सारा नरसा विषय सामान्य पणे वर्तता होय तेने मुमुक्षु जाणवो॥ अने ते मुमुक्षु ज्यारे
देह मुकशे त्यारे ते बदरिकाश्रममां तथा स्वेतद्वीपादिक धामने पामशे॥ अथवा आ लोकमां पंच विषयना त्यागिने
आत्मारुप थईने परमात्मानी एकांतिक भक्ति करता होय एवा जे संत तेना समुहमां देह धरे छे॥ अने ते मुमुक्षुने मु
क्त थवानो ए उपायछे॥ जे तेने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतनो संबंधथाय॥ ने ते थकि ज्ञानने पामे॥ ने प्रत्यक्ष
भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थायछे॥ ने ते प्रत्यक्ष भगवानने संतना मुखथकि चार प्रकारना प्रल-

घनो विचारसां भक्तिनेउत्तमवैरागने पामे॥ अनेमहात्मेसहित प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रेम लक्षणा भक्ती द्रढकरे तो
तेआत्मामहामुक्त थायछे॥ ने तेने माईकउत्तम पंचविषय ते अतिशेनकाराने दुःख रूप थईजायने ।। उतरताविष-
यथकिपण उतरताथईजाय॥ केमकेजेवा तेवा विषयि करिने तो देह निरवाह करेछे।। नेउत्तमविषयने तो भक्ति-
मां विघ्न करनारा जाणिने तेने विषेशत्रुपणुं थईजायछे॥ नेतेउत्तमपंचविषयने पापरूपजाणिने तेवुं कोईदहाडे
ग्रहणकरेजनहि।।अनेभगवानने भगवानना संतनो अतिशेमहिमासमजिने पोते त्यागी थयोहोय तो पणदेहे
करीनेमनकमवचने भगवानने भगवानना संतनी सेवामां जोडाईजाय अने ग्रहस्थ होय तो पोतानुंतनमनध
नादिकसर्व पदार्थेकरिने भगवानने भगवानना संतनी सेवा जेम घटे तेम करेने भगवान परायण वरते तेमहामु-
क्तथायछे॥ अनेएवोजेमुक्त तेतो छतिदेहे ब्रह्मरूपथईने अक्षरधामनेपामिरयोछे॥ ॥
इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्त:॥ ॥श्रीहरिक्रस्नायनमो नमः॥ ॥
संवत१९ओगणिसें॥२१॥एकविसनाअषाडवदि॥१३॥तेरशने दिवसमहाराजश्री हरिक्रस्नभगवानगामश्री-
पिपलिमध्ये भक्तविरजि एवमानेघेर उगमणेबार ओरडानीओसरिमांढोलियाउपर गादितकियाबिछावीनेविरा
जमानथयाहता॥नेसर्वेजरियानीवस्त्र धारणकर्याहतां॥नेगुलाबनापुष्पनांआभूषण सर्वेअंगमां धारिरह्याहतां नेपोताना
मुखार्विंदनीआगल साधुतथाघणाकहरिभक्तनीसभा भराईनेबेठिहती पछे महाराज बोल्याजे सर्वेनेएकप्रश्न पुछियेछे
येजे॥एकपरोक्षपणे भगवाननुं भजनकरेछे॥नेएकप्रत्यक्षभगवाननो आश्रारोकरिने तेनुं भजनकरेछे॥ ते बेबरो-
बरछे के कांई फरछे॥पछेविरजिभक्ते कह्यं जेफेरतो घणो क छे॥ केमकेप्रत्यक्षविना ज्ञान कोण आपे॥ अने ज्ञानविना
मोक्षपणथायनहिं॥ तेशास्त्रमां कह्युं छे जे प्रत्यक्षभगवानने भगवानना संत मल्या विना कल्याणथायनहिं॥ अने
जो परोक्षपणे कल्याण थवुं होय तो वारेवारे भगवानने अवतार शासारु लेवापडे अने परोक्ष भगवान थाय छे त्यारे तो पंच

विषयनीप्रवृत्तिअतिशायथायछे ॥ने विषयनीप्रवृत्तियेकरिने कल्याणनोमारग बंधथईजायछे ॥ ने जिवनीमतियो भ्रष्टथ
ईजायछे ॥ अनेमुमुक्षुजिव होय तेनेएरलिआस्थारहेछे जे ॥ भगवानछे तेमनुष्य अवतार धारणकरेछे ॥अनेतेनेजोशा
स्त्रनुंज्ञानहोय तोधर्ममांरहे ॥ नेजोगबडगंडहोयतो विषयी जिव एनेधर्ममांथिपाडिनाखेछे ॥ माटे प्रत्यक्ष भगवाननुंभ-
जनकरे ते घणो श्रेष्टछे ॥पछेमहाराजलोल्याजे ठिकउत्तरकर्यो ॥ केमकेप्रत्यक्षभगवानने तेनासंतथकिजजिवनुंकल्या-
णथायछे ॥ केमकेमायापरएवुंजेअक्षरधाम तेनेपामे त्यारे मोक्षथायछे ॥ तेतोमायापरसतगुरुमले त्यारे मायापरथवा-
यछे ॥ पणतेविना मायापरथवायनहिं ॥ एसर्वेशास्त्रनो सिद्धांतछे ॥ अनेपरोक्षपणेजेजेआस्थाराखिने भगवाननु
भजनधर्ममांरहिनेकरेछे तेनेज प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संत ओलखायछे ॥ पणपापिके असुरिजिव नेप्रत्यक्ष
भगवाननेसंत ओलखाताऩथि ॥ ने एतोजेणे घणा कजन्मसुधि परोक्ष भगवाननी भक्ति करिहशे तेनेजप्रत्यक्षभ
गवानने संतनोसंबंधथायछे ॥ जेमधुनालेखेतरमांखेड करेछे ने खातनाखेछे तेनेजचोमासे निपजेछे ॥ तेमअनेक
जन्मना शुभसंस्कारजेनेहोय ॥ तेनेप्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चयथायछे ॥एमकहिने बलिमहाराजे प्रश्नपुछ्युंजे
प्रत्यक्षभगवानने विषे केविसमजणकरिनेजोडावुं ॥ जेतेनेकोई रिते प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो विजोग कोई काले-
थायजनहिं ॥ पछेतेनोउत्तरपोतेज कर्यो ॥ जे जिवनेपोताना कल्याणनो स्वार्थ मनाय जेप्रत्यक्ष भगवानने भगवान्
ना संतविना जिवनुंकल्याण बिजा कोई थकि थायनहिं ॥अने जो मनुष्यदेह करिने माराआत्मानुंकल्याण नहिंथायतो
चोराशिमांजन्ममरणना अपार दुःख भोगववा पडशे माटे प्रत्यक्ष भगवानने संतमां दृढप्रितिकरिशुं तोजएसर्वेदुःखट
लिनेपरममोक्षनेपामीशुं ॥एविरीते कल्याणनो स्वार्थ जेने मनायछे तेने प्रत्यक्ष भगवानमांजोडावुं कांई कठण
पडतुंनथि ॥जेम प्रमत्तानेशा स्त्रमांसमनाणो छे तो तेने पारधि यंत्रादयगाडी नेप्राण नेकाढेछे ॥ तोपणतेव्याघ्र
ने मुकिशकतोनथि ॥ तेनीपेठे प्रत्यक्ष भगवाननेसंतना शास्त्रमां भगवानना भक्तनेजोडावुं केमकेपारधीनीपे

शिकारीनो शब्द तो मृगलाना प्राण काढे एवो छे तो पण तेने मुकि शकतो नथि॥ तो प्रत्यक्ष भगवानने संतना शब्द तो जन्म
मरणना महादुःखने मटाडिने अविनाशि एवुं जे पोतानुं अक्षरधाम तेने पमाडे एवा छे माटे भगवानने संतना शब्दमां
तो अतिशे जोडाई जवुं ने अतिजतने करिने अंतरमां उतारिने राखवा अने तेमज प्रत्यक्ष भगवानना चर
णारविंदना स्पर्शमां अतिशे जोडावुं॥ केमके पूर्वे पण मोटा मोटा मुनि तेणे पण चरणारविंदनी सेवा मागि छे॥ ते भगवा-
नना स्पर्शमां केवि रिते जोडावुं॥ तो हाथिने जेम स्पर्शनो विषय छे॥ ते स्पर्शनी आशक्तिये करिने अजाडिमां पडिने
प्राणने खुवे छे॥ तेम भगवानना भक्तने भगवानना स्वरूपमां जोडावुं॥ केमके जे जे भगवानना स्वरूपमां जोडाय
छे ते तो ब्रह्मरूप थई भगवानना धामने पामे छे॥ अने ते वि रिते भगवानना रूपमां जोडावुं॥ केमके भगवानना दरशन
ना एक निमेषना सुखनी बरोबर अनंत कोटि ब्रह्मांडना सुख भेगा करिये तो पण ते सुखना लेशनी बरोबर थाय नहिं
ते भगवानना रूपमां केवि रिते जोडावुं॥ तो जेम पतंगियाने रूप विषयमां प्रिति छे॥ ते अग्निमां पडिने पोताना प्रा
णने काढे छे पण ते रूप विषयने देखिने रहि शकतो जनथि तेनी पेठे भगवानना भक्तने भगवानना रूपमां जोडावुं॥ अ-
ने वलि प्रत्यक्ष भगवाननो जमेल जे महाप्रसाद तेना रसमां अतिशे प्रितिये करिने जोडावुं केमके भगवाननो प्रसाद
छे ते तो अनंत जन्मना पापने ततकाल नाश करे एवो छे॥ माटे बिजा सर्व रसनो त्याग करिने भगवानना ज एक रसमां
जोडावुं॥ अने ते विज रिते जगतना गंधनो त्याग करिने भगवानने भगवानना संतने चडयां जे चंदन पुष्पादिकनो
सुगंध तेमां प्रिति करवि॥ अने जे जे प्रत्यक्ष भगवाननी प्रसादि चंदन पुष्पादिकनो सुगंध तेमां जोडाय छे॥ तेने मा
यानुं आवरण टलि जाय छे॥ ने छतिदेहे ब्रह्मस्वरूप थई जाय छे॥ ते केवि रिते भगवाननी प्रसादि सुगंधमां जोडावुं॥
तो जेम भमरो कमलनी सुगंध लेवा सारुं कमलमां पेसे छे॥ पछे ते कमल बिडाई जाय छे तेणे करिने भमराना प्रा
ण जाय छे॥ पण ते गंधने मुकि शकतो नथि॥ ने ते भमरो समरथ तो केवो छे के मोटां लाकडां फाडि नाखे एवो छे॥

तोपण गंधनी वासनाये करिने प्राणने खुवे छे ॥ तेमते विरिते भगवानना भक्तने भगवानना प्रसादिनुं गंध मांजोडावुं
अने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरुपमां जोडातां कोईनी नांकारा खवी नहि ॥ त्यारे कोईकने एम थाय जे एविरीते प्र
त्यक्ष भगवान मांजोडाईये तो लोक निंद्या करे ते केम खमाय तो तेनुं एम छे जो तमे भगवान मां नहि जोडाओ तो
चोराशिमां जशो ने त्यां भूंडा भुंडा अवतार धरवा पडशे ॥ ने ते अवतारमां अपार दुःख सेहेवां पडशे ॥ ते कुतरानो अव-
तार आवशे त्यारे कुतरिना पेटमां रेहेवुं पडशे ॥ ने कुतरिनुं धावण धावयुं थशे ने कुतरिना केहेवाशो ने कुतरो बाप थशे
ने तेमज गधेडिने पेट जन्म लेवो पडशे त्यारे गधेडिना केहेवाशो ॥ एआदिक घणांक दुःख सेहेवां पडशे ॥ तो प्रत्य
क्ष भगवाननो आश्रो करतां कोईक पापि जिव कांईक जो निंद्यानाशब्द बोलशे तेना भय थकि डरिने भगवानना
स्वरुप थकि शा सारुं छेटे रहिये अने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संत जिवने मलवा ते तो अतिदुर्लभ छे ॥ ते
दुर्लभ समे पोताने प्राप्त थयो ने जे छेटे रहे छे ॥ ते तो अतिशोदु भागियो छे ने तेने गबडगंड जाणवो अने जे जे प्रत्य
क्षे भगवानने भजतां तेने वारे ते जेवो कोई जिवनी शत्रु नथि ॥ केमके बिजा शत्रु तो देहना सुखनो नाश करे ॥ अने भ
गवानने भजतां वारे ते तो आत्माना अविनासि सुखने नाश करे एवा छे ॥ माटे पोताना गुरु केहेवाता होय ॥
तथा सगां संबंधि होय ते कोईनुं वचन भगवान भजवामां वारे तेनुं न मानवुं ॥ ने सर्व प्रकारे प्रत्यक्ष भगवानमां
जोडावुं ॥ एम समजे ते बुद्धिमान छे ने ते विनाना सर्वे मुरख छे ॥ ॥इति श्रीमुखसिद्धांत स
माप्तः ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ॥ ॥संवत् १९ओगणिसें २१एकवि
सना श्रावण शुदि १ पडवाने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पीपलीमध्ये भक्तविरजि रिखमाने
पेर उगमणा बारना ओरडानी ओसरिमां हिंडोलाखाट उपर विराजमान थया हता ॥ ने सर्वे जरियानी वस्त्र धार-
ण कर्यां हतां ने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभि रह्यां हतां ने केकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ ने पोताना मुखारविंदना

आगळ साधु तथा घणा कहरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हती ॥ पछे महाराजनी संध्या आर्ति थया पछी सर्वे भक्तजनो उपर
कृपादृष्टि करिने महाराज बोल्या जे अतिशय अगम्य ने अतिशय दुर्लभ एवि जे वात ते अतिशय सुगम ने सुलभ थई जा-
य ते वात कहिये छिये ॥ तेमां अगम्य ते शुं छे तो जिवने तृष्णा टालवि ॥ अने भगवानना धाममां जवुं ॥ ए ज अतिशे करणका
म छे ॥ अने भगवानना धाममां जतां एक तृष्णा ज आडि आवे छे ॥ अने जो एक तृष्णा टले तो जिव भगवानना धामने साक्षा
त्कार पामि जाय ॥ ते तृष्णा केवि छे ॥ तो अतिशे झिणि छे ने सूक्ष्म छे ॥ ने वलि तुच्छ जेवि छे ॥ पण जिवने अनंताने करिने जे
जे विषयनी तृष्णा होय ने ते विषय तेने न मले तो तेने ते विषयनी कल्पना थवा मांडे ते आखा ब्रह्मांडना विषयनी क-
ल्पना करे तो पण तेने तृप्ति थाय नहि ॥ पछे ते जिव महादुःखियो थयो थको रघवायो फरतो फरे ॥ अने तेने कोई ए-
म कहे जे तुं तृष्णा मुकि दे तो महासुखियो थईश त्यारे ते एम कहे जे आखा ब्रह्मांडना विषयने भोगवुं तो पण मारे तृप्ति था-
य नहिं ॥ एवि मारे तृष्णा छे तेनो में केम त्याग थाय ॥ एम जाणिने कायर थईने भगवानना धामने पामवा मां जिवनि-
राश थईने बेसे छे ॥ एवुं अतिशे करण तृष्णानुं आवरण छे जेम कोईक महा वज्रनो मोटो गढ होय ते गढनुं चोत्राका
शना छेडा सुधि होय ॥ अने हेठो ठेठ पाताल सुधि उंडो होय अने लांबो पण पृथ्विना छेडा सुधि चोकोर होय अने पोहो-
लो तो पांच हाथनो पायो होय पण ते गढ कोई रिते पडे के कपाय के खोदाय एवो न होय अने ते गढनी मांहे चोकोर अग्नि
नी झाल बलति होय ने वलि तेमां मोटा मोटा सिंह सर्प गांडा हाथि रहेता होय ने तेमां जिव महादुःख पामतो होय ॥ प
छे ते दुःखने टालवाने अर्थे जिव नासवा बहु करे ते गढने उंचु जुवे तो आकाश सुधि ॥ अने हेठुं खोदे तो सरु आवे नहि
अने बे कोरे अडखे पडखे नासवा जाय तो तेनो पार आवे नहिं ॥ पछे ते जिव महादुःखने पामतो थको निरास थईने पृथ्वि
उपर पडे ॥ पछे तेने कोईक ईश्वरईछाये करिने ते गढनी बहारनो पुरुष त्यां आविने एम कहे जे हे भाई तुं महादुःखमां
शिद पड्यो छुं ॥ चालने आ गढनी बहार ने त्यां तो महासुख छे ने दुःखनो तो त्यां लेश न थि ॥ अने छेटुं पण कांई नथि

पांचहाथनोगढजआडोछे॥अनेतेगढमांएकगडकबारिछे तेबारि मांगडकीनेगढनिबहारनिसरिजायछे तेबारिमांग
डकिनेगढनीबहारगयोएटले ते पुरुषमहासुखियोथयो॥ए तोदृष्टांतनेएनुं सिद्धांत एछेजे जिवनेपंचविषयनीतृ
ष्णारुपि तो भगवाननाधाम आडो वजरनोगढछे॥ अनेतेतृष्णाए करिने विषयनीकल्पनाथाय छे॥तेमांस्त्रिनीतृ
ष्णा होयने स्त्रिपोतानेनमळे त्यारे तेने स्त्रिनीकामरुपिकल्पनाथयामांडे ते कल्पनानासंकल्पेकरिने जिवनीमति
अंधधंधसरखि थईजायछे॥ जेम लिलागरकेदारुपियेनेतेनेकेफे करिने पोतानुं भान भूलिजवायछे॥ तेमस्त्रिनी
कल्पनायेकरिनेआत्मानेपोतानास्वरुपनभान रहेतुंनथि॥ तथा धर्मअधर्मनुंपण तेने भान रहेतुंनथि॥ अनेतेका
मनारुपिकल्पनायेकरिने बधाविश्वनीस्त्रियोनीकल्पना करवामांडे नेमहापातकिनेचंडालना भावने पामिजाय॥
अनेतेविजरितेस्त्रिनेपुरुषनी तृष्णाहोयनेतेनेपुरुषनमळे॥ तो तेनेपुरुषनीकामनारुपि कल्पनाथवामांडे तेकल्पनाए
करिने बधाविश्वनापुरुषनीकल्पना करे ने धर्मअधर्म कांईजुवेनहिं॥ ने तेवेश्याना भावनेपामिजायछे॥ तो पण तेने
तृप्ति थायनहिं॥ अनेएविकल्पनायेकरिने स्त्रिपुरुषबे घोरनर्कमां जायछे नेमहादुःखनेपामे छे पछे तेजिवनेजो
सत्पुरुषनो आश्रारो थाय ने तेनीआज्ञाए करिने कामनीकल्पनानो त्यागकरिनेसंतोषरुपि वारिनुं ग्रहणकरे तो
तेजिवसर्वेदुःखथकि मुकाईनेअपार सुखनेपामे॥ ते केवि रिते कामनि कल्पनानो त्याग करे तो जेने वासनाहो
य तेने परमेश्वरे एक एक पुरुषने एक एक स्त्रिनी आज्ञाआपिछे॥ अनेस्त्रियोनेपण एक एक पुरुषनी आज्ञाआपिछे
अनेतेएकपुरुषनेएकस्त्रिहोय तो तेने बिजि स्त्रिनी ईछा रहे तिनथि॥ अने जिवनेकामनापण एटलिज छे जे एकपुरु
षनेएकस्त्रिजोईये॥ ने एकस्त्रिनेएकपुरुषजोईये॥ अने तेणे करिने कामनी कल्पना समिजायछे अने तेमां पणजेने
आत्मानाकल्याणकरवानोखपहोय तेने तो पोतानी एकस्त्रि होय तेनो पणव्रतादिकने दिवस त्याग करवो॥ अने
तेमांसंतोषराखवो जे कोटियुग थयां जिवेपुरुषनादेहधरिने अनंतस्त्रियो भोगविछे॥ ने स्त्रिनादेहधरिने अनंतपु

पुरुष भोगव्या छे ॥ तो पण ते थकि जिवने तृप्ति कामभोगनी स्त्रिने के पुरुषने थई नथि ॥ अने हजि कोटि कल्प सुधि भोग
भोगवशे ॥ तो पण तृप्ति थवानी नथि ॥ एम जाणिने संतोष राखिने कामनी कल्पनानो त्याग करवो ॥ अने जे ने स्त्रिन
होय एवा जे ग्रहस्थाश्रमि पुरुष तथा जे ने पुरुष न होय एवि जे विधवा बाईयो ॥ तेने पण पूर्वे कह्यो जे विचार तेने हृदक ए-
वो ॥ ने मनमांथि कामनानी कल्पनानो त्याग करवो ने संतोषने पामवुं एवि रिते समजे तो तेने कामनानी तृष्णारुपि
दुःखरलि जायछे ॥ अने सर्वे कामनानेव धारनारी कल्पना छे ॥ माटे भगवानना भक्तने भगवानना धाममां जवुं होय
तेने सावधान थईने कल्पनानो त्याग करवो ॥ अने संतोष राखिने भगवाननी आज्ञामां रहिने भगवाननुं भजन करवु
॥ अने तेमज जिवने द्रव्यनी कल्पनानो उदय थायछे ॥ ते प्रथम तो सो बसे रुपैयानी वासना होय ने पछे तो हजार बेह-
जार लाख दस लाख करोड सो करोड तथा अबज खर्व सुधिनी कल्पना करे तो पण तृप्ति थाय नहिं ॥ अने ते कल्पना-
ये करिने जिव महादुःखने पामे छे ॥ पछे तेने कोई कए एम कहे जे तुं द्रव्यनी वासनाने मुकि दे ने निरलोभि था ॥ तो तुं म-
हासुखने पामिश ॥ त्यारे ते द्रव्यनी कल्पनावालो एम कहे जे मारे तो म्हारवाब्रह्मांडना द्रव्यनी तृष्णा छे ॥ ते मे केम मुकाय
॥ एम जाणिने महादिनताने पामिने हारि बेसे छे ॥ एम समजिने तृष्णानी झालमां जिव बल्या करे छे ॥ अने तेने परमे-
रनी हिसातो सुजति नथि ॥ अने विचारिने जोईये तो मनुष्यने एक शेर अन्ननो खप छे ॥ ने जाडा मोटा वस्त्रनो खप छे ॥ ते
भूख लागे त्यारे एक शेरनि भूख होय ॥ पण ते घडिक न मले त्यारे तेनी कल्पना करवा मांडे ते आभसांडना षवनि कल्प-
ना करे तो पण तृप्ति थाय नहिं ॥ अने ते एम जाणे जे कुलो कोई दहाडे धराईश्याज नहिं एवो तृष्णाये करिने कल्पनानो मोटो
गढ जणाय छे ॥ ने ते घडने उलंघवाने समरथ थतो नथि ने ते जिव महादुःखने पामे छे ॥ पछे एवा दुःखिया जिवने
जोईने भगवानने भगवानना संत ने दया आवे छे ॥ ने तेने कल्पनारुपि गढने ओलंघवाने अर्थे संतोषरुपि बारि
बतावे छे ॥ ते केवि रिते बतावे छे ॥ तो एम ज्ञान आपे छे जे तारे भूख लागि छे ते खावाने अर्थे एक शेर अन्न जोईये ते-

मारुं उद्यम कर ॥ तो तुने अन्न मलशे ने तुं कोई दिवस भूख्यो नहि रहे ॥ अने उद्यम कर्या विना तुं कल्पना करि करिने म-
रिजईश तो पण तुने अन्न मलशे नहिं ॥ ने तृप्ति पण थशे नहिं ॥ अने कमाई ने एकठो अन्न रखाईश एटले तारि भूख म
टि जशे ॥ ने तृप्ति पण थशे ॥ माटे संतोष राखिने उद्यम करवो अने कल्पनानो त्याग करवो एवि रिते समजे तो ते जि
वने तो भनी वासना टलि जाय ने जिव महा सुखियो थाय ॥ अने जे ने कामलो भादिकनी वासना टले छे ॥ ते ने आत्मा
परमात्माने विषे प्रितिथाय छे ॥ ने ते जिव तानने पामिने भगवान भजिने भगवानना धामने पामे छे ॥ माटे भगवा
नना भक्त होय तेने कल्पनानो त्याग करवो ॥ ने सदाय संतोष राखिने भगवाननुं भजन करवुं ॥ अने वलि जेने सारुं
सारुं खावानी वासना होय तेने ते रस खावानी कल्पना उत्पन्न थाय छे ॥ अने तेने आ खावि श्वनारसने भोगववानी
तृष्णारुपि ज्वाल वृद्धि पामे छे ॥ ने जियनी मति अंधधंध थई जाय छे ॥ ने सारुं नरस धर्म अधर्म ने कोई गणे नहिं ने
बेभान थई जाय छे ॥ अने ते जिव जो सतपुरुषनुं शरणुं लेईने संतोषरुपि गुणनुं ग्रहण करे ॥ तो ते जिव अपार सुखने
पामे ॥ केम के आत्मा तो देहथि नोखो छे ॥ ने पोते जसुखरूप छे ॥ ने अखंडानंद ने ब्रह्मानंद छे ॥ अने प्राण वायु तो
जेवुं तेवुं अहारमात्रे करिने तृप्त थाय छे माटे इश्वरनी इच्छाये करिने पोताना प्रारब्ध प्रमाणे जे प्राप्त थाय तेणे करिने
संतोष पामवो ॥ अने चहाय तेवा सारा रस खाय तो पण ते गला थी हेठुं उतरतां वेंत विष्टा थई जाय छे माटे भगवान
ना भक्तने एवि नकारी वस्तुमां थि प्रितिनो त्याग करिने भगवानना स्वरूपमां प्रिति करवी ॥ अने भगवानमां जे प्री
ति करे छे ते जीव अपार सुखने पामे छे ॥ अने तेमज देह ने देहना संबंधिनां स्नेहरूपि कल्पना उदय थाय छे ॥ अने ते
स्नेहनी कल्पनाये करिने जिव अतिशे संतापने पामे छे ॥ केम के जीवने जे जे पदार्थमां अतिशे प्रिति होय ने ते ते प
दार्थ नाश पामि जाय त्यारे तेने सारुं जिवअतिशेकल्पना करे ते जो पोतानि स्त्रिमरि गई होय ॥ तो तेनूं वांसे लो-
क मरजाद ने मुकिने निरलज थईने रोया करे छे ॥ अने तेमज स्त्रिपण पोताना धणीनी केडे निर्लज थईने रोया करे छे

अनेतेमजमाबाप सगांसंबंधीआदिकजेमांजे मां प्रिति बांधतेनेवांसेरोयाकरंछे ।।ने छातीकुटिकुटिने अतिशेसंताप
नेपामेछे।। अनेमतिमां पण तेने भ्रमणाथईजायछे अनेजो ते जिव सतपुरुषथकि ज्ञानने पामिने संतोषनुंग्रहणकरे तोतेअप
रसुखनेपामे ।।अनेकल्पना रुपिजाल सर्वसमिजाय तेकेवि रिते सतपुरुषसंतोषरुपीगुण आपेछे।। तोआत्माने कोईसा
थुंसंबंधिनथि।।अनेएतो सौ सौने स्वार्थे भेगांथयां छे।। अने सौसोनी आवरदा ज्यारे रहेशेत्यारे तेकोईनारारख्यारहेतान
थि।। अने मारा पण आयुष्यनो क्यां निरधार छे ।।एमसमजीने कल्पनानो त्याग करि ने संतोषनुग्रहण करिने भगवाननेपोता-
नाआत्मानाहित करिजाणिने अखंड भगवाननुभजन करवु।। अनेमाननी पणजिवने कल्पना उदय थायछे।।त्यारेते
जिव अपारक्लेशनेपामे छे।। जेहुं उत्तमकुलवालो छुं ।।हुंपंडित थाउं।।हुंराजा थाउं।।एविरीतेकोटिब्रह्मांडना मानमल-
वानीजिवकल्पना करेछे अनेतेमलवानुंतो छे नहिं।।माटेजिवमहादुःखनेपामे छे ।।अने भगवाननोमारगतोतेनेमल-
वतोनथि ।।केमके भगवानने मारगे चालतां तो काम लोभस्वाद स्नेहमान तेनी वासनानोत्याग करयो जोईयेछिये।।
त्यारे भगवानने मारगे चलायछे ।। तेतोजेजिव कामादिकनी कल्पनाकरेछे।। तेजीवतो एमजाणेछे जे मेंते कामादि
कनो केम त्याग थाय ।। एमजाणिने महाकायर थई जायछे।। माटे जे नेपोताना आत्मानाकल्याणनी इछाहोयतेने
तो सतपुरुषनो आश्रय करिने तेथकि ज्ञान पामवुं ।।अनेजे ज्ञानने पामेतो तेकल्पनारुपिएबोजे वज्रसार गढ तेने
संतोषरुपिबारियें करिने ओलंघिजायछे।।अनेतेने दुःख सर्वमटिजायछे ।।नेअपारसुखनेपामेछे माटेजे नेम
हासुखियाथवुंहोयने भगवानना पदने पामवुंहोय तेने तोपंचविषय निकल्पनानोत्याग करवो।।अनेसदाय संतोष
राखवो ।।अने भगवाननीआज्ञामां रहिने भगवाननु भजन करवुं अने भगवानना एकांतिक संतनो अखंडस-
मागम करवो ।।नेविषय नि वासना ज्यांहोय तेनासंगनो त्याग करवो।।एज जिवनी हितवारता छे।। ।।
।। ।।इतिश्री सुख सिद्धांत समाप्तः।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।।

॥ ॥संवत् १९ओगणिसे २१ एकविसना श्रावणसुदि ॥३॥ त्रिजने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान
गाम श्रीपीपलिमध्ये भक्त विरजि खीमाने घेर उगमणे बार ओरडानी ओसरिमां हिंडोला खाट उपर विराजमान थया हता
नेसर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ने कंठमां पुष्पना हार धारण कर्या हता नेकान उपर गुछ सोभि रह्या हता ने पाघमा
तोरा लटकता हता ॥ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥अनेपोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा कहरि भक्तनी
सभा भराईने बेठि हति पछे महाराजनी सं ध्यान्मा र्तिथयाकेडे महाराज बोल्याजे सर्वेने आमे पुछिये छैये ॥जे का लेनहिं ने
त्रिजे दिवस आवरवते त्रिबात करि हति ते कहो ॥पछे अक्षरमुक्तानंदस्वामिये कह्युंके कल्पनानो त्याग कर्यो ने संतो
षनुं ग्रहण करवु एवा र्ता थई हति ॥पछे महाराज बोल्याजे कल्पनाजेवुं कोई दुःख नथि अनेसंतोषजेवुं कोई सुख नथि
॥जेम रात्रिनुं अंधारुं अपार छे ॥अनेते अंधारामां दिवसनो प्रकाश लेश मात्र होय नहिं ॥ अनेअपार एवुं जेरात्रिनुं अं-
धारुं ॥ते ज्यारे दिवस उदय थाय त्यारे ते अंधारुं लेश मात्र रहे तुं नथि तेम रात्रिना अंधारारुप जे कल्पनानुं दुःख ते
अपार छे ॥ने ते कल्पनाने विषे सुख जे ते लेश मात्र नथी एवि ॥ अपार दुःखनुं मूल कल्पना छे पण जे जिव सत्पुरुष
नो आश्रय करिने संतोषने पामे छे ॥ तेने कल्पनानुं दुःख लेश मात्र रहे तुं नथि ॥ हवे ए विजे कल्पना ते टलि जाय ॥ने
संतोष आवे ते नो श्यो उपाय छे ॥ अने वलि संतोष आवीने पाछि कल्पना उदय थाय ते शाने करिने थाय छे ॥ते केविस-
मजणने समज्यो हतो ॥अने एकने संतोष आवे ते पाछो संतोष कोई काले टले नहिं ॥ ने तेने कल्पना उदय थाय
ज नहिं ॥ तेनी श्यो उपाय छे ते कहो ॥पछे धर्मानंदस्वामिये कह्युं जे ॥ देहरुप थईने कल्पनानो त्याग करे छे ने संतो
ष राखे छे ॥ ते ने पाछि कल्पना उदय थाय छे ॥अने जे धर्म ज्ञान वैराग ने महात्मे सहित भगवाननी भक्ति तेने सिद्ध
करिने ब्रह्मरुप थईने जे कल्पनानो त्याग करे छे नेसंतोषने पामे छे तेने पाछी कल्पना कोई काले उदय थति ज नथि ॥
पछे महाराज बोल्याजे ए उतर तो खरो ने देहाभिमानी कल्पनानो त्याग करे ने संतोष राखे ॥ तो पण तेने पाछि

कल्पनाउदयथाय ॥ एतो ठिक पण जेपोताने देहथिनोखो आत्मारूप मानतो होय जे हुं आत्मा छुं। अखंड सुखरूप छुं तेमारे
काईजोईतुं नथि ॥ एमसमजिने कल्पनानो त्याग करिने संतोष पाम्याहोय। पण जो तेने भगवान मत्स्य राम कृष्णादिकनी
उपासना ने भक्ति नहोय तो ते आत्मनिष्ठ पुरुषने पण पाछि कल्पना उदय थाय छे ॥ ते केवि कल्पना करे छे तो जगतना
देहाभिमानी जिवोना करतां लाख घणि वधारे कल्पना करे छे ॥ केमके देहाभिमानी जिव होय ते तो कांईक पापथकि बिने
थोडि कल्पना करे ॥ अने उपासनाविनानो एवो जे आत्मनिष्ठ पुरुष ते तो एमजाणे जे हुं आत्मा छुं ॥ ते आत्माने कांई अडतुं
नथि ॥ एमजाणिने संतोष राखे त्यांसुधि तो सारुं ॥ पण तेने अंते जातां उपासनाविना संतोष रहेतो नथि ॥ ने तेने
विषयनो संग थाय तो पाछि कल्पना उदय थाय छे तेएवि कल्पना करवा मांडे ते धर्म अधर्म पाप पुंन्य कांई गणे नहि ॥
ने ते महापातकि थईजाय छे ॥ अने ते पछे कोई दहाडे कल्पनानो त्याग करवाने समरथ थतो नथि ॥ ने ते मरिने घोरनर्क
मां जाय छे ॥ माटे जेने पोताना आत्माना कल्याणनी ईछा होय तेने भगवाननी उपासना द्रढ करिने राखवि अने भगवान
नी भक्ति करवि ॥ अने विषयना संगनो त्याग करवो ॥ अने पोताने आत्मारूप मानवुं एविरीते समजिने ते प्रमाणे वर
ते तो तेने कल्पना टलि जाय छे ॥ ने महासुखने पामे छे ॥ तेनुं आख्यानमां पण कह्युं छे जे ॥ ॥ संगत्यागि सुखि भवेत
॥ ॥ माटे विषयना संगनो त्याग करवो ॥ अने जे विषयना संगनो त्याग करे छे तेने सेहेजे कल्पना टलि जाय छे ॥
अने तेने अंतरमां महासंतोष उदय थाय छे ॥ ने चौदलोकनां सुख तेने कागविष्टा तुल्य थईजाय छे ॥ केमके जेजे पदा-
र्थनो आपणे संग छे ॥ तो ते ते पदार्थनी कल्पना थाय छे ॥ पण जो आपणे दारू माटि आदिक दुराचरणना संगनो त्या
ग कर्यो छे ॥ तो तेनी कल्पना कोई दहाडे थति नथि ॥ तेम जेजे त्यागि साधु छे तेणे देहपर्यंत गल्याचिकणादिक रसने
खावाना संगनो त्याग कर्यो छे ॥ तो तेने ते रसने खावानी कल्पना कोई दहाडे थति नथि ॥ अने बिजा ग्रहस्थने प-
ण एकादशि रामनवमि आदिक व्रतने दिवस पण अन्न खावानी कल्पना थति नथि ॥ अथवा चतुरमासमां मास

बेमासगल्याचिकणानाजेणेनियमलीधाहोयतोतेटलादिवसतेनेकल्पनाथतिनथि॥अनेजेनेजेपदार्थनोसंगहशेनेकोईथातनुंनियममहिंहोयतेनेअनंतकल्पनाथयाकरतिहशे॥अनेजेणेनियमलीधांहोयनेतेकल्पनाकरेछेतेनेतोमहापापिजाणवोअनेतेनानियमपणरहेवानानथि॥अनेकदापिकल्पनानोत्यागकर्योहोयपणजोतेविषयनोसंभकरवामांडेतोतेनेपाछिकल्पनाउदयथायछे॥तेगीतामांभगवानेकह्युंछे॥ ॥श्लोक॥ ॥संगात्संगजायते,कामात्॥ कामात्क्रोधोभिजायते॥ ॥अर्थ॥ ॥जेविषयनासगथकिकामजागेछे॥नेकामथकीक्रोधथायछे॥नेक्रोधथकिमोहथायछे॥नेमोहथकिबुद्धिनोनाश थायछे॥अनेबुद्धिनेनासेकरिनेआत्मानोनाशथायछे॥कहेतांतेआत्माकल्याणनामारगथकिपडिजायछे॥माटेजेनेपोतानाआत्मानुंरुडुंईछवुंहोयतेनेपोतपोतानावर्णाश्रमनाधर्मवेदमांकह्याहोयतेनेदृढकरिनेपालवा॥अनेविषयनासंगनोत्यागकरवो॥अनेजेतेमांभोजप्यरारकशेनेविषयनोसंगकरशे तोतेनोधर्मजरूररहेशेनहि॥अनेतेकल्याणनामारगथकिजरूरपडिजशेतेउपरएकवार्ताछे॥ ॥एकनानीबालकिहतितेनेएकब्राह्मणसाथेहेतथयुं॥नेतेब्राह्मणअवस्थायेनेवुंपंचाणुंवरसनोहतो॥नेवनमांनदिनीतीरेतपकरतोहतो॥तेपासेतेबालकिरहिनेतेनेरुषियेज्ञानआप्युं॥नेतेनेवैरागउपन्योतेपरणिनहिं॥नेविशवरसनीथई पछेतेबालकिमांदिथई तेमरणतुल्यथईगई॥पछेतेरुषियेसाजिकरवासारुंवैदनेतेडाव्यो॥तेवैदपणअवस्थायेविसवरसनोहतो॥अनेतेबालकिपण विसवरसनीथईत्यांसुधिकोईपुरुषनोस्पर्शकर्योनहिं॥अनेपोतेमरणतुल्यथईहति॥तोपणतेवैदेहाथमांनाडिजोवासारुं कांडुंझाल्युंत्यांतोतेबाईनेमनमांकामउत्पन्नथयो॥नेतेनेएमविचारउठ्योजेआटलादिवसमेंपुरुषनकर्योतेरवोटरवाधि॥अनेरूरवतोपुरुषमांजछे॥एमविचारकरतांकरतांतेनोदेहछुटिगयो॥पछेतेनेकल्पनानेपापेकरिनेवेश्यानेघेरजन्मथयो॥नेतेणेघणाकपुरुषकर्या॥माटेविषयनोसंगछेएजेकामनानीकल्पनानुंकारणछे॥तेसारुंअमाराआश्रितहोयनेजेनेपोताना

आत्मानोमोक्षकरवोहोय॥ तेने बुद्धि राखवि॥अने जेने बुद्धि राखवि होय तेने कोई माईकपदार्थमांमोहपामवुंनहिं॥ कहेतां प्रितिकरविनहिं॥ अने जे नेमोह टालवो होय तेने कोई विषयपदार्थनो भंग थाय तोपणक्रोधकरवो नहिं॥अ नेजेने क्रोधटालवो होय॥तेनेकामादिक भोगनो त्यागकरवो॥ अनेजेनेकामादिक भोगनो त्यागकरवो होय तेनेविष-यनासंगनो त्यागकरवो अनेजे विषयना संगनोत्यागकरेछे तेने विषयनीकल्पनामात्रटलिजायछे॥नेमहासंतोषने पामिने परमसुखियो थायछे॥ माटेएवीरीते समजिनेप्रत्यक्ष भगवाननीउपासनाने भक्तिदृढ करिने पोते आत्मा रूपथईने धर्ममांदृढ रहिनेवैरागने पामिने सर्व लोक भोगादिकपदार्थ थकिसंतोष पामवोनेजेणे करिनेकाम लो-भादिकउदयथाय एवाजेपदार्थतेना संगनो त्यागकरिनेकल्पनानो त्यागकरवो छे॥ तेने पाछि कोईकाले कल्पनाउ दयथतिजनथि॥ माटे आमाराआश्रीत होय तेने विषयना संगनो त्याग सर्वे प्रकारेकरवो॥ते मांजे ग्रहस्थाश्रमि पुरुषहोय तेने पोतानी स्त्रि विना बिजीकोई स्त्रिसाथे तथा पोतानीमा बेहेनदिकरिसाथे बे जणाने एकांतमांनर हेवुं॥ अने बाईओ हरिभक्तहोयतेने पण पोतानापुरुषविना कोईपुरुष साथे तथा पोताना भाईबाप दिकरा संगाथे बे जणाने एकांतमां नरहेवुं॥ तथा मंदवाडथाय नेशरिर दबाववुंपडे॥तो पुरुषने पुरुषपासे दबाववुं ने स्त्रिने स्त्रि पासेचाकरिकरावबी॥ पणपुरुषने पोतानीस्त्रि विनाबिजीकोईस्त्रि पासे तथापोतानीमा बेहेनदिकरी पासे शरि र दबाववुं नहिं॥ने स्त्रिहोयते कोईपुरुष पासे सुजे एवो मंदवाडथयो होय॥ तोपण शरिरदबाववुं नहिं॥एविरित नियमने जे दृढ करिने राखशे तेनोज धर्म दृढ रहेशे॥अने धर्मे सहित अमारि उपासनाने भक्ति करशो॥तथा अमारा चरित्रनुं श्रवण कीरतन करशो॥ने पोते देहथि नोखो आत्मारूपथईने प्रत्यक्ष परमात्मा ने विषेजोडाई जशे ते ज भगवाननीं मायाने तरिने भगवानना अक्षरधामने पामशे॥ अनेजे धर्मे रहित भगवाननीउपासना भक्ति करे छे॥ तेनुं कल्याण कोईकाले थाय नहिं॥ अने धर्म पालती होय तोपण तेने भगवाननीउपासनाने भक्ति नहोय तोते नुं

पण कल्याण थाय नहिं ।। तेपण सहजानंद स्वामियेवचनामृतमां कह्युं छे जे भगवाननी उपासनाने भक्ति विना एकले धर्मे क-
रिने कल्याण नेई छे छे ।। ते तो जेम वहाणनो त्याग करिने तुंबडां वते समुद्र तरवाने इच्छे ।। तेजेवो जाणवो ।। अने भगवाननि
उपासना भक्ति करता होय ।। पण तेने धर्म न होय तो तेने जेम कंठमां पथरो बांधिने समुद्र तरवा जाय एवो जाणवो अने जेध
र्ममां रहिने भगवाननी भक्ति करे ।। ने भगवानना लिलाचरित्रनुं श्रवण किरतन करे छे ने भगवानना नीरवासनीक संतः
नो समागमने सेवा करे छे तेने तो जेम वहाणमां बेसिने समुद्र तरवाने ईछे एवो जाणवो ।। माटे अमारा आश्रित बाई भा
ई सरवे ने धर्ममां रहिने अमारि उपासना भक्ति करवि ने अमारां लिलाचरित्र श्रवण किरतन करवुं नेसंतनो समागम
करवो ।। एज कल्याणनो अचल सिद्धांत छे ।। ने सर्वोपरि सुखपामवानो उपाय छे ।। ।।

इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः ।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमो नमः ।। ।।

संवत् १९ ओगणिसे ।।२१।। एकविसना श्रावणवदि ४ चोथने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्रीपीपलीम
ध्ये पोतानामंदिरमां हिंडोलाखाट उपर विराजमान थया हता ।। ने सर्वे सीने रिवस्त्र धारण कस्यां हतांने सर्वे अंगमां पुष्प-
नां आभूषण सोभि रह्यां हतां ।। ने कंकुनो चांदलो कस्यो हतो ।। ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरिभक्त
नी सभा भराईने बेठि हति ।। पछे महाराज बोल्या जे ।। जिव छे ते अखंड ने अविनासि छे ने सुखरुपने चैतन छे ।। पण ते
ने ज्यां सुधि रजतमने सत्व ए त्रण गुण तेनो संबंध छे ।। के हे तां त्रण गुणमां जोडाणो छे त्यां सुधि ते जिव जन्म मरणने चो
राशिनां अनंत दुःख तेने भोगवे छे ।। माटे त्रण गुण एज दुःखनुं कारण छे ।। केम के त्रण गुण थकि देहरुपि वृक्ष उत्पन्न थयो
छे ।। ने वासनारुपि तेनां मूल छे ।। अने पंचविषयरुपि जले करिने ते देहरुपी वृक्ष वृद्धि पामे छे ।। अने ते देहपा छो जेमांथी
उपन्यो छे ।। तेमां नास थाय छे ।। केम के जे मांथी जे उपन्युं होय ते मां ते लय पामे अने ज्यारे देहनास थाय छे ।। त्यारे ते देहभे
गो आत्मा पण नास पाम्यो ।। एम जणाय छे ।। अने ते आत्मा मरे एवो तो नथि तो पण देह नास थाय त्यारे ते आत्मा एम ।।६५।।

जाणेजेहुं मरिगयो ॥ नेसुनेदुःख थायछे ॥एम मान तोथको वारंवार जन्ममरण नेचोरासिमां भटक्या करेछे नेअनंतदुःख ने
पामे छे ॥ अनेतेआत्मा कालकर्ममाया नो नाश कर्यो नाश थायएवो नथी ॥ तो पण कालकर्मादिक जे त्रणगुण ते थकि बन्या
जे देह तेने विषे जीव जोडायो छे ॥ त्यांसुधि ते आत्माने कालकर्म जन्म मृत्यु नेपमाडे छे ॥ अने जो त्रण गुणथकि बन्यो जेदे-
ह ते थकि असंगि थईने पोतानुं स्वरुपजे अक्षरब्रह्म ते रुप पोते थईने ते अक्षर ब्रह्मना प्रकाशक एवा जे परब्रह्म प्रत्यक्ष भ
गवान तेनास्वरुपने विषे जोडाय तोते आत्मा कालकर्म नो नाश कर्यो नाश थायनहिं ॥नेते थकि तो कालकर्म पण थरथर
कंपे नेतेतो कालनो पण कालछे ॥ नेतेनेजन्ममरणटलिजायछे ॥जेमअग्निथकि जलथयुं छे नेतेजलने पाछुं अग्निनासक
रेछे ॥पणजलअग्निनेनाश करिशके नहिं ॥एवो जलकरतां अग्नि घणो बलवान छे ॥नेमोटामोटा तलावनेनदियोते
ने सूर्यनोअग्निछे तेसुकविनाखेछे ॥ नेतेसूर्यना अग्निनेजलनाश करिशकतुनथि ॥एवो महाबलवान अग्निछे तोपण
जोतेअग्नि सूर्यनासंबंधथीजुदो पडिने पोतानुंकार्यजेजल नेजलनु कार्यजे काष्टादिक पृथ्वि तेमांअग्निजोडायछे॥
तो तेअग्निने जल नाश करे छे ॥अने तेअग्निजो काष्टादिक पृथ्विनो त्याग करिने पोतानुंसुक्ष्मस्वरुपजे सूर्य तेना भावने
पामे तो जलनो नाश कर्यो ते अग्निनाश थायनहिं ॥ तेमआत्मानुंसुक्ष्मस्वरुपजे ब्रह्म ते थकि त्रणगुणात्मक कालकर्म
मायाविकसर्व विश्व उपन्युंछे ने पाछुंते विश्वब्रह्मना एकदेशने विषे नाशथायछे ॥ पणकालकर्ममायादिक कोई ब्र-
ह्मनेनाश करवाने समरथ नथि ॥एवुं ब्रह्म जे तेआत्मानुं स्वरुपछे ॥पणते पोताना ब्रह्मस्वरुपने भूलिने ते ब्रह्म थकि उपन्यु
जे त्रिगुणात्मक पिंडब्रह्मांडादिक मायानो मिथ्यापरपंच तेने विषे अहंताने करिने जोडायोछे ॥ तोवे आत्मा दिनताने
भावने पामतो थको वारंमवार नाशपामे छे ॥ नेउपजे छे ॥ने चोराशिमां अपार दुःख भोगवे छे अने जो सतपुरुषनेश
रणे जिवजायने ते थकिज्ञान नेपामिने त्रणगुणात्मक जे पिंड ब्रह्मांड तेनी वासनानो त्यागकरिने पोतानुं स्वरुपजे
अक्षरब्रह्म तेरुप थईने परब्रह्म एवाजे प्रत्यक्ष भगवान तेने विषे जोडायतो तेनेजन्म मरणटलिजायछे ने भगवानना

श्रीमुख सिद्धांत ॥६६॥

धामने पांमे छे ।। अने ते पिंड ब्रह्मांडादिकनी वासनानो त्याग ज्यारे थायछे ।। तो ते वासनाने वधारनारा एवा जे माईक शब्दादिक पंचविषय तेनो त्याग करे ।। तथा विषयनी वासना वाला एवा जे असतपुरुष तेना संगनो त्याग करे तो तेनी वासना टलि जायछे ।। जेम वृक्षने ने तेना मूलने वृद्धि करनारुं जल छे ।। ने जल जो मूलमां पावुं बंध करे तो वृक्षनो नाश थई जाय तेम वृक्षरुप देह छे ने तेना मूलरुप वासना छे ने जलरूप पंचविषय छे ।। ते विषयने भोगववे करिने देहरुपि वृक्षने वासनारूपि मूलियां वृद्धि पामे छे ।। माटे वासनानी वृद्धि करे एवा जे माईक जगत संबंधि पंचविषय तेनो त्याग करवो ।। अने पोताना आत्माने ब्रह्मनाभावने पमाडे एवा जे प्रत्यक्ष भगवानना स्वरुप संबंधि जे पंचविषय तेने भोगववां कहेतां माईक विषयनो त्याग करिने भगवानने भगवानना संतना शब्द सांभलवा ने भगवानना चरणनो स्पर्श करवो ने भगवानने भगवानना संतना दरशन करवां ने ते भगवानने संतनी प्रसादि रसजमवो ।। ने भगवानने भगवानना संतने चड्यां जे चंदनपुष्पादिक तेनी सुगंधि लेवि ।। एविरिते माईक विषयनो त्याग करिने भगवानने भगवानना संत संबंधि पंचविषय भोगववा तेणे करिने भगवानना स्वरूपमां जिव जोडायछे ।। अने तेने त्रण गुण थकि उपन्यां जे पिंड ब्रह्मांड तेनी वासना टलि जायछे ।। ने ते आत्मा ब्रह्मरूप थईने भगवानना अक्षरधामने पामे छे ।। ने महा सुखियो थाय छे ।। ॥

ईति श्रीमुख सिद्धांत समाप्तः ।। ।। श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ।। ।।संवत् १९

ओगणिसें ।। २१ ।। एकविसना श्रावण वदि ५ पंचमिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्णभगवान गाम श्री पीपलिमध्ये पोताना मंदिरनी जग्यामां आथमणा आरनी मेडिनी ओसरिमां हिंडोलाखाट उपर बिराजमान थया हता ।। ने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभि रह्यां हतां ।। ने ललाटने विषे केसरनी आडा ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति पछे महाराजनी स्तुति आरति थयाकेडे महाराज कृपा करिने सर्वे सभा प्रत्ये वोल्या जे जिवछे तेने स्वर्ग मृत्यु ने पातालने

विषेजवुंपडेछे॥ नेजन्ममरणगर्भवासनेचोरासिमांभटकवुंपडे छे॥ नेमहादुःखने पामेछे तेनुं कारण तेशुंहशे॥ ते सर्वेजेनेजे-
मस्रुजे तेम ते कहो॥ पछे विरजि भक्ते कह्युंके वासनाये करिनेजवुं पडेछे॥ पछेमहाराजबोल्याजे वासनातो सर्वेने-
सुखपामवानिछे॥ पण तेमां दुःखथायछे॥ ते शे णे करिने थायछे॥ पछेधर्मानंदस्वामिये कह्युंके कर्मे करिनेसुख
दुःखथायछे॥ पछेमहाराजबोल्याजेएतोठिकपण तेकेवां कर्म करे ते स्वर्गमां जायने केवां कर्मकरे ते नर्कमांजाय॥
पछेअक्षरमुक्तानंद स्वामिये कह्युंके पुंन्यकर्मेकरिनेस्वर्गमांजायछे॥ ने पापकर्मे करिने नरकमांजाय छे॥ पछेम-
हाराजबोल्याजे एनोउत्तरएमनहिं॥ एनुं तो एम छे जे जे सत्वगुणि कर्म करे तो स्वर्गमांजायछे नेजे रजोगुणी कर्म करेछे
॥ ते मृत्युलोकने पामे छे॥ अनेजे तामसि कर्म करे छे ते पाताळ कहेतां नर्क लोकने पामे छे हवे एयिरिते कर्मे करिनेजी-
वजेतेसुखदुःखने पामे नेतेमां बंधायए तो ठिक पणतेकर्मेकरिने बंधायनहिं एवो कोई हशे पछे तेनोउत्तरकोई नापिथ-
योनहिं॥ त्यारेमहाराजबोल्याजेएनोउत्तरअमेकरिये छैयेजे॥ जेजिवदेहने पोतानुंरुपमानिनेतेदेहनेअहंकारे करि
नेजेजेकर्म करे छे तेतेकर्ममां जिवबंधायछे नेते ते कर्मनुंफळ स्वर्गमृत्युने पाताळने विषे जईने भोगवे छे॥ अने तेक
र्म सत्पुरुषनीआज्ञामांरहिने करतो होय तो पण ज्यांसुधीदेहने पोतानुं रुपमानीने करे छे त्यांसुधि ते कर्म तेनेबं-
धनकरे छे अनेजे देहनेपोतानुंरुपमानतोहोयने ते कर्म कांई न करतो होयतो पण तेने कर्म थयाजकरे छे॥ केमके
इंद्रियो अंतःकरण छे ते पोतपोताना अहार कर्या विनारहेताजनथि॥ ते शुभअथवा अशुभ अहार करे छे ते कानेश-
ब्दसांभळे छे॥ त्वचास्पर्शकरे छे॥ आंखरुपजुवे छे॥ रसनारसचाखे छे॥ नासिकागंध ले छे॥ चित्त चिंतवनकरेछे
बुद्धि निश्चय करेछे॥ अहंकारअभिमानधरे छे॥ एवि रितेइंद्रियोअंतःकरण पोतपोताना विषयने भोगवे छे॥ तेण
करिने जिवने कर्मलागे छे॥ अने ते कर्मे करिने जिवने बंधन थायछे॥ अने ते स्वर्ग मृत्युने पाताळमां रहिने सुख-
दुःखने भोगवे छे॥ केमके देह छे ते आत्मानुंस्वरुपनथी॥ ते देह पोतानुं स्वरूप मान्युं माटे जिवमात्र पोतानुं सारुं

इछे छे तेसतपुरुषनीआज्ञामांरहिनेसारुंईछे तोपोताने सुखथायछे ॥ अने सतपुरुषनीआज्ञाथि विरुद्धवरतिनेसारुंईछे
तेनेदुःखथायछे॥ पणतेमां सतपुरुषनीआज्ञामांरहिने पोतानुंसारुंईछे छे ते सारुंदेहनुंथायछे ॥ तेदेहनाशवंत छेमाटेदेह
नाश थाय त्यारे ते सुख पणनाशथईजायछे ने पाछोजन्ममरण नादुःखनेपामे छे ॥जेमवेपारि घरनेविषेआसक्तिकरिने
रह्योहोय ने तेवेपारकरिनेद्रव्यकमाय तो ते द्रव्यने विषे सुखेकरिने बंधाय छे ॥अने तेवेपारमां खोटजायतो तेनाकरज
रुपीदुःखेकरिनेबंधायछे ॥ अने तेकरजने दुःखे करिने उदासथईने वेपारकरवो पड्यो मुकिने घरमां स्त्रिछोकरांभे-
गोबेसि रहे ॥ तो पणतेने अन्नवस्त्रादिक देहरक्षण सारुं जोईये तेणे करिने करजथायछे॥ नेते करजे करिनेदुःखपामे
छे ॥ तेमजे जिवदेहने पोतानुंस्वरूप मानिने सत्वगुणिकर्मकरेते स्वर्गादिकना सुखमां बंधाय छे ॥अने जे रजोगुणिक
र्मकरे ते मृत्युलोकना सुख दुःखमां बंधायछे॥ अनेजेतमोगुणिकर्मकरे तेपातालादिक दुःखमां बंधायछे ॥अनेते
कर्मादिकना सुख दुःख थकिउदासथईने कर्मनो त्याग करिने भेखलेईने एकांतपकडिने बेसिरहे तोपण जे देहने
पोतानुंरुपमाने छे ॥ तेने स्त्रिछोकरांरुपजे इंद्रियोअंतःकरणनाअहारुपकर्म थायछे ने ते कर्मेकरिने जिवने बंधन
थाय छे ॥अनेतेदेहनाअहंकारनो त्यागकरिनेपोताने आत्मारुपमाने अनेआत्मारुपथईने तेआत्मानाआधारने
प्रकाशकएवाजेपरमात्मा भगवान ॥ तथाते भगवानना एकांतिकसंत तेनोआश्रयकरिने भगवानने संत तेनीआज्ञा
प्रमाणे वरते छे तेनेकर्मबंधनकरतांनथि ॥ जेमग्रहस्थजे तेस्त्रिछोकरांघरनीआसक्तिनोत्यागकरिने कोई भारे
शाहुकार होयते भेगोजईने रहे ने ते साहुकार कहे तेप्रमाणे वेपारकरे तेमां खोटजाय केहांसलआवे तेनीहाणय
लाभनासुखदुःखमां लेशमात्रबंधातोनथि ॥अनेतेशाहुकारएम कहेजे तारे कांईकरवुंनहिं ने बेठो बेठो रोटला
खाने वस्त्र पेहेर ॥ तोते बेठो बेठो देहनिरवाहकरे तोपण तेनेकोईवाते हाण्यवृद्धनुं सुखदुःखथायनहिं तेमजेदेह
ना अहंकारनो त्याग करिनेआत्मारुपथईने प्रत्यक्षपरमात्माभगवानने तेनासंतनोआश्रयकरिने तेनीआज्ञाप्र-

माणेजेजे कर्म करे छे ते कर्म तेने बंधन करतां नथि ।। अने ते कर्म तो तेने भक्तिरूप थाय छे ॥ अने जे भक्ति छे ते तो अकर्म
रूप एटले ज्ञान रूप छे ॥ त्यां भगवद्गीतानो श्लोक छे ॥ ॥ कर्मणि कर्म यो पश्ये तः ॥ ॥ एनो एम अर्थ
छे जे देहना अहंकारनो त्याग करिने आत्मारूप थईने प्रत्यक्ष भगवाननो दृढ आश्रय करिने ते भगवाननी प्रसंन्नताने अर्थे भ
गवानने भगवानना संतनी आज्ञाये करिने जे जे कर्म करे छे ते कर्मने अकर्म जे ज्ञान ते रूप देखे छे ॥ अने देहने पोतानुं
रूप मानीने अकर्मपणे रहे तो होय तो पण ते कर्म मां भरपुर छे एम जे देखे छे ते मनुष्य मध्ये श्रेष्ट छे ने बुद्धिवालो छे ने
ज्ञानी छे माटे ए वात समजवी सूधि अटपटि छे ॥ केम के उपरथि जोवा मां तो देहना अहंकारे सहित पुरुषनी क्रियाने दे
हने अहंकारे रहित पुरुषनी क्रिया तो सरखि जणाय छे ।। पण तेना अंतरना आशय मां घणो फेर छे । केम के देहना अ
हंकारे सहित करे छे । तेदेहना सुखसारुं करे छे ।। अने जे आत्मारूप थईने करे छे ते तो आत्माने अविनाशि सुख
प्राप्त थाय तेने अर्थे ॥ अने भगवान प्रसन्न थाय ते सारु करे छे पण देहना सुख सारुं करतो नथि ।। माटे ते भगवानने सं
तनि आज्ञाये करिने रजोगुणि तमोगुणि सत्वगुणि कर्म करे तो पण ते कर्म तेने बंधन करतां नथि ते पूर्वे अर्जुने देहना
अहंकारनो त्याग करिने आत्मारूप थईने पछे श्रीकृष्ण भगवाननी आज्ञाए करिने घणां क प्रकारनां कर्म कर्यां तो प
ण ते कर्म तेने लेश मात्र बंधन करवाने समरथ थयां नहिं ने भगवानना एकांतिक भक्त कहेवाणा अने गंधारिये आं
खे सात पाटा बांध्या हता ने अकर्म पणे रहेति हती पण तेने भगवाननी भक्ति ने भगवाननो आशरो नो होतो ने
पोताने देहनो अहंकार टल्यो नो होतो तो ते दुर्भागणि कहेवाई माटे जे प्रत्यक्ष भगवानना भक्त छे ते देहना अहंकारने
मेहेलिने पोते आत्मारूप थईने भगवानने भगवानना संतनी प्रसंनताने अर्थे आज्ञाये करिने ।। जे जे कर्म करे छे ते
ने काई कर्म बंधन करतुं नथि अने ते तो भगवानना अक्षरधामने पामे छे ।। माटे जेने सर्वे बंधन थकि छुटवुं होय तेने
देहना अहंकारनो ने देहना सुखनी ईछानो त्याग करिने अखंड अविनाशि ने सूद्ध चेतन आत्मा तेने पोतानुं स्व-

रुपजाणिने प्रत्यक्ष पोताने मल्या जे भगवानने भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागि संत तेनो दृढ आसरो करिने
तेनी आज्ञामां मन कर्म वचने वरतवुं अने एम जे वरतशे तेने कोई जातनुं बंधन थशे नहिं ने ते अक्षरधामने पामशे ॥

॥ ॥इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥

॥ ॥ संवत १९ ओगणिसें २१ एकविसना श्रावण वदि ८ अष्टमिने दिन स महाराज श्री हरिकृष्ण भ
गवान गाम श्री पीपलि मध्ये पोताना मंदिरमां आथमणा बारनी मेडिनी ओसरिमां हिंडोलाखाट उपर विराजमान थया हता
ने सर्वे कसुंबल सोनेरि वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ ने कंठमां पुष्पना हार धारण कर्या हता ने पाघमां डाबि कोरे फूलनो तोरो
लटकतो धारण कर्यो हतो ॥ ने कान उपर गुच्छ धारण कर्या हता ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी
आगल साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति पछे संध्या आरति थया केडे महाराज बोल्या जे सर्वेने
एक प्रश्न पुछियें छियें जे जिव जे ते जन्म मृत्युने पामे छे । एवो जे अहंकार ते वधे घटे छे के वधतो घटतो नथि ॥ अथवा टले-
छे के टलतो नथि ॥ अथवा टल्यो होय तेनां शां लक्षण ने ते शे उपाये करिने टले छे ॥ तेने आवडे ते उत्तर करो पछे तेनो
उत्तर कोईथी थयो नहिं ॥ त्यारे महाराज बोल्या जे ल्यो अमे एनो उत्तर करियें जे कुसंगने जोगे करिने अहंकार वृद्धि पामे-
छे ॥ अने सत्संगने जोगे करीने घटि जाय छे ॥ पण मूलमांथी अहंकार टलवो घणो कठण छे केम के मुक्त थयो होय ने का
म लोभादिकनी वासना टलि गई होय ने सर्वे संसारनो तथा पंचविषयनो सर्वे प्रकारे त्याग कर्यो होय ने केवल एक भग
वाननी निष्काम भावने नवधा भक्ति करतो होय तो पण तेने देहनो अहंकार रहे छे ने देहना अहंकार विना देहनुं रक्ष
ण थाय नहिं ॥ ने रक्षण न करे तो देह रहे पण नहिं ॥ अने देह पडि जाय तो भगवाननी भक्ति करवि ने आत्यंतिक ज्ञान पाम
वुं ॥ ते केम ज्ञान देह विना पमाय ॥ ने भगवाननी भक्ति पण देह विना थाय नहिं ॥ माटे एम समजिने मुक्त कहेवाता
होय तेने पण देहनो अहंकार रहि जाय छे ने ज्यां सुधि ज्ञान भक्तिनो उपयोगि देह छे एम हेतु मानीने अवश्य घटे तेट

स्युं पणरक्षणकोरेछे तेनेदेहनोअहंकार कोईकालेटलतो नथि ।।अनेदेहनोअहंकारछे त्यांसुधि जन्ममरणपणटलेनहिं
अनेदेहनुंरक्षण मुदलनकरे नेदेहने पाडिनाखेने ज्ञानमांअधूरुं होयतो पण जन्ममरणटलतुंनथि माटेदेहनोअहंकार
तोमुक्तथयोहोय तेनेपण टालवो घणोकठणछे अनेज्यांसुधीदेहनोअहंकार रंचमात्रहोय त्यांसुधिसर्वे मायाउभिछे
जेमझाडसुकाईगयुं होय पणतेनुंबिज छे तेतो बिजमाथिपाछुंवृक्षथशे तेमकामक्रोधादिकदोष तथाशब्दादिक
विषयटलिगयाहोय पणजो ज्ञानभक्तिनोउपयोगिजाणिने तेनो गुणमानीने देहनुंरक्षण करे तोतेने सर्वमायाना बि
जरूपएबोजे देहनोअहंकार तेटलतोनथि नेतेने पाछोजन्म धरावेछे केमके तेदेहने विषेतेणे गुण मान्यो माटेजे
नोगुण मनाय तेनोअहंकार टलेनहिं ।।अनेजेनेविषेगुणबुद्धि होयने तेनारक्षणनुंकोईकरखंडन करे तो तेनो पण अव
गुणजरूरआवे माटे एवातसमजवी घणिकठणछे केमके आत्मारूपथयोहोय तेने पणदेहनुंरक्षणतो करवुंजोईये
अनेरक्षणकरे त्यारेअहंकार विना रक्षणथतुंनथि हवेएबोजेअहंकार तेनेजेटाले तेनेजन्म मरणटलेछे ।।अनेते
अक्षरधामनेपामेछे ।।माटे तेदेहनाअहंकारने टालवानो एकउपायछे ।।तेशोउपाय छे ।।तोजेने ते देहने विषे अतिशे
शत्रुभावथाय नेआदेहनेजाणिने पछी तेने ज्ञानभक्तिनो उपयोगि छे एमजाणीनेशत्रुभाव राखतां थकां घटे तेटलुं
अन्नवस्त्रादिके करिने देहनुं रक्षण करे पणतेनोगुण मानवोनहिं ।।जेमएक शाहुकार हतो तेनो दिकरो बीस बरस
नो हतो तेनेचोरे मारिनाख्यो ।।पछे ते चोरने राजाये बेडियो मांनाख्योने कोटडीमां पूर्यो ।।पछे तेशाहुकार पण कांई
क राजाना वांकमां आव्योने तेने पण पगमां बेडियो नाखिने ते चोरभेगो कोटडिमां पूर्यो पछे ते शाहुकारतो जाते
सुखवालुं माणसने कोई दिवस भार उपाडेलो नहिं ते दिसाए जवुं पडे त्यारे बेडि उपाडिशके नहिं त्यारे तेचोरने कह्युं के
मारि बेडि उपाडिश त्यारे तेणे कह्युं के बेडि तो उपाडुं पण तमुने ताराखावामांथि बेकरखावा आप्य तो उपाडुं पछे तेशा
हुकारे पोताना माणस भात आपवा आवतां हतां तेने कह्युं के बेकरखायानुं वधारे लावजो ।।आ चोरने मारे आपवुं

छे ॥ पछे ते शाहुकार तेने खावानुं आपे ने बेडि उपडावे ॥ पछे ते वात तेने शाहुकारना घरने माणसे जाणि त्यारे ते एम कहेवा ला-
ग्यां जे ते चोर तो आपणा दिकराने मारिनाख्यो छे ने तेने शुं करवा खावा आपता हशो ॥ अने ते शाहुकार पण एम जाणे छे जे
ते चोर खरेखरो मारो पाको शत्रु छे एम शत्रुभाव राखतो थको पण पोतानी बेडि उपडाववा सारु तेने खावानुं आपतो
अने ते चोरने कोईक मारि नाखे अथवा तेने कोई कदुःख दे तो ते मां ते शाहुकार राजि थाय ॥ पण तेना उपर दया आवे न
हिं ॥ तेम जेने देहने विषे शत्रुभाव रहे तेने देहनो अहंकार टले छे केमके देह छे ते ज जिवने जन्ममरणने चोराशिमां र
खडावनारो छे ने महाकष्टने पमाडनारो छे ॥ एम जाणिने देहने विषे अतिशे शत्रुभाव राखिने पछे बेडि उपाडवा सारु
एटले ज्ञानभक्तिने सिद्ध करवा सारु ते देहने अन्नवस्त्रादिक अवश्य घटे तेटलुं आपवुं पण तेनो गुण न मानवो ॥ अने जो
ज्ञानभक्तिनो उपयोगि छे एम जाणिने देहनो गुण मानशे तो ते देहनो अहंकार कोटि काले टलेनहिं ॥ अथवा शत्रु-
भाव विना बिजां कोटि साधन करे पण टलवानो नथि ते सारुं जे भगवानना भक्त होय ने जेने आने आ जन्मे देहना अ
हंकारनो त्याग करिने अक्षरधामने पामवुं होय तेने तो देहने विषे सदाय शत्रुभाव राखवो ने शत्रुभाव राखतां थकां
शाहुकारनी पेठे अन्नवस्त्रादिक घटे तेटलुं आपवुं ॥ एम समजे तेने देहनो अहंकार टलि जाय छे ॥ अने जेने देहने
विषे शत्रुभाव थयो होय तेना देहने कांईक रोगादिक कष्ट आवि पडे तो ते मां राजि थाय ॥ तथा तेने भगवान के भग-
वानना संत कांईक भक्ति सेवामां कारसो आपे तथा व्रत उपवासादिक तप कराविनी आज्ञा करे तो तेमां घणो राजि
थाय त्यारे तेने एम जाणवुं जे देहनो अहंकार टल्यो ॥ ते उपर निष्कुलानंदस्वामिनुं किर्तन छे जे ॥ ॥
दुःखि देखे आ देहने ॥ रहे राजि ते मन जि ॥ अनरथनुं रे आगार छे ॥ जाणि न करे जतन जि ॥ दृढ बल धारि ए वैरागने ॥
॥१॥ ॥ माटे जेने देहने विषे शत्रुभाव होय ने जेने देहनो अहंकार टल्यो होय तेने सहेजे देहनो अनादर
वर्त्या करे ॥ एज अहंकार टल्यानुं एंधाण छे ॥ एम समजिने देहना अहंकारनो त्याग करे ते बुद्धिवाला छे ने ते

विनानासरवेसुरवछे नेआत्मघातिछे ॥ ॥इतिश्रीसुरवसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥

श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत१९ओगणिसें २१एकविसना श्रावणवदि १४ चौदसनेदिवस महाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीपीपलिमध्येपोतानामंदिरमां आथमणे बारमेडिनी॥ ओसरीमां हिंडोलाखाटउपर विराजमान थया हता नेसर्वेजरियानीवस्त्र धारण कर्यां हतां नेगुलाबना पुष्पनां आभूषण सर्वेअंगमांधारणकर्यांहता ॥अनेपोताना मूखारविंदनी आगळ साधुतथा घणाकहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठिहति।।नेसंध्याआर्ति थया पछि महाराजबोल्याजे सर्वे साधुतथा सर्वे हरिभक्त नेअमे एकप्रश्न पुछियेछियेजे केटलाकभगवानना भक्त पंचविषयनो त्यागकरिने वरततोहोय तो पण तेने विषयनो संबंध थाय त्यारे तेमां बंधाईजायछे॥ माटेतेनेशोकसरहशे॥ अनेकेटलाक विषयना संबंधमां रह्याथका पण विषयमां बंधातानथिनेतेनेदेहमुकिनेफरिजन्मधरवो पडतोनथिनेतेतोअक्षरधा मनेपामे छे ते पूर्वेजनकादिकराज्यमां रह्या तोपण बंधन नेपाम्यानहिं॥ मारेते केथि समजणे करिनेबंधननेपाम्यानहिं ॥अनेभरथादिकराज्यवैभवादिकपंचविषयनोत्यागकरिनेवनमांगयाहता तोपण तेनेमृगना बच्चामां स्नेहथयो नेतेणे करिने॥ तेनेजन्मधरवो पड्योमाटे तेनीजातनी समजणहशे तेकहोपछे तेनोउत्तर साधुतथाहरिभक्ते करवामांड्योपण थयो नहिं ।।पछेमहाराजबोल्याजेएनो उत्तर एमछेजेचारप्रकारना अभावछे॥ तेमांत्रणप्रकारनाअभावेकरिने विषयनो त्यागकर्योहोय तेनेज्यारेविषयनोसंबंध थाय त्यारे ते विषयमांबंधायछे अनेजेणेचारेप्रकारना अभावनेजाणिने अंतरमांथी त्यागकर्योहोय ते कोई विषयमांबंधायनहिं॥ तेचारप्रकारनाअभावते किया तोएकतो प्रागभाव ने बिजोअन्योअन्याभाव॥ नेत्रिजोप्रध्वंसाभाव अनेचोथो अत्यंताभाव ॥हवेप्रागभावतेशुं॥ तोजेम माटिमां घडोरह्यो छे॥ तेमाटिदेखाय छे पण घडोनथिदेखातो माटे घडानोअभाव छे॥ पण ज्यारेमाटिमांथी घडो थयो त्यारे पाछो भावथयो तेम-

प्राकृतप्रलयने विषे जगतनो अभाव छे ने मायाने विषे जगत रह्युं छे ॥ ते ज्यारे प्राकृत प्रलयने अंते पाछि उत्पत्ति थशे
त्यारे पाछो जगतनो भाव थशे तेनुं नाम प्रागभाव कहेवाय ॥ अने अंन्योअंन्यभाव ते शुं तो जेम घडो ते लुगडुं नहिं ने
लुगडुं ते घडो नहिं तेनुं नाम अंन्योअंन्याभाव कहेवाय ॥ तेम आत्मा ते देह नहिं ॥ अने देह ते आत्मा नहिं ॥ ते अंन्योअं
न्याभाव कहेवाय छे ॥ ते अन्योअन्याभावना ज्ञाने करिने विषयनो त्याग कर्यो होय तेने पाछो विषयना संबंधे क-
रिने बंधन थाय छे ॥ अने त्रिजो प्रध्वंसाभाव छे ते प्रध्वंसाभाव ते शुं तो जेम कोईने दिकरो होय ने ते मरि जाय त्यारे
तेने दिकरानी पछी आववानी तो आशा नहिं पण हतो ते नाश पामि गयो माटे तेनो शोक थाय खरो ॥ तेनुं नाम
प्रध्वंसाभाव कहेवाय तेम जक्त हतुं ते प्राकृत प्रलयने विषे नास पामि गयुं पण हतुं ते नाश पाम्युं माटे ते संभ
रे खरुं ने तेनी मूलमांथि वासना टले नहिं ॥ अने प्रलय होय त्यांसुधि तो तेने अभाव रहे पण ज्यारे पाछि उत्पत्ति था
य त्यारे ते मां ते बंधाणा विना रहे नहिं ॥ माटे एत्रण प्रकारना अभावे करिने जेणे पंच विषयनो त्याग कर्यो होय तेने पा-
छा विषय बंधन करे छे ॥ अने तेने जन्ममरण धरवो पडे छे ॥ तेम सर्व प्रकारे विषयनो त्याग करिने त्यागी थयो होय ॥
भेख लीधो होय वनमां एकलो रहेतो होय तो पण तेने जरुर जन्म धरवो पडे छे ॥ अने जेने चोथो अत्यंताभाव थयो होय ॥
ते कोई विषय भोगवे नहिं ॥ अने ते अत्यंताभाववालो भक्त जे ते सु जे तो त्यागि थयो होय ने सु जे तो ग्रहस्थाश्रममां
रह्यो होय पण ते विषयमां बंधाय नहिं ने तेने फरिने जन्म धरवो पडे नहिं ॥ हवे ते अत्यंताभाव ते शुं तो जेम ससलाना सिं
घडा तथा काचबाना रोम तेनो जेम अभाव छे तेम जेणे आत्यंतिक प्रलयने ज्ञाने करिने विषयनो त्याग कर्यो होय ॥
तेने कोई विषय बंधन करे नहि ते आत्यंतिक प्रलय ते शुं तो त्रणकालमां माया छे ज नहिं जेम झांझवाना जल तथा
स्वप्ननी श्रृष्टि ते वस्तुगते नथि तेम अत्यंताभावने विषे त्रणकालमां माया तथा जगत छे ज नहिं ॥ अने ते अत्यं-
ताभावना ज्ञानने पाम्यो होय ते कोई विषयमां बंधाय नहिं ॥ ने ते कोई विषयनो संबंध पण करे ज नहिं ॥ अने ते

सदाय विषय थकि असंगपणे वरते नेजे तेनो समागम करे तेना अंतरमां थि पण विषय नी वासनानां मूलियां काढि नाखे तेसदाय अखंड ब्रह्मस्थितिमां वरत्या करे नेतेने फरिने जन्म धरवो पडतो नथि ने ते तो अक्षरधामने विषे अखंड भगवाननी सेवा मां रहे छे ॥ अने ते अत्यंत भाव तुं जे ज्ञान ते जेने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना निरवासनीक संतमळे छे॥ तेनेज थाय छे ॥ पण ते विना थतुं नथि॥ ॥इति श्री मुख्य सिद्धांत समाप्तः॥ ॥

॥श्री हरिकृष्णायनमो नमः॥ ॥ संवत् १९ ओगणिसें ॥ २१॥ एक विसना मागसुर वदि ॥ ७॥

सातेमने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री भडियादमध्ये भक्त पटेल गणेश जरवमणने घेर आथमणे बार ओरडानी ओसरिमां विराजमान थयाहता ॥ ने सर्वे स्वेतवस्त्र धारण कर्यां हतां नेमुस्तके गुलाबिरंगनो फेंटो बांध्यो हतो ॥ अने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराई नेबेठि हति॥ पछे धर्मानंदस्वामिये प्रश्नपुछ्युं जे आ जगतमां बे प्रकारना जिव छे ते केटलाक दैविछे ने केटलाक आसुरि छे तेदैविने आसुरि केम थयाहशे॥ पछे महाराज बोल्या जे एकतो अनादिना आसुरि जिव छे ॥ तेतो कोई काले दैवि थयजनहिं॥ जेम लिंमडो ने मरचां ते कोई काले मिठां थायनहिं ॥ केमके तेनुं बिजजएवुं कडवुं ने तिखुं छे ॥ तेमजे अनादिना आसुरि जिवछे तेनां तो मरचांने लिंमडानी पेठे बिजज भुंडां छे ॥ जेम लिंमडाने ने मरचाने साकरनुं पाणि पाईये तो पण ते कडवां ने तिखां मटे नहिं ॥ तेम अनादिना जे आसुरि जिवछे तेनेगमे एटलुं सत्पुरुष ज्ञान आपे तो पण ते आसुर भाव मुके जनहिं अने वलि जेने काम लोभ स्वाद स्नेह ने मान तेने विषे जेटली जेटलि प्रीति हशे तेटलो तेटलो तेने विषे आसुर भाव छे अने जे दैविजिवछे ते तो प्रत्यक्ष भगवान तथा भगवानना एकांतिक संत तेनो आसरो करिने वासना टालिने मोक्षने पामे छे अने जे आसुरि जिवछे तेने तो सत्पुरुषनो समागम गमे जनहिं॥ जेम चोरने पुंन्यमनो चंद्रमा गमतो नथि॥ अने जे साहुकार होय तेने तो चंद्रमा अतीनो गमे छे तेम आसुरि जि

वने तो सत्पुरुषनो समागम दुःखरूप लागे छे केमके आसुरि जिवने तो चोरि छिनालि दारु माटि आदिक भुंडां पापकर्म करवां होय माटे आसुरिने सतपुरुषनो समागमके मगमे तेने तो सतपुरुष उलटा कालरुप भासे अने जे दैवि जिव होय तेने ज सतपुरुषनो समागम सारो लागे छे ॥ ने ते तो एम समजे जे आमारां अतिशे मोटां भाग्य जे अमने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संत मल्या ते महादुःख थकि मुकाव्या ॥ अने जो भगवानने भगवानना संत न मल्या होत तो गर्भवासनां तथा चोरासिनां महादुःख भोगववा पडत ॥ एम समजिने अतिशे कृतारथ मानिने अधर्मनो जे सर्ग काम क्रोध लोभ स्वाद स्नेह मान तेनो त्याग करिने धर्म ज्ञान वैराग भक्ति तेने सत्संगे करिने सिद्ध करिने पोताना आत्मानुं रुडुं करि ले छे तेने दैवि जिव जाणवा ॥ अने अधर्मनो त्याग नथि करता ने उलटो सत्पुरुषनो द्रोह करे छे तेने आसुरि जीव जाणवा ॥ पछे वलि धर्मानंदस्वामिए पुछ्युं जे हे महाराज आसुरि जिव होय ते दैवि थाय के न थाय पछे महाराज बोल्या जे जे अनादिना आसुरि जिव छे ॥ ते तो कोई काले दैवि थाय ज नहि अने जे असुरने संगे करिने आसुरभावने पाम्यो होय ते तो सत्पुरुषनो समागम करे तो दैवि थाय छे ॥ पछे वलि धर्मानंदस्वामिये कह्युं जे हे महाराज तमे एवा आसुरि जिव केम कर्या ॥ पछे महाराज बोल्या जे आ विश्व छे तेमां अनंत प्रकारनी सृष्टि छे ने तेमां सौ सौना गुण जुदा जुदा छे ॥ अने तेमां केटलुंक सारुं कहेवाय छे ॥ ने केटलुं नरसुं कहेवाय छे ॥ अने जो सर्व सारुं सारुं ज होय ने नरसुं न होय तो सारुं केम कहेवाय ॥ जे मलिं मडो कडवो छे तो साकर मिठि कहेवाय छे तेम जो आसुरि जिव छे तो दैवि कहेवाय छे ॥ ने तेनां वखाण थाय छे ॥ अने तेनी किर्तिं संसारमां लखाय छे ॥ माटे दैविने आसुरि बे भेगा उपजाव्या छे ॥ जेम कडवुं चिभडुं मिठुं चिभडुं एक खेतरमां भेगां थाय छे ॥ तेम दैविने आसुरि बेय भेगा थया छे पछे अखंडानंदस्वामिये प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज भगवानना भक्तने विषे अनंत गुण रह्या छे ॥ पण तेमां केवो गुण एक एवो श्रेष्ट छे जे एक गुणे करिने सर्वे गुण ने शोभाडे पछे महाराज बोल्या जे दया मित्रने विनय ए गुण सर्वे

मांश्रेष्ट छे॥ अने सर्वे गुणने शोभाडे एवो एगुण छे अने सर्वेने सुख उपजावे एवा एगुण छे॥ ते मांद याते श्वुं तो पोताथीन्ना
नो होय तेना उपर दया राखिने तेना दोषमुकाविने तेने रुडा गुण शिखववा ॥अने बिजा सर्व जिव प्राणिमात्र उपर यथा
योग्य जेम घटे तेम दयाराखवि ॥अने मित्राई जे पोताना बरोबरीया होय तेनी साथे मित्रभाव राखिने पोतानुं ने मि-
त्रनुं जेम सारुं थाय ते क्रियाकरवि॥ अने ते वे मारगे चालवुं॥ पण पोतानुं के बरोबरियानुं भुंडुं थाय एम न करवुं ॥
अने जे पोताथि मोटो होय एवा जे सद्गुरु धर्मवाळा संत तेनो विनय करवो ॥अने तेनी महात्मे सहित सेवा करवि॥ अ
ने तेनी पासे थी पोताना आत्मानुं रुडुं थाय एवा गुण शिखवा ॥एवि रिते दया मित्रने विनयरूप गुण छे ते सर्वे गुणकरतां
श्रेष्ट छे ने सर्वे गुणने शोभाडे एवो गुण छे। अने एगुण न होय ने बिजा सु जे एटला गुण होय पण एके गुण सोभे नहिं
॥अने दया मित्र ने विनय जेने न होय तेना उपर सतपुरुषनी कृपा पण थति नथि ने सतपुरुषनी कृपा विना जिवनुं क
ल्याण पण थाय नहिं ।।ते सारुं भगवानना भक्तने एगुण जरुर शिखवो॥ ॥इति श्रीसुख सिद्धां
त समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः॥ ॥संवत् १९ ओगणिसें २१ एकविस-
ना मागशर सुदि ८ अष्टमिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री भडियाद मध्ये भक्तपटेलगणेशा-
लखमणने घेर आथमणे बारओरडानी ओसरिमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता ॥ अने सर्वे स्वेत वस्त्र धा
रण कर्यां हतां ॥अने मुस्तके कसुंबल तारा लो फेंटो बांध्यो हतो ने कंकुनी चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारवि
दनी आगल साधु तथा हरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हति ।पछे महाराजे अक्षरमुक्तानंद स्वामिने प्रश्न पुछ्युं
जे जिव साकार छे के निराकार छे ॥पछे अक्षरमुक्तानंद स्वामिए कह्युं जे जिव तो साकार छे ॥पछे महाराजे पुछ्युं
के जिवनो केवो आकार छे।पछे अक्षरमुक्तानंद स्वामिये कह्युं के जिवनो दिव्य आकार छे।।ते माई क दृष्टिये
करिने जोवामां न थि आवतो॥ पछे महाराजे धर्मानंद स्वामिने पुछ्युं के तमे शुं कहो छो जिव साकार छे के निराकार

छे ।।पछे धर्मानंदस्वामिए कह्युं जे जिववस्तुगतेतो निराकारछे ।।अने जिवने वासनाए करिने माईकदेह बंधा-
णो छे।। पछे जिवने प्रत्यक्षमा रोसंबंधथाय त्यारे माईकदेहनो नासथईने दिव्यआकारने जिवपामे छे।।पछे महा
राजे कह्युं के तमारा बेयनो उत्तरसाचो छे ॥ केमके अक्षर मुक्तानंद स्वामिये जिवनेसाकार कह्यो ते मुक्त दशानी
स्थितिमां बोल्या छे।। अनेजिवनेज्यां सुधि मायानो संबंधछे त्यां सुधि जिव वस्तुगते निराकारछे अनेपरमेश्वरए-
ने माईकइंद्रियो अंतःकरण सरजिआपेछे त्यारे जिवकाने करिने साभलिशके त्वचाये स्पर्शीक रिशके नेत्रे क-
रिने रुपजोईशके।।इत्यादिक इंद्रियो अंतःकरणे करिने क्रीयाकरवाने समरथथाय छे पणते विना जिव कांई क
रवाने समरथनथि।।केमके जोआंखो फुटि जाय नेदेहमां जिवहोयतो पण रुपजोवाने समरथथायनहिं।।ते
म आंखनुं काम कानेकरिने थायनहिं ने कानफुटिजायतो आंखे करिने सभलायनहिं एधिरिते जिवपराधि
नछे।। पण जिवपोतानी मेले स्वतंत्रनथि ।। माटे जिव निराकारछे ।। ने वस्तुगते चेतन छे अनेज्यारे जिवनेपरमेश्वरना
स्वरुपनुं ज्ञानथायछे त्यारे ते जिवने मायानोआकारटलिने दिव्य स्वरूपने पामेछे।।अने परमेश्वरना स्वरुपनुं ज्ञान तोपरमे
श्वरने तेना संत पोते जिवनी उपर कृपा करिने पोताना स्वरूपनुं ज्ञानकरावेत्यारे थायछे।।अने पोताने संबंधे करिनेई-
द्रियो अंतःकरणमांथि जिवने मायानो भाव टलिजायछे अनेज्यारे माईक भावटलिजायछे त्यारे माईक शब्दसांभ
लवामां तेनेआशक्ति रहेतीनथि अने भगवानना स्वरुपने जिवजाणे छे त्यारे माईक रुपजोवानी जिषने ईछा रहे
तीनथि।।एबिरिते दशइंद्रियोने चार अंतःकरण ते जैते भगवानना संबंधने पामिने भगवान रुपथई जाय छे माटे भ
गवानथकिज भगवाननुं ज्ञान थाय छे अनेज्यारे भगवाननुं ज्ञानथायछे त्यारेते जिवपूरण कामथायछे अनेतेनी
वासना बलिजाय छे।।ने ब्रह्म रुपथायछे अने भगवानने ध्याने करिने जिवनुं पण दिव्य स्वरुप बंधाय छे।।पछे गा
मपिपलीनाकालेभक्ते प्रश्न पुछ्युं जेआदेहने विषे केई रिते जिवरह्यो छे अने जिवने विषे भगवान केवि रितेरह्याछे

॥पछेमहाराजबोल्याजेदेहमांचोविसतत्वछे अने पचिसमोमांहे जिवात्मारह्यो छे ते तत्व जडछे नेतेने विषे जिवजेते अहंम-
मताएकरिनेरह्यो छे॥ अनेजिवनीसत्तायेकरिनेदेहजे तेचालेहालेछे॥ अनेएजिवने विषे भगवानसाक्षिरुपेरह्या छे॥
ते जिव जेवांजेवांकर्म करे छे तेवांतेवां करमना फलने भगवानपमाडे छे ॥ तेजिवज्यारे सत्वगुणि कर्मकरेछे तेनुं फलदेव
लोकमां भोगवावे छे॥ अनेरजोगुणीकर्मकरे छे तेनुं फल मृत्यु लोकमां भोगवावे छे॥ अने तमोगुणिकर्म करे छे तेनुं
फलअधोगतिजे नर्क तेमां भोगवावेछे॥ एविरिते जिवमां भगवान साक्षिरुपे रह्या छे पछे वलि काला भक्ते पुछ्युंजे
जिवनरकमांजाय छे त्यारे परमेश्वर जिवमांछे केनथि॥ पछे महाराजे कह्युंके जिवमां भगवान् छे॥पछि काले भक्ते
पुछ्युंजे जिवने तो नरक रवावुं पडेछे त्यारे परमेश्वरनुं केमसमजवुं॥ पछेमहाराजे कह्युंजे रवावुं छे ए तो प्राण वायुनोध
र्मछे॥ ने आत्मा तो कांई रवातोपीतो नथि॥ नेए तो सदाय स्वरुपछे ने असंगि छे॥ अने परमात्मा तो ते थिपर छे नेस-
दाय अक्षरधाममांजरह्याछे अने अक्षर मांरह्याथका जिवजिव प्रत्ये साक्षिरुपेरह्या छे जेम सूर्य छे तेमूर्त्तिमान तो पो-
तानामंडलने विषे रह्यो छे॥ अनेप्रकाशरुपे सर्वे जिवना नेत्रनेत्र प्रत्येरहेछे ॥ तेनेत्रनेदुःखेकरिने सूर्यने दुःखन-
थिथतुं॥ नेनेत्रने नाशे सूर्यनोनाश नथि थतो॥ तेम सूर्यनीपेरे भगवान पण भगवान पण अक्षर धामने विषेरह्याथ-
का सर्व जिवप्राणिमात्रमां साक्षिरुपेरह्याछे॥ ते जिवने दुःखेकरिने परमेश्वर नेदुःखनथि॥ अने जिवनेजन्ममर
णेकरिने परमेश्वरने जन्ममरण नथिथतुं॥ अने परमेश्वर तो सदाय मायापर छे ने सदाय अक्षरधाममांजरह्याछे॥ जेम
सूर्यनोप्रकाश सूर्य भेगोज छे॥ तेमसूर्तिमानथका सदाय अक्षरधाम मां छे॥ अने अन्वयपणे करिने सर्वे विश्वमां
छे॥ अने अन्वयव्यतिरेकएकजरुप छे॥ ॥इति श्री मुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥
श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत् १९ओगणिसे २१ एकविसना मागशर शुदि ९ नवमिने
दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री भडियाद मध्ये पटेल मेघा दुदाने घेर उगमणे वारणे ओरडानी ओस-

रीमांदोलियाउपरविराजमान थयाहतांश्रनेसर्वेजरियानीवस्त्रधारणकर्याहतांश्रनेकंठमांपुष्पनाहारधारणकर्याहतानेललाटनेविषेकंकुनोचांदलो
कर्योहतो नेपोतानामुखारविंदनी आगल साधुतथा घणाक हरि भक्तनी सभाभराईनेबेठाहता पछे विरजिभक्ते
प्रश्नपुछ्युंजे हे महाराज भगवानना धामने पाम्या जेमुक्त तेफरिने जन्म धरेछे केनथिधरता ॥ पछे महाराजबोल्या
जे धर्मज्ञानवैरागनेमहात्मेसहित प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति सिद्ध करिनेआत्यंतिक ज्ञानपामिने ब्रह्मरुपथईने
अक्षरधामने पाम्या जेमुक्त ॥ तेतो कोईकालेजन्मधरता नथि ते गितामां श्रीकृष्णभगवाने कह्युंछे जे ॥ ॥
नतद्भासयते सूर्यो ॥ नशशांको न पावकः ॥ यद्गत्वा ननिवर्तंते तद्धाम परमं मम ॥ ॥एश्लोकमां एम क
ह्युंछे जेजे मारा धामने सूर्य चंद्र ने अग्नि ते प्रकाशनथीकरिशकतां केहतां स्वप्रकाश छे ॥ एवुंजेअक्षरधामतेनेजे मुक्त
पामे छे ॥ ते फेरपाछो जनमनेनथि धरतो ॥ माटेप्रत्यक्ष भगवान थकि ज्ञान पामिने निरवासनीक थईने जे भगवान
ना अक्षर धाम नेपामेछे तेपाछाजन्म ने नथिधरता ॥ पछे वलि विरजि भक्ते पुछ्युं जे हे महाराज एम कहे छेजे श्रामुक्त
नेतो भगवान भेगा तेडि आव्याछे ॥ तेनुं केम हशे ॥ पछे महाराज बोल्याजे ज्यारे ज्यारे भगवान जीवोना कल्याण
ने अर्थे कृपाकरिने पृथ्वि उपर मनुष्यदेहनुं धारण करे छे त्यारे पोतानेद्वारणे आव्याजे जिव तेनेज्ञान आपे छे ॥ तेमां चार प्रकार
नाजिवछे ॥ मुक्त मुमुक्षु विषयिने पामर ॥ तेमांजे मुक्तनेमुमुक्षु छे ते तो प्रत्यक्ष भगवान थकि धर्मज्ञानवैरागनेभक्तिसि
ध करिने निरवासनीक थईने आत्यंतिक मोक्षने पामेछे ॥ अनेते तोकोईकाले पृथ्वि उपर जन्मधरता नथि ॥ अनेजेविषयि
नेपामर छे ॥ ते प्रत्यक्ष भगवानने द्वारणे आव्याहोय तोपण तेनेततकाल आत्यंतिक ज्ञान थतुंनथि ने आत्यंतिक ज्ञानवि
ना निरवासनीक थायनहिं ॥ पछे भगवानने भजतां भजतां जेएनेएदेहे करिने निरवासनीक थायते तो अक्षरधामनेपा
मे छे ॥ अनेजेनेवासनाटालतांटालतां थोडिघणिवासनारहिजाय नेतेनोदेह पडे तो ते अक्षर धामनेनपामे ॥ अनेते
विनानां बिजा भगवानना धामजे बद्रिकाश्रम स्वेतद्विप तथा वैकुंठादिक घणाकछे तेनेपामे छे नेतेपण सर्वे मुक्त

कहेवायछे।। पछे तेमुक्तने ज्यारे भगवान फरिने पृथ्विउपर पधारे छे त्यारे तेने भगवान जन्म धरावे छे।। नेतेमुक्तने भगवा-
न भेगा ला व्या एम कहे वाय छे ।। पछे वलि भक्तविरजिये प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज भगवान पृथ्विउपर ज्यारे पधारे छे।।
त्यारे अक्षरधाममां रहे छे के नथि रहेता पछे महाराज बोल्याजे भगवानतो सदाय अखंड अक्षर धाममांज रहे छे।। पण
ज्यारे अक्षर धामनो त्याग नथि करता अने भगवान छे ते तो सत्यसंकल्पी छे ते अक्षरधाममां रह्याथका एमसंकल्पक
रे छे जे पृथ्विने विषे मनुष्य स्वरूपे देखाउं।। तो ते भगवान अक्षर धाममां रह्याथका पृथ्विउपर मनुष्यजेवा देखाय छे।।ते
ज्यारे ज्यारे पृथ्विउपर एकांतिक धर्म नो लोप थायछे ।। त्यारे ते धर्म नास्थापनने अर्थे ने अनंतजन्म थया भगवाननी भक्ति
करता होय एवा जे मुक्त तेने आत्यंतिकमुक्ति आपवा सारुं वारंवार प्रगट थाय छे अने ते भगवान पोतानी ईछाये करि
ने अक्षर धाममां अखंड रह्याथका पृथ्विउपर मनुष्यना जेवा पोताना देहना भावजणावे छे।। तेजेम मनुष्यस्त्रि थकि
देह धरे छे ।। नेबालकजेम रुवे छे नेजेम बालक खायपियेने रमे तेम भगवानपण बालकनिपेठे पोताने विषे भावदेखाडे
छे।। अनेजेम मनुष्य जवांनथाय छे नेते नेजेम राग द्वेष पक्ष पात पारकुं पोतानुं हरखशोक ईत्यादिक जेम मनुष्यमां-
होयतेम भगवान पण राग द्वेषपक्षपात पारकुंपोतानुं हरखशोकादिक भावपोताने विषेजणावेछे ।।अनेजेम मनुष्य दे
ह मुकेछे।। तेम भगवानपण देहनो त्यागकरे छे।। एविरीतनीजे भगवाननी लिला तेने भगवानना एकांतिक निरवा-
सनीक साधु छे तेजाणे छे जे भगवानतो जन्म्याजनथि ने भगवान बालक जुवान वृद्ध थयानथि अने भगवानने प
रकुं पोतानुं हरखशोक ते छेजनहिं।। अने भगवानतो सदाय अक्षर धाममां अखंड विराजे छे अने अहिं पृथ्विउपर दे-
खायछे।। ते तो जिवोनीउपर कृपाकरिने पोताना सत्यसंकल्पे करिने दरशन आपे छे।। एम एकांतिक संतजाणे छे।।अ
ने वलि ब्रह्मरुप एवाजे साधु ते पण देहने जन्मे करिने जन्म नथि मानता।। अने देहने मरवे करिने मरवुं नथि मानता।।
एविरितेजेने भजने करिने ब्रह्मरुप थया एवाजे साधु तेने आववुंजवुं रहेतुं नथि तो तेना स्वामि एवाजे परमात्मापर

नस तेने विषे आवयुं जयुं केम होय ॥ एतो अक्षरधाममां रह्याथका अहिं देखाय छे॥ अने जे माईक द्रष्टिवाला छे ते भगवानने आव्यागया देखे छे॥ अने आजपण जेना जेवा जेवा भाव हशे ते ते रूपे अमने देखता हशे ॥ अने जे एकांतिक भक्त छे ते अमने दिव्यरूपे देखे छे॥ अने जे आसुरि जिव छे ते तो अमने मनुष्य ना रूपे देखे छे अने जे लोभिया छे ते अमने लोभि देखे छे ॥ अने जे कामि छे ते अमने कामि देखे छे ॥ अने जे स्वादिया छे ते अमने स्वादिया देखे छे ॥ अने जे मानि छे ते अमने मानि देखे छे॥ एवि रिते जेनो जेवो अंतरनो भाव तेते भावे अमने देखे छे॥ जेम चिंतामणि होय तेने विषे जे जे भावे संकल्प करे ते ते पदार्थने देखे ॥ तेम भगवान चिंतामणिरूप छे॥ तेने विषे जे जिव जेवो जेवो भाव राखे तेवा तेवा भगवान तेने देखाय छे॥ अने भगवान तो अक्षरधाममां दिव्य सिंहासन उपर अनंत कोटि मुक्ते विटाणाथका विराजमान छे॥

॥ ॥इति श्री मुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥

संवत् १९ ओगणिसें २१ एकविशना मागशर शुदि १० दशमिने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री गढडा मध्ये पटेल खोडाने घेर उगमणे बार ओरडानी ओसरिमां सांजने समे ढोलिया उपर विराजमान थया हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ॥ अने कंठमां पुष्पना हार शोभि रह्या हता ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा क हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति॥ पछे गाम धोलेराना शा गोबरभूते प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज अमे तो तमने भगवान जाणिये छिये ॥ अने रामकृष्णादिक अवतार थई गया छे तेने पण साक्षात्कार भगवान जाणिये छिये पण आ एक साखि छे तेनुं केम समजवुं॥ ॥जे साहेब सबिका बाप है॥ बेटा किसिका नहिं ॥ बेटा होकर अवतरे ॥ सो तो साहेब नहिं ॥१॥ ॥पछे महाराज बोल्या जे भगवान छे ते तो सर्वेना बाप छे॥ ने कोईना दिकरा थता जनथि ॥ अने एतो बे प्रकारना जिवनी श्रष्टि छे॥ ते मां एक दैवि जिवनी श्रष्टि छे ने एक आसुरि जिवनी सृष्टि छे ॥ ते आसुरि श्रष्टिवाला जिव छे ते जे ते भगवानने जन्म्या एम देखे छे अने बेलि कोई

ना दिकरा थया ने बाल जोबन वृद्ध दुबला जाडा काला धोला साजा मांदा ब्राह्मण क्षत्रि ईत्यादिक भेदे युक्त अस्म रिसृष्टि-
नाजिवछे॥ ते भगवानना अवतारने देखे छे। केम के तेनी द्रष्टिमां मायानुं आवरणछे॥ जेम जेनी आंखमां कमलो होय ते
धोलाने पण पिलुं देखे ने पिलाने पण पिलुं देखे॥ तेम जे नि द्रष्टिमां कमलारूप मायानुं आवरणछे ते पिलाव स्वरूपज
क्त नाजिवते तो मायामां छे तेने मायामां देखे छे॥ अने धोलाव स्वरूप भगवानना अवतार मायापर छे तेने पण कमलारू
प माईक द्रष्टिये करिने मायामां देखे छे॥ अने जे दैवि श्रष्टिना जिव छे तेनि तो निरावर्ण द्रष्टि छे ते तो भगवानने सदाय मा
यापर ने सर्वना कारण ने सर्वना आधार ने अजन्मा एम देखे छे पण भगवान जन्म्या के कोईना दिकरा थया एमन-
थि देखता॥ अने माईक द्रष्टिवाला भगवानने आव्या गया जन्म्या बाल जोबन वृद्ध जणाय छे ते तो नटनी रमतनी पे
ठे छे जेम नट होय ते पिछनुं पारेवुं मनुष्यने देखाडे छे पण ते पारेवुं पिछनुं थाय नहि केम के जो पिछनुं पारेवुं थतुं हो
य तो ते नट पोताना माणसोने शीद मरावे केम के जेम पिछमांथि पारेवुं करे तेम मनुष्यना कोई एक अंगमांथि मनु
ष्य करे पण ते तो थतुं नथि॥ अने पींछनुं पारेवुं पण खोटुं खोटुं देखाडे छे पण ते नटनी रमत कोई ना जाणवामां
आवती नथि॥ तो मायापर एवा जे परमात्मा भगवान तेनी योगमायाने कोण जाणि शके माटे भगवान तो सदाय
अक्षरधाममां रह्या थका दैवि श्रष्टि वाला एवा जे मुक्त ने मुमुक्षु जिव तेने आत्यंतिक ज्ञान आपिने निरावरण द्रष्टि
कराववा साठं पोतानी स्वईछाये करिने आ पृथ्वि उपर प्रगट थाय छे॥ पछे मुमुक्षुने मुक्त एवा जे दैवि श्रष्टि नाजिव
ते भगवानने शरणे आवे छे॥ तेने भगवान सांख्यने योगे करिने आत्यंतिक ज्ञान करावे छे॥ हवे तेमां प्रथम सांख्यनुं
ज्ञान कहे छे जे भगवान केवा छे॥ तो मायापर छे निरगुण छे अकर्ता छे नीराकार छे अद्वैत छे व्यापक छे अने ते
भगवान जे ते माईक एवा जे इंद्रियो अंतःकरण तेणे करिने जाणवामां आवे एवा नथि॥ ने अनुभवे करिने जणाय
एवा भगवान छे अने योगमां एम कह्युं छे जे एवा परात्पर भगवान ते जे ते आत्यंतिक प्रलयने अंते उत्पत्तिसमे पोते

एकदता तेअक्षरमां रह्या थका अक्षरमां प्रवेशकरिनेअक्षर द्वारेअनंतकोटि प्रकृतिपुरुषमां प्रवेशकरिने तेनेजाग्र
तकरे छे॥ अनेएकएक पुरुषजे ते अनंतकोटि प्रधानपुरुषमां प्रवेशकरिने तेनेउत्पन्नकरेछे नेप्रधानपुरुषथकिम
हतत्वथायछे॥ अने महतत्वथकि त्रणप्रकारनोअहंकार थायछे अनेत्रणप्रकारनाअहंकारथकिचोविसतत्वथा
यछे॥ अनेचोविस तत्वथकि वैराटरूप ब्रह्मांड थायछे अने ब्रह्मांडथकिदेवदैत्य मनुष्यपशुपक्षादिक नांशरिर थाय
छे॥ एवीरितेमायापरएवाजे भगवानतेजेतेअक्षर रुपेकरिनेअनंत कोटि ब्रह्मांडमां प्रवेशकरिने सर्वेनाआधार प्रे-
रक ने साक्षि रूपेअंतरजामि सर्वने विषेरह्याछे॥ अनेजेमउत्पत्ति थई तेमपाछोप्रलय थायछे त्यारे एक भगवानरहे
छे॥ ते भगवानथकिजप्रलय थाय छे॥ अने ए वासर्वेना कारण जे भगवान तेजे तेपोतानेशरणे आव्याजेवाजे दैवि
श्रष्टिना जिव तेने ज्ञानेकरिने प्रलयकरावे छे॥ जेजिवनादेहमां प्रथ्वीजलतेजवायु आकाशएवांजेअल्पपंच भूत
तेजे तेवैराटरूप ब्रह्मांडतेमां महत पंचभूतछे तेथकिउपज्यां छे॥ तेअल्प पंचभूतनेमहतपंच भूतमां लयकरिने पो-
तानाआत्माने तेथीजुदो समजिने द्रष्टारुप थईने एक वैराटनिद्रष्टिने पामवुं कहे तां सर्वत्र एक वैराट छे पणवैराट
विनाबिजुंकांई नथि॥ अनेएविरिते वैराट जे तेथकि जिवनो अहंकार उपज्यो छे तेने वैराटमांलय करिने वैरा
टने महतत्वमां लयकरवो॥ अने जिवनुं चित जे ते महतत्वथकि थयुंछे तेनेतेमां लयकरवुंनेमहतत्वनेप्रधान
पुरुषमां लयकरवुं अने जिवनुंमन छे तेप्रधानपुरुषथकि थयुं छे॥ तेने तेने विषे लयकरवुं अनेप्रधानपुरुष छे ते
मूलप्रकृति पुरुषथकि थयाछे तेनेतेमां लयकरवा॥ अने जिवनी बुद्धि छे तेमूलमायामां थि थई छे तेनेतेमां ल
यकरिने मूलप्रकृतिपुरुषछे तेअक्षरना कोकदेशमां थि थएलाछे तेने तेमां लयकरवा ने पोतानाआत्माने ने मू
लपुरुषना आत्माने एक करिने सर्वे मायाना भावने ज्ञानप्रलय करिने द्रष्टारुपथईने सर्वव्यापक ने सर्वाधारणो
एवुंजे अक्षरब्रह्म तेनीद्रष्टिने पामवुं अने अक्षरनीद्रष्टिने जे पांमे छे तेतोएकलुंचैतनमयदेखे छे॥ अनेतेनेमा

थानुं आवरण टलि जाय छे ।। ने तेनी द्रष्टिमां माया आवती नथि अने जे चैतननी द्रष्टिने पामे छे ।। ते तो सर्वेना आत्माने चेतन रूप देखे छे ।। अने एविरिते जेणे ज्ञान प्रलय कराविने चेतन द्रष्टि करांविए वा जे सद्गुरु रूप ज्ञानदाता ते जे परमात्मा परब्रह्म भगवान छे ।। अने सर्व व्यापक एवुं जे अक्षरब्रह्म तेना आधार छे अने तेना स्वरूपनुं पोताना चेतनरुप आत्माने विषे ध्यान करे छे तेने प्रत्यक्ष भगवान अखंड आत्माने विषे तेजोमय अखंड अक्षरधाम ने विषे देख्या करे छे माटे जेने भजने करिने तथा जे ने ज्ञाने करिने माया नुं आवरण टलि जाय छे एवा जे परमात्मा परमेश्वर तेणे जन्म धस्यो एम केम कलपाय अने जनम कर्मादिक मनुष्यभाव जणाय छे ते तो नटनी रमतनी पेठे छे ।। ते जे अणसमजु बालक होय ते नटनी रमत मां मोह पामे ।। पण जे समजु मनुष्य होय ते तो नटनी सर्वे रमतने खोटि जाणे छे ।। तेम भगवानना जन्मने कर्म ते तो नटनी मायानी पेठे देखाय छे ।। पण भगवान तो मनुष्य जेवा जणाय छे तो पण दिव्य मूर्तिज छे ।। अने भगवान कोईनादि करा नथी थता तथा भगवानने सगुं संबंधि नातजात कोई नथि अने भगवान तो सदाय अजन्मा छे ।। अने एवा जे भगवान तेने दरशन मात्रे करिने मायानुं आवरण टलि जाय छे ।। ने जन्म मरणना फेरा मटि जाय छे अने ब्रह्मरुप थईने अक्षरधामने पामे छे ।। अने फरिने तेने जन्म धरवो पडतो नथि ।। अने एवा ब्रह्मरूप मुक्त तेना स्वामि जे परब्रह्म परमात्मा भगवान तेना जन्मने चरित्र ते तो सर्वे दिव्य छे ने अनंत जिवोना कल्याणने अर्थे छे ।। ।। ईति श्री मुख सिध्धांत समाप्तः ।। ।। श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ।। ।। संवत् १९ ओगणिसे ।। २१ ।। एकविसना मागशर शुदि ।। १२ ।। द्वादशिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री भडियाद मध्ये पटेल ल्लाधाने घेर ढोलिया उपर बिराजमान थया हता ।। अने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कस्यां हतां अने कंठमां पुष्पना हार धारण कस्या हता ने पाघमां फूलना तोरा लटकता हता ने बेका न उपर गुछ खोस्या हता अने बेहाथने विषे पुष्पना बाजुने गजरा धारण कस्या हता ने कंकुनो चांदलो कस्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा क हरिभक्तनी सभा भराईने

बेठिहति॥ पछे गामचुडाना हरिभक्त भटनारण जिये महाराजनेहाथजोडिनेकह्युं जे तमारी मूर्ति अंतरमां थिविसरे नहिं
नेअखंड सांभरयाकरे तेनोशोउपाय छे॥ पछे महाराजबोल्याजे संतने समागमे करिने भगवाननोमहिमासमजे तेने
अंतरमां थि मूर्त्ति विसरेनहिं॥ केमकेधनदोलत स्त्रि छोकरां राजपाट आदिक जे चौद लोकनुं स्रुख छे तेने भगवानना
धामनास्रुखआगल काग विष्टातुल्य कह्युं छे॥ माटे भगवाननो महिमा जो समजाय तो ते भगवानने विषे सेहेजे ज वग
रसाविच विरह्या करे जेम कोईक लोभियो होयने तेणे द्रव्यने प्रथ्वीमां दाट्युं होय तो तेनी वर्ति ते द्रव्यमां अखंड रह्या
करे तेम भगवानने विषे महात्मे सहित प्रीति थाय तो तेने भगवानविना बिजुं कांई सांभरे नहिं ने ते निरखंडवृति भ-
गवानमां रह्या करे अने भगवान विना बिजे वरति जाय छे तो तेनी समजणमां कचास छे ते कचासने टालवा सारु मनक्र
मवचने करिने संतनो समागम करे तो तेनी कचास सर्वे मटि जाय छे अने भगवाननी मूर्ति तेना अंतरमां निवास क
रिने रहे॥ जेम तमारा गामना केशव जि तेणे जो मनक्रमवचने सत्संग कर्यो तो तेने महात्मज्ञाने सहीत प्रत्यक्ष भग
वाननास्वरूपनो निश्चय थयो ने तेहवे भगवान विना बिजुं कांई जसां भरतुं नथि॥ अने वगर राखि भगवानमां अखं
डवर्ति रह्या करे छे नेमहाब्रह्मदशाने पामि गया छे तेमजे जे पोताना आत्माना मोक्षनो रखपराखिने सत्संग करे तेने
पण भगवानना स्वरूपनी महात्मे सहित निश्चय थाय ने तेने भगवाननी मूर्ति अंतरमां थि विसरे नहिं॥ ॥
इतिश्रीमुख्यसिध्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृस्नायनमोनमः॥ ॥संवत् १९
ओगणिसें २१ एकविसना मागशर शुदि १३ तेरशने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्रीपिपलीमध्ये व्यास दलुनेघे
र आथमणे बारओरडानी ओसरिमां गादितकिया नरवाविने ढोलिया उपर विराजमान थया हता ने सर्वे कसकलवस्त्र धारण
कर्यां हतां॥ ने पोतानामुखारविंदनी आगल साधुतथा घणा कहरिभक्तनी सभाभराईने बेठिहति॥ पछे गाम बलदाणाना
पीताम्बर मामे प्रश्नपुछ्युं जे हे महाराज आजगतनो फंद जिवने वलग्यो छे ते केम छुटे ते कहो पछे महाराज बोल्याजे ए-

कंइ थकीजेनेमुकावानीइछाहोय तेनेएमविचारकरवोजे आमनुष्यदेहरुपि मुडि परमेश्वरे आपि छे ॥ तेअतिघ्नोभा
राउपरकृपाकरिने आपि छे ॥ केमके जिवनेमाथेजन्ममरणरुभयासनेचोराशि फरवी तेरुपिमहाकष्टछे तेकष्टनेटाल
वासारु जो मनुष्यदेहरुपि मुडिये करिने सत्पुरुषनो संग करे ने तेथकि ज्ञानपामिनेकामलोभस्वादस्नेहमान तेनो
त्यागकरे तोते जिवनुंकल्याणथाय नेतेनेमांथेथिकष्टमात्रटलिजाय नेमहासुखियो जिवथाय अने भगवाननीए
कांतिक भक्तिकरिने निरवासनीकथईने भगवानना अक्षरधामने पामे अनेजो ते मनुष्यदेहरुपिमुडिये करिनेस
त्पुरुषनो समागमतो नकरे नेकामलोभादिकमां प्रवर्ते तो तेदेहनीआवरदारुपिमुडिखुटे त्यारे मरिने लखचो
राशिमां जईनेकुतरागधेडा शिकए वाघणाक भूंडाभूंडा अवतार पामिनेमहाकष्टने भोगवेजेमकोईक रांकवा
णियो होय ने तेने कोईक भारेशाहुकार मेहेरबानी करिनेदसविसहजार रुपैयानीमुडि आपीने तेने कहे जेत
माथिहजार बेहजार तारा छोकरानेआपजे ने बाकि सुडिलेईने परदेशमांवेपार करवाजजे ॥ पछे ते वाणियो
परदेशमांजईने वेपारकरे तो कमाणीकरिने पोते लखेशरिथाय नेदालिद्रपणुंमटिने साहुकार कहेवाय नेसु
खनेपामे ॥ अनेजो ते मुडिने कुफेलमां खरचे नेसारां सारां खावानां करावीने पोते खाय ने कोईक रांडरांखिने
तेने खवरावेने तेने अर्थे घरने खोरडाने वस्त्रने घरेणांकरे ने ते कुफेले करिने मुडि तेमांवावरिनाखे तोपछे जे रांड
राखिहोयते पण तेनो त्याग करेने तेने अन्नपण खावा मलेनहि ने घणोदुःखनेपामे ॥ तेमए तो दृष्टांत नेएनुं सिद्धां
तए छे जे ॥ रांकवाणिया जेवो तो जिवछे अने शाहुकारने ठेकाणे भगवानछे तेभगवाने जिवउपरकृपा करिनेम
नुष्यदेहरुपि मुडि आपि छे ॥ नेएम आज्ञा करि छेजे तेदेहनी आयुष्य रुपि मुडि मांथी अवस्यजेटलुं घटेतेटलुं
देहनिरवाहने अर्थे वावरवुं कहेतां देह निरवाह थावएटलो संसार वेहेवारनो उद्यम करवो नेवाकिआयुष्यरु-
पि मुडि छे तेने भगवाननीनवधा भक्ति मांवावरवि ॥ एविरितनी भगवाननी आज्ञा छे पछे जिव मृत्युलोकरुपि

परदेशमां आविने पंचविषयरूपी कुफेलने मारगे चालेने स्त्रिछोकराने अर्थे देहपर्यंत कमाया करे अने भगवाननी भक्तिन करे तो तेनी आयुष्य रूपि सुडि आवि रहे। त्यारे ते अधोगतिने पामे ने स्त्रिछोकरां कोई सहाय करे नहि॥ अने भेगां पण आवे नहि॥ अने जो पंच विषयनो त्याग करिने भगवाननी भक्ति करे तो ते जिव महासुख पामे माटे जेस मजुं होय तेने तो मनुष्यदेह करिने मायाना फंदनो त्याग करिने भगवाननी सेवामां अखंड रहिने पोताना आत्मानुं काम करि लेवुं॥ अने जे मूरख छे ते तो अतिअमूल्य एवो जे मनुष्यनो देह तेने स्त्रीछोकरामां वृथा खुवे छे ते तो महामूरख छे अने जे समजु होय ते तो एम विचार करे जे स्त्रिछोकरां धन माल ते मारा आत्माने अंत समे शुकाम आवे छे॥ अने जो द्रव्य मां मारे वासना रहेशे तो मारे सर्पनो अवतार धरवो पडशे॥ तथा स्त्रिछोकरामां तथा धन मालमां कांई मारे वासना रहेशे तो भूतप्रेतना अवतार धरवा पडशे॥ ने महाहेरान थईश॥ एवि रिते समजिने मायाना परपंचनो त्याग करे छे ते महासुखने पामे छे॥ अने वलि जेने प्रत्यक्ष भगवान मल्या होय तेने तो एम विचारवुं जे जो भगवाननो संबंध थयो न होत तो जरुर जमपुरिमां जात॥ माटे प्रत्यक्ष भगवान मल्या छे ने जो माईक पदार्थमां वासना रहे तेने तो अतिशे मोटि खोट कहेवाय छे॥ केमके प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध छे ते तो अतिशे दूर्लभ छे॥ ने जप तप व्रत साधने करिने प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध थतो नथि॥ जेने अनंत जन्मनो सुभ संस्कार होय तेने थाय छे॥ माटे दूर्लभ लाभ पामिने जगतनां नाशवंत एवां जे विषयनां सुख तेमां लोभावुं नहि॥ अने सर्व मायाना फंदनो त्याग करिने भगवान भजिने पोताना आत्मानुं काम करि लेवुं एज सर्वशास्त्रनो सिद्धांत छे॥ ॥

इति श्रीसुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥

संवत् १९ओगणिसें २१ एकविसना मागशर शुदि १४ चतुर्दशिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीपीपलि मध्ये आसमगन करशान देवने घेर फलियामां ढोलिया उपर बिराजमान थया हता॥ अने सर्व स्वेत वस्त्र

धारण कर्यां हतां ॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा कदरि भक्तनी सभा भराई ने बेठी हती ते पछे व्यासक
स्वानंदे बे हाथ जोडिने कह्युं जे हे महाराज कस्वानसंगजीना भाई ने शरीरमां रोग छे तेने तमे टाळो पछे महाराज बोल्या जे सां
भळो ते रोग टालिये जे शरीर छे ते तो पुरुषनुं विर्य ने स्त्रिनुं रुधिर ए बे वस्तु मांथि बन्युं छे॥ ते अतिशे नकारुं छे ॥ केमके बाल
अवस्थामां केटलाक रोग थाय छे ॥ अने जुवान अवस्था आवे छे त्यारे पण काम लोभ स्वाद स्नेह मान आदिक अंतर
शत्रु वृद्धि पामिने जिवने पिडे छे अने वृद्ध अवस्थामां पण अनंत प्रकारना रोग प्रगट थाय छे ॥ अने ते रोगे करिने अनंत
प्रकारनी व्याधि ने व्याधि अतिशे थाय छे ॥ अने मृत्यु समे पण अपार कष्ट थाय छे ॥ माटे जे शरीर छे ते ज दुःखनुं मूळ छे
अने ते शरीरमां जे प्रिति छे एज मोटो रोग छे ॥ माटे रोगनुं मूळ विचारिने रोग ने टाळे तो रोग टळे पण ते विना रोग टळे
नहिं ॥ जेम झाडने उपरथि कापी नाखे तो पाछुं मूळ मांथी कोटा फुटिने मोटुं झाड थाय॥ अने ज्यारे मूळ मांथि खोदि
नाखे ने मूळना खाडामां अग्नि भरिने बालि मुके तो पाछुं फरिने झाड उगे नहिं ॥ ए तो दृष्टांत ने एनुं सिद्धांत ए छे जे दुःख
नुं झाड तो देह छे ॥ अने वळि घोर नरक कहेवाय छे ते पण देह ज घोर नरक छे ॥ ते पण मणिरत्नमालामां कह्युं छे जे॥
॥ ॥को वास्ति घोरो नरकः स्वदेहः॥ ॥ए मां एम कह्युं छे जे पायखाना दिक तो नरक कहेवाय अने
तेमां जे जिव पड्यो होय ते नरकमां पड्यो कहेवाय छे ॥ अने जे देह छे ते तो घोर नर्क छे ॥ अने तेमां जे जिव प्रीतिये करिने
रह्यो छे ते तो घोर नर्कमां पड्यो छे ॥ माटे घोर नर्कमां ते कोई काले सुख होय ज नहिं ॥ अने वळि नर्कनो ढगलो होय
तेने कोईक मोटा माणसने कहियें जे ते नरकने सारुं गंधाय नहिं एवुं करो ॥ अने ते मां जीवडा थई वा देशो नहिं ॥ एवी
दया करो ॥ पण ते विष्टानो ढगलो कोई काले गंधातो आलसे नहिं ॥ अने जिवडा पण पड्या विना रहे नहि केमके ए वात
बने ज नहिं ॥ ए तो गंधाय ज ॥ अने वळि जिवडा पण जरूर पडे ज॥ अने वळि एवुं नकारुं काम पण मोटा माणसने सिधा-
य न ज सिधाय॥ तेम देह जे ते नरकनो ढगलो छे अने ते मां अनंत रोगरूपि गंध उठ्या करे छे॥ अने तेमां कोई काले

सुखहोयजनहिं ॥ अनेएदेहथीनोखो आत्मा तेपोतानुं स्वरूपछे तेआत्मा सुखरूपछे नेदेहदुःखरूपछे अनेआत्मा अविना
शी छे नेदेह नाशवंत छे अने आत्मा चैतन्यछे ॥नेदेहजडछे ॥ अनेआत्मा आनंदरूपछे नेदेह क्लेशरूपछे॥ अनेआत्मा तो
देहथकि सर्वप्रकारे असंगि छे ॥पणजिवने अज्ञानरूपि भ्रान्तिये करिनेपोतानुं स्वरूप भूलिने देहहुं छुं एम मनाई गयुं छे॥
अने आदेहथि नोखो छे तोपणदेहमां देखायछे ॥ जेमकुवाने कांठे झाडहोय ते कुवाना जलमां देखायछे पण ते कुवामां
झाडनथि॥ नेझाड तो बहार कांठे छे॥ नेतेनो पडछायो कुवामां देखायछे॥ तेम आत्मा देहथी अत्यंतविलक्षण छे॥ अने-
आत्मा तो आकाशनी पेठे निर्लेप छे॥ जेमघडामां आकाश आव्यो छे ते घडाने फूटवे करिने आकाशनो नाश थतो न
थी॥ तेमदेहरूप घडामां आत्मा रह्यो छे तोपण देहने नासे आत्मानो नाश थतो नथी॥ अने देहमां जिवने वासना छे॥
तेणे करिने सदा दुःखने पामे छे॥ माटे देहज दुःखनुं मूलछे अनेतेमां पंचविषयनी वासनाए करिने बंधाई रह्यो छे॥ ते
णे करिने दुःख भोगवे छे॥ अने देहना दुःखने टालवाना उपाय करे छे॥ ते तो जेम झाडबानां डालखां कापे ते पाछां ब-
मणां डालखां पालवे ॥ अने जो मूलमां थी झाडने खोदि कढाडे त्यारे झाड पाछुं उगे नहिं॥ तेम देहना सुखने टालवा
नुं करे छे ते तो झाडना डालखां कापवा जेवुं छे ते देहमां थि एक दुःख मटे तो बिजां वलि अनंत दुःख उत्पन्न थाय छे अने
ज्यारे देहमां थि वासना तोडिने निर्वासनीक थईने पोताना आत्माने ब्रह्मरूप मानिने परब्रह्म एवा जे प्रत्यक्ष ज्ञानदाता
भगवान ते नी एकांतिक भक्ति करे त्यारे महा निरोगी थाय॥ अने पाछुं कोई काले दुःख आवे जनहिं माटे खरेखरा
निरोगि ने सुखिया थवानो तो एउपाय छे जे सत्पुरुष प्रगट भगवान कां ते भगवानना मलेला एवा एकांतिक निर्
वासनीक ने पंचविषयना त्यागि साधु ते नो दृढ आसरो करिने अधर्मनो त्याग करवो॥ अने इंद्रियो ने नियममां करवां
अने शब्द स्पर्श रूप रस ने गंध तेनुं प्रमाण करवुं जे कोटि युग थयां जिव पंचविषयने भोगवे छे॥ तो पण हजि रंचमात्र
जिव धरायो छे? ॥ नथी धरायो॥ माटे पंचविषयनुं सुख ते मिथ्या छे ने स्वप्नवत छे॥ माटे स्वप्नने सुखे कोई -

धरायनहि ।।एमजाणिने पंचविषयनीवासना मुकिदेवी अनेजेदेहछे तेतो जिवेकोटानकोटि धस्या छे ।।अने ज्यांज्यांदेहध
स्याछे त्यांत्यां कोटानकोटि सगांसंबंधी माबाप कस्यांछे तेसर्वे देहनेदेहनां संबंधिना सपामिगयाछे ।।तेमआदेहनेदेहना
संबंधितेपणजरुरनासथईजसे ।।अनेजेआत्माछे तेकोईकालेनाश थायएवो नथि अने तेआत्मा पोतानुं स्वरूप छे ।।
एमजाणिनेआत्मारुपथईने देहनेदेहना संबंधिमांथि प्रितिटालिने प्रत्यक्ष भगवाननुं भजन अखंड हालतां चाल
तां खातां पितां उठतां बेसतां नहातां धोतां करवा करवुं ।।अनेए रितिते जे प्रत्यक्ष भगवाननु भजन करे तेनां दुःखमा
त्रटलि जायछे।। नेतेजिव भगवानना धामने पामेछे।। नेमहासुखियो थायछे ।। माटे भगवान भजवानि संतनीसमा
गम करवो ।।एजदुःखटालवानो उपायछे।। पण तेविना बिजोउपायनथी।। ।।इति श्रीमुखसिद्धांत
समाप्तः।। ।। श्रीहरीकृष्णाय नमो नमः।। ।।संवत१९ओगणिसें २१एक
विसना मागशर शुदि १५ पुनेमने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्रीपिपलीमध्ये भक्तविरजी खिमाने
घेर फलिमां ढोलियाउपर गादितकियानखाविने विराजमान थयाहता।। अने सर्वेजरियानी वस्त्र धारण कस्यांहतां।।
तथा पुष्पना हारधारणकस्याहता ।।अने पोतानामुखारविंदनीआगलसाधु तथा घणाक हरिभक्तनीसभा भरा
ईनेबेठाहति पछे महाराज कृपा करिने बोल्याजे पंचविषयछे तेहलाहलविषछे ।। अने पंचविषयने भोगववे क-
रिने जिवनेजन्म मरण रुपिमहारोग थयोछे ।।तेरोग कोईकालेटलतो नथि ने जिवमहापिडापाम्याकरेछे ।।माटे
तेरोग क्यारे टले तो एरोगनेटालेएवा तो एक परमात्मा भगवानछे ने कांतो भगवाननाएकांतिक संतछे।। ते भग-
वानने संत जिवोनीउपर कृपाकरिने मनुष्यदेहनुं धारण करेछे।। अनेतेसमे जेजे जिव ते भगवानने संतनो आसरो क
रेछे।। ते तेजीवनो रोग टलेछे ।। ते भगवान केविरीते रोगने टालेछे ।। तो पंचविषयरुपिरोगछे ।। तेने विषयरुपिऔ
षध आपिने टालेछे।। तेमवस्त्रमां मेलरुपि धूल भराईहोय तेमां खारारुपि धूलनाखिने जलमां धुवे तो वस्त्रमां

धि मल निसरिजाय छे॥ तेम जिवने माईक पंचविषयमा आशक्ति रूपरोग छे॥ तेने भगवाने पोताना संबंध रुपि पंच विषय
आपिने माईक विषयनो त्याग करावे छे॥ पछे भगवानना शब्द सांभलवा भगवाननो स्पर्श करवो भगवाननुं रुप जोवुं
भगवाननि प्रसादिनो रस लेवो भगवानने चड्यां जे चंदन पुष्प तेनो गंध लेवो॥ मने करिने भगवानना शब्द सांभल्यां तेनुं मन
न करवुं॥ चित्ते करिने भगवाननी मूर्त्तिनुं चिंतवन करवुं॥ बुद्धिये करिने भगवानना निश्चय करवो॥ अहंकारे करिने
हुं भगवाननो दास छुं॥ एवुं अभिमान धरवुं॥ एवि रीते भगवान संबंधी विषयने भोगवे छे॥ तेने जगत संबंधि जे माईक
पंचविषय तेनां मूल उखडि जाय छे ने जन्म मृत्यु रूपि महारोग ते टलि जाय छे॥ अने वलि जेम जेने अतिशे महारोग थयो
होय ने बिजा कोई ओषधे करिने टलतो न होय तेने सिंगडियो वसनाग खवरावे छे॥ ते जो तेने काचो खवरावे तो प्राणने
काढे राखो छे पण तेने वैद मारिने खवरावे छे तो रोगने टाले छे॥ तेम जेने पंचविषयनी अतिशे वासना रूपि महारोग थयो
होय॥ तेने वैद रूपि सतपुरुष छे ते सिंगडिया वसनाग रुपि पंचविषयने भोगवावे छे॥ ते विषयने पोतानी आज्ञा रुपि
ओषधिमां मारिने भोगवावे छे तेणे करिने विषयमां अतिशे प्रिति रुपी महारोग ते टलि जाय छे॥ अने आज्ञा रुपि ओष
धिमां मार्या विना पंचविषयने भोगवे तो वासना रूपी रोग वृद्धि पामे छे॥ ते केवि रीते सत्पुरुष आज्ञा रुपी ओषधि आ
पे छे॥ तो काम ने एम नियम आपे छे जे कामनी जेने अतिशे वासना होय तेने वेदनी शांखे करिने परणिने स्त्रि राखवी
ने तेनो व्रत उपवास तथा अमासपुन्यम एकादशी भगवानना जनम दिवस तथा चत्र मासामां श्रावण मास तथा पुरु
षोत्तम मास ईत्यादिक जे उत्तम दिवस ते दिवसे परणेलि स्त्रिनो पण त्याग करवो॥ अने परस्त्रि तो मा बेहेन जे बिजा
णवी॥ अने एवि रीते नीयमने द्रढ राखिने ते पोतानी स्त्रिमां पण जे दोष रह्या छे॥ तेने जोवा जे ते स्त्रिनो देह केवो छे
तो हाड मांस लोई परु पाच मल मूत्रादिक अतिशे नकारि वस्तुनो भरेलो छे अने ते स्त्रिमां जेने वासना रहे छे
ते घोर नर्कमां पडे छे॥ अने कोटान कोट युग थयां जिव जे ते चोराशिमां पुरुषमां देह धरिने अनंत स्त्रियो भोग-

वीयो छे अने स्त्रिनो देह धरिने जिवे अनंत पुरुष भोग व्या छे॥ तो पण स्त्रिने के पुरुषने कांमथकी तृप्ति थई नथि॥ अने हजि पण
कोटि युग सुधि काम भोगवशे तो पण तृप्ति थशे नहिं॥ अने उलटुं काम भोगे करिने जिवनुं भुंडुं थाय छे ने महादुःखने पांमे छे
एम विचारिने कामनी वासनानो त्याग करवो॥ अने ज्यारे वासना टले त्यारे तो पोतानी परणेलि स्त्रि होय तेनो पण त्याग कर
वो॥ ने स्त्रिने वासना टलेतो पोताना पुरुषनो त्याग करवो॥ जेम रोगीने रोग होय त्यां सुधि मारेलो सिंगडियो वसनाग खा
वो पण त्यारे रोग टले त्यारे तो मारेला वसनागनो पण त्याग करवो॥ तेम ज्यां सुधि कामनी वासना होय त्यां सुधि आ
ज्ञाये करिने परणिने स्त्रि राखवी॥ अने ज्यारे वासना टले त्यारे तो तेनो पण त्याग करिने अखंड भगवाननी भक्ति कर
वी॥ पण तेने आज्ञाये करिने ते स्त्रीने न भोगववि॥ जेम निरोगी थयो होय तेने वेद मारेलो वसनाग पण नथि खवराव-
ता॥ तेम जे भक्त निरवासनीक थयो होय तेने सत्पुरुष काम भोगव्यानी आज्ञा करता ज नथि॥ अने तेमज लोभ रुपि-
वसनागने आज्ञारुपि ओषधिमां मारिने लोभ भोगवाविने लोभनी वासनारुपि रोगने टाले छे॥ ते केवि रीते लोभनी
आज्ञा आपे छे॥ तो जेने द्रव्यनी वासना होय तेने पोताना हक मेहेनते द्रव्य कमावुं॥ ने तेणे करिने देह निरवाह करवो॥
अने अणहक जे चोरि कुड कपट दगो विश्वासघात तथा थापण ओलववी॥ जुठि साह दि पुरवि॥ तेनो त्याग करवो अने
हक मेहेनते कमावुं तेमांथी पण भगवानने अर्थे वावरवुं॥ अने ए विरीते द्रव्यने भोगवतां थकां पण तेना दोष जोवा जे शा
स्त्रमां एम कह्युं छे जे पंदर अनर्थ थाय छे त्यारे एक पैसो थाय छे ए विरिते पैसा कमावामां पाप थाय छे ते पैसा तो स्त्रि छो
करां सगां संबंधी खाई जाय छे॥ अने तेनुं जे पाप ते तो जे कमाय तेने एकलाने भोगववुं पडे छे॥ ने ते पापे करिने जन्म
मरण ने गर्भवासनां महादुःख भोगववां पडे छे अने वलि एम समजवुं जे आ सर्वे खावुं पिवुं वस्त्र घरेणां तथा सगां संबं-
धिनो जे वेहेवार छे ते तो देहनो छे॥ अने हुं तो आत्मा छुं॥ ते तो देह थकि नोखो असंगी छुं॥ ने ब्रह्मरुप छुं अने हुं आ
व्यो त्यारे कांई लाव्यो नथि ने जईश त्यारे कांई भेगुं आवशे नहिं॥ एम विचारिने लोभनी वासनानो त्याग करवो

अने तेमज स्वादरूपि वसनागने आज्ञारूपि औषधिमां मारिने भोगवावीने वासनारूपि रोगने सत्पुरुष टाले छे॥ तेके-
थिरिते आज्ञारूपि औषधि मां वसनाग रुपि स्वादने भोगवावे छे तो जेने रसास्वादने विषे अतिप्रीति होय तेने पोताना
प्रारब्धे करिने प्राप्त थयो जे घि गोल खांड साकर दुध दहिं आदिक रस तेने जमवो पण अभक्षवस्तु जे दारु माटि अफिण गां
जो लिलागर ताडि माजम तमाकु होको इत्यादिक जे केफ तेनो त्याग करवो॥ अने घी गोलादिक रसने भोगवतां थकां पण
तेमां जे दोष छे तेने जोवा जे रसमां एक तो अनंत रोग रह्या छे अने ते रसने भेगा करवा पडे तेमां पण अनंत क्लेश थाय छे॥ ने
तेमां प्रीति रहे तो विष्टामां किडो थवुं पडे छे॥ अने रस जम्या पछि पण नष्ट थई जाय छे॥ अने जिव्हा इंद्रिउ पर घडि रहे त्यां सुधि
सारुं लागे छे भेगला हे हुं उतर्या पछी तो काई सारुं नरसुं जणातुं नथि॥ अने जिव्हा इंद्रि तो कोई काले तृप्त थाय एवि नथि
ने आत्मा छे ते तो इंद्रियो अंतःकरण थकि जुदो छे॥ ने आत्माने खावुं पिवुं जोईतु नथि। ने खावुं पीवुं तो प्राण वायुनो धर्म छे
एम विचारिने रसनी जे वासना तेनो त्याग करवो॥ अने तेमज स्नेहरूपी सिंगडियो वसनाग प्राणने काढे एवो छे पण तेने स
त्पुरुष आज्ञा रुपि औषधिमां मारिने स्नेहरूपी वसनागने भोगवावे छे॥ तेणे करिने देहने देहसंबंधि पदार्थमां स्नेहनी वास
नारुपि रोग ते टलि जाय छे ते के थिरीते नियम आपे छे॥ तो देहनां सगां संबंधी तथा देहसंबंधी पदार्थ तेमां जे ने अतिशे वा
सना होय त्यां सुधि ते भेगुं रहेवुं पण तेनो नास थाय तो शोक न करवो ने ते प्राप्त थाय तो तेनो हरख न करवो॥ अने एवि री
ते हरख शोकनो त्याग करिने एम विचार करवो जे हुं आत्मा छुं॥ ते आत्मानुं सगुं कोण छे एम तपासि ने जोईए तो परमे
श्वर विना आत्मानुं सगुं कोई नथि। एक भगवानने भगवानना संत आत्माना सगा छे॥ अने बिजां जे सगां संबंधि छे ते तो
सर्वे देहनां सगां छे॥ ने आत्मानां साचा सगा तो भगवानने भगवानना संत छे मारे भगवानने भगवानना संतने विषे दृढ प्रि
ति करवि॥ अने जो भगवान विना बिजे प्रीति थशे तो जन्म मरणनां दुःख भोगववां पडशे जेम भरथजिने मृगलामां स्नेह
थयो तो मृगलुं थवुं पड्युं। ते वेदनी श्रुतिमां पण कह्युं छे जे॥ ॥यामतिस्सागतिर्भवेत्॥ ॥एमाएम कसु

छे जे जिवने ज्यां प्रितिजे स्नेह रहे छे त्यां तेनो निवास थायछे कहेतां त्यां जन्म धरवो पडे छे ॥ एम समजिने भगवानने भगवा
ननानिरवासनिक संतथिनाबिजे कोई प्रितिन राखवि ॥ अने भगवानने भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागिने निर
वासनीक साधु तेमां स्नेह करवो ॥ अने एविरीतनो विचार सत्पुरुषथकि समजिने द्रढ करे तेने देहने देह संबंधि पदार्थमां
स्नेहरूपि रोग तेटलिजायछे ॥ नेजिव महा सुखियो थाय छे ॥ अने तेविज रिते मानरूपि वसनाग पण प्राणने काढे एवोछे
तेने वैदरूपि सत्पुरुषछे तेमारिने खवरावे तो मानरूपि रोगने टालिनाखेछे ॥ ते मानने केवि रिते मारेछे ॥ तो एम वि-
चार करवो जे आत्मा छे तेतो अछेद अभेद अविनाशि छे ने सदाय सुखरूप छे ॥ अने मान छे तेतो आकाशनी मात्रा छे ॥
अने हुं जे आत्मा ते तोमां नथकि असंगि छुं ॥ अने आत्माने तो सुख दुःख मान अपमान कांई नथि ॥ तथा आत्मा ब्राह्मण
क्षत्रि वैश्य शुद्र नथिने आत्माने नातजात वरण आश्रम कांईये नथि ॥ एम समजिने मानतो त्याग करवो ॥ अने पोताना
धर्ममां द्रढ रहेवुं अने कोई आसुरिजिव तथा दुष्टजिवना दबाव्या पोताना धर्मथकि पडवुं नहिं ॥ अने सत्पुरुषनां आपेलां
एवां जे नियम तेने अतिज्ञो द्रढ करिने पालवा अने सतपुरुषनो समागम राखवो ॥ अने भगवाननुं भजन स्मरण कर्‍या करवुं
अने एविरीते समजिने प्रगट भगवानने तेना संतनो आसरो करिने नियम रुपी करिने पाले तो अनंत जन्मे काम न थाय
ते थोडाक दहाडामां थायछे ॥ अने आनआदेह छते ज पंचविषयनी वासनारूपी रोग टलिजायछे ॥ अने ब्रह्मरूप थईने
अक्षरधामने पामे ॥ ने जिव अपार सुखियो थाय ॥ अने जे निरवासनीक थया एवा जे पंचविषयना त्यागि भगवानना
भक्त तेने तो पंचविषयरूपी सिंगडियो वसनाग खावो ज नहिं ॥ कहेतां विषयने भोगववा ज नहिं अने जे विषयने भोगवे
नहिं ॥ ते ज निरवासनीक छे ॥ ॥इति श्रीमुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥
श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः ॥ ॥ संवत १९ओगणिसें २१ एकविसना फागण वदि १ पडवाने दि
वस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री पिपलि मध्ये पोताना मंदिरमां खुरशिउपर विराजमान थया हता ॥

नेसर्वे स्वेतवस्त्र धारणकर्यांहतां नेपोतानामुखारविंदनी आगल साधुतथाघणाकहरिभक्तनी सभा भराईनेबेठाहता ॥
पछेकाठी भक्ते प्रश्नपुछ्युं जेहेमहाराजआजिवते केवडोमोटो छे ॥ अनेतेजिवनुंरुप केवुंहशे ने तेकेमजणातोनथि ॥तेक-
ह्यो ॥ पछेमहाराजबोल्याजे जिव छे तेतो अतिशेमोटाथिपणमोटो छे अनेवलिजिणाथी झिणोछे ॥ नेजिवजेवोजेवोदेह
धारणकरे छे ॥ त्यां तेवडो जिवजणायछे ॥जेमआकाश छे ते अतिशे मोटो छे ॥ पणघरमां आवे छे त्यारे घरजेवडोआकाश
जणायछे ॥ तथाकोठीमांआवे तथा गोलामांआकाशआवे तथाघडामां तथा कुरडामांआकाशआवे त्यारे त्यांत्यांतेव-
डोआकाशजणायछे ॥ तेम जीवछेते कीडिनादेहमां होयत्यारे किडि जेवडोजीव जणायने तेनाजेटलुं बलहोय ॥
अनेएनोए जिव हाथीनोदेहधारणकरे त्यारे हाथिजेवडोजिवजणायने तेनाजेटलुं बलहोय ॥अनेचौदलोकनोजेवै-
राट तेनुंधारण करे त्यारे तेवडो जिवजणाय ने तेटलुं ऐश्वर्य ॥ तथाचौदलोकनेधरिरहे तेटलुंबलहोय ॥अने मूलपुरुष
नोदेहधरे छेत्यारे ॥ अनंतकोटि ब्रह्मांडनेजिवधरिरहेछे अनेएनोएजिव साक्षात्कार प्रत्यक्ष भगवानने भजिनेपंच
विषयनीवासनाटालीने ब्रह्मरुपथायछे ॥ त्यारेतेनाएक एक रोमप्रत्ये अनंतकोटि ब्रह्मांड नेधरिरहे छे एवडो मोटोछे
॥ माटेएजिवनुं बलतथाऐश्वर्य तथा मोटम्य तेकह्यामां आवेएमनथि ॥ अने साक्षात्कार भगवाननास्वरूपने पा-
म्याएवाजे भगवानना एकांतिक साधुते जिवनारूपने तथाऐश्वर्यने तथा बलनेयथार्थजाणे छे ॥ अनेजेअज्ञानीजि-
वछे ॥ तेतोज्यांज्यांजन्मधरेछे त्यांत्यांतेदेहनेपोतानुंरुपमानेछे ॥ अने बाहारदृष्टियेकरिनेमाईकरुपनेदेखेछे ॥
पण बहारदृष्टिवालाने आत्मानुंस्वरूपदेखवामां आवतुंनथि ॥ माटेएने आत्मानुंस्वरुपक्यारे देखायतोआत्मा
नाआत्माएवाजे परमात्मा भगवान ते कृपाकरिने मनुष्यदेहनुं धारण करिने जिवने आत्मापरमात्मानास्वरुपनुंज्ञान
आपे ॥ अनेजिवनेपण तेज्ञान साक्षात्कार आत्मा परमात्मानुं थाय ॥ त्यारेजिवपोतानारुपनेजाणवानेसमर्थ था-
य छे ॥ पछे आत्मारुपथईने प्रत्यक्ष परमात्मानुंध्यानुध्यानकरेछे तेणेकरिनेजिवजेते दिव्य स्वरूपनेपामेछे ॥जेम

किडो भमरीनुं ध्यानकरिने ते भमरीजेवो थायछे तेम जियपण भगवानना स्वरूपनाध्याने करिने भगवाननासाधर्म पणाने पामि
जायछे ॥ अनेपोतानास्वरूपनेजाणवाने समर्थ थायछे ॥ अनेभगवाननोसंबंधजो जिवने थाय नहिं॥ तो जिवकांई करवानेने कोई
जाणवानेस्मर्थनथि॥ अने ते जिव अल्पज्ञ छे॥ अनेज्यारेजिवने संतनासमागमे करिने भगवान नास्वरूपनुं ज्ञान थायछे
त्यारे अपार बलनेपामे छे॥ तथा मोटम्यनेपामे छे॥ अने दिव्य मूर्त्तिमान थईने भगवाननी अखंड सेवामां रहे छे॥

॥श्रीहरिकृष्णायनमोनम॥ ॥

॥ ॥इति श्री मुख्य सिद्धांत समाप्तः॥

संवत १९ ओगणिसें ॥२१॥ एकविसना फागणवदि॥ २॥ बिजने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पिपलामध्ये
भक्तधिरजी खिमाने घेर उगमणे बार ओरडानी ओसरिमां ढोलियाउपर गादितकिया नखाविने विराजमान थयाहता॥
अनेसर्वे जरीयानीवस्त्रधारण कर्यांहतां॥ अने कंकुनो चांदलो कर्योहतो॥ अने पोताना मुखारविंदनीआगल साधु
तथा घणा कहरी भक्तनी सभा भराईने बेठिहती पछे महाराज बोल्याजे सर्वे सांभलो एक वारता करियेजे आ जिवछे
ते सुखनेईछे छे॥ ने सुखना उपाय करे छे॥ तेजा उपाय करे छे॥ तो सुखसारुं दाणानो संग्रह करेछे तेवरसबेवरसपां
चवरसपुगेने पछे खुटिजाय नेवस्त्र भेगा करे तेपणफाटिजाय तथा द्रव्यनो संग्रह करे ते पण कोई कर्हाडे खुटिजायत्यारे
वलिपाछुं दुःखथाय॥ केमके जेजे पदार्थ भेगां करे छे॥ ते सर्वे पदार्थ नाशवंत छे अनेए पदार्थ देहने काम आवे एवां छे
तेदेह पण नाश पामे एवो छे माटे देह पडे त्यारे कोई पदार्थ काम आवे नहिं॥ अने पोतानुं स्वरुप तो आत्मा छे॥ तेनेमाई
क पदार्थ कोई सुख करे एम नथि॥ ने आत्माने तो माईक पदार्थ उल्टां दुःखनां पमाडनारां छे अने आत्माने सुख पमाडे
एवा तो परमेश्वरने परमेश्वरना संतछे ते परमेश्वरने पामवासारुं जे जे जतन करवुं ते जन्मविनाशि सुख पामवानो उपाय
छे॥ अने ते सुखने काल कर्म ने मायापण नाश करवाने समरथ नथि अने जे माईक सुख प्रकृतिनुं कार्य मात्र ते बारम
कारना प्रलय मां नाश थई जाय छे माटे भगवानना भक्त होय तेने माईक सुखनी ईच्छा न राखवि॥ अने माईक सुख

निभ्यंतरमां वासनाहोय तेनेसत्पुरुषनो समागम करिनेटाळिनाखवि। अनेज्यांसुधि जिवने पंचविषयनी वासनाहोय त्यांसुधि जिवनेशांन्तिथति नथि॥ अने भगवाननुं पण तेने सुख आवेनहि अनेज्यांसुधि वासनाहोयत्यांसुधितेने भगवाननुं स्वरूपहोय पण ओळख्यामां यथार्थ आवतुं नथि माटे जे दैविने मुमुक्षुजिवहोय तेनेतोअतिशेखटकोराखि ने प्रत्यक्षपरमेश्वरनेतेनासंतनोआश्रारोकरिने अधर्मअनीतिनो त्याग करिने भगवान भजवा अने देह छे तेज पंचविषय नीवासनाटाळीनाखवि केमकेमनुष्यदेहे करिने जइंद्रियो नियममां थायछे॥ ने भगवाननुं स्वरूपपण मनुष्यदेहेज ओळखायछे॥ ने जिवनो मोक्ष थायछे॥ पणपशु पक्षिकुतरामीनडाना जिन्म मां जिवनोमोक्षथतोनथि॥ माटेमनुष्य जन्मछे तेअतिशे दूर्लभछे॥ ते भागवत्मां जनकराजाए कह्युं छे जे॥ ॥दुर्लभोमानष्योदेहो॥ देहिनांक्ष णभंगूरः॥तत्रापिदूर्लभंमन्ये वैकुंठप्रियदर्शनं॥ ॥ए श्लोकमांएमकेह्युं छे जे मनुष्यनो देह दूर्लभ छे पणक्षणुंमात्रमां नाशथईजायएवो छे तोपण ते मनुष्यदेहे करिने भगवानके भगवानना एकांतिक पंचविषयनो त्यागीसंत तेनुं दर्शनथाय॥ एअतिशे दूर्लभछे॥ जे जेणे करिने आत्मानुं कल्याण थाय माटे पोताने मनुष्यनो देह नेप्र त्यक्षभगवानने भगवानना संतनो साक्षात्कार संबंध ते तो जे ने अनंत जन्मना सुकृत होय तेनेज थायछे॥ अनेज गतमांपण कहेवत छे जे॥ जेमछेटाणे तेनमळे रवरचे नाणे॥ माटे आजजेने मनुष्यदेह आव्यो छे तेने टाणुं आव्युं छे॥ अनेवळिजेनासारुं मोटामुनीजपतप कस्याकरे छे तो पण तेने स्वप्नामांजे नां दरशन थतांनथि ते स्वरूपने तेम सा क्षात्कारदेखोछो मारे तमारांभाग्य कह्यां मांआवेएम नथि॥ केमकेजेने प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध थायछे तेनो म हिमा तो मोटा ब्रह्मादिक गायछे ते पूर्वे वृजनीगोपियो भरवाडणोहति पण तेने प्रत्यक्ष भगवान श्रीकृष्णनो संबंधथ योहतो तोते वेदनी श्रुतियो कहेवाई॥ अने ब्रह्मा पणतेना चरणनीरजने इच्छा माटे प्रत्यक्ष भगवाननो संबंधथ णो दूर्लभछे॥ अने एवोजे लाभमल्याप छे ना सवंत सुखनी इच्छा राखवी घटेनहिं ने पोतानुं अतिशे मोटुंभाग्य ॥६२॥

मानीने ते प्रत्यक्ष भगवानने तेना साधुनो समागम करिने धर्म ज्ञान वैराग ने महात्मे सहित भगवाननी भक्तिद्रढ करिने ब्रह्मरूप थईने परमपद एवुं जे भगवाननुं अक्षरधाम तेने पामवुं॥ ने महासुखियाथवुं॥ माटे मनुष्यदेह करिने भगवान भजवा एज एकसुखथवानो उपाय छे॥ ने ते विनाना जे जे उपाय जिव करे छे ते दुःखना उपाय छे पण तेमां सुखनथि॥ ॥इतिश्रीमुख्यसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥

॥संवत १९ ओगणिसे २१ एकविसना चैतरसुदि १० दशमिने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री गोल्हाणा मध्ये भक्त कुबेरनथुने घेर उगमणे बार ओरडानी ओसरिमां गादितकिया नखाविने हिंडोला उपर विराजमान थया हता॥ ने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां॥ ने मुस्तके कसुंबल सोनेरि पाघ बांधि हति ने सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषण सोभि रह्यां हतां॥ ने रुस्तारन विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मूखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनीसभा भराईने बेठि हती॥ पछे महाराज बोल्याजे सर्वे साधन करतां प्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चय करवो अतिशे कठण साधन छे॥ अने ज्यारे प्रगट भगवानना स्वरूपनो अडग निश्चय थयो त्यारे तेनां सर्वे साधन पुरां थई रह्यां छे अने तेने मोक्षना मारगमां कांई अंतराय रहेतो नथि॥ पण एवो नीश्चय थवो बहु कठण काम छे॥ अने जप तप चांद्रायणादिक व्रत करवां तथा विर्थ यज्ञ दान ए सर्वे करवां ते कांई कठण नथि॥ पण ए सर्वे करतां प्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चय करवो एक कठण पडे छे केमके ए साधन जगतमां केटलाक करे छे पण प्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चय करवो तेने कठण पडे छे॥ ते पूर्वे रुषि यज्ञ करता हता ने चार वेदना भणेला हता ने महा समरथ हता ने त्रण कालना जाणनारा हता तो पण तेने प्रगट श्री कृष्ण भगवानना स्वरूपनो निश्चय करवो घणो कठण पड्यो॥ अने रामावतारमां रावण हतो तेणे केटलांक तो माथां कापिने त्रिषने चडाव्यां हतां॥ ने शरिरमांथि रगो काढिने रावणहथो करिने शिवजि आगल गांन कर्युं हतुं॥ तो पण तेने प्रगट भगवान जे राम तेना स्वरूपनो निश्चय थयो नहिं॥ ने पोताना प्राण गया तो पण निश्चय न थयो॥ अने राजाक

रण हतो ते नित्ये सवाभार सोनानुं दान आपतो हतो ॥ अने सूर्यनो पुत्र हतो तोपण तेने प्रगट श्रीकृष्णना स्वरूपनो निश्चयथ
योनहिं अने राजा जरासिंध हतो ते एवो धर्मवाळो हतो ने सत्यवादि हतो जे सवा पोहोर दिवस चड्या सुधि तो परोक्ष भगवान
निसेवामां रहे तो अने जेटलामां पोतानुं राज्य हतुं ते सर्वमां बार बार गाउ उपर सदाव्रत बंधाव्यां हतां अने पोताने आंगणे
आविने ब्राह्मण के साधु ते जे मोहोथी मागे ते आपतो ॥ एवो हतो तोपण तेने प्रगट श्रीकृष्णना स्वरूपनो निश्चय थयो नहिं
त्यारे कोई एम आशंका करे जे एतो दैत्य हता तेणे क्यांथि निश्चय थाय तो प्रगट भगवानने न ओळख्या त्यारे केडेथी
शास्त्रमां लख्या त्यारे दैत्य कहेवाया छे ॥ पण ते दिवस कोई जाणतुं न हतुं जे आ दैत्य छे ॥ माटे प्रगट भगवानने जे न ओ-
ळखे ते पामर जिव कहेवाय ॥ ने जे प्रगटनो द्रोह करे ने ते जरासिंधनी पेठे परोक्ष भगवाननी सुजे एटलि भक्ति करतो
होय ॥ तपकरतो होय सदाव्रत आपतो होय ॥ तोपण तेने शास्त्रमां दैत्य लखाय छे अने मोटा मोटा जे पंडित पुराणी तप
स्वि त्यागी संन्यासि आदिक सर्वने प्रगट भगवाननो निश्चय थवो ते घणो कठण छे अने तो जेने अनंत जन्मना शुभ संस्का
र होय ने जेना उपर भगवाननी कृपा थाय छे ॥ तेने ज प्रगटनो निश्चय थाय छे ॥ पण बिजाने प्रगट भगवाननो निश्चय
थतो नथि ॥ अने परोक्ष भगवान थाय छे त्यारे तो सर्वने निश्चय थाय छे ॥ ने तेमां कोईने संशय थाय नहिं ॥ ते चोरने
शाहुकारने धर्मिने पापिने सर्वने परोक्ष भगवाननो निश्चय थाय छे ॥ तो पण तेणे करिने कोईनुं कल्याण थतुं नथि
॥ अने ज्यारे परोक्ष भगवान थाय छे त्यारे वांसेथी ते ज्यां ज्यां विचर्या होय ते ठेकाणे जईने हजारो रुपीयाना खरच क
रे छे ॥ ने त्यां जईने तेनी धुळ माथे चडावे छे ॥ तोपण तेणे करिने कोईनी वासना टळतिनथि ॥ अने वासना टळ्या वि
ना कल्याण थाय नहि ॥ अने ज्यारे प्रगट भगवान होय त्यारे तेने अर्थे करवुं ॥ ते जिवने कठण पडे छे ॥ पण जे प्रगट भग
वानने अर्थे करे छे तेनां ज साक्षात्कार कल्याण थाय छे ॥ अने तेनां शास्त्रमां पण नाम लखाय छे ॥ ते सुदामे श्री
कृष्ण प्रगटने मुठि तांदुळ जमाड्या तो तेनो साक्षात्कार मोक्ष थयो ॥ ने तेनुं शास्त्रमां नाम लखायुं ॥ अने विदुरे प्रग-

दने भाजिजमाहि तोते पण शास्त्रमां लखवाई छे ॥ अने सवरि भिलडिनां बोर ते पण शास्त्रमां लखायां छे ॥ अने परोक्षने
अर्थे तो घणा करषरच करे छे पण तेनां कोई नाम जाणता नथि॥ मारे प्रगट थकिज जिवनो मोक्ष थाय छे ए सिद्धांत वा
रता छे पछे नथु परमारे प्रश्न पुछ्युं जे हे प्रगट तमारा स्वरूपनो निश्चय थवानो शो उपाय छे पछे महाराज बोल्या जे
प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय बे प्रकारना मनुष्यने थाय छे॥ एक तो ज्ञाने करिने जेने सर्वे शास्त्रमां दृष्टिपुग-
ति होय तेने थाय छे॥ अने बिजो जे विश्वासि होय तेने निश्चय थाय छे॥ अने जेने विश्वास नथि ने ज्ञान पण नथि अने कोई कहे
शे जे भगवान छे॥ त्यारे ते भेगो पो ते पण कहे जे भगवान छे॥ अने कोई कहे जे भगवान नथि॥ तो ते भेगो घो ते पण एम कहे जे
भगवान नथि॥ एवा जे अधरिया होय तेने कोई काले प्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय नहिं॥ अने क्लेशने पामे छे॥
त्यां श्लोक छे॥ ॥यस्य मुढतमो लोके यस्य बुध्दि परांगति॥ ॥एमां एम कह्युं छे जे विश्वासि ने
ज्ञानी ए बे सुखिया छे॥ अने ते विनाना अधरिया ते क्लेशने पामे छे॥ अने जे विश्वासि होय तेने निश्चय थाय छे॥ ते विश्वा
स पण कोनो करवो॥ तो जेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय होय ने पंचविषयना त्यागी एवा जे निरवासनिक
साधु तेनो विश्वास करवो पण जे पंचविषयनी आशक्तिवाला होय॥ ने जेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय नहो-
य अने उपरथी धर्मवाला जणाता होय॥ तो पण तेनो विश्वास न करवो अने निरवासनीकने प्रत्यक्षना निश्चयवाला
नो विश्वास करवो॥ ए रितना जे विश्वासि होय तेने ज प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय छे॥ अने जे ज्ञानि हो
य ते तो भगवानना दिव्यचरित्रने जाणे अने मनुष्यचरित्र शास्त्रमां लख्यां छे॥ ते सर्वेने जाणे॥ ते भगवान गमे तेवां चरि
त्र करे॥ अने आसुरि जिव गमे तेवां निंदानां वचन कहे॥ तो पण तेने प्रगट भगवानना स्वरूपना निश्चयमां संशय थायन-
हिं॥ अने जे विश्वासि होय तेने तो एम विश्वास होय जे आवा पंचविषयना त्यागि ने महावैराग्यवान अने जेने कोई जातनो
स्वार्थ नहिं॥ एवा जे साधु ते कोई जातना परपंचने तो माने ज नहिं॥ तेणे जे भगवानपणानो निश्चय कर्यो हशे॥ ते स-

स्यजहवो॥ एमजाणिनें तेनो दृढविश्वासराखिने प्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चयकरेछे॥ ते तेने निश्चय थायछे॥ अनेतेनो निश्चय कोईनोडगाव्योडगतोनथि॥ अने एवाजेज्ञानी ने विश्वासितेपरमपदने पामेछे॥ अनेमहासुखियाथायछे ॥

॥इतिश्री मुख सिद्धांतसमाप्तः॥

॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥

संवत्१९ ओगणिसें २१एकविसना चैत्रशुदि ११ एकादशिने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री गोलाणामध्ये भक्तनथुकरशानने घेरउगमणे बारओरडानी ओसरिमां ढोलियाउपर विराजमान हता अनेसर्वे जरियानी वस्त्र धारण कस्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण धारण कस्यां हतां ॥ अने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा कहरि भक्तनी सभा भराईने बेठिहति॥ पछे महाराज बोल्याजेसांभलो एक वारता करिये छिये॥ जे आजिवनो मोक्ष थवो ते अतिघ्रो कठणछे॥ केमकेपंचविषयनी वासनारुपि अविद्यामाया अनादिनी जिवने वलगि छे ते टालवि वज्रसार जेवि छे॥ अने तेवासनारुपि अविद्यामायाने टाले त्यारे जिवनो मोक्षथाय॥ पण ते विना कोई काले मोक्षथाय नहिं॥ पछे अखंडानंद स्वामीए प्रश्नपुछ्युंजे हे महाराज तेअविद्यामायानेटालवानो शो उपायछे॥ पछे महाराजबोल्याजे तेअविद्यामायानेटालवानो तोएकउपायछे ते अतिघ्रो सुगमछे पणज्यारे मोक्षदाताएवाजेसत्पुरुष तेकृपा करिने प्रगट थायछे॥ त्यारे जिवने अविद्यामायाथकि मुकावेछे॥ ते केविरीतेमुकावेछे तो देविनेमुमुक्षुएवाजे जिव जेनेवासनाथकि मुकाववानी ईछा तेनेपोतानो आश्रारो कराविने तेनेनियमरुपिशस्त्रकहेतांहथियार बंधावेछे तेणे करिने वासनारुपि अविद्यामाया वज्रसारजेविछे पण ते कपाई जायछे॥ अनेनियमरुपिशस्त्र विनातो कोई काले वासनारुपि अविद्यामाया टले नहि॥ तेम जगतमां सुजेएवामोटा कहेवाताहोय त्यागीकहेवाताहोय तपस्विहोय संन्यासिहोय परमहंसकहेवाताहोय पणजो सत्पुरुषना आपेलानियमनेनराखे तो ते सर्वेभ्रष्टथई थायछे॥ तेनारदमुनि महामोटाहता पणजो सत्पुरुषना नियम अने सतशास्त्रनीजेमरजादाछे सा धुनेस्त्रि

सामुं न जोवुं ॥ ते मरजादाने तोडिने तेणे राजानी दिकरिनो हाथ जोयो तो तेनी बुद्धि भ्रष्ट थई गई ॥ अने मांकडानुं मोढुं थयुं ॥ ने महा फजेति थई अने शिवजि महामोटा हता पण जो नियम चुकिने मोहनि स्वरूप जोयुं तो मन भ्रष्ट थई गयुं ॥ ने विर्यपात थयो ने फजेति थई ॥ अने सिताजि महामोटां हतां पण जो नियमरुपि आज्ञा लोपि तो तेने रावण हरि गयो ने महा हेरान थयां ॥ ए विरीते केटलाक मोटामोटा सत्पुरुषना नियम चुकिने भ्रष्ट थया छे ॥ अने जो सत्पुरुषना आपेला नियम तेने द्रढपणे पाले तो ते जेवो तेवो जिव होय तो पण तेनी वासना रुपि अविद्यामाया टलि जाय छे ॥ जेम कुवाना कांठा उपर कालमिंढ पथरानी सल्या नाखि होय पण तेने नरम दोरडिये करिने नित्ये पाणि सिंचे छे ॥ तो ते पथराने कापीने वरट पाडे छे ॥ तेम कालमिंढ पथर रुप अविद्यामाया महा वज्रसार जेवि छे ॥ तो पण नियमरुपि दोरडि जे नित्ये भगवाननुं भजन स्मरण मालापूजा किरतन कथावारता करवा ॥ तथा चोरि छिनालि दारु माटि वटलवुं वटलाववुं तेनो त्याग करवो अने जे त्यागी होय तेने अष्टप्रकारे स्त्रिनो अने द्रव्यनो त्याग करवो तथा रसास्वाद ने स्नेह ने मान तेनो पण त्याग करवो तो तेणे करिने तेनी वासनारुपि अविद्यामायानो नाश थई जाय छे ॥ माटे सत्पुरुषना आपेला जे नियम तेने द्रढ करिने शीर साटे राखवा ॥ अने देहथि नोखो जे पोतानो आत्मा तेने अखंड अविनाशी सुखरुप सत्तारुप प्रकाशरुप ज्ञानरुप जाणिने आत्मारुप कहेतां ब्रह्मरुप थईने परब्रह्म एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेनो द्रढ आश्रो करिने तेना आपेला जे नियम ते प्रमाणे वरते छे ॥ तेनी अविद्यामाया महा वज्रसार जेवि छे पण समूलि नाश थई जाय छे ॥ अने देह छते महामुक्त थई जाय छे ॥ ने देह मुकिने अक्षरधांमने पामे छे ॥ एवो प्रत्यक्ष सत्पुरुषना नियम जे आज्ञा ते तेनो प्रताप छे ॥ पण प्रत्यक्ष सतपुरुषना आश्रा विना ने तेनी आज्ञा विना वासनारुप अविद्यामाया कोई काले टलती नथि ॥ अने केटलाक अखतरडा ह्या जगतमां होय ते एम कहे जे अमे अमारि मेले नियम पालिये छैये एम कहेनारो मूरख छे ॥ अने सतपुरुषना संग विना ने भगवाननी भक्ति विना पोतानी मेले कोई काळे नियम रहेज नहिं ॥ अने कोई पाले तो हशे तो पण तेना नियम खोटा छे ने ते नियमे करिने अविद्यामायारुप वासना टले नहिं ॥ केम के सतपुरुषना ज्ञान विना ने भ

गवान प्रगटनि उपासना विना पंचविषयनो अभाव थायज नहि ॥ अने पोतानी मेले नियम पाले छे तेना नियम केवा छे
तो जेम बलद ने गोधलो करे ने ते ब्रह्मचर्य व्रत पाले छे तथा झाडवां जेम टाढ तडकानुं सहन करे छे ने क्यांई आवे जाय नहिं
तथा वलि जेम ब्राह्मण होय ते हो को न पीवाना नियम राखे छे तेम पोतानी मेले मननी खुशि प्रमाणे पाले छे ते तो एवा नि-
यम छे ॥ अने तेणे करिने रंचमात्र वासनारुप अविद्या माया टले नहिं ॥ माटे प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतनो आश्र
रो करिने तेना आपेला जे नियम तेने दृढ करिने पालवा एज एक वासनारुपी अविद्या मायाने टालवानो मोटो उपाय छे
अने वासनारुपी अविद्या माया टले त्यारे ज जिव सुखियो थाय पण ते विना कोई काले जिव सुखियो थाय नहिं ॥
माटे पोताना ईष्टदेवे आप्या जे नियम तेने शिर साटे राखवा ॥ ॥इति श्रीमुखसिद्धांत समा
प्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥ संवत् १९ ओगणि से २१ एकविस
ना चैतर शुदि १२ द्वादशिने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री गोंढाणा मध्ये कल्याण नथुने घेर उगम-
णे बार ओरडानी ओसरि मां ढोलिया उपर गादि तकीया नखावीने बिराजमान थया हता अने सर्वे जरियानी वस्त्राभा
रण कर्यां हतां अने कंठमां पुष्पनाहार धारण कर्या हता ने पागमां डाबि कोरे फूलनो तोरो लटकतो हतो ने कंकुनो
चांदलो कर्यो हतो ॥ अने पोताना मुखार्विंदनी आगल साधु तथा घणा क हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे
परमसिद्धानंद स्वामिये प्रश्न पुछ्यु जे हे महाराज पंचविषय छे ते जिवमां रह्या छे के जीव विषयमां रह्यो छे ते कहो ॥ प
छे महाराज बोल्या जे सांभलो एनो उत्तर करिये जे जिवमां विषय रह्या छे ने विषयमां जिव रह्यो छे अने ते विषय ते शुं
छे तो जेने वासना कहे छे ने जेने प्रकृति कहे छे ॥ अने जे जिव छे ते पुरुष छे ते पुरुषने ने प्रकृतिने अनादि कालनो सं
संबंध छे ॥ अने ते जिव प्रकृतिने मुकतो नथि ने प्रकृति जिवने मुकति नथि ए थि रिते परस्पर अंन्योन्य भावे करि
ने रहे लां छे ॥ जेम आकाशने विषे चार भूत कारणपणे रह्यां छे अने ते आकाशमांथी वायु थाय छे ने ते वायुने वि

षे आकाश रहे छे ।। अने वायु थकि अग्नि थाय छे ।। ने ते अग्निमां वायु ने आकाश बे रहे छे ।। अने अग्नि थकि जल थाय छे ।।
अने ते जलमां अग्नि वायु ने आकाश त्रणे रहे छे अने जल थकि पृथ्वि थाय छे ने ते पृथ्विने विषे आकाशादिक चार भूत रहे
छे ।। अने प्रलय काले पाछा चारे भूत आकाश मां रहे छे ।। अने चारे भूतने विषे आकाश रह्यो छे तेम आकाशने ठेका
णे जिव छे ।। ने चार भूतने ठेकाणे पंचविषय छे ।। ते कारणपणे वासना रुपे करिने जिवमां विषय रह्या छे ।। अने कार्य
रुपे करिने विषयमां जिव रह्यो छे ।। एवि रिते जिवमां विषय रह्या छे ने विषयमां जिव रह्यो छे ।। अने ते जिव चैतन्य छे ने पं-
चविषय जड छे अने ते जिवने विषयनी वासना छे तेणे करिने बहार पंचविषयने उपजाविने तेमां सुख मानीने तेने भो
गवे छे ।। पण ते विषयमां लेशमात्र सुख नथि ।। अने सुखरुप तो पोते आत्मा छे ते पोताना स्वरूपना भानने भूलि
ने जडरुप ने नाशवंत ने दुःखरुप जे विषय ते ने विषे सुख माने छे ।। जेम स्वान सुका हाडकाने करडे ने तेणे करि
ने पोतानुं मोढुं छोलाय तेणे करिने हाडकुं लोहिवालुं थाय ।। पछे ते हाडकाने चाटिने सुख माने छे तेम पंच वि
षय तो हाडकानी पेठे जड छे ।। अने ते मां जे सुख जे जणाय छे ते तो आत्मा ज ते जणाय ।। माटे सुखरुप तो पोता
नो आत्मा ज छे पण अज्ञाने करिने पोताना स्वरूपने भूलिने पंचविषयमां सुख मानीने ते सुखने पामवा सारुं
जन्म मृत्युने वारंवार पामे छे ।। ने महा दुःखने भोगवे छे ।। माटे सुखियो तो जिव क्यारे थाय ज्यारे पंचविषयनी वा
सना टले त्यारे सुखियो थाय ।। अने ते वासना क्यारे टले तो ज्यारे आत्माना स्वरूपनुं ज्ञान थाय अने आत्माने विषे परमा-
त्मा साक्षात्कार देखाय त्यारे विषयनी वासना टले छे ।। हवे ते आत्मारुप थईने परमात्माने केम देखे तो ज्यारे पंचवि
षयनी वासना टले त्यारे आत्मा रुप थईने परमात्माने देखे ।। माटे वासना टलवि ते घणि ज कठण छे ।। पण एवि जे वासना तेने
टालवानो एक उपाय छे ।। ते कियो उपाय छे तो पोताने प्रत्यक्ष भगवान मले अने कां ते भगवानना एकांतिक साधु मि
लवा स नी क पंच विषयना दृढ त्यागी तेम ले पछे तेनी आज्ञाये करिने पंचविषयना त्याग संबंधि नियमने दृढ करिने

रारवे॥ अने इंद्रियो अंतःकरणानी जे वृत्तियो छे तेने प्रत्यक्ष सतगुरु तेना स्वरूपने विषे जो डि दिये तो ते जिवने प्रत्यक्ष
सत्पुरुषने विषे दृढ स्नेह थाय छे पछे जे साथे जेने स्नेह करिने संबंध थाय छे तेना गुण ते मां आवे छे॥ माटे जे ने सत्पुरुष
नो स्नेह करिने संबंध थयो॥ तेनी इंद्रियो अंतःकरण दिव्यभावने पामि जाय छे॥ अने तेनी वासना पण निवृत्ति पामि जा-
य छे॥ अने ते जिव ब्रह्मरूप थईने परब्रह्मने साक्षात्कार देखे छे॥ जेम सूर्य उगेने तेना नेत्रने संबंध थाय छे॥ त्यारे अं-
धारुं सर्वे टलि जाय छे। अने तेने सूर्य पण साक्षात्कार देखाय छे॥ ते सूर्यना संबंध थकि अंधारुं पण टल्युं। अने
सूर्य थकि सूर्य देखायो तेम प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना एकांतिक संत ते सूर्यरूप छे ते जिवने प्रगट मलेने तेने
विषे स्नेह करिने संबंध थाय॥ तो ते जिवने वासनारुपि अंधारुं नास पामि जाय॥ अने ते जिव ब्रह्मरूप थईने परब्रह्मए-
वा जे प्रत्यक्ष भगवान तेना स्वरूपनो महात्मे सहित उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय॥ जेम घडामां वायु भर्यो होय॥
तेमां जेम जेम जल भरातुं जाय तेम तेम घडामां थि वायु निकलतो जाय छे॥ तेम प्रत्यक्ष कल्याणकारि भगवाननो जेट
लो जेटलो संबंध थतो जाय तेटला तेटला विषय टलता जाय छे॥ तेमां प्रथम इंद्रियोमां संबंध थाय छे त्यारे नीयमे
करिने इंद्रियोना विषयनी वृत्ति पामे छे॥ अने ज्यारे अंतःकरणमां भगवानने संतनो संबंध थाय त्यारे अंतःकरणना
विषय निवृत्ति पामे छे अने ज्यारे जिवमां प्रत्यक्ष भगवानने संतनो संबंध थाय त्यारे जिवमां जे अनादिनी वासना
छे ते निवृत्ति पामि जाय छे॥ कहेता निरवासनिक थईने ब्रह्मरूप थाय छे॥ माटे प्रत्यक्ष सत्पुरुषनो संबंध थाय
त्यारे ज विषयनी निवृति थाय छे॥ अने ब्रह्मरूप थईने परब्रह्मने देखवा ते पण प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संत थ
कि ज देखाय छे॥ अने जिव अक्षरधामने पामे छे॥ ॥इति श्री मुख सिद्धांत समाप्तः॥
॥ ॥श्री हरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥संवत १९ ओगणिसें २१ एकवि
सनाचैतर शुदि॥१३॥तेरसने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री गोल्लाणा मध्ये भक्त करवा न न थुने घेर

रुगमणे बारम्रोरडानीम्रा गल फलिमां ढोलीया उपर विराजमान थया हता ।। अने सर्वे स्वेतवस्त्र धारण कर्यां हतां ।। अने फू-
लनाहार कंठमां धारण कर्या हता ।। अने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा कहरिभक्तनी सभा भराई ने बेठि ह-
ती पछे महाराज बोल्याजे कल्याण ए चोथण अक्षरनो शब्द जगतमां प्रवर्त्यो छे पण ते कल्याण केवुं छे ।। एम कोई ने खब-
र नथि ।। माटे कल्याण ते शुं छे तो रुडानुं नाम कल्याण छे ।। तेमां जे ने पंचविषयनी वासना छे ।। तेने वीषय भोगमजे तो ते-
णे करिने ते रुडुं माने छे ।। पण एरुडुं नथि ।। अने वलि केटला कजप तप दान पुण्ये करीने कल्याण रवोले छे ।। अने केटला क-
तिर्थ व्रत यज्ञ याग पुजादिके करिने कल्याण रवोले छे ।। पण तेणे करिने कल्याण कोईने यथार्थ जडतुं नथि ।। केमके क-
ल्याणनो मारग तो अतिशे अटपटो छे ।। ने घणो अगम छे ।। कहेतां कोईने गम नथि माटे कल्याण तो क्यारे थाय ज्यारे
पंचविषयनी वासना जिवमां अनादिनी छे ते वासना टलि जाय ।। अने जिव ब्रह्मरुप थईने परब्रह्मने पामे त्यारे क-
ल्याण थाय ।। अने ते विना तो बिजां सर्वे कल्याणनां उपकरण छे अने अंतःकरणने शुध करनारा छे ।। अने कल्याण-
तो क्यारे थाय ज्यारे मायापर एवा जे सतपुरुष ते जिवने प्रगट मले ।। अने ते सतपुरुषनो विश्वास आवे त्यारे ते जिवने ज्ञान-
आपे ।। त्यारे कल्याण थाय पण ते वीना कल्याण थाय नहिं ।। हवे ने सतपुरुष के विरीते ज्ञान आपे छे ।। तो अष्ट प्रकारनी जे
जडप्रकृति तेना रुप नोखां नोखां देखाडिने साक्षात्कार ते नुं ज्ञान करावे ।। अने ए जडप्रकृतिने धरि रहि एवि जे चैतनप्रकृ-
ति जे जिव ईश्वर्य रुपे तेना स्वरूपनुं ज्ञान पण यथार्थ जेम छे तेम करावे ।। अने ए जड ने चैतन एबेनां आधार एवा जे परमा-
त्मा भगवान तेना स्वरूपनुं ज्ञान साक्षात्कार करावे ।। अने ए विरीते ज्ञान थाय त्यारे ज जिवनी वासना टले ।। अने आत्यं-
तिक मोक्षने पामे ।। पण ते विना एकले साधने करिने पूरण थई बेसे छे ते तो अतिशे अविवेकि छे ने मानी छे ।। ने मनमु-
खि छे ।। पण एने सतपुरुष नो सिद्धांत समज्यामां आव्यो नथि ।। केमके तप व्रतादिक साधने करिने अंतःकरण शुद्ध था-
य छे ।। ने ज्ञान पामवानो अधिकारी थाय छे ।। ते सारुं सतपुरुषे साधन बताव्यां छे ।। ते ज्ञानने तो न पामे अने साधन

करिनेजेतृप्तिपामे ।। तो तेमिथ्यातृप्ति छे।। अने ते ज्ञानविना साधने करिने तृप्ति पामे छे तेने आत्यंतिक मोक्षमां थिघनरु
पछे ।। केमके ज्ञानविना संतोष छे ते अतिशे कल्याणनो विरोधि छे।। माटे विवेकि थवुं।। ने अतिशे श्रद्धाराखिने निर
मानि थईने सत्पुरुष पासेथि ज्ञान पामवुं।। अने ज्ञान पामे त्यारेज वासनाटले ।।ने वासनाटले त्यारेज आत्यंतिकमो
क्ष थाय।। एजएक साचुं कल्याण छे।। ॥ईति श्री मुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः।। ।। संवत् ।।१९ ।। ओगणिसें ।। २१।। एकविसना चैतर शुदि ।।१४।।
चौदशने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीगोल्लाणामध्ये परमार मोटाभाईने घेर आथमणे बार ओरडा
नी ओसरिमां गादितकियानखावि ने ढोलियाउपर बिराजमानहता अने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥
अने कंठमां पुष्पना हारसोभिरह्याहता ।। अने कंकुनो चांदलो कर्योहतो।। अने पोताना सुखारविंदनी आगलसं
धुतथाघणाक हरिभक्तनीसभा भराईनेबेठिहती ।।अने संध्याआरति थया पछी महाराजबो ल्याजे बे प्रकारनी संप
त्तिना जिव छे।। तेएक दैविसंपत्तिना जिव छे ।।ने एक आसुरी संपत्तिना जिवछे ।। अने ते बे प्रकारना जिवोने परस्पर
अनादिनो विरुद्धभावछे।। तेमांदैविसंपत्तिना जिवछे तेने तो आस्तिकमति होय।। अने तेएम समजताहोयजे सर्वेना
कारणने करता एक भगवान छे।।अने प्रकृतिपुरुषतथा ब्रह्मा विश्नु शिव तथा सूर्यचंद्रमा काल आदिक जे मोटामोट
तेए भगवाननी आज्ञामां थरथर कंपे छे ।।अनेते लेशमात्रपण भगवाननी आज्ञा लोपता नथि ।। तो हुं अल्पजेवो ते मेंके
म भगवाननी आज्ञा लोपाय ।। एमजाणिने शास्त्रमां सतपुरुषना बांधेलाजे धर्म तेने दृढपणे पाले पणअधर्म अनीति
ने मार्गे चाले जनहिं।। एथिरीतनां जेनां लक्षणहोय तेने दैविसंपत्तिना जीव जाणवा।। अने जे आसुरि संपत्तिनाजि
वहोय।। तेना अंतःकरणमां तो नास्तिकभाव होय अने जगतना करता काल कर्म मायाने जाणे।। तथास्वभावे
करिने जगतथायछे ।।एमसमजे।।पण नास्तिक होयते भगवानने करता नमाने अने तेनुं अंतःकरणभ्रष्ट होय तेणे

करिनेमावेदेनदिकरिनो पण ते नास्तिकसंगकरवाने ई छे तथा मनुष्यनेमारिनेद्रव्य लेवुं कोईकनी थापणओलववी ।। वि
श्वासघात करवो ।। चोरि करवि ।। ईत्यादिक अधर्मे करिने द्रव्य भेलुं करवुं ।। तथा अभक्ष जे मद्यमांस आदिकनुं भक्षण
करे ।। तथा वेश्या ओ आदिकना भूंडाभुंडा रूपजुवे ।। तथा अधर्मनी क्रिया करवि ।। ते मां असुरि संपतिना जिवनेप्रिति
होय ।। पण एवा दुष्ट असुरि होय ते परमेश्वरनो डर राखे नहिं ।। अने एवा असुर होय ते वरणाश्रमनो धर्म तो उपरथी लो
कने भये करिने पाले ते पण कोईक भाले एटलि घडि राखे ।। पण एना अंतरमां तो एम समजे छे वरणाश्रमनो धर्म ते
तो मिथ्या छे ।। अने एवा जे आसुरि मदापापी अधर्मी नि ने धर्मे युक्त एवो जे दैवि संपत्तिना जिव ए बेने कोई काले भेगुं
बनेज नहिं ।। जेम दिवसने ने रात्रिने भेगुं बने नहिं तेम दैविने ने आसुरिने भेगुं बनेज नहिं ।। माटे जे मुमुक्षु होय तेने
तो एवा आसुरीनां लक्षण जोईने तेथी छेटे रहेवुं ।। अने एम कंई न समजवुं जे ग्रहस्थमां आसुरि होय ने त्यागिमां न
होय ए तो कालनेमि रावणजेवा वेसधारि त्यागिमां पण आसुरि होय तथा ब्राह्मणमां पण होय ।। ते भोला लोको
ने धिरववा सारु वेष लेई ने भक्तिनो भाव जणावीने जे तेनो संग करे तेने भ्रष्ट करिने मोक्षना मारगथी पाडि नाखे छे ।।
अने तेना आत्मानुं अतिशे अनहित करे छे ।। माटे असुरिनो जे संग ते जेवुं कोई जिवने भूंडुं करे एवुं बिजुं कोई पाप नथि
।। अने धर्म ज्ञान वैराग ने भक्ति तेना दाता एवा जे सतपुरुष तेना संग जेवुं कोई जिवने रुडुं करे एवुं बिजुं पुंन्य नथि ।। के
मके आसुरि संपतिना जिवने अधर्मे करिने कल्याणकारि सतपुरुष ओलखाय नहिं ।। तेणे करिने तेनो जे जे संग करे
तेने पण कल्याणकारिनो दोष देखाडिने विमुख करे ।। अने जे दैवि जिव होय तेने कल्याणकारी ओलखाय छे ।। अ
ने तेनो जे संग करे तेने पण ते कल्याणकारीनो गुण देखाडिने तेना स्वरूपनो निश्चय कराविने भगवान सनमुख करेने
तेना आत्मानुं अतिशे रुडुं करे माटे प्रगट कल्याणकारिनो आश्रो करवो ।। ते जेवुं बिजुं कोई रुडुं नथि ।। अने ते जे
वो बिजो कोई लाभ नथि ।। अने प्रगट कल्याणकारीनो अवगुण लेवो ।। ते जेवुं कोई बिजुं भूंडुं नथि ने ते जे वि जिवने बिजि

ह्राण्यनथि ॥ तेसारूंउपरलख्याजे दैवि आसुरिनागुणतेनेओळखिनेआसुरिनासंगनो त्यागकरवो ॥ अनेदैविएवाजे भग-
वानना भक्तसंत तेनो संगकरवो ॥ अनेतेना संगथकिप्रगटकल्याण कारिनो आश्रारो करिने तेनीआज्ञाप्रमाणे वर्त्तिनेपोता
नाआत्मानुंरुडुंकरवुं अनेतेमां अतिशेश्रद्धारा खिने ज्ञानपामवानोअभ्यास करवो ॥ अनेजेनेश्रद्धामां कसरहोय तेनेब
हु जरवोटरहिजायछे ॥ अनेजे श्रद्धाराखिनेसतपुरुषनावचन प्रमाणे अभ्यास करे छे तेने ततकाल ज्ञान थायछे ॥ ने-
ब्रह्मरुप थईने अक्षरधामने पामे छे ॥ माटे मनुष्यदेहे करिने अधर्मआने तिनो त्याग करिने प्रगट सतपुरुषनो आसरोक
रिनेश्रद्धाराखिने तेनावचनथकिज्ञान पामवुं ॥ ए सर्वशास्त्रनो सारसिद्धांतछे ॥ अनेएज सर्वेपरि जिवने लाभछे

॥ ॥इतिश्री मुख सिद्धांतसमाप्तः ॥ श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः ॥

॥ ॥संवत १९ ओगणिशो ॥२१॥ एकविशाना चैतरशुदि १५ पुनेमने दिवस महाराजश्रीहरिकृ
ष्ण भगवानगामश्री गोलाणामध्ये परमारदाजि भाईनेघेरउगमणे बारओरडानी ओसरिमां ढोलियाउपरविराजमान
थया हता ॥ अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यांहतां ॥ नेमुस्तकेगुलाबिरंगनो फेंटो बांध्यो हतो ॥ अनेजमणा हाथमांरु
माल धारण कर्योहतो ॥ अने पोतानामुखारविंदनीआगल साधुतथाघणाक हरिभक्तनीसभाभराईनेबेठिहति ॥ प-
छे करशान भक्ते प्रश्न पुछ्युंजेहे महाराजएकतो तमारेहाथे व्रतमानधराविनेसत्संगि थयो होय अनेएक तमारासा-
धुनेहाथेवर्तमान धरावि नेसत्संगि थयो होयतेए बेनां कल्याण बरोबर थाय के कांई फेररहे छेतेकहो पछे महाराज
बोल्याजे अमथकि धर्मज्ञान वैराग नेमहात्मेसहित भक्ति सिद्ध करिने आत्यंतिक ज्ञानने पाम्या एवाजे अमाराए
कांतिक साधु तेने हाथे व्रतमानधराविने जो यथार्थतेनीआज्ञाप्रमाणे वरते तो तेने अमारे हाथे व्रतमानधरावे क-
ल्याणथाय तेवुंज तेसाधुने हाथे व्रतमानधरावे कल्याण थायछे ॥ अनेअमारेहाथे वरतमान धराव्यां होय अथवासा
धुनेहाथेवरमानधराव्या होय पणजो आज्ञाप्रमाणे नवरते ने अमाराथिनाविजे क्याईवासनारहे तो तेनाकल्याण

मांफेर रहे छे ।। अने हरि भक्त ने अमारां दरशन न थयां होय ने अमारा मले लाधर्मे युक्त साधु तेने हाथे व्रतमान धराविने नि
रवासनिक थाय ।। तो तेनुं पण कल्याण साक्षात्कार थाय ।। अने साधु ने अमारां दर्सन न थयां होय ने हरि भक्त ने पण अमारां
दरशन न थयां होय ।। अने परोक्षपणे भक्ति करता होय ने त्यागि ने ग्रहस्थना जे अमारा बांधेला धर्म ते प्रमाणे यथार्थ व
र्तता होय ।। तो तेने एक बे जन्मे अमारो प्रत्यक्ष संबंध थाय छे ।। ने ते अम थकि ज्ञानने पामिने निरवासनीक थईने आत्यं
तिक मोक्षने पामे छे ।। पण प्रगट अमारा संबंध विना आत्यंतिक मोक्ष थाय नहिं ।। केमके आत्यंतिक ज्ञान विना आत्यं-
तिक मोक्ष थाय नहिं ।। अने आत्यंतिक ज्ञान तो एक अमारि पासे छे ।। अने कां अम थकी ज्ञानने पाम्या एवा जे अमा
रा एकांतिक ब्रह्मवेत्ता निरवासनीक पंचविषयना त्यागि साधु तेनी पासे आत्यंतिक ज्ञान होय ।। पण ते विना बिजा को
ई स्त्रियादिक पंचविषयनी वासनावाला पासे आत्यंतिक ज्ञान होय नहिं ।। माटे मायापर थकि ज आत्यंतिक मोक्ष था
य छे ।। ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे ।। पछे वलि कारयान भक्ते प्रश्न पुछ्युं ।। जे हे महाराज साधु जे विरिते वरते छे ने गल्याचि-
कणादिक खटरसनो त्याग राखे छे ते विरिते अमारे वर्तवानुं नथि ।। अने सेहे जे जे रसोई थाय छे ते खाय छे ने मनमां आ
शक्ति तो नथि ।। तो पण एम जाणीये छीये जे अमारुं ते साधुना बरोबर कल्याण थशे के नहि थाय ।। एम संशय थाय छे ते क
हो ।। पछे महाराज बोल्या जे बे आश्रम छे ।। तेमां जेणे संसारनो त्याग करिने भेख लिधो होय तेने तो पांचे विषयनो
अतिदृढपणे त्याग करवो ।। तो तेनुं कल्याण थाय ।। अने ते जो पांचमांथि एके विषयनो संबंध राखे तो तेनुं कल्याण थाय न
हिं ।। अने जे ग्रहस्थाश्रममां रह्यो होय अथवा अमारी पासे धोले लुगडे रह्यो होय ।। तेने पण अंतरमां तो त्यागिनी पेठे ज पं
चविषयनी अरुचि राखवि ।। अने उपरथी तो सेहेजे अमारी आज्ञाये करिने गल्युं चिकणुं खाय ।। अथवा आज्ञाये करिने
प्रयोजन वस स्त्रियो साथे बोलाय ।। तो तेनो बाध नथि ।। पण मनमां कोई जातनो संकल्प न थाय तो तेनुं त्यागीना बरो-
बर कल्याण थाय ।। अने जो कोई विषयमां राग होय ने सारुं सारुं खावा मले त्यारे राजि थाय ।। ने जेवुं तेवुं मले त्यारे

कुराजिथाय ।। ने कोईकनो अवगुण ले ।। अने भगवानने भगवानना भक्त करतां देहने देहनां सगां संबंधि मांवधारे हेतराखे तो तेनुं कल्याण थायनहिं ।। अनेतेस त्संगमां रह्यो होय तो पण ते जेदहाडे तेदहाडे जरूर विमुखथाय माटे सारा नरसानी भावना टालिने देहनेदेहना संबंधीमांथि प्रितिनो त्याग करि नेआमारिआज्ञा प्रमाणे वरते तो तेनुं त्यागिना बरोबर कल्याण थायछे ।। एमां काई संषयनथि ।। ।। इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः ।।

।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।।

।।संवत १९ओगणिसें २१ एकविसना चईतर वदि १ पडवाने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री गोलाणा मध्ये मेहेताजि भाईने घेर आथमणेबारओरडानीओसरिमां ढोलियाउपर विराजमानथयाहता ।। अनेसर्वे स्वेतवस्त्र धारणकर्यांहतां ।। नेपोतानामुखारविंदनीआगल साधुतथाघणाकहरि भक्तनीसभाभराईनेबेठिहती पछेमहाराजबोल्याजेआजिवछे तेजेतेबहारद्रष्टियेकरिनेत्रणगुणनावेगथकी विप्रितक्रियाकरेछे ।। नेतेणेकरिनेमहादुःखनेपामेछे नेजन्ममृत्युनेवारंवार भोगवेछे अनेजो अंतरद्रष्टिकरिनेगुणनेओलखे ।। तोतेथीसारिक्रीयाथाय ।। नेजीवसुखियोथाय ।। अनेतेअंतरद्रष्टिपण सत्पुरुषनेसंगेथायछे नेगुणपण सत्पुरुषथकिजओलखायछे ।। पछे गामपारडिनाभटहरगोविंदे प्रस्नपुछ्युंजे हे महाराज एत्रण गुणकेमओलखाय ।। ते कहो ।। पछे महाराजबोल्याजे ।। एगुणतो एनां लक्षणने जाणवे करिनेओलखायछे ते लक्षण नेकहियेजे देहमांज्यारे सत्वगुणवर्ततो होय त्यारे ज्ञानवरते ।। प्रकाशपणुं वरते ।। प्रसन्नपणुंवरते ।। सुखसंगिपणुं वरते ।। आरोग्यवरते ।। उदरेकवरते ।। संतोषवरते ।। श्रधावरते ।। क्षमावरते ।। उदारपणुवरते ।। धृतिवरते तंद्रापणुनवरते ।। आनंदवरते अहिंसापणुंवरते ।। सत्ववरते ।। रणकरवापणुनवरते अनारजवनवरते ।। अकार्य करवानेविषे लज्यावरते मार्दववरते ।। कठणपणुनवरते ।। मांहेबहार पवित्रपणुंवरते ।। धर्मवरते ।। आरजववरते ।। इंद्रियोनेविषे जोलुपपणुनवरते ।। नेसारां करमकरे ।। नरसांकरम करे पण कोईने कहिनदेखाडे नेपदार्थमात्रनेविषे ईछानवरतेनेहा

नेकरिने अनुग्रह करवापणुं वरते ॥ नेसर्वे भूत प्राणिमात्रने विषे दया वरते नेपरमारथपणुंवरते ॥नेसंभ्रम पणुं न वरते॥ एविरीते सत्वगुणनां त्रिश लक्षण जाणवां ॥ हवे रजोगुण देह मांज्यारे वरते त्यारे ॥ नाना प्रकारना रसने विषे ईछा वरते नेचंचलपणुं वरते ॥ नेरुपजे विषयनिरुपण करवा पणुं वरते॥ विग्रह पणुंवरते ॥ करुणा करवापणुं नवरते ॥ अत्यागपणुं वरते॥ नेवादविवाद सेववाने विषे प्रिति वरते॥ नेपरनी निंद्याने विषे प्रिति वरते॥ नेक्षणक्षण प्रत्ये सुखने सेववापणुंवरते ॥ नेक्षणक्षण प्रत्ये दुःखने सेववापणु वरते ॥ ने तंद्रापणु वरते नेवैर करवापणुं वरते ॥ नेवैरने सेववापणुंवरते ॥ नेअंतःकरणमां परितापवरते ॥ कोईकनुं हरिलेवापणुं वरते ॥ नेलज्यानुं नासवंत पणुंवरते नेअनाचारपणुं वरते॥ नेमांहोमांहे भेदपाडवापणुंवरते ॥ ने करडपणुंवरते ॥ हिंसावरते॥ कामवरते क्रोधवरते॥ लोभवरते दंभवरते॥ मदवरते नेहांसिठेकडिकरवा पणुं वरते॥नेविषयभोगभोगविने तृप्ति पणुं नवरते॥ एविरीते रजोगुणनां लक्षण जाणवां॥ हवे तमोगुणदेहमां वर्ततो होयत्यारे तम वरते॥ तामसवरते ॥ अंधतामसवरते॥ मोहवरते॥ महामोहवरते॥परमादवरते॥ करवानकरवानुं अविवेकपणुं न रते वृथा वरते॥ भय वरते दिनपणुंवरते अस्मृद्धि वरते॥शोक-वरते निंद्रावरते खेदवरते॥ आलसवरते॥ दिवसे सुवाने विषे रुचिवरते॥ नेगंधवास विहारने विषे प्रिति वरते॥पुष्पनासयनने विषे रुचिवरते॥ नेअज्ञानथकि नृत्यनेजोवु॥ वाजां सांभलवां॥ गायणुं सांभलवुं एत्रणने विषे श्रद्धावरते॥नेधर्मद्वेषि विशेषणकहेतां पोताना भुंडास्वभाव होय तेणे करिने धर्मवालापुरुषनुं आचरण नगमे॥ एविरीते तमोगुणिनां विसलक्षण जाणवां ॥ अनेएम गुणनारुपने जाणीने जेजे गुण वरततो होय तेते थकि पोताना आत्माने जुदो द्रष्टा मानवो॥ ने तेगुणना वेगमां पोताने भलवुं नहिं॥ पछे विरजि भक्ते प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज त्रण गुण थकि जिव केमसुकाय॥ पछे महाराज बोल्या जे एगुणथकी मुकायाहोय एवा जे पंचविषयना त्यागी मोटा संतते नो मलकम वचने समागम करवो॥ ने ते थकि आत्म विचार पामिने देह थकि असंगिपणे वरते ने आत्मारुप थईनेपर-

मात्मानुं ध्यान करे॥ नेदेहे करिने पंचविषयनो त्यागकरे॥ त्यारे त्रणगुणथ कि मुकाईनेब्रह्मरूपथईने अक्षरधामने
पामे॥ ॥इतिश्रीमुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमो नमः॥
॥ ॥संवत्१९ओगणिसें ॥२१॥एकविसना चैतरवदि॥१॥बिजने दिवसमहाराजश्रीहरिकृष्ण
भगवान गाम श्री गोल्लाणामध्ये भक्त कालुभाईने घेरआथमणे बारओरडानीओसरिमांढोलिया उपर बिराजमानथ-
या हता॥ अने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां॥ ने मुस्तकउपर गुलाबि रंगनो फेंटो बांध्यो हतो॥ अने पोतानासुखार्विंद
नीआगल साधु तथा घणा कहरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हति॥ पछे महाराज बो ल्याजे जिवने बेप्रकारनु बंधन छे
॥तेमांएकसत्यबंधनछे॥ नेएक असत्य बंधनछे॥ ते सत्यबंधनथकी जिवनु रुडुं थायछे॥ नेअसत्य बंधनथकि जिव-
नुं भुंडुं थाय छे॥ तेमां सत्य बंधन ते कियुं तो प्रत्यक्ष भगवान॥ तथा ते भगवाननाएकांतिक पंच विषयना त्यागि साधु
तेने विषेस्नेह करिने जे जीव बंधायछे॥ ते सत्य बंधनछे॥ ने तेथकि जिव भगवानना धामने पामे छे॥ अने काम लोभ
स्वाद स्नेह मान तेनेने विषे होयतेने विषे पंचविषयनी वासनाएकरिने जे जिव बंधायछे ते असत्यबंधन छे अने तेथ
कि जिव जे ते जन्म मृत्यु गर्भवास चोरासिने यमपुरि आदिकनां महादुःखने पामे छे॥ हवे ते असत्य बंधनने विषेजि
वकेई रिते बंधाणो छे॥ तेने कहिये॥ जे जिवने कामरूपि वासनाछे तेणेकरिने पुरुष स्त्रिमां बंधाणो छे॥ नेस्त्रियो पु-
रुषमां बंधाईयो छे॥ केमके तेथकि तेने कामरूपि विषय मलेछे॥ अने ते स्त्रि महान कारिनेनरकना कोथलारूप-
छे॥ नेकोटिकल्प थयां जिवने चोरासिमां कुतरां गधेडा बोकडा पाडा आदिकनकारा देह धरिने॥ तथा राजा देवताआ
दिक अनंत जन्म धरिने अनंत स्त्रियो रुपवान योषनवान जिषमात्रे भोगवियो छे॥ अने जिषे स्त्रियोना देह धरिने चो-
रासिमां कुतराग धेडादिक तथा राजादेवादिक अनंत पुरुष भोगव्याछे तो पण हजिसुधि॥ स्त्रिनेके पुरुषने कामथ
कि तृप्ति थई नथि॥ अने कोटि युग सुधि पण काम भोगविने त्रप्ति थायएम नथि॥ जेम अग्निमां घि जेम जेम व-

धारेधारे होमे तेम तेम वधारे वधारे भडकाथाय पण अग्निओल्हायनहिं॥ तेम कामजे स्त्रिभोग तेने भोगविने कोई जिवतृप्त
थयोनथिने थशेपणनहिं॥ अनेकामरुपी विषयेकरिने पुरुषजेते स्त्रिनोदासथयोछे॥ नेवगर पैसे नेवगर रासे नेवगर परणे
नेवगर हाकेबलदनीपेठे रातदिवस स्त्रिसारुकमायाकरेछे॥ अने स्त्रिछे तेपण कामरुपीवासनायेकरिने पुरुषनीगोलि
थईनेवगरपैसे नेवगरकहे रातदिवस गोलिपुकर्याकरेछे॥ नेएषिरीते स्त्रिपुरुष कामे करिने बंधाणा थका जन्ममृत्युने
चोराशिनामहाकष्टने भोगवेछे॥ अने बिजुं जिवने लोभनुंबंधनछे॥ तेलोभनीवासनायेकरिने द्रव्यादिक पदार्थना आप-
नाराजे पुरुष तेने विषे बंधाईने तेनुंगोलिपुकरेछेने तेनोदासथईनेवरतेछे॥ नेतेथकि जन्ममृत्युनेपामेछे॥ अनेत्रि-
जुं जिवनेस्वादनुं बंधन छे तेजेकोई सारुंसारुं खावानुंआपे तो जीव तेने विषे बंधायछे नेस्वाद रुपीविषये करिने तेने आ
धिनथईरहेछे॥ नेतेथकिजन्ममृत्युनेपामेछे॥ अनेचोथुंजिवनेदेहनुंबंधनछे॥ तेदेहने देहनासंबंधिनेविषे स्नेहेकरिने
बंधाणो थको रात्यदिवस असत्य एवीजे देह ने असत्यएवाजेदेहनांसंबंधि तेनोदासथईने तेनी सेवा कर्याकरेछे॥ने
तेथकि जन्ममृत्युनेपामेछे॥ अनेपांचमुं माननुं जिवनेबंधनछे॥ ते असत्य एवीजे देहने असत्यएवोजेवरण नेआ
श्रम तेने माने करिने तेनेजे कोई वखाणे नेमान आपे तेमांफुलिने तेनेवसथईनेतेमां बंधाई रहेछे॥ नेतेथकि जिव
जे तेजन्ममृत्युनेपामेछे॥ अनेते बंधनथकि जिवपोतानीमेले कोईकाले छुटवानेसमरथनथि॥ केमके अनादि-
नोज॥ जिवजेते पोतानुं ब्रह्मस्वरुप भूलिने नासवंतएवांजे मायिकपंचविषय तेमां असत्यवासनाए करिने बंधाईर
ह्योछे॥ तेअसत्यनेसंबंधेकरिने जन्ममरणनादुःखनेपाम्याकरेछे॥ अनेअसत्यबंधनेकरिने सत्पुरुष तेनेओल
खवामां नथिआवता॥ केमके ज्यांसुधि जिवने मायानुं बंधन होय त्यांसुधि तेनेसत्पुरुषओलखायनहिं॥ जेम
जेनीआंखमांकमलोहोय ते सर्वने पीलादेखे॥ तेमजे सकामिहोयते॥ सत्पुरुषने संगेरह्यो होय तोपण तेसका
मरुपिकमलेकरिने पोताजेवा सत्पुरुषने पणजाणे॥ पण ते सत्पुरुषनो महिमा जाणिशके नहिं॥ अनेज्यारे

जिव निष्काम भावे प्रथमथिज पोतानाआत्मानाकल्याण सारु सतपुरुषनो संग करे ॥ अने नवधा भक्तिये करिने
निष्काम भावे सतपुरुषने विषे जिव जोडाई जाय ॥ ने ते सत्पुरुषने विषे द्रढ बंधाय त्यारे जिव असत बंधन थकि मुका
ईने ब्रह्मरुप थाय ॥ अने ज्यां सुधि सकाम भाव राखिने सत्पुरुषनो संग करे त्यां सुधि तेने कोई काले मायानुं बंधन टल
तु नथि ॥ अने सकाम भावे करिने मुल्लगु दिवसे दिवसे जिवने मायानुं आवरण वधतु जाय छे ॥ ने ते सकाम भाव
वाळो पुरुष अंते जतां विमुख थाय छे ॥ ने अतिघ्नो जिवनुं भुंडुं करे छे ॥ माटे जेने पोताना आत्माने मायाना बंधन थ
कि मुकाववो होय ने महासुखियाथवुं होय तेने तो निष्काम भावे कल्याणकारि सतपुरुषनो संग करवो ॥ तो तेने
सत्पुरुषनो महिमा यथार्थ जणाय छे ॥ अने जिव अनादि कालथया सकाम भावे करिने पंच विषय भोगवे छे ॥ तोप
ण तृप्ति थयो नथि ॥ अने अतिदुर्लभ एवा जे कल्याणकारि सत्पुरुष तेने संगे रहिने जे सकामपणुं राखे छे
तेने तो महापाप जाणवुं ॥ केमके जे ठेकाणे वासना टलविजोईये तेज ठेकाणे वासना बांधि माटे एने एज मोटुं पाप
छे ॥ ते सारुं जेने पोताना आत्मानुं कल्याण ईच्छवुं होय तेने पोतानी श्रद्धाप्रमाणे निष्काम भावे भगवानने भग
वानना संतनि सेवा करवि ॥ पण भगवाननी सेवाने विषे सकाम भाव राखवो नहिं ॥ अने सकाम भावे करिने विष
यनी क्रिया थकि जिव जे ते अनादिनो असत्यमां बंधाणो छे ॥ ते हवे प्रत्यक्ष कल्याणकारिने विषे निष्काम भावे इंद्रि
यो अंतःकरणे करिने नवधा भक्तिवडे जिव द्रढ बंधाय ॥ तो असत्य मायाना बंधन थकि जिव मुकाईने ब्रह्मरुप थई
ने अक्षरधामने पामे छे ॥ अने पूर्वे पण जेणे जेणे निष्काम भावे प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति करि छे ते ज मायाना बंधन
थकि मुकाया छे ॥ ने ते मोटि पदविने पाम्या छे ॥ ते प्रल्हादे निष्काम भावे भगवाननी भक्ति करि त्यारे तेनी उपर
भगवान प्रसन्न थयाने कह्युं जे हे प्रल्हाद तुं वर माग्य ॥ जे मागे ते आपुं ॥ पछे प्रल्हाद बोल्या जे हे महाराज तमा-
रा भक्त थईने ॥ तमारी सेवा विना जे कांई तमारी पासे बिजुं मागे छे ॥ केमन मां कांई ईच्छा राखे छे ते तो तमारो

भक्तजनथि ॥नेए तो मायानो भक्त छे ॥ अनेहुं तो तमारो निष्काम भक्त छुं ॥ माटे तमारि सेवाविना बिजुं कांई छतो न-
थि तेमजेने पोताना आत्मानुं कल्याण ईछवुंहोय तेनेतो निष्काम भावे भगवानने भगवानना संतनी सेवा भक्ति कर-
वि ॥ अनेजे निष्काम भावे भगवानने संतनी सेवाभक्ति करशे तेने कल्याणना मारगमां कोई विघन आवशे नहिं ॥
अनेजे सकाम भावराखिने भगवानने संतनी सेवा करशे तेने जरुर कल्याणना मारगमां विघन आवशे ॥ एसिद्धां-
तवारताछे ॥ ॥इति श्री मुख्य सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिक्रस्नायन-
मो नमः॥ ॥संवत् १९ ओगणिसे २१ एकविसना चैतर वदि ३ त्रिजने दिवस महाराज श्रीह-
रिक्रस्न भगवान गामश्री गोल्लाणा मध्ये भक्त पुरमार दाजि भाईने घेर आथमणे बार ओरडानी ओसरिमां गादि तकिये
युक्त ढोलिया उपर विराजमान थयाहता ॥ अने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्याहतां ने कंठमां मोगरानां पुष्पना हार
नौभिरह्याहता ॥ नेबे कान उपर पुष्पना गुच्छ धारण कर्याहता ॥ ने पोताना मुख्यारविंदनी आगल साधु तथा घणा कह-
रि भक्तनी सभा भराईने बेठिहती पछे महाराजनी आर्त्ति धुन्य करिने सर्वे सभा बेठि पछे विराजि भक्ते प्रश्न पुछ्युं जे हे
महाराज ज्ञानिनां शां लक्षण छे ने अज्ञानीनां शां लक्षण छे ते कहो ॥ पछे महाराज बोल्याजे ज्यां सुधि देह ने देहना संबं-
धिना पोषणने अर्थे जे क्रिया करे छे ॥ अने ते पुरुष बहु बुद्धिवालो जणातो होय ने ते ब्रह्मांडनुं कारखानुं चलावए-
वो होय पंडित होय पुराणि होय ॥ ने सर्वे शास्त्रनां अर्थने जाणतो होय तथा त्यागि कहेवातो होय ने भेख लिधो होय तोप-
ण ते सर्वे अज्ञानी छे ने ते मूरख छे ॥ केमके नासवंत एवो जे देह ने नासवंत एवां जे देहना संबंधि तेना सुखने अर्थे जे जे
बुद्धि वावरे छे ॥ ते जमहा मूरख छे ॥ ने तेज अतिशे अज्ञानी छे ॥ अने जेजे पोताना आत्माना मोक्षने अर्थे जतन करे छे
ने तेजो नथि भण्यो ने तेनी थोडि बुद्धि जणाति होय ॥ अने लोकवेवारमां पण मोटो न कहेवातो होय तोपण तेज अ-
तिशे ज्ञानी छे ॥ केमके अविनासि एवुं जे पोताना आत्माने परमात्मा संबंधी सुख तेमां तेनी द्रष्टि पुगे छे ॥ अने

तेने अर्थे भगवाननी आज्ञा दृढपणे पाले छे ने भगवान भजवामां कोईनो दाब्यो दबातो नथि॥ अने ते लोक बेदे चारमां झा
झु समजतो होय अथवा न समजतो होय ने आत्मनो भणेलो होय अथवा वगर भणेलो होय पण तेज बुद्धिवालो छे॥
ने तेज अतिश्रेष्ठ ज्ञानी छे॥ अने ते विना ना सर्वे मूर्ख छे ने अज्ञानी छे ते झाझि बुद्धिवाला होय अथवा थोडि बुद्धिवाला
होय पण जे देह ने देहना संबंधीना सुख ने अर्थे जतन करे छे ते सर्वे मूरख छे ने अज्ञानी छे॥ अने जे पोताना जीवना
कल्याण ने अर्थे निष्काम भावे प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतने ओलखिने तेनो दृढ आसरो करे छे अने तेथकि
पंचविषयनी वासना टालवानो उपाय करेछे तेजज्ञानि छे॥ ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे॥ ॥

इति श्रीमुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥

संवत१९ ओगणिसे॥२१॥ एकविसना चैतर वदि ४ चोथने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री गढाडा म
ध्ये भक्त करसननथुने घेर उगमणे बार ओरडानी ओसरिमां खुरशि उपर विराजमान थया हता अने सर्वे स्वेत वस्त्र धार
ण कर्यां हतां ने मस्तके गुलाबि रंगनो फेटो बांध्यो हतो॥ अने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा क हरिभ
क्तनी सभा भराईने बेठि हति॥ पछे महाराज बोल्या जे जीवने एक निश्चात्मक बुद्धि छे॥ ने एक अनिश्चात्मक बुद्धि
छे॥ तेमां जेने ज्यां सुधि अनिश्चात्मक बुद्धि होय॥ त्यां सुधि ते अनंत प्रकारना क्लेशने पामे छे॥ जेम कोईक नी भुं
डि नठारि स्त्रि होय ते पोताना पतिने अनंत प्रकारे करिने पदार्थ सारु दुःख दिधा करे अने कोई वस्तु थकी तृप्ति
पामे नहिं॥ ने खातां पितां रात दिवस आ पदार्थ लाव्य आ पदार्थ लाव्य॥ एम ने एम कल्पांत कर्या करे ने पुरुषने
सुख आववा दे नहिं॥ तेम जेनि अनिश्चात्मक बुद्धि होय ते नेपण पंच विषयनी वासनाए करिने अनंत पदार्थ
नी कल्पना कर्या करे छे ने ते थकि जीवने अधर्मने मारगे चलाविने महाकष्टने पमाडे छे ने जन्ममृत्युने वारंवार भो
गवावे छे॥ अने जेने निश्चात्मक बुद्धि होय तेना जिवने अतिशे सुखने पमाडनारी छे जेम पतिव्रता स्त्रि होय तेणे

तानापतिनी रुडिरीते सेवाकरे अने ते पतिनी जेम आज्ञा होय तेम क्रिया करे पण ते पतिनुं वचन लेशमात्र लोपे नहिं तेम
जेनी निश्चयात्मक बुद्धि होय ते तो जिवनुं जेम हित थाय ते रीते धर्म ज्ञान वैराग भक्ति संबंधि निश्चय करे छे ॥ अने जे-
रीते आत्मानुं रुडुं थाय ॥ एवा पंचविषयना त्यागपणाना निश्चय करिने निरवासनीक जिवने करे छे ने महासुखने
पमाडे छे ॥ अने जेने निश्चयात्मक बुद्धि होय तेने ज प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय छे ने तेने ज भगवान —
नी आज्ञा दृढपणे पलाय छे ॥ माटे जेने निश्चयात्मक बुद्धि थाय छे तेने ज अमारा स्वरूपनो निश्चय थाय छे अने निश्चयात्म
क बुद्धि थवि ते पण प्रत्यक्ष भगवानने ते भगवानना साधु तेनी सेवाने तेनुं दरशन ने तेनो अंतरमां गुण लेवो ने तेनो स
मागम करवो ॥ तेणे करिने निश्चयात्मक बुद्धि थाय छे ॥ अने प्रत्यक्ष भगवान ने संतना द्रोह वडे करिने अनीश्चयात्मक
बुद्धि थई जाय छे माटे जेने पोताना आत्मानुं रुडुं करवुं होय तेने तो सावधान थईने अनीश्चयात्मक बुद्धिनो त्याग करि
ने निश्चयात्मक बुद्धि राखिने दृढपणे अमारा स्वरूपनो नीश्चय करिने धर्ममां दृढ वरतवुं ने अनीश्चयात्मक बुद्धि थाय
तेवा संगनो ने तेवा स्वभावनो त्याग करवो ॥ तो तेना जिवनो साक्षात्कार मोक्ष थाय छे ॥ एमां काई संशय नथि ॥ पछे
गामवरतलना भट लक्ष्मीरामे महाराजने प्रश्न पुछ्युं जे धर्म ज्ञान वैराग ने भक्तिनुं शुं रुप छे ते कहो ॥ पछे महाराज
बोल्या जे ल्यो एनो उत्तर करिये जे धर्मनुं रुप तो ए छे जे भगवाननी आज्ञा दृढपणे पालवी अने ते आज्ञा कोई देश
काळे पण लेशमात्र लोपाय नहिं ॥ ए रीते वरते तेनुं नाम धर्म कहेवाय छे ॥ अने ज्ञाननुं एरुप छे जे त्रणदेह त्र
ण अवस्थाने त्रण गुण ते थकि नोखो एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं ते आत्मा केवो छे तो अछेद्य अभेद्य
स्वरूप सत्तारूप अविनाशी एवो छे ॥ एम जाणिने वरण आश्रम नात जातनुं मान मुकिने सुखदुःख मान अ-
पमानने विषे समभाव राखवो तेनुं नाम ज्ञान छे ॥ अने वैरागनुं रुप ए छे जे भगवाननी मूर्त्ति विना पींड ने ब्रह्मा
डादिक प्रकृतिनुं कार्य मात्र ते नेविषे अत्यंत अरुचि वरते ॥ कहेतां तेने विषे वैरभाव वरते अने माईक सुख

माअनेकागविष्टा तुल्यजाणे तेनेवैराग कहियें ॥ अने भक्तिनुंएरुप छेजे पोताना आत्माने ब्रह्मरुप मानीने कहे तां ब्रह्मरु-
पथईने परब्रह्म एवाजे प्रत्यक्ष भगवान तेने विषे महात्म ज्ञानेसहित जेअत्यंत स्नेह तेनेपरा भक्तिकहियें अने ते
प्रत्यक्ष भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे निष्काम भावेदेहे करिने नवधाभक्ति करे छे ॥ अनेजेपरा भक्तिने पामे छे ॥ ते
पणपरा भक्ति छे ॥ अनेजे परोक्षपणे भगवान प्रगट न होय ने निष्कामभावे नवधाभक्ति करे छे तेने साधनभक्ति क
हिये ॥ तेएवि रिते साधन भक्ति करतां करतां प्रत्यक्ष भगवान तेने मले छे ॥ पछे तेपरा भक्तिने पामे त्यारेजतेनो आ
त्यंतिक मोक्ष थाय छे ॥ मांटेजेणे निष्काम भावे अनंत जन्म थयां परोक्षपणे साधनभक्ति करि हुशे ॥ तेनेज प्रत्यक्ष भ
गवाननो संबंध थाय छे ॥ नेतेज परा भक्तिने पामे छे ॥ पणते विना सकाम भावराखिने सजे एटलि भक्ति करे ॥
तोतेने प्रत्यक्षने विषे परा भक्ति थाय नहिं ॥ तेसारुं निष्काम भावे पोताना आत्माना कल्याणने अर्थे अमारी नेअ
मारा संतनी सेवा करवी ॥ एजपरा भक्ति छे ॥ नेएने कांई करवुं रहेतुं नथि ॥ ॥
इतिश्रीमुख सिद्धांतसमाप्तः ॥ ॥श्रीहरि कृष्णायनमोनमः ॥ ॥
संवत १९ओगणिसें ॥२२॥ बाविसना अषाड सुदि ॥२॥ बिजने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवानगामश्री
सोजित्रामध्ये. पटेल अजुभाईवसंनदासनेघेरउत्तरादाबारनी मेडिनी आगल चोकमां गादितकिये युक्त
ढोलियाउपर विराजमान थया हता ॥ ने सर्वेजरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां नेकंठमां घणाक धोलापुष्पना
हार धारण कर्या हता ॥ नेकान उपर पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता ॥ नेपाघमां तोरा लटकता हताने ललाट
ने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो नेपोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरि भक्तनी सभा भरा
ईने बेठि हती ॥ अनेमहाराजनी संध्या आरति थया पछी महाराज बोल्याजे सर्वेन्ना भलो एक वार्ता करिये
छैयें जे केटला क अधर्मि छे तेएमकहे छेजे ॥ वेदतो ब्रह्माये कर्या छे पणवेद अनादि नथि ॥ एमकहिने वेद

मांकह्याजे वर्णाश्रमनाधर्म तेथकिविप्रितवर्तेछेनेबिजानेभ्रष्टकरेछेनेपोतेपणभ्रष्टथायछे॥ नेएवाअधर्मिएमकहेछेजेआ
रुंज्ञानतोवेदथीपरछे॥नेतेज्ञाननीतोवेदनेगमनथिएमपापिछेतेकहेछे॥ पणजेवेदछेतेतोअनादिनाछे॥ केमकेआ-
त्यंतिकप्रलयनेअंतेवेदेपरमात्मानीस्तुतिकरीछे॥ त्यारेपरमात्मायेतेवेदनीस्तुतिनेसांभलिनेजगतनीउत्पत्तिकर
वासारुंअक्षरमांप्रवेशकरिनेअक्षरद्वारेमूलपुरुषसामुंजोयुं त्यारेपुरुषजाग्रतनेपामिनेपोतानेविषेरहतिजेप्रकृतितेने
जगाडिअनेतेप्रकृतिपुरुषथकिप्रधानपुरुषथयानेप्रधानपुरुषथकिमहतत्वथयुंनेमहतत्वथकित्रणप्रकारनोअहंका
रथयोनेत्रणप्रकारनाअहंकारथकिचोविशतत्वथयां॥नेचोविसतत्वथकिवैराटथयो॥नेवैराटथकिब्रह्माथयाछे॥
माटेब्रह्माथकिवेदथयाकेमकहेवायकेमेकेप्रथमवेदेस्तुतिकरि त्यारेजगतनिउत्पत्तिथईछेनेत्यारपछिब्रह्मातोथ-
याछे॥माटेवेदअनादिनाछे॥अनेजेवेदब्रह्मायेकर्याएमकहेवायछे तेतोवेदनीकविताब्रह्मायेकरिछे। तेणेकरिनेवे
दब्रह्मायेकर्याएमकहेवायछे॥जेमकोईककविहोयतेकोई भागवतादिकग्रंथउपरपोतेनविकाव्यकरेत्यारेतेग्रंथ
तेकविनोकरेलोकहेवायछे॥तेमब्रह्मायेमूलअनादिनावेदहतातेनाउपरफकतकाव्यकरिछे तेणेकरिनेब्रह्मा-
येवेदकर्याकहेवायछे॥ पणवेदतोअनादिनाछे॥ तेवेदशुंछेतोपरमात्मानास्वरूपनेपरिपूर्णपामवानुंजेज्ञानते
नुंनामवेदछे॥अनेतेपरमात्मानास्वरुपनाज्ञाननेजेपरिपूर्णपामेछे॥तेवेद मूर्त्तिकहेवायछे॥माटेपरमात्मा-
नास्वरूपनेयथार्थपरिपूर्णपोतेपरमात्माएकजाणेछे माटेपरमात्मानामुखनीवाणि तेनुंनामवेदछे॥ तेपरमात्मा-
एपोतेप्रथमलक्ष्मिनारायणनामेअवतारधारणकरिनेपोतानास्वरूपनुंवेदरुपज्ञानआप्युंछे॥ माटेजगतमांपणप्रथ
मपरमात्माथकिजवेदनीप्रवृत्तिथईछे॥नेपछेतेउपरब्रह्मायेकविताकरिछे। नेवलित्यारपछिव्यासजियेपणवेद-
नीकविताकरीछे॥नेतेवेदनाजअर्थसारिरीतेसर्वनेसमजायतेनेअर्थेछशास्त्रकर्यांछे॥नेतेशास्त्रनाजअर्थसा
रिरितेसरलपणेसर्वनेसमजायतेसारुंश्रीमद्भागवतादिकपूराणकर्यांछे॥ माटेवेदशास्त्रनेपूराणतेनोएकज

अर्थछे॥ नेतेसरवे सत्यछे॥ नेतेथीपर कोई ज्ञाननथि ॥ हवे तेवेदमां शुंकह्युं छे तोतेपरमात्माना स्वरूप ना ज्ञानने पाम
वासारुं कर्मउपासनाने ज्ञान कह्युंछे ॥ तेसत्पुरुषना मुखथकि कर्मउपासनाने ज्ञानने सिद्धकरे तो ते आत्मापरमा-
त्माना स्वरूप ना ज्ञानने पामे छे ॥ नेते निमुक्ति थायछे ॥ अनेजोअसत्पुरुषनामुखथकि कर्मउपासनाने ज्ञान ने सांभळ
शे तोतेनास्तिक भावने पामशे नेतेजिवनर्कमांजशे ॥ हवे सत्पुरुषजे तेकर्मउपासनाने ज्ञानने केविरीते सिद्धकरावे
छे॥ तोप्रथमकर्मकांडनुं ज्ञानआपे छे ॥ तेकर्मत्रणप्रकारनुं छे॥ कर्मअकर्म ने विकर्मएत्रणप्रकारनां कर्मछे तेमांकर्म
तेशुंतो सकामभावे वेदविहितएटले वेदमां कह्याप्रमाणे कर्मकरवां नेनुंनाम कर्म कहेवाय अने वेदनीमरजादाने तोडि
नेजे कर्म करवुं॥ तेनुंनाम अकर्मकहेतां अधर्म कर्मकहेवायछे अनेकर्मतोवेद विहित श्रुतिस्मृतिमां कह्युं छे तेप्रमा-
णेकरवुं ॥ पणतेनाफळनीईछानराखवि॥ कहेतां निष्कामकर्म करवुं तेनुंनाम विकर्म छे मांटेसत्पुरुषजेते मुमुक्षुने
अधर्मकर्मनोत्याग करावेछे॥ नेतेनाआत्मानामोक्षने अर्थे निष्कामकर्म करावेछे ॥ अनेतेनिष्कामकर्मे करिने अंतःक
रणशुद्धथायछे ॥ पछेतेनेज्ञानआपेछे॥ कहेतांदेहआत्मानोविवेक करावीने देहने मिथ्याकरिदेखाडे छे ने आत्मा-
नेसत्यकहिदेखाडे छेनेतेआत्मानेअक्षरब्रह्मसाथे एकताकरावेछे॥ तेनुंनाम ज्ञानछे ॥ अनएवुंज्ञानने निष्काम
कर्मएबेनेनेसीद्धकरावनारापुरुष ज्ञानदाता तेनीउपासना करवि कहेतां तेनी सेवाकरवि तेनुंनामउपासनाछे नेते
ज्ञानदाता जेतेआज्ञाबतावे ते प्रमाणेमनकर्मवचनेवरतवुं तेनुंनामकर्मछे॥ अने तेनिष्काम कर्मनेज्ञान एबेउपास
नाथकि सिद्धथायछे॥ अनेतेउपासना विना तो जिवनोमोक्षथतोज नथि॥ अनेतेउपासना विना कोईवातनीसिद्धि
तिनथि॥ अनेउपासनातोप्रथम थिदृढअक्षरधामनेपामे तोपण दृढकरिनेराखवायोग्यछे॥ नेतेउपासनानेराखशे
त्यारेजं तेअखंडसुखनेपामशे॥ पण तेविनाकोई सुखनेपमातुंजनथि॥ जेमघरनेमाळछे त्यारे प्रथम तेमांमो-
भनाखेछे॥ नेतेमोभने आधारे बेपडाळनावळियोवांसडाने नळियां रहेछे नेते घरमांरहेनारो सुखनेपामेछे अने

जो मोभने काढि नाखे तो ते घरमां रहेनारो दबाई मरे॥ ने वेपडालनां वलियो वांसडाने नलियाना भूका निकलि जा-
य॥ ने तेमां रहेनारो महादुःखनेपामे॥ तेम उपासनाछे ते तो मोभने ठेकाणेछे नेकर्मने ज्ञानछे ते तो बे पडालने ठेकाणे
छे॥ ते मोभरूप उपासनाने आधारे कर्म ने ज्ञान रह्यां छे॥ अने जो उपासनानो त्याग करे तो कर्मने ज्ञान बेनो नाश थ
ई जाय छे॥ माटे जेने मोक्षने पामवुं होय तेने तो प्रथमथी ते दृढ करिने उपासना दृढ करिने राखवि पण उपासनानो कोई
दहाडे त्याग करवो नहिं॥ अने एकलि उपासनाने राखे ने कर्म ने ज्ञान नो त्याग करे तोपण ते जिवनो मोक्ष थाय नहिं
ने महादुःखने पामे॥ जेम घर उपर मोभ एक नाखे ने वलियो वांसडा ने नलियां न चडावे तो तेने सुख थाय नहिं॥ तेम
उपासना राखे पण जो कर्मकांडरूप धर्मनी दृढता न होय तो तेनुं अंतःकरण कोई काले शुध थाय नहिं॥ अने अंतः
करण शुद्ध थया विना पोताना आत्मस्वरूपनुं॥ ज्ञान थाय नहिं॥ ने आत्मानाज्ञान थया विना परमात्मानुं स्वरूप ज-
णाय नहिं॥ ने परमात्माने जाण्या विना मुक्ति थाय नहिं॥ ए रीते सत्पुरुष जे ते कर्म उपासनाने ज्ञान सिद्ध करावीने
जीवने मुक्त करे छे॥ अने हवे जे असत्पुरुषछे ते जे ते कर्म उपासनाने ज्ञान तेमां विरुद्धपणुं देखाडिने जीवने नास्तिक
भाव दृढ करावे छे॥ ते असतपुरुष के रीते नास्तिक भाव आणावे छे॥ ने विरुद्धपणुं के रीते देखाडे छे तो वेदमां-
जिव ईश्वर ब्रह्म जे परब्रह्म जे परमात्मा तेना गुण कह्या छे ते था कर्म उपासनाने ज्ञानना गुण कह्या छे ते एक बिजाना
गुण उलटपालट छे॥ केहेतां अवला छे ते के रिते अवला गुण छे तो जिव जे ते करता छे ने अकर्ता पण छे॥ अने ईश्व
र पण कर्ता छे ने अकर्ता छे॥ तेमां जे ठेकाणे जिव करता छे ते ठेकाणे ईश्वर अकर्ता छे॥ ने जे ठेकाणे ईश्वर करता छे
ते ठेकाणे जिव अकरता छे॥ ते जिव कीये ठेकाणे करता छे तो कर्म करवां ते ठेकाणे जिव करता छे॥ अने कर्मनाफ
लने पामवुं ते ठेकाणे जिव अकर्ता छे केहेतां कर्मनाफलने जिव पोतानी मेले पामि न शकतो नथि माटे फल पामवा-
मां जिव अकरता छे॥ अने ईश्वर छे ते जे ते जिव जेवां जेवां कर्म करे छे तेवां तेवां तेने फल आपे छे माटे जीवने क-

र्मनां फल आपवां तेने विषे ईश्वर करता छे ॥ अने ईश्वरने कांई कर्म करवुं नथि माटे कर्म करवाने विषे ईश्वर अकरता छे ॥
अने ब्रह्म छे ते तो केवल अकरता छे ॥ केमके जिव ईश्वरने विषे मायानो संबंध छे त्यां सुधि करता अकर्ता पणुं कहेवा
यछे ॥ अने जो जिव ईश्वरने विषे थि मायादलि जाय तो तेने विषे थि करता अकर्ता पणुं पण टलि जाय ने केवल अक-
रतारूप अक्षरब्रह्म थायछे अने जे परमात्मा छे ते तो ॥ ॥कर्तुमकर्तुंनेअन्यथाकर्तुंसमर्थछे॥ ॥
हवे जीव केवो छे ॥ तो कर्म करे खरो पण तेनुं फल पामवुं ते जिवना हाथमां नथि ॥ माटे जिव पराधिन छे ॥ अने ईश्वर छे
ते जिव जेवां कर्म करे छे ॥ तेवुं फल ईश्वर आपि शके पण तेथि ओछुं के वधारे अपाय नहिं माटे ते पण स्वतंत्र करता नथि
अने ब्रह्म तो केवल अकरता छे ॥ माटे ते थकि पण कोईनुं काम थाय नहिं ॥ अने जे परब्रह्म परमात्मा छे ते तो कर
ता छे। ते स्वतंत्र करता छे ॥ कहेतां जिव ईश्वर माया पुरुषने अक्षर ते सर्वे परमात्मा नीज ईछा होय तेम करवाने स
मरथ छे ॥ पण परमात्मानी ईछा विना कांई करवाने समरथ नथि ॥ मादे परमात्मा स्वतंत्र करता छे ॥ अने वलि अक
र्ता छे कहेतां काल माया पुरुषादिक पासे जगतनी उत्पत्ति स्थिति ने प्रलय करावे छे ॥ पण पोते कांई नथि करता ॥
जेम राजा छे ते पोताना चाकर पासे राज्यनुं काम चलावे छे ॥ पण पोते कांई नथि करतो तेम परमात्मा जे ते कालमा-
यादिक पासे जगतनी उत्पत्ति स्थीति ने प्रलय करावे छे ॥ पण पोते नथि करता ॥ मादे परमात्मा अकरता छे ॥ अने
वलि च हाय तेम करवाने समरथ छे ॥ कहेतां जिवने ब्रह्मरूप करवाने समरथ छे ॥ अने ब्रह्मना भावने पाम्या होय
पण ते जो प्रत्यक्ष परमात्माना वचन थि वीरूद्ध वरते तो तेने जिव करवाने समर्थ छे पण बिजा कोई जिव ईश्वर ब्रह्म
ते थकि ए काम थाय नहिं ॥ जेम राजा छे ते पोतानी इछामां आवे तो रंक जेवो जिव होय तेने पोताना होलियानो चाक
र करिने राखे तो कोईनाथी हा के ना कहेवाय नहिं ॥ अने होलियानो चाकर होय ने ते जो राजानी मरजि लोपे तो तेने रांक
जेवो करि मेले ॥ तेम परमात्मा जिवने ब्रह्म करे ने ब्रह्मने जिव करे एवा समरथ छे मारे अन्यथा कर्तुं छे। हवे तेज भ

गवानपरमात्मा पोतानास्वरूपनुं ज्ञान जिवने आपिने ब्रह्मरुपकरवासारुं मायाने पार अक्षरमां रह्याथकामनुष्यस्वरूपनुंधारणक
रेछे।।अने तेमत्यक्ष परमात्माने तोकांईकर्म करवुंनथि नेकांईपामवुंनथि नेतेनेकोईकर्म बंधन करे एमनथि।। तोपण बिजाजि
वोने ज्ञानआपवासारुं मनुष्यनीपेठेसजातिपणे वरते छे ने जिवोनेज्ञानआपिनेमायापरकरे छे।। पछे जेअसतपुरुषछेतेअ-
ज्ञानी मनुष्योने एमउपदेश करे छे जेसांभलो भाईकर्म करयां तेकर्मफल ने भोगव्याविनाछुटको थायनहि एमवेदमां कह्युं
छे।। माटे रामकृष्णादिक भगवानतेणे दैत्यमार्या तथा जे जेकर्मकर्यां तेने भोगववां पडशे।।एमअसतपुरुषकहे छे।।
तेजिवने कर्मबंधन करे तेखरुं पण जेनीआज्ञाये करिने कर्मकरे तो पहेलानां अनंतजन्मनां कर्मनां बंधनतेथकि छुटि
ने जिवमायापरथईने अक्षरधाम नेपामिजाय।।एवाजे प्रत्यक्ष परमात्मातेने असतपुरुषछे तेएम कहे छे जे ते कर्मकरे छे ते
बंधनकरशे।। एमजाणिने मायापर करे।। एवाजेपरमात्मा तेने विषे दोषदेखाडिने जिवने असत्पुरुषजे तेनरकनाकुंड-
मांनाखे छे।।पणएम असत्पुरुष नसमजे जे एतो बधजिवोने मायापरकरवासारुं सजाति भाव देखाडे छे ।।पणते
ने विषेमायानो लेशनथि एमअसतपुरुष जाणिशकेनहिं।। माटे असतपुरुषजे ते घणाक जिवनुं भुंडुंकरे छे।।अनेब
लिकेटलाक तोएमकहे छेजे कृष्णने करवुं होयतेकरे।। जिवतुंसोचनाशिदने धरे।। ।।एमसमजिने शुभक
र्मादिक भगवाननीप्रसन्नतानासाधनतेनो पणत्यागकरेछे।। पछेएवानास्तिकनेसाधनकरावबासारुंअसत्पुरुषेएम
कह्युंके जो तुं कर्म करिश तोज सुखने पामिश।। पणकर्म कर्या विना कोई सुखमलशेनहिं।। माटेकर्मज सुखनादा-
ताछे।।एविरीते कर्मने विषे आस्था बंधाववासारुंकर्मनीपुष्टिकरि छे।। पणपछे असत्पुरुषेकर्मनेजकरताठराव्या
एम अवलुंसमजाविने अनादिकरताएवाजेपरमात्मातेने विषेथीआस्थाउठाविने नास्तिकभावआणाव्योनेमो
क्षनो मारग बंधकर्यो।।एविरिते असत्पुरुषजे ते कर्मनेजकर्ताजाणेछे।। अने तेकर्मना फलनाआपनाराएवाजे
परमात्माउपासनाकरवायोग्यनेजेथकि आत्मानुंकल्याणथाय तेनोत्यागकरेछे माटेएमसमजे तो मोक्षजरवे

टोथईजायछे ॥केमके जिव कर्म करे खरो पण तेकर्मनुं फल पामवुं ते जिवनेपोतानाहाथमां नथि जेमखेडुखेतरमां खेड
करे खरो पण वरसाद वरस्याथिनामूलनिपजे नहिं तेवरसाद ईश्वरनाहाथमां छे तेमपरमात्मानीउपासनाने भक्तिवि-
नाजिवपोतानीमेले कर्मसऊ जे एटलां करे तोपण तेनुं कल्याणथाय नहिं॥ अनेकदापिएकलिउपासनानेभक्तिहोय
ने तेने कर्मकांडरूपधर्म नहोय॥ नेदेहआत्मानेजुदाजाणिने आत्मापोतानुंस्वरूपसमजतो नहोय तो तेनुंपण कल्याण
थाय नहिं॥ केमके जेनेज्ञान नहोय ते भगवाननीसेवा करतो करतो देहनीपणसेवा करवामांडश्ये॥ अने ते देहने कोई सा-
सारापदार्थ आपश्ये॥ तो ते भगवाननेपडिआमुकिने तेनीसेवा करवा मांडश्ये॥ माटे तेनुं कल्याणपण नहिं थाय तेसारुं भग
वाननीउपासनाने तेनीआज्ञारुपि कर्म॥ नेआत्मापरमात्मानास्वरूपनुंज्ञान एत्रणे संपूर्ण जेनेहश्ये तेनुंज कल्याणथश्ये॥
माटेजेनेपोतानाआत्मानुं कल्याणकरवुं होय तेनेदेहपर्यंत कर्म उपासना नेज्ञान एत्रणेथाना द्रढकरिने राखवां॥ आ-
नेएत्रणेथानां संपूर्ण क्यारे सिद्ध थाय छे॥ नेसवलां क्यारे समजाय छे॥ तोज्यारे पृथ्विउपर परमात्मापोते प्रगट थयाहोय
॥तथापरमात्माना एकांतिक पंचविषयना त्यागि संत ते प्रगट होय ने तेनो आश्रय कर्यो त्यारेज तेनी सिद्धि थाय छे॥
नेसवलां समजाय छे॥ नेते जिवनो मोक्षथाय छे॥ माटे सर्ववातनी सिद्धिथवानो समो आज तमारे आव्यो छे॥ तेसम
जुहश्येतेचेतश्ये॥ नेमूर्खने आसक्त रहश्ये तेगोथांखाश्ये॥

॥इतिश्रीमुखसिद्धांत समाप्तः॥

॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥

॥संवत्१९ ओगणिसें॥२२॥बाविसनाअ
षाड शुदि॥१२॥ द्वादशिने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्णभगवान गाम श्रीसोजितरामध्ये पटेल नथुभाई गिरधरभा
ईनेघेर गादितकिये युक्त पलंगउपर विराजमान थयाहता नेसखेजरियानी वस्त्र धारणकर्यां हतां नेललाटने विषे कंकु
नोचांदलो कर्यो हतो॥ नेसर्वअंगमां पुष्पनां आभूषण धारणकर्यां हतां॥ नेपोताना मुखारविंदनीआगळ साधु तथा
घणाकहरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हति॥ पछे सर्व हरि भक्तप्रत्ये महाराज बोल्याजे मनुष्यदेहने पाम्योजे जिव

तेनेसत्संगजरूरकरवो ।। अनेसत्संगछे तेअतिशेदुर्लभछे ।। अनेसत्संगेकरिनेजिवनुंकल्याणथायछे ।। हवेसत्संगतेशुंतोस
त्यनोसंगकरवो तेनुंनामसत्संगछे ।। नेसत्यशुं छे ।। तोएकआत्मासत्यछे ।। नेबिजापरमात्मारामकृष्णादिकभगवान-
नाअवतारतेसत्यछे ।। नेत्रिजातेभगवाननाएकांतिकपंचविषयनात्यागिनिरवासनीकसंततेसत्यछे अनेचोथुंएत्रणे
नुंप्रतिपादनजेवणामांहोयतेशास्त्रसत्यछे ।। अनेएचारेनोमनकर्मवचनेसंगकरवोतेतुंनामसत्संगकहियें ।। अनेएसत्सं
गथकिउलटोएटलेअसत्यछे ।। नेतेअसत्यनोसंगकरवोतेनुंनामकुसंगछे तेकुसंगेकरिनेजिवनुंभुंडुंथायछे नेसत्संगेक
रिनेजिवनोमोक्षथायछे ।। तेसत्संगक्यांरह्योछे ।। अनेकुसंगक्यांरह्योछे ।। तोमायापरएवाजेप्रत्यक्षसत्पुरुषतेनासंबंधमां
सत्संगरह्योछे ।। अनेमायापरकरेएवाजेसत्पुरुषतेनेविषेदोषनादेखाडनारानेपंचविषयनेभोगवनारानेबिजानेभोग
वावनाराएवाजेअसत्पुरुषतेनासंगमांकुसंगरह्योछे ।। हवेसत्पुरुषकोणछे नेतेकेवाछे ।। तोक्षरनेअक्षरएबेनाआ
धारएवाजेपरमात्मातेजेतेजिवोनीउपरकृपाकरिनेपोतानुंस्वरूपजणाविने जिवोनेमायापर करवा नेअर्थेनेपृथ्वि
उपरएकांतिकधर्मनुंस्थापनकरवानेअर्थेनेअधर्मनोनेअसुरनोनाशकरवा नेअर्थे पोतानीस्वईछायेकरिनेपोताना
अक्षरधाममांअखंडरह्याथकापृथ्विउपररामकृष्णादिकअवतारनुंधारणकरेछे ।। तेजएकसत्पुरुषछे नेतेनेसद्गुरु
कहेछे ।। नेतेनांजन्मकर्मादिकसर्वेदिव्यछे ।। नेकल्याणकारिछे नेअवतारादिकनाजन्मकर्मादिकनेदिव्यजा
णीनेतेनुंगानकरेछे ।। तेआत्मामायानेतरिनेब्रह्मरूपथायछे ।। नेतेअक्षरधामनेपामेछे ।। हवेतेप्रत्यक्षएवाजेसद्गु-
रुरूपपरमात्मातेजेतेदयाकरिनेवेदनुंतत्वसारएवुंजे आत्यंतिकज्ञानतेपोतानेचरणेआव्याएवाजेजिवोतेने
आपेछे ।। तेज्ञाननांचारअंगछे ।। एकधर्म ।। बिजुंज्ञान ।। त्रिजुंवैराग्यनेचोथुंभक्तिएचारेमांथीप्रथमजिवनेधर्मनोउ
पदेशआपेछे ।। तेधर्मतेशुंतो अनादिकालथयांइंद्रियोनीवृत्तियोअनियमपणेवर्त्यांछे तेणेकरिनेजिवनेघणांक
पापलाग्यांछे ।। तेपापनेबालवानेअर्थेनियमआपेछे ।। तेनियमशुंतो कानइंद्रियेकरिने भगवाननीकथावारता

लिलाचरित्र तेनुं श्रवण करवुं॥अने जगतनां पंच विषयनो भोग संबंधि जे ग्राम वारता तेनो त्याग करवो ॥अने त्वचा इंद्रियेकरिने भगवानना चरणारविंदनो स्पर्श प्रितियेकरिने करवो ॥अने ते विनाविषयाशक्तियेकरिने स्त्रिपुरुषादिकना स्पर्शनो त्याग करवो ॥अने नेत्रेकरिने भगवानने भगवानना एकांतिक विषयना त्यागि संत तेनां दरशन करवां ॥अने स्त्रियादिकनां रुप जोवां नहिं ॥एविरिते इंद्रियोनी वृत्तियोने जगतना माईक विषयने पापरुप जाणिने त्याग करिने तेने भगवानना स्वरूपमां राखवां तेनुं नाम धर्म कहेवाय छे॥ अने ते धर्मे करिने इंद्रियोनां पाप सर्वे नासपामि जाय छे ने अंतःकरण शुद्ध थाय छे ॥अने एविरीते धर्मने विषे द्रढता क्यारे थाय छे॥ तो सत्गुरु रुपे परमात्मा ने तेना संत प्रत्यक्ष मले छे॥ ने तेनो आश्रय जिव करे छे त्यारे धर्मने विषे निष्ठा बेसे छे॥ पण परमात्माने संत मळ्या विना कोईने धर्म द्रढ थतो ज नथि माटे धर्ममां द्रढता थवि ।ते पण भगवाननी क्रुपा जाणवी ॥अने जेने धर्मने विषे निष्ठा नथि ॥अने जेम मननी खुशि मोआवे तेम चाले छे ॥तेने भगवाननो कोप जाणवो ॥माटे जेने पोताना आत्मानुं कल्याण ईछवुं॥ तेने प्रत्यक्ष ज्ञानदाता एवा जे परमात्माने परमात्माना संत ते नि आज्ञा बराबर पाळवि। अने जेने धर्मनी द्रढता थई होय तेने ज्ञान थाय छे ॥पछे तेने सत्पुरुष ज्ञाननो उपदेश आपे छे॥ जे देह ने आत्मा बे जुदा छे। अने तेमां जे आत्मा छे ते पोतानुं स्वरुप छे ने ते आत्मा देहादिकनो द्रष्टा छे।ने ते आत्मा सत्य छे ने अविनासि छे सुखरुप छे प्रकाशवान छे ज्ञानरुप छे ॥अने जे देह छे ते मिथ्या छे ने जड छे दुःखरुप छे नर्करुप छे अंधकाररुप छे।एवि रिते देहादिक पिंड ब्रह्मांड ते पापरुप जाणवुं ॥अने जे जेने जे जाणे तेथि ते जाणनारो जुदो होय छे॥ केमके ज्यां जाणनारो होय त्यां जाणवा योग्य पदार्थ होय नहिं ॥अने ज्यां जाणवा योग्य पदार्थ होय त्यां जाणनारो होय नहिं ॥ तेम देहने जाणनारो आत्मा ते देह नथि ।अने जाणवा योग्य जे देह ते आत्मा नथि माटे दश इंद्रियो ने पांच भूत ।एजे पंदर तत्वनो स्थूळ देह तेने जाणनारो आत्मा छे॥ ते आत्मा देहथी जुदो छे॥ अने तेमज चार अंतःकरण ॥ मन बुद्धि चित्त ने अहंकार ॥अने पांच विषय ॥शब्द स्पर्श रुप रस ने गंध ॥एनव तत्वनो सूक्ष्मदेह तेने जा

णनारोआत्माछे॥ माटेतेथिपणआत्मानोखोछे॥ हवेस्थूलनेसूक्ष्मएबेदेहथीआत्माजुदोतोखरोपणतेआत्माकेवोछेएमपोते
पोतानेजाणतोनथि॥ तेनजाणवारूपजेअज्ञान॥ तेअज्ञानने पणआत्मायेजाण्युत्यारे तेअज्ञानथकिपणआत्मानोखो
लख्यो॥ केमकेअज्ञानने पणआत्मायेजाणुंमाटेजेनेजेजाणे तेथि तेजुदोहोय॥ एविरीतेत्रणशरिरथीनोखोपड्यो एवोजेआत्मा
तेकेवोछे॥ तोत्रणदेहनेजाणिनेतेथिनोखोपड्यो एवोजेआत्मा तेनेएमअनुभवथायछे॥जेहुंअज्ञाननहिंत्यारेहुंज्ञानछुं
॥कहेतांहुंब्रह्मछुं॥ नेदेहादिकसर्वमिथ्याछे॥ एमजाणिनेतेदेहादिकनाअभिमाननेछोडिनेपोतानाआत्मानेविषे
द्रढस्थितिथायछे॥एविरीतेत्रणदेहातितथईनेआत्मानेविषेजेहुंपणुंमानवुं॥ तेनेतुरियापदकहेवायछे॥अनेतेनेम-
हाकारणदेहकहियें॥ माटेतेमहाकारणनेजाणनारोपणआत्माछे॥ माटेतेथिपणआत्माजुदोछेएविरितेदेहआत्मानोवि
वेककराविनेतेदेहथीनोखोपाडिनेआत्मसत्तानेपमाड्योएवाजेप्रत्यक्षसद्गुरु तेवैरागकरावेछे॥ अनेवैरागविनामा-
याटळतिनथि॥ केमकेएककोरेपोतेआत्माछे॥नेएककोरदेहादिकमायाछे॥ माटेमायादृष्टिमांज्यांसुधिआवे
त्यांसुधितेनेकोईकदहाडेबंधनकरेखरीमाटेतेमायानेटाळवानेअर्थेचारप्रकारनाप्रळयनोविचारआपेछेजे॥
नित्यप्रलय॥निमितप्रलय॥प्राकृतप्रलय॥ नेआत्यंतिकप्रलय॥एचारप्रकारनाप्रलयघडेकरिनेपिंडब्रह्मांडा-
दिकनासपामिजायछे॥अनेजेनेएवुंज्ञानथायतेनेजगतदृष्टिमांआवतुंनथि॥अनेतेनेजगतदेखायछेतोपणजे
म स्वप्नांबधांदेखायछेतेमदेखेछे॥ पणजेमस्वप्नांबधांमिथ्याछेतेमजगतमिथ्याछे॥नेवस्तुगते कांईनथि॥अनेते
मिथ्याभ्रांतियेकरिनेजोवासनारहिजशे तोकोटानकोटियुगसुधिजन्ममरणनेपामवुंपडशे एविरितेमहापाप-
पजाणिने पिंडब्रह्मांडादिकसर्वपदार्थनेविषेअत्यंतअरुचिकरवि॥कहेतांतेनेविषेवैरभावकरवो।अनेजेने
जगतपदार्थनोअभाबथयो॥ तेनेवैरागकहियेअनेएवाज्ञाननापमनाराएवाजेप्रत्यक्षपरमात्मानेतेनाएकां-
तिकसंततेनेविषेप्रितिकरवितेनुंनामभक्तिकहेवायछे हवेतेपरमात्माकेवाछे तोचौदलोकनुंएकअ-

ह्मांड ॥ तेचौदलोकनां नाम ॥ अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल, महातल, नेपाताल ॥ एथांसात लोक हेठां छे ॥ ने
भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक, सत्यलोक ॥ एसात लोक उंचां ॥ एचौदलोकनुं एक
ब्रह्मांड कहेवाय छे ॥ अनेएवांएवां अनंतकोटि ब्रह्मांड छे ॥ तेनो करताने कारण एक सबल ब्रह्म रूप प्रकृति पुरुष छे ॥
अनेएवा अनंतकोटि प्रकृतिपुरुष छे अने ते सर्वे प्रकृतिपुरुष अक्षरब्रह्मना कोकदेशाने विषे लिन थई जाय छे ॥
जेम दिवसने विषे रात्रि लिन थई जाय छे ॥ तेम अक्षर ब्रह्मनाप्रकाशना कोकदेशाने विषे अनंतकोटि प्रकृतिपुरुष-
रुपसबल ब्रह्मते लिनपणे रहे छे ॥ अनेएवुं जे शुद्ध चैतन्य ब्रह्म अक्षर तेतो आत्मानुं स्वरुप छे अनेएवि स्थितिने पाम्या
ते ब्रह्मरुप मुक्त छे ॥ अनेएवा अनंतकोटि अक्षर ब्रह्मरुप महामुक्त तेना स्वामिने तेना आधारने ते सर्वे मुक्तने अ-
खंडसुखना आपनारा पर ब्रह्म परमात्मा छे ॥ ते परमात्मा जे ते अल्पजेवा जिवोने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान आपिने
अक्षर ब्रह्मरुप महामुक्त पदविने पमाडवा सारुं पोते अक्षरधाममां अखंड रह्याथका स्वइच्छाये करिने आपृथ्वि उप
र मनुष्याकृतिनुं धारण करे छे ॥ अने ते प्रगट भगवान ने भगवानना संतमुक्तनो जे जिव आश्रय करे छे ॥ तेने अभ
यपदनुं दान आपे छे ॥ एवा अद्भुत महिमावाळा जे भगवानने भगवानना संत ते आज प्रगट छे ॥ अनेएवो जे प्रत्य
क्षपरमात्माने संतनो महा मोटो उपकारने दयाने कृपा तेने जे जिव जाणे छे ते तो प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतनो
आश्रय तत्काळ करे छे ॥ ने पोताना जिवात्मानुं काम सुधारि ले छे ॥ अनेएवा खरा प्रत्यक्ष परमात्मानो तो सर्वने ए
कवार खप छे ॥ बाईने खप छे ॥ भाईने खप छे ॥ ब्राह्मणने खप छे ॥ क्षत्रिने खपने वैश्यने खप छे ॥ शुद्रने खप छे ॥ ब्र
ह्मचारिने खप छे ॥ वानप्रस्थने खप छे ॥ संन्यासिने खप छे ॥ एविरिते चारवरणने चारआश्रमवाळा सर्वे मनुष्योने
प्रत्यक्ष सद्ज्ञानदाताना खप छे ॥ केमके ते सर्वने माथे अज्ञान करिने जन्ममरण रह्यां छे ॥ ते प्रत्यक्ष परमात्माना ज्ञा
न विना बिजा कोटि साधन करे तोपण जन्ममरण टळे नहि ॥ त्यारे कोई एम आसंका करे जे परमात्मा विना बिजा को

ई सत्पुरुष मले तो तेने ज्ञाने करिने मृत्यु टले के न टले ॥ तो त्यां कहिये छैये जे प्रत्यक्ष परमात्माना श्रीमुरखना ज्ञान विना तो मृत्यु टले ज नहिं ॥ केमके आत्माने परमात्माना स्वरूपना साक्षात्कार ज्ञान विना मृत्युं टलवुं नथि अने आत्माने परमात्मा तो माया थि पर छे ॥ माटे जे ज्ञे मायामां होय तेणे मायाप रनु ज्ञान साक्षात्कार कराविनाकाय नहि ॥ केमके जे नुं ज्ञान पोताने परिपूर्ण थयुं न होय तेवुं ज्ञान बिजाने केम आपिशकाय ॥ न आपिशकाय ॥ ते मजेने आत्मापरमात्मा नुं ज्ञान थयुं नथि ॥ ते बिजाने आत्मापरमात्मानुं ज्ञान केम आपिनाके अने जेने एकवार आत्मापर मात्माना स्वरूपनुं साक्षात्कार ज्ञान थाय छे ॥ ते आत्मा देह मुकिने भगवानना धामने पामे छे ॥ ते पछे पाछो फरिने पृथ्विउपर देह धरिने ज्ञान आपवा आवतो नथि ॥ अ नेजे जन्म धरे छे ॥ तेने हजि परिपूर्ण ज्ञान थयुं नथि ॥ माटे पोताने हजि परिपूरण ज्ञान थयुं न होय ते बिजाने क्यांथि ज्ञान आपिनाके ॥ न ज आपिनाके ॥ माटे परमात्मा विना बिजा कोई थकि आत्मापरमात्मा नुं आत्यंतिक ज्ञान अपावुं नथि ॥ तेसारुं ॥ ॥कर्तुम कर्तुं ने अन्यथा कर्तु समर्थ ॥ ॥एवाजे परमात्मापर ब्रह्म ते पोते जिवोनी उपर कृपा करिने ज्ञान आपवा सारुं पोतानी स्वई छाथी अक्षर धामने विषे दिव्य मूर्त्तिमान रह्याथका पृथ्विने विषे मनुष्यने दृष्टि गोचर थाय एवा रुपनुं धारण करे छे ॥ पछे पोताने चरणे आव्या एवाजे दैविजिवो तेने पूर्वे कह्यो जे धर्म तेने विषे बराबर वरतावे छे ॥ अने ते धर्ममां थि कोईने लगारे फेर पडे छे तो तेने परमात्मा पोते शिक्षा करे छे ॥ ते चार वरण ने चार आश्रम वाला सर्व मनुष्योने माथे परमेश्वरनो बांधेलो धर्म रुपी कायदो छे ॥ अने ते एक परमात्माने मांथे कोईनो कायदो नथि ॥ केमके परमात्मा तो मायापर छे ॥ अने बिजा जिवो तो सर्व मायामां छे ते ज्ञे मायामां होय ते मायामां मोह पामे छे ॥ अने परमात्मानी दृष्टिमां तो माया छे ज नहिं ॥ माटे परमात्माने कोई काले मोह थातो ज नथि ॥ ते सारुं एक परमात्माने माथे विधि निषेध नथि ॥ अने परमात्मा विना बिजा देव ब्रह्मादिक सर्वने मांथे विधि निषेध छे अने जे परमात्मानो वादखइने विधिनिषेधने तोडिने वरते छे ते तो महापापि छे ने तेने नास्तिक जाणवो ॥ अने ते नो

जे संग ते कुसंग छे॥ ते कुसंगि केवा छे तो सतपुरुषे जिवोना कल्याणने अर्थे धर्म ज्ञान वैराग्यादिक साधन बताव्यां छे ते साधनने कुसंगि अवला प्रवर्तावे छे॥ के हेतां सत पुरुष धर्मे करिने इंद्रियोने नियममां रखावे छे त्यारे तेने असतपुरुष एम उपदेश करे जे भाई कोई नियम राखवो जनहिं॥ अने जे नियम राखे छे ते तो अबूरा छे॥ एम कहिने नियमने तोडावे छे॥ ने जिवोने अधर्मने मार्गे चलाविने नर्कना कुंडमां नाखे छे॥ अने सतपुरुष जे ते जिवोने आत्मानुं ज्ञान कराववा सारु देह आत्मानो विवेक कराविने आत्माने पोतानुं स्वरूप मनावे छे ने देहना सुखनो त्याग करावे छे॥ त्यारे तेने असतपुरुष शुं केहे छे के भाई सां भलो आत्मा कोणे दीठो छे॥ माटे खावुं पिवुं ओढवुं पेहेरवुं ते ज रुडुं छे॥ एम समजाविने देहना सुखनो ज उपायक रावे छे॥ अने तेमां धर्म अधर्म पाप पुंन्य ने गणता नथि ने मद्य अधर्मने मार्गे चलावे छे ने केटलाक भोळा लोकोने भ्रष्ट करे छे॥ अने सतपुरुष जे ते चार प्रकारना प्रलयनो विचार आपिने सर्वे माईक पदार्थने विषे थि वैराग्य पमाडे छे ने पदार्थनो त्याग करावे छे॥ ने एक भगवानने विषे प्रिति करावे छे॥ त्यारे तेने असतपुरुष शुं कहे छे के भाई आगल कोण जोई आव्युं छे माटे आज सुख भोगववुं ते रुडुं छे॥ एम कहिने केवल पदार्थने विषे लोलुप करावे छे अने सतपुरुष जे ते सर्वे जगतना करता हर्ता एवा जे परमात्मा भगवान तेनी महात्मे सहित भक्ति करावे छे तेने असतपुरुष शुं कहे-छे जे॥ भाई घट घटमां बोले छे ते परमात्मा छे॥ वळि बिजो कोण परमात्मा छे॥ एम कहिने असतपुरुष जे ते सत्शास्त्र ने सतपुरुषना सत् सिद्धांत थकि अवला वाक्यो बोलिने केवल चोरयो नर्कनो मारग प्रवर्तावे छे माटे एवि जातनां वचन बोलता होय तेने असतपुरुष जाणवा॥ अने तेनेचंडाल तुल्य जाणिने तेना संगनो त्याग करवो अने सुधर्म॥ सुध ज्ञान॥ सुध वैराग ने सुद्ध महात्मे सहित परमात्मानी भक्ति ए चार साधनने दृढ कराविने ब्रह्मने विषे स्थिति करावनारा एवा जे सतपुरुष तेने सद्गुरु जाणवा॥ ने तेने कल्याणदाता जाणवा॥ अने एवा सद्गुरु रूप परमात्माने तेना संत तेने जिवनप्राण जाणिने तेनो दृढ आश्रय करवो ने तेनी आज्ञामां मन क्रम वचने वर्तवुं॥ अने एवा प्रत्यक्ष भगवान

ने भगवान ना संतनो आश्रय करवो॥ त्यारे जजिवनुं कल्याणथवो॥ अने ते भगवानपण सर्व जिवनुं कल्याण करवा सा-
रुं प्रथ्वीउपर प्रगटथाय छे॥ माटे ते प्रगट भगवान तो त्यागि गृहस्थ बाई भाई सर्वेना गुरु छे ने सर्वेने उपदेश आपवाने
समरथ छे॥ ने सर्वेनी सेवाने ग्रहण करे छे॥ ते दया करिने सेवानुं ग्रहण करे छे॥ ने दया करिने उपदेश आपे छे॥ ते कोई
बाई माणस होय ने ते एम कहे जे मारे भावे करिने थाल करिने अथवा करावि ने जमाडवा छे॥ तो ते नो थाल दया करिने जमे
छे॥ ने तेने ज्ञान आपे छे॥ ने तेना कामादिक दोषनो नाश करे छे॥ अने स्त्रियोने उपदेश आपिने तेनी सेवानुं ग्रहण क-
रिने निरलेप रहेवाने तो एक प्रत्यक्ष परमात्मा ज समरथ छे॥ अने ते स्त्रियोने पण एक प्रत्यक्ष परमात्मा निज सेवा क
वा योग्य छे॥ ने ते प्रत्यक्ष परमात्माना उपदेश थकि ज स्त्रियोनुं तो कल्याण थाय छे पण ते परमात्मा विना बिजा कोई ने उपदे
शे करिने के बिजा कोई नी सेवाये करिने स्त्रियोनुं कल्याण थाय नहिं॥ ने ते प्रत्यक्ष भगवान विना स्त्रियो बिजा पुरुषनी सेवा
करे छे के बिजा कोई नो उपदेश सांभले छे॥ तो ते स्त्रि पुरुष बेय भ्रष्ट थाय छे॥ ते स्त्रु जे एवा मोटा कहेवाता होय॥ पण
स्त्रियादिक विषयनी वासनावाला होय ते नी सेवा करे के तेनुं ज्ञान स्त्रियो सांभले तो ते भ्रष्ट थाय ने ते स्त्रि पुरुष बे
कल्याणना मारगथकि पडि जाय छे॥ ते पूर्वे केटलाक नारदादिक मोटा मोटा ने॥ स्त्रिपुरुषने परस्पर संबंधे करिने भ्र
ष्ट थया छे॥ ने तेने कलंक लाग्या छे अने परमात्माना अवतार जे रामकृष्णादिक ते तो स्त्रियोने उपदेश करिने॥ ने स्त्रि-
योनी सेवाने ग्रहण करिने निरलेप रह्या छे॥ अने ते स्त्रियोनुं पण साक्षात्कार कल्याण थयुं छे॥ माटे एवा महाउपकार्य
रूप जे प्रत्यक्ष परमात्मा भगवान तेने विषे जे दोष परठे छे॥ ते तो महा पापी छे अने तेनो जे जे संग करे ने तेनी जे वात सांभ
ले॥ ने तेनी वातने माने ते जिव नर्कमां जाय छे माटे जेने पोताना आत्माना कल्याणने ईछवुं॥ तेने एवा राम कृष्णादिकने
विषे दोष नाखवाडनारा जे आसुर तेनो संग करवो नहिं॥ ने तेनुं कह्युं पण मानवुं नहिं॥ ने ते निंदा का ले नाम अनधर-
तां प्रत्यक्ष सद्गुरु रूप हरि तेनो आश्रय बाई भाई सर्वेने दृढ करवो॥ अने बिजा पोताना सगा संबंधि स्त्रियो पुरुष होय

ते सर्वे ने प्रत्यक्ष भगवाननो आश्रय करवो ॥ ने सेवा कराववी ॥ अने प्रत्यक्ष परमात्माने तेना संत जिवने मलवा घणा जदूर्लभ छे ॥ अने तेवो समो पोताने प्राप्त थाय त्यारे तो पोतानुं अतिन्हो मोटुं भाग्य मानीने प्रत्यक्ष भगवाननो अखंड सेवाने समागम राखवो ॥ अने ते सेवाने समागममां जे जे अंतराय करे तेने शत्रु जाणिने तेनो तत्काल त्याग करवो ॥ ने पोतानां मा बाप तथा नातजात कुल कुटुंब तथा कोई पोतानो स्वभाव इत्यादिक जे जे प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा तथा समागम करवामां अंतराय करे तेनो तत्काल त्याग करवो ॥ अने प्रत्यक्ष भगवाननो द्रढ आश्रय करवो ने पोताना आत्मानुं काम करि लेवुं ॥ एज मनुष्य देहनो उत्तम लाभ छे ॥ अने एम जे नथि समजता ने प्रगट भगवानने भगवानथी जे जे छेटेर दे छे ते तो महा मुरख छे ॥ ने ते तो आत्मघाति छे ॥ ने तेनुं कल्याण कोई काले थवानु नथि ॥ ॥इति श्री मुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्री हरिक्रष्णाय नमो नमः॥ ॥संवत १९ आगणिसें ॥२२॥ बाविसना आषाड शुदि ॥१५॥ पुरणमासि ने दिवस महाराज श्री हरिक्रष्ण भगवान गाम श्री सोजिंतरा मध्ये व्यास कुबेरजि इश्वरने घेर दक्षणादे बार ओरडानी आगल चोकमां गादि तकिये युक्त पलंग बिछावि ने ते उपर विराजमान थया हता ने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हता ॥ ने कंठमां मोगराना पुष्पना घणा कहार सो भिर ह्या हता ॥ ने हाथने विषे बाजुने गजरा धारण कर्या हता अने बे कर्ण उपर पुष्पना गुच्छ सो भिर ह्या हता ने पाघमां बे कोरे तोरा लटकता हता ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे पटेल कानजि भाई प्राग भाई ये महाराजने प्रश्न पुछ्युं जे दैवि ने आसुरि बे प्रकारना जिव शुं ने करिने थया हशे ॥ पछे महाराज बोल्या जे दैवि ने आसुरि बे प्रकारना जिव अनादिना छे ते ब्रह्माये प्रथम सृष्टि करि ते दिवस थिज आसुरि ने दैवि बे प्रकारना जिव उत्पन्न थया छे एम शास्त्रमां पण लख्युं छे ॥ माटे बे प्रकारना जिव अनादिना छे केमके ब्रह्मा ने विषे त्रण गुण रह्या हता ॥ ते तमोगुणे करिने जे श्रष्टि करि तेमां आसुरि जिव उत्पन्न थया छे ॥ ने जे रजोगुणे करिने श्रष्टि करि ते मां दैवि आसुरि मिश्रित जि

उत्पन्न थया छे ॥ अने जेम सत्वगुणे करिने अधिकारी तेमां दैवि जिव उत्पन्न थया छे ॥ माटे दैवि ने आसुरि बे प्रकारना जिव अनादि
ना छे ॥ पछे वलि काशि भाई ये प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज ए आसुरि जिवनुं कल्याण थाय के न थाय पछे महाराज बोल्या जे आ-
सुरि जिवनुं कल्याण तो कोई काले थाय नहि ॥ अने कल्याण तो दैवि जिवनुं ज थाय छे ॥ अने जे ब्रह्माना रजोगुण थकि सृष्टिमां
आव्या एवा जे दैवि आसुरि ॥ मिश्रीत जिव तेने जो आसुरि जिवनो संग थाय तो ते जिव आसुरि थई जाय छे ॥ अने जो तेने
दैवि जिवनो संग थाय ॥ तो ते जिव दैवि थाय छे ॥ ने तेनुं कल्याण थाय छे ॥ अने जे अनादिना दैवि जिव छे ॥ ते तो आसुरि
नो संग करता नथि ॥ ने ते कोई काले आसुरि थाय ज नहिं ॥ अने जे अनादिना आसुरि जिव छे ते कोई काले दैवि थता नथी
ने तेनुं कल्याण थतुं नथि ॥ अने जे दैवि आसुरि मिश्रित जिव छे ॥ तेने आसुरिने संगे करिने ॥ आसुरभाव आव्यो होय ॥
अने तेने पाछो सत्पुरुषनो संग थाय तो ते जिव दैवि थाय छे ॥ अने तेनुं कल्याण थाय खरुं पण जे अनादिना आसुरि जिव छे तेनुं
तो कल्याण थतुं ज नथि ॥ हवे आ लोकमां दैवि ने आसुरि बे प्रकारना जिव छे ॥ तेने ओलखवानी ए रित छे जे जे दैवि जिव
होय ते अंतःकरणने पोताने वस वरतावे छे ॥ अने जे आसुरि जिव छे ते अंतःकरणने वस पोते वरते छे ॥ ते जे दैवि जिव छे
ते तो पोताना आत्माना कल्याणने अर्थे इंद्रियो अंतःकरणने भगवानना भजनमां जोडि दे छे अने जे आसुरि जिव छे ॥
ते इंद्रियो अंतःकरणने वस थईने मायानुं कार्य जे स्त्रि छे तेने भजे छे ॥ ते दैवि जिव भगवानने भजिने भगवानना अक्ष-
रधाममां जाय छे ॥ अने आसुरि जिव स्त्रिने भजिने नरकमां जाय छे ॥ तेमां भजन करयानां त्रण अंग छे ॥ एक प्रितिये
करिने भजे छे ॥ ने बिजुं स्वारथिपणे भजे छे ॥ ने त्रिजुं ज्ञाने करिने भजे छे ॥ तेमां जे दैवि जिव छे तेने प्रितिनुं अंग होय
ते प्रितिये करिने भगवाननुं भजन सेवा स्मरण ध्यान करे छे ने भगवानने आधिन थईने भगवाननी आज्ञामां वरते छे
तथा भगवानना एकांतिक निरवासनीक संत तेनी आज्ञामां वरते छे ॥ पण दैवि जिव भगवान ने भगवानना सं-
तनी आज्ञा कोई दीवस लोपे नहि ॥ अने इंद्रियो अंतःकरणने भगवाननी सेवामां जोडि दे छे ॥ एवि रिते भगवान

नी आज्ञामां वरते छे तेने प्रिति वाळो देषि जिव जाणवो ॥ अने आसुरि जिवने प्रितिनुं अंग होय ते माया रुपजे स्त्रि तेने विषे
षे प्रितिये करिने जोडाय छे अने ते आसुरि जिव स्त्रिनी आगळ प्रीतिपे करिने दिन आधिन पणे वरते छे ॥ अने ते स्त्रि थकि
थई जे प्रजा तेने विषे पण अतिशे प्रितिये करिने वश थई जाय छे ॥ अने ते प्रजाने कांई कवि घ्न लागे छे ॥ त्यारे ते आसु-
रि जिव अतिशे परितापने पामे छे ॥ अने ते स्त्रि ने स्त्रि थकि थई जे प्रजा ते नी सेवामां हाजर उभो रहे छे अने तेनुं वचन ले-
श मात्र लोपे नहिं ॥ ए विरिते स्त्रिने स्त्रि थकि थई जे प्रजा तेने आधिन वरते छे तथा बुद्धि रुप जे स्त्रि ने ते बुद्धि रुप स्त्रि थकि
उत्पन्न थई जे इंद्रियो अंतःकरण रुप प्रजा तेने आधिन वरते छे ॥ अने ते इंद्रियो अंतःकरणना विषयमां लोलुप वरते छे ॥
एवि रिते आसुरि जिव मायाने विषे प्रितिये करिने जोडाय छे ॥ अने हव जे दैवि जिव ने शूरविरपणानुं अंग होय ते शुरवि
पणे भगवानने विषे जोडाई जाय छे ॥ अने भगवाननी सेवा करवामां ने आज्ञा पाळवामां कोई अंतराय करवा आवे तो ते-
नो शूरविरपणे नास करे छे ॥ ने कोई नो रोक्यो रोकाय नहिं ॥ अने ते नां इंद्रियो अंतःकरण भगवाननी आज्ञाने विषे थरथर
कंपे छे जेर रखे भगवानने भगवानना संतनी आज्ञा लोपाय नहिं ॥ एविरिते दैवि जिव शूरविरपणे भगवानने भगवानना
संतनी सेवा ने भक्ति करे छे ॥ अने आसुरि जिव होय ते शूरविरपणे मायामांथि उत्पन्न थई जे बुद्धि तथा स्त्रि तेने भजे छे
अने ते स्त्रि नि आज्ञामां थर थर कंपे छे ने जेम स्त्रि कहे तेम करवाने शुरविरपणे तत्पर रहे छे ॥ अने इंद्रियो अंतःकरण ते
बुद्धि रुप जे स्त्रि ना छोकरा छे तेनी सेवामां तत्पर रहे छे कहेतां इंद्रियो जे जे विषयनी इछा करे छे ते ते विषय तेने भोग
वावे छे ॥ अने ते विषय भोगववामां धर्म नियम निति अनिति तथा वेद लोक तेनी मर्यादा आदि जे जे अंतराय करे ते ने
ततकाळ त्याग करे ॥ अने अनियम अनिति अधर्म मां प्रवर्ते ते ने आसुरि जिव जाणवो ॥ अने जे दैवि जिव ज्ञानि छे ते-
ज्ञाने करिने भगवानने भगवानना निरवासनिक संत तेने भजे छे ॥ अने दैवि भक्त ज्ञाने करिने जिवना रुपने जाणे ॥
इश्वरना रुपने जाणे ॥ मायाना रुपने जाणे ॥ ब्रह्मना रुपने जाणे ॥ परब्रह्मना रुपने जाणे ॥ भगवान करता छे ॥ अकर्त्ता

ता छे तेनेजाणे ॥ सगुण कहेवाय छे तेनेजाणे निरगुणनेजाणे साकार भगवान छे तेनेजाणे निराकार कहे तेनेजाणे ॥
एकदेशि पणुंजाणे ॥ सर्वदेशि पणुं जाणे ॥ एवि रितेसर्वना रूपनेजाणि ने मायाना परपंच नो त्याग करिने पोते ब्रह्मरू
पथइने ॥ प्रत्यक्षएवाजे ज्ञानदाता परमात्मा भगवान तेनीसेवाभक्तिये करिने तेने विषे जोडाई जायछे नेते भगवानवि
ना बिजे क्यांई तेने वासना के प्रितिहोयनहिं ॥ एवोहोयतेने ज्ञानी देवि जिवजाणवो ॥ अनेजे आसुरि जिवहोय
तेज्ञाने करिने माया ने भजे छे तेके विरिते भजे छे तो ते विषय भोगववाने विषे रस शृणगारादिकने विषे कुशलहो
य ॥ अनेमायाना पदार्थनेमेलववि बहु जाणतो होय अनेजगतमां राजनीतियो ने नानाप्रकारनी कामदारियो तथाफो
जदारियो तथा वकिलातो तथा पटलाईयो तेने बहु करिजाणतो होय अने तेमां धर्म अधर्म पापपुंन्य नीतिअनीति-
कांई नगणतां मायाना पदार्थ मेलविने पोताने घेर गाम ग्रास करि जाणे ने पोतानी स्त्रि छोकराने अर्थे मेडियोह
वेलियो कराविजाणे तथा स्त्रि छोकराने घरांणां वस्त्र पहेरावयां ॥ तथा छोकराओ ने परणाववां तेणे करिने स्त्रिछो
कराने लाड लडाववां तेमां डहापणदार होय ॥ अने पोते पंचविषयने भोगविने देहे करिने सुखिरहेवुं ॥ ने स्त्रिछोक
राने विषय भोगवावीने सुखीराखवां तेने विषे कुशल केहेतां डाह्याहोय पण तेआसुरिजिव भगवान भजवा मां
के संतना समागम करवामां के तेनीसेवा करवामां के धर्म नियम पालवामां समजता होयनहिं ॥ जेम दैवि जिवज्ञा
ने करिने माया ने मीथ्याजाणिने तेमाईक विषयने भोगववामां समजतानथि ॥ केहेतां माईक विषयने कोई दिवस
भोगवता नथि ॥ तथा माईक पदार्थ भेगां करवामां पण समजतानथि ॥ तेम आसुरि जिव भगवान भजवामां नेधर्म
पालवामां समजेनहिं अने एवा आसुरिनुं कल्याण कोई काले थतुंज नथि ॥ केमके आसुरि जिवहोयते सत्पुरु
ष कल्याणदाता प्रगट थयाहोय तेनीपासे समागम करवा आवेज नहिं ॥ अने कदापि आसुरि जिव सत्पुरुषपा
सेजाणे अजाणे आवे ॥ तो ते सत्पुरुषने विषे थी दोषनुंज ग्रहण करीने उलटो पापनोज पोटलो बांधेछे ॥ जेमकाग-

डो छे ते गायना उपर बेशिने खाद्यज खोले छे तथा बगलो छे ते गंगाजिमां जईने मांछलां मारे छे तेम आसुरिजिव होय ते सत्
पुरुषपासे जईने दोषनेज खोले छे ॥ पण आसुरि जिव भगवानके भगवानना निरवासनिक संत तेनो गुण ले जनहिं माटे आ
सुरिनुं कल्याण थतुं नथि ॥ अने एवा आसुरिस्वभाव जेने विषे जणाय ॥ तेनो संग कल्याणना खपवालाने करवो नहिं ॥ अने-
विषयना त्यागिने धर्मज्ञानवैराग ने प्रत्यक्ष भगवाननी भक्तिये युक्त एवा जे भगवानना भक्त संत तेनो समागम ने तेनी
सेवा करवि ॥ अने जे दैवि जिव होय ते तो सत्पुरुषनो अवगुण लिये जनहिं ॥ अने दैवि जिव तो सत्पुरुषनो आश्रो करिने
तेनी आज्ञामां रहिने पोताना आत्मानुं काम सुधारि ले छे ॥ अने जे एवा अनादि दैवि जिव होय तेने सत्पुरुषनो समा
गम थया आगाउ कांईक धर्म नियमने विषे थोडि घणि गाफलाईये करिने खोटुं होय पण ते ज्यारे प्रगट भगवानके भग-
वानना निरवासनीक पंचविषयना त्यागि संत मले छे ॥ त्यारे ते दैवि जिव तत्काल ते अधर्म अनियमनो त्याग करिने
सत्पुरुषने विषे प्रितिये करिने तथा ज्ञाने करिने तथा स्थिरपणे जोडाई जाय छे ॥ ने धर्म नियमनी द्रढता करे ने तेनुं अं
तःकरण इंद्रियो भगवानने संतनी प्रसंनता होय तेम करवा लागे छे ॥ एवि रीतनुं जे अनादिना दैवि जिव होय तेनो लक्षण
छे ॥ माटे जेने कल्याण नेईछवुं तेने दैवि जिवना गुण जोईने तेनो समागम करवो ॥ अने जे जिव आसुरिना स्वभावे युक्त
होय ॥ तेनो संग करवो नहिं ॥ एवि रीते समजिने जे जिव अमारि भक्ति करशे ने अमारी आज्ञा पालशे तथा अमारा एकां
तिक संत पंचविषयना त्यागिने निरवासनीक तेनी सेवा करशे ने तेनी आज्ञा मां वरतशे तेनु साक्षात्कार कल्याण थ
शे ॥ अने अमारी ने अमारा संतनी सेवा ने आज्ञा पाल्या विना कोईनुं कल्याण थयुं नथि ने थशे पण नहिं अने जे अनादि
ना दैवि जिव छे ते प्रत्यक्ष मुने ओलखे छे ॥ ने अमारी आज्ञाने अमारा संतनी आज्ञा मां दैवि जिव यथार्थ वरते छे ॥ ने तेनुं
कल्याण थाय छे ॥ अने जे आसुरि जिव होय ते परोक्षपणे शास्त्रमां कह्या प्रमाणे धर्म नियम जप तप करता होय ने वि
षयना रागिने पाखंडि एवा जे वेषधारि साधु संन्यासि तेनी सेवा करता होय पण तेणे प्रत्यक्ष अमारी आज्ञा मां रहे

हे वायनहि ॥ तथा मुने ओळखि पणशाके नहिं ॥ तथामारा निरवासनिक संत तेने पण तेआसुरिजिव ओळखिशाके नहिं तथाते-
नी आज्ञा पण ते पालिशाके नहिं ॥ ने तेनुं कल्याण पण थतुं नथि ॥ माटे प्रत्यक्ष भगवानने तेना निरवासनीक संत तेनी आज्ञाय
थार्थ पाळे छे ॥ तेज दैवि जिव छे ॥ ने तेनुं आने आजन्मे कल्याण थशे ॥ अनेजे प्रत्यक्ष भगवानने अमारा नीरवासनिक पंचविष
यना त्यागि धर्मानंद स्वामि तथा अक्षरमुक्तानंद स्वामि जेवा संत तेनी आज्ञा लोपे छे तेज आसुरि जिव छे ने तेनुं कल्याण को
ई काले थतुं नथि ॥ माटे रामकृष्णादिक भगवानना अवतार तेनी आज्ञा पाळे छे ने ते प्रत्यक्ष भगवानना संत तेनी आज्ञा पाळे
छे तेनुंज कल्याण थाय छे ॥ ॥इतिश्री मुख्य सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृ-
ष्णाय नमो नमः॥ ॥संवत॥१९॥ ओगणिसें॥२२॥ बाविसना आषाड वदि पडवाने दिवस महाराजश्री
हरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजित्रा मध्ये व्यास कुबेरजी ईश्वरने घेर दक्षणादे बार ओरडानी रवेशमां गादितकिया बि-
छाविने तेउपर विराजमान थया हता ने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्या हतां ॥ अने सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषण सो
भित्यां हतां ॥ ने केकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने
बेठि हति पछे महाराज सर्वे हरिभक्त प्रत्ये बोल्याजे सर्वेने अमे प्रश्न पुछिये छैये ते जेने उत्तर आवडे ते करजो ॥ ते प्रश्न ए
छे जे त्रण प्रकारना भगवानना भक्त छे ते त्रण प्रकार किया तो उत्तम मध्यम ने कनिष्ठ ए त्रण प्रकारना भक्त छे ते मां उत्तम भक्त
नां केवां लक्षण छे ॥ अने मध्यम भक्तनां केवां लक्षण छे ने कनिष्ठ भक्तनां केवां लक्षण छे ते कहो ॥ पछे तेनो उत्तर हरि
भक्ते करवा मांड्यो पण कोईने आवड्यो नहिं ॥ पछे सर्वे हरिभक्ते कह्युं जे हे महाराज एनो उत्तर तो तमे करशो त्यारे थशे
पछे महाराजश्री हरिकृष्ण महाप्रभुजि बोल्याजे कनिष्ठ भगवाननो भक्त होय ते प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा भक्ति समाग
म करे ॥ पण पोताना मननी रुचि प्रमाणे करे ॥ अने तेना मनना गमता थी बिजि रिते अमे पंडे कगावियेतो तेने करे नहिं
ने ते मांहे रेक प्रकारनी युक्ति करिने अंते जतो पोताना मनना धार्या प्रमाणे करे ॥ पण ते विचारे करे नहिं ॥ एविरीत-

नांजेनांलक्षणहोय तेनेकनिष्ठभक्तजाणवो ॥अनेजेमध्यम भक्तहोय तेभगवाननेसंतनागमताप्रमाणे भगवाननीसेवा-
भक्तिसमागमकरेपण तेमांइंद्रियोनेप्रीयलागेएवि सेवाभक्तिहोयते करवामां बहु राजि थाय ॥ ने तेनेउमंगेथिकरेअने
इंद्रियोने प्रियनहोय तेमांराजिनथाय ॥अनेते सेवानेकरे तोखरोपण श्रद्धायेरहित अणमणतोथको करे तेइंद्रियानेप्रीयेने-
अप्रियते शुंतो अमनेजलनो प्यालो भरिनेपावोहोय तोदोडिनेराजिथकोपाय ॥तथाअमने कांईक मिठा मेवा फलफला-
दिकजमाडवुंहोय तोउमंगे थिजमाडे ॥ अने जोअमारो दिसाए जवानो लोटो उटकवोहोय तथाअमारिपिचदानिउटक
वीहोय॥ तोतेबेक कठणपडे॥ नेअणमणतोथको उटके॥ एविरितेप्रीय अप्रिय मांराजिपो नेकुराजिपोजे नेहोयअने तेने
अमेजेआज्ञाकरिये तेमकरेतोखरोपण तेनेसेवानेविषे सारोनरसो भावरह्योहोय तेनेमध्यम भक्त जाणवो॥ अनेजेउत्तम
भक्तहोय ॥ तेतोप्रत्यक्ष भगवाननीसेवानेविषे सारोनरसोभेदसमजेजनहिं ॥अनेतेनेतो भगवानीजेजे सेवाभक्तिहोय
तेनेपोतानुंमोटुं भाग्य मानिने राजीथकोकरे ॥अनेवलि जेउत्तमभक्तछे॥ तेने निचिसेवामले त्यारेतो मनमांघणोरा-
जिथाय॥ केमके भगवाननीसेवाछे तेनेविषे तोउंचोनीचो भावनथि ॥अनेप्रत्यक्षभगवानने प्रत्यक्षभगवाननीसर्वजे जेसे
वाहोय तेतोजिवनाअनंतजन्मना पापनेबालिनेभस्मकरिने जिवने तत्काल ब्रह्मरूपकरेएविछे तोपण इंद्रियोनाजोवा
मांउंचोनिचो भावआवेछे॥ तेमाटेउंचाभावनेविषे मननेकांईकमान रहेछे अनेनिचाभावनेविषे निरमानिपणुंरहेछे॥
जेमजेअमारोथालकरतोहोय तेनाआगलअमाराथालनांवासणउटकतोहोय तेनिरमानीरहेछे नेथालकरनाराने
मानरहेछे॥ माटेजेउत्तमभक्तछे तेभगवाननीसेवानेविषे उंचोनिचोभेदनथी समजता ॥तथापि निचिटेलमलेतो
पोते आनंदनेपामेछे॥अनेतेतोजेमअमारिआज्ञाहोय तेप्रमाणेजकरे॥ नेतेमांज परमआनंदनेपामे एथांजेनांल-
क्षणहोय तेनेउत्तम भक्तजाणवो ॥एविरीतेउत्तममध्यमने कनिष्ठभक्तनांलक्षणछे॥ पण हवे तमनेएकबिजुंप्र-
श्नपुछुंछुं॥जेकनिष्ठभक्तछे तेनेमध्यमथवानोशोउपायछे॥अनेजेमध्यमभक्तछे तेनेउत्तम थवानो शोउपायछेतेकहो

पछे तेनो उत्तर कोई थी थयो नहिं ॥ पछे महाराज बोल्या जे सांभळो अमे तेनो उत्तर करिये ॥ जे कनिष्ट ने मध्यम बेय भक्त
ने उत्तम थवानो उपाय ए छे जे तेने उत्तम भक्तना जेवा गुण पोताने विषे धारवा ते केविरिते गुण धारवा तो जेम उत्तम भ
क्त भगवाननी सेवा स्रद्धा महात्मे सहित देहे करिने करे छे ॥ ते विरिते भगवाननी सेवा करवानो पोताने मनमां भाव
धरवो ॥ अने भावे करिने प्रथम तो जे वीरिते उत्तम भक्त देहे करिने भगवाननी सेवा करे छे ॥ ते विरिते पोताने भगवा
ननी मूर्तिने हैयामां धारिने भगवाननी मानसि पूजा करवि ॥ ते एकवार सवारमां स्क्ताउठिने आसन उपर बेसिने जेवा
भगवानने पोते दिठा होय तेवा ने तेवा हैयामां धारिने कहेतां मनमां भगवानने संभारिने तेने एम जाणवुं जे भगवान-
पोढ्या हता ॥ ते जाग्या पछे ते भगवानने बे हाथ जोडिने माथुं चरणारविंदमां नमाविने पगे लागवुं ॥ पछे कोमळ दातण
प्रभुजिने आपवुं ॥ ने सोनानी पीचदानी पासे मुकवि ने एक गर्म जलनो लोटो भरिने आगळ मुकवो पछे एम जाणवुं
जे प्रभुजिये दंतधावन करिने दातण चिरिने उलउतारि तेने पछे पोते जलनो लोटो लईने दातणनी चिर धोवराविने
ते चिरो ने प्रभुजिना हाथमांथि लेई लेवी ॥ पछे प्रभुजिने मुखमंजन कराववुं ॥ पछे मुखारविंद लुवा सारु एक स्वेत रु
माल आपवो ॥ पछे मुख लुई रह्या एटले चाखडियो प्रभुजिने पेहेरवा आपवी ने एक जलनो लोटो भरिने बैरभोमिये
प्रभुजी जाय त्यां पोताने भेगा जवुं ॥ पछे जलनो लोटो मुकिने पोताने पाछुं वलवुं ने प्रभूजि बहिरभोमिये गया छे ए
म मनमां धारवुं पछे जाणवुं जे बहिरभोमियेजईने प्रभूजि आव्या ते सामा दोडिने लोटो प्रभूजीनो हाथमांथी लेई ले-
वो ॥ पछे बाजोठ उपर रेसमनो चाकळो बिछाविने ते उपर प्रभूने बिराजमान करवा ॥ पछे बिजो गरम जलनो लोटो
भरिने मटोडि लेईने प्रभूजिना हस्तकमळ धोवराववा ॥ ने कोगळा कराववा ॥ चरणारविंद धोईने ते प्रभूजिना चरणारविं
दने कोरे स्वेत वस्त्रे करिने लोवां ॥ पछे फूलेल तेल अंतर दूध दहिं इत्यादिक पंचामृते करिने प्रभुजिनुं अंग चोळिने प
छे उना पाणिनी कुंडियो भरिने लोटा वते प्रभूजिने नवराववा ॥ ने पछे एक स्वेत वस्त्रे करिने शरिर लुईने पछे एक स्वेत

धोयेलो कोरो खेस प्रभुजिने पहेरवा आपवो ॥ नेएक बिजो गुलाबि कोरालो स्वेत खेस ओढवा आपवो ॥ पछे रुपानी चाखडियो पहेरवा मोटा आगलमुकवि ॥ नेएक रुपानी छडि प्रभुजिना हस्तकमलमां आपवि ॥ पछे एमजाणवुं जे प्रभुजि चाखडियो उपर चडिने पधार्या ॥ तेएक सुंदिर मंदिर मां सेज पलंग तथा हिंडोला खाट बिछाविने तेउपर प्रभुजिने विराजमान करवा ॥ पछे केशर चंदननी आड प्रभुजिना ललाटने विषेक रचि ॥ ने कंकुनो चांदलो करवो ॥ पछे भारे भारे वस्त्र धारण करावयां ॥ अनेऋतु प्रमाणे पुष्प सुवर्णादिकना आभूषण प्रभुजिने धरावयां ॥ पछे दूधपेंडा बरफि टोपरा पाक गुंदरपाक दूधपुरीयो साकर आदिक अनंत प्रकारना मेवा मिठाई ते प्रभुजिने जमवा आपवुं ॥ पछे जलपान कराविने ॥ पछे सोपारी एलचि काथो चुनो पानआदिक सुखवास जमवा आपवो ॥ पछे धूपदिपे करिने आरतिउतारवि ॥ नेपछे दंडवत् परकंमा करिने पछे प्रभूजिनी स्तुति करवि ॥ जे हे दीनबंधु दयासिंधु हे भक्तवत्सल ॥ हे अधमउधारण ॥ हे पतितपावन ॥ हे चरणांगत् प्रतिपाल ॥ हुं तमारे शरणे आव्यो छुं ॥ ते हे प्रभु मारा अंतरशत्रुजे काम लोभ स्वाद स्नेह ने मान ते थकि मारि रक्षा करजो ॥ तथा शब्द स्पर्श रुप रस ने गंध ॥ एजे पांच विषयनी वासना ते थकि मारि रक्षा करजो ॥ केहेतां विषयनी वासना टालजो ॥ अने तमारा चरणारविंदने विषे मारे प्रितिथजो ॥ तथा तमारा संतने विषे प्रितिथजो ॥ अने देहने विषे अहंबुद्धि ने देह संबंधि पदार्थने विषे ममताबुद्धि ॥ तेनो नास करजो अने तमारा चरणनी ने तमारा संतनी मुने अखंड सेवा आपजो ने तेसेवाने विषे मारे अतिशे भावथजो ॥ अने तमारा संत पंचविषयना त्यागि तेने विषे प्रितिथजो ॥ एटलां वानां मुने दया करिने आपजो ॥ एवि रिते मनवडे करिने सवारमां भगवाननी मूर्त्तिने संभारिने मानसि पूजा करवि ॥ ने ते भगवान जाणिये आपणा उपर प्रसन्न थया तेउभा थईने आपणने बाथमां घालिने मल्या तेएक वार मलवुं ॥ बेवार मलवुं ॥ एविरिते जेटलो पोताने प्रेम उपजे ॥ तेटलीवार भगवानने मलवुं ॥ पछे पोतानुं काम काज नाहावुं धोवुं पोतानी देह क्रिया करवि ॥ अने त्यार पछि बिजिवार भगवाननी मानसिपुजा करवि ॥ ते मां मोटा भात भातना पाकशाकादिक पकवान करिने थालज-

माडवो ॥ ने धूपदिप आर्तिस्तुतिदंडवत् प्रक्रमा करवुं ॥ ने पछे प्रभुजिने मुखवास जलपान कराविने पछे पोढाडवा बिजणो ले-
ईने वायरो नाखवो ॥ पगचंपि करवि ॥ ने एम जाणवुं जे मारा आत्मारुपि मंदिरमां भगवान अखंड रह्याछे अने तेज भगवान बहार
रामकृष्णादिक रुपे मनुष्य स्वरुपे दरशन आपे छे एम जाणिने ते प्रत्यक्ष भगवाननी मानसिपूजा महात्मे सहित गदगद कं-
ठ थईने करवि ॥ अने ते घिज रीते जेम घटे तेम्म माणे साजनी वखते भगवाननी मूर्तिने मनमां संभारिने मानसिपूजा कर-
वि ॥ अने जे एविरिते भगवाननी मानसि पूजानो अभ्यास करे तो ते भक्तनुं कनिष्टपणुं अने मध्यमपणुं मटिने ते उत्तम भक्त
थाय छे अने ते भक्तने पछे देहे करिने प्रत्यक्ष भगवाननी सेवाने विषे अतिनोश्रद्धा वृद्धि पामे छे अने ते भक्तने विषे उत्तम भ-
क्तना गुण आवीने निवास करे छे ॥ अने तेने कनिष्टपणुं ने मध्यमपणुं टलि जाय छे ॥ ने उत्तम भक्त थाय छे केमके जे जे काम क-
रवुं होय ॥ ते कामनो प्रथम मनमां ठराव थाय छे ॥ पछे ते काम देहे करिने थाय छे ॥ अने मनमां जे काम थयुं न होय ते काम देहे क-
रिने थतुं नथि ॥ माटे उत्तम भक्त थवानो एज उपाय छे ॥ जे प्रथम तो उत्तम भक्तना जे वा गुण पोताना मनमां धारवा ॥ केहेतां
उत्तम भक्त जेम प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा देहे करिने प्रत्यक्ष करे छे ॥ ते विरिते पोताने मनमां भगवाननी मूर्तिने धारिने भ-
गवाननी मानसिपूजा करवा मांडे त्यारे तेने पछे देहे करिने भगवानने भगवानना निरवासनी कसंतनी सेवा करवानी
अडचण रहेतीनथि ॥ माटे जेने भगवानना उत्तम भक्त थवुं होय तेने भगवाननी मानसिपूजानी त्ये नियमे सहित कर-
वी ॥ अने जे भगवाननी मानसिपूजा करे छे तेनो जिव अतिशे बलने पामे छे ने तेने भगवानने विषे अतिनो प्रेम थाय छे ॥
अने जेने भगवानने विषे प्रेम थाय छे तेने भगवाननी सेवाने विषे कोई जातनो अंतराय रहेतो नथि ॥ अने ते भक्त भगवा-
ननो उत्तम भक्त थईने भगवानना अक्षरधामने पामे छे ॥ माटे जेने भगवानना उत्तम भक्त थवुं होय तेने भगवाननी मान-
सिपूजा करवि ॥ एज उत्तम भक्त थवानो उपाय छे ॥ माटे भगवानना भक्तने भगवाननी मानसिपूजा करवि ॥ अने भग-
वाननी मानसिपूजा कर्या विना भगवानना उत्तम भक्त कोई काले थवातुं ज नथि माटे जेने उत्तम भक्त थवुं होय तेने

अखंडस्मरणने पामयुंहोय तेनेअमारि मूर्तिने संभारिने तेजमूर्तिनी मानसिपूजा प्रथमकह्युं ते प्रमाणे नित्येकरवी।।अने
जेने भगवानने विषे खरो प्रेमहोय तेनाथकिजमानसिपूजाथायछे अनेजेने भगवानमां प्रेमनहोय तेनाथकि भगवा-
ननिमानसिपूजा थतिनथि।। माटेजेनेअमनेप्रसन्नकरवाहोय।। तेनेदेहेकरिने पोतानीश्रद्धा पोचप्रमाणेअमारिने
अमारा निरवासनिक संतनीसेवाकरवि।।अने मानसिपूजातो नित्येप्रेमेसहित करवि।। ।।
इतिश्रीमुख सिद्धांतसमाप्तः।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ।।संवत्।।
१९।।ओगणिसे।।२२।। बाविसना अषाडवदि।।२।। बिजने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री सोजितरा
मध्येव्यासकुबेर जिईश्वरने घेर दक्षणादे बाहार डेलामां गादिये युक्त पलंगउपर विराजमानथयाहताने सर्वे जरि
यानीवस्त्र धारणकर्यां हतां ।। नेसर्वेअंगमां पुष्पनां आभूषणसो भिरह्यां हतां ने ललाटनेविषे कंकुनांचांदलोक-
र्योहतो ने संध्याआर्तिने समे पोतानामुखआर्विद नि आगल साधुतथा घणाक हरिभक्तनीसभा भराईने बेठीहति
पछे महाराजनीआर्ति धून्यकर्या केडे ।। पटेल नरसिंहभाई हरकांदासे प्रश्न पुछ्युंजे हे महाराज प्रत्यक्ष भग-
वानपृथ्विउपर बिराजतोहोय त्यारे तेनोआसरो करवामां जिवने लोकनीलाजनुं मान ।। तथा मतपंथनुं मान
आडुंआवेछे।। माटे ते माने करिने प्रत्यक्षभगवाननोआसरोथतोनथि ।। अनेसर्वेशास्त्र एमकहेछेजे साक्षात्का
र प्रत्यक्षभगवान रामकृष्णादिक नो दृढपणे आसरोकर्याविना जिवनुं कल्याणथतुंनथि ।। माटे प्रत्यक्ष महात्मा
पुरुषनो।। आश्रयकरवामां आडुंआवनारुं एवुंजे मानते केमटले तेकृपाकरिनेकहो ।पछे महाराज बोल्याजे मा
नटलवानो तो एउपायछेजे बहारदृष्टिनो त्यागकरिने अंतरदृष्टिकरे कहेतां सत्यअसत्यनो विचारकरे तोमानले-
शमात्र रहे नहिं।। अने जिवने बेप्रकारनी दृष्टिछे ।। एक बहारदृष्टिछे ।। नेबिजिअंतरदृष्टिछे ।। तेमां प्रथमतो जिवमा-
त्रनी बहारदृष्टिछे।। ते बहारदृष्टिमां मानरह्युंछे।।अनेअंतरदृष्टिने विषे लेशमात्र मानरहेतुंनथि।। हवेबहारदृष्टिते

धुं तो मिथ्या पदार्थ ने सत्य मानवुं ॥ तेनुं नाम बहारद्रष्टीछे ॥ केहेतां मिथ्या एवो जे स्थूलदेह तेने जिवजे ते पोतानुं रुप मानीने इंद्रि
यो अंतःकरणे करिने पिंड ब्रह्मांडादिक जे जे देखायछे ॥ तेने विषे सत्यताभावे करिने तेने भोगववानी वासनाछे एजजिव
नी बहारद्रष्टिछे ॥ माटे ते मिथ्या खोटिद्रष्टिछे जेमरेलवेनी गाडिमां बेठा होय तेने एम भासेछे जे मारगने कांठे वृक्ष होय ते चाल्यां
जायछे ॥ केहेतां चालती तो होय गाडि ॥ पण ते गाडिमां बेसनाराने जोवामां एम आवे जे मारगने कांठे आंबा राण्यो बावलिया
इत्यादिक वृक्ष होय ते दोड्यां जायछे ॥ एम गाडिमां बेठा होय तेनी द्रष्टिमां आवेछे पण ते मिथ्याद्रष्टिछे एने एतो जोवामात्र
बहारद्रष्टिछे ॥ पण वृक्ष कोई दहाडो चालेनहि ॥ एम अंतरद्रष्टि करिने जुवे केहेतां विचार करे तो एमखबर पडे जे एतो आप-
णी गाडि चालि जायछे ॥ तेणे करिने ते वृक्षादिक चालतां देखायछे ॥ पण ते चालतां नथि ॥ अने वलि गाडिमां बेसनारो
विचार करे तो तेने एम अनुभव थाय जे अमदावादथी गाडिमां बेठा होय तेने थोडिक वार लागे त्यारे नडियाद आवेछे नेप
छे थोडिक वार थाय त्यारे वडोदरुं आवेछे ने त्यार पछि वलि सुरत आवेछे ॥ नेपछे मुंबाई आवेछे ॥ माटे जो गाडि चा-
लति न होय ॥ तो ते ते गाम केम आवे ॥ नआवे ॥ माटे विचार करे तो एम जाणे जे आपण बेठा छैये ते गाडिज चालेछे पण
वृक्ष चालतां नथि ॥ एम विचारद्रष्टिये करिने जुवे तेने एह अनुभव थायछे ॥ तेमए तो द्रष्टांत ने तेनुं सिद्धांत एछे जे जि-
व जे ते अज्ञाने करिने देहरुपि चालति गाडिमां वासनाये करिने बेठोछे तेणे करिने मिथ्यारुप जे पिंड ब्रह्मांडादिक ने विषे
सत्यता भासेछे तथा मतपंथनुं बंधन रहेछे ॥ तथा लोकनी लाज आवेछे ॥ तथा वरणाश्रमनुं मान ॥ इत्यादि कल्पने-
क प्रकारनुं मान ते देहाभिमानिनि द्रष्टिमां आवेछे पण ते सर्व मान मिथ्याछे जेम गाडिमां बेसनारोने वृक्षादिक
मिथ्या चालता देखायछे ॥ तेम देहरुपी गाडिने मिथ्या अहंकारे करिने पिंड ब्रह्मांडादिकनुं मान द्रष्टिमां आवेछे तथा म
तपंथादिकनुं मान तथा वरणाश्रमादिकनुं मान ते देहाभिमानिनि द्रष्टिमां आवेछे ॥ पण जो पोतानुं सत्य स्वरुप जे आत्मा
तेनो विचार करिने अंतरद्रष्टि करे तो तेने एम भासे जे हुं तो आत्मा छुं ॥ हुं चैतन्य छुं अविनासि छुं ॥ अमर छुं ॥ सुखरुप छुं ॥

ते मारे आत्माने मत पंथ वरण आश्रम नथि ॥ तथा नात जात देशगाम आत्माने छे ज नहिं ॥ अने नात जात वरण आश्रम तथा मत पंथादिक तो देहना भाव छे ॥ ते देह तो मिथ्या छे माटे देहने लईने जे जे मान मोटम्य ल्याज आबरु मानी छे ते तो सर्वे मिथ्या छे ॥ केमके देह मिथ्या छे तो देह संबंधि जेटलुं जेटलुं मान मोटम्य ते पण सर्वे मिथ्या छे अने एवुं जे मिथ्या मान ते मान-जो प्रत्यक्ष भगवाननो आश्रय करवामां आडुं आवे तो ते मानने महापापरुप जाणवुं ॥ केमके मानेकरिने महात्मा पुरुषनो आश्रय करशो नहिं ॥ तो तेने चोरासिमां जवानुं थशे ॥ पछे तेने चोरासिमां कुतराना अवतार आवशे ॥ गधाडाना कागडाना अवतार आवशे ॥ त्यारे निरमानीपणे घरोघर भटकवुं पडशे ॥ ने महादुःख भोगववां पडशे अने तेमां कांई अर्थ सरशे नहिं ॥ अने पूर्वे पण अनंतवार निचा निचा चंडालादिकना देह धरिने घणा कनी आगल निरमानिपणुं भोगव्युं छे ने तेमां कांई आत्मानुं सारुं थयुं नथि अने आ ज महात्मा पुरुष पासे निरमानी थवानो समो आव्यो छे ॥ जे जेणे करिने जिवनुं कल्याण थाय ॥ ने चोरासीने गर्भवासनां दुःख मटि जाय ॥ ते ठेकाणे मान ॥ रहे ते मानने तो महापापरुप जाणवुं ॥ माटे जेने-आत्माना कल्याणनी ईछा होय तेने तो महात्मा पुरुष सद्ज्ञानदाता प्रगट थया होय ते मारं च मात्र मां न राखवुं नहिं ॥ ने मत पंथनुं तथा जाति वरण आश्रमादिकना माननो त्याग करी ने महात्मा ज्ञानदाता प्रत्यक्ष भगवान ने भगवानना निरवासनीक संत तेनी आगल निरमानी थईने लेनो आश्रय करवो ने तेनी आगल रंच मात्र मान राखवुं नहिं अने जेनी पासे सद्ज्ञान होय ने सद् नियमे सहित धर्म होय ने सद्त्यागे सहित वैराग्य होय ॥ अने सद् सेवाये सहित भक्ति होय एवा चार गुण धर्म ज्ञान वैराग ने महात्मे सहित प्रत्यक्ष राम कृष्णादिक भगवाननी भक्ति करता करावता होय ॥ एवा जे प्रत्यक्ष महात्मा पुरुष तेने विषे सर्वे मान मोटम्य मुकिने देते करिने द्रढपणे जोडाई जवुं ॥ पण त्यां मान राखवुं घटे नहिं अने एवा महात्मा पुरुषने विषे जेने दोष भासे छे ते तो पोताने विषे देहाभिमाने करिने दोष होय ते दोष सत्पुरुषने विषे भासे छे ॥ जेम वहाणमां बेसनाराने पोतानुं वहाण चालतुं होय तेणे करिने कांठे वृक्षादिक-

होय ते ने चालतां देखे छे ॥ अने जो पोतानुं वाहाण चालतुं आलख्यो तो पछे कांठे वृक्षादिक चालतां देखातां हतां ते टलिने जेम
छे तेम स्थिर थायमान देखाय ॥ तेम चालतां वहाणरूप जे पोताने विषे देहाभिमाने करिने दोष होय ते दोष प्रत्यक्ष सत्पुरुषने वि-
षे भासे छे ॥ ते बाहार दृष्टिये करिने मिथ्या दोष भासे छे अने जो अंतरदृष्टिये करिने देहाभिमाननो त्याग करिने आत्माने पो-
तानुं स्वरूप जाणे ॥ तो आत्माने विषे दोष कोई नथी ॥ तो आत्माथि परए वा जे परमात्मा प्रत्यक्ष भगवान तेने विषे दोष होय
ज केम ॥ न ज होय ॥ एम तेने प्रत्यक्ष महात्मा पुरुषने विषे निरदोषबुद्धि थाय छे ॥ अने तेने सत्पुरुष आगल लेशमात्र मान
रहेतुं नथि ॥ केम के मान तो देहाभिमाने करिने रह्युं छे ॥ पण अंतरदृष्टिरूप जे आत्मा तेने विषे मान छे ज नहिं ॥ केम के ते-
ने आत्माने परमात्मा विना ॥ बिजुं कांई तेनि दृष्टिमां सत्य देखातुं नथि ॥ माटे कोनी साथे मान राखे एवि रिते विचारीने अं-
तरदृष्टिने पामे ॥ कहेतां सत्पुरुषथकि ज्ञानने सिद्ध करे तो तेने मान टलि जाय छे ने तेने सत्पुरुषनो आश्रो करवामां ले-
शमात्र अंतराय रहेतो नथि ने ते आत्मानो मोक्ष थाय छे ॥ माटे जेने कल्याणनो खप होय तेने पूर्वोक्त एवो विचार करिने जग-
तनी मिथ्या मान मोटप लाज आबरु तेनो त्याग करिने सद्ज्ञानदाता सत्पुरुष जे पंचविषय थकि मुकाविने निरवास-
निक करे ॥ तेनो दृढ आश्रय करवो ॥ ए ज मनुष्य देहनो परम लाभ छे ॥ माटे ते लाभ पामवानो समो आ ज तमारे आव्यो छे ॥
माटे तमारा भाग्यनो पार नथि ॥ ॥ इति श्री सुखसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥
श्री हरिकृष्णाय नमो नमः ॥ ॥ संवत् १९ ओगणिसें ॥ २२ ॥ बाविसना अषाड वदि ॥ ८ ॥ आठमि-
ने दीवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजिंत्रा मध्ये व्यास कुबेर जिईश्वरने घेर गादितकिये युक्त पलंग
बिछाविने ते उपर विराजमान थया हता ॥ ने सर्वे सोनेरि वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शो-
भि रह्यां हतां ॥ ने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा क हरि-
भक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे संध्या आरति थया केडे महाराज बोल्या जे सर्वे सभाने अमे एक प्रश्न पुछिये छिये

जे जिवना कल्याणने अर्थे शास्त्रमां अनंत साधन बताव्यां छे ते साधन करवा मांडे तो तेनो पार आवे नहिं ॥ अने ते साधन करवां तेप
ण घणां कठण छे ॥ माटे तेमां एक एवुं कियुं सुलभ साधन छे ॥ जे एक साधन करे तो सुगम रिते जिवनुं तत्काळ कल्याण थाय ॥
ए प्रश्न छे ॥ तेनो उत्तर जेने जेम आवडे तेम ते कहो ॥ पछे गाम पिपलिना व्यास भाईशंकरे कह्युं के पंचविषयनो त्याग करे त्यारे
जिवनुं कल्याण थाय ॥ वळि पटेल मुळजिभाई अज्जुभाईये कह्युं के आत्मारूप थईने तमारी भक्ति करे तो कल्याण थाय ॥ पछे
महाराज बोल्या जे आत्मारूप थवुं ने विषयनो त्याग करीने निरवासनीक थवुं ॥ ए तो घणुं कठण छे पछे अक्षरमुक्तानंदस्वामि
ये कह्युं के मायापर एवा जे परमात्मा भगवान ते पृथ्विउपर प्रगट विराजता होय ॥ अने कां ते भगवानना संत निरवासनि-
क पंचविषयना त्यागि तेने विषे दृढ हेत थाय ने तेनो विश्वास आवे ॥ तो ते जिवनुं साक्षात्कार कल्याण थाय ॥ ने ते जिव अक्षर
धामने पामे ॥ पछे महाराज बोल्या ए उत्तर खरो ॥ अने प्रत्यक्ष सत्पुरुषने विषे जिवने प्रिति थाय तो ते प्रिति रूपि एक सा
धने करिने जिवनुं कल्याण थाय छे ॥ अने सर्वथी ते सुलभ साधन छे ॥ अने प्रत्यक्ष सत्पुरुषने विषे तो जिवने प्रिति सहेजमांथा
य छे ॥ ते सतपुरुषने विषे प्रिति समजुने थाय ॥ अणसमजुने थाय नानाने थाय मोटाने थाय ॥ बाळकने थाय वृद्धने थाय ॥ स्त्रिने
थाय ॥ पुरुषने थाय पण ते प्रत्यक्ष सतपुरुषने विषे प्रिति केवि थवि जोईये ॥ तो दृढ विश्वासे सहित प्रिति थाय त्यारे आने श्रा
द्धे करिने कल्याण थाय ॥ ते विश्वास केवो होय ॥ तो जेम एक कोईक बे मित्र हता ॥ ते परदेशमांथि घणाक पैसा कमा
ईने आवता हता ॥ ते पोतानुं गाम गाउ बे रह्युं त्यां रात रह्या ॥ पछे राते एक जण सुई गयो ने एक जण चोकि करवा बे
ठो छे ॥ तेवामां एक सर्प आव्यो तेने जागनारे पुरुषे सर्प आडि लाकडि करि ॥ त्यारे सर्पने वाचा उपनी ॥ ते सर्पे कह्युं के
ते सुतेला पुरुषना गळानुं रुधिर मारे पीवुं छे ॥ एवुं मारे तेनी पासे पूर्वजनमनुं वैर छे पछे ते जागते पुरुषे कह्युं के तेना
गळानुं रुधिर तुने आपुं तो तारुं वैर वळि रहे ॥ त्यारे सर्पे कह्युं के हा मारे तेना गळाना रुधिरनुं काम छे ॥ पछे ते पुरुषे छरि
लेईने ते सुतेलो हतो जे पोतानो मित्र तेनी छाति उपर चडीने छरि गळे मांडि ॥ त्यारे ते सुतेलो पुरुष जाग्यो ने आ-

सो जितरा सि० ६७

रथउघाडिनेजोयुं त्यांतोपोतानोमित्र दिठो॥एटले पाछि आवमिथिनेसऊ़ दईगयो॥पछेतेनागलानीचामडिकापी॥ने रुधिरकाढिने पडियामांघालिने सर्पनी आगलमुक्युं॥एटले पिनेसर्पचाल्योगयो॥ पछेते बेयमित्र सवारे पोतानेगाम आविने सौसौ ने घेरगया॥ पण तेजेनुंग लुवढाणुं छे तेणे ते नामित्रने कांई कह्युं नहिं॥पछे तेगलु वाढनारे पुछ्युंजे भाई आजतमारेग लेनूउं थयुं छे॥त्यारे तेणे कह्युं के ॥आपणे पेल्ले गामरात रह्याहता त्यारेतमे छरिने लेईने कंईक करता हता तेथस्वत नुं थयुं छे॥ पछे तेने कह्युं केहुं तारुंग लुवाढतो हतो तेनीतुंने खबरहती तोपण कांई केम बोल्यो नहिं त्यारेमित्रे कह्युंजे हुंशुं करवा तुंने कांई कहुं॥ केमके तुंजेम करतो हैस ते मारुं सारुं थायतेम करतोहैस॥एवि रिते ते मित्रनो तेने द्रढ विश्वास हतो॥ जे तेमारुं भुंडुं करशेजनहि॥एवी तेवुं गलुंवाढतो हतो तोपण तेनेसंशय थयो नहिं॥तेमजे जिवने प्रत्यक्ष सत्पुरुषने विषे विश्वास होय ते सत्पुरुषगमे तेवा वढे काढीमेले तिरस्कारकरे तोपण तेने हितकारि माने॥ने राजि थाय॥केमकेजेने सत्पुरुषने विश्वासे सहित प्रिति होय तेएमजाणे जे जेकरता हशे तेमारुं सारुं थाय तेमकरताहशे॥एमएक तो पको सत पुरुषनो विश्वास होयअनेएवे वि श्वासे सहित सत पुरुषने विषे प्रिति थाय॥तो ते जिवनुं साक्षात्कार कल्याणथायछे॥पण तेमां सत्य स्वरूप एवा जे अक्षरातित परमात्मा भगवान पृथ्वी उपर प्रगटहोय॥ तेने विषे जेते भावे प्रिति जिवने थाय॥ तो ते जिवनां सर्वे साधन पुरां थई रह्यां छे॥अने तेजिव तेने ते जन्मे अक्षर धामने पामे छे॥ ते प्रिति केवि थाय तो कोईने पुत्र भावे प्रिति थाय॥ तेएमजाणेजे मारा पुत्र तो खरा पण आवो बिजो कोईनो पुत्र होय नहिं॥एवि रिते पुत्रमां पण सर्वोपरि पुत्र जाणिने भगवानने विषे प्रिति करे॥तो तेनेकोई साधन फरिने करवुं पडतुं नथि॥नेतेने फरिने जन्म पण धरवो पडतो नथी॥ केमके जेने एवो प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रितिये सहित द्रढ विश्वास आव्यो तो तेने विषे भगवान कोई जातनी कसर रहेवा देता नथि केमके भगवान तेनेजेजे वचन कहेशे तेते वचन तेने तेना जिवमां चोटि जशे अनेजेजे भगवान तेने आज्ञा करशे तेने पोताना शिरसाटे पालशे॥ केमके जेने विप्र जेने विश्वासे

सहितप्रिति होय ते तेनुं वचन तेणे लेशमात्र लोपाय नहिं ॥ एज प्रितिनुं लक्षणछे ॥ माटे भगवानने विषे विश्वासेसहित प्रितिजेने थई तेने विषे भगवान दोषरहे वादे नहि ॥ ते माता देहुतिने कपिलदेव भगवानने विषे पुत्रभावे प्रिती थई॥ तो तेनुं साक्षात्कार कल्याण थईगयुं॥ ऋषभदेव भगवानना पुत्रोने पिताभावे ऋषभदेव ने विषे प्रिति थई तो तेसर्वेनुं कल्याणथयुं॥ अने लक्ष्मणजिने रामचंद्रजिने विषे बंधव भावे प्रिति थई तोतेनुं कल्याण थयुं॥ अने हनुमानजिने भगवानने विषे दासभावे प्रिति थई॥ तो तेहनुमानजिनुं कल्याण थईगयुं ॥ अने अरजुनने सखा भावे भगवानने विषे प्रिति थई॥ तो तेनुं कल्याण थयुं॥ अने गोपियोने पति भावे भगवानने विषे प्रिति थई तो ते गोपियो सर्वेनुं कल्याण थईगयुंछे॥ माटे एरीतेजे ते भावे प्रत्यक्ष भगवानने विषे विश्वासे सहित प्रिति थायतो तेनुं कल्याण एने एरेहे थायछे अने एवि असाधारण प्रितिथई नहोय॥ ने साधारण थईहोय ॥ जेम बिजाना भाईछे तेमते भगवान पण मारा भाईछे ॥ अने बिजाना दिकरा तेमते भगवानने पण दिकरो जाणे ॥ ने बिजाना बाप तेम मारा पणबापछे ॥ ने बिजाना पति तेम मारापण भगवानपतिछे॥ एम साधारणपणे प्रत्यक्ष भगवानने विषे हेतथाय ॥ तो ते जिव नर्क चोराशिमां तो नजाय। अने ते नुं एक बेजन्मे देवमनुष्यमां देहधर्‍या पछि असाधारण प्रीति भगवानने विषे थायछे त्यारे तेनो आत्यंतिक मोक्षथायछे ॥ माटे प्रत्यक्ष भगवान पृथ्विउपर होय॥ नेतेने विषे विश्वासेसहित प्रितिकरवि एज एक मोक्षनुं सुलभसाधनछे॥ अने भगवान प्रत्यक्ष पृथ्विउपर नहोयत्यारे ते प्रत्यक्ष भगवानना भक्तसंत पंचविषयनात्यागिने निरवासनिक आत्यंतिकज्ञानने पामेला तेने विषे पोतपोताना धर्ममां रहिने विश्वासेसहित प्रितिकरवि तो तेथकि पणतेनो साक्षात्कार मोक्ष थायछे॥ अने तेविनानां बिजां अनंतसाधनकरे तथा भगवानने भगवानना निरवासनिक संतते विनाबिजा वासनावालाहोय तेनेविषे प्रिति करे ने तेनी सेवाकरे तेणेकरिने कोई जिवनुं कल्याणथतुंनथि॥ ते सारु भगवानने भगवानना निरवासनिक पंचविषयनात्यागि संत तेने विषे विश्वासेसहित प्रीति करवि एजमोक्षनुं सुलभसाधनछे॥ माटे आसमे

बाईभाईने आसतसंगने विषे प्रिति थई छे ॥ तेना तो साक्षात्कार कल्याण थई रह्यां छे ॥ ने तेना तो भाग्यनो पार नथि ॥ ॥
इति श्री मुख सिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णायनमो नमः ॥ ॥ संवत् ॥ १९ ॥ ओगणिसें
॥ २२ ॥ बाविसना अशाड वदि ॥ ९ ॥ नवमिने दिवस ॥ महाराजश्री हरि कृष्ण भगवान् ॥ गाम श्री सोजित्रामध्ये ॥ व्यास सदा
राम सुखलालने घेर आथमणे बारओरडानि आगल ॥ चोकमां गादि तकिये युक्त पलंग बिछाविने तेउपर विराजमान थया
हता ॥ अने सर्वे जरियानि वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ अने सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषण शोभि रह्यां हतां ॥ अने कंकुनो चांदलो कर्यो ह
तो ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा क हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हति ॥ पछे महाराज श्रीहरिकृष्ण महाराज कृपा-
करिने बोल्याजे ॥ आजिवने बे प्रकारनो रोग छे ॥ अने ते रोगे करिने जन्म मृत्यु रुपि महा कष्टने पामे छे ॥ ते रोग कियो ॥ तो ए-
क तो अज्ञानरुपि रोग छे ॥ अने बिजो महा अज्ञानरुपि रोग छे ॥ तेमां अज्ञान ते शुं ॥ तो पोतानुं स्वरुप जे आत्मा तेने भुलिने
॥ देहने विषे अहं केहेतां देह हुं छुं ॥ एम देहने पोतानु रुप माने छे ॥ तेनुं नाम अज्ञानरुपि रोग छे ॥ अने ए आत्माना साचा हि-
तकारि ॥ एवा जे परमात्मा भगवान तेने भुलिने ते आत्माने दुःखनां देनारां ॥ एवां जे देहनां संबंधि ॥ तथा देह संबंधि पदार्थ
तेने पोतानां माने छे ॥ एम जाणिने ते पदार्थने विषे ममत्व बुद्धि तेनुं नाम ॥ महा अज्ञानरुपि रोग छे ॥ ए बे प्रकारना रोगे करि-
ने जिव जे ते अनादि कालनो महापिडाने पामे छे ॥ हवे ते रोग क्यारे टले तो ॥ ए आत्माना प्रकाशक ने आत्माना आत्मा एवा
जे परमात्मा भगवान् ते कृपा करिने जिवना रोगने टालवाने अर्थे ॥ पोतानी स्वइच्छाये करिने मनुष्याकृतिनुं धारण करिने
जिवना रोगने टाले छे त्यारे रोग टले छे ॥ ते शा उपाये करिने रोगने टाले छे ॥ तो जिवने अज्ञान ने महा अज्ञानरुपि बे प्रकार-
नो रोग छे ॥ तेने ज्ञान विज्ञान रुपि बे प्रकारनुं ओषद्ध आपिने रोगने टाले छे ॥ हवे ज्ञान ते शुं तो ॥ आ देहने विषे वासनाये
करिने आत्मा रह्यो छे ॥ ते देह मिथ्या छे ॥ ने आत्मा सत्य छे ॥ अने ते आत्मा पोतानुं स्वरुप छे ॥ एवि रिते देहने मिथ्या जाणि
ने आत्माने पोतानुं स्वरुप जाणवुं ॥ तेनुं नाम ज्ञान केहेवाय छे ॥ ते आत्मारुप किये विचारे करिने थवाय छे ॥ तो सांख्य

एष्टुं
विचारे करिने आत्मारुपथवाय छे॥ ते सांख्य विचार ते शुं तो प्रकृति पुरुषथकि उत्पन्नथयुं जे पिंडब्रह्मांडादिक विश्व ॥तेना
आकार मात्र तेने मिथ्या जाणिने तेनी वासनानो त्याग करिने ते पिंडब्रह्मांडथि जुदो एवो जे आत्मा अखंड अविनाशि तेने पो-
तानुंस्वरुप जाणवुं ॥ तेनुं नाम सांख्य विचार छे ॥ एविरिते आत्मारुपथाय छे॥ ने पंच विषयनो त्याग करे छे तेने अज्ञानरुपि
रोग टले छे॥ पण तेने महाअज्ञान रहे छे ॥तेमहा अज्ञानने टालवाने अर्थे सद्गुरु जे ते विज्ञानरुपि औषद्ध आपे छे॥ ते विज्ञान
शुं तो॥ जेम देहने विषे आत्मा रह्यो छे॥ तेम आत्माने विषे परमात्मा भगवान रह्या छे॥ ते परमात्माने साक्षात्कार जाणिने तेने वि-
षे नवधा भक्तिये करिने जोडाई जवुं॥ तेनुं नाम विज्ञान कहेवाय छे॥ अने एविरिते ज्ञान विज्ञाने करिने ॥ अज्ञानने महाअज्ञान रु
पि बे प्रकारना रोग टलि जाय छे॥ ने ते आत्मानी आत्यंतिक मुक्ति थाय छे॥ ने जन्म मरण टलिने अक्षरधामने पामे छे॥ त्यारे
कोईने एम आशंका थाय जे ॥ आत्माने विषे परमात्मा रह्या छे॥ तेने पामवा क्यां छे॥ एतो पामेला छे॥ तो तेनुं एम छे जे॥ जेम
दूधमां घीर ह्युं छे॥ अने एक कुल्लामां घि भर्युं छे॥ तेए बेमां घणो भेद छे॥ तेम आत्माने विषे परमात्मा रह्या छे॥ ते तो जेम दू
धमां घीर ह्युं छे ॥ तेम आत्मामां परमात्मा रह्या छे ॥ अने जे अक्षरधाममां परमात्मा रह्या छे ॥ ते तो जेम कुल्लामां घीर ह्युं
छे॥ तेम रह्या छे॥ माटे जे कुल्लामां घि छे ॥ ते दूधमांथी निसरेलुं छे॥ पण चुरमामां के कंसारमां नाखवा सारु घी जोईतुं होय
तो ते दूधमां घि छे ते काम आवे नहिं॥ अने ते दूधमां घी छे॥ तेने किंमति मले ने तेमां खटासना खिने॥ तेनुं दहिं करिने तेने
वलोवीने घी काढे त्यारे ते घी जमवाना काममां आवे ॥ अने जो तेनो किंमति न मले तो ते दूध बगडि जाय ॥ ने पछि तेमां-
थी घी पण नीसरे नहिं ॥ ने ते बगडेला दूधने तो उकरडे नाखि दिधुं जोईये॥ तेम आत्मामां परमात्मा रह्या छे॥ ते तो दूधने ठेका
णे छे॥ ते जेम दूधमां घी छे ते जमणना काममां आवतुं नथि ॥ तेम देहमां आत्माने आत्मा परमात्मा रह्या छे॥ तेणे करिने आ
त्मानो मोक्षथतो नथी ॥ अने जेम दूधना किंमति ये॥ दूधमांथि घी काढ्युं ॥ तेम आत्माना किंमति एवा जे परमात्मा भग-
वान् रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष सद्गुरु ते जे ते सांख्यने योगना ज्ञानरुपि खटासे करिने॥ आत्माने विषे परमात्मा रह्या छे ॥

तेनो साक्षात्कार करावे छे।। त्यारे ते आत्मानो मोक्ष थाय छे।। अने जेम दूधमां छास पाणिनो भाग कह्हाडि नरवाय छे। ने घीने ग्रहण कराय छे।। तेम आत्माने विषे छास पाणि रुप जे पिंड ब्रह्मांडादिकनी वासना तेनो त्याग थाय छे।। ने घी रुप जे परमात्मा तेने विषे प्रिती थाय छे।। अने जो प्रत्यक्ष परमात्मानो आश्रय न करे तो ते आत्मानो मोक्ष थाय नहिं।। जेम दूधने किंमति न मलु तो दूध बगडि जाय छे।। ने ते दूध कोई कामभां आवतुं नथि।। तेम मनुष्य देह धारिए वो जे आत्मा ते दूधरुप छे।। तेने प्रत्यक्ष परमात्मा।। ने तेना एकांतिक संतनो आश्रय न थाय।। तो ते आत्मा नर्क चोरासिमां जाय।। ने जन्म मरणना महादुःखने भोगवे।। माटे प्रत्यक्ष परमात्मा भगवान जियने मले।। ने तेनो आश्रय करे।। त्यारे ते जिवनुं कल्याण थाय छे।। ते देव मनुष्यने प्रकृति पुरुष सुधि सर्वेने।। प्रत्यक्ष परमात्मानो संबंध थसे ने तेनो आश्रय करशे त्यारे ते सर्वेनो मोक्ष थशे।। ए सिद्धांत वारता छे।। केमके देव ब्रह्मादिकने विषे माया रहि छे।। अने एक परमात्माने विषे माया नथि।। ते पण शास्त्रमां कह्युं छे जे।। निरदोषे मेको हरिः।। अर्थ।। एक हरि एवा जे परमात्मा।। प्रत्यक्ष भगवान।। रामकृष्णादिक ते निरदोष छे।। माटे मायापर होय ते थकि ज मायापर थवाय छे।। ते सारु परमात्मा जे ते दया करिने जियोने मायाना बंधन थकि मुकाविने पोतानुं जे अक्षरधाम तेने पमाडवाने अर्थे कृपा करिने मनुष्यने सर्वे प्रकारे ग्रहण करवामां आवे।। एवा रामकृष्णादिक मनुष्यरुप धारण करे छे।। ते प्रत्यक्ष भगवांन जोवामां तो मनुष्य जेवा जणाय छे।। पण ते मूर्तिने विषे मायानो लेश नथि।। ने ते प्रत्यक्ष भगवाननी जेजे क्रिया लिला ने चरित्र ते सर्वे दिव्यरुप छे।। कहेतां जियोनां कल्याणने अर्थे छे।। अने जिव ईश्वर ने विषे माया छे।। ते मायानो त्याग करावबाने अर्थे।। सांख्यशास्त्रनो बोधक थयो छे।। त्यां वेदनी श्रुति छे।। घटवत स्वर्गादि विनश्यतिः।। अर्थ।। घडानि पेठे पिंड ब्रह्मांडादिक सर्वे मिथ्या छे।। ने नासवंत छे।। मारे ते पींड ब्रह्मांडादिकनो निषेध करिने पोते आत्मा शुद्ध चैतन्य रुप थईने।। प्रत्यक्ष परमात्मानी मूर्त्तिने दिव्यरुप जाणिने तेने विषे प्रितिये करिने जोडावुं।। ते पण वेदमां कह्युं छे।। सर्वं खल्विदं ब्रह्म।। अर्थ।। प्रत्यक्ष परमात्मा रामकृष्णादिक भगवाननी मूर्ति छे।। ते तो सर्वे ब्रह्म छे।। कहेतां प्रत्यक्ष

भगवानना अंग अवयवो क्रिया लिला ने चरित्र सर्वे परमात्मा रुप छे ॥ पण तेने विषे त्याग भाग करवा जोग नथि ॥ अने जे प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषे त्याग भाग करे छे ते तो मुरख छे ॥ अने तेने शास्त्रमां मर्म समजायाज नथि ॥ ते शास्त्र नानू मर्म छे तो वेदमां एम कह्युं छे जे ॥ घटयतस्वर्गादि विनश्यति ॥ तथा ॥ सर्वं खल्विदं ब्रह्म ॥ ए बि रिते बे वचन सत्य छे ॥ अने बोलवामां उलटपालट जणाय छे ॥ ते सत्पुरुषना मुखथकि समजे तो सघलुं समजाय छे ॥ अने जो असत्पुरुषना मुखथकि समजे तो अवलुं समजाय छे ॥ ते असत्पुरुष केम समजे छे ॥ तो असत्पुरुष जो ॥ घटवत्स्वर्गादि विनस्यति नो अर्थ करे छे ॥ ते सर्वे पिंड ब्रह्मांडना आकारनो निषेध करे छे ॥ ते भेगु दिव्यमूर्त्तिने सदाय मायापर एवा जे रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवाननो आकार तेनो पण निषेध करे छे ॥ ए मोटुं पाप छे ॥ अने ए बि रीते समजनाराnुं कोई कालेक ल्याण थाय नहिं ॥ अने वलि ते असत्पुरुष जो ॥ सर्वं खल्विदं ब्रह्मनो अर्थ करे छे ॥ तो ते श्रुतिमां तो एक प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्त्तिनां सर्वे अंग अवयवो ब्रह्म छे ॥ एम कह्युं छे ॥ ते भगवाननी मूर्त्ति एकने ब्रह्म न समजतां पिंड ब्रह्मांडादिक सर्वे ब्रह्म छे ॥ एम समजिने पोताने पण ब्रह्म माने छे ॥ ने पछि कोईनी उपासना भक्ति करता नथि ॥ अने धर्म नियम पण पालता नथि ॥ ने ते असत्पुरुष पोते भ्रष्ट थाय छे ॥ ने तेनो जे संग करे छे ॥ तेने पण भ्रष्ट करे छे ॥ अने एम समजनारा वृथ नारकि थाय छे ॥ माटे ए श्रुतियोनो खरो अर्थ केम छे ॥ तो जिव ईश्वरने विषे जे पिंड ब्रह्मांडादिक मायाना आकार छे ॥ तेनो घटवतस्वर्गादि विनश्यति ॥ प्रमाणे निषेध करवो ॥ अने मायाना आकार सर्वेने पापरूप जाणवा ॥ अने तेमाईक आकारने विषे अत्यंत अभाव करिने पोताना आत्माने तेथि जुदो समजिने ॥ पछी सर्व प्रकारे ज्ञान आपिने मायाने दूर करावीने ब्रह्मने विषे स्थिति नाखनारा एवा जे प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवाननि मूर्त्ति तेने विषे ॥ सर्वं खल्विदं ब्रह्म प्रमाणे प्रत्यक्ष भगवानने विषे मायानो लेश नथि ॥ अने ते मूर्त्ति तो कैवल्य ब्रह्मरस दिव्यरुप छे ॥ ने अखंड मूर्ति छे ॥ ने अविनाशि मूर्त्ति छे ॥ अने ते मूर्तिने विषे पंचभूतात्मक मायानो लेश नथि ॥ अने ते मूर्तिनां जन्म कर्मा ने चरित्र ते सर्वे दिव्य छे ॥ अने अ सो

किधछे॥ मारे प्रत्यक्षभगवाननीमूर्त्तिनां॥ अंग अवयवोने तेनां चरित्र तेने चिंतवनकरिने पामरजेवोजिव होयते ब्रह्म
रुपमहामुक्त थईजायछे॥ अने बिजा जिवोनादेहने तेनि क्रिया॥ तेने चिंतवने करिने आत्मा अधोगतिनेपामेछे॥ माटेप्र-
त्यक्ष भगवाननीमूर्त्तिमां अने बिजा जिवोनादेहमां तो घणोजभेद छे॥ ते पण भागवतादिक शास्त्रमां प्रसिद्ध लखेलु छे॥
जे प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिकनि मूर्त्तिने चिंतवने करिने गोपिगोवाळादिक अनंत भक्तमायाने तरिने परम पदने
पामिगया छे॥ अने ते मूर्त्तिनु भजन ने सेवा जीवजे ते पोतानाकल्याणने अर्थे कर्याकरे छे॥ पण ते विना कोई जि
वनी मूर्त्तिनुं भजन के सेवा कल्याणने अर्थे कोईकरतुंनथि॥ अने कोई प्रत्यक्ष भगवानना भक्त मायापर थया हशे तेनुं तो
भजनने सेवा भगवानने संबंधे करिने करवाजोग छे॥ पण प्रत्यक्ष भगवानना संबंध विनाना जे बिजा ना जिवो छे॥ तेनि
सेवा के तेनो संबंध छे॥ ते तो केवळ नर्कमां जावानो मार्ग छे॥ ते सारु तो शुकदेवजि सरखा महायोगि परमहंसो॥ तेणे पो
तानादेहने॥ देहसंबंधिपदार्थ॥ तेने महापापरुप जाणीने तेना जतनने ने तेना संबंधनो सर्व प्रकारे॥ त्यागकरिने तेथकि
अंते वैराग्यने पामिने पोताना आत्माने विषे द्रढस्थितिपामिने ब्रह्मरुप थईने॥ पछे प्रत्यक्ष भगवान जे रामकृष्णादिक
निमूर्त्तितेने विषे महात्मे सहित जोडाणा छे॥ अने तेना गुणने चरित्रने लिला॥ तेनुं हरखे करिने गांन कर्युंछे॥ अने
तेणे पोताना देहनो ने देहसंबंधि पदार्थनो वारमवार निषेध कर्यो छे॥ जे जिवनि आंख्यो छे ते महापापरुप छे॥ ने
मांसनो लोचो छे॥ ने जिवने मोह उपजाविने नर्कमां नाखनारि छे॥ अने जे प्रत्यक्ष भगवाननि आंख छे ते तो जिवना अनंत
पापने नास करेएवि छे॥ ने मनोहर छे ने कमळ सरखि छे॥ ने कामणगारि छे॥ ने कटाक्ष मात्रे करिने जिवने ब्रह्मरुप करेए
वि छे॥ एम शुकदेवजि सरखे प्रत्यक्ष भगवाननी आंख्योनुं अतिशे प्रितिये करिने वरणन कर्युंछे॥ अने तेजप्रमाणे जि
वोनां सर्वे अंगनो निषेध करिने॥ पछे प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिक निमूर्त्तिनां सर्वे अंगनु॥ हेते करिने महासुखपाम
वाने अर्थे महात्मे सहित वर्णन कर्युंछे॥ अने ते प्रत्यक्ष भगवाननी लिलाने तेनां सर्वे चरित्रने तेनि सर्वे क्रियाने तेनुं

सर्वे बोलवुं ॥ तेनुं बेसवुं ॥ तेनुं खावुं ॥ तेनुं जोवुं ॥ तेनुं रमवुं ॥ ने ते निशुभ क्रिया ॥ अशुभ क्रिया ॥ आदिक जे जे प्रत्यक्ष भगवा
ने कर्युं ॥ ते सर्वे महात्मे सहित गान कर्युं छे ॥ अने ते प्रत्यक्ष भगवाननी लिलाचरित्र ने गाने करिने अनंत जिवोनां कल्या
ण थयां छे ॥ माटे एवा जे भगवान तेनो आकार ॥ अने बिजा जिवोना आकार ॥ तेमां तो घणो ज भेद छे ॥ अने मे बेयने जे
सरखा जाणे छे ॥ ते तो महापापि छे ॥ ने तेने मूरख जाणवा ॥ अने जे भगवान नो आकार ॥ ने बिजा आकारने सरखा कहे
तो होय ॥ तेने तो दूष्टने महा असूर जाणिने तेना संग नो त्याग करवो ॥ केमके एम समजनारा सर्वे नर्क मां जाय छे ॥ माटे
माटे जेने पोताना आत्मानु कल्याण ईच्छवुं होय ॥ तेने एम समजवुं जे जिव ईश्वरना शरिरना आकार जे पिंड ब्रह्मांड तेनो
निषेध करिने तेनो अभाव करिने तेथकि वैराग ने पामिने तेनी वासनानो त्याग करिने ॥ पोते शुद्ध आत्मा ब्रह्मरुप थईने पछे
ए ब्रह्मना आधारने ॥ ब्रह्मना प्रकाशक ॥ एवा जे प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्ण आदिक जे पोताने मल्या होय ॥ ते मूर्त्तिने वि
षे सर्व प्रकारे नवधा भक्तिए करिने जोडाई जवुं ॥ अने तेनां चरित्र ने तेनि लिला तेनुं निरंतर हालतां चालतां ॥ खातां
पितां ॥ सर्व क्रियाने विषे गान करवुं ॥ ने तेनुं चिंतवन करवुं तेनुं नाम विज्ञान कहेवाय छे ॥ ने ते आत्मानो मोक्ष थाय
छे ॥ अने एज जिवना कल्याणनो अचल सिद्धांत छे ॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांत समाप्तः॥
॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमो नमः॥ ॥संवत॥१९॥ओगणिसे॥२२॥बाविस
ना श्रावण शुदि॥१५॥पूरणमासिने दिवस ॥ माहाराज श्री हरि कृष्ण भगवान् गाम श्री सोजितरा मध्ये ॥ व्यास सदा-
राम सूरखलालने घेर आथमणे बारना ओरडानि रवेसमां ॥ गादितकिये युक्त पलंग उपर बिराजमान थया हता ॥
अने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ ने सर्वे अंग ने विषे पुष्पनां आभूषण शोभि रह्यां हतां ॥ ने कंकुनो चांद
लो कर्यो हतो ॥ ने जमणा हाथने कांडे हिरनि राखडियो बांधी हति ॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक
हरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे संध्या आर्ति थया केडे ॥ भक्त ॥ पटेल मथुर भाई कालीदासे महाराजने

हाथजोडिने प्रस्न पुछ्युं जे हे महाराज अमारे तमारि मुर्तिनुं ध्यान करवुं॥ तेनो कोई देशकाल हशे जे आवे समे ध्यान करिये तो ध्यान स्फुरवे थाय॥ अने आवे समे ध्यान थाय नहिं॥ के ज्यारे ध्यान करिये त्यारे थाय॥ सुमानो कांई मेल नहि॥ तेनुं के मह्यो ते कहो॥ पछे महाराज बोल्या जे ज्यारे भगवाननो भक्त प्रथम ध्यान करवा बेसे छे॥ त्यारे अंतःकरणमां संकल्प विकल्प थाय छे॥ ने ध्याननुं स्फुरव बरोबर आवतुं नथि॥ तोपण जो एमने एम श्रद्धा राखिने ध्याननो अभ्यास थोडो थोडो नित्ये घडि घडि बे घडि करवा मांडे॥ तो तेने संकल्प विकल्प टलि जाय छे॥ पछि तेने स्फुरवे थि ध्यान थाय छे॥ अने तेने ध्यानमां अतिशे स्फुरकने आनंद आवे छे॥ अने प्रथम ध्यान करतां॥ संकल्प विकल्प थाय ने ध्यानमां स्फुरव आवे नहिं॥ त्यारे कायर थईने ध्यानने पड्युं मुकी दे॥ ने एम समजे जे आपणे तो ध्यान थाय नहिं॥ तो तेने ध्यान कोई दहाडे थतुं नथि॥ माटे जेने भगवाननुं ध्यान करिने निरवासनिक थईने भगवानना एकांतिक भक्त थवुं होय॥ तेने तो श्रद्धा राखिने॥ पोताने मल्या जे भगवान॥ तेनि मूर्तिने संभारिने तेनुं ध्यान नित्ये करवुं॥ अने ध्यान करतां संकल्प थाय तो॥ तेने विचारे करिने संकल्पने टालता जवुं॥ ने ध्यान कर्या करवुं॥ पण संकल्प थाय त्यारे कायर थईने ध्याननो त्याग करवो नहिं॥ अने श्रद्धा राखिने ध्यान तो कर्या करवुं॥ एवि रिते श्रद्धाये सहित प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनां ध्याननो अभ्यास करे छे॥ तो तेना उपर भगवाननि कृपा थाय छे॥ अने भगवाननि कृपा थाय छे त्यारे तेने संकल्पमात्र टलिने निर्विकल्प स्थिति थाय छे॥ ने त्यारे तेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरुपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय छे॥ पछे तेने वगर कर्ये अखंड भगवाननुं ध्यान थया करे छे॥ ने तेने पंचविषयनि वासना टलि जाय छे॥ अने तेज भक्त भगवानना अक्षरधामने पामे छे॥ माटे प्रगट भगवाननुं ध्यान करवुं॥ तेमां समानो कांई मेल नहि॥ एतो ज्यारे निवृत्ति आवे त्यारे एकांतमां बेसिने॥ जेवि भगवाननि मूर्ति दिठि होय ते मूर्तिने अंतरमां संभारिने अंगोअंगनुं ध्यान करवुं॥ अने ध्यान पण केने थाय छे॥ तो जेने प्रगट भगवान मल्या छे॥ तेनेज ध्यान थाय छे॥ पण भगवान प्रगट मल्या विना कोईने भगवाननुं ध्यान थतुं ज नथि॥ केमके जे वस्तु दिठि न होय॥

तेवस्तुध्यानमां विरिते आवे॥ नज आवे॥ अने वस्तुदिठिहोय तेवस्तु सेहेजमांध्यान मां आवेछे॥ माटे जे ने प्रगट भगवा-
ननोसंबंध थायछे॥ तेने ध्यान करेतो सुखेथीध्यानथायछे॥ माटे आ समे तमारे ध्यान करवानो समो आव्योछे॥ तेत-
मारा भाग्यनो पार नथि॥ ॥ईतिश्री मुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय
नमो नमः॥ ॥संवत॥१९॥ओगणिसें॥२२॥ बाविसना॥ श्रावण वदि॥४॥ चतुर्थिने दिवसमहाराज
श्रीहरिकृष्णभगवान गाम श्री सोजित्रा मध्ये व्यास सदारामसुखलालने घेर आथमणा बारना ओरडानि ढवेसमां॥
गादि तकिये युक्त पलंग बिछाविने तेउपर विराजमानथया हता॥ अने सर्वेजरियानि वस्त्र धारण कर्यां हतां॥ अने स
र्वे अंगमां पुष्पनां आभूषण शोभि रह्यां हतां॥ ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो॥ ने पोताना मुखारविंदनि आगलसाधु
तथाघणाकहरिभक्तनी सभा भराईने बेठिहति॥ पछे भक्त बारोट बेचर लखमिदासे प्रश्नपुछ्युं जे हे महाराज भगवा
नना धामना सुखनो प्रत्यक्ष अनुभव केमथाय ते भगवानना धाममां आवुं सुखछे॥ ते कहो॥ पछे महाराज बोल्याजे
तेनो एम अनुभव थायछे जे भगवानना धाम संबंधि सुख छे॥ ते समजणे करिने जाणवामां आवेछे॥ ते समजण एमछे
जे भगवानना धामनुं सुख चार प्रकारे करिने पमायछे॥ ते चार प्रकार पुरा सिद्ध थायछे॥ त्यारे अक्षर धामनुं सुखसंपूर
ण छतिदेहे प्रत्यक्ष अनुभवमां आवे छे अने ए चार प्रकारमां जेटलुं अधूरुं होय॥ तेटलो तेने सुखमां फेरर हेछे॥ हवे ते
चारप्रकार किया तो एक धर्म॥ बिजुंज्ञान॥ त्रीजो वैराग्य॥ ने चोथि भक्ति॥ ए चार साधन सिद्ध थाय छे त्यारे तेने भगवा
नना अक्षर धामनुं सुख साक्षात्कार द्रष्टिमां आवेछे॥ अने ते सुखने पामिने ब्रह्मरूप महामुक्त थाय छे॥ अने तेने प
छे चौद लोकनां जे पंच विषयनां सुख ते काग विष्टा तुल्य थई जायछे॥ हवे धर्मे करिने भगवानना धामनो अनुभव था
यछे॥ तेने कहियेछैये॥ जे धर्म ते शुं तो॥ निर्लोभ निष्काम निस्स्वाद निस्नेह निरमान ए पांच गुणने धर्म कहेवाय छे॥
अने ए पांच गुण रुप धर्म जेने विषे होय॥ तेने आ लोक मां स्थूल देहे करिने अखंड सुख वरते छे॥ पण तेने कोई

दहाडे दुःखआवतुं नथि ॥ अने ए पांचे गुणमां थिएके गुणओछो होय तेटलुं तेने दुःख रहे छे ॥ जेम एकपोताना हकमेहन
तनुं द्रव्ये होय ॥ तथा पोताना वतननुं द्रव्य होय ॥ ते द्रव्य ने खरचे वावरे ॥ तेमां जेवुं निरभयपणुं रहे छे ॥ ने शान्तिने सुख
रहे छे ॥ अने एक निर्लोभरुप गुणनो त्याग करिने कोईकनुं चोरिने द्रव्य लेई आवे ॥ तो तेने केटलो भय लागे छे ने अं
तःकरणमां तेने परिताप थाय छे ॥ अने ते चोरि कोईकना जाणवामां आवे तो तेनुं घर लुटि ले छे ॥ ने तेने पांचमो ड्रि
यां बांधिने हेडमां पुरिने मार मारे छे ॥ अने ते महादुःखने पामे छे ॥ अने अधर्मे करिने आ लोकमां जे दुःख पाम्यो ते ज्रिव
परलोकमां पण जमपुरिचोरासि गर्भवासादिकनां महादुःख पामे छे ॥ अने ते मज वेद निशारवे करिने ॥ परणि ने
स्त्रि घरमां राखे ॥ अने स्त्रि होय ते पण कुल ने घटित प्रमाणे परणि ने पुरुष करे ॥ तो ते स्त्रि पुरुष बेने निर्भयपणुं रहे छे
अने तेने अंतरमां पण निसंकपणुं रहे छे ॥ अने तेनि कोई दहाडे फजेति पण थति नथि ॥ अने तेने कोई दहाडे दंडप-
ण भरवो पडतो नथि ॥ अने ते आ लोकमां महासुखने पामे छे ॥ अने जे पुरुष परस्त्रिनो संग करे छे ॥ तथा जे स्त्रि परपु
रुषनो संग करे छे ॥ तेने अनंत प्रकारना भय ने फडकारा रखवि पडे छे ॥ अने महादुःखने पामे ॥ अने ते स्त्रिनां सगां संबं
धिने ते वात जाणवामां आवे तो ते पुरुषनुं माथुं वाढे ॥ ने स्त्रिनुं नाक कापे ॥ अने राजाने खबर पडे तो तेनुं घर लुटि ले ॥
अने जगतमां पण तेनि फजेति थाय छे ॥ अने ते विभिचारी स्त्रि पुरुष बे आ लोकमां महादुःखने पामे छे ॥ अने मरि-
ने घोर नर्कमां पडे छे ॥ ने महा हेरान थाय छे ॥ अने तेम जं जे स्वाद छे ॥ ते पोताना कुलने घटित प्रमाणे खपतुं होय
तेना घरनुं खाय तथा जे वस्तु खपति होय तेने खाय ॥ तथा अभक्ष वस्तु ॥ तथा केफ वस्तुनो त्याग करे तो तेमां तेने
निर्भयपणुं रहे छे ॥ अने ते महासुखने पामे छे ॥ अने जेनुं खपतुं न होय तेना घरनुं अन्न खाय ॥ तथा मद्यमांसादि
क अभक्ष वस्तु खाय ॥ तो तेने अनंत प्रकारना भय प्राप्त थाय छे ॥ अने तेने नात बहार मुके छे ॥ अने दारु मादि ने
केफादिके करिने बेसुद्ध थईने बुद्धि भ्रष्ट थई जाय छे ॥ ने तेने घरनां मनुष्य पण तिरस्कार करे छे ॥ ने ते आ लोकमां महा

दुःखनेपामेछे॥ अनेमरिनेकुंभिपाक नामेजेरउरउ नर्क तेमांपडेछे॥ माटं अधर्मनो त्यागकरिनेजेधर्ममांद्रढपणेरहिनेप
रमेश्वरनिआज्ञामांवरतेछे॥ ते आ लोकमां पण महासुखनेपामेछे॥ अनेपरलोकमांजईने पणसुखनेपामेछे॥ माटेध
र्मेकरिनेजेआलोकमांसुखथायछे॥ तेपणभगवाननाधामनाजसुखनोअनुभवछे॥ अनेबिजोज्ञानेकरिने भगवानना
धामनासुखनोअनुभवथायछे॥ तेजेमनुष्यदेह आत्मानो विवेककरिने देहने मिथ्यानेनासवंतजाणिने तेदेहथीनोखो
नेशुद्ध चैतन्य अखंडअविनासि एवोजे आत्मा तेनेपोतानुंस्वरुपमानिने पंचविषयथकिअसंगपणे वरते छे॥ कहेतां-
आत्मारुप थईने माईकपंचविषयनो त्यागकरे छे॥ तेने महासुखने शांन्तिवरते छे॥ अनेदेहसंबंधित्रण प्रकारनाताप
जेअध्यात्म अधिभूतने अधिदेवादिकनाजे महादुःख ते मटिजायछे॥ जेमराम लक्ष्मणने रावणसाथे युद्ध करतांशा-
रिरमांबाणलाग्यांहतां॥ तेणे करिनेमोरछाथईगईहति॥ पछि हनुमानजिये विशलकरणि ओषधि लाविनेपाई॥
एटले शारिरमांजेटलांसल्यवाग्यांहतां ते सर्वे एनिमेले बहारनिसरिगयां॥ अनेमोरछामटिगई॥ तेमजेदेहनेपो
तानुंरुपमानिनेपंचविषयने भोगववाने विषे आशक्ति करेछे तेनेकामलोभादिकरुपि जेशत्रु तेशाब्द स्पर्श रुपर
सादिकरुपिजे बाण तेमारेछे॥ पछे ते विषयनाबाणरुपि शल्ले करिने अचेतथईने मोक्षनामारग थकिपडिजायछे॥
पछि तेने विसलकरणि ओषधि रुप आत्माना स्वरुपनुं ज्ञानथायछे॥ त्यारे तेने विषयनि आशक्तिरुपीजे बाणना
सल्लतेसरवेनिसरिजायछेनेतेनेपरमसुखशान्तिथायछेजेमकोईकेनो दिकरोपरदेशमांगयोहोय अनेतेनेएकजदिकरोहोयपछेतेनेकोई कु
आविने एमकहेके तमारो दिकरो मरिगयो॥ त्यारेतेने महादुःखथया लागे अनेतेने सुखनोतो लेशरहे नहिं॥ ने
तेअतिशोकल्यांतनेकरतो होय॥ पछे ते वखतमां तेना दिकरानाहाथनो कागल लेईने तेनीपासेथि मनुष्य आविने
ते कागल आपे॥ नेतेएम कहेजे तमारो दिकरो हिमखिम छे॥ अनेआजथि त्रिजेदहाडे तमारेघेर आवशे॥ एमस-
माचार आप्या तेनिघडिये तेनेदुःखमात्रटलिगयुं॥ नेतेने दिकराना मरणनी मिथ्या भ्रांन्तिनुं महादुःख हतुं ते

टलिने परमशान्ति थाय छे॥ तेम जे देहने पोतानुं रूप मानिने पंचविषयमां आसक्त थाय छे॥ ते जीव जे ते अध्यात्मादिक त्रण प्रकारना तापमां महासंतापने पामे छे॥ पछे तेने पोताना आत्माना साचा सगा अने आत्माने समिप रहेनारा एवा जे प्रत्यक्ष भगवान ने ते भगवानना निरवासनिक विषयना त्यागि संत ते जिवने मले ने ते आत्माना स्वरूपनुं ज्ञान करावे॥ त्यारे ते ने देह संबंधि जे अध्यात्मादिक त्रिविधिना तापनां जे महादुःख ते सर्वे मटि जाय छे॥ ने ते आत्मा परम सुखशां-न्तिने पामे छे॥ ते एवि रीते ज्ञाने करिने जे जिवने सुख थाय छे॥ ते पण भगवानना धामना सुखनो ज अनुभव छे॥ अने त्रिजुं वैरागे करिने भगवानना धामना सुखनो अनुभव थाय छे॥ ते केवि रिते वैरागे करिने सुखनो अनुभव थाय छे॥ तो जे ने सत्पुरुषना मुखथकि चार प्रकारना प्रलयनो विचार सांभलिने पिंड ब्रह्मांडादिकने नासवंत ने स्वप्नवत् जाणिने तेथकि वैरागने पामिने भगवानने विषे प्रिति थाय छे॥ त्यारे ते आत्मा महासुखने पामे छे॥ ने ते ने विषयने विषे राग जे प्रिति ते टलि जाय छे॥ अने विषयने विषे रागे करिने जे मननुं अस्थिरपणुं हतुं ते वैरागे करिने मन स्थिर थाय छे॥ अने ते वैरागवानने ब्रह्मानुभव सुखनो अनुभव थाय॥ अने तेने जगतने विषे महादुःख मान अपमान ने हाण्य वृद्ध्यादिकने विषे समभाव थई जाय छे॥ अने हरख शोकातित थईने महामुक्तदशाने पामे छे॥ एवि रिते वैरागने पामे छे॥ तेने एक भगवाननी मूर्त्तिनुं ज चिंतवन थाय छे॥ अने अद्भूत सुखने पामे छे माटे ए वैरागे करिने जे आ लोकमां छतिदेहे सुख थाय छे॥ ते भगवानना धामना सुखनो ज अनुभव थाय छे॥ अने आ लोकमां देह छतां ज वैरागवानने दुःखमात्र टलि जाय छे॥ अने चोथुं भगवाननि भक्तिये करिने भगवानना धामना सुखनो अनुभव थाय छे॥ ते भगवाननि भक्ति केवि छे॥ तो जिवने अनंत जन्मनां पाप होय तेने तत्काल बालिने भस्म करिने जिवने सद्य ब्रह्मरूप करे एवि छे॥ ते भक्ति ते शुं तो सर्व कारण ने सर्वाधारने दिव्यमूर्त्तिमानने सर्व सुखना सिंधुं ने क्षर अक्षरथी पर एवा जे अक्षरातित भगवान ते भगवान जिवोना कल्याण करवाने अर्थे कृपा

करिने पृथ्विउपर मनुष्यस्वरुपनुं धारण करे छे॥ ते प्रत्यक्ष भगवान नास्वरुपने विषे॥ महात्म्यज्ञाने सहित प्रितियेक-
रिने जोडाई जवुं॥ तेनुं नाम भक्ति छे॥ अने एविरीतनी भक्तियेकरिने तो एवुं स्रुख प्राप्तथायछे॥ जे ते स्रुख मन वाणिना
कह्यामां आवतुं नथि॥ केमकेजे प्रत्यक्ष भगवानना स्वरुपमां जोडायछे॥ तेने तो जेटलुं भगवानना धाममां स्रुखछे
ते सर्वे स्रुखते भक्तने प्राप्तथायछे॥ जेम कोई चक्रवर्तिराजा होय ते राजाने घेर दिकरो आव्यो॥ ते दिकरो राजा
ना सर्व स्रुखने पामेछे॥ तेम भगवानने विषे प्रितियेकरिने जे आत्माजोडाईजायछे॥ तेने पण जेटलुं भगवानना धा-
मनुं स्रुख छे॥ ते सर्वे स्रुख ते भक्तने प्राप्तथायछे॥ केमके धर्मज्ञानवैरागे करिने माईकएवा जे स्रुख ने दुःख ते नो त्या
ग करिने ब्रह्मरुप थायछे॥ तेने पछि भक्ति प्राप्तथायछे॥ अने भक्तियेकरिने भगवानने विषे जोडाय छे त्यारे भगवा-
न पण ते भक्तनाउरमां निवास करिने रहेछे॥ माटे जेने विषे भगवान निवास करिने रहे छे॥ तेनु स्रुख तो कह्यामां आवे
एवुं नथि॥ एवुं अपरमित स्रुखछे॥ ने अविनाशि स्रुखछे॥ अने ए भगवानना स्रुख निआगळ तो मोटा मोटा देवता
नां स्रुख तेने पण नर्कजेवां कह्यां छे॥ अने ते भगवानना स्रुखने कोई उपमा देवाय एम नथि॥ माटे धर्मज्ञानवैरागने
भक्ति ए चार साधन सिद्धकरिने जे भक्त भगवानने विषे जोडाईजायछे॥ ते भक्तने छतिदेहे भगवानना धामना
स्रुखनो प्रत्यक्ष अनुभव साक्षात्कार थायछे॥ अने तेने दुःखनो तो गंध रहेतो नथि॥ अने ते आठे पोहोरने बत्रिसे
घडि स्रुखना फुहारा छुटयाकरेछे॥ अने जेने भगवानना धामना स्रुखनो अनुभव थायछे तेनुं ए लक्षण छे जे तेने भ
गवाननी भक्ति विना बिजा माईक पंचविषयना स्रुख मात्र ते तेने खारां झेर जेवां थई जायछे॥ अने तेने भगवाननि
मूर्त्ति विना बिजा कोई स्रुख पामवानि ईछा रहेति नथि॥ माटे एवो जे भक्त छे॥ तेने भगवानना धामनां स्रुख-
नो प्रत्यक्ष अनुभव थायछे॥ ने ते अनुभव क्यारे थायछे तो जेने प्रत्यक्ष भगवान ने भगवानना निरवासनिक
संत मळे छे॥ अने ते प्रत्यक्ष भगवानने संतनो द्रढ आश्रय करेछे॥ तेनेज ए स्रुखनो प्रत्यक्ष अनुभव थायछे

॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत॥१९

॥ओगणिसें॥२२॥बाविसना श्रावणवदि॥८॥अष्टमीने दिवस॥ महाराजश्रीहरिकृष्णभगवान गामश्रीसोजित्रामध्येबारोट भक्तबेचरदास लक्ष्मिदासनेघेरउगमणा बारनाओरडानीआगल पुष्पनो मंडपकरिनेतेमां गादितकियेयुक्तपलंग बिछा विनेतेउपर बिराजमानथयाहता॥ अनेनिलाकिनखापनोसुरवाल धारणकर्योहतो॥नेजरियानीलपेटाना किनखापनी डगलि धारण करिहति॥अनेरेसमिगुढोरेटोपेहेर्योहतो॥नेतेउपरकसुंबल सेल्ल केडे धारण कर्युंहतुं॥ अनेएकजरियानिसेलुं रवभेनाख्युंहतुं॥नेमुत्तकउपर कसुंबलसोनेरि पाघ धारण करिहति॥ अनेसर्वेअंगनेविषेमोगराना पुष्पनाआभूषणशोभिरह्याहतां॥नेललाटनेविषेकेशरनिअरचानेकंकुनोचांदलोकर्योहतो॥ अनेपोतानामुखारविंदनिआगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनिसभा भराईनेबेठिहति॥ पछेव्यासईछाराम सुखलाले प्रश्न पुछ्युंजेहेमहाराज॥जेदिवस भगवाननोजन्मथाय॥ तेदिवस तो सर्वेने अतिशेआनंद थवोजोईये॥ अने आतो सामुं ते दिवस तो उलटो उपवासकरवोपडेछे॥ तेनुं केमहशे॥पछेमहाराज बोल्याजे तेनुं तोएमछे॥जेजगतनाजिवो सर्वे पंचविषयमांजरचिपचिरह्याछे॥ अनेपंचविषयछेतेब्रह्मसुखपामवामां अंतरायनाकरनारां छे॥माटे ते जिवोने ब्रह्मसुखनेप.मावासारुं भगवानप्रगटथायछे॥ पछे भगवान प्रगटथया तेजदिवसपंचविषयनो त्याग करावि नेब्रह्मसुखलेवरावेछे॥ मांटेरसनाइंद्रिनो विषय जेरस तेनो त्यागकरावि ने तेरसनाइंद्रियेकरिने प्रगट भगवानना जन्मकर्मचरित्रने लिला तेनुंगानकरवुं तेरुपरसनायेकरिने ब्रह्मसुखलेवरावेछे॥ अनेतेविजरितेनेत्रइंद्रिना विषयजे मायामांथि थयाजे स्त्रियादिकनाओकारमात्र तेने जोवानोत्यागकरिने॥प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संत तेनांदर्शनकरवां॥तेरुपिआंखेकरिने ब्रह्मसुखलेवुं॥ अनेकानेकरिने जगतना विषयादिकनाशब्दसांभलवानोत्यागकरिनेप्रत्यक्ष भगवाननिकथावार्तागुणचरित्रनेलिला तेनुंश्रवण करवारुप ब्रह्मसुखलेवुं॥ अने त्वचाइंद्रियेकरिने मार्दकस्पर्शनो त्यागकरिनेभगवा

ननाचर्णनो स्पर्श करवो ॥ ते रुपि ब्रह्मसुख लेवुं॥ अनेनासिकाये करिने माईक गंधविषयनो त्याग करिने भगवाननि
प्रसादि पुष्पना हार चंदनादिकनो सुगंध लेवो ॥ तेरुपि ब्रह्मसुख लेवुं॥ अनेमंने करिने विषय भोगववाना संकल्पनो त्याग
त्याग करिने भगवाननी नवधा भक्ति करवाना संकल्प करवा॥ तेरुपि ब्रह्मसुख लेवुं॥ अने चित्ते करिने विषयभोगववा-
नां चिंतवननो त्याग करिने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्त्तिनां अंगोअंगनुं चिंतवन करवुं ॥ तेरुपि ब्रह्मसुख लेवुं॥ अनेअहं
कारे करिने देहने देहसंबंधि पदार्थनो अहंकार छे॥ तेनो त्याग करिने भगवानना दासत्वपणानुं अभिमान धरवुंनेहुं भ
गवाननो दास छुं॥ तेरुपि ब्रह्मसुख लेवुं॥ अने बुद्धिये करिने माईक पदार्थना निश्चयनो त्याग करिने प्रत्यक्ष भगवानना
स्वरुपनो निश्चय करवो तेरुपि ब्रह्मसुख लेवुं॥ अने हाथे करिने विषयनि क्रियानो त्याग करिने प्रत्यक्ष भगवानने
भगवानना निरवा सनिक संत तेनि सेवा करवि ॥ तेरुपि ब्रह्मसुख लेवुं॥ ए विरिते भगवानना जन्म दिवसने विषे दुःखरु
पने पापरुपने ब्रह्मसुखने विषे अंतराय ना करनारा एवा जे माईक पंच विषय तेनो त्याग करिने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरु
पसंबंधि ब्रह्मसुख लेवुं॥ अने इंद्रियो अंतःकरण माईक पंचविषयने पामवानि क्रियामां ज्यां सुधि प्रवर्ते छे त्यां सु-
धि तेने ब्रह्मसुख प्राप्त थतुं जनथि॥ अने ज्यारे माईक विषयना सुख पामवानी क्रियानो इंद्रियो अंतःकरण त्याग करे छे॥
त्यारे ज तेने ब्रह्म जे परमात्मा भगवान तेनुं सुख प्राप्त थाय छे॥ माटे भगवाननुं प्रगटपणुं जे दिवस थि थयुं होय॥ ते दिवस थि
ज इंद्रियो अंतःकरणना माईक विषयनो॥ त्याग करावि ने ते इंद्रियो अंतःकरणने भगवानना स्वरुपमां जोडि देवां॥ अने
ए विरिते विषयनो त्याग करिने भगवानना स्वरुपमां जोडाय छे तेने ज ब्रह्मसुख प्राप्त थाय छे॥ अने जे विषयनो त्याग
कर्या विना भगवाननी भक्ति करे छे॥ तेने ब्रह्मसुख कोई काले पमातुं नथि॥ माटे पंच विषयनो त्याग करावि ने ब्रह्म
सुख जिवने पमाडवा सारुं मोटे पुरुषे भगवानना जन्म दिवस तथा एकादशिना उपवास तथा चांद्रायण व्रत करवां
तथा धारणां पारणां आदिक व्रत कर्यां छे॥ ते सारुं जेने ब्रह्मसुख नेपामवुं होय तेने भगवानना जन्म दिवसना उपवास

तथाएकादशीआदिक व्रतना उपवास ते जरुर करवा ॥ अने ते दिवस विषयनी क्रियानो त्याग करिने भगवानना श्रव-
णकिर्तनादिक नवधा भक्ति करवि एज जिवना मोक्षनो अचलसिद्धांत छे ॥ ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे ॥ ॥

इति श्री सुखसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णायनमो नमः ॥ ॥ संवत् ॥ १९ ॥ ओगणिसें
॥ २२ ॥ बाविसना भादर्वा शुदि ॥ ५ ॥ पंचमिने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गामश्रीसोजिंत्रामध्ये ॥ बारोट ॥
भक्त बेहेचरदास लक्ष्मिदास ने घेर उगमणे बार ओरडानि रवेसमां गादि तकिया बिछावेला पलंग उपर बिराजमान थ-
या हता ॥ अने सर्वे जरियानि वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ ने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभि रह्यां हतां ॥ ने कंकुनो
चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा कहरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे महा-
राज बोल्या जे आकाशमां ते कांई भेद हशे के अभेद छे ॥ पछे अक्षरमुक्तानंद स्वामिये कह्युं के आकाश वस्तुगते तो अ-
भेद छे ॥ पण स्थानकने भेदे करिने ॥ चार प्रकारना भेद कहेवाय छे ॥ ते चार भेद कियां ॥ तो एक मूल अनादिस-
त्यने अखंड चिदाकाश छे ॥ अने ते चिदाकाश थकि महदाकाश थयो छे ॥ अने महदाकाशथकि मठाकाश थयो छे ने मठाकाश
थकि घटाकाश थयो छे एविरिते आकाशमां भेद पड्या छे पछे महाराज बोल्या जे आकाशना भेद सो ने कर्या ने पण्या छे ना जे अनादि एक चिदाकाश छे तेनो शा स्वदाकाश
रुप एवा जे आत्मा ते अनंत रह्या छे ॥ अने ते आत्माओने विषे कारणपणे वासना रुप सूक्ष्मरुपे आकाश रह्यो छे ॥ ते
आकाशनु नाम महदाकाश कहेवाय छे ॥ अने ते वासना रुप महदाकाश थकि ॥ चार अंतःकरण ने पांच विषय थ-
या छे ॥ ते अंतःकरणनां नाम ॥ मन बुद्धि चित्त ने अहंकार ॥ अने पांच विषयनां नाम ॥ शब्द स्पर्श रुप रस ने गंध ॥
ए पांच विषय ॥ ते मांशब्द थकि आकाश उत्पन्न थयो छे ॥ ते आकाशनुं नाम मठाकाश कहेवाय छे ॥ अने ते आका-
श त्रिगुणात्मक छे ॥ ते गुणनां नांम ॥ रजोगुण ॥ तमोगुण ॥ सत्वगुण ॥ ते मांतमोगुणरुप तो पोते मठाकाश छे ॥
अने तेमां एक एक गुणमां त्रण त्रण गुण रह्या छे ॥ ते तमोगुणमां जे सत्वगुणनो भाग छे ॥ ते थकि श्रोत्र इंद्रि थई छे

नेजे तेमांरजोगुण नो भागछे ॥ ते थकि वाकइंद्रि थई छे ॥ अने जे स्पर्श विषयछे ते थकि वायु थयोछे ॥ ते वायु पोते तमोगुण-
रुपछे अने तेमांजे सत्वगुणनो भागछे तेथकि त्वगइंद्रि थैछे अने तेमांजे रजोगुणनो भागछे तेथकि हस्तइंद्रि थैछे अनेजे रुपविषयछे तेथकि तेजथयुंछे ॥ अने तेमां-
जे सत्वगुणनो भाग छे ते थकि चक्षुइंद्रि थई छे ॥ अने ते मां रजोगुण छे ॥ ते थकि पादइंद्रि थई छे ॥ अने रस विषय छे ते-
थकि जल थयुं छे ॥ अने तेमा सत्वनो भागछे ॥ ते थकि रसनाइंद्रि थई छे ॥ अने तेनां रज अंश थकि शिश्नइंद्रि थई छे ॥ अ-
नेजे गंध विषय छे ॥ ते थकि पृथ्वि थई छे ने तेमां सत्वनो भागछे ॥ ते थकि नासिकाइंद्रि थई छे ॥ अने पृथ्वीना रजअं-
शथकि गुदाइंद्रि थई छे एम रिते पांच विषयथकि पांच भूतथया छे ॥ ने पांच भूतथकि दश इंद्रियो थई छे ॥ ते इंद्रियो
भूतने विषय ॥ ते सर्व मलिने विस तत्व थयां ॥ अने चार अंतःकरणछे ॥ एटले चोविसतत्वथयां छे ॥ अने ते चोविस
तत्व मलिने तेथकि ब्रह्मांड थयुं छे ॥ अने ते ब्रह्मांडथकि पिंड थया छे ॥ एविरीते पिंडने ब्रह्मांडनीउत्पत्ति थई छे ॥
ते पिंड ब्रह्मांडरुप जे माया तेणे चिदाकाशरुप जे आत्मा तेने आछादन करि राख्यो छे ॥ ते आछादने करिने पोता
नुं स्वरुप जे आत्मा अने आत्माना प्रकाशक एवा जे परमात्मा भगवान तेने भूलिने ते आत्मा जे ते जेवा जेवा देहनुं धारण करे छे ॥
तेने तेटलुं बल होयछे ॥ कहे तो जेटलो आकाशनो अवकाश जे देहने विषे होय छे ॥ तेटलि तेने विषे गुरुत्व आकर्षणश-
क्ति आवे छे ॥ ते आत्मा किडिना देहनुं धारण करे छे ॥ त्यारे तेने विषे आकाश थोडो होयछे ॥ तो ते आत्मा किडिनो देह उपाडि-
शके एटलि शक्ति तेने होयछे ॥ अने ते किडिनो आत्मा छे ते किडिना देहनो त्याग करिने तेनो ते आत्मा हाथिना देहनुं धारण
करे ॥ तो तेने विषे आकाश घणो होयछे ॥ तो ते आत्मा हाथिनो देह उपाडिने चाले ॥ तथा ते थि बिजो पण बिसपचिसमण भार
उपाडिने चाले ॥ एटलि तेने विषे आकर्षणशक्तिरुप आकाश होयछे ॥ अने आत्मा तो तेनो ते होयपण किडिना देहमां
होय त्यारे एकपासेरनो भार पण उपाडि शके नहिं ॥ अने तेनो ते आत्मा जो वैराटदेहनुं धारण करे तो तेने विषे चौदलो-
कनुं ब्रह्मांड उपाडि चाले ॥ एटलो आकर्षणशक्तिरुप आकाश आवे छे ॥ अने ते आत्मा जो मूलप्रकृतिपुरुषना देहनुं

धारण करे तो तेएक आत्मा कोटिब्रह्मांडने तोलि राखे॥ एटलो तेनेविषे गुरुत्वआकर्षण शक्तिरुप आकाश आवे छे॥ अने तेनो ते आत्मा जो मनुष्य देहनुं धारण करिने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतनो आश्रय करिने॥ ते थकि आत्यंतिक ज्ञाननेपामे तो आत्मा अक्षर ब्रह्मरुप थाय छे॥ ते अक्षर ब्रह्म केवुं छे॥ तो कोटि ब्रह्मांडनो आधार एवो जे मूलप्रकृतिपुरुष छे॥ तेएवा अनंत कोटि प्रकृति पुरुष ते अक्षरना कोक देशने विषे लिन थई जाय छे॥ कहेतां अनंत कोटि मूल पुरुष ते अक्षर ब्रह्मनी द्रष्टिमां आवता नथि॥ जेम दिवसने विषे अनंत कोटि तारामंडल द्रष्टिमां आवता नथि॥ तथा जेम कोई कदत्रा-बिन्नागा उडं चो परवत होय तेना उपर॥ चड्युं होय तो ते निद्रष्टिमां पृथ्वि उपल्या मनुष्य पशु वृक्ष आदिक कोई आवे नहिं॥ तेम आत्यंतिज्ञानने पामीने अक्षरब्रह्म रुप थयो जे मुक्त॥ तेने पिंड ब्रह्मांडादिक मायानो आकार मात्र ते द्रष्टिमां आवतो नथि॥ अने तेने तो चिदाकाशरुप एवुं जे पोतानुं विवेक सुद्ध स्वरुप अक्षर ब्रह्म तेएक द्रष्टिमां आवे छे॥ तेएवि द्रष्टि क्यारे थाय छे॥ तो ज्यारे इंद्रियो अंतःकरण रुप मायानो भाव ज्ञाने करिने टलि जाय छे॥ त्यारे ते निरावरण रुप ब्रह्म द्रष्टीने पामे छे॥ अने जेने इंद्रियो अंतःकरणनो भाव टल्यो न होय॥ तेने तो पिंड ब्रह्मांडादिक मायानो विवेक रहे छे॥ केमके श्रोत्र इंद्रि छे॥ तेने शब्दने विषे शुभ अशुभनो विवेक रह्यो छे॥ अने जो कानइंद्रि न होय तो तेने शब्दने विषे शुभ अशुभनो विवेक होय नहिं॥ केमके शब्दने पेसवानुं द्वार नाश पामे छे॥ त्यारे ते शब्दनुं सुखदुःख पण क्यांथि पेसे॥ न ज पेसे॥ अने ज्यारे शब्दनुं सुखदुखनाश पाम्युं॥ त्यारे तेने रागनेद्वेश रुपि जे जन्ममृत्युनुं बिज ते पण टलि जाय छे॥ केमके जे पदार्थमां राग होय तो ते पदार्थमां रागे करिने जन्म धरवो पडे छे॥ अने जे पदार्थ उपर द्वेष होय तो ते पदार्थने विषे द्वेषे करिने पण स्मृति रहे छे॥ तो तेनेविषे पण जन्म धरवो पडे छे॥ माटे जेने ज्ञाने करिने इंद्रियोना भावरुपि विवेक टलि गयो होय तेने जन्म मृत्यु टलि जाय छे॥ अने ज्यां सु विवेक ने पोतानुं रुप मानिने इंद्रियोना राग द्वेषादिकने विषे वरते छे॥ ने तेणे करिने सुख दुःखने पामे छे॥ त्यां सुधि तेने पींडब्रह्मांडादिक रुपि जगत भासे छे॥ जेम कुवाने जले करिने वाडि पिये छे॥ त्यांसुधि

तेवाडिमांक्यारापालारुपि भासेछे॥ अने ज्यारे वरसादने जलेकरिने वाडि पियेछे॥ ने सर्वे वाडिपडामां समथलजल
भराई जाय छे॥ त्यारे ते वाडिमांपछि क्यारापालानो विवेक रहे तोनथि तेम आत्मारुपिजे जल छे ते अंतःकरण रुपकु
वा द्वारे थईने इंद्रियो रुप निकोमां प्रवरते छे॥ त्यारे तेने क्यारापाला रुप पिंड ब्रह्मांडादिक मायाना आकार ते दृष्टि मां आ
वे छे अने ज्यारे वरसाद रुपि॥ प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतना ज्ञानरुपि जल॥ वरसे छे त्यारे तो तेनो इंद्रियोरुपि
निको तथा पंचविषयने विषे सत्यता॥ अने ते निसत्यताय करिने॥ जगतने विषे रागने द्वेषादिक रुपजे क्यारापाला
ते सर्वे टलि जायछे॥ अने तेने चिदाकाश रुपजे पोतानुं ब्रह्म स्वरुप॥ अने ब्रह्मने विषेरह्याने॥ ब्रह्मना प्रकाशक एवाजे
परब्रह्म ते द्रष्टि मां रहे छे॥ पण आत्माने प्रत्यक्ष परमात्माविना बिजुकांई ते निद्रष्टि मां॥ मायाकृत पिंड ब्रह्मांडादिक को
ई आकार रहे तो नथि॥ अने ते आत्मानिप्रत्यक्ष परमात्माना ध्याने करिने दिव्य मूर्ति बंधाय छे॥ ते मूर्तिने भागवतित
नुं कहेवाय छे॥ अने ते आत्मा स्थूलदेहनो त्याग करिने भगवानना धामने पामे छे॥ ते पाछो फेर जन्म ने धरतो नथि॥
अने जेने एवुं ज्ञान थयुं न होय॥ ते आत्मा जन्म मरणने पामे छे॥ माटे जे प्रत्यक्ष परमात्माना अवतार रामकृष्णादिक भग
वानने तेना संत तेनो आश्रय करे छे॥ तेने एवुं ज्ञान थाय छे॥ ने ते आत्मानो मोक्ष थाय छे॥ माटे ते समो आज तमारे आ-
व्यो छे॥ ते तमारा भाग्यनो पार नथि॥ एम कहिने महाराजे वारतानी समाप्ति करि॥ पछी संत किरतन गावा लाग्या॥

॥ ॥इति श्रीमुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरि कृष्णायनमोनमः॥ ॥

संवत॥१९॥ओगणीसें॥२२॥बाविसना॥भादरवा शुदि॥१०॥दशमिने दिवस॥ महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम
श्रीसोजिंत्रा मध्ये॥ बारोट भक्त बेहेरदास लक्ष्मिदासने घेर उगमणे बारओरडा निरवेन्नामां॥ गादि तकिये युक्त पलंग
बिछाव्यो हतो॥ ने ते उपर विराजमान थया हता अने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां॥ ने पुष्पना हार कंठमां शोभि र
ह्या हता॥ ने पाघमां पुष्पना तोरा लटकता धारण कर्या हता॥ अने पुष्पना गुच्छ बे कान उपर शोभि रह्या हता॥ अने

पोतानामुखारविंद आगल साधु तथा घणा क हरिभक्तनि सभा भराईने बेठिहति ॥ पछे महाराज नि संध्याआर्ति थयाकेडे महाराज
जबोल्याजे स र्वे करतदेईने सांभलो ॥ जेएक वारता करविछे ॥ अने आजे वारता कहिशुं तेमांबेवात आवशे ॥ एक बा-
हार द्रष्टि कहेवानी ॥ अने ते बहारद्रष्टियेकरिने जणासेजे पदार्थ तेकहेवासे ॥ अने ते बहारद्रष्टिने बहारद्रष्टियेकरिने
जणासेजेपदार्थ तेनुं मिथ्यापणुं कहेवासे ॥ अने बिजि अंतरद्रष्टि कहेवानी ॥ अने तेअंतरद्रष्टियेकरि जणासेजेपदा
र्थ ते पण कहेवासे ॥ अने ते अंतरद्रष्टिने अंतरद्रष्टियेकरिने जणासेजेपदार्थ तेनुंसत्यपणुं कहेवाशे ॥ अने अंतर
द्रष्टिये. करिनेजे निर्विकल्प स्थितिथायछे ॥ तेकहेवानी ॥ अने आवात कहिसुं ते कोनेसमजाशे ॥ तोजेवात कहि-
शुं तेषात प्रमाणे पोताना मननि वृति करतोजशे तेनेए वात समजाशे ॥ ते वृतिने केवि रिते करविती आअमारा
हाथमां पुष्पनो गुछ छे ॥ तेनेएम कहियेजे आ गुछनेजुवो ॥ त्यारे तेगुछनेजोवो ॥ ने तेमां वृत्तिने ठेरावि ॥ अने ते गुछजे-
वो छे तेवो वृत्तिमां राखिने पछे कहियेजे आ बिजा हाथमां रुमाल छे तेजुवो ॥ त्यारे तेनेपण सारिपेठेजोवो ॥ नेतेरुमा
लने पण वृतिमां राखवो ॥ एवि रिते वृतिने विकाश पमाडवि ॥ अने ते तेपदार्थने वृतिमां राखवां ॥ एवि रीते जेजेवात क
रियेतेतेवातने वृतिमां राखशे तेने आवात कहिशुं तेसमजाशे ॥ अने तेनेनिर्विकल्पस्थितिथाशे ॥ अने तेने महाअद्भूत आनंद
थशे ॥ हवे तेवात कहियेते सांभलो ॥ जे बहारद्रष्टि तेसुं तो आ देहने पोतानुं रुप मानीने ॥ स्थूल सूक्ष्मने कारण एत्रणदेहेक
रिने जेटलुं जेटलुं ग्रहण करवामां आवे छे ॥ तेनेसत्यमानीने तेने विषेवासनायेकरिने भोगववानिजे इछा छे ॥ तेनुंनाम
बहारद्रष्टि छे ॥ तेद्रष्टि कल्पनामय मिथ्या द्रष्टि छे ॥ तेमां स्थूलदेहेकरिने तो जाडा पंचभूतजे ॥ पृथ्वि जल तेज वायु ने आका
श तेद्रष्टिमां आवे छे ॥ अने ते सूक्ष्मदेहेकरिने विराटकुत्रात्मा ने अव्याकृतरुपजे ॥ सूक्ष्म पंचभूतात्मकजे समष्टिसृष्टि ॥ ते
जोवामां आवेछे ॥ अने कारणशरिरे करिने जगतनुं आदि बिजरुप एवो मूल प्रकृति पुरुष अने तेनो विस्तार ते सर्वे
द्रष्टिमां आवे छे ॥ अने तेद्रष्टि सर्वे कल्पनामय मिथ्या बहारद्रष्टि छे ॥ अने ते बहारद्रष्टिथी परएवि अंतरद्रष्टिरुप

अक्षर ब्रह्म दृष्टि छे ॥ अने ते अक्षर ब्रह्म रुप जे अंतरदृष्टि ते त्रणे देहथि परए वो जे आत्मा ॥ ते आत्माये करिने देखाय छे ॥ प
ण त्यां स्थूल सूक्ष्म न कारण रुप जे मायानी बहार द्रष्टि ते पहोंचीवा शक्ति नथि ॥ जेम कोई क राजा होय ॥ ने तेने घेर सो बसे घो
डा होय ॥ तेमां केटलाक घोडा तो मोटा जबरा मतवाला होय ॥ अने केटलाक तो घोडा साधारण होय ॥ अने केटलाक घोडा
नाना टंकण होय ॥ पछे राजाने गामनी भागोले बाग बगिचे जवुं होय ॥ त्यारे नाना टंकण घोडा उपर चडिने जाय छे ॥ अने पां
च गाउ छेटे जवुं होय ॥ त्यारे साधारण घोडो होय ते उपर चडिने जाय छे ॥ अने ज्यारे कोई क शत्रु सामि लडाई करिने पोता
नि जित करवि होय त्यारे तो मोटा मतवाला घोडा होय ते उपर चडिने जाय छे ॥ ने पोतानी जीत करे छे ॥ पण ते राजाने देवलोक
नुं राज लेईने देवलोकनुं सुख पामवुं होय ॥ त्यारे तो त्यां त्रणे प्रकारना घोडानुं जोर चालतुं नथि ॥ अने त्यां तो त्रणे प्रकार
ना घोडानो त्याग करिने पोते पंडे जप तप यज्ञादिक साधन करे ॥ त्यारे देवादिकना लोकना सुखने पामे ॥ जेम गजने जुडे ग्र-
ह्यो हतो ॥ त्यारे ते गजने मुकाववाने अर्थे भगवान गरुड उपर चडिने चाल्या पण पोते गरुड पुगि शक्यो नहिं ने गजने जुडे बूडा
डवा मांड्यो ॥ पछे भगवाने गरुडनो त्याग करिने पगपाला दोड्या ॥ ने गजने मुकाव्यो ॥ तेम ए तो दृष्टांत ने तेनुं सिद्धांत ए छे जे
आत्माने त्रण प्रकारना घोडा रुप त्रण देह छे ॥ ते आत्मा जे ते बहार दृष्टिये करिने टंकण घोडा रुप इंद्रियो उपर अस्वार थईने आ
लोकनां पदार्थने जाणि ले छे ॥ अने साधारण घोडा रुप अंतःकरण उपर स्वार थईने मूलमायानुं कार्य जे अनंत कोटि ब्रह्मांड तेने
जाणि ले छे ॥ अने जाणवा रुप जे कारण देह ते रुप मतवाला घोडा ते उपर अस्वार थईने मूलमायानुं कारण जे महा अंधकार त्यां
सुधि प्रवेश करे छे ॥ पण ते अंधकारथि परए वो जे प्रकाश त्यां इंद्रियो अंतःकरणादिक रुप जे घोडा तेनुं जोर चालतुं नथि
॥ अने त्यां तो ते इंद्रियो अंतःकरणादिक रुप जे घोडानो त्याग करिने पोते पंडे आत्मा एकलो शुद्ध चैतन्य रुप थईने प्रत्यक्ष स
द्गुरुनो आश्रय करिने तेथकि धर्म ज्ञान वैराग ने महात्म्य सहित भक्ति सिद्ध करे त्यारे ते प्रकाशने पामे छे अने तेनुं नाम अंत
रदृष्टि कहेवाय छे ॥ अने ते दृष्टि सत्य छे ॥ ने सुखदाई छे ॥ अने जे बहार दृष्टि छे ॥ ते असत्य ने दुःखदाई छे ॥ हवे जे जिव

छे ते बहारद्रष्टिनेपण जाणतोनथि॥ अने अंतर द्रष्टिने पण जाणतोनथि ॥ए बो जिव अनादिनो अज्ञानि छे॥ तेने सद्गुरु रुप
प्रत्यक्षपरमात्माने तेनासंत छे ते अंतरद्रष्टिने बहार द्रष्टि नुं ज्ञान करावे छे॥ तेमां प्रथमबहारद्रष्टि ने जणावि ने आत्माने विका
शपमाडे छे॥ केमके अज्ञाने करिने आत्माजे ते अति शो संकोषने पामिगयो छे॥ मारे ते बहार द्रष्टिने ज्ञाने करिने विकाशने
पामे छे॥ पछे ते बहारद्रष्टिरुपजे मिथ्याद्रष्टि तेनो त्यागकरावि ने॥ तेने विषे अक्षर ब्रह्मरुप जे अंतरद्रष्टि तेनो आरोपकरा-
वे छे॥ पछे ते अंतर द्रष्टिये करिने आत्मा नि दिव्यमूर्त्ति बंधाई नेपरमात्माना धामने पामे छे॥ जेम धातुनी मूर्त्ति करवि होय त्यारे
प्रथममिणनुं पुतलुं करे छे ने ते उपर कचरो दाबे छे॥ पछे ते मिणने अग्नियेतपावि ने काढीनाखे छे॥ ने ते पोलाकचरानाबिबा
मां धातुनो रस रेडे छे॥ त्यारे ते निमूर्तिथाय छे तेम आत्माने ब्रह्मरुपकरवाने अर्थे महात्मा पुरुषजे ते मिणरुप बाहार द्रष्टि
ये करिने आत्माने विकाश पमाडे छे॥ पछे ते मिणरुपजे बहारद्रष्टि तेनो त्यागकरावि ने ते आत्माने विषे जे जाणपणुं छे तेजा
णपणाने विषे अंतरद्रष्टि रुप जे ब्रह्मरस तेनो आरोपकरावे छे॥ केहेतां तेने आत्मापरमात्मानुं ज्ञानकरावे छे॥ त्यारे ते आ
त्मानी ब्रह्ममयमूर्त्ति बंधाय छे॥ हवे बहारद्रष्टिने विकाश पमाडे छे ते मां प्रथम प्रथ्विनुं ज्ञान करावे छे॥ जेम मेरु मवन पर्वतने
समुद्रे सहित एविजे पंचाश क्रोड योजन पृथ्वी॥ तेने शास्त्रना कह्या प्रमाणे जाणपणामां जोवि॥ पछे ते मां वृतिने ठेरववि
॥पछी ते पृथ्वीमां वृति मांरा खिने ते प्रथ्वी करतां दशघणुं वधारे जल छे॥ ते जल पृथ्विनी चारे बाजुये विंटाये लुं छे॥ ते जल
ने जाणपणामां जोवुं॥ अने ते जल अने पृथ्वि ए बेने द्रष्टिने ठेरावि ने॥ पछे ते जलथकि दशगणो अग्नि मोटो छे॥ ते अग्नि ज
लने फरतो चारे बाजुये विंटाये लो छे॥ ते अग्निने जाणपणारुप द्रष्टिये करिने जोवो॥ अने ते पृथ्वि जल ने अग्नि ए त्रण ने वृ
त्तिमां राखवी ने॥ पछे ते अग्निथकि वधारे दशगणो वायु छे॥ ते वायु ते ते अग्निने फरतो चारे बाजुये विंटाये लो छे॥ ते वायु
ने जाणपणारुपद्रष्टिमां जोवो॥ अने प्रथ्वीजल अग्निने वायु ए चारे भूतने विषे वृतिने ठेरावि ने॥ पछे ते वायुथकि दशग-
णो वधारे आकाश छे॥ ते आकाश वायुने फरतो चारे बाजुये विंटाये लो छे॥ तेने जाणपणारुपद्रष्टिमां जोयो॥ अने ते

मांचे भूतने विषे व्रतिने ठेराविने ॥ पछे ते आकाश थकि वधारे दश गणो अहंकार छे ॥ ते नेजाणपणामांजो वो ॥ अने ते अहंकारथकि दश गणो महद तत्व वधारे छे ॥ ते महद तत्वने पण जाणपणा मांजोवुं ॥ अने तेमां व्रतिने ठेराविने ते सर्वे पृथ्वी आदिकने व्रतिमां राखिने पछे ते महद तत्व थकि सहस्त्र गणो वधारे प्रधानपुरुष छे तेप्रधानपुरुषनेजाणपणारुप द्रष्टिये करिने जोवो ॥ अने ते प्रधानपुरुष थकि अनंत गणो वधारे मूल प्रकृतिपुरुष छे ॥ ते प्रकृतिपुरुषने पण जाणपणारुप द्रष्टिये करिने जोवो ॥ अने ते प्रकृतिपुरुषथकि पर अनंत कोटि गणुं वधारे अंधारुं छे ॥ ते अंधारुं प्रकृतिपुरुषने फरतुं चारे बाजुये विंटाये लुं छे ॥ ते अंधाराने पण जाणपणारुप द्रष्टिये करिने जोवुं ॥ ने ते सर्वेने व्रतिमां राखवुं ॥ ने तेमां व्रतिने ठेरावनी ॥ एवि रिते पृथ्वीयादिक अष्टावरणरुप अनंत कोटि विश्वने तेथि पर अंधकार तेने जाण पणा मां जोवुं ॥ ने ते सर्वेने व्रतिमां राखवुं ॥ तेनुं नाम वहार द्रष्टि कहे वाय छे ॥ अने ए सर्वे वहारद्रष्टिरुप अनंत कोटि विश्वने ते थिपर अंधकार छे ॥ अने अंधकार थिपर एक लो प्रकाश छे ॥ अने ते प्रकाशने चिदाकाश कहे छे ॥ तथा तेने ब्रह्म कहे छे ॥ तथा अक्षर धाम कहे छे ॥ अने ते प्रकाशनेमध्ये प्रकाशना आधार एवाजे परब्रह्म परमात्मा भगवान ते रह्या छे ॥ अने ते परमात्मा दिव्य मूर्तिमान छे ॥ अने ते चिदाकाशरुप जे ब्रह्मने ब्रह्मना आधार ने ब्रह्मना प्रकाशक एवाजे परब्रह्म तेने आत्माये करिने जोवा ॥ अने ते मां चिदाकाशरुप जे ब्रह्म तेने पोतानुं स्वरुप जाणवुं ॥ अने तेने विषे दिव्य मूर्तिमान परमात्मा अखंड रह्या छे ॥ एवि रिते पोताना आत्माने विषे परमात्माने जाणिने ते परमात्माना स्वरुपने विषे पोताने द्रढ स्थिति पामवुं ॥ अने ते ब्रह्मने परब्रह्मने जे जोवा तेनुं नाम अंतरद्रष्टि कहेवाय छे ॥ अने ते जे अंतरद्रष्टि छे ते सत्य छे ॥ अने ते द्रष्टिये करिने जणाया जे ब्रह्मने परब्रह्म ते पण सत्य छे ने अखंड छे ने अविनाशी छे ॥ अने वहारद्रष्टिये करिने पिंड ब्रह्मांडादिक जे जे देखायुं ते सर्वे असत्य छे ॥ ने नाशवंत छे ने मिथ्या भ्रांतिवत छे ॥ जेम एक स्वप्नमां शेहेर बजार आदिक अनंत पदार्थ देखाय ॥ ते सर्वे मिथ्या छे ॥ अने एक जाग्रत मां शेहेर बजार ॥ आदिक जेजे पदार्थ देखाय ते सर्वे सत्य छे ॥ तेम वहारद्रष्टिये करिने जेजे पिंड ब्रह्मांडादिक देखाय छे ॥ ते सर्वे स्वप्नवत् मिथ्या

छे॥ अने अंतर द्रष्टियेकरिने जे ब्रह्मनेपर ब्रह्म देखायछे॥ ते जाग्रतनिपेठे सत्य छे ते जेम कोईकपुरुषने निंद्रामां स्वप्न आव्युं होय ते स्वप्न सृष्टिनां अनंत पदार्थनेए कल्पो देखतो होय ॥ अने तेपदार्थने लिधादि धाने व्यवहारे करिने स्वप्नमां वरत तो होय॥ पछे तेने वरलतोसांभलिने कोईक जागतो पुरुष होय तेस्को तेल्हा पुरुषने बांवडे झालिने स्वप्नमां थि जगाडे॥ त्यारे तेनेस्वप्ननां पदार्थ सर्वे मिथ्याथई जायछे॥ ने तेनेपछे जाग्रतनां पदार्थ देखायछे॥ अने ते पुरुषज्यारे स्वप्नमां हतो त्यारे तेने पोतानाघरनां पदार्थनी पण खबर रहेति नथि॥ तथा पोतानुं गाम तथा पोतानी नातजात कुल कुटुंब ईत्यादिक कोई लेशमात्र पण स्वप्नमांसांभरतुंनथि॥ अने ते स्वप्नवखते तो तेनेस्वप्ननांपदार्थ ते सत्य भासेछे॥ तेमजि वजे ते मोह रूपि निंद्राने विषे अज्ञानरूपि स्वप्ने करिने बहार द्रष्टिवडे पिंड ब्रह्मांडादिक जगतनां मिथ्या पदार्थने देखेछे॥ पण तेने सत्यएवुं जे पोतानुं आत्मरूप॥ अने आत्माना प्रकाशकएवाजेपरमात्मा ते लेशमात्र तेनेशांभरतां नथि॥ अने अज्ञानरुपी स्वप्नने विषे स्वप्नसृष्टिरुपजगतनां पदार्थना व्यवहारने विषे वरत्यानि पेठे आसक्त थायछे पछे एवा बे भानि जिवोनेजोईने सदाय जागता एवाजे परमात्मा भगवान् ने भगवानना संत॥ ते कृपाकरिने अज्ञानरुपि स्वप्नमांथि जिवने ज्ञानआपिनेजगाडे छे॥ त्यारे तेने मोहरुपि निंद्रा टलि जायछे॥ पछे ते पुरुष जे ते आत्माने परमात्माने साक्षात् कार देखेछे॥ अने बहारद्रष्टियेकरिने स्वप्नवत् देखातुं हतुं॥ जे जगत ते सर्वे मिथ्या थईजायछे॥ तेएवुं ज्ञानक्यारे थाय छे॥ तोजेने प्रत्यक्षराम कृष्णादिक रुपे परमात्मा मले छे॥ अने कां तेप्रत्यक्ष परमात्मा थकि ज्ञान पामिने सिद्ध थया एवाजे निरवासनिक पंचविषयना त्यागिसंतमले अने ते प्रत्यक्षपरमात्माने तेनासंतनो आश्रय जिवकरे छे॥ त्यारे तेने एवुं ज्ञान थायछे॥ पछे एवाज्ञानने पामिने जे मुक्त थयो॥ ते मुक्त प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरुपने विषे नवधा भक्ति वडे करिनेजोडाईजायछे॥ अने तेने आत्माने परमात्माने विषे दृढस्थिति थाय छे॥ अनेप्रथम बहारद्रष्टियेकरिने पृथ्विजोई पछे जल जोयुं॥ पछे अग्निजोयो॥ पछे वायुजोयो॥ पछे आकाश जोयो॥ पछे अहंकारजोयो॥ पछे महत्तत्व जोयुं॥ पछे

प्रधानपुरुषजोयो॥ पछे अनंत कोटि ब्रह्मांडे युक्त जे मुल प्रकृतिपुरुष तेनेजोयो ॥पछे तेथि परजे अंधकार तेनेजो-
यो॥ अने ते अंधकारथि पर एवोजे प्रकाश तेनेजोयो॥ अने ते प्रकाशने मध्ये प्रकाशमान॥ ने प्रकाशना आधारए-
वाजे परमात्मापरब्रह्म दिव्यमूर्ति तेने जोया पछे॥ ते परमात्मानेजोईने विचार करवा लाग्यो॥त्यारेतो तेने अंतरद्रष्टि
थईगई॥ पछेजे अगमने अतिशे पर॥ ने अतिशे प्रोक्षहतुं॥ तेप्रत्यक्ष प्रकाशने विषे परमात्मानुं दर्शनथयुं॥प
छे ते परमात्मानुं दर्शनथतां वेत॥ त्यांथि एवोदावलाग्योके बहारद्रष्टिने बहारद्रष्टिये करिने देखातुं हतुंजे प्रथ्विजलादिके सहित अनंत कोटिब्रह्मांडनेतेथि अनंतकोटिगणो अंधकार तेसर्वे हडफलईने जिवनिवृत्ति मांथि निसरिजा
यछे॥ केहेतां तेएमजाणे छेजे कोई दिवस पिंडब्रह्मांडादिक आवरणरूपमाया हतिज नहि॥ अनेतेने पिंडब्रह्मां-
डादिक अतिशे परोक्ष थई जायछे॥ अनेजे सर्वे थि पर प्रकाशहतो॥ ते तो पोतानुं स्वरूप देखायुं॥अनेते प्रकाशने
मध्येजेमूर्ति हति तेजमूर्त्ति प्रत्यक्ष पोतानेज्ञानदाता रूपेदेखायछे॥एविरिते जेपरोक्षहतुं ते प्रत्यक्ष थयुं॥ ने प्रत्य
क्षहतुंते परोक्ष थईगयुं॥जेमरतुने भेदे करिने शियालो उनालो ने चोमासुं आवेछे॥ तेशियालामां शितनुं प्रत्यक्षपणुं
होयछे॥ अने चोमासं नेउनालानुं परोक्षपणुं होयछे॥ अनेज्यारेउनालो आवेछे त्यारे तापनुं प्रत्यक्षपणुं होयछे॥अनेशि
यालानुं नेचोमासानुं परोक्षपणुंहोयछे॥अनेज्यारे चोमासुं आवेछे त्यारे वरसादनुं प्रत्यक्षपणुं होयछे॥ नेशियालानुं
नेउनालानुं परोक्षपणुं थायछे॥ तेमएक बहारद्रष्टिछे॥ नेएक अंतरद्रष्टिछे॥ते बहारद्रष्टिमां जिववर्ततोहोयत्यारे
तेनेपिंडब्रह्मांडादिक जगत ते प्रत्यक्ष भासमानथायछे॥ अनेतेने आत्मा नेपरमात्मा ते परोक्षथायछे॥कहेतां तेनि
द्रष्टिमां आवतानथि॥ अनेज्यारे अंतरद्रष्टिथायछे॥ त्यारे तेने आत्माने परमात्मा प्रत्यक्षदेखाय छे॥अनेतेनेजगतरू
पमायातेनुंपरोक्षपणुं थईजायछे॥वलिजेमदिवसने विषे रात्रिनुं परोक्षपणुं थईजायछे॥ अनेजेमजाग्रतने विषे स्वप्न-
नुंपरोक्षपणुं थईजाय छे॥नेवलिजेमकोईनां मावाप मरिगयां होयने तेनेजेम तेना मावापनुं परोक्षपणुं थईजायछे

तेने
तेमाबापपाछां देखातां नथि॥ तेमज्यारे अंतरद्रष्टि थाय छे त्यारे तेने बहारद्रष्टिये करिने देखातुं हतुं जे जगत तेनुं परोक्षपणुं थई
जाय छे॥ केहेतां तेने कोई दिवस जगत पाछुं द्रष्टिमां आववुं नथि॥ अने जेम दिवसने विषे सूर्यनुं प्रत्यक्षपणुं होय छे॥ तेम अंतरद्र
ष्टिने विषे आत्माने आत्मानाप्रकाशक एवाजे परमात्मा ते प्रत्यक्ष देखाय छे॥ अने तेने विषे तेने दृढ स्थिति थाय छे॥ अने ए
स्थिति पाछि कोई दिवस टलति नथि॥ अने एवि स्थिति जेने थाय छे॥ ते ज अक्षरधामने पामे छे॥ माटे जेने अंतरद्रष्टिये करि
ने निरविकल्पस्थितिने पामवुं होय॥ तेने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना निरवासनिक संतनो आश्रय करवो॥ अने जे ए
प्रत्यक्ष भगवानने संतनो आश्रय कर्यो छे॥ ते तो अंतरद्रष्टिने पामि रह्यो छे॥ केमके क्षरअक्षरथी पर एवा जे परब्रह्म पर
मात्मा तेनुं दर्शन तेने साक्षात्कार थाय छे॥ माटे प्रत्यक्ष भगवानने तेना संतनो आश्रय करिने तेनी आज्ञाप्रमाणे वर्ति
नेनवधा भक्तिसंबंधि जे जे क्रिया करे छे॥ ते सर्वे अंतरद्रष्टि छे॥ अने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतना आश्रयविनानां
जे जे साधन करे छे॥ तथा जे जे क्रिया करे छे॥ ते सर्वे बहारद्रष्टि छे॥ माटे जेने पोताना आत्मानो मोक्ष करवानी इच्छा होय
तेने आसमे प्रत्यक्ष भगवानने संतनो आश्रय करिने तेनी आज्ञाप्रमाणे वर्तवुं॥ अने ते प्रमाणे वरतशो तो तमारो साक्षा-
त्कल्याण थशे॥ एमां जराय संशय नथि॥ एम कहिने महाराजे वारतानी समाप्ति करि॥ पछे घोडिये अस्वार थईने॥
गाजते वाजते महाराज पोताने मंदिर उतारे गोधिनी धर्मशालामां पधार्या॥ ॥इति श्री मुखसिद्धांतसमा
प्तः॥ ॥श्री हरिकृष्णायनमो नमः॥ ॥संवत्॥१९॥ ओगणिसे॥२२॥ बाविसना भा
द्रवा शुदि॥१३॥ तेरसने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम सोजित्रा मध्ये। बारोट। भक्त बेहेचरदास लक्ष्मि
दासने घेर आथमणा बारना ओरडानि रवेशमां गादि तकिये युक्त पलंग बिछाविने ते उपर विराजमान थया हता॥ ने
सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्या हतां॥ ने पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता अने पाघमां तोरा लटकता हता ने बेका
नउपर पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता॥ ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो॥ अने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा

घणाकहरिभक्तनिसभाभराईनेबेठि हति ॥पछे महाराजबोल्याजे सर्वेनेएक प्रश्न पुछिये छेये ॥जे बे प्रकारनी बुद्धि छे॥
॥तेमांएकनिश्चात्मक बुद्धि छे ॥नेएक अनिश्चात्मक बुद्धि छे ॥ तेमां अनिश्चात्मक बुद्धि क्यां थि उपजि छे॥ अने तेनी
स्थिति क्यां छे ॥अने निश्चात्मक बुद्धि क्यां थि उपजि छे ने ते नुं स्थानक क्या छे ॥ ते कहो ॥पछे तेनो उत्तर करवा मांड्यो॥
पण कोई थी थयो नहिं॥ पछे महाराजबोल्याजे सांभलो ते नो उत्तर अमे करिये छे ये ॥जे अनिश्चात्मक बुद्धि छे ॥ते तो
मूलमाया थकि उपजि छे ॥अने तेनुं स्थानक सुषुपति छे॥ अने निश्चात्मक बुद्धि छे ते तो प्रत्यक्ष भगवान ने भगवान
ना संतनो आश्रय ने तेना ज्ञान थकि उपजे छे अने ते निश्चात्मक बुद्धिनु स्थानक ब्रह्मने परब्रह्म छे ॥ अने ते बुद्धि एक
प्रकारनि छे ॥ अने जे अनिश्चात्मक बुद्धि छे ते अनंत शाखावालि छे॥ अने ते एकएक साखाने विषे अनंत भेद रह्या
छे ॥ अने ते अनिश्चात्मक बुद्धि ने विषे अनंत दुःखरो षने क्लेश रह्या छे अने अनिश्चात्मक बुद्धि वाला जे जिव ते जन्ममरण
ग्रभवासने चोराशिमां महादुःखने पामे छे ॥माटे ते जिवोना दुःखने टालवाने अर्थे जगत् कर्त्ताए वाजे परमात्मा ते रा
मकृष्णादिक रुपे प्रगट थाय छे॥ पछे ते प्रत्यक्ष परमात्मा ने तेना संतनो जे जिव आश्रय करे छे ते निश्चात्मक बुद्धि
ने पामे छे॥ अने ते आत्माने ब्रह्म ने परब्रह्म ने विषे स्थिति थाय छे ॥ ने तेनो आत्यंतिक मोक्ष थाय छे॥ अने ज्यां सुधि अनिश्चा-
त्मक बुद्धि होय त्यां सुधि जिवनो मोक्ष थाय नहिं॥ अने प्रत्यक्ष परमात्माने तेना संत मल्या विना अनिश्चात्मक बुद्धि को
ई जिवनि टलती नथि ॥ने निश्चात्मक बुद्धि थति नथि॥ माटे निश्चात्मक बुद्धि थवानो आ जत मारे समो आव्यो छे ते तमारा
भाग्यनो पार नथि॥ ॥ईति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत् १९ ओगणिसें २२ बाविसना भादरवा वदि
२ बिजने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजित्रा मध्ये ॥बारोट॥ भक्त बेचरदासने घेर उगमणे बार ओरडानी आगल गादितकि-
यानख्यांविने पलंग उपर विराजमान थया हताने सोनेरिकसंबलवस्त्र धारण कर्यां हताने पुष्पना हार कंठमां शोभि रह्या हताने पाघमां तोरा लटकता ह
ता ने बे कान उपर फूलना गुच्छ धारण कर्या हता ॥ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा ॥

घणा कदरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ अने मुस्तक उपर पाघमां केवडानो तोडो धारण कर्यो हतो ॥ अने संध्या आर्ति
थया केडे महाराज सर्वे पोताना भक्तजन प्रत्ये कृपादृष्टि करिने बोल्या जे शास्त्रमां एम कयुं छे जे जेवो संग करे तेवो रंग
चडे छे ॥ अने ते शास्त्रनो शब्द जगतमां प्रवर्त्यो छे जे संग तेवो रंग चडे ॥ पण तेमां आम मने एम जणाय छे जे संग करे तोपण
रंग चडे नहिं ॥ एवा पण जिव छे ॥ जेम जे लोढा उपर काट चडि गयो होय तो ते लोढाने पारस मणिनो स्पर्श थाय ॥ तोपण
तेनुं सोनुं थाय नहिं ॥ तेमज जेनुं काम लोभादिकने विषे अतिशे आशक्तिए करिने मलीन अंतःकरण थई गयुं होय तेने
सत्संगनो रंग चडतो नथि ॥ अने ते सत्संगमां आवतो होय ॥ सत्पुरुषना भेगो रहेतो होय ॥ तोपण जो तेने कामादिक
दोषना संकल्पनो वेग अंतःकरणमां वरततो होय ॥ तो तेने सत्पुरुषना संगनो रंग चडे नहिं ॥ केमके तेना अंतःकरणमां
कामादिक दोषना संकल्परूपि कुसंग रह्यो छे ॥ ते सत्संगनो रंग लागवा देतो नथि ॥ जेम राजानि राणिनी गोलि होय ते रा
णि भेगि रातदहाडो रहे ति होय ॥ तो पण तेने ते राणिनो संग लागतो नथि ॥ केमके राणिने तो एक पोताना पुरुषने विषेज
स्नेह होय ॥ अने ते पोताना पुरुषने राजि करवा सारुं लाजमरजाद राखे छे ॥ ने कोई बिजा पुरुष साथे हासि मश्करि करे
नहि ॥ अने ते राणि एक पोताना पुरुषने विषे पतिव्रतानो धर्म पाले छे ॥ अने ते राणिना संगमां तेनी गोलि रहे ति होय
पण ते तो घणा कपुरुषने चिंतव्या करे ॥ ने तेने विभिचारनो तो निमज नहिं ॥ अने ते तो परपुरुष साथे हासि मश्करि
कर्या करे ॥ पण ते गोलिने राणिनो संग लागतो नथी ॥ अने तेमज ते गोलिना धणि गोला होय ते पण राजाना संगमां रातद-
हाडो रहेता होय ॥ पण तेने राजानो संग लागतो नथि ॥ तेम एवा गोलाने गोलि शोना जेवा आकरा कामादिक दोषे क-
रिने अंतःकरण भ्रष्ट थई गयां होय ॥ एवा जे पापि जिव तेने सत्संगनो रंग चडतो नथि ॥ केमके ते सत्संगमां आवता
होय तो पण तेनुं मन तो कामादिक दोषे करिने विकार पामिने विकल्पसरखुं भमतुं होय ॥ माटे तेना अंतःकरणमां ज्ञा
नवार्ता तो उतरे ज नहिं ॥ अने ज्ञान अंतःकरणमां उतर्या विना रंग चडतो नथि ॥ जेम एक फुटेलुं कुंडलुं होय ने एकसा

जु कुडल्लुं होय॥ ते बे कुडलामां तेल रेडे तो साजा कुडलामां तेल रहे छे॥ अने फुटेला कुडलामां तेल रहे तुं नथि॥ तेम कामादिक दोषे करिने फुटेला कुडलानी पेरे जेनां इंद्रियोनी व्रतियो नियममां न होय तेना अंतरमां सत्पुरुषनुं आपेलुं ज्ञान रहे तुं नथि॥ अने जेनि इंद्रियो नियममां होय छे॥ ने जेने कामादिक दोष टालवानी ईछा होय तेने सत्संगना ज्ञाननो रंग चडे॥ अने जेने कामादिक दोष टालवानी तो ईछा न होय॥ ने सामुं एम होय जे चालो ने महाराज पासे जईये॥ अने त्यां स्त्रियो पुरुष घणा भेगा थाय छे॥ माटे तेनां मोढां जोईशुं॥ अने लाग आवशे तो हांसि मष्करि पण करिशुं॥ एवा संकल्प वाला जे पापी पुरुष॥ तथा एवा संकल्प वालि यो जेम पापणि स्त्रियो तेने तो कोई दहाडे सत्संगनो रंग चडतो नथि॥ ने ते तो मरिने घोर नर्कमां जाय छे॥ अने जे एवि रित पापद्रष्टिये करिने स्त्रिपुरुष एकबिजानां मोढां जुवे छे॥ तेने तो जमना दूत लोढाना सोयारना करिने तेनि आंखोमां परोवे छे॥ ने तेने कालि चिसो नखावे छे॥ माटे सत्संग करता होय पण एवि दुष्ट बुद्धि राखिने करे तो तेने कोई काले सत्संगनो रंग चढतो नथि॥ ने तेनुं कल्याण पण कोई काले थतुं नथि॥ अने साजा कुडलानी पेठे जेनी इंद्रियो नियममां होय छे अने जेने कामादिक दोष टालवानि ईछा होय छे तेने तत्काल सत्संगनो रंग चडे छे॥ ने ज्ञानरुपि तेले करिने कुडला रुप अंतःकरण भराईने ते आत्मा पूरण काम थाय छे॥ अने तेने प्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय छे॥ ने तेनुं साक्षात्कार कल्याण थाय छे॥ जेम राजानी राणिने संगे तेनी दिकरियो होय॥ तथा बीजा राजाना भाई भत्रिजानी दिकरियो होय॥ तथा ते राजाना कारभारिउमराव होय॥ तेनी वहु दिकरियो होय॥ ते सर्वे ने राणिनो संग लागे छे॥ ने ते कोई भेगां रहेतां होय ने कोई राणीथी जुदां रहेतां होय॥ तो पण तेने राणिनो संग लागे छे॥ अने राजाने संगे पण जे कुलवान एवा जे ते राजाना कारभारी तथा तेना भाई भत्रिजा ते कोई भेगा रहेता होय अथवा कोई नोखा आव्या गया रहेता होय॥ पण तेने राजानो संग लागे छे॥ ने तेने रुडा गुण आवे छे॥ अने तेजे गोला ने गोलियो॥ ते राजा ने राणिना भेगां रात दहाडो रहेता होय॥ तो पण ते राजानो के रांणीनो रंच मात्र संग लागतो नथी॥ ने तेने विषे रुडा गुण आवता नथि॥ अने जे जातवंत ने कुलवान होय तेने संगनो रंग चडे छे॥ के मके

तेने रुडा गुण शिखवानो खप छे॥ तो तेने गुण रुडा आवे छे॥ अने गोलाने ने गोलिने तो रुडा गुण शिखवानो खप नथि॥ मा-
टे तेने रुडा गुण आवता नथि॥ अने तेने तो एम समुं होय जे राजा के राणि ते आपणे वश थाय॥ तो तेने पण भुंडा कर्म शिखवा-
डिये॥ अने जो मुरख राजा के राणी होय॥ तो ते गोलाने गोलीने वश थाय॥ तो तेने भुंडां कर्म शिखवेने भ्रष्ट करे॥ तेम एवा गो
ला गोलियो जे वाजिव होय ते काम क्रोध स्वादादिक दोषना संकल्पे युक्त थका सतसंग करवा आवे तो तेने सत्संगनो रंग चड
तो नथी॥ अने ते सतपुरुषना भेगा रहेता होय तोपण जेनी इंद्रियो नियममां न होय॥ ने जेने काम क्रोध स्वादादिक दोष टाल-
वानी ईछा नथी ने निरवासनीक थवानो विचार जेने नथि तेने कोई काले सतपुरुषना संगनो रंग लागतो नथि॥ अने जेनी
इंद्रियो नीयममां होय छे॥ अने जेने कामादिक दोष टालवाने निरवासनीक थवानी ईछा होय छे॥ ने जेने पोताना कल्याणने अ
र्थे भगवानने भगवानना संतने प्रसन्न करवा होय छे॥ तेनेज सतपुरुषना संगनो रंग चडे छे॥ अने एवो सुद्ध अंतःकरण
वालो होय मे जेनी इंद्रियो नियममां होय ने सुजे तो सतपुरुषना भेगो रहेतो होय ने सुजे तो ग्रहस्थाश्रममां नो रयो आव्यो
गयो रहेतो होय तोपण तेने सतपुरुषनो रंग चडे छे॥ ने तेना कामादिक दोष टलि जाय छे॥ ने तेनी वासना टलिने निरवासनीक थाय
छे॥ अने ते आत्मा प्रत्यक्ष भगवानना निश्चयने पामिने अक्षरधामने पामे छे॥ जेम देडको छे ते कमलना थडमां रहेतो होय तोपण
तेने कमलना पुष्पनी सुगंधी आवति नथि॥ केमके तेने सुगंधीनी ईछा नथी ने तेने कादव खावानो स्वभाव छे॥ अने भमरो छे
ते कमलथी छेटे रहेतो होय॥ पण तेने कमलना पुष्पनि सुगंधनी ईछा होय तो ते कमलनी सुगंधने ले छे॥ तेम कामादिक दोषे
युक्त थका तथा पंच विषयने भोगववानी ईछाये युक्त पापबुद्धिये करिने जे सतसंगमां आवता होय एवा जे स्त्रियो पुरुष ते
ने सतसंगनो रंग चडतो नथि॥ ने ते सतपुरुषना भेगा रहेता होय तोपण तेनुं कल्याण थतुं नथि॥ अने जेनी इंद्रियो नियम
मां होय ने जेने कामादिक दोष टालवानी ईछा होय एवां जे स्त्रियो पुरुष ते अमारो सत्संग करशे॥ तो तेने सत्संगनो रंग चड-
शे ने तेनुं कल्याण साक्षात्कार थशे॥ अने जे पापबुद्धिये आवता हशे तेनुं कल्याण कोई काले नहिं थाय॥ माटे जे ने पो-

ताना कल्याणनी ईछा होय तेनेपांचवरतमानराखिने इंद्रियोने नियममां करिने अमारिने अमारा संतनीपासे आवजो ॥ तो
तमारां कल्याण थशे॥ ने इंद्रियोने नियममां कर्याविना ने वर्तमानपाल्या विना कल्याणथशे नहिं॥ अने ते अमारि पासेपण
आवशोनहिं॥ पछे बारोट घेलजीये महाराजनेहाथजोडि ने कह्युं जे हे महाराज तमेतो अधमओधारण छो ने पतितपावनछो
॥माटे तमारि पासे आवशे तेनुं कल्याण तमे केमनहिं करो ॥करशो॥ पछे महाराज बोल्याजे अधमओधारणने पतितपाव
नछैये तो खरा ॥ तेसरुं जे एवो जिव अधमहोय ने निचकुलमांजन्मपाम्यो होय ॥ अने जन्मथीज अनंतपाप कर्यां होय ॥पण
ते जिव अमारि पासे आवीने पछे॥ अमारि आज्ञाये करि ने ते पाप कर्म ने क्रियानो त्याग करिने इंद्रियोने नियममां राखिने॥
अमारि भक्ति करे तो ते अधमनुं पण कल्याण थायछे॥ ते पण गितामां कह्युंछे॥ अपिचेत्सो दुराचारो भजते मां मन-
न्यभाक्॥ ॥अर्थ॥ निचकुलमांजन्म्यो होय ॥नेतेणे घणाक दुराचरण कर्या होय ॥पणतेजो अनन्य भावे प्रत्यक्ष
भगवाननुं भजनकरे ॥तो ते जिवसाधुनी गतिने पामेछे ॥ ते अनन्य भाव तेशुं तो प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतना आश्र
यविना ने तेनी आज्ञाविना बिजो कोई आधार नरहे ॥ ने एक भगवानने संतनोज आधार जेने होय ॥ तो एवा अधमनो उद्धार
थाय छे॥ अने एम न होयने प्रत्यक्ष भगवानने संतना आश्रय विना तेनी आज्ञा रुपि धर्म पाल्या विना कल्याण करता हो-
यतो ॥ अवतारो अवतारमां बेकनां कल्याण थाय छे ॥ने बेकनां कल्याण नथी थतां॥ तेनुं कारण एज छे जे आज्ञामां वरते
छे तेनुं कल्याणथाय छे॥ ते अधमहोय तेनुं पण कल्याण थाय छे ॥ ने धर्मवालो होय तेनुं पण थाय छे॥ अने प्रत्यक्ष भगवान
ने संतनी आज्ञाने आश्रय न करे अने ते धर्मवालो जिव होय ने उंचकुलवान होय॥ तो पण तेनुं कल्याण कोई काले थतुं
नथी अने अधम जिव होयने ते अमारि आज्ञा प्रमाणे वर्ते॥ अने ते बिजुं कांई समजतो न होय तो पण तेनुं कल्याण थशे॥
॥ ॥इतिश्रीमुख सिद्धांत सिद्धांत् समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥
॥ ॥संवत् ॥१९॥ ओगणिसें ॥२२॥ बाविसना भादर्वा वदि ॥३॥ त्रिजने दिवस महाराज श्रीहरि

कृष्ण भगवान् गामश्री सोजिंत्रामध्ये पटेल नरसिंभाई हरकांदासने घेर उत्तरादे बार ओरडानी पडसालमां गादितकिये युक्त पलंग
उपर विराजमान थया हता ने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां॥ ने बे कान उपर गुछ त्रो भि रह्या हता॥ ने कंठमां पुष्पना हार धार-
ण कर्या हता॥ ने पाघमां तोरा लटकता हता ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा क
हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति॥ पछे बारोट भक्त बेचरदास लखमीदासे महाराजने प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज कृष्णाव
वतारमां भगवाने मोरना पिंछनो मुगट धारण कर्यो॥ अने गुंजानी माला ओपेहेरी॥ अने वांसडानी मोरलि वगाडि॥ अने
रुषभे काम लिने हाथमां लाकडि लेईने गायो चारि॥ अने आहिरने घेर मोटा थया॥ तेएवा मोटा ने सर्वना कर्त्ता हता भगवान्
तेणे एवि लिला केम करि॥ ते कहो॥ पछे महाराज बोल्या जे भगवान छे ते तो अनंतकोटि ब्रह्मांडना पति छे॥ ने लक्ष्मिना तो
स्वामि छे॥ ने सुखना तो सागर छे॥ अने ए भगवानना सुख आगल तो इंद्रादिकनां सुख पण नर्कजेवां छे॥ तो आ लो
कनां सुख तो शि गणतिमां॥ माटे भगवाने तो मोरना पींछनो मुगट अने हिरामोतिमणि आदिके जडाव मुगट॥ ए बे बरोबर
छे॥ अने गुंजानी माला॥ अने मोतीनी मालाओ॥ ए बे बरोबर छे॥ अने गायो चारविने राज्य करवुं॥ ते बे बरोबर छे॥ मा
टे आ लोकना पदार्थमां भगवानने कोई सारुं नरसुं नथि॥ अने भगवान जे जे पदार्थ ग्रहण करे छे॥ ते तो जिवोना कल्याण क-
रवाने अर्थे ग्रहण करे छे॥ ते जे जे जिवनो जेवो भाव होय ते वि ते विसेषानुं ग्रहण करे छे॥ अने ते जिवोनुं कल्याण करे छे॥ माटे
जे जिवने प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध थाय छे॥ ते जिव जे ते पोताना घरमां जे जे समृद्धि होय तेणे करिने भगवाननी सेवा करे छे
पछे भगवान जे ते भक्तनो भाव जोईने ते भक्तने अलौकिक सुख आपवा सारुं तेना पदार्थने अतिशे वखाण ताथका तेनि
सेवाने ग्रहण करे छे॥ अने ते भक्तने विषे पोतानो सजाति भाव देखाडिने तेने पोताने विषे प्रिति करावे छे॥ अने ते भक्तनो
ने पोताने विषे कोई जातनो अंतराय न रहे॥ ते धि रिते पोते भगवान वरते छे॥ पण भक्तजनने विषे भगवान् विजातिभा-
व रंचमात्र नथि जणावता॥ अने भगवान् विजाति भाव जणावे तो कोई जिवने भगवानमां हेत थाय नहिं॥ ने कोईनुं कल्या

णपण थाय नहिं॥ माटे श्रीकृष्ण भगवान जे ते व्रजवासि जे गोप गोवाल तेने विषे सजाति भावे वरत्या छे ॥अने तेना भावप्रमाणे ॥तेनि स्मृष्ठि जे दूधदहिं तेने जम्या ॥ तथा गुजानी माला पहेर्यो तथा मोरनापींछनो मुगट तथा वांसडानी वांसलि रखभे कांबलि हाथमां लाकडी गायो चारवी ॥ इत्यादिक क्रियाकरि॥ तथा सेवा तेने भगवाने ते भक्तजनोने सुख आपवा सारु अतिश्रो वखाणता थका ग्रहणकरि छे॥ अने ते व्रजवासियोने सजातिभाव देखाडिने सर्वे अंतरायनो त्याग कराविने तेनी व्रतियोने पोताने विषे जोडाविने भगवाने पोताना साधर्म्यपणाने पमाड्यां माटे एवुं अलौकिक कांम भगवाने कर्युं॥ तेसारु तेमोरना पिंछांने ने गुजानी मालाओने ने कांबलिने ने वांसलिने ने दूधदहिं ने शास्त्रपूराणने मोटे पुरुषे अतिश्रो वखाण्यां छे॥ अने वलि पोताना भक्तोने अति गरिब जेवां खारि भरवाड कर्यां॥ तेनुं पण एज प्रयोजन छे॥ जेजे गरिब होय तेने प्रगट सत्पुरुषनो समागम करवामां कोई जातनो अंतराय रहे तो नथि॥ अने जो प्रगट भगवाननो समागम करवामां ने सेवा करवामां जो जराय लोकलाजे करिने अथवा मोटम्प माने करिने तथा कोई वाते अंतराय रहे तो तेनुं आत्यंतिक कल्याण थाय नहि॥ माटे जेने लोकवेहेवारमां झाझी लाज आबरु मोटम्प मान तथा द्रव्य कुल कुटुंबादिक घणुं क होय ॥ तो तेने सर्व अंतरायनो त्याग करिने गरिबनी पेठे प्रत्यक्ष सत्पुरुष भगवान् के भगवानना निरवासनिक पंचविषयना त्यागि संत तेनी जे सेवामां जोडाई जवातुं नथि॥ अने जो अंतराय रहे तो ते जिवनुं कल्याण थाय नहिं॥ माटे भगवाने पोताना भक्तोने गरिब कर्या हतां॥ अने तेना भावप्रमाणे ते भक्तजनोए जेजे सेवा करि तेने भगवाने बहु जवखाणि वखाणिने ग्रहण करि माटे ते प्रगट भगवाननी सेवामां जेजे वस्तु कामआवे ते वस्तु जअतिश्रो वखाणवा योग्य छे॥ अने ते वीना नांसवे पदार्थ नं गा करवा जो गछे॥ ने पापरुप छे॥ एतमारा प्रश्ननो उत्तर छे॥ ॥इति श्रीसुखसिद्धांत समाप्तः॥

॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत॥१९॥ओगणिशें॥२२॥बाविसना भादरवा वदि॥ ६॥छठ्यने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीसोजित्रामध्ये ॥पटेल नरसिंभाई द्वारकांदासने घेर उत्तरादा बारना ओरडानी आगल चोकमां गादि तकिये युक्त पलंग बिछाविने तेउपर बिराजमान थया हता अने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां

हतां॥ ने सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषण शोभि रह्यां हतां ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोतानां मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति पछे संध्या आरति थया केडे महाराज बोल्या जे जिव छे ते देहने पोतानुं रुप मानिने विषयने भोगवे छे॥ पण तेणे करिने जिव तृप्तिने पामतो नथि॥ अने देहे करिने सुखियो थवाने ईछे छे॥ पण ते मां कोई काले जिवने सुख थतुं नथि॥ अने उलटो जिव विषयभोग ववे करिने वधारे वधारे दुःख पामतो जाय छे॥ केमके देह छे ते आत्मानुं स्वरुप नथि अने माईक पदार्थ छे ते पण आत्माने लेश मात्र सुख करे एम नथि॥ अने माईक पदार्थ तो आत्माने उलटां महा दुःखनां देनारां छे॥ पण जिवने ज्यां सुधि अज्ञान होय त्यां सुधि काने करिने स्त्रियादिकना शब्द सांभलिने सुख माने छे॥ अने त्वचाये करिने स्त्रियादिकना स्पर्शमां सुख माने छे॥ अने नेत्रे करिने स्त्रियादिकनां रुप जोईने तेमां सुख माने छे॥ ईत्यादिक इंद्रियोये करिने माईक विषय भोगविने सुख माने छे॥ पण ते माईक पंचविषयने सुखे करिने जिवने अंतःकरणमां तृप्ति थति नथि॥ अने स्थूल देहमां भूख लागि होय॥ अने पोताना आहार प्रमाणे अन्न खाय तो स्थूल देहनी भूख निवर्ति पामे छे॥ अने तरस लागी होय ने जल पीये तो त्रसा निवर्ति पामे छे॥ इत्यादिक आलोकनां पदार्थे करिने स्थूल देहरुपि खाडो भराय छे॥ पण सूक्ष्म देह जे अंतःकरण ते रुपी महदाकाशनो खाडो॥ ते भरातो नथि॥ केमके स्थूल देह प्रथ्वी थकि थयो छे॥ अने पंचविषयनां पदार्थ ते पण प्रथ्वी थकि थयां छे. माटे प्रथ्वीमां खाडो पड्यो होय ते खाडो तो प्रथ्विनी माटि पथरे करिने भराय छे॥ पण जे आकाशनी पोलनो खाडो ते प्रथ्वीना पदार्थे करिने भराय नहिं॥ तेम अंतःकरण तो महदाकाश रुप आकाशनो खाडो छे ते खाडो प्रथ्वी रुप जन्यनां पंचविषयनां पदार्थे तेणे करिने कोई काले भराय नहिं॥ केमके आकाशना दशमा भागमांथि वायु थयो छे॥ अने वायुना दशमा भागमांथि अग्नि थयो छे॥ ते आकाशना सोमा भागमांथी अग्नि थयो छे॥ अने अग्निना दशमा भागमांथि जल थयुं छे॥ अने ते जल अग्निना दशमा भागमांथी ने वायुना सोमा भागमांथी ने आकाशना हजारमा भागमांथी जल थयुं छे॥ अने ते जलना दशमा भागमांथी पृथ्वी थई छे॥ ते पृथ्वी आकाशना दशहजारमा भागमांथी थई छे॥ अने प्रथ्वीना केटलाक थोडाक भागमांथी जगतनां पंचविषयनां

पदार्थथयांछे॥ मारेएवडोमोटोजेआकाश तेप्रथ्वीथकि थयांजेपदार्थ तेणेकरिनेकेमभराय ॥नज भराय॥जेमदसहजारम
णदाणानोकोठारहोय॥ तेमांएकशेरदाणानाखीयेतेणेकरिनेतेकोठारभरायनहिं॥ तेमआकाशरुपअंतःकरणनोतृष्णारु
पिमहदाकाशनो खाडो ते जगतनांपदार्थ जेटलांछे तेटलांबधाय पदार्थने भोगवे॥ तोपण ते तृष्णारु पिआकाशनो खाडो
भरायनहिं॥अनेमाईक पंचविषयनांपदार्थने तो जिवजेमजेम भोगवे छे तेमतेम तृष्णावधारेवधारेवधतिजायछे॥पण तेणेक
रिनेतृप्तिजिवनेथतिनथि॥ तेपण कह्युंछेजे॥ ॥ज्युंज्युं भुक्तत भोगत्युं॥तृष्णा बढत अपार॥मुक्तकहे पावक
विषे॥ज्युंहोमत घ्रतधार॥ ॥अर्थ॥ ॥जेमजेमविषयभोगने जिव भोगवे छे॥ तेमतेमतृष्णा वधती जाय छे॥
कोनी पेठके जेम अग्निमां घिजेमजेम होमे छे॥तेमतेमअग्निनी ज्वाला वधतिजाय छे॥ पण विषयभोगे करिनेतृष्णा मटति
नथी॥केमके जिवेआब्रह्मांडनेविषेजेटलिजातनाजिवछे तेसर्वनेपेटपोतेएकलेजन्मधर्या छे॥अनेसर्वजीवोनेपोतेस्त्रि
नो देह धरिने पोतानापुरुषकर्याछे॥अनेतेने ते जिवेपुरुषनादेह धरिने सर्वेजातनि स्त्रियोने भोगविछे॥ तोपण जिवने
रंचमात्र तृप्ति थई नथि॥ केमके जिवेकेटलाक फेरा इंद्र थईनेदेवलोकमांजईनेइंद्राणी आदिक घणिअपसराओ भो
गवीछे॥ने बिजा भोग पण अनंत भोगव्या छे॥ अनेते जिव पाछो पुन्य खुटे त्यारे मृत्युलोकमांआविने ते जिषकुतरानो जन्म
धरेछे॥ त्यारे ते कुतरिने विषे पण आशक्त थाय छे। पण तेनेएमज्ञान नथि रह्युं जे॥ इंद्र लोकमांजईने इंद्राणीयोने भोगवि
छे॥ते हवे कुतरियोने न हिं भोगवुं॥एम तेनामनमां तृप्ति थतिनथि॥अनेजेवो इंद्राणिने विषे आशक्त थतो हतो। तेवो नेते-
वो कुतरिने विषेपण जिव आशक्त थायछे। तेमज अनंत प्रकारना रसरवा थाछे॥ तोपण जिवने तृप्ति थई नथि एवीरीते पांच
विषयनेंजिवे अनंतजुग थयांभोगव्यांछे॥तोपण विषयभोग वरानीतृष्णारुपिखाडोतेअधुरोछेजेमफुटेलोकुलडीहोय तेमांसातसमुद्रनुंजलरेडियेतो
पणतेकुलडो रंच मात्र भराय नहिं तेमजगतनांपदार्थसर्वजेएटलां भोगवेतो पण फुटेला कुलडारुपजे अंतःकरण तेमां तृप्ति थतिनथि अनेते अंतःकरण
रुपिखाडो ते जिवने महापीडा करेछे ॥अनेतेतृष्णारुपिअंतःकरणनोखाडो ते जिवने काईठरिनेबेसवादेतो नथीतेउपरएककल्पितदृष्टांतछे

एक वाणियाने घेर पोताने काम घणुं कहतो ॥ ते काम कराववासारुं ते वाणिये भूतने वश कर्युं ॥ पण ते भूते वाणियाने कह्युं के मुने काम नहिं बतावे तो हुं तुंने खाईश ॥ पछे ते वाणिये भूतने काम बताववा मांड्युं ॥ ते जे जे काम बतावे ॥ ते ते काम ने घणां क भूत भेगा करिने घडि कमां करि नाखे ॥ ते भूते तो काम मात्र खुटाड्युं ॥ पछे वाणियाने कह्युं के काम बताव्य निकर तुने खाईश ॥ पछे वाणियो तो मुंझाणो ॥ अने ज्यां वाणियो जाय त्यां भूत पांसे फर्या करे ॥ अने ते वाणिये भूतने सुखवसारुं वश कर्युं हतुं ॥ पण ते मांथी तो उलटुं महादुःख थयुं ॥ पछे तो ते वाणियो रखडतो थईने फरतो फरतो एक संतनी पर्णकुटि हती ॥ त्यां जई चड्यो ॥ त्यारे त्यां ते भूत आवि श क्युं नहि ॥ पछे ते वाणिये विचार कर्यो जे आ साधु मारुं दुःख टाळशे ॥ एम जाणिने ते साधुने वाणिये हाथ जोडिने कह्युं जे हे महाराज आ एक भूत मारि वांसे थयुं छे ॥ ते मुने एम कहे छे जे काम बताव्य निकर तुंने खाईश ॥ ते जेटलुं काम बताव्युं ते काम तो एक घडि कमां करि नाखे छे ॥ ते काम मात्र खुटाड्युं ॥ ने हवे मुने खावा तैयार थयुं छे ॥ माटे कृपा करिने तेथकि मारि रक्षा करो ॥ पछे ते साधुये कह्युं के तुं कहुं एम कर ॥ जे ते भूत पासे एक मोटो वांस मंगाव्य ॥ ने ते वांसने तारा फलिवचे खोडाव्य ॥ पछे ते भूतने एम केहे ॥ जे ते वांस उपर चडवुं ने उतरवुं एम ने एम कर्या कर ॥ एमारे काम छे ॥ पछे ते काम खुटसे नहिं ने तुं महासुखियो थईश ॥ पछे वाणिये ते प्रमाणे कर्युं ॥ त्यारे ते भूत हार पामिने वाणियाने वश थैने पगे लाग्युं ॥ ने ते वाणियाने भूते कह्युं के हवे तुने कोई दहाडो नहिं खाउं ॥ एवि रिते संतना उपदेशे करिने वाणियो महासुखियो थयो ॥ तेम जिवने अंतःकरण रुपि भूत वश थयुं छे ॥ ते भूत शुं करवा वश कर्युं छे ॥ तो जिवने अज्ञान मोह ने पंच विषयनी वासना छे ॥ ते वासनाये करिने जे तृष्णा रुपि महरा कानो खाडो तेने भरवाने अर्थे धर्म ज्ञान वैराग ने महात्म्य सहित भक्ति सिद्ध करिने ब्रह्मरुप थईने परब्रह्मने साक्षात्कार पामवारुप जिवने माथे घणुं क काम छे ॥ ते काम कराववासारुं परमात्माये दया करिने जिवोने अंतःकरण रुपि भूत वश करि आप्युं छे ॥ ते जे जिव धर्म ज्ञान वैराग ने भक्तिरुपि काम अंतःकरण रुपि भूतने न बतावे तो ते अंतःकरण रुपि भूत जिवने खावा तैयार थाय छे ॥ केहेतां धर्म ज्ञानादिक साधन जिव नथि करतो ॥ ते जिवने अंतःक

रणजे ते विषयनुं चिंतवंन करावीने जिवने पापकर्म करावीने नर्कमां लेई जायछे ॥ ने जमपुरि चोरासिने गर्भवासादिकनां महा
दुःख पमाडे छे ॥ अने जिवने क्यांइ ठरिने बेसवादे तुं नथि ॥ पछे जिव जे ते एवि रीते स्वर्ग मृत्यु ने पाताळने पाताळने वि-
षे भटकतां भटकतां तेने मनुष्यनो देह आवे ने ते मनुष्यदेहमां कोइ प्रत्यक्ष भगवान के भगवानना एकांतिक निरवासनिक
पंचविषयना त्यागि संतमळे ॥ अने तेनो आश्रय जिवकरे त्यारे तेने अंतःकरणरुपि भूतवळां न्ति पामे छे ॥ ने तेजिवमहा
सुख ने पामे छे ॥ पछे ते जिव सत्पुरुषनी प्रार्थना करे छे ॥ जेहे महाराज अंतःकरणरुपि भूत मुने बहु दुःख आपे छे ॥ ने
तेणे करिने मुने स्वर्गमृत्यु ने पाताळने विषे अनंतफेरा ने बहु काळ भटकाव्यो छे ॥ माटे ते थकि मारि रक्षा करो ॥ पछे सत्पु
रुषजे ते कृपा करिने जिवने अंतःकरणरुपि भूत वस करवानो उपाय बतावे छे ॥ ते शो उपाय बतावे छे ॥ तो पंचविषयने -
भोगववानी इछारुप जे सर्व काम तेनो त्याग करिने निवृत्तिने पामिने वासदुरुप भगवाननि मूर्त्ति तेने आत्मारुपि पोता
नी फळिमां रोपवि ॥ केने तां प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्त्तिनि पोताना आत्माने विषे धारिने ते मूर्त्तिनी नवधाभक्तिये सहित मू-
र्तिनुं ध्यान करवुं ॥ ने ते मूर्तिनुं अंगो अंगनुं चिंतवनरुपि बासंडे अंतःकरणरुपिभूतने चंहाववुं ने उतारवुं ॥ एविरिते जे प्र
त्यक्ष भगवाननी मूर्त्तिनुं ध्यान करेछे त्यारे तेनुं अंतःकरण शांन्त थायछे ॥ अने तेनुं त्रण्यारुपि दुःखमरि जायछे अने ते
जिवनुं कल्याण थाय छे ॥ केमके जे महदाकाशरुप जे अंतःकरणनो खाडो ने प्रथ्वीथकिउत्पन्नथयां जे जगतनां पदार्थ तेणे
करिने तो ते खाडो भराय नहिं ॥ पण ते महदाकाशथि पर एवुं जे चिदाकाश ॥ ते चिदाकाशना कोक देशने विषे महदाका
श तो लिन थइ जायछे ॥ एवो जे चिदाकाश तेने पोतानुं स्वरुप जाणवुं ॥ केमके जिवात्मानुं व्यतिरेक स्वरुप चिदाका
शरुप जे अक्षर ब्रह्म ते छे ॥ ते चिदाकाशरुप अक्षर ब्रह्मरुप पोताना आत्माने जाणीने चिदाकाशरुप जे अक्षर ब्रह्म ते-
तो जेना अंगनो प्रकाश छे ॥ एवा जे परमात्मा परब्रह्म प्रत्यक्ष भगवान तेनि मूर्तितेनुं पोताना आत्माने विषे ध्यान करवुं
एविरिते चिदाकाशरुप जे अक्षर ब्रह्म तेरुप थइने प्रत्यक्ष भगवाननुं ध्यान करे छे त्यारे तेने महदाकाशरुप जे अंतःक

रणनो तृष्णारुपिरवाडो तेभराईनेछलकिजायछे।। नेतेनीद्रष्टीमां थित्रण प्रकारनाआकारनाभेद तेटलिजायछे।। अनेचिदा-
काशरुप पोतानोआत्मा अने आत्माना प्रकाशक एवाजे परमात्मा एवे तेनीद्रष्टिमां रहे छे ।। अने ते पूरण काम थायछे ।।नेतेने
चौदलोकनां पंच विषयनां माईक सुख ते काग विष्टा तुल्य थईजायछे।। अनेएविरितना ज्ञानने जेआत्मा पामे छे ते आत्माजि
वनमुक्त कहेवाय छे। तेएवुं ज्ञान क्यारे थाय छे।। तोप्रत्यक्षपरमात्मा ने तेना एकांतिक पंचविषयनात्यागि संत जिवने मले छे
त्यारे एवुं ज्ञानथाय छे।। ते पण पूर्वे जेने जेने प्रत्यक्ष भगवानने संतमल्या छे।। तेनेजएवुंज्ञान थयुं छे।। अनंतनाज मूक्तिथई छे।।
माटे आजपण जेने अमारो प्रत्यक्ष संबंध थयो छे।। तेने तो पोताना आत्माने चिदाकाशरुपजाणिने प्रत्यक्षमूर्त्तिनुंध्यान करवुं तो
ते तेध्याने करिने अंतःकरणरुपि महादाकाशनो तृष्णा रुपि रवाडो ते भराईने पूरण काम थशे ।। अने ते जिवनमुक्तनी स्थितिने पाम
शे।। पण ते प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनाध्यानविना बिजा अनंतसाधन करे ।। ने अनंतज्ञान कथे ।। भेरवजिये ।। बैरागरावे ।। सं-
न्यासिथाय।। परमहंस थाय।। तो पण तेने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनाध्यानने भक्ति कर्या विना महदाकाश रुप अंतःकरण
नो तृष्णारुपिरवाडो तेकोईकाले तृप्त थाय नहिं।।जेम कोईकने मांथे सरकारनुं करजहोय ।। ते करजने लेवासारु सरका
र तेनाउपर चार मोशाल मुके।। तेकरजनुंबसुल करे नहिं त्यांसुधि ते मोशाल तेनेदुःख आपेछे।। अनेज्यारे ते सरकार पासे जईने
करजनुं वसुल करे त्यारे ते राजा मोशाल उठाडि लेछे ।।पछे तेनाउपर सरकारनि मेहेरबानी थायतो तेना ते सिपाई चाकरि
करवा लागेछे।।तेमजिवने माथे आत्माने परमात्मानास्वरुपने जाणवा रुपी परमात्मानुं करज छे।। ते आत्माने परमात्मना
स्वरुपनेजणाववा सारु परमात्माये अंतःकरण रुपि चार मोशाल जिवनाउपर मूक्याछे।। तेज्यांसुधि जिव आत्माने परमा
त्माना स्वरुपने नथी जाणतो ।। त्यांसुधि तेजिवने अंतःकरण रुपि मोशाल ते जन्म मृत्यु ग्रभवासने चोरासिमां अपार दुःखदि
धा करे छे।। ने तेजिवने क्यांई ठरिने बेसवादेतां नथि ।। अनेज्यारे जिवजेते सद्गुरुने शरणे जायछे।। त्यारे ते अंतःकरण का दक शां
न्ति पामे छे।। पछे ते जियजे ते सद्गुरुनाज्ञाने करिने आत्मारुप थईने प्रत्यक्ष परमात्मानो द्रढ आश्रय करिने ते प्रत्यक्षभगवाननि

मूर्त्तिनेउरमां राखे छे ॥ त्यारे ते परमात्मा जे पोताना ज्ञानरुपि हुकम करिने अंतःकरण रुपि चारमो सल तेने उठाडि ले छे अने ते
जिवने ब्रह्मरुपकरिने तेनेपोतानी सेवा कराववासारुं तेना ते अंतःकरणरुपियामोज्ञाल तेजियनेदुःखदेता अलसाविने ते जिवने
सुखदेवासारुं ने जिवने परमात्मानी भक्तिमां सदाय कारवाने अर्थे ते जियनी सेवामां सोंपे छे ॥ पछे ते अंतःकरणरुपि परमात्मानासि
पाई तेजियात्मा नाचाकर थईने रहे छे ॥ ने जियात्माने महा अलोकिक एवुं जे ब्रह्मानंद सुख तेने पमाडे छे ॥ माटे जेने प्रत्यक्ष भग-
वानने संबंध थाय छे तेनेज अंतःकरणरुपियामोज्ञाल उठे छे ॥ अने ते जिवनुं कल्याण थाय छे ॥ माटे आ समे जेने महासुखिया
थवुं होय ने अंतःकरण रुपिया मोज्ञाल उठाडवा होय ने भगवानना धामने पामवु होय तेने प्रत्यक्ष भगवानना द्रढ आश्रय करवो
अने जे प्रत्यक्ष भगवानने आश्रय करशे ते बुद्धिवाला छे ने तेनुं कल्याण थशे ॥ अने जे आवो दुर्लभ समो चुकशे ते तो अतिदु
रखदशे ॥ ने ते जिव नर्कमां जशे ॥ माटे आ समेजे ने मनुष्यदेह आव्यो छे तेने आमारो समाणम करिने अथवा अमारा निरवा
सनिक पंचविषयना त्यागि साधु तेनो समागम करिने पोताना आत्मानुं काम सुधारि लेवुं ॥ ॥
ईतिश्रीसुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥संवत् ॥१९॥ओ
गणिसे ॥२२॥ बाविसना भादरवा वदि ॥९॥ नवमिने दिवस महाराजश्री महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजिंत्रा म-
ध्ये भक्त नरसिंभाई द्वारकांदासने घेर उत्तरादे बार ओरडानी आगल गादितकिया नखाविने ढोलिया उपर बिराजमान थया
हता ने सर्वे कसुंब ल वस्त्र धारण कर्या हतां ॥ ने कंठमां पुष्पना हार धारण कर्या हता ॥ ने पाघमां तोराने केवडानो डोडो धार-
ण कर्यो हतो ॥ ने कंकुनो चांदलो ललाटने विषे शोभि रह्यो हतो ॥ अने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा क हरिभक्त
नीसभा भराईने बेठि हती ॥ पछे पटेल लल्लुभाई देसाई भाईये प्रश्न पुछ्युं जे ॥ हे महाराज ॥ एक स्त्रि पुरुष बे जणां छे ॥ ते मांजे
पुरुष छे ते तो निरवासनिक ने निष्कामिने भगवानने भक्त छे ॥ माटे ते पुरुष तो देह मुकिने भगवानना अक्षरधाम मां जशे
॥ अने ते तो पाछो जन्म ने नहिं धरे ॥ अने जे स्त्रि छे तेने तो पुरुषने विषे अतिशो प्रिति छे ॥ अने पतिव्रतानो धर्म पाले छे ॥

पणते स्त्रिनेतेपुरुषने विषे कामनीवासनाछे ॥ माटे ते स्त्रिने तोजन्मधरवो पडशे॥ पण ते स्त्रिने तेना पुरुषने विषे अतिशे प्रितिछे ॥माटेजेने विषे प्रिति होय तेने विषे तेने जन्म धरवो पडेछे ॥एमशास्त्रमांकह्युंछे॥जे॥ ॥यामति सागति भवेत्॥ ॥ एश्रुतिनोअर्थ ॥जे ज्यां मति केहे तांजेने ज्यां प्रिति होय तेने त्यांजन्मधरवो पडेछे॥ माटे ते स्त्रिने तेनापुरुषने विषे प्रिति छे॥अनेते पुरुषने तोजन्मधरवोपडेएमनथि ॥ मारे तेस्त्रिने ते पुरुषने शिरीते संबंध थशे॥तेकहो॥पछे महाराजबोल्याजे एनोउत्तर तो एम छेजे ॥जेने विषे जेने प्रिति होय ॥ तेनाजेवागुण अने तेनाजेवुंशरिर ने तेनाजेविबुद्धि ने तेनि ते ने प्राप्तिथायछे ॥पणकांई ते नेपेट जन्मधरवो पडेएमनथि ॥अनेजेने विषेजेने प्रितिहोय तेनाजेवा गुणने तेनाजे वोस्वभाव तेतेने प्राप्तथायछे माटे ते स्त्रिने बिजोजन्मआवशे त्यारे तेने तेनापुरुषनाजेवा निष्कामादिक गुण आवशे॥अनेतेपुरुषने जेम सत्पुरुषने विषेने सत्संग नेविषे प्रिति छे॥ तेमते स्त्रिनेपणपोतानापुरुषना जेवो देह आवशे नेतेनेसत्पुरुषने विषे सत्संगनेविषे प्रीतिथशे ॥अने तेपुरु ष जेमज्ञानने पामिने भगवानना धामने पाम्यो ॥ तेम ते स्त्रिपण बिजेजन्मे ज्ञानने पामिने भगवानना धामनेपामशे॥ पणकांई तेपुरुषने ते स्त्रिसारु जन्म धर्वो पडे एमनथि॥ मारे एवा निरवासनिक भगवानना भक्त होय॥ तेने विषेजेने प्रितिथायछे॥ तोतेजि वनुं एकबेजन्मे कल्याणथायछे ॥अनेजेने प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रिति थायछे॥तो तेनुं कल्याणतेने ते देहे करिने थायछे तेगमे तेवे भावेप्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रिति करे तो तेनो साक्षात्कार मोक्ष थायछे॥ ते कृष्णअवतार मां गोपियोए काम भावे भगवान मां प्रीति करि तो तेसर्वनो मोक्ष थई गयो छे॥अने पांडवे स्नेह भावे भगवान मां प्रिति करि तो तेनो मोक्ष थई गयोछे ॥अनेराम अवतारमांवांदराएमुढपणे भगवान मां प्रिति करि हति तो ते सर्वेनुं कल्याणथई गयुंछे॥ माटेप्रत्यक्ष भगवानने विषे जेनेजे ते भावे प्रीतिथाय तोतेसर्वे जिवोनां कल्याण थायछे॥ पणते भगवानने भगवानना भक्तने विषे कोने प्रितिथायछे ॥तोप रमात्माये जिवोनां कल्याण करवा नेअर्थे॥ धरमरुपिनितिवांधिछे॥ ते धर्मरुपिनितिनेजे पाळेछे तेनेजे भगवानने भगवान् ना' भक्तसंत ने विषे प्रिति थायछे॥अने ते जिवनुं कल्याणथायछे॥अने धर्मरुपिनितिने जे नथीपाळतो ॥अनेअधर्मे करिने

अनिति मां वरते छे।। तेजिवने भगवानने भगवानना संतमां प्रिति पतिज नथी॥ ने तेनुं कल्याण पण थतुं नथि ।। माटे जेने पोताना आत्मानुं
कल्याण करवानि ईछा होय अने आलोकमां ने परलोकमां महासुखिया थवुं होय। तेने परमेश्वरनी आज्ञारुपि जे धर्म तेने विषे दृढप
णे रहेवुं॥ अने जे धर्मरुपि नितिमां रहेशे ॥ तेने भगवानने भगवानना भक्तसंतने विषे प्रिति थाय छे॥ अने ते जिव भगवानना धामने
पामशे॥ अने आलोकमां पण जे धर्मरुपि नितिमां वरतसे तो तेने अचानक वगर धार्युं सुख प्राप्त थाय छे॥ अने तेने दुःख टलि जाय
छे॥ अने जे अधर्म करिने अनितिमां वरते छे तेजिवने अचानक दुःख प्राप्त थाय छे॥ अने तेने सुख मात्र नास पामि जाय छे॥ ते वगर
धार्युं नितिवानने सुख॥ ने अनितिवानने दुःख प्राप्त थाय छे॥ जेम नालियेरिनि उपरनुं चुं नालियेर होय छे॥ ने तेनि काचलि अतिशे
कठण होय छे॥ ने तेमां क्यांई थईने जल प्रवेश करिशके एम नथि॥ तोपण ते मांजल भराई जाय छे॥ तेम धर्मरुपि नीतिवान छे तेने
कोई सुखनुं साधन न होय॥ कहेतां तेने गाम गरास न होय तो पण तेने वगर धार्युं सुख प्राप्त थाय छे॥ अने जेम कोठ ने हाथिआ-
खुं गलि जाय छे॥ अने तेने पाछुं पुंठे आखुं ने आखुं काढि नाखे छे॥ पण ते मांथी तेनो गर्भ नाश पामि जाय छे॥ तेम अनीतिवान
ने अनंत प्रकारनां सुखनां साधन होय कहेतां तेने गाम गरास धन्य माल होय पण ते सर्वे तेनुं अचानक तत्काल नाश पां-
मी जाय छे॥ अने तेने महा दुःख आवि पडे छे ।। माटे जेने महासुखिया थवुं होय तेने भगवाननी आज्ञा रुपि धर्म पालवो ।। त्यां एक
साखि छे॥ ।।ज्यां सुमति त्यां संपति नाना ।। ने ज्यां कुमति त्यां विपति निधाना॥ ।।अर्थ॥ ।।सुमति एटले
नितिरुप धर्म ज्यां छे॥ त्यां नाना प्रकारनी संपति भेगि थई छे॥ अने कुमति एटले ज्यां अनितिरुपि अधर्म छे ॥ त्यां विपत्ति ए
टले नाना प्रकारनां दुःख प्राप्त थाय छे॥ माटे जेने महासुखिया थवुं होय॥ ने जन्म मरणनां दुःख टालिने भगवानना धामने पाम
वुं होय॥ तेने परमेश्वरनी आज्ञारुपि जे धर्म तेने दृढ करिने पालवो॥ अने जे धर्म राखशे तेने जअमारे विषे प्रिति थशे॥ ने ते आत्मा
नुं कल्याण थशे॥ ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे ॥ पछे महाराज खुसाल थई ते भक्तजन महाराजनी आरति करवा लाग्या॥ ॥
इति श्रीसुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥ श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥संवत १९ ओगणिसें ॥२२॥बा

बिसना भादरवावदि ॥१०॥ दशमिने दिवस महाराजश्री हरि कृष्ण भगवान गामश्री सोजिंत्रामध्ये सुतार भक्त छगनने घेर उगमणे बा
रणे ओरडानि ओसरि मां ढोलियाउपर विराजमान थयाहता ॥ ने सर्वे जरियानि वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंग-
मां धर्यां हतां ॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हती ॥ पछे महाराज बोल्याजे
जेने पोतानुं कल्याण इछवुं होय तेने तो अमारां ने अमारा निरवासनीक संतना दरशन करवा आववुं त्यारे घेरथि ज एवो विचारक-
रिने चालवुं ॥ जे मारे तो भगवानने संतने निरखिने अंतरमां उतारवा छे ॥ अने ते भगवानने संतना दरशने करिने मारा अनंत जन्म
नां जे पाप ते नास थई जशे ॥ माटे मारे एक भगवानने संतनां ज दरशन करवां छे ॥ पण त्यां जईने आडुं अवळुं मोढुं करिने बिजा कोई
नां मोढां नथि जोवां ॥ अने महाराज ने संत जे जे वातो करशे तेने एकाग्रचित्त करिने सांभळवि छे ॥ ने ते वातोने अंतरमां उतारवि छे
॥ अने कथाकिरतनमां वचे मारे बोलवुं नथि ॥ ने एक भगवानने भगवानना साधुना ज शब्द सांभळवा छे ॥ एम समजिने संसार वे-
हेरनाडो जनो त्याग करिने जे दर्शने आवे छे ॥ तेने जे दर्शननो लाभ थाय छे ॥ ने तेने डगले डगले यज्ञनुं फळ थाय छे माटे एवि रिते म-
हात्म समजिने अमारा ने संतनां दरशन करिने जगतनि मान मोटम्य मुकिने भगवानना भक्त आगळ निरमानी थईने सभामां ज्यां
मागम ळे त्यां बेसि जवुं ॥ केमके आ सभा तो अक्षरधाम नि छे ॥ अने अमारा भक्त छे ते तो मोटा ब्रह्मादिक ने पण पूजवा जोग्य छे
॥ अने अमारि ने अमारा संतनी वार्ता पण शिवसनकादिक नारदव्यास वाल्मिक ने पण सांभळवाने ईछे छे ॥ ने सांभळिने अद्भु
त आनंदने पामे छे ॥ माटे एवि सभामां तो अति निरमानि थईने वारतामां चित्त देवुं ॥ एम समजिने दरशने आवे छे ॥ तेने अलौकिक
लाभ थाय छे ॥ ने तेने ज्ञान पण थाय छे ॥ अने तेने भगवानने भगवानना संतने विषे प्रिति थाय छे ॥ अने ते अक्षर धामने पामे छे ॥ अने
जे आवि सभामां बेसिने जगतनो डोळ करे छे ॥ अने पुरुष स्त्रियोनां मोंढां जुवे ॥ ने स्त्रियो पुरुषनां मोढां जुवे ॥ ते तो महापापि छे ॥ अने
तेने असुरि जिव जाणवा ॥ पण तेने दरशननो लाभ के ज्ञानवार्तानो लाभ थतो नथि ॥ अने तेना आत्मानुं तो उलटुं भुंडुं थाय छे ॥ के
मके जगतना जेवि आ हिं रित नथि ने अहिं तो मायापर रित छे ॥ अने जगतमां जे कथावार्ता किरतन थाय छे ॥ ने त्यां स्त्रियो पुरुष भे-

गांथईने स्त्रियो पुरुषए क बिजानां मां दांजुवेछे ।।ने हां सिमजुक रिक रेछे ॥ तेवि रितअमारिपा सेनथि।।अनेअमारि पासे आ विने तोका मक्रोध लोभस्वाद स्नेह मान आदिकजे जिवनाअंतरशत्रु तेनेटालवा ॥अनेधर्मज्ञानवैराग्य भक्तिआदिकजे कल्याण कारिगुण ते शिखवा ।।अने पंचविषयनीवासनानोत्याग करवो।।अनेजे निरवासनिक थाय छे॥ तेनेज अमारोनेअमारा संतनोअखंड संबंध रहेछे।।नेतेअमारा अक्षरधामनेपामेछे ।।तेसारुं सावधानथईने सत्संग करवो॥ एवीरिते महाराजे पोताना भक्तने शिक्षानां वचन कह्यां ॥ ।।इतिश्रीमुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥

संवत ।।१९।।ओगणिसे ॥२२।।बाविसना भादरवा वदि ।।१२।। द्वादशिने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजित्रा मध्ये।। सुतार भक्त विठ्ठल कल्याणने घेर उत्तरादे बार ओरडानि ओसरिमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता अने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ।।अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ।।अने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे पटेल जेसंग भाई इश्वरदासे हाथ जोडिने प्रश्न पुछ्युं ।।जे हे महाराज आदेहने विषे जिव केम रह्यो हशे।।अने जिवने विषे भगवान केवि रिते रह्या छे ते कहो॥ पछे महाराज बोल्या जे प्रथम तो देहनुं स्वरुप जाणवुं।। ते देह केवो छे।। तो मायाना जे चोविस तत्व तेना देह छे॥ ने तत्व कियां तो दश इंद्रिये ने पांच भूत ने पांच विषय ने चार अंतःकरण ।।ए चोविस तत्व तेनो देह छे तेमां जिवना देहने पिंड कहे छे ॥ने इश्वरना देहने ब्रह्मांड कहे छे॥ ते जेटलि ब्रह्मांडमां वस्तु छे ।।तेटलि पिंडमां पण वस्तु छे।।अने पिंडमां रह्यो जे चेतन तेने जिव कहे छे ॥ अने ब्रह्मांडमां रह्यो तेने इश्वर कहे छे ।।अने ए जिव ने ईश्वर ए बेयना आधार अक्षर ब्रह्म छे अने ते अक्षर ब्रह्मना आधार परमात्मा परब्रह्म भगवान छे।।जेम गरबामां दिवो मुक्यो होय तेम जिव देहमां रह्यो छे ॥ अने जेम गरबाना फांकोरां मांथईने दिवानो प्रकाश बहार निसरे छे ।तेम चोविस तत्वनी वृति यो तेणे करिने जिव जे ते बहार क्रिया करे छे ॥ अने जेम दिवो गरबामां रह्यो छे तो पण गरबाथकि जुदो छे॥तेम जिव देहथकि जुदो छे ।। एवि रिते देहमां जिव रह्यो छे॥ अने जिवमां भगवान केम रह्या छे॥ तो जेम नेत्रमां सूर्य रह्यो छे॥ तेम जिवमां भगवान रह्या छे ॥ते जेम सूर्यना प्रकाश विना नेत्र कांई देखवा

ने समरथ नथि ।। तेम भगवाननाअंगनोप्रकाराजेअक्षरब्रह्मजेज्ञान ते विनाजिवजे ते कांईये करवाने समरथ नथि ।। एवि रिते जिवमां भगवान रह्याछे ।। पण जिवनेज्यां स्ऋधि अज्ञान छे त्यां स्ऋधिए जिव भगवानने जाणतो नथि ।। अने पंचविषय नि वासनाये करिने देहमां जिवबंधाईरह्यो छे ।। तेणे करिनेजन्ममृत्युनेपामे छे ।। जेम दीवो जे ते दीवेटने विषे वलगि रह्े ।। त्यां स्ऋधि दिवानो अग्नि जेते पोतानुंस्वरुप जे सूर्य तेने पामतो नथि ।। अने ज्यारे दिवेट को डियुंनेगरबानो त्याग करे त्यारे पोतानु कारण स्वरुप जेसूर्य तेने पामे छे ।। तेमजिवजेते स्थूल सूक्ष्मने कारण एत्रणदेहनी जे वासना तेनो त्यागकरे त्यारेपोतानुं कारण स्वरुप जेअक्षर ब्रह्म तेने पामे ने जिव ब्रह्मरुप थायछे ।। ने तेनेजन्म मृत्युनां दुःरवटलिजाय छे ।। ने सर्वो परि मोटम्यने पामेछे जेम दिवो दिवेट कोडियुं ने गरबानोत्याग करे ।। तेनेकोई आवर्ण रहे तुंनथी नेपोतानासुध्धस्वरुपने पामेछे ।। नेतेनेबधवुं घटवुंतेम टिजाय छे अनेज्यांस्ऋधि दिवोपोताना सऋद्ध स्वरुपने पामेनहिं ।। अनेते दिवानाअग्निमां कोईक घणुंक बलतण नारवे तो ते अग्नि वृद्धिपामे ने बलतणनना रवे त्यारे पाछोतेअग्नि घटिजाय छे ।। पणते वृद्धि अग्निनी अरवंडरहे नहीं ।। तेमजीवने ज्यां स्ऋधि वासना होय त्यां स्ऋधि तेने कोई कमोटापुरुष मले तेनो आश्रो जिवकरेने ते पासेथी जेटलुं जेटलुं ज्ञान पामे छे तेटलि तेटलि मोटम्य ने जिव पामेछे ।। पण माईक पदार्थ करिने जेटलिमोटम्य छे ते सर्वे अंतेना सपामवानी छे ।। जेम अग्नि तेल घीने लाकडां तेणे करिने वधिपामे छे अनें ते बलिरहे त्यारे पाछो तेअग्नि घटिजायछे ।। तेमजीवजे ते वासनाये करिने माईक मोटम्यने पामे छेनेबलिते मोटम्य नासपईजायछे ।। नेजन्ममृत्युने भोगवे छे ।। अने ज्यारे माईक मोटम्यनी इछानोत्याग करिने निरवासनि कथईने पोतानुंसुध्धस्वरुपजेअक्षर ब्रह्म तेनेपामेछे ।। त्यारे सर्वो परिनेअवीनासि मोटम्यने जिवपामे छे ।। ।।ईति श्रीमुरवसिद्धांत समाप्तः ।। ।।श्रीहरि कृष्णायनमोनमः ।। ।।संवत ।।१९।।ओगणिसें ।।२२।।बाविसना भादरवा वदि ।।१३।। तेरसनेदिवसे महाराजश्रीहरि कृष्ण भगवान गामश्री सोजित्रामध्ये काछिया भक्त हारवजि माधव दासने घेरउगमणे बारओरडानी ओसरिमां ढोलियाउपर बिराजमान थयाहता ।। ने स्वेतरवेसनेअंगरखुं धारण कर्यां हतां ने मुस्तकेगुजा

बीरंगनो फेटोबांध्योहतो ॥ नेपोतानामुखारविंदनीआगलसाधु तथा घणाक हरीभक्तनीसभा भराईने बेठ हता ॥ पछे महाराजबो-
ल्याजे ॥ जेने परमेश्वरे मनुष्यदेहआप्योछे ॥ तेने एमविचार करवोजे मुने दुर्लभ एवोजे मनुष्यदेह ते प्राप्तथयोछे ॥ माटे तेणेकरिने
मारे शुंकरवानुंछे ॥ एवो विवेक विचार करिनेजोईयेतो ॥ आदेहनां जे धन्यमाल स्त्रि छोकरां राज्यए सर्वे नासवंत छे ॥ अनेएस-
र्वेमाईकपदार्थ छे ॥ तेकोई एमांथि जिवना भेगुंआवेएम नथि ॥ माटेते सारुंहुं शुंजतनकरुं ॥ एमसमजिने ते माईकपदार्थनी
ममतामुकिने पोतानेअविनासी आत्मासमजिने तेआत्मानासाचासगानेअविनासिसुखना आपनारा भगवानछे ॥ तेमांप्रि
तिकरवि ॥ एजजिवनेअविनासिसुखपामवानोउपायछे ॥ पण तेविना आत्मामाईकसुखे करिने सुखियो थायए वोनथि ॥ माटे
अधर्मनो त्याग करिने आत्मानाआत्माएवाजे परमात्मा भगवानने भगवानना संत तेनोआसरो करिने भगवाननुंभजनसमरण
करे त्यारेज जिवनेसुखथाय ॥ पण ते विना बिजाअनंतउपाय करेतो पण पंचविषयमां जीव कोईकाले तृप्ति पामेनहिं ॥ माटेपं
चविषयनोत्यागकरिने भगवान भजे त्यारेजजिवनेसुखथाय ॥ माटेआमाराआश्रीतथयाहोय तेने तोअविनासिएवुंजे भग-
वाननाधामनुंसुख तेने पामवानिईछारारववीअने तेनुंजतनकरवुं ॥ अने तेसुखनोअतिसेलोभराखवो ॥ अने तेसुखसत्
संगेकरिनेपमायछे ॥ तेसत्संगआज तमने प्राप्त थयो छे ॥ माटेआलसने परमादनो त्यागकरिने देहछतेज पंचविषयनीवा-
सनानो त्यागकरिने निरवासनिक थईनेअक्षरधामने पामवुं ॥ पणमनुष्यदेहे करिने पशुनीपेठे विषयभोग भववानहि ॥ मनुष्य
देहे करिने तो सर्वे इंद्रियोने पंच विषयथकि पाछिवालिनेनियममांराखीने ते थी पोताना आत्माने जुदोअसंगि समजवो ॥ अ-
नेप्रतिलोमद्रष्टि करिने पोताने प्रत्यक्षमल्याएवाजेभगवानतेना स्वरुपनुंध्यान करवुं ॥ अने पोतानाधर्ममांद्रढपणेवर्तवुं
॥ पछे भगवाननीईच्छाहोय त्यांसुधिदेहरहे ॥ अने देहपडसे त्यारे भगवान पोताना धामनेपमाडसे ॥ ॥
ईतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ॥ ॥ संवत्१९ओगणिसें
॥२२॥ बाविसना भादरवावदि ॥१४॥ चतुर्दशिनेदिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री सोजिंत्रामध्ये ॥ काछिया भक्त

रणछोड नरोतमने घेर उतरादे बार ओरडानी ओसरि मां गादि तकिये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता ने सर्वे स्वेत वस्त्र धार-
ण कर्यां हतां ॥ अने पोताना मूरवा विंदनी आगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे पटेल रणछोडभाई
गिरधरभाई ये हाथ जोडिने प्रस्न पुछ्युं ॥ जे हे महाराज एम कहे छे जे सर्वेना आत्माने विषे भगवान रह्या छे ॥ माटे आत्माने विषे भगवान रह्या
होय त्यारे ते भगवानने पामवा सारुं जप तप व्रत उपवासादिक करवानुं सुं काम ॥ तथा तिर्थे जवानुं शुं फल ॥ अने गुरु करवानुं शुं का-
म ॥ तथा जन्म मरणनो भय कोने ॥ अने पुर्वे तो नारद सनकादिक भगवानना भक्त संत थई गया छे तेणे तो भगवानने पामवा सारुं
बहु जप तपादिक कष्ट सहन कर्यां छे ॥ ते कष्ट शुं करवा कर्यां हसे ॥ केमके आत्माने विषे भगवान रह्या छे ते जेने पामवुं छे ते तो
जिवनी भेगा छे ॥ मारे देहने मुकसे त्यारे ते जिव भगवान भेला भगवनना धामने पामसे ॥ ए वात अमने महाराज समजाति न-
थि ॥ ते कृपा करिने समजावो ॥ पछे महाराज बोल्या जे आत्माने विषे जे भगवान रह्या छे ॥ तेणे करिने जिवनुं कल्याण थतुं नथि
॥ अने ए तो कर्मना फलने आपवा सारुं साक्षिरुपे भगवान रह्या छे ॥ अने भगवान तो साक्षिरुपे रह्या थका न्यारा छे ॥ हवे न्यारा
एवा जे भगवान तेनी जड ने चैतन बे प्रकृतियो छे ॥ अने जड प्रकृति ते माया छे ॥ ने चैतन प्रकृति ते जिव छे ॥ ते जड ने चैतन ए बेना प्र-
काशक साक्षिरुपे भगवान रह्या छे ॥ ते भगवान साक्षिरुपे रह्या थका जिव जे ते शुभ ने अशुभ जेवां जेवां कर्म करे छे ॥ तेवां तेवां कर्म
नां फलने भगवान पमाडे छे ॥ पण ए साक्षिरुपे आत्माने विषे रह्या छे तेणे करिने जिवनुं कल्याण थतुं नथि ॥ अने जिवनुं कल्याण
तो ॥ प्रत्यक्ष राम कृष्णादिक मनुष्यरुपे भगवान जिवने मले ॥ अने पोताना स्वरुपनो ज्ञाने करिने निश्चय करावे त्यारे जिवनुं कल्या-
ण थाय छे ॥ पण साक्षिरुपे आत्माने विषे भगवान रह्या छे तेणे करिने जिवनुं कल्याण थतुं नथि ॥ अने जे भगवान साक्षिरुपे आत्मा
ने विषे रह्या छे ॥ ते जिव सुभ असुभ क्रिया करे तेने हाकेना कहेता नथि ॥ केमके जगतमां केटलाक जिव चोरि छिनालि दारु मांस
आदिक भूंडां कर्म करे छे ॥ ने तेणे करिने अनंत प्रकारना संताप ने पामे छे ॥ पण तेने साक्षिरुपे रह्या जे भगवान ते भुंडा कर्मनी ना
पाडता नथि ॥ अने साक्षिरुपे भगवान रह्या छे तेने जिव पोतानि मेले जाणतो पण नथि ॥ केमके द्रस्य होय ते द्रष्टाने जाणवाने स

मरथनथि ॥ माटेजिवद्रस्यछे ने जिवना द्रष्टा भगवानछे जेमदेहद्रष्यछे ने तेनो द्रष्टाजिवछे ॥ तेजिवदेहनेजाणे पणदेह जिवनेजाणि
न्नाकेनहिं ॥ तेमजिवनाद्रष्टा भगवान छे ॥ ते भगवानने जिवजाणिन्नाकेएमनथि ॥ जेमदेहनेसुखदुःखथाय छे ॥ तेने जिवजाणेछे
॥ अनेजिवनेसुखदुःखथायछे तेनेदेहजाणवानेसमरथनथी ॥ तेमजिवनेसुखदुःखथायछे तेनेभगवानजाणेछे ॥ पणजिवभग
वाननेजाणवानेसमरथनथि ॥ अनेजिवतोपरतंत्रछे ॥ केमके जिवज्यारे सुसुप्तिमांजाय छे ॥ त्यारेचोरआविनेतेनाघरमां थि
सर्वे लेईजायछे ॥ तथा कोईक तरवारे माथुं कापीनाखेछे ॥ तोपण तेनुं जिवने भांनरहेतुंनथि ॥ माटे जिवतो पराधिन कालकर्म
नेवसछे ॥ अनेभगवान छेतेतोजडनेचैतनए बिजे बेप्रकृतियो तेथी सदायपरछे ॥ ने स्वतंत्रछे ॥ अनेते भगवानने कोईनो आ-
धारनथि ॥ ने भगवान तो स्वयंआधार छे ॥ ने कृपासिंधुछे ॥ ते कृपाकरिने जिवनाकल्याणने अर्थे जुगजुगने विषे पृथ्विउपर पधा
रेछे ॥ त्यारे ते भगवानने जिवदेखिन्नाके छे ॥ पण भगवान तो सदायअक्षरधामने विषे छे ॥ ते मर्मने तो अमारा एकांतिक भ-
क्त साधुजाणे छे ॥ अनेजिवछे तेअधर्मनो त्याग करिनेते प्रत्यक्ष भगवाननोआश्रोकरे त्यारेजन्ममरणनादुःखथकि मुकाय ॥
ने जिवनोमोक्षथाय ॥ पण ते विना जिवनोमोक्षथायनहिं ॥ एवि रिते सर्वे भगवानना अवतारथईगया ॥ तेनो सिद्धांतए छे ॥ नेअमा
रोपण एजसिद्धांतछे ॥ अनेजे श्रा स्त्रना मर्म नेनथिजाणता एवाजे ब्रह्मकोदालआसुरि जिवनेउपरथि साधुनावेस धारिए
वाजेदुष्टपापि ते एमकहेछेजे घटघटमां भगवान रमिरह्याछे ॥ अने पापपुन्यपण कोने छे ॥ अनेवलि विधिनिषेधतुं पणशुं का-
मछे ॥ अनेजपतपव्रतादिके करिने कोने पामवुं छे ॥ अने जिवजेते ब्रह्ममांथिआव्यो छे ॥ ते देहनेमुकशे त्यारे ब्रह्ममां ब्रह्मभ
लि जशे ॥ अनेजन्ममरणनादुःखथकिमुकाईजशे ॥ एमअति निचने पापि छे ते कहेछे ॥ अनेएवापापिछे ते एमसमजिनेनिसं
कथईने विषयने भोगवेछे ॥ ने मा बेहेन नोपण टालोराखतानथि ॥ अनेमोढे थीएमकहे छे इंद्रियो इंद्रियोनांकाम करेछे ॥
अनेअमे तोअसंगि छैये ॥ एवि रितना ज्ञानना कथनारा ने तेने माननारा बेय देहनेमुकिने अतिशे दुःखने पामशे ॥ अनेतेनाए
कोतेर पेढिया सहित नरकमां पडे छे ॥ अनेएवा जे निचने पापि तेना वचननी जेने जेने प्रतितिआवे तेनापण आत्मानुंभुंडुं थाय

छे॥ नेअधोगतिने पामे॥ माटे जेने कल्याण नेइच्छवुं तेनेएवा पापिनो संग करवो नहिं॥ अनेवेदांत शास्त्रमां चोविस तत्व कहिने
ने पचिसमा भगवानकह्याछे॥ ते तो वेदांतशास्त्रने करनारे एम समजिने कह्युंछे जे जिव विनानां तत्व होय नहिं॥ माटे तत्व भेगो जिव
नेगण्यो छे ने पचिसमा भगवानने कह्याछे॥ अने योगशास्त्रमां चोविस तत्व ने पचिसमो जीवने कह्यो छे ने छविसमा परमात्माने
कह्याछे॥ माटे शास्त्रनाअर्थ भूलिने जगतमांअज्ञानि गुरु छे ते भूंडां कर्म करे छे नेनिसंक थईने विषयने भोगवे छे॥ अने परमेश्वर
नीजेशमात्र पण शंका धरता नथि॥ अने मनमां एम समजे छे जे अमे परमेश्वर छैये॥ माटे एम कहेनारा ते तो महापापिने चंडाल छे॥
ते महादुःखने पामशे॥ माटे जेने पोताना आत्मानुं रुडुं करवुं होय॥ तेने एवा अधर्मिना संगथि छेटे रहेवुं॥ अने वलि एम समजवुं जे पु
र्वे जे जे भगवानना अवतार थई गया छे तथा नारद सनकादिक जे जे भगवानना भक्त संत थई गया छे॥ तेना वचन ते सत्य छे॥ ए
म जाणिने पोताना धर्ममां रहिने ज्ञान वैराग भक्तिने पामिने पंचविषयनी वासनाथकि मुकावुं॥ अने जे वासना मुके छे॥ ते
नेज जन्म मरणनां दुःख टले छे॥ अने तेना आत्मानुं कल्याण थाय छे॥ अने इंधि समजण वाला जे अज्ञानि ब्रह्म कोदाल तेने मते
तो मोक्ष पण खोटो थाय छे॥ केम के परब्रह्म परमात्मा एवा जे भगवान् तेने जन्म मरण ठेराव्युं जे सर्वे रूपे भगवान थया छे॥ मा
टे भगवानने पण जन्म मृत्यु ठर्युं अने एपण समजि समजिने समजशे तो पोताने भगवान मानशे तो पण जन्म मरण तो रहेशे॥
माटे एम जोतां पण एनो मोक्ष खोटो ठरे छे॥ अने श्री कृष्ण भगवानने विषे जे जे भावे जिव जोडाया तो ते सर्वे जन्म मरणना दुःख
थकि मुकाईने भगवानना धामने पाम्या॥ अने रुषभदेव भगवानना पुत्र जे भरथजि ते अतिशे वैरागवान हता अने भगवान
ने प्रसन्न करवासारु भरतखंडनुं राज्य त्याग करिने वनमां गया हता॥ तो पण जो दयाये करिने मृगलामां स्नेह कर्यो तो तेने मृग-
लीने पेट जन्म धरवो पड्यो॥ ने नारदे भोलपे करिने राजानी दिकरिनो हाथ जोयो तो ते पापे करिने मांकडानुं मोढुं थयुं॥ अने ज
गतमां पण अपकिर्ति थई॥ ने मोटुं लंछन लाग्युं॥ अने श्री कृष्ण भगवाने गोपियो संगे विहार कर्यो तो पण ब्रह्मचारी कहेवा
या॥ अने गोपीयोये पतिभावे करिने श्रीकृष्णमां स्नेह कर्यो॥ तो पण ते गोपियो वेदनी श्रुतियो कहेवाई॥ अने देहने मुकीने प-

रम पदने पामी ॥ माटे श्रीकृष्ण सदाय मायापर हता तो तेना भक्त मायापर थया ॥ अने ते भगवानने मायानुं कार्य मोहप माडवाने समरथ नथि ॥ अने ए भगवाने तो कृपा करिने गोपीयोने पोताना दास जाणीने तेने अलौकीक सुख देवा सारु लिला करता माटे श्रीकृष्ण भगवान जेवो कोई थवाने समरथ नथि ॥ अने एने भजने करिने जन्ममरणना दुःखथकि मुकाईने अविनासि सुखने पामे छे ॥ पण बिजा जिव जिवने भजने करिने कोईनो मोक्ष थतो नथी ॥ ने गुरु शिष्य वेचनके मां पडे छे अने जेम श्रीकृष्णमां गोपियो जोडाई यो हती तेम ज सर्वे स्त्रियो पोतपोताना पतिने विषे जोडाई यो छे तो पण तेनो गोपियोनी पेठे मोक्ष थतो नथि ॥ अने ए तो तेना पति सहित घोर नर्कमां पडे छे ॥ माटे परमात्मा पुरुषोत्तम भगवान तो एक ज छे ॥ अने ए जेवो कोई थवाने समरथ नथि ॥ अने जिवतो असंख छे ॥ ने ते मांथि जे जे जिवने प्रत्यक्ष भगवाननो आसरो थाय ते ते जिवनो मोक्ष थाय छे ॥ अने ते जिव जन्ममरणना कष्टने नथी पामतो ॥ ने तेने माई करे हपण नथि धरवो पडतो ॥ अने ते जिव तो सदाय अक्षरधाममां भगवानने समिपे अलौकिक सुखने ले छे ॥

॥ ईति श्री मुख सिद्धांत समाप्तः ॥

॥ श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः ॥

॥ ॥ संवत ॥१९॥ ओगणिसे ॥२२॥ बाविसना ॥ आश्रो शुदि ॥१॥ पडवाने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री सोजित्रा मध्ये काछियागोविंदने घर उत्तरादे बार ओरडानी ओसरिमां गादि तकिये युक्त पलंग बिछावि ने ते उपर विराजमान थया हता ॥ अने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभि रह्यां हतां ॥ अने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ अने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हती ॥ पछे महाराजश्री हरिकृष्ण महाप्रभुजि बोल्या जे आज अमे वात करिशुं ते चार वेद षट्शास्त्र ने अढार पूराण ए सर्वेनी सार कहेवानो ॥ माटे जे बुद्धिमान हशे ने जेना उपर भगवाननी कृपा हशे ते ने आ वात समजवामां आवशे ॥ अने ते ने अंतरमां प्रकाश थशे ॥ अने तेने कल्याणना मारगमां कांई समजवुं बाकि रहेशे नहिं ॥ अने आ वातमां चार प्रकारनो विवेक कहेवानो ॥ तेमां एक धर्मनो विवेक कहेवासे ॥ बिजो ज्ञाननो विवेक कहेवानो ॥ त्रीजो वैरागनो विवक

कहेवासे॥ ने चोथो भक्ति नो विवेक कहेवानो ॥ ते मांप्रथम धर्मनो विवेक कहिये छिये ।। जे ते धर्म बे प्रकारनो छे ॥ एक सकाम
धर्म छे ने बिजो निष्काम धर्म छे हवे सकाम धर्म ते शुं ।। तो देहना सुखने अर्थे जे जे जप तप व्रत दान पुन्य तथा भगवाननी सेवा भक्ति करिने ।। दयादिक लोकना
सुख पामवानी इछा राखिने जे जे धर्म पालवो तेनुं नाम सकाम धर्म छे ॥ केमके ते सुख सर्वे नाशवंत छे ।। माटे जे सकामिने तुछ बु-
द्धिवाला छे ॥ ते एमाइक सुखनी इछा राखे छे ।। केमके ते सुख तो नित्य निमित्त ने प्राकृत प्रलयमां नास पामि जाय छे ।। माटे ते सुख
नी इछानो त्याग करिने निष्काम कर्म करवुं ॥ कहे तां अविनासि जे भगवान ना धामनुं सुख जे कोई काले नास पामे नहिं ॥ ते सुखना
सारुं निष्काम भावे भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे धर्म पालवो ॥ ते धर्म ते शुं तो ।। इंद्रियोना नियम जेने जेम कह्या होय वर्णाश्रमना धर्म
प्रमाणे ॥ तेम तेने द्रढपणे वर्तवुं ॥ पण तेमां कोई दिवस फेर पडवा देवो नहिं ॥ तेनुं नाम धर्मे करिने विवेक जाणवो ॥ अने हवे बिजो ज्ञाने
करिने विवेक छे ॥ तेने समजवानी रीत कहिये छिये ॥ जे देहने विषे जिव एकरस थई गयो छे ते ने नोखो पाडवो ॥ जेम फलमां सुगंध ए
क थई गई छे ॥ तलमां तेल एक रस छे ॥ जेम दूधमां घि रह्युं छे ॥ तेम जिव देहमां देहरूप थैर ह्यो छे ॥ ते जिवात्माने ज्ञानरूपि विवेके
करिने देहथि नोखो पाडवो ॥ हवे ज्ञान ते शुं तो ॥ चोविस तत्वरूप जे माया ते थकि आत्माने नोखो समजवो ॥ जेम तलने घाणिमां पिली
ने तेमांथि तेलने जुदुं काढे छे ॥ तेम चोविस तत्वरूप जे माया ते थकि ज्ञानरूप जे घाणि ते णे करिने आत्माने जुदो करवो ॥ ते के विरिते जु-
दो करवो ॥ तो शब्द स्पर्श रुप रस ने गंध ए जे पंच विषय ते थकि आत्मा जुदो छे ॥ अने श्रोत्र त्वचा चक्षु रसना ने घ्राण ए जे पांच ज्ञान इं
द्रियो ॥ ते थकि पण आत्मा जुदो छे ॥ अने वाक् पाणि पाद वायु ने उपस्थ ॥ ए जे पांच कर्म इंद्रियो ते थकि पण आत्माने जुदो समजवो ॥
अने प्रथ्वी जल तेज वायु ने आकाश ॥ ए जे पांच भूत ते थकि पण आत्माने जुदो समजवो ॥ अने मन बुद्धि चित्त ने अहंकार ॥ ए जे चा
र अंतःकरण ते थकि पण आत्मा जुदो छे ॥ अने इंद्रियो अंतःकरणना जे चौद देवता ते थकि पण आत्मा जुदो छे ॥ ते देवतानां नाम ॥
मनना देव चंद्र ॥ बुद्धिना देव ब्रह्मा ॥ चित्तना देव वासुदेव ॥ अहंकारना देव रुद्र ॥ श्रोत्रना देव दिग्पाल ॥ त्वचाना देव वायु ॥ चक्षुना
देव सूर्य ॥ रसनाना देव वरुण ॥ नासिकाना देव अस्विनिकुमार ॥ वाक्ना देव अग्नि ॥ हाथना देव इंद्र ॥ पगना देव विस्नु ॥ शिस्नु

नादेवप्रजापति॥गुदानादेवयम॥एजेचौददेषतेथकि पणआत्माजुदो छे॥ तेमां पांचभूतनेपांचविषय तेतमोगुणथकि थयाछे॥अने
दशइंद्रियोरजोगुणथकि थयां छे॥ अनेचार अंतःकरणने चौददेवताते सत्वगुणथकि थयाछे॥ माटे त्रणगुणनुं कार्य जेम्घोविसत
त्वात्मकजे पिंडब्रह्मांडादिकरुपजे माया तेथीहुं चैतन आत्माजूदो छुं॥एमसमजवुं॥ ते आत्मा केवो छे॥तो अहंकाररहित आ
त्माते अखंड छे॥ अविनासिते सुखरुपछे॥ अने पींड ब्रह्मांडादिक जेमायाछे तेदुःखरुपछे॥पापरुपछे॥नासवंत छे॥ स्वप्नवत
छे॥एमसमजिने मायाना पदार्थने पामवानी ईछानोत्याग करिने पोतानेशुद्ध चैतन आत्मामांनीने सदाय हालतांचालतां-
खातांपीतां सर्वे क्रियामांदेहथकि पोतानाआत्माने जुदोसमजवो॥ केहतां पंचविषयनापदार्थमां आशक्ति क्यारेय करविनहि॥
एविरिते बिजो विवेक ज्ञाने जाणवो॥ हवे त्रिजो विवेक वैरागे करिने कहियेछीये॥जेवैरागवीवेकपामवानेअर्थे॥उत्पत्तिस्थिति
नेप्रलयएत्रणनां रुपजाणवां जोईयेछिये॥ माटेतेनेजाणवानी रित कहियेछिये॥जे भगवाननीईछाजेउत्पत्तिकरवी॥तेईछा
ने अक्षरे जाणि॥ पछे ते अक्षरनी ईछायेकरिने प्रकृतिपुरुषजाग्रतथयो॥नेतेप्रकृतिपुरुषना योगे करिने प्रधानपुरुषथया॥
ने प्रधानपुरुषथकि महतत्वथयुं॥तेमहतत्वथकि वैराटथयोछे॥नेवैराटथकि ब्रह्मादिकदेवथयाछे॥ ने ब्रह्मादिकदेवथकि म
नुष्यादिक पशुपक्षि झाडपाहाडादिक सर्वविश्वथयुंछे॥ एविरिते तपासिनेजोईयेतो भगवाननो संकल्प॥कहेतां भगवान-
नाधामना सुखनो एक लेशमात्र ते प्रकृतिपुरुषमां आव्यो छे॥ अने ते प्रकृतिपुरुषना सुखमांथि लेश प्रधानपुरुषमां आव्यो छे
एविरिते उतरतां उतरतां मनुष्यने तो ते भगवानना धामना सुखनो लेश पण नथी॥ अने तेमां जिव सुख जेवुं माने छे ते तो मि-
थ्याभ्रांन्तिछे॥जेम झांझवानांजळदेखाय खरां॥ पणतेनेउडुं के छिछरुं के खारुं के मोळुं केहेवाय नहि॥ केमके ते झांझवामां
मुदलजळजनथि॥ तेमप्रकृतिनाकार्यमां सुखजेवुं॥जणायछे॥ पण झांझवानाजळनीपेठे मिथ्या छे॥ अने वळि सूर्य अस्त
पाम्यापछि॥जेमझांझवां देखातां नथि॥ तेम प्रलयसमे जगत देखातुं नथि॥ माटे जगतनां सुख मिथ्या छे एविरिते समजिने
मायानुं कार्य जे पंचविषयनां पदार्थ तेथकी वैरागने पामवुं॥ अने रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतते मां प्रिति

करवि ॥ एविरीते वैरागेकरिने त्रिजो विवेक कह्यो ॥ हवे चोथो विवेक भक्तियेकरिने कहियेछिये ॥ जे प्रकृतिपुरुषथकि उत्पन्नथया
जेदेवमनुष्य तेमां तारतम्य तोछे ॥ कहेतां एक थीएकउतरताछे ॥ माटे आलोकमांकोई मोटो चक्रवर्त्ति राजा होय ते जेम आपणाउ
पर राजिथाय ॥ तेमते नी आज्ञामां वर्तवु ॥ अने ते राजानी आज्ञा पालतांने राजाप्रसन्न थतां बिजिवस्तिकु राजिथति होय ॥
तोपण ते सर्वेनो भयनराखतां राजानो पक्ष राखवो ॥ ने राजाजे रिते राजि थाय ते रिते वरतवु ॥ केमकेजेना उपर राजानी मेहेर-
बानी होय तो तेने वस्ती कांईकरवाने समरथ नथी ॥ अने राजानाकरतां जोकोई देव प्रसन्नथता होय तो ते राजानो भयनरा-
खतां ॥ देवप्रसन्नथाय तेम करवुं ॥ अने देवनाकरतां ब्रह्मा प्रसन्न थता होय तो ॥ इंद्रादिक देवनो पक्ष मुकिने ब्रह्माना पक्ष-
मां रहेवु ॥ अने ब्रह्मानाकरतां वैराज पुरुष प्रसन्न थता होय तो ते ब्रह्मानो पक्षपड्यो मुकिने तेनो भयनराखतां वैराजपुरु
षना पक्षमां रहेवुं ॥ अने वैराट कर्त्ता महतत्व प्रसन्नथता होय तो वैराटनो पक्षमुकीने महतत्वनापक्षमां रहेवुं ॥ अने प्र
धानपुरुषराजी थता होय तो महतत्वनो पक्ष मुकिने प्रधानपुरुषना पक्षमां रहेवुं ॥ अने प्रधान पुरुषनाकरतां प्रकृतिपुरु
ष राजि थता होय तो प्रधानपुरुषनो पक्ष मुकिने प्रकृतिपुरुषनो पक्ष राखवो ॥ अने प्रकृतिपुरुषनाकरतां अक्षर ब्रह्मरुप
मुक्त प्रसन्नथता होय तो प्रकृतिपुरुषादिक सर्वेनो पक्ष मुकिने तेनो भयनराखतां अक्षर ब्रह्म रुप मुक्त नो पक्ष राखवो
अने एराजाथी ते अक्षरब्रह्मरुप मुक्त एसर्वेना स्वामिने सर्वेना आधार एवाजे परमात्मा प्रत्यक्ष भगवान् ते प्रसन्नथता होय
तो तेने ने अक्षर थी लईने देवमनुष्यादिक सर्वेनो पक्षमुकिने प्रत्यक्ष परमात्मानो पक्ष राखवो ने तेनी आज्ञा पालवि ॥
ने तेने प्रसन्नकरवा ॥ अने ते प्रत्यक्ष भगवानमव्यापछे ॥ ते विनाबिजा सर्वे मतपंथ तथा बिजा देव ॥ ते सर्वेनो त्याग करिने
प्रत्यक्ष मनुष्याकृति भगवान् तेजेम प्रसन्नथाय ते विरीते वर्तवुं ते नुंनाम एकांतिक भक्तीकहेवायछे ॥ अने तेए विरीतनी
एकांतिक भक्तियेकरिने जिवनी आत्यंतिक मुक्ति थायछे ॥ अने ए भक्तियेकरिने चोथो विवेकजाणवो अने एविरीते प्र
त्यक्ष भगवानने विषे द्रढ निष्टा थई तेने कांई करवुं रहेतुं नथि ॥ अने तेतो देहछतांज अक्षर ब्रह्मरुप मुक्त थई रह्यो छे ॥ ते अने

एवा जे मुक्त ते तो जेनुं अन्नजमे छे ॥ तथा तेने कोई जलपाय छे ॥ तथा तेने कोई वस्त्र ओढाडे छे ॥ तो ते सर्वेनुं कल्याण थाय छे तथा ते मुक्त नदित लाथमां नदाय छे ॥ तथा जे जे स्थानकमां नियास करे छे ॥ ते स्थानक सर्वे तिर्थ कहेवाय छे ॥ अने एवा मुक्त तो भगवानने पण अतिशे दुर्लभ छे कहेतां वहाला छे ॥ मारे घणा कजन्मना सुभसंस्कार होय छे तेने जएवा संतनो संगमले छे ॥ ने जिवनुं साक्षात्कार कल्याण थाय छे ॥ एटलि वार्ता करिने पछे महाराज घोडिये असवार थईने पोताना मंदिरमां पधार्या ॥ ॥ईति श्री मुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्री हरिकृष्णाय नमोनमः॥ ॥

संवत ॥१९॥ ओगणिसें ॥२२॥ बाविसना आसो शुदि ॥४॥ चतुर्थि ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान् गाम श्री सोजिंत्रा मध्ये पटेल शंकरभाई झवेरभाईने घेर उत्तरादे बार ओरडानी आगल चोकमां गादि तकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता ॥ ने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभि रह्यां हतां ॥ ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा क हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे श्री हरिकृष्ण महाराज बोल्या जे सर्वे सांभलो एक वार्ता करविछे ॥ अने आ वात कहीए तेमां एक अक्षरे करिने प्रथम समजवानी रीत कहेवासे ॥ अने ते एक अक्षरनो अर्थ वाणिपर छे ॥ ते अर्थ वाणिये करिने प्रथम कहेवाशे ॥ अने ते वाणिये करिने एक अक्षर रुप जे अर्थ तेने सिद्ध कराविने पछे ते वाणिनो त्याग करावशे ॥ अने एक अक्षर रुप जे वाणि पर अर्थ तेने विषे स्थिति करावशे ॥ हवे ते वात कहिये तेने सुरत राखिने सांभलजो ॥ जे एक अक्षर रुप जे सर्वेनुं कारण ॥ ॐकार छे ॥ ॐकार एटले सु तो देह चतुष्टियातित ॥ देहचतुष्टियातित एटले ॥ स्थूल ॥ सूक्ष्म ॥ कारण ने महाकारण ॥ ए जे चार देह ॥ ते थि पर एवा जे ब्रह्म ने ब्रह्मना प्रकाशक एवा परब्रह्म ॥ तेनुं नाम देह चतुष्टियातीत कहेवाय छे ॥ माटे ते देह चतुष्टियातित एवा जे ब्रह्म ने परब्रह्म तेने साक्षात्कार जाणवा ॥ ने तेने जाणीने तेने पामवा तेनुं नाम देह चतुष्टियातित एवो जे एकाक्षर रुप जे ॥ ॐकार ॥ तेनो अर्थ सिद्ध थयो जाणवो ॥ हवे ॐकार रुप जे ब्रह्म ने परब्रह्म तेने साक्षात्कार क्यारे पमाय छे ॥ तो ए चार देहना रुपने जाणीने तेथी पर थवाय छे

त्यारे ते उंकाररुपजे ब्रह्मने परब्रह्म तेने पमायछे ॥ हवे तेने पामवानी रित कहिये छियेजे उंकाररुपजे एक अक्षर ते थकि चार अक्षर थयाछे ॥ अने ते चार अक्षर थकि बावन अक्षर थया छे ॥ अने ते बावन अक्षरनी पाछी मेलवणि करिये तो उंकाररुप एक अक्षर रहे छे ॥ तेम उंकाररुप एवाजे ब्रह्मने परब्रह्म ते थकि चार अक्षर रुप चार देह उत्पन्न थयाछे ॥ केहे तां उंकार रुपजे परमात्मा तेणे जियोने - पोतानुं स्वरुप जणाववाने अर्थे चार अक्षर रुप चार देह उत्पन्न करि आप्याछे ॥ अने ते चार देहे करिने आत्मा परमात्मानुं स्वरुप जणाविने ॥ पछे ते चारे देहनो लयकरावे छे ॥ पछे ते आत्माने विषे उंकाररुपजे परमात्मा ते एकर हे छे ॥ अने ते आत्मानी मुक्ति थायछे ॥ केहेतां ते जन्ममरणे रहित थईने परमात्माना सरखा स्वरुपने पामे छे ॥ हवे उंकाररुपजे एवो जे एक अक्षर ते थकि चार अक्षररुप चार देह थयाछे ॥ ते चार देहने जणाविये छियेजे ॥ उंकाररुपजे एक अक्षर ते सर्वे अक्षरनुं बिज छे ॥ पण ते एक अक्षरे करिने ज्ञान थाय नहिं ॥ तेथि एक अक्षर रुपजे उंकार ते थकि चार मात्रारुप चार अक्षर थया छे ॥ ते चार मात्रा रुप चार अ- क्षरनां नाम ॥ एक अकार ॥ बिजो उकार ॥ त्रिजो मकार ॥ अने चोथो अर्धमात्रा ॥ ए चार अक्षर उंकारमां थि थया छे ॥ अने ए - चार अक्षरने पाछा व्याकरणमां साधे छे ॥ त्यारे तेनो पाछो उंकार एक अक्षर थाय छे ॥ तेम उंकार रुपजे परमात्मा ॥ तेणे पोताना स्वरुपने जणाववाने अर्थे चार अक्षररुप चार देह जिवोने सरजि आप्या छे ॥ ते मां अकारने ठेकाणे जाडा पंचभूतनो स्थूल दे- ह छे ॥ अने उकारने ठेकाणे झिणा पंचभूतनो बिजो सूक्ष्म देह छे ॥ अने मकारने ठेकाणे त्रिजो वासनामय कारण देह छे ॥ कार णएटले स्थूलने सूक्ष्म जेमांथि उपज्यां छे एवो जे वासनामय जियचैतन तेनुं नाम कारण देह छे ॥ अने चोथो अर्धमात्राने ठेकाणे ए त्रण देह थी जुदो एवो जे आत्मा ते आत्माने विषे अहंव्रति तेनुं नाम अर्द्धमात्राने ठेकाणे चोथो महाकारण देह छे ॥ अहंव्रत्ति एटले त्रण देहनुं बिज छे ॥ कहेतां अहंव्रत्तिरूपजे आत्मा ते थकि स्थूल सूक्ष्मने कारण ॥ ए त्रण देह उत्पन्न थयाछे ॥ हवे अहंव्र- त्ति एटले शुं तो परमात्माने जाण्या विना पोताना आत्माने विषे जे हुं आत्मा हुं ब्रह्म ॥ एम समजवुं तेनुं नाम अहंव्रतिरुप महाकारण देह छे ॥ ए अहंव्रति रुपजे महाकारण देह ते थकि स्थूल सूक्ष्मने कारण ए त्रण देह ॥ अने त्रण देहे करिने भास्यमां

नथयुं ॥ एवुंजे अखिल विश्व तेउत्पन्नथयुं छे ॥ माटे एसर्वेनारुपनेजाणिने तेनीजेमउत्पत्तिथई छे ॥ तेमतेनेपाछुं लयकरवुं ॥ अने
पछि तेत्रण देहथी जुदो पोतानाआत्मानेजाणिने तेआत्मानीअहंव्रत्ति ज्यांथिउत्पन्नथईहति ॥ एवा जेउँकाररुप परमात्मा तेनेवि
षेलयकरिदेवी ॥ कहेतां परमात्माने जाण्यानो तो तेथी आत्माने अहंव्रतिउत्पन्नथईहति ॥ माटे ते परमात्मानेजाणिने तेअहं
व्रति परमात्माने विषेजोडिदेवि ॥ कहेतां परमात्मानादासत्वपणानि अहंव्रतिधरविजे हुं ब्रह्मरुप एवोजे परमात्मानोदास छुं ॥ ए
वि रिते चार देहथीजुदोपडिने परमात्माप्रत्यक्षज्ञानदाता सद्गुरुनी मूर्त्तिनेविषेजोडाय छे ॥ तेनेउँकाररुपजेदेह चतुष्पिपातित
परमात्मा तेनोअर्थ सिद्ध थाय छे ॥ अने तेनीमुक्ति थायछे ॥ हवे चारमात्रा रुप चार देह ॥ तेनुं ज्ञान करावियेछिये जे अकारमात्रा
रुपजे जाडापंचभूतनो स्थूलदेह तेने प्रथमजणावियेछैये ॥ जे अकारमात्रारुपजे जाडापंचभूत ॥ एहजे पृथ्विजलतेजवायुने
आकाश ॥ एपांचभूतनोस्थूलदेहछे ॥ ते पांचभूतनी पचीच प्रकृति थई छे ॥ तेमां पृथ्वीना पांचभाग ॥ हाड मांस नाडित्वचाने
रोम एपांचभाग देहमां पृथ्विना छे ॥ अनेजलना पांचभाग ॥ विर्य मूत्र स्वेद लालने लोहीए पांचभाग देहमांजलनाछे ॥ अने
अग्निनापांचभाग ॥ क्षुधातृशा निंद्रा आलशने कान्ति ॥ एपांचदेहमां अग्निना भागछे ॥ अनेवायुनापांच भाग ॥ चलनं ॥
वलनं ॥ धावनं ॥ पसार्नं ॥ नेआकोचन ॥ एपांचदेहमांवायुनाभाग छे ॥ अने आकाशनापांचभाग ॥ केहेड ॥ उदर ॥ ह्रदय
कंठने मुस्तक एपांचदेहमांआकाशनाभाग छे ॥ एवि रिते जाडापांच भूतनी पचिसप्रकृति नोस्थूलदेह थयो छे ॥ अने ईश्वर
नो स्थूल देह वैराट तेने विषे महतपंचभूत छे तेमोटि प्रथ्वी मोटुं जल मोटो अग्नि मोटोवायुने मोटो आकाश एपांचभूत
ईश्वरनादेहमां महत छे ॥ अने ते इश्वरना देहने ब्रह्मांड कहेवायछे ॥ अने एमहतपंचभूतथकि सर्व जिवोनादेह थयाछे ॥ तेजी
वोनादेहोने पींड कहेवायछे ॥ अने ते जिवोनादेहने विषे अल्पपंचभूत कहेवायछे ॥ माटे एपांचभूतथकि पिंड ब्रह्मांडादिक
जेजे उत्पन्नथयाजे पदार्थ मात्र ॥ ते सर्वे अकारमात्रानुं कार्यछे ॥ अकारमात्रानुं कार्य एरले मिथ्या छे ॥ माटे मिथ्यारुपजे
पंचभूतात्मक पींड ब्रह्मांडादिक सर्व पदार्थ मात्र ते थकि आत्माने जुदोजाणवो ॥ केमके जेनेजे जाणेछे तेथी ते जाणनारो

जुदो होय मारे पंचभूतात्मक पिंडब्रह्मांडने आत्माये जाण्युं ॥ मारे ते पिंडब्रह्मांडने जाणनारो आत्मा ते पिंडब्रह्मांडथी जुदो छे ॥ ए थिरि ते आत्मा
ने निश्चय थयो ॥ ने पिंडब्रह्मांडादिकनी वासनानो त्याग कर्यो ॥ एटले पिंडब्रह्मांडादिकने मीथ्या जाण्युं ॥ पछे बिजो उकारमात्राथ
कि ज्ञिणा पंचभूतनो बिजो सूक्ष्मदेह उत्पन्न थयो छे ॥ ते सूक्ष्मदेहमां सूक्ष्मपंचभूतनि पचिस प्रकृति थई छे ॥ तेमां सूक्ष्म आका-
शना पांच भाग ॥ अंतःकरण मन बुद्धि चित्तने अहंकार ॥ ए पांच देहमां सूक्ष्म आकाशना भाग छे ॥ हवे सूक्ष्म वायुना पांच
भाग ॥ प्राण अपान व्यान उदानने समान ॥ ए पांच देहमां सूक्ष्म वायुना भाग छे ॥ हवे सूक्ष्म अग्निना पांच भाग ॥ श्रोत्र त्वचा च
क्षु रसनाने घ्राण ॥ ए पांच ज्ञानइंद्रियो ते देहमां सूक्ष्म अग्निनो भाग छे ॥ हवे सूक्ष्म जलना पांच भाग ॥ वाक् पाणि पाद वायु ने
उपस्थ ॥ ए पांच कर्मइंद्रियो ते देहमां सूक्ष्म जलनो भाग छे ॥ हवे सूक्ष्म पृथ्विना पांच भाग ॥ शब्द स्पर्श रुप रसने गंध ॥ ए पांच
विषय देहमां सूक्ष्म पृथ्विनो भाग छे ॥ ए रिते उकारमात्राथकि उत्पन्न थयो एवो जे सूक्ष्मदेह ते मां पांचभूतनी पचिस प्रकृतिनो
बिजो सूक्ष्मदेह तेने पण आत्माये जाण्यो ॥ मारे ते थकि पण आत्मा जुदो छे ॥ केमके जेने जे जाणे ते थि ते जुदो होय ॥ मारे सूक्ष्मदे
हने पण आत्माये जाण्यो ॥ मारे तेने जाणनारो आत्मा ते सूक्ष्मदेह थि जुदो छे ॥ हवे अकार उकार ए बे मात्रा भेगी थई ॥ त्यारे तेनो
ओ एक अक्षर थयो हवे त्रिजि मकारमात्रा छे ॥ ते मकारमात्रानो त्रिजो कारण देह थयो छे ॥ ते कारणदेह केवो छे ॥ के आत्माने
पोताना स्वरुपनुं अज्ञान छे ॥ तेनुं नाम कारणदेह छे ॥ के हे तात स्थूलने सूक्ष्म ए बे देहथी तो हुं जुदो रह्यो ॥ पण हुं केवो छुं ॥ एम मु
ने मारा स्वरुपनी खबर नथि ॥ एवुं जे पोताना स्वरुपनुं अज्ञानरुप अंधारुं ॥ तेनुं नाम मकारमात्रारुपि त्रिजो कारणदेह छे ॥
ते कारणदेह एटले अज्ञान ते अज्ञानने पण आत्माये जाण्युं ॥ त्यारे सद्गुरुये जणाव्युं के तुं अज्ञान नहिं ॥ तुं तो अज्ञानने जाण
नारो अज्ञानथी जुदो छे ॥ केमके जेने जे जाणे ते थि ते जुदो होय ॥ मारे अज्ञानने पण आत्माये जाण्युं ॥ मारे अज्ञान आ-
त्मा नहिं ॥ त्यारे आत्मा केवो छे ॥ के अज्ञानथी विलक्षण छे ॥ एटले ज्ञानरुप आत्मा छे ॥ जेम कह्युं के फलाणो माणस चो
र नहिं ॥ त्यारे ते शाहुकार ठर्यो ॥ तेम आत्मा अज्ञान नहिं ॥ मारे आत्मा ज्ञानरुप छे ॥ ए थिरीते सद्गुरुये अनुभव करा-

थ्यो ॥ त्यारे तेआत्माने पोतानास्वरूपनुंज्ञानथयुं ॥ केहुं स्थूलदेह नहिं ॥ सूक्ष्मदेहहुं नहिं ॥ कारणदेह जे अज्ञान तेपणहुं नहिं ॥ अनेहुं तो त्रणदेहनेजाणनारो ॥ त्रणदेहनोसाक्षीने तेथीजुदो एवो आत्मा छुं ॥ हुं ब्रह्म छुं ॥ एवो अनुभवत्रणदेहने जाणनाराने थायछे ॥ एवीरीते मकारमात्रानो लोपथयो त्यारे अकारनेउकार बे मलिने ओ थयो हतो ते ओने मांथे मकारनो अनुस्वार च ड्योत्यारे अकारउकारने मकार त्रणमात्राभेगीथई ॥ तेनो एकअक्षर ॥ ॐ गथयो ॥ हवेचोथि अर्द्धमात्रा एटले चोथो महाकारण देह छे ॥ महाकारण एटले हुंआत्मा हुं ब्रह्म एवुंजे आत्माने विषे अहं पणुं तेनुं नाम अर्धमात्रा रूपचोथो महाकारण देह छे ॥ हवे तेमांजे हुं पणुं छे ते मायानो भागछे ॥ माटे हुंपणाये रहित ब्रह्मरूप थथायछे त्यारेमायाटलेछे पणज्यां सुधिहुंपणुंहोय त्यांसुधीजन्ममरण टलतुं नथी ॥ ते आत्माने विषेजे हुंपणुं ते क्यारे टलेछे तो अहंकारेरहित एवाजे प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिक तेने विषे हुं दास पणुंथायछे ॥ त्यारे अहंकारटलिजायछे ॥ अने ते आत्मा अहंकारे रहित ब्रह्मरूप मुक्त थायछे ॥ पण प्रत्यक्ष भगवानना दासथ याविना बिजांकोटिसाधनकरे ॥ भेखले ॥ संन्यासिथाय ॥ परमहंसथाय ॥ उंधेमांथे तपकरे ॥ तोपण प्रगट भगवानना दा सथयाविना अहंकाररुपजे माया ते कोईकालेटलति ॥ तेउपर गीताना ॥५॥ पांचमाअध्यायमां ॥ १४ ॥ चौदमो ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥दैवियेषा गुणमयि ॥ ममम माया दुरत्यया ॥ मामेवप्रपद्यंते ॥ मायामेतां तरंति ते ॥ ॥ अर्थ ॥ ॥ श्रीकृष्णभगवान् कहेछे ॥ ॥ जे दैविने गुणमयि एटले सत्वगुणनीसंपत्तिजे धर्मज्ञानवैरागे करिने आत्माने विषे स्थि- तियेकरिनेहुं ब्रह्म ॥ अने तेनुं कार्य जे स्थूलसूक्ष्मनेकारण तेरुपजे मारि माया ॥ कहेतां मनेनथिजाण्यो तेरुपजेमाया ॥ तेमुनेजाण्याविनादुःखेकरिने पणतरायनहिं ॥ अनेमुने पामे कहेतां मारो आश्रयकरे ॥ तो तेमाया तत्कालटलिने मा- राधामनेपामे ॥ वलिकह्युंछे गिताना अढारमा अध्यायमां ॥ ६६ ॥ छासठमो ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ सर्वधर्मान्प रितज्य ॥ मामेकंशरणं व्रज ॥ अहंत्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामिमाशुच ॥ ॥ अर्थ ॥ ॥ श्रीकृष्णभग- वान् अर्जुननेकहेछे ॥ ॥ के तारामनकल्पित एवाजे सर्वधर्म ॥ तेनो त्याग करिने माराचरणनो आश्रयकरय ॥ ते

हुं तनेसर्व पापथिमुकाविशकहे तां स्थूलसूक्ष्मने कारणने महाकारण ॥एच्यार देह रुपजे सर्वपाप तेथकिमुकाविस॥हवे
॥तेमां भगवाने शुंकह्युं छे ॥केजेम कोई पुरुष अंधारे घरमां बेठोहोय॥ तेपुरुष सूर्यनेएमकहेजे हेसूर्यतुं मारुं अंधारुं टाल्य
त्यारेते सूर्येकह्युंके तुंघरमांथीबहारनिसरीनेमारुंदर्शनकरय पछीहुं तारुंअंधारुंदूरकरिशकेहे तांसूर्यनुंदर्शनकर्युंएटलेमूलेअंधारुंजनथीपछी
अंधारुं काढवुंरह्युंछे॥अनेसूर्यनादर्शनविनातो सर्वअंधारुंजछे॥माटेटल्लेकेम तेमएतो दृष्टांतनतेतेनुंसिद्धांतएछेजे भगवानेअर्जुनने कह्युंके माराआ-
श्रयविनासर्वेमायाछे ॥माटेतरिनेजवुं क्यां ॥ अनेमने पाम्योएटलेमायाजनथि॥ माटेतरवुंशुंछे॥ तेसारुं प्रत्यक्षभ-
गवानना आश्रय थकि जमहा कारण रुपजे अहंवृत्ति तेटले छे॥ अनेतेआत्मा ब्रह्मरुपथईने मोक्षने पामे छे ॥अनेज-
न्ममरणेरहितथायछे॥ नेअखंडस्थितिने पामे छे॥ अनेतेमुक्त चारेदेहनांरुपनेजाणिने तेथीअसंगिपणे वरतेछे॥तेचा
रेदेहनारुपनेजाणवानिरितकहुछुं ॥जेप्रथमस्थूलदेह पचिशप्रकृतिनोछे॥ तेनीजाग्रतअवस्था अने विश्वाभिमानि-
जिवनेनेत्रस्थानक॥तेनास्थूलभोग ॥तेनीवैखरीवाचा॥रजोगुण अकारमात्रा ॥एविरीतेस्थूलाभिमानीना आठस्थानभोगादि
कछे॥ माटे तेनेजाणनारोआत्मातेथी जुदोछे ॥अनेबिजोसूक्ष्मदेह॥१॥ तेनीस्वप्नअवस्था ॥२॥ तैजसाभिमानीआत्मा॥३॥
कंठस्थानक॥४॥वासनामयभोग॥५॥मध्यमावाचा॥ ६॥ सत्वगुण ॥७॥उकारमात्रा ॥८॥ एविरीतेलिंगाभिमानीनाआठ-
स्थानभोगादिक छे तेनेजाणनारोआत्मा तेथीजुदोछे ॥अनेत्रिजोकारणदेह ॥१॥सुषुप्तिअवस्था॥२॥ प्राज्ञाभिमानीआत्मा॥
३॥ हृदयस्थानक॥ ४॥आनंदभोग॥५॥ पश्यंतिवाचा॥ ६॥ तमोगुण॥ ७॥ मकारमात्रा॥ ८॥ एविरीतेकारणाभिमानीनांआठ
स्थानभोगादिक छे॥ तेनेजाणनारोआत्मा तेथीजुदो छे॥ अनेचोथोमहाकारणदेह॥१॥ तुरियाअवस्था॥२॥ प्रत्यगात्मा-
भिमानीआत्मा॥३॥ मूर्धिस्थानक ॥४॥परमानंदभोग॥५॥ परावाचा॥ ६॥शुद्धसत्वगुण॥७॥ अर्धमात्रा॥८॥एविरिते
महाकारणाभिमानीना आठस्थानभोगादिक छे॥ माटे तेनेजाणनारोआत्मातेमहाकारण देहथीपण नोख्यो छे॥एविरीते
अकार॥उकार॥ मकार॥नेअर्धमात्रा॥एटलेत्रण मात्राज थकि थईछे॥एविजेअर्धमात्रा ॥तमाभाने अहं ब्रह्मास्मि॥

नाभिमानी आत्मा जाणवो ॥ माटे एसर्वने जाणिने ते चारदेहथी पोताना आत्माने जुदो जाणीने शुद्ध ब्रह्म रूप थईने पछे जेणे एवि रीतनु ज्ञान आपिने शुद्ध ब्रह्म रूपनी स्थितिने पमाड्यो ॥ एवा सद्गुरु प्रत्यक्ष परमात्मा भगवान रामकृष्णादिक तेनी मूर्तिनुं पोताना ब्रह्म स्वरूपने विषे ध्यान करवुं ॥ अने तेनो आश्रय ध्यानने सेवा तेणे करिने अहंवृत्ति रूप जे महाकारणदेह तेनो लय थई जाय छे ॥ अने ते आत्मा अहंवृत्तियेरहित शुद्ध ब्रह्म रूप महामुक्त थाय छे ॥ अने ते अखंड स्थितिने पामे छे ॥ अने वाणिपर जे उंकाररूपदेह चतुष्टियातित अक्षरब्रह्म ॥ तेने विषे परब्रह्मने अखंड देखे छे ॥ अने एवि रीतना ज्ञानने पामिने ब्रह्म रूप थईने प्रत्यक्ष परब्रह्मने पाम्यो जे मुक्त ते पछे कोई दहाडे मायाने देखतो नथि। माटे प्रत्यक्ष भगवानना दास थईने तेनी आज्ञा मांवर्तवुं ॥ ने तेनी भक्तिने ध्यान करवुं ॥ एज महाकारणदेह टल्यानो उपाय छे ॥ माटे ते विना महाकारण देह रुप महामाया टलती नथी ॥ अने ते महाकारण रुप माया टल्या विना जन्म मरण पण टलतु नथि ॥ ते महाकारण ते शुं ॥ तो प्रत्यक्ष परमात्मा-रामकृष्णादिक भगवानना अवतार तेनी उपासनाने भक्ति विना तत्वमस्यादिक ॥ महावाक्य ना वाच्यार्थनी सीद्धीये करिने अहं ब्रह्मास्मीन ॥ अहं ब्रह्मास्मिन एम जे वचन बोलवा शीखवुं ॥ तेनुं नाम महाकारणदेह छे ॥ माटे जेने ते महाकारण रुप माया टालवि होय ने जन्म मरणे रहित थवुं होय तेने तो क्षर अक्षरथी पर एवा जे प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक परमात्मा ने तेना संत तेनो आश्रय करवो ॥ तो ते आत्मानो आत्यंतिक मोक्ष थाय छे ॥ अने कोई समे परमात्मा ने तेना एकांतिक पंचविषयना त्यागि संत प्रथ्वी उपर प्रत्यक्षन होय त्यारे तो ए प्रत्यक्ष भगवानना अवतारनी मूर्त्तियो होय ॥ तेनो आश्रय राखिने ॥ शास्त्रमां कह्युं होय ते प्रमाणे धर्म मां वरतवुं ॥ अने प्रत्यक्ष भगवान पोताने मले एवि इच्छा राखीने परोक्षपणे परमात्मानी नवधा भक्ति करवी करवि अने ते भक्तिने विषे निष्काम भाव राखवो ॥ कहेतां पोताने प्रत्यक्ष भगवानने संत मले एटली इच्छा राखवि पण ते विना माईक पंचविषयना पदार्थने पामवानी इच्छा न राखवि ॥ अने जे पंचविषयनो त्याग करता होय ने बिजाने विषयनो त्याग करावता होय ॥ अने रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवाननी उपासना करता होय ने बिजाने उपासना करावता होय ॥ एवा जे साधु तथा ब्राह्मण तेनो समा-

गम करवो ॥ अने जे भगवान ना अवतार ने मानता न होय अने जे पंच विषय ने भोगवता होय ने बिजाने विषय भोगववानी मोकल्य मुकता होय ॥ एवा जे पापि मीथ्याज्ञानी ब्रह्म कोराल तेना संगनो त्याग करिने प्रत्यक्ष राम कृष्णादिक भगवान ना अवतार तेनुं भजन करवुं ॥ एवि रीते समजिने भजन करे छे तेने पछे अंतर्जामि भगवान छे ते कृपा करिने प्रगट थईने दर्शन आपे छे ॥ जेम प्रल्हादने भगवाने दर्शन आप्युं हतुं ॥ तथा ध्रुवने दर्शन आप्युं हतुं ॥ इत्यादिक घणा क भक्तो ये निष्काम भाव राखिने भक्ति करि छे तेने अर्थे भगवाने प्रगट थईने तत्काल दर्शन आप्यां छे ॥ माटे निष्काम भाव राखिने जे भगवाननी भक्ति करशो तेने जरुर भगवान दर्शन आपशे ॥ अने तेथी आत्मानो मोक्ष थशे ॥ माटे ते अतिशे दुर्लभ समय ते आज तमारे सर्वने प्राप्त थयो छे ते तमारा भाग्यनो पार नथि ॥ पण समजशे तेने लाभ छे ॥ ॥ इति श्री मुख सिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्री हरि कृष्णाय नमो नमः ॥ ॥ संवत ॥ १९ ॥ ओगणिसें ॥ २२ ॥ बाविसना आसो शुदि ॥ ६ ॥ छठने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजित्रा मध्ये पटेल नारणभाई रामदासने घेर दक्षणादे बार ओरडानी आगल गादि तकिये युक्त पलंग बिछाविने ते उपर विराजमान थया हता ॥ ने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ अने पुष्पनां आभुषण सर्वे अंगमां सोभि रह्यां हतां ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा क हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि इति पछे महाराज बोल्या जे जिवने एक सुखनुं साधन छे ॥ ने एक दुःखनुं साधन छे ॥ ते सुखनुं साधन कियुं छे अने दुःखनुं साधन कियुं छे तो एक आत्म निष्ठा दृढ करवो ॥ अने बिजुं पंच विषय भोगववानी त्रष्णा राखवि ॥ ए बे दोषने विषे महा दुःख रह्युं छे ॥ जेम रात्रिने विषे अपार अंधारुं रह्युं छे ने ते अंधाराने विषे लेशमात्र पण दिवसनो प्रकाश होय नहि ॥ तेम द्रोह ने त्रष्णानि थि षे अपार दुःख रह्युं छे ॥ अने ते द्रोह ने त्रष्णावाला पुरुषने सुखनो तो छांटो रहे तो नथि ॥ अने एक जेने संतोष होय ॥ अने बिजुं अद्रोहपणुं होय ॥ केहे तां कोई जिवने दुभतो न होय ॥ ए बे गुणने विषे अपार सुख रह्युं छे ॥ जेम सूर्यना प्रकाशने विषे लेशमात्र रात्रिनु अंधारु रहे तु नथि ॥ तेम संतोषने अद्रोह ने विषे अपार सुख रह्युं छे ॥ अने ते सुख यने विषे दुःखनो तो लेश नथि ॥ अने ते संतोषि ने अद्रोहि पुरुष सुखना समुद्र

मां अखंड झिल्याकरे छे॥ अनेद्रोह नो करनारो नेत्रस्सावालो पुरुष दुःखनादरियामां सदाय बुड्याकरे छे॥ अने तेद्रोह नेत्रस्सा
असतपुरुष नासंगने विषे रह्यां छे॥ अने अद्रोहनेसंतोष ॥ ए सत्पुरुष नासंगमां रह्यांछे॥ हवे ते सत्पुरुषनांकेवां लक्षणहोय॥
ने असतपुरुषनांकेवांलक्षणहोय॥ तो सतपुरुषने विषेचारगुणहोयछे॥ ते चार गुणे करिने सतपुरुषने ओळखवा तेचार गुण
किया॥ तोएकतोसत्पुरुष ने विषे वरसादनाजेवो गुणहोयछे॥ अने बिजोहीरानाजेवोगुणहोयछे ॥ अने त्रिजोसूर्यनाजेवो
गुणहोयछे॥ अने चोथोसोनानाजेवोगुणहोयछे॥ हवेतेमांवरसादनो गुणकेवोछे॥ तो ज्यारे वर्षाद वरसे छे त्यारे सर्वजिव
प्राणिमात्रनां मन प्रफुलितथायछे॥ अनेवनस्पतिसर्वे नवपल्लवथायछे॥ तेम ज्यारे प्रथ्वीउपर सत्पुरुषप्रगटथायछे॥ त्यारे
तेसत्पुरुषज्ञान रुपि वर्षाद वरसावेछे॥ तेणे करिने मुमुक्षु जिवजेते मोटो हुल्लासनेपामेछे॥ नेतेसत्पुरुषनाज्ञानरुपि जळेक
रिने अद्रोहनेसंतोषरुपि रसाळेकरिने जिवत्रप्त थईजायछे॥ नेमुमुक्षुजिवमात्रजेतेमहासुखनेपामेछे॥ अनेजेअसत्पु
रुषनासंगि छे॥ तथाजेअसुरिजिवछे॥ तेसतपुरुषनाज्ञानरुपिजळेकरिनेउलटासंतापनेपामेछे॥ जेमवर्षादनाजळेक
रिने बिजि सर्वे वनस्पति तो खिलीने प्रफुल्लितथायछे॥ पण एक जवासो सुकाई जायछे॥ तेमसतपुरुषप्रगटथईनेज्ञानरुपिव
रसादवरसावेछे॥ त्यारेजेमुमुक्षुनेदैविजिवहोयछे॥ तेतो मोटाउल्लासनेपामे छे॥ अनेसंतोषनेअद्रोहादिकगुणेकरिने
पूरणकामथईजायछे॥ अनेजे जिवअसुरिनेअसतपुरुषना शिष्यछे तेतो सतपुरुषनाज्ञानरुपि जळेकरिनेउलटाजवासानी
पेठे बळिने खाख थईजायछे॥ पछेतेअसुरि जिवजेते सत्पुरुषनोद्रोह करे छे॥ अनेतेद्रोहेकरिनेत्रस्सा अतिशे वृद्धिपामेछे
॥ नेतेद्रोहनेत्रस्साये करिने असत्पुरुषनासंगि असुरि जिव महादुःखनेपामेछे॥ अनेजेमुमुक्षुनेदैविजिवछे तेतो सतपुरु
षनाज्ञानरुपिवरसादेकरिनेमहाआनंदनेपामेछे॥ अनेतेनांकल्याणथायछे माटे एक तो वर्षादनाजेवो सत्पुरुषने विषे गु-
णहोयछे॥ तेसतपुरुषजेते सर्वे मनुष्यनेज्ञानआपिने महासुखीथाकरि मुकताहोय॥ अने बिजोसत्पुरुषने विषे हिराना
जेवोगुणछे॥ तेहिरानोकेवो गुणछे॥ तो हिरानेलोढानीएरण्यपर मुकिने एक मोटो अधमणनो घण लेईने तेहीराउपर

मारे तोपण ते हिरो रंचमात्र भागे नहीं ॥ ने चपटाय पण नहीं ॥ अने बहु बलियो आदमी होय ॥ ने ते ताणीने घा करे तो ते हिरो एरण-
मांने घणमां पेसी जाय पण भागे नहीं ॥ ते हिरो खरो कहेवाय छे ॥ तेम सतपुरुष प्रगट थाय छे त्यारे ते सत्पुरुषने असतपुरुष जे ते नि-
शा द्रोहादिके करिने अनंत प्रकारनी उपाधी करे छे पण तेनी उपाधिये करिने सत्पुरुषनो प्रताप सामु वधतो जाय छे ॥ जेम हि-
राउपर घणना घा मारे छे ॥ त्यारे ते हिरानुं खरुं प्रमाण थाय छे ॥ अने ते हिरो अमूल्य कहेवाय छे ॥ तेम सत्पुरुषनो द्रोह जेमजे
म असुरि जिव करे छे ॥ तेम तेम सतपुरुषनो प्रताप वृद्धि पामतो जाय छे ॥ ने मुमुक्षु ने दैवि जिव छे ते सत्पुरुषनो दृढ आश्र-
य करिने शिरसाटे भजन करवा लागे छे ॥ जेम हिराउपर घणना घा पड्या ने हिरो भाग्यो नहि ॥ ते हिराने जे मशाहुकार अति
जतन करिने राखे छे ॥ अने ते हिराने विषे कोई दिवस साचा खोटानो संषय करे नहि ॥ तेम अनंत प्रकारनी उपाधियो असुरिजि
व करे तोपण जेनो प्रताप रंचमात्र ओछो थतो नथी ॥ अने तेणे करिने सामु प्रताप वधि पामतो जाय छे त्यारे एम जाण्युं
जे ते सत्पुरुष खरा एम जाणिने मुमुक्षु जिव जे ते शाहुकारना हिरानी पेठे सतपुरुषनुं अतिशय जतन करे छे ॥ अने जेम हिराउपर
ताणिने घणना घा मारतां ते हिरो घणमां ने एरणमां पेशीने तेमां खाडो पाडे छे ॥ तेमं सत्पुरुषनो जे असुरि जिव अतिशय द्रोह
करे छे ॥ ते द्रोहना करनाराना वेलो नाश थाय छे ॥ ते पूर्वे रामचंद्रजिनो रावणे द्रोह कर्यो तो तेनो कुल कुटुंब सहित नाश थई
गयो छे ॥ अने श्री कृष्ण भगवाननो कंसे तथा जरासिंध सिषुपालादिक जेणे जेणे अतिशे द्रोह कर्यो ते सर्वेनो समूलो नाश
थई गयो छे ॥ ने सत्पुरुषनो प्रताप वृद्धि पाम्यो छे ॥ एथि रीते हिराना जेवो गुण सत्पुरुषने विषे छे ॥ तेणे करिने सत्पुरुषने
ओलखवा ॥ अने त्रिजो सूर्यना जेवो गुण सत्पुरुषने विषे होय छे ॥ अने असत्पुरुषने विषे दिवा ने मशालना जेवो गुण होय छे
ते दिवा मशालनो गुण केवो छे ॥ तो दिवाने थोडोक वायु लागे तो ते दिवो ओलाई जाय छे ॥ अने मशालने पण झाझो वा
यु लागे ॥ तो मशाल पण ओलाई जाय छे ॥ अने ते दिवा मशालनो प्रकाश पण रात्रिने विषे अंधारामां सारो लागे छे प-
मां णदिवा मशाल सूर्यना प्रकाशा आगे शोभे नहि ॥ अने सूर्यने तो गमे तेटलो वायु लागे ॥ तोपण तेनो प्रकाश ओलाय नहिं ने -

झांखोपण थाय नहिं।तेम सूर्यरुप जे सतपुरुष ते प्रगट थाय छे॥ त्यारे दिवा मशाल रुप जे असतपुरुष ते झांखा थई जाय छे॥ पछे ते असत
पुरुष जे ते सतपुरुषथी छेटे रहिने॥ तेनी निंद्या करे छे॥ ने पोताना शिष्योने एम कहे छे जे तमे कोई सतपुरुषनी पासे जशो नहिं॥एम
कहिने सतपुरुषथी पोताना शिष्योने छेटे राखे छे॥ अने तेना शिष्यो आगळ पोतानो खोटो खोटो ढोंग करिने प्रताप देखाडे छे॥जेम
दिवो मशाल रात्रिने विषे शोभता होय॥ पछे सूर्य उगे त्यारे झांखा पडवा लागे॥ त्यारे ते दिवा मशालने घरमां अंधारे दाट त्यां ल
ई जाय॥ पछे एम कहे जे जुवो दिवानो प्रकाश केवो छे॥अने वळि दियो एम कहे जे तमे कोई बहार सूर्यने अजवाळे जाशो नहिं॥ केम
के सूर्य अमारी निंद्या करे छे॥अने अमारो प्रकाश झांखो करी नाखे छे॥माटे सूर्यने अजवाळे बहार जवुं नहिं॥ त्यारे ते दिवाने कोई
एम कहे जे दिवा भाई चाल्योने सूर्यने अजवाळे आपणे जईये॥ अने ते सूर्य तमारी निंद्या नहिं करे॥ ने सूर्य तो उलटो आपणने घ-
णो प्रकाश आपशे पण सूर्य कोईनो प्रकाश अळ सावतो नथि॥ एम कोई कहे तो पण कां इ दियाने ढाप डे जे सूर्यना अजवाळा
मां मारो प्रकाश रहेशे॥ तेम सूर्य रुप एवा जे सतपुरुष ते प्रगट थया होय त्यारे तो दिवा मशाल रुप जे असतपुरुष जे ते अज्ञान-
रुपि रात्रीने विषे प्रकाश जणावे छे॥ पण तेने वायु रुपि विषयनो संबंध थाय छे॥ त्यारे तेनो प्रकाश ओलाई जाय छे के दे तां विष-
यमां भ्रष्ट थाय छे॥ पछे तेने जगतमां पण कोई माने नहिं॥जेम दियो ओलाई जाय त्यारे तेनो रात्रिमां पण प्रकाश देखाय नहिं॥
तेम असत्पुरुष विषयने संबंधे करिने भ्रष्ट थाय छे॥ तेने पछे अज्ञानि जिव पण माने नहिं॥ तो सूर्यरूप सत्पुरुष प्रगट थाय त्यारे
तो तेने माने ज कोण॥ न ज माने॥ पछे ते असतपुरुष पोताना शिष्योने एम कहे जे सतपुरुष पासे जशो नहिं॥ अने जो तेनी पा-
से जशो तो आपणो धर्म रहेशे नहिं॥ माटे आपणे तेनी पासे जवुं नहिं॥ अने ते सतपुरुषनुं मोढुं पण जोवुं नहिं॥ अने जो तेनुं मोढुं
जोशो तो तमारा धर्ममांथी पाडी नाखशे॥ए रीते तेनी पासे कळा छे॥ माटे तेनी पासे जवुं नहिं॥जेम दिवो एम कहे जे सूर्यनुं मोढुं
जोवुं नहिं॥ निकर आपणो प्रकाश झांखो करि नाखशे एवि सूर्य पासे जादु विद्या छे॥ तेम असतपुरुष जे ते सतपुरुष प्रगट थाय॥
त्यारे एम कहे जे एनी पासे जशो नहिं॥ निकर तेनी पासे एवि मोहनी विद्या छे जे तमे एना थई जसो॥माटे तेनी पासे जवुं नहिं॥

एमकहिने असतपुरुष जेते पोताना शिष्योने रोकी राखे छे॥ तोपण तेमांथी कोईजो सतपुरुषना ज्ञान रुपि प्रकाशमां आविजाय॥
ने ते देषि जिवहोय तो ते जिव सतपुरुषने विषे प्रिति करे छे॥ पछे जे सतपुरुष पासे आव्या नहोय तेने असतपुरुष एम कहे जे जुवो॥
भाई अमे कहेता नहोता जे सतपुरुष पासे जशो नहिं॥ अने जो पेलो आपणो सेवक गयो तो तेने आपणा अज्ञानरुपि धर्ममांथी पाडि
नेज्ञानि करि मुक्यो॥ माटे हवे ते आपणने माननारो नहि॥ ते सारुं तमे हवे जेटला अमारा सेवक छो तेटला बधा सम खाओ॥
जे कोईने ते सतपुरुषनी पासे जवुं नहिं॥ पछे तेना सेवक सम खाय छे॥ ने माला उपाडे छे॥ एवि रीते असतपुरुष जे ते पोताना
सेवकोने सोगन खवरावे छे तोपण जे दैविने मुमुक्षु जिव होय ते तो सूर्यरुप जे सतपुरुष तेनो ज्ञानरुपि प्रकाश तेने देखिने रहि
शके नहि॥ माटे ते तो सतपुरुषनी पासे जाय छे ने तेनुं ज्ञान सांभलीने सतपुरुषनो आश्रय करे छे॥ अने ते जिव महा सुखिया
थाय छे॥ अने जे आंख विनाना आंधला पुरुषनी पेठे असुरि जिव होय ते तो असतपुरुषमां बंधाई रहे छे॥ पछे ते पुरुषद्रोहने
अल्ला वडे करिने महा दुःखने पामे छे॥ अने ते जिवे कांईक सुकृत कर्युं होय॥ जप तप तिर्थ व्रत कर्युं होय तथा परोक्ष भगवान-
नी भक्ति करि होय ते सर्वे नास पामि जाय छे॥ अने ते सतपुरुषना द्रोहनो करनारो मरिने घोर नर्कमां जाय छे॥ अने सूर्यरुप
एवा जे सतपुरुष तेनो प्रताप रंचमात्र ओछो थतो नथी॥ एवि रीते सूर्यना जेवा गुण प्रत्यक्ष सतपुरुषने विषे होय छे तेणे करीने प्रत्य
क्ष सतपुरुष ओलखाय छे॥ अने हवे चोथो सोनाना जेवा गुण सत्पुरुषने विषे होय छे॥ ते सोनानो केवो गुण छे तो सोनाने
सुजे एटलां वरस पृथ्विमां दाटी मुके॥ पण ते सोनाने पृथ्वीनो डाग अडे नहिं॥ अने बिजि धातुने पृथ्वीमां घणां वर्ष दाटि मुके-
तो ते धातु धूल भेगी धूल थई जाय॥ तेम प्रत्यक्ष भगवान छे॥ ते तो सोना जेवा छे॥ ते भगवान जे ते धूलरुप जे पंचविषय ते मांस्रु
जे एटला दहाडा रहे॥ तो पण भगवानने विषयनो गंध अडे नहिं॥ माटे प्रगट भगवान राम कृष्णादिक तेने विधिनिषेध कांई पाल
वुं पडतुं नथि॥ केमके भगवाननी द्रष्टिमां तो स्त्रि के पुरुष एवो भेद नथि॥ माटे प्रत्यक्ष भगवान स्त्रियो पुरुष बेयने ज्ञान आपिने
कल्याण करवाने समरथ छे॥ अने भगवान विना बिजा सह जे एवा मोटा देव ब्रह्मादिक जेवा होय के मोटा अक्षर ब्रह्मरुप मुक्त

थयाहोय॥ तोपण तेजो विषयनो संबंध राखे तोते भ्रष्ट थईजाय।।ते पूर्वे नारद महामोटा मुक्त हता अने भगवाननुं मन कहेवाता
हता तोपण जो तेणे राजानी दीकरीना हाथनो स्पर्ष कर्यो॥ तो त्यां पोतानुं मन विकारने पाम्युं ने पोताने परणवानुं मन थयुं
ने मोटी फजेती थई॥ अने ब्रह्माये जो पोतानी दिकरिनुं मोढुं एकांतमां जोयुं त्यां तो कामे व्याकुल थई ने वांसे दोड्याने कलंक
लाग्युं एआदिक घणा मोटामोटाने विषयने संबंधे करिने कलंक लाग्यांछे॥अने श्रीकृष्ण भगवानगोपियो साथे रासरम्यां
अने घणिक स्त्रियो भेगा रहिने अनंत प्रकारनी लिलाकरि तोपण ते श्रीकृष्ण ब्रह्मचारि केहेवाया ने ते स्त्रियोनुं पण सर्वे
नुं कल्याण थई गयुं॥ माटे एविरीते स्त्रियोपुरुष बेमां रहिने ते बेनुं कल्याण करवानेने निरलेप रेहेवाने एक भगवान समरथ
छे॥ माटे एविरीते चार गुण जेने विषे होय तेने सतपुरुष जाणवा॥अने एवा सतपुरुषना सत्संगे करिने द्रोहने त्रस्ना रुपि महादोषते
टलिने पूरणकाम थवाय छे॥ अने तेआत्मा महासुखने पामेछे॥ अने ज्यारे तेसतपुरुषनु परोक्षपणुं थाय छे।। त्यारे महादुःखना देना
रा एवा जे द्रोहने त्रस्नाना वधारनार असतपुरुष तेनुं बलवृद्धि पामेछे॥ अने तेना संगि जिवो महादुःखने पामेछे॥ पछे ते जिवोनां दुः
ख टालवाने अर्थे वलि सतपुरुष प्रगट थाय छे अने प्रगट थईने असतपुरुषना मतनुं खंडन करे छे॥ अने ज्ञानरुपिजल वरसा
वीने द्रोहने त्रस्नानो नाश करे छे॥ अने अद्रोहने संतोषरुपि गुण आपिने जिवने महासुखिया करेछे॥ माटे जेने महासुखिया
थवुं होय तो तेने असतपुरुषना संगनो त्याग करिने प्रत्यक्ष सतपुरुषनो दृढ आश्रय करवो॥ एजसर्व जिवनी हितवार्ता छे॥

॥ ॥इतिश्री मुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥

संवत्॥१९॥ ओगणिसें ॥२२॥ बाविसना आसो शुदि॥७॥ सातमने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री सोजित्रा
मध्ये॥ गांधी मनोरनी धर्मशालामध्ये पाटउपर गादितकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थयाहता अने सर्वे सोनेरी कसुंब
ल वस्त्र धारण कर्यांहतां॥ अने सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषण सोभिरह्यांहतां॥ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा क
हरिभक्तनी सभा भराईने बेठिहती॥पछे महाराजनी संध्या आर्ति थया केडे सर्वे सभाप्रत्ये महाराजश्री हरिकृष्ण महाराज बो-

त्याजे जिव जेवोजेवो संगकरेछे ॥ तेवोतेवो जिवनेरंगचडे छे ॥ ते जोपामरजिवनो संगकरेतो पांमरनाजेवागुण आवेछे ॥ अने
विषयीनो संगकरेतो विषयीथई जायछे ॥ अने मुमुक्षुनो संगकरेतो तेने विषयनो त्याग करवानी ईछाथायछे ॥ अने मुक्तनो
संग करेतो तेने मायानुं आवर्णटलिने ब्रह्मने विषे परब्रह्म नास्वरूपनो साक्षात्कार अनुभवथायछे। ने ते आत्मानीआत्यं-
तिकमुक्तिथायछे ॥ हवेएवामुक्त पण बे प्रकारनाछे ॥ ते बेप्रकारना मुक्त कियातोएक जिवनमुक्त छे ॥ ने बिजाविदेहिमु-
क्तछे ॥ हवे विदेहिमुक्त नांशांलक्षणछे ॥ अने जिवनमुक्तनांशां लक्षण छे ॥ तोजेजीवन मुक्त होयते तोसर्वप्रकारे माया-
नो त्यागकरिने पंचविषयनीवासनाये रहितवरतता होय ॥ पण माईक पंचविषयने क्यारेय भूल्यमां पण भोगवे नहिं ॥ अने
ब्रह्मरुपथईने परब्रह्मने साक्षात्कारदेखताहोय ॥ अने परब्रह्मनुं भजनने ध्यानकरताहोय नेए स्थितिने क्यारेचुकता न-
होय ॥ जेम कमलनुं पान होय ॥ तेजलनीउपरनेउपर रहे ॥ पण क्यारेय जलमां बुडे नहिं ॥ नेवलिजेम मांछलुं होयतेज- ष
लमांनेजलमांरेहेछे ॥ पण क्यारेयजलनीबहार जायनहिं ॥ तेमजिवनमुक्त छे ते माईक पंच विषयमां कोई दिवसले-
पायनहिं ॥ ने कमलना पाननी पेठे सदायमायापर वरत्या करे ॥ अनेमाछलानी पेठे जलरुपजे ब्रह्मनेपरब्रह्म तेनास्व-
य रूपने विषे अखंडवरत्या करे ॥ पणए स्थितिने क्यारे भुलेनहिं ॥ अने ते जिवनमुक्त पुरुषजे ते संसार व्यवहारनो त्यागकरि
ने पोताजेवा विरक्तमुक्त होय ॥ तेनीमंडलीबांधिनेरेहेता होय ॥ एवांलक्षणजेने विषे जणाय तेने जिवनमुक्त जाणवा ॥
अनेजे विदेहिमुक्तछे ॥ ते तो मायामांरह्याथका पण मायाथी विरक्तवरते छे ॥ जेम जलकुकडिछे तेजलमांप्रवेशकरिने
पाछि आकाशमांउडिजायछे ॥ तेम विदेहिमुक्त छे ते मायामां प्रवेश करिने अनंतजियोनो कल्याणकरिनेपाछा आका-
शरूपजे ब्रह्मनेपरब्रह्म तेने विषे अखंडवरत्याकरेछे ॥ अनेते विदेहिमुक्तने जिवनमुक्त बेय भेगा रहेताहोय ॥ पण जे जि
वनमुक्त छे ॥ ते तो मायानो त्याग करिने ब्रह्मनेपरब्रह्मना स्वरूपने विषे अखंडवरत्या करेछे ॥ अनेजे विदेहिमुक्त छे ॥
तेमायामां प्रवेशकरिने तेथी निर्लेपरहिने ब्रह्मपरब्रह्म नास्वरूपमां अखंडवरत्याकरेछे ॥ जेमजलकुकडिनेमाछलुंबे भे-

गांजलमांरेहेतांहोय॥ पणजलकुकडिजलमांरहिनेपाछिआकाशमार्गेउडवानेसमरथछे॥ अनेमाछलुं तोजलनो त्यागकरिनेआ
काशमांजवानेसमरथनथि॥ अनेजोमाछलुंजलकुकडिनोवादलेईनेजलथीबहारनिसरवाजायतोतेमांछलाना प्राणनासपा
मे॥ अनेजलकुकडिनेतोजलमांनेआकाशमांबेथठेकाणेजावानीगतिछे॥ अने बिजांपक्षिछे॥ ते पण वृक्षउपरजेजलकु
कडिने भेगांरहेतांहोय॥ तोपणतेपक्षीजलकुकडिनोवादलेईनेजलकुकडिभेगांजलमांप्रवेशकरवाजायतोतेपक्षी-
नाप्राण नाशपामे॥ तेमजेविदेहिमुक्तछे॥ तेनेमाथेविधिनिषेधनथी॥ नेतेतोचहायतेमकरवानेसमरथछे॥ अनेजेजि
वनमुक्तछे॥ तेतोमायानो त्यागकरिने ब्रह्मने परब्रह्मना स्वरूपनेविषेगुजतानकरेछे॥ पणतेजो विदेहिमुक्तनोवार
लेईनेमायानुंग्रहणकरवाजाय॥ केहेतां विषयनेभोगवेतोते तत्काल ब्रह्मस्थितिमांथी पडिजायजेम माछलुंजलकु
कडिनोवादलेईनेजलथी बहारजाय तो तेना प्राणनासपामे॥ तेम जिवनमुक्त विधिनिषेधनो त्याग करिने विषयनेभोगवे
॥ तो तेब्रह्म स्थितिमांथीपडिजायछे॥ माटे जिवनमुक्त छेते॥ अखंड माईक पंच विषयनो त्याग करिनेदेहना त्यागपर्यंत
विधि निषेधनाधर्ममां वर्तेछे॥ अनेदेहनो त्यागकरिने विदेहिमुक्तनासाधर्मपणानेपामेछे॥ अनेते जिवनमुक्त देहमुकिने
भगवाननाधाममांजायछे॥ नेते विदेहिमुक्तनीस्थितिनेपामेछे॥ तेपाछो फेर पृथ्वीउपरजन्मने धरतो नथि॥ अनेआलो-
कमांजे विदेहिमुक्त छे॥ तेतोस्वयंपोते परमात्माछे॥ अनेजे जिवन मुक्तछे॥ तेतो विदेहि मुक्तरूपजे परमात्मातेनाभक्त
छे॥ अनेजे विदेहिमुक्त रुपजेपरमात्मा छे॥ तेतो जिवोना कल्यांण करवानेअर्थे पोतानी स्वईछाये करिने पृथ्वीने विषे
वारमवार प्रगटथायछे॥ अनेते विदेहिमुक्त रुपजेपरत्यक्ष परमात्मा तेनो आश्रयजे जिवकरेछे तेजीवनेज्ञान आपिने जि
वनमुक्तनी पदवीने पमाडेछे॥ तेएवा विदेहिमुक्तकोणछे॥ अने जिवन मुक्त कोण छे तोराम कृष्णादिक भगवानना
अवतारकेहेवायछे॥ जेनुंभजन थायछे॥ ते विदेहिमुक्तछे॥ अनेनारदसनकादिक शुकजि ध्रुव प्रल्हाद ऋषभ रिष अर्जु-
नजनकादिक तेसर्वे जिवनमुक्त छे॥ मारे विदेहिमुक्तरुपजे प्रत्यक्ष भगवान नेपृथ्वीउपर होय तेना आश्रय थकि

जजिवनमुक्त थवायछे।।पणते विना जिवनमुक्त थवातुं नथि।। माटे ते जिवनमुक्त थवानो आज तमारे समो आव्यो छे।।माटे तमा-
रा भाग्यनो पार नथी।। ।।इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमो नमः।।
।। ।।संवत १९ ओगणीसे २२ बाविसना आसो शुदि।। ८।। अष्टमीने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम
श्री सोजित्रा मध्ये पटेल लालजि कसियाभाईने घर उत्तरादे बार ओरडानी आगल चोकमां गादितकियान खाबीने ढोलीयाउ
पर बिराजमान थया हता।। ने सर्वे ज रियानी वस्त्र धारण कर्या हतां।। ने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभि रह्यां हतां।।ने कंकु
नो चांदलो कर्यो हतो।। ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा कहरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हती।। पछे महाराजनी
सध्या आरति थया केडे पटेलरणछोडभाई रुगनाथदासे प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज।। क्षर अक्षर ने अक्षरातित ए त्रणनां शुं रुप
छे।।तेरुपा करिने कहो।। पछे महाराज बोल्या जे त्योए नांरुप कहिये।। ते सांभलो।। जे क्षरनुं तोए रुप छे जे दस इंद्रियो।।
ने चार अंतःकरण अने इंद्रियो अंतःकरणना ग्रहण करवामां जे जे पदार्थ आवे छे ते सर्वे क्षर छे।। एटले नाशवंत छे कहेतां
प्रकृति पुरुषथकी उत्पन्न थयुं जे पिंड ब्रह्मांडादिक मार्दक आकारमात्र ते सर्वे क्षरनुं रुप छे।। अने इंद्रियो अंतःकरण रुप जे
मायानुं टोलुं तेथी पर ने ते नो द्रष्टा एवो जे चैतन निराकार जाणनारो ने व्यापक आत्मा ते अक्षर छे।। अने ते अक्षर रुप एवो
जे आत्मा तेने अनादिनुं पोतानास्वरूपनुं अज्ञान छे।। ते अज्ञानने टालवाने अर्थे त आत्माने धर्म ज्ञान वैराग ने भक्ति सिद्ध
करावीने जगतनो भास मिथ्या करावीने पंचविषयनी वासनाटलावीने आत्माने ब्रह्मस्थितिना पमाडनारा एवा जे प्रत्य
क्ष सद्गुरु रुप हरि ते अक्षरातित छे।। परमात्मा छे।। परब्रह्म छे।। ते अक्षरातित भेण छे।। तो राम कृष्णादिक भगवानना
अवतार ते अक्षरातित परब्रह्म परमात्मा छे।। पण ते विना बिजो कोई अक्षरातित नथी।। अने ते प्रत्यक्ष भगवानना स्व
रूपनो आश्रय करिने तेने विषे भक्तिये करिने जोडाया जे जे मुक्त ते सर्वे अक्षर छे।। अने ते प्रत्यक्ष भगवानने प्रत्यक्ष
भगवानना भक्त ते विना पिंड ब्रह्मांडादिक प्रकृतिनुं कार्य मात्र ते सर्वे क्षर छे।। केहेतां मिथ्या छे।। एवि रिते क्षर अक्षर

नेअक्षरातित तेनां प्रत्यक्ष रूपछे॥ ॥ईतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥

श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत॥१९॥ओगणीसें॥२२॥बाविसनापोसशुदि॥११॥एकादसिने
दिवसमहाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीपेटलादमध्ये काछियावनमालीने घेर आथमणा बारना ओरडानी आगल चो-
कमां गादितकिये युक्त ढोलियो विछावि ने तेउ पर विराजमान थयाहता॥ अने सरवे कसुंबल जरियानी वस्त्र धारण कर्यां ह-
तां॥ अनेचंपाने गुलाबनापुष्पनांआभूषण सर्वेअंगमां धरियांहतां॥ अने केसरनी आरचाने कंकुनो चांदलो ललाटने विषे
कर्यांहतां॥ नेपोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा कहरि भक्तनीसभा भराईने बेठिहती॥ पछे संध्याआरति थयाप-
छी॥ महाराजश्रीहरिकृष्णमहाप्रभुजि बोल्या जे आजगतने विषे चारप्रकारना जिवछे ते कियाचार प्रकारना जिवतो॥पांम
र॥विषेई॥मुमुक्षु॥नेमुक्तए चारप्रकारना जिवछे॥हवे ते चार प्रकारना जिवनां लक्षण कहुंछु॥जे पांमर जिवछे ते तो आहा
रमैथुननींद्राने भयतेमांजमुढपणे भरपुर वर्तताहोय॥कहेतां आहार जे सारासारा खावामांघ हुप्रितीहोय॥ अने मैथुनएटले
स्त्रिभोगमांप्रीतिहोय॥अने नींद्राएटले शुभकर्म करवामां आलस घणीहोय॥ केहेतां सुइरहेवामां प्रितिहोय॥ अने भय
एटले रखे कोई मारा पदार्थ लै जाय नहिं॥अथवा मुने कोई मारिनाखे नहिं॥इत्यादिक भय बहु वरत्या करे एवि रितना लक्षण
जेने विषे होय तेने पामर जिव जाणवो॥ अनेजे विषई जिवछे तेने उत्तम पंचविषय पामवानी इच्छा बहु होय॥पणते शास्त्रनी
मरजादामां रहीने विषयने भोगवे॥ अने तेने लोकनी लाज मोटम्य किरती वधारवानी ईच्छा वर्ते अनेजे मुमुक्षु छे तेने तो आ-
स्तिकपणुंहोय॥अने तेअधर्म अनीतिनो त्याग करीने धर्ममां द्रढरहेतो होय॥अने तेने शास्त्रने सत्पुरुषनो विश्वास होय अने
एकादशी आदिक व्रत तप करवामां श्रद्धा होय॥अने तेने विषयनो त्याग करवो गमे ने विषयना त्यागि एवाजे भगवानना सं
त तेनो समागम करवो गमे अने तिर्थे जवुं तथा भगवानने दरशने जवुं। तेमां श्रद्धा बहु होय॥अने वलि तेने एम विचार थाय॥
जे जन्ममरणथकि कोई मुने मुकावे एवा पुरुष मने क्यारे मलेछे॥एविरिते तेने बहु इच्छा वर्ते एवां लक्षण होय तेने मुमुक्षु जाण

वो ॥ अनेजेमुक्तहोय ॥ तेने तोआसंसारनां स्करयगमेजनहिं॥ अनेतेप्रारब्धकर्मनेजोजोगे करिने संसारमांरह्योहोय तोपण
तेउदासथकोरहे॥ अनेतेनेसंसारमां सदाय अरूचिवरतेअने धर्मज्ञानवैराग्यनेभक्ति तेनेदृढकरिने राखे॥ पणतेमां कोई
कालेडगेनहिं॥ अने तेमुक्तहोय ते भगवानने प्रगटथया एमकाने करिने सांभलेतो ते तत्कालजगतनाअनंतबंधने
होयतेने तोडिने॥ तथामतपंथनाबंधनने तोडिने प्रगट भगवानपासेजईपुगे॥ पणकोई आवरणनोरोक्योरोकाय
नहिं॥ तेनेमुक्त जाणवो॥ एवीरीते चार प्रकारनां जिवोनां लक्षणकह्यां॥ तेमां पामर ने विषई जिवहोय तेतो भगवान
नेमार्गेचालेजनहिं॥ अनेतेजो कोईकरीते लोभेलालचेकरिनेसत्संगमां आवतोहोय पण तेनोसत्संग भालदेशना
कुवाजेवोथाय॥ तेभालदेशनाकुवामांउपरपाणीमीठुंहोय॥ अनेउंडुंखोदेतो तेमांखारुंझेरपाणीनिसरे॥ तेमविषयीनेपां
मरजिवसत्संगीथयाहोय॥ नेतेनागमताप्रमाणे विषयनेभोगववादेईये॥ त्यांसुधितेसारोरहे॥ नेसत्संगमांहेतराखेअनेजो
तेनाहितनेअर्थे सतपुरूषविषयनुंखंडनकरे तोतेनेभालनाकुवानीपेठे तरतसतपुरूषनो अवगुणआवेने तेअधर्मनेमा
र्गेचाले॥ ने सत्पुरुषना संगनो त्यागकरिनेउलटो सतपुरुषनोद्रोहकरवा लागेअनेजमुक्तनेमुमुक्षुहोयतेने तो भगवानने भ
गवानना निरवासनिक पंचविषयना त्यागि संत तेना संगविना बिजुंकांई गमेजनहिं॥ अने भगवानने संत तेनेस्कजएवावहे
नेभिडामांलिये॥ तोपणते कोईरीते पाछापडेनहिं॥ अनेते मुक्तनेमुमुक्षुजे तेकाने करिने भगवानना गुणचरित्र नेमहिमा
सांभलिनेपरमआनंदपामे॥ अनेत्वचाये करिने भगवानना चरणनोस्पर्षकरिने परमसुखमाने छे॥ अनेनेत्रेकरिने भग-
वानने भगवानना संतनां दरशनकरिनेत्रप्तथाय छे॥ अनेजिभाये करिने भगवाननो महाप्रसादजमिने तथा भगवाननाज
सगाईने सुखमाने छे॥ एविरीते मुक्तनेमुमुक्षुजेते दशइंद्रीयोने च्यारअंतःकरण तेणे करीनेभगवानमांजोडाय छे॥ पण
ते भगवानविना बिजेक्यांई लोभायनहि॥ अनेजेपामरने विषयीहोय ते तो इंद्रियोनांजे माईक पंचविषय तेमांलोलुपव
र्ते छे॥ अनेतेनेकोईरीतनुं नियमहोयनहिं॥ माटेजेने भगवानभजयाहोये॥ तेनेपामरनेविषई जिवनासंगनो त्याग

करिनेमुमुक्षुनेमुक्तनोसंगकरिनेपोतानाआत्मानुंकामसुधारीलेवुं॥ अनेआसमेतो जोअमनेनेअमारानिरथासनीकसंतनेमन
अरपणकरे॥ तोतेपांमर जिवहोयतथाविषई जिवहोयतेनुंसाक्षात्कारकर्याणथाय॥ अनेतेनुंआनेआदेहे पांमरपणुंनेविषई
पणुंमटिने ब्रह्मरूपथईनेअक्षरधामनेपामे॥ माटेजेनेआसमेमनुष्यदेहआव्योछे नेआसत्संगमांजेनेप्रतितिआवीछे॥
तेनाभाग्यनोपारनथि॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय
नमोनमः॥ ॥संवत्॥१९॥ओगणिसें॥२२॥बाविसनापोषशुदि॥१२॥द्वादशिनेदिवसमहाराजश्री
हरिकृष्णभगवानगामश्रीपेटलादमध्ये॥ काछियावनमालीनेघेरआथमणाबारनाओरडानीरवेसमांगादितकि-
धानरवाविनेढोलीयाउपरविराजमानथयाहता॥ अनेसर्वेसोनेरीवस्त्रधारणकर्याहतां अनेकंठमांचंपानेगुलाब
नापुष्पनाहार धारणकर्याहता॥ अनेबेकर्णउपरगुलाबनापुष्पनागुछधारणकर्याहता॥पछेघोडीतैयारकरीनेहरिभक्त
लाव्या नेतेणेमहाराजनेहाथजोडीनेकह्युं जेहेमहाराजआजसभाकरवीछे॥नेदेशदेशनाविद्वानब्राह्मणघणाकआव्याछे
माटेकालकामातानीधर्मशालामांपधारो॥ पछेमहाराजघोडियेअस्वारथईनेगाजतावाजतात्यांपधार्या॥नेतेधर्मशाला
मांउगमणीकोरनीपरशालनेविषेगादितकियाजुक्तपलंगबिछावीहतीतेउपरविराजमानथयाहता॥ अनेपोतानासुखा-
थिंदनीआगलसाधु तथाशास्त्रिजेशंकरगोविंदराम तथापुराणिवेदियाब्राह्मणो तथादेशदेशनाहरिभक्तनेसर्वनीमो
टीसभाभराईनेबेठीहती॥पछेशास्त्रीपुराणिवेदीयाब्राह्मणोये घणीवारसुधिपरस्परप्रश्नउत्तरकर्यापणतेणेकरि
नेकोईनेशांन्तिथईनहीपछेमहाराजेवातोकरित्यारेसर्वे सभानेघणोआनंदथयो॥नेतेसर्वेनेअंतरमांपरमशान्ति
थई॥ पछेमहाराजअतिकृपाद्रष्टीकरिनेबोल्याजेअमारीजेवातछेतेतोमोटामोटादेवब्रह्मातथाशिवसनकादिक
सरखानेपणअतिदुर्लभछे॥केमकेदेवब्रह्मादिकनालोकमांपणआविमावातोपरअलौकिकवारतापुतीनथी
॥अनेप्रकृतिपुरुषथीआणीकोरेसर्वलोकमांतथासर्वेधाममांपंचविषम पामवानीजवारताओथायछे॥ अने

नानादेवादिकने थोडा विषयनुं बंधन छे ।।अने मोटा देवादिकने मोटा विषयनुं बंधन छे ।। केमके जुवोने ब्रह्मा तथा शिव तथा इंद्र तथा चंद्र ।।ते सर्वथी मोटा कहेवाय छे ।। पण ते कामने वश थईने व्याकुळ थयाने लाज रयोई ।।अने मनुष्य कोई न करे एवुं काम कर्युं ।। माटे देव ब्रह्मादिक मोटा तो तेना कामादिक पण मोटा छे ।। माटे स्वर्ग मृत्युने पाताळ ए त्रण लोकमां धर्म अर्थ ने काम नी ज वात थाय छे ।। पण मोक्षनी वार्ता क्यांई पतीज नथी ।।अने मोक्ष तो प्रगट भगवानने संगे करिने ज थाय छे ।। तथा प्रगट भगवानना एकांतिक संत पंचविषयना त्यागि निरवासनीक तेने संगे करिने मोक्ष थाय छे ।। माटे जेने मोक्षनी इच्छा होय तेने प्रगट भगवानने भगवानना एकांतिक साधु विषयना त्यागि तेनो समागम करवो ।।अने प्रगट भगवानने भगवानना संतनो संगम लवो ।। ते तो अतिशे दुर्लभ छे ।।अने एवो सत्संग ज्यारे पोताने प्राप्त थाय ।। त्यारे तो पोतानां अतिशे ज मोटां भाग्य समजवां ।। अने तेनी ज्ञानवार्ता सांभळवामां अतिशे श्रद्धा राखवि ।।अने जेनी श्रद्धा न होय ।। तेने तो सत्संग करवामां घणी खोट रहि जाय छे ।।अने मोक्षमां पण घणो फेर रहे छे ।। जेम समुद्रमां स्वाति वरसे छे ।। त्यारे छिपो पाणी उपर आविने ते स्वातिना बिंदुने झिले छे तेमां जे छिप उंचीउछलीने बिंदुने झिले छे ।। ते छिपमां अमूल्य मोती थाय छे ।।अने जे छिप थोडिक उछलिने जिले छे तेनुं मोतिकिमत ना आवे एवुं सो बसें रुपियानुं थाय छे ।।अने जे छीप पाणी उपर पडि पडि बिंदुने झिले छे तेनां तो खोटां फटकियां मोती थाय छे ।।केमके तेमां खारा पाणीनो भेग भळे छे ।। माटे ते मोतितो टकानां त्रण से वेचाय छे ते प्रगट अमारी ज्ञानवार्ता छे ।।ते स्वातिना बिंदु जेवी छे ।।अने संसार रुपि समुद्र छे ।। अने छिपरुपि मुमुक्षु जिव छे ।।माटे जे खरेखरी उत्तम श्रद्धा राखिने अमारी ज्ञानवार्ता सांभळसे ।। ते तो आने आ देहे ब्रह्मरुप थईने अमारा अक्षरधामने पामशे ।।अने जे मध्यम श्रद्धा राखिने सांभळशे तो ते मोटा प्रकृतिपुरुषना लोकने तथा प्रधानपुरुषना लोकने तथा वैराट ब्रह्मादिक इंद्रादिकना लोकने पामे छे ।।अने जे कनिष्ट श्रद्धावाळा हशे ते तो आ लोकमां कोईक मोटो राजा थशे ।। तेमां उत्तम श्रद्धावाळाने तो अक्षरधामनी प्राप्ति थशे ।।तेने तो फरिने जन्म धरवो नहि पडे ने ते तो अविचळ सुख ने पामशे

अनेजेम ध्यमश्रद्धावालाछे ॥ तेनेत्रणचारजन्म धरवापडशे ॥पछे धर्मज्ञानवैरागने भक्ति सिद्ध करिने उत्तम श्रद्धानेपामिने तेअक्षरधामनेपामशे ॥अनेजेकनिष्टश्रद्धावालाहशे ॥तेतोदेवतामांने मनुष्यमां घणाक जन्म धरशे ।पछे ज्यारे तेउत्तम श्रद्धानेपामशे ॥त्यारे तेभक्त ब्रह्मरुपथईने अक्षरधामनेपामे ॥ माटेप्रगट भगवानमल्या होय, तोपण स्रद्धामां घणोफेर रहि जायछे ॥अनेआलोकमां पणबे प्रकारना जिवनीसृष्टिछे॥ तेमांएक असुरि जिवनीसृष्टि छे॥ ने बिजिदैवि जिवनीसृष्टिछे तेमांअसुरि सृष्टिनाजियछे॥ तेतोदेहबुद्धिये युक्तवरतेछे ॥अनेदेहनां सगांसंबंधीनातजातहुं मारुं॥ तेमांहर्ख शोक हाण्यवृद्ध तेमां जिव क्लेशने पामेछे ।ने त्रिविधि ताप मांबल्याकरेछे॥ केमके माईक पदार्थछे ते तो नासपंतछे॥ माटेनासवंत पदार्थमां कोई काले सुख होयज नहिं॥ अनेजेदैवि सृष्टिनाहोय ते तोएक परमेश्वरनेज सत्यमानेछे॥ अने पोतानेआत्मारुपमानीने देहने मिथ्या देखेछे॥ अनेजातिवरणजे ब्राह्मण क्षत्रीवैश्यशुद्र तेपणदेहनाभागछे॥ तेजन्म धर्यापछे ॥मा बापे समजाव्यु जे आतारिजात ॥आतारुं नाम॥ आतारुंघर ॥आतारुंगाम॥ इत्यादिकजे आलोकवेदे वारनारुढ तेतो उपरथि मा बापे चोटर्या छे ॥अनेजेआत्माछे तेतोअजन्म्याछे॥ अविनाशिछे ॥ अनेतेआत्माये वासनायेकरिने जेटला चोरासिमां जिवछे॥ ते सर्वेना देहने विषे जन्मधर्याछे ॥अनेजिवेपुरुषनादेह धरिने सर्वे चोरासिमां पोतानीस्त्रियो करिछे ।अने स्त्रिनादेह धरीने चोरासिमां सर्वे जिवने पोतानाधणिकर्याछे ॥एविरीते दैविसृष्टिवालाछे तेएम समजीनेजेम चोरासि लाख जातनाख गपणने हमणे नथि मानता ।तेमजआ देहना संबंधीने पण पोतानासंबंधी मानतानथी ॥अने पोताने स्थूल सूक्ष्मने कारण एत्रणदेहथी नोखो अने सुद्ध रुपएवो जेआत्मा तेनेपोतानुं स्वरूपमानीने जेम परमेश्वरे वर्णाश्रमनो धर्म केह्योछे तेधर्म प्रमाणे रहिने परमेश्वरनुं भजनस्मरणकरे ॥अने जेएविरीते पोतानाआत्मानो मोक्षथाय ॥ तेवा उपायमां निरंतर वरत्याकरे ।।अनेजगतनां सुख दुःख हाण्य वृद्ध ते तेने सम पणे वरतेछे ॥केमके तेतोएम जाणेछेजे ईश्वरनीइछा हशे ते मथशे॥ एम समजीने हरखशोकादिकनो धणी थतोनथी ॥अने आजगतनां नाशवंत पदार्थने ते पदार्थ संबंधीजे सुख

तेपणनासवंतछे॥एमजाणीनेतेनीईछानथीराखता॥केमकेआलोकनांसुखछेतेतोज्यारेत्यारेजरुरनासथईजशे॥मारेदैविसृष्टि
वाल्याएवाजेभगवाननाभक्तहोय॥तेमाईकसुखनेइछेनहि॥अनेभगवाननाभक्ततोअविनाशिएवुंजेअक्षरधाम॥तथाअवि-
नासीएवुंजेभगवाननास्वरुपसंबंधीसुखतेनेजइछेछे॥अनेतेसुखतेअतिशेदुर्लभछे॥पणआसमेआसत्संगमांजेनेजे-
नेप्रतितिआवेछे॥तेनेएसुखअतिशेसुगमपणेप्राप्तथायछे॥केमकेएसुखनादाताआसमेप्रगटतमनेदर्शनआपेछे॥मारेप्रत्य-
क्षसत्पुरुषनीआज्ञायेकरिनेअधर्मनोत्यागकरिनेधर्ममांरहिनेभगवाननुंभजनकरेतोतेआलोकमांपणसुखनेपामे॥अनेदेहने
मुकिनेभगवाननाअक्षरधामनेपामेछे॥अनेतेआत्माअपारसुखनेपामेछे॥केमकेजेनेप्रगटभगवाननोसंबंधथायछे॥तेजतेअक्ष
रधामनासुखनेपामेछे॥तेपूर्वेगोपिगोवालतथापेराजाभिल्लतथावांदरातेनेप्रगटभगवाननोसंबंधथयो॥तोतेपणमोटिपदवीनेपा
मीगयाछे॥मारेप्रगटभगवाननोसंबंधजेनेथयोछे॥तेतोभगवाननापारसदथईरह्याछेअनेतेनामोक्षमांपणकांईलेशमात्रअधूरुंनथी
अनेतेनेदेहनुंनिमितहोयत्यांसुधितेदेहमांरहेछे॥अनेज्यारेदेहनेमुकशेत्यारेतेनेअक्षमयदेहधरावीनेभगवानपोतानाधामनेपमाड
शे॥मारेपोतपोतानाधर्ममांरहिनेजेअमारिभक्तीकरशेतेनांसाक्षात्कारकल्याणथशे॥एमकहिनेमहाराजघोडियेअस्वारथई
नेपोतानेउतारेपधार्या॥ ॥इतिश्रीसुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोन
मः॥ ॥संवत॥१९॥आगणिसें॥२२॥बाविसनाचैत्रवदि॥४॥चेथुर्थिनेदिवसमहाराजश्रीहरिकृष्णभ-
गवानगामश्रीधोलकामध्येपंड्याश्रीवाशंकरहरखरामनेघेरउगमणाबारनाओरडानीआगलपाटउपरगादितकियेजुक्तपलं-
गबिछाविनेतेउपरबिराजमानथयाहता॥अनेसर्वेजरियाननीवस्त्रधारणकर्याहतां॥नेपिलापुष्पनांआभूषणसर्वेअंगमांशो-
भिरह्यांहता॥नेललाटनेविषेकंकुनोचांदलोकर्योहतो॥अनेपोतानामूर्खाबिंदनीआगलसाधुतथाघणाकहरिभक्तनीस-
भाभराईनेबेठीहति॥पछेपंड्याश्रीवाशंकरेमहाराजनेप्रस्नपुछ्युंजेहेमहाराजेजिवनेशुभसंस्कारबंधायछे॥तेपोतानेपुरुषा
र्थेकरिनेबंधायछे॥केतेनोबिजोकोईउपायहशे॥तेकृपाकरिनेकहो॥पछेमहाराजश्रीहरिकृष्णमाहाप्रभुजीबोल्याजेजिवने

पोतानी मेले तो कोई वातनी सिद्धि थतीज नथी ॥ माटे सतपुरुषने सतशास्त्र थकि जिवने सुभसंस्कार बंधाय छे ॥ तेशास्त्र पण सत्पु-
रुषपासेथी सांभले ॥ तोज वेदमां कह्या प्रमाणे कर्मकांड ज्ञानकांड उपासनाकांड ते सवला समजाय छे । अने ते जिवने शुभसं-
स्कार बंधाय छे ने तेनुं कल्याण थाय छे । पण सतपुरुषना आश्राविना पोतानी मेले शास्त्र वांचिने ॥ अथवा असत्पुरुष पासेथी सां-
भलशे तो तेने अवलु समजासे ॥ पछे ते कर्मने जकरता जाणीने कर्म करे छे ॥ तेणे करिने तेने कांई जपण शुकृत थतुं नथी ॥ अने
तेनुं कल्याण पण थतुं नथी ॥ अने जे भगवान के भगवानना निरवासनिक संत तेनो आसरो करिने तेना वचन प्रमाणे वर्ते छे ॥
तेने शुभसंस्कार थाय छे ॥ ते एम वर्ततां वर्ततां घणाक शुभसंस्कार भेग्या थाय छे ॥ त्यारे तेने प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरुप
नो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय छे ॥ ने ते आत्मा ब्रह्मरुप थईने भगवानना अक्षरधामने पामे छे ॥ माटे भगवानने भगवानना
भक्त संत तेना आसरा विना एकलेशास्त्रे करिने तथा जपतपसाधने करिने तथा दान्यपून्य यज्ञादिके करिने पोताना मनने धा-
रे कांई पण शुभसंस्कार थतो जनथी ॥ माटे प्रगट भगवान कां भगवानना नीरवासनिक संत तेनो आसरो करिने तेनी आ-
ज्ञा प्रमाणे शुभकरम करशो तेनुं कल्याण थशे ॥ पण ते विना कोई वातनी सिद्धि थति नथी ॥ त्यारे कोई एम कहे जे पोताने
जांणे शुभ संस्कार थाय छे ॥ एम कोई कहे तो तेएम कहेनाराने मूरख जाणवो ॥ अने कां तो एम कहेनारो नास्तिक छे ॥ अ-
ने कां तो तेना अंतेजतां नास्तिक थशे ॥ केमके जेम कोई कएम कहे जे सूर्य उग्या विना रात्रि जाय छे ॥ तो एम कहेनारो मुरख
जाणवो ॥ ने सूर्य उग्या विना कोई काले रात्रि जाय नहिं ॥ तेम भगवानने भगवानना जनना आसरा विना कोई काले शुभसंस्का-
र रुपि आत्मामां प्रकाश थतो जनथी ॥ ने तेनुं कल्याण पण कोई काले थाय नहिं ॥ वलि जेम वरसाद वरस्या विना ने नदि तलाव ने
कुवाना जल विना खेतरमां मोल निपजे नहिं तेम भगवानने भगवानना भक्तना सत्संग विना कोई जिवनुं कल्याण थयुं
नथी ॥ ने थशे पण नहिं ॥ ते छो ने पोताने जाणे धर्म पाले जप करे तप करे व्रत करे ॥ तिर्थं करे संसारनो त्याग करि ने भेख-
लईने ॥ वनमां एकलो रहे ॥ अने वेदांतादिक शास्त्रमांथी सांभलिने एम कहेवा शिख्यो होय जे हुं ब्रह्म छुं । हुं आत्मा छुं

हुंअखंडानंदछुं ॥एमकहे तोहोयतो पण प्रत्यक्ष भगवानने भगवाननीद्रढ उपासनावाळाने पंचविषयनात्यागि भगवानना भक्त
संत तेना सत्संगविनाकल्याण थाय नहिं। ॥अने भगवानने भगवानना भक्तना संग विनाने तेनाआश्रा विना तेनां साधन स
र्वे व्यथा छे। ॥अने उलटा बंधनकारि थाय छे। ॥जेम खेतरमांजल विनाजेटलि जेटलि मेहेनतकरे तेटलि छुटिपडेने तेनुं खरच थयुं
होय तेणे करिने तेना करजमां बंधाय छे। ॥ तेम जिवपोतानीमेले सतपुरुषना आश्रा विना शास्त्र भणे ॥ भले ॥ तथा जपतपतिर्थ
व्रत यज्ञादिक साधन करे ॥नेतेनामाने करीने कोई प्रत्यक्ष भगवानके भगवानना भक्तनो द्रोह करे ॥ तो तेद्रोहे करिने उलटुं ते
जिवनुं अतिशे भुंडुं थायछे। ॥ ते कृष्ण अवतारमां रुषि पोतानीमेले यज्ञ करताहता ते यज्ञनेमाने करिने भगवानने अन्नजमवा
आप्युं नहिं। ॥नेउलटो भगवानने भगवानना भक्त गोवालिया तथा तेनी स्त्रियोजे रुषिपत्नियो तेमो द्रोह कर्यो ॥ माटे ते रुषिदुर
भागिया के हेवाया छे ॥ ते सारु पोतानीमेले तो कोई पण सुकृत मेलविलकातुं नथि ॥ माटे प्रथम मायाना पेटमांथी जिवने बहा
र काढ्या त्यांपण भगवानज करता छे। ॥अने मध्य स्थिति मांपण भगवानने भगवानना भक्तनो संग होय त्यारेज सुभसंस्का
रे करिने जिव उर्ध गतिने पामे छे। ॥ माटे मध्ये पण भगवानकर्ता छे ॥ अने अंते पण प्रत्यक्ष भगवानआत्यंतिकज्ञानआपशे त्या
रेज जिव ब्रह्मरुपथईने अक्षरधामने पामशे ॥ माटे उत्पत्ति स्थिति ने प्रलय एत्रणे नाकरता एक भगवान छे। ॥पण बिजो कोई क
रता नथी ॥ अने भगवानजे ते जिवोने महामाया मांथी बहार काढिने मुक्ति आपे छे ॥ तेमां उत्पत्ति स्थिति ने प्रलय करे छे ॥
माटे सर्वकरता एक भगवान छे ॥ पण बिजो कोई करता नथी त्यारे कोई एमकहेशे जे भगवान सर्व करता छे। ॥ त्यारे सर्वेना शुभसं
स्कार केम करावता नथी। ॥एम कोई कहे तो तेनुं एम छे जे जेम कोईने छोकरो नानो होय ते छोकराने तेना बापे जन्म आप्यो ने तेने
मोटो पण तेना बापे कर्यो ॥ अने तेने निशाले बेसारिने विद्या भणावे ॥ ते पण जो न भणे तो तेनो बाप छोकराने नानो होय त्यां सु
धि मारिने भणावे ने रुडा गुण शिखवे ॥ ते छोकरो नानो होय त्यां सुधि तेना बापनो मार खाय ने जेम कहे तेम करे ॥ केमके
ते छोकरो तेनाबापने पुगिशके तेम नथी ॥ माटे मार खाय ॥ ने जेम कहे तेम करे ॥ अने ज्यारे ते छोकरो जुवान थाय ॥ नेतेना

बापना करतां चोगणो बलियो थाय ॥ त्यारे जो ते छोकरो सजंन मनुष्यनो संग करिने रूडा गुण शिख्यो होय ॥ तो ते छोकरो तेना
बापनी आज्ञामां रहे ॥ ने जेम कहे तेम करे ॥ अने जो दूरिजन माणसनो संग करिने भूंडा स्वभाव शिख्यो होय तो ते छोकरो तेना
बापनुं कह्युं करे नहि ॥ ने ज्यां सुं बोले तो तेना बाप सामो थाय ॥ पण ते छोकरो तेना बापनुं कह्युं करे नहि ॥ तेम प्रथम जिवने माया-
मांथी भगवान बहार काढे छे । ने पछे तेने भगवानने भगवानना जन धर्म ज्ञान वैराग ने भक्ति रुपि उपदेश आपे छे ॥ ते ज्यां सु-
धी नाना छोकरानी पेठे मुमुक्षुता होय त्यां सुधी ते जिव भगवानने भगवानना जनना उपदेशने माने छे ॥ पछे ते उपदेशने सांभल
तो सांभलतो जे जिव भगवानना भक्तने संगे करिने धर्म ज्ञानादिक रुडा गुण दृढ शिखिने मुक्त थाय छे ॥ ते आत्मा भगवाननी आ
ज्ञा यथार्थ पाले छे ॥ ने तेने जे शुभ संस्कार बंधाय छे ॥ अने ते आत्मानुं कल्याण थाय छे ॥ अने जे जिव भगवानना द्रोहि एवा जे
असुरि जिव तेना संगे करिने असुर भावने पामिने भ्रष्ट थयो होय ॥ ते जिव भगवानने भगवानना संतनो उपदेश मानतो नथी
॥ अने एवाने भगवानने भगवानना संतनो संग करवो गमतो नथी ॥ माटे एवा असुरि जिवना उपर भगवानने भगवानना संतनो
उपदेश नथी ॥ अने तेना उपर शास्त्रनी मर्यादा पण नथी ॥ माटे असुरि जिवने शुभ संस्कार बंधातो नथि ॥ ने ते जिवनुं कल्याण
पण थतुं नथी माटे जे दैवि जिव होय ॥ तेने भगवानने भगवानना संतने संगे करिने शुभ संस्कार वृद्धि पामे छे ॥ अने ते तुर्त कल्या
ण थाय छे ॥ माटे मायाना पेटमां जिव हतो त्यां पण भगवानने भगवानना संतने संबंधे करिने शुभ संस्कार बंधाय छे ॥ तेणे करिने
जीव मायामांथी बहार निसरे छे ॥ अने पछी जेम जेम शुभ संस्कार बंधाता जाय छे ॥ तेम तेम जिव कल्याणने मारगे चाल्यो जाय छे
॥ तेमां कोईने एम आशंका थाय जे मायाना पेटमां जिव होय तेने शि रिते संस्कार जागता हशे ॥ तो त्यां संस्कार लागे छे ॥ तेनो वि
श्वास अणाववा सारुं तो स्त्रिना पेटमां गर्भ होय त्यांथी जे वेदने विषे गर्भाधानादिक सोल संस्कार करवा कह्या छे । तेमां जेने सो
ले संस्कार पूरा थाय छे ॥ ते ब्राह्मण कहेवाय छे ॥ अने जेने तेमां काईक ओछा संस्कार रहे छे ते क्षत्रि कहेवाय छे ॥ अने तेथी ओछा
संस्कार रहे छे ॥ ते वैश्य कहेवाय छे ॥ अने तेथी ओछा संस्कार रहे छे ॥ ते शुद्र कहेवाय छे ॥ अने जेने मूदल संस्कार नथी ॥ ते

तोअतिशुद्र कहेवायछे ।। कहे तांचंडालादिक कहेवायछे ।। तेना उपर ।। ।।श्लोक।। ।।जन्मनाजायते शूद्र ।।
संस्कारा द्विजउच्यते ।। वेदाभ्यासे भवेद्विप्र ।। ब्रह्मजानंति ब्राह्मणा ।। ।।अर्थ।। ।।जन्मने पाम्यो त्यारे तो
जिवशुद्रजेवो छे ।। केमके तेने संस्कारनथी ।। अनेज्यारे जनोईआदिक संस्कार कर्यो त्यारे द्विजकहेवायछे ।। अनेवेद भ
णेछे त्यारे विप्रथायछे ।। अने ब्रह्म जे आत्माने आत्मानाप्रकाशक एवाजे परमात्मा तेना स्वरूपनाज्ञानने साक्षात्कार
पामे छे त्यारे ते ब्राह्मण कहेवायछे ।। माटे जीवजेमजेम संस्कारने पामतो जायछे ।। तेमतेम मोटप्यनेपामे छे ।। पछे ज्यारे
संस्कार सर्वे पूराथायछे ।। त्यारे ते आत्मापरम पदने पामे छे ।। तेउपर गितानो ।। ।।श्लोक।। ।।अनेकजन्म-
संसिद्ध ।। ततोयांति परांगति ।। ।।अर्थ।। ।।भगवानने भगवानना संतनेसंगे करिने अनेकजन्मनाशुभसंस्कार
भेगाथायछे ।। त्यारे तेआत्मा परमपदने पामे छे ।। ते परमपद एटलेशुं तो प्रत्यक्षभगवान रामकृष्णादिक मनुष्यस्वरूप तेपोताने-
मले ।। नेतेनीमूर्त्तिने विषे सर्वोपरि पुरुषोत्तमपणानोउत्तम निरविकल्पनिश्चयथाय ।। एज परम पदने पामिरह्यो छे ।। माटे आज -
अथवा अनेकजन्मे भगवानने भगवानना संतनो सत्संग करिने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चयकरवो एज कल्याण
छे ।। एमसमजे ते बुद्धिवालाछे ।। अनेएम समजसे तेनुंज कल्याणथशे ।। अनेजेएम नहिं समजे तेनुंकल्याण कोईकालेन
हिंथाय ।। ने तेनेमुरख जाणवो ।। अनेजे प्रत्यक्ष भगवानथकि कल्याणने देखे छे ।। तेने महा बुद्धिवालोजाणवो ।। अने पूर्वे
जेनां जेनां कल्याण थयां छे ।। तेपण जेने प्रगट भगवानके भगवानना संतमल्या हशे तेनांज कल्याण थयां छे ।। अने तेनां जे शास्त्र-
मां नाम लखायां छे ।। माटे प्रगट भगवानने प्रगट भगवानना संतना संगे करिने जिवने शुभसंस्कार बंधाय छे ने ते जिवनुं क-
ल्याण थायछे ।। माटे तेअतिशयदूर्लभ समय ते आज तमारे प्राप्त थयो छे ।। ने तमारा संस्कार सर्वे पूरा थईरह्या छे ।। ।।
इतिश्रीमुखसिद्धांत समाप्तः ।। ।।श्रीहरि कृष्णाय नमोनमः ।। ।।संवत ।।१९।। ओगणीसें ।।
२२ ।। बाविसना चईतर वदि ।।१२।। द्वादशिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान ।। गाम श्री धोलका मध्ये मालिआना-

रामजेरानेधेर गादितकिये युक्त पलंग बिछाविने तेउपर बिराजमानथयाहता।। अने सर्वे क सुंबलजरियानीवस्त्र धारणकस्या
हतां।। अनेपुष्पनांआभूषणसर्वेअंगमां शोभिरह्यांहतां ।। अने ललाटने विषे केसरनीआडूने कंकुनो चांदलोकस्योहतो नेपो
तानामूखारविंदनीआगल साधुतथा घणाक हरि भक्तनीसभा भराईनेबेठिहती ।। पछे महाराज श्रीहरिकृष्ण महाप्रभूजीनी
संध्या आर्ति थयापछे, अक्षर मुक्तानंद स्वामिये हाथजोडिने महाराजने प्रश्नपुछ्युं जे हेमहाराजएक आचार्य कहेवायछे।।
अनेएकगुरु कहेवायछे।। तेबेएक छे के बेजुदाजुदाछे।। अनेते बेनो धर्मशो छे।। नेतेनागुणकेवाछे।। तेकृपाकरिनेक-
हो।। पछे महाराजबोल्याजे आचार्यने गुरु ए बे एकजछे।। जेम चोखाछे ।। तेनां नाम बे कहेवायछे।। एक चोखाकहेवायछे
।। नेएक बिजुंचावलकहेवायछे।। ते नाम बेने वस्तुएक छे।। तेम कल्याणदाता सतपूरुष तेनां नाम बे छे।।एक आचार्य क
हेवायछे।। नेतेनाते आचार्यने गुरुकहेवाय छे।। पण ते आचार्यने गुरु बेजुदानथि ।। हवे आचार्यशब्दनोशो अर्थ छे।। अनेगु-
रु शब्दनोशो अर्थ छे।। ते आचार्य एटले जे शुद्ध आचरणने विषे दृढपणे वर्तवु।। ने बिजाने वर्ताववा तेने विषे समरथ होय।।
तेने आचार्य कहिये।। हवे आचरण एटले शुं ।।तो धर्मज्ञानवैरागने महात्मे सहित प्रत्यक्ष भगवाननीएकांतिक भक्ति सिद्ध करिने
परमपद आपवारूप आत्यंतिकज्ञान तेजेनीपासे साक्षात्कारहोय ।। अनेपोते मायापर स्थिति मांवर्तताहोय ।। नेपोतानाशि
ष्योनेज्ञान आपीने मायापर वर्तावताहोय ।।तेने आचार्य कहिये।। पणजेने वासना होय अनेवासनाये करिने विषयने भोगव
ताहोय ।।नेपोताना शिष्योने विषय भोगववादेताहोय ।।ते आचार्य कहेवायनहिं।। माटे ब्रह्म पर ब्रह्म ने साक्षात्कार पाम-
वानुं जेशुद्ध आचरण तेजेनी पासे होय।।अनेजेने विषेपंच विषयभोगववानीवासनारूपीमायानोलेश न होय तेनुं नाम आचा
र्य कहेवायछे।। अनेएवाजे मायापर स्थितिवालाशुद्ध आचरणीपूरुष तेनेज सद्गुरु कह्याछे।। हवे गुरुशब्दनोशो अर्थछे
तो गु एटले माया ।। माया एटले आत्मापरमात्माने नजाणवारूप अज्ञान अंधारूं ।।तेनुंनाम गुशब्दछे।। ते अंधारावेदाजवा
नेअर्थे रु एटले ज्ञानरुपि प्रकाश ते ज्ञानरुपिप्रकाश तेजेनीपासे होय ।। तेने गुरु कहिये ।। केहेतां गुरुपजे माया तेने नाश

करवानेअर्थे रुरूपजेआत्यंतिकज्ञान एटलेधर्मज्ञानवैरागनेमहात्मेसहित प्रत्यक्षभगवाननीएकांतिकभक्ति सिद्ध क-
रावीने ब्रह्मरूपकरिनेपरब्रह्मनेसाक्षात्कार पमाडवा रुप गुणजेने विषेहोय ।।तेने गुरु कहिये।। तथातेने आचार्य क
हिये।। अनेजेने विषेकाम लोभ स्वाद स्नेह मांन रूपिदोषहोय ।।तथा शब्द स्पर्श रूप रस ने गंध तेनीवासनाजेनेहोय
।।तेनेआचार्य तथागुरुजाणवा नहिं।। अनेजेनेविषेमायानोलेश नहोय तेने आचार्यजाणवा तथा तेनेजगुरुजाणवा।।
अनेएवा मायापर स्थितिवालागुरु।। तथाआचार्यहोय।। तेनाआश्रय थकिजजीवनो ततकाल मोक्षथायछे।।हवे
तेआचार्य तथागुरु तेपण बे प्रकारनाछे।। एक तो क्षर अक्षरथीपर एवाजे परमात्मा परब्रह्मते जिवोना कल्याण करवाने
अर्थे पोतानी स्वइच्छाये करिने राम कृष्णादिक अवतारनु धारण करेछे ।।तेपण गुरु तथाआचार्य कहेवायछे।। अने बिजाए
परमात्मा रुप आचार्य तथागुरु थकि ज्ञांन पामिने सिद्धदशा नेपामेछे ।।तेपण आचार्य तथागुरु कहेवायछे।। पणतेबे
ना वृत्तांतमां घणो भेदछे ।।जे परमात्माना अवतारहोय ते ने शापे विधिनिषेधनथी ने तेतो चहायतेम पोतानी इच्छामां आ
वे तेमवरतेछे।।ने पोतानासेवकजनोनाभावप्रमाणे तेनीसेवानुं ग्रहणकरेछे नेतेतो पोतानुं प्रत्यक्ष भजन करावेछे ।।ने
पोतानाभक्तनोमेवानेग्रहणकरताथकानिर्लेपरहेछे।। नेपोतानासेवकोने बराबरधर्म नियम मां रखाविने निर वास-
निक करेछे।। अने बिजाए प्रत्यक्ष परमात्माथकि ज्ञानपामिने ।। निरवासनीकथईनेब्रह्म स्थितिने पाम्याहोय एवाजे
भगवानना संत ।। तेपण गुरु तथा आचार्य केहेवायछे।। अनेतेजेआचार्यतथागुरु तेपोते परमात्मानीउपासनाने भक्ति
येसहितथईने पंचविषयनोत्यागकरिने ।। पोते पोतानाधर्मनीयमशास्त्रमांकह्यां होय तेमां दृढपणे वर्तताहोय ।।पणते-
नियमने कदिचुकेनहि ।। अने पोताना सेवकोने धर्म नियममां बराबर रखावताहोय ।।एवागुणजेनेविषेहोय ।। तेनेआ
चार्य तथागुरु जाणवा ।। अनेजे धर्मनियमनोत्यागकरिने विषय भोगवताहोय ।।अथवा धर्ममां रहिने पण विषयनेभो
गवताहोय।। तेने आचार्य तथा गुरु नजाणवा।। अनेजे पंचविषयना त्यागिने कामलोभादिक दोषे रहित ।।कहेतां

अष्टप्रकारे स्त्रिनो त्याग राखता होय तथा द्रव्यने अडता न होय ॥ तथा दूध दहि घी गोल खांड ने शाकर एजे छ रस तेने खाता नहोय ॥ ने देह ने देहना संबधी मां प्रिति जेने न होय ॥ अने कोई जातनुं मान जेने न होय ॥ अने राम कृस्नादिक प्रत्यक्ष भगवाननी उपासना करता होय ॥ ने जेनी पासे आत्मा परमात्मानुं शुद्ध ज्ञान होय ॥ अने सत्पुरुषनां जे आ सठ लक्षण कह्यां छे ॥ तेणे युक्त होय मारे आ कह्या जे गुण ते सर्वे संपूरण जेने विषे होय तेने आचार्य तथा गुरु जाणवा ॥ अने तेना आश्रय थकि जिवनुं कल्याण थाय छे ॥ पछे पंड्या अंबाराम करेहर रवरामे महाराजने हाथ जोडिने कह्युं जे हे महाराज ॥ आपणा धर्म मां गुरु स्थापन करवो ॥ ते त्यागि होय तेने करवो ॥ के ग्रहस्थ आचार्य करवो ॥ पछे महाराज श्री हरिकृस्न भगवान बोल्या जे अमारा धर्म मां तो मायापरने ब्रह्मरुप मुक्त पंचविषयना त्यागि एवा जे साधु ते जगुरु करवा योग्य छे ॥ अने ग्रहस्थ आचार्य तो करवो ज नथी ॥ अने अमे पण त्यागी रह्या छिये ॥ ने संगपण त्यागीनो ज गमे छे ॥ मारे अमारा धर्म मां गुरु करवा योग्य ने धर्मना चलावनारा तो त्यागीने करवा ॥ अने जेने स्त्रिनो धन्यनो संग छे ॥ ते मोक्षने अर्थे गुरु तथा आचार्य करवा योग्य नथी ॥ अने स्त्रि द्रव्यने रसास्वादादिक विषयने भोगवे छे ॥ अने ते गुरु थईने फरे छे ॥ के आचार्य कहेवाय छे ॥ ते तो पाखंडि छे ॥ ने जिवने बंधन करनारा धर्म घातकि छे ॥ केमके पोते माया थकि मुकाणा नथी ॥ ते बिजाने केम मुकावी शके ॥ मारे आपणा धर्म मां त्यागी होय ते ज गुरु तथा सत्संगिने मंदिरना मालिक छे ॥ ॥ इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥

॥ श्री हरिकृस्नाय नमो नमः ॥ ॥ संवत ॥ १९ ॥ ओगणिसें ॥ २२ ॥ बावीसना चैत्रवदी ॥ १३ ॥ तेरसने दिवस महाराज श्री हरिकृस्न भगवान गाम श्री षिजमध्ये जोशि गणपत भाई जगजिवनने घेर ॥ उगमणे बार ओरडानी आगल चोकमां गादितकिये युक्त पलंग बिछाव्यो हतो ॥ ते उपर बिराजमान थया हता ॥ अने सर्वे सोनेरि वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ अने कंठमां पुष्पना हार पेहेर्या हता ॥ अने पाघने विषे फूलना तोरा लटकता हता ॥ अने बे कर्ण उपर गुलाबना पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता ॥ अने पोताना मूखारविंदनी आगल संतमंडल तथा देशदेशना घणाक हरिभक्तनी मोटी सभा भरइने बेठा हता ॥

पछे गणपत भाईनो दिकरो हरनारायण तेणे महाराजने प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज भगवाननुं मनुष्यस्वरूप ते केम ओलख्या
आवे ॥ जे आ भगवान छे ॥ ते रूपा करिने कहो ॥ पछे महाराज श्रीहरि कृष्ण भगवान कृपादृष्टि करिने बोल्या जे ॥ भगवान-
नुं स्वरूप तो भगवान थकि ज ओलखाय छे ॥ अने कां एभगवानना एकांतिक संत ॥ ते थकी भगवान ओलखाय छे ॥
पण ते विना मनुष्यस्वरूप भगवान ते ओलखाय नहिं ॥ जेम कोई क परदेश मांथी मनुष्य आव्युं होय ॥ ने तेने ओलखवुं
होय ॥ तो ते मनुष्य पंडे एम कहे जे मारि फलाणि जात छे ॥ अने कां ते ना भेगु तेना देशमां थी मनुष्य आव्युं होय ते ओलखावे त्यारे ते
परदेशी मनुष्य ओलखाय ॥ पण ते विना ते परदेशी मनुष्य ओलखाय नहिं ॥ तेम भगवान पण परदेशी मनुष्यनी पेठे अष्ट आ-
वरणथी पर एवुं जे अक्षरधाम तेना वासि छे ॥ मांटे ते भगवान् पोते पंडे कृपा करिने पोतानुं स्वरूप ओलखावे त्यारे ज ते मनुष्य
स्वरूप भगवान ओलखाय छे ॥ अने कां ते भगवान पोताना धाममांथी पोताना संतने भेगा तेडि आव्या होय ॥ ते भगवान
ना भक्त संत ॥ ते प्रगट भगवाननुं स्वरूप ओळखावे त्यारे प्रगट भगवाननुं स्वरूप ओलखाय छे ॥ पण ते विना कोई बुद्धि
ले करिने ॥ तथा शास्त्रने जाणवे करिने तथा अनंत प्रकारनी विद्याये करिने ॥ प्रगट भगवानने ओलखवा जाय पण तेने
भगवान नथी ओलखाता ॥ केमके बुद्धिये करिने जो प्रगट भगवान ओलखाता होय तो कृष्ण अवतारमां ब्रह्मा केवा बु-
द्धिवाला हता ॥ पण ते प्रगट श्री कृष्ण मनुष्यस्वरूप पोतानी बुद्धिये करिने ओलखि शक्या नहिं ॥ अने उलटो भगवा-
ननो मनुष्य चरित्र जोईने मोह थयो ॥ तथा इंद्रने पण मोह थयो छे ॥ इत्यादिक घणा क मोटा मोटाने प्रगट भगवानना स्व-
रूपने पोतानी मेले ओळखवा गया छे ॥ तो ते सर्वेने मोह थया छे ॥ पण पोतानी बुद्धिबले करिने कोई प्रगट भगवान ओ-
लखाणा नथी ॥ अने जेने ते प्रगट भगवान तथा ते भगवाननी भेगा रहेनारा एना एकांतिक पंचविषयना त्यागि संत तेनो
जेने विश्वास होय ॥ तो ते प्रगट भगवाननुं स्वरूप ओलखावे छे ॥ त्यारे ज तेने ओलखाय छे ॥ पण ते विना प्रगट भगवान
ओलखाय नहिं ॥ केमके ब्रह्मादिकने प्रगट भगवानना मनुष्यचरित्रने विषे मोह थयो छे ॥ तो बिजा मनुष्यने मोह थाय ते-

मांनुंकहेवुं॥माटे तेनेतो मोह थायज॥ तेसारुंप्रगट भगवानना स्वरुपनो निश्चय ते तो प्रगटभगवानने ते भगवानना भक्त संत
तेकरावे छे॥ त्यारे जनिश्चय थाय छे ॥एसिद्धांत धारता छे॥ तेकेवि रीते भगवानने भगवानना संत प्रगट मनुष्यस्वरुप
भगवा नओलखावे छे॥ तोज्ञाने करिने निश्चय करावे छे॥ तेज्ञान शुं तो धर्मज्ञान वैरागने महात्मे सहित भगवाननीभ-
क्ति सिद्ध करावबारूप अष्टांग योगसधावे छे ॥ अने अष्टांगयोगे करिनेजीवने ब्रह्मरुप करिने ब्रह्मने विषे परब्रह्म नुंसा-
क्षात् कारदरसान करावे छे॥ ने जिवई श्वरमायाना भेद टलाविने ॥ ब्रह्मने परब्रह्म ए बेज तेनीद्रष्टिमांरहे छे॥ त्यारेतेनेप्र
त्यक्षमनुष्य स्वरूप भगवानने विषेसर्वोपरि पुरुषोत्तमपणानो निश्चय थायछेहवे तेअष्टांगयोगतेशुं॥तो यम॥ नियम॥आ
सन ॥प्राणायाम॥ प्रत्याहार॥ध्यान॥ धारणा ॥नेसमाधि ॥ए आठसाधननुंनाम अष्टांगयोग कहेवायछे॥ हवे तेना लक्षण
कहुं छुं॥ तेमां पेहेलु यम तेशुं॥ तो अधर्म अनिति कुडकपटादिक जे दुष्टकर्म तेनो त्यागकरिने पोतपोतानावर्णाश्रमना
धर्ममां रहिने॥ भगवान् भजवा॥ अने अधर्म कोई दिवस करवो नहिं॥ तेनुंनामयमकहेवायछे॥अने बिजुंनियमतेशुंतो
उत्तमें पंचविषय भोगनो त्याग करवो॥ तेनुंनाम नियम कहेवायछे॥अनेत्रिजुंआसन एटलेशुं॥तोपवित्र स्थानके रहेवुं
॥ केहेतां भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागि संतज्यांरेहेताहोय त्यांद्रढमन करिने रहेवुं॥ तेने आसन कहिये॥अने चोथुं
प्राणायाम् एटलेशुं तो ॥ आहारविहारादिक युक्त करिने प्राणने स्थिर करवो कहेतां सर्व मांदिक पंचविषयथकि संतोष
पामवुं॥ तेने प्राणायाम कहीये ॥अने पांचमुं प्रत्याहार एटलेशुं॥तोदेहआत्मानो विवेक करिने देहने मीथ्याजाणिने आत्मा
नेसत्यजाणवो ॥ नेस्थूल सूक्ष्मकारण त्रणदेहनी जे चोविसवृत्तियो ॥ तेने आत्माने विषे लयकर वि अ नेआत्माने अक्ष
रने विषे॥एककरवो॥ अने तेअक्षरने पोतानुंस्वरूप मानवुं तेनुंनाम॥ प्रत्याहार कहेवायछे॥ अने छठुं ध्यानएटले ॥एब्र
ह्मना प्रकाशनेब्रह्मना आधार एवाजे प्रत्यक्ष भगवान् ज्ञानदाता रामकृष्णादिक तेनीमूर्तिनुं ध्यान करवुं अने तेध्या
न करतां जेजे पदार्थमां वृत्तिजाय ते तेपदार्थनो चारप्रकारना प्रलयनो विचार करिने नाशवंत नेदुःखरूपने स्वप्नवत्

त्राणिने पिंड ब्रह्मांडादिक थकि वैराणने पामिने भगवानना स्वरुपमां प्रत्तिने राखिने अंगो अंगनुं चिंतवन करवुं ॥ तेनुं नाम ध्यान कहिये ॥ अने सातमुं धारणा एटले शुं ॥ तो प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्त्तिमां मननी प्रत्ति अखंड रख्याकरे पण भगवाननी मूर्त्तिथि ना प्रत्ति क्यांई जाय नहिं ॥ तेने धारणा कहिये ॥ अने आठमी समाधि एटले शुं ॥ तो पोताना आत्माने विषे प्रत्यक्ष भगवानना स्वरुपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय करिने द्रढ स्थिति थाय ॥ ने ते भगवाननी मूर्त्तिने अखंड देख्याकरे ॥ पण प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूप मनुष्य चरित्रने विषे कोई दिवस संशय थाय नहिं ॥ ने इंद्रियो अंतःकरणनी प्रत्तियो भगवानना स्वरूपमां लिन थई जाय ॥ ने पिंड ब्रह्मांडादिक पंचविषयनो संकल्प नथाय ॥ जेम सुषुप्तिमां देहनी विस्मृत्ति थाय छे ॥ तेम पिंड ब्रह्मांडादिक पंचविषयनी विस्मृत्ति थई जाय ने एक भगवानना ज स्वरूपनी स्मृत्ति रहे त्यारे चित्तनो निरोध थाय छे ॥ अने ए विरीते चित्तनो निरोध थईने जे प्रत्यक्ष भगवाननुं स्वरूप ओलखाय छे ॥ ते जखरुं ओलख्याणु छे ॥ अने तेनो निश्चय टलतो नथी ॥ तेने समाधी कहिये ॥ ने मां यम नियम आसन ने प्राणायाम ॥ ए चार साधने करिने तो एक धर्म सिद्ध थाय छे ॥ अने प्रत्याहार एक साधने करिने आत्मनिष्ठारुप ज्ञान सिद्ध थाय छे ॥ अने ध्यानरुपि एक साधने करिने वैराग सिद्ध थाय छे ॥ अने धारणा रुपि एक साधने करिने नवधा भक्ति रुपि साधन भक्ति सिद्ध थाय छे ॥ अने समाधि रुपि एक साधने करिने ॥ प्रेमलक्षणा रूपि सिद्ध भक्ति सिद्ध थाय छे ॥ ए विरिते प्रत्यक्ष भगवान् तथा प्रत्यक्ष भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागी निर्वासनिक संत ते अष्टांगयोगरुप साधने करिने धर्म ज्ञान वैराग्ये सहित प्रेमलक्षणा भक्ति सिद्ध करावे छे अने भक्तिये करिने प्रत्यक्ष भगवान मनुष्य स्वरूपने विषे सर्वोपरि पुरुषोत्तम अक्षरातितपणानो निश्चय थाय छे ॥ अने ते जिव ब्रह्मरुप थई अक्षरधामने पामे छे ॥ माटे प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतनो विश्वास ने तेने विषे प्रिति जेने होय ॥ तेने ज मनुष्य स्वरूप भगवान ओलखाय छे ॥ अने जेने प्रत्यक्ष भगवान ने प्रत्यक्ष भगवानना निर्वासनिक संत तेनो विश्वास ने हेत ॥ न होय तेने कोई काले प्रगट भगवाननुं स्वरुप ओळखातुं नथी ॥ माटे एविते भगवान् ने भगवानना संत

थकिज्ञानपामेछे ॥ तेनेजप्रगटभगवाननुंस्वरूपओलखायछे ॥ नेतेनोनिश्चयकोईकालेडगतोनथी ॥ अनेतेज्ञानविना जेढोंगकरिनेकेटलाकसमाधियोकरिनेकंकुकाढेछे ॥ तथासाकरोकाढेछे ॥ तथालविंगकाढेछे ॥ तथासमाधिमांमा ला लावेछे ॥ तथाफूलनाहार लावेछे ॥ इत्यादिकवस्तुसमाधिकरिनेदेखाडेछे ॥ तेसर्वेकपटछे ॥ पणतेकोईकालेस त्यनथी ॥ माटेपरपंचछे ॥ नेतेपापिछे ॥ तेएवाढोंगकरिनेजगतनापोताताकोनेविश्वासआणाविनेतेनापासेथीअलि द्रव्यनेरसास्वादरूपिविषयनेभोगवेछे ॥ नेपोतेपणभ्रष्टथायछे ॥ नेतेनोजेविश्वासकरे ॥ तेनेपणभ्रष्टकरेछे ॥ अनेतेबेमरि नेघोरनर्कमांजायछे ॥ माटेतेसमाधियोखोटिछे ॥ अनेआगलकहिजेज्ञानसमाधीतेसत्यछे ॥ तेसमाधिप्रगटभग वानने प्रगटभगवान थकिज्ञानपामिनेपंचविषयनोत्यागकरिनेनिरवासनीक थयाएवाजे भगवानना संत तेनीपा सेजहोयछे ॥ पणतेविना बिजामनुष्यदेवब्रह्मादिककोईपासे तेसमाधिहोयनहिं ॥ माटेप्रगटभगवानने भगवान-नासंतथकिज भगवाननुमनुष्यस्वरुप ओलखायछे ॥ तेजसत्यछे ॥ एनमाराप्रश्ननोउत्तरछे ॥ ॥

इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः ॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत् ॥१९॥अ गणिसें ॥२२॥ बाधिसना चैत्रवदि ॥१४॥ चतुर्दशिने दिवस ॥ महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री लिंबालिमध्येमा-हादेव श्री भिमनाथनाडेहरानी आगलचोकमादक्षणातेमूखार्विंदे विराजमानथयाहता ॥ अनेसर्वे श्वेतवस्त्रधारण कर्याहता ॥ नेमस्तकेकसंबलफेंटोधारणकर्योहतो ॥ अनेसर्वेअंगनेविषेपुष्पनाआभूषणधारणकर्यांहता ॥ अनेपोतानामुखार्विंदनीआगल साधुतथादेशादेशनाहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठिहति ॥ पछेमाहाप्रभुजीएवार्ता करिजे जेनेआत्यंतिकमोक्षपामवोहोयतेने पंच प्रकारनी शुधि थायतो ततकाल ब्रह्मरुपथईनेअक्षरधामनेपा मे ॥ तेपंचप्रकारनीशुधि ते केई तो सर्वोपरि अक्षरातित् जे पुरुषोत्तम भगवान् तेजज्यारेज्यारे प्रथ्वीउपरपधारे छे त्यारेतेथकि उपदेशपामवो ॥ अथवा ते भगवान थकि ज्ञाननेपामिने सिद्धदशानेपाम्याहोय ॥ एवाजेब्रह्मरुप

एकांतिकसाधु तेथकिउपदेश पामवो एनुंनामउपदेशस्थानीसुधिकहिये ॥ अनेउपासना करवायोग्यतो सर्वकारण सर्वआ-
धार ॥ एवाजे परब्रह्मपुरुषोतम भगवान् तेनीउपासना करवी ॥ तेउपासनानी शुधि कहेवाय ॥ अनेउपासनानोकरनारोजेउपा-
सक तेनेपृथ्वीजल तेजवायु आकाश अहंकार महततत्वने मूल प्रकृतिजे माया ॥ तेथीपरजे अक्षर ब्रह्म ते अक्षरब्रह्मतेने
पोतानुंस्वरूपमानीने शरीरमांजेहाडकांआदिकजे पृथवीनोभागछे ॥ तेपृथ्वीमांलय करिने पछे पृथ्वीमांजलने लय करिने ॥ अने
जलनोभागजेशरीरमांरुधिरादिक तेने महततज जमांलय करिने तेमहतजलने अग्निमां लय करवुं ॥ अनेशरीरजेजठराअ-
ग्निनोभाग छे तेने महतअग्निमांलयकरिने तेमहतअग्नि नेवायुमां लयकरवो ॥ अनेशरिरने विषेप्राणवायुनो भाग छे ॥ ते
नेमहतवायुमां लय करवो ॥ नेमहतवायुने आकाशमां लयकरवो ॥ अनेशरिरने विषेपोलआदिक आकाशनो भाग छे ॥
तेनेमहदाकाशमांलयकरिदेवो ॥ अनेमहदाकाशनेअहंकारमांलय करवो ॥ अनेशरीरमांजेअहंपणुंतेने वैराटमांलयक-
रिने वैराटने महततत्वमां लयकरिदेवो ॥ अनेशरीरमांजेचित्तछे तेनेमहततत्वनेविषे लय करिनेमहततत्वनेमूलमायाने वि-
षेलयकरवुं ॥ अनेशरिरमांजेबुद्धिछे ॥ तेनेमूलमायामांलयकरिनेपछे मूलमायाने अक्षरनामप्रकाशने विषेलयकरवि
अनेएमिरितेज्ञानप्रलयेकरिने अक्षरब्रह्मना भावने पामिने माहात्म्यज्ञानेयुक्त नवधा भक्तियेकरिने तेभगवानमांजोडावुं
तेनेउपासकनीशुधि जाणवि ॥ अनेशुद्धउपदेशथकीज्ञानने पाम्या एवाजे धर्मज्ञानवैरागनेमहात्म्येयुक्तभक्तियेकरिनेप्र-
त्यक्षभगवानने विषे जोडाया एवाजे शुद्ध संप्रदायवाला भगवानना भक्त तेनोजे मनक्रमवचने संग करवो तेनेसंगनी शुद्धि
जाणवी ॥ अनेनिवृतिपर एवुंजे भगवंतधाम जेनेविषेकोईप्रकारनाउपद्रवे रहित अने महामायानापासनेकापेएवी ॥ नेज्ञान
प्रकाशाएथिजे भगवाननीकथा तेजेस्थानकनेविषथतिहोय ॥ अने भगवानना किरतन थतांहोय ॥ तथा भगवाननेप्रसन्नकर-
वासारु व्रतउच्छव तेजे स्थानकने विषे थताहोय ॥ तेस्थानके दृढ मने करिने रहेवुं तेनेस्थानकनीशुधिजाणवी ॥ तथा
अष्टावरणरूपजे अक्षरब्रह्म ते विषेरहेवानी भावनाये करिने मायानुंआवरण टाळवुं ॥ नेब्रह्माकारवृत्तिथईनेएकरस चैतन

रुपअक्षरब्रह्मते स्थानकने विषेरह्या नीभावनाअखंडाराखवि॥जेमआकाशनीदृष्टीनेपाम्यो तेने चार भूतदृष्टिमांआव-
तानथी॥तेमचेतनीदृष्टि आवरणजे अक्षर ब्रह्म तेनीस्थितिनेपाम्यो तेनेप्रकृतिनुं कार्य कांई नजरमांआवतुंनथी॥ तेनेस्थान
कनीसद्धिकहियें॥एवीरितेपंचप्रकारनीशुद्धिनेजे जे भक्तजन पामे छे॥ ते सिद्धदशानेपामिने आत्यंतिक मोक्षजे अक्ष
रधाम तेने पामिने अखंड भगवाननीसेवामांरहे छे॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥
श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत ॥१९॥ ओगणिसें॥ २२॥ बाविसना चैत्रवदी ३०॥अमांवास्यानेदिवस॥
महाराजश्रीहरिकृष्णभगवान गामश्रीदेवातज मध्येपूराणिजगननाथदाजीभाईनेघेरउत्तरादावारनाचोकमां बिराजमानथया
हता॥नेसर्वे जरिपानीवस्त्रधारण कर्यांहतां॥अने पुष्पनां आभूषण धारणकर्यांहतां॥अने ललाटने विषे कंकुनोचांदलो
कर्योहतो॥अनेजमणा हाथने विषे मोगरानापुष्पनोगुच्छ नेरुमाल धारण कर्यांहतां॥ अनेपोताना मुखारविंदनीआगलसा
धु तथा देशदेशानाहरि भक्तनीसभा भराईनेबेठिहती॥ पछे महाराज बोल्याजेसर्वे सांभलोएक वातकरवीछे॥ अने आवातक
हिशुं तेमुंनामब्रह्मविधाकहेवाय॥ अनेते ब्रह्मविधाने समजवेकरिने मायानोजेअंधकार ते जिवनेततकालटलिजाय॥जेम
सूर्यउगनेरात्रीटलिजाय॥तेमआकहिशुं जे ब्रह्म विधातेने समजवेकरिनेज्ञानरुपिप्रकाश थाय॥अनेब्रह्मरुप पोतानोआ-
त्मा साक्षात्कारदेखाय अनेते ब्रह्मने विषे परब्रह्मजे भगवान तेदेखाय॥ते ब्रह्म विधानेकहिये छियेजे आस्थूलशरिर छे॥ ते
अन्नमयकोश छे॥तेअन्नमय कोसमांप्राणमयकोशरह्यो छे॥ तेजेवो अन्नमय कोष मनुष्यनेआकारे छे तेवोजतेमां प्राणमय
कोस छे॥तेमनुष्यनेआकारे छे॥ जेमएक मनुष्यने आकारे पोलुं धातुनुंपुतलुं कर्युंहोय॥ अनेतेमांएक बिजुंपुतलुंमु-
क्युंहोय॥नेतेमांत्रीजुंपुतलुंमुक्युंहोय॥नेवलिएकचोथुं मुक्युंहोय॥नेवलि पांचमुं मुक्युंहोय॥ तेमांएक अन्नमय कोस
छे॥ तेअन्न थकिज उपज्यो छे॥ नेअन्न थकि वृद्धी पामे छे॥अनते अन्नमयकोसने प्राणमयकोसनोआधार छे॥ते प्राणहोय
त्यांसुधि अन्नमयकोस वृद्धि पामे॥अनेजो प्राणबंध थाय तो अन्नमय कोस जेस्थूलदेह तेनास थई जाय॥अने प्राणमय

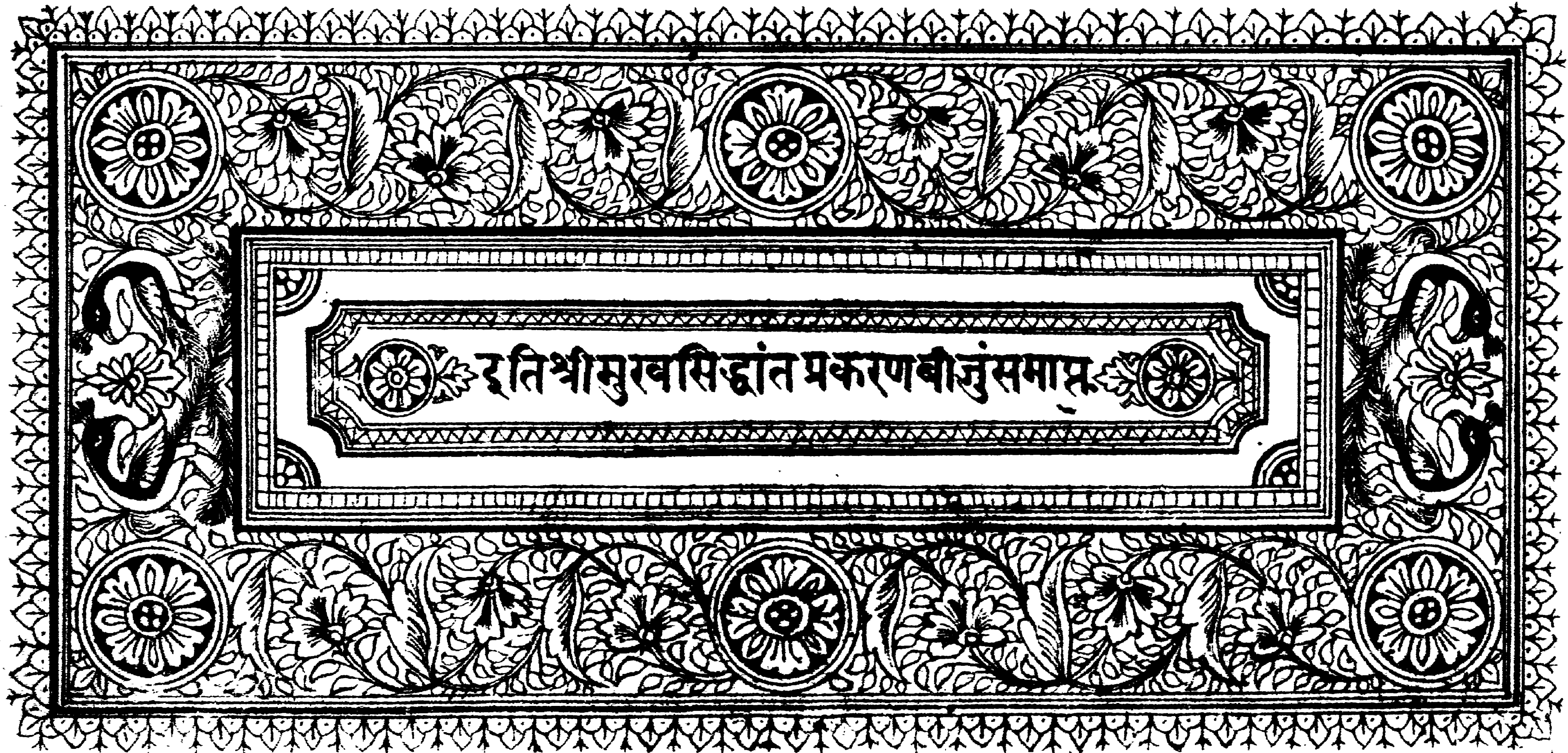
कोसने मनोमय कोसनो आधार छे केमके मन संकल्प करे ॥ तेटलुंज प्राणवायुए करिने हरवा फरवाने क्रिया करवाने समर्थ थाय ॥ केमके अन्ननो कोळियो तेने हाथे करिने मोढामां मुके पण जो मनने गमतुं होय तो प्राण तेने गळा हेठउतारे अने जो मनने न गमतुं होय तो पाछुं कोळियाने काढि नाखे ॥ अने प्राणने तो आहार मात्र जेवुं तेवुं जोइये ॥ अने सारुं नरसुं तो मनने छे ॥ ते जेणे मन जीत्युं होय तेने तो जेवो तेवो आहार आपीने प्राणने संतोष पमाडे ॥ अने जेणे मन न थि जित्युं तेना प्राण कोई काळे संतोष पामता नथी ॥ माटे प्राणमय कोसने मनोमय कोसनो आधार छे ॥ अन्नमय कोसने विज्ञानमय कोसनो आधार छे ॥ ते विज्ञान बुद्धिमां रह्युं छे ॥ केमके मन तो हजारो संकल्प करे ॥ पण तेमांथी बुद्धि जे निश्चय करे ते काम कराय छे ॥ तेमां जेणे सत्पुरुषनो आश्रो करिने अधर्मना त्यागनो बुद्धिमां निश्चय कर्यो होय तेनुं मन कोई दिवस अधर्मनो संकल्प करे ज नहिं ॥ अने जेने सत्पुरुषनो आसरो नथी तेनुं मन अनंत अधर्मना संकल्प करे छे ॥ माटे मनोमय कोसने विज्ञानमय कोसनो आधार छे ॥ अने एक करतां एक घणो बळवान छे ॥ ने सूक्ष्म छे ॥ अने विज्ञानमय कोसने आनंदमय कोसनो आधार छे ॥ अने आनंदमय कोस छे ते अतिसे सुखरूप छे ॥ केमके कोईने झाटकाना घा वाग्या होय ने ते सुसोपतिमां जाय तो झाटकाना घानी पीडा टळि जाय छे ॥ अने ज्ञाने करिने देहथी नोखो आत्मा जाणिने सुखदुःखने समकळुं होय तो पण सुखदुःख आवे ते जणाया विना रहे नहिं ॥ अने सुजे एटलुं दुःख होय ने आनंदमय कोसजे सुषुप्तिमां जाय ते जेना मात्र दुःख जणाय नहिं ॥ माटे विज्ञानमय कोसने आनंदमय कोसनो आधार छे ॥ अने ते आनंदमय कोस छे ते सर्वेथी बळवान छे ॥ ने अतिशे सूक्ष्म छे ॥ ने अनादिनो छे ॥ अने आनंदमय कोस आदिक पांचे कोसने जिवात्मानो आधार छे ॥ ने ते जिवात्मा सुखरूप छे ॥ अने जिवात्मा पांच कोसमां रह्यो थको ते सर्वेने प्रकासे छे ॥ पण जिव विना पांचे कोस कांई एक करवाने समर्थ नथी ॥ ने जिव विना पांचे कोस जड छे ॥ अने जिवात्मा अविनासि छे ॥ ने चैतन छे ॥ ने जाणपणे युक्त छे ॥ अने जिवात्माना प्रकाशक अक्षर ब्रह्म छे ॥ जेम नेत्रना प्रकाशक सूर्य छे ॥ ते नेत्रनो प्रकाश पोतापासे होय ने जो अंधारी रात्र होय तो

पोतानुंशरिरपणदेखाय नहिं ॥ तेमजिवात्माना अक्षर ब्रह्म प्रकाशक छे ॥ अनेअक्षरनाप्रकाशक प्रगटपुरुषोत्तमभगवान छे
अनेजे आत्यंतिकज्ञान तेज अक्षरनुं साक्षात् स्वरूप छे॥ अनेते आत्यंतिकज्ञानभगवानपुरुषोत्तमनी पासे छे॥ मारे तेभग
वानकृपाकरिने अनंतजिवनाउद्धार करवासारु प्रथ्वीउपर मनुष्यदेहनुं धारण करे ॥ अने तेभगवान्नोजेनेसंबंधथाय
नेते भगवानथकीआत्यंतिकज्ञान पामे तेजसाक्षात्कारअक्षरब्रह्मरुपथायछे॥ अनेजिवात्मा तोकारणपणेवस्तुं ताएअ-
क्षरछे॥ पणतेनेज्यां सुधिप्रत्यक्ष भगवाननोसंबंधनथयोहोय त्यांसुधि जिव कांईकरवानेसमर्थनथी॥ मारे प्रत्यक्ष भगवान्
जेनेआत्यंतिकज्ञानआपे तेअनंतऐश्वर्य सामर्थिनेपामिने सर्वज्ञ थायछे॥ तेथकिअनंतजिवज्ञानने पामीने भगवानने मारगे चाले
छे॥ मारे प्रत्यक्ष भगवान् तेजअक्षरना प्रकाशकछे॥ अनेप्रत्यक्ष भगवान थकी जेआत्यंतिकज्ञानने पाम्यो तेजअक्षर साक्षात् छे
॥नेतेअनंतकोटिब्रह्मांडकरतांजे मूलपुरुषतेनाआधारछे॥ नेतेनाप्रकाशक छे पणप्रत्यक्ष भगवानने प्रत्यक्ष भगवानथकिआत्यं
तिकज्ञानपाम्याएवाजेप्रत्यक्षअक्षरमुक्त तेज सर्वनाआधारछे॥ ने सर्वना कारणछे॥ नेसर्वनाप्रकाशकछे॥ मारे प्रत्यक्ष भगवा
न्नेप्रत्यक्षअक्षररुपमुक्त तेनासंबंधथकि सामर्थिने पामिने पुरुषजेतेअनंतकोटिब्रह्मांडनीउत्पत्तिकरेछे॥ तेपुरुष केवाछे ॥
ने तोजेमजिवजेतेआनंदमय कोसमांरह्याथकोपांचे कोसप्रकाशेछे ॥ तेमपुरुषछे तेपोतानाधाममां रह्याथका मायानाकार्यजे
अनंतकोटिब्रह्मांडतेमांरह्याजेजिव तेजीवजीवप्रत्येजेजीवनोजेवोदेह तेवुंबल तथातेवीतेनेबुद्धि तेसरजीआपीछे॥ तेहाथी
नाजिवनेहाथीनास्थूलप्रमाणे बलने बुद्धिआपेछे॥ अनेएनोएजिव किडीनाशरिरनेधारण करे त्यारे किडीनाजेटलुंबलने कि
डीनाजेवीबुद्धिने सरजीआपे॥ अने बिजाने बिजाघणाकप्रकारनाजीवएसर्वेनेबुद्धिनेबल सरजीआपेछे॥ अनेमनुष्य नेमनुष्य
प्रमाणे बलनेबुद्धि सरजीआपीछे॥ एवीरीतेअनंतकलाओएपुरुषमांरहीछे॥ पणए सर्वे बहार द्रष्टिये करिने पुरुषमाया मांजोडा-
याथको कलेशनेपामेछे॥ जेमपाणिना लोटा तपेली भोमीमांनारवे॥ तोतेपाणी नासपामीजायछे॥ तेमएपुरुष मायामांजो
डायोथको बहारद्रष्टियेकरिनेदुःखनेपामेछे॥ अनेज्यारेसर्वथी प्रतिलोमद्रष्टि करिने पोताने प्रकाशकजे अक्षरब्रह्म तेने पो-

तानुंस्वरुपमाने त्यो तेअक्षरभावनेपामे ।। अनेपछे अक्षरनाप्रकाशकजे पुरुषोत्तम भगवान तेमांजोडाय तोए पुरुषने सूक्ष्ममायानुं आव
र्णदल्लिजाय ।। अने तेमज जीवपण पांचकोशमांअनवयक्के जोडायो छे ।। तेणे करिनेजन्ममरणना दुःखने पामे छे।। अनेज्यारे अ
क्षरभावने पाम्याए वाजेमुक्त जेपरमात्माने पमाडेएवाएकांतिकसाधुते जिवनेमले तथा परमात्मा भगवान् ते प्रत्यक्ष जिवने
मले ।। अने तेमांजीवजोडाय ।। पछे अनवयकोस तथाप्राणमयकोसएवे कोसने सत्पुरुषनाआपेला नियमतथा त्यागतथा जे
तपतेणेकरिनेजीतवा अने आत्मज्ञाने करिने तथावैरागे करिने मनोमयकोस तथाविज्ञानमयकोसए बेय जिताय छे ।। अने
प्रतिलोमद्रष्टि करिनेअक्षरना भावने पामिने पछे तेअक्षरने विषे परमात्मा पुरुषोतम भगवान् साक्षात्कार देखाय त्यारेएजि
वनेअष्ट प्रकारनीमाया पांचकोसरुपे वलगीछे ।। ते सर्वे दल्लिजाय अने केवलपदने पामे छे ।। अने भगवाननासाधर्मपणाने पा-
मेकहेतां जे भगवानकालकर्मने माया थकि रहित छे ।। तेम ते भक्तपण कालकर्मने मायारहित थायछे ।। ।।

इति श्रीसुख सिद्धांत समाप्तः ।। ।।श्री हरिकृष्णायनमोनमः ।। ।।संवत् ।।१९।।ओग-
णिसें ।। २२ ।।बाविसना वैशाखशुदि ।।१।।पडवेने दिवसमहाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री देवातजमध्ये पुराणीजगन्ना
थदाजी भाईने घेर उत्तरादाबारनाचोकमां विराजमानथया हता ।। अने सर्वे जरियानीवस्त्र धारणकर्यां हतां ।। अनेपुष्पनाहा
र धारणकर्या हता ।। अने पोतानासुखार्विंदनी आगळ साधु तथादेशदेशनाहरिभक्तनीसभा भराईने बेठि हती ।। पछेम-
हाराजनीगाडीना सारथी भक्तजवेरभाईये प्रश्नपुछ्युं जे हे महाराज त्रणप्रकारनां कर्म जे संचित प्रारब्ध ने क्रियेमाण ते-
नां शुं रुप छे ।। पछे महाराज बोल्याजे एनां रुप कहियें ।। ते सांभलो ।। जे कर्म ते शुं कहेवाय ।। तो दश इंद्रियोने चारअंतःकर
ण तेणे करिने शुभअथवाअशुभ जेजे क्रिया कराय छे तेने कर्म कहिये ।। ते केवीरीते कर्म थाय छे ।। तेने कहे छे ।। जे काने क
रीने भूंडा भूंडा स्त्रियादिक विषयनाशब्द सांभले तेणे करिने भूंडां कर्म थायछे ।। अने जो काने करिने भगवानना जस सांभले
तो रुडां कर्म थाय छे ।। अने त्वचाये करिने स्त्रियादिकना स्पर्श करे तो भूंडा कर्म थायछे ।। अने जो त्वचाये करिने प्रत्यक्ष भग-

वानना चरणनो स्पर्श करे। तथा ते भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागि साधु तेनां चरणनो स्पर्श करे तो रुडां कर्म
थायछे॥ अने नेत्रे करिने स्त्रियादिकनां भूंडां भूंडां रूप जुवे तो भूंडां कर्म थायछे॥ अने भगवानने भगवानना साधु पंचविषयना
त्यागि तेनां दर्शने करिने रुडां कर्म थायछे॥ अने जिभ्याये करीने दारु मांस आदिक भूंडां भूंडां अशुभ रस जमे तो भूंडां कर्म
थायछे॥ अने जो भगवाननो प्रसाद जिभे करिने जमे तो रुडां कर्म थायछे॥ अने वाणिये करिने भगवाननुं भजन स्मरण ना
मकिर्तन कथावार्ता करे तेणे करिने रुडां कर्म थायछे॥ अने जो भूंडा शब्द जे कोईकने वसमुं लागे तथा स्त्रियादिक नाना-
म लेईने भूंडा बोलवा तेणे करिने भूंडा कर्म थायछे॥ अने हाथे करिने असत्पुरुषनी सेवा करे तथा जिवहिंसा आदिक अशुभ
क्रिया करे ते णे करीने भूंडां कर्म थायछे॥ अने जो सत्पुरुषनी सेवा करे तो रुडां कर्म थायछे॥ अने पगे करिने स्त्रियादिक
ना विषय सारुं चालिने जाय तेणे करिने भूंडां कर्म थायछे॥ अने भगवान तथा भगवानना भक्त साधु तेने दर्शने चालिने जा-
य तेणे करिने रुडां कर्म थायछे॥ अने सिस्नुइंद्रिये करिने स्त्रियादिकना स्पर्श थकी विर्यपात तथा कोईक देव मंदिर आदि-
क पवित्र जग्यामां लघु कराय तेणे करिने अशुभ कर्म थायछे॥ अने खदरसादिकनो त्याग करिने शिस्नुइंद्रि थकि विर्यपा
त थवा न देवो॥ तेणे करिने शुभ कर्म थायछे॥ अने गुदाइंद्रिये करिने घणा आहारे करिने सत्पुरुष पासे तथा देव मंदिरमां वायु छुटे तेणे
करिने अशुभ कर्म थायछे॥ अने सूक्ष्म अहार करवो॥ तथा वायु करे एवा जे खाधानां फरसा खारां खाटां तेनो त्याग करिने शुभ
कर्म थायछे॥ गुदाइंद्रि थकि वायु न छुटवा देवो॥ तेणे करिने शुभ कर्म थायछे॥ अने मने करिने स्त्रियादिक पंचविषयना संक
ल्प करे तेणे करिने भूंडां कर्म थायछे॥ अने धर्म ज्ञान वैराग भक्ति संबंधि जे मनमां संकल्प करे तेणे करिने शुभ कर्म थायछे॥
अने बुद्धिये करिने मोईक पदार्थनो जे निश्चय करवो॥ तेणे करिने भूंडा कर्म थायछे॥ अने जे आत्मानास्वरूपनो निश्चय करवो
अथवा भगवानना स्वरूपनो निश्चय करवो॥ तेणे करिने रुडां कर्म थायछे॥ अने चित्ते करिने स्त्रियादिक पंचविषयनुं चिंत-
वन करे॥ तेणे करिने भूंडां कर्म थायछे॥ अने जो भगवाननी मूर्तिनुं चिंतवन करे तथा भगवानने भगवानना संत तेनि सेवा संबंधि


इति श्री मुखसिद्धांत प्रकरण बीजुं समाप्त.

अथश्रीमुखसिद्धांतप्रकरण-

त्रीजुं प्रारंभ.

श्री हरिकृष्ण महाराजनां

श्री मुख सिद्धांत

प्रकरण त्रीजुं.

चुडावाळा

ओझा भगवानजी लक्ष्मिराम

विगेरे हरिभक्तोए

अमदावादमध्ये

मामानी हवेलीमां अमदावाद युनाईटेड प्रिन्टिंग अने जनरल एजन्सी कंपनी" लिमिटेडना प्रेसमां

रणछोडलाल गंगाराम पासे

छपावी प्रसिद्ध कर्यां.

सने १८७८. संवत १९३४

॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत ॥१९॥ओगणिसें ॥२३॥नेविसना श्रावणशु
दि ॥२॥ बिजने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्रीखंभात मध्ये ॥ पटेल बेचर कुबेरने घेर उत्तरादा बारना चोक-
मां विराजमान थया हता ॥ नेसर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ नेमस्तके सोनेरी पाघ धारण करि हति ॥ नेपुष्पना आभूषण
सर्व अंगमां शोभि रह्यां हतां ॥ नेललाटने विषे केशरनी अरचा ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ अने पोताना मुखारविंदनी
आगळ्य साधु तथा घणाक हरि भक्तनी मोटि सभा भराईने बेठि हती ॥ पछे महाप्रभुजी कृपा करिने सर्वेने पोताना स्वरूप
नो अडग निर विकल्प निश्चे थाय तेसारु वार्ता करता हवा ॥ जेजे आवी रीते भगवानना स्वरूपने समजे तो तेने कोई
रीते भगवानना स्वरूपमां संशय थाय नहिं ॥ नेतेना अंतरमां प्रकाश थाय ॥ नेतेने मोक्षना मारग मां कांई अंतराय रहे
तो नथि ॥ हवे ते भगवान केवा छे ॥ तो जेम आ लोकमां कोईक चक्रवृति राजा होय ॥ ने तेपोतानी राजगादिये बेठो थको
कामदार पासे अनंत प्रगणाना काम करावे छे ॥ नेसर्वे प्रजानी रक्षा करावे छे ॥ ने सर्वेने पोताना हुकम प्रमाणे वरतावे छे
॥ नेपोतानी आज्ञा लोपे तेनेदंड आपे छे ॥ नेसर्वे रद्यत राजाने जमे भरे छे ॥ तेम राजाने ठेकाणे तो भगवान पुरुषोत्तम छे ॥
तेसदाय पोताना अक्षर धाम मां दिव्य सिंहासन उपर अनंत मुक्ते विंटाणा थका अखंड विराजमान छे ॥ ते भगवान केवा
छे ॥ तो दिव्य मूर्त्तिमान छे ॥ नेअनंत ऐश्वर्य ॥ अनंत प्राक्रमे युक्त छे ॥ अने पोतानी इछाये करिने पुरुष प्रकृतिने काल
ते द्वारा ए अनंत कोटि ब्रह्मांडनी उत्पत्ति स्थिति ने प्रलय करावे छे ॥ माटे भगवानने कर्ता कह्या छे ॥ अने जेम राजा
पोते नथी करता ॥ ने कामदार पासे करावे छे ॥ तेम भगवान पुरुषोत्तम पोते नथि करता ॥ अने कामदारने ठेकाणे
पुरुष प्रकृतिने काल ते द्वारे उत्पत्ति स्थिति ने प्रलय करावे छे ॥ पण पोते नथि करता ॥ माटे भगवानने अकरता
कह्या छे ॥ अने पुरुष प्रकृति प्रधान पुरुष महत्तत्व वैराट पुरुष ब्रह्मा विष्णु शिव रुषि प्रजापति देव देत्य मनुष्य पशु प-
क्षादिक जिव प्राणिमात्र सर्वे मां तारतम्यताये ॥ अंतरजामि भगवान रह्या छे ॥ माटे भगवानने सगुण कह्या छे ॥ अनेव

नी अनंत जिवोना कल्याण करवाने अर्थे पृथ्वि उपर प्रगट थाय छे ॥ त्यारे सत्य शौचादिक अनंत जीवोना कल्याण करवाने अर्थे दिव्य गुणनुं धारण करे छे ॥ मारे भगवानने सगुण कह्या छे ॥ अने तेज भगवानना स्वरूपने विषे रज तम ने सत्व एजे माईक गुण ते बिजा जियोनी पठे नथी ॥ अने भगवानने विषे रज तम ने सत्व गुण जणाय छे ॥ ते तो अनंत जिवोना कल्याण ने अर्थे जणाय छे ॥ ने अनंत जीवोने निर्गुण करवा सारु भगवान् पण ए गुण धारण करे छे ॥ जेम कोईक ना पगमां कांटो वाग्यो होय ॥ पछे ते कांटो लेईने कांटाने काढिनारवे छे ॥ तेम जीवोने त्रण गुणरूपि चेतनमां कांटो वाग्यो छे ॥ ते कांटाने काढवा सारु भगवानने विषे गुण जणाय छे ॥ पण भगवानने विषे तो माईक गुण नथि ॥ ने भगवान मनुष्य जेवा जणाय छे ॥ तो पण निर्गुण ने दिव्य मुर्ति छे ॥ मारे भगवानने निर्गुण कह्या छे ॥ अने ए भगवानने साकार कहे छे ॥ ते के विरीते कहे छे ॥ तो नित्य प्रलयमां देव दैत्य मनुष्यादिक ए सर्वेनो नाश थाय छे ॥ अने निमित प्रलयमां ब्रह्मानी सृष्टि तेमां दश लोकनो नाश थई जाय छे ॥ अने प्राकृत प्रलयमां चौद लोकनुं ब्रह्मांड सर्वे तथा महतत्व तथा प्रधान पुरुष ए सर्वे प्रकृतिनुं कार्य प्रकृतिमां लिन थई जाय छे ॥ अने आत्यंतिक प्रलयमां प्रकृति जे ते पुरुषमां लिन थई जाय छे ॥ ने पुरुष पण अक्षरना प्रकाशमां लीन थई जाय छे ॥ पछे एक अक्षर रहे छे ॥ ने ते अक्षरमां भगवान सदाय अखंड मूर्त्तिमान थका रहे छे ॥ तथा अनंतकोटि अक्षरधामने पाम्या एवा जे अक्षरमुक्त ते रहे छे ॥ मारे भगवानने साकार कह्या छे ॥ अने ए भगवाननी मूर्त्तिने विषे मायामांथी थया जे चोविस तत्व ते नथी ॥ ने भगवान मनुष्याकृति धारण करे त्यारे मनुष्य जेवा जणाय छे ॥ तो पण दिव्य मूर्त्ति छे ॥ अने जेने जेने ते भगवाननी मूर्तिनो संबंध थाय छे ॥ ते पण दिव्य भावने पामि जाय छे ॥ मारे भगवाननी मूर्त्तिने विषे माईक आकार नथी ॥ ते सारु भगवानने निराकार कह्या छे ॥ मारे आवी रीतना शास्त्रना मर्मने नथि समजता ॥ पछे विवाद करे छे ॥ अने तेणे करि बुद्धि मलिन थई जाय छे ॥ पछे तेने प्रगट भगवान ओलख्यामां आवता नथी ॥

॥ ईति श्री मुख सिद्धांत समाप्तः ॥

॥ श्रीहरिकृष्ण ॥

यनमोनमः॥ ॥संवत१९ ओगणिसें॥२३॥ नेविसना श्रावणशुदि ॥३॥ तिजने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्णभगवानग
मश्री स्वंबात मध्ये परे लाजभाईकानदासने घेर उत्तरादा बारना चोकमां विराजमानथयाहता॥नेसर्वेसोनेरियल्ल धारणक
स्यांहतांनेकंठने विषे पुष्पना घणाकंहार धारणकस्याहता॥ नेपुष्पना गजरा बाजुनेतोरानेगुच्छ धारणकस्याहता॥ अनेपोता
ना मुखारविंदनी आगल्ल सा धूतथादेशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइनेबेठिहती॥ पछेयदुराम भटे महाप्रभुजीने
हाथजोडिनेप्रस्नपुछ्युंजे आविश्वनो प्रलय ते केम थायछे॥ अनेजीवनो मोक्ष केम थाय नेमायाना बंधन थकि मुकाइने
भगवानना धामनेजीव केमपामेछे॥तेकहो॥ पछेमहाराज बोल्याजे सारुं पुछ्यु॥सांभलो तेनीवात करिये॥जेजेम स-
मुद्रमां मोटुं मांछलुं होयते झीणाजीवने गलिजायछे॥ अने तेथी वलि मोटा मघरमछ होय॥ तेमोटामोटा मांछलाने ग
लीजायछे॥ अने महामछ छे ते तो अनंतमघरमछने पण गलीजायछे॥ए दृष्टांतनुं सिद्धांत ए छे जे॥ विश्वना प्रलयने
समे मोटा मांछलाने ठेकाणे वैराटछे॥ते देवदतरूषि प्रजाप्रति मनुष्य पशु पक्षादिक सर्वेने वैराट गलिजायछे॥अ
नेमोटामघरमछने ठेकाणे प्रकृतिपुरुषछे॥ तेपोतानुं कार्य जे चोवीसतत्व प्रधानपुरुषादिक अनंतने गलीजायछे
॥अनेमहामछने ठेकाणे अक्षरछे ते एवा अनंतकोटि प्रकृतीपुरुषने गलिजायछे॥ अने एवाजे अक्षर तेने विषे दिव्य
मूर्तिथका भगवान सदाय विराजमानछे॥ अनेते भगवानना साधर्मपणाने पाम्या एवा अनंतकोटि पारषदने अ
खंड भगवाननी सेवामां हजुर रह्याछे॥ पछे उत्पत्ति समे ए भगवाननी इछाये करिने अक्षर अनवय थका पुरुष प्र-
कृतिद्वारे अनंतकोटि प्रधानपुरुष महतत्व तथा अनंतकोटि वैराट ॥तथा अनंतकोटि ब्रह्मा विष्णु शिव देवदै
त्यने मनुष्यादिक एसर्वेनी उत्पत्ति करेछे॥ पछे ते ब्रह्मांडमां सर्वोपरि सर्वकारण सर्वातित एवाजे भगवान पुरुषोत्त
म॥ ते जियो उपर कृपा करिने मनुष्याकृतिनुं धारणकरेछे॥ त्यारे ते भगवानमो जेजे संबंध थायछे॥ नेतेभगवानने वि
षे नवधा भक्तिये करिने जेजेजीव जोडायछे॥ ते सर्वेनां कल्याण थायछे॥ नेमायाने तरिने भगवानना धामने पामेछे॥

पणते विना जिव कोई काळे मायाने तरे नहिं ॥ ने जिवनुं कल्याण थाय नहिं ॥ माटे जीवनुं कल्याण तो प्रत्यक्ष भगवान्
मांजोडाय त्यारें थाय छे ॥ एसर्वे शास्त्रनो सिद्धांतछे ॥ अने अमारोपण एज सिद्धांतछे ॥ माटे तमारां मोटां भाग्य छे ॥
॥ ॥ इतिश्रीसुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥
संवत् ॥१९॥ ओगणिसें ॥२३॥ त्रेविसना श्रावणसुदि ॥४॥ चोथ्यने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात
मध्ये पटेलखुशालअ आशाराम नेघेर दक्षणादा बारना घरमां विराजमानुं थया हता ॥ ने सर्वे श्वेतवस्त्र धारण कर्यां हतां ॥
ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हती ॥ पछे श्रीहरिकृष्ण भगवान बोल्या जे सां
भळो ॥ एक तमारा अतिहितनी वारता करिये ॥ जेजे भगवानना भक्त होय तेने भगवाननें विषे प्रिति करवी ते आत्मा
रुप थईने करवी पण देहरुप थईने न करवी ॥ केमके जेम कोईक मळमुत्रनो भर्यो थको देवनी पूजा करे तो ॥ तेनी उपर
देव प्रसन्न थाय नहिं ॥ ने नाहीधोईने पूजा करे तो ते देव प्रसन्न थाय ॥ तेम पंचभूतनो विकार जे हाड मांस लोही नाडियो त्व-
चा रोम परु पाच आदिक महा मलिन वस्तुनो भरेलो एवो जे देह ते रुप थईने भगवाननी भक्ति करे छे ॥ तेना उपर अतिनो
भगवान प्रसन्न थाता नथि ॥ माटे भगवानमां प्रिति करवि ॥ ते तो आत्मा रुप थईने करवी ॥ ते आत्मा केवो छे ॥ तो स्थू
ल सूक्ष्म ने कारण एत्रण देह अने जाग्रत स्वप्न ने सुशुप्ति एत्रण अवस्था ॥ ने रज तम ने सत्व एत्रण गुण ते थकि आत्मा
नो खो छे ॥ ने देहादिक सर्वे जड छे ॥ ने नाशवंत छे ॥ ने नरक रुप छे ॥ अने आत्मा छे ते तो अभेद्य छे ॥ अछेद्य छे ॥ अविना
सि छे ॥ सुखरुप छे ॥ तेने पोतानुं स्वरुप मानवुं ॥ पण मांईक एवो जे पंचभूतनो देह तेने पोतानुं रुप मानवुं नहिं ॥
अने आत्मा छे ते पंचविषयने सुखे करिने सुखी थाय एवो नथि ने ए तो पोतेज सुखरुप छे ॥ एवुं पोताना स्वरुपने जाणि
ने मांईक जे पींड ब्रह्मांडादिक तेने नाशवंत ने दुःखरुप जाणिने तेने विषे वैराग पामिने तेनी वासनानां मूळ उखाडिने
॥ ब्रह्मरुप थईने भगवानमां प्रिति करवि ॥ तो तेना उपर भगवाननी कृपा थाय छे अने आमे वात करि ते वातने समजि

नेते प्रमाणे अमारे विषे नेअमारा संतने विषे हेत करशे ॥ तोते साथे अमारेअखंड संबंध रहेशे ॥ अनेअमारिपणा तेना उपर अतिशे कृपा थाय छे ॥ पणदेहरूपथइनेजे अमारे विषे हित करे छे ॥ तो तेअविनासी एवुं जे अमारुं धाम ॥ तथा अवि-नासि एवुं जेअमारुं स्करव तेने नथि पामतो ॥ तथा अलौकिक एवो जेअमारो महिमा ॥ तथा अलौकीक एवुं जे मारुं स्वरुप तेपण देहबुद्धिवाला नेजाणयामां नथिआवतुं ॥ केमके देहबुद्धिवाळो अतिशे भगवानना महिमा जाणे तो पुरुषप्रकृतिजेवा भगवानने जाणे ॥ अने देहबुद्धियेकरिने भगवानमां प्रीति करे ॥ तो तेप्रकृतिपुरुषना धामने पामे ॥ पणआत्यंतिक मोक्ष जे अक्षरधाम तेने देहबुद्धिवाळा पामतानथी ॥ अनेनिर्विकल्प निश्चयपण भगवानना स्वरुपनो देहबुद्धिवाळाने थतो नथी ॥ माटे नित्यप्रलय निमितप्रलय ॥ प्राकृतप्रलय ने आत्यंतिकप्रलय ॥ एचार प्रकारनो ज्ञान प्रलय करिने पछे पोताना आत्माने ने अक्षरने अभेदपणे मानीने ते अक्षरने विषे भगवाननी मूर्तिने धारिने प्रति लोमदृष्टिकरिने भगवान प्रगट जे पोताने मळ्या होय तेने वीषे प्रितिकरवि ॥ अने एविरीते समजीने जे जे अमारे विषे हेत करशे ॥ तेने ज अमारो अखंड संबंध रहेशे ॥ अने एज अमारो साचो भक्त छे ॥ नेएकांतिक भक्त छे ॥ अने एवाने देखि ने अमे अतिशे राजी थईये छिये ॥ ॥ इतिश्री सुख सिद्धांत समाप्तः ॥ ॥

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः ॥ ॥ संवत ॥ १९ ॥ ओगणिशें ॥ २३ ॥ त्रेविसना श्रावण शुदि ॥ ५ ॥ पंचमीने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री खंभातमध्ये पटेल आत्माराम रणछोडभाइने घेर उत्तरादा बारना घरमां हिंडोला उपर गादितकिया नंखाविने विराजमान थया हता ॥ ने सर्वे कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ ने पुष्पनां आभूषण धारण कर्यां हतां ॥ नेपोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे भटशिव-शंकरे प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज ॥ जीवने संसार वळग्यो छे ॥ नेतेमां जन्ममरणना दुःखने पामे छे ॥ तेथकी केम मुकाय ॥ नेजीवनुं कल्याण केम थाय ते कहो ॥ पछे माहाप्रभुजी बोल्या जे जीवनुं कल्याण तो सत्संगे करिने थाय छे ॥ ने संसार

थकिपण सत्संगे करिने मुकाय छे॥ नेजनम मरणना दुःख टलिजाय छे॥ हवे ते सत्संग ते शुं तेने कहे छे जे सत्य एवा जे
भगवानना एकांतिक नीरवासनीक पंचविषयना त्यागी संत तेनो मनक्रमवचने संग करवो॥ तेनु नाम सत्संग छे॥ मा
टे तेनो सतसंग निरंतर कर्या करथो अने सर्वे सुखना धाम एवा जे भगवान तेना स्वरुपनो ज्ञाने सहित निश्चय करवो॥ वृ
था तेना चरित्रनुं श्रवण किरतन नि ते सत्पुरुष एवा जे संत तेना मुख थकि सांभलवुं॥ ने तेमां नित्य नित्य नवो प्रेम राखवो
॥ अने सेवा आदिक नवधा भक्ति महात्मे सहित निष्काम भावे करिने करवी॥ केहे तां धर्म अर्थ ने काम तेनी वासनानो त्या
ग करिने पोताना आत्माना कल्याण ने अर्थे॥ भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे॥ भगवाननी नवधा भक्ती करथि॥ तो तेना अनंत
जनमना महा पाप होय॥ ते सर्वे भक्ति ने सत्संग रुपि अग्निये करिने बलि जाय छे॥ ने तेने भगवानना धामनि प्राप्ति थाय
छे माटे आ समे तम ने जे सत्संग मल्यो छे॥ एवो सत्संग मलवो घणो ज दुर्लभ छे॥ अने जेवुं सत संगे करिने जिवनुं रुडुं था
य छे॥ तेवुं तो जप तप व्रतादिक साधने करिने थतुं नथि॥ अने आवो सतसंग तो अनंत जन्मना शुभ संस्कार होय छे॥
तेने मले छे॥ अने सर्व साधननुं फल आवो सतसंग मलयो ते ज छे॥ अने आ जे वार्ता अमे करी छे॥ ते सर्वे शास्त्रनो रहे-
स्य छे॥ केमके पूर्वे पण जे जे भगवानना पदने पामि गया छे॥ ते पण आवे सतसंगे करिने पामि गया छे॥ अने आज पण
जे जे भगवानना पदने पामशे॥ ते पण सतसंगे करिने पामशे॥ माटे जेने आज सत्संगमां प्रतिति आवी छे॥ कहे तां आ-
धर्मानंद स्वामि तथा अक्षरमुक्तानंद स्वामिने विषे जेने प्रीति थई छे॥ तेना भाग्यनो पार नथि॥ अने ते तो सर्वे सा-
धनना पारने पामि रह्या छे॥ ॥ इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥
श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः॥ ॥ संवत॥१९॥ ओगणिसें॥२३॥ त्रेविसना श्रावण सुदी॥५॥ पंचमीने
दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंबातमध्ये नवाडि बेचरभाई उत्तमभाईने घेर उगमणा दाबारना चो
कमां विराजमान थया हता॥ ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां॥ ने मस्तके सोनेरी पाघ धारण करि हति॥ ॥ ॥३॥

नेपुष्पना आभूषण सर्वे अंगने विषे धारण कर्यां हतां ।। नेपोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरि भक्तनी सभा
भराईने बेठि हती ।। पछे श्रीहरिकृष्ण भगवान कृपा करिने बोल्या जे ।। आ जिवने शत्रु कोण छे ।। तो काम क्रोध लोभ स्वा
द स्नेह ने मान ए छ शत्रु छे ।। ते जीवने महा दुःख दे छे ।। अने तेमां कामने लोभ ए बे जन्म धरावे छे ।। अने स्वाद ने स्नेह ।।
ए बे शत्रु जे ते हाड मांस नो लोचो ।। ए बो जे देह ते मां स्थिति करावे छे ।। अने मानने क्रोध ए बे मृत्युना दुःखने पमाडे छे
।। एवि रीते ए छ शत्रु जिवने अनादिकाळना दुःख देता आव्या छे ।। अने वारंवार जिवने जन्म मृत्युना दुःखने पमाडे छे
।। ने तेणे करिने जीव अतीसे संताप ने पामे छे ।। अने ते संताप थकि जीव पोतानि मेळे कोई काळे छुटवाने समर्थ नथी थतो
।। पछे धर्मानंद स्वामिये पुछ्युं जे हे महाराज ए छ शत्रु थकि जीव केम मूकाय ।। त्यारे महाप्रभुजी बोल्या जे ।। ए छ शत्रु-
ओना नाशना करनारा भगवानने भगवानना संत छे ।। ते ज्यारे जिवने कृपा करिने प्रगट मळे ।। ने ते आत्माना स्वरू
पनुं तथा परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान आपिने ।। अधर्मनो त्याग कराविने इंद्रियो नियममां राखावे ।। अने ज्ञाने करिने
सूक्ष्म शरिरना ने कारण शरिरना विषय तेने बाळि नाखे छे ।। त्यारे ज जीव जन्म मृत्युना दुःख थकि मुकाय छे ।। प
ण जो कोईये एक इंद्रिने मोकळि मेली तो बिजी सर्वे इंद्रियो जीवने जरूर दुःख दे छे ।। ।। त्यां दृष्टांत छे ।। ।।
जेम वीस कोसनो प्रवाह चाल्यो जतो होय ने तेमां छिद्र पडवा न दे ।। ने जराक छिद्र पडे ने तरत बंध करे तो पाणि ठेका
णे पुगे ।। अने जो छिद्र पडे ने बंधन करे तो पाणि सर्वे बहार अवर्थ जाय ।। ने पाछुं बंध कर्युं ।। पण बंध थाय नहिं ।। तेम
त्यागिने तो सर्वे इंद्रियो नियममां होय ।। ते ज त्यागिनुं कल्याण थाय छे ।। ने भगवानना धामने पामे छे ।। अने जो एक इंद्रि
मो कळि मेल्ये तो तेनो वेग विषय उपर अति आकळो विस कोसनो थाय छे ।। केम के अज्ञानी जीवनी इंद्रियोनी वृति
यो नोखी नोखी जती होय ।। त्यारे तेनी वृतिमां बळ होय नहिं ।। जेम अरधा कोसनो के पा कोसनो प्रवाह होय ।। तेमां
तो कांईये वेग होय नहिं ।। तेम अज्ञानी जीवनी वृत्तियो तो फाटेली नोखी नोखी जती होय ।। तेमां वेग होय नहिं ।।

नेएनी वृत्तियो तो सदाय भ्रष्ट होय ॥ तेने कोई कहेतुं नथी ॥ अने त्यागिनी इंद्रियो नियममां होय ॥ मारे ते जोए केइंद्रने
मो कलिमे लेतो तेमां वेग भराय छे ॥ तेज्ञो नारदे त्यागिनो धर्म चुकिने कन्या नो हाथ जोयो त्यारे भ्रष्ट मन थई गयुं ॥ अ
ने सौभरियें ने नेत्रइंद्रियें करिने माछली माछलानो संग जोयो तो भ्रष्टबुद्धि थई गई ॥ अने सिंगिरूषियें जीएकर स-
नाइंद्रियें करिने रस चाख्यो तो योग थकि पड्या तो बिजा जिवनी शी गणती ॥ मारे भगवानना भक्तने ता एबो
ठराव करवो ॥ जे स्त्रि छे ते पापरूप छे ॥ ने जीवने बंधन कारि शत्रु छे ॥ मारे कोई शत्रुनो संग करवो नहिं ॥ अने ते विज
रीते ॥ लोभ स्वाद स्नेह मान ने क्रोध ए पांच दोषने पण शत्रुरूप जाणिने तेनो त्याग करिने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना
संतनी आज्ञाप्रमाणे वरतशे तो तेना शत्रुनो तत्काल नाश थई जशे ॥ ने ब्रह्मरूप थईने छतिदेहे मुक्त थशे ॥ तेदे
हने मुकिने भागवतितनु येकरिने भगवानना धाममां रहेशे ॥ ने अखंड सुख ने पामशे ॥ ॥
इति श्रीसुखसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ॥ ॥ संवत ॥ १९
॥ ओगणिसें ॥ २३ ॥ नेविसना अषाडवदि ॥ १० ॥ दशमीने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्रीखंभात
मध्ये अवाडि पिताम्बर उत्तमरामने घेर गादि तकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता ॥ अने किनखापनो सुर
वाल ने डगलि पेहेर्या हता ॥ ने मस्तके सोनेरि पाघ बांधि हती ॥ ने गुलाबरंगनो ॥ रेटो पेहेर्यो हतो ॥ ने कसुंबल
सेलुं केडे बांध्युं हतुं ॥ ने एक खभे सेलुं नाख्युं हतुं ॥ ने कंठमां पुष्पना हार पेहेर्या हता ॥ अने गुलाबना पुष्पना बाजु
बंध ने गजरा धारण कर्या हता ॥ ने पाघमां तोरा धारण कर्या हता ॥ ने कानउपर गुछ धारण कर्यां हतां ॥ ने कंकुनो
चांदलो कर्यो हतो ॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा देशदेशनां हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे
श्रीहरिकृष्ण भगवान ॥ बोल्या जे ज्ञानी ना करतां अज्ञानीनी इंद्रियो अतिशे विप्रीतभावे वरते छे ॥ ते केवि रीते व
रते छे तो अज्ञानीने श्रोत्रे करिने उजडुं बंधन थाय छे ॥ ए वा शब्दने शां भजे छे ॥ ने त्वचायें करिने पोतानुं भुं ॥१॥

दुंथायएषो स्पर्श करे छे ।।ने नाशीकाये करीनेजीवनेगंधले तां आवडतो नथि।। एथिरितेअज्ञानीजीवनी दशइंद्रियोनेचार
अंतःकरणनीव्रतियो विप्रि तभावेवरतेछे नेजीवनेशत्रुनीपेठे दुःखदे छे ॥ अनेजन्ममरणनादुःखने भोगवावेछे ॥ अने
परमेश्वरे तो पोताने भजवा सारु जिवने इंद्रियोअंतःकरण कृपा करि सरजीआप्या छे ।।ते भगवाननो महाउपगार तेने
जीव भूलिने पोतानाआत्मानुंस्वरूप भूलिनेपछे कुसंगेकरिने ।।इंद्रियोनेवस थईनेपंचविषयनी आशक्तियेकरिने आ
संसारमां ।।जन्म मृत्युनेवारंवार पामे छे ।। तेमांकेटलाकतो गर्भमां मातानाउदरमां दुखथायछे।। तथाजनम समा
ना दुःखपणकह्यांजायएवांनथी।।अने बालअवस्थानांदुःखपण अपार छे ।।अनेजोबन अवस्था मांकामलोभा
दिक शत्रुपण जीवनेअतिदुःखदे छे ।।अनेअंतसमे पण अनंतप्रकारना रोग प्रगटथायछे।। ते समेपणजीवने महा कष्टथा
यछे।।ते कष्टकोईथी कह्यांजाय एवां नथि।। ते दुःखनेतो एक भगवान विना बीजोकोईटालवाने समर्थनथी।। जेमको
ईएक पुरुष बलवान होय ।। तेनेदशवीसपुरुष भेगाथईने तेएकलाने झालिने तेने खूबमारिने तेना बलने घटाडिना
खे छे ।।पछे तपुरुष पुगवाने समर्थ थतो नथी ।। तेने तो कोईक एसर्वेने मारेएवो समर्थराजा होय ।।ते सहायकरे त्यारे तेझा
झाशत्रुथकि मुकायसे मएकलापुरूषनेठेकाणे तो आत्मा छे ।।अनेइंद्रियो अंतःकरण पंचभूतनेपंचविषय ते तो झाझानेठे
काणेछे ।।तेणेजीवने कामक्रोध लोभादिक शत्रुये करिनेहर विनाख्यो छे ।।माटे इंद्रियोअंतःकरणने पुगवानेसमर्थ थतोन
थी ।।एतो राजानेठेकाणेतोएक भगवान छे ।।तेमुकाववानेसमर्थछे तेजीवनेमलेने धर्मज्ञान वैराग भक्ति रुपिमहा बलआ
पे।। त्यारेजीवइंद्रियोरुपीशत्रुनो पराजय करिने ।।अपारसामर्थीनेपामे छे ।।त्यारे जीव ब्रह्मरूप थईने भगवानना धाम
नेपामे छे ।।माटे जेने पोतानाकल्याणनो खपहोय तेने तो प्रत्यक्ष भगवान तथा भगवानना एकांतिक साधुतेथकि ज्ञान
नेपामिने इंद्रियोनियममां करिने अंतःकरणने वषकरिने ।।ए सर्वेथकि वैराग्यनेपामिने पोतानाआत्माने ब्रह्मरूप
मानीने भगवाननुं भजनकरे छे ।।तेज साक्षात् आत्यंतिक मोक्षजेअक्षर धाम तेने पामे छे ।।पण ते विना भगवानना

धामने पामवानो बिजो उपाय नथि ॥ ते सारु जे तो आज करो ने सारु जे तो कोटि जुग केडे करो ॥ अने सारु जे तो एक वार कहे करो
॥ ने सारु जे तो जार वार कह्ह समजो ॥ पण ज्यारे त्यारे समजसो त्यारे मोक्ष थस्रो ॥ ॥ ईति श्रीमुख
सिद्धांत समाप्तः॥ ॥ श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः॥ ॥ संवत् ॥ १९ ॥ ओगणिसें ॥
२३ ॥ त्रेविसना चैतर शुदि ॥ ४ ॥ चोथ्यने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्रीखंभात मध्ये शारणछोड भाई मो
रलीदासने घेर दक्षणादा बारना ओकमां गादि तकिया बिछाविने विराजमान थया हता ॥ ने सर्वे सोने रि वस्त्र धारण क
र्यां हतां ने पुष्पनां आभूषणओ भिर ह्यां हतां ॥ अने ललाटने विषे केशरनी अरचा ने कंकुनो चांद लो कर्यो हतो ॥ अने पो
ताना मूरवारविंदनी आगे ज साधु तथा देशदेशना हरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हती ॥ पछे शारण छोड भाई मोरली
दास तथा बाई पारवति बाए बेजणे महाराजनी पूजा चंदन तथा पुष्प तथा धूपदिपे करिने आरति उतारिने भेट सामग्री
मुकिने पगे लागीने हाथ जोडीने महाराजने कह्युं जे हे मारा आतमानुं कल्याण करजो ॥ पछे महाराज बोल्या जे कल्याण तो
मायापर भगवानने मनकर्म वचने समागम करवो ॥ एज कल्याणनो मारग छे ॥ ने ते विना चौद लोकमां कांई मोक्षनो मा
रग नथी ॥ ने देव ब्रह्मादिकने पुरुषप्रकृति आदिक सर्वे सर्व लोकमां कामनीज वार्ता थाय छे ॥ पण मोक्षनी वार्ता न-
थी ॥ मोक्ष तो प्रगट भगवानने संगे करिने ज थाय छे ॥ तथा तेना एकांतिक साधु पंचविषयना त्यागि तेनो समागम तेज अ
तिशे दुर्लभ छे ॥ अने एवो सत्संग ज्यारे पोताने प्राप्त थाय त्यारे पोतानां अतिशे जमोटां भाग्य समजवां ॥ अने तेनी ज्ञानवा
र्ता सांभलवामां अतिशेज श्रध्धा राखवि ॥ अने जेने श्रद्धा नथी तेने तो सत्संग करवामां घणी खोट जाय छे ॥ अने मोक्ष-
मां पण घणो फेर रहि जाय छे ॥ जेम समुद्रने विषे स्वांत वरसे छे ॥ त्यारे छिपो उपर आविने ते स्वांतना बिंदुने झीले छे
ते मांजे अतिशे उंचि उडिने जे छे ॥ ते अमूल्य मोति थाय छे ॥ ने जे थोडिक उडिने जे छे तेनुं मोति किंमतमां आवे एवुं पां
चसें सातसें हजार बे हजार रुपैयानुं मोति थाय छे ॥ अने पाणि उपर पडि पडि झिले छे ॥ तेनां तो खोटां फटकियां मो

तीथायछे ॥ ते तो टकानां ग्रणसेंरवपे ॥ तेम प्रगट भगवानने भगवानना संतनी ज्ञानवार्ता ते स्वात नाबिंदु जे जीवछे ॥
ने संसार रूपी समुद्र छे तेमां मुमुक्षुजीवछे ॥ तेछीपने ठेकाणे छे ॥ तेमांजे खरे खरी श्रद्धाराखिने जेआमारी वार्ता
सांभलशे तेतोआ देहे ब्रह्मरूप थइने अक्षरधामनेपामशे ॥ अनेजे मध्यम श्रद्धावालाछे ॥ तेतो मोटा प्रकृति पुरुष
ना लोकथी मोटा प्रधानपुरुषना लोक तथा वैराट ब्रह्मादिक इंद्रादिकना लोकने पामे छे ॥ अने कनिष्ट श्रद्धावालाछे ॥
तेतो आ लोकमां कोईकमोटो चक्रवर्त्ति राजाथायछे ॥ अने मध्यम श्रद्धावालाछे ॥ तेतोत्रण चार जन्मे धर्मज्ञान वैराग
नेमहात्मे सहित भगवाननी भक्ति सिद्ध करिनेअक्षर धामने पामे छे ॥ अनेकनिष्ट श्रद्धावालाछे ॥ तेतो देवमांने मनु-
ष्यमां घणाकजन्म धरेछे ॥ नेज्यारे उत्तम सत्संगने पामे त्यारे ब्रह्मरूपथईने अक्षरधामने पामे छे ॥ माटे प्रगट भगवान् म
ल्याहोय ॥ तोपण श्रद्धामां घणो कफेरर देछे ॥ अनेआ लोकमांपण बेप्रकारनी स्रष्टिछे ॥ तेमांएक जिवसृष्टि छे ॥ ने
एकईश्वर सृष्टिछे ॥ ते मांजीवसृष्टिवालाछे ॥ तेतोदेहबुद्धियेवर्ते छे ॥ अनेदेहना सगां संबंधिनातजातहुं मारुं ॥
तेमांहर रवशोक दारण अइ ॥ तेमांजीवक लेशने पामे छे ॥ नेत्रिविधितापमां बल्याकरेछे ॥ केमके माईकपदार्थछे
॥ ते तो सर्वे नासवंत छे ॥ माटेनाशवंतपदार्थमां कोईकाले सुख होयजनहिं ॥ अनेजे अंतरदृष्टिवालाछे ते तोए
क परमेश्वरनेजसत्यमानेछे ॥ अने पोतानेआत्मारूप मानीने देहने मिथ्यादेखे छे ॥ अनेजाति वरणजे ब्राह्मणक्षत्रि
वैश्यशुद्र तेपणदेह जन्म्यापछी मावापे समजाव्योजे आतारुं नाम ॥ आतारु घर ॥ आ तारिजात ॥ आतारु गाम ॥ आ
तारां सगां ॥ आतारोकाको ॥ आतारी बेहेन ॥ आतारी स्त्री ॥ ईत्यादिकजे आ लोकना वेहेवारनशब्दते तोउपरथी
माबापेचोटाड्याछे ॥ अने आत्मा तो ॥ अजन्म्या ॥ अरूप ॥ अविनासि छे ॥ अनेजीवे वासनाये करिनेजेटला चोरा
सीमांजीवछे ॥ ते सर्वेनेपेट जन्म धर्याछे ॥ अने जिवे पुरुषनादेह धरिने सर्वेचोरासि मां पोतानी स्त्रियो करि छे ॥ अने
स्त्रिनादेह धरिने चोरासिमां सर्वेजीवोने पोतानाधणि कर्याछे ॥ एविरीते अंतरदृष्टिवाला समजीनेजेमचोरासि

जारवजातना सगपणने हमणां नथी मानता तेमज आदेहना संबंधीनेपण पोताना संबंधी मानतानथी ॥ अनेपोतेस्थूल सूक्ष्मनेकारण ॥ ए त्रणदेह थकिनोखोने सच्चिदानंद एवोजे आत्मा तेनेपोतानुं स्वरुपमानीने परमेश्वरे वरणआश्रमनाधर्म कह्या छे ॥ तेधर्म प्रमाणे रहिने परमेश्वरनुं भजन स्मरण करे ॥ अनेजेए विरीते पोतानाआत्मानो मोक्ष थाय ॥ तेवा उपायमां निरंतरवरत्याकरे ॥ अनेजक्त नांसुखदुःखहरखशोक हाएयद्वंद्व ते समथई जाय ॥ केमके एतोईश्वरनीईछा हशेतो तेमथशे एमसमजीनेदरखशोकादिकनो धणीथतोनथी ॥ अने आजगतनां नाशवंत पदार्थ ते पदार्थ संबंधि जे सुख ते पण नाशवंत छे ॥ तेनीईछा नथी राखताके मके आलोकनांसुखछे ते तो ज्यारे त्यारे जरुर नासथईजशे ॥ माटे परमेश्वरनाभक्त तेमाईकसुखनेनथी ईछता ॥ ने भगवानना भक्त तो अविनासि एवुंजे अक्षरधाम तथा अविनासी एवुंजे भगवानना स्वरुपसंबंधीसुख तेनेजईछेछे ॥ अनेते सुखते अतिशोदुर्लभछे ॥ पण आसमे आसत्संगमांजे नेजेने प्रतिति आविछे । तेने एसुख अतिशोसुगमछे ॥ केमके ते सुखनादाता आजप्रगटछे ॥ तेनीआज्ञायेकरीने ॥ अधर्मनोत्याग करिने भगवान भजे तेतो आलोकमांपण सुखियाथाय छे ॥ अनेदेहनेमुकिने ॥ भगवाननाधामने पामेछे ॥ नेअपार सुखने पामे छे ॥ केमकेजेने प्रगट भगवान ने भगवानना संतनो संबंधथाय छे ॥ तेजते सुखने पामेछे अने पूर्वे गोपिगोवालगोराजा भीलनतथा वांदरां ॥ तेने प्रगट भगवानने संबंध थयोतो तेपण मोटिपदवीने पामिगयाछे ॥ माटे प्रगट भगवानने भगवानना संतनो संबंधथायछे ॥ तेतो भगवान नापारसद थई रह्याछे अनेतेना मोक्षमांपण कांईजेरा मात्र अधुरुंनथी ॥ अनेदेहनुं निमितहोय त्यांसुधि देह रहेछे ॥ अनेज्यारे देहनेमुकेछे त्यारे ब्रह्ममयदेह धरावि ने भगवाननाधामनेपमाडेछे ॥

॥ईतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥

॥श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः॥

॥संवत् ॥१९॥ ओगणिसें ॥२३॥ त्रेविसनाश्रावणशुदि ॥ ६॥ छठ्यने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री खंभात मध्ये शा· रणछोडभाई मोरजिदासनेघेर हसणादाबारनाओरडानी रवेशमां

विराजमान थया हता ॥ अने सर्वे कसुंबी वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ ने मुस्तके गुलाबी रंगनी पाघ बांधी हती ॥ अने पुष्पना हार धारण कर्या हता ॥ ने फूलना गजरा ने बाजुबंध धारण कर्या हता ॥ अने पाघमां तोरा लटकता हता ने कान उपर गुलाबना पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता ॥ ने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी मोटी सभा भराईने बेठी हती ॥ पछे सर्व सभा प्रत्ये श्रीहरिकृष्ण महाराज कृपा करीने बोल्या जे ॥ अमे आज वात करवी छे ते वातने समजाय तो तेने कोई काळे प्रगट भगवानना चरित्रने विषे संशय थाय नहि ॥ अने तेने भगवानना स्वरूपनो निश्चय टळे पण नहिं ॥ ते वात करिये छिये ॥ तेने सुरत दईने सांभळो जे भगवानना दिव्य स्वरूपने जाणे छे तो तेने प्रगट भगवानना चरित्रमां संशय थाय नहिं ॥ हवे भगवाननुं दीव्य स्वरूप केवुं छे ॥ तो आंखे करिने देख्यामां आवे एवुं नथी ॥ अने वाणिये करिने वरण्यामां आवे एवुं नथि ॥ अने त्वचाये करिने स्पर्श कर्यामां आवे एवुं नथी ॥ अने नासिकाये करिने सुंघ्यामां आवे एवुं नथी ॥ ने पगे करिने त्यां जवाय एम नथी ॥ ने मनना संकल्पमां आवे एम नथी ॥ ने चित्तना चिंतवनमां आवे एम नथी ॥ ए विरीते माईक इंद्रियो अंतःकरणे करिने दिव्य स्वरूपनुं प्रमाण थाय एम नथी ॥ ॥ त्यां श्रुति छे ॥ ॥ यतो वाचो निवर्तंते ॥ अप्राप्य मनसा सह ॥ ॥ एवुं भगवाननुं स्वरूप इंद्रियो अंतःकरणथकि अगोचर कह्यां छे ॥ अने तेज भगवान सर्व कारण छे ॥ सर्व आधार छे ॥ ने सर्व नियंता ॥ ने सर्वोपरि महाराजाधिराज छे ॥ जेम आ लोकमां कोईक मोटो चक्रवर्ती राजा होय छे ते राजानी संपती धन माल हाथी घोडा गाम नगर परगणां तेनी गणति थाय नहि ॥ अने तेना गामनी पण गणती थाय नहि ॥ ने ते ते गामना पटेल पण अपार होय ॥ ने गामनी वस्ती सर्वे पटेलने वेरो आपे ॥ ने पटेल राजाने आपे ॥ अने पटेल राजाने एम प्रार्थना करे जे तमे अमारे गाम पधारो ने अमारा थकि जे वित मारी चाकरी थशे ते विकरवुं ॥ ते म राजाने ठेकाणे तो भगवान पुरुषोत्तम पुरण ब्रह्म अक्षरातित ॥ दिव्य मूर्ति थका सदाय अक्षर धाममां छे ॥ ने अनंत कोटि पारसदे विंटाणा थका ने अनंत ऐश्वर्य ॥ अनंत शक्तियो

नेअनंतदिव्यअलोकिकप्रतापेजुक्तथकाविराजमानछे ।।अनेपोतानाभक्तजननेसदायसुखआपेछे ।।अने॥ ॥
कर्तुमकर्तुनेअन्यथाकर्तुंसमर्थछे॥ अनेअनंतकोटिब्रह्मांडनाअधिपतिछे॥ अनेजेमराजानेरोलियानो
चाकरहोयतेनेठेकाणे तोअक्षरछे ।।नेप्रगणादियाननेठेकाणेतोप्रकृतिपुरुषछे॥अनेपटेलनेठेकाणेतोब्रह्मा
विष्णुनेशिवछे॥ अनेतेब्रह्मांडब्रह्मांडप्रत्येएकएकब्रह्माविष्णुनेशिवछे ।।अनेमनुसप्तृषीप्रजापतिदेवदैत्यएसर्वे
ब्रह्माविष्णुनेशिवनेभजेछे॥ अनेब्रह्माविष्णुशिवछे ।।तेमूलप्रकृतिपुरुषनेभजेछे ।।नेप्रकृतिपुरुषअक्षरनेभजेछे
।।अनेअक्षरब्रह्महारेएसर्वे भगवानपुरुषोतमनेभजेछे ।।नेभगवाननीप्रार्थनाकरेछेजेहेमहाराजकृपाकरिनेअ
माराब्रह्मांडमांपधारो ।।नेदयाकरिनेअमनेदरशनदो ।। पछेतेभगवानपुरुषोत्तमकृपाकरिनेपोतानाअलोकिकप्रताप
नेछुपाडिनेज्यांजेवुकारजत्यांतेवादेहनुंधारणाकरेछे॥ अनेजेवादेहनुंधारणाकरेछेतेप्रमाणेचेष्टाकरेछे ।।पणवि-
जोरीतेनथिकरता ।। अनेजोदेवमांदेहनुंधारणकरेतोदेवनाजेविचेष्टाकरेछे॥ अनेमनुष्यदेहधारणकरेत्यारेमनु
ष्यनाजेवीजचेष्टाकरेछे ।।अनेपशुमांदेहधरेतोपशुनाजेवीचेष्टाकरेछे ।।तेनरसिंहअवतारथयोत्यारेसिंहनाजेवी
चेष्टाकरिनेमछकछादिकनुंधारणाकर्युंत्यारेजलमांजफरयानेमछकछनाजेवीचेष्टाकरिअनेमनुष्यमांभगवानदे
हधारणकरेछेत्यारेमनुष्यनाजेवीचेष्टाकरेनेमनुष्यनाजेटलिजआवरदाबल तेनुंभगवानधारणकरेछे।। पणअधिक
पणेनवरते तेजोसतजुगमांदेहनुधारणकरेतोसतजुगनीआयुष्यप्रमाणेदेहराखे॥ अनेसतजुगनामनुष्यजेमदेहनि-
क्रियाकरेतेमभगवानपणदेहनीक्रियाकरे ।।अनेत्रेतायुगमांदेहनुंधारणभगवानकरेत्यारेत्रेताजुगनां मनुष्यनीपेठे
जसर्वेक्रियाबल नेआयुष्यतेधारणकरेछे॥अनेद्वापरमांदेहधारणकरे त्यारेद्वापरनामनुष्यप्रमाणेदेहनुंबलआयुष्य
नेक्रियातेप्रमाणेजकरेछे अनेकलिमांदेह धारणकरेछे त्यारेकलिप्रमाणेआयुष्यनेकलिप्रमाणेबलहोयनेकलिना
मनुष्यनेजेमकामक्रोधलोभमानस्वादस्नेहपक्षपातपारकुंपोतानुंहोयतेमभगवानपोतानेविषेजणावेछे।।पण

भगवानना ए सर्वे दिव्यगुण छे ॥ अने अनंतजीवना कल्याणने अर्थे छे पण बिजा मनुष्यनी पेठे कामक्रोधादिक भगवानने विषे न होय ॥ अने भगवानना संबंधने जेजे पामे तेना पण कामक्रोधलोभादिक सर्वे दोष मात्र टळि जाय छे ॥ ते ब्रह्मरूप थई-जाय छे ॥ तेने दिव्यद्रष्टिवाळा एकांतिक साधु जाणे छे ॥ ते काम भोगे करिने व्रजनी गोपियो श्रीकृष्णमां जोडाणियो तो ब्रह्मरूप थईने भगवानना धामने पामि गई ॥ माटे कामभावे स्नेहभावे लोभभावे स्वादभावे जेजे भावे भगवानमां जोडाय तो ते सर्वे ॥ ब्रह्मरूप थई जाय छे ने अक्षरधामने पामे छे ॥ माटे भगवान तो मनुष्य जेवा जणाय छे ॥ अने दिव्यभाव जणावे तो कोई जिव भगवाननुं दर्शन करवाने पण समृथ थाय नहिं ने जो मनुष्यना संकल्प केहेवा मांडे तो कोई मनुष्य पासे उभो पण रहे नहिं अने जो पोताना ऐश्वर्य देखाडे तो कोई सेवा करवा पण ढुकडुं आवि शके नहिं ॥ माटे भगवानने तो पोताना दिव्यगुण छे ॥ तेने ढंपाडवा उपरज निरंतर द्रष्टि रहे छे ॥ अने हरेक कोई कारजेमां उतावळा थई जाय तो पोताने विषे दिव्यभाव जणाई आवे छे ॥ अने कोईक समे पोताना भक्तने कृपा करिने जणावे छे ॥ जेम श्रीकृष्णे अर्जुनने विश्वरूप देखाड्युं त्यारे ते अर्जुन जोवाने समर्थ थयो नहिं ॥ ने आकुळव्याकुळ थई गयो ॥ माटे दिव्यरूप जो भगवान देखाडे तो जिवने ठिक न पडे ॥ ने स्वरूपनि भाव आवे ॥ अने कोईने प्रिति पण न थाय ॥ ने कोई जीवनुं कल्याण पण थाय नहिं ॥ केमके शास्त्रमां छे ॥ तेने शास्त्रमां नारायण कह्या छे ॥ पण सूर्यना दर्शने करिने कोईनुं कल्याण थतुं नथी ॥ अने रामकृष्ण ऋषभ कपिल देवादिक मनुष्यस्वरूप भगवान तथा नारद सनकादिक साधु ते तो मनुष्य जेवा जणाय छे ॥ अने तेमां प्रकाश पण कांई देखातो नथी ॥ अने जो अवतारमां बिठा होय त्यारे दिवो मन्नाज होय त्यारे दर्शन थाय पण ते ना दर्शन थकी अनंत जीवनां कल्याण थाय छे ॥ अने जेजे एनां वचने करिने अधर्मनो त्याग करिने धर्मने मार्गे चाले छे ॥ ते सर्वेना मोक्ष थया छे तथा जेजेन वधा भक्तिये करिने ए मनुष्य मूर्त्तिनी सेवा करे छे ॥ ते दिव्यरूप थई जाय छे ॥ ने अक्षरधामने पामे छे ॥ माटे दिव्यस्वरूप मनुष्यस्वरुप ते एक ज छे ॥ ते मनुष्य जेवा जणाय छे ॥ ते तो अनंत जीवोना कल्याणने अर्थे कृपा करिने जणाय छे ॥ पण सदाय दिव्यरूप ज छे ॥ माटे दिव्यरूप ने मनुष्यरुप ने जे

जाणे तो तेने कोई रिते भगवानना स्वरूपमां संषयथाय नहिं ॥ अने कजे एवा भगवान चरित्रकरे तोपण कोई रीते संषय थायन-
हिं ॥ तेणे भगवानना सर्वे चरित्र दिव्य जणाय ॥ अधिक अधिक भगवाननो महिमा जणातो जाय ने भगवानमां दिवसे दिवसे
स्नेह्वधतो जायछे ॥ अने पोताना हृदामां प्रकाश पण दिवसे दिवसे अधिक थतो जाय छे ॥ माटे आविरीते दिव्यभावने मनुष्यभ
वने जाण्या विना भगवानना स्वरूपनो निश्चयछे॥ तोपणदेशकालने जोगे करिने संषय थया विना रहे नहिं ॥ माटे भगवानना भ
क्तने आवात जरूर समजवानीछे॥ ॥इतिश्री मुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरि-
कृष्णाय नमोनमः॥ ॥संवत ॥१९॥ ओगणिसें ॥२३॥ त्रेविसना आसो शुदि ॥५॥ पंचमीने दिवस महा-
राजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री खंभातमध्ये सोनी किलाभईने घेर उत्तरादा बारना ओरडामां हिंडोला खाट उपर विरा
जमानथयाहता ॥ अने सर्वे कसंबल वस्त्रधारण कर्यां हतां ॥ ने कंठने विषे पुष्पना हार धारण कर्याहता ॥ अने बेहाथने वि
षे पुष्पना बाजुबंधने गजरा धारण कर्याहता ॥ ने पाघमां तोरा धारणकर्याहता ॥ ने बे कानउपर गुच्छ धारणकर्याहता
॥ ने ललाटने विषे केसरनी आड करिहती ॥ अने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बे
ठिहति ॥ पछे माहाप्रभुजी कृपाकरिने बोल्याजे भगवानना स्वरूपने जाणवुं घणुं दुर्लभछे॥ एतो पंडे भगवानने भगवानना
निरवासनीक एकांतिक संत तेजेने समजावे त्यारे समजायछे॥ ते समजवानी रीत कहियें ते सांभलो ॥ जेजेमशहेरनो राजाछे
ते पणगरासियो कहेवायछे ॥ अने गामामां गामोटी होय ते पणगरासियो कहेवाय ॥ ने होरनो चारनारो ते पणगरासियो कहेवा-
य ॥ ने चाघरी पण गरासियो कहेवाय ॥ ने झांपडो पण गरासीयो कहेवायछे। ए दृष्टांतनुं सिद्धांत एछेजे राजाने ठेकाणे तो सर्व
कारणा ॥ सर्वाधार एवाजे पुरुषोत्तम भगवानतेछे ॥ अने प्रकृति पुरुष पण भगवान कहेवायछे ॥ अने प्रधान पुरुष पण भग
वान कहेवाय ॥ अने वैराट पण भगवान कहेवाय ॥ अने ब्रह्मा विष्णु ने शिवनुं पण धणिपणुं कहेवायछे ॥ तथा इंद्रनुं पण
धणिपणुं कहेवायछे ॥ ए सर्वे कह्या ते मांएक सर्वोपरि पुरुषोत्तम भगवान विना बिजा अविधामायात्मक अधरियाग-

रासियाछे ॥ नेसाचागरासियानेसाचा भगवान तोएकजपुरुषोतमभगवानछे ॥ अनेबिजाकह्या तेतोजीवने आवरणना
करनाराछे ॥ नेजीवनेपोतामां जेडावनाराछे ॥ तेजीवनात्रात्रुछे ॥ नेसकामिछे ॥ अनेजे अनंतकोटि ब्रह्मांडनाराजाधिराजए
वाजेपुरुषोत्तम भगवानछे ते तोअतिनिरोकपालुं छे ॥ तेजीवनीउपर दयाकरिने जीवने अविधा मायाथकि मुकाववासारुं पोतेपृ
थ्वीउपर पधारेछे ॥ त्यारेजे देवकिजीवहोय तेतो सर्वे भगवाननेआसरे आवेछे ॥ अनेचोरिछिनालिदारुमाटि आदिक जेअवि
धामाया ॥ तेनोत्याग करिने परमेश्वरनुंभजनस्मरणकरेछे ॥ पछेतेनेदेखिनेजे अविधामायानाजीवछे तेअतिनोदुःखपामे
छे ॥ अनेमुमुक्षुनेभगवाननामारगथकि पाडवासारुं अनंत उपाय करेछे ॥ अविधामायाछे ॥ तेप्रथम गामना पटेलमांतथा
बिजागामना मनुष्यमांतथा माबापमां मायाप्रवेश्‍ा करिने भगवानना मारगथकि पाड्यानाउपायकरेछे ॥ पणतेनो पाड्यो
जोनपडेतोनातिलामां अविधामाया परवेस करेछे ॥ अनेनातिलानो पाड्यो नपडे तो ॥ पछेसगाभाईमातथासासूससरो
तथास्त्रिछोकरांतेमां प्रवेश्‍ाकरेछे ॥ पणतेनोपाड्यो नपडे तोपछे अविधामायाछे तेहाथघसिने अतिशोक ल्यांतकरेछे
जेहायमाराहाथमांथीगयो ॥ माटेभगवानना खरेखरा भक्तहोयनेजेनेपोतानाजीवात्मानोमोक्षकरवोहोय तेनेतोपिंड
नेब्रह्मांडसर्वेने अविधा मायारुपजाणीनेस्थूलसूक्ष्मनेकारणएत्रणदेहथकि पोतानाआत्माने नोखोसमजीने तेआत्मा
नेविषे परमात्माएवाजे प्रत्यक्ष भगवानने भगवाननाएकांतिक विषयनात्यागिसंत तेनेजएकसाचा हितकारि मानीने तेनी
जआज्ञा प्रमाणेवरतवुं ॥ जेमराजनीतिनो भणेलो राजाहोयतोपोताना राज्यमां पोतानाहुकमप्रमाणे सर्वेनेवर्तावेछे ॥ पणकोई
ईनो दाब्योदबातोनथी ॥ तेमांराजानेठेकाणे तो भगवाननाभक्त छे ॥ तेप्रत्यक्षभगवानथकि अथवा ते भगवान नाएकांति
क साधु तेथकि राजनीतिशिखीने दसइंद्रियोतथाचारअंतःकरणएसर्वेने अधर्मनोमारगत्यागकरावीने ते सर्वेने भगवान
नीसेवामांजोडिदेछे ॥ तेकानेकरिने भगवाननीकथासांभळे ॥ अनेनेत्रेकरिने भगवानने संतनांदरशन करेनेमोढेकरिने भ
गवाननाजसबोले ॥ नेहाथेकरिने भगवाननी सेवाकरे एवरीतेदसइंद्रियोनेचारअंतःकरण एसर्वेने भगवाननीसेवामां

जोडिदे तेएविरीते त्यागिहोय ने ते भगवानमां इंद्रियो अंतःकरण जोडिदे तो तेना अनंत जन्मनां पाप बलिजाय छे ने ब्रह्मरूप थाय ने भ
गवानना धामने पामे छे ॥ अने ग्रहस्थ होय ने ते पण इंद्रियो अंतःकरण भगवानमां जो डिदे तो ग्रहस्थनां पण पाप सर्वे बलीजाय छे॥
ने ब्रह्मरूप थई ने अक्षरधामने पामे छे ॥ माटे जे ने भगवानने प्रसन्न करवा होय तेने तो पोताना वरणाश्रमना धर्म मां रहिने इंद्रियो
नियममां करवां ॥ अने ज्ञानेकरिने देहथकि नोखो एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं ते आत्मा ब्राह्मण नथी क्षत्री नथी
वैश्यनथी शुद्र नथि ने आत्माने देश गाम नथी ॥ ने आत्मा तो असंगी छे ने देह तो डगलाने ठेकाणे छे अने सगां संबंधीनात जात दे-
श गाम नाम ठाम ए सर्वे देह रुपि डगला नाछे ॥ पण आत्मानुं कोई नथी ॥ ए विरीते आत्मनिष्ठा द्रढ करिने अंतःकरण वस करवुं
अने वैरागे करिने परमेश्वर विना प्रकृतिनुं कार्य ॥ सर्वे नाशवंत ने दुःखरुप जाणवुं॥ अने महात्मे सहित भगवानमां अतिशे
स्नेह करवो ॥ अने एविरीते धर्मज्ञान वैराग ने भक्ति तेने द्रढ करिने भगवानने भजे ते तो भगवानना एकांतिक भक्त कहेवाय॥
ने अनन्य भक्त कहेवाय ने तेने ब्रह्मरुप जाणवा ॥ जेम शाकरनुं नालीज होय तेनो गोटो चोरसी ने कांचली सर्वे शाकरनुं ने
ते सर्वे खवाय पण तेमां त्याग भाग करवा जेवुं नथी ॥ तेम भगवान जीवोना कल्याण ने अर्थे मनुष्य देह नुं धारण करे छे ते मनुष्य
जेवा जणाय तो पण भगवान् दिव्यमूर्ति छे ॥ पण भगवानना स्वरूपमां कांई येमाई क भाव परठवो नहि॥ ने भगवान तो दिव्यरुप
ज छे ॥ अने तेमज धर्मज्ञान वैराग्य ने महात्मे सहित भक्तिये जुक्त एवा जे एकांतिक साधु तथा एवा जे हरि भक्त सर्वे दिव्यरुप ॥ अने
ते विना सर्वे नाशवंत छे ॥ अने एवा जे भगवानना एकांतिक भक्त ते देह मुकिने भगवानना धाममां जाय छे ॥ त्यारे ब्रह्मादिक दे
व तथा वैराट पुरुष तथा प्रधान पुरुष तथा मूल प्रकृति पुरुष ए सर्वे जेम भगवान सारुं भेट्य सामग्री लावे तेमज एवा जे भगवानना
एकांतिक भक्त ते सारुं पण भेट्य सामग्री लावे छे ॥ अने ते भक्त भगवानना धाममां जाय छे ॥ त्यारे अद्भुत आनंद ने पामे छे
॥ ने सर्वोपरि सुख ने पामे छे ॥ ॥ इति श्रीमुख सिद्धांत समाप्त ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णाय न
मो नमः ॥ ॥ संवत् ॥ १९ ॥ ओगणिसें ॥ २३ ॥ त्रेविसना आसो शुदि ॥ ६ ॥ छठ्य ने दिवस महाराजश्री हरि

कृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये ॥ शा अंबालाल रणछोड भाईने घेर आथमणा बारना ओरडानी रवेसमां गादि तकिया नखावि
ने विराजमान थया हता अने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ ने मस्तक उपर कसुंबल पाघ बांधी हती ने पुष्पना आभूषण धारण
कर्यां हतां ॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा देश देशना हरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हति पछे महाप्रभूजीनी आर्ति
धून्य करीने सर्वे सभा बेठी ॥ पछे भक्त बेहेचर लक्ष्मिदासे महाराजने प्रश्न पुछ्युं जे श्री कृष्ण भगवान अरजुनने वस थया ॥
ते पूर्व जन्मनो कोई संस्कार हतो के आ जन्मनो संस्कार तेणे करिने वस थया हतो ॥ पछे श्री हरि कृष्ण महाराज बोल्या जे सां
भलो तेनी घात करियें जे भगवान तो कोईने वश थाय एवा नथी ॥ ने एतो सदाय पूरण काम छे ॥ ने अखंडानंद छे ॥ ते पोतानुं धा
स्नु करे एवा छे ॥ ते भगवान आ पृथ्वीने विषे ज्यारे ज्यारे अधर्म वृद्धिने पामे छे अने धर्मनो लोप थाय छे त्यारे भगवानना अवता-
र थाय छे ॥ ते बे प्रकारे अवतार थाय छे ॥ तेमां रावण कुंभकरण कंस सिसुपाल जरासंध हरणाकंस आदिक राजामां राक्षस प्रगट
थाय छे ॥ ते धर्मनो नाश करे छे ॥ अने साधुने कष्ट आपे छे तेना नासने अर्थे भगवानना अवतार राजामां थाय छे ॥ अने कालनी
मी आदिक तथा अवस्थामां आदिक केटलाक धर्म घातकि गुरु रुपे प्रगट थाय छे ॥ अने अधर्मनो सर्ग एवो जे काम लोभ स्वा
द स्नेह मान मोह क्रोध दंभ कपट छल असियाई र्ष्या मत्सर ए आदिक जे अधर्मनो सर्ग ते प्रगट थाय छे ॥ त्यारे एकांतिक धर्मनो
नास करे छे ॥ ने धर्म ज्ञान वैराग भक्ति तेने कष्ट आपे छे ॥ त्यारे भगवाननो अवतार थाय छे ॥ ते अधर्मना सर्गने नास करवा सा
रुं ज्ञान रुपी शस्त्र धारण करे छे ॥ ने अधर्मना सर्गने ज्ञान रुपी शस्त्रे करिने कापि नाखे छे अने एकांतिक धर्मनुं स्थापन करे छे
ते भगवान जे जे समे अधर्मनो नास करवा सारुं प्रथवि उपर पधारे छे ॥ ते भगवाने जे जे संकल्प धार्यो होय ते ते समे भ-
गवानना उपयोगमां जे जे आवे छे तेनी उपर भगवान प्रसन्न थाय छे ॥ ते कृष्ण अवतारमां कंस जरासंध सीसुपाल दुरजोध-
न दुसासन करण ए आदिक महादुष्ट हता ॥ तेने मारवा हता तेमां अरजुन उपयोगमां आव्यो ॥ माटे ते पोतानो संकल्प
सत्य करवा सारुं अरजुनने वश थया ॥ अने अरजुनमां भगवाने प्रवेश करीने असुरनो नाश कर्यो ॥ अने अरजुन पण

भगवानना भक्त हता॥ नेअनंतजन्मना अरजुननेस्कंकितभेगाथयाहता ॥ ते पोतानो संबंधकराविनेअरजुननो मोक्षकर्यो॥ त्यारे कोईकहेशे जे अरजुन भगवानना भक्त पूर्वनाहोय तो भगवाने अढार अध्याय गितानाशुंकरवा करवापडे तोए तो बिजाजीवोनाकल्याणने अर्थे कर्याछे॥ अनेबलिमुक्तनेपण भगवाननी ईछाविनापोतानी मेलेज्ञान थायनहिं॥ केमके एक भगवानज पोतेस्वतंत्रछे॥ अने बिजाजेपोताना भक्तछे ॥ तेनेतो पोतेभगवान जेटलुंजणावे तेटलुंजाणिशके॥ पण पोताने जाणे जाणवानेकोई समर्थनथी॥ तेपण श्रीकृष्णभगवाने अरजुनने कह्युं छेजेहुं तो अनादि स्वतसिद्ध छुं ॥ नेसर्वनोकरता छुं ॥ अने अनंतकोटिब्रह्मांडनीउत्पत्तिनेप्रलेतेमारीईछाये थायछे ॥ अने सूर्यचंद्रमां सर्वेमां राजकर्या थयाछे॥ अनेतुं पणअनादिनोछे॥ पणतुंनेतुंजाणतो नथी॥ अनेहुंतो तुनेपणजाणुंछुं॥ अने सर्वेजीवप्राणिमात्रना अंतरने प्रकाशुंछुं॥ माटे भगवानने अर्थेजपतपव्रतदान तथानवधाभक्ती तेनीसकामभावे अनंतजनमनाकरताहोय॥ तेने भगवानपोतानो संबंधकराविने पोतानास्वरुपनुंज्ञानआपिनेतेनो मोक्षकरेछे॥ तेगात्यमां कह्युंछेजे॥ ॥अनेकजन्मसंसिलस्ततोयांन्तापरांगतिमाटे भगवानज्यारेज्यारे पृथ्वीउपर पधारेछे॥ त्यारे मुमुक्षु तथामुक्त तेने भगवानजन्मधरावेछे॥ अने ते द्वारे पोतेजेजे समे जे धार्युंहोय तेविसेवाभक्तजन पासे करावेछे॥ तेरामावतारमां वांदराओपासे तथा हनुमानजी आदिक नलनीलजांबुवानसुग्रिव आदिक पासे सेवाकरावि॥ अने कृष्णअवतारमां पांडवो पासे सेवाकरावि ॥ माटेज्यारेज्यारे भगवाननो अवतार थायछे॥ त्यारे भगवान भक्तपासे जेजे पोतानी आज्ञाये करिने सेवाकरावेछे॥ तेसमे भक्तिरुप थायछे ॥ते भगवाने अरजुननेकह्युंजे॥ ॥सर्वधर्मान परितज्य मामेकं॥ ॥एश्लोकमां एमकह्युंछे जे सर्व धर्मनो त्यागकरिने॥ मारा चरणने पाम्य तोहुं तुंने सर्व पापथकिमुकावित्रा नेहुं कहुंएमकर्य ॥एम अर्जुनने श्रीकृष्णभगवानेकह्युं पछेतेप्रमाणे अर्जुने निसंकथईने कर्युं तो भगवान अरजुनने वराथया॥ माटे जे समो अरजुनने आव्योहतो॥ तेसमो आजतमारे आव्योछे॥ तेसमाने ओलखीलेवो ॥ ने भगवाननीजेमरजीहोयतेम करवुं ॥ अनेपोते भगवानने वशथाय तो भग-

वान पण पोताने वश थायछे ।। ते सावधान थईने पोताना सुखसारु आदेहे करिने तो भगवाननी जसेवा करवी ।। ने जीवे छोक-
रां त्यांने अर्थे लोकनी मोटप्यने अर्थे घणाएक खरच कर्याछे ।। अने तेनुं फलपण नाशवंत छे ।। अने भगवानने अर्थे तो कोई
क संस्कारी छे ते करेछे ।। अने जेणे जेणे प्रगट भगवानने अर्थे कर्याछे तेतो अविनाशी थईगयाछे ।। तेवा शास्त्रमांपण लख्याछे
।। माटे मने वचने करमे करिने जे भगवान संबंधी सेवा थाय एज मनुष्य जन्मनो लाभछे ।। अने पोताना आत्माना मोक्षमां एट
लुंज काम आवेछे ।। ।। इतिश्री मुखसिद्धांत समाप्तः ।। ।। श्रीहरिकृष्णा
यनमोनमः ।। ।। संवत ।। १९ ।। ओगणिसें ।। २३ ।। त्रेविसना ।। श्रावणशुदि ।। ८ ।। अष्टमिने दिवस माहाराज
श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये सुतार रणछोड भाईने घेर उगमणे बार घरना ओरडामां गादि तकिया नखाविने
तेउपर विराजमान थया हता ।। अने धोलो सुरवालने अंगरखुं धारण कर्युं हतुं ।। ने गुलाबी रंगनी पाघ बांधी हती ।। ने गुदोरेटो
पेहेर्यो हतो ।। ने केडे कसुंबल सेलुं बांध्युं हतुं ।। ने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगने विषे धारण कर्यां हतां ।। ने ललाटने विषे
कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ।। ने जमणा हाथने विषे रुमाल धारण कर्यो हतो ।। अने पोताना मुखारविंदनी आगल साधुत
था देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठिहती ।। पछे महाप्रभुजी कृपा दृष्टि करिने सर्वे सभा प्रत्ये बोल्या जे सर्वेन्नासने
सर्वे सत्पुरुषनो रहस्य ते आज अमे वात करशुं ।। ते वात समजाय तो कल्याणने अर्थे कांई बाकि समजवुं रहेतुं नथी ।। ते सर्वे
एकाग्र चित्ते करिने सांभलजो ।। जे माया माया कहेछे ।। ते मायानुं शुं रुपछे ।। तो देहने विषे अहंबुद्धि ने देहसंबंधी पदार्थने वि
षे ममत्वबुद्धि एज मायानुं रुपछे ।। ते मायाने टालवी ते देहने विषे अहंबुद्धि केम टले ने पदार्थने विषे ममत्वबुद्धि केम टले
तो आत्माने ज्ञाने करिने देहने विषे अहंबुद्धि टलेछे ।। अने वैराग्ये करिने भगवानना महिमाये करिने पदार्थने विषे ममताबुद्धि
टलिजायछे ।। अने ज्यारे अहंग्रंथिने ममत्वग्रंथी टलि त्यारे मायाने तरि रह्योछे ।। अने पूर्वे पण जे जे मोक्षने मारगे चाल्याछे
तेणे पण भगवानपासे प्रार्थना करिने एज माग्युंछे ।। जे देहने विषे अहंबुद्धिने ने देहसंबंधी पदार्थने विषे ममत्वबुद्धि एजेमा-

या तेथकि रक्षा करजो ॥ अने तमारा चरणारविंदने विषे प्रिति थजो ॥ अने तमारि सेवाने विषे ममत्व थजो ॥ अने तमारा एकांतिक साधु तेनो संग देजो ॥ ने तेने विषे आत्मबुद्धि थाओ एम पूर्वे भगवानने भक्ते भगवान पासे माग्युं छे ॥ मारे आज पण जे ने जेने पोताना आत्माना मोक्षनी इछा होय तेने ए रिते ज भगवान पासे मागवुं ॥ अने जेने भगवानने भगवानना साधुने विषे आत्मबुद्धि थाय त्यारे ज तेने देहने विषेथी अहंबुद्धि टले ॥ अने पदार्थने विषेथी ममता टले पण ते विना कोई काले टले नहि ॥ अने भगवानने भगवानना जे संत तेमां आत्मबुद्धि क्यारे थाय तो धर्म ज्ञान वैराग्य ने भक्ति ए चारवानां द्रढ थाय त्यारे भगवानने भगवानना जनने विषे आत्मबुद्धि थाय छे ॥ हवे ए चारनां रुप कहे छे जे प्रथम धर्मे करिने तो इंद्रियो अंतःकरणने विषयथकि पाछा वाळीने नियममां करवां ॥ अने आत्माने विचारे करिने जेम आ जगतनी तथा देहनी जे म उत्पत्ति छे ॥ तेने सांख्यशास्त्रने ताने करिने सर्वेनुं चार प्रकारना प्रलय वडे करिने सर्वेनुं निराकरण करवुं ॥ अने ए कअक्षर ब्रह्म एवा जे सतचीदने आनंदरुप जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं ॥ अने ते आत्माने विषे परमात्मा पुरुषोत्तम ते सदाय साकार मूर्तिमान थका विराजमान छे ॥ अने ते ज भगवान पुरुषोत्तम सर्वकारण सर्वाधार ते अक्षरधाममां रह्याथका अनंत जीवोनां कल्याणने अर्थे प्रगट थाय छे ॥ ते भगवाननी मूर्त्तिने हृदामां धारीने ते मूर्त्तिने विषे एकाग्रह चित्त करिने तेने विषे जोडाई रहेवुं ॥ अने ज्यारे ए भगवाननी मूर्त्तिमां जोडाणो त्यारे तेनां सर्वे साधन संपुरण थई रह्यां छे ॥ अने जप तप व्रत दान ए सर्वेनुं पण एज फल छे ॥ जे ज्ञानप्रलेक रिने आत्मारुप थईने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिमां जोडावुं ॥ अने ए रिते भगवाननी मूर्तिमां जोडाय छे ॥ त्यारे निराकार एवो जे आत्मा ते भगवानना ध्याने करिने ब्रह्ममय देह बंधाय छे ॥ जेम पारेवाना इंडामां जल नीराकार छे ॥ पण तेने साकार पारेवुं सेवे छे ॥ तो तेनो आकार बंधाईने ते पारेवा जेवुं थाय छे ॥ अने पारेवुं न सेवे तो इंडानो रस प्रथ्वीमां लय थई जाय तेम भगवाननी मूर्त्तिमां जोडाय त्यारे ज साकार ब्रह्ममय तनुं बंधायने भगवानना साधर्मपणाने पामे ॥ अने जो ज्ञानप्रलय करिने भगवाननी मूर्त्तिमां न जोडाय तो ब्रह्मसुशुप्तीमां लीन थाय छे ते पाछो कोई काले नीसरतो नथी ॥ जेम ईंडुं फुटुं तेनुं

पाछुं पारेवुं थायनहिंनेगर्भमांहोयत्यांसुधीपारेवुंपयानीजाळचअनेगर्भमांथीबाहारपण तेपारेवानोआधारहोयतोसाकारपा
रेवुंथायछे ॥ तेमजीवपण मायानेविषेछे ॥ त्यांपणभगवाननोआधार छे ॥ केमकेदेहभगवान सर्जिआपेछे ॥ अनेज्ञान
पणएभगवानथकिजपामेतोमायानेतरिने ब्रह्ममयदेह बंधाईने अक्षरधामनेपामेछे ॥ अनेजोप्रत्यक्ष साकारमूर्तिमानजे भग
वान तेनाआसराबिनाज्ञानपलेकरिने कहेछे जेहुं ब्रह्म छुं ॥ तेतो ब्रह्मनाप्रकाशमां लीनथईजायछे ॥ माटेसत्पुरुषनो समागम
करिने सुधउपासनापामिनेजो भगवाननेविषेजोडायतो आसमे अहं मम त्वरूपमायानेतरवी तेकांई कठणनथि ॥ तेम प्रगटभ-
गवाननोआसरोएतो नावमां बेसिने समुद्रतरिवो एवुंसुगमछे ॥ अनेपरोक्षपणे भगवान भजवा ते तो जेम बाहुबलेकरिने
समुद्रतरवो ते कोईकालेतरायनहिने वचमां प्राणजाय ॥ तेम प्रगटमुकिने प्रोक्ष भगवानने भजेछे तेनुंकल्याणथतुंनथी ॥ केम-
के प्रोक्षपणेतो असतपुरुषरहेछे ॥ तेतोउलटाविषयनेचालेचडावेछे ॥ माटेमनुष्यदेह तेतो वृथा जायछे ॥ नेसंसाररूपीसमु
द्रमांजन्ममृत्युनेचोरासीमांजायछे ॥ माटेज्यारेत्यारे प्रगट भगवानने भगवानना एकांतिकनिरवासनीक संतते मलेनेतेना-
स्वरुपनो निश्चयथाय नेते भगवाननीमूर्तिनुं ध्यानकरवुं ॥ तेणेकरिने मायातरवी ॥ तेकांई कठणनथी ॥ एसर्वेशास्त्रनो सिद्धांत
छे ॥ ने अमारो पणएज सिद्धांत छे ॥ ॥ ईतिश्रीमुखसीद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्रीहरिकृ
ष्णायनमोनमः ॥ ॥ संवत ॥ १९ ॥ ओगणिसें ॥ २३ ॥ त्रेविसना श्रावणवद ॥ १० ॥ दसमीने दिवस महाराजश्री
हरिकृष्ण भगवान गामश्री खंभात मध्ये सुतारलखमीरामदेवचंदने घेरउगमणे बारणे ओरडानी आगळ चोकमां गादि तकि
याबिछाविने तेउपर बिराजमान थया हता ॥ नेसर्वेक सुं बल वस्त्र धारणकर्यां हतां ॥ अने पुष्पना हार कंठमां धारणकर्या हता
नेपाघमांतोराल टकता हता ॥ नेपोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हती ॥ पछे
संध्याआरतिथयापछे ॥ महाप्रभुजी बोल्या जेआजगतमां च्यार प्रकारनाजीवछे तेकिया ॥ तो पामर विषयीमुमुक्षुनेमुक्त
तेनां लक्षणकहियेतेसांभलो ॥ जे जे पामर छे तेने तो आहारमैथुन निंद्राने भय ते मांज मूंढपणे भरपूर होय ॥ अने जे विषई

छे॥ तेतो पंचविषयने भोगवे पण धर्मनी मरजादामां रहिने भोगवे ॥ अने लोकनी लाजमोटम्य किर्तिवधारवानी इछा वरते॥ अने
जे मुमुक्षु छे तेने तो आस्तिकपणुं होयने अधर्मथी डरिने चाले॥ अने धर्ममां द्रढ रहेने सतशास्त्रनो विस्वास राखे॥ अने एका-
दशीआदिक व्रतउपवास करे ॥ अने विषयनो त्यागकरवो गमे ने विषयना त्यागी जे साधु तेनो समागम करे॥ अने तिर्थे जवुं
॥ तथा भगवानने दरशने जवुं तेमां स्रद्धा होय ॥ अने वलिएम विचार करे जे जन्म मरणनो दुःखथकि मुकावे एवा सतपुरुषने
खोल्याकरे ॥ ए मुमुक्षुना लक्षण कह्या ॥ अने जे मुक्त होय तेने तो आसंसारनां सुखगमे जनहिं ॥ अने प्रारबधकर्मने जोगे संसा
रमां रह्या होय तोपण उदासथको रहे ॥ तेने संसार गमे नहिं ॥ अने धर्मज्ञानवैरागने भक्ति तेने द्रढराखे पण कोई काले डगे नहिं
॥ अने प्रगट भगवानने श्रवणे सांभले तो ततकाल जगतना अनंत बंधनने तोडिने तथा मतपंथना बंधनने तोडिने प्रगट भगवान
पासे जइ धुगे ॥ पण कोईनो रोक्यो रोकाय नहिं तेने मुक्त जाणवो ॥ अने ए चार प्रकारना जीवोनां लक्षण कह्यां ॥ तेमां पामरने
विषई तेतो भगवानने मारगे चाले ज नहिं॥ अने जो कोई करीते जो भेलालचे करिने सतसंग थाय तोपण भालनाकुवाजेवा था-
य॥ ते भालना कुवामां उपर पाणी मीठुं ने उंडुं खोदे तो खारुं झेर पाणि नीसरे तेम विषईने पामर जीव सतसंगी थया होय ॥
नेतेना गमता प्रमाणे विषयभोग थवा दईये त्यांसुधि तो सतसंगी रहे पण जो विषयनुं खंडन करिये तो भालना कुवानी पेठे॥ तर
तहेठेथी खारुं पाणि आवि जाय ने अधर्मने मारगे चाले ने सतपुरुषनो द्रोह करे॥ अने जे मुक्त ने मुमुक्षु छे तेने तो भगवान विनाबि
जुं कांई गमे ज नहिं॥ अने भगवान तेने सुजे एवा भिडामां जे तो पण कोई रीते पाछा पडे नहिं॥ अने ते तो काने करिने भगवानना
जस सांभलीने ज परम आनंदने पामे॥ अने त्वचाये करिने भगवाननो स्पर्श करिने ज सुख माने ॥ अने नेत्रे करिने भगवानना दर-
सने करिने ज तृप्त थाय॥ अने जीभ्याये करिने भगवाननी प्रसादि तथा भगवानना जस गाईने सुख माने॥ एविरीते दस इंद्रि
यो ने चार अंतःकरण तेणे करिने भगवानमां जोडाय पण भगवान विना बिजे क्यांई ये लोभाय जनहिं॥ अने पामर ने विष-
ई तेतो इंद्रिनाजे माईक पंचविषय तेमां लोलुप होय अने तेने कोई रीतनो नियम होय नहिं॥ मारे जेने भगवान भजवा होय॥

तेने पामरने विषई जीवना संगनो त्याग करिने मुमुक्षुने मुक्त तेनो संग करिने पोताना आत्मानुं काम सुधारी लेवुं ॥ अने आ समे तो अमने मन अर्पण करे तो ते पामर होय तथा विषई होय तेनुं पण साक्षात्कार कल्याण थाय ॥ ने आ ने आ देहे पामरपणुं वेवीषई पणुं मटिने ब्रह्मरूप थईने अक्षरधामने पामे ॥ माटे जेने आ समे आ सत्संगमां प्रतिति आवी छे ॥ तेना भाग्यनो पार नथी ॥ ॥ इति श्री सुरत सिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्री हरिकृष्णाय नमो नमः ॥ ॥

संवत् ॥ १९ ॥ ओगणिसें ॥ २३ ॥ ने विसना आषाढ वदि ॥ ११ ॥ एकादशिने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये ॥ नाथा भाई गवडुनी वहु दिवाळीबाने घेर दक्षणादेवारना आगळ चोकमां ढोलीया उपर विराजमान थया हता ने श्वेत हिरकोरी धोतियुं पेहेर्युं हतुं ॥ ने श्वेत अंगरखुं पेर्युं हतुं ॥ ने गुजराती कोरा ज्यो श्वेत खेसारव भेनाख्यो हतो ॥ ने मस्तके कसुंबल तारा जो फेंटो बांध्यो हतो ॥ ने कंठमां गुंजाबना हार पेहेर्या हता ॥ ने कान उपर गुंजाबना पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता ॥ ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे महाप्रभुजी बोल्या जे जगतमां मनुष्य एम कहे छे जे पोतानो धर्म मेलीने परधर्मनुं आचरण न करवुं ॥ ते पर धर्म ते शुं तेने कहिये ते सांभळो ॥ जे आ जगत त्रण गुण थकि उत्पन्न थयुं छे ॥ तेमां रजोगुणनी दस इंद्रियो अने तमोगुणना पंचभूत ने पंच विषय अने सत्वगुणनां चार अंतःकरण ने चौद देवता ए विरीते त्रणगुणात्मक विश्व छे ॥ अने आत्मा छे ॥ ते तो जेम देहमां चोविस तत्व छे ॥ तेम पचविसमो जिवात्मा छे ॥ ते पोतानुं रुप छे ॥ ने देहनो प्रकाशक छे ॥ ने जाणनारो छे ॥ ने ज्ञानरुप छे ॥ ने हृदयने विषे रह्यो थको सुख दुःख मान अपमान हरख शोकादिक ए सर्वनो करनारो होय छे ॥ अने वळी ते आत्मा केवो छे ॥ तो सुखरूप छे ॥ ने देह तो दुःखरूप छे ॥ अने आत्मा छे ते तो अविनासि छे ॥ ने देह छे ते तो नाशवंत छे ॥ माटे आत्मा ने ने देहने घणो ज विरुद्ध भाव छे ॥ ते आत्मा जे पोतानुं स्वरुप तेने भुलीने ने नासवंत जे देह तेना सुख सारु जे कांई क्रिया करे छे ते सर्वे परधर्म छे ॥ अने स्थूल सूक्ष्म ने कारण ए त्रण देह अने जाग्रत स्वप्न ने सुषुप्ति ए त्रण

अवस्था ते नेत्तान प्रलये करिने पछे शुद्ध स्वरूप एवो जे आत्मा अक्षरब्रह्म ॥ ते रुप थईने परमात्मा एवा जे पुरुषोत्तम भगवान तेनुं भजन स्मरण ध्यान पुजन वंदनादिक जे जे मोक्षने अर्थे करवुं ॥ ते पोतानो धर्म छे ॥ माटे जे भगवानना भक्त होय तेने तो आप्रकृतिनुं कार्य जे पिंडने ब्रह्मांड ते सर्वेनुं प्रमाण करवुं ॥ अने माईक सुख छे ते सर्वेने तपासि जोवा जे ए मारा आत्माने सुख करे एम छे ॥ तेनुं प्रमाण करिने जोवुं ॥ पछे नासवंत ने दुःखरुप एवुं जे माईक सुख तेनो त्याग करिने अविनासी एवुं जे भगवानसंबंधी सुख तेने ज पामवानी ईछा राखवि एज पोतानो धर्म छे ॥ अने देहादिकना भाव जे विषेयाशक्ति ते थकि मुकावेने आत्मानो साक्षात मोक्ष करे तेज पोतानो धर्म छे ॥ अने विषयभोग थता होय ॥ ने ते बापदादानो धर्म कहेवातो होय तोपण ते पर धर्म छे ॥ त्यारे कहेशो जे बापदादानो धर्म केम मुकाय तो जीवना बापदादा तो भगवान ने भगवानना एकांतिक साधु जे नारद सनकादि शुकजी जडभरत ते छे ॥ अने बिजा तो देहना बापदादा छे ते तो चोरासिमां अनंत बापदादा कर्या छे ॥ तो कीया बापदादानो धर्म पालवो ॥ अने देहनो संबंध तो मिथ्या छे ॥ माटे ते देहनो धर्म ते पोतानो धर्म नथी ॥ अने पंचविषयथी मुकाविने आत्मानो मोक्ष करे तेज पोतानो धर्म छे ॥ अने जे अधर्मने मार्गे चाले छे ते तो महापापिया छे ॥ ने महादुष्ट छे ॥ ने परमेश्वरना द्रोहि छे ॥ केमके परमेश्वरनी आज्ञाने लोपीने अवले मार्गे चाले छे अने वेदमां वर्णाश्रमना धर्म बांधेला छे ॥ ते पण परमेश्वरना बांधेला छे ॥ ते पण परमेश्वरना वचनने लोपे छे ते तो परमेश्वरना द्रोहि कहेवाय ते तो अति घोर दुःखने पामे छे ॥ अने जे परस्त्रिनासंग ना करनारा छे ॥ तेने तो जमदुत अतिशे लोहानी स्त्रि करिने बाथ भरावे छे ॥ एवी रीते अधर्मीने जमदुत अतिशे कष्ट आपे छे ॥ ने महाचीसो नाखे छे ॥ माटे जे दैविजिव होय ॥ ने जेने पोताना आत्मानुं रुडुं करवुं होय तेने तो अधर्मनो त्याग करिने परमेश्वरनी आज्ञा प्रमाणे वरतवुं तेज पोतानो धर्म छे ॥ अने जे जे परमेश्वरनी आज्ञा प्रमाणे वरत्या छे ॥ तेज सुखने पाम्या छे ॥ अने जे जे परमेश्वरनी आज्ञा लोपीने अधर्मने मार्गे चाल्या छे ॥ ते जमहादुःखने पाम्या छे ॥ माटे आ वार्ता एकवार कहे समजो के लाखवार कहे समजो ॥ के आज समजो ॥ के लाखवरसे केडे सम-

जो ॥ नेज्यारे अधर्मनो मारग प्रवर्ते ने धर्मने मारग चाल्यो त्यारेज सुखथयो ॥ नेत्यारे जआत्मानो मोक्ष थयो ॥ पणते विनाकोईका लेसुखथाय नहिं ॥ माटेधर्म मांरहिने भगवान भजवा ॥ ने विषयनी वासना मुकवी ॥ एजपोतानो धर्मछे ॥ ने विषय भोगवा एजपरधर्मछे ॥ एसर्वशास्त्रनो सिद्धांतछे ॥ ॥ इतिश्री मुखसीद्धांतसमाप्तः ॥ ॥

श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ॥ ॥ संवत् ॥ १९ ॥ ओगणिसे ॥ २३ ॥ त्रेविसना श्रावणवदि ॥ ११ ॥ एकादशिने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्रीखंबातमध्ये परे लरघुनाथजीआशारामने घेर दक्षणादा बारना ओरडाना चोकमां बिराजमानथया हता ॥ अनेकिनखापनो सुरवालनेडगली धारणकर्यांहतां ॥ नेगुदो रेटो पेहेर्यो हतो ने सोनेरी पाघबांधीहुती ने कसुंबल से लुं एककेडे बांध्युं हतुं ॥ ने एक सेलुं खभे नाख्युं हतुं ॥ अनेललाटने विषे केशरनी अर्चा करिने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ अनेपोताना मुखारविंदनी आगल साधुतथा देशदेशना हरिभक्तनी सभाभराईने बेठि हति ॥ पछेश्रीहरिकृष्ण महाप्रभुजी बोल्याजे एक वार्ता करियेते सर्वे सांभलोजे ब्राह्मणथवुं तेवो कठणछे ॥ केमके ज्यारेजन्मने पामे छे ॥ त्यारेचारेवरण सरखां छे ॥ केमजे सर्वे जन्मे त्यारे आभडछे टलागेछे ॥ पणकांई बिजा वरणने लागेने ब्राह्मणने नलागे एमनथी माटे जन्मे त्यारे तोशुद्रकहेवाय ॥ अनेज्यारे संस्कारने पामे त्यारे द्विजथायछे ते संस्कार तो चारे वरणनेकह्याछे ॥ अनेवेदभणेत्यारे विप्रकेहेवाय ॥ अनेआत्मापरमात्माने जाणे त्यारे ब्राह्मणथाय छे केहेतां ब्रह्मरूपथईने परब्रह्मपुरुषोत्तम एवाजे भगवान् तेनेसाक्षात्कारपामे ॥ तेने ब्राह्मणजाणवा ॥ तेउपर श्लोकछे जे ॥ ॥ जनमना जायते शुद्र संस्कार द्विजयुच्यते वेदाभ्यासे भवे विप्र ब्रह्मजानाति ब्राह्मण ॥ ॥ एविरीते साक्षात् प्रत्यक्ष भगवानने माहात्मेसहित ओलखिनेतेनुं भजनकरे तेजसाचुं ब्राह्मणछे ॥ हवेते भगवाननुं महात्मकेमसमजवुं तो जेनीराखि पृथ्वी अधर रहिछे नेडोलावीडोले छे नेजेनीसक्ति मोयाछे ॥ नेजे भगवानना वरसाव्या मेघवरसेछे ॥ अनेजेनीआज्ञाये करिने औसद्धियो रतुने पामीनेफलेछे ॥ नेसमुद्र पालवि नानो मरजादा नथि

लोपतो॥ नेजेनीशक्तिकालछे॥नेजेनीशक्तिमायाछे॥ जेनीशक्तिपुरुषछे ॥जेनीशक्तिअक्षरछे ॥एआदिकअनंतशक्तियो॥ नेअनंतऐश्वर्ययुक्तएवासर्वकारणजे भगवान ते कृपा करि आजअनंतजीवोनां कल्याणकरवासारुंमनुष्यजेवाथईनेसुखआपेछे ॥ अनेएमसमजवुंजे मारा भाग्यनो पारनथी नेहुंतो कृतारथ थयो छुं ॥अने माराजपतप सर्वपूरा थई रह्यांछे॥अनेहवे मारे कांईकरवुंरह्युंनथी॥एम समजीनेप्रगट भगवाननो आश्रारो दृढ राखवो ॥ तो तेसर्वशास्त्रने भणी रह्योछे।नेसर्वशास्त्रनाअर्थनेपणजाणिरह्योछे॥अनेएविरीतेप्रत्यक्ष भगवानने नओलखेनेजपतपवृतादिक अनंत साधन करे॥ तेणेकरिनेकल्याण थतुंनथी॥कल्याणतो प्रत्यक्ष भगवाननाआश्राराबतेथायछे ॥ ॥तेगीतामांकह्युंछे॥ जे॥ ॥दैविह्येषीगुणमयिमायादुरतया॥ ॥एश्लोकमांपण पूर्वेकह्युं एजअर्थछे॥ माटेआसमे आ भरतखंडना मनुष्यना भाग्य नो पारनथी॥अनेपूर्वे जेजे गो पिगोवाल ने जोग बन्योहतो तेथी आज तमारो कोटिगणोजोगबन्योछे॥केमकेआसमानीजे वात छे॥ ते तोअजो कि कछे॥ तेमर्मनेतो अमारा खरे खरा एकांतिक भक्त छे तेजाणे छे॥पण बाह्यदृष्टि वालाने समज्यामां आवे नहिं॥अने पूर्वे पण जेजे भगवानना अवतार थया छे॥तेने पण बाह्य दृष्टि वालाजे लोक वे वारमां बुद्धिवालातेनेओलख्यामांनथीआवता॥ एतोजेने अनंत जन्मनां सुकृत उदे थाय॥ तेनेज प्रत्यक्ष भगवान ओलखाय छे॥ अनेतेजअधर्मनोत्यागकरिने प्रगट भगवाननो आश्रारोकरे छे नेतेनांजभगवान कल्याणकरेछे॥ नेतेनांजशास्त्रमां नाम लखायछे॥ ॥ईति तिश्रीमुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥ श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥

॥ ॥संवत॥१९॥ओगणिसें॥२३॥त्रेविसना श्रावणवदि॥१२॥ द्वादशीने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्रीखंबातमध्ये पटेल कुबेर तथा हरगोवनने घेर आथमणा बारनाचोकमां विराजमान थया हता॥ अनेसर्वे श्वेतवस्त्र धारणकर्यांहतां॥ने मस्तके कसुंबल फेंटो बांध्योहतो॥नेकंठमांगुलाबनापुष्पनाहार पेहेर्याहता ॥नेपोताना मुखारविंदनीआगल साधु तथा हरिभक्त नी सभाभराईनेबेठिहती पछे गामसरवईनाभक्त दुदाभाईयेप्रश्न ॥१५॥

पुछ्युंजेहेमहाराज आपृथ्वीछे॥ तेशानेआधारेरहिछे॥ अनेभगवाननुंधामकेवुंछे॥नेकेनेआधारेरह्युंछे॥ तेकहो॥ पछेमहा
प्रभुजीबोल्याजेएवातछेतेतोअजोकीकछे॥ तेजेमाईकद्रष्टिवाळाछेतेनेसमज्यामां आवतिनथी॥ अनेजेनेसाक्षात्का
रभगवाननोसंबंधथयोछे॥नेतेथकिज्ञानपामिनेदिव्यद्रष्टिजेनीथईछे॥तेने अमेवातकहिशुं॥तेनेसाक्षात्कारज्ञानेकरी
नेदेखाशे॥ तेवातकहियेतेसांभळोजेआपृथ्वीछे॥तेजळमांथीथईछे॥ नेतेपृथ्वीनेजळनोआधारछे॥अनेजळछे
तेअग्निथकिथयुंछे॥नेतेजळनेअग्नीनोआधारछे॥अनेअग्नीछेतेवायुमांथीथयोछेनेतेअग्निनेवायुनोआधारछे॥ अनेवायु
छेतेआकाशमांथीथयोनेतेवायुनेआकाशनोआधारछे॥अनेआकाशअहंकारमांथीथयोछे॥माटेआकाशनेअहंकारनो
आधारछे॥अनेअहंकारछेतेमहत्तत्वमांथीथयोछे॥नेतेअहंकारनेमहत्तत्वनोआधारछे॥अनेमहत्तत्वछेतेप्रधानपुरु
षमांथीथयुंछे॥माटेमहत्तत्वनेप्रधानपुरुषनोआधारछे अनेप्रधानपुरुषछे॥तेमूळप्रकृतिपुरुषथकिथयेलोछे॥माटेप्रधा
नपुरुषनेमूळप्रकृतिपुरुषनोआधारछे॥अनेअक्षरछे॥तेभगवाननाअंगनोप्रकाशछे॥माटेअक्षरनेभगवाननोआधार
छे॥तेसारुसर्वाधारएकभगवाननेकहेछे॥ अनेजेअक्षरछे॥तेनांबेस्वरुपछे॥तेएकतोचैतनमयप्रकाशछे॥तेनेब्रह्म
कहेछे॥चीदाकाशकहेछे॥अक्षरकहेछे॥अनेते भगवानने रह्यानुंधामछे॥अनेतेजअक्षरबिजेरुपेकरिनेमूर्ति-
मानथकाभगवानपुरुषोत्तमनीसेवामांरहेछे॥जेमवरुणदेवमूर्तिमानछे॥नेतेनुंकार्यजेजळतेनीराकारछे॥ते
ज्यारेरामचंद्रजीसमुद्रनेकांठेजईनेबाणसाध्युत्यारेसमुद्रमूर्तिमानआवीनेहाथजोडिनेउभोरह्यो॥अनेवळीसूर्य
मूर्तिमानछे॥नेतेनोप्रकाशनिराकारछे॥अनेदिवोमूर्तिमानछेनेतेनीज्वाळानिराकारछेतेमअक्षरनांपणबेस्वरुपछे
॥एकतोधामरुपेनीराकारछे॥अनेवळीबिजेरुपेकरिने॥भगवाननीसेवामांमूर्तिमानथकारहेछे॥पछेवळीगामरवं
भातनाभटप्राणशंकरेप्रश्नपुछ्युंजेहेमहाराजएअक्षरधामनापतिएवाजेपुरुषोत्तमभगवाननेतेभगवाननासाधर्म्य
पणानेपाम्याएवाजेअनंतकोटीमुक्त॥तेशुंत्यांजमताहशे॥ पछेमाहाप्रभुजीबोल्याजेएजेजमवानीवासनाछे॥तेज

पापछे॥ नेतेपापथकिमुकावुंएजमुक्तथयोछे अनेज्यांसुधिजमवानीवासनाछे तेनेजन्ममरणपणटलतुंनथी॥ अनेजेजमवुं
छे ते तेतोमाईकएवोजेदेह तेनोभावछे ॥पणआत्मानथीजमतो॥ अनेसुखदुःखमानअपमान क्षुधापिपासा आदिक
सर्वदेहनाभावछे॥ पणआत्मानाभावनथी। अनेआत्मातोअछेद्यअभेद्यअविनाशीनेसत्तारूपनेसुखरूपनेजाणना
रोद्रष्टाछे। अनेज्यारेमाईकगुणरहितथायछेत्यारेजभगवाननाधामनेपामेछे॥ अनेज्यारेभगवाननाधामनेपामेछे
त्यारेतेअलौकिकसुखनेपामेछे॥ नेतेसुखनुंप्रमाणमाईकद्रष्टिवालाथीथायएमनथी॥ अनेमाईकद्रष्टिवालानेतोए
सुखजाणवामांपणआवतुंनथी ॥जेमविष्टामांकिडापड्याहोय॥ तेविष्टामांसुखमानीनेकल्लोलकरेनेएमसमजेजेअमे
सर्वेसुखनेपाम्याछियें ॥पणएनेमनुष्यनासुखजाणवामांनआवे॥ केमकेएनीकोईकालेमनुष्यनासुखमांद्रष्टिपुगेज
नहिं॥ तेममाईकद्रष्टिवालानीभगवाननासुखमांद्रष्टिपुगतीनथी॥ एतोज्ञानेकरिनेजेनीनीवारणद्रष्टिथईहोय॥ तेभग
वाननासुखनेजाणे॥ नेभगवाननाधामनुंसुखतोअलौकिकछे॥ तेणसुखवुंद्रष्टांतआलोकमांदईयेएमनथीनेतेसुख
नालेशमात्रप्रकृतिपुरुषनेआवेछे॥ तेणेकरिनेअनंतऐश्वर्यनेपामेछे॥ नेअनंतकोटिब्रह्मांडकरवानीशक्तिनेपामेछे॥ अने
तेप्रकृतिपुरुषनासुखथकीअनंतकोटिब्रह्मांडमांअनंतकोटिप्रधानपुरुषअनंतकोटिवैराटादिकईश्वरतथाअनंतकोटि
ब्रह्माविष्णुशिवदेवदैत्यऋषिगांधर्वमनुष्यपशुपंखिएसर्वेसुखपामेछे॥ मारेपूर्वेमोटामोटाराजानेसर्वेराजनेवैभ-
वनोत्यागकरिनेवनमांतपकरवानेजतानेनारदसनकादिकशुकजीजडभरतआदिकजेलोकभगवाननासुखनेपाम
वासारुदेहनोअनादरकरीनेअतितीव्रतपकरता तेमर्वभगवाननाधामनासुखसारुंसमजीनेकरता॥ अनेआजेएणज-
नेजेनेसुखबीजापथवुंहोय॥ नेअमारेसंगेरहेवानीइच्छाहोय॥ तेनेस्थूलसूक्ष्मनेकारणएत्रणदेहथकिनोरवोएवोजेआ-
त्मातेनेपोतानुंरूपमानीनेमाईकएवाजेपंचविषयनासुखतेमांत्यागकरे॥ तेनेजन्ममारोअखंडसंबंधथावछे॥ अ-
नेजेनेमाईकपंचविषयनीवासनाहोयनेतेअमारामेगोरहेतोहोयतापणअमथकिकोडगाउछेटेछे॥ अनेजेणेपंच

विषयनो त्याग कर्यो छे ने अमारी आज्ञाये करिने अमथकि छेटे जाय तो पण अमथकि अलगुं मात्र छेटे नथी ने एना उ रमां अमे
अखंड निवास करिने रहियें छैये ॥ ए अमारो सिद्धांत छे ॥ ॥ इति श्री मुख्य सिद्धांत समाप्तः
॥ ॥ श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः ॥ ॥ संवत ॥ १९ ॥ ओगणिसें ॥ २३ ॥ त्रेविसना श्राव
णवदि ॥ १३ ॥ तेरशने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये पटेल भगत बेचर कुबेरने घेर उत्तरादा बार
ना घरना चोकमां विराजमान थया हता ॥ अने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ ने पुष्पना आभुषण सर्वे अंगमां धार्यां भी
रह्यां हतां ॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हती ॥ पछे कृपा करीने म-
हाप्रभुजी बोल्या जे तमारा सर्वेना अतिहितनी वार्ता छे ॥ ते करियें छैये जे ॥ ॥ अन्यक्षेत्रे कृतं पापं तिर्थक्षेत्रे विनश्यति
॥ तिर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति ॥ ॥ ए श्लोकनो एम अर्थ छे जे बिजे स्थानके पाप कर्यां होय ने ते तिर्थे
जाय ने अधर्मनो त्याग करिने धर्म मांहे द्रढ थईने वरते तो मोरनां पाप सर्वे नास पामे ॥ ने तिर्थमां जईने पाप करे तो ते पाप को
ई काळे छुटे नहिं ॥ ने वळि एनो बिजो अर्थ छे जे चोरासीमां अनंत देह ॥ साबज दिपडा आदिकना देह धरिने अनंत पाप कर्या छे ॥ ते
मनुष्य देह पामिने अधर्मनो त्याग करिने धर्ममां रहिने सतपुरुषनो आसरो करिने भगवान भजे तो सर्वे पाप नास थई जाय ॥ अने
मनुष्य देह पामिने जो पाप करे तो ते पाप कोई काळे छुटे नहिं ॥ अने वळि बिजो अर्थ छे जे असतपुरुषने संगे करिने चोरासि
ना जीव रखवुं वरत्यावुं ॥ आदिक अवळा उपदेशो करिने जे पाप कर्या होय ते भगवान के भगवानना एकांतिक पंथ विषय
ना त्यागी एवा जे साधु तेना संगे करिने अधर्मनो त्याग करिने तेनो आशरो करे तो पूर्वना पाप सर्वे नास पामेने भगवान के भग
वानना भक्त तेनो जो द्रोह करे ॥ तो तेनुं एवुं पाप लागे ते मोरे परोक्ष भगवाननी भक्ति करि होय ने धर्म पाळ्यो होय ते सुकृ
त सर्वे नास थई जाय ॥ ने प्रगट भगवानने तेना भक्तना द्रोहनुं एवुं पाप लागे ते कोई काळे छूटे ज नहिं ॥ ने कुसंगनां पाप प्रत्य
क्ष भगवानने भगवानना संतने संगे करिने नास पामे छे ॥ ते कुसंग करिने शुं पाप लागे छे ॥ तो विभिचारि वरले ला

एथाजेअसतपुरुष तेनाजेसब्दसांभल्यादोषछेएणेकरिनेकानइंद्रिनीव्रतिभ्रष्टथायछे॥नेअसतपुरुषनास्पर्शेकरिनेत्वचाइंद्रि-
नीव्रत्तिभ्रष्टथायछे॥नेअसतपुरुषनी प्रसादि जमवेकरिने जिभ्याइंद्रिनी वृति भ्रष्टथायछे॥अनेअसत पुरुषनेचड्याजे चंद
न पुष्पतेनीसुगंधियेकरिने नासिकाइंद्रिनीव्रती भ्रष्टथायछे॥एरीतेअसतपुरुषने संगेकरिनेदसइंद्रियो नेच्यारअंतःकर
णतेभ्रष्टथायछे॥ तेकोईकाले भगवानसनमुखचालतानथी॥नेविषयवासनायेकरिनेजीवनेचोरासीमांवारंवार जनममर
णनेपमाडेछे॥ माटेअसतपुरुषनोजेसंगतेजेवोकोईजीवनेदुःखनोपमाडनारोनथी॥ तेअसतपुरुषकेवाहोय तो उपरथी
धर्मवालाजणाताहोयने कंठियोडोकमांना खताहोय नेजीवोने धिरववा सारु तिलक करे तथा रुद्राक्षनीमालाओकंठमां
नाखेनेएवाठगाराअसतपुरुषहोयते मिथ्याधर्मनीओथ्य लेईनेतथामिथ्याशास्त्रनीओथ्यलेईनेउपरथी भक्तिनोआटोपप
जणाविने पछे जेनेशास्त्रनु ज्ञान नथी तथासतपुरुषनो समागमजेनेनथीमल्योएवाजे भोलालोकतथावीसवासीलोकतेने
प्रथम भक्तिनो भावजणावीने पछे छानाउपदेशाकरिने धर्मथकि पाडिनाखेछे॥ तेछानाउपदेशाके विरीतिकरेछे॥ तोकहे
छे तमे कालमारो ने सउमांब्रह्मभाळो॥नेउंचनीचकोणछे॥सौ भेगांबेसिनेखाओअनेवलिकहेछेजेभगवानने जाणो
छो पेदाकरेते भगवानछे॥ तोविर्यथीसर्व पेदाथायछे॥माटे विर्यतेज भगवानछे॥ बिजोकोई भगवाननथी॥एवीजातना
महाअधाधुमखोटाउपदेशानेकरेछे॥ नेएवाअवलाउपदेशादेईने परस्त्रियोनासंगकरिनेतेनुमहातमदेखाडिने इंद्रियोधो
ईनेचरणामृतकरिनेपायछे॥नेभोला लोकोनेभ्रष्टकरेछे॥तेनुकारणएछेजे विषय भोगववा सारु केवलमीथ्या भक्तिनीओ
थ्यलेईने॥ज्युक्तिकरेछे॥केमके असतपुरुषनुलक्षणएजछे॥जेसारुं मारुं खावुंने स्त्रियादिक विषयभोगववा एजअसतपुरुष
नुंलक्षणछे॥अनेजे एवाअसत पुरुष छे॥ तेनोजेजेसंगकरे तेनाएकोतेरपरिया नरकमांजायछे॥अनेअधर्मनोसर्ग छे॥
तेकुटुंबेसहितअसत गुरुनाविषे॥तथातेगुरुने विषे निवासकरिनेरहेछे॥अनेआलोकने विषे ते घणाक हेरानथायछे॥
नेमरिने पण ते रउरउ नरकमांपडेछे॥नेमहादुःखने पामेछे॥नेभयंकरएवाजे जमनादुततेने प्रहारकरिने फालिचिरवो

नरयामे छे ॥ इत्यादिक महाकष्टने असतगुरुने तेना शिष्य पामे छे ॥ ने बेहाल थाय छे ॥ माटे जेने पोताना आत्मानुं कल्याण इछवुं
होय तेने एवा असतपुरुषनो त्याग करिने सतपुरुषनो समागम करवो ने पूर्वे नारद सनकादिक शुकजी जडभरत तथा कपिलदे
व दत्तात्रिय रुषभदेव तथा रामकृष्णादिक भगवानना अवतार तेनो शुं मत छे ते पण सर्वे सतशास्त्रमां लखेलो छे ।तेनो त
पास करिने जोवुं । अने जो विषयभोग विने कल्याण थतुं होय तो पूर्वे मोटा मोटा राजा सतपुरुषनो उपदेश ग्रहण करिने
राज्यनो त्याग करिने वनमां तप करवा शुं करवा जाय अने नारद सनकादिक आदिक अनंत ते महाज्ञानने पामिने भगवान-
नी प्रसन्नताने अर्थे निरंतर तप करयां छे॥ माटे विषय भोगथे कल्याण थतुं होय तो शुं करवा तप करे अने विषयतो कुतरा गधेडा
वांदरा बोकडा पाडा ॥ एमा किया मा बेनदिकरी नो टाळो रहे छे ॥ नेवटलषुं वटलाववुं तेनो कियो मेल रहे छे ॥ माटे धर्मथकि
भ्रष्ट थईने सर्वने भेगा थई रवावुं तथा विभिचार करवो ते तो असतपुरुषनो धर्म छे ।। पण साचा मार्गी तथा साचा ब्रह्मज्ञानी त
था साचा वैष्णव छे ।ते नो धर्म स्थापन करेलो एवो नथी ने साचा सतपुरुष नो मत तो पंच्यविषयनो त्याग करिने भगवानने मारगे
चालवुं अने जो अजाणे स्त्रिनो शब्द संभळाई जाय तो उपवास करिने कानने दंड देवो॥ अने अज्ञाणे स्त्रि नो हाथ अडि
जाय तो तेहाथने कापी नाखवो ने अजाणे स्त्रि सामी दृष्टि जाय तो ते आंखने फोडि नाखवि ॥ अने जे काळ मारवानुं कह्युं छे॥
ते काळ तो मृत्युनुं नाम छे ॥ तेने पंचविषयनी वासना टाळीने जन्म मृत्यु रुपि काळने मारवो कहे तां जन्ममृत्यु टळे त्यारे काळ
मुवो कहेवाय ॥ अने ब्रह्म भाळवानुं कह्युं छे ते तो एम कह्युं छे जे स्थूळ सूक्ष्म ने कारण ए त्रण देहथी नोखो ने स्वरुपने प्रकाश
वानार बीजे ब्रह्म रुप आत्मा तेने अंतरदृष्टि करिने ध्यानमांहे सिने जोवो पछे ते प्रकाश रुप आत्मा देखाय ने ते आत्माने वि-
षे परमात्मा देखाय तेने जन्ममरणनां दुःख मटि जाय त्यारे ब्रह्म भाळ्यो कहेवाय॥ ए थिरीते ब्रह्म भाळवानुं कह्युं छे पण भे-
गा बेसिने अहार वरणने रवावुं एम नथी कह्युं ने साचा मारगी तथा साचा ब्रह्मज्ञानी नो मत तो एम छे जे चोरि छिनाळी न करवी ॥
तथा वटलवुं वटलाववुं नहि ।। जिवहिंसा न करवी दारु मांस न खावा ।। तथा कुड कपट आदिक अधर्मना सर्गनो त्याग करवो

नेकेवलआत्मारुपथईनेपरमात्मानेभजवाएजसाचामारगीनो ॥तथासाचाब्रह्मज्ञानीनोमतछेनेतेअमनेएवाअतिप्रीया
लागेछे ॥माटेआजपणजेनेजेनेकल्याणनोखपहोयतेअमारेवचनेकरिनेअधर्मनोत्यागकरेतोतेमाहापापिहोयनेमहादुष्ट
कर्मकर्यांहोयतोपणएजोअमारेवचनेकरिनेदुष्टकर्मनोत्यागकरिनेनियमधारणकरेतोतेनेब्रह्मरुपकरिनेअमारा
अक्षरधाममांलेईजईये ॥माटेआसमेतोकोटिजनमेजपेतपेकरिनेपणकामनथायतेजोआजअमारिवातमांस्मरत
राखिनेसांभलेतोतेनेश्रवणमात्रेकरिनेपंचविषयनोरागउखडीजायछेमाटेजेनेजेनेअनंतजन्मनासुकृत्यभेगाथायछे
तेनेजन्ममारोसंबंधमलेछे ॥पणथोडापुन्यवालानेनथीमलतो ॥ ॥ईतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥

॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत॥१९॥ओगणिसें॥२३॥त्रेविसनाश्रावण
वदि ॥१४॥चौदसनेदिवस महाराज श्रीहरिकृष्णभगवान गामश्रीखंबातमध्ये पटेलबेचरकुवेरनेघेर उत्तरादाबारना
घरनाचोकमां विराजमानथयाहता ॥नेसर्वश्वेतवस्त्रधारणकर्यांहतां ॥नेमस्तकेकसुंबलफेंटोधारणकर्योहतोनेपुष्प
नाहारधारणकर्याहता ॥नेकंकुनोचांदलोकर्योहतो ॥नेपोतानामुखारविंदनीआगलसाधुतथादेशदेशनाहरिभक्त
नीसभाभराईनेबेठिहति ॥पछेमहाप्रभुजीबोल्याजे ॥ ॥यदायदाहिधर्मस्यग्लानीर्भवतीभारतअभ्युत्थान-
मधर्मस्यतदात्मानंसृजाम्यहं ॥ ॥एश्लोकमांएमकह्युंछेजेज्यारेज्यारेधर्मग्लानीपामेछे ।नेअधर्मवृद्धिपामेछे
त्यारेश्रीकृष्णभगवानकहेछेहुंप्रगटथाउंछुं ॥नेअधर्मनोनाशकरुंछुंनेधर्मनुंस्थापनकरुंछुं ॥अनेवलिअरजुननेएम
कह्युंछेजे॥ ॥सर्वधर्मानपरित्यज्यमामेकंशरणंव्रज्यअहंत्वांसर्वपापेभ्योमोक्षयिष्यामिमाशुचः॥ ॥
एश्लोकमांएमकह्युंछेजेसर्वधर्मनोत्यागकरिनेमारेशरणेआव्य ॥हुंतनेसर्वपापथकिमुकावीश ॥माटेएकठेकाणेकह्युंजे
धर्मस्थापवाप्रगटथाउंछुंनेवलीकह्युंजेधर्मनोत्यागकरिनेहुंकहुंएमकरमाटेपरस्परविरुध्धआव्योएकेमहशेएप्रश्नस-
र्वसाधुनेपुछियेछिये ॥पछेसाधुएउत्तरकरवामांड्योपणथयोनहि ॥पछेअक्षरमुक्तानंदस्वामिबेहाथजोडिनेकह्युंजेहेमहारा

जतमे अन्तरकह्यो त्यारे पछो ।। पछे महाप्रभुजी बोल्याजे धर्म तो बे प्रकारनो छे एक तो अलौकिक धर्म छे ।। ने एक लौकिक धर्म छे ते मां जे लौकिक धर्म छे ।। तेनुं फल तो नाशवंत छे ।। ने अलय छे ते सारु भगवानना अवतारनथी थता ।। भगवानना अवतार तो अलौकिक जे भागवत धर्म जे साक्षात्कार भगवानना धामने पमाडे ते सारु भगवानना अवतार प्रगट थईने ते भागवत धर्मनुं स्थापन करे छे ।। माटे गुणने विषे वरतता एवो जे अरजुन तेने लौकिक धर्मनी दृष्टिये करिने भागवतधर्मसमज्यामां नोतो आवतो ।। अने भागवतधर्मना नाश करनारा ने अधिम्याए करिने मदोन्मत्त एवा जे कौरव तथा जे कौरवना पक्षना तेमनो भगवानने नाश करवो हतो ।। अने साधु जे धर्म ज्ञान वैराग्यने महात्म्ये सहित भक्ति इत्यादिक गुणे जुक्त जे भगवानना भक्त साधु जे जक्त ना उद्धार रूप तेनी जे रक्षा करवी तेने अर्थे भगवाननुं प्रगटपणुं छे ते पण गितामां कह्युं छे जे ।। ।।परित्राणाय साधुनां ।। विनाशाय च दुष्कृतां धर्म सं स्थापनार्थाय संभवामी युगे युगे ।। ८ ।। ।।अर्थ ।। ।।ए श्लोकनो पूर्वे कह्यो ए अर्थ छे ।। मारे प्रगट भगवाननुं जे वचन तेने जे ग्रहण करवुं एज परम भागवत धर्म छे ।। अने तेमां जे संशय करवो एज भागवत धर्मनो द्रोह छे ।। माटे जेने पोताना आत्मानुं कल्याण ईछवुं तेने तो प्रगट भगवानना वचनमां ज दृढ विश्वास राखवो ।। त्यारे जमोक्ष थाय ।। अने बिजा जे अन्य धर्म छे तेने तो कोरि जगत्क धिपाल्या करेने भगवानना स्वरूपने भगवानना वचन थकि तो विरुद्ध वर्ते तो तेने मां थे थी जन्म मरणने चोरासि ते कोई काले टलता नथी ।। पछे अक्षर मुक्तानंद स्वामिये पुछ्युं जे हे महाराज ए भागवत धर्मने दृढ केम पमाय ।। पछे महाप्रभुजी बोल्या जे जेम कोई क विद्या भणवि होय ।। त्यारे जेनी पासे ते विद्या होय ।। एवा जे मेहताजी तेनी पासे जायने तेनी सेवा करेने ते मेहतो कहे ते प्रमाणे अभ्यास करे त्यारे ते विद्या जेटली मेहताजीनी होय ।। ते नित्रालियामां आवे छे ।। तेम भागवत धर्म भगवानने भगवानना एकांतिक विषयना त्यागी संत तेनी पासे छे ।। ते भगवानने संतनो मन कर्म वचने दृढ आसरो करेने ते भगवानने संतनो विश्वास राखेने जेम कहे तेम करे ।। ने तेने वचने करिने अधर्मनो त्याग करिने भगवानने संतनी आज्ञा प्रमाणे वरते तो ते भागवत धर्मने पामे छे ।। ने तेने कल्याणना मारगमां कोई विघन आवे नहिं ।। ।।इति श्री मुख्य सिद्धांत समाप्तः ।।

।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ।।संवत ।।१९।। ओगणीसे ।।२१।। नेथिसनाश्रावणवदि।।३०
।।अमावास्याने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्णभगवान गाम श्रीखंभातमध्येपटेलबेचरकुबेरनेघेर उतराद्याबारना घरना ओटाकमां
विराजमान थयाहता ।।नेसर्वे जरियानीवस्त्र धारणकर्यांहता ।।नेकंठमां पुष्पनाहारपेहेर्याहता ।।नेपाघमांतोरा लटकताह
ता।।नेकानउपर फूलनागुच्छधारणकर्याहता ।।नेपोतानामुखारविंदनी आगळसाधुतथादेशदेशनाहरिभक्तनीसभाभ-
राईमे बेठाहता ।।पछेमहाप्रभुजिबोल्याजे भगवान छे ते पोतानीजडनेचैतनएबीजे शक्तियो तेणेकरिने आजगतने विषे
समष्टी अने वष्टीबेप्रकारनीसृष्टिने स्रजेछे।। तेमां समष्टीजे वैराटरुपआत्मा अव्याकृत तेनेस्रजे छे।। ने वषिजे स्थुळ सू
क्ष्म नेकारण तेनेसरजताहवा ।।तेमांसमष्टिने विषे पंचभूत छे ।।तेनीमहत एविसंगनाछे ।।नेवष्टिने विषे पंचभूतछे तेनीअ
ल्पएविसंगनाछे ।।अने समष्टिरुपि वालाने ईश्वरकहेछे ।।अनेतेसर्वज्ञछे।।अनेवष्टिदेहोने विषे पंचभूतछे ।। तेअल्पछे।।
नेतेअल्पज्ञ छे।।नेतेव्यष्टिदेहनो धारण करनारो तेनेजीव कहिये ।।अनेएजेसमष्टीने विष्टीएजेदेह छे तेनेएविरीतेसरजेछेजे
अनादिनेअखंडनेसर्वज्ञनेअनंतने स्वयंजोतीने सर्व आकारमात्रनीप्रवर्तिनाकारणएवाजे प्रकृतिपुरुष तेनेविषे भगवान
अक्षरब्रह्मरुपे प्रवेशकरिनेप्रधानपुरुषकाळने महतत्वादिक चोविसतत्व तेणेकरिने ईश्वरनादेहजेवैराटस्वरुपआत्माजेअव्या
कृततेनेप्रगटकरेछेएविरीते समष्टीने व्यष्टीनेउत्पन्नकरेछे ।।अनेप्रलयकरेत्यारेएसर्वे तत्व प्रधानपुरुषएसर्वेजेथकि उप-
ज्याछे।।एविजेमूळमायातेनेविषेलयकरेछेनेमूळमायानेपुरुषनेविषेलयकरेछेने पुरुषने अक्षरनाकोकएकदेशनेविषे
लय करेछे।। अनेपछितेजरीते उत्पन्न करेछे।।अनेउत्पन्नकरेलीएवीजे समष्टी ।।तेथकि व्यष्टीदेहोनीसृष्टीने स्रजे छे।।
तेनीरीत कहेछेजेमहतभूतमां जेमहत प्रथवीछे तेप्रथवी अनरधडआदिकरुपेथईनेतेसर्वव्यष्टिजीवोनादेहोनेविषे अस्थिआ
दिकपृथ्वीने पोषणकरेछे ।।नेतेतेदेहोनोनासथवतेअल्प पृथ्वीतेमहत पृथ्वीमांलयपामेछे ।। एविरीतेमहतपंचभूत
तेव्यष्टिजीवोनादेहने पोषणकरे छे ।।अनेसमष्टीनुंजेमहत जळ ते व्यष्टिदेहोनेविषेरुधिरादिकरुपेकरिनेपुष्टिकरेछे ।।

नेतेदेहोनानासनेसमे अजपजपमां लयपामेछे ॥ अनेसमष्टीजोमहतत्त्व अग्नीतेणेकरिनेव्यष्टीदेहोमांजठराग्निरूपेकरिने अन्नादिक
नेपचावेछे नेतेदेहनानासनेवखते महतत्त्व अग्निमां लयपामेछे ॥ अनेसमष्टीदेहनो जे महतत्त्व वायु तेणेकरिनेव्यष्टिदेहोमां प्राणवा
युयेकरिने सर्वे देहने स्थिति राखेछे ॥ अनेतेदेहनानासनेसमे महतत्त्व वायुमां लयपामेछे ॥ अनेसमष्टीदेहनो जेमहदाकाश
तेणेकरिनेव्यष्टिदेहनाशरीरना अवकाशरूप आकाशमां आवेछे ॥ तेदेहोनानासनेसमे महदाकाशमां लयपामेछे ॥ अने
समष्टीदेहनो जे वैराटनोधारणनोकरनारो अहंकार तेणे करिने व्यष्टिदेहोमां अहंकाररूपे करिने धरिरह्योछे ॥ नेतेदेहोना
नाशनेवखते महतत्त्व अहंकारमां लयपामेछे ॥ अनेसमष्टी देहनो जे महतत्त्व तेमांथी व्यष्टिदेहोमांचित्तरूपेकरिने चिंतवन
करेछे ॥ नेतेदेहोनानासनेवखते महतत्त्वमां लयपामेछे ॥ अने समष्टिदेहवालो जेप्रधानपुरुष तेव्यष्टिदेहोने विषे मनरूपेक
रिनेजीवनेसंकल्पविकल्पकरावेछे ॥ नेतेदेहोनानासनेसमे प्रधानपुरुषमां मन लय पामेछे ॥ अनेअनादि एवि जे मूलमा
याते सर्वेजीवोनीबुद्धिरूपेकरिनेरहिछे अने मूलमायानो नियंताजीवछे ॥ एविरीते समष्टीनेव्यष्टी ए बे शरीरने पोते भगवा
न अक्षरातित पुरुषोत्तम ते पोतानी जे जडचैतन्य बे शक्तियो तेणेकरिने तेनाआधारथईने सर्वे विश्वने पोतानी सत्ता
येकरिने धारणकरिरह्याछे ॥ तेनेजे मुमुक्षु जाणेछे ते मुक्त थायछे ॥ हवे तेने जाणवानीरीत कहेछे ॥ जे स्थूलसूक्ष्मनेका
रणने जाग्रतस्वप्नने सुषुप्तिएवि जे त्रणजीवनी अवस्थायो ने वैराट सूत्रात्माने अव्याकृतएत्रण ईश्वरनादेहने उत्पत्ति
स्थितिनेप्रलयएत्रणईश्वरनीअवस्था ते सर्वथकि परने सर्वेनाकारण पणे आधाररूप जे भगवानननो ब्रह्मरूप प्रकाश व्यापकस्व
रूप ॥ तेनेसर्व मायाथकि पर जाणीने ते ब्रह्मसंघाते पोताना आत्माने मन द्वारे एकत्यपणुं करिने पछेजगतनीजेमउत्पतिछे
तेमप्रलेकरिने मायाथकि असंगीपणे जाण्यामां प्रकाशरूपते सर्वोपरि दृष्टास्थितियेरहिने तेचैतननी दृष्टिनेपामीने पोतानी
मायानु आवरणदूरकर्युं ॥ जेम आकाशनीदृष्टिने पाम्यो तेने च्यारभूतनी उपाधिदृष्टिमां आवतीनथी ॥ तेम मूलप्रकृति पु
रुषथकि परएवुंजे सर्वव्यापक अक्षरब्रह्म तेनीदृष्टिने पामवुं नेतेनुंआवरण जेमूलप्रकृति पुरुष तथा प्रधानपुरुष ने कालने

महतत्वादिक चोविस तत्व ए सर्वे मायानी उपाधि तेने व्यापक ब्रह्मद्रष्टि वडे करिने टालिनाखवी ने सर्व व्यापक एवुं जे ब्र-
ह्मस्वरुप तेने पोतानुं स्वरुप मानवुं ने जे ब्रह्मस्वरुपे छे तको टिब्रह्मांडनाद्रष्टा छे ॥ ने ते ब्रह्मांडमां अणुंअणु प्रत्ये जे मर-
हे ला छे ॥ तेम अक्षरब्रह्मना अणुअणु ने विषे परिपूरण ने दिव्यमूर्ति एवा जे सनातन परब्रह्म जे पुरुषोतमस्वरुप ते
रह्या छे ने जेणे सिद्ध करेलीजे ब्रह्माकारद्रष्टि ते सर्वत्त ने पूरणकाम एवा जे एक परमात्मा तेने देखे छे ते सर्वसाधनना अंत
ने पाम्यो छे ॥ ने एज अमारो परम रेहेस्य छे ॥ ॥ईतिश्री मुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥

श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत॥१९॥ओगणिसे॥२३॥त्रेविसना भादरवाशुदि॥१॥पडवाने दिवस
महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री खंबात मध्ये पधानबानी दिकरि ओमाबाने घेर उगमणा दरबारना घरना चोकमां वि-
राजमान थया हता ॥ ने सर्वे कसूंबल वस्त्र धारणकर्यां हतां ने पुष्पना हार पेहेर्या हता ने तोराने गुच्छ धारण कर्या हता ॥ ने
बाजुबंधने गजराधारण कर्या हता ॥ ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरि
भक्तनी सभा भराईने बेठि हती ॥ पछे महाप्रभुजी कृपा करिने बोल्या जे जेने पोताना मोक्षनो खप होय ॥ तेने तो तपासीने
जोवुं जे आ मनुष्या देहमां शुं लाभ छे ॥ आ मनुष्या देहे करिने हुं शुं करुं छुं ॥ ने शास्त्रमां तो मनुष्य देहने अतिशे दुर्लभ कह्यो छे ॥
अने देवता पण मनुष्यदेहने ईछे छे ॥ अने देवलोकमां सुख रवतो मनुष्यना करतां घणां छे ॥ अने देवलोकमां जन्म तिउतरते अधि
कारे देव छे तेने आ लोकमां चक्रवर्ती राजा होय तेना करतां कोटिगणां वधारे सुख छे पण माईक सुख जे तुच्छ ने नासवंत तेने
पामवा सारुं देवता मनुष्यादेह ने नथी ईच्छता ने मनुष्यादेहनो लाभ तो अविनासि एवुं जे भगवानना धामने पामवुं ने फरिने
जन्ममृत्युना दुःखने पाय एज मनुष्यादेहनो लाभ छे ॥ माटे भगवानना भक्तने तपासी जोवुं जे आ श्रोत्र भगवाने सरजी आ-
प्या छे ॥ ते श्रोत्रे करिने शुं करवानुं छे ॥ अने नेत्र भगवाने सरजी आप्यां छे ॥ तेने नेत्र शुं जोवा सारु आप्यां छे ॥ अने जीभ्या भग-
वाने शा सारु सरजी आपी छे ॥ अने हाथ भगवाने सरजी आप्या छे ते ते हाथे करिने शुं करवानुं छे ॥ एवि रीते दस इंद्रियो

नेवारअंतःकरणएसर्वेनेतपासिनेजोवुं॥ अने भगवान भज्या मांशुं लाभ छे ॥ अनेविषयभोगववामांशुं लाभछे॥एथिरितेप्रमा
णकरिनेपछे विषयसुखनेनासवंतजाणीनेतेनो त्यागकरिने इंद्रियोअंतःकरणने भगवानना स्वरूपमां जोडिदेवा॥एज
मनुष्यदेहनो लाभछे।।पणनासवंतनेदुःखरूपने कोटिकोटिक्लेशेजुक्तएवाजेपाप रूपपंचविषय भोगवघातेसारुं मनुष्यदे
हने नखोवो॥ केमके आमनुष्यदेहवारंमवार मलतो नथी ॥एतो चोरासि लाखयोनीजन्मधरीधरीनेकोईकाले पारआवेन
ही॥ केमके झाडना तथापाहाडनाअवतारआवेजेनीगणीकआवरदायो तेनो कोईकाले पारन आवेमाटेमनुष्यदेह तोअ
तिशेदुर्लभ छे॥तेने अज्ञानेकरीने तथाअधर्मिने संगेकरिने खोटाविषय भोगविने मनुष्य देहने वृथान खोवी॥अनेजे
जेइंद्रियोअंतःकरणेकरिने विषय भोगवेछे॥ तेने मार जमपुरिमां अपार खावा पडे छे॥ नेचोरासिमांवारमवार जन्ममृ-
त्युने पामेछे॥ माटेजेणेकरिने पोतानाजीवात्माने बंधन थाय॥ते मारगनो त्याग करवो ॥नेतेना संगनोपण त्यागकरवो
॥ अनेजोतपासएमनकरे तो मनुष्यदेहनीअमूल्य आयुष्य छे।नेपलनोपण नीरधार नथी ॥ तेमांजे भोलप्य राखे छे॥ते
अज्ञानेकरिने राखे छे॥केमके राजाजनकजेवा महाज्ञानी भगवानना भक्त तेणेतो एमकह्युंछे जे ॥ ॥
दुर्लभो मानुष्यो देहो देहिनां क्षणभंगुर तत्रापि दुर्लभं मन्ने वैकुंठ प्रीयदरसनं॥ ॥ माटे आदेहनो पलमात्रनोपण
निरधारनकरवो ॥अनेअतिशे सावधानथईने परमेश्वर भजीने पोतानाआत्मानुं कामसुधारीलेवुंजेम विजलीनाजबका
रामां मोतीपरोवीलेवुं॥तेमआ मनुष्यदेहछे ते तो विजलीनाजबकाराजेवीछे॥ तेणेकरिने पोतानाआत्मानुं कामसुधारीलेवुं ॥
नेप्रत्यक्ष भगवाननो आसरो करिने धर्मज्ञानवैरागने भक्तिसिद्धकरिने पंचविषयनीवासनानेटालीने ब्रह्मरूप थईने भगवा
नाधामने पामवुं ॥एजमनुष्यदेहनो लाभछे॥ ॥ईतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥
श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः॥ ॥संवत॥१९॥ओगणिसें॥२३॥त्रेविसना भादरवाशुदि॥२॥ बिजने
दिवसमहाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्रीखंभातमध्ये बारोटजसबानेघेर दक्षणादावारनाघरनाचोकमां विराजमा

नथयादता ॥नेस्वेतवस्त्रधारणकर्यांहतां ॥नेमस्तके कसुंबल फेंटोबांध्योहतो ॥नेपोतानामुखारविंदनीआगळसाधुतथादेशा-
देशनाहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठाहती पछेमहाप्रभुजीबोल्याजेजे भगवानना भक्तहोयतेनेतोदेहआत्मानो विवेक करिने भग
वानभजवा ॥ तेकेवीरीते विवेक करवो ॥तोआशरिरमांहाडकांछे ॥ तेतो पृथ्वीनोभागछे ॥अनेदेहमांरुधिरछेतेतोजळ-
नोभागछे॥ अनेआदेहमांजठराग्निछे तेतोअग्निनोभागछे ॥अनेदेहमांप्राणवायुछे तेतोवायुनो भागछे॥अनेदेहमां
आकाशछे॥ तेतोमहदाकाशनो भागछे ॥अनेशब्दस्पर्षरुपरसनेगंधएपंचतनमात्रानेपंचभूत ते तमोगुणनोभागछे
॥अनेदसइंद्रियोछे तेरजोगुणनांछे॥अनेचारअंतःकरणछे॥नेचौदइंद्रियो।अंतःकरणनादेवताछे॥तेसत्वगुणनाछे
॥अनेएसर्वेथीआत्माछे॥तेतोनोखोछे ॥ केमके आत्मादेहमांथीचाल्योजाय ॥त्यारेदेह कांईकरवानेसमर्थनथी नेदे
हतोजडछे॥नेनासवंतछे॥ मारेते थीनोखोपोतानाआत्मानेमानीने ब्रह्मरुपथईने परब्रह्मजेप्रत्यक्ष पोतानेमल्याजे
भगवान तेनुं भजनकरेतोतेनोमोक्षथायछे॥ अनेदेहरुपथईनेजेजेजपतपवृतादिककरेछे।तेनांसर्वेसाधनव्रथा थई
जायछे॥ अनेजे ब्रह्मरुपथईने भगवाननी भक्तिकरेछे ॥ तेजअविनासि सुखनेपामेछे॥ अनेजे उपरथीधर्मपाळेछे॥
नेकोईकथोडुकपुन्यकरेअनेएम मानेजेउपरथी धर्मपाळेछे ॥अनेएमजाणेजे मारुंकल्याणथईरह्युंछे॥जेम कोईकने
दुलदरनो गांठियोजडेने तपोते एममानेजे हुंगाधिछुं॥ तेम अल्पज्ञानने पामीने मोक्षमानेछे॥ तेतोअज्ञानीछे केम
केमोक्षतोपंच विषयथकिमुकाय त्यारे थायछे॥तेपंचविषयथकि केम मुकाय तोज्यारेप्रत्यक्ष भगवान मळे नेतेनास्व-
रुपनो निर्विकल्प उत्तमनिश्चय थाय त्यारे पंच विषयथकी मुकायछे ॥पणकोईएमजाणेजे शास्त्रमांथी सिखिनेतथाज
पेतपेथते साधनेकरिने मुक्तथाय तेसाधनेमुक्त थवातुंनथी ॥मुक्ततोमायापर ने सर्वकारणएवाजे भगवान तेज्यारे मनु-
ष्यरुपे थईने पोताने मळे नेतेज्ञानआपीने पंच विषयनां मूळउखाडिनाखे ॥नेपोतानास्वरुपनुंज्ञानकरावे॥ त्यारेज
जीवमुक्तथायछे ॥ पणपरोक्षथकि कोईनो मोक्ष थतो नथी ॥केमके भगवानना स्वरुपना ज्ञानविना कोईकाळे मोक्ष

थायनहि।। अने परोक्षपणे रामकृष्णादिक अवतार थईगया तेरामचंद्रजी त्रेताजुगमां थया तेकेवडाउंचा हता।।नेकेवुं स्वरुपह
तुं।।अनेकृष्णअवतार द्वापरमांथयो।। तेकेवाहता नेके वडाउंचाहता।।नेप्रोक्षभगवाननोकेविरीते निश्चय थायनेकेमकरि
ध्यानमांआवे।।माटे प्रोक्षपणेकरिने कोई रिते कल्याणथायनहिं।।अनेअंतरजामी पणेकरिने सर्वेमांआत्मामांरह्याछे।।
तेकेविरीतेरह्याछे।। तोकर्मनाफलआपवारुपेरह्याछे।।पणतेअंतरजामिरुपजे भगवान रह्याछे तेणेकरिने कोईनोमोक्षथ
तोनथी।। जेम पाणी छे ते प्रथ्वीमां रह्युंछे।।तेपीवाना उपयोगमांनथीआवतुं।।पीवानाउपयोगमां तो प्रगट पाणितला
वमांकेनदिमां केकुवामांहोय ते पीवाना उपयोगमां आवेनेवलि बिजुं दृष्टांतजेम दिवाना प्रकाशमां छेटे दारुअथवा
कांठाना उपाडा ते मुक्याहोय पणतेकोईकाळे बळेनहिं।।नेते दियो प्रगट जो लगारेक अड्योहोय।।तोसर्वेदारु तथाकांठा
ते बळिने भस्मथईजाय।। तेम प्रगट भगवान मळेत्यारेज जीवनो मोक्ष थायछे।।अनेते भगवान पण जीवोनाकल्याणनेअर्थे
कृपाकरिनेप्रगट थायछे।।अनेते भगवानना स्वरुपनोजेनेजेने निश्चय थायछे।।अनेजेआसरो करेछे तेसर्वेनामोक्षथाय
छे।।तेचहाय तोउंचकुळना होय नेचहायतो निचजातिनाहोय नेचहायतो ब्राह्मणहोयचहायतोस्त्रीहोयपणस
र्वेनोमोक्ष प्रगट भगवानना स्वरुपनानिश्चये करिने थायछे।।अनेजे नेजेनेप्रगट भगवाननोआसरो थयोहोयतेने
कोईरिते मोक्षनो संसय राख्योनहिं।।नेएनेतोएम समजवुंजे जे मारां दरसन करशे तेनां कल्याण थशे।।नेरामा
अवतारमां कृष्णाअवतारमां जेनेजेनेमळ्या तेना सर्वेना मोक्षथया।।तेज आजमुने प्रत्यक्ष मळ्याछे माटेहुंतोकृतार्थ
थयोछुं।।अनेमुनेजेप्रत्यक्षभगवान मळ्याछे ते भगवाननीआज्ञाये करिनेजळउपर पृथ्वीरहिछे।।नेमुने मळ्याजे भगवा
नतेनीआज्ञायेकरिने सूर्यचंद्रमा उदेअस्तपणाने पामेछे।।अनेआप्रत्यक्ष भगवानना वरसाव्या मेघपण वरसेछे।।नेते
मां गाज विज थायछे।।एवा अनंत आचर्ज्य छे तेसर्वे मुने मळ्याजे भगवान तेनाज कर्याथायछे।।पणतेविना बिजाको
ईआविश्वनो करत्ता समजेजनहिं नेअनंत कोटि ब्रह्मांडनी उत्पत्ति स्थिति नेप्रलय ए सर्वे मुनेमळ्या एवाजे भगवान

तेनीजई ञ्चायकरिने थाय छे ॥ए विरीते जंने भगवाननो महातमे सहित निश्चय थाय ॥ तेना काम क्रोध जो भस्वाद स्नेह मानआ-
दिक अंतरशत्रु ते सर्वे टलि जाय छे ॥ ने पंचविषयना राग पण तेना टलि जाय छे ॥ जेम कोईक ने दसविस कागदि लिबु, चुसा
आहोय तेना दांत अंबाई जाय छे ॥ ते थी कांई च वायनहिं ॥ तेम भगवानना महात्मरुपि खटाई जेने चडे छे । ते पण गोपीयो
ये कह्युं छे जे अमने श्रीकृष्ण भगवान ना चरणनो स्पर्श थियो छे ते दिवसथी आसंसारनां सुख तो नरक तुल्य थई गया छे ॥
माटे प्रगट भगवानना संबंधे करिने ज मोक्ष थाय छे ॥ अने आज पण जेने जेने प्रत्यक्ष मल्या छे ते सर्वेनां कल्याण थई ज रह्यां
छे ॥ ने ते सर्वे ब्रह्मनी मूर्त्तियो छे ने ते सर्वे अक्षरधामना वासि छे ॥ ॥इति श्रीमुख सिद्धांत समाप्तः॥

॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत॥१९॥ ओगणीसे ॥ २३॥ त्रेविसना भाद
रवा शुदि ॥३॥ त्रिजने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्रीखंभात मध्ये सोनी किला भाईनी दिकरि कासीबाने घेर उ-
गमणे बार घरना चोकमां विराजमान थया हता ॥ ने सर्वे सो ने रिवस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ ने पुष्पना हारने बाजुबंध धारण
कर्यां हता ॥ ने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा देशदेशना हरिभक्त
नी सभा भराईने बेठि हती ॥ पछे महाप्रभुजी बोल्या जे आ जीवने एक कबुद्धि छे ॥ ने एक सबुद्धि छे ॥ ते कबुद्धि केम थई छे
॥ ने सबुद्धि केम थई छे ॥ तो जिवे अनंत कोटि कल्प थयां विषय भोगव्या छे ॥ तेणे करिने कबुद्धि थई छे ॥ अने आ जीवे सत्पु-
रुषनो समागम करिने परमेश्वरने अर्थे दान्य पुन्य भजन स्मरण जे जे सुकृत कर्यां छे ॥ तेणे करिने जीवने सबुद्धि थई छे ॥ तेमां
जे दैविजीव छे ॥ तेने तो प्रगट भगवाननो तथा प्रगट भगवानना संतनो समागम थाय तो ते समागम करिने आसुरि बुद्धि
नो त्याग करिने सबुद्धि राखिने रुडा धर्म पालिने परमेश्वरनो दृढ आसरो करिने पोताना आत्मानुं कामसुधारि ले छे ॥ अने
जो आसुरि जीव छे तेनी तो कोई काले सबुद्धि थती ज नथी ॥ अने ज्यां सुधि एनुं गमतुं सत्पुरुष कर्या दे त्यां सुधि सारो रहे
पण तेनी कबुद्धिने सतपुरुष मुकावे तो उलटो द्रोह करे ॥ जेम भालदेशनो कुवो उपर सारो होय ने जो उंडो खोदे तो खारु नीसरे

प्राणीनी सरे तेम सतपुरुष ज्यारे कबुद्धि मुकावे तो तेने वधारे कबुद्धि थाती जाय ॥ माटे कबुद्धिवाळा जे आस्करिजीव तेनो कोई कालेसंग करवो नहिं ॥ अने सतपुरुषनो समागम करि कुबुद्धिनो त्यागकरिने भगवाननुं भजन करवुं ॥ अने आ जगत तो सर्वे स्वार्थि छे तेज्यां स्कद्धि स्वार्थ सरे त्यां स्कधि सउने प्रितिरहे अने ज्यारे स्वार्थ टले त्यारे शत्रु थायछे ॥ अने सो विसवरसनी स्त्रि होय ने तेने पित्तनि सरे के कोड निसरे तो ते स्त्रि शत्रु जेवी जागे ॥ अने पुरुष पण जो विसवरसनो होय ने तेने कोढ के पत थाय तो स्त्रिने पण शत्रु जेवो पुरुष जागे ॥ तेमज सारां सारा खावानां पदार्थ पण जिभ्या उपर रहे एटली घडी सारुं लागे ने पछे तेरसमां अनंत रोग रह्या छे ने घणा क दुःख रह्यां छे ॥ ने जीभ्या इंद्रिने अज्ञाने करिने सारुं लागे छे ॥ पण आत्माने तो दुःखना देनारां छे ॥ ने जन्ममरणना कष्ट पमाडनारा छे ॥ एथि रीते दस इंद्रियो ने चार अंतःकरण ए सर्वेना विषयनुं प्रमाण करवुं ॥ ने ए सर्वे थी नोखो एवो जे जिवात्मा तेने पोतानुं रुप मानवुं ॥ ते आत्मा केवो छे ॥ तो स्क स्वरुप छे ने अविनासि छे ने अछेद्य अभेद्य अजर ने अमर ने प्रकाशरुप एवुं जे अक्षरब्रह्म ते मारुं स्वरुप छे ॥ एमजे ने प्रगट भगवान मल्या होय ॥ तेने मानवुं ॥ ने जड एवा जे पंचविषय पंचभूतनो विकार रुप ने त्रणगुणनुं कार्य एवो जे देह तेने स्करपे करिने हुं स्कखियो थाउं एवो नथी ने हुं तो एक परमात्मा पुरुषोत्तम प्रगट भगवान तेने स्करपे करिने स्करवी यो थाउं एवो छुं ॥ माटे पंचविषयनी आशक्तिनो त्याग करिने श्रवणे करिने भगवानना शब्दमां लोभावुं ॥ अने त्वचाये करिने भगवानना स्पर्षमां लोभावुं ॥ अने नेत्रे करिने भगवानना स्वरुपमां लोभावुं ॥ अने रसनाए करिने भगवानना महाप्रसादमां लोभावुं ॥ अने नासिकाये करिने भगवानना हारचंदनना स्कगंधमां लोभावुं ॥ अने एविरीते दस इंद्रियो ने चार अंतःकरण तेणे करिने एक भगवानमांज मां लोभाय तेज साचा भगवानना भगत छे ॥ अने जे जे एवी रीते प्रत्यक्ष भगवानना अवतार ज्यारे ज्यारे थाय छे ॥ तेमां जे लोभाय छे ते सर्वे परमपदने पामे छे ॥ पण तेने जन्ममरणनो फेरो रहेतो नथी ॥ एलो ब्रह्मरुप थईने भगवानना धामने ज पामे छे ॥ ॥ इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः ॥

॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥

॥संवत १९ ओगणिसें ॥२३॥ त्रेविसना भादरवा

शुदि ॥ ४ ॥ चोथ्यने दिवस माहाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्रीखंभातमध्येपटेल कुबेरराणछोडने घेर आंगणामां बार
नाघरना चोकमां विराजमान थया हता ॥ नेसर्वेश्वेतवस्त्रधारणकर्यांहतां ॥ नेमस्तकेकसुंबलफेंटोबांध्योहतो ॥ नेकसुं
बल खेस खभेधारणकर्योहतो ॥ ने ललाटनेविषे कंकुनोचांदलो कर्योहतो ॥ नेपोतानामुखारविंदनीआगल साधुतथादे
शदेशनाहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठाहतीनेरात्रिपोहोरएकगईहति । पछेमहाप्रभुजीबोल्याजे सर्वे सांभलो ॥ एकवार्ता
करियेछियें ॥ जेआगतनेविषेएकअविनासिवस्तु छे ॥ नेएक नाशवंतछे ॥ तेमांजे मायाकृतप्रकृतिनुंकार्यसर्वेनाश
वंतछे ॥ नेतेसर्वेनोधारणकरनारो आत्मातेअविनासिछे ॥ माटेभगवाननाभक्तने नासवंतमां मोहनपामवो ॥ अनेअविना
सिमां लोभावुं ॥ हवेनासवंत तेशुं ॥ तोदेहनासगासंबंधीतथाधनदोलतराजपाट आदिकआलोकनासर्वे वैभवतथादेव
लोकनासर्ववैभव तथाब्रह्मलोकनावैभव ॥ तथावैराटपुरुषना तथाप्रकृतिपुरुषनावैभव तथामूलपुरुषआदिकप्रकृति
नुंकार्य सर्वे नासवंतछे ॥ तेनासवंतपदार्थनीईछा भगवानना भक्तनेन राखवि नेजो भगवानना भक्तनेनासवंतपदार्थ
नीइछाहोयतो तेने मोटी खोड जाणवी ॥ केमकेजेमकोईक रांकनेपादशाहप्रसन्न थईने कहेजे तुं माग्यजे माग्य ते आपुं त्यारे
तेणे डुंगलिना गांठिया माग्या ॥ पछे पादशाहे जाण्युं जे माहामूर्खने पापिछे ॥ जे गामगरासधनमाल कांई नमाग्युं नेडुंगली
मागी एम कहिने अतिकुराजीथईने काढि मुक्यो ॥ तेम जेने साक्षात्कारप्रगट भगवाननो आश्रो थयो तेने रांकनीपेठे माईक
नासवंत पदार्थनीईछा न राखविने तेनेतो अविनासिजे पोतानाआत्मातथा अविनासिएवाजे परमात्मातथा अविनासि
एवुंजे भगवाननुंधाम तथाते भगवानसंबंधीजे सुखतेनीईच्छाराखवि ॥ अनेसर्वेनाकारणएवाजेभगवानते आमने सा
क्षात्कार मल्याछे ॥ अनेतमेपण तेमजसमजो छो ॥ माटेतमाराभाग्यनोपारनथी ॥ नेतमारोमहिमाकेहेवाने कोईसमर्थ
नथी ॥ अनेतमारां चरित्रतो गाईगाईने अनंतजीवोनोमोक्ष थशे केमकेपूरवेजेनेजेने भगवाननोसंबंधथयोछे ॥ अनेधर्मप
ण दृढपालवानां नियम लीधांछे ॥ अनेभजन स्मरणपण सर्वेकरोछो माटे तमारामहिमानो कोई पार पामेएम नथी अनेत

मारोमहिमामाईकद्रष्टिवाळानेजाणयामांआवे॥एमपणनथी॥तमारोमहिमातोआअमारासाधुजाणेछे॥माटेजेने
अमारोयोगथयोछे॥तेआजन्मनेपून्येकरिनेनथीथयो॥एतोअनंतजन्मनांसुकृतभेगांथायछेतेनेजअमारोसंबंधथा
यछे॥नेतेनेजअमारिआज्ञापाळविगमेछे॥पणपामरपशुनेअमारिआज्ञानथीगमतीनेपामरपशुनेतोशिश्नने उदरपरा-
यण प्रीतिहोयनेआघाततोदेखिनेमुमुक्षुनेगमेछे॥ माटेजेमचिंतामणिहोयतेनेअनंतप्रकारनुंजतनकरिनेराखे॥तेम
आजेअमारिआज्ञाछे॥तेनेसिरसाटेराखवि॥केमकेशिरजाशेतेनोखरखरोनहिंपणआज्ञाजोपायएथीमोटीहाण
बिजीनथी॥अनेप्रत्यक्षभगवाननीआज्ञापाळवीएजेवोकोईलाभनथी॥ केमकेपूर्वेपणजेजे भगवाननीआज्ञाप्रमाणे
वर्त्याछे॥तेजमोटिमोटिपदवीनेपाम्याछे॥नेजेणेजेणेआज्ञालोपीछे॥तेसर्वेअतिशेकष्टनेपाम्याछे॥माटेजेजेपोताना
सगाहोयतेनेपणएमकहेवुंजेअधर्मनोत्यागकरिनेपरमेश्वरनीआज्ञाप्रमाणेवरतशो तोजसुखियाथशो॥अनेजोपर
मेश्वरनीआज्ञाप्रमाणेनहिंवरतोतोजमपुरिनांतथाजन्ममरणनादुःखनेपामशो॥अनेघणाहेरानथशोएविरीतेसर्वेने
शिखामणदेवि॥अनेपोतानेपणदृढपणेवरतवुं॥अनेजेनेजेनेप्रगटभगवाननोसंबंधथयोछे॥तेनेतोअतिशेमहानि
रभयरहेवुं॥अनेजन्ममरणनीसंकाराखविनहि॥अनेअंतसमोथशेत्यारेजेनिरवासनिकहशेतेनेतोकांईवेअन्तरमां
पिडानहिथाय॥ अनेजेनेकांईजगतनीआसक्तिछे॥तेनेप्रथमआसक्तिनेतोडावशासारुंथोडिकपिडाजेवुंजणाशेनेप-
छे अमारास्वरूपनुंदर्शनआपीनेतेजोमयएवुंजेदिव्यदेहतेनेपमाडिनेअमाराअक्षरधाममांलेईजईशुं॥अनेअविनासिसु
खनेपमाडीशुं॥तेकोईकाळेपाछुंजन्ममरणनादुःखनेनपामेतेगितामांकह्युंछेजे॥ ॥नतद्भासयते सूर्योनश
शांकोनपावकयद्गत्वानिवर्तंतेतद्धाममम॥ ॥एश्लोकमांएमकह्युंछेजेपूर्वेकह्युंएमजअर्थछे॥मा
टेहवेतोनासवंतसुखनीईछानोत्यागकरिनेप्रत्यक्षभगवाननाज वचनमांविश्वासराखिनेअविनासिसुखनीईछा
राखवि॥ ॥इतिश्रीमुख्यसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥

॥ ॥संवत॥१९॥ओगणिसें॥२३॥त्रेविसना भादरवा शुदि॥५॥पांचमने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्णभ
गवान गामथी सोजिंत्रा मध्ये रवेरुभराय त्रांकरजीने घेर आथमणा बारना चोकमां विराजमान थया हता॥ ने सर्वे श्वेतवस्त्र धा
रण कर्यां हतां॥ ने मस्तके कसुंबल फेंटो बांध्यो हतो॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा देसदेसना हरिभक्तनी सभा
भराईने बेठि हती॥ पछे महाप्रभुजी कृपा करिने एम बोल्या जे जगतमां केर जाए क एम कहे छे जे मन होवश थतो जायदारिने सा
थए बोजे शब्द छे ते सत्पुरुषनो नथि एशब्द तो असतपुरुषनो तथा विभचारि अतिपापीनो छे॥ अने नारदने तथा ब्रह्माने तथा
शिवए आदिक केटलाक मोटा मोटाने तो मन हाथ न रह्यं॥ ने मननो विश्वास कर्यो तो कलंक लाग्यां॥ ते कलंक शास्त्रमां प्रसि
द्ध लख्यां छे अने जेणे जेणे मन जीत्यां होय ते तो जीव पर्यंत सतपुरुषना आपेला जे नीयम तेने दृढ पाले छे॥ पण ते नियम थकि
भ्रष्ट थता नथी॥ अने जे जे सतपुरुषनी आज्ञानुं उलंघन करे छे॥ ते तो जरुर भ्रष्ट थाय छे॥ अने ते सतपुरुषनी आज्ञा ते शुं छे॥
तो चोरि छिनालि दारु माटि परलवुं वटलायवुं ए सर्वेनो त्याग करवो॥ अने दंभ कुड कपटादिकनो त्याग करवो॥ अने पोता-
नी मा बेन दिकरि ते जवान अवस्थावालि होय॥ तेनी संघाते पण आपतकाल पड्या विना एकांतमां न रहेवुं॥ ने एकला
भेगा चालवुं नहिं॥ अने जो सत पुरुषनी आज्ञा लोपीने कुसंग करिने अधर्मने मार्गे चाले तो जेम भांग ने दारु पिये तो डाह्यो
होय अथवा मूर्ख होय ते बेय गांडा थाय॥ तेम पंडित होय तथा ज्ञानी होय तथा इंद्रिजीत होय ते सर्वे परमेश्वरनी जो आज्ञा
लोपे तो तेनी मति भ्रष्ट थया विना रहे ज नहिं॥ ए सर्वे शास्त्रनो सिद्धांत छे॥ ते कोई काले पण मिथ्या थाय नहिं॥ जेम कोई कसा
हुकार वहाणमां माल भरिने कमावा सारुं समुद्रमध्ये जतो होय ते जो चमकना डुंगर समुद्रमां छे तेथी छेटे रहिने मारगे चाले तो
निरविघ्न समुद्र पार जाय ने जो मारग भूलिने चमकना डुंगर पासे जाय तो वहाणना खिला सर्वे चमक सामां तणाई जाय॥
ते भेलुं वहाण सर्वे माल सहित तणाई जाय पछे॥ ने लोढाना खीला चमकने जोगे करिने गलि जाय छे त्यारे वहाणनां पाटि
यां विखराई जाय ने॥ माल पण सर्वे समुद्रमां बूडि जाय॥ ने ते शाहुकार पण समुद्रमां बुडि जाय॥ ए दृष्टांतनुं सिद्धांत ए छे

जेन्राहुकारनेठेकाणेतोजीवछे ॥ अने भगवाननी भक्तिरुपितथाभगवाननानिश्चयरुपी भालछे ॥ अने धर्मज्ञानवैरागनेभक्ति
नेपरमेश्वरनीआज्ञारुपिघढाण ॥ अनेविज्ञारुपि इंद्रियोछे॥ अनेसंसाररुपिसमुद्र छे ॥ नेशब्दस्पर्शरुपरसनेगंध रुपिचमक
नोडुंगरछे ॥ तेपचविषयनो ईंद्रियोने संबंधथायछे॥ त्यारेते इंद्रियो विषयमां तणाईजायछे ॥ ने इंद्रियो ज्यारे विषयमां जाय
त्यारे परमेश्वरनीआज्ञाजे धर्म ते रुपिजे वढाणतेनां पाटियां सर्वे विखराई जायछे ॥ नेपरमेश्वरनो निश्चयनेज्ञानवैराग
भक्तितेरुपिजे मालतेपण सर्वेनासपामिजायछे॥ अने जीवरुपिजेन्राहुकारतेपणसंसार रुपीसमुद्रमां बुडिजायछे॥
अनेचोरासिमी अपार दुःखनेपामे छे॥ तेझाड पाहाडनाभुंडा भुंडा अवतारआवेछे॥ तेकोई कालेपाछो छुटको थतोनथि॥मा
टेजेमुमुक्षुहोय नेजेनेपोताना जीवात्माना मोक्ष नीईछा होय नेजन्म मरणना दुःखथकि मुकावुं होय तेनेतो अनादिजेसतशा
स्त्रनीमरजादा तथा वेदमांकह्युंछे जेवरणाश्रमनाधर्मतथा प्रत्यक्षरामकृस्नादिक भगवानना अवतार तेनामुखनांजेव
चन तेप्रमाणेदृढपणे वरतवुं पण मोठाओनी मर्यादा उलघनन करवि॥ तोतेनुंजकल्याणथायछे॥ मारेआज मारुं वचन
छे॥ तेतमाराआत्मानुं अति हितनेकरे एवुं छे ॥ मारे तेने जतन करिने राखजो तोतमनेकल्याणनामारगमां कोई विघ्न
नहिं थाय॥ तेमारुंधर्ममांरहिने अमारी भक्तिकरजो एअमारोरेहेस्य सिद्धांत छे तेतमने कह्यो॥ ॥
ईतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृस्नायनमोनमः॥ ॥संवत॥
१९॥ओगणिसें॥२३॥त्रेविसना भादरवा शुदि ॥ ६॥ छठने दिवस महाराजश्रीहरिकृस्नभगवान गामश्रीसोजित्रामध्येदवे
भक्त बापुजीमयारामने घेर उत्तरादा बार नाचोकमां गादितकिये युक्त पलंग उपरबिराजमान थया हताने किनखापनो
सुरवाल नेडगलिपेर्यां हतां ॥ नेकंस्स बलपाघ बांधी हती ॥ नेगुदोरेटो पेहेर्यो हतो ॥नेकस्स बल सेलुं केडे बांध्युं हतुं॥
नेएकसेलुं खभेनाख्युं हतुं॥ नेसर्वेअंगने विषे पुष्पनांआभूषण धारण कर्यां हतां॥ नेललाटने विषे कंकुनो चांदलो
कर्यो हतो ॥नेपोताना मुखारविंदनीआगल साधु तथादेशादेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति॥ पछेमहाप्रभु-

जीवो त्यां जे सां भलोए कवात करियें जे आ जीवनी बुद्धि त्रिगुणात्मक छे ते गुणने वेगे करिने बुद्धिनो एक ठारे तो ॥
नथि ॥ ने तेने भगवानना स्वरुपना नीश्चयनो पण एक ठारे हेतो नथि ॥ ते जे थोजे वो संग करे ते थो ते घोरंग चडे छे ॥ जेम
टेपु होय ते गंगाजलेप लखे ने लघुसंख्याने जले पण पलले तेमजे नी त्रिगुणात्मक बुद्धि होय तेने सत्संगनो जोग होय त्यां
सुधि सारो रहे अने कुसंगनो जोग थाय त्यारे अनिश्चेन कारा थइ जाय ॥ एविरीते त्रिगुणात्मक जेनी बुद्धि होय ने ते जो वारवे
दभण्यो होय तथा छशास्त्र भण्यो होय ॥ तपसि होय तथा त्यागि होय पण त्रिगुणात्मक बुद्धिवाळानो ठारे तो नथी केमके तेनो
जीव परवस छे ॥ ने त्रिगुणात्मक बुद्धिवाळा छे ॥ ते तो बारद्रष्टिवाळा छे ॥ ते बारद्रष्टिवाळाने पोताना आत्मानुं रुडुं थाय एवुं
सुजे नहिं ॥ अने त्रिगुणात्मक बुद्धिवाळा तो जन्ममरणना दुःखने पाम्या करे छे ॥ अने जे त्रिगुणातित बुद्धिवाळा छे ॥ तेने
तो प्रगट भगवानना स्वरुपनो निश्चय करिने तेनो दृढ आसरो करे छे ॥ अने जो कोई कुसंगने जोगे करिने थोडोक अधर्म
अनिति करि होय तो पण भगवान तथा भगवानना एकांतिक साधु तेने संगे करिने अधर्म अनितिनो त्याग करिने भग-
वाननो दृढ आसरो करे छे ॥ अने आश्रारामां पण त्रण भेद छे ॥ तेमां एक तो मुदपणे करिने जे प्रत्यक्ष भगवान छे ते जमारा
आत्मा ना स्वाबादित कारि छे ॥ अने मारा कल्याणना दाता छे ॥ एविरीते मुदपणे करिने अंतरमां गांठवाले ते तेने कोई सु
जे प्रयास तथा दिनी श्चेमां थी डगावचा आवे पण तेनो डगाव्यो डगे नहिं ते मुदपणानो निश्चय कहेवाय ॥ अने बिजो जे
ने प्रितिनो स्वभाव होय तेने भगवानने विषे प्रिति थाय तो भगवान पोताने मल्या तेने विषे एवि प्रिति होय जे ते भगवा
ननी मूर्ति विना बिजुं कांई गमे नहि ॥ ने खातां पितां हालतां चालतां काम काज करतां सर्वे क्रियामां एक भगवानज
सांभर्या करे ॥ पण भगवान विना बिजे क्यांई वृत्ति जाय नहिं ॥ तेने प्रिति येकरिने भगवानना स्वरुपनो निश्चय जाण
वो ॥ अने त्रीजो ज्ञाने करिने निश्चय थाय छे ते तो जीवना रुपने जाणे ॥ तथा मायाना रुपने जाणे तथा ईश्वरना रुपने जा-
णे ॥ तथा ब्रह्मस्वरुपने जाणे तथा परब्रह्मना स्वरुपने जाणे ॥ अनध्यवीतिरेकपणे भगवान रह्या छे तेने जाणे ॥

तथा कर्ता अकर्ता पणुं जाणे ॥ तथा दिव्य भाव जाणे ॥ तथा मनुष्य भाव जाणे ॥ तथा भगवाननुं साकार पणुं जाणे तथा निरा-
कार पणुं जाणे ॥ तथा निर्गुण पणुं ने सगुण पणुं जाणे ॥ ईत्यादिक भगवानना अनंत ऐश्वर्यने जाणे तेने ज्ञाने करिने निश्च-
य जाणवुं ॥ अने ए त्रण प्रकारनो निश्चय कह्यो ॥ ते गुणातित बुद्धि वाळाने थाय छे ॥ ते गुणातित बुद्धि वाळो जो उत्तम जातिनो होय
॥ वा होय तो उतरती जातिनो होय ॥ ने वा होय तो भण्यो जो होय ॥ ने वा होय तो वगर भण्यो जो होय तेनो कांई मेळ नथी ॥ एटला
जु ओने गोपि गोवाळ वांदरां आदिक ते शुं ज्ञान भण्या हता ॥ अने रुषि तथा इंद्र तथा ब्रह्मा ते चार वेदने निरंतर पाठ करे छे
॥ तो पण त्रिगुणात्मक बुद्धि हती ॥ तो भगवानना मनुष्य चरित्र जोईने बुद्धिमां ठार रह्यो नहिं ॥ माटे ज्यां सुधि त्रिगुणात्मक बुद्धि छे
त्यां सुद्धि तेना निश्चयनो ठार हेतो नथी ॥ ए तो निर्गुण बुद्धि वाळा छे ॥ तेने ज अडग निश्चय थाय छे ॥ ने तेने कोई काळे भगवान
नां मनुष्य चरित्रमां संशय थाय नहिं ॥ जेम गोपियो भेगा भगवान रास रम्या तथा जमनाजीना धरामां पीनग्न वहार काढीने
पगे लगाडियो तो पण गोवाळोने संशय नथयो ॥ अने ते ते चरित्रने सांभळिने परिक्षत राजाने संशय थयो जे धर्मरक्षक भग-
वानने अवतार तेणे परदारानो संग केम कर्यो ॥ पण जे निर्गुण बुद्धि वाळा जे व्रजना गोप तेने संशय नथयो माटे गुणात्मक
बुद्धि होय तेने पोताना जीवना कल्याणनी ईछा होय तो निरगुण एवा जे प्रगट भगवान तथा भगवानना संगथकि निर्गुण
भावने पाम्या एवा जे साधु तेनो मन क्रम वचने संग करे तो गुणात्मक बुद्धि टळति पछे शुकजीने संग करिने गुणात्मक बुद्धि म-
टिने निर्गुण भावने पामि गया तेम आज पण जेने जेने गुणात्मक बुद्धि होय तेने पांच दहाडा तथा दस दहाडा मन क्रम वच
ने शुद्ध भावे अमारो संग करे तो तेनी निर्गुण बुद्धि थाय ॥ माटे पोताना कल्याणने अर्थे सत्संग करिने गुणात्मक बुद्धि
ने सुधारि लेवी ॥ पण पोताना ॥ जीवात्माना मोक्षमां विघ्न आवे एवी बुद्धि न राखवी ॥ अने आ समो तो एवो आव्यो
छे जे कोई पामर ने पशु जेवो जीव होय ते पण जो मन क्रम वचने करिने सतसंग करे तो आने आ देहे करीने ब्रह्मरुप थ
ई ने भगवानना धामने पामे छे ॥ माटे आज आ सभामां वात थाय छे ते वि कोई लोकमां तथा कोई धाममां नथी थति अने

ब्रह्मादिकदेव पण ज्ञेनिसथी आषीने सां भजे छे ॥ मादे तमारा पुन्यनो पार नथी ने तमारा महिमाने कोई केहेवाने समर्थ नथी
अने तमारां जेनेजेने दरसन थशे ॥ तेनां पण कल्याण थशे ॥ ॥ईतिश्रीमुरय सिद्धांत समाप्तः॥

॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥ संवत ॥१९॥ ओगणिसें ॥२३॥ चे-
विसना भादरवा शुदि ॥७॥ सातेमने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान् गाम श्री सोजित्रा मध्ये डोजिया भक्तकाशि-
नाथ सोमे सरनेपेर उत्तरादा बारना चोक मां गादितकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता ॥ ने सर्वे सोनेरि वस्त्र धा-
रण करयां हतां ॥ नेपुष्पनां आभूक्षण सर्वे अंगने विषे धारण करयां हतां ॥ ने कंकुनो चांद लोक रयो हतो ॥ ने जमणा हाथने
विषे रुमाल धारण करयो हतो ॥ ने पोताना मुरवारविंदनी आगल साधुतथा देसदेशानाहरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥
॥ पछे अखंडानंद स्वामिये प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज कल्याणनुं शुंरुप छे ॥ अने कल्याण केम थाय ते कहो ॥ पछे महाप्र-
भुजी बोल्या जे कल्याण तो अनंत प्रकारनुं छे ॥ ते केटलाक तो जोर नीचपरी दिक्षे करिने कल्याण माने छे ॥ अने केटलाक
तो पांच ब्राह्मण जमाडे कल्याण माने छे ने केटलाक दानपुन्ये करिने कल्याण माने छे ॥ ने केटलाक वरण श्रम ना धर्मपा-
लवे करिने कल्याण माने छे ॥ ने केटलाक नात्यो जमाडिने कल्याण माने छे ॥ ने केटलाक तिर्थ रण करिने कल्याणमा-
ने छे ॥ ने सदाव्रत आपिने केटलाक कल्याण माने छे ॥ ने केटलाक उपवासादिक व्रते करिने कल्याण माने छे ॥ पण सर्वे
कल्याणना उपकरण छे ने साचुं कल्याण तो ए छे जे पंचविषयनी वासना टालीने ब्रह्मरुप थईने परब्रह्मने भजवा ॥ अ-
ने अनंत साधन करे पण वासना हो यत्यां सुधि जन्म मरण टलेनहिं ॥ मारे पंचविषयनी वासना टालीने भगवान भजवा एक-
ल्याणनुं रुप छे ॥ अने ते विना बिजां कल्याण छे ते तो माईक फलने आपे ते फलना सर्वत छे ॥ अने लोकमां रुडानुं नाम क-
ल्याण कहे छे पण साचुं कल्याणनुं रुप तो पंच विषयनी वासना टलिने आत्यंतिक मोक्षने पामवुं ॥ ते ज एक कल्याणनुं
रुप छे ॥ हवे ते कल्याण केम थाय तो आत्यंतिक ज्ञानना आपनारा एवा जे महात्मा पुरुष ते ज्यारे जिवने प्रगट मले ने

तेनोद्दश्यआसरो करे ॥ने ते महात्मा पुरुषकृपा करिने धर्मज्ञान वैराग ने महात्म्ये सहितभक्तिसिद्ध करावीने वासनाटळावीने ब्रह्मरूपकरे त्यारेआत्यंतिककल्याणथाय ॥माटेमायापरत्थाजे भगवानके भगवानना एकांतिक नीरवासनीक साधु तेजीवने प्रगट मले त्यारेजकल्याणथाय पण ते विना थाय नहि एसिद्धांतवार्ता छे ॥ ॥

ईतिश्रीमुख्यसिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्॥१९॥ओ गणिसें ॥२३॥ना विसना भादरवा शुदिअष्टमीने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजिंत्रामध्येदवे मल कारचंद गंगादत्तनी बेहेन बाई वेणीबाने घेर ओतरादाबारनाचोकमां गारितकिये युक्तपलंगउपर विराजमान थयाहता॥ नेसर्वे सोनेरि वस्त्र धारणकर्यांहता ॥ने पुष्पनाहार पेहेर्या हता॥नेपोताना मुखारविंदनी आगळ साधुत-था देशदेशनाहरिभक्तनीसभा भराईनेवेठीहती॥पछे महाप्रभुजीओ त्याजे सांभळो एकवातकरियेजे सतपुरुषने अ-सतपुरुष बेयनादेहतो त्रणगुणना थये छे॥ तेमां रजो गुणथकि दसइंद्रियोथई छे ॥अनेतमोगुणना पंचभूतनेपं चविषय थया छे॥ अने सत्वगुणनाचार अंतःकरणने चौदेवता थया छे॥एविरीतेचोविसतत्वना देह सतपुरुष नेअ सतपुरुष नादेहए बेयना थयाछे॥ पण सतपुरुषमां नेअसतपुरुषमांतो अतिघणो भेदछे केमके सतपुरुषछे ते तो माया परवर्ते छे ॥ अ नेत्रणगुणनोजे देह तेने पोतानुं रुपमानताnथी॥अनेअदभुत आनंदमां सदापेवर्त्या करे छे॥अने जे असत पुरुषछे॥तेतोदेहनेजपोतानुंरुपमानेछे॥अनेपंचविषयमां लोलुप वरतेछे ॥जेमरांकनां नेराजानां बेयनां घरधू-ळपाणानां होय॥पणजे रांकनां घरछे॥ तेमां तोराखना ढगलात थाफुटेलाहांडलां तेहोय तथा टुटेला खाटला नेफाटेला गोदडानागाभा होय ॥नेओरडाउपर छाजहोय ॥ अनेजे राजाना घरमां तो भारे भारे अनंतप्रकारनी रिद्धि सिद्धिहोय एदृष्टांतएनुं सिद्धांतए छे जे सतपुरुषना नेअसतपुरुषना देह तो त्रणगुणना छे पणअसतपुरुषछे तेनाअंतरमांकाम क्रोध लोभ स्वाद स्नेह मानआदिक अनंतदोष भर्या होय॥नेपंचविषयने भोगवता होय अनेजे सतपुरुष छे॥

तेमांतोअनंतशुभगुण रह्याहोय ॥नेपंचविषयनीवासनायेरहित वर्तताहोयनेमायापरस्थीतियेयुक्त थका देहमां रहि-
ने भगवाननीभक्ति संबंधि क्रियाकरे ॥अथवा अनंत बिजाजीवोनाकल्याणने अर्थे क्रियाकरे पणअज्ञानीबारद्रष्टिवा-
लाछे॥ तेनाओलख्यामां आवतीनथी॥ केम केजेमअसत पुरुष मोढे करिने खाय॥तेम सत्पुरुष मोढेकरिने खाता
होयअनेजेमअसतपुरुष नेत्रेकरिने जुवे तेम सतपुरुष पण नेत्रे करिनेजुवे एवी रीते असतपुरुषनेसतपुरुष बेयइंद्रि
यो वडे क्रीया करताहोय तेणेकरिने बाह्य द्रष्टिवाला अज्ञानीजीव ओलखि शकेनहि॥ अनेजेअसतपुरुषक्रियाकरे
छे॥तेतो देहनेपोतानुं रुपमानीने विषयने विषेआशक्तियेकरिने क्रियाकरे छे ॥अनेजे सतपुरुष छे तेतो अधर्मनो
नासकरवाने अर्थे नेअनंतजीवोना मोक्षने अर्थे क्रियाकरताहोय पण देहने ममते करिने सतपुरुषनी कोईक्रीयानहो
य॥ अनेजेअसतपुरुषहोय तेतोश्रोत्रनी व्रतियेकरिने शब्दमां एकरस थईरह्याहोय ॥अनेत्वचानीव्रतियेकरिनेस्प
र्शमां आशक्तियेकरिने जोडाईरह्याहोय॥ अनेनेत्रनीवृतियेकरिने रुपमां जोडाईरह्याहोय ॥एवीरीतेअसतपुरु
षनी इंद्रियोअंतःकरण तेपंचविषयनेजोगेकरिने विकारने पामिनेतेमांएकरसथईजायछे जेम श्वेतवस्त्रने गलि
ना रंगमां बोले त्यारे श्वेतमटिनेश्याम थईजायछे॥ तेमजीवछे तेतो श्वेतवस्त्र जेवो स्वच्छछे॥पण पंचविषयरुपि गलि
नेरंगे करिने भ्रष्टथईगयो छे ॥अनेवलितेउपरपंचविषयनापटदेतोरहेछे॥ जेमकोईक द्रव्यने उंडुं दाटिने तेनाउपर पाण
नीसला मुकीनेउपर चुनानो धाबो आपिनेवलीतेउपर सिस्सं ढाले ॥ नेतेउपरवलि चुनानो धाबो आपे ॥ तेमअसतपुरुषछे
तेअनंतपापेयुक्त छे॥नेवलितेना उपर अशुभ सब्दने सांभलवेकरिने तथा असत्भक्ष्यादिकना रुपने कुमतियेकरि-
नेजुवेछे॥ तेणेकरिनेअसतपुरुषने तेना संगनाकरनारा ॥ तेजन्ममरणना महाकष्टनेपामेछे ॥अनेश्रोत्रइंद्रिछे तेआ
काशथकि थईछे॥ नेत्वचाइंद्रिवायुथीथईछे॥ अनेनेत्रइंद्रि छे तेअग्निथी थईछे॥ अनेरसनाइंद्रिजलथकिथईछे
॥एवरिते पांचज्ञानइंद्रियोनेविषे पांचभूतरह्याछे॥अने तेमां श्रोत्रइंद्रिनेनेवाकइंद्रिनेएकताछे॥केमकेसांहनरसे

मोटे बोलाय तेने श्रोत्र करिने ग्रहण करे छे ॥ अने त्वचाने ने हस्त इंद्रिने एकता छे ॥ केमके त्वचानी रक्षा हस्त करे छे अने नेने-
त्रने ने पगने एकता छे ॥ केमके पग छे ते रूपने पमाडे छे ॥ अने रसनाने ने सिश्नने एकता छे ॥ केमके खारा खाटा ग त्या-
चिकणा जे रस जमे तो शिश्नने एकता छे । ने इंद्रिमां वायु मां भराय ने विर्य पात थया विना रहे ज नहिं ॥ ए सिद्धांत वा
र्ता छे ॥ अने घ्राणने ने गुदाने एकता छे ॥ ते गुदानी दुरगंध घ्राणने जणाय छे । एवि रीते पांच कर्म इंद्रियोने ने पांच ज्ञान इंद्रि
योने परस्पर संबंधे करिने पंचविषयने भोगवे छे ॥ एवि रीते अनादिनो जीव ने इंद्रियो वडे करिने पंचविषय भोगव्यानो हाल छे ॥
एज असतपुरुषपणुं छे ॥ मारे जेने पोताना जियात्मानो मोक्ष करवानी इंछा होय तेने प्रथम तो सतपुरुषनो समागम करिने पछे
तेने वचने करिने इंद्रियोने नियममां करवां ॥ केमके इंद्रियोने अनादि कालनो विषयनो संबंध छे ॥ ते घडिकमां निरवासनी
क थाय नहिं ॥ जेम आंके जारखुटडाने तरत सांतिडे जोडे तो कोई काले चाले नहिं ॥ ए तो प्रथम तरिलामां नाखे ने पछे घिहे
पलोटे ने हलवे हलवे अभ्यासे करिने सांतिडा गाडा भरतियां ताणे छे ॥ तेम प्रथम तो नियमे करिने इंद्रियोने वस करवां
॥ अने जेनी इंद्रियो नियममां नथी ने कहे छे जे हुं सिद्धदशाने पाम्यो छे ॥ ते तो महादंभी छे ॥ ने धर्मघात की छे ॥ अने एवा दु
ष्ट पापिने तो शास्त्रे करिने मांथु कापी नाखीये तो अतिशे मोटुं पुन्य थाय छे ॥ केमके एवा जे दुष्ट गुरु ते तो अनंत जीवोनां भु
डां करे छे ॥ माटे एवा अधर्मी थकि मुमुक्षुने जरूर दुर रहेवुं ॥ अने जे जे अधर्मिनो संग करे तो तेनुं जरूर भुंडुं थाय ॥ जेम भांग
के दारु पीये तो जरूर गांडो थाय तेम अधर्मीने संगे करे ॥ पण जरूर भुंडुं थई जाय ॥ माटे अमारो तो ए ज सिद्धांत छे ॥ जे
पंचविषयनो रागी होय तेना संगनो त्याग करिने इंद्रियोने नियममां करिने आत्मारूप थईने अंतरदृष्टि करिने भगवान
नुं स्वरूप हृदामां धरिने निरंतर अखंड खातां पितां सर्वे क्रियामां जाणपणामां रहिने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनी अखं
ड स्मृति राखवि ॥ अने एवि रीते सर्व इंद्रियोनी व्रतियो भगवानना स्वरूपमां जोडाय त्यारे ते भगवानना स्वरूपने विषे
जोडाये करिने इंद्रियो निर्गुण भावने पामि जाय छे ॥ पछे ते इंद्रियो मां ज्ञानरूपि प्रकाश थाय छे ॥ ने पंचविषयनी वासना

नांमूळ उखडि जाय छे ॥ पछे अखंड एक भगवाननुं स्वरूप जदे खाय छे ॥ तेने सिद्ध दशावाळो जाणवो ॥ तथा ब्रह्मरूप जाणवो ॥ अने ज्यां सुधि विषयनो राग होय ॥ त्यां सुधि तेनुं आत्यंतिक कल्याण थाय नहिं ॥ एतो विषयनो राग टळे त्यारे तेनो मोक्ष थाय छे ॥

॥ इति श्रीसुखसिद्धांत समाप्तः ॥

॥ श्रीहरिकृष्णायनमो नमः ॥ ॥ संवत् ॥ १९ ॥ ओगणिसें ॥ २३ ॥ त्रेविसना भादरवा शुदि ॥ १ ॥ नये मिने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री सोजित्रामध्ये पटेल लाघाजी किसाभाईने घेर उगमणे बारना घरना फळियामां गादिवकिये युक्त विराजमान थया हता ॥ ने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ ने पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता ने कान उपर गुच्छ धारण कर्या हता ॥ ने पाघमां तोरा लटकता हता ॥ ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ ने पोताना सुखार्विंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे महाप्रभुजी बोल्याजे आज जैनमतनो सिद्धांत कहिये ॥ पछे गामश्री पीपलीना वीरजी भक्ते कह्युं बहु सारुं वात करो पछे महाराज बोल्याजेजी पछे ते स्थूल सूक्ष्मने कारण ए याजे त्रण देह तेने धरिरह्यो छे ॥ तेमां स्थूळ देह छे ॥ तेनी पुष्टि ते विषयनी क्रिया करिने छे ॥ अने स्थूळनी पुष्टी थाय छे ॥ तेनो रागसूक्ष्मदेहमां रह्यो छे ॥ मारे जेथी वासना होय तेवी क्रियानो संकल्प थाय तो तेने भोगव्यामां जीय पापपुन्य जोतो नथी ॥ अने पोतानो संकल्प जेवो छे ॥ तेने पुरो पाड्यो ॥ ए सूक्ष्मदेहनी पुष्टि छे ॥ अने जे कारणदेह छे तेनी पुष्टि एछे जे आसिजताके हेतां कोई काळे वासनाटाळवानो संकल्प नथी कर्यो अने वासनाने विषे सदाय भरपूर रह्या करे छे ॥ अने वळि जीवने जाग्रत स्वप्न ने सुषुप्ति ए त्रण अवस्था छे ॥ तेमां जाग्रत अवस्थाते केई तो पंचविषय संबंधी जे ज्ञान यथार्थ रहे ॥ अने स्वप्न अवस्थामां तो पंचविषयनुं ज्ञान छे तो खरुं पण अजथार्थ पणे रहे छे ॥ अने सुषुप्ति अवस्थामां तो शून्यभावने पामि जाय छे ॥ एविरीते जगतना जिव त्रण देहमां ने त्रण अवस्थामां वरते छे ॥ अने मोहरूपी निंद्रामां जन्ममरणना दुःखने पामे छे ॥ अने जे ज्ञानी छे ने तो त्रण अवस्था थकि ने त्रण देह थकि व्यतिरेक वरते छे ॥ एविजे निर्गुणस्थिति तेने पाम्या छे

॥अने ते मोहरुपि निंद्रामां नथि आवता त्यां श्लोक छे ॥ जे॥ ॥या नीसा सर्व भुतानां तसजाग्रतिसयमी॥ ॥
एनो एम अर्थ छे जे जगतना जिव भगवाननी कोरे सुताछे॥ केहेता भगवानने नथी भजता॥ अने ज्ञानी पुरुषछे ते भगवान
नी कोरे जाग्या छे केहेतां निरंतर भगवाननुं भजन करे छे॥ अने जगतना जीव छे॥ ते पंचविषयनी कोरे जाग्याछे॥ केहेतां वि-
षयने भोगवे छे॥ अने ज्ञानी पुरुष छे ते पंचविषयनी कोरे उंघ्याछे॥ केहेतां विषयने नथी भोगवता अने जेने भगवानना स्वरुप
नुं ज्ञान नथी तेने तो सदाय सुषुप्ति अवस्था जाणवी॥ अने एनी दस इंद्रियो ने चार अंतःकरण आदिक चोविस तत्व एसर्वे
मां मोहरुपि तम व्यापि रह्यो छे, तेणे करिने एने सर्वे कारण सर्व नियंता सर्व आधार ने अलोकिक, अपरमित प्रतापे जेनो
एवा जे प्रगट भगवान तथा ते भगवानना एकांतिक संत ते मोहरुपि निंद्राये करिने ओळखाता नथी॥ अने जेम कोइक पु
रुषने स्वप्न आव्युं होय ते जाणे क्यांईक देह धर्यो ने त्यां अनंत प्रकारना विषयभोगव्या ते जाग्रत अवस्थाने भुलीने भोगव्या
॥ तेम मोहरुपी नींद्रामां आत्माना स्वरुपने भूलिने एना श्रोत्रनी प्रति स्त्रियादिकना शब्दमां जोडाणि छे॥ अने त्वचानी प्र
ती स्त्रियादिकना स्पर्शमां जोडाणी छे॥ अने नेत्रनी प्रति स्त्रियादिकना रुपमां जोडाणी छे॥ अने रसनानी वृतिसारु सारु
खावामां जोडाणि छे॥ एवी रीते दस इंद्रियो ने चार अंतःकरण तेणे करिने पंचविषयमां ए जिव लोलुप थई रह्यो छे॥ जेम
दूधने पाणि एकरस थई जाय॥ ते कोई रीते नोखुं पडे नहिं॥ पण हंस होय तो ते दूधपाणिने नोखुं करे केमके हंसने चां-
चमां खटास होय तेणे करिने दूधना कोकडां वळी जाय पछे ते दूधनां कोकडां हंस खाई जाय ने पाणि पड्युं रहे॥ तेम जीव
पंचविषयमां एकरस थई गयो छे॥ ते कोई रीते नोखो थई शके नहि॥ ते एने तो हंस एवा जे मायापर परमात्मा ते ज्यारे मनु
ष्यरुप थईने प्रथ्वी उपर विचरतां होय ते जीवने मळे प छे॥ ते ज्ञानरुपि खटासे करिने स्थूल सूक्ष्म ने कारण ते मांजी वएकर
स थई गयो छे ते थकि नोखो पमाडे छे॥ ने केवळ पदने पमाडे छे॥ ते केवी रीते केवळपदने पमाडे छे॥ तो तप ने दया सिळने भत्य
ए च्यार साधन कराविने केवळ रुप करे छे॥ तेमां प्रथम तो तपे करिने स्थूळदेहरुपी जे माया तेने टळावे छे॥ ते तपते शुं तो इ-

द्रियोने विषयभोगववादेवाजनहिं।।तेनुंनाम तपकहेवाय।। ते तपेकरिनेदसइंद्रियोनेपंचभूतनेनिपममांकरावेछे।।अनेते-
तपध्मलापुरुषनेदयाराखवी।।अनेतपस्वि पुरुषनेजोदयान होय तो तेथकि पणमनुष्यने ताप थाय तेथकिहिंसा थायछे।।
माटेसर्वेजीवप्राणिमात्रने विषे आत्मानो भाव राखिने तेनीउपर दया राखीने यथायाग्य रक्षा करवि।।पणकोईजीवउपरक्रूरदृ
ष्टिनकरवी तेणेकरिने सूक्ष्माशरिरजीतायछे।।अने सीलजे अंतःकरणना सूक्ष्म राग कहे तां पंचविषयनी वासना तेनो
त्यागकरिने ध्यानमां बेसारेछे।।तेके विरीते बेसारेछे।।लोनीवरती परजग्या होयत्यां पवित्रभावजीनुंजेआसनतेउपर सिध
आसन वलाथिने भाय वडेकरिने चोविसआहार करावेछे।।हवेश्रोत्रइंद्रिनीव्रत्तिछे।।नेनीप्रतिलोमदृष्टिकरिनेतेना विष
यनो त्याग करिनेपोतेदृष्टाथईनेव्रतिने आत्माने विषे जोडिदेवि अने त्वचा इंद्रिनीव्रतिछे।।तेने स्पर्स विषय नो त्याग करिने
पोतेदृष्टा थईनेते व्रतिनेआत्माने विषेप्रति लोमदृष्टिकरिने तेवृत्तिनेआत्माने विषेजयकरवि।।अने चक्षुइंद्रिनीव्रतिछे
तेने रूपविषयथकि पाछी वालीनेपोतेदृष्टाथईने प्रतिलोमदृष्टि करिने तेव्रतिने आत्माने विषेजयकरवि ।।अने रसनाइं
द्रिनीव्रतिछे।।तेने नानाप्रकारनाजेरस विषय तेथकि पाछि वालीने तेनोदृष्टाथईने प्रति लोमदृष्टिकरिने तेव्रतिने आत्मा
ने विषे जयकरवि।।अने घ्राणइंद्रिनीव्रतिछे।।तेने गंधविषयनोत्याग करिनेपोते तेनोदृष्टाथईने प्रति लोमदृष्टिकरिनेव्रति
नेआत्माने विषे जयकरवी।।एविरितेदसइंद्रियोने चार अंतःकरण पांच विषयनेपांचभूत एन्चोविसतत्वनीजे व्रति
योतेनेपोत पोताना विषयथकि पाछावालिने तेनोपोतेदृष्टाथईने प्रतिलोमदृष्टीकरिनेतेव्रतियोनेआत्माने विषे जयकरवि
।।पछे पोतेएकलो केवलरह्यो।। तेनुंनामकेवलकहेवाय।।नेतेकेवलपदनेपाम्यो कहेवायछे।।अनेचोविसतत्वनीव्रति-
योने प्रतिलोमदृष्टिकरिनेआत्माने विषे जय करवुं।।तेनुंनामचोविस अहार कहेवायछे।।एविरीते तपदया भावने शिल
तेने सिद्ध करिनेचोविसतत्वनीवृतियोने प्रतिलोमदृष्टिकरिनेआत्मानेवीषे लयकरिनेचोविस आहारकरिनेकेवलि
थईने पछे ध्यानमां बेठिने पोतानाआत्माने विषेएवा ज्ञानना करावनारा एवाजेपरमात्माभगवान तेनुं भावेकरिनेध्या

नकरवुं ॥ पछेएविरीते ध्यानकरतांकरतां आत्माने विषे परमात्मा साक्षात्कारदेखाय छे ॥ पछे परमात्माने विषे भावेक
रिनेजोडाय छे ॥ त्यारे पोतेपण तदाकार भावने पामिजायछे । अनेअखंड अविनासि सुखरुपजे केवलपद तेनेपामेछे ॥ ने
एने सांख्यमीनेनो सिद्धांतकहे छे ॥ अनेकर्मे करिनेजेकेवलि थाय एमकह्युं छे ॥ ते पण आ कह्युजेतपस्वा सिलनोभाव
तेने सिद्ध करवा रुपजे कर्म तेणेकरिने केवलि थाय ॥ अनेवलि कर्मनोत्याग करेत्यारे केवलि थाय एम पणकह्युं छे ॥ ते
तो विषीयासक्ति रुपजेकर्म तेनो त्यागकरेत्यारे केवलिथाय कहेतां वासनारुपीकर्म ॥ खपावेजे वासनाटाले त्यारे के-
वलि थाय ॥ अने कर्मेकरिने जीव बंधाणोछे ॥ ते पण अनादिकालनो जे पंचविषयनी वासनाजीव ने छे ॥ तेवासनारुपी
कर्मेकरिनेबंधाणो छे ॥ एविरीते केवलपदने पमाडनाराने सर्वेना मतना सिद्धांतनेजाणनाराने सर्वे जगतना करताहरता
ने सर्वेना आधारएकज भगवान् छे तेज भगवान आजतमने प्रत्यक्षमल्या छे ॥ ॥ इतिश्री मुखसिद्धांत
समाप्तः ॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ॥ ॥संवत् ॥ १९ ॥ श्रीगणिसें ॥ २३ ॥
त्रेविसनाभादरवाशुदी ॥ १० ॥ दसामीने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीसोजित्रा मध्ये बामालि बाईवां बा
नीभाणीबाने घेर गादितकियेयुक्त ढोलियाउपर विराजमान थयाहता ॥ अनेसर्वे कसुंबलवस्त्र धारणकर्यांहतां ॥ अ-
नेपुष्पनाहारकंठमां धारणकर्या हता ॥ ने पाघमां तोरा लटकताहता ॥ ने कानउपर गुलाबना पुष्पनागुच्छ खोस्याहता ॥
अने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा देशादेशनाहरि भक्तनी मोटिसभा भराइनेबेठिहती ॥ पछे महाप्रभुजीनी आर्तिक-
रिने साधु किरतनबोलीरह्या ॥ पछे श्री हरिकृष्णमहाराज बोल्याजे सांभलोएकवातकरियेजे जेवुं कुसंगे करिने जीवनुं भुडुं
थायछे ॥ तेवुं बिजुंकोइनेकरिनेनथी थतुं ॥ कुसंग किधो तो त्रणप्रकारनो छे ॥ तेमां एकतो बहारनो कुसंगछे ॥ नेएक सत्संग-
मां कुसंग छे ॥ अनेएक इंद्रियोअंतःकरणनो कुसंगछे ॥ एत्रणकुसंगे करिनेजीव जेतेजन्ममरणनादुःखनेपामे छे ॥ हवे
बहारनोकुसंगते कियो तो सत्पुरुषनोजे सिद्धांत तेनेभूलिने विषयनीआसक्तिये करिने शास्त्रना अर्थअवलासम-

जाविने धर्मथकि भ्रष्ट करेछे॥ अनेवलि ते कुसंगी केवा छे ॥ तोउपरथी तो विश्वासिजीवोने धिरववा मारुं कंठियो माला राखेने तिलक रुडाबनावेनेउपरथीवेस सारा राखे ॥ पण सत पुरुष तथा सद्धर्म तेना तो एकुसंगी द्रोह नाकरनारछे ॥ तेने ओलखिने तेनो त्यागकरवो॥ अनेपूर्वेरावणपण पुलस्त रुषीना दिकरानो दिकरोहतो ॥ नेवेदनीजडायोकरिने पोताने हाथेमाथांकापिने सीवने चडाव्यां हतां तोपणजो प्रत्यक्ष प्रमाण एवाजेरामचंद्रजी तेनो जो द्रोह कर्यो तो अतिश्रो दुःखपाम्यो ॥ अने कुटुंबे सहितनाशपाम्यो॥ अनेजरासंधकंस सिसुपालदुरजोधन करणएसर्वे परोक्षपणे भगवाननी भक्ति करतां॥ अनेसदाव्रतआपतानेदानपुन्यबहु करता॥ने ब्राह्मण साधुतो मोढे मागे ते आपता ॥ पण प्रत्यक्ष श्रीकृष्णने नओलख्या तो सर्वे अस्कर भावने पाम्या ॥ मारे प्रगट भगवाननाद्रोहि होय॥ तेनेतो दुष्टजाणिने तेनो त्यागकरवो ॥ अनेसत्संगमां कुसंगते कियो तो जे ने पंच विषयमांथी एके विषय जे लोभ काम स्वाद स्नेहमान ॥ एपांच मांहे लो एके जे मां होयने ते सत्संगमां होय तोपण ते नो सत्संग ज्यारे त्यारे टलिजशे॥ अने तेनेतो ज्यां सुधि मोटा पुरुषन भावे त्यांसुधि नभे अनेज्यारे तेना स्वभाव ने नमुकि शके नेमोटापुरुषनो अवगुण ले ॥ अने सत्संगने मूके ॥ जेमभालदेश मांकुवो होय तेने उपरथी पाणी मिठुं होय ॥ ने जो ऊंडुं खोदे तो पाणि खारुं झेर निसरे तेमपंचविषयना लालची सत संगी थयाहोय तेना विषय नुं जो मोटापुरुष खंडनकरे तो सामा द्रोह करे ॥मारेएवा पंचविषयना लालचि सत संगमां होय तेनेंकुसंगजाणवो ॥ केमकेएनोजेजेसंगकरे तेनुंपण भुडुंकरे तेकेईरीतेभुडुं करे छे ॥ तोपोताने विषयनी आशक्तिहोय ते आशक्तिनेदंभ करिने कोईने विसवासि भोलाने जणाववादेनहिं ॥ अनेभगवानना महात्मनी ओथ्य लेईने पोतेपण विषयने भोगवे ने बिजा विसवासिने विषे भोगवावे ने धर्मथकिभ्रष्टकरे ॥ मारे जेजे पंचविषयनारागिछे तेसत्संगमां कुसंगछे ॥ अनेअंतरनो कुसंगते कियो तो इंद्रियोअंतःकरण मांजे पंचविषय ना सूक्ष्म राग ते अंतर नो कुसंगछे ॥ तेनेज्यारे स्त्रिनो संबंधथाय तथा द्रव्यनो संबंधथाय ॥ तथा सारुं सारुं खावानो जोगथाय ॥ तथा स्नेह मानआदिक पदार्थनो एकांतमां

संबंध थाय ॥ त्यारे जे जे अंतरमां राग होय तेनुं अंतःकरण भ्रष्ट थया विना रहे ज नहिं ॥ माटे जेने जेने पोताना कल्याणनी इच्छा
होय तेने तो इंद्रियो अंतःकरण ने परमेश्वरनी आज्ञारूपि जे नियम तेने अतिशे द्रढ करिने राखवां पण कोई काळे ते नियमने
मुकवा नहिं ॥ अने जेनां इंद्रियो नियममां नथि ते अमारा नथि ॥ अने अमारा जोगमां रह्या छे ॥ तोपण अमथकि लाख गाउ
छेटे छे ॥ अने जे जे अमारा वचन प्रमाणे वरते छे ॥ ने ते आज्ञाये करिने हजार गाउ छेटे जाय तोपण अमारी समीप मां छे ॥
अने अमे तो अनंत ब्रह्मांडना जिवोना अंतःकरणने ईदंग देखीये छैयें जेम हथेळीमां पाणिनुं टिपुं ॥ देखाय तेम सचराचर स
र्वे जीव मात्रने अमे जाणिये छैये ॥ अने अमारी कृपा जेना उपर थईने सिद्धदशाने पाम्या होय एवा जे साधु ते पण सर्वना अं
तःकरणने जाणे ॥ अने जे जे पुरुष अमारा दर्शन मुकिने स्त्रियोना मों सामु जुवे छे ॥ तेने तो अतिशे निच ने चंडाल तुल्य
जाणवो ॥ केमके चंडालने निच होय तेज स्त्रियो मोह पामे छे ॥ केमके स्त्रिनो देह छे ॥ ते तो हाड काम मांस नाडियो त्वचा लोही
विर्य मूत्र विष्टा आदिक जे नकारि वस्तु तेनो भरेलो छे ॥ माटे एवि नठारी वस्तुमां मोह पामे छे तेने पण नठारा जाणवा
अने जे स्त्रि छे ॥ ते पण अमारां दर्शन मुकि पुरुषना दर्शन करे छे ॥ ते स्त्रियोने पण अति निच जाणवी ॥ केमके पुरुषना
देह छे ते पण भुंडि भुंडि वस्तुमांथी थया छे ॥ अने पुरुषना देहमां पण विष्टा रुधिर लोही परु पाच आदिक नकारी वस्तु भरी छे
अने धोलि चामडिने देखिने स्त्रि पुरुषमां मोह पामे छे ॥ अने पुरुष स्त्रिमां मोह पामे छे ॥ ए बेयने महादुष्ट जाणवा ॥ अने जे
भगवानना भक्त होय ॥ तेने तो हाड मांसनो लोचो जे देह तेने पोतानुं रुप मानवुं ज नहिं ॥ ने पोतानुं रुप तो अच्छेद अभेद अवि
नाशि एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरुप मानीने पोताना इष्टदेव जे प्रत्यक्ष भगवान तेनी आज्ञा प्रमाणे निरंतर वर्तवुं ॥ अने
एम समजवुं जे जेनी आज्ञामां चंद्रमा सूर्य निरंतर फरे छे ॥ अने जेनी शक्ति काल छे ॥ माया छे ॥ पुरुष छे ॥ अक्षर छे ॥ एवा अ-
नंत ऐश्वर्य युक्त जे भगवान ते मुने प्रत्यक्ष मल्या छे ॥ अने ते मारा आत्माने विषे पण मूर्तिमान थकां अखंड रह्या छे ॥ अने व
ळि एवा जे भगवान तेनुं जो वचन लोपशे तो मुने मोटुं दुःख थशे ॥ ने जन्म मरणने गर्भवासना दुःखने घणी कवार पामी-

ज्ञाणथिरीते भगवाननो अलौकिक महिमा मम जांने पोतानुं मंथु जाय तोपण आज्ञा लोपथि नहिं ।।माटं जेने जेमां आमारि
आज्ञा प्रमाणे वरतवुं तेने तो कांई करवुं रह्युंनथि ।।केमके एना प्रारब्धतो अमे छैये ।।तेएना त्रएय प्रकारना जे कर्म सं-
चित प्रारब्ध क्रियेमाण ते सर्वे टलिजायछे ।।अने ते त्यागिछे ।।तथा ग्रहस्थछे ।।तोपण ब्रह्मरुपज जाणवो ।।नेएने दर
सनेकरिने करिने बिजा जीवनां कल्याण थायछे ।। ।।इतिश्री सुख सिद्धांत समाप्तः।।
।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ।। संवत् ।।१९।। ओगणिसें ।।२३।।त्रे
विसना ।। भादरवाशुदि ।।११।। एकादशीने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजींत्रा मध्ये दवे हरिशंकर
रगनाथने घेर आथमणा बारना चोकमां गादि तकिये युक्त पलंग उपर बिराजमान थया हता ।।ने सर्वे सोनेरि वस्त्र धारण
कर्यां हतां ।। अने ललाटने विषे केशरनी अरचा करिने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ।।अने पोताना मुखारविंदनी आगल
साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हती ।।ने घणा करीवादीवीयो करिने महाराजनी मोटी आरतिक
री धून्य करिने सर्वे सभा बेठि ।।पछे अक्षर मुक्तानंद स्वामिये प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज निवृत्तिमारग ते केने कहिये ने प्रवृत्ति
मारग ते केने कहिये ।। ते कहो ।। पछे महाराज बोल्या जे निवृत्तिमार्ग छे ।। ने प्रवृत्तिमार्ग छे ।। ते ने ज्ञानि छे ते जाणे छे ।।पण
जो बाह्यदृष्टिवाला होय तथा लौकीक दृष्टिवाला छे ।।ने अज्ञानी छे ।। तेने तो निवृत्तिमारगने प्रवृत्तिमारग ते ओलखा-
तानथी ।। माटे निवृत्तिमार्गने कियो तो निष्कामभावे करिने भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे करिने प्रवृत्तिनी क्रिया क
रेछे ।।तोपण तेने सदाय निवृत्तिमारगवाला जाणवा ।।अने पोताने मनने जाणे करीने तथा माने करिने जोए कांतमां बेसि
ने ध्यान करे ।।तोपण तेने प्रवृत्तिमारगवाला जाणवा ।।केमके सतपुरुषना समागम विना कोई काले पंचविषयना रा
ग टलता नथी ने विषयना रागतो ज्ञाने करिने टले छे ।।ते ज्ञान तो सतपुरुषथकि पमायछे ।।पण ते विना पोताने जा
णे ज्ञान थायनहिं ।।जेम मेहे ताजी विना निशालियाने विद्या आवे नहिं ।।तेम मायापर एवा जे ज्ञानदाता ते विना

कोईजीवज्ञाननेपामेनहिं॥ अनेजोदंभेकरिनेगमेएटलो निवृत्ति परायणरहेतोहोय तोपणतेनेप्रवृतिमारगमांबूड्यो
जाणवो॥ अनेजन्कमांकेटलाकब्रह्मकोदालछे॥ तेमिथ्याज्ञाननीओध्यलेईनेब्रह्मनास्वरूपनेजाण्याविनाकेवल
देहाभिमानेकरिने निवृतिमारगपकडिनेबेठोहोयनेमनमांएमसमजेजे अमेकर्मथकिमूकाणाछे येनेसाधनसर्वे
मारांपुरांथईरह्यांछे॥एमजेकहेछे तेतोमहापापीछे॥ अनेवासनानटळिहोयनेमनमांएमसमजेजे मारेमांथेजन्म
मरणनथी॥एमसमजीनेआळसुथईने परमादरूपिमायानेविषे वज्रपासमांबंधायछे॥ मारेएविअसत्य समजणेक-
रिने निवृतिमानेछे॥ तेतोमहामूरखछे॥कल्याणनासाचामारगथकि भूलापड्याछे॥ नेकरममारगनेविषे सदाय
बुड्याछे॥ अनेएवादंभीछेतेनेभोळालोकनीवृति मार्गवाळाजाणिने तेमांजेजोडायछे॥ तेपणपोतानाआत्मानोना
शकरनाराछे॥ अनेतेनेपणदेहाभिमानीमुरखजाणवा॥ अनेएवाजेदेहाभिमानीजीवछे॥ तेतोदेहसंबंधीजेक्रिया
तेमांतोअतिसेतत्पररहेताहोय॥ नेअनंतजन्मनापापकर्मनेबाळिनेभस्मकरेनेजीवनेब्रह्मरूपकरे॥एविजेभ
गवान प्रगट पुरुषोत्तमनीनवधाभक्ति तेनेएवा दुष्टप्रवृतिमानेछे॥ नेतेमांदोषनेदेखेछे॥ तेनुंकारणशुंछे॥तोएनेदेहा
भिमानछे॥ तेकोईकरतानथी॥ नेदेहाभिमानेकरिने एकांतपकडिनेबेसिरहेतोहोयपणते प्रवृत्तिमार्गवाळोछे
॥अनेपंचविषयनीआशक्तिनेदेहाभीमानमुकीनेभगवाननीआज्ञायेकरिने भगवाननीभक्तीसंबंधी जेजेक्रिया
करेछे॥ तेसर्वे निवृतिमार्गवाळाछे॥ मारेजेजे अमनेप्रसन्नकरवाहोय तेनेतोदृढेकरिने विषयाशक्तिनोत्यागकरि
नेनवधाभक्तिकरवि॥ अने नवधाभक्तिछेतेतो अनंतजन्मनामहापापतेनेबाळिनेभस्मकरेएविछे॥मारेएतो
अनंतजन्मनासुकृतउदेथायछे तेनेजअमारीसेवामळेछे॥तथाअमारासंतनीसेवामळेछे॥पणथोडापून्यवाळाने
सेवामळतीनथी॥ अनेजेनाजेनाउपरअमकृपाकरियेछैये॥ तेनेजअमारिसेवाआपियेछिये॥ तथाअमारासा-
धुनीसेवाआपियेछैये॥ अनेजेजेसेवाअंगीकारकरियेछैये॥ तेनेजअमारि सेवाआपिछे॥अनेएजअमारीकृपा

छे॥ अनेपूर्वे भगवान ना भक्त जेजे मोटम्यने पाम्या छे॥ तेपण प्रगट भगवाननी सेवाये करिने ज मोटि पद विने पाम्या छे॥ अने तेजनि वृत्तिमारग वाला कहेवाया छे॥ ॥इति श्रीमुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥संवत॥१९॥ श्रोगणिसें॥२३॥ भादरवा शुदि॥१२॥ द्वादशिने दिवस॥ महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजींत्रा मध्ये बाई भटिबाने घेर आथमणे बार ओरडानी ओसरि मांगादितकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता॥ नेसर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां॥ नेपुष्पनां आभूषण धारण करिने राजी घोडिये अस्वार थईने दोजनगारां नगारां गाजते वाजते गाम बहार एक वडनुं व्रक्ष त्यां हिंडोलो बांध्यो हतो॥ तेउपर महाराज उगमणे मुखारविंदे विराजमान थया हता॥ नेपोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी मोटि सभा भराईने बेठि हती॥ पछे महाराज बोल्या जे सर्वे सांभळो एक वात करिये॥ जे जीवनी दुराचरणे करिने भ्रष्टबुद्धि थई गई छे॥ ने भ्रष्टबुद्धिये करिने पोतानुं स्वरुप जे अछेद्य अभेद्य सुखरूप सत्तारुप॥ अक्षररुप कहेतां अविनासी तेने भूलिने जड दुःखरुप ने नासवंत एवो जे देह तेहुं ने नासवंत एवा जे देह संबंधी पदार्थ ते मारां एविरीते मिथ्या अहं ममता भ्रष्ट बुद्धिये करिने थई गई छे॥ तेणे करिने देहने नासे जीव अविनासि छे तोपण देह भेगो नास पामे छे॥ अने जीव सुखरूप छे तो पण पदार्थ नास पामे त्यारे पण महादुःखियो थाय छे। ने संतापने पामे छे॥ एविरीते अनादिकाळनो वारमवार जन्म मरणने पामे छे॥ ते केविरीते पोतानी मेळे ते जीव जन्म मरणना दुःख थकि मुकावाने समर्थ नथी थतो॥ माटे एने तो दया ना सिंधु एवा जे परमात्मा ते पोते कृपा करिने मनुष्यरुपे थईने एने ज्ञान आपीने अज्ञाने करिने जे भ्रष्टबुद्धि थई गई हति॥ ते ज्ञाने करिने स्फ बुद्धि थाय छे॥ ने ज्ञान केविरीते आपे छे॥ तो प्रथम तो नियमे करिने विषयनो त्याग करावे छे॥ अने पछे चोविसतत्वनो जे रुप तेने नोखां नोखां देखाडिने तेथकि नोखो एवो जे पचिसमो जीवात्मा तेनुं स्वरुप देखाडिने पछे एने वैरागे करिने देह संबंधि जे पदार्थ तेमांथी प्रीति तोडावे छे॥ अने पोतानी जे नवधा भक्ति

तेनेकराविनेजीवनेअनंतजन्मना भ्रष्टबुद्धियेकरिने पाप लाग्यांछे ते सर्वेना सपमाडे छे॥ पछेएने भगवानना स्वरूपने विषेएने अतिशेप्रीतिथायछे॥ त्यारेज जिवनोमोक्षथायछे॥ पणते विनाकोईकालेजीवनो मोक्ष थतो नथि॥ माटेमोक्ष तो सत्पुरुषज्यारे पोताना स्वरूपनुं कृपा करिने ज्ञानकरावेछे त्यारेज थायछे॥ तेजुवो ने पूर्वे पण जेजेअवतारथईग- या त्यारे तेनोजेनेजेनेजोग थयोछे॥ त्यारेतेसर्वेनां कल्याणथयांछे॥ ते शास्त्रमो लख्याणां छे॥ पणते विनाबिजाकोई नां कल्याणथयां नथी॥ अने शास्त्रमां पण नथी लख्याणां॥ माटेजेने पूर्वे जे सतपुरुषनो संबंध थयो हतो॥ तेजआज तमारेसंबंध थयोछे॥ तेतमारा जिवना मोक्षनो समो आजआव्यो छे॥ माटे पूर्वे भगवानना अवतार थयाछे॥ तेनी लिला ओशास्त्रमां लखीछे॥ ते लिलाने विचारिजुवोतो आजप्रत्यक्ष अमारा स्वरुपमां अतिशेदेतथशे नेअंतरमां प्रकाशथ शे॥ अने तमारा आत्मा स्वरूपपण तमने देखाशे॥ अनेते आत्माने विषे परमात्मा प्रत्यक्ष अमारुं स्वरूप तेप्रकाशमां दिव्यमूर्ति देखाशे॥ अद्भुत आनंदने पामशो॥ ॥ईतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥

श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्॥१९॥ओगणिसें॥२३॥ त्रेविसना भादरवाशुदि॥१३॥ तेरस ने दिवसमहाराजश्री हरिकृष्णभगवान गामश्री सोजित्रामध्ये दवेमंछाराम तथाकाशिरामनेघेर आथमणा बार नीओसरिमां गादि तकियेजुक्तढोलिया उपर विराजमानथयाहता नेसर्वेजरियानीवस्त्र धारणकर्यां हतां अनेसर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषण धारणकर्यां हतां॥ अनेपोतानामुखारविंदनीआगळ साधुतथादेशदेशनाहरिभक्तनी स- भाभराईनेबेठिहति॥ पछे श्रीकृष्णभाईये प्रश्नपुछ्युं जे पंचविषयनी वासना केमटळेछे॥ पछेमहाराजे तेमनेकह्युंजेत- मे वर्तमानदृढ राखोछो तोरखरा॥ वर्तमाननी खबर तोनथी पछेमहाराज बोल्याजे जेमकोईक पायलने चमक थयोहोय पछे तेने पडदा बांधिने कोईने देखवा दियेनहिं॥ नेजो मोकलो मेले तो चमक वधारे थाय॥ नेमरिजाय नेपडदामां नेपडदा मांरहे तो साजो थाय॥ तेमजीवने पंचविषयना घाजाग्या छे तेणोकरिने चमक चाल्यो छे॥ तेने सत्पुरुष पोतानास्वरुपना

निश्चय रुपि पाटा बंधावे छे।। अने नियम रुपि पडदो बंधावे छे ॥ अने कोई विषयनो पड छायो पडवा देता नथी ॥ ने कोई विषय टुकडा आववा देता नथी ॥ अने ते नियम रुपि पडदो केवि रीते बंधावे छे ॥ तो स्त्रियादिकना शब्दन सांभळवा ।अने रागरंग वाजींत्रादिक पण न सांभळवा ॥ अने खारुं खाटुं गळ्युं चिकणुं आदिक खटरसनो त्याग राखवो ॥ ए आदिक अनंत प्रकारनी करि पळावे छे॥ त्यारे तेना घारु रुझाय छे ॥ अने तृष्णा रुपि चमक मटे छे ।अने वासना रुपी महा पीडा तेना नाश पामे छे॥ अने वळी।त्वचाये करिने स्त्रियादिकना स्पर्शनो त्याग करवो ॥ अने नेत्रे करिने स्त्रियादिकना रुपनो त्याग करवो॥ अने रसनाये करिने अयोग्य रसनो त्याग करवो ॥ अने नासिकाये करिने अयोग्य गंधनो त्याग करवो ॥ एवि रीते पंच विषयना त्याग रुपि पडदा बंधाविने सत पुरुष पोताना स्वरुपना निश्चय रुपि पाटा बंधावे छे।। तो एक भगवानना स्वरुप विना प्रकृतिनुं कार्य कांई सत्य न देखे ॥ ने एक भगवानने ज सत्य देखे पछे तेने पंच विषयना घारु जाई जाय छे ।। अने तेनो धर्म अतिशे दृढ थाय छे।।अने ते पछे ब्रह्मादिकनो पाड्यो पण भगवानना मारगथकि पडे नहिं॥ अने ज्ञान रुपि तेना अंतरमां प्रकाश थाय छे ॥अने जीव ईश्वर माया ब्रह्म ने परब्रह्म तेना स्वरुपने ढंढग देखे छे ॥अने ए सर्वेना रुपने जाणिने पोते ब्रह्मरुप थईने ।।परब्रह्म पुरुषोत्तम एवा जे प्रत्यक्ष भगवान ते विना प्रकृतिनुं कार्य मात्र ते सर्वेने विषे तेने अनंत वैराग थाय छे ।।अने आमारा स्वरुपने विषे अतिशे प्रीति थाय छे।। मारे आमारा नियमने अतिदृढ करिने राखशो तो तमारे कल्याणना मारगमां कांई ये विघन नहिं थाय ।। ने संसार रुपी जे समुद्र तेने सेहेजे तरि जशो ।।अने पूर्वे जे जे मोटि पदवीने पाम्या छे ।।ते पण मोटाओनी आज्ञा पाळवे करिने पाम्या छे ।।मारे ते पदवीने आज पण मारे वचने करिने पामशो।। ॥

ईति श्री मुख सिद्धांत समाप्तः।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ।।संवत।।१९।।ओगणिसें ।।२३।।त्रेविसना भादरवा शुदि ।।१४।। चौदसने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोणाज मध्ये जोशिदेव वांकर कुबेरजीने घेर आथमणा द्वारनी ओसरिमां गादि तकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता॥

अने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ अने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे सारथी झवेरभक्ते महाराजने हाथजोडिने कह्युं जे केटलाक मुमुक्षु छे ॥ ते मत पंथनी आडे करिने तमारी पासे आवातुं नथी ने तमारा स्वरुपनो निश्चय थतो नथी ॥ अने तेने अंतरमां हेत छे अने नकि निश्चय थया विना शान्ति थति नथि ॥ माटे अमारे निश्चय केम थाय ॥ ने अमारुं सारुं केम थाय ॥ एविरीते कोई मुमुक्षुए मुने केहेवराव्युं छे ॥ तेनेनुं सारुं केम थाय ने निश्चय केम थाय ते कहो ॥ पछे महाराज बोल्या जे जे मुमुक्षु तथा मुक्त जीव होय ते जे ते भगवानने ज्ञानने करिने ओलखे छे ॥ ते सारुं महात्मा पुरुष प्रगट थया होय तेनुं ज्ञान कल्याणना खपवालाने जरुर सांभलवुं ॥ अने जे मुक्त ने मुमुक्षु जिव होय ॥ तेने परोक्ष भगवाननी आस्ता होय ॥ अने तेना शास्त्र पण तेणे सांभल्यां होय तेणे करिने ज्ञान मां पण ते समजे ॥ जेम कोईकनो कागल परदेशथी आव्यो होय ॥ तेने बांचिने जे बुद्धिवाला होय ते कागलना लखनारानी बुद्धिनुं प्रमाण करे छे ॥ तेम जे मुमुक्षु ने मुक्त होय ॥ ते पण सत्पुरुषनुं ज्ञान सांभलीने ते सत्पुरुषने ओलखे छे ॥ ते माटे कल्याणना खपवालाने सत्पुरुष पासे जईने ज्ञान सांभलवुं ॥ अने दैवि ने मुमुक्षु जीव होय ने तेजो कोईक मत पंथमां तथा मोटम्य मानमां बंधाई रहे ॥ ने सत्पुरुष प्रगट थया होय ॥ ने तेनुं ज्ञान न सांभले तो तेने सत्पुरुष कोई काले ओलखाय नहि ॥ अने मत पंथना अहंममत्वे करिने सत्पुरुषनो अवगुण आवे तो तेणे बुद्धि दुसित थई जाय छे ॥ अने पूर्वनुं सकृत होय ते पण दिवसे दिवसे नास पामतुं जाय ॥ अने दैवि ने मुमुक्षु होय ते अंतरमां मुंजाया करे ॥ माटे एम समजीने बुद्धिमान थईने महात्मा पुरुषना अवगुणनो त्याग करिने तेना गुणनुं ग्रहण करवुं ॥ अने अवगुण तो क्यारे लेईये तो कांईक अधर्म करता करावता होय ॥ तो तो अवगुण लेवो ॥ पण ते तो कोई वात न होय ॥ ने अमथो अवगुण लेवो ते तो असरनो स्वभाव छे ॥ एम विचारिने तेना अवगुणनो त्याग करिने तेनुं ज्ञान सांभलवुं ॥ त्यारे तमे केहेश्यो जे बिजुं तो सर्वे सारुं छे ॥ पण भगवान कहे छे ॥ एटलुं हैये बेसतुं नथि ॥ तो एनुं तो एम छे जे आ लोकमांप-

णकोईकसारुमनुष्यहोय ॥ तेखोटुं बोलतानथि॥ तोमोटापुरुषजेनेहजारोलोकमांनताहोयनेजेने विषेपरिपूर्णज्ञानहोय तेखोटुं बोलेनहिं॥ एतोनबोले॥ जेमहोयतेमजकहे॥ अने कोईक अधर्मिदुष्टहोय ॥तेने भगवाननहोयने कहेवाजाय केहुं भगवानछुं॥ तोतेनेजीवकोई माननहिं॥ अने तेनीतो फजेतिथायछे॥ तेतोकोईनेपणमोढुंदेखाडिशकेनहिं॥ अनेतेनीपासे सर्वे मतना सिद्धांत नेज्ञान पण होयनहिं अनेजेभगवानहोयतेतो सर्वे मतना सिद्धांतनेजाणता होय॥ अने तेपासे जजे ईश्विने मुमुक्षु जीव आवे तेनेज्ञान आपीने ते नाअंतरना संषपमाटनेटालिने पंचविषयनाराग उखाडिनेशांन्तिपमाडे॥ अनेजेआसुरिजीवहोय तेनेतो ज्ञान कोईजातनुं होयनहिं नेते प्रगट भगवानने ओलखवपणनहिं॥ अनेआसुरि जीव होय तेजरुरो भग वाननोद्रोहजकरे ॥ तोपूर्वेपण जुवोनेक्यांसर्वेमनुष्येप्रगट भगवान ने ओलख्याछे॥ अने आज तो भगवाननी ईछायेकरिनेघणुंसारुंछे॥ अनेपूर्वे तो घणा घणाउपद्रवथतावाएम विचारिने क्षणभंगुर एवोजे मनुष्यनो देह तेमां भगवान प्रगटथयाछे॥ नेतेने नहिं ओलखायतो बहुज भुडुं थशे॥ केमके भगवान प्रगटथयाछे॥ नेतेने ओलखाय नहिं॥ केमके भगवानप्रगटथयानहोय॥ नेपरोक्षनी भक्ति करतां करतां कोईक दिवस प्रगट भगवान मलशे॥ एमजाणच होयजे परोक्षभक्तिकरतां करतां कोईक दिवस पण तेज प्रगट भगवान थयाने तेने न ओलखाय ने उलटोद्रोह थाय ॥ तो तेमांथीबहुज भुडुंथाय॥ एम विचारीने कल्याणना खपवालाने अतिशेविचार करवो॥ त्यारे तमे कहेशोजेजो भगवान न होय तो अमने कोईक चमत्कार देखाडिने निश्चेकरावे तो मानिये॥ तोएम तो कोईक अवतारादिकनीरीतनथी॥ तेतो मनमां विचारीनेजुवोतो खबरपडशे॥ मारेजे मुमुक्षुमेंदैविजीवहोय तेनेज ज्ञाने करिने प्रगट भगवाननो निश्चेय थायछे॥ त्यारेतमे कहेशोजे भगवान तेतो समाधी करावे॥ तो समाधि बेप्रकारनीछे तेमांएकतो ज्ञान समाधिछे॥ ते समाधिसत्य छे॥ तेमुक्त तथामुमुक्षुजीवहोयने तेने प्रगट भगवाननासंबंध थाय॥ पछे ते भगवान तेने ज्ञानेकरिअष्टआवर्णभेदा-

वीने आत्माने विषे अक्षरनी स्थीति करावे छे ॥ पछे ते अक्षरने विषे जे भगवान रह्या छे तेने साक्षात्कार देखाडिने दिव्य
द्रष्टि करावे छे ॥ त्यारे ते भक्त अक्षरधामने विषे दिव्य मूर्त्तिथका अनंत ऐश्वर्य ने अनंत प्रताप ने अनंत पारसदे जुक्त
थका प्रत्यक्ष भगवानने देखे छे ॥ पछे ते भगतने अक्षरधामने आंहीं एवो भेद रहे तो नथी ॥ एविरीतनी समाधि प्रग
ट भगवान करावे छे अने शास्त्रमां पण एविरीतनीज समाधि कही छे ॥ अने ते ज्ञान समाधि विना बिजी सर्वे परपंच-
मिथ्या समाधियो छे ॥ ते भोळा लोकोने धीरववाना पासला छे ॥ ते मारे ज्ञान समाधि छे ॥ तेज सत्य समाधी छे ॥ अने
ज्ञान समाधिये करिने ज आत्यंतिक मोक्ष थाय छे ॥ अने ज्ञान विना तो नाडि प्राण तणातां होय । तथा पांच सात दिव
स सुधि खावा पिवा विना पड्यो रहे तो पण उठे त्यारे विषयनी वासना टळे नहिं ॥ ने वासना टळ्या विना मोक्ष थाय न
हीं ॥ अने केटलाक सरकारि लोक छे ॥ ते एवी औषधि खवरावे छे जे देह शुन्य थई जाय छे । पछे देहने कापे तो पण
खबर न पडे ॥ ने बे चार दिवस पड्यो रहे त्यां सुधि भूख तरस लागे नहि ॥ अने वळि केटलाक ढोंगी जक्तना भोळा लो
कोने ठगनारा ते युक्तियो करिने साकरने काढे छे ॥ तथा लविंग एलचि सोपारियो नालियेर ए आदिक अनंत ॥
युक्तियो करिने काढे छे । ते मां केटलाक कहे छे जे आतो भगवानना धाममांथी प्रसादि आवि छे ॥ ते वात खोटी छे
केम के गुणातित भगवाननुं धाम छे ॥ त्यां तो धूड्यनो विकार वस्तु होय नहिं ॥ माटे सर्वे परपंच छे । अने ज्ञान छे तेज
एक सत्य छे ॥ अने गिता भागवत वेदादि शास्त्रमां पण ज्ञानज कह्यु छे ॥ ने ज्ञाने करिने ज समाधि कहि छे ॥ ते सा
रु सतपुरुषनो समागम करिने कल्याणना खपवाळाने ज्ञान जरुर शीखवुं त्यारे तमे केहेशो जे अमे तो लोकलाजमां
तथा मतपंथमां बंधाणा छैये ॥ ते समागम करवा तो अवाय नहिं अने जो नकि भगवान जणाय तो लोकलाजनुं त
था मतपंथनुं बंधन तोडिने आविये पण ते विना तो अवाय नहि ॥ तो त्यां कहिये छिये जे ॥ पोताना कल्याणने अर्थे
कोईक उपाय करवो ॥ केम के दुर्लभ मनुष्यनो देह तेनी अल्प आवरदा ते घडिनो निरधार नहीं ॥ ने आनो दिवसे हि

वसे वृद्धि पामतुं जाय छे ॥ अने आपणे धारता हता जे आ तो खोटुं खोटुं कहेना हशे तेम तो नहिं ने आ तो साचा वेप जणाय छे ॥ मा
टे रखे भगवान होय ॥ एम विचारिने नकि करवा सारुं कोईक उपाय करवो ॥ तेनो उपाय करवो तो ज्ञाने करिने नकि
करवुं जे आ ते भगवान छे के नथी ॥ एम नकि करवा सारुं निरमानी थईने तेनी ज्ञानवार्तो करे जो घणीक लखाणी छे
तेने कोईक पासे मंगाविने वांचविने तेनी परिक्षा करवी ॥ त्यारे तमे कहेशो जे एतो वातो शिखि शिखिने लखि हशे
तो ते पण खबर पडशे जे आ ते शिखि शिखिने लख्युं छे ॥ के आ ते एना अंतरनो रहेस्य छे ॥ त्यारे तमे कहेश्यो जे
तेवा तो अमने केम आपे ॥ एतो दयाळु होय ॥ माटे एने सर्व जीव प्राणि मात्रने उपर समदृष्टि छे ॥ पण एने कोई उपर रावरो
स होय नहि ॥ अने एतो सर्व जीव प्राणिनुं सारुं करवा प्रगट थाय छे ॥ पण कोईनुं भुडुं तो करे ज नहिं अने कोईक जीव
द्रोह करता हशे ते तो अज्ञानी छे ॥ अने तेने भगवाननो अलोकिक महिमा ते जाण्यामां आव्यो नथि ॥ अने भगवान
ने पण तेनी गणतरी नथी ॥ जेम कोईक बालक होय ने तेने कोईक वस्तु चोरिने खाधि होय ते सारु ते बालक एम जा
णे जे आ सूर्यनुं अजवाळुं छे ॥ ते मुने कोईक भाळशे ॥ एम जाणिने तेने ढांकवा सारुं धुळ्यनी फांट भरिने सूर्य सामि
नाखे ॥ त्यारे तेनि सूर्यने तो गणति होय नहिं ॥ अने उलटि ते नाखनारा बालकनी आंखो भराई जाय छे ॥ ने ते महा
दुःखने पामे छे ॥ तेम बालक जेवा जे अज्ञानि जीव होय ते जे ते पंच विषयनी वासनाये करिने एम जाणे जे आ पुरुष
प्रगट थया छे ॥ ते हवे रखे अमारि आजीविका त्रुटि जाय ॥ एम जाणिने निंद्या करे छे ॥ तेणे करिने तो पोतानुं भुडुं करे छे
॥ अने सूर्यनी पेठे भगवानने तो तेनी गणतरी होय नहिं ॥ एम तो भगवान तो महादयाळु छे ॥ अने वळि भगवानने प्रग
ट थवानुं कारण शुं छे ॥ तो जीवने अनादि काळनी मूळ कारण माया वळगी छे ॥ तेने आत्यंतिक ज्ञान आपीने तेनो नाश क
रिने पंच विषयनी वासना टळाविने जीवने ब्रह्मरूप करवा एज भगवानने प्रगट थवानुं प्रयोजन छे ॥ माटे पोताना-
कल्याणने अर्थे जो कोईक ज्ञानवार्तो मगाविये तो आपे एवा छे ॥ ते तमने पण आपशे त्यारे तमे केहेश्यो जे तमारे

आवडुं बधुं केम केहेवुं पडे छे ।। तो अमे सर्वे वात जाणिये छिये ।। मारे कोई जीवनुं सारुं थाय तो ठीक एवो कल्याणकारि
नो स्वेहे जधर्म छे ।। मारे अमारे तो तमारा जीवनुं सारुं थाय एज स्वार्थ छे ।। पण बिजो कोई जात्यनो रंचमात्र स्वार्थ नथी
त्यारे तमे केहेस्योजे अमारुं सारुं थई रह्युं छे ।। तो साराने तो हजी घणिवार छे ।। ते अमे साक्षात्कार देखिने कहि
येछिये ।। अने तमे पण जो अंतर द्रष्टि करिने जुवो तो खबर पडसे ।। ते साक्षिमां नकि हा न हि पडे जे हवे आपणे सर्वो परि
सारुं थई रह्युं छे ।। एवि रीते तपास करिने जागवुं केहेतां ज्यारे ज्यारे भगवान प्रगट थाय छे ।। तेनी रीत्य तपासविस
ने सर्वे वार्तो लखी छे ते केवि छे ।। तो तमारा अति सारा नेकरे एवि छे ।। ते सारुं एने बांचीने तेनो मनमां तपास करिजो
सो तो अंतरमां प्रकाश थसे ने जीवमां शांन्ति थसे ।। अने तमे पण जाणो तो छो जे ज्ञान तो सर्वो परि छे ।। ने शान्ति करे एवा पण
छे ।। तो पण आपणे ठीक न पड्युं ।। जेम सूर्य उगे ने तेनो प्रकाश थाय ।। त्यारे ते प्रकाश कोईकने आंख्य दुखी होय ते नगमतो
होय ।। पछे ते आंख्यो आडा पाटा बांधीने घरमां अंधारे बेसे ।। पछे पोताने सूर्यनुं सुख आवे नहिं ।। ते सारुं एम कहे जे सूर्य
नथि उग्यो ।। एम कहे ।। तो पण कांई सूर्यनुं प्रकाश ओछो थाय नहिं ।। तेम ज्यारे ज्यारे प्रगट भगवान थाय छे ।। त्यारे सूर्यना प्र
काशनी पेठे नगमवा रुप जे मतपंथ वाला ते अविद्या करता ज आव्या छे ।। तो पण सूर्यरूप जे प्रगट भगवान तेनो प्रताप तो
रंचमात्र ओछो थतो नथी ।। तेम आंख्यो आडा पाटा रुप मतपंथनी आडे करिने जे छेटे रहे छे तेने प्रगट भगवाननुं सुख
आवतुं नथी मारे मतपंथ रुपि महावज्र पास ला छे ।। ते पासलामांथी तो खरे खरा खप वाला होय ते बहार निसरे छे
।। मारे जीवनो आत्यंतिक मोक्ष करवो ते तो सर्वो परि मोटुं काम छे ।। मारे एमां अनंत विघ्न छे ।। ते सारुं जे मुमुक्षु होय तेने
तो अतिसो खपने अतिसो आतुरता राखिने नकि निरणय करि लेवो ।। पण गाफलाई राखवी नहिं अने कोईकने एम
करवुं पडतुं हसो जे एतो एम कहे छे जे सर्वे अवतारना अवतारि छे ।। तो एम हसो त्यारे कहेता हसो ।। अने सर्वो परि हसे
ते मांतो सामुं विषेष लाभ छे ।। पण ते मां शुं खोट्य छे अने जे होय ते आ जनो नहिं ।। अने ते पीछे टे जे रहे तेने बहु ज खोट जाय

॥ माटे आवार्ता लखिछे ते भागवत धर्मनो रेहस्य छे॥ अने मुमुक्षुजनने अतिसेहितकारि यार्ता छे॥ अने नित्य प्रत्ये पाठ करवो ॥ ने जीवने सांभलवा जेवी आवार्ता छे॥ अने महामोक्षना मारगमां विवेक आपेएवि छे ॥ अने एकांतिक धर्मना अंतराय रुपि पासलाने कापवाने अर्थे यज्ञ तुल्य छे ॥ माटे मुमुक्षुजनने चिंतामणि रुप छे अने आसुरि जीवने तो आवा-र्ता गमे नहिं॥ माटे मुमुक्षुने जतन करवा जोग्य छे॥ ॥इतिश्रीमुख सिद्धांत समाप्तः॥

॥ ॥श्रीहरि कृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत॥१९॥ ओगणिसें ॥२३॥ त्रेविसना॥ भाद्रवा शुदि ॥१५॥ पुनमने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्रीसोजित्रा मध्ये पटेल नरसिंभाई द्वारकोदासने घेर उत्तरादा बारनाचोकमां गादितकिये युक्त ढोलिया उपर बिराजमान थया हता॥ अने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्या हता॥ ने पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता ॥ अने पाघमां तोरा जरे कता हता ॥ अने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा देशादेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति। पछे धर्मानंद स्वामिये प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज ॥ आत्माना स्वरूपनुं ज्ञान केम थाय ॥ अने आत्मा ने अवरता तादो यते नां शां लक्षण छे ॥ अने देहाभिमानीनां शां लक्षण छे ते कहो॥ पछे महाराज बोल्या जे आत्मानुं ज्ञान तो एम थाय जे जे आत्माना स्वरुपनो साक्षात्कार पाम्या एवा जे आत्मनिष्ठ साधु तेनो मन कर्म वचने करिने संघ करे ॥ अने आत्माना स्वरुपने पाम्या एवा जे आत्मनिष्ठ साधु ते ने अतिशे श्रद्धा होय ॥ अने आत्मनिष्ठ एवा जे साधु तेनी सेवा मां अतिशे श्रद्धा राखवि ॥ अने ते साधु जे जे वचन कहे ते ते वचनने विषे अतिशे विश्वास राखवो ॥ अने ते सतपुरुष जे ते जे यारीते जड चेतन्यनो विवेक आपे ते रिती दृढ समजवुं ॥ तेमां जड जे देह ते तो पुरुषनुं वीर्यने स्त्रिनुं रुधिर एवे वस्तु माथी उत्पन्न थयो छे ॥ ते क्षण मात्रमां नाश थई जाय एवो छे ॥ अने दुःखरूप छे ने नरक रुप छे ने अनंत रोगनो भरेलो छे ॥ एवो जे देह ते ताहरुं स्वरुप नथी ॥ अने ताहरुं स्वरुप तो अविनासि छे ॥ ने सत्य संकल्प छे अने अखंडानंद एवुं जे अक्षरब्रह्म ते ताहरु स्वरुप छे ॥ एविरीते सतगुरु बतावे ते यारीते तेनुं मनन करवुं ॥ अने ते ज्ञाननो नित्य अभ्यास

करवो ।। अने ते ज्ञान नो साक्षात् कार करवो । केहेतां वगर संभारे एमने एम निरंतर अखंड सांभरयां करे त्यारे ते आत्मा ना स्वरूपने
पामे छे ॥ अने हवे आत्मानास्वरूपने पाम्या एवा ने देहाभिमाने रहित एवा जे ब्रह्मरूप मुक्त तेना इंद्रियो सर्वे नियममां होय ॥ अने
धर्ममां अतिशे दृढ रहेतो होय ॥ पणकोई काले भगवाननी आज्ञा लेशमात्र पण लोपे नहि ॥ अने वैराग्य सर्वे दृढ होय ॥ अने प्रकृति
नुंकार्य मात्र ते मां अतिशे अरुचि वर्तती होय ॥ अने ग्रहस्थ होय तेने पोतानी स्त्रि अने बिजी स्त्रिमात्र तेने मा बेन जेवी जाणे
अने पोताना देह निरवाह सारु पोताना धर्ममां रहिने जेम घटे तेम लोवेवार करे ते पण वेवारमां लोलुप थाय नहि ॥ अने प्राणवा
युने अ हारमात्र आपे ॥ पण सारुं सारुं खावामां लोलुप न थाय ॥ अने जाति वरणनुं तथा कोई रीतनुं लेशमात्र पण मान होय
नहि ॥ अने भगवाननी जे एकांतिक भक्ति तेने महात्मे सहित अतिशे प्रेमे करीने करतो होय अने पोतानी मा बेन दिकरि
आदि जे बाईयो ते जुवान अवस्थावाळि होय तेनी संगे एकांतमां रहे नहि ॥ अने कोई आपतकाळ रहेवु पडे तो पण को
ई रीते धर्ममां फेर पडे नहि ॥ एवि रीतना जे जे ग्रहस्थ हरि भक्त होय तो तेने पण आत्मा रूप जाणवा ॥ अने जे त्यागि होय ते
ने अष्ट प्रकारे स्त्रि द्रव्यादिक सर्वे पदार्थनो दृढ त्याग होय ॥ अने प्राणवायुने जे अहार देवो तेने पोताना धर्ममां कह्यु होय ते
म आपे ॥ पण रसादिक जे ब्रह्मचर्य व्रतनो नाश करे एवो जे रस ते त्यागिने न जमवो ॥ अने देहने देहना संबंधि तथा देह सं
बंधी जे पदार्थ तेमां कोई काले कोई रीते प्रिति न रखवे ॥ अने चहाय तो कोई कमान आपे ने चहाय तो कोई अपमान करे
ने चहाय तो कोई पूजा करे ने चहाय तो कोई धूडच नाखे ॥ तो पण लेशमात्र मनमां हरखशोक ने पामे नहिं अने एम स
मजे जे पूजा करे छे ते एना कल्याण सारुं करे छे ॥ अने जे धूडच नाखे छे ते अने खोट जशे अने हुं तो अखंडानंदने ब्रह्मानं
द एवो अविनाशी जे आत्मा ते मारु स्वरूप छे एवि रीत्यनी ज्ञानस्थितिने पाम्या होय तो पण भगवाननी प्रसन्नताने अ
र्थे दृढे करिने नवधा भक्ति तेणे अतिशे दृढपणे करिने कर्यां करता होय ॥ अने एम समजता होय जे आ प्रत्यक्ष भगवान
नी सेवा मळि छे ॥ तथा भगवानना जे जे भक्त तेनी सेवा मळी छे ते मारा उपर भगवाननी अतिसें कृपा एवि रीत्यनी समज

एहोयपण एवाजे ब्रह्मरूप साधु तेए भक्तिने प्रवृतिनमाने ॥ अने देहसंबंधीजेपदार्थ जोईए तेने प्रवृतिमानेछे पण तेमां पोताना चिन्तने न जोडे अने कोईक भगवानना भक्त ने रोगादिक संबंधि पिडाथतिहोय तो तेनी सेवा अतिसे तत्पर थईने करे ॥ अने तेना सारु कोईकपदार्थजोईतुं होय ॥ ने तेपदार्थ लेयामांकांईक लोकमां त्यागिनाधर्ममां विरोधजेवुंहोय तोपण भगवानना भक्तनी सेवा मां दोष नमाने केमके ग्रहस्थछे तेनेपोतानां स्त्रिछोकरां सगासंबंधि तेमांजो आत्मबुद्धिछे ॥ तो तेने अर्थे अनंत प्रकारना अधर्म कर्म करिने तेने खपरावेछे ॥ पणते तेमां दोषमणातानथी ॥ अने ते संबंधी अनंतप्रकारना भूंडां कर्म करे एवा होय तोपण तेनो अवगुण लेईने तेनो संगमुकतानथी ॥ अने ते सगां संबंधि अतिशे भुंडाशब्द बोलिने तिरस्कार करे तोपण तेसगां संबंधिमां आत्मबुद्धि छे ॥ तो तेनो तेने दोषनथीआवतो ॥ ने तेनासंगनोत्याग करवानो संकल्प नथी थतो ने जेणे ज्ञाने करिने भगवाननो महिमा समज्या होय एवाजे ब्रह्मवेत्ता साधु तेतो भगवानतथाभगवानना भक्तनेतेनेजसेवाप्रवृति मांरहिने करविपडे तेनेजमोटोलाभमानेछे ॥ अने भगवानने भगवानना साधु तेपोताने वगरवांके गमेएटलो तिरस्कारकरे ॥ तोपण पोते लेशमात्रपण मुंजायनहिं ॥ अनेतेनो अवगुणपण लेनहि ॥ ने एम मानेजे माराउपरकृपाकरिने मारामा दोषहताने मुनेओलखाव्या ॥ माटेमारा आत्माना अतिशे हितकारिछे ॥ एम समजीने भगवानना भक्तनो अतिमहिमा समजे एविरीतनी समजणवाळाजे साधुहोय तेने आत्मानास्वरूपना ज्ञान पामेलाजाणवा ॥ अने एवाजे ब्रह्मरूपसाधु तेनादेहने टाढपण वायनेतडकोपणलागेने भूखतरसपण लागे ॥ अनेशरिरमां रोगदुःखपण थाय ॥ पण ज्ञाने करिने तेथीपोतानुं स्वरूपनोखुं मानेने टाढतडको भूखतरशसुखदुःख एसर्वे देहनाभावछे ॥ अनेहुं तो देहथी नोखोसदायअसंगिछुं ॥ जेम निर्लिकाचनी कोठि होय ॥ तेमां कोईकपुरुष श्वेतवस्त्र पहेरीने पेठो होय ॥ तेने बिजा बहारनामनुष्य तेदेखे निलो पणतेपंडपोतेएमकोई कालेसमजे जे हुं निलोछुं ॥ तेतोएमसमजे जे हुंतो श्वेतवस्त्रवाळो छुं ॥ अने निजष्यजणाय छे ॥ तेतोकाचनाभावछे ॥ नेहुंतो

कोठिथीनोखोलुं ॥एद्रष्टांतनुं सिद्धांतएछे जेआत्मनीष्टानेपाम्याएवाजे ब्रह्मस्वरुप साधुतेतोसुख दुःख मान अपमान एसर्वे देहनाभाषछे ॥ अनेहुंजेआत्मा तेतो सदायसुख रुपछुं नेअक्षरछुं॥ एविरीते देहथकि सदाय असंगी जे ब्रह्म रुपसाधुतेनोजेजे मनकर्मवचनेसंग करेतेने पण ब्रह्मरुप करे छे ॥एसर्वे जीवप्राणिमात्र उपरतेसदायदयाराखे॥अने यथा योग्य पोताना धर्मने अनुसारे तेनाआत्मानुंरुडुंकरे एवाआत्मारुपवरतताहोय तेनागुणछे॥ अनेजेवेसधारी देहाभिमानी उपरथीतो साधुनावेस सो भायमान राखता होय ॥अने तलकपण सारांबनाव्यां होय ॥अनेकंठियोने मालाओ सारि राखता होय॥नेतुंबडियोतथा कंठरियो सारी रंगदार राखताहोयअने लुगडापण रुडां भगवाचटकिदाररंगीनेपेहेरताहोय ॥अनेमोटेकरिने आत्मानास्वरुपनुं निरुपण निरंतर करता होयपणजो अष्टप्रकारे ब्रह्मचर्यव्रत नराखताहोय ॥अने कोईक प्रकारे स्त्रिनोसंबंध राखता होय ॥ तथाद्रव्यादिक पदार्थराखता होय॥ तथा सारां सारां भोजनजमता होय॥ तथा देहनी सारुंजो ग्रहस्थमां स्नेह करताहोय ॥अनेदेहनुंजअतिशे जतन करताहोय॥ तथा त्यागपणानुंमान राखता होय एवा जे पंचविषयना रागी तेनेदेहाभिमानीजाणवा॥अनेतेने महा निघ्नेपापिजाणवा॥पणतेने त्यागि नजाणवा ॥अने जोवेदांतशास्त्रमोटेकहि जताहोय॥तथा योगशास्त्रपणमोटेकहि जता होय ॥अनेचार महावाक्यना शब्दनो निरंतर अभ्यास करता होय ॥अनेएकांतजग्यामांबेशीने ध्यानकरता होय॥तोपणजो पंचविषयनो त्यागनराखता होय॥नेपंचविषयथीएके विषयनुं ग्रहण करता होयतोतेने देहाभिमानीजाणवा॥ अनेरागी जाणवा॥ अनेजेपोताना जीवना कल्याणने ईछता होय ते नेएवादुष्टना संगनो सर्वे प्रकारे त्याग करवो॥ अने जो तेने साधुजाणिने तेनो संग करे तो तेने धर्ममांथीभ्रष्टकरे अने तेना घरनीस्त्रियो तेनेपण विभिचारणियोने भ्रष्टकरे माटे पंचविषयना जेरागिएवाजेवेसधारि साधुतेनो त्यागकरवो॥ अने ग्रहस्थहोयतेने आत्मा ना भावेकरिने कोई भूख्यां होय तेनेअन्नआपवुं ॥तेपण पुरुषनेहाथेकरिने आपवु ॥पण बाईयोनेतोते साधुसामीद्रष्टि करवीजनहि॥

अने बाईयोने तो एवा दुष्टनो संग थयादेयोजन हिंके मके पंच विषयनोजे रागछे तेजजीवने बंधन छे ॥ अने पंचविषयनाराग-
थीजे मुकाय तेनोज मोक्षथाय ॥ अने तेजजीवनेबंधनछे ॥ अनेपंचविषयना रागे करिने जन्म मृत्युनादुःखनेपामेछे कम
के आत्माछे ॥ तेतो अविनासीछे ॥ अनेदेहछे तेजडछे ॥ पण पंचविषयमां ज्यांसुधि रागछे त्यांसुधि जन्ममृत्युनादु
खने पामेछे ॥ जेम निलाकाष्टने बलवानो स्वभावनथी तो पणजो सुका काष्टभेगुं दोरडिये बांधिने बाले तो सुकाका
ष्टभेलुं निलुंकाष्ट पण बले ॥ तेम अविनासिएवोजे आत्मा तेपण ज्यां सुधि सुकाकाष्टरुपजे देह तेने विषे पंच विष
यनीवासना रुपदोरडिये करिने बंधाणो छे ॥ त्यां सुधि जन्ममृत्युनादुःखने पामेछे ॥ अने ज्यारे धर्मज्ञान वैरागनेमाहा
त्मेसहित भक्तियेकरिने पंचविषयनारागनेउखाडे तेजब्रह्मरुपथायछे ॥ ने आत्यंतिक मोक्षने पामेछे ॥ ॥
इतिश्रीसुखसिद्धांतसमाप्तः ॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्॥१९॥ओग
णिसें॥ २३॥त्रेविषना भादरवा वदि॥१॥पडवाने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री रोगाजमध्येजोबीदेच-
रदाजीरामनेघेर आथमणा दाबारना चोकमां विराजमानथयाहता ॥ ने सर्वेजरिया नियस्त्र धारण कर्यांहतां ॥ अनेपुष्प-
ना हार धारणकर्याहता ॥ नेपाघमां फूलनातोरा लटकताहता ॥ अने पोतानामुखारविंदनीआगल साधुतथा देशदेश-
नाहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठिहति ॥ पछे अक्षरमुक्तानंदस्वामिये प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराजगुरु ते केने कहिये ॥ पछे
महाराजबोल्याजे गुरुतो तेनेकहियेजे गोकहेतांइंद्रियो तेनेअधर्मनो त्यागकरावीने भगवानना स्वरुपमांजेजोड
वे ॥ अने पंच विषयनीवासना टलावीने जिवने ब्रह्मरुपकरे ॥ ते तुंनामगुरुकहेवाय ॥ तेएवागुरुतो एक सर्वोपरि
परमात्मा भगवान गुरुछे ॥ ते भगवानजे ते अक्षरनामुक्तने उपदेशकरेछे ॥ अने अक्षर मुक्तछे तेमूलप्रकृतिपुरुषवै
राटनागुरुछे ॥ अने वैराट ब्रह्माविष्णुशिवना गुरुछे ॥ अने ब्रह्माविष्णुशिवछे ते मरिच्यादिकनागुरुछे ॥ ने मरिच्यादि
क छे ते इंद्रादिकदेवनागुरुछे ॥ अने देवछे तेमनुष्यादिक नागुरुछे ॥ अने ते सर्वे गुरु कह्या ॥ तेजे ते आ मृत्युलोक

मांदेह धरे छे ।। पछे ते सर्वे गुरुरुपे थईने जीवोने उपदेश करिने पोते पोताना लोकने पमाडे छे ।। जेम आलोकमां जे विद्याना भणा-
वनारा मेहेताजी छे ।। तिजे ते मोटा निशालियाने भणावे छे ।। एथि रीते एक बिजा उत्तरता उतरताने भणावे छे ।। अने जे रलीजे-
नी विद्या ते टलीते भणावे छे ।। पण पोताथी अधिक विद्या आपवाने समर्थ नथी थता ।। अने सर्वे विद्या आपवाने तो एक मेहेता
जी समर्थ छे ।। तेम सर्वोपरि गुरु तो एक अक्षरातित पुरुषोत्तम भगवान छे ।। अने बिजा गुरु तो ए भगवानने भजीने तथा एनी आ
ज्ञाये करिने एथकि जेटलीजेटली सामर्थिने पाम्या होय ।। ते टलुं ते टलुं ज्ञान शिष्यने आपी शके ।। पण आत्यंतिक ज्ञान तथा आत्यं
तिक मोक्ष ते गुरु न आपि शके ।। आत्यंतिक मोक्ष तो एक सर्वोपरि पुरुषोत्तम भगवान कां ते भगवान थकि ज्ञान पामे
ला साधु ते आपवाने समर्थ छे ।। माटे ते भगवान ज्यारे मनुष्य देहनुं धारण करे छे ।। अने प्रथ्वी उपर अनंत जीवोना कल्या
णने अर्थे विचरता होय त्यारे तेने शरणे जे जे जीव आवे तेने आत्यंतिक ज्ञान आपीने तेनो आत्यंतिक मोक्ष करे छे ।। अने
बिजा जे गुरु छे ।। ते तो ज्यारे आत्यंतिक मोक्षना पमाडनारा न होय ।। त्यारे ते गुरु करवा ।। जेम काल पडे त्यारे जेवा ते
दाणा खाईने काल उतारवो ।। पण ज्यारे सगाल थाय ।। ने कोईक दुधपाकने जलेबि आदिक सारां सारां भोजन ज
माडनारो मले ।। त्यारे तेना पाडे जे हुं नहिं सारां सारां भोजन जमु ।। अने हुं तो मोरुनी मारि जारनी रा बडि खाईश ।। एम
कहे ते मुरख केहेवाय ।। अने बुद्धिवाला तेने पापि ने अभागिया जाणे ।। तेम कृपा करिने सर्वोपरी परमात्मा पुरुषोत्तम
भगवान प्रगट थया छे ।। ने दया करिने अधर्मनो सर्ग जे काम लोभादिक जे दोष ते थकि मुकाविने एना मोक्ष सारुं इंद्रियोने
नियममां राखाविने भगवान सन्मुख चोटाडवीने जन्म मरणना दुःख थकि मुकावीने एना मोक्ष सारुं इंद्रियोने मोक्ष
करवो ।। एज अमारे अहीं आव्यानुं कारण छे ।। पण अमने कोई द्रव्य आपे के घरेणां आपे तथा सारी सारी रसोईयो
आपे ।। तो पण जे अधर्मनो त्याग करिने एना मोक्षने अर्थे जतन न करे तो ते उपर प्रसन्न थता नथी अने एना मोक्षने
अमारी आज्ञा प्रमाणे ।। वर्ते तेनी उपर अमे प्रसन्न थईये छीये ।। माटे अमे तो तमारा आत्माना हितकारी छिये ।। अने

अमारे तो पंचविषयपकि जीवने मुकाविने ब्रह्मरुप करिने अक्षरधामने पमाडुनारा एज सिद्धांत छे ॥ मारे जे मुमुक्षु होय तेने तपास करिने सर्वे अंतरायनो त्याग करिने प्रत्यक्ष हरि साक्षात् तेनो दृढ आसरो करवो एज बुद्धिवाला छे ॥ अने प्रत्यक्षने मुकिने परोक्षमां वधाई रह्या छे ॥ ते तो पशु छे ॥ नेम हामूरख छे ॥ ॥ इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्त ॥

॥ श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः ॥ ॥ संवत् ॥ १९ ॥ ओगणिसें ॥ २३ ॥ ने विसना भादरवा वदि ॥ २ ॥ बिजने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीलिंबालि मध्ये महादेव श्रीभिमनाथना देरा- रानी आगल चोकमां दक्षणादे मुखारविंदे विराजमान थयां हता ॥ अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ ने मस्तके कसंबल फेंटो धारण कर्यो हतो अने सर्वे अंगने विषे पुष्पना आभुक्षण धारण कर्यां हतां ॥ अने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हती ॥ पछे महाप्रभुजीये वार्ता करि जे ॥ जेने आत्यंतिक मोक्ष पामयो होय तेने पंच प्रकारनी शुद्धि थाय तो ततकाल ब्रह्मरुप थईने अक्षरधामने पामे ते पंच प्रकारनी शुद्धि ते केई तो सर्वोपरि अक्षरातित जे पुरुषोतम भगवान ते जज्यारे ज्यारे पृथ्वी उपर पधारे छे ॥ त्यारे ते पकि उपदेश पामवो ॥ अथवा ते भगवान पकि तानने पामिने सिद्ध दशाने पाम्या होय एवा जे ब्रह्मरुप एकांतिक साधु ते पकि उपदेश पामवो ए नुं नाम उपदेशशुद्धि कहिये ॥ अने उपासना करवा जोग्य तो सर्व कारण सर्व आधार एवा जे परब्रह्म पुरुषोतम भगवान तेनी उपासना करवी ते उपासनानी शुद्धि कहे वाय ॥ अने उपासनानो करनारो जे उपासक तेने पृथ्वी जल तेज वायु आकाश अहंकार महतत्वने मूलप्रकृति जे माया तेथी पर जे अक्षर ब्रह्म ते अक्षर ब्रह्म तेने पोतानुं स्वरुप मानीने शरिरमां जे हाडका आदिक पृथ्वीनो भाग छे ॥ तेने पृथ्वीमां लय करिने पछे पृथ्वीमां जलने लय करिने ॥ अने जलनो भाग जे शरिरमां रुधिरादिक तेने महतजलमां लय करिने ते महतजलने अग्निमां लय करवुं ॥ अने शरिरमां जे जठराग्निनो भाग छे ॥ तेने महत अग्निमां लय करिने ते महतअग्निने वायुमां लय करवो ॥ अने शरिरने विषे प्राणवायुनो भाग छे तेने महतवा-

युमां लयकरवो ।।नेमहतवायुने आकाशमां लयकरवो ।।अनेशरिरने विषे पोल्यादिक आकाशनो भाग छे तेने महदाकाशमां लय करिदेयो अनेमहदाकाशने अहंकारमां लयकरवो ।।अनेशरिरमां जेअहंपणुं तेनेवैराटमां लय करिनेवैराटनेमहतत्वमां लय करिदेवो।। अनेशरीरमांजे चित्तछे ।।तेने महतत्वने विषे लयकरिने महतत्वने मूळमायाने विषे लयकरवुं ।। अनेशरीरमांजे बुद्धि छे तेने मूळमायामां लयकरिने पछे मूळमायाने अक्षरना प्रकाशने विषे लयकरवी अनेएविरी तेज्ञानप्रलेकरिने अक्षर ब्रह्मना भावने पामिने महात्मज्ञानेजुक्त नवधाभक्तियेकरिने ते भगवानमां जोडावुं ।।तेनेउपासकनीशुधिजाणवि।। अनेशुद्ध उपदेशथकि ज्ञाननेपाम्याएवाजे धर्मज्ञान वैरागने महात्मेजुक्त भक्तियेकरिने प्रत्यक्षभगवानने विषेजोडाणाएवाजे स्वउद्ध संप्रदायवाळा भगवानना भक्त तेनो जेमन क्रमवचनेसंग करवो तेनेसंगनीशुधिजाणवी ।।अने निवृत्तिपरएवुंजे भगवंतधाम जेने विषे कोई प्रकारना उपद्रवे रहित अनेमहा मायाने कापेएवी नेज्ञान प्रकाशेएवीजे भगवाननी कथा तेजे स्थानकने विषे थतिहोय ।। अनेभगवानना किरतन थताहोय तथा भगवानने प्रसन्न करवासारुं व्रतउछव तेजेस्थानकने विषे थतांहोय तेस्थानके दृढ मनेकरिनेरेहेवुं।। तेनेस्थानकनीशुद्धि जाणवी ।। तथा अष्टावरणपरजे अक्षरब्रह्म तेविषेरेहेयानी भावनायेकरिने मायानुं आवरणटाळवुं।। नेब्रह्माकार द्रष्टिथई नेएकरस चैतनरूप अक्षरब्रह्म तेस्थानकने विषेरह्यानी भावना अखंडराखवि।।जेम आंख्यवाळानी द्रष्टिनेपाम्यो होय तेने बार भूत द्रष्टिमां आवतानथी ।।तेम चैतननी द्रष्टी अष्टावरणजे अक्षरब्रह्म तेनीस्थितिनेपाम्यो तेनेप्रकृतिनुं कार्य कांई नजरमां आवतुंनथी।। तेनेस्थानकनीशुद्धि कहियें ।। एविरीते पंचप्रकारनी शुद्धिनेजे जे भक्तजनपामे छे।। तेसिद्धदशानेपामिने आत्यंतिक मोक्षजे अक्षरधामतेनेपामिने अखंड भगवाननी सेवामां रहेछे

|| ||इतिश्री मुख्यसिद्धांत समाप्तः।। ||श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ||

संवत ।। १९ ।। ओगणिसें ।।२३।। त्रेविसना भादरवा वदि ।।३।। त्रिजने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री रे

वातजमध्ये पूराणिजगन्नाथदाजी भाईनेघेर उत्तरादा बारना चोकमां विराजमान थयाहता ॥ ने सर्वेजरियानीवस्त्र धार
णकस्यांहतां ॥ अनेपुष्पनांआभूखण धारणकस्यांहतां ॥ अनेललाटने विषे कंकुनोचांदलोकस्यो हतो ॥ अनेजमणा
हाथने विषे मोगराना पुष्पनो गुच्छने रुमालने धारणकस्यांहतां अनेपोतानामूखारविंदनीआगल साधुतथादेशा
देशाना हरिभक्तनीसभा भराईनेबेठि हति ॥ पछे महाराज बोल्याजे सर्वे सांभलो एकवातकरवीछे ॥ अनेआ
वातकहेशुं तेनुं नाम ब्रह्मविद्याकहेवाय ॥ अनेते ब्रह्म विद्याने समजवेकरिने मायानो जे अंधकार तेजिवने तत
काल टलिजायछे ॥ जेमसूर्यउगे ने रात्रिटलिजाय तेमआक हिशुंजे ब्रह्मविद्या तेनेसमजयेकरिनेज्ञानरुपिप्र
काशथाय ॥ अने ब्रह्मरुप पोतानो आत्मा साक्षात्कार देखाय अनेते ब्रह्मने विषेपरब्रह्म जे भगवान तेदेखाय ॥
ते ब्रह्म विधाने कहिये छिये जे आस्थूलशरिरछे ॥ तेअन्नमयकोशछे ॥ तेअन्नमयकोसमां प्राणमयकोस रह्योछे
तेजेवोअन्नमयकोसमनुष्यनेआकारेछे ॥ तेवोज तेमांप्राणमयकोसछे ॥ तेमनुष्यनेआकारेछे ॥ जेमएकमनुष्य
नेआकारे पोलुंधातुंनुंपुतलुं कस्युंहोय ॥ अने तमांएक बिजुं पुतलुंमुक्युंहोय नेतेमां त्रिजुंपुतलुं मुक्युंहोय ॥ ने
वलिएक चोथुमुक्युंहोय ॥ ने वलि पांचमुं मुक्युंहोय ॥ तेमांएक अन्नमयकोसछे तेअन्नथकिजउपज्योछे ॥ नेअन्नथ
किज वृद्धिपामेछे ॥ अने तेअन्नमयकोसने प्राणमय कोसनो आधारछे ॥ तेप्राणहोय त्यांसुधि अन्नमयकोसवृ
द्धिपामे अने जोप्राण बंधथायतो अन्नमयकोसजे स्थूलदेह तेनासथईजाय ॥ अनेप्राणमयकोसने मनोमयको
सनो आधारछे ॥ केमके मन संकल्पकरे तेटलुंज प्राण वायुएकरिने हरवाफरवाने क्रिया करवाने समर्थ थाय ॥
केमके अन्ननोकोलीयो तेने हाथे करिने मोढामां मूके पण जो मननेगमतुं होय तो प्राण तेनेगलाहेठे उतारे ॥ अनेजो मनने
नगमतुं होय तो पाछुंकोलियाने काढीनाखे ॥ अनेप्राणने तोआहारमात्र जेवुंतेवुं जोईये ॥ अनेसारुं नरसुंतो मननेछे ॥ ते
जेणे मनजीत्युंहोयते नेतो जेवोतेवोआहार आपीने प्राणने संतोष पमाडे ॥ अनेजेणे मन नथीजीत्युं ॥ तेनाप्राण कोईका

ले संतोषपामता नथी माटे प्राणमय कोसने मनोमय कोसनो आधार छे ।। अन्नमयकोसने विज्ञानमयकोसनो आधार
छे ॥ ते विज्ञान बुद्धि मां रह्यं छे ।। केमके मन तो हजारो संकल्प करे ।। पण ते मांथी बुद्धि जे निश्चय करे ते काम करायछे
।। तेमां जे णे सतपुरुषनो आसरो करिने अधर्मना त्यागनो बुद्धिमां निश्चय कर्यो होय तेनुं मन कोई दिवस अधर्मनो संकल्प
करेज नहिं।। अने जेने सतपुरुषनो आश्रो नथि तेनुं मन अनंत धर्मना संकल्प करे छे ।। माटे मनोमय कोसने विज्ञानम
य कोसनो आधार छे ।। अने एक करतां एक बलवान घणो छे ।। ने सूक्ष्म छे अने विज्ञानमय कोसने आनंदमय कोसनो
आधार छे ।। आनंदमय कोस छे ते अतिशे सुखरूप छे ।। केमके कोईने झारकाना घा वाग्या होय ने ते सुसोपति मां जा
य ।। तो झारकाना घानी पीडा टलि जाय छे।। अने ज्ञाने करिने देहथी नोखो आत्मा जाणीने सुख दुःखने समक खु होय तोप-
ण सुखदुःख आवे ते जणाया विना रहे नहिं ।। अने सु जे एटलुं दुःख होय ने आनंदमय कोसजे सुसोप्तिमां जाय ते लेश
मात्र दुःखजणाय नहिं ।। माटे विज्ञानमय कोसने आनंदमय कोसनो आधार छे।। अने ते आनंदमय कोस छे ते सर्वेथी ब
लवान छे ने अतिशे सूक्ष्म छे ने अनादि नो छे ।। अने आनंदमय कोस आदिक पांचे कोसने जीवात्मानो आधार छे।। ने
ते जीवात्मा सुखरूप छे ।। अने जीवात्मा पांच कोसमां रह्यो थको ते सर्वेने प्रकाशे छे ।। पण जीव विना पांचे कोस कां
ईये करवाने समर्थ नथी।। ने जिव विना पांचे कोस जड छे ।। अने जीवात्मा अविनासि छे ने चैतन छे ने जाणपणे जुक्त छे।।
अने जीवात्माना प्रकासक अक्षर ब्रह्म छे।। जेम नेत्रना प्रकाशक सूर्य छे।। ते नेत्रनो प्रकाश पोता पासे होय ।। ने जो अंधा
रीरात्य होय।। तो पोतानुं शरिर पण देखाय नहिं ।। तेम जीवात्माना अक्षर ब्रह्म प्रकाशक छे।। अने अक्षरना प्रकाशक
प्रगट पुरुषोत्तम भगवान छे ।। अने जे आत्यंतिक ज्ञान ते ज अक्षरनुं साक्षात स्वरुप छे।। अने ते आत्यंतिक ज्ञान भग-
वान पुरुषोत्तमनी पासे छे ।। माटे ते भगवान कृपा करिने अनंत जीवनो उद्धार करवा सारु प्रथ्वी उपर मनुष्यदेहनुं धारण करे
अने ते भगवाननो जेने संबंध थाय ने ते भगवान थकि आत्यंतिक ज्ञानने पामे ते ज साक्षात्कार अक्षर ब्रह्म रुप थाय छे।।

अनेजीवात्मानोकारणपणे वस्तुताये अक्षरछे ॥पण तेनेज्यां सुधि प्रत्यक्ष भगवानना संबंध नथयो होय त्यां सुधिजीवकां
ई करवाने समरथनथी माटे प्रत्यक्ष भगवानजेने आत्यंतिकज्ञानआपे तेअनंतऐश्वर्यने सामर्थिने पामिने सर्वज्ञथायछे
तेथकि अनंतजीवज्ञानने पामिने भगवानने मारगे चालेछे ।।माटे प्रत्यक्ष भगवान तेज अक्षरनाप्रकाशकछे॥ अनेप्रत्य
क्षभगवानथकि जेआत्यंतिकज्ञानने पाम्यो तेजअक्षर साक्षात् छे॥ नेतेअनंतकोटि ब्रह्मांडनाकरताजे मूळपुरुषतेना
आधारछे नेतेनाप्रकाशकछे॥ पण प्रत्यक्ष भगवानने प्रत्यक्ष भगवानथकि आत्यंतिकज्ञानने पाम्याएवाजे प्रत्यक्षअ-
क्षरमुक्त तेजसर्वनाआधारछे नेसर्वेनाकारणछे नेसर्वेनाप्रकाशकछे ॥माटे प्रत्यक्ष भगवानने ॥प्रत्यक्षअक्षररुप
मुक्त तेवासंबंधथकिसामर्थीने पामीने पुरुषजे ते अनंतकोटि ब्रह्मांडनीउत्पत्ति करेछे ।ते पुरुष केवाछे तोजेमजी
वजेतेआनंदमयकोशमांरह्यो थको पांचेकोसने प्रकाशेछे ॥तेम पुरुष छे ते पोतानाधाम मांरह्याथका मायानाकार्य जेअन
तकोटि ब्रह्मांड तेमां रह्याजेजीव तेजीवजीवप्रत्ये जे जीवनाजेवोदेह तेवुंबळतथा तेवीतेनेबुद्धिते सरजी आपेछे॥ तेहाथी
नाजीवनेहाथीनास्थूलप्रमाणे बळनेबुद्धिआपेछे ॥ अने एनोएजीव किडिनाशरिर नधारणकरे त्यारेकिडिनाजे
टलुंबळने किडिनाजेवीबुद्धिनेसरजीआपे ॥अनेविछिने बिजाघणाक प्रकारनाजीव एसर्वेने बुद्धिने बळ सरजी
आपेछे ॥अनेमनुष्यने मनुष्यप्रमाणे बळने बुद्धिसरजीआपेछे॥ एविरीतेअनंतकलाओ एपुरुषमांरहिछे॥ पण
एसमये बारदृष्टीएकरिनेपुरुषमायामां जोडाणो थकोकलेशनेपामेछे ॥जेमपाणीनाकळशियातपेलीभोमिमांना
खेतोतेपाणिनाशपामिजायछे ॥तेमएपुरुषमायामांजोडाणोथको बारदृष्टियेकरिने दुःखने पामेछे ॥अनेज्या
रेसवेथी प्रतिलोमदृष्टि करिने पोताने प्रकाशकजेअक्षर ब्रह्म तेनेपोतानुंस्वरुपमाने तो तेअक्षर भावने पामे ॥
अनेपछे अक्षरनाप्रकाशकजे पुरुषोत्तम भगवानतेमांजोडाय तोएपुरुषने मूळमायानुंआवरणटळिजाय
॥अनेतेमजजीव पणपांचकोसमां अनवयपणे जोडाणोछे ॥तेणेकरिनेजन्म मरणनादुःखनेपामेछे।अनेज्यारे

अक्षरभावने पाम्या एवा जे मुक्त जे परमात्माने पमाडे एवा एकांतिक साधु ते जीवने मळे तथा परमात्मा भगवान ते प्रत्यक्ष जीवने मळे ॥ अने तेमां जीव जोडाय ॥ पछे अन्नमयकोस तथा प्राणमयकोस ए बे कोसने सत्पुरुषना आपेला जे नियम तथा त्याग तथा तप तेणे करिने जीतवा अने आत्मज्ञाने करिने तथा वैराग्ये करिने मनोमयकोस तथा विज्ञानमयकोस ए वे पजीताय छे ॥ अने प्रतिलोमदृष्टिये करिने अक्षरना भावने पामिने पछे ते अक्षरने विषे परमात्मा पुरुषोत्तम भगवान साक्षात्कार देखाय त्यारे ए जीवने जे अष्ट प्रकारनी माया पांचकोसरूपे वळगी छे ते सर्वे टळि जाय ॥ अने केवळ पदने पामे छे ॥ अने भगवानना साधर्मपणाने पामे कहेतां जे भगवान काळकर्मने माया थकि रहित छे तेम ते भक्त पण काळकर्मने माया रहित थाय छे ॥ ॥ इति श्री मुखसिद्धांत समाप्तः ॥ ॥

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः ॥ ॥ संवत ॥ १९ ॥ ओगणिसे ॥ २३ ॥ त्रेविसना भादरवा वदि ॥ ४ ॥ चोथने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री देवानजमध्ये ॥ पुराणि जगन्नाथदाजी भाईने घेर उत्तरादा बारना चोकमां विराजमान थया हता ॥ अने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हता ॥ अने पुष्पना हार धारण कर्या हता ॥ अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे महाराजनी गाडिना सारथी भक्त सुवेरभाईये प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज त्रण प्रकारना कर्म जे संचित प्रारब्ध ने क्रियमाण तेनां शुं रूप छे ॥ पछे महाराज बोल्या जे एनां रूप कहियेते सांभळो जे कर्म ते शुं कहेवाय ॥ तो दस इंद्रियो ने चार अंतःकरण तेणे करीने सत अथवा असत जे जे क्रिया कराय छे तेने कर्म कहिये ॥ ते केवि रीते कर्म थाय छे तेने कहे छे ॥ जे काने करिने भुंडा भुंडा स्त्रियादिक विषयना शब्द सांभळे तेणे करिने भुंडा कर्म थाय छे ॥ अने जो काने करिने भगवानना जस सांभळे तो रुडां कर्म थाय छे ॥ अने त्वचाये करिने स्त्रियादिकना स्पर्श करे तो भुंडां कर्म थाय छे ॥ अने जो त्वचाये करिने प्रत्यक्ष भगवानना चरणनो स्पर्श करे ॥ तथा ते भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागि साधु तेना चरणनो स्पर्श करे तो रुडां कर्म

थायछे।अने नेत्रेकरिने स्त्रियादिकनां भूंडां भूंडांरुपजवेनो भूंडां कर्म थायछे ॥अने भगवानने भगवानना साधुपंच विषयना त्यागि तेनादरशने करिने रुडां कर्म थायछे॥ अनेजीभ्याये करिने दारु मांसआदिक भूंडां भुंडां अस्क भरसज मे तो भुंडां कर्म थायछे ॥अनेजो भगवाननो प्रसादजीभे करिनेजमे तो रुडां कर्म थायछे अने वाणियेकरिने भगवाननुभ-जन स्मरण नाम किर्तन कथावारताकरे तेणे करिने रुडां कर्म थायछे ।अनेजो भूंडा शब्द जे कोईकने वसमुं लागे तथा स्त्रियादिकनानाम लेईने भुंडां बोलवां तेणेकरिने भुंडांकर्म थायछे॥ अने हाथेकरिने असतपुरुषनी सेवाकरे तथाजिवहिंसाआदिक अस्क भक्रियाकरे तेणेकरिने भुंडांकर्म थायछे।अनेजो सतपुरुषनीसेवा करे तो रुडांकर्म थायछे॥ अनेपगे करिने स्त्रियादिकना विषयसारु चालिनेजायतेणे करिने भुंडांकर्म थायछे ॥ अने भगवान तथा भगवानना भक्त साधुतेने दरशने चालिनेजायतेणे करिने रुडां कर्म थायछे॥ अने शिश्नइंद्रिये करिने स्त्रियादिकना स्पर्षथ किविर्यपात तथाकांईकदेवमंदिर आदिक पवित्र जग्यामां लघु कराय तेणे करिनेअशुभकर्म थायछे।। अने खटरसादिकनो त्यागकरिने शिश्नइंद्रियथकि विर्यपात थवानदेवो॥ तेणे करिने स्क भकर्म थायछे॥ अने गुदाइंद्रियेकरिने घणाअहारे करिने सतपुरुषपासे तथादेवमंदिरमांवायु छुटे तेणे करीने अस्क भकर्म थायछे॥ अने सूक्ष्म अहारकरवे तथावायुकरेएवाजे खाधाना फरसाखारा खाटा तेनो त्यागकरिने स्क भकर्म थायछे॥ गुदाइंद्रियकि वायुन छुटवादेवो॥ तेणेकरिने स्कभकर्म थायछे ॥अनेमने करिने स्त्रियादिक पंचविषयनासंकल्प करे।तेणे करिने भूंडांकर्म थायछे। अनेधर्मज्ञान वैराग्यभक्ति संबंधिजेमनमां संकल्प करे तेणे करिने स्क भकर्म थायछे ॥अने बुद्धिवेकरिने मायिक पदार्थनोजे निश्चयकरवो तेणे करिने भूंडां कर्म थायछे ॥अने जेआत्मानास्वरुपनो निश्चयकरवो ॥अथवा भगवाननास्वरुपनो निश्चयकरवो तेणे करिने रुडां कर्म थायछे ॥अने चित्ते करिने स्त्रियादिक पंचविषयनुं चिंतवनकरे तेणेकरीने भूंडांकर्म थायछे॥ अनेजो भगवाननीमूर्त्तिनुं चिंतवन करे तथा भगवानने भगवानना

संततेनी सेवासंबंधि चिंतवन करे तेणे करिने शुभ कर्म थायछे ।। अने अहंकारे करिने देहने देहसंबंधि पदार्थ तेनी जे अहंवृत्ति तेणे करिने भूडां कर्म थायछे ।। अने जो पोताना आत्मासंबंधी अहंपणु धरे ।। तथा परमात्मा भगवानना दासत्वपणानी अहंवृत्ति धरे कहे तो हुं आत्मा छुं ने भगवाननो दास छुं ।। एवुं अभिमान धरे तेणे करिने शुभ करम थायछे ।। एविरीते दसई द्रियोने चार अंतःकरण तेणे करिने जे शुभ अथवा अशुभ क्रिया करवी तेने क्रियेमाण कर्म कहेवाय ।। तेम्मा जिवे अज्ञाने माया मां अनादिकालनो अवराणो छे ।। अने सतपुरुषनो संग कोई दिवस थयो नथी ।। अने कुसंगे करिने अनंत पाप अशुभ कर्म करतो ज आव्यो छे ।। केम के सावजनो अवतार आव्यो हसे त्यारे अनंत जीव मार्या हसे ।। तथा दिपडाना बगलाना सर्पना अवतार आव्या हसे ।। त्यारे पण अनंत पाप कर्या हसे ।। अने मनुष्यमां राजानो अवतार आवे ने जो अधर्मिनो संग होय तो घणाक पाप करे छे ।। ते एविरीते जिवे घणाक क्रियेमाण पाप कर्म कर्यां छे ।। ते सर्वे कर्म भेगां थयां तेने प्रारध कर्म कहिये ।। अने ते कर्मना भोगना भोगवावनारा परमात्मा भगवान् छे ।। ते सर्वे कर्म जो जीवने भोगवावे तो जीव भोगवी शाके नहिं ।। ने अतिशे दुःख पामे ।। अने देहनो पण नास थई जाय ।। माटे परमेश्वर कृपा करिने जेटला जीव खमी शाके तेटला प्रारधनो देह बंधावे छे ।। अने बिजा कर्मने संचीत राखे छे ।। जेम खेडु होय ते घणाक दाणा निपजावे छे ।। ते क्रियेमाण कहेवाय ।। अने ते दाणाने कोठिमां नाखिने नित्ये खाय तेने प्रारध कहेवाय ।। अने खातां खातां बाकि वधे तेने खाणमां नाखे तेनी संचित कहेवाय ।। तेम जीव जे ते एविरीते क्रियेमाण प्रारधने संचित त्रण प्रकारना कर्मे करिने जन्ममृत्युना दुःखने पामे छे ।। अने स्वर्ग मृत्यु ने पाताल ए त्रण लोकमां त्रण प्रकारना कर्म जे रजोगुण तमोगुणने सत्वगुण तेणे करिने जिव जे ते त्रिविधि तापमां बल्या करे छे ।। अने ते त्रिविधि तापथकि जीव जे ते पोतानी मेले कांईक [illegible] मुकावाने समर्थ थतो नथी ।। अने त्रिविधि तापमां रह्या एवा जे गुरु तेना उपदेशथकि पण जीव जे ते त्रिविधि तापथी मुकातो नथी ।। माटे एतो त्रिविधि तापथकि पर एवा जे परमेश्वर तथा परमेश्वरना एकांतिक संत ते कृपा करिने अनंत जीवोना कल्याण करवा सारु

प्रथ्वीपर प्रगट थयाहोय ने तेनोजीवनेसंबंधथाय ॥ अनेतेनोदृढआसरोकरे ॥ तो तेथकि जीवजे ते त्रिविधिनातापथकि मुकायछे तेने कहुछे जे ॥ जेजीवपोताने आसरे आवे तेनेप्रथमतो नियमकरिनेअधर्मजेअसुभकर्म नोत्यागकरावेछे ॥ अनेपोताना स्वरुपनो निश्चयने पोतानुभजन तथाध्यान तेणेसंचितकर्मनेबाळिनाखेछेअनेजे प्रारब्धछे तेने भोगवाविनेदेहने मुकाविनेजिवने ब्रह्मरुपकरिने अक्षरधामनेपमाडे छे॥ ॥इतिश्रीमुख सिद्धांतसमाप्तः॥ ॥

श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत॥१९॥ओगणिसे ॥२३॥त्रेविसना भादरवावदि ॥५॥पंचमिने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्णभगवान गाम श्री देवातजमध्ये पुराणीजीवरामदाजीभाईनेघेर उत्तरादाबारनाचोकमां विराजमानथयाहता ॥ अने सर्वे स्वेतवस्त्रधारणकर्याहता॥ अने पोताना मुखार्विंदनीआगळसाधु तथादेशदेशनाहरिभक्तनीसभाभराईने वेठिहति ॥पछेअक्षर मुक्तानंदस्वामिये प्रश्नपुछ्युंजेहेमहाराज जीवनो आत्यंतिकमोक्ष थाय तेनुं मुख्य शुंसाधनछेअनेपछेमहाराजबोल्याजे जीवनेप्रथमतो सत्पुरुषकल्याणकारीनो संबंधथयो जोईये ।पछे ते निरविजसांख्यने निरविजयोग तथा सविज सांख्यने सविजयोग ए चारप्रकारनाज्ञानेकरिने जीवनोआत्यंतिकमोक्षथाय छे ॥अनेजोएकलो निरविजसांख्यनुंज्ञानहोय ने विजात्रण नुंज्ञाननहोयतो तेपाज्ञानीकहेवाय तेणेकरिनेआत्यंतिक मोक्ष नथाय ।अने निरविजसांख्यनेनीरविजयोगए बेनुंज्ञानहोयतो अरधोज्ञानीकहेवाय॥ अनेनिरविजसांख्यनिरविजयोग ने सविज सांख्य ए त्रणज्ञान थायतो ते पुणोज्ञानीकहेवाय ॥अने चारेनुं संपूरण ज्ञान थाय तारे तेपूरोज्ञानीकहेवाय ॥हवे तेचारप्रकारनाज्ञाननेकहेछे तेमांप्रथमनिर विज सांख्यनाज्ञाननेकहेछे॥ तेमांप्रथम बेप्रकारनीसृष्टिछे॥ तेएक ईश्वर सृष्टि छे ॥ अने बिजीजीवसृष्टिछे॥ तेमा ईश्वर सृष्टि केई तो आचौदलोकनोवेराट ते ईश्वर सृष्टीकहेवाय छे॥ अनेजीवनास्थुळसूक्ष्मने कारण एवात्रणदेहकहेवाय ॥ अनेईश्वरनावेराट सुत्रात्माने अव्याकृतएत्रणदेहछे ॥अनेजीवनादेहमांअल्पभूतछे ॥ अनेईश्वरनादेहमां महतभूतछे ॥ अनेईश्वरनादेहना माहापंचभूतछे तेथकि

जीवनादेहउपज्याछे ॥ अनेपृथ्वीजलतेजवायुआकाश अहंकार महतत्व प्रधानपुरुषनेमूलप्रकृतिए अष्टआवरणरूप
उपाधिज्यांसुधिइश्वरनेवलगिछे ॥ अनेजीवनेज्यांसुधिइश्वरने पृथ्वीजलतेजवायुआकाशअहंकार चित्त मनबुद्धि
अष्टप्रकारनीजेमायातेमांजीवजोडाणाछे ॥ त्यांसुधिजीवने इश्वर बेयबंधकहेवायछे ॥ तेजन्म मृत्युने पामेछे ॥
अनेतेजीव नादेहमांजेआअल्पआवरणछे तेनेज्ञान प्रले करिनेमांथीउपज्याछे तेमांजयकरिनेसत्तारूप थवुं॥ अने
इंद्रियोअंतःकरणनाजेविषयतेनोत्यागकरवो ॥ अनेइश्वरनादेहमांजे महत आवरणछे तेने चारप्रकारनो प्रलय
करिनेतेथीईश्वरनादेहमांजेमहतआवरणछे तेनेतेथीईश्वरने जुदासमजवा ॥ अने अष्ट आवरणरूपजे मायातेह
रिमांनआवे तेने निरबिजसांख्यनुं ज्ञानसिधथयुंजाणवुं ॥ हवे निरबिजयोगने कहेछे ॥ जे ज्ञानरूपी प्रलयेकरी
नेसर्वनेनाशपमाडिनेपछे ज्ञानरूपपोतानाआत्मानेमानीनेप्रतिलोमद्रष्टीकरिने स्थिरासमान आसनेबेसीने ब्रह्म
रूपजेअक्षर तेरूपथईनेए अक्षरहुंछुं ॥ एमधारवुं पछे ॥ ज्ञानरूप पोताना आत्मानेएम अक्षरनेविषे एकत्व पणुंक
रवेकरिने अक्षरनातदाकारभावनेपामेछे कहेतां अक्षरनागुण तेनेविषेआवेछे ॥ अने शुध्य ब्रह्मरूपथायछे ॥
अनेभगवानने पामवानो अधिकारी थायछे ॥ तेउपर श्लोकछे ॥ जे ॥ ॥ ब्रह्मभूत प्रसन्नात्मान सोसविनकां
सति ॥ समसर्वेसुभूतेसुमद्भक्तिंलभतेपरा ॥ ॥ एनो एम अर्थछे ने पंचविषयनी वासनामुकिने
सर्वभूतनेविषे सम दृष्टिकरिने कहेतां कोई मार्दकपदार्थ मोमाहने नथी पामतो ने प्रसन्नथको ब्रह्मरूपथयोछे
तेज भगवाननी भक्तिनो अधिकारिछे ॥ माटे एविरीते पंचविषयनीवासनामुकिनेज्ञानप्रलेकरिने अक्षरनेवि
षे एकत्वपणुंकरिने ब्रह्मरूपथयोछे ॥ तेपुरुषजेते नीरबिज सांख्यनेनीरबिजयोगने पाम्यो कहेवायछे ॥ हवे
सबिज सांख्यनेकहेछे ॥ जेनीरबिजसांख्यने निरबिजयोगनाज्ञाननापमाडनारा एवाजेप्रत्यक्षसतपुरु
ष परमात्मा भगवान तेनोमहिमाजाणवो ॥ जेते भगवान केवाछे ॥ तो क्षर नेअक्षर ए बेयना आधारछे ॥

अने ते भगवान मनुष्यजेवाजणायछे तोपणदिव्यमूर्तिछे ॥ अने अनंतऐश्वर्यनेअनंतपारसदनेअनंतशक्तियोतेतेयुक्त छे॥ अनेअनंतकोटिब्रह्मांडनाकरताछे॥जेप्रकृतिपुरुष तेनाआधारछे ॥अनेजेनीशक्तिकाळछे जेनीशक्तिमाया छे॥ जेनीशक्तिअक्षर छे॥एवाअनंतप्रतापे युक्त ने करताथकाअकरताछे ॥ अनेजेसगुणने निरगुण नेअनवय नेव्यतिरेक दिव्य भावने मनुष्यभावनेसाकार ने निराकार एवाअनंतऐश्वर्यछे॥एवाजे भगवान तेजआप्रत्यक्ष मुनेमल्याछे॥ एविरीतेप्रत्यक्षभगवानना स्वरूपनो महात्म ज्ञानेसहित जे निर्विकल्प उत्तम निश्चेथायतेने सविजसमा रव्यकहिये ॥अनेहवेसविजयोगने कहे छे जेतेभगवानपोतानेमल्या तेनी मूर्तिने पोतानाआत्माने विषे धारिने प्रतिलोमदृष्टिकरिने ते स्वरूपनुं ध्यानकरवुं ॥तेविरीतेमहात्मे सहित प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनुं ध्यानकरे॥ तेनेअनंतप्रकारेजुक्त प्रत्यक्ष मूर्त्ति तेपोतानोआत्माजेअक्षरतेने विषे देखायछे॥ अनेतेप्रत्यक्षमूर्तिने ध्यानकरि नेकरिने तदात्मक भावनेपामेछे ॥अनेअपारसुखनेपामेछे॥ ॥इतिश्रीसुखसिद्धांतसमाप्तः

॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत॥१९॥ओगणिसें॥२३॥त्रेविसना भादरवावदि॥६॥छठनेदिवस महाराजश्रीहरिकृष्णभगवान॥गामश्रीदेवातज मध्येपुराणि जगन्नाथदाजी भाईने घेर उत्तरादोबारनाचोकमां बिराजमानथयाहता ॥अने सर्वेजरियानीवस्त्रधारण कर्यांहतां ॥अनेपोता नासुखार्बिंदनीआगळ साधुतथा देशदेशना हरिभक्तनीसभा भराईनेबेठिहति।पछे कृष्ण भाईयेप्रश्नपुछ्युं जेहे महाराज जेजीवछे ॥तेझाड पहाडपशुपंखि मनुष्यादिकना देहमांके विरीते आवताहशे।।नेकेविरीतेतेते भावनेपामताहशे ॥पछेमहाराज बोल्याजे सांभळोएनोउत्तर करियेजेपुरुष प्रक्रतिरुप बे भगवाननीशक्तिछे॥ तेसर्वेजीवप्राणिमात्रना कर्मनाफळने पमाडेछे॥ तेपुरुषने प्रकृति बे मळिने पुरुषोत्तमनीईछाये करिने जीवो नीजे वासना तेतेजीवनी तेवीबुद्धिने जेवाजेनाकर्म तेतेरूपनेतेते जातिनेपमाडे छे॥ तेजोपाडामांजन्मधरावे-

तो पाडाना भावने तथारूपने पमाडे छे ॥ अनेहाथीमांदेह धरावे तो हाथीना भावनेने रुपनेपमाडे छे॥ अने झाडमांदेह धरावे तो झाडना साधर्मपणाने पमाडे॥ अने किडिमां देह धरावेतो किडिना भावने तेनुरुपनेतेप्रमाणेवळअनेतेनाजेटलो अहार नेतेनाजेवीबुद्धितेभावनेपमाडिआपेछे ॥ एविरीते पशुपंखिमनुष्यतथादेवब्रह्मादिक तथाचोराशि मांजेनां जेवांकर्म तेप्रमाणे ज्यांज्यां जन्म धरावे त्यांत्यां तेवातेवा रुपनेने तेवि ते वि बुद्धिनेपमाडे एवी अनंतकलाओ प्रकृतिपुरुषने पुरुषोत्तम भगवाने आपीछे॥ तेणाकरिने अनंतकोटि ब्रह्मांडनावेहेवार पुरुषोत्तमनी ईछायेकरिनेपूरुष प्रकृति करयांकरेछे ॥ अनेएपुरुष प्रकृतिनाकारणएवाजे परमात्मा पुरुषोत्तम भगवान् तेना स्वरुपनुंजीवनै ज्ञानथायत्यारे तेजीवनेचोरासीमां अनंतजन्मधरवा ते रुपि मायानुंआवरण टळे ॥ अनेगर्भवासनेमृत्यु समानाजे महादुःख तेथकि मुकाईने मोक्षनेपामे ॥ तेपरमात्माना स्वरूपनुं ज्ञानकेमथाय ॥ तोजीवनो मनुष्यनोदेह होय ॥ अने भगवानपण कृपाकरिने अनंतजीवोनोउद्धार करवासारु पृथ्वीउपर प्रगटथया होय ॥ अनेतेभगवानपोतानास्वरुपनु ज्ञानकरावे कां तेनास्वरुपनेजाणनाराएवाजे एकांतिकसाधु तथा हरिभक्त तेथकिपरमात्मानु ज्ञानपमाय ॥ एज मोक्षनेपामवानो मारगछे पण तेविना विजो मोक्षनेपामवानो मारगनथी एसिद्धांतवार्ता छे ॥ अने बिजाजेजे परोक्षपणे मोक्षनामारगशास्त्रमां कह्याछे तथा तिर्थमां मोक्षनामार्ग कह्याछे तेतोजीवनेओधार दिधाछे ॥ पणतेथकि कोईनो मोक्ष थयोनथी ॥ अने तेसतशास्त्रमां लख्याणापणनथी ॥ अने पूर्वे जेजे प्रगट सतपुरुषनेपाम्याछे तेनांजकल्याणथयांछे॥

॥ इतिश्रीमुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥ ॥

॥ ॥श्रीहरिकृस्नायनमोनमः॥ ॥संवत॥१९॥ऋोगणिसें॥२३॥नेविसनाआसो
वदि॥१०॥दनामीने दिवसमहाराजश्रीहरिकृस्नभगवानगामश्री सोजित्रामध्ये पोताना मंदिरमांउत्तरादाबारना बंग
लानी रवेन्नामा॥ सहजवदउपरगादितकियेयुक्तपलंग बिछावीनेतेउपर विराजमानथयाहता॥नेसर्वे स्वेतव
स्त्र धारणकर्यां हतां॥ नेमुस्तकउपर कस्कबल फेंटो बांध्योहतो॥ ने कंठने विषे मोगराना पुष्पना हारधारणकर्या
हता॥ नेबेहाथने विषे बाजुनेगजरा सोभिरह्या हता॥ नेपुष्पनातोरानेगुछधारणकर्याहता॥ नेजस्लाटने विषेकंकु
नो चांदलोकर्योहतो॥नेपोतानामुखार्विंदनीआगज साधुतथा घणाकहरिभक्तनी सभाभराईनेबेठिहती॥ नेसं
ध्याआर्तिथयापछे॥ महाराजश्रीहरिकृस्नभगवान बोल्यांजे॥श्रीमद्भागवत् पूराणने विषे ॥शुकदेवनेपरिक्षत-
राजायेप्रश्नपुछ्युंछे॥ ॥श्लोक॥ ॥ब्रह्मन् ब्रह्मण्यनिर्देश्ये॥ निर्गुणेगुणवृत्तयः॥कथंचरंतिश्रु
तयःसाक्षात्सदसतः परे॥१॥ ॥श्रीशुकउवाच॥ ॥बुद्धिंद्रियमनःप्राणान्॥जनानामसृजत्प्रभु
॥मात्रार्थंच भवार्थंच॥आत्मनेकल्पनायच॥२॥ ॥अर्थ॥ ॥शुकदेवनेप्रिक्षतराजा पुछेछेजे॥
गुणमयिएविजेवेदनीश्रुतियो॥तेगुणातितएवाजेपरमात्मा तेनुंवरणनकेमकरिस्केके॥ पछेतेनोउत्तर शुकदे
वेकर्योछे॥ पणतेयथार्थकोईनेसमजातोनथी॥ माटेतेनोउत्तरअमेसर्वेने सेहेलीरीतेसमजायएमकरियेछेये
॥तेमांप्रथमदृष्टांतकहुंछुं॥ जेकोईकएक जंगलीमनुष्यहतो॥ तेणेमोतिनेकोई दहाडे दिठेलुंनहिं॥ तेणेमोति
नेजाणनारेकह्युंके॥ मोतीमकाईनादाणाजेवुं होय॥ त्यारे तेजंगलिये कह्युंके मकाईजेवुं मोतीछे॥त्यारेतेमोतिवि
नारोटलाथताहसे खरा त्यारे कह्युंके रोटला तोनथाय मोती तो मकाईजेवुंधोलुंहोय पण पाणकाजेवुंकठणहोय
॥माटे रोटलाथायनहिं॥ पछे तेजंगलीकोईक मोटाशेहेरमांगयो तेणेकोईक नागलामां मोतिनीमाला दिठी॥त्यारे
तेणेएमजाण्युंजे मनेएकपुरुषे मोतीनुं एधाणआप्युंहतुं॥ तेआपुरुषनागलामांमासाछे तेमोतिनीहशे॥एमजा

णीने तेने पुछ्युं के आतमारा गलामां माला शेनी छे ॥त्यारे तेणे कह्युं के मोतीनी माला छे ॥ पछे ते जंगलीपुरुषने मोति
नी खरेखरी ओलखाण पडि ॥ ते मोतिनी ओळखाण मकाईने पाणके करीने थई ॥ पण ते मोतिने विषे मकाई के पाण-
कोएके नथी ॥ तेमए तो दृष्टांत ॥ ने तेनुं सिद्धांत ए छे जे मोतीने ठेकाणे परमात्मा प्रत्यक्ष भगवान् छे ॥ ते परमात्माना
स्वरूपने कोई जीव जाणतो नथी ॥ ने जीव माया मां छे ॥ ने परमात्मा माया छे ॥ माटे जीवना जाण्यामां परमात्मा आवे एम
नथी ॥ ते सारुं परमात्माना स्वरूपने जाणनारा एवा जे सद्गुरु ते जीवोने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान चार इश्वर्य करिने
करावे छे ॥ ते जेम मकाईने पाणके करिने मोतीनुं ज्ञान थयुं ॥ तेम चार ईश्वर्यने जाणवे करिने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान
साक्षात्कार थाय छे ॥ ते चार इश्वर्य कियां तो एक माया ॥ बिजो जीव ॥ त्रीजो इश्वर ने चोथा ब्रह्म ए चार ऐश्वर्य छे ॥ ते
मां प्रथम मायाये करिने परमात्माने जणावे छे ॥ के परमात्मा केवा छे ॥ तो परमात्मा साकार मूर्त्तिमां न छे ॥ ते मूर्ति कि
वि छे ॥ तो मनुष्याकार द्विभुज मूर्ति छे ॥ त्यारे तेमां शंका थई के परमात्मा मनुष्य जेवा छे ॥ त्यारे मनुष्य जेम मरिजाय
छे तेम परमात्मा मरिजता हशे ॥ त्यारे ज्ञानीये कह्युं के परमात्मा मनुष्यनी पेठे मरे एवा नथी ॥ ने परमात्मानी मूर्त्ति तो
मनुष्यना सरखी आकार छे ॥ पण मनुष्यना शरीरमां आत्मा अखंड ॥ अविनासि छे ॥ ते वि अखंड अविनाशी मूर्ति छे
त्यारे वलि अज्ञानीने संषय थयो जे परमात्मा आत्मा जेवा अखंड अविनाशी तो खरा पण त्यारे जेम आत्मा सुख
दुःखने पामे छे तेम परमात्मा सुखदुःखने पामता हशे ॥ त्यारे ज्ञानीये कह्युं के आत्मा जेवा अविनाशी छे ने इश्वर जे
वा परमात्मा समर्थ ने सर्वज्ञ छे ॥ त्यारे तेमां वलि शंका थई के ईश्वर जेवा समर्थ तो खरा पण ईश्वरने जेम वैराट सुत्रात्मा
ने अव्याकृतरूपी महत माया वलगी छे ॥ ते परमात्माने पण माया वलगी हशे ॥ त्यारे ज्ञानीये कह्युं के परमात्मा इश्व
र जेवा समर्थ ने ब्रह्म जेवा निरलेप छे ॥ ने तेनी दृष्टिमां तो माया ज नथी ने परमात्मा तो ॥ ॥ कर्तुम् कर्तुं ने अन्य
थाकर्तुं समर्थ छे ॥ ॥ अने ते परमात्माने मायाना जेवो आकार छे ॥ कहे तां मनुष्यना जेवी परमात्मानी मूर्त्ति छे ॥ प-

एतो मूर्त्तिने विषे मनुष्यपणुं नथी ॥ एटले मनुष्य जेम मरिजायछे ॥ तेम परमात्मानी मूर्ति नाशपामेने मरिजायएवीनथी॥ अने परमात्मानीमूर्त्तितो जीवात्मा जेवीअविनाशीछे ॥नेअखंडछे ॥पणजीव जेम पराधिनछे नेसुखदुःखने पामे छे॥ तेमपरमात्मापराधिनन थी नेसुखदुःखनेपामता नथी।अने परमात्मातो आत्मा जेवाअविनाशीछे॥ नेइश्वरजेवा समर्थछे नेस्वतंत्रछे नेसर्वज्ञछे॥ पणइश्वरने विषे जेम महतमाया रहिछे नेउत्पत्ति स्थिति प्रलयकरवा रुपउपाधीवलगीछे तेमपरमात्माने विषेमायानो लेशनथी ने परमात्मातो इश्वरजेवासमरथछे ॥नेब्रह्मजेवा निरलेपने निरंजनछे ॥ केहेतांअज्ञानजे मायातेणेरहितछे॥ पणब्रह्मजेमनिराकारने अक्रियेवान्छे ॥तेमपरमात्मानिराकारनेअक्रियेवान् नथीपरमात्मातो॥ ॥कर्तुम् कर्तुंनेअन्यथाकर्तुंसमर्थछे॥ ॥माटे जेममोतिनेओलखावासारुमकाइनेपाणकानीउपमादिधिहती॥ पणमकाईनेपाणकाथी मोतीजुदुछे नेमकाईपाणकेकरिने मोतीनीओलखाणपडी तेमममकाईपाणकारुप जीवइश्वर मायानेब्रह्म तेनेजाणवेकरिने प्रत्यक्षपरमात्मानुंस्वरुप ओलखायछे।।पणपरमात्मातोएसर्वेथीजुदाछे॥माटे मायानोभाव प्रत्यक्षपरमात्मानी मूर्तिने विषेजणाय तोपण मायानोलेश परमात्मानी मूर्तिने विषेनथीकहेतां मनुष्यजेम मरिजायछे ॥तेम प्रत्यक्षपरमात्मा मरिजता देखाय तो पण परमात्मा मरतानथी ॥नेएतोअखंडमूर्तिछे॥ अने जीवनाजेवा भाव प्रत्यक्ष परमात्माने विषेजणाय तो पणजीवपणानो लेश परमात्माने विषेनथी॥ अने इश्वरनाजेयो भाव प्रत्यक्ष परमात्माने विषेजणायतोपण इश्वरजे वैराटरुप तेथकि परमात्मा घणाजुदाछे ॥ अने ब्रह्मनो भावप्रत्यक्ष परमात्मानेविषेजणायतो पण ब्रह्मतोजेनोप्रकाशछे ॥नेपरमात्मा तो ब्रह्मनापण प्रकाशकछे ॥नेब्रह्मना आधारछे॥ माटे जीवईश्वरमायाने ब्रह्मए परमात्मानाचारइश्वर्यछे ॥ तेनेजाणवे करिने पंचमापरमात्माना स्वरुपनो निश्चयथायछे॥ अनेतेमायादिकचार इश्वर्यनेजणाववा तेनेअर्थे चारवाणिना भेदपड्याछे॥ ते चारवाणि केईतो परापस्यंति मध्यमाने वैखरि एचार प्रकारनीवा

णि छे॥ ते मांजे प्रथम मायानुं वरणन करयुं तेनुं नाम वैखरि वाणि कहेवायछे अने जीवात्मानुं वर्णन करवुं तेनुं नाम मध्य
मावाणी कहेवायछे॥ अने वैरार रूप ईश्वरनुं वर्णन करवुं॥ तेनुं नाम पस्यंती वाणि कहेवायछे॥ अने ब्रह्मना स्वरूपनुं वर्णन
करवुं तेनुं नाम परा वाणी कहेवायछे॥ अने ए चार वाणिये करिने चार ईश्वर्य जणायछे ने चार ईश्वर्य ने जाणवे करिने
पांचमा परमात्मा जणायछे॥ ते पांचमा परमात्मा प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिक तेनां लिलाचरित्र ने महिमाना गु
णगायवा॥ ते तो चारे वाणिथी पर एवी पांचमी अनुपम वाणी कहेवायछे॥ माटे गुणमयी एवि जे वेदनी श्रुतियो ते चार
वाणीये करिने गुणमय एवा जे परमात्माना चार ईश्वरय तेनुं वरणन करेछे॥ तेणे करिने निर्गुण एवा जे परमात्मा तेना
स्वरूपनो साक्षात्कार निश्चय थायछे॥ अने परमात्माना स्वरूपनो साक्षात्कार निश्चय थयो॥ एटले चारे वाणि ल
य पामि जायछे॥ जेम मोति ओलखाणुं एटले पछे मकाईने पाणको एकांई कहेवा पणुं रहेतुं नथी॥ तेम प्रत्यक्ष पर
मात्माना स्वरूपनो निश्चय थयो एटले पछे जीव ईश्वर माया ब्रह्म तेना स्वरूपने जणाववा रूप जे चार वाणि तेनुं कांई क
हेवापणुं रहेतुं नथी एवी रीते गुणमयी एवी जे वेदनी श्रुतियो ते गुणथी पर एवा जे परमात्मा तेना स्वरूपनुं साक्षात्का
र प्रतिपादन करेछे॥ केमके ज्यां सुधि प्रत्यक्ष परमात्मा नथी जाण्या त्यां सुधि वेदनी श्रुतियो गुणमयी कहेवायछे
अने त्यां सुधि चार वाणिना भेद कहेवायछे॥ अने ए चार वाणीये करिने चार ईश्वर्य ने जाणिने प्रत्यक्ष परमात्माना
स्वरूपनो निश्चय थयो एटले गुणनो लय थईने तेनी ते श्रुतियो निर्गुण भावने पामि जायछे॥ माटे वेदनी श्रुतियेक
रिने प्रत्यक्ष परमात्मा श्रीकृष्णना स्वरूपनुं वरणन करयुं ते तो चार वाणिथी पर एवि निरगुण रूप पांचमी अनुपम वा
णीछे॥ अने प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपने जाण्याविना एकली मायानुं वरणन करवुं तेनुं नाम वैखरि वाणि कहेवाय
छे॥ अने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपने जाणिने पछे ते भगवाननी सेवामां जे जे मायाना पदार्थ काम आवे ने ते ते परमा
त्माना मूर्त्तिनुं गुण वर्णन करयुं॥ ते तो अनुपम वाणि छे अने प्रत्यक्ष भगवानना संबंध विना एकला जीव ईश्वर तेनुं वरण

नकरवुं तेनुंनाम मध्यम वाणिछे॥अनेप्रत्यक्ष भगवानना संबंधने पाम्याएवा जेजीव भगवानना भक्त गोपीगोवाळादिक ते
तेनुंवरणनकरवुं ते तो अनुपमवाणिछे ॥अनुपमएटले एनो कोई उपमादेवाय नहि ॥एमविअमुल्य चिंतामणिरूपवाणिछे
अनेप्रत्यक्षभगवाननासंबंधविना एकला वैराटरूप ईश्वरनुंवर्णनकरवुं ते नुपन्यस्तिवाणिछे।।अनेप्रत्यक्ष भगवानना
स्वरूपनेजणाववानेअर्थे ईश्वरनुंवरण नकरवुं॥ तेतोअनुपमवाणिछे ॥अने प्रत्यक्ष भगवाननासंबंधविना एकलुं ब्रह्म
नुंवरणनकरवुं ॥ तेनु नामपरावाणिछे ॥अने प्रत्यक्ष भगवानना साक्षात्कार स्वरूपने पामिने ब्रह्मरूपथईनेपछेतेमु
क्तजेते बिजाजीवोने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनेजणाववासारू मायानुरूपकहिदेखाडेछे।।तेपणअनुपमवाणिछे
जीवनुं रूपकहिदेखाडे तेपण अनुपमवाणिछे॥ ईश्वरनुं स्वरूपकहिदेखाडे तेपण अनुपम वाणिछे ॥ ने ब्रह्मानास्व
रूपनेकहिदेखाडेते पण अनुपमवाणिछे ॥ अनेप्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनुंवरणनकरे छे तथाप्रत्यक्ष भगवान
ना जन्म कर्मने चरित्र तेनुंवरणनकरेछे तेसर्वे अनुपमवाणिछे ॥ अनेप्रत्यक्षभगवाननास्वरूपने पाम्याविनानेजाण्या
विना।।तथाप्रत्यक्षभगवानने जाणवानी इच्छाविना स्वार्थनेमाटे शास्त्र भणिने तथावेदपुराणने भणिनेजे पुरुषमा
यानुंवर्णनकरेछे ।।तेपण वैखरिवाणिछे नेजीवनुंवर्णनकरेछे तेपण वैखरि वाणिछे।। ने ईश्वरनुं वर्णनकरेछे ते
पण वैखरि वाणि छे ।।ने ब्रह्मना स्वरूपनुं वर्णनकरेछे।।तेपण वैखरिवाणिछे।। अने तेनी वाणिये करिने कोईजी
वनुं रूडुं थतुं नथी।।माटे प्रत्यक्षपरमात्माने जाणवा पामवाने अर्थे प्रथम मायानुं रूपजाणवुंजोईये।।पछे जीव
नुं स्वरूपजाणवुंजोईये।।पछे ईश्वरनुं स्वरूपजाणवुंजोईये पछे ब्रह्मनुं स्वरूप जाणवुंजोईये एविरीतेजीवईश्वरमाया
ने ब्रह्मएचारेना स्वरूपनेप्रथम जाणेछे ।।तेने पछे प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञानथायछे।। एविरीते वेदनी श्रु
तियो चार ईश्वर्यनुं वरणनकरे छे तेमेगुपरमात्माना स्वरूपनुं वरणनथायछे ।।पणतेचार ईश्वर्य विनावेद परमा
त्मानुंवरणनथीकरीशकता॥ माटे जेमम काईमेपाणकाने जाणवे करिने मोतिनुं तान जंगलीमाणसनेथयुं

।।तेमजीवईश्वरमायाने ब्रह्म तेनास्वरूपने जाणवे करीने प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनुंसाक्षात्कार ज्ञानथायछे।। अनेप्र त्यक्ष भगवानना स्वरूपने ज्ञाने करीनेजीवनुंआत्यंतिक कल्याणथायछे।। ।।इतिश्रीमुख्यसिद्धांतस माप्तः।। ।।संवत्।।१९।।ओगणिसें।।२६।।त्रिविसना आसोवदि।।११।।एकादशिने दीवस।।महा राजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री सोजींनामछे।। भक्त व्यास कुबेरजी ईश्वरने घेरदक्षणादा बारना ओरडानी आगल चोकमां गादितकिये युक्त पलंग बिछावीने तेउपरविराजमान थयाहता।। नेसर्वे केसकेद लजारियानी वस्त्र धारणकर्या हतां।। ने सर्वे अंगने विषे गुलाबनेचंपाना पुष्पनां आभूषणकर्या भिरह्या हतां ने ललाटने विषे केसरनी अरचाने कंकु नो चांदलो कर्योहतो नेपोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरिभक्त नी सभा भराई नेबेठिहती पछेम हाराजश्रीहरिकृष्ण महाप्रभुजी कृपादृष्टिकरिने बोल्याजे बे प्रकारनामनुष्यनावरगछे।।तेमांएकबुद्धिवालाम नुष्यनोवरगछे।।ने बिजोबुद्धिहिणमनुष्यनो वरगछे।।हवेतेमांजे बुद्धिमानमनुष्यहोय तेनेतोकोईक थोडीकवात करेतोतेमांथी घणोक अरथ समजीजाय।।अनेजे बुद्धिहिणमनुष्य होय तेने तोघणीक वातकरे तोतेमांथी थोडोक अर्थ मांडमांड समजीशके।।एथिरीतेबुद्धिवालाने बुद्धिहिण बेप्रकारनामनुष्यमां घणो भेदछे।।अने तेमज कल्या णनमारगमां पण बुद्धिवालाने बुद्धिहिण बेप्रकारनामनुष्यछे।।नेतेमांजे बुद्धिवालामनुष्यहोय तेसत्संग करवाआ वे त्यारेतेनेअमे थोडिकज्ञानवारता करिये।।नोतेवातनो घणोक अर्थसमजीने तेप्रमाणे वरतवा नोमनमांठराथकरी नेते विरीते वरतवा लागेछे।।पणपछे तेमां लेशमात्र फेर पडवादीये नहि तेपोतानुंशरीर जायतोपण अमेकरिजे आ ज्ञा तेमां फेरपडवादियेनहिं।।अने तेमांजेवीरीते समजयानुंकह्युंहोय ते विरीते दृढपणे समजयानी मनमां गांठ्याजे पछेतेसमजणने मोटा ब्रह्मादिक फेरववाआवे तोपण तेनीसमजण फरेनहि।।एथिरीतनां मनुष्य होय तेने बुद्धिवान कहिये।।अनेजेमुरखमनुष्यहोय।।तेने तोअमे घणिकज्ञानवारता करियेपण तेतोजराय समजीशकेनहि।।अने

तेनेधर्म नियमनो पण इगवरहे नहिं ॥ ने समजणनो पण तेनेगरहे नहिं ॥एवोजेमनुष्यहोय तेनेमुरखनेबुद्धि हिणक-
हिय अनेएवामुरखहोय ते महादुःखन पामेछे ॥अनेजबुद्धिवाला होयते महा अद्भुत स्करवने पामेछे ॥ जेमउत्तम
वरणजे ब्राह्मण वाणिया के पाटिदार तेनीवहुदिकरियोहोय नेते बालअवस्थामोंथी विधवाथाय ॥ त्यारेतेनेम
मनांएम केराव थायजे मोरे हवे आसंसारमां कोई पुरुष करवाजोगनथी ॥एमसमजीने पोतानावरणाश्रमनो धर्मश्रा
स्त्रमांकह्यो होय ॥ तेमां द्रढपणेरहिने परमेश्वरनी भक्तिकरे ॥ ने ते उत्तम कुलनी विधवा बाई होयते एक वखत
अन्नखाय ने गल्युं चिकणुं कांई खायनहि ॥अने चोमासाने विषे धारणां पारणां तथा चांद्रायणादिक व्रतकरे
॥अने कोई साथे हांसि मस्करि करे नहिं॥अने विभिचारिएवाजे पुरुष तथा स्त्रियो तेमनी सोबत क्यारेयपण
करेनहिं॥अने पोतानां मा बाप सासुससरो आदिक समिप संबंधिहोय तेनी आज्ञामांवरते अनेधर्मवालाने
भगवानना भक्त बाईयो हरिजन होय तेनोसमागमकरेने परमेश्वरनी भक्ति अखंड कर्याकरे ॥एविरीतनीसमजण
वालीज विधवा बाई होय ते ने बुद्धियानकहिये ॥अनेतेआलोकमां महास्करवने पामेछे ॥अने तेनेकोईक सत्पुरुष
नोसत्संगथाय तो परलोकमां तेना आत्मानुं कल्याणथायछे ॥अने उत्तम कुलमांजे बुद्धिहिणने मुर्ख होयने ते
विधवा थाय तो पण तेतो धर्म नीयममां कांई रहे नहिं ॥ अने तेने सौ देखतां तो पुरुष थायनहिं॥ पछे छानो पुरुषक
रवानामनमां संकल्पकरे अनेजे मुर्खरांडेलिहोय ॥ते सारां सारां खावानां घिगोलखांडसाकर दुधदहिं तेनेपेटभरि
भरिने खाय ॥पछे ते विधवा बाइयो मचे लापाडाजेवी थायछे ॥अने तेनां माबापपणजे मुरखहोये तेएम जाणेजेदि
करिनानीथी रांडिछे ॥माटेकांई बापडि कही हाणीमाणि नथी ॥तेसारुं तेने सारुं सारुं खवरावियेपिवरावियें॥
अनेतेनेहवे चुडलोतो पहेरायनहिं ॥ माटेतेने सोनारुपानी चिपोकरावि ने हाथमां न खावेछे॥ ने कोटमां हांस-
डियो नखावे छे॥ ने आंगलियोमां वींटीयोन खावेछे अनेचलिनानीथी रांडिहोयते बेकदाहाडामां थेचोरला-

रखावेछे ॥ अनेजे मुरखरांडे स्त्रीयो होय तेएवा कने तिथवानाशृणगार करेछे नेतेनी अंतेजतां फजेतीपण जरुर थायछे नेते मुरख नेबुद्धि विनानी रांडु स्त्रीयो छे ते आलोकमां महादुःखने पामेछे॥ नेपरलोकमां तेनुं कल्याण कोईकाले थायनहिं ॥ अनेते तो मरिनेवेश्यानेघरजन्मने पामेछे ॥ तथाकुतरीयोनो अवतार धरेछे ॥ तथाकुंभारनेघेर धधुडियो थायछे॥ माटे जगतमांजे मुरखरांडस्त्रीयो होय तथाते मुरख विधवा बाईयोना मावाप होय ते बेय महादुःखनेपामेछे ॥ अनेजे बुद्धिवालियो विधवाबाईयो होय ॥ ते तो एवां फजेतीनां काम करे जनहिं ॥ अनेते बुद्धिवालि विधवाबाईयो जे ते महासुख नेपामेछे नेतेनुं कल्याण थायछे ॥ अने तेमजजे पुरुष भगवानना भक्त होय तेने पण धर्मनियम दृढ करिने राखवाजोईये॥ नेपंचविषयनो त्यागपण जरुर करवो जोईये ॥ अनेते मांवलिजे संसारनो त्याग करिने भेख लिधो होय तेने विषेषे दृढपणे पंचविषयनो त्याग करवो जोईये ॥ अनेजे पंचविषयनो त्याग करिने प्रत्यक्ष भगवाननुं भजन करेछे॥ तेजत्यागीनुं कल्याण थायछे नेपरमपदनेपामेछे ॥ अने एवा त्यागि साधु संन्यासी ब्रह्मचारि परमहंस होय ॥ तेना उपर अमे पण घणा घणा प्रसन्न थईये छीयें ॥ अनेजे त्यागिने विषयने भोगवेछे के विषय भोगववानी मनमां ईछा राखेछे ते तो त्यागी पुरुष तथा विधवा बाईयो तेबेय सुरख छे ने बुद्धिहिणने पापीछे॥ नेते तो चंडालतुल्यछे ॥ अने तेने अमारो सिद्धांत रंच मात्र समजाणोज नथी ॥ अनेजेजे ग्रहस्थ हरिभक्त मोक्षना रखपवाला होय ॥ तेनेपण निरवासनीक तोजरुर थवुं ॥ अने कोई जगतनां माईकपदार्थमां मोह पामवो नहिं ॥ केमके जगतनां पदार्थ सर्वे मिथ्याछे॥ नेमहापापकर्मोनां कारणछे॥ केमके अविनासि सुखना पमाडनारा एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेना भजनमां जगतनां पदार्थ अंतराय नां करनारां छे ॥ अने तेजगतनां पदार्थ सर्वे एक सरखांछे ॥ ने दुःख रुपने पाप रुपछे ॥ जेम विष्टा तथा काखना वाल ते बेय नठाराछे ॥ ने त्याग करवाजोगछे पणते राखवा जेवा नथी॥ तेम जगतना पदार्थ विष्टा जेवां तथा काखना वाल जेवाछे ॥ ते अहीं विष्टानाकीडाथी ते ब्रह्मापर्यंतनां सुखते सर्वे एक सरखां छे ने नरक रुपछे ॥ मारे नर

कते त्याग करवा जोग छे ॥ तेसारुं भगवाननो भक्त थईने ते नरकरुप जगतना पदार्थने पामवानी इच्छा राखे छे ते तो महामु-
रख छे ॥ नेपशु तुल्य छे ॥ अने जे विवेकी ने बुद्धिवाला भगवानना भक्त होय ते तो भगवाननी भक्ती ने भगवानने विषे प्रेम ने
भगवानना संतनो समागम ते विना बिजुं कांई मनमांहि छे जनहिं ॥ तेज खरो भगवाननो भक्त कहेवाय अने तेना उपरज
अमारि खरेखरी कृपा थाय छे ॥ मारे भगवानना भक्त ने एक भगवान जवालारा खवा ॥ ने जगतना पदार्थनी वासनानो
त्याग करवो ॥ केमके भगवान क्यां ने जगतनां पदार्थ क्यां ॥ एबेमां तो घणो ज भेद छे ॥ मारे ते बेय जे सरखा माने छे ॥ तेतो
महामुरख छे ॥ केमके जे भगवानने विषे पण प्रितिराखे छे ॥ ने जगतना पदार्थने विषे पण प्रितिराखे छे ॥ तेने जो हजी
कांई समज्या मां आव्युं जनथी ॥ अने ते तो अविवेकि छे ॥ ने मुरख छे ॥ केमके पूर्वे पण जे जे भगवानना भक्त थई गया छे
॥ तेणे पण भगवानने पामवाने अर्थे ने भगवानने प्रसन्न करवा सारुं जगतनां सर्वे पदार्थनो त्याग करिने वनमां जईने महातप
कर्यां छे ॥ ते चित्रकेतु राजाये क्रोड स्त्रियोनो ने पोताना सर्वे राज्यनो ने देहना सुखनो त्याग करिने वनमां जईने भगवान
भज्या छे ॥ अने प्रल्हादे पण भगवान भजवा सारुं केटलीक कष्टि सहन करि छे ॥ अने ध्रुजीये भगवानने पामवा सारु केवुं
कठण तप कर्युं छे ॥ अने मोरध्वजे भगवानने प्रसन्न करवाने अर्थे माथे करवत मुकाव्युं हतुं ॥ ने हरिश्चंद्र राजाये पण भगवा-
वानने प्रसन्न करवाने अर्थे ॥ नीचने घेर येचाणा हता ॥ ए विरीते भगवानने पामवाने अर्थे घणाक भगवानना भक्तोये पोता-
ना राज्यनो ने देहना सुखनो ने जगतना माईक पदार्थनो त्याग करिने भगवान भजीने अभयपद जे भगवाननुं धाम तेने पा
मी गया छे ॥ मारे आज पण जे जे बुद्धिवाला भगवानना भक्त होवो ने जेने आ ने आ देहे करिने अक्षरधामने पामवुं होय ॥
तेने तो पोताना देहना सुखवोने जगतना पदार्थनो त्याग जकरवो ने निरवासनिक थईने एक मारे विषे अचलप्रीति
करवी ॥ अने जेणे एविरीते समजीने अमारे विषे प्रिति करि छे तेनुं तो साक्षात्कार कल्याण थई रह्युं छे ॥ तेने तो
काईकरवुं रह्युं नथी ॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥

॥ श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्॥१९॥ओगणिसें॥२३॥त्रेविसनाआसोवदि॥१२॥द्वादशीनेदि

वस महाराजश्रीहरिकृष्णभगवान गामश्रीसोजींत्रामध्ये ॥ भक्त वेदेचर दास लखमिदासनेघेर उमणावाइनाओरडानीआ
गलचोकमां गादि तकिये युक्तपलंग बिछावीनेतेउपरविराजमानथयाहता ॥ अनेसर्वे श्वेतवस्त्रधारणकर्यांहता॥ अने
मस्तकेकसुंबलतारा लोफेंटोबांध्योहतो॥ नेकंठने विषे गुलाबनापुष्पनाहारधारणकर्याहताने पोतानामुखारविंद
नीआगलसाधुतथां घणाक हरि भक्तनीसभाभराईनेबेठिहती॥ पछे महाराजपोतानीमेळे कृपाकरिने बोल्या
जे॥ जे अज्ञानीजीवछे तेजेते पूर्वे सत्पुरुष थई गयाछे तेना सिद्धांतने भुलिनेजीवजेते एक बिजानाधर्मने नंदे छे॥
नेएक बिजाथाइविवाद करेछे तेमांजे जैनमतवालाछे॥ ते श्रीकृष्णभगवाननी निंद्याकरेछे ॥ अने श्रीकृष्णभगवा
नतोकेवाछे तोसदायअनादिमायापरछे॥ नेअधमउधारणछेनेपतितपावनछेने भक्तवत्सलछे ॥ अने तेश्रीकृष्ण
भगवानने विषे व्रजनीस्त्रीयो पति भावे करिने जोडाणियो तो ते मायानेतरिने भगवाननाधामने पामिगईयो
नेवेदनीश्रुतियो केहे वाणियो॥ माटे एवाजे सर्वजगतनाकरताहरता भगवानश्रीकृष्ण तेनेजैनमतवाला अज्ञानी
छे॥तेएमकहेछेजे एतो त्रिजानर्क मां पड्याछे॥ अनेजे वैष्णवमतवालाछे तेजैनमतने नंदेछे।॥तथा केटलाकअ
ज्ञानीछे ते शिवनेनंदे छे ॥अने शैविछे ते विष्णुनेनंदे छे ने ब्रह्मज्ञानीछे तेविधिनिषधने खोटा कहे छे।॥तथा-
व्यासजीना भागवतादिकग्रंथने खोटां कहेछे॥ अनेउपासनावालाछे तेवेदांतने खोटुं कहे छे॥ तथाब्रह्म
ज्ञानने पण खोटुं कहे छे॥अने शंकराचार्य वाला छे तेरामानुजने नंदेछे॥ अनेरामानुजनाछे तेशंकराचार्यनामत
ने नंदेछे॥ अनेहिंदुछे तेमुसलमानने नंदेछे ॥नेमुसलमानछे ते हिंदुनेनींदेछे॥अनेतेमां कोईएकएमकहेछे
जे भगवानतो निराकारछे॥ने कोईकहेछेजे भगवानसाकारछे ॥ ने कोईकहेछे जे भगवान तेजना बिंबजेवाछे॥
ने कोईकहेछेजे भगवान सगुणछे॥ ने कोई कहे छे जे भगवान निरगुणछे ॥ ने कोई कहे छे जे भगवान करताछे॥

नेकोई कहेछेजे भगवान अकरताछे ॥ अनेकोई कहेछेजे अद्वैतमतसाचोछे॥ नेकोईकहेछे जेद्वैतमतसाचोछे ॥ नेकोई
कहेछेजे विशिष्टाद्वैतमतसाचोछे॥ नेकोईकहेछेजे शुद्धाद्वैतमतसाचोछे ॥ नेएविरीतसउसउनामननापोतपोताना
सत्पुरुषनाअंनरनासिंद्धांतनं॥ मूकिनेअत्ताने करिने सतपुरुषोना बांधेलाजे धर्मतेनी निंदाकरेछे॥ अनेतेनानिंदाये
करिनेजीवनीबुद्धि भ्रष्ट थईजायछे ॥ केमकसर्वेनाकारणने मोक्षनादाता एवाजे परमात्मा भगवान तेतो सर्वेनाएक
जछे॥ पण कांई एमतोनथीजे जेनमतना भगवान् जुदाछे॥ ने विष्णुमतवालानाभगवानजुदाछे ।नेशंकराचार्यना
मतवालाना भगवान जुदाछे ॥नेरामानुजनामतनाभगवान जुदाछे ॥ ने हिंदुनाभगवान जुदाछे॥ नेमुसलमानना भग
वानजुदाछे ॥एविरीते सर्वेनाजुदाजुदा तो भगवान् कांई जणातानथीअने सर्वे जीवप्राणीमात्रना भगवान तोएकज
जणायछे॥ केमकेसर्वेजीवनाजन्म पृथ्वादिकेकरिने सरखोज निभावथायछे॥ मारेजो सर्वेना नोखा नोखा भग
वानहोयतो ॥एकनीएक स्थिति सर्वेनी रहेतनहि ॥ तेसारु सर्वेना भगवानएकजछे ॥अनेते भगवान सर्वेने भजवापा
मवा उपासना करवानेसेववायोग्यछे॥अनेवलिजो सर्वेनानोखानोखा घणाक भगवानहोयतो ॥आजगतनि-
स्थिति एकरीतनीरहेतनहि॥ केमकेएक भगवानकहेशेहुं उत्पत्तिकरिश॥ ने बिजो भगवानकेहेशेहुं प्रलयकरि
श॥ नेवलिएक भगवान कहेशेजे हुं उनालो शियालो करिश। ।नेएक भगवानकहेशेजे हुंचोमासेउनालो करिश॥
नेएक भगवान केहेशेजे हुं दिवसनीरात्रिकरिश ॥ ने बिजो भगवान कहेशेजे रात्रिनो दिवस करिश ॥एविरीत्ये
जो घणाक भगवान होयतो परस्पर एक बिजानेलडाई थाय ॥ अनेआजगतनी एकरित्यनीस्थिति रहेत जनही॥
अनेआतोजुवोने सर्वजगतनी स्थिति येकरितनी बराबर रहेछे ।।पणतेमां रंचमात्र फेर पडतोनथी॥ केमके सर्वे क्रियाना
प्रवरतावनाराने सर्वेनाकारण एकज भगवानछे ।। अने तेज भगवानने मायानोआकार नथी॥ मारे वेदांतशास्त्र
भगवानने निराकार कहेछे॥ अने अक्षरधामने विषे दिव्यसाकार मूर्तिमान भगवान सदाय विराजमानछे॥

मारे योगशास्त्र भगवानने साकार कहेछे अने मायामांथी थयाएवा जे रजतमने सत्व त्रण गुणते भगवानने विषे नथी ॥ मारे निगुर्णकह्याछे ॥ अने भगवानने विषे अनंतकल्याणकारी गुण रह्याछे ॥ मारे भगवानने सगुण कह्याछे ॥ अने प्रकृतिपुरुष द्वाराए अनंत कोटि ब्रह्मांडनी उत्पत्ति स्थितिने प्रलय करावेछे । पण पोते नथी करता ॥ मारे भगवानने अकरता कह्याछे ॥ अनेए प्रकृतिपुरुष जे ते भगवाननि इच्छा विना कांई करवाने समर्थ नथी ॥ मारे भगवानने करता कह्याछे एविरीते सर्वे गुणनागुणीने सर्वे ने भजवा योग्य ने सर्वेने उपासना करवा योग्य एक ज भगवान् छे ॥ अने पूर्वे जे जे भगवानना अवतार थई गया अथवा सत्पुरुष थई गया तेणे पण वासनावाळा जीवोने पंचविषय थकि मुकावीने तेनां कल्याण करवा सारु नोखा नोखा धर्म बांध्याछे ॥ तेनो खा नोखा धर्म बांध्यानुं शुं कारण तो ज्यारे ज्यारे सत्पुरुष प्रगट थईने घणा क जिवोने ज्ञान आपिने पंचविषय थकि मुकावीने तेनो मोक्ष करिने पछे ते सत्पुरुष स्वधाममां जायछे ॥ त्यारे पछे तेना मत मां असतपुरुष प्रगट थाय छे ॥ केमके सतपुरुषना प्रतापे करिने घणा क मनुष्य तेने आशरे आव्या होय ॥ ने ते मनुष्य ते सतपुरुषनो महिमा जाणिने अन्न धन्य वस्त्रादि के करिने पूजा बहु करे ॥ ते सत्पुरुष तो मायापर होय ॥ ते पोते कोई पदार्थ मां बंधायनहिं ॥ ने पोताना आश्रितोने पण पोते प्रगट होय त्यांसुधि बंधावा दिये नहिं ॥ अने पछे तो पदार्थनो जोग थये कोई देव ब्रह्मादिक पण उगरवाने समर्थ नथी ॥ तो मनुष्यनी शी गणती ॥ जे पदार्थनो जोगथाय तेने लेवाय ॥ एतो लेवायज ॥ मारे पदार्थना जोगे करिने सतपुरुष गया केडे असतपुरुष जरुर थायछे ॥ ते असतपुरुष जे ते विषय विषे लोलुप थायछे ॥ ने विषयने भोगवे छे ॥ ने धर्मने भ्रष्ट करि नाखेछे ॥ पछे ते मतमां कल्याण थतुं नथी ॥ त्यारे भगवान जे ते जीवोना कल्याण करवाने अर्थे ॥ ने धर्मने शुद्ध करवाने अर्थे फरिने प्रगट थाय छे ॥ ने प्रगट थईने विषयनुं खंडन करेछे ॥ त्यारे मोरना पोतानाज धर्म ना हता ॥ पण ते तो पदार्थने जोगे करिने ॥ पंचविषयना बंधाणि थईगयाछे मारे ते तोते प्रत्यक्षने मानेज नहि ॥ केमके जो ते प्रत्यक्ष सतपुरुषने माने तो पोता-

ना विषयनुं खंडन करे॥ अने पोते तो ते विषयने जीवन प्राण मान्या होय ते मुकी सकाय नहिं ॥ माटे तेनो ते प्रत्यक्ष कल्याणकारी नो उलटो अतिशे द्रोह करे छे ॥ पछे ते सतपुरुषतो समरथ छे॥ माटे बिजा धर्मनुं स्थापन करे छे॥ ने अनंत बिजा जिवोनां कल्याण करे छे॥ पण जे मोर पोताना ज धर्मना हता तेनुं कल्याण थतुं नथी ॥ केम के घणा क पदार्थ ने मलवे करिने विषयना अतिशे रागी थई गया छे ॥ माटे तेणे करिने ते थकि प्रगट सतपुरुषनी आज्ञा मां रहेवानुं जन थी पछे तेने धर्म चालाने विषयना त्यागि तेनुं आचरण गमतुं नथी ॥ अने ते सत्पुरुषने प्रगट सत्पुरुषना शिष्य तेज्यारे विषयना खंडननी वात करे छे ॥ त्यारे ते विषयना रागीनि ते सतपुरुषना उपर एवी दाझ थाय जे तेनो नाश करि नाखुं एवो द्रोह करे छे॥ तो माने तो नाना॥ एतो न ज माने॥ माटे सतपुरुष जे ते बिजा धर्मनुं स्थापन करे छे॥ अने धर्म जे जे सतपुरुष बांधे छे॥ ते धर्म कांई खोटा नथी॥ एनो सतपुरुष गया केडे असत्पुरुषनां इंद्रियो अंतःकरण विषयने भोगववे करिने भ्रष्ट थई जाय छे॥ तेणे करिने पोते जेनुं भजन करता होय ॥ तेनो जे सिद्धांत ॥ ते पण समज्यामां आवे नहिं ॥ माटे पछे अज्ञाने करिने एक बिजाना मतने नंदे छे॥ ने साम सामा वादविवाद करे छे॥ ने एक बिजानो द्रोह करे छे॥ अने ते द्रोहे करिने पोतपोताना इष्टदेवना ज द्रोहना करनारा ते थाय छे अने ते जे जेनुं भजन करे छे॥ तेनो पण तेना उपर कोप थाय छे ॥ माटे जेने पोताना आत्मानुं कल्याण ईछवुं तेने मतपंथना मम तेक रिने कोई शुद्ध ज्ञानदाता सतपुरुष प्रगट थया होय॥ तेनो लगार पण द्रोह न करवो॥ ने तेने विषे प्रिति करिने तेनो समागम करवो॥ माटे आ समे सर्वेना कारण ने सर्वेने उपासना करवा जोग्य ने सर्वेने भजवा पूजवा सेववा योग्य ने सर्वेने मोक्षना दाता एवा जे सर्व अवतारना अवतारि भगवान ते आज प्रगट थया छे॥ माटे अमारे कोई मतपंथ नथि ॥ अने वलि सर्वे धर्म पण अमारा ज छे केम के सर्वे सतपुरुष सर्वोपरि जे भगवान तेने पामवा सारुं धर्मनुं स्थापन कर्युं छे॥ मारे सर्वे धर्म अमारा छे ॥ अने अमे जे नमननो सिद्धांत कहि देखाडिये छैये॥ तथा बे

मयनो सिद्धांत कहिदेखाडियेछिये ॥ तथारामानुजनोतथाशंकराचार्यनो तथावेदांतिनो ॥तथा हिंदु मुसलमानआ
दिक सर्वना सिद्धांतने कहिदेखाडियेछिये ॥अनेसर्वनेमोक्षनोमारग एकज प्रतिपादन करि आपियेछिये ॥ अने सर्वना
वाद विवाद तथा वढवाड अलसावियेछिये ॥केमकेज्ञानमांवढवाडनथी अने वढवाडतोअज्ञानने विषे रहि छे पण
ज्यां परिपूर्णज्ञान छे तेठेकाणे वढवाड नथी ॥ मारे आ समे तो आत्यंतिकज्ञाननी प्रवृत्तिछे ते जेने सांभलीने बाकि
तेने कांई समजवुं रहे तुं नथी ॥ मारे जेने पोताना आत्माना मोक्षनो खप होय नेजेदैवि ने मुमुक्षु जिव होय ॥ तेने अमारा
साथे बने छे ।ने तेने अमारीसाथे अतिशे प्रितिथायछे ॥नेतेनुंकल्याण पण थायछे ॥ अनेजेने मोक्षनो खप न होयनेजेअ
सुरिजीव होय ॥ तेनेअमारासाथे कोई काले बनेजनहि ॥ अनेतेनुंकल्याण पण कोईदाडो थायजनहि ॥ मारे आजेअ
मे वार्ताकरिछे तेने जेपूर्वापर चित्त दईने समजशे नेतेवातने विचारशे तेने मोक्षना मारगमांकोई विघन आवशे नहि ॥
अनेतेना अंतर मां ज्ञानरूपी प्रकाश थशे ॥अने तेज्ञान प्रकाशेकरिने तेनेअमारा स्वरूपनो निश्चयथशे ॥ नेतेने पंचवि
षयनीवासनाटलिजशे ॥ नेतेनेजन्ममरणनादुःखटलिने परमशान्तिथशे ॥ मारे आवार्ताने सर्वे संभारीराखजो ॥
॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः ॥
॥ ॥संवत ॥१९॥ओगणिसें ॥२३॥नेविसना आसोवदि ॥१३॥तेरशने दिवस महाराज श्रीहरिकृ
ष्ण भगवान गामश्री सोजींत्रामध्ये पटेल भक्त नरसिंभाई द्वारकांदासने घेर उत्तरादे बार ओरडानी ओसरिमां गादि
तकिये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता ॥ अने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ने गुलाब नें चंपाना पु
ष्पना आभूषण धारण कर्यां हतां ॥नेपाघमां केवडानो डोडो धारण कर्यो हतो ॥ ने ललाटने विषे केसरनी अरचाने
कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ नेपोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि ह
ति ॥ नेसंतकिरतन बोलता हता ॥पछे महाराज बोल्याजे किरतनराखो ।ने अमे एक वार्ता करियछिये ॥ तेने सु

रत्यदेईने सांभलजो जे जेम कोईक शस्त्र तरवार कादिने मारवा सारुं आवतो होय त्यारे तेना जीवने केवो भय लागे छे ॥
ने तेथकि भागि जवाय छे ॥ तेम पंच विषय छे ते जीवना महाशत्रु छे ॥ केमके विषयनी वासनाये करिने ॥ तथा विषयने भो
गववे करिने जिव जे ते कोटि कोटि फेरा जन्म मृत्युंने पाम्यो छे ॥ ने महादुःखने भोगवे छे ॥ पण तेशत्रुनी जीवने खबर न-
थी ॥ केमके बिजो बहारनो शत्रु होयत्ते तो एकवार माथुं कापे छे ॥ पण बिजे जन्मे ते शत्रु माथुं कापवा आवि शकतो नथी ॥
तो पण तेना केवो भय राखे छे ॥ ने तेना लागमां आवतो नथी तेम पंच विषय छे ॥ तेणे तो जीवने अनंतफेरा मार्यो छे ॥
ने वलि मारवाने तईयार थई रह्यो छे ॥ ते जो विषयने जीव शत्रु जाणे तो तेथकि ततकाल भागवुं जोईये पण ते जीवे
विषयने शत्रु जाण्या नथी ॥ ने भागतो पण नथी ॥ माटे ते जीव अज्ञानी छे ने गाफल छे ॥ ते विषयनो संग राखे छे ॥ अ
नेते विषय तो केवा छे ॥ तो एक विषयनो संग करे तेना प्राणने तत्काल नाश करे ॥ एवा बलवान छे ॥ तो जेने पंच वि
षयनो संबंध होय ॥ तेना तो अतिशे भुंडा ज हाल थाय छे ॥ केमके मृगलाने एक शब्दनो विषय छे ॥ तो तेने पारधि
घंटा वलवगाडे छे ॥ त्यारे ते शब्दमां मोह पामिने मृगलां पारधिनी पासे आवे छे ॥ पछे तेने पारधि जे ते तिर बंधु
के करिने मारि नाखे छे ॥ माटे एक शब्दने विषये करिने मृगलां जे ते प्राणने खुवे छे ॥ अने हाथिने स्पर्शनो एक वि
षय छे ॥ तो तेने कागलनी हाथणी देखाडे छे ॥ त्यारे तेमां मोह पामीने स्पर्श करवा जाय छे ॥ पछे पारधिये अजडिसो
द्रि मुकि होय तेमां पडिने प्राणने खुवे छे ॥ ने ते खाईमां राशो नाखीनाखीने जीव जाय छे ॥ अने पतंगियाने जो रूपनो
एक विषय छे ॥ तो ते अग्निमां पडिने बलि मरे छे ॥ अने माछलाने जो रसनो एक विषय छे ॥ तो तेने हिमर घउंनी
कणिक लोढाना आंकडियामां चोटाडिने पाणिमां नाखे छे ॥ त्यारे माछलां जे ते रसनी आशक्तिये करिने ते कणि
कने खावा जाय छे ॥ पछे ते लोढाना आकडीया गलामां सोसरा निसरि जाय छे ॥ ने तेना प्राणने खोवे छे ॥ अने भ
मराने जो एक गंधनो विषय छे तो ते भमरो जे ते गंध लेवा सारुं कमलना पुष्पमां पेसे छे ॥ पछे ते कमल बिडाई-

जाय छे॥ त्यारे तेमां भमरो जे ते मुझाईने मृत्युने पामे छे ॥ एवी रीते ए पांचेने एक एक विषयनी आशक्ति छे॥ तो ते भुंडे हाले मृत्युने पामे छे ॥ तो जने पांचे विषयनी आशक्ति होय ॥ तेना तो शा हाल थाय ॥ ए नो अतिशे महा कष्टने जे पामे ने तेने तो कांइ चिंबास्युं नाख तां पण ते कष्ट नो पार आवशे नहिं ॥ माटे जेने महा सुखियाथवुं होय ॥ तेने तो जीवना अनादि कालना महाशत्रु जे पंचविषय॥ तेनो देहे करिने त्याग करवो ॥ अने अंतरमां जेने पंचविषयना राग होय ॥ तेने टालवाने अर्थे आत्माने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान सिद्ध करवुं ॥ अने ज्यारे आत्माने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान साक्षात्कार थाय छे ॥ त्यारे अंतरमां थी पंचविषयनी वासना टलि जाय छे॥ ने जन्म मृत्यु थकि मुकाईने महासुखने पामे॥ ने ते जिव मोक्षने पामे छे ॥ हवे ते आत्माने परमात्माना स्वरुपनुं ज्ञान केम थाय ॥ तो ज्यारे आत्माना आत्मा एवा जे परमात्मा भगवान ते ज्यारे कृपा करिने जीवने प्रत्यक्ष मले ॥ अने कां ते परमात्माना एकांतिक पंचविषयना त्यागि संत ते मले ॥ लो ते जिवने ज्ञान करावे त्यारे आत्माने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे ॥ अने ज्यारे ज्ञान जिवोने थाय छे त्यारे सर्वे इंद्रियो अंतःकरणनी वृत्तियो भगवानना स्वरुपमां जोडाई जाय छे ॥ अने ते आत्मा परमशान्तिने पामे छे ॥ ने पांच विषयना राग टलिने अक्षर ब्रह्मरुप मुक्त थाय छे ॥ मारे मुक्त थवानो समो आज तमारे आव्यो छे ॥ केमके पोताने मनुष्यनो देह ने भगवानने भगवानना संतनुं प्रगटपणुं ॥ एतो घणाक जन्मनां महासुकृत्य होय त्यारे तेनो जोग बने छे ॥ माटे एवो महा दुर्लभ लाभ जाणिने अमारा जे आश्रित होय तेने पंचविषयने महाशत्रु जाणिने त्याग करवा॥ अने ज्यां विषयनो बहु जोग होय त्यांथी भागी छुटजो ॥ ए अमारी आज्ञा छे॥ ते जे अमारा होय ते पालजो ॥ अने ए आज्ञा पालशे तेने ने अमारे अखंड संबंध रहेशे॥ अने जे ते आज्ञा न हिं पाले तेने ने अमारे घणुं छेटुं थशे ॥ अने ते महादुःखने पामशे ॥ माटे जेने महासुखिया थवुं होय तेने पंचविषयनो त्याग करिने पंचविषयना त्यागि एवा जे संत तेना समागममां रहिने मारी भक्ती करवी ॥ ए सर्वे जिवनी हित वार्ता छे ॥

॥ इति श्री मुख्य सिद्धांत समाप्तः॥ ॥

श्री हरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्॥१९॥ ओगणिसें॥२३॥ त्रेविसना आसो वदि॥१४॥ चौद
सने दिवस॥ महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्रीसोजित्रा मध्ये व्यास कुबेरजीनी बेन बाईजानकबानेघेर उग-
मणाबारना ओरडानी आगळ गादितकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता॥ ने सर्वे जरियानी
वस्त्र धारण कर्यां हतां॥ ने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभि रह्यां हतां॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु
तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति॥ ने संध्या आर्ति थयां पछे॥ महाराज कृपाकरिने बोल्याजे
भगवाननी मूर्तिने विषे अहंकार नथी॥ अने ते भगवान वीना बिजा सर्वेने विषे अहंकार रह्यो छे॥ ने अहंकार छे एज
माया छे ने जन्ममरणनुं कारण छे॥ अने अहंकार जेने टले छे ते मुक्त थाय छे॥ ते अहंकार क्यारे टले छे तो निरअं-
हंकारि एवा जे परमात्मा ने तेना एकांतिक संत तेने विषे जीव जोडाय छे॥ त्यारे तेनो अहंकार टळि जाय छे॥ पण प्र-
त्यक्ष परमात्मा ने तेना संतने विषे जोडाणा विना बिजा कोटि साधन करे॥ तोय अहंकार टले नहि॥ अने प्रत्यक्ष
परमात्मा ने तेना संत मल्या विना तो जेमजेम साधन करतो जाय छे तेमतेम अहंकार वधतो जाय छे॥ ते जीव साधने क
रिने जेमजेम मोटप्यने पामे छे तेमतेम तेनो अहंकार वधतो जाय छे॥ ते जेम व्यक्तिना करतां राजाने अहंकार वधारे हो
य छे॥ ने राजाना करतां देवताने अहंकार वधारे होय छे॥ ने देवताना करतां ब्रह्माने अहंकार वधारे होय छे॥ ने ब्रह्माना क
रतां वैराटने अहंकार वधारे होय छे॥ ने वैराटना करतां प्रधानपुरुषने अहंकार वधारे होय छे॥ ने प्रधानपुरुषना करतां
मूळप्रकृतिपुरुषने वधारे अहंकार होय छे॥ अने मूळप्रकृतिपुरुषना करतां तुरियापदने पाम्यो एवो जे आत्मनिष्ठ पुरु-
ष तेने वधारे अहंकार होय छे॥ अने जेने जेटलो अहंकार छे॥ ते टलुं तेने बंधन छे॥ ते बंधन थकि कोई पोतानी मेळे
छुटवाने समर्थ नथी॥ अने अहंकार टल्या विना जन्ममरण टळिने अक्षरधामने पमातुं नथी॥ माटे जेने अहंकार टा
ळीने अक्षरधामने पामवुं होय॥ तेने शुद्ध ज्ञानदाता एवा जे परमात्मा ने तेना संत ते प्रत्यक्ष पृथ्वी उपर होय तेनो आ

श्रय करिने तेनी आज्ञामां वरतवुं ॥ एज अहंकाररुपि महामायाने टलवानो उपाय छे ॥ पण प्रगट भगवानने संतना आश्रय
विना बिजां कोटि साधन करे तोपण ते अहंकाररुपि माया टले नहिं ॥ ते उपर गीतानो श्लोक ॥ ॥ दैवि ह्येषा गुणमयि
मम माया दुरत्यया ॥ मामेव ये प्रपद्यंते ॥ मायामेतां तरंति ते ॥ ॥ अर्थ ॥ ॥ श्रीकृष्ण भगवाने कह्युं के ॥
दैवि ने गुणमयि एवि जे मारी माया ॥ के हे तां मारा स्वरूपने जिव नथी जाणतो ते रुप मारी माया तेमुने जाण्यां विना
दुःखे करिने तराय नहिं ॥ ने मुने पामे तो ते ततकाल मायाने तरि जाय ॥ माटे प्रगट भगवानने भगवानना संतनो
आश्रय करवो एज एक अहंकाररुपि मायाने तरवानो उपाय छे ॥ माटे ते मायाने तरवानो समो आज तमारे आव्यो
छे ॥ ते तमारा भाग्यनो पार नथी केमके ते समो जिवने मलवो घणो दुर्लभ छे ॥ ॥
इति श्रीमुख सिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्रीहरि कृष्णाय नमो नमः ॥ ॥
संवत् ॥ १९ ॥ ओगणिसें ॥ २३ ॥ त्रेविसना आसो वदि ॥ ३० ॥ अमांसने दियस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री
सोजींत्रामध्ये पटेल भक्त मथुरभाई कालिदासने घेर दक्षणादे बार ओरडानी ओसरिमां संध्याआर्तिसमे गादितकिये
युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता ॥ ने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ ने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभि
रह्यां हतां ॥ ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भरा
ईने बेठि हति ॥ पछे महाराजे सर्वे साधु तथा हरिभक्तने प्रश्न पुछ्युं जे आ लोकमांनो सर्वे मनुष्य तथा चोरासि लक्ष
योनियो छे ॥ ते सर्वेना आकार देखाय छे ॥ पण जे भगवानना धाममां जाय छे तेनो केवो आकार हशे ने ते साकारपणे रे
हेता हशे ॥ के निराकारपणे रहेता हशे ॥ ते कहो ॥ पछे तेनो उत्तर कोणेय थयो नहिं त्यारे महाराज बोल्या जे एनो उत्तर
अमे करिये छिये जे जे भक्त भगवानना धाममां जाय छे ॥ ते भगवानना साधर्मपणाने पामिने जेवा भगवान दिव्यमूर्तिमान
छे ॥ ते वो ते भक्त दिव्यमूर्तिमान थको भगवानने विषे अद्वैतपणाने पामिने भगवाननी उपासना करे छे ॥ अने भगवान

ने विषे अद्वैतथया विना तो भगवानना धाममां जवातुं जनेथी॥ अने चारवेदमां तथा छशास्त्रमां तथा अढारपुराणमां एसर्वेमां
एम कह्युं छे जे परमात्माने विषे अद्वैतथईने परमात्मानी उपासना करवी एजमुक्ति छे॥ एमप्रतिपादन कर्युं छे॥ नेशं-
करस्वामिये पण केवलअद्वैतनुं प्रतिपादन कर्युं छे॥ ने रामानुजे विशिष्टाद्वैतनु प्रतिपादन कर्युं छे ने वल्लभाचार्ये
शुधाद्वैतनुं प्रतिपादन कर्युं छे॥ नेमधवाचार्ये द्वैताद्वैतनुं प्रतिपादन कर्युं छे॥ माटे सर्वेनो एजमत्त छे जे परमात्माने वि
षे अद्वैत पणाने पामिने परमात्मानी उपासना करवी॥ एज मुक्ति छे॥ पणज्यां सुधि परमात्माने विषे द्वैतभाव होय त्यां
सुधि आत्यंतिक मोक्ष जे परमात्मानुं अक्षर धाम तेने पमाय नहि॥ माटे भगवाननो भक्त भगवान रूप थईने केहे तां भ
गवान जेवा सर्वे दोषे रहित छे तेवो निर्दोषथईने भगवान ने भजे छे॥ नेजेवा प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक मूर्तिमान भगवा
न छे॥ तेवा ने तेवा अनंत कोटि मुक्ते विंटाणा थका अक्षरधाममां भगवान रहे छे॥ ने सर्वे मुक्त भगवाननी मूर्त्तिसा
मुं जोईरहे छे॥ नेअपार सुखने पांमे छे॥ ते सुखनुं वरणन थाय एम नथी एवुं अपरमित सुख छे॥ माटे जे जे परमात्मा
ने विषे अद्वैतपणे जोडाय छे॥ तेज ते सुखने पामे छे॥ ते वेदमां पण कह्युं छे जे॥ ॥देवो भुत्वा देवान् भजेत्॥ ॥
अर्थ॥ ॥जे देवरूप थईने देवने भजवा कहे तां देव जे परमात्मा तेजे वावासनाये रहित ब्रह्मरुप थईने परमात्माने
भजवा माटे परमात्मारुप थईने परमात्माने विषे जोडाय छे॥ त्यारे ते भक्तनो भगवानना सरखो दिव्य आकार बंधा
य छे॥ ने भगवानना ध्याने करिने जे आकार बंधाणो छे ते तेनी जउपासना करे छे॥ पण ते विना तेरहि सकतो नथी॥
जेम परमेश्वरने न जाणता एवा जे अज्ञानी जीवो तेणे अज्ञान रूपी जे माया ते माया रुप थईने मायानुं ध्यान कर्युं तो ते
जीवने मायानो आकार बंधाणो छे ने ते मायापीजा वछे ता नो रवो॥ पण मायाने विषे अद्वैतपणाने पामी गयो छे॥ ते
देहथी नोखो छे॥ तो पण जे देहमां जिव पोते रहे तो होय ते देहने कहे छे जे आ देह ते हुं छुं॥ ने देहनां सगां ते मारां सगां छे
ने देहनी जात ते मारि जात छे॥ एम देहने पोतानुं रुप मानीने जेने ध्याने करिने देह बंधाणो छे॥ एवी जे माया ते मायानी

उपासना करे छे ।। ने मायाना पदार्थने पामवा सारुं अनंत उपाय कर्या करे छे ।। ने ते विना क्षण मात्र पण जीवर हि शकतो न-
थी ।। केमके ते मायाने विषे अद्वैतपणे जोडावे करिने ते मायानो देह बंधाईने मायारुप थई गयो छे ।। माटे मायाना पदार्थने भ
जे छे ने मायाना पदार्थने भजे छे त्यारे ज तेने मायानो अखंड संबंध रहे छे ।। ने जो मायाना पदार्थनो त्याग करे तो तेने मा-
याने विषे एकता भाव छे ते टलि जाय ने परमात्मा विना सर्वे मायाना पदार्थ मात्र नो अभाव करिने प्रत्यक्ष भगवाननी मु-
र्तिने विषे जोडाय तो तेने भगवानना सरख्यो आकार बंधाय छे ।। ने तेने भगवाननी मूर्ति विना बिजे क्यांई वृत्ति जाय नहिं
ने अखंड ते भगवाननी उपासना कर्या करे छे ।। अने जे प्रत्यक्ष परमात्माने विषे दृढ उपासनाये करिने नथी जोडाई जतो
तेने मायानो आकार कोई काले टलतो नथी ।। माटे मायानो अभाव करिने प्रत्यक्ष परमात्माने विषे जोडाय छे ।। तेनो भग
वानना सरखो दिव्याकार बंधाय छे ।। ने ते दिव्याकारने पामिने मूर्तिमान थका अनंत कोटि मूक्त ते अखंड भगवाननी
उपासना कर्या करे छे ।। पण ते उपासनानो त्याग करता नथी ने उपासनानो त्याग कोई काले थतो पण नथी ।। ए सिद्धांत
वार्ता छे ।। माटे जे ने अविनासि मोक्ष सुखने पामवुं होय ।। तेने माईक पंच विषयनो त्याग करिने पोताने अखंड अविना-
सि आत्मा मानिने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना एकांतिक निरवासनीक पंचविषयना त्यागि धर्मानंद स्वामि जेवा
संत तेने विषे प्रितिये करिने जोडाई जवुं ने तेनी आज्ञा मां वर्तवुं ।। अने जे पंच विषयनो त्याग करिने भगवानने भगवा-
नना संतने विषे प्रिति करे छे ।। तेनी भागवती तनुं बंधाय छे ।। ने ते अक्षरधामने पामशे ।। ॥
इति श्री सुखसिद्धांत समाप्तः ।। ।। श्री हरि कृष्णाय नमो नमः ।। ॥
संवत् ।। १९ ।। ओगणिसें ।। २३ ।। त्रेविसना कारतग शुदि ।। ८ ।। अष्टमिने दिवस महाराज श्री हरि कृष्ण भगवानगा-
म श्री खंबात मध्ये ।। महादेव श्री हटकेश्वर महादेवनी धर्मशाला मां पाट उपर गादि तकिये युक्त ढोलीया उपर वि-
राजमान थया हता ने किनखाबनो सुरवाल पेहेर्यो हतो ।। ने सोनेरि जरपटानी डगली धारण करि हति ।। ने मस्तक

उपर कसुंबल सोनेरि मोटि पाघ धारण करि हति॥ ने कंठमां पुष्पना घणा क हारलीभिरह्या हता॥ ने कंकुनो चांदलो कर्यो
हतो ॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा कह रि भक्तनी मोटि सभा भराईने बेठि हती॥ पछे महाराजनी
संध्या आरति थया पछे कृपा दृष्टि करिने महाराजश्री हरि कृष्ण परमात्मा बोल्याजे सर्वे सांभलो ॥ आज एक वार्ता
करीशुं तेनेजे समजशो तेने पछे कांई समजवानुं बाकि रहेशे नहिं॥ अनेते वात परानेपार कहेवाशे ॥ पण तेवा
त समजवामां अति दोह्यलि छे ॥ अनेते प्रमाणे चालवुं नेपालवुं तेपण सुगम छे ॥ अने पूर्वे जे जे मुक्त थई गयां छे ते
पण आ वातकरस्युं तेने समजवे करिनेज थया छे॥ पण ए वात समज्या विना कोई मुक्त थयो नथी ने थशे पण नहिं॥ अ
ने ते वातने विषे चार वेदने छ शास्त्रनो सिद्धांत कहेवाशे ॥ पण शास्त्रनाजे मर्म छे ते मायापरए वाजे परमात्मा ने तेना
संत तेना समागम विना पोतानी मेले कोई देव ब्रह्मादिकने पण समजतां नथी ॥ अने प्रत्यक्ष सत्पुरुषना समागम वि
ना तो वेद शास्त्र उलटा अवला पडे छे ॥ माटे जीवना मोक्षने अर्थे सत्पुरुषनुं जरुर काम पडे छे ॥ हवे वेद शास्त्रमां जे मर्म
छे॥ तेने कहुं छुं। जे वेद शास्त्रने विषे एम कह्युं छे जे बार दृष्टिनो त्याग करिने अंतर दृष्टि करे ते आत्मानो मोक्ष थाय छे
ते अंतर दृष्टि ते शुं ने बार दृष्टि ते शुं तो प्रकृतिपुरुष थकि उत्पन्न थयुं एवुं जे पिंड ब्रह्मांडादिक नामरुप तेने विषे जे वा-
सनायेकरिने प्रिति करवि तेनुं नाम बहार दृष्टि छे॥ अने ते मायिक नामरुपनुं निराकरण करिने कहेतां नामरुप पिंड ब्रह्मां
डने मिथ्या जाणि ने तेनी वासनानो त्याग करिने ते पिंड ब्रह्मांडथी जुदो एवोजे आत्मा तेने पोतानुं स्वरुप जाणिने ते आत्माना
आत्मा एवाजे परमात्मा तेनुं आत्मामां ध्यान करवुं तेनुं नाम अंतर दृष्टि छे ॥ एम वेद शास्त्रमां कह्युं छे तेने सतपुरुष-
ना समागम विना पोतानी मेले शास्त्रमांथी सांभलीने बार दृष्टि रुप जे मायानां नामरुप तेनो त्याग करवा जाय छे॥ ते भे
गु मायापर ने आत्माने विषे रहेवावाला एवाजे रामकृष्णादिक भगवान परमात्मा तेनी मूर्ति तेनो पण त्याग करे छे पछे
अंतर दृष्टि करवा माटे आंख्यो मिचिने ॥ पोताना हैया सामुं उधुं घालि रहे छे॥ ने तेमनमां एम जाणे छे जे॥ आमे अंतर

दृष्टि करियेछैये ॥ अनेतेणे करीनेअमारी मुक्ति थशे ॥ पण ते तो केवल बार दृष्टिछे ॥ अने तेना तो आत्मानुं अतिशे भुंडुं था
यछे ॥ केमके प्रकृतिपुरुषथकि उत्पंन थया एवाजे मायाना आकारना मरुप तेनोत्याग करयो करे तो माईक नामरुपनेमि
थ्याजाणवुं ॥ एतो ठिकपण तेभेगुप्रकृति पुरुषथा परएवुंजे आत्मानुं व्यतिक स्वरु अक्षर ब्रह्म अने एअक्षर ब्रह्मना आधार
ने अक्षर ब्रह्म मां अखंड रहेनाराएवाजेपरमात्मा परब्रह्म प्रत्यक्षरामकृष्णादिकनीमूर्ति तेने विषेमिथ्याजाणीने तेनोत्या
गकरेछे ॥ एमोटुं पापछे ॥ केमके ते तो मायापर रह्याथका पोतानी इच्छायेकरिने जीवोने पोतानांस्वरुपनुं ज्ञानकराथि
नेतेने ब्रह्मरुप करवाने अर्थे रामकृष्णादिक मनुष्यस्वरुपनुं धारणकरेछे तेमूर्तिनुं तोध्यान भजननेसेवाकरवितेनुं
नामअंतरदृष्टिछे ॥ एमवेदनाआशमांतो कह्युंछे ॥ तेपोतानीमेले मायानोनाम रुपमिथ्या जाणिने त्यागकरवाजा
यछे ॥ तेभेगी मायापरप्रत्यक्ष भगवाननीमूर्ति तेनेपण मिथ्याजाणिनेत्यागकरेछे ॥ एमोटुंपापछे ॥ मारेतेतोमायानो
त्यागकरिनेएक जोयनमां रहेतोहोय तोपणतेनीतो बहार दृष्टि छे ॥ अने तेतो ध्यानकरेछे ॥ त्यारेहैयामां केवलअं
धारुं घोर देखाय छे ॥ पणतेनेकोईदहाडे पतंगियाजेटलोपण प्रकाशदेखातो नथी ॥ अने तेने कल्याणनो मारग
पण सुझतो नथी ॥ केमके कल्याणना मारगनाबतावनारा एवाजे प्रगट भगवान तेनोतो त्यागकरेछे ॥ मारेएमसमज-
नारा केवल बारदृष्टिवालाछे ॥ नेभूलापड्याछे ॥ जेमकोईक पुरुषनी गायने घी थोडुं कथतुं हतुं ॥ पछे तेणे कोईकने
पुछ्युंके ॥ मारि गायने घीवधारे थाय तेनो कोई उपाय हशे ॥ त्यारे तेपुरुषे कह्युंके ते गायने आठ दिवस सुधि अदशेर
अदशेर घी नित्ये पायते तारी गायनेघीवधारेथाय ॥ पछे ते गायने धणिये पोतानीमेले एमविचार कर्योजे ते गायशे
ज अदशेर घीकरेछे ॥ मारे आर दिवससुधिगायने दोईनहि ॥ पछेनवमेदिवस गायने दोवागयो पण गायनाआंचल
मांतो दुधसुकाई गयुंतेदुध मुदल टिपुंय निसर्युं नहि ने अदशेर घी थतुं हतुं न पण उलटुं नाख्युं पाथ्युं ॥ पछे पेलाब-
तावनारापुरुषने तेणे कह्युंके मारीगायने तो तेंकह्युं दिवससुधि त्यारे तेणे कह्युंके में कह्युं हतुं ते प्रमाणे ते गायनेघि

पायुं त्यारे तेणे कह्युं के ह्रामारी गाय गोज अरबोर घी काती हती माटे में आठ दिवस सुधि गायने दोई नहि। माटे गायना पेटमां घी
रह्युं के नहिं ॥ एवि रीते में तो कर्युं ॥ पछे तेणे कह्युं के एतो तें अवलो उपाय कर्यो ॥ माटे गाय वसूकि गई ॥ अने घी तो तेनुं ते
पण तें घीने बहारथी नाखे करिने पायुं होत तो तारी गायने घी वधारे थात ॥ माटे अवले उपाये जेम गाय वसूकि गई तेम
शास्त्र कह्युं के आत्माना मोक्षने अर्थे बहार दृष्टिरूप जे मायाना पदार्थ तेनो त्याग करिने कहेतां माईक पदार्थ ने विषे आस
क्तिरूप जे बहार दृष्टि तेनो त्याग करिने आत्माने विषे रहेवावाला एवा जे रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवान नी मूर्ति तेनुं ॥
आत्मामां ध्यान करवुं तेनुं नाम अंतर दृष्टि छे ॥ एम वेद शास्त्रमां कह्युं ॥ पछे ते मर्मने जाण्या विना पोतानी मेले एम समजे
जे बहार जे जे देखाय छे ते सर्वे मिथ्या छे ॥ अने आत्मामां जे देखाय ते सत्य छे एम जाणिने मायानां पदार्थ नाम रूप तेनो त्या
ग करे छे ॥ ते भेगां प्रत्यक्ष भगवानना अवतार रामकृष्णादिक तेनो पण त्याग करे छे ॥ एमोटुं पाप छे ॥ अने एम समज
नारा जमपुरिना अधिकारी छे ॥ केमके क्षर अक्षरथी पर एवा जे परमात्मा परब्रह्म ते ज प्रत्यक्ष रामकृष्णादिकनी मूर्त्ति
यो छे माटे तेनो जे त्याग करे छे। ते तो महापापि छे अने तेने तो असुर जाणवा ॥ ने तेनुं कल्याण कोई काले थवुं नथी॥
केमके जेने पामवे करिने मुक्ति थाय एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेनो त्याग करे छे ए पाप छे जेम ठाकोरजीना मंदिरमां झाडु
काढवा जाय ते झाडु भेगा ठाकोरजीनी मूर्तिने काढी नाखे ते केवो मूरख कहेवाय ॥ तेम परमात्माना मंदिर रूपि जे आ
त्मा तेने विषे झाडु रूप जे माईक पदार्थनी वासना ते वासनानो त्याग करवाने अर्थे शास्त्रे कह्युं के नामरूपने मिथ्या जाणि
ने तेनो त्याग करवो एम सत्पुरुषे शास्त्रमां लख्युं छे ॥ ते शास्त्रने सांभलिने माईक पदार्थनो निषेध करवा जाय छे ॥
ते भेगुं प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनो पण निषेध करे छे ॥ एमोटुं पाप छे ॥ माटे सत्पुरुषना मुख थकि समजे त्यारे शास्त्रमां
कह्या प्रमाणे अंतर दृष्टिने बार दृष्टिनी खबर पडे छे ॥ माटे केम समजे तेनुं नाम अंतर दृष्टि छे ने केनुं नाम बहार दृष्टि
छे ॥ तेने कहे छे जे कांने करिने माईक जगतना शब्द सांभलवा ते सर्वे बहार दृष्टि छे ॥ अने ते दृष्टि पापरूप छे ॥ अने ए

बाहार दृष्टिरुपजे जगतना जीवोना बधा शब्दो तेने मिथ्याने पापरुप जाणिने तेनो त्याग करिने पछे माया पर एवा जे ज्ञानदाता प्रत्यक्ष भगवान तेना मुखना शब्दो तेने प्रितिये करिने एकाग्रह थईने पोताना कानमां भरवा केहेतां प्रगट भगवान जेजे शब्द बोले तेने प्रितिये सहित सांभलवा तेनुं नाम अंतर दृष्टि छे ॥ अने आंखे करिने माईक आकार जे पिंड ब्रह्मांडादिकना आकारने देखवा तेनुंनाम बहार दृष्टि छे ॥ नेते दृष्टि पाप रुप छे ॥ माटे ते माईक पिंड ब्रह्मांडादिकना आकारने मिथ्याने पाप रुप जाणिने तेनो त्याग करिने सुषप्रवृत्ति करिने पछे प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्त्तिने आंखे करिने तदाकार पणे जोई रहे धुं कहेतां एकाग्रह वृत्तिये करिने प्रगट भगवाननी मूर्त्तिनुं दर्शन करवुं तेनुं नाम अंतर दृष्टि छे ॥ अने जिव्हाए करिने माईक खटरसादिक रस खावा तेनुंनाम बाह्य दृष्टि छे ने ते पापरूप छे॥ माटे ते बधा रसनो त्याग करिने तेनो अभाव आणिने पछे प्रत्यक्ष भगवानना थाळनी प्रसादिनो रस तेने प्रितिये करिने जमवो तेनुंनाम अंतर दृष्टि छे॥ अने त्वचाये करिने स्त्रियादिक माईक पदार्थना स्पर्श करवा तेनुंनाम बहार दृष्टि छे ने ते दृष्टि पापरूप ने नर्कमां जीवने नाखनारि छे॥ अने ए सर्वे स्त्रियादिक माईक पदार्थना स्पर्शनो अभाव आणिने तेनो त्याग करिने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्त्तिनो प्रितिये करिने स्पर्श करवो तेनुं नाम अंतर दृष्टि छे ॥ अने नासिकाये करिने माईक पदार्थ जे अत्तर तेल फूलेलादिकनो सुगंध ॥ लेवो तेनुंनाम बहार दृष्टि छे ने ते दृष्टि पाप रुप छे ॥ अने ते माईक सुगंधनो त्याग करिने तेनो अभाव आणिने पछे प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने चड्यां जे चंदन पुष्पादिक तेनो प्रितीये करिने सुगंध लेवो ने तेमां प्रिति जोडि देवी ॥ तेनुंना अंतर दृष्टि छे॥ अने वाणिये करिने जगतवेहेवार संबंधि जे बोलवुं ते सर्वे बाहार दृष्टि छे ॥ नेते दृष्टि पाप रुप छे ॥ अने जगतवेवार संबंधी बोलवानो त्याग करिने पछे प्रत्यक्ष भगवानना वाणिये करिने गुण गावा तेनुंनाम अंतर दृष्टि छे ॥ अने हाथे करिने जगतवेवार संबंधि जे लेवादेवानी क्रिया करवी तेनुंनाम बहार दृष्टि छे ॥ अने ते जगतवेहेवारना लेवादेवानी क्रियानो त्याग करिने पछे प्रत्यक्ष भगवानने प्रत्यक्ष भगवानना भक्त तेनी सेवा हाथे करिने करवी तेनुंनाम अंतर दृष्टि छे॥ अंतर

दृष्टि एटले ब्रह्मदृष्टि ॥ ब्रह्मदृष्टि एटले परमात्माने देखवानी दृष्टि तेनुं नाम अंतरदृष्टि कहेवाय छे ॥ अने पंग करिने माईक पदार्थने पामवा सारुं जवुं तेनुं नाम बहारदृष्टि छे ॥ बाहारदृष्टि एटले मिथ्या त्रो टि दृष्टि खोटी एटले झांझवानां जल स्वप्ननुं सुख हुं ते मकांईन दृी तेनुं नाम बहार दृष्टि छे ॥ माटे ते बहारदृष्टिमां कोईने तृप्ति थती नथी ॥ माटे ते माईक पदार्थने पामवा सारुं जवा आववानो त्याग करिने पछे प्रत्यक्ष भगवानने प्रत्यक्ष भगवानना संतने दरशने चालिने जवुं आववुं तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे अने मने करिने माईक पंचविषयने पामवाना संकल्प करवा तेनुं नाम बहारदृष्टि छे ॥ अने मनमांथी माईक पदार्थने पामवाना संकल्पनो त्याग करिने पछे प्रत्यक्ष भगवानने प्रसन्न करवाना संकल्प करवा तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे ॥ अने बुद्धिये करिने माईक पंचविषयनां पदार्थनो निश्चय करवो तेनुं नाम बहारदृष्टि छे ॥ अने ते बुद्धिमांथी माईक पदार्थना निश्चयनो त्याग करिने पछे प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो बुद्धिये करिने निश्चय करवो तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे ॥ अने चित्ते करिने माईक पंचविषयनुं चिंतवन थाय छे तेनुं नाम बाहारदृष्टि छे ॥ ते माईक पंचविषयना चिंतवननो त्याग करिने पछे प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनुं चित्ते करिने चिंतवन करवुं तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे ॥ अने हंकारे करिने नातजात्य वर्णाश्रमादिकनुं अभिमान धरवुं तेनुं नाम बाह्यदृष्टि छे ॥ अने ते अभिमाननो त्याग करिने पछे प्रत्यक्ष भगवानना दासत्वपणानुं अभिमान धर्युं तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे ॥ एवि रीते बाहारदृष्टिने अंतरदृष्टिने जाणिने बाहारदृष्टिनो त्याग करिने केहेतां जगत संबंधी पंचविषयनी वासनानो त्याग करिने प्रत्यक्ष भगवान राम कृष्णादिकनी मूर्तिनी सेवा लिलाने चरित्र तेने विषे जोडाई जवुं. एज अंतरदृष्टिने पामि रह्यो छे केहेतां तेनो मोक्ष साक्षात्कार थाय छे ॥ अने तेनां साधन सर्वे पुरां थई रह्यां छे ॥ अने सर्वे शास्त्रनो एज सिद्धांत छे ॥ अने वेदनो पण एज सिद्धांत छे ॥ तेना उपर वेदनां प्रमाण ॥ ॥ घटवत् स्वर्गादि विनस्यति ॥ १ ॥ सर्वं खल्विदं ब्रह्म इति श्रुतिः ॥ २ ॥ ॥ ॥ अर्थ ॥ ॥ घटवत् स्वर्गादि विनस्यति ॥ एटले प्रकृति पुरुष थकि उत्पन्न थयुं एवुं जे स्वर्गादि सर्व जगत ॥ ते सर्वे घटनी पेठे नासवंत छे केहेतां ॥ मिथ्या भातिवत् बहारदृष्टि छे ॥ माटे ते सर्वे माईक नामरूपनुं निरा-

कर्ण करिने कहेतां नामरूपने मिथ्या जाणिने तेथकि निरवासनिक थइने पछे सर्वं खल्विदं ब्रह्म एटले प्रत्यक्ष राम कृष्णादि
क भगवाननी मूर्तिनां अंग अवयवो सहित सर्वे ब्रह्म छे कहेतां प्रत्यक्ष भगवानना हाथ ते पण परमात्मा छे ।। अने परमा
त्माना पग पण परमात्मा छे ।। परमात्मानी आंख्य पण परमात्मा छे ।। ने परमात्मानी वाणी ते पण परमात्मा छे ।। ने प
रमात्माना कर्ण ते पण परमात्मा छे ।। ने परमात्माना मन बुद्धि चित्त ने अहंकार ते पण परमात्मा छे ।। अने प्रत्यक्ष
भगवानना वस्त्र आभूषणादिक शणगार ते पण परमात्मारूप छे ।। अने तेना संबंधने पाम्या जेजे मुक्त तथा जेजे
स्थानक तथा जेजे पदार्थ ते सर्व परमात्मारूप छे एटले कल्याणकारी छे ।। माटे जेजे प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्त्तिनी से-
वाने विषे जोडाणा छे ।। ते अंतरदृष्टिने पामि रह्या छे ।। अने तेनी जआत्यंतिक मुक्ति थाय छे ।। अने जे एम नथि स-
मजताने सतपुरुषना समागम विना पोतानी मेले शास्त्रने समजवा जाय छे ।। तो तेने शास्त्र अवलुं समजाय छे ।। तेके
म अवलुं समजाय छे तो जीवने माइक पदार्थनी वासना तजाववा सारु वेदमां कह्युं के नामरूप सर्व जेजे इंद्रियो अंतःक
रण ना ग्रहण करवामां आवे ते मिथ्या छे ने अनुभवरूप जे आत्मा ते मां देखाय ते सत्य छे ।। एम शास्त्रमां थी सांभळी
ने पछे ते पोतानी मेले कहे छे के बाह्य इंद्रियोए करिने जेजे देखाय ते तो मिथ्या छे अने जे आत्मा मांहे देखाय ते सत्य
छे ।। एम जाणिने माइक आकारनो निषेध करे छे ते भेगुं माया परएवा जे दिव्य मूर्त्ति परमात्मा जिवोना कल्याण क
रवाने अर्थे प्रगट थया राम कृष्णादिक भगवान तेनो पण निषेध करे छे ।। ने ते एम कहे छे जे जे बाहार देखाय छे ते तो
मिथ्या छे ।। अने आत्मा मांहे देखाय ते सत्य छे ।। एम जाणिने प्रत्यक्ष राम कृष्णादिक भगवानना अवतारनी मूर्त्ति
तेनो आकारने बिजो आकार ने सरखा माने छे ।। ते तो महापापि छे ने अतिशे अज्ञानी छे ते एम कहे छे जे बा
हार जेजे देखाय ते नुं तो अमे भजन करिये नहिं ।। एम समजीने पापबुद्धिवाळा छे ते दिव्य मूर्त्ति एवा जे राम कृ
ष्णादिक प्रगट भगवाननी मूर्त्तियो तेनी सेवा दरशन के नाम लेता नथी ।। अने भगवान विना बिजा माइक पदा-

थईनुं तोरात दिवसनाम लिधाकरेछे केमके मिथ्याज्ञानेकरिने वासनानो टलि होयनहि॥ माटे पोतानादिकरानुं नाम लेछे॥भाईनुं नामलेछे॥ बापनुंनाम लेछे॥ भूख्यो थाय त्यारे रोटलानु नाम लेछे॥ तरस्या लागे त्यारे पाणिनुंनाम लेछे॥ लुगडानु नाम लेछे॥बलदनु नाम लेछे॥भेंसनुंनाम लेछे॥ गाडिनुंनाम लेछे॥घोडानुं नाम लेछे॥ अने त्यागिहोय तोपण ते तुंबडिनुंनाम लेछे॥ कोपिननु नामलेछे ॥कथारिनुंनामलेछे॥ टोपीनुंनाम लेछे॥नावा धोवा खावा पिवा पेहरवा ओढवादिक मांईक पदार्थनांतो रात दहाडो॥नाम लीधाकरेछे ॥पणएक जेणेकरिने आत्मानुं कल्याण थाय एवा जे प्रगट भगवान राम कृष्णादिक जेने भजनेकरिने पापमात्रबलिने भस्म थई जायए कतेनुं नाम समरणके भजन करतानथी॥ माटे तेतो महापापीछे॥ नेज्ञानहिणछे॥ केमके खगाज्ञानीतोनारद ने सनकादिकने शुकदेव नेजडभरत नेव्यासवालमीकादिक मुनियोतेणेतो मांईक आकार मात्र जे पिंडब्रह्मांडादिक तेनो निषेधकरिने पोते निर्वासनिक थईने ब्रह्मस्थितिने पामिने पछे प्रत्यक्षरामकृष्णादिक भगवाननी मूर्तियो तेनुं नामस्मरणपूजनवंदन अरवंडकर्युंछे अने प्रगट भगवाननी लिलाचरित्रने तेनी सर्वे चेष्टा तेनुं प्रितियेकरिने गांनकर्युंछे अनेते प्रत्यक्षमूर्ति भगवानतेने विषे अंतरप्रतियेकरिने ध्यानमां सलग्नपणे जोडाईरह्याछे॥ अने जेजे पूर्वे मुक्त थई गयाछे तेपण प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्त्तिनेविषे जोडावे करिनेज थयाछे॥ पणप्रत्यक्ष भगवाननी भक्तीने ध्यानविना कोई मुक्त थयोजनथी॥केमके तेविना कोई मुक्त थयो होततो॥तेनु शास्त्र मां नाम होत॥ माटे रामकृष्णादिक भगवानना भक्त विना बिजाकोईनी शास्त्रमां मुक्ति थई लखिनथी॥अने चार वेद छशास्त्र नेअढार पूराणने बिजा रुषियोनी केटलिक स्मृतियो तेनेविषे तो रामकृष्णादिक प्रगट भगवानना स्वरूपना ज गुण महिमानेचरित्र गायांछे॥ अनेजे आजना मूरख मिथ्याज्ञानी थयाछे तेएम कहेछेजे वहार देखायछे तेतो मिथ्याछे॥अने आत्मा मांदेखायछे तेतो सत्यछे॥पणमूरखाएम नथि विचार करता जे बाहार तोकांईछेजनहि॥नेजेजे बाहार देखायछे तेतो आत्माने विषेज देखायछे॥पणज्यांसुधि आत्माने पोतानास्वरूपनुं अज्ञानछे

त्यां कधि तेने बाहार मांहीएवोभेदसमजायछेपण बाहार तो कांईवस्तुनथी केमकेजीवात्मानुंस्वरुपतो सर्वव्यापक छे ॥ नेते आत्मा विना तो एक अणु पण क्यांई दिखातुंनथी ॥ माटे जेजे पदार्थ देखायछे ॥ ते सर्वे आत्माज देखायछे ॥ पण जिवने पोतानास्वरुपनुंअज्ञान छे ते अज्ञाने करिनेउत्पन्नथयुंएवुंजे मिथ्यास्वप्नवतजगत तेने विषे जीवने सत्यपणानीप्रतिती छे एजजीवनी बहारदृष्टि छे ॥ अनेज्यारे जीवने प्रत्यक्षरामकृष्णादिक रुपजे परमात्मा मलेछे॥ नेते जीवने आत्मा परमात्मानास्वरुपनुं ज्ञान करावीने बाह्यदृष्टिरुपजे जिवमां जगतनी सत्यता छे ॥ तेने मिथ्या करावेछे ॥ अने आत्मा परमात्माने विषे नास्तिक भावछे ॥ तेने मटाडिने आत्मा परमात्मानास्वरुपनी सत्यता दृढ करावे छे त्यारे ते आत्मा जे ते मायानापदार्थनी पोतानाजीवमां सत्यताये करिने वासना हती तेनो त्याग करे छे के हे तां जगतनापदार्थने मिथ्या स्वप्नवत् जाणिने ने मां भाईकपिंड ब्रह्मांडथी पोताना आत्माने जुदो मानीने ते आत्माने विषे रह्या अने आत्मानाप्रकाशक कहेतां अज्ञानरुपी अंधकारमां जीव हतो तेने ज्ञानआपीने प्रकाश कर्यो एवा जे आत्माना प्रकाशक ज्ञानदाता प्रत्यक्ष भगवान तेने विषे नवधा भक्तिये करिने जोडाई जायछे ॥ तेनुं नाम अंतरदृष्टिछे पणते विना बिजी अंतरदृष्टिनथी ॥ अनेप्रत्यक्षरामकृष्णादिक भगवाननी मूर्त्तिनं मुकिने जे एम कहे छे जे कोई कविनो निरंजन निराकार भगवान छे ॥ एम मानिने उधुंघालीने आंख्यो मिचिने ध्यान करवा बेसे छे ॥ तेनो महामूरख छे ॥ ने अतिशे अज्ञानी छे ॥ अने एम समजनाराने अक्षर जाणवा ॥ अने तेने कोई कालपर्यंत गिया जेटलोपण प्रकाश देखातो नथी ॥ अने तेनुं कोई दहाडे कल्याण पण थतुं नथी ॥ अने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्त्तिनो त्याग करिने आंख्यो मिचिने एकांतप कडिने बेशि रहेतो होय ॥ परमहंस कहेवातो होय साधु कहेवातो होय पणते सर्वे बाहारदृष्टियाला छे ने अज्ञानी छे अने जे एम समजतो होय जे नीरंजन ने माया पर एवा जे परमात्माने वेद जेने तिने ति कहे छे ते परमात्मा रामकृष्णादिक प्रत्यक्षछे ॥ एम जाणिने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्त्तिने आंख्यो उघाडिने जोई रहे छे केहतां दरशन करे छे तोने पण अंतरदृष्टि छे ॥ अनेते मूर्त्तिने संभारि-

ने आंख्यो मिचिने ध्यान करे छे ॥ तो ते पण अंतर दृष्टि छे ॥ अने ते प्रत्यक्ष भगवानना लिलाचरित्र गुणमहिमा तेनुं श्रवणकि
र्तन करवुं ते पण अंतरदृष्टि छे ॥ अने ते प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा स्मरणादिक जे जे नवधा भक्ति करवि ते सर्वे अंतर दृष्टि छे ॥
अने एवा अंतरदृष्टि वाळानुं जसाक्षात्कार कल्याण थाय छे ॥ अने अमने पण एवा अंतर दृष्टिवाळा लोक हे तो प्रत्यक्ष भग-
वान रामकृष्णादिकने विषे दृढ उपासना वाळा भक्त ते जगमे छे ने तेने देखीने हुं घणो प्रसन्न थाउं छुं ॥ अने तेने हुं वारे
वारे बोलावुं छुं ॥ ने ते मने कांईक पुछे तो हुं तेने तत्काल तेनो उत्तर आपुं छुं ॥ अने तेना उपर मारी बहुज कृपा थाय छे ॥
अने ते मुने कांईक फळपुष्पादिक पदार्थ आपवा आवे तो हुं तेने राजी थको लऊं छुं ॥ अने एवा ने कदापि संपत्ति न हो
य ने ते मुने कांई आपे नहिं ॥ अने उलटुं मारि पासेथी अन्न वस्त्रादिक देह निरवाहने अर्थे मागि लिये ॥ पण जो तेने प्रत्य
क्ष भगवानने विषे दृढ परमात्मा पणानी प्रतिति होय तो तेणे मारी संपूर्ण सेवा करि एम हुं मानुं छुं ॥ अने तेनुं हुं साक्षात्का
र कल्याण करुं छुं ॥ अने जेने प्रत्यक्ष राम कृष्णादिकने विषे जगत्कर्ता पणानी प्रतिति नथि ॥ अने ते मुने कांईक
पदार्थ आपवा आवे ॥ अथवा मारी कजे तेटली सेवा करे पण ते मुने गमे नहिं ॥ अने एवा पुरुष सामु जोतां तो मारी
आंख्य कळवा मांडे छे ॥ अने ते साथे तो मारे बोलवानुं मन जथाय नहिं ॥ अने ते मुने कांईक प्रश्न पुछे तो हुं तेने अवलोज-
वाब देऊं छुं ॥ ने ते मारी पासे बेठो होय तो हुं एम जाणुं जे हवे क्यारे आहिंथी उठि जशे एवो तेना उपर मारो अभाव वर्ते छे ॥
अने ते कोईक मारां वखाण करे ॥ तेने हुं एम जाणुं जे ते मुने गाळो दिये छे ॥ एम प्रत्यक्ष रामकृष्णादिकने विषे सर्वोपरि प
रमात्मापणानी प्रतिति जेने नथी तेना उपर मारे अभाव वर्ते छे ॥ ने अभाव शा सारुं वर्ते छे ॥ तो कांई स्वार्थ माटे अभा-
वनथी वर्ततो ॥ पण ते एना आत्मानुं भुंडुं करे छे ॥ अने ते नो जे जे संग करशे तेनुं पण ते भुंडुं करशे ॥ अने ते तो पोताना आ
त्मानो घातनो करनारो आत्मघाति छे ॥ माटे एवा आत्मघाति नास्तिक साथे अमारे बने जे नहिं ॥ केमके तेनुं कल्याण को
ईकाळे थतुं नथी ॥ माटे पोताना कल्याणनो जेने खप नथी तेनुं अमारे काम शुं ॥ एवा पापि तो छेटे सारा ॥ अने एवा

नास्तिक होयते ज्ञान कथे त्यारे एमकहे जे जगतनो कर्ता तोअहीं आवतोनथी ॥ नेकोईनेदेखातो नथी अने ए तो क्यांई
कउंचो आभलामां छे एम समजे छे तेज वहारदृष्टिवालो छे ॥ नेतमहापापि छे ॥ ने नास्तिक छे ॥ माटे मोक्षनाखपवा-
लाने एवा नास्तिकनो संगकरवो नहिं ॥ अनेजे प्रत्यक्ष रामकृष्णादिकने विषे जगत कर्तापणानी प्रतिति छे ॥ अ-
नेतेप्रत्यक्षने भजनेकरिने मुक्ति माने छे ॥ अने प्रत्यक्षरामकृष्णादिक विना बिजोकोई करतानथी ॥ एमसमजी
नेप्रत्यक्ष पोतानेमल्याजे भगवान तेनीउपासना भक्ति सेवा स्मरणादिक जेजेनवधा भक्ति करेछे ॥ तेजअंतरदृष्टि-
वालाछे ॥ अने तेनुजसाक्षातकार कर्याएथायछे ॥ मारे आवार्ता सर्वशास्त्रनो सारछे अनेकेहवासमजवामां सेलाज
वीछे ॥ पण वातपराने पाम्यछे ॥ अनेआवात कहिएटलुं समज्यो तेने पछे कांई समजवानुं बाकि नथी ॥ मारे माया
ना आकारमात्रनुं निराकर्णपणुं करिने केहेतां मिथ्याजाणीने पछे माया पर एवाजेआत्माने परमात्मा तेने सत्यजा
णवा तेमां आत्माने पोतानुं स्वरूपजाणवुं नेरामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवानना अवतार तेने परमात्माजाणवा ॥
एजअंतरदृष्टिछे ॥ अनेचारवेदने सर्वशास्त्रनो एटलोज सार छे ॥ अनेतेविना बिजी सर्वे वहारदृष्टि छे ॥ ॥

॥ ॥ इतिश्रीसुरथसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः॥

॥ ॥संवत॥१९॥ओगणिसें॥२३॥त्रेविसना मागशरशुदि ॥ ३॥त्रिजने दिवस महाराज
श्रीहरिकृष्णभगवान गामश्री पिजमध्ये जोसीगणपतभाई जगजीवनने घेर उगमणेबारमेडाउपर गादित-
किये युक्तपलंगउपर बिराजमान थयाहता ॥ ने किनखापनो सुरवालने डगलि धारण कर्यांहतां ने गुढारंगनो
रेटोकेडउपरे पेहेर्योहतो ॥ ने तेउपर कसुंबलसेलुं तारालुं बांध्युंहतुं ॥ नेएकसेलुं खभाउपर धारणकर्युंहतुं ॥
अने कंठने विषे पुष्पना हारत्रणभिरह्याहता ॥ नेगुलाबना पुष्पना बाजु ने गजरा धारण कर्याहता अनेपाघमांबेको
रे फूलना तोरालटकताहता ॥ अने बे कर्णउपर पुष्पनागुच्छ धारण कर्याहता ॥ अने ललाटने विषे कंकुनो चांद-

लोकस्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनीआगळसाधुतथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठा हता॥ पछे महाराज श्रीहरि कृष्ण भगवान कृपादृष्टिकरिने पोताना भक्तजनप्रत्ये बोल्याजे ज्ञानीने अज्ञानी ए बेयनी क्रियामां घणोक भेद छे।केमके ज्ञानी करतां अज्ञानीनां इंद्रियो घणाक अतिशे विप्रित भावे वर्ते छे ते केवि रीते वीप्रित भावे वरते छे ॥ तो अज्ञानीजे ते काने करिने पोतानुं उलटुं अतिशे भुंडुं थाय ने जिवने पाप लागे ॥ एवा शब्द शांभळे छे ॥ अने त्वचाये करिने पोतानुं भुंडुं थाय एवो स्पर्श करे छे॥ अने आंखे करिने पण जिवनु भुंडु थाय ॥ एवां रूप जुवे छे ॥ अने रसनाये करिने पण पोताने बंधन थायने महापाप लागे एवा रस ग्वाय छे ॥ एवि रीते दश इंद्रियो ने चार अंतःकरणे करिने अज्ञानी जीवजे ते पोतानुं भुंडुं थाय एवि क्रिया करे छे ॥ अने ते पापे करिने अज्ञानी जीव जन्ममरणने चोराशिनां महा दुःख पामे छे॥ अने परमेश्वरे तो जीवनी उपर घणीक कृपा करीने जीवने इंद्रियो अंतःकरण सरजी आप्यां छे॥ केमके ते इंद्रियो अंतःकरणे करिने प्रत्यक्ष परमात्मा पुरुषोत्तमनो आश्रय करेने तेनी आज्ञामां इंद्रियोने वरतावे ॥ अने माईक पंचविषयनो त्याग करिने प्रत्यक्ष भगवाननुं भजन करे ॥ तो ते जीवनुं कल्याण थाय छे ॥ अने ते जीव महा अविनासी सुखने पामे छे॥ मादे एवाजे भगवानना महामोटा उपकारने भगवाननी कृपाने जीव भूलिने पछे कुसंगे करिने ते इंद्रियाये करिने पंचविषयमां आशक्त थाय छे अने ते पापे करिने जीव जे ते संसारने विषे जन्ममरणने गर्भवासनां वारंवार महा दुःखने पामे छे ॥ ते दुःख कह्यां जाय एवां नथी ॥ अने बाल्यअवस्थामां जिवने बहु दुःख थाय छे तथा जोबन अवस्थामां पण कामलोभादिक अंतरशत्रु जीवने दुःख आपे छे ॥ अने अंतसमे पण अनंत प्रकारनी याधिव्याधि ना रोग मगट थाय छे ॥ अने अंतसमे जीवने महा दुःख थाय छे ॥ ते दुःख ते कोईथी कह्यां जाय एवां नथी ॥ अने ते दुःख ने तो एक भगवानने भगवानना निरवासनिक संत ते विना बीजो कोई टाळवाने समरथ नथी ॥ जेम कोई पुरुषने दशविश शत्रु होय ते शत्रुए तेने मारि पकडिने केदमां नाख्यो होय पछे ते एकलो पुरुष ते शत्रुने पुगी शकेनहिं॥

पण ते एक लाखपुरुषनो जे धणी राजा होय ॥ ते राजाने पोकार करे ॥ ने ते राजा तेने शत्रु थकी मुकावे तो ते पुरुष शत्रु थकि मुकाय ने ते सुखियो थाय ॥ पण ते विना एक लाख पुरुष हजारो विस शत्रु थकि मुकावाने समरथ नथी ॥ केमके एक लाख पुरुष ने ठेकाणे तो जीवात्मा छे ॥ अने हजारो विस शत्रु ने ठेकाणे इंद्रियो अंतःकरण छे ॥ ते इंद्रियो अंतःकरण जे ते जीवने कांम क्रोध लोभादिक दोषरुपि शस्त्रे करिने मारीने केद करयो छे ॥ अने पंच विषयरुपी देडमां पुरीदीधो छे ॥ ने तेणे करिने महादुःखने पामे छे ॥ माटे एवा महादुःखीया जीवना पोकारने सांभलिने राजाने ठेकाणे जगत् कर्ता भगवान् छे ॥ ते भगवान कृपा जीवना उपर करिने ते शत्रु थकि मुकाववाने अर्थे राम कृष्णादिक रुपे प्रगट थाय छे ॥ ते प्रगट भगवान ने ते भगवानना निरवासनीक संत ते जीवने मले ने तेनो आश्रय जे जीव करे ॥ ते जीवने भगवानने भगवानना संत ॥ ते धर्म ज्ञान वैराग्य ने भक्तिरुपि महाबल आपीने जीवने महाबलने पमाडे छे त्यारे ते जीव जे ते इंद्रियो अंतःकरणरुपी शत्रुनो पराजय करिने पोते ब्रह्मरुप थईने महासुखने पामे छे ॥ ने भगवाननी एकांतिक भक्ति करिने अक्षरधामने पामे छे ॥ माटे जेने महाशत्रु थकि मुकाईने परमपदने पामवुं होय ने अविनासि सुखने पामवु होय तेने तो प्रत्यक्ष भगवान ने भगवानना निरवासनीक संत तेनो आश्रय करवो ॥ ने तेनी आज्ञामां बराबर वरतवुं ॥ अने ते थकि ज्ञानने पामीने इंद्रियरुप शत्रुने नियममां करिने अंतःकरणने वश करवुं ॥ अने ए सर्वे थकि वैराग पामीने पोताना आत्माने ब्रह्मरुप मानिने भगवाननुं भजन करवुं ॥ अने ए विरीते समजेने जे भगवाननु भजन करे छे ॥ ते जीव जे ते ब्रह्मरुप थईने आत्यंतिक मोक्ष जे अक्षरधाम तेने पामे छे ॥ पण प्रगट भगवान कां ते भगवानना निरवासनीक संत तेना आश्रय विनाने तेनी आज्ञा पाल्या विना जिवनुं कल्याण थवानो ने भगवानना धाममां जवानो बिजो कोई उपाय नथी ॥ ते सरु जे तो आज प्रगट भगवानने भगवानना संतनो आश्रय करो ने आज्ञा पालो ॥ अने सरु जे तो कोटि जुग केडे समजो ॥ अने गमे तो एक्यार कहे भगवानने भगवानना संतनो आश्रय करो ॥ ने सरु जे तो लाखवार कहे करो एटलुं कर्या विना जीवने छु-

टको नथी ॥ माटे पोताने मनुष्यनो देह ॥ अने प्रगट कल्याणकारी भगवान के भगवानना निरवासनीक पंच विषयना त्यागी संत तेनो संग मळवो घणो दुर्लभ छे ॥ ते पण सुंदरविलासमां कह्युं छे॥

॥मात मळे पुनि तात मळे ॥ सुत भ्रात मळे जुवति सुखदाई ॥ राज मळे गज बाज मळे ॥ सब साज मळे मनमां चित्त पाई ॥ भूरलोक मळे सुरलोक मळे ॥ विधिलोक मळे वैकुंठ हि जाई ॥ और तो साज मळे सब सुंदर ॥ पण संतसमागम दुर्लभ पाई ॥१॥ ॥

एवी रीते भगवान ने भगवानना संतनो समागम अति दुर्लभ छे ॥ माटे ते समो आज तमारे प्राप्त थयो छे ॥ माटे तमारा भाग्यनो पार नथी ॥ माटे सावधान थईने पोताना आत्मानुं कल्याण करि लेवुं ॥ ए ज तमारा हितनी वार्ता छे ॥ एम कहिने महाराजे वार्तानी समाप्ति करि ॥ पछे ते गणपतभाईना घरनां सर्वे मनुष्ये महाराजनी पूजा करिने ॥ महाराजनो आश्रय कर्यो ॥

॥इति श्रीसुखसिद्धांत समाप्तः॥

॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥

॥संवत॥१९॥ ओगणिसें ॥२३॥ त्रेविसना मागशर शुदि ॥४॥ चतुर्थिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पिजमध्ये जोशी गणपतभाई जगजीवनने घेर उगमणे बार ओरडानी आगळ चोकमां गादितकियेयुक्त पलंग बिछाव्यो हतो ॥ तेउपर विराजमान थया हता ॥ अने सर्वे सोनेरि वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥ अने कंठमां पुष्पना हार पेहेर्या हता ॥ अने पाघने विषे फूलना तोरा लटकता हता ॥ अने बे कर्ण उपर गुलाबना पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता ॥ अने पोताना मुखारविंदनी आगळ संतमंडळ तथा देशदेशना घणाक हरिभक्तनी मोटि सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे गणपतभाईनो दिकरो हरनारायण तेणे महाराजने प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज भगवाननुं मनुष्यस्वरूप ते केम ओळख्यामां आवे जे आ भगवान छे ॥ ते कृपा करिने कहो॥ पछे महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान कृपादृष्टि करिने बोल्या जे भगवाननुं स्वरूप तो भगवान थकी ज ओळखाय छे अने कां ए भगवानना एकांतिक संत ते थकि भगवान ओळखाय छे ॥ पण ते विना मनुष्यस्वरूप भगवान ते ओळ-

खायनहि ॥ जेम कोईक परदेशमांथी मनुष्य आव्युं होय ॥ ने तेने ओलखवुं होय ॥ तो ते मनुष्य पंडे एम कहे जे मारि फलाणि
जात्यछे ॥ अने कां तेना भेगु तेना देशमांथी मनुष्य आव्युं होय ॥ ते ओलखावे त्यारे ते परदेशी मनुष्य ओलखाय पण ते विना ते परदे
शी मनुष्य ओलखायनहिं ॥ तेम भगवानपण परदेशी मनुष्यनी पेठे अष्ट आवरणथी पर एवुं जे अक्षरधाम तेना वासी छे ॥ माटे
ते भगवान पोते पंडे कृपा करिने पोतानुं स्वरुप ओलखावे त्यारेज ते मनुष्य स्वरुपे भगवान ओलखायछे अने कां ते भगवा-
न पोताना धाम मांथी पोताना संतने भेगा तेडि आव्या होय ते भगवानना भक्त संत ॥ ते प्रगट भगवाननुं स्वरुप ओलखावे
त्यारे प्रगट भगवाननुं स्वरुप ओलखायछे ॥ पण ते विना कोई बुद्धि बले करिने तथा शास्त्रने जाणवे करिने तथा अनंत
प्रकारनी विद्याये करिने प्रगट भगवानने ओलखवा जाय ॥ पण तेने भगवान नथी ओलखाता ॥ केमके बुद्धिये करिने जो
प्रगट भगवान ओलखाता होय तो कृष्ण अवतारमां ब्रह्मा केवा बुद्धिवाला हता ॥ पण ते प्रगट श्रीकृष्ण मनुष्यस्वरुप पो
तानी बुद्धिये करिने ओलखी शक्या नहिं ॥ अने उलटो भगवानना मनुष्य चरित्र जोईने मोह थयो ॥ तथा इंद्रने पण मोह थ
यो छे ॥ इत्यादिक घणा कमोटा मोटाने प्रगट भगवानना स्वरुपनो पोतानी मेले ओलखवा गया छे तो ते सर्वेने मोह थ
या छे ॥ पण पोतानी बुद्धि बले करिने कोईने प्रगट भगवान ओलखाणा नथी ॥ अने जेने ते प्रगट भगवान तथा ते प्रगट भ-
गवाननी भेगा रहेनारा एना एकांतिक पंचविषयना त्यागि संत तेनो जेने विश्वास होय तो ते प्रगट भगवाननु स्वरुप ओ-
लखावे छे त्यारेज तेने ओलखायछे ॥ पण ते विना प्रगट भगवान ओलखायनहिं ॥ केमके ब्रह्मादिकने प्रगट भगवा
नना मनुष्य चरित्रने विषे मोह थया छे तो बीजा मनुष्यने मोह थाय तेमां शुं कहेवुं ॥ माटे तेने तो मोह थायज ॥ ते सारु प्रगट
भगवानना स्वरुपनो निश्चय ते तो प्रगट भगवानने ते भगवानना भक्त संत ते करावे छे त्यारेज निश्चय थाय छे ॥
ए सिद्धांत वारता छे ॥ ने केवि रीते भगवानने भगवानना संत प्रगट मनुष्य स्वरुप भगवान ओलखावेछे ॥ तो ज्ञाने करिने
निश्चय करावेछे ॥ ते ज्ञान शुं ॥ तो धर्म ज्ञान वैराग्य ने महात्मे सहित भगवाननी भक्ति सिद्ध कराववा रुप अष्टांगयोगसधा

वेछे॥अने अष्टांग योगकरिने॥जीवनेब्रह्मरुप करिने ब्रह्मने विषेपरब्रह्मनुंसाक्षात्कार दरसानकरावे छे ॥नेजीवेंदश्वर्यमा
या नाभेदटलावीने ब्रह्मने पर ब्रह्म ए बेजतेनीदृष्टिमां रहे छे॥त्यारे तेने प्रत्यक्ष मनुष्यस्वरुपभगवानने विषे सर्वोपरि
पुरुषोत्तम पणानो निश्चयथाय छे।हवेतेअष्टांगयोगतेशुंतो ॥ यम ॥ नियम॥ आसन॥ प्राणायाम॥ प्रत्याहार॥ ध्यांन॥
धारणाने समाधि॥एंआठ साधननुं नाम अष्टांगयोग कहेवायछे॥ हवेतेनां लक्षण कहुंछुं॥तेमांपेहेलुं यम तेशुंतो॥अध
र्मअनीति कुडकपटादिक जेदुष्टकर्म तेनोत्यागकरिने पोतपोताना वरणाश्रमनाधर्ममांरहिने भगवानभजवा॥अनेअ
धर्म कोई दिवस करवोनहिं॥तेनुं नामयमकहेवायछे॥अने बिजुं नियमतेशुंतो॥उत्तमपंचविषयना भोगनो त्यागकरवो
॥तेनुंनाम नियमकहेवायछे॥अने त्रिजुं आसनएटलेशुंतोपवित्रस्थानकमांरहेवुं कहेतां भगवाननाएकांतिकपंचविष
यना त्यागीसंत ज्यां रहेताहोय॥त्यांदृढ मनकरिनेरहेवुं॥तेनेआसनकहिये॥ अने चोथुं प्राणायाम एटलेशुंतो॥अहार
विहारयादिकजुक्त करिने प्राणने स्थिर करवो ॥कहेतांसर्वे मायिक पंच विषयथकि संतोषपामवुं॥ तेने प्राणयामक-
हिये॥ अनेपांचमुं प्रत्याहारएटलेशुंतो॥ देहआत्मानो विवेकरिने देहने मिथ्याजाणिनेआत्माने सत्यजाणवो॥नेस्थू
ल सूक्ष्मने कारणत्रणदेहनीजेचोविस व्रत्तियो तेनेआत्माने विषे लयकरवि॥अनेआत्मानेअक्षरने विषेएककर
वो॥अनेतेअक्षरनेपोतानुं स्वरुपमानवुं॥ तेनुंनाम प्रत्याहार कहेवायछे॥अनेछठुं ध्यांन एटले ब्रह्मना प्रकाशक
ने ब्रह्मनाआधार एवाजे प्रत्यक्ष भगवानज्ञानदाता रामकृष्णादिक तेनी मूर्तिनुंध्यांनकरवुं॥अनेते ध्यान करतांजे
जेपदार्थमांव्रतिजाय वेते पदार्थनो चारप्रकारना प्रलयनो विचारकरिने नासवंतनेदुःखरुपने स्वप्नवत्‌जाणिने
पिंड ब्रह्मांडादिकथकि वैरागने पामिने भगवाननास्वरुपमां व्रतिनेराखिने अंगोअंगनुं चिंतवनकरवुं तेनुंनामध्यानकहि
ये॥ अनेसातमुं धारणाएटलेशुं॥तो प्रत्यक्ष भगवाननीमूर्त्तिमां मननी व्रति अखंडरहाकरे॥पण भगवाननी मूर्तिविना
व्रति क्यांई जायनहिं॥ तेने धारणा कहिये॥अने आठमी समाधिएटलेशुंतो पोताना आत्माने विषे प्रत्यक्ष भगवान-

नास्वरुपनो उत्तम निर्विकल्पनिश्चयकरिने दृढस्थिति थाय ने ते भगवानननी मूर्तिने अखंड देख्या करे ॥ पण प्रत्यक्ष भ-
गवानना स्वरुपना मनुष्यचरित्रने विषे कोई दिवस संशय थाय नहि ॥ ने इंद्रियो अंतःकरणनी वृत्तियो भगवानना स्व
रुपमां लिन थई जाय ॥ ने पिंड ब्रह्मांडादिक पंचविषयनो संकल्प न थाय ॥ जेम सुषुप्तिमां देहनी विस्मृति थायछे ॥ तेम
पिंड ब्रह्मांडादिक पंचविषयनी विस्मृति थई जाय ॥ ने एक भगवानना स्वरुपनी स्मृति रहे ॥ त्यारे चित्तनो निरोध था
यछे ॥ अने एवि रीते चित्तनो निरोध थई ने जे प्रत्यक्ष भगवाननुं स्वरुप ओलखायछे ॥ ते ज स्वरुप ओलखाणुंछे ॥ अने
तेनो निश्चय टलतो नथी ॥ तेने समाधि कहिये ॥ ते मांयम ॥ नियम ॥ आसन ने प्राणायाम ॥ ए चार साधने करिने तो
एक धर्म सिद्ध थायछे ॥ अने प्रत्याहार एक साधने करिने आत्मनिष्टारुप ज्ञान सिद्ध थाय छे अने ध्यानरुपी एक साधनेक
रीने वैराग सिद्ध थायछे ॥ अने धारणारुपी एक साधने करिने नवधा भक्ति रुपि साधन भक्ति सिद्ध थायछे ॥ अने समा
धिरुपि एक साधने करिने प्रेम लक्षणा रुपी सिद्ध भक्ति सिद्ध थायछे ॥ एविरीते प्रत्यक्ष भगवान तथा प्रत्यक्ष भगवानना
एकांतिक ॥ पंचविषयनात्यागि निरवासनिक संत ते अष्टांग योग रुप साधने करिने ॥ धर्म ज्ञान वैरागे सहित प्रेम लक्ष-
णा भक्ति सिद्ध करावे छे अने भक्तिये करिने प्रत्यक्ष भगवानना मनुष्य स्वरुपने विषे सर्वोपरि पुरुषोत्तम अक्षरातित पणा-
नो निश्चय थायछे ॥ अने ते जीव ब्रह्मरुप थई ने अक्षर धामने पामेछे माटे प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतनो विश्वास ने
तेने विषे प्रिति जेने होय तेने ज मनुष्य स्वरुप भगवान ओलखायछे ॥ अने जेने प्रत्यक्ष भगवानने प्रत्यक्ष भगवानना नि-
रवासनीक संत तेनो विश्वास ने हेत न होय ॥ तेने कोई काले प्रगट भगवाननुं स्वरुप ओलखातुं नथी ॥ माटे एविरीते भग-
वानने भगवानना संत थकि ज्ञान पामे छे ॥ तेने ज प्रगट भगवाननुं स्वरुप ओलखाय छे ॥ ने तेनो निश्चय कोई काले डग-
तो नथी ॥ अने ते ज्ञान विना जे ढोंग करिने केटलाक समाधियो करिने कंकु काढे छे ॥ तथा साकरो काढेछे ॥ तथा लविं
ग काढे छे ॥ तथा समाधिमां माला लावे छे ॥ तथा फूलना हार लावे छे ॥ इत्यादिक वस्तु समाधि करिने देखाडे छे ॥

तेसर्वेकपट छे॥पणते कोईकाळेसत्यनथी॥ माटे परपंचकरेछे ॥ तेपापिछे ॥तेएवाढोंगकरिने जगतनाभोळा लोकोने
विश्वासआणावीने तेनापासेथीस्त्रिद्रव्यनेरसास्वादरूपि विषयने भोगवेछे ॥नेपोतेपण भ्रष्टथायछे ॥नेतेनो जे विश्वा
सकरे तेनेपण भ्रष्टकरेछे ॥ अनेते बेयमरिने नर्कमांजायछे ॥ माटे ते समाधियो खोटिछे ॥ अने मोटोरे कहिजे ज्ञान
समाधि तेसत्यछे ॥ते समाधि प्रगटभगवानने प्रगट भगवान थकि ज्ञान पामिने पंचविषयनो त्यागकरिने निरवास
निक थयाएवाजे भगवानना संत तेनी पासेजहोयछे ॥पणते विना बिजा मनुष्यदेवब्रह्मादिक कोईपासे तेसमाधि
होयनहिं॥ माटे प्रगट भगवानने भगवानना संतथकि ज भगवाननुं मनुष्य स्वरुप ओळखायछे॥ तेजसत्यछे॥
एतमारा प्रश्ननोउत्तर छे॥ ॥इति श्रीमुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥

श्री हरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत॥१९॥ ओगणिसे ॥२३॥ त्रेविसना मागसर शुदि॥१
॥पंचमिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवानगाम श्रीपींज मध्ये ॥जोशी गणपत भाई जगजीवनने घेर उगमणे बारओ
रडानी ओसरिमां गादितकीये युक्त पलंगउपर विराजमान थयाहता॥ नेसर्वे सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां ने सर्वे अं
गने विषे पुष्पनां आभूषण धारण कर्यांहतां॥ ने केशरनी आड ललाटने विषे करिहतिने पोताना मुखारविंदनी आग
ळसाधुतथा घणाक हरिभक्तनी सभाभराईने बेठिहति ॥पछे गाम सोजींत्राना व्यास कुबेरजी ईश्वरे महाराजने
प्रश्न पुछ्युंजे तमने अमे सर्वोपरि पुरुषोत्तम जाणियेछिये ॥ अने क्यारेक मनुष्यचरित्र जोईने संषय थई जायछे तेनुं
शुं कारण हशे॥ अनेते संशय मटिने कोईकाळे संशय न थाय एवो निश्चय केमथाय तेकृपाकरिने कहो ॥पछे महाप्रभु
जी बोल्याजे प्रथम यथार्थ उत्तम निर्विकल्पनिश्चय थयोजनथी अने भगवाननो दिव्य भाव ने मनुष्यभाव जाण्योन
थी॥ तथा निरगुणपणुं ने सगुणपणुं जाण्युंनथि॥ तथा साकारपणुं ने निराकारपणुं जाण्युंनथी॥ तथा भगवानना अनं
तऐश्वर्य अनंतशक्तियो तेनेजाण्यानथी॥ तथा भगवाननो अपरमित महिमा छे तेने जाण्योनथी माटे निश्चयमां

संशयथायछे॥ अनेए तोश्रवणमात्रजभगवानपणानो निश्चयथयोछे।। जेमकोईकपुरुषे कह्युंजे कोईकदेशमांकेरीछे त्यारे तेने सांभलिनेतेने केरीनुंजथार्थज्ञानथायनहिं ।।एतोएक श्रवणइंद्रिनुंज्ञानथयुं जे केरिएवुं नामजाण्युं पणना नीछे केमोटिछे के कालीछे के धोलिछे के पाणीजेवीछे के पाणाजेवी छे केलोटजेवीछे के जारबाजरीजेवीछे के एमकांई खबरनपडिएतो पांचेइंद्रिये तपासिजुवेत्यारे खबरपडे ते कानेकरिने सांभले त्यारे केरीएवुं नामजाणे।। नेनेत्रे करिनेजुवे त्यारे नानीमोटि कालिधोलि खबरपडेनेहाथे करिनेअडे त्यारेटाढीउनी नरम कठण जणायनेनाके करिने सुंघेत्यारे सुगंध दुर्गंधजणाय ॥ अनेजीभ्याये करिने चाखे त्यारे स्वादि खारी गलिमोलि तिखि कडवि जणाय माटे पांचेइंद्रिये तपासेत्यारे केरिनुं यथार्थज्ञानथायछे ।। पणएक श्रवण मात्रेकरिने केरिनुं यथार्थज्ञान थाय नहिं।ते मभगवाननो सर्वे प्रकारे महात्मज्ञानेसहित निश्चयथाय त्यारे यथार्थ निश्चयथयो कहेवाय अने त्यारे भगवानना मनुष्यचरित्रजोईने संसय थायनहिं ।।अनेवलि निश्चयपण बे प्रकारनो छे।।एकनिरविकल्पने बिजो सविकल्प तेमांउत्तममध्यमने कनिष्ट भेद छे।। तेबे मलिने छ भेदथया तेमां कनिष्ट सविकल्प निश्चयजेने होय तेने भगवान मनुष्यना जेवीक्रिया करे त्यांसुधि निश्चय रहे पणमनुष्यनां करतांअधिक वर्ते तो कनिष्ट सविकल्पनिश्चयवालाने संसय थाय।। अने मनुष्यना करतां ।।बमणात्रमणा कामक्रोधलोभादिकने विषे भगवान प्रवर्ते त्यां सुधिनिश्चय रहे ॥ अनेतेथीअधिक जणायतोसंशयथाय तेने मध्यमसविकल्प निश्चयवालोजाणवो ॥ अने भगवानने सर्वे करता सर्वे भुक्ताजाणे तेनेउत्तम सविकल्प निश्चयवालोजाणवो ॥ अने भगवान नेसर्वेकरता भुक्ताजाण्यानेसविकल्प पणुंकेम केहेवाणुं॥ तोएणे वैराट जेवाभगवाननेजाण्या माटेसविकल्पएवो भेद आव्यो अने एमसमजे तेनेपंचविष यना राग टलेनहिं ।।अने तेना विषयनुं भगवानखंडन करे तो ते भगवाननानिश्चय मां संशय थायने अवगुणआवे ।।अनेजे निर्विकल्प मांकनिष्टछे ।। तेतोभगवान ने सर्वेकर्ता थकाअकर्ताने भुक्ताथकाअसंगी ने निर्लेपजाणेने अ

स्वरुपसमजे ॥अने जेजे भगवानना संबंधनेपामे तेपण ब्रह्मरुप निर्गुणभावनेपामे ॥एम समजेतेने निर्विकल्पमांक-
निष्ट निश्चयवालो जाणवो ॥ अनेएकनिष्ट निश्चय केमकहेवाणो तो एणे भगवानने सबल ब्रह्म जे वाजाण्या माटे क-
निष्टपणुं कहेवाणुं छे ॥अने मध्यमनिर्विकल्प निश्चयवालो भगवानने अक्षरजेवा जाणे तेअक्षर केवुंछे ॥ तोसर्वव्याप
क सर्वाधार अनेसर्वनाउरमां वासुदेव रुपेअंतरयामिरह्या छे ॥ एम जाणे ॥अने पोते पण प्रतिलोमदृष्टि करिने वासुदेव-
नीउपासनाकरे तेने मध्यमनिर्विकल्प निश्चयवालोजाणवो ॥तेमां मध्यमएवो भेद केम पड्यो तोएणे अक्षरजेवा भग-
वानने जाण्या ॥ तेणेकरिने मध्यमएवो भेदपड्यो ॥ अनेजे उत्तम निर्विकल्पनिश्चयवालोछे तेतोसर्वव्यापक सर्वाधार
एवाजेअक्षर ब्रह्म जेनाएकएकरोम रोम प्रत्ये अनंत कोटि ब्रह्मांड अणुनी पेठेउडे छे तेअक्षरने तोपोतानुं रुपमाने ॥अ
नेसर्व कारण सर्वोपरिने जेनो महिमा अपरमित छे एवा जेपुरुषोत्तम भगवान ॥तेअक्षर एवो जेहुं ते मारे विषे अखंड
दिव्यमूर्तिमान रह्याछे ॥अने तेज भगवान अनंत जिवोना कल्याण करवासारु कृपा करिने मायापर अक्षरमां अखंड
रह्याथका पृथ्वी उपर प्रगटथाय छे ॥अनेतेज भगवान मारा आत्माने विषे रह्याथका बहार सर्वेने दर्शन आपेछे एविरीत
नीसमजणवालाजेहोय तेने निर्विकल्पउत्तम निश्चयवालाजाणवा ॥अनेते भक्त भगवानना साधर्मपणाने पामेछे
॥अने आ लोकमां छे तोपण तेने मायानुं आवरण नथी ॥अनेएनादरशने करिने तथा तेनीसेवाये करिने अनंत जि-
वोनो उद्धार थाय छे ॥ माटे आ विरीते समजीने निश्चय करे तेने भगवानस्कजे एवाचरित्र करे तोपण तेने कोई काले
संशय थाय नहि ॥ तेसारु तमने करिने दृढ निश्चय करवो ॥ एजत्तमारा हितनी वारता छे ॥ ॥
इतिश्री मुख सिद्धांत समाप्तः ॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥
संवत ॥१९॥ ओगणिसें ॥२३॥ त्रेविसना ॥ पोषवदि ॥५॥ पंचमिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीधोल
कामध्ये सोनी बाई काशीबानेघेर गादितकिये युक्त ढोलिया उपरविराजमानथयाहता नेसर्वेजरियानी कसबल

वस्त्रधारण करतां हतां ॥ नेपिताम्बर पुष्पनां आ भूषणसर्वे अंगमांवाोभीरह्यां हतां ॥ ने पोताना मुखाविंदनी आगळ्साधु तथा घणा कहरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हतिने संध्याआ र्तिने समेमहाराजनी आगळ मशालनो प्रकाश थइरह्योहतो ॥ प-छेमहाराज श्रीहरिकृष्ण महाप्रभुजी बोल्याजे सर्वे सभाने अमे प्रश्न पुछीये छीयेजे आजीयजीय कहेछे ते जीव छे के न थिएक तोए प्रश्न छे ॥ अनेकदापितमे एमकहेश्योजे जीव छे तेतो जीवएक छे के अनेक छे ॥ ए बिजुं प्रश्न छे ॥ अने परमात्मा भगवान जगकर्ता छे तेना अवतार पृथ्वीउपर थाय छे के नथी थता ए त्रिजुंप्रश्न छे ॥ अनेशंकरस्वामियेएम कह्युं छे जे जीयनथी ने सर्वे एक ब्रह्म छे बिजुं कांईनथी ॥ अनेरामानुजे एमकह्युं छे जे जिवइश्वर माया ब्रह्मने परब्रह्म एवापांचभेद छे ॥ माटेशंकरस्वामिये कह्युं के जिवनथी ने परमात्माना अवतार पण थतानथी ॥ ते केई समजणे कह्युं के जियनथी ॥ अनेरामानुंजे कह्युं के जीवछे नेपरमात्माना अवतार थाय छे ते केई समजणे कह्युं छे ॥ अनेशंकर रामानुज्य बेयसत्पुरुष छे ॥ माटे जे कह्युं छे ते ठिकज कह्युं हशे ॥ पणजीवपोतानी मे जेशास्त्रने समजवाजाय छे तो बुद्धिनो गार हेतो नथी ॥ ने भमीजवाय छे ॥ माटे केमसमजे तो बेयनुं बोल्युं सत्य छुं समजाय ने बुद्धि भमे नहिं ॥ ते कहो ॥ पछे तेनो उत्तर कोईथी थयोनहीं ॥ पछे महाराजश्री हरिकृष्ण महाराज बोल्याजे ल्यो अमेएनो उत्तर करिये छिये ॥ जे बे प्रकारनी दृष्टि छे ते मां एक सिद्धदृष्टि छे ॥ नेएक असिद्धदृष्टि छे ते सिद्धदृष्टि वालातो ब्रह्मरुप मुक्त छे अने असिद्धदृष्टिवालासर्वे जीवो छे ते जीव अनंत अपार छे ॥ अने तेजीव अनादिना छे ने अनादिना अ-ज्ञानी छे ॥ कहेतां परमात्माने अनादिनाजाणता नथी ॥ ते परमात्माने नजाणवाथी उपजे अज्ञान तेणेकरिने जीवोने जगतनो भासथयो छे ॥ तेउपर वेदनुं वचन ॥ ॥आत्माज्ञानात्जगत्भातिइतिश्रुति॥ ॥अर्थ॥ ॥ आत्माजेजीव तेने परमात्माना स्वरुपनुं अज्ञान छे ॥ तेणे करिने जगतनी उत्पत्ति थई छे ॥ माटे असिद्धएवाजेजीवो तेने सिद्धकरवाने अर्थे सिद्धएवाजे परमात्मा ते पोते पोतानाअक्षर धाममां रह्याथका पोतानी स्वईछायेकरिने

जगतने विषे प्रगट थायछे ॥ अने प्रगटथईने असिद्ध एवाजेजीवोतेने सिद्ध करवा सारुं वेदोक्त धर्मनाज्ञाने करिनेउपदेश
आपेछे ॥ ते कर्म उपासनाने ज्ञानए त्रणनुं प्रतिपादनकरेछे ॥ अनेजीवईश्वर माया ब्रह्म नेपरब्रह्मएपांच भेद देखाडे
छे ॥ तेमांजीवनेईश्वर ॥ एबेनीदृष्टि मामायाछे ॥ पणतेमांईश्वर समरथ छे ॥ नेसर्वज्ञ छे अनेजीव असमरथ छेनेअल्प-
ज्ञ छे ॥ माटे जिवअसमरथनेअल्पज्ञ छेतेनेज्ञानआपीने ईश्वर जेवो समरथने सर्वज्ञ करवा सारुं प्रत्यक्षएवाजे सद्गु-
रु रुप परमात्मा ॥ तेउपदेशनिमितपोतेईश्वर रुपे बोल्याके हे शिष्य ॥ ॥ ॐ सोहं तत्वमसि ॥ ॥ अर्थ ॥ ॥
परत्यक्षपरमात्मासद्गुरु कहेछेके हुंईश्वरछुं ॥ तेमारांत्रणशरिरजे वैराट सूत्रात्माने अव्याकृत तेथीजुदो हुं ब्रह्मछुं
॥ अनेतुंपणजोतारांत्रणशरीरथि जुदोथा तोतुंपण ब्रह्मरुपछो पछे शिष्येकह्युं के हुं मारात्रण शरिरथकि धीरीतेजु
दोथईशकुं ॥ पछे सद्गुरुए कह्युं के तुं मारि सेवा भक्ति कर ॥ अने हुं कहुं ते प्रमाणे धर्म पाल्य ने जीवईश्वर माया ब्रह्म
नेपरब्रह्म तेनारुप बतावुं तेप्रमाणे ज्ञानसमज्य एटले त्रणशरिर थी जुदो थईने तारा ब्रह्मस्वरुप नेतुं पामीश ने तारी
मुक्ति थशे ॥ पछे शिष्ये पोतानाआत्माना कल्याणनेअर्थे ते ईश्वररुप प्रत्यक्ष परमात्मातेनीसेवा भक्तिरुप उपास
नाकरवामांडि ॥ अनेत्रणशरिरथकि जुदो थवानेअर्थे ते सद्गुरुये बताव्युंजे ॥ अहिंसाने ब्रह्मचर्यादिक अंतःकरण
नी शुधिने अर्थे धर्म तेने पालवा मांड्यो ॥ अनेसद्गुरुये कह्यांजे जीवईश्वर माया ब्रह्मनेपरब्रह्म नारुप तेनु श्रवणम
ननादिक साधन तेने करवा लाग्यो माटे सद्गुरुनीसेवा भक्ति करवि तेनुंनाम वेदनोउपासनाकांडछे ॥ अने अं-
तःकरणनीसुधिने अर्थे सद्गुरुना कह्याप्रमाणे कामलोभादिक दोषनेटालवा तथाशब्दादिक पंचविषयनो त्या-
गकरवो ॥ तथा अहिंसाने ब्रह्मचर्यादिक धर्म पालवो तथा सद्गुरुना उपदेशनुं श्रवणमननादिकसाधन करवुं ॥
तेसर्वेनुंनामकर्मकांडछे ॥ अनेजीवईश्वरमायानारुपनेजाणिने मायाने मिथ्या करिने जीवईश्वरनो भेद टालिने
ब्रह्मदृष्टिनेपामवुं ॥ ने ते ब्रह्मनेपोतानुंरुप जाणिने तेने विषे स्थिति पामविने ब्रह्मनाप्रकाशक एवाजे परब्रह्म ते-

नास्वरुपनोसाक्षात्कार करवो तेनुं नामवेदनोत्रिजोज्ञानकांडछे ॥ पछे तेप्रत्यक्षसद्गुरु थकि कर्मउपासनाने ज्ञानजे
णे सिद्धकर्यां तेने ब्रह्म नेपरब्रह्मनास्वरूपनो साक्षात्कार थयो ॥ अनेतेनीदृष्टिमांथीजीवईश्वर मायाना भेदटलि
जायछे ॥ केहेतांतेनेजीवईश्वरमायाजगत कांई देखातुंनथी पछे ते स्थितिने पामिने शिष्य बोल्योके हे स्वामिन् त-
मारिकृपाथकि अहं ब्रह्मास्मिन् कहेतां हुं ब्रह्मरुपएवो तमारोदासछुं ॥ अनेएवुंज्ञान थयुं त्यारेतेनेजीवईश्वरमा
या जगतकर्मउपासना सर्वे टलिजायछे ने ब्रह्मनेजाणनारो ब्रह्मरुप थाय छे ॥ तेपण वेदमांवेद मांकह्यं छे ॥ ॥
ब्रह्मविद् ब्रह्मैवभवति ॥ ॥ अर्थ ॥ ॥ ब्रह्मनेजाणनारो ब्रह्मरुपथाय छे एविरीते ब्रह्मस्थितिने आत्मापा-
म्यो तेनी दृष्टिमांजगत् मिथ्याछे ॥ जीवमिथ्याछे गुरु मिथ्याछे ॥ शिष्यमिथ्याछे ॥ कर्म मिथ्याछे ॥ उपासना मिथ्याछे
॥ तेकेनेकेजेनेएवीस्थिति थई तेनेसर्वे मिथ्याछे ॥ माटे संकरस्वामिये कह्यंके जिवईश्वरमायाकांईनथी ने सर्वत्रए-
कब्रह्मछे ॥ तेशंकरस्वामि सिद्धस्थितिमां बोल्याछे जेजीवतथाजगतत्रणे कालमांनथी ॥ एम कह्यं तेपणसत्य ज
कह्यं छे ॥ अनेरामानुजे कह्यं छे केजीवईश्वर माया ब्रह्मपरब्रह्म पांचे भेदअनादिनाछे एमकह्यं तेपण सत्यकह्यं छे
केमके जोजीवन होय नेसर्वे एक ब्रह्महोय तोउपदेशकेनेकरवो रह्यो ॥ माटेजीवछे मायाछे ॥ मायाएटले अज्ञान
तेअज्ञानजीवने अनादिनुं छे तेअज्ञानने टालवासारु संकर स्वामिये पोतानाशिष्योने अहिंसाने ब्रह्मचर्यादिक
धर्म पलाव्यां छे ॥ ने श्रवणमननादिक साधन कराव्याछे ॥ अने जेणेपोतानी आज्ञा पालिनहि तेनेशंकर स्वामि
ये विमुख करिने काढि मुक्याछे माटेजोशंकर स्वामिनी समजणमां जीवनहोय नेसर्वे एक ब्रह्म होय तोधर्मनिय
म केनेपलावे ॥ ने विमुख केने करे ॥ माटेजीवछे एवात सत्यछे अने सद्गुरुनाकृपाये करिने ज्ञानजीवने थाय त्यारेते ब्र
ह्मनाभावनेपामे छे ॥ अनेजेब्रह्मस्थितिनेपाम्यो तेनीदृष्टिमां जीवतथाजगत नथीकहेतां ब्रह्मरुपजे आत्माथयो तेनेपोता
नुंजीवपणुंटलि जायछे ने तेनेजगतना लोक भोगनी वासनाटलि जायछे ॥ जेम कोईकदारिद्रिहोय पछे तेनेकोई राजा

मेहेरबानीकरिने लाख बे लाख रुपैया आपे तोतेनुंदारिद्रपणुं नासपामेछे ॥ तेमजीवनेअज्ञानरुपीदारिद्र अनादिनुं छे ते
णेकरिने दिनपर्ईनेचोराशिमां जन्म मरणनेपामे छे ने मिथ्याएवांजेमाईक पंचविषयनां सुखतेमांवासनायेकरिने
आसक्तिराखे छे ॥पछे तेनेसदगुरुरुपे प्रत्यक्षपरमात्मामळेनेते कृपा करिने धर्मज्ञान वैराग भक्तिरुपिसंपत्तिआपे
छे ॥ त्यारे तेजीवनुंजीवपणुंटलिजायछे ॥ नेअज्ञाने करिने मिथ्याजगतनां माईकपदार्थने वासनाये करिने भोगवतो
हतो तेज्ञानरुपिसंपत्तियेकरिने पूरणकामथायछे ॥ने पंचविषयना सुखनो त्याग करेछे ॥एविरीतेजे ब्रह्मस्थितिने
पाम्यो तेनीद्रष्टिमा जीव तथा जगत नथी ॥ अने तेनेजीवईश्वरनेमाया एत्रणनो भेद टलिजायछे ॥माटे ईश्वरजाणिने
जे प्रत्यक्ष सदगुरुनी उपासना भक्ति करतो हतो तेउपासना तो मीथ्याथई जायछे के हेतां गुरुने विषे वैराटरुपईश्वर
पणानो भावहतोते भावतो टलिजायछे पण जे : ब्रह्मरुपथयो तेनेपरब्रह्मनी उपासना तो अखंडरहेछे ॥ केमके
ब्रह्मरुप थाय पछे तेनेपरब्रह्म ओळखायछे ॥ तेपणगीताना अध्यायमां कह्युंके॥ ॥श्लोक॥ ॥ब्रह्मभू-
तप्रसन्नात्मा ॥न शोचति न कांक्षति ॥समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥ ॥अर्थ॥ ॥ब्रह्मरुपने प्रसन्न
छे ॥ आत्मा के हेतां मन तेजेनुं ने हर्ष ने शोक ते गया छे जेनाने सर्वे जीवप्राणि मात्रउपर समान छे द्रष्टि तेजेनी एवोजे
आत्मा ते परमात्मा एवाजे श्रीकृष्ण तेनेजाणवा भजवानो अधिकारी छे ॥ केमके प्रथम ज्यारे शिष्य ब्रह्मस्थितिने पा-
मे छे ॥ त्यारे शिष्यएमकहेछेजे हे गुरु हवेहुं नेतमे बेय एकरुप छइये त्यारे गुरुयेकह्युंके हुं ने तुं बे एक नथी नेतुं भू-
ल्यमां हतो तारा ब्रह्मस्वरुपनो प्रकाश करावोपर ब्रह्म छुं ॥ नेतुं तो ब्रह्मरुप एवो मारा अंगनो प्रकाश छे एम जाण्य त्यारे
शिष्येकह्युंके प्रथम तमेमुने एम कह्युं हतुं जे हुं वैराटरुपईश्वर छुं ॥ ते वैराट रुप ईश्वरनुं स्वरुप तो ब्रह्मस्वरुपनी स्थि
तिमां मिथ्या देखाय छे ॥ तेनुं केम समजवुं ॥ त्यारे गुरुयेकह्युंके वैराटरुपईश्वरनुं स्वरुप तो मिथ्या छे ॥ ते मिथ्यास्व
रुपनो धारण नो करनारो जे आत्मा ते सत्य एवुं जे ब्रह्म तेने केम जाणीशके नजाणिशके ॥ अने तुं ने में प्रथम कह्यं

जेहुंइश्वरछुं॥एतोतारिद्रष्टिमांमायानुंआघ्राणहतुंतेज्यांसुधिमाईकद्रष्टिहोयतेनेमनुष्यस्वरुपनेविषेमायापर
परमात्मानोस्वरुपनीहापडेनहि केमकेवेदमांकह्युंछेजे॥ ॥यतोवाचोनिवर्तते॥ अप्राप्यमनसासह॥ ॥
अर्थ॥ ॥जेइंद्रियोअंतःकरणनाग्रहणकर्यामांआवेएहवापरमात्मानथी॥ मारेजिवनेज्यांसुधिइंद्रियोअंतः
करणनेविषेपंचविषयनीवासनायेकरिनेमायानुंआवरणहोयत्यांसुधि तेनेप्रत्यक्ष परमात्मानास्वरुपनोनिश्चय
थतोनथि॥ मारेहवे तुंतारिस्थितिमां विचारकरजे तारिद्रष्टिमांजीवइश्वर मायाकांईदेखायछे॥नथीदेखातुं॥
त्यारेजेनेज्ञानेकरिनेतुंएवोमायापरब्रह्मरुपथयोतो तेज्ञानदातामांमायाकेमहोयनजहोय॥मारेहुंतोब्रह्मनो
प्रकाशक॥एवोपरब्रह्मछुं॥एमजाण्यपछेएविरीतनीब्रह्मस्थितिने पाम्याएवोजेमुक्त तेएमजाणेछेजे प्रत्यक्ष
आत्यंतिकज्ञाननाआपनारा सदगुरु तेजपरब्रह्मछे॥ परमात्माछे दिव्यमूर्तिछे अजन्म्याछे अखंडमूर्तिछे॥अ
नेतेसद्गुरुनी मूर्ति विना बिजुं माईकआकारमात्र तथाजीवइश्वरनाआकारतेसर्वे मिथ्याछे॥एविरीतेजे ब्रह्म-
स्थितिनेपाम्यो तेनीद्रष्टिमांजीवइश्वर माया कांईनथी॥अनेएविस्थीतिनेपाम्योतेने मतेपरमात्मानाअवतारपणन
थिथता॥ केमके तेनीद्रष्टिमां जगतजनथी॥ तोजगतविनाजन्मकेमसंभवे मारे पोतानेपण जन्मनथि तोपोताना
स्वामिएवाजे परमात्माएनेजन्मकेमहोय नजहोय॥ अनेजेनीमाईकद्रष्टि छे तेनेजीवइश्वरमायाजगत सर्वेछे
अनेतेनेअर्थे परमात्मानाअवतार थायछे॥एमकहेवायछे॥ पणपरमात्मातोअजन्म्याछे॥ पणपोतानीइछाये
करिनेजीवोनेजन्म्याएवादेखायछे॥ मारेशंकरस्वामिये सिद्ध स्थितिमांकह्युंकेजीवइश्वर मायानथी॥तेपण
सत्यकह्युंछे॥अनेजेपरमात्माआवताजतानथी नेअवतार धरतानथी॥नेअजन्म्यानेअक्षरधाममांअखंडरह्याछे
तेजआप्रत्यक्षरामकृष्णादिक ज्ञानदातापरमात्माछे॥अनेपरमात्मापोतानाब्रह्मधामनेविषेअखंडरह्याथकाप्र
त्यक्षदर्शनआपेछे॥मारेशंकरस्वामियेकह्युंकेआरामकृष्णादिकतेजकोईदहाडेअवतारधरतानथीतेसत्य

कह्युं छे॥ अनेरामानुजेउपदेशदेवानेअर्थे असिद्धने सिद्धकरवासारु कह्युं केजे परमात्मामायापर नेअक्षरातितछे
ने आजन्म्याने दिव्यमूर्ति छे॥ तेणोज पोतानीस्वइछायेकरिनेजीवोनांकल्याणकरवानेअर्थे रामकृष्णादिक
अवतारनुं धारण करे छे तेपण सत्यकह्युं छे॥ केमकेजोजीवनहोय तोउपदेशकेनेकरवो माटेजीवछे॥ अनेतेजीव
घणाक छे॥ केमकेजीव घणाक नहोय ने एकजीवहोयतोएकनी मूक्तिथायतोसर्वेनीमूक्तिथवीजोइयेने तेनुंजन्म न
मरण टलिजाय तो वांसपछेजगत रहे पुनजोइये॥ ने मूक्ततो घणाकथइ गया छे॥ अनेजे मुक्तथयो ते तो पाछोजन्म
ने धरतानथी॥ अनेजगतमांतोजीवघणाकदेखायछे॥ अनेजीवनेअच्युतनेअखंडकह्यो छे॥ माटेजीवनाककडा
के भागला थतानथी॥ अनेजोजीवना ककडाथता होततोतो थोडाककडानीमुक्तिथात॥ नेथोडाक ककडा जन्ममर
णनेपामतपण तेम तो जीवछेहाय भेदाय एवो नथी॥ एमसर्वेशास्त्र अनेवेद कहे छे॥ माटेजीव घणाकजुदाजुदा छे॥ ए-
विरीतेसत्पुरुषना मुखथकिशास्त्र अनेसांभले तो सर्वेशास्त्रसवजा समजाय अनेसतपुरुषनासमागम विनातोशा
स्त्र अनेसांभलीनेनास्तिथइजवायछे॥ माटेखरा सत्पुरुषनोसमागम करवो॥ तेनुनामजसत्संग छे॥ अनेएवेसत्सं
गे करिने जिवनीतत्कालमूक्तिथायछे॥ मादेतेसत्संग आजतमनेसर्वेनेप्राप्त थयो छे॥ तेतमारा भाग्यनोपार नथि
॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः
॥ ॥संवत॥१९॥ ओगणिसें॥२३॥त्रेविसना पोषवदि॥९॥नवमिने दिवस महाराजश्री
हरिकृष्ण भगवान गाम श्रीधोलकामध्ये सोनीवाद दिवालिनेघर गादितकियानखाविनेढोलियाउपर विराज-
मानथयाहता॥ने सर्वेजरियानीवस्त्रधारणकर्यांहतां॥ ने पीलाने धोला पुष्पना आभूषण सर्वे अंगमां शोभिर-
ह्यांहतां॥ ने पोताना मुखारविंदनीआगलसाधुतथा घणाक हरिभक्तनी सभाभराइनेबेठिहति॥ पछे पंड्या म
हासंकर श्री खेडेथी आव्या॥ तेणे पंड्यानरसैराम वजेरामनां लखेलां छ प्रश्नजो लखरजो ते महाराजना हस्तकमल

मांआप्यो नेएमकह्युंकेहेमहाराजतेनाप्रश्ननाउत्तरकरिआपो॥पछेमहाराजबोल्याजेत्योएनाउत्तरकरियेतेसांभ
लो॥ जेप्रथमप्रश्नएछेजे॥मनुष्यनेपोतानाकल्याणनेवास्तेसर्वथीसारामांसारुंशुंकरवुं॥अनेमागवुंशुं॥नेकेनि
पासेएप्रश्नमागवुं॥हवेतेनोउत्तरजेआत्मानामोक्षनेअर्थे वेदप्रमाणे निष्काम कर्मकरवुं त्यारेतमेकेहेस्योजे क-
र्मतोबंधनकर्त्ताछे॥एमकहेशोतोतेनोउत्तरजेतेकर्मनात्रणभेदछे॥एक वेदमांकह्याप्रमाणे फलनीइछाराखिने
कर्मकरवुं तेनुंनामसकामकर्मछे॥नेतेकर्मबंधनकारिछे॥अनेतेनुंफलस्वर्ग कहेतां उत्तम भोगप्राप्तथायछे॥अने
कर्मतोतेनुंतेवेदमांकह्याप्रमाणेकरवुं॥पण फलनीइछायेरहितज्ञानपामवानेअर्थेकरवुं तेनुं नाम निष्कामकर्म
छे॥अनेजे निष्कामकर्मछे॥ तेतोज्ञानरूपछेकेमके निष्कामकर्म करतां करतांज्ञानथायछे॥नेज्ञानथयुंएजमोक्षछे
॥तेधर्मशास्त्रमांपणकह्युंछे॥जे॥ ॥कर्मणाजायतेज्ञानं॥ ज्ञानान्मोक्षमवाप्यते॥ ॥अर्थ॥ ॥जे
निष्कामकरवाथकिज्ञानथायछे॥नेज्ञानेकरिनेमोक्षथायछे॥ हवेनिष्काम कर्मतेशुं तोप्रत्यक्षपरमात्मातेनीआ-
ज्ञायेकरिनेमोक्षपामवासारुंजेजेकरवुंतेनुंनामनिष्कामकर्मछे॥ तेपणभगवद्गितामांकह्युंछे ॥सर्वधर्मान्परि
तज्य॥मामेकंशरणंव्रज॥अहंत्वां सर्वपापेभ्योमोक्षयिष्यामिमाशुच॥१॥ ॥एविरिते प्रत्यक्ष सद्गुरुनीआ
ज्ञाप्रमाणे वेदविहितनिष्कामकर्मकरवुं॥एजमनुष्यमात्रनेजरुरकरवानुंछे॥अने त्रिजुंकर्मशास्त्रथीअवलुंक
रवुं तेनुंनामनिषेधकर्मछे॥नेते कर्मनुं फलनर्कछे॥अनेवलिएकअकर्मछे॥केहेतां शुभके अशुभकांईनक
रवुं॥तेनुंफलपणनर्कछे॥केमके कांईनकरवुं एमजाणिने शुभके अशुभकर्मनहिकरे तोपण अशुभ कर्मतो
एनीमेलेदेहधारिमात्रनेथयाजकरेछे॥जेमखेतरमांसारुंधान्यतोवावियेनेतेनीरक्षाकरिये त्यारेथायछे॥अनेन
कारुंखडसलादिकतोएनीमेले थायछे॥ तेमशुभकर्मतोकरेत्यारेथाय॥अनेदेहनिर्वाहनेअर्थे अशुभकर्मतो
एनीमेलेरातदिवस थयाजकरेछे अनेवलिजेमवस्त्रनेधोवराविये छिये त्यारेउजलांथायछे॥अनेमेलुंतोएनीमेलेथा

यछे॥ नेवलिजेमघरमांथि झाडुकाढियेछेये त्यारे घरशुद्धथायछे॥ नेकचरो तो घरमां एनीमेजे भरायछे॥ तेमशुभकर्म
तोदाखडोकरिनेकरिये त्यारे थायछे॥ अनेअशुभकर्मतोएनीमेजे थायछे॥ केमकेइंद्रियोअंतःकरण पोतपोताना
विषयमां प्रवरतवारूप कर्मते थयाजकरेछे॥ नेजेनेशुभअशुभनोविवेकनथी॥ तेनेतोअशुभकर्मथयाजकरेछे॥
नेतेनुंफलअधोगतिछे॥ माटेमनुष्यने पोतानाकल्याणनेवास्तेसर्वथीसारामांसारुंएथुंजे नीष्कामकर्मतेजरुर
करवुं॥ अनेमागवुंशुं॥ एप्रश्न॥ तेनोउत्तर॥ जेमागविशान्ति॥ हवेशान्तितेशुं नेशान्तिशाथीथाय॥ तोज्ञानेक
रिनेशान्तिथायछे॥ तेपण कह्युंछेजे॥ ज्ञानाल्लब्ध्वापरमशान्ति॥ अनेअज्ञानछेएजअशांतिछे॥ अनेतेअज्ञानेकरि
नेजन्ममरणगर्भवासनेचोराशिनांमहादुःखभोगववांपडेछे॥ माटेएसर्वेदुःखनेटालेएविशांतितेमागवि॥ हवेशा
न्तिमागवीकेनीपासे॥ एप्रश्न॥ तेनोउत्तर॥ जेपुरुषपुरुषोत्तम एवाजेपरमात्माप्रत्यक्षसद्गुरुतेनीपासेशांतिमागवि
केमकेअपुरणपणुंछेएजअशांतिछे॥ माटेपूरणहोयतेजपूरण करेछे॥ पणअपूरणथकि पूरणथवायनहिं॥ माटे
मनुष्यदेव ब्रह्मानेप्रकृति पुरुष सुधि सर्वेअपूरणछे नेअशांतिवाला छे॥ अनेप्रकृति पुरुष थीपर जेअक्षरब्रह्म
तेपणशान्तिकरवा रुपज्ञान आपिशकतुंनथी॥ केमके ब्रह्मतो निराकारछे नेतेनीदृष्टिमां जिवईश्वर मायाजग
तछेजनहिं॥ माटेकेनेज्ञानआपे॥ नआपे तेसारु ब्रह्मतोजेनो प्रकाशछे॥ एवाजे पर ब्रह्मपरमात्मा प्रत्यक्षसद्गु
रुतेजएकपूरण कामछे॥ माटेअपूरणएवाजेजीवो तेने आत्यंतिकज्ञानआपिने पूरणकामकरिने परमशान्तिरू
पजेमोक्षतेआपेछे॥ माटेप्रत्यक्षसद्गुरुपासेशान्तिमागवि अनेगायत्रिमांपण परमात्मापासेज्ञानेकरिनेशान्तिजमागवानुंकह्युंछे॥ माटेपरमात्मापा
सेमागवु॥ हवेबिजुंप्रश्न॥ जेवेदमार्गनेरस्तेथीचालवुंतेठिकछेकेपूराणमार्गेथीचालवुंतेठिकछे तेनोउत्तर जेवेदशास्त्रनेपूराणतेनोएकजमा
र्गछेपणनोखोमार्गनथी॥ केमके परमात्मानास्वरूपनोजेपूर्णबोधतेनुंनामवेदछे॥ अनेतेवेदनाअर्थनेसाक्षात्कारदेखाडिआप्युंतेनुं
नामशास्त्रछे॥ अनेतेवेदशास्त्रनेज्ञानेकरिनेपरमात्माप्रगटथईनेपोतेशिष्योनेउपदेशआप्योनेपरमपदनेपमाड्यातेमांजेगुरुशिष्यनी

क्रियाचेष्टाने लिख्यातेसर्वे लखाणी तेनुंनाम पुराणछे ॥ मारेवेद शास्त्रनेपुराण तेनो एकजमार्गछे ॥ पणअविरुधबारे समजायतोपुराणका
मएवाजेपरमात्मा तेजप्रगटथईने समजावे कां तेनाएकांतिकसंततेसमजावे त्यारे समजायछे ॥ एप्रश्ननो एजउत्तरछे ॥ हवेत्रीजुंप्रश्नजेकोईस
र्वछे तेनीशक्तिथीजदुनीयानीअंदरथायछे ॥ के बिजाकोई जोगथी थायछे एप्रश्न तेनो उत्तरजेकर्ताछे तेनीशक्तिथीजसर्वथायछे पणतेबिनाबि
जाकोईनुंकर्युंथतुंनथी त्यारितमे कहेशोजेसर्वे कर्तानुंकर्युंथायछे त्यारेपापपुन्यसुखदुःख एसर्वेकर्ता करेछेकेशुं हवे तेनुंतोएमछेजेजेम राजाछे तेनाराज्य
मांराजानुंकर्युंथायछे ॥ मांटेतेराजाये पोतानोहुकमचलायवानेअर्थेसर्वेवस्तीनेसुख करवा सारुं कायदो कर्योछे तेकायदाप्रमाणेचालेछे तेशाहुकार
कहेवायछेनेतेसुखनेपामेछे ॥ अनेते कायदानेजे लोपेछे तेचोरकहेवायछे नेदुःखनेपामछेनेतेनेराजासजाकरेछे तेमपरमात्मा सर्वेना राजा पिण
जछे ॥ तेपरमात्मायेजीवोनेसुखियाकरवाने अर्थे वेदरुपिकायदोकर्योछे ॥ तेवेदरुपीकायदाप्रमाणे निष्का
मकर्मअथवा सकामकर्म करेछे तेआत्मा सुखनेपामेछे ॥ अनेजेतेवेदरुपिकायदानो त्यागकरिने पोताना
मननीखुशिप्रमाणे चालेछे ॥ तेदुःखनेपामेछे ॥ अनेतेपरमात्मातेते पोतानीशक्तिजेकाल कर्ममायानेपुरुष-
द्वारायेशुभअशुभकर्मनाफलने पमाडेछे जेमराजापोतानाचाकरोपासेराज्यनुं कामचलावेछे तेमपरमात्मानीइच्छा
विना कोई बिजानुंकर्युंथतुंनथी ॥ एप्रश्ननो एजउत्तरछे ॥ हवेचोथुंप्रश्नजे कर्म करवाथीजे कांई सारामां सारुं फलपेदा
करवुं ॥ तेथवानुं ॥ केकर्मरहितथीबनीशकेखरुं ॥ नेतेमहोय तो क्रियाशास्त्रनेआधारे ॥ प्रश्न ॥ हवेतेनोउत्तर ॥ जेकर्मक
रवाथीजफलमलेछे ॥ तेजखरुंछे अनेकर्मकर्याविनातो कोईयातनीसिद्धीथतिजनथी तेकर्मपणवेद
विहितमहात्मापुरुषनी आज्ञाये करिने करे त्यारे मनवांछितफलमलेछे ॥ अनेकर्मनो त्यागकरवानुं कह्युंहशे ॥ तेते
अशुभकर्मनो त्यागकरवानुं कह्युंछे ॥ तथाकर्मनाफलनीइच्छानो त्यागकरवानुं कह्युंछे ॥ पणशुभकर्मनोतो क्यारेयत्या
गकरवो नहिं ॥ अनेते शुभकर्मकरिनेज मनोरथ सिद्धथायछे ॥ तेजखरुंछे ॥ एप्रश्ननो एजउत्तरछे ॥ हवेपांचमुंप्रश्न
जेआचारियोये शिष्योनुं कल्याणछे वरपद पामवाने अर्थे कियोउपदेश करवो अनेजेउपदेशपनेजेरितथीशिष्ये

चालवुं ॥ तेरित थीबिजीरीते आचार्योयेचालवाने कियुंशास्त्रहशे ॥ए प्रश्न ॥हवेतेनोउत्तर ॥ जेआचार्योयेशिष्योने छेवट पदपामवानो वेदांतनामहावाक्यनो उपदेशकरवो ॥ ते महावाक्यना बेअर्थ छे ॥ एक वाक्यार्थ छे ॥ ने बिजो लक्षार्थछे ॥ हवेवाक्यार्थनुं महावाक्यजे ॥ अहं ब्रह्मास्मि न् ॥ ॥अर्थ॥ ॥ जेत्रणदेहातित तथा बुंजे निर्गुण निराकार सर्व व्यापक एकरसचैतन्यप्रकाशवान् ब्रह्मजे तुरियापद तेने विषे दृढ स्थिति थायछे ॥ तेएमकहेछे जेहुं-ब्रह्मछुं ॥ नेहुं विना बिजुं जिवईश्वर मायाकांईनथी एम जाणे छे तोपण तेने जन्ममरणनुं कारणजे अर्धमात्रा रुप अहंभ्रांति तेन थिटलति ॥ केमके निराकारपणे अधरपधर ब्रह्ममां रहेवातुं नथी ॥ मारे अहं ब्रह्मास्मिन् ॥ पद सिद्धकर्युंहोय ने मायादृष्टिमांथी टलिगईहोय तोपणज्यांसुधि महावाक्यना लक्षार्थनीसिद्ध कर्यो नहोय त्यांसुधि देह धरवो पडे छे ॥ हवे लक्षार्थनुं महावाक्यएम छे जे ॥ ॥तवदासोहंदासोहं सोहं ॥ ॥अर्थ॥ ॥जेब्रह्मरुपएवो परब्रह्म प्रत्यक्षज्ञानदाता सद्गुरु परमात्मा तेनो हुं दास छुं ॥ ए रिते परमात्माने विषे दास पणुं दृढ थायछे त्यारे जन्म मरणनुं कारण जे अर्धमात्रा रुप महामाया ते टलेछे ॥ तेपण भगवद्गीतामां भगवानेकह्युंछे ॥ ॥सर्वधर्मान्परित्यज्य ॥ मामेकंशरणंव्रज ॥ अहं त्वं सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुच ॥१॥ ब्रह्मभुतप्रसन्नात्मा नशोचति न कांक्षति ॥ समसर्वेषु भुतेषु मद्भक्तिं लभते परां ॥२॥ दैविएषां गुणमयि मम माया दुरत्यया ॥ मामेवये प्रपद्यंते ॥ मायामेतांतरंति ते ॥३॥ ॥ए रिते ब्रह्मरुप थईने परब्रह्म प्रत्यक्षने पामवुं ॥ ए जछेवट पदपामवानो उपदेश आपवो ॥ ए प्रश्ननो एज उत्तर छे ॥ हवे पांचमा प्रश्नमां बिजुं प्रश्न ॥ जे शिष्यने जे उपदेशथीने जेरीतथी चालवुं तेथी बिजीरीते आचारिये चालवाने कियुंशास्त्र हशे ॥ हवे तेनो उत्तर ॥ जेजेम मेहेताजीनुं व्रतांतने निशालियानुं वरतांत एकनथी ॥ केमके निशालियाये मेहेताजीने नमवुं सेवाकरवीने पुछवुंने जे विद्यानो पाठ आपे तेनुं श्रवण मनन ने निदध्यास करवो ॥ नेतेनी आज्ञामां वरतवुं ॥ ने मेहेताजीने तेमांथी कांईन करवुं ॥ तेम आचारियोये शिष्योना संशयोने दूर करवाने पोताने

तेथातेनाभाव प्रमाणेकरावविने शिष्योने पोतानीआज्ञामांवरतावषा ॥ नेपोते तो पोतानीइच्छा मां आवेतेमवरतवु
केमकेमायापर ॥ ॥कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुसमर्थ ॥ ॥होयतेनेजआचार्यपदवीघटेछे ॥ माटे तेनाआचरण
प्रमाणे शिष्यने आचरण नकरवुं ॥ केमकेशंकराचार्य नाशिष्ये शंकर स्वामिनाजेवुंआचरण कर्युं तोतेने विमुखक
रिने काढिमुक्या ॥ माटेगुरुशिष्यनुं वर्तातजुदुंछुं ॥ एप्रश्ननो एज उत्तरछे ॥ हवे छठ्ठु प्रश्न ॥ जेआचार्ये पोतानाक-
ल्याणनेमाटे प्रथम केछेवट कियोरस्तो पकडवो ॥ एप्रश्न ॥ हवे तेनो उत्तर ॥ जे आचार्ये पोताना कल्याणमां कांई
अधूरुनहोय तेज ॥ खरा आचार्यछे ॥ अनेते आचार्यने प्रथमथीतेछेवट सुधि एरस्तोपकडवो ॥ जेशिष्योनुंकल्याण
थाय एवोउपदेश निरआलसथईने करवोएजआचार्यनुंकल्याणछे ॥ एटलेरुडुंकहेतां आचार्यनोएजधर्मछे ॥
पणते विना बिजुंकांईआचार्यने कल्याण पामवामांअधुरुनथी ॥ केमके जेने विषे मायानो लेश न होय तेनेजआ
चार्य पदवि घटे छे अनेतेनेज गुरुपणुं घटेछे ॥ नेते विनानाअधूरा विषयनीवासनावाला होयने तेआचार्यथईने फरेछे
केगुरुथईने फरेछे तेतोपापिछे नेकहेवामात्र ना आचार्य छे नेकहेवामात्रनागुरुछे ॥ पणमायापर स्थितिनहोय ॥
तेखरा आचार्य के खरा गुरु कहेवायनहिं ॥ माटे खरा आचार्यनेखरागुरुहोय तेने तो शिष्योनुं कल्याणकरवानो निर
आलसथईने उपदेशकरवो एजतेनुंकल्याणछे ॥ एविरीते विस्तारनाभयथीसंक्षेप मात्र प्रश्नना उत्तर लख्याछे ॥ अ-
ने सर्वे संषय मात्र समागमथी टलशे ॥ ॥ इति श्री गुरुसिद्धांतसमाप्तः ॥ ॥

श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ॥ ॥ संवत ॥ १९ ॥ ओगणिसें ॥ २३ ॥ त्रेविसना मह्राशुदि ॥ ५ ॥ पंचमीने दिवस
महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री धोजका मध्ये शोनी गीरधरनी मातुश्रीबाई धोलिनेघेर पुष्पनाहिंडोळाउपरविराज
मानथया हताने सर्वे वसंति केशरियां वस्त्रधारण कर्यांहतां ॥ नेपुष्पनाआभूषण सर्वे अंगमां शोभिरह्यां हतां ॥
ने केशरनीअरचाने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ नेपोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक विद्वानआ-

स्लणे तथादेशदेशनाहरि भक्तनीमोटिसभाभराईनेबेठिहतीपछेसंध्याआर्ति थयाकेडेमहाराजसर्वे सभाप्रत्ये बोल्या
जे ॥ सर्वेसभाने आमेएकप्रश्नपुछीयेछैयेजेकर्मउपासनानेज्ञान एत्रणछे ॥तेवेदमांकह्याप्रमाणे ज्ञानएत्रणेसिद्धां-
तछे के कल्पितछे॥ तेनोउत्तर ब्राह्मणमंडलकरो॥ पछे अद्वैत ज्ञाननामतमांहेनोएक ब्राह्मणहतो ते बोल्यो॥
केकर्म उपासनानेज्ञान।एत्रणेसिद्धांतछे।।पछेमहाराजबोल्याजेअद्वैतब्रह्मनाज्ञानवाळाएमकहेछेजे॥ ॥
सर्वं खल्विदं ब्रह्म॥ ॥एविरीतेसर्वे ब्रह्मछे॥ कहेतां जीवनथीइश्वरनथीनेमनुष्यपशुपंखीकिटपतंग सर्वरुपे
भगवानजथयाछे॥ एमकहेछे॥ अनेवेदमांतोएमकह्युंछे जेजीवनीबचेनेपरमात्मानीवचेअंतरायछे तेनेटाळवो तेनुं
नामतोकर्म छे ॥ तेअंतरायपोतानीमेळेटळतो नथी केमकेपोतानीमेळेटळतो होयतो कोईजीवअंतरायरहेवाशुंकरव
दिये ॥नेजन्ममरणमांदुःखशिदपामे ।।माटेकामलोभादिक जिवनाअंतरायतो तेपोतानीमेळेटळतानथी॥ तेसारुं
गुरुकरवोपडेछे॥ तेगुरुनीआज्ञापाळवि॥ तेनुंनामकर्मकांडछे॥ अनेतेगुरुनीसेवाकरवी तेनुं नामउपासनाकांडछे
अनेजेनेजीवनथीजाणतो तेनेजाणावि दियेछे ॥ तेनेयथार्थजाणवुं तेनुंनामज्ञानछे॥ माटेएकजसर्वे परमात्माहोयतो
अंतरायक्योंनोहोय नेअंतरायनहोयत्यारेआज्ञाकोईनीशुंकरवापाळवीपडे ॥नेसेवाशुंकरवाकरवीपडे नेपरमात्मापो
तेएकजछे तो तेने ज्ञान केनुंपामवुंछे॥ केमकेपोतेपोतानेकांई भूलेजेपोतेपोतानेजाणवुंपडे अनेपोतेपोतानेभूलेत्या
रे तो ते परमात्मा अज्ञानीठरे ।। माटेपरमात्माअज्ञानीनथी तेनुंकेमसमजवुंतेकहो ।पछेकेटलाकविद्वानब्राह्म-
णबेठाहता ॥ तेणेउत्तरकरवामांड्यो पणकोईथी यथार्थ उत्तरथयोनहिं॥ पछेमहाराजबोल्याजे जिवइश्वरमायाब्र
ह्मनेपरब्रह्म॥एवापांचभेदअनादिनाछे ।।तेमांजीवमायानेआधिनछे॥ नेइश्वरमायाना नियंताछे नेब्रह्मनेविषेमाया
नो लेशनथी॥ अनेजेपरब्रह्मछे ॥ तेतोजीवइश्वरमायानेब्रह्मएचारनाआधारछे॥ नेकरताछे नेतेथीपरछे अनेतेपरब्र
ह्मप्रत्यक्ष रामकृष्णादिक तेजपरमात्माछे ॥ नेते प्रत्यक्षनोआश्रय जेजीवकरेछे तेजीवनेज्ञाने करिने मायानुंआवरण

दजाधिने ब्रह्मरूपकरेछे।।नेतेजीव अनादिनोअज्ञानीछे।। नेपरमात्माथीजुदोछे तेनेप्रत्यक्ष परमात्मा पोताना मन्यथाकर तुपणानागुणे करिने ब्रह्मरुप करेछे।।नेपोताना धाममां लेईजायछे।। ।।इतिश्रीमुरव सिद्धांतसमाप्त ।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ।।संवत।।१९।।ओगणिसे।।२४।।चोविसना।। कारतगवदि।।१३।।तेरस्नानेदिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्रीडभासि मध्ये पटेल भक्त लालदासहीरजीने घेरआथमणाबारना ओरडानी आगलचोकमां गादितकिये जुक्त पलंगबिछाविने तेउपर विराज मानथयाहता।। नेसर्वे जरियानीवस्त्र धारण कर्यां हतां अनेसर्वे अंगने विषे गलगोटानापिलापुष्पनां आभूषण शोभीरह्यां हतांने ललाट नेपीषे कंकुनोचांदलो कर्योहतोने पोतानामुखार्विंदनी आगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनी मोटिसभा भराईने बेठिहति।। पछेसंध्याआर्ति थयाकेडे महाराजश्रीहरिकृष्णमहाराज सर्वे सभाप्रत्ये कृपादृष्टि करिने बोल्या।।जेसर्वे स्त रतदेईने सांभलजो।। आज एक वार्ता करविछे ।।अने आजेवार्ता करीशुं।।तेनेजेसमजशे तेनोजमोक्ष थाशे।।पणतेवा र्तासमज्याविना बिजा कोटिक साधन करे तो पण तेनोमोक्ष थाय नहिं।। तेवार्ता कहिये छिये।। जेआत्मानामोक्षनेअ र्थेजे वेदनुज्ञानपामवुंजोईये छिये ।।पणते वेदनुं ज्ञान समजवुं घणुं कठण छे ।।अनेतेज्ञान समज्याविना जीवनो मोक्षथतो नथी अनेजे वेदनुज्ञानछे ते परमात्मानाश्रीमुखनीजवाणीछे।। पणतेवेदनु ज्ञान सर्वेने समज वुं घणुं कठणछे माटेतेवे दनाअर्थने जणाववासारु गौतमादिक महत ऋषियोये ।।छशास्त्र कर्यांछे।।तेशास्त्रे करिनेवेदनो अर्थ साक्षात् कारदेखायछे तेमाटेए छशास्त्र ने षड्दर्शन कहेछे तेउपर शास्त्र प्रकारनो।। ।।श्लोक।। ।।द्वौतर्कौद्वेतमि मांसो।।द्वौयोगावितिषद्बुधः।। वेदार्थदर्शकत्वेनदर्शनानि प्रपच्यते।।१।। ।।अर्थ।। ।।बेतर्कदर्शन एक न्यायशास्त्र ने बिजुं वैषेकिशास्त्र।।अने बेमिमांसा ।।एकपूर्व मिमांसाने बिजुं उत्तर मिमांसा।। पूर्वमिमांसाएटले धर्मशास्त्र।। अनेउत्तर मिमांसाएटलेवेदांतशास्त्र।। अनेबे योगशास्त्र एक सांख्यशास्त्रने बिजुं पातांजलि

स्त्र ॥एछ बेदनाअर्थनेदेखाडेछे॥माटेतेनेपंडितपुरुष षट दरशनकहेछे॥एछमांथीएकन्यायशास्त्रछे तेनोमत
एमछे जे ॥जेवस्तुआद्यहोयतेअंतेरहे छे॥एटलेआद्यवस्तुनोनाशथतोनथी ॥माटेतमनेसर्वेनेहुंपुछुं छुं जे एक
आजीवछेनेएकजीवनोदेहछे॥एबेएकदस्रोकेजुदाजुदाहशोतेकहो॥पछेसर्वे बोल्याजे देहनेजीवतोबेयजुदाजु
दाछे।पछेवलिमहाराजबोल्याजेदेहनेजीवजुदातोखरा॥पणतेजीवदेहनाभेगोउत्पन्नथयोछे॥केदेहनामोरनोछे
केदेहनाकेडे वांसेथीथयोछे॥तेकहो॥पछेतेनोउत्तरकोईथी थयोनहिं॥ पछेमहाराजबोल्याजेएनोउत्तरएमछेजे॥जि
वात्मातोअनादिनोछेछेनेछे पणतेजीवेआवाचोराशिमां अनेकदेहधारणकस्याछे॥हवेकोईनेएमशंकाथायजे जिवे
अनेकदेहधारण कस्याछे ।नेजिवदेहनीपेहेलोछे॥तेनुंप्रमाणशुं॥तोतेनुंप्रमाणएछेजे ॥देहतो पंचभूतनो विकार छे
तेपंच भूततोजडछे॥माटेजडपदार्थनोतो धर्मएवोछे॥जेपोतानीमेलेजुदुपड्युहोय तोभेगुथईशकेनहिं ॥अनेभेगुप-
ड्युंहोय तोजुदुथईशकेनहि॥जेमबेपथराभेगापड्याहोय तोतेपोत्तानीमेलेजुदाथईशकेनहिं॥ अनेजुदापड्याहोयतो
पोतानीमेले भेगाथईशकेनहिं॥ अने जो कोकजीवतोपुरुषजुदाहोयतेनेभेगाकरेने भेगा होय तेनेजुदाकरे त्यारेथाय
पणते विनाजुदाकेभेगाथायनहि ॥ तेमपांचभूतनाशीणाशीणाप्रमाणो जुदाजुदाछे तेप्रमाणेछे तेनोजेदेहबंधायछे
तेपेहेलो चैतनआत्मानहोय तोजडवस्तुनोपनीमेजे देह बंधायनहि॥ माटेदेहनीमोरनो पेहेलोचैतन्यआत्माछे॥ते
आत्मायेआकरषण करिनेदेहउत्पन्नकस्योछे ॥तेउपरवेदनु प्रमाण॥ ॥श्रुति॥ ॥तस्माद्दात्मनः आका-
श संभुतः आकाशाद्वायुः॥वायोरग्निः॥ अग्नेराप॥अभ्यः पृथ्वि॥ पृथ्वि पृथिव्या ओषधयः॥ओषधिभ्योऽनः अन्ना-
त्पुरुषः॥ ॥अर्थ॥ ॥आत्माथकिआकाशउत्पन्नथयोछेनेआकाशथकिवायुथयो छे ॥वायुथकिअ
ग्निथयोछे॥अग्निथकिजलथयुंछेने जलथकि पृथ्वी थईछे॥नेपृथ्वीथकि ओषधिथईछे नेऔषधिथकिअन्न-
थयुंछे॥ नेअन्नथकिपुरुष एटलेदेह थयो छे॥ एविरीते चैतन आत्माजेतें देहथयापहेलो हतो तेणेआकर्षणकरि

ने आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी तेनां प्रमाणो जुदां जुदां हतां तेने भेगां करिने तेनो देह उत्पन्न करिने ते देहमां आत्मा र
ह्यो छे ॥ माटे देहना पेहेलो जीवात्मा छे ॥ अने ते देहमां आत्मा होय त्यां सुधि देह सचेतन रहे छे ॥ अने आत्मा देहमांथी नि
सरि जाय छे त्यारे देहनाश पामे छे ने पंचभूतना प्रमाणो क्षीण क्षीण थईने पाछा उडि जाय छे ॥ माटे जिव देहना पहेलो
छे ॥ ए वात सिद्ध छे ॥ अने ते वातने जे कोई अज्ञाने करिने खोटि कहे तो ते मुरख कहेवाय ॥ अने वलि केटलाक वेद धर्म
थी विरुद्ध मतवाला छे ते एम कहे छे जे आत्माने आ पेहेलो वहेलो जन्म थयो छे ॥ पण आगल जन्म नो होतो ॥ अ
ने हवे आ देहमांथी आत्मा निकलशे एटले फरिने जन्म नहि थाय ॥ अने जो आत्माने आ देहनी पेहेलो आगल जन्म हो
यतो अमने सांभरे नहिं ॥ माटे पूर्वनुं कांई पण सांभरतुं नथि ॥ ते सारुं एम जाणिये छिये जे आत्माने पूर्वे जन्म न होतो ॥
अने पूर्वे जन्म नो होतो माटे हवे पाछल जन्म पण नहि थाय तो ए वात खोटि छे ॥ केमके आत्माने पेहेलो ज न्म हतो प
ण ते सांभरतो नथी ॥ ते सारुं तुं एम कहे छे जे ॥ मारे जन्म न होतो पण ते सांभरे तो नहि केम सांभरे नहिं तो जीवने अज्ञान
छे माटे सांभरतो नथी ॥ तेनुं द्रष्टांत जे जेम तुं नानो छ महिनानो अण समजु बालक हतो ते दहाडे तुं शुं करतो हतो ते कां
ई सांभरे छे ॥ नथी सांभरतुं ॥ माटे ते सांभरतुं नथी ते सारुं तुं एम कहिश जे मारे बालपणुं न होतुं ॥ एम कहीश तो
तु मुरख कहेवाईश ॥ केमके बालपणुं तो जरुर हतुं ॥ पण ते अज्ञान अवस्था हती माटे सांभरतुं नथि ॥ तेम जीवने आ
गल पूर्वे जन्म हता ॥ पण जीवने अनादिनुं अज्ञान छे माटे सांभरतुं नथी ॥ अने पूर्वे जन्म हता तो पाछल जन्म पण जरूर
थशे ॥ केमके आद्य होय ते अंत रहे छे ॥ ए बो वेदशास्त्रनो न्याय छे ते कोई काले मिथ्या थाय नहि ॥ एवि रीते जिवने
मांथे अनेक फेरा जन्म मरण छे ॥ ए वात सिध छे ॥ हवे एक बिजुं पुछुं छुं के आ सर्वे देह छे ते बधाय देहमां जीव एक छे के
देह देह प्रत्ये जुदा जुदा घणाक जीव छे ते कहो पछे एक मस्त्क वेदांति ब्राह्मण बेठो हतो तेणे कह्युं के सर्वे देहमां जीव तो
एकज छे ॥ पछे महाराज बोल्या जे सर्व देहमां एक जीव नथी जीव तो देह देह प्रत्ये जुदा जुदा छे अने कहे छे केमके जुदा जुदा

नहोयने सर्वेनो एकज जीव होय तो एक जीवनो मोक्ष थाय त्यारे सर्वेनो मोक्ष थयो जोईये ने एकना मननुं बिजाने जाण्युं जोईये ने एक पाप करे तो सर्वेने पाप लाग्युं जोईये ने एक मरि जाय तो सर्वेने मरिजवुं जोईये॥ पण ते तो कांई तेमांथी थतुं नथी॥ माटे जीव जुदा जुदा घणा कछे॥ ए वात पण सिद्ध छे॥ अने जे मुरख छे ने अतिशे अज्ञानी छे ने जेने घणां कपाप कर्या छे॥ ते एम कहे छे जे सर्वेनो एक जीव छे॥ पण जीव जुदा जुदा अने क छे॥ अने सर्वे जिवना आधार ने सर्वेना प्रकाशक एवा परमात्मा भगवान ते एक छे ने सर्वे जीवोने प्रकाश करे छे॥ जेम आपणी आंख्यो जुदि जुदि अनेक छे ने ते आंखनो प्रकाशक सूर्य ते एक छे॥ तेम जीव अनेक छे ने ते जिवोना प्रकाश सूर्यनी पेठे परमात्मा भगवान एक छे॥ अने ते परमात्मा मायापर छे ने अजन्मा छे॥ अने जीव सर्व माया मां छे॥ ने जन्म मरण ने पामे छे॥ ते जन्म मरण ने जीव शे एणे करीने पामे छे तो जीवने आत्मा परमात्मा ना स्वरूपनुं अज्ञान छे॥ ते एणे करिने जन्म मरण ने पामे छे त्यां वेदनी श्रुति॥ ॥आत्माज्ञानात् जगत भाति॥ ॥ ॥अर्थ॥ ॥जीव जे ते आत्मा परमात्माना अज्ञाने करिने जगतमां जन्म मरणने पामे छे ते अज्ञान जीवने अनादिनुं छे॥ माटे न्यायशास्त्रमां एम कह्युं छे जे जे अनाद्य होय ते अंत रहे छे॥ पण तेनो नाश थतो नथी॥ माटे जीवने अनादिनुं अज्ञान छे॥ ते अज्ञान नाश पामवानुं नहिं॥ अने अज्ञान गया विना जीवनो मोक्ष थाय नहिं॥ त्यां वेदनी श्रुतिः॥ ॥ ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः॥ ॥अर्थ॥ ॥ज्ञान विना मुक्ति थाय नहिं॥ अने जो एम कहिये जे जीव तो प्रथम शुद्ध ने ज्ञानी हतो ने पछे अज्ञान थयुं छे माटे अज्ञान नाश थशे ने जीव मोक्षने पामशे एम कहिये तो तेमां पण एक बाध आवे छे॥ जे जीव पेहेलो शुद्ध ने ज्ञानी हतो॥ तेने पछे अज्ञान थयुं छे॥ त्यारे ते शुद्ध ने ज्ञानी थशे तो पण ते पाछुं तेने वलि पूर्वना स्वभाव प्रमाणे अज्ञान उपजशे केमके एकवार शुद्ध हतो॥ तेने अज्ञान थयुं तो तेने फरि पण अज्ञान थाशे वरुं॥ माटे ए विरीते होय तो मोक्ष ज खोटो ठरे छे केमके अनादिनुं अज्ञान कहिये तो जे अनादि होय तेनो नाश थाय नहिं॥ अने पेहेलो जीव शुद्ध हतो ने पछे अज्ञान थयुं छे॥ एम कहिये तो जेने एकवार अज्ञान थयुं तेने फरि पण अज्ञान थाशे

हमाटे एविरीतेमोक्षनो मारगखोटोथईजायछे॥ त्यारे कोईएमकहेसेजे जिवशुद्ध जनथिने सर्वमांएक परमात्माजछे ॥ बिजुंकोईनथि॥ एमकहेशोतो त्यांपण एकमोटो बाधआवेछे तेशो बाधआवेछे ॥ तोएकपरमात्माजसर्वेमांहोयअने जीव मुद्दल नहोयतोवेदनाकर्मकांड उपासना कांडने ज्ञान कांड ते खोटाथाय केमकेकर्मएटलेकोईकनी आज्ञाकोई कनेपालवी ॥ अनेउपासना एटले शिष्यगुरुनीसेवाकरवि ॥ अनेज्ञानएटलेजेवस्तु जेवस्तुनेनथीजाणतोतेनेगुरु जणावे तेप्रमाणेजाणवुं माटेने तोएक सर्वे मां परमात्मा ज होयतोकोणकेनीआज्ञापालेने कोणकेनीसेवाकरेने को णकेनेजाणे एवीरीतेजो एकजसर्वेमां परमात्माजहोयतोवेदशास्त्रसर्वेखोटां ठरेछे अनेजन्ममरण सुखदुःख अज्ञा न मोह माया कर्मउपासना ज्ञानतेसर्वे परमात्मानेमाथे ठरेअने आभूलेला सरखाजीवजणायछे तेपरमात्मापोतेपो- तानेज भूलिजायनेपोतेपोतानेमानेनहिं॥ वलीपोत पोताने मनावेछे नेपोतेपोतासाथेलडाईकरेछे नेपोतानेपोते मानतोनथी॥ नेपोते पोतानीचोरीकरेछे॥नेवलिपोतेपोतानेकेदमां नाखेछे॥ एविरीतेपरमात्माजपोते महाक्लेश- नेपामे केशुं माटेएवालपणखोटिछे ॥ नेपरमात्मातो सर्वथीजुदाछे॥ पणपरमात्माएवा अज्ञानीहोयनहि ॥ माटेएविरी तेमोक्षनोमारग पोतानीमेले कोई मोटादेवब्रह्मादिकनेपण जडतो नथी॥ अनेजीवपोतानीमेलेजेमजेम छुटवानाउ पायकरेछे तेमतेमउलटोबंधातोजायछे॥ माटेजीवनोमोक्ष थवोएतोघणुंजकठण कामछे तेसारुंसर्वे जीवना जीवन नेस- र्वेथीपरनेसर्वेनाप्रकाशक एवाजेपरमात्माभगवान तेजपोतेपोतानीस्वइच्छायेकरिने माया पर रह्याथका जीवोनेज्ञान आपिनेमोक्षकरवानेअर्थे मनुष्यस्वरूपनुंधारणकरिने ज्ञान आपिने जीवोने मायापर करेछे।। त्यारेजतेजीवोनुंअज्ञा नटलेछे ॥ नेमोक्षनेपामेछे।। पणते विनामोक्षथतोनथी त्यारे तेमां कोईकनेएमशंकाथायजे जीवने अनादितुंअज्ञा- नछे॥ तेन्याय शास्त्रमां तमे एमकहेताहता ॥ जेजेअनादि होय तेनोतो नाशथायनहि नेवलि कहोछो जेप्रगट भगवा नमले नेतेज्ञानआपे तोअज्ञाननोनाशथाय नेजीवनी मुक्तिथाय।। एमकह्युंतेतुंकेमठरे ।।एमशंकाथायतोतेनोउत्त

एमछेजेमायापरएवाजेएकअद्वित्परमात्माछेतेकेवाछे॥ ॥तोकर्तुंमकर्तुंनेअन्यथाकर्तुंसमर्थछे॥ ॥तेकर्तुंपणानेजेपरमात्मानेविषेगुणछेतेणेकरिनेतोपरमात्माथेजगतनीउत्पत्तिकरिछे॥ केमकेजगतनीउत्पत्तिनीपेहेलांजीवमहामायानेविषेघोरसुषुप्तिमांहता त्यारे ते वखतेजीवोनेकर्मपणनोहोतुंनेदेहपणनहोतो केमकेदेहविनाकर्मथायनहि॥ नेकर्म विनादेहधरायनहि॥ माटेकर्मपण नहोतुंनेदेहपण नहोतो माटेसमरथएवाजेपरमात्मातेणेकृपाकरिनेजीवोनेमायापरकरवासारुजगतनीउत्पत्तिकरिनेदेह सृजिआप्याछे॥तेनाउपरप्रमाणश्रीमद्भागवतनारद्दामस्कंधमां॥८७॥सत्याशीमाअध्यायमां॥२॥ विजोश्लोक॥ ॥बुद्धिंद्रियमनःप्राणान्जनानामसृजत्प्रभुः॥मात्रार्थंच भवार्थंच आत्मनेकल्पनायच॥२॥ अर्थ॥ ॥प्रभुजेहरि तेजेतेजनजेजीव ते मनांबुद्धिंद्रियोमननेप्राणतेसरजीआपेछे॥ तेशामाटे के विषयादिक भोगभोगववानेअर्थेअने जन्मलेवानेअर्थेअनेजन्म लेइनेकर्मकरवानेअर्थे एटले परलोकमांजइने भोगकरवानेअर्थेअनेअंतेअकल्पनाय एटलेसर्वलोकमोगादिकथकिवैराग पांमिने पोतानामननीकल्पनानो नासथवानीमाटे एटलेमोक्षनेअर्थेपरमात्माजेतेदेहसरजीआपेछे॥एमविरीते परमात्मायेपोतानासत्यसंकल्परुपिकर्तापणानागुणेकरिने प्रथमजगतनीउत्पत्तिकरिछे तेणेकरिनेपरमात्माकरताकहेवायछे॥ अनेतेसृष्टिसरज्यापछेजीवजेवाजेवांकर्मकरेछे॥ तेवांतेवांफलतेनेवैराजपुरुषरुपईश्वरआपेछे॥पणपरमात्मापोतेनथीआपता॥ अनेपोतेतोपोतानाअक्षरधामनेविषे अखंडरह्याथकाअनंतकोटिमुक्तनेदर्शनआपेछे॥ पणपोतेबिजुंकांइ नथीकरता॥ माटे परमात्माअकर्ताकहेवायछे॥ ॥अनेपोतानाअन्यथाकर्तापणानागुणे करिनेजीवोनेजेअनादिनुंअज्ञानने मायानुंबंधनछे तेने राम कृष्णादिक अवतारनुं धारण करिनेजीवोनेज्ञानआपिनेजे अज्ञानअनादिनुंछे तेनोनासकरेछे॥ नेजीवोनेब्रह्मरुप करिनेमायानुं बंधनटालिने पोतानाप्रत्यक्षस्वरुपनुं ध्यान करावीने भागवतीतनुं एटले दिव्यमूर्ति धरावीने पोताना

साधर्म पणाने पमाडे छे केहेतां जेवा पोते परमात्मा कालकर्म मायाये रहित छे तेवो तेनो भक्त काल कर्म मायाये रहित
थाय छे ॥ माटे प्रत्यक्ष परमात्माना अवतार जे राम कृष्णादिक भगवान तेने आश्रये करिने जजीवनी मुक्ति थाय छे
पण ते विना बिजा कोटि साधन करे तो पण जीवनुं अज्ञानने मायानुं बंधन तेटलें नहिं ॥ तेउपर एक प्राकृत साखि छे॥
॥ ॥छुट्याना उपाय करे ॥ तेम तेम जीव बंधाय ॥ आप बले छुटे नहिं ॥ छोडे त्रिभोवनराय॥ ॥वलि
तेउपर गिताना ॥१८॥ अढारमा अध्यायमां ॥ ६६॥ मो श्लोक॥ ॥ सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज॥ अ
हंत्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुच॥ ६६॥ वलि गीताना अध्यायनो श्लोक ॥ ॥दैवियेषा गुणमयिमम-
माया दुरत्यया॥ मामेव ये प्रपद्यंते ॥ मायामेतां तरंति ते ॥ ॥ एविरीते वेदशास्त्रने पुराणादिकने विषे कहेलुं
छे जे ॥ ॥ कर्तुमकर्तुने अन्यथाकर्तु समरथ ॥ ॥ एवा जे परमात्मा ते ज प्रत्यक्ष मनुष्यस्वरूपनुं धारण क
रिने जीवोने ज्ञान आपे छे त्यारे जजीवनु आत्यंतिक मोक्ष थाय छे ॥ ते पूर्वे पण जेना जेना मोक्ष थया छे ते पण प्रत्य
क्ष राम कृष्णादिक भगवान जेने मल्या छे ने तेनो आश्रय करिने ते थकि ज्ञान पाम्या छे तेना ज मोक्ष थया छे॥ मा
टे आज पण ते प्रत्यक्ष अमारो आश्रय करिने अमारा थकि ज्ञान पामशे त्यारे तेनो आत्यंतिक मोक्ष थशे अने आ
ज नहि समजाय तो आगल पण प्रत्यक्ष परमात्मा पृथ्वी उपर दशे ने तेनो आश्रय करशे त्यारे ज तेनो पण मोक्ष थशे प
ण प्रत्यक्ष परमात्मा मल्या विना कांई जीवनो मोक्ष थयो नथी॥ ने थशे पण नहिं॥ ए सिद्धांत वारता छे ॥ माटे आ वार्ता
सर्वे जीवप्राणिमात्रने जरूर एक समजवानी छे ॥ अने आ वार्ता जेने समजाणी तेने तो मोक्षना मारगनो मुद्दो हाथ
आव्यो जाणवो ॥ अने प्रत्यक्ष राम कृष्णादिक भगवानना अवतारनो आश्रय मुकिने केहतां तेनो त्याग करिने बिजां
अनंत साधन करे तथा अनंत ज्ञान कथे वैराग राखे भेख लिये संन्यासि थाय परमहंस थाय उंधे मांथे तप करे पण ते
सर्वे तेनां साधन व्यर्था छे॥ अने तेणे करिने तेने कांई पण सिधि थति नथी केमके जे सर्वेथी पर ने अक्षरातित

परमात्मा पर ब्रह्म छे ते दिव्य मूर्त्तिमान छे ॥ ने जे थी पर कोई नथी तेना तेज परमात्मा पोते राम कृष्णादिक अवतारनुं धारण करे छे ॥ अने तेनो आश्रय जे जे जीव करे छे तेनोज साक्षात्कार आत्यंतिक मोक्ष थाय छे॥ ॥
॥इति श्री मुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्री हरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥
संवत॥१९॥ओगणिसें ॥२४॥चोविसना कारतग वदि॥१४॥ चतुर्दशिने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान ॥ गाम श्री डभासि मध्ये भट परशोत्तम बापुजीने घेर उत्तरादे बार मेडिनी रवेश मां हिंडोलाखाट उपर बिराजमान थया हता॥ ने निल्ला किनखापनो सुरवाल धारण कर्यो हतो नेसोने रिडग लिपेहेरी हतीने निलारंगनो सोनेरि रेटो धारण करिने ते उपर कसुंबल सोनेरी कोरना छेडानुं सेलुं बांध्युं हतुं ॥ ने एक सेलुं खभे नाख्युं हतुं ने सोनेरि कसुंबल पाघ मुस्तक उपर धारण करि हति॥ ने पीला पुष्पना हार कंठ मां धारण कर्या हता ने पाघ मां तोरा बे कोरे लटकता हता नेहाथने विषे पुष्पना बाजुने गजरा धारण कर्या हता॥ ने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हति॥ पछे ते सभामां जामनगरनो पूराणि ब्राह्मण बेठो हतो तेने महाराजे प्रश्न पुछ्युं जे परमात्मा भगवान छे ते मूर्तिमान छे के निराकार छे॥ ते कहो॥ पछे ते ब्राह्मणे कह्युं के भगवान निराकार छे॥ अने साकार पण कहेवाय छे पछे महाराज बोल्या जे के विरीते भगवान निराकार छे॥ ने के विरीते साकार छे॥ पछे ते ब्राह्मणे कह्युं के निराकार तो सर्वव्यापक छे ने ते भगवान विना अणु पण खालि नथी अने ते भगवान माथी राम कृष्णादिक अवतार थाय छे तेणे करिने भगवान साकार कहेवाय छे पछे महाराज बोल्या जे निराकार थकि साकार केम थाय त्यारे ते ब्राह्मणे कह्युं के निराकार थकि जेम सर्व सृष्टि थई छे तेम राम कृष्णादिक भगवानना अवतार थया छे॥ पछे महाराज बोल्या जे ॥ सृष्टि थई छे ते विजरीते राम कृष्णादिक भगवानना अवतार होय त्यारे तो सर्वे सरखा कहेवाय माटे सर्वेनुं भजन कर्युं जोईये॥ ते सर्वेनुं तो भजन कोई करतुं नथी ने राम कृष्णादिकनुं भजन थाय छे॥ तेनुं शुं कारण हशे पछे ते ब्राह्मणे हाथ जोडिने कह्युं के हे महाराज जेम होय तेम यथार्थ तमे

अमने समजावो॥ पछेमहाराजबोल्याजे निराकारथकि तोसृष्टीथायजनहिं एतो सिद्धांतसमजवी केमकेनिराकार तोस र्वठेकाणेरहे ते पोताविना बिजे क्यांई खालिजग्यो होयनहिं॥ माटे सृष्टिने उपजवानो मागनमले अनेवलिवेदमां पर मात्माने निरंजनने निरअवकाशा कह्याछे॥ जेअवकाशा कहेतां परमात्माने विषेपोल्यनथी नेअंजन कहेतो परमा त्माने विषेमायानथी तेसारु परमात्माने विषे स्वजाति विजाति ने स्वगत भेदनथी माटे एविरीते निराकार परमा- त्माहोयतो सृष्टि थईनजोईये त्यारे हवे तेनु केम समजवुं॥ नेपरमात्माकेवाछे॥ तो मूर्तिमानपरमात्मा छे तेदिव्य मूर्तिछे जेजेमने विषे मायानो लेशनथी ने निरअवकाशामूर्तिछे॥ नेते मूर्तिनाअंगनोप्रकाश छे तेने ब्रह्म कहे छे॥ ते सर्व व्यापकछे॥ पछेवलि ते ब्राह्मणे प्रश्नपुछ्युंजेहे महाराज परमात्मा मूर्तिमान छे त्यारे ते परमात्मा क्यांरहेता हशे॥ पछेमहाराजबोल्याजे परमात्मा मायाने जगतते थीपर रहे छे॥ तेजगत क्यांसुधिछे॥ तो कानइंद्रिनेदिग पालदेवछे त्यांसुधिजगतनो शब्दछे॥ कानगयाएटले शब्दनमले॥ अने त्वचा छे तोस्पर्शनुंसुखदुःखछे॥ त्व- चागईएटले स्पर्शनमले॥ अने नेत्रछेतोरूपदेखायछे॥ आंखगईएटले रूपनमले॥ अनेरसना छे तोरस छे॥ मा टेरसनागईएटले रसनमले॥ अने नासिकाछे तो गंधछे॥ नाकगयुंएटले गंधनमले॥ अने वाणिछे तो बोलवुंछे मुखगयुंएटले बोलवुंनमले॥ अनेहाथछे तो लेवुंदेवुंछे॥ हाथगयाएटले लेवुंदेवुंनमले अने पगछेतो जवुं आव वुंछे॥ पगगयाएटले जवुंआववुं गयुं॥ अने मनछे तो संकल्पविकल्प छे॥ मनगयुंएटले संकल्प नमले॥ एवि- रीते इंद्रियो अंतःकरणनिवृतियोमां जगतछे॥ अने ते वृतियोनो त्याग करिने निवृत्तीथावुं॥ ते निवृतिरूपअक्षर- धामछे॥ नेते अक्षरधामने विषे भगवान रह्याछे॥ ते निवृतिने क्यारे पमायछे॥ तो ते परमात्माने परमात्मानासंत प्रत्यक्षमळे नेतेनोआश्रयजीवकरिने तेथकि आत्यंतिक प्रलयनाज्ञानने जाणे त्यारेज तेजीवनी वृत्तिनापदने पामेछे॥ नेनीवृ त्तिनेपाम्योएज भगवाननुंधामछे नेतेमां भगवान अखंड निवासकरिनेरह्याछे॥ ॥

इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥

संवत्॥१९॥ओगणिसें॥२४॥चोविसना मागसर शुदि॥२॥ बिजने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान् गामश्रीडभासि
मध्ये॥पटेलकरशनदास परभुदासनेघेर उगमणा बारणेओरडानी आगल गादितकिये युक्त पलंगउपरबिराजमानथ-
याहता॥नेसर्वेजरियानीकसबज वस्त्र धारण कर्यांहतां ने पिलापुष्पनांआभुषण सर्वेअंगमांशोभिरह्यांहतांनेकंकु
नोचांदलोकर्योहतो॥नेपोतानामुखारविंदनीआगल साधुतथाघणाक हरि भक्तनीसभा भराईनेबेठाहता॥प
छेमहाराजनीसंध्याआर्ति थयाकेडे गामसोजींत्राना भक्तदेसाईयेएक प्रश्नपुछ्युं॥जेहेमहाराज मन स्थितथानो -
श्योउपायहशे॥तेकृपाकरिनेकहो॥ पछेमहाराजबोल्याजे मन स्थितथानो तोएउपाय छेजे धर्म ज्ञानवैरागनेमहा
त्मे सहित प्रत्यक्षपरमात्मानी भक्तिकरवि॥ अनेपछेएचारसाधन सिद्ध करिने जेस्वरुप पोताने प्राप्तथयुंहोयते-
नुंआत्माने विषे ध्यानकरे तेनुंमन वसथायछे॥नेतेने जन्ममरणटलिजायछे॥पणते विनाबिजांकोटिसाधनकरे
तोयमनवशथायनहिं॥ तेमांधर्मेकरिने तोइंद्रियो स्थितायछे॥अनेज्ञानेकरिनेदेहाभिमानटलेछे॥ कहेतांजेनेपो-
ताना आत्मानास्वरूपनुं ज्ञान थायछे तेनेदेहनो अहंकारटलिजायछे अनेआत्मज्ञानथयुंहोय तोपण तेनेपंचवि
षयमां रागरहेछे॥अनेते रागज्यारे चारे प्रकारना प्रलयनो विचार करिने पिंड ब्रह्मांडादिकनेनाशवंत नेदुखरूप
जाणिने तेथी वैराग्यने पामेत्यारेटले॥पछेएवा ज्ञानना आपनाराने निरवासनिक करनाराएवाजे प्रत्यक्ष भगवा-
नने भगवानना संततेने विषे दृढ प्रितिकरे त्यारेते निरवासनिक थईने ब्रह्मरुप थायछे॥ अनेब्रह्मरुपथईने परब्र-
ह्मने विषे प्रितिकरेतेने पिंड ब्रह्मांडादिकलोकभोगनीवासना तोटलिजायखरि॥तोपणतेने प्रत्यक्ष भगवाननीमू-
र्तिने विषे ध्यानेकरिनेसलग्नपणे जोडाणो नहोय त्यांसुधि मनवस थतुंनथी॥अनेमनवसथया विनाजन्ममरण
टलेनहिं॥ तेपूर्वेनारदतथा भरतजी तेणे धर्मज्ञानवैराग्यने भगवानने विषेदृढप्रितिकरिहति तोपण तेप्रत्यक्षभगवा

मनि मूर्तिने विषे ध्यानकरिने सलग्नपणे जोडाणांनहोता ॥ तोतेनुं मनविकारने पाम्युं नेतेनेजन्म धरवा पड्या ॥ माटे प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनेविषे ध्यान करिने जोडायछे तेनुं मनवश थाय छे नेतेने जन्ममरण टलिजायछे तेमाटे जेने मनजीतवुं होय तेने धर्मज्ञान वैराग्य ने दृढकरिने प्रत्यक्ष भगवाननी नवधा भक्तिये करिने भगवाननी मूर्तिमांजोडाईजवुं एजं मन जीतवानो उपायछे पणते विना बिजोउपाय नथी ॥ ए तमारा प्रश्ननोउत्तर छे ॥ माटे जेने मन वसकरिने परमपदने पामवुं होय तेने भगवानने भगवानना निरवासनिकपंचविषयना त्यागि संततेने विषे प्रीतिपेकरिने जोडाईजवुं ॥ ॥ ॥इति श्रीसुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥

संवत १९ ओगणिसें ॥२१॥ चोविसना मागशर शुदि ॥११॥ एकादशिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीविरोलमध्ये पटेल मधुरभाई रणछोडभाईनेघेर आथमणा बारना ओरडानी आगल गादितकिये जुक्त पलंग बिछाविने-तेउपर विराजमान थयाहताने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यांहतां ॥ नेपिलापुष्पना आभूषण सर्वे अंगमांशोभिरह्यांहतां ॥ ने कुमकुम नोचांदलो करयोहतो ॥ नेपोताना मुखारविंदनी आगल साधुतथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठिहति ॥ पछे महाराजनी संध्यारति थयापछी महाराज श्रीहरिकृष्ण महाराज कृपाकरिने बोल्याजे सर्वे सांभलोएकवात करविछे ॥ अने आवात करशुं तेने जे समजशे तेजीवनो मोक्षथशे ॥ तेवात कहियेछियेजे परमेश्वरे जीवोनी मुक्तिकरवाने अर्थे वेद कर्याछे । अने तेवेदनाज्ञानने साक्षात्कार करावधाने अर्थे छशास्त्र कर्यांछे तेनो ॥ ॥श्लोक॥ ॥

द्वौतर्कौ द्वौ च मिमांसे ॥ द्वौ योगा विति षड्बुध ॥ वेदार्थदर्शकत्वेन दर्शनानि प्रपच्यते ॥१॥ ॥अर्थ॥ ॥बे तर्कदर्शन ॥ एक न्यायशास्त्र ने बिजुं वैशेषिकशास्त्र ॥ अने बे मिमांसा ॥ एक पूर्व मिमांसा एटले धर्मशास्त्र । अने बिजुं उत्तरमिमांसा एटले वेदांतशास्त्र ॥ अने बे योगशास्त्र एक शाख्यशास्त्रने बिजुं पातांजलिशास्त्र ए छ शास्त्र वेदनाअर्थने साक्षात्कार देखाडे छे ॥ माटे हवे एछशास्त्र मांथि एक पातांजलि योगदर्शननिवात आज करियेछिये ॥ अने एशास्त्र

नुंपातांजलिएवुंनामत्राथिपड्युंछे ॥ तोतेनाकर्तापातांजलिरुषिछे माटे तेरुषिनेनामेकरिने तेशास्त्रनुंनाम पातांजलि
पड्युंछे अनेएयोग एवुंनाम नुंकरवापड्युंछे॥ तोजिवने परमेश्वरनो विजोगअनादिकालनो छे तेणेकरिनेजीवजन्ममर
णनेपामेछे ॥ तेजीवनेहवेपरमेश्वरनोयोगथाय तोजन्ममरण मटे ते योग परमेश्वरनो जीवनेथाय तेनीरीत्य वधिये आपातां
जलिशास्त्रमांकहीछे ॥ माटेएशास्त्रनुंयोग्यदरशान एवुंनाम पड्युं छे ॥ हवेतेपरमेश्वर नोयोग्यथवामांजीवनेअंतराय
शुंछे॥ तोजीवने विषेछदोष छे॥ अनेपरमेश्वर एछदोषेरहितछे॥ तेछदोषकिया ॥ तोएकअविद्या ॥ बिजोअस्मिता ॥
त्रीजोराग ॥चोथो द्वेष ॥ पांचमोअभिनिवेश ॥ छठो कर्मविपाक ॥एछदोष जिवने विषेछे ॥ते छदोषनोजीवत्यागकरे
त्यांरेतेजीवनेपरमेश्वरनोयोग थायछे॥ पणते विनापरमेश्वरनेपमातुंनथी॥ हवे एछदोषनेओलखावेछे॥ जेअविद्या
एटलेशुं तोसत्यनेअसत्यमानवुं॥नेअसत्यनेसत्यमानवुं कहेतां पोतानुंसत्य स्वरूप जेआत्माने आत्मांनाप्रकाशकए-
वाजेपरमात्मा परमेश्वर तेनेभूलिने असत्यएवोजेदेह नेअसत्यएवां जेदेह संबंधिपदार्थ तेने साचांमानीने तेने विषे अहं
ममत्व करे छे ने तेणेकरिनेजन्ममरणगर्भवासनेचोरासिनांमहादुःखभोगवे छे ॥एनुंनामअविद्याकहेवायछे ॥माटेएदो
षजीवनेविषेछे अनेपरमे श्वरमांएदोषनथी ॥अने बिजोदोष अस्मिता एटले जिवमात्रअंतःकरणने हुंएवुं कहे छे॥पणअं
तःकरण थी तोआत्माजुदोछे ने अंतःकरणतो अविद्यामायानुंछे ॥माटेएदोषजीवमां छे॥ नेपरमेश्वरमां एदोष नथि ॥केमके
परमेश्वरनीमूर्तिनेविषेतो मुदलमायानोभागजनथी माटेपरमेश्वरनेअंतः करणनथी तेथीपरमेश्वरहुंएम कहे तोनथी॥अ
ने त्रिजो दोषरागछे॥ रागएटले मीथ्यासुखमां प्रितितेनुंनामरागछे॥ कहेतां खोटा देहने पोषण करे॥एवांजे पंचविषयनां
पदार्थ तेनेभोगववानी घणिईछा राखेछे ॥माटेएदोष जिवने विषेछे ॥अने परमेश्वरने कोई पदार्थ मां प्रितिनथी एटले
परमेश्वर पूरणकामछे॥ माटेए दोषपरमेश्वरने विषेनथी ॥चोथोदोष द्वेषछे अेटलेरागवान पदार्थहोय नेतेनो कोईभंग
करेअथवानासथाय त्यारेजीवक्रोधकरिने विरुप थईजायछे ॥कहेतांबेभानि थईजायछे ॥एदोषजीवमांछे॥अने

परमेश्वरमांएदोषनथि ।। केमके कोईपदार्थमां रागहोयत्यारे द्वेषथायछे ।। माटे परमेश्वरने रागनथी ।। माटे कोईउपर द्वे-
षपण नथी ।। अनेपांचमोदोषअभिनिवेशछे ।। अभिनीवेशएटले जीवने देहमुकतिवखते अतिशो मुझवण्यथायछे केदेहतांवभा
नथईने घणोव लोपातकरेछे ।। माटेएदोषजीवमांछे अनेपरमेश्वरमांएदोष नथी ।। केमके परमेश्वरनेदेह धरवोपडतो नथी ।। ते
ममुकवोपणपडतोनथी ।। नेपरमेश्वरतो अखंडमूर्त्ति छे केहेतां परमात्मानीमूर्त्तिने विषे पंचभूतात्मकमायानो भागनथी माटे
परमात्मानीमूर्तिने विषे देह जिवणथो भेदनथी ।। परमात्मानी तो मूर्तिज परमात्माछे ।। जेम साकरनुं नालियेर होय तेनेगो-
ळोकाचलिने चोटलिसर्वे साकरनुं छे तेमपरमात्मानीमूर्त्ति साकरना नालियेरनीपेठे तेनांइंद्रियोअंतःकरण सर्वेप
रमात्माछे ।। माटेतेपरमात्मानीमूर्ति अखंड अविनासि छे ।। तेसारुपरमात्माने विषे अभिनिवेशरुपिदोषनथि ।। अ
नेजीवनोदेहतोजेम नालियेरनुंनालियेरहोय तेमांथी फोडिनेगोळानुंग्रहण करायछे ।। अनेकाचलिनेचोटलिनाखि
देवायछे ।। तेमजीवनोदेहकाचलि चोटलिनीपेठे मिथ्याछे ।। एटलेअजे छे तेनानाशथायछे ।। अने तेमांगोळारुपिजीवचै
तनआत्माछे ते सत्यछे ।। माटेजीवनेदेह धरवोपडेछेने मुकवोपडेछे ।। माटेजीवने विषे अभिनिवेश रुपीदोषछे ।। अने
जीवने विषे छठोदोष कर्मविपाकरुपिदोषछे ।। कर्मविपाकएटले जीवेकर्यांजे कर्मतेनोभोग सुखदुःखतेजीवने भोग
ववुंपडेछे ।। अनेपरमेश्वरने कर्मनो भोगभोगववोपडतो नथी ।। माटेएदोष जीवने विषेछे नेपरमेश्वरनेविषेएदोषनथी ।। मा
टे एछदोषनेटाळवाने अर्थेनेपरमात्मानास्वरुपनेपामवानेअर्थे योगनुंज्ञान सिद्धकरवुं ते योगनांआठअंगछे ।। ते आठ
अंगकियांतो ।।१।। एकयम् ।।२।। बिजुंनियम ।।३।। त्रीजुंआसन ।।४।। चोथुंप्राणायाम् ।।५।। पांचमुंप्रत्याहार ।।६।। छठुं
ध्यान ।।७।। सातमुंधारणा ।।८।। आठमुं समाधि ।। एआठयोगनांअंगकहेवायछे ।। हवेतेनांरुपककहेछे ।। यमएटलेशुं
तो यमना ।।५।। पांचभेदछे ।।१।। एक अहिंसा ।।२।। बिजुंसत्य ।।३।। त्रिजुं अस्तेय ।।४।। चोथुं ब्रह्मचर्य ।।५।। पांचमुंअपरिग्र
हा ।। एपांचनेयम कहियेहवेतेपांचेनांरुपककहेछे ।। अहिंसाएटले कोईनाआत्माने मनवाणिनेकायायेकरिने कोईने

पिडाथाय एम करवुं नहिं॥ तेनुं नाम अहिंसा कहेवायछे ।।अने सत्य एटले मन तथा वाणिये करिने यथार्थपणे वर्तवुं॥ कहे तां वाणीये करिनेजुठुं न बोलवुं॥ने मनमां अधर्म अनितिनो संकल्प न करवो॥ तेनुं नाम सत्य कहेवायछे ।। अने अस्तेय एटले कोइनी पारकि वस्तु चोरविनहि कहेतां धणियातिवस्तु कोइनीमा ग्याविनाले विनहिं।।तथाजोरा बरियेले विनहिं॥ तेनुं नाम अस्तेय कहेवाय॥ अने ब्रह्मचर्य एटलेग्रहस्थपुरुषने परस्त्रि संगनोत्याग करवो ।।नेसधवास्त्रिहोय तेने परपुरुषनो संग त्यागकरवो॥ नेविधवास्त्रिहोय तेनेपुरुषमात्रना संगनोत्यागकरवो ।।अने त्यागीएवाजे साधु ब्रह्मचारि संन्यासी पर्महंस आदिक जेणे संसारनोत्यागकर्योहोय ।।तेने अष्टप्रकारे स्त्रिमात्रनो त्याग करवो तेनुं नाम ब्रह्म चर्य कहेवायछे॥ अने अपरिग्रह एटले पंचविषयना उत्तमपदार्थने भोगनोत्याग करवो कहे तां इंद्रियोने प्रिये लागे एवाजे उत्तम पदार्थ तेनुं ग्रहण करवुं नहिं तेनुंनाम अपरिग्रह कहेवायछे॥ एथिरीते पांचप्रकारनुं जे योगनुं पहेलुं अंग यमतेनेजे बराबर पाळेछे ते महाव्रत धारियोगी कहेवायछे॥ अने ए योगनुं अंग पहेलुंजे यम तेनेजे दृढ करेछे तेने अष्टांग योग सिद्ध थायछे ।।अने जेयम नियमने पाळ्याविनाजे योगसाधवा बेसेछे ने ध्यान करेछे पणतेने कोई दहाडो योग सिद्ध थतोज नथी॥ने आनपण तेने थवुंजनथी॥ अने यमनियम पाळ्याविना जे एम कहेछे जे हुं योग साधुंछु ।।एम कहेनाराने पाखंडि जाणवो ॥ अने जे आ कह्युं पांचप्रकारनुं यम तेने बराबर पालिने विषीयासक्तिनो त्यागकरे छे तेने खरो योगी जाणवो॥ अने एवा योगीने ततकाळ योग सिद्ध थायछे कहे तां तेने प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरुपनो निश्चयने महात्मेसहित प्रितिथायछे नेतेनो मोक्ष थायछे॥ माटेजेने परमात्माने पामवुं होय तेने प्रथम पांच प्रकारनुं यम तेने बराबर पाळवुं अने यम नियमादिक आठ योगनां जे अंग छे ते परमात्मा नाज ए आठ गुण छे ।। ते परमात्माना गुणने पोताना आत्माने विषे धारण करवा एज जिवने परमात्मानो योगथयो कहेवायछे कहे तां यम नियमादिक आठमांथी जेटला गुण जीवमां आवे छे तेटला तेना आत्मामां परमात्मा निवासकरे छे ।।अने जेटला गुण जीवमां आवेछे तेटला दोष तेजीवना टळे छे॥ अने ज्यारे

आठे अंग योगनां सिद्ध थाय छे त्यारे जीवने विषे जे दोष छे ॥ ते बधाय दोष टलि जाय छे अने ज्यारे दोषट ले छे त्यारे ते आ-
त्माने विषे परमात्मा साक्षात्कार निवास करिने अखंड रहे छे ॥ अने परमात्मा ज्यारे अखंड आत्मामां रहे छे त्यारे ज ते
आत्मानी जन्ममरणे रहित एवी आत्यंतिक मुक्ति थाय छे ॥ माटे योगनां आठ अंग जीवने जरूर सिद्ध करवाना छे माटे
पूर्वे कह्युं जे पांच प्रकारनुं यम तेने बराबर सिद्ध करवुं ॥ प छे योगनुं बिजुं अंग जे नियम छे तेने सिद्ध करवुं ॥ हवे नियम
एटले शुं तो नियमपण पांच प्रकारनुं छे ॥ ते पांच प्रकार कियातो ॥ १ ॥ एक शौच ॥ २ ॥ बिजुं संतोष ॥ ३ ॥ त्रिजुं स्वा-
ध्याय ॥ ४ ॥ चोथुं तप ॥ ५ ॥ पांचमुं ईश्वरप्रणिधान ॥ ए पांच प्रकारनुं नियम छे ॥ ते मां शौच एटले शुं तो शौच बे प्रकारनुं
छे ॥ एक बाह्यशौच छे ॥ एटले माटि तथा जल ते थकि शरीर स्थूल शरीर ना मल धोवा कहेतां शरिरज ले करिने शुद्ध
राखवुं तथा घर लिपवे करिने पवित्र राखवुं ॥ तेनुं नाम बाह्यशौच कहेवाय छे ॥ अने बिजुं आभ्यांतर शौच एटले
सौदार्दीदिक वडे करिने रागद्वेष काम क्रोध लोभादिक विगेरे अंतःकरण ना मल धोवा कहेतां कामलोभादिक दो-
षनो त्याग करवो ॥ तेनुं नाम आभ्यांतर शौच कहेवाय छे ॥ अने बिजुं संतोष राखवो एटले जे सर्वे पदार्थने विषे पूरणता राखि
मनने तेथकि पाछुं वालवुं कहेतां कोई पदार्थने पामवानी ईछा राखवि नहि तेनुं नाम संतोष कहेवाय छे ॥ अने त्रिजुं तप क-
रवुं ॥ एटले जे पोतपोताना स्वधर्म प्रमाणे यथार्थ वर्तवुं तेनुं नाम तप कहेवाय छे ॥ अने चोथुं स्वाध्याय करवो एटले ॐकार
पूर्वे उच्चार करिने वेदना मंत्र भणवा कहेतां गायत्रि आदिक वेदना मंत्रनो जप करवो ॥ तथा वेदशास्त्र ने भणवा वांचवानो
अभ्यास करवो तेनुं नाम स्वाध्याय कहेवाय छे ॥ अने पांचमुं ईश्वर प्रणिधान करवुं एटले जे जे शुभकर्म करवुं ते परमात्मा
ने अरपण करवुं कहेतां फलनी ईछाये रहित निष्काम भावे परमात्मा प्रसन्न थाय ते सारु शुभकर्म करवुं ॥ तेनुं नाम ईश्व-
र प्रणिधान कहेवाय छे ॥ ए विरीते योगनुं अंग बिजुं नियम छे ते नियम ने जे यथार्थ पाले छे ॥ तेनुं अंतःकरण शुद्ध थाय
छे ॥ ने तेने तमोगुण ने रजोगुण ते नाश पामी जाय छे ॥ ने तेने शुद्ध सत्वगुणनो प्रकाश थाय छे ॥ अने ते आत्मा योगांगि

थायछे॥कहेतां परमात्माना स्वरूपनुं ध्यान करवानो अधिकारी थायछे॥ माटे योगनाकरनारा योगीने प्रथमयमने नियम
एबेय अंग ने सिद्ध करवां नेपछे तेने परमात्मानुं ध्यान करवा बेसवुं॥ तोतेने ध्यान करवामां स्फुरवआवेछे हवे त्रिजुं योगनुं
अंग आसनवाळवुं एटले ध्यानकरवा बेसवुं॥ तेनेअर्थे बेठक सिद्ध करवि कहेतां स्वस्तिकासंनदंडासंन पद्मासंन
इत्यादिक चोरासिआसन कहेवायछे अने तेआसन अभ्यासवडे आवडेछे॥ अनेएआसन स्थिरथायछे त्यारे तेने ध्या
नमां जेटलिवार बेसवुं होय तेटलिवार बेसायछे पण आसनस्थिरथया विना ध्यानमां झाझिवार रहेवातुं नथी माटे ध्यान
योगीने आसनस्थिर करवुं हवे चोथुं योगनुं अंग प्राणायाम कर्या एटले प्राणने स्थिरकरवो ते प्राणने स्थीर करवानेअ-
र्थे प्रथम अहारविहारादिक देहनीचेष्टा क्रिया ते युक्तकरवी कहेतां अतिघो अहार विहारादिक झाझुं न करवुं तेम
अतिघो थोडुं पण न करवुं॥ एविरीते अवश्य घटे तेटलुं करवुं॥ नेपछे प्राणायाम करवुं॥ ते प्राणायाम करवाना त्रण
भेदछे॥ पूर्वक॥ कुंभक ने रेचक॥ एटले नासिकाये करिने स्वासने ताणिने भितरस्वासने भरवो तेनुं नाम तो
पूर्वक कहेवायछे॥ अनेते स्वासने घडामां जळनी पेठे भीतरस्वासने रोकि राखवो तेनुं नाम कुंभक कहेवायछे
अने भित्तरना श्वासने पाछो बहार काढवो तेनुं नाम रेचक कहेवायछे॥ एविरीते अहार विहार युक्त करिने प्राण
ने स्थिर करवो॥ तेनुं नाम प्राणायाम कहेवायछे॥ ए प्राणायाम करवाथकि चित्तना क्लेश मटिजायछे॥ हवे पांच
मुं योगनुं अंग प्रत्याहार छे॥ प्रत्याहार एटले पोतपोताना विषयोथकि इंद्रियोने पाछां वालिने पोताना आत्माने वि
षे राखवां कहेतां एमविचार करवो जे हुं आत्मा छुं॥ सत्य छुं स्फुरवरूप छुं॥ ज्ञानरूप छुं अने जे देहादिक पिंडब्रह्मांड छे॥
ते मिथ्याछे॥ दुःखरूपछे॥ पापरूपछे॥ नासवंतछे॥ एमसमजीने इंद्रियोनी प्रतियोने आत्मासन्मुख करवि॥ अने इंद्रियो
नी प्रतियो ज्यारे बहारना विषयो उपर जतिनथी त्यारे तेनुं चित्त स्थिर थायछे अने चित्त स्थिर थायछे त्यारे पछे कोइ
इंद्रियो विषय उपर जातीनथी केमके चित्तनी पाछळ सर्वे इंद्रियो जायछे॥ माटे प्रथम विषयो उपरथी चित्तने पाछुं

वाजवुं ॥अने चित्तपाछुंव जतांसर्वेंद्रियो विषयथकि पाछां आवेछे ॥अनेइंद्रियो पाछी वजतां इंद्रियोनी व्रतियो स्थिर थायछे॥ एविरीते प्रत्याहारनो अभ्यासकरवाथकि इंद्रियो वश थायछे।।अनेइंद्रियोवसथई तेने पछेपरमात्मानुं अखं डुध्यानथायछे॥ माटे एविरीते आत्मा अनात्मानो विचार करिने विषयथकि इंद्रियोने निवृत्तिपमाडवा॥ नेतेवृत्तियो नेआत्मा सन्मुख अखंड राखवि॥ तेनुंनाम प्रत्याहारकहेवायछे॥ हवे छठुं योगनुं अंगध्यान एटलेपोतानाआत्मानेवि षे रहेवा वालाने आत्माना प्रकाशक एवाजे परमात्माराम कृष्णादिक भगवान प्रत्यक्षज्ञानदाता सद्गुरु तेनी मूर्तिने-आत्मामां धारीने तेमूर्तिनुं अकेकुं अंगसंभारीसंभारीने तेते अंगनुं पोताना मनमां चिंतवन करवुं नेतें मूर्तिमांमनने घ-डिघडि बेबे घडि स्थिरकरवुं तेनुं नाम ध्यानकहेवायछे ॥हवे योगनुं सातमुं अंगधारणा छे ।।धारणाएटले प्रत्यक्ष भग-वाननीमूर्त्तिने समग्रपणे एकतार आत्मामां जोईरहवुं ने तेमूर्तिमांथी अंतःकरणनी वृत्ति क्यांईजायनहिं तेनुंनाम धारणा कहेवायछे।। हवेआठमुंयोगनुं अंगसमाधिछे॥ समाधिएटले शुं तोप्रत्यक्ष भगवाननीमूर्तिने विषे ध्यानधारणा रुप-जे संकल्पविकल्प तेटलिने ध्येयाकार व्रतिथईजाय कहेतां प्रत्यक्ष सद्गुरु रुपपरमात्मानीमूर्त्तिने विषे निर्विकल्पनि श्चयनेमहात्मे करिनेसलग्नपणे एकतार जोडाईजवुं तेनुंनाम समाधि कहेवायछे॥अनेएविरीते आठअंगे सहित योग सिद्धथयो ते आत्मा ब्रह्मरूपथायछे ।।नेतेने विषे परमात्मा अखंडनिवासकरिने रहेछे ।। अनेते आत्माने विषेजेछ दोषछे॥ तेनां बिजबलि जायछे ॥पछेफरिनेतेनेजन्ममरण रहेतुं नथी॥ अनेजेपुरुषे आठअंगेसहित योग सिद्ध कर्यो कहेतां प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरुपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चयजेने थयो तेपुरुष कोई विषयसिद्धि मांमोह पामतोनथी॥ तथा तेनेएम दृढसमजणरहेछे जे सर्वे देहइंद्रियादिक जडपदार्थोथीहुं चैतनआत्माजुदोछुं॥अने सर्वेनो अधिष्टाता कहेतां सर्वेनो कारणआधारनेप्रकाशक एवोजे परमेश्वर परमात्मा प्रत्यक्ष भगवानतेसर्वेथी जुदोछे॥एमस्फुट विवेकवालोथायछे॥ अनेएविरीते विवेकवालोथईने देहइंद्रियो विगेरेने अनित्य अशुद्ध ने

दुःखरूपजाणे छे ॥तेटला माटे तेना उपर वैराग राखे छे ॥ अने ते वैरागे करिने अंतःकरणमां थी दोषनां बिज क्षय पामे छे ॥अने दोषक्षय पाम्या पछे जे ते आत्माने विषे परमात्मा अखंड निवास करिने रहे छे ॥अने जेना आत्माने विषे परमात्मा निवास करिने रहे छे ॥ ते योगी प्रकृतिना बंधथी छुटिने मुक्त थाय छे ॥ने मुक्त थईने परमात्माना स्वरूपने विषे अखंड जोडाई जाय छे ॥ कहे तां तेने अखंड परमात्मा विना बिजुं कांई सांभरतुं नथी ने तेने देह मुकिने फरिने जन्म मरण रहे तुं नथी॥ माटे जेने पोताना आत्माना मोक्षनी इच्छा होयने जन्म मृत्युने चोराशीनां महा कष्टने टालवां होय तेने आ कह्यो जे अष्टांगयोग तेनो जरूर अभ्यास करवो ॥ अने योगनो अभ्यास करशे तेने जरूर परमात्माना स्वरूपनी प्राप्ति थशे पण योगनो अभ्यास कर्या विना कोई दहाडे परमात्मानी प्राप्ती थतीनथी ॥माटे योग राखवानी मोटि जरुर छे॥ ॥

॥ ॥इति श्री मुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥

॥ ॥संवत॥१९॥ ओगणिसें ॥२४॥ चोविसना मागशर वदि॥ ६॥ छठ्यने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री काविठा मध्ये ॥पटेल भक्त रेवदास वाहालाभाईने घेर उत्तरादा बारना ओरडानी ओसरिमां गादि तकिये युक्त पलंग बिछाव्यो हतो ॥ तेउपर बिराजमान थया हता॥ ने सर्वे कस्कंबल जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ॥नेपुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां धारी रह्यां हतां ने कुमकुमनो चांदलो ललाटने विषे कर्यो हतो ने संध्या आर्ति नेसमे पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरि भक्तनी मोटी सभा भराईने बेठि हती पछे महाराज श्रीहरिकृष्ण महाराज कृपा दृष्टि करिने सभा प्रत्ये बोल्या जे आज तो कांईक प्रश्न पुछो तो वार्ता करिये ॥पछे ते गामना विप्र उपाध्या रेवाशंकर शिवकरामे प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज ॥शीवने विष्णु एबे छे तेमां कोण मोटा हशे ने कोण नाहाना हशे ॥अने शास्त्रमां तो विष्णु पुराणने विषे विष्णुने भगवान कह्या छे॥ अने शिवने विष्णुना भक्त कह्या छे ने शिव विष्णुनी भक्ति करि छे॥ नेस्तुति करि छे ॥अने शिवपुराणने विषे शिवने भगवान कह्या छे ॥अने विष्णुने तेना भक्त क-

याछे ने विष्णु पत्नि शिवनी भक्तिने स्तुति करिछे एम कह्युंछे ॥ माटे तेनुं केम समजवुं ॥ ते कृपा करिने कहो ॥ पछे महाराज बोल्या जे बहु सारु प्रश्न पुछ्युं । हवे सांभळो तेनो उत्तर करिये छिये ॥ जे सर्वोपरि अक्षरातित पर ब्रह्म परमात्मा जगत्कर्ता परमेश्वर एक छे ते परमेश्वरनां पांच अंग छे ॥ अंग एटले परमेश्वरना पांच गुण छे ॥ ते पांच गुण कियातो ॥ एक सूर्य रूपे गुण छे ॥ बिजो शक्तिरूपे गुण छे ॥ त्रिजो विष्णुरूपे गुण छे ॥ चोथो गणपतिरूपे गुण छे ॥ पांचमो शिवरूपे गुण छे ॥ ए पांच देवरूपे परमात्माना पांच गुण छे ॥ अथवा परमात्माना पांच अंग पण कहेवाय छे ॥ हवे ए पांचनां रूपक कहुं छुं जे सूर्य एटले आत्यंतिक प्रलयने विषे जगतनो अंधकार हतो ॥ कहेतां जगत नोहोतुं ने जिषम हा कारण रुप मायाने विषे घोर तमस्‌ निमां हतां ॥ तेने परमात्माये जगतनी उत्पत्ति करि ॥ ने प्रकाश कर्यो कहेतां जिवोने बुद्धि इंद्रियो मनः प्राणादिक सर जीआप्यां तेनो श्रीमद्भागवतने विषे सत्याशिमा अध्यायमां ॥२॥ बिजो ॥ ॥श्लोक॥ ॥ बुद्धिंद्रियमनः प्राणान् ॥ जनानाम सृजत्प्रभु ॥ मात्रार्थं च भवार्थं च आत्मने कल्पनाय च ॥२॥ ॥अर्थ॥ ॥ प्रभु जे परमात्मा ते जे ते जनजे जीव तेमनां बुद्धि इंद्रियो मनने प्राण ॥ ते मनेसर जि आपे छे ते शा माटे के विषयादिक भोग भोगववाने अर्थे अने वारेवारे जन्म लेवाने अर्थे अने जन्म लेईने कर्म करवाने अर्थे ॥ एटले कर्म करिने परलोकमां जईने भोग करवाने अर्थे अने अंते अकल्पनाय कहेतां लोक भोगादिकनुं प्रमाण करिने तेमां अपार दुःख रह्यां छे ॥ माटे ते थकि वैराग्यने पामिने पोताना मननी कल्पनानो त्याग थवाने अर्थे एटले मोक्षने काजे सरजी आपे छे ॥ ए विरीते परमात्माये जगतने प्रकाश्युं माटे परमात्मानुं नाम सूर्य कहेवाय छे ॥ अने तेना ते परमात्मा जे ते पोतानी एक आकर्षण शक्तिये करिने अनंतकोटि ब्रह्मांडने आधार आपिने पोते तोलि रह्या छे ॥ माटे ते परमात्मानुं नाम बिजुं शक्ति कहेवाय छे ॥ अने वेज परमात्मा सर्व जीवोनां इंद्रियोगण तेने देवरूपे प्रकाश करे छे ॥ माटे परमात्मानुं नाम त्रीजुं गणपति कहेवाय छे ॥ अने ते परमात्मा अनंत कोटि विश्वना जीव प्राणि मात्र तेनुं भरण पोषण करे छे ने ते अंतरजामी रुप सर्वमां व्यापिने रह्या छे ॥

नेजेजीवनुंजेवुंकर्मतेप्रमाणेतेनेफळआपेछे ॥माटेपरमात्मानुंनाम चोथुंविष्णुकहेवायछे॥ अनेतेनातेपरमात्माजेते
जीवोनामोक्षकरवानेअर्थेचारप्रकारनाप्रलयनुंज्ञान कराविने लोकभोगादिकथी वैराग्यमांडिनेमुक्तिआपेछे॥नेकल्या
णकरेछे॥ माटेपरमात्मानुंनाम पांचमुंशंकर कहेवाय छे तथाशिवपण कहेवायछे॥शंकरएटले प्रलयनुंज्ञान करावेछे
माटेशंकर कहेवाय छे॥नेकल्याणकरेछे माटेशिवकहेवाय छे॥ एविरीते एक परमात्माछे तेणेजगतनोप्रकाशकर्यो
तेथी सविता एटले सूर्यनारायणकरेछे॥ नेपोता निशक्ति एटलेपोतानासामर्थ्ये करिनेअनंतकोटि ब्रह्मांडनेतोलिरह्या
छे॥तेथीपरमात्मानेशक्ति कह्याछे॥नेसर्व जिवोना इंद्रियोगणने प्रकाशकरेछे तेथीपरमात्मानेगणपतिकह्याछे॥अने स-
र्वजीवोने भरण पोषण करेछे नेकर्म फळआपेछे तेथीपरमात्माने विष्णुकह्याछे॥ अनेप्रलयनुंज्ञानकराविनेजीवोनांक
ल्याणकरेछे॥ तेथीपरमात्मानेशंकर तथाशिव कह्याछे ॥एविरीते पांचदेवरुपे परमात्माएकछे पणतेमां कांई भेदनथि
तथाकोई नाना मोटा नथी एकज छे॥ हवेशास्त्रने विषे कह्युं छे के एक बिजानी भक्तिकरिछे नेएक बिजानी स्तुतिक
रीछे॥ तेशुंएम छेजे परमात्माये प्रथमजगतनीउत्पत्तिकरिने पछेतेजगतना जिवोने ज्ञान आपिने मोक्षकरवानेअर्थे
पोतेअक्षर धाममांअखंडरह्याथका पृथ्वीउपर अवतार धारणकरेछे तेअवतार धारणकरिने परमात्माये प्रथम ब्रह्माने
पोताना स्वरूपनुंज्ञान आप्युं तेणेने करिने ज्ञानआप्युं तोपोताना पांचदेव रूपपांचईश्वर्यछे तेणेकरिनेपरमात्माये पो-
तानास्वरूपनुंज्ञान ब्रह्मानेकराव्युं छे॥ तेप्रथम वो ब्रह्माने परमात्माना स्वरूपनुंज्ञान नहोतुं माटेप्रत्यक्षपरमात्माने
ओळखतोनहोतो ॥पछेपरमात्मापोते सद्गुरु रुपे प्रोक्षरहिने पोताना परस्वरूपनुंज्ञान ब्रह्माने आप्युं॥ परोक्ष एटले ब्र
ह्माजेस्वरूपनेनथीजाणतो॥ कहेतां प्रत्यक्ष मूर्तिनेपरमात्मानथिजाणतो ॥माटेतेस्वरूपनेओळखाववासारु प्रथमपो
तानोजगतनीउत्पत्तिकरवारूपे सूर्यनोगुण कहेतांपोतानुंसूर्यरूप तेनुंवरणन कर्युं केपरमात्मापरमेश्वरकेवा छे के सूर्य
रुपछे॥जेणे आविश्वनेप्रकाशकर्योछे॥ एविरीतेसूर्य रुप परमात्मानोमहिमा कह्यो नेतेनी भक्ति पोतेकरि बतावि

नेतेनी स्तुति करिथतायीछे पछे ते सूर्य रुप परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान ब्रह्माने थयुं ते सर्व ज्ञान ब्रह्माये जखि राख्युं ॥ पछे प्रत्यक्ष परमात्माये पोतानुं शक्ति रुपे वर्णन कर्युं ने तेनी भक्तिने स्तुति करि तेशक्ति रुप परमात्मानुं ज्ञानपण ब्रह्माने थयुं ते ज्ञान ने पण ब्रह्माये जखि राख्युं ॥ पछे गणपति रुपे परमात्माये पोतानुं वर्णन करिने ब्रह्माने ज्ञान कराव्युं ने तेनी भक्तिने स्तुति करि देखाडि ॥ पछे ते गणपति रुपपरमात्मानुं ज्ञान पण ब्रह्माने थयुं ॥ ते ज्ञानने पण ब्रह्माये जखि लिधुं ॥ पछे विष्णु रुपे पोते पोताना स्वरूपनुं वर्णन कर्युं ॥ ने तेनी भक्तिने स्तुति करि देखाडि ॥ पछे ते विष्णु रुप परमात्मानुं ज्ञान पण ब्रह्माने थयुं ॥ ते ज्ञानने पण ब्रह्माये जखि लिधुं ॥ पछे शंकर रुपे परमात्माये पोताना स्वरूपनुं वरणन कर्युं ने तेनी भक्तिने स्तुति करि देखाडी ॥ पछे ते शंकर रुप परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञानपण ब्रह्माने थयुं ॥ त्यारे तो ते ब्रह्मानी दृष्टिमां थीजगत टलि गयुं के हे तां कोई आकार मात्र दृष्टिमां रह्यो नहिं ॥ ने एक ब्रह्माकार दृष्टि थई गई पछे ब्रह्माये विचार कर्यो जे आवुं माया पर ज्ञान आपिने मुने ब्रह्मरुप जेणे कर्यो एवा जे आ प्रत्यक्ष ज्ञानदाता सद्गुरु ते ज पोते पंचदेवरुपे परमात्मा छे ॥ पण ते विना बिजो कोई परमात्मा नथी ॥ केमके बिजा जीवो तो सर्व मायामां छे ॥ माटे तेने मायापर एवा जे परमात्मा तेना स्वरूपनुं ज्ञान होय नहिं ॥ अने जीवो तो बधाय जगतनी उत्पत्ति पहेला घोर सुषुप्तिमां हता ॥ माटे तेने जगतनी उत्पत्तिनुं ज्ञान होयनहिं ॥ अने ज्यारे जगतनो प्रलय थाय छे त्यारे पण कोई जीवनो आकार रहे तो नथी माटे प्रलयनुं ज्ञान पण ते कोई जीवोने होय नहिं ॥ माटे उत्पत्ति प्रलयादिकनुं ज्ञान जेनी पासे परिपूरण होय ते तो साक्षात्कार पोते परमात्मा भगवान छे एम जाणिने ब्रह्माने प्रत्यक्ष सद्गुरुने विषे भगवानपणानो निश्चय थयो तेना उपर ॥ ॥ श्लोकः ॥ ॥ उत्पत्तिं विनाशं च लोकानां मतरगतगतावेति विद्यामविद्यां च स वाच्यो भगवानिति ॥ १ ॥ ॥ अर्थः ॥ ॥ भगवान केवा छे तो जगतनी उत्पत्तिने प्रलयने जाणे तथा लोकनी गतिने ने अगतिने जाणे तथा विद्या नेने अविद्याने जाणे एछ ईश्वर ने जाणे ते भगवान कहेवाय छे ॥ कहेतां भगवान विना बिजो एछ वानाने कोई जाण तो नथी ॥ जेम बापना जनमे छोकरो

जाणे नहि ने छोकरा ना जन्म नी बापने यथार्थ खबर होय छे ॥ तेम जगतना जीवोने जगतनी उत्पत्ति आदिकनी खबर होय नहि माटे जगतना पिता एवा जे परमात्मा भगवान तेने ज जगतनी उत्पत्ति प्रलयादिकनी यथार्थ खबर छे ॥ एविरीते ब्रह्माने प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरुपनो निश्चय थयो पछे ते ज्ञान पण ब्रह्माये ज विस्तार्युं ॥ ते ज्ञाननुं नाम वेद कहेवाय छे ॥ ते वेदने विषे पांच देवरुपे परमात्मानुं वरणन कर्युं छे ॥ ते पांच देवनुं पांच देवरुप एवा जे परमात्मा तेणे पोते ज पोताना स्वरुपनुं वरणन कर्युं छे ॥ ने ब्रह्माने पोतानी भक्ति ने स्तुति ने सेवा करवा शिखववा सारुं परमात्माये पोते पोताना स्वरुपनी भक्ति स्तुति ने सेवा करि देखाडि छे ॥ ते जेम कोई कविद्वान होय ते पोताना छोकराने विद्या प्रथम शिखवे छे त्यारे पोते एम कहे छे जे एक डे एकु बगडे बेय ॥ एम वारेवारे कह्या करे छे तेम परमात्मा पोतानो महिमा पोते एक ज जाणे छे ॥ बिजो कोई जाणतो नथी माटे पोतानो महिमा कहेवाने अर्थे पांच देवरुपे ब्रह्माने पोतानुं ज्ञान कराव्युं छे ॥ ते परमात्मा पोते पांच देवरुप छे ॥ माटे प्रथम परमात्माये सूर्यरुपे परमात्मानुं वरणन कर्युं त्यारे सूर्यनो सर्वोपरी जगत्कर्ता भगवान कह्या अने बाकि चार देवरुप पोते परमात्मा छे तेणे ब्रह्माने उपासना कर्म ज्ञान शिखववा सारुं सूर्यनी उपासना भक्ति सेवा स्तुति करि छे ॥ एटलीवात वेदमां लख्याणि तेटला वेदमां सूर्य सर्वोपरि भगवान कह्या छे ॥ ने बिजा चार देवोने ते सूर्यना भक्त कह्या छे ॥ अने ज्यारे शक्तिरुपे परमात्मानुं वरणन पोते कर्युं त्यारे तेने विषे शक्ति सर्वोपरि भगवान कह्या छे ने बिजा चार देव रुपे पोते ज छे ॥ पण ते ब्रह्माने शिखववा सारुं शक्तिनी भक्ति सेवा स्तुति करि छे माटे ते उपदेशने विषे शक्ति भगवान कह्या छे ॥ ने बिजा शिव गणपति सूर्य ने विष्णु ए चार तेना भक्त कह्या छे ॥ एविज रीते गणपतिनुं वरणन कर्युं तेमां गणपति सर्वोपरि भगवान कह्या ॥ ने बिजा चार देव तेना भक्त कह्या छे ॥ अने विष्णुनुं वरणन कर्युं त्यारे विष्णु सर्वोपरि भगवान कह्या छे ने बिजा देवो एतेनी स्तुति भक्ती करि छे एम कह्युं छे ॥ शंकरनुं वरणन कर्युं त्यारे शंकर सर्वोपरि भगवान कह्या छे ॥ ने बिजा चार देवो तेना भक्त कह्या छे ॥ एविरीते सर्वोपरि एक परमात्मा छे

तेनां पांचदेवरूपे पंचअंगछे माटे परमात्मा ये ब्रह्मानेपोतानुंज्ञान भक्ति सेवास्तुति करवानिरखव, वासारु परमात्माये पां-
चदेवरूपे पोतपोतानो महिमा कह्यो छे नेपोते पोतानी भक्ति करिछे नेपोतेपोतानी स्तुति करिछे एवीरीते परमात्माअद्वै
तपांचदेवरूपे एकजछे ॥ पणतेमां कोई देवनानामोटा कहेवाताज नथी ॥पांचेएकपरमात्माजछे माटेवेदनेविषे पांच
देवरूपे परमात्मानुं वरणन कर्युं छे तेवेदउपरथी व्यासजीये पूराण कर्यांछे ॥ तेपूराणनेविषे जेदेव नानामनुं पूराण क-
र्युंछे तेदेवना नामने सर्वोपरि भगवान कह्याछे ने बिजाच्यारदेव तेना भक्त कह्याछे तेज्यांसुधि जीवने परमात्माना स्वरू
पनुं ज्ञानथयुं नहोय त्यांसुधि पांचेदेवने विषे नानामोटा समजायछे ॥ पछे एकदेवनुं भजन करे छे ने बिजादेवनी निंदा क
रेछे ॥ तेजेवुं पोते भजन करेछे तेजदेवनो तेना उपर कोपथायछे ॥ केमके पांचेदेवरूपे परमात्माएकछे ॥ माटे जेदेवनी निं-
दाकरेछे तेपरमात्मानी जनिंदाथायछे ॥ माटेजेने पोताना आत्मानाकल्याण नेइछवुं तेनेतो पांचेदेवरूपे एकपरमा-
त्माछे एमजाणीने पांचेदेवने पुज्यपणे करिने मानवा ॥ अनें पांचदेवछे तेमांथी जेदेवउपर पोताने घणो भावथतो होयते
देवनी भक्ति भजन सेवा ध्यान करवुं ॥ अने बिजादेवने एमजाणवुं जेहुं जेनुं भजन करुंछुं तेनां अंगछे ॥ अंगएटले तेनी शक्ति
योछे ॥ शक्तियोएटले जे परमात्माने जगत करवानुं पोतानुं सामर्थछे माटे पांचदेवरूप परमात्मा पोतेजछे ॥ एमसमजीने
जेजेदेवनी भक्ति करो तो तेनि भक्ति खरिछे ॥ अने एमजे नथी समजता नेजे एकदेवने भजेछे ने बिजादेवनी निंदा करेछे
तेतो पाखंडिछे तेउपर ॥ ॥श्लोकः॥ ॥ ब्राह्मणं केशवं रुद्रं भिजावेन मोहिता ॥ पश्यंति कं न जानंति पाखं-
डोपः ताजनः॥ ॥अर्थ॥ ॥ब्रह्माविष्णुनेरुद्र एटले शंकर आदिकपंचदेवतेने विषे जुदाजुदाछे ॥ एमसमजीने
मोहपामवो नहिं॥ केहेतां पांचेदेवने एक परमात्माजजाणवा एटले पांचदेवरूपे एकपरमात्माछे ॥ अनेजे पांचेदेवनेजु
दाजुदा समजेछे नेतो पाखंडिछे ॥ पाखंडि एटले ॥ पाजे सर्वेनुं पाळण करे एवाजे वेद कहेतां सर्वे जीवनुं कल्याण करेछे अ-
जे परमात्माना श्रीमुखनी वाणिरूपजे वेद ते वेदनुं जे खंडन करे तेने पाखंडि कहिये ॥ माटे एवाजे पाखंडि होयते पंच

देवने नानामोटाकहे छे ॥ नेन्नुदाजुदासमजे छे॥पणजे स्वद्ध संप्रदायना वेदोक्तधर्मिहोय ते पांचदेवने जुदाजुदा समजता नथी ॥एतमारा प्रश्ननो उत्तरछे ॥एमकहिने वार्तानीसमाप्तिकरि॥ पछि महाराजश्रीहरिकृष्ण महाराज सभामांथीउठ्या ते पोतानाउताराना ओरडामांपधार्या ने सर्वे जरियानी वस्त्र पुष्पनाआभूषणउतारीने बिजांस्वेतवस्त्रधारण करिने पाछा सभामां पलंग उपरविराजमानथया ॥ पछे गामश्रीरोईन्नालाना ब्राह्मण भगवानजीलक्ष्मीरामे महाराजनेएकप्रश्नपुछ्युंजेहे महाराज भगवान नाधामत्रणकहेवायछे एकवैकुंठ बिजुंगोलोक ने त्रिजुं अक्षरए त्रणधाम छे तेधामने विषेजे भगवानरह्याछे तेत्रण ठेकाणे भगवाननां स्वरूप सरखांहशे के कांई अधिक नुन्यहशे ते कृपाकरिने जेमहोयतेमकहो ॥ पछे महाराजश्री हरिकृष्णमहाराज बोल्याजेत्रणेधामने विषे भगवान तो एकजछे ।पणभगवानना स्वरूपने विषेभेदनथी ॥तेनुंदृष्टांत॥ जेमएकहु आंहीपलंगउपर बेठो छुं ॥अने बिजाबे मोटाकाचना तकता लाविने तेनेमारे बे पडखेसामा मुके तोहुंएबेतकतामां जेवो अहिं बेठो छुं तेवोने तेवो साक्षात्कार तेमांदेखाउं ते आपलंगउपरने बे तकतामां त्रणे ठेकाणे हुंज देखाउं पणतेमां भेदनकहेवाय ।।ते मअक्षरधामछे तेतो आपलंगमांहुं बेठो तेनेठेकाणेछे ।।अने बे तकताने ठेकाणे वैकुंठने गोलोकछे॥माटेत्रणेधामने विषे भगवाननीमूर्तितो एकजछे पणते मूर्तिमा भेदनथी ।।अनेते विजरीते बिजापण बे धामछे ॥एक बद्रिकाश्रम ने बिजुंश्वेतद्वीपछे ॥ तेनेविषेपण भगवाननी मूर्तियोरहि छे ॥तेपणएकनाएकज भगवानछे॥ पणपांचप्रकारना भक्तछे ते भक्तने भेदे करिने पांचधाम जुदांजुदां कहेवायछे॥ पण भगवानतोपांचेधाममां एकजछे ।।हवे पांचप्रकारना भक्त किया ।।तोएक तो जे पोतानो देह आत्मानुंज्ञाननहोय माटे देहने पोतानुंस्वरूप मानतोहोय पणतेने प्रत्यक्ष भगवान मल्याछे माटे ते भगवानने सर्वोपरी अक्षरातित जाणिने तेनीउपासना भक्ति सेवा स्मरण करेछे॥ते भक्त वैकुंठ धामने पामे छे ।।अनेते भगवाननुं नाम भक्तने भेदे करिने वैकुंठवासि कहेवायछे।।अनेते भक्तने वैकुंठधाममां रहिने अंनधन्य वस्त्र आभूषणादिक भारे भारे पदार्थे करिने भगवाननीसे

करेछे ॥ अने ते भगवाननी सेवाये करिने ते सेवाना पदार्थ स्थानक ने सेवक सर्वे निर्गुण कहेवाय छे ॥ अने ते भक्त ने ज्यारे प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा भक्ति ने समागम करतां करतां पोताना आत्मानुं ज्ञान थाय छे ॥ ने आत्मारुप थईने पोताने मल्याजे प्रत्यक्ष भगवान तेने सर्वोपरि अक्षरातित जाणिने ते मूर्तिने पोताना आत्माने विषे साक्षात्कार करवा सारु ने ते भगवानना मूर्तिने विषे ध्यान धारणाने समाधि लक्ष पामवाने अर्थे भगवाननी सेवा करे छे केहेतां तनमन धन्य वस्त्र आभूषणादिक पदार्थे करिने प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा उपासना भक्ति करे छे ॥ तेने गो लोक वासि भक्त जाणवो ॥ अने ते भक्त ने भेद करिने ते भगवाननुं नाम गोलोकाधिपति कहेवाय छे ॥ अने ते गो लोक वासि भक्त के री ते भगवाननी सेवा करे छे तो भगवाननी मूर्तिनां अंगो अंगने संभारिने पोताना आत्माने विषे ध्यानमां सिद्ध करवाने अर्थे भगवाननी सेवामां पदार्थनुं आर्जवन करे छे ॥ केहेतां भगवानना मुस्तकनुं ध्यान करवा सारु मुस्तक उपर पाघ धरावीने ते मुस्तकनुं ध्यान करे छे अने ते पाघमां सारी पेठे इंद्रियोनी प्रवृत्ति ने प्रितिउपजे ते सारु पाघमां तोरा कलंगि छोगला धारण करिने ने पाघे सहित भगवानना मुस्तकनुं ध्यान करिने भगवानना मुस्तकने पोताना आत्माने विषे ध्यानमां सिद्ध करे छे ॥ एवि जरीते भगवाननी मूर्तिना सर्वे अंगने पोताना आत्माने विषे ध्यानमां सिद्ध करवा सारु सर्वे अंगो अंगमां वस्त्र आभूषणादिक शणगार धारण करावीने ते भगवाननी मूर्तिनां अंगने निरखि निरखिने पोताना आत्मामां ध्यान करे छे ने ध्यान करतां करतां भगवाननी मूर्तिने विषे धारणा थाय छे केहेतां समग्र भगवाननी मूर्ति पोताना आत्माने विषे ध्याने करिने अखंड रह्या करवा करे छे ॥ अने ते ने पंच विषयनी वासना टळि जाय छे ॥ अने ते भक्तने पछे वैराग थाय छे ॥ ते वैराग्ये करीने संसारनो त्याग करिने साधु संन्यासि थईने प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा भक्ति ध्यान भजन करे छे ॥ ते भक्तने बदरीकाश्रमवासि जाणवो ॥ ने ते भगवाननुं नाम नर नारायण कहेवाय छे ॥ अने ते बदरीकाश्रमवासि भक्त तपने मुख्य राखिने भगवाननी सेवा भक्तिने ध्यान करे छे अने तप करतां करतां तेनो आत्मा ब्रह्म रुप थईने निरावरण दृष्टिने पामे छे ॥

नेएकप्रत्यक्ष भगवाननी मूर्ति विना बिजो कोई मार्इक आकार मात्रते नीदृष्टि मांरहेतोनथीते भक्त स्वेतद्विपधामवा-
सिकहेवायछे ॥ अनेते भक्त भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान मुख्यराखिने भगवान नी भक्तिसेवाकरेछे ॥ अनेते भक्तनेभेदे
करिने ते भगवाननुं नाम स्वेतद्विप वासि कहेवायछे ॥ एविरीते बेय ग्रहस्थ भक्तछे ने बे त्यागि भक्ति छे एचार प्रकार
ना भक्तने भेदेकरिने चार धाम रुप चारस्थानक कहेवायछे पण भगवान चारे धामने विषे एकजछे ॥ एट जेजे परमात्मा
अक्षरधाममां दिव्यमूर्ति अखंडरह्या छे ॥ तेनाते परमात्मा अक्षरमां अखंडरह्याथका रामकृष्णादिक अवतार धारण
करिने प्रगट थायछे ॥ तेप्रगट भगवाननो जेजीव आश्रयकरे छे तेमांते भक्त वासना वालोछे नेतेनेवासना मुकवानीइ-
च्छापण नथी ने प्रत्यक्ष भगवानने तो अक्षर धाममांना वासीजाणीने तनमनधनादिक पदार्थेकरिने प्रगटभगवाननी सेवाभ
क्तिकरेछे ॥ ते भक्तदेह मुकशेत्यारे वैकुंठ धामने पामशे ॥ अनेजे बिजो ग्रहस्थ भक्तछे तेनेपण वासनातोछे पणते
वासना मुकवानी तेनेइच्छा छे अनेपोताने देहथीनोखो एवोआत्मारुपमानेछे अने भगवाननी मूर्तिने पोतानाआ
त्माने विषे ध्यानमां सिद्धकरवासारु भगवानने भारे भारे वस्त्रनेआभूषणादिक पदार्थेकरिने सेवाकरवामां घणो भा
वहोय ते भक्तदेह मुकशेत्यारे ते गोलोक धामनेपामशे ॥ अनेजे भक्तपोतानेआत्मारुपमानिने संसारथीवैरागपा
मिनेपंचे विषयनो त्याग करिने साधुसंन्यासिथईने प्रत्यक्ष भगवाननी भक्तिसेवाकरेछे नेतेतपे करिने भगवानने प्रस
न्नकरवानेइच्छेछे ते भक्तदेह मुकशे त्यारे बदरीकाश्रमनेपामशे ॥ अनेजे भक्तसाधुसंन्यासिथईने निरवासनीकने
ब्रह्मरुप थयोछे नेभगवान प्रत्यक्षपोताने मल्याछे तेनीमूर्तिनुं अखंड ध्यान करयाकरेछे ते भक्तदेह मुकशे त्यारे स्वे
तद्विपनेपामशे ॥ अनेजे भक्त त्यागिछे ॥ अथवासंसार मां भगवाननी आज्ञायेकरिने रह्योहोय अथवाप्रारब्धेक-
रिनेजनक विदेहिनीपेठे संसारमां रह्योहोय पणतेज्ञानेकरिने चारदेहथीपर पोतानास्वरुपनेजाणतोहोय ॥
अनेतेचारदेहातित एवुंजेपोतानुं स्वरुप अक्षर ब्रह्म तेने विषे दृढ स्थितिनेपामीनेपंचे विषयनो त्याग करिने पछे

तेअक्षरब्रह्मनाआधारनेप्रकाशकएवाजे प्रत्यक्षभगवान तेनी आज्ञाप्रमाणेवरतेछेनेमोरेकह्याजेचारप्रकारना भक्ततेनी
पेठे प्रत्यक्ष भगवाननीसेवा तपनेध्यान तेनेअखंडकर्याकरेछे ॥अनेप्रत्यक्ष भगवाननु दरशनने सेवामुकिने पोतानीमेजेक्यां
ई एकक्षणमात्रपण छेटे जवानो संकल्प करतोनथी नेतेणेप्रत्यक्ष भगवानथी छेटे रहेवाय पणनहि एवो भक्त छे॥ तेदेह
मुकशे त्यारे ते भक्तअक्षरधामने पामशे ॥एविरीते भक्तने भेदकरिनेधामना भेदकहेवायछे॥ पण भगवाननी मूर्तिनेवि
षे भेदनथी अनेजेने वैकुंठवासि कह्या गोलोकवासिकह्या ॥ बदरीकाश्रमवासि कह्या श्वेतद्वीपवासिकह्या तेनाते भगवा
नअक्षरनावासिछे तेअक्षरधाममां अखंड रह्याथका काचना तकता रुपजे बिजां चार धामछे तेने विषे भगवानजेते ते धामना
भक्तोने दरशन आपेछे ॥अनेपांचे प्रकारना भक्त भगवाननीसेवातो सरखिरीते करे छे ॥ पण तेनी समजणने भेदे करि-
नेस्थानकना भेद पड्याछे पण भगवाननी मूर्तिने विषेभेद नथि॥ अनेजेभगवाननी मूर्तिने विषेजे भेदपाडेछे तेतो
अज्ञानीछे॥ नेतेने पाखंडिजाणवो॥ एतमारा प्रश्ननोउत्तरछे॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्त
॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्॥ १९॥ ओगणिसें॥ २४॥ चोवि-
सना मागशरवदि॥ १०॥ दशमिने दिवसे॥ महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्रीविरोलमध्ये पटेल भक्त मथुरभाईर-
णछोड भाईने घेर आथमणा बारना ओरडानीओसरिमां गादितकिये युक्तपलंग बिछाविने तेउपर विराजमानथयाह-
तानेसर्वे कस्कंबल सोनेरि वस्त्र धारण कर्यांहतां ने पिलापुष्पना आभूषण सर्वे अंगने विषेशोभि रह्यांहतां ने कुमकुम
नोचांदलो कर्योहतो॥नेपोताना मुखारविंदनीआगळसाधु तथा घणाक हरि भक्तनि मोटि सभा भराईने बेठि हती॥
पछे महाराज श्रीहरिकृष्णमहाराजनी संध्याआर्तिथयापछे॥ गामश्री रोईशाळाना विप्र भगवानजीये महाराजने प्रश्न
पुछ्युंजेहे महाराज प्रत्यक्ष भगवानना भक्तत्रणछे तेमां एक ज्ञानि भक्त छे ने एकविसवासिछेने एकप्रितिवाळोछे॥ अ
नेएत्रणे भक्तने आत्मज्ञान वैरागनेधर्म तेतो दृढपणे सरखांछे॥ अने वासना पण त्रणेनेटळिगईछे॥ अनेप्रत्यक्ष भगवान

ने विषेसर्वोपरि पुरुषोतमजाणीने ऋणे भक्त जोडाई गयाछे ॥ मारे ते ऋणे भक्त भगवानना धाममां सरखास्रुखने पामशे केमं
ई अधिक नुन्यरहेशे तेकहो ॥ पछे महाराजश्री हरिकृष्ण महाराज बोल्याजे एत्रणे भक्तने सरखो स्रुखनीप्राप्तिथशे केमके
जे स्वरूपने विषे ज्ञानीज्ञाने करिनेजोडाणोछे तेजस्वरूपने विषे विश्वासीने प्रितिवालो एबे यजोडाणाछे ॥ मारेत्रणेने सर
खास्रुखनीप्राप्तिथशे तेमांजे ज्ञानी छे तेतोजीवईश्वर माया ब्रह्मपर ब्रह्म तेनास्वरूपने जाणिने तेमांथी जीवईश्वर मा
यानो भेदटाळिने मायानापरपंचनो त्याग करिने पोतेआत्माब्रह्मरुप थईने परब्रह्मजे प्रत्यक्ष भगवान तेने विषेजोडाय छे ॥अने
जे विश्वासीने प्रितिवाला भक्तछे ॥ तेनेपूर्वने संस्कारेकरिने प्रत्यक्ष भगवाननास्वरूपनो निश्चे प्रथमविश्वासिने प्रिति
ये करिने दृढपणेथायछे॥ पछे तेनेप्रत्यक्ष भगवान एमउपदेशकरेछेजे तु कामनीवासनामुकिदे तथास्वारनोत्यागकरय॥अ
नेअमाराविना बिजे स्यांई प्रितिराखिशनहिं ॥ अने कोईजातनुं मानराखिशनहि अने तुंआतारादेहथी नोखोआत्माछुं
अने तेआत्मा ब्रह्मरुपछे माटे कामादिकने पाप रुपनेदुःखरुप छे एमजाणिनेतेनोत्याग करिने पंचविषयनी अरुचि क-
रिने एकमारे विषे प्रिति राख ॥ जेएविरीत्ये प्रत्यक्ष भगवानने एकवार कह्युं त्यारे ते वातने ते घडिये सत्यमानिने विश्वा-
सिने प्रितिवाळा भक्तछे ते पोताना मनमां तेविरीतेसमजीने वरतेछे नेतेमां लेशमात्र फेर पडवादियेनहि ॥ अनेप्रत्यक्ष
भगवाननी मूर्तिने विषे जेवीरीते ज्ञानि निरवासनिक थईनेजोडायछे तेविजरीते विश्वासिनेप्रितिवाळा भक्त पणजो-
डायछे माटे त्रणे भक्त सरखिपदवीनेपामेछे ॥ ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे ॥ एम कहिने पछे महाराज बोल्याजे अमे सर्वे
ने एक प्रश्नपुछीये जे धर्म ते धर्म शुं जे तेमां अधर्म प्रवेश करि जशके नहि ॥ अने ज्ञान ते ज्ञानशुं जे पाछुं कोई दिवस अ
ज्ञान थायज नहिं ॥ अने वैराग ते वैरागशुं जे फरिने कोई पदार्थमां राग थायजनहिं अने भक्ति तेभक्तिशुं जे कोई
दहाडे भगवानथी विमुखथायज नहि ॥ ए चार प्रश्नछे ॥ अने वलि धर्म तेअधर्म स्रुं जे केहे वृत्त धर्म ने मांथि आदी
अधर्म होय ॥ अने ज्ञानते शुं जे केहेवाय ज्ञानने माई कु महा अज्ञान होय अनेवैरागते रागशुं जे केहेवाय वैरागनेमां

अतिशेरागहोय ।।अने भक्ति तेभ भक्ति शुंजेकहेवाय भक्ति नेपरमेश्वरथी विमुखहोय ए चार प्रश्न बिजा छे।।अनेवलि
अधर्म ते धर्म सुंजे जणाय अधर्म जेवुं।।पण मांही महाधर्म होय ।।अने अज्ञान ते शुं जे जणाय अज्ञान जेवुं पण मांहि म
हाज्ञान होय।।अने रागते वैराग शुं जे जणाय राग जेवु पण मांहि महावैराग होय।।अने अभक्ति ते भक्ति शुं जे जणायअ
भक्ति जेवुं पण मांहि महाभक्ति होय ।।ए विरीते चार प्रश्न छे।।तेउत्तर जेने आवडे तेकरो।।पछे अक्षर मुक्तानंदस्वामि
ये उत्तर करवा मांड्यो ।। पण जथार्थ उत्तर थयो नहिं ।। पछे महाराजश्री हरिकृष्ण महाराज बोल्या जे सावधान थई
ने सांभलो जो हुं तेनो उत्तर करुं छुं ।।जे धर्म ते धर्म शुं तो मार्दकपंच विषयमांथी इंद्रियोनी वृतियोने पाछि वालिने ते वृ-
तियोने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपमां राखवि।।तेनुं नाम धर्म छे।।ने ते धर्मने विषे अधर्म कोई दहाडे पेसेजनहिं।।अने ज्ञानते
ज्ञानशुं तो प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपने साक्षात्कार जाणवाने पामवासारुं पोताने आत्मारूप थावुं तेनुं नाम तो ज्ञान छे ।।
ते ज्ञानने विषे कोई दहाडे अज्ञान पेसतुं जनथी ।। हवे वैराग ने वैराग शुं तो प्रत्यक्ष भगवाननी भक्तीने ध्यान करवामां जेजे
पदार्थ आडा आवे तेनो अतिद्रोअभाव आणिने ते ते पदार्थनो त्याग करवो तेनुं नाम वैराग छे ते वैरागमां कोई दहाडे राग
पेसेजनहिं।। हवे भक्ति ते भक्ति शुं तो धर्मज्ञानवैरागने द्रढ करिने निरवासनिक थईने पोताना आत्माने ब्रह्मरूप
जाणिने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषेम हात्मे सहित प्रिति करवि ते नुं नाम भक्ति छे अने ते भक्त कोई काले विमु
खथायजनहिं ।।अने हवे धर्म ते अधर्म शुं तो सर्वे जगत ना कर्ताने सर्वना आधार ने सर्वे ना पालक एवाजे भगवानपुरु-
षोत्तम अक्षरातित छे ते भगवान अनंतजीवोने ज्ञान आपिने उद्धार करवासारुं राम कृष्णादिक रुपे प्रगट थाय छे तेप्रगट
भगवानना आश्रयनो त्याग करिने पोताना पुरुषार्थ थडे करिने पोताना कल्याणनी इछ्याराखिने धर्म नियमपाले छे ने
तपव्रत करे छे पण ते धर्मजेवुं जणायछे।। पणते धर्म ते महाअधर्म छे।।तेएवो जैनमतनो धर्म छे ते लोकमां तो तेनो
धर्म सारो कहेवाय छे।। पणते कल्याणना मारगमां अधर्म छे केमके कल्याणनादाता जे भगवान तेनो त्याग कर्यो

मारे तेनो धर्म ते अधर्म छे ॥ हवे ज्ञान ने अज्ञान शुं तो पोताने देहथी नोखो आत्मा रुप मानीने ते आत्माथी पर परमात्मा भगवान एक छे ॥ ने सर्वे ना प्रकाशक छे ॥ तेने भूलिने एम समजे जे आतमा ते परमात्मा छे एम जाणीने पोताने भगवान मांने छे जे हुं आत्मा ते भगवान छुं वजि बिजो कोण भगवान छे एवुं जे ज्ञान ते महा अज्ञान छे ते एवा ज्ञानी निरविजस्क - स्क वेदांति छे ते ज्ञान कथे छे ॥ पण ते ज्ञान ते अज्ञान छे ॥ हवे वैराग ते राग शुं तो पोते काम लोभादिक नो त्याग करिने माईक आकार जे पिंड ब्रह्मांडादिक तेने नासवंत जाणिने संसारथी उदास रहे तो होय पण ते एम जाणतो होय जे रामकृष्णादिक भगवान केहेवाय छे ॥ पण ते तो काम क्रोधादिकने विषे वर्त्या छे मारे ते करतां तो हुं वैरागवान छुं एम समजीवने पोताने भगवानना अवतार करतां श्रेष्ट मनाय जे रामकृष्णादिक करतां हुं मोटो छुं एवो जे वैरागवान ते सोअ निरो महारागि छे ॥ ने ते तो महापापी छे ॥ ते एवो वैराग माथथानं दणसे छे ॥ अने हवे भक्ति ते अभक्ति शुं तो एम समजतो होय जे घट घट मां बोले छे ते बिजो नथी एज परमेश्वर छे एम जाणिने सर्वेने भगवान माने छे ने ते सर्वे जीवोनी भक्ति करे छे ते के विरीते भक्ति करे छे तो केहेशो के कुतरुं वासुदेव छे गधेडुं वासुदेव बलद वासुदेव सर्वे जीव प्राणी मात्र वासुदेव छे ॥ एम जाणिने स्त्रि या पुरुष एक बिजां भेगा थईने एक बिजानी भक्ति सेवा करे छे ने विषयने भोगवे छे ॥ अने जे साचा भगवान रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष छे ॥ तेने मानता नथी ॥ अने जीव जीवनी भक्ति करे छे एवि जे भक्ति ते अभक्ति छे केहेतां एम समजनारा प्रभुथी विमुख छे ने ते धर्मनी षमपण कांई पालतान थी मारे लोकमां तो साधु बावाने खवरावे छे सेवा करे ते भक्त कहेवाय पण ते तो भगवाननी भक्तिथी विमुख छे ॥ अने हवे अधर्म ते धर्म शुं तो प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति सेवा ने समागम करवामां कांईक अधर्म जेवुं जणातुं होय तोपण ते अधर्म ते जखरे खरो धर्म छे जेम व्रजनी गोपियो तथा ऋषिपत्नियो तेणे पोताना पतिने पड्या मुकिने वेदनी आज्ञा छे जे स्त्रिये पोताना पतिनी आज्ञामां रहेवुं ते आज्ञा लोपीने श्री कृष्ण भगवान भगवानने थाल जमाडवा गईयो ॥ तथा रास रमवा गईयो ॥

तथासेवा करवा गईयो ते लोकमां तथा धर्मशास्त्रमांअधर्मजेवुं कहेवाय पणते अधर्म तेमोटो धर्मछे केमकेजेणे करिनेतेनुंक-
ल्याणथयुंछे॥ तेजो अधर्महोयतो कल्याणथायनहि ॥ केमकेअधर्मिनुं कल्याणथतुंनथी मारेगो पियोनुं तथा रुषिपत्निओ
नुं साक्षात्कारकल्याणथयुं ॥त्यारे तेअधर्म तेआतिरोज धर्मछे ॥वलिजेमश्रीकृष्ण भगवाने अरजुनने कह्युंके॥ ॥
सर्वधर्मान्परितज्य ॥मामेकंशरणंव्रज॥ ॥कहेतां ताराकुलकुटुंबने मारीनाख्य ने सर्वे धर्मनो त्याग करिने एकमा
राचरणनो आश्रय रा ख्य एविरीते प्रत्यक्ष भगवाननीसेवा करवामां ने आज्ञापालवामां अधर्मजेवुं होयतोपण तेअधर्म
तेज धर्मछे ॥अने हवे अज्ञान तेज्ञानछे तोइंद्रियो अंतःकरण नाविषयने प्रितियेकरिने भोग ववा तेनुं नामअज्ञानक
हेवायछे॥ ते इंद्रियो अंतःकरणे करिने जे प्रत्यक्ष भगवानना भक्तछे तेनेत्रइंद्रियेकरिने भगवाननीमूर्तिने प्रितियेकरिने
जुवेछे ने काने करिने भगवानना शब्दमां एकतार प्रीतीये करिनेजोडाई जायछे नेरसनाये करिने भगवाननी प्रसादिज
मवामां जोडाईजायछे ने भगवाननी मूर्तिने विषे त्वचाये करिने प्रितियेसहित बाथमांघालिने मलेछे ने नासिकाये क-
रिने भगवानना प्रसादिनापुष्पनाहार चंदनादिक नीसुगंधि प्रितियेकरिने लियेछे नेमनेकरिने प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा
करवाना संकल्परात्यदिवस कर्याकरेछे ॥नेबुद्धियेकरिने प्रत्यक्ष भगवाननास्वरूपनो निश्चयकरेछेने चित्ते क-
रिने भगवाननीमूर्तिनुंचिंतवन कर्याकरेछे॥ अने अहंकारे करिनेहुं भगवाननोदासछुं ॥एवुं अभिमानधरेछे ॥एविरीतेइंद्रि
यो अंतःकरणरूपजे मायानुं टोलुं तेणे करिनेप्रत्यक्षभगवानना स्वरूपमांप्रितिये करिने जोडाईजायछे॥ तेइंद्रियोनावि-
षयरुपि अज्ञान ते महाज्ञान छे ॥केमके भगवाननीमूर्तिविना बिजेजोडाय तेतोअज्ञानछे ॥पण तेनांइंद्रियो अंतःकर-
णप्रत्यक्ष भगवानना स्वरुपमांजोडाय तें तो ते अज्ञाने तेजज्ञानछे केमके भगवान विनाबिजेइंद्रियोअंतःकरण जोडा
यछे तो ते जिव नरकमांजायछे ॥अने भगवाननीमूर्तिमांजोडायछे त्यारे तेनांइंद्रियोअंतःकरणनिरगुणभावनेपामी
जायछे ॥नेतेआत्मा ब्रह्मरुपथईने अक्षर धाममांजायछे ॥जेम जोडुंछे ते सर्वेथावुं करतां उत्तर तुं छे पणतेनेजो

पारसमणिनो परस थाय तो ते लोढुं मटिने सोनुं थईजायछे॥ तेमजीवनां इंद्रियो अंतःकरण तो लोढानीपेठे जीवने नरकमांनाखनारां छे नेमदा अज्ञानरुप छे पण ते इंद्रियो अंतःकरणने प्रत्यक्ष भगवानननो संबंध थईजाय तोतेनुं अज्ञानने माईक भाव तेटलिजायछे ॥ नेते निरगुणएटले ज्ञान रुप थईजायछे ॥ माटे ते अज्ञान ते ज्ञानछे ॥ अने हवे राग ते वैराग शुंतो माईक पदार्थमां प्रिति तेनुं नाम रागछे ॥ ते माईक पदार्थने विषे प्रितिकरिने ते पदार्थ वडे प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा करेछे ॥ तोव रागते वैरागछे ॥ अने ते प्रत्यक्ष भगवाननी सेवामा संबंधमां जेजे पदार्थ आवेछे तेपदार्थ तो निर्गुणथईजायछे ॥ तेते पदार्थ तो अमाईक रुप छे एटले कल्याणकारिछे ॥ माटे प्रत्यक्ष भगवाननी सेवाकरवानां जेपदार्थ तेनेविषे जेप्रीती जे राग ते तो वैरागछे ॥ अने हवे अभक्ति ते भक्ति शुं तो धर्मज्ञान वैराग सिद्धकरिने निरवासनिक थईनेपोताना आत्माने अक्षर ब्रह्मसाथे एकत्वपणुंकरिने ते अक्षर ब्रह्ममां अखंड रह्या एवा जे पर ब्रह्म परमात्मा प्रत्यक्षमूर्ति भगवान तेने विषे समाधिलक्षेकरिने धेयाकारएो अद्वैतभावने पामिगयो जे मुक्त तेने अभक्ति कहेवायछे केमके भगवाननी मूर्तिथकि पोताने जुदापणानो भाव जणाय त्यारे तेनी भक्ति के सेवा करे पण ते तो वेनी धेयाकार व्रति थईगईछे ॥ जेम गोपियोने व्रंदावनने विषे भगवानसाथे रास रमवाने समे अंतर ध्यान थईगया ॥ पछे गोपीयो भगवानने खोलतां खोलतां भगवान क्यांई हाथन आव्या पछे भगवानने संभारतां संभारतां गोपीयोनी व्रतियो भगवान रुपथईगईछे पछे ते गोपियोये कह्युंछे के अमे कृष्ण छईये ने भगवानना जे जे आचरण करवा लागीहती ॥ कहेतां भगवाने गोवरधन तोल्योहतो तेमपोते लाकडिउपर लुगडु नाखिने उंचुं करिने कह्युं के मे गोवरधन तोल्योछे ॥ एवीरीते भगवानना भावने व्रतियो पामीगईहती ॥ तेमजेने भगवानने विषे धेयाकार व्रत्ति थईजायछे तेनुं नाम अभक्ति छे ते अभक्ति पण ते तो महा मोटि भक्ति छे ॥ एवीरीते प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने संबंधे करिने साधन सर्वे सफल थायछे ॥ अने प्रत्यक्ष भगवानना संबंधविना साधन सऊजे केटलां करे पण ते सर्वे अफलछे माटे प्रत्यक्ष भगवाननो जेने

संबंधथायछे नेतेनेविषेजीवजोडायछे ॥ तेनुंज कल्याणथाय छे तेस्रु जेतो ज्ञानेकरिने प्रत्यक्ष भगवानमांजोडाय नेस्रुजे
तोप्रीतियेकरिने जोडाय ॥अनेस्रु जे तो विश्वासेकरिनेजोडाय नेस्रजेतो गमे तेभावेप्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषे
जोडाईजाय तोते सर्वेनुं सरखुंजकल्याणथायछे अने प्रत्यक्ष भगवान मल्याविना नेते भगवाननी मूर्तिने विषेजोडा
णाविना स्रुजेतेटलो ज्ञानीहोय स्रुजेतेटलो वैरागवानहोय स्रुजे तेवो त्यागिहोय तपस्वि होय भेखजेईनेवनमां
रहेतोहोय संन्यासिथयोहोय श्रीपातथयोहोय तोपण प्रगटभगवान मल्यानहोय त्यांसुधि सर्वेसाधनव्रथाछे
॥नेतेनुं कल्याणथतुंनथी॥ ॥इतिश्रीमुख्यसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥

श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्॥१९॥ मागशिरसे ॥२४॥चोविसना पोषशुदि॥ ५॥प
डवाने॥दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्रीवीरोजमध्ये ॥पदेल सिघर लखुजीने घेर आथमणे बार ओ-
रडानारवे समां गादितकिये युक्तपलंगउपरविराजमानथयाहता॥ नेसर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्याहता॥नेसर्वे
अंगमां पिलापुष्पनां आभूषणनो भीरह्यांहतां नेललाटनेविषे कुंकुनो चांदलो कर्योहतो नेपोतानामुखारविंदनी आ-
गल साधुतथाघणाकहरिभक्तनीसभा भराईनेबेठिहती॥ पछेमहाराजनीसंध्याआर्तिथया केडे महाराजे साधुनेप्र
श्नपुछ्युं जे आत्मारुपने ब्रह्मरुप एबे एकहशे के जुदाजुदाहशे तेकहो॥ पछे अक्षरमुक्तानंदस्वामिये कह्युं के जुदा-
जुदाछे॥ केमके आत्मारुपछे तेतो त्रणदेहनोद्रष्टा छे॥ अनेजे ब्रह्मरुपछे तेतो त्रणदेहनेजाणतोनथी ॥पछे महा-
राजबोल्याजे जेने विषे रजोगुण ने तमोगुणनुं कार्यजे कामक्रोधलोभस्वादस्नेह दंभकपट असूयाईरसा रागद्वे-
षादिक दोषवर्तताहोय तेनेजीवजाणवो ॥अनेतेजीवनर्कचोरासिमांजायछे॥ अनेजेनेविषे सत्वगुणनुं कार्य
जे धर्मज्ञानवैराग भक्ति शील संतोष दयाक्षमा विवेकविचार अहिंसा ब्रह्मचर्यादिक शुभगुणवर्तताहोय तेनेआ-
त्मारुप जाणवो॥ अनेते आत्मारुपने तेशुभगुणनुं मानहोयखरुं ॥मारे तेआत्मारुपथयो तेईश्वरनासाधर्म्यपणाने

पामे छे ॥ अने जे ब्रह्मरूप छे तेने विषे शुभगुण तो सर्वे संपूरण होय खरा पण तेने ते गुणनुं मान होय नहि ॥ माटे रजोगुण ने तमो
गुण वर्तता होय तेने जीव जाणवो अने सत्वगुण जेने वर्तता होय पण जेने ते गुणनुं मान होय तेने आत्मारूप जाणवो
अने जेने सत्यगुणरूप शुभ गुण तो वरतता होय पण तेनुं मान होय नहि ते ब्रह्मरूप छे ॥ ने जे ब्रह्मरूप थाय छे ते भगवानना
अक्षर धामने पामे छे अने ते एवा शुभ गुणनुं मान क्यारे टळे छे ॥ तो जेने विषे एवा शुभ गुण अनंत अपार छे पण ते गुणनुं ले-
शमात्र मान नथी जेने एवा जे परमात्मा ने तेना एकांतिक संत ने प्रत्यक्ष मळे ने तेना आश्रय करे त्यारे तेने ज शुभ गुण-
नुं मान टळि जाय छे ॥ ने ते आत्मा ब्रह्मरूप थाय छे ॥ पण ते प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतना आश्रय विना कोई का-
ळे शुभ गुणनुं मान टळतुं नथी ॥ अने गुणनुं मान रंचमात्र होय त्यां सुधि ते ब्रह्मरूप कहेवाय नहि ॥ अने प्रत्यक्ष भग-
वानने संतना आश्रय विना गुणनुं मान आव्या विना रहे ज नहि ॥ ए सिद्धांत वार्ता छे ॥ अने ते शुभ गुण पण परमात्माना
ज घरना छे ॥ पण ते परमात्माने जथार्थ जाण्या नथी त्यां सुधि ते गुणनुं मान रहे छे ॥ अने ते परमात्माने जाणवा ते पोते
परमात्मा पंडे अथवा तेना एकांतिक संत जणावे त्यारे जणाय छे ॥ पण ते विना बिजो कोई परमात्माने जणाववा शक्त
नथी ॥ माटे प्रगट भगवानने भगवानना संत मळ्या विना शुभ गुणनुं मान आव्या विना रहे ज नहि ॥ जेम कुवानी बहा-
र होज होय ते कुवाने जळे करिने भराईने छलकी जाय छे ॥ त्यारे ते होज एम जाणे जे मारा जेटलुं जळ कुवामां तथा को-
ई ठेकाणे नहि होय ॥ एम होज फुलाय छे ॥ अने जे कुवो छे ते मांतो अपार जळ भर्युं छे ते एवा एक होज जेवा अनंत
होजने भरि मुके तो पण ते कुवानुं पाणि खुटे नहि ॥ एटलुं अपार जळ कुवामां भर्युं छे ॥ तो पण ते कुवो छलकातो नथि
॥ अने होजमां तो कुवानुं जळ आवे छे त्यारे ते होज भराय छे ॥ ने जो कुवानुं जळ होजमां न आवे तो ते होजमां लेशमात्र
जळ रहे नहि ॥ ते होजे कुवाना जळने नथी जाण्युं त्यां सुधि ते फुलाय छे ॥ पण जो कुवाना जळने होज जाणे तो ते
होजने रंचमात्र मान रहे नहि ॥ तेम ए तो दृष्टांत ने एनुं सिद्धांत तो एम छे जे बिजा मनुष्य देव ब्रह्मा ने प्रकृतिपुरुषादिक

सर्वेते होजने ठेकाणे छे ॥ अने प्रत्यक्ष परमात्मा भगवान छे ने भगवानना संत छे ते कुवाने ठेकाणे छे ते जे म होज मां पाणी
जेटलुं होय छे ते कुवामांथी ज आवे छे पण कुवा विना होजमां पाणि होय ज नहि तेम मनुष्य देव ब्रह्मादिक ने विषे जेटला
जेटला शुभगुण आव्या छे ते सर्वे परमात्माने तेना संतना ज गुण आव्या छे पण ते देव ब्रह्मादिक परमात्माने नथी जाण-
ता त्यां सुधि ते सर्वेने शुभगुण जेम जेम पोताने विषे आवता जाय छे तेम तेम गुणनुं मान आवतुं जाय छे ॥ ने ते गुणने मान
करिने ते गुणमां ते सर्वे बंधाय छे ॥ अने प्रत्यक्ष परमात्माने विषे अनंत शुभगुण रह्या छे पण ते गुणनुं मान तेने नथी ते सारु प-
रमात्मानो आश्रय जे आत्मा करे छे ॥ तेने गुणनुं मान रहेतुं नथी ॥ माटे ते परमात्मानो आश्रय करवा सारु प्रथम जीवपण-
नार जो गुणी तमोगुणि कामक्रोधादिक दोष तेनो त्याग करवो ने सत्वगुणना सिलसंतोषादिक शुभगुण तेने शिख-
वा अने ते शुभगुणने तो दृढ करिने राखवा ने ते गुणना मानने टालवाने अर्थे प्रत्यक्ष परमात्माने तेना संतने सेववा ॥
अने ते परमात्माने सेवता सेवतां घणाक जन्मना शुभ गुणना शुभ संस्कार भेगा थाय छे त्यारे ते आत्माने प्रत्यक्ष
परमात्मा मले छे ॥ पछे ते प्रत्यक्ष परमात्मा जे ते तेना शुभ गुण ते मानने नास करिने ब्रह्मरूप करे छे ॥ ते के विरीते मान मु-
कावे छे ॥ तो परमात्मा पोते पोताना स्वरूपनो महात्मे सहित निश्चय करा विने पोताना आश्रयमां राखे छे ने पो-
तानी आज्ञामां वरतावे छे अने ते आत्मा ब्रह्मस्थितिने पाम्यो होय ने घणाक शुभगुणवान थयो होय ने महामुक्त थ-
यो होय तो पण तेने प्रत्यक्ष भगवाननी आज्ञामां लगारेक फेर पडे तो तेने तत्काल शिक्षा करे छे ॥ ने ते शिक्षा शा
सारु करे छे तो तेने शुभगुण घणाक आव्या छे माटे रखे ते गुणानुं मान आवे नहि अने जो कोई जातनुं मान आवशे तो
तेना गुण ते सर्वे दुर्गुण थई जशे एम जाणिने मुक्तने पण वारंवार शिक्षा कर्‍या करे छे ने दंड दिधा करे छे ॥ अने जे मुक्त
छे ते तो बिजा सर्वे जगतना तो गुरु छे ॥ माटे प्रत्यक्ष परमात्मा विना बिजो कोई तेना मानने मुकाववाने समरथ नथी
अने जेने शुभगुण आव्या होय ने तेनुं जे मान चडे ते मान पोतानी मेले टलतुं नथी ते सारु आत्मारूप थयो होय तेने ब्रह्म

रुपकरवा सारु तेना माननुं खंडन करवाने प्रत्यक्ष भगवान ने तेना एकांतिक संत समरथ छे माटे प्रत्यक्ष भगवानने संतनो आ
श्रय करिने तेनी आज्ञामां जेम कहे तेम वरतवो ॥ तेनुं मान टलशे ने ते आत्मा ब्रह्मरुप थईने अक्षरधामने पामशे ॥ ॥
॥ ॥इतिश्री मुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥
॥ ॥संवत्॥१९॥ ओगणिसें ॥२४॥ चोविसना पोषशुदि ॥५॥ पंचमिने दिवस ॥ महाराजश्रीहरिकृ
ष्ण भगवान गाम श्री विरोलमध्ये पटेल जिवाभाई व्रजभाईने घेर आथमणा बारना ओरडानी खेत्रामां गादि तकिया नरवा
ने पलंग उपर विराजमान थया हता ॥ ने सर्वे कसुंबल जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हता ॥ ने सर्वे अंगमां पिला पुष्पना आ
भूषणो भि रह्याता ॥ ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरि भक्तनी सभा
भराईने बेठि हति ॥ पछे महाराजनी संध्या आर्ति थया केडे ॥ महाराज सर्वे सभा प्रत्ये बोल्या जे भगवानना धामने जीव
क्यारे पामे छे ॥ तो जीवने भगवानना स्वरुपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय छे ॥ त्यारे ते जीव भगवानना अक्षरधामने
पामे छे ॥ अने भगवानना स्वरुपमां संशय होय त्यां सुधि ते जीव भगवानना धामने पामे नहिं ॥ हवे ते भगवानना स्वरु
पनो निश्चय ते शुं तो भगवानने यथार्थ जे वा छे तेवा जाणवा ॥ ते नुं नाम निश्चय कहेवाय ते भगवाननुं स्वरुप बे प्रकारनुं
छे ॥ एक दिव्य स्वरुप छे ने एक दिव्य थका जिवोना कल्याण करवा सारुं मनुष्य स्वरुपनुं धारण करे छे ॥ ते एबेय प्रका
रना स्वरुपने जाणे त्यारे तेने भगवानना स्वरुपमां संशय थाय नहिं अने बे प्रकारना स्वरुपने जाण्युं न होय तेने भगवानना
मनुष्य स्वरुपने विषे नाना प्रकारना चरित्र जोईने संशय थाय छे हवे ते बे प्रकारना स्वरुपने जाणवानी रीत कहिये छैये ॥
जे दिव्य रुप भगवाननुं के वुं छे तो काने करिने सांभल्यामां आवे एवा नथी ॥ ने आंखे करिने जोयामां आवे एवा नथी ॥ ने
रसनाना वरणनमां आवे एवा नथी ॥ ने नासिकाना सुंघ्यामां आवे एवा नथी ॥ ने चित्तना चिंतवनमां आवे एवा नथी
ने बुद्धिना निश्चयमां आवे एवा नथी ॥ ने मनना संकल्पमां आवे एवा नथी ॥ ने अहंकारना अभिमानमां आवे एवा न-

थि॥एवादिव्यस्वरूप भगवान इंद्रियोअंतःकरणथीपरछे॥नेदिव्यमूर्तिमानथका अक्षरधामनेविषे विराजमान रह्याछे ॥ नेते भगवानना एकएकरोमनेविषे कोटानकोटि सूर्य चंद्रमा ने अग्नि तेना प्रकाशने पण जांखो करे एवो तो जेनो प्रकाश छे॥नेअनंतकोटि दिव्यपारसदे विंटाणाथका दिव्यसिंहासन उपर विराजमान छे॥ नेजेनी इच्छामात्रेकरिने कोटिब्रह्मांडनी उत्पत्तिथायछे॥नेजेनीइच्छायेकरिनेकोटिब्रह्मांडनीस्थितिरहेछे॥अनेजेनीइच्छायेकरिनेकोटिब्रह्मांडनो लय थइ जायछे ॥नेजेनीशक्तिकालछे॥जेनीशक्तिमायाछे॥जेनीशक्तिपुरुषछे॥जेनीशक्तिअक्षरछे॥एवाअनंतशक्तियोनाईश्वरछे ॥ नेअनंतकोटिब्रह्मांडनाराजाधिराज छे॥अनेते ब्रह्मांड ब्रह्मांड प्रत्ये ब्रह्माविष्णुनेशिवछे॥तेब्रह्मांडनुं रखावलुं करे छे॥ नेतेब्रह्मांडनादेवदैत्य मनुष्य सर्वे ब्रह्माविष्णुशिवनुं भजन करेछे॥नेतेनीआज्ञामां वरतेछे॥नेब्रह्माविष्णुशिवछे॥तेदिव्य स्वरूपने भगवान तेनुं भजन करेछे॥नेतेनीआज्ञामां वरतेछे॥अनेते ब्रह्माविष्णुशिव ते भगवाननी प्रार्थना करे छे॥जे हे महाराज तमे कृपा करिने अमारा ब्रह्मांडमां पधारो ने अमारा ब्रह्मांडना सर्वे जीवोनां कल्याण करो॥अनेअमाराथि तेवीतमारी सेवा थशे तेटलि करिशुं॥एमप्रार्थना करेछे ॥ तेप्रार्थनानेसांभलिनेदिव्यस्वरूप एवा जे भगवान ते पोतानो दिव्यभाव छुपाविने ब्रह्मांडने विषे पधारेछे॥तेज्यांजेवुंकार्यहोयत्यांतेवादेहनुं धारण करे छे॥नेजेवो देह धारण करे छे तेविज चेष्टा करे छे॥ पणतेथीअधिकपणे नथी वरतता॥ते भगवाने मछकछनो देह धर्यो हतो तो तेज क्रमांज फरया॥नेवाराह अवतार धारण कर्यो त्यारे तेविरीते वरत्या हता॥अने हयग्रिव अवतार धारण कर्यो त्यारे घोडानी पेठे वरत्या॥ अनेनरसिंहअवतार धर्यो त्यारे सिंहनी पेठे वरत्या॥ अने राम कृष्णादिक मनुष्य देहनुं धारण कर्युं त्यारे मनुष्यनाजेवीज चेष्टा करिनेमनुष्यनी पेठे वरत्या पण बिजीरीते नवरत्या तेजेम मनुष्य प्रथम गर्भमां आवेनेते गर्भवृद्धिने पामे ने पछे बालक जनमे नेते बालक जुवान थाय॥ वृद्ध थाय नेदेह मुके तेम भगवान पण ते रीते गर्भमां आवे बालक थाय जुवान थाय वृद्ध थाय॥ देहमुके नेजेम मनुष्यने खावुं पिवुं ओढवुं पेहेरवुं काम क्रोध लोभ स्वाद स्नेह मान पक्षपात घारकुं पोतानुं इत्यादिक गु-

णहोय ते मते विरीते भगवान मनुष्यदेहनुं धारणकरेछे ॥त्यारे तेनेविषे मनुष्यनीपेठे कामक्रोध लोभमोहपारकुं पोतानुं पक्ष पातद्वार बुंजीतवुं इत्यादिक मनुष्यनाजेवा सर्वेगुणपोताने विषे जणावे छे ॥ नेमनुष्यनीरीतेजवर्ते छे ॥पण मनुष्यना करतां अधिक पणेनवीवरतवा ॥ त्यारेकोईनेशंका थायजे भगवानमाणसनीपेठे वरते त्यारे तेजीवने भगवाननीओलखाणकेम पडे तो ओलखाणएमपडेजे जोयामां नेवरत्यामां ने क्रियामां तो माणसजेवाजणाय खरा पणतेने विषे कांईक दिव्य भाव होयखवो ते दिव्यभावते शुं तोते भगवानने विषेजेवुंज्ञानहोय तेवुंज्ञान बिजा कोई मनुष्य ने विषेहोयनहिं ॥ तेबुद्धिवालो मनुष्यहोयनेजाणेजे मनुष्य तो सर्वे छे पण आवुं मनुष्य कोईहोयनहिं ॥एम बुद्धिवान होय तेप्रत्यक्ष भगवानने ओलखेछे पण बिजे कोईप्रकारे भगवानओलखातानथी ॥ अनेजेभगवान दिव्यस्वरूप कह्या तेमांतेज भगवान मनुष्यजेवाथायछे ॥पणजीवनेज्यांसुधि मायानुंआवरण होय त्यांसुधि तेने दिव्य रूपने मनुष्यरूप बेयजुदाजुदा जणायछे ॥पण भगवान बे नथी ॥एकजछे ॥ केमनीपेठे तोजेम चंद्रएक छे पणआपणीआंख्योउपर आंगलिनो भार राखिनेजोईये त्यारे बे चंद्र जणाय छे॥ नेज्यारे आंगलिउपाडि लेईनेजोईये त्यारे पाछो जेवो छे तेवोएक चंद्र जणायतेम भगवान तो एक छे पणआंखउपरआंगलिनीपेठे जीवनी उपर अष्टआवरण रूप मायानोदाबछे तेदाबेकरिने भगवानने बेरूपे देखे छे ॥अनेज्यारे मायानुंआवरणजीवनेटलिजाय छे त्यारे तेने दिव्यरूपनेमनुष्यरूप भगवानतेएक जणायछे ॥ तेपूर्वे व्यासने वाल्मिकने शुकने सनकादिक ने नवयोगेश्वर आदिक मोटा मोटा मुनि तेने मायानु आवरण टलिगयुंहतुं तोतेणे मनुष्याकृति एवाजे रामकृष्णादिक भगवाननाअवतार तेनेदिव्यरूपजाणिने तेप्रत्यक्ष भगवाननी लिलाने चेष्टाने चरित्र तेनुं गानकर्युं छे ॥ अनेते राम कृष्णादिक भगवान मनुष्यनीपेठे वर्त्याछे तोपण तेने विषे माया पर करवानुं ज्ञानहतुं तोतेमनुष्यमूर्तिने दिव्यजाणिनेमोटा मोटा मुनियो घणा कतेसंसारथी वैराग पामिने ब्रह्मरूप थईने वनमांजईने तेप्रत्यक्षमूर्ति विषे ध्यान करिनेजोडाई गयाछे ॥मारे मनुष्यमूर्तिने दिव्यमूर्ति भगवान बेयएकछे ॥तोपणजीवोनां कल्याण करवांतेतो मनुष्य

मूर्तिथकिज थायछे ॥ पणदिव्य मूर्ति थकि कोईजीवनुंकल्याणथायनहिं ॥ केमके ज्ञानविनाजिवनुं कल्याणथतुंनथी ॥ नेदिव्य स्वरूपतोजीवनाजाण्यामांआवेएवुं नथी ॥ माटेजीवनेजाण्यामांआवेएवा स्वरूपनुं धारणकरिने जिवनासजातिथईने ज्ञान आपेछे त्यारेजीवने ठिक पडेछे ॥ ने भगवानने विषेजीवनेहेतथायछे ॥ नेहेतेकरिनेजीवनुं कल्याण थायछे ॥ माटे भगवान मनुष्यस्वरूपनुं धारण करेछे ॥ नेमनुष्यनीरीते वरतेछे ॥ अनेजो दिव्य रुप भगवान प्रगट करे तो जिवने ठिक पडे नहि ॥ नेहेतपणथायनहिं ॥ नेउलटोजीव बी मरेने मुझाईजाय ॥ जेमश्रीकृष्ण भगवाने अरजुनने विश्वरुपदेखाड्युं ॥ त्यारेते रुपजोईने अरजुन आकुलव्याकुलथईगयो ने कह्यु के हे महाराज आतमारु अद्भुतरुपजोईने हुं भयनेपामुं छुं ॥ माटे कृपा करिनेतमारुं मनुष्य स्वरुप प्रथमहतुंतेवुं मुने देखाडो तोमुने सुखथाय ॥ पछे भगवाने मनुष्य स्वरुप देखाड्युं त्यारे अरजुनने सुख थयुं माटे भगवानना दिव्य स्वरुपनेजोईने कोईजीवने सुखथायनहि ॥ नेहेतपण थायनहिं ॥ केमके विजाति भाव थयो ॥ माटे विजाती भाव पणामां जीवनेहेतथायनहि ॥ तेसारुं भगवानमनुष्यस्वरुपनुं धारण करेछे त्यारे ते मनुष्यस्वरूपने विषेजीवनेहेतथायछे नेहेते करिनेजीवनुं कल्याणथाय छे ॥ अनेजे दिव्य रुप भगवान छे तेनातेज मनुष्यस्वरुपछे पणभगवान बे नथी ॥ अनेजीवोनांकल्याणकरवासारु भगवाने मनुष्यदेहधारण कर्यो होय ते मनुष्यनी पेठेज वर्तेछे ॥ नेतेनोआश्रारो करे तेनुंजकल्याणथायछे पण दिव्य स्वरुपथी कोईजीवनुं कल्याणथतुंनथी केमके तेस्वरुप कोईना ग्रहण करयामांआवतुंनथी ॥ तेसारुं कृपाकरिने भगवान मनुष्य स्वरुपनुं धारण करेछे ॥ नेमनुष्यदेहधारण करिने मनुष्यनीपेठेवरते छे ॥ पण असुरिनेदिव्यभावरंचमात्रदेखाडतानथी ॥ माटेएविरीते बे प्रकारना स्वरूपनेजाणिने प्रत्यक्ष भगवाननो आसरो जेणे कर्यो होय तेने भगवानना मनुष्यस्वरूपने विषे गमे तेवा चरित्र करे पण तेने संषयथाय नहिं ॥ ते भगवान समरथपणे वरते असमरथपणे वरते कांमजणावे क्रोधजणावे लोभजणावे ॥ क्यारे क्षुधा गे क्यारेक रोवे इत्यादिक मनुष्यनी पेठे गमे तेवां चरित्र करे तोपण तेने संशय थाय नहिं अने एविरीते समजीनेजेणे

प्रत्यक्ष भगवाननो आश्रय कर्यो होय तेने कल्याणना मारगमां कोई विघन लागे नहि ॥ अने ए रीते बे प्रकारना स्वरूपने जाण्युं न होय ॥ ने तेणे बिजां अनंत साधन कर्यां होय तो पण तेनुं कल्याण कोई काळे थाय नहिं ॥ माटे बे प्रकारना स्वरूपने एक जाणिने प्रत्यक्ष स्वरूप तमने मल्युं छे तेनो द्रढ आश्रय करो एटले तमारां कल्याण साक्षात्कार थयो ॥ अने जेण आश्रय कर्यो छे तेनां तो कल्याण थई रह्यां छे॥ ॥ इतिश्रीमुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥ ॥ संवत् ॥ १९ ॥ ओगणिसें ॥ २४ ॥ चोविसना पौष शुदि ॥ ६ ॥ छठने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री विरोल मध्ये पटेल मनोरराईने घेर उगमणे बार ओरडानी रवेसमां गादितकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता ने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ने सर्वे अंगमां पीला पुष्पनां आभुषणशोभि रह्यां हतां ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हती ॥ पछे महाराज कृपा करिने बोल्या जे जीवने सुख थवाना बे उपाय छे ॥ एक पोतानी मेले मेहेनत करयाथी सुख मले छे ॥ ने बिजुं कोईकनी मेहेरबानी थाय तो तेथी वगर दाखडे सुख थाय छे ॥ जेम कोईक गरिब माणस होय ते खेती करिने वेपार करिने कोईनी चाकरि मंडाविने पैसा कमाय ॥ ते सो बसें हजार बे हजार अधिक माय ॥ ने तेणे करिने ते सुखियो थाय ॥ अने कोईकनी उपर तो कोई मोटो राजा प्रसन्न थायने पोताना होलियानो चाकर करिने राखे ने तेने पोतानो खजीनो होय ते बधोय सोंपि दिये ते वगर दाखडे लखेस्वरी थई जाय ने ते महा सुखने पामे ॥ तेम परलोकमां जीवने सुख पामवाना बे उपाय छे ॥ ते जेम मेहेनत्य करिने पैसा कमाईने सुखने पामे तेम परलोकमां सुख पामवा सारु पोतानी मेले धर्म ज्ञान वैराग ने ऐश्वर्य ए चार गुण शिखे छे ने ते चार गुणे करिने तमोगुण ने रजोगुण टलिने सत्व गुणि थाय छे॥ ने ते सत्वगुण छे ते सुखकारी छे ॥ ने सत्वगुणिने देवादिक लोकनी प्राप्ति थाय छे ॥ एटलुं तो जीव पोतानी मेले पुरुषप्रयत्ने करिने सुखने पामे छे ॥ हवे धर्म ज्ञान वैराग ने ऐश्वर्यनुं स्वरूप छे ॥ तो इंद्रियोने नि-

थममां रा रविने पोतानाआत्मानुं रूडुं थाय एवे मारगे चाले तेनुं नाम धर्म कहेवाय छे ।। अने देहने ने आत्माने नोखा जाणवाने
देहने मिथ्या जड ने दुःख रूप जाणवो ।। ने आत्मा ने पोतानुं स्वरूप जाणवुं ।। ने ते आत्मा सत्य छे ।। सुखरूप छे प्रकाशवान छे
ज्ञान रूप छे एम जाणीने माईक पदार्थने विषे हाण्य वृद्ध सुख दुःखे करिने हर्ष शोक ने पामे नहिं ने तेने ज्ञान कहिये ।।
अने पिंड ब्रह्मांडादिक मायाकृत जगत पदार्थने विषे अभाव वर्ते तेने वैराग कहिये अने जेजे मनोरथने धारे ते ते मनोरथने
बरोबर करी शके तेने ऐश्वर्य कहिये ।। ए चार गुण जेने विषे होय ते आत्मा सत्व गुणि कहेवाय छे ने ते सुखने पामे छे ।। अने
एटलुं सुख तो जीय पोतानी मेहेनते करिने मेळवि शके छे ।। पण तेणे करिने देहे करिने सुख भोगवे पण तेना आत्मानुं
कल्याण थाय नहिं ।। अने जो एवो सत्व गुणी होय ने ते ने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतनो आश्रय थाय तो ते आत्मा
ब्रह्मरूप थईने भगवानना अक्षरधामने पामे ।। अने तमो गुणी रजो गुणी जीव होय ने तेणे कांई सुकृत कर्युं नहोय
पण तेने जो प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतने विषे हेत थई जाय तो तेना उपर भगवाननी एवी कृपा थाय ते तेना तमो
गुणि ने रजो गुणी कर्मना अनंत पाप ते सर्वे बळिने भस्म थई जाय छे ।। ने ते आत्मा ब्रह्मरूप थई ने भगवानना अक्षरधाम
ने पामे छे ।। जेम रांक होय ने तेने राजानी मेहेरबानी थाय तो कारमो कंगाळ मटीने सारि थई जाय ।। तेम महापापि जिव होय प-
ण तेने प्रत्यक्ष भगवान ने संतनो आश्रय थई जाय ने तेनी सेवा करे तो ते जीव कारमो क ब्रह्मरूप थई ने भगवानना धामने
पामे छे ।। अने सत्व गुणि आत्मा होय ने धर्म ज्ञानादिक गुणे जुक्त होय पण जो तेने प्रत्यक्ष महात्मा पुरुषनो अवगुण आवे तो
तेनां सत्वगुणि कर्म नां सुकृत्य मात्र ते बळिने भस्म थई जाय छे ।। ने ते जीव घोर नर्क मां जाय छे ।। जेम कोई क मेहेनत्य
करिने सो बसे हजार बे हजार रुपैया कमाणो होय पण ते जो राजानो द्रोह करे तो ते राजा तेना उपर कोपायमान थई ने
तेनुं घर बार लुटि लेछे ।। ने तेने केदमां पुरि दे छे ।। तेम सजे एवो सत्व गुणना धर्म ज्ञानादिक लक्षणे युक्त होय ने ते सत्व
गुणनी संपत्तिये करिने देवलोकमां जावानो होय ।। पण ते जो प्रत्यक्ष महात्मापुरुषनो द्रोह करे तो तेनां सुकृत मात्र

बलिने भस्मथईजायछे ।नेते जिव नर्क मांपडे छे ॥ एवो प्रत्यक्ष महात्मापुरुषनाअपराधना पापनो दोष छे॥ अनेते जीवनो पा
छो कोईकाले ते पापनो छुटको थतो नथी त्यां श्लोक छे जे ॥ ॥ अन्य क्षेत्रे कृतं पापं तिर्थक्षेत्रे विनस्यति ॥ तिर्थक्षेत्रे
कृतं पापं ॥ वज्रलेपो भविष्यति ॥ १ ॥ ॥अर्थ ॥ ॥ अन्यक्षेत्रेकृतं पापं ॥ तिर्थक्षेत्रे विनस्यति ॥ केहेतां असतपुरु
षनेसंगेकरिने जे जे पापथयां होय ।नेतेने तिर्थरूप सतपुरुषनो आश्रयथई जाय तो तेनां पापसर्वे नासपामि जायछे ॥ अ-
ने तिर्थरूपे जे सत्पुरुषतेनो अपराधथाय तो तेनुं पाप वज्रलेप एटले कोई काले ते पाप नासथतुं नथी ॥ अने ते सत्पुरुषनाद्रो
हनो करनारो तेणे मोटरूजे एटला पुन्य कर्‍या होय तिर्थ कर्‍यां होय यज्ञ कर्‍या होय परोक्षपणे भगवाननी भक्ति करि होय
एवां घणां शुभ कर्म कर्यां होय ते सर्वे तेनां सुकृतनुं पुन्य ततकाल नाश पामि जायछे नेते जीवनर्कमां जायछे ॥ अनेजे
सतपुरुषनो गुण लेई नेतेनी सेवा करे छे॥ नेतेणे रूजे एटलां मोटे पाप कर्‍यां होय नेते नर्क मां जावानो होय तेपापतेनां
ततकाल नाश पामी जायछे ।नेतेजीवनुं कल्याणथायछे ॥ मारे रूकृतिजीवहोय अथवा दुःकृतिजीवहोयपण तेजो प्रत्यक्ष
महात्मापुरुषनो गुण लेईने सेवाकरे तो ते जिवनुं कल्याणथाय छे॥ अने रूजे एवो रूकृति होय पण सतपुरुषनां अवगुणनो
लेनारो जरूर नर्क मां जायछे॥ मारे जेने पोतानुं कल्याण इछवुं तेने सतपुरुषनो अवगुण कोई काले लेवो नहिं नेगुणज लेवो
॥नेसेवा पोतानी श्रद्धाप्रमाणे थाय तेटली करवी पण अवगुण तो लेवो जनहिं ॥ अनेजे सत्पुरुषनो द्रोह करता हशे तेनेतो
अंतरमां जमपुरीना जेवुं दुःख थतुं हशे नेतेने अंनपण भावतुं नहिं होय॥ नेहडकाया कुतरानी पेठे रात दहाडो संतापने
पाम्या करता हशे ॥ नेतेने कोई ठेकाणे शान्ति नहिं थती होय अनेमरिने ते घोर नर्क मां पडशे ॥ अनेजे सतपुरुषनो गुण
लेईने सेवाकरे छे तेना अंतरमां महासुख वरत्युं हशे ॥ नेतेने रात्यदिवस आनंदमां ने आनंदमां जतो हशे ॥ नेतेदेह मु-
किने भगवानना धामने पामशे ॥ मारे जे अमारा आश्रीत होय ॥ नेअमने प्रसन्न जेने करवा होय तेने धर्म ज्ञान वैराग-
ने महात्मे सहित प्रत्यक्ष राम कृष्णादिक भगवाननी भक्ति करता होय ॥ अथवा भक्ति करावता होय तथा जे वेदोक्त कर्म

नापरघरतकसतपुरुष तेनो कोईदहाडे अवगुणलेवोनहिं ने जेटलीथाय तेटली तेनी सेवाकरवी ने तेनो समागम करवो॥
अने एवाप्रत्यक्षसत्पुरुषना द्रोहना करनाराहोयने ते धर्मज्ञानवैराग्ययुक्तहोय अथवा धर्मज्ञानवैरागे रहितहोय पणतेने
असुरजाणवा ।।नेतेनोसंग करवो नहिंनेतेनी सेवापण करविनहिं।। एवीरीते समजवोतेनाआत्मानुं कल्याणथवो ॥

॥इतिश्री मुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥

॥ ॥संवत१९ ॥मागशिर्ष॥२४॥ चोविसना ॥पोष॥सुदि।।७॥सातमनेदिवसमहाराजश्रीहरि

॥ कृष्णभगवानगामश्री विरोलमध्ये पटेलपूंजा भाईनेघेर आथमणेबार ओरडानीखेव्यामां गादितकिये युक्तपलंग
उपरविराजमान थयाहता ।।नेसर्वे कसूंबलवस्त्र धारणकर्यांहता नेसर्वे अंगने विषेपीलापुष्पनांआभूषणधर्योभिर-
र्यांहता ।।नेकंकुनोचांदलो कर्यो हतोनेपोतानामुखारविंदनी आगळ साधुतथा घणाकहरी भक्तनी सभाभराई
नेबेठाहता।। पछेमहाराजनी संध्याआर्तिथयाकेडे महाराज बोल्याजेजीवमात्रने विषेच्यार रोगछे।।तेच्याररोगमनेटालवानेअर्थे चारप्रकारनुं औषधकरवुंजोईये।। त्यारेते चारे रोगटले पण एकउपाये चारे रोगटलेनहिं।। जेमव्यवहारमां एक
गुमडुंथयुंहोयने बिजुंविंछीयेचटको भर्योहोय ने त्रिजुं एक झुटकानो घावाग्योहोय ने चोथोपत्यनोरोगथयोहोय
तेच्यार प्रकारना दरदने च्यारप्रकारनाऔषध करे त्यारे ते सुखनेपामे।। पणएकऔषधे चारेदरद मटेनहिं तेमजीवनेविषे च्याररोगछे।। तेच्याररोगते किया तोएकतोस्थूलदेह जीवनेवलग्योछे तेजन्ममरणरुपिदुःखवारंवार दिधाकरे छे॥
अनेबिजोसूक्ष्मदेहरूपिरोगछे ।।नेत्रिजो कारणदेह रुपिरोगछे ॥ अने चोथो महा कारण देहरुपिरोग छे ॥एचारप्र-
कारनारोगेकरिनेजीवमहादुःखनेपामे छे ॥ तेमांजे स्थूलदेहछे तेगुमडानेठेकाणे छे।।अनेजे सूक्ष्मदेहछे तेविंछि-
नाचटकानेठेकाणेछे।। अनेजे कारणदेहछे तेझूटकाना घानेठेकाणेछे ॥अनेजे महाकारणदेह छे तेपत्यनेठेकाणेछे॥
ते जेमचारदरदने मटाडवाना नोखानोखा चार औषधकरवापडेछे ॥त्यारे तेदरद मटेछे ॥अने चारे दरद मटे त्यारे

तेशरीरने सुखआवेछे ॥पणचारमांथीएकेदरदहोयत्यांसुधि तेनाशरीरने सुखआवेनहिं ॥ तेमजीवनेस्थूलसूक्ष्मका
रणनेमहाकारण रुपीयाचार रोगछे तेचार रोगटले त्यारेजीवनेसुखथाय पण चार रोगने टालवानेअर्थे चारउपायक
ह्याछे ॥तेकियाचारउपाय छे ॥तोस्थूलदेहरुपियारोगनेटालवानेअर्थे तो धर्मसहित तपकरवो ॥ तेतपेकरिने स्थू-
लदेहनाविकारटलेछे ॥ अनेतपविना बिजांअनंत साधनकरे तोपण तेस्थूलदेहनांविकारटलेनहिं ॥ माटेकल्याणना
खपवालाने प्रथम तपतो जरूर करवो ॥ अनेजे तपेरहित होय तेजीवनुं कोई काले कल्याणथायनहिं माटेतपेकरिने
स्थूलदेहरुपीयो रोगटलेछे ॥ अने सूक्ष्मदेहनो रोग आत्म विचारे करिने टलेछे ते आत्मविचार केविरीते करवो तोजड-
चैतननो विवेक समजवो ॥जेचोविसतत्वात्मक पिंड ब्रह्मांड तेजडछे ॥ तेनाशवंतछे दुःखरुपछे ॥ने मिथ्याछे अनेते
जडने धारिरहेनारो आत्माचैतनछे ॥ तेअविनाशिछे ने सत्यछे सुखरुपछे अनेएवोजे चैतन आत्मा तेनेपोतानुंस्वरुप
जाणवुं एविरीतेआत्म ज्ञाने करिने सूक्ष्मदेहरुपीयो रोगटलेछे पणते आत्म ज्ञान केनेथायछे तोजेणे तपे करिनेस्थूलदेहना
विकारटाल्या होय तेनेआत्मज्ञान थायछे ॥ पण तपकर्या विना ने स्थूलदेहना विकार टाल्याविना आत्माअनात्मानो
विचार अनंतवरस सुधि कर्याकरे तोपणते नेआत्मज्ञान थायनहिं नेआत्म ज्ञानथया विनासूक्ष्म देहरुपीयो रोगटले
नहिं ॥ माटे तपेसहितआत्मविचारकरे तोसूक्ष्मदेह नेस्थूलदेह बेयदेहरुपीयारोगटलेछे ॥अने कारणदेहरुपीयो
रोग भगवाननीमूर्तिनेध्याने करिने टलेछे ते ध्यानकेविरीते करवुं तोइंद्रियो अंतःकरणनीवृतियोनेएकाग्रकरिने
ध्यानकरवुं ॥तेवृति एकाग्रक्यारेथाय तोपंचविषयनो रागटलेत्यारे एकाग्रथाय ते रागनेटालवानेअर्थे वैरागनो वि
चारकरवो जेआत्माने परमात्मा विनापिंड ब्रह्मांडादिक सर्वेजगतनांशवंतछे नेदुःखरुपछे पापरूपछे एमजाणीनेते-
थकी वैरागनेपामीने एकाग्रवृतियो करिने भगवाननीमूर्तिनुं ध्यान करवुं ॥ अनेएविरीते ध्यानकरेछे तेने कारण
देहनुंजेअंधारुं तेटलिनेप्रकाशथायछे ॥तेप्रकाशनेतुरियापदकहेछे ॥ तथातेनेमहाकारणदेह कहेछे तेजेणे धर्म-

सहित तपे करिने स्थूलदेहनो रोगटाल्यो होय ।। तथा आत्मविचारे करिने सूक्ष्मदेहनो रोगटाल्यो होय तेनेज वैराग उपजे छे ।।
अने जेने लोकभोगादिकने विषे वैराग होय तेनेज भगवाननी मुर्तिनुं ध्यान थायछे ।। अने ध्याने करिने कारणदेहनो नाश था
यछे ।। अने कारणदेह टलि गयुं होय तोपण तेने प्रत्यक्ष भगवानने विषे अ त्यं त भक्ति जे प्रीति ते थई न होय त्यां सुधि
तेने महाकारणदेह रहे छे ।। अने महाकारणदेह टल्युं न होय त्यां सुधि तेने जन्म मरण रुपि दुःख रहे छे ।। माटे प्रत्यक्ष भ
गवानने भगवानना संतने विषे प्रिति थाय त्यारे महाकारणदेह टलि जायछे नेते आत्मा ब्रह्मरुप थईने अक्षरधामने पामे
छे ।। नेतेनेजन्म मरणादिक महादुःख तेसर्वे टलि जायछे ।। अने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतने विषे प्रिति थई न हो
य ने बिजा धर्म ज्ञान वैरागे करिने त्रण देहने टालि नाख्या होय तो पण तेने जन्म मरण रुपि महाकारणदेहनी पीडा ते मटेन-
हिं जेम शुभड्डुं बिं छि नेडंख कानी पिडा टलि गई होय तो पण जो पत्थर जि न होय तो तेने दुःख रहे छे अने पत्थर टलि गई होय पण बिजा ज्वरो-
ग होय तो पण तेने दुःख रहे छे ।। तेम धर्म ज्ञान वैरागे करिने स्थूल सूक्ष्म कारणदेहना रोगने टाल्या होय पण प्रत्यक्षरुप जे महाकारणदेह ते टल्युं
न होय त्यां सुधि तेने देहे करिने सुखवरते स्वरुप पण जन्ममरण रुपी महारोग नेट लेन हिं अने धर्म ज्ञान वैरागे युक्त होय ने तेने प्रत्यक्ष भगवान-
ने भगवानना संतमजेने तेने विषे प्रिति थाय तो तेना सर्वे रोग टलि ने अक्षरधामने पामे छे ।। अने धर्म ज्ञान वैराग तो
न होय ने त्रिविधिना तापमां जीव बलता होय पण जो तेने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतने विषे प्रिति थई जाय तो तेनु
चारे देहना रोग टलिने अक्षरधामने पामे छे ।। ने त्रिविधिना ताप सर्वे समाई जायछे ।। जेम एक चंद्रकांतमणि होयछे
ते चंद्रकांतमणीने हाथमां जेईने मोटि अग्निनी ज्वाला बलती होय तेमां जईने बेसे तो ते अग्निरा दिसि तल जे शीथई
जाय मे ते पुरुषने रंच मात्र ताप लागे नहिं ।। एवो चंद्रकांतमणीमां गुण रह्यो छे ।। तेम प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना सं
तनी मूर्ति छे ते चंद्रकांतमणी जेवी छे ।। ते जे आत्मा प्रत्यक्ष भगवानने संतनो आश्रय करिने तेने विषे प्रिति ये करिने
जोडाई जाय छे तेने चार देह रूपिया रोग तथा त्रिविधीना ताप सर्वे नास थई जायछे ।। ने ते आत्मा ये तप ज्ञानानादि

कसाधन कर्यां होय नेमहा तमोगुणीजीव होय ने चारेदेहनारोगमां महादुःखने पाम्यो होय पणते नेचंद्रकांतमणीरुपप्र
त्यक्ष भगवानने भगवानना एकांतिक निरवासनीक पंचविषयना त्यागी संतनी मूर्तिने विषे प्रीतिथाय तोतेजीव चारदे
हातितथईने अक्षरधामनेपामेछे ॥ अनेजो प्रत्यक्ष भगवानथी विमुख रहिने प्रत्यक्ष भगवानने संतनाद्रोहनाकरना
राहोयतेनो संगकरे तोतेजीव महासंतापनेपामेछे ॥जेमएक सूर्यकांत मणिछे तेनेहाथमांजेईने सातसमुद्रना
जलमांजाय तो ते साते समुद्रनुंपाणि बलिने भस्मथईजाय॥ एवो सूर्यकांतमणीमां अग्निरह्योछे॥ तेमप्रत्यक्ष भगवा
नना द्रोहना करनाराछे तेतो सूर्यकांतमणीनीपेठे सातसमुद्ररुप जे धर्मज्ञान वैरागादिक शुभगुण तेने बालिने भस्म
करेछे॥ नेते प्रत्यक्ष भगवानने संतनाद्रोहनाकरनारा नोजे संगकरेछे॥ तेपण तेने संगेकरिने द्रोह करवा शिखेछे॥ ने
तेद्रोहने करनारे तपेकरिने स्थूलदेहनारोगने टाल्यो होय नेआत्मज्ञाने करिने सूक्ष्म देहनारोगने टाल्यो होय ने वैरागे करि
ने कारणदेहना रोगने टाल्योहोय नेआत्मारुपथईने प्रोक्ष भगवाननी भक्ति करतो होय पणजोते प्रत्यक्ष भगवानने तेना संतनो
द्रोह करे तोतेनां साधन सर्वे नाश पामी जायछे ॥नेते आत्माने पाछा चारेदेहनारोग प्रगटथईने तेजीवपणाना भावनेपा
मेछे॥ नरकमांजायछे॥ तेपूर्वे कृष्णअवतारनेविषे राजा जरासंध हतो तेणे तपज्ञानने वैरागे करिने त्रणदेहनारोगनेतो
टाल्याहताने प्रोक्ष भगवाननी भक्तिपण करतोहतो॥ पणजो तेणे प्रत्यक्ष भगवान श्री कृष्ण तेनो द्रोह कर्यो तोते असुर
कहेवाणो॥ तथा कौरव तथा करणआदिक घणाक मोटामोटा तेमहाधर्मवाला ने सतवादिहता नेप्रोक्ष भगवाननी
एवधाय भक्ति करताहता पणतेणे एक प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना भक्तनोजो द्रोह कर्यो तो तेना सकृतमात्र ब
लिने भस्मथईगयां नेते असुरदैत्य केहेवाणा॥ नेते सर्वे नर्कमांगया॥ अने व्रजमां गोपगोवाल तथा रामाअवतारमां
कोराजाभिल तथासबरि भिलडि तथावांदरा तेणे कांई जपतपसाधन कर्यां नहोतां ने कांई समजतां नहोतां नथ-
की नियमपण पालतां नहोतां पणतेणे प्रगट भगवानने विषे प्रीतिकरी तोते सर्वे परमपदने पामीगया॥ नेतेना गुणमेश

ब्रह्मादिकें गायछे ।। माटे कदाजे एवो अधर्मि जीव होय पण तेने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतनो आश्रय थई जाय तो ते जीव परमप
वित्र थईने भगवानना धामने पामेछे ।। नेतेने चारे देहना रोग टलिजायछे अनेजे प्रत्यक्ष भगवानने संतनो द्रोह करेछे तेणे वि-
जां अनंत साधन कर्यां होय ते सर्वे बलिने भस्म थईजायछे नेजीव नर्कमां पडेछे ।। माटेजेने पोताना आत्मानां कल्याण करवुं छ
वुं तेने कोई शुद्ध ज्ञानदाता महात्मापुरुष प्रगट थया होय तेनो द्रोह करवो नहिं ।। नेतेनीजेटलीथायतेटलिसेवाकरवी ।।
नेतेने विषे प्रिति करवि ।। एवीरीते समजे तेनुं कल्याण थायछे ।। ।।इतिश्रीसुखसिद्धांतसमाप्त
।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ।।संवत ।।१९।। ओगणिसें ।।२४।। चो
विसना पोषसुदि ।।११।। एकादशीने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री बोचासणमध्ये पटेल गणेसजी बेच
रभाईने घेर उत्तरादा बारना ओरडानीआगल गादितकिये युक्त पलंग उपर बिराजमान थया हता ।। नेसर्वे कस्कंबल वस्त्र
धारण कर्यां हता नेपीला पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभि रह्यां हतां नेकंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंद
नीआगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभाभराईने बेठिहती ।। पछे महाराजनी संध्याआर्ति थयाकेडे महाराज
बोल्याजे सर्वेने अमे एकप्रश्न पुछियेछिये जे एकादशी करवानुं शुं कारण हशे ।। अने एकादशी थईक्यांथी हशे ।। नेतेए
कादशी करवी क्यांसुधि ।।ने कहो ।। पछे धर्मानंदस्वामियें उत्तर करवा मांड्यो पण यथार्थ थयो नहीं ।।पछे महाराज बो
ल्याजे सांभलो अमे तेनो उत्तर करियेजे एकादशी करवानुं कारण तो एछेजे दस इंद्रियोनी वृत्तियो अने एक मन एटले अं
तःकरण एअगियार मलिने लिंगशरिर कहेवायछे ।। तेएलिंगशरिर गले कहेतां लिंगशरिरना नाश पामे त्यारे आत्मानुं
कल्याण थायछे ।। माटे एलिंगशरिरने गालवाने अर्थे एकादशि करवि ।। तेएकादशि करवापकि लिंगशरिर गलिजा
यछे ।। अने लिंगशरिर गल्युं एटले एकादशीपूरी थईरहि ।। हवे ते एकादशीये करिने केवीरीते लिंगशरिरनास पामेछे ।।
तोदस इंद्रियो ने अगियारमुं मन तेनी वृत्तियो नाजे माई क पंचविषय तेने बंधकरवा पडे करिने लिंगशरिर नासपामेछे

॥केमकेइसइंद्रियोनेमननीप्रत्तियोनेविषयमांप्रितिएजलिंगशरिरछे॥ तेएइंद्रियोनीवृत्तियोनेविषयथकि पाछी वालि-
नेभगवाननास्वरूपमांराखेतोतेनेलिंगनुंशरिरगलिजायछे॥नेतेआत्मानुंकल्याणथायछे॥अनेजेनेलिंगशरिरग-
लिगयुंहोय तेनेतोअखंड बारेमास एकादशिथयाकरेछे तेआअमारासाधुछे तेनेअखंड एकादशिथयाकरेछे तथाबि-
जाअमारा ग्रहस्थहरिभक्त केटलाक बाइभाइछे तेनेपण अखंडएकादशिथयाकरेछे ॥अनेजेनेलिंगशरिरगल्युं
नहोयतेनेएविरीते अखंडतोएकादशिकरवानुं बलहोयनहिं तेसारुं महात्मापुरुषे पंदरदिवसे एकदिवसेएकाद-
शिकरवानो ठेरावकर्योछे॥ तेपंदरदहाडे एकदिवसतो जरुरएकादशिकरवि॥हवेतेएकादशिकरवानीशरीतछे॥
नेकेविरीतेकरे तेनुं नामएकादशिकरिकहेवाय तोजेदिवसएकादशिनुं व्रतहोय तेदिवसएमठराव करवोजे सवार
मां उठिने स्नानविधिकरिनेज्यांदेवमंदिरहोय त्यांसंसार वेहेवारनो त्यागकरिनेजवुं॥नेत्यांमंदिरनेविषेजइनेकोइ
भगवाननीमूर्त्तिहोय अथवा भगवाननासंत पंचविषयनात्यागि ते रहेताहोय तेनां आंख्ये करिने दर्शन करवां॥प-
णते दिवस भगवानने भगवानना भक्त अथवा संततेविनाबिजांरूपमात्र जोवांनहिं नेभगवानने भगवाननाभक्त
नादरशनविना बिजा आकार मात्रने पापरुपनेबलताअग्निजेवाजाणिने कोइ आकारने आंखे करिने जोवांनहिं॥
अनेतेविजरीते कानेकरिने भगवाननीकथावार्ता किर्तनने सांभलवा॥नेतेविनाबिजाशब्दमात्रने पापरुपजाणि
नेतेनोत्यागकरवो अनेतेमज त्वचायेकरिने भगवानने भगवाननासंतनो स्पर्श करवो नेबिजा स्पर्शनो त्यागकर-
वो॥नेरसनायेकरिने भगवाननाचरित्र गावानोरस लेवो नेतेविना बिजारसमात्रनो त्यागकरवो॥ नेनासिकाये
करिने भगवानना प्रसादिपुष्पचंदन तेनोसुगंधलेवो ने बिजासुगंधमात्रनो त्याग करवो॥ अनेहाथेकरिनेभग-
वानने भगवानना संतनीसेवाकरवि॥ नेबिजीसर्व क्रियानो त्याग करवो॥अनेवाणियेकरिने भगवाननुं भज-
नकिरतन करवुं॥नेतेविना बिजुंबोलवानोत्यागकरवो॥नेअंतःकरणमां भगवाननीमूर्तिनुं ध्यान करवुं॥

नेते विना माईक पंचविषयसंबंधि देहगेहादिक जगतनां पदार्थनेसंभारवां नहिं ।। एविरीते दस इंद्रियोने अगियारमुं अंतःक
रण तेनी व्रतियोने माईक पंचविषयनो त्याग कराविने भगवानना स्वरुप जोडीदेवियो नेअगीयारे इंद्रियोने निराहा
र पणे राखिनेउपवासकरवो तेनुं नाम एकादशिकरिकहेवाय छे।। अने तेमांजेटलो फेरपडे तेटलि तेने एकादशि अधु
रीछे ।। एमजाणवुं।। माटेरव बडदार थईनेप्रथम कह्युं तेवीरीते एकादशिनुं व्रतकरे छे तेने लिंगशरिरगलजवामांडे छे
पछे एविरीतेएकादशि करतां करतां लिंगशरीर गलिजायछे ।। अने लिंगशरिर गल्युं एटले तेने भगवान प्रगटथईने
दरशन आपेछे ।। नेते भगवाननी मूर्तिनेविषे प्रितियेकरिनेजो हाई जायछे बेतेनुं कल्याणथायछे माटे जेने पोतानाआ-
त्मानाकल्याणनीइछ्याहोय तेनेएकादशीनुंव्रत आ कह्युं ते प्रमाणे विधियेसहित जरुर करवुं।। ।।
इतिश्रीमुख्यसिद्धांतसमाप्तः।। ।। श्रीहरिकृष्णायनमोनमः।। ।। संवत्।।
१९।। ओगणिसें ।। २४।। चोविसना।। पोषशुदि।।१२।। द्वादशिने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवानगाम श्री वोचासणमं
धे पटेलहिराभाई नानाभाईनेघेर उत्तरादेवार ओरडानीरवेसमां गादीतकियेयुक्तपलंगउपर विराजमानथयाहता
नेसर्वे कसुंबलजरियानीवस्त्रधारणकर्यांहतां ।। नेपुष्पनां आभूषणसर्वे अंगमांशोभिरह्यांहतां ।। नेकंकुनो चांदलो
कर्योहतो ने पोतानामुखार्विंदनीआगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनीसभाभराईनेबेठिहति ।। पछे संध्याआर्तिथया
पछि महाराजबोल्याजे भगवाने प्रथम श्रष्टिकरित्यारे सर्वे मनुष्य एक धर्मिहताने कोईने कुसंपनहोतो नेतेदहाडे
सतजुगवरततोहतो नेपछे कालेकरिने घणाक जुदाजुदा धर्म थईगया नेएकेकबिजानां मननोरवां पडिगयां नेकुसंपथ
ई गयो छे।। ते कुसंपथयानुं कारणशुं छे।। तोप्रथम जीवोने ज्ञानआपिने माया थीमुकाविने भगवान पोतानाअक्षरधाममां
लेईजवासारु ।। नेजीवोनेजन्ममरणनेगर्भवासने चोरासिनामहादुःख तेथीउद्धारकरवानेअर्थे भगवाने आ पृथ्वि
नेविषे मनुष्य देहनुं धारण करिने प्रगटथयाने प्रगटथईने घणाकजीवोने ज्ञानआपिनेमायापर कर्याने घणाकजी

यप्रत्यक्ष भगवानना आश्रित थया ने एकांतिक धर्मनुं स्थापन करिने पछे भगवान पाछा पोतानी इछाये करिने स्व धाममां गया
पछे काले करिने ते धर्मनो लोप थई गयो ने विषयनी प्रवृति घणी थई गई ने मोक्षनो मारग बंध थयो त्यारे वलि फेर पाछा भग
वान प्रगट थया ने ज्ञान देवा मांड्युं ने विषयनो त्याग करावीने निरवासनिक करवा मांड्या ने केटलाक दैविजीव हता
ते प्रत्यक्ष भगवाननो आश्रय करिने निरवासनीक थया पछे मोरना पोतानाज धर्म ना हता पण ते तो विषयनी वासनाये करि-
ने विषयमां भ्रष्ट थई गया होय तेणे करिने ते विषयना त्यागि जे प्रगट भगवानना भक्त तथा प्रगट भगवान तेने देखिने बलि
मरे ॥ ने तेनो द्रोह करे छे ॥ पण ते प्रगट ने माने नहिं ॥ पछे भगवान तो समरथ छे ते बिजा धर्मनु स्थापन करिने दैविजीवनुं क
ल्याण करिने पाछा स्वधाममां जाय छे ॥ एवि रीते भगवानना घणाक अवतार थया ने तेणे करिने जुदा जुदा धर्म थई गया छे
एक बिजाने कुसंप थई गयो छे ॥ ते संकराचार्य प्रगट थया त्यारे मोरनाजे जैनमतवाला हता तेने ने संकरस्वामिने लडा
ई थई ॥ ने ते जैनमतमां जे दैविजिव हता ते संकरस्वामिने आश्रारे आव्या ने जे आसुरिजीव हता तेनो संकरस्वामिये परा-
जय कर्यो अने संकस्वामि पछी रामानुज प्रगट थया त्यारे संकरस्वामिवालाये रामानुजनो द्रोह ते मांजे दैविजीव हता ते
णे रामानुजनो आश्रय कर्यो ॥ ने जे आसुरिजीव हता तेणे रामानुजनो द्रोह कर्यो ॥ अने रामानुज केडे वल्लभाचार्य
प्रगट थया त्यारे ते रामानुजवाले वल्लभाचार्यनो द्रोह करवा मांड्यो ने ते मांजे दैविजीव हता तेणे वल्लभाचार्य ते आ
जरखवाने आश्रय कर्यो ॥ ने जे आसुरिजीव हता ते द्रोह करता रह्या ॥ ने ते नर्कमां गया ॥ अने वल्लभाचार्य केडे सह-
जानंदस्वामि प्रगट थया ॥ त्यारे तेनो द्रोह वल्लभाचार्यवाले घणो क कर्यो ने ते मांजे दैविजीव हता तेणे तो सहजानंदस्वा
मिनो आश्रय कर्यो ने जे बिजा हता तेणे द्रोह कर्यो ॥ अने आज हवे सहजानंदस्वामिवाले अमारो द्रोह करवा मांड्यो
छे ॥ ते मांजे दैविजीव हशे ते तो अमारे आसरे आवशे ने केटलाक तो अमारा आश्रित थईने अमारुं भजन करे छे ॥ अने जे
आसुरिजीव हशे ते तो अमारो द्रोह करे छे ने तेना आत्मानुं भुंडुं थशे ॥ माटे ज्यारे ज्यारे भगवानना अवतार थाय छे

त्यारे मोहोरनाअवतारना भक्त होय ते प्रत्यक्ष भगवानना द्रोह करे छे पछे एक बिजानां मन मोरवांपड्यां ने धर्म पणनोरवो केहेवाणो ॥ अम रीते भगवानना घणा क अवतार थई गया तेणे करिने घणाक धर्म थई गया छे ॥ पण ते मां जेट लादेविजी वछे ॥ ते तो सर्वे प्रत्यक्ष भगवाननेआनुरे थई जाय छे ॥ नेजेट ला असूरिजीव छे ते तो प्रगट भगवानना द्रोह करे छे ॥ नेप्रोक्षने बांधि रहे छे ॥ नेते धर्म नियम पण कांई पाळता नथी ॥ माटे तेजीव नर्कमां जाय छे ॥ नेप्रगट भगवानने भजवा लागे छे ॥ तेनु कल्याण थाय छे ॥ माटे जेने पोताना आत्माना कल्याण ने इछवुं तेने प्रथवी उपर प्रगट भगवान न होय त्यारे तो जे धर्ममां विषयनो त्याग करता करावता होय तथा भगवानने दिव्य साकार जाणिने तेज भगवान अवतार धरे छे ॥ ते नुं भजन करता करावता होय ते वा मारग मां रहिने भगवाननुं भजन करवुं अने ज्यारे भगवान प्रगट थाय त्यारे प्रगटनो आश्रय करवो ॥ नेतेनुं भजन करवुं ॥ नेप्रगटना भजन करवा मां जे ना पाडे तेनो त्याग करवो एम समजशे ॥ तेनुं कल्याण थशे ॥ ॥ इतिश्री मुख्य सिद्धांत समाप्तः ॥ ॥

श्रीहरिकृष्णायनमो नमः ॥ ॥ संवत ॥ १९ ॥ ओगणिसें ॥ २१ ॥ चोविसना पोष शुदि ॥ १५ ॥ पुनमने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री बोचासणमध्ये पटेल हरखजी भाई डुंगर भाईने घेर उगमणे बारओरडानी आगळ गादि तकिया नरवाविने पलंग उपर विराजमान थया हता ने सर्वे जरीयानी वस्त्र धारण कर्यां हतां नेपीळा पुष्पना आभूषण सर्वे अंगमां सो भी रह्यां हतां ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो नेपोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरि भक्तनी सभा भराई ने बेठी हती ने संध्या आर्ति थयाकेडे महाराज बोल्या जे प्रगट भगवानने ओळखवानुं एकज एंधाण छे ॥ जे भगवाननी पासे जेवुं ज्ञान छे तेवुं ज्ञान बिजा कोई पासे होय नहिं ॥ अने उपरथी जोयामां तो बिजा माणस जेवा जणाता होय ने जेम बिजा मनुष्य खाय पिये ओढे पेहेरे ते रीते भगवान पण खाय पिये ओढे पेहेरे ने सर्वे क्रीया माणसना जेवी ज करे छे ॥ पण भगवान पासे जेवुं ज्ञान होय तेवुं ज्ञान बिजा कोई पासे होय नहिं

माटे ज्ञानेकरिनेजे ने अमारिपरिक्षालेवीहोय ते लियो॥अमारीपासेजेवुंज्ञानछे तेवुंज्ञान चौदलोकनीमांहे जिकोरे कोईनीपासे न-
थी॥ माटेस्वामिनारायणनाधर्मनावधाय साधु ब्रह्मचारीगृहस्थिपूराणि आचार्य आवे नेमुने ज्ञाने करिने तेनी नजर मांआवे-
तेपुछे तोहुं तेने मारास्वरूपनो निश्चयकरावुं॥ नेते विना बिजा संकराचार्यवाला आवे रामानुजना आवे वल्लभाचार्य
ना आवे जैनमतना आवे मुसलमान आवे तो ते सर्वे ने ज्ञानेकरिने मारास्वरूपने विषे भगवानपणानो निश्चय करावुं
नेमोटादेव ब्रह्मानेप्रक्रतिपुरुषसुधिना सर्वे मारिपासेआविने ज्ञान पुछे तोहुं तेने निश्चयकरावुं ने तेपणमारा आश्रीत थई-
ने भजन करवा मांडे अने ज्ञान विना बिजीरीते मारीपासे परिक्षा लेईने निश्चय करवा आवे तेने तोहु कोईदहाडे ओलखातो
नथी॥नेतेनुंकल्याणपणथतुंनथी ॥ त्यारे कोईनेशंका थायजे ज्ञानतो घणायमाणस पासेहोयछे॥तेणेकरिने कांई भग-
वानकहेवाताहस्रो ॥तो बिजामनुष्य पासे जे ज्ञानछे ते तोमायालुंज्ञानछे ते ज्ञाननुंनामतो अज्ञान कहेवाय छे॥ अने
ते ज्ञाने करिने तोउलटुं जीवनुं भुंडुं थायछे ॥अनेजे प्रगट भगवानपासे ज्ञानहोय तेतोमायापर ज्ञानहोयने अपार ज्ञानहोय
ने बगरशिख्युं ज्ञानप्रगट भगवान पासे होय ॥अने बिजाकोई भगवानना भक्त पासे ज्ञानहोयतेतोतेप्रगट भगवानपा-
सेथि शिख्यो होय तेटलुंज्ञान ते पासेहोय॥पणवधारे ज्ञानहोयनहि ॥अनेप्रगट भगवान पासे जे ज्ञान होय तेतो बगरशि-
ख्युं अपार ज्ञान होय ॥ जेमएक कुवामां पाणिहोयने एकटांकामां पाणिहोय॥ते कुवामां पाणीछे तेतो अखुटने अपार
पातालनुंपाणिछे ते सहुजे तेटलुं पाणि कुवामांथी काढे पणकोईदहाडे कुवानुं पाणि खुटेनहि॥ अनेटांकामां पाणीछे॥
तेतो मेघना वरसादनुं पाणि आव्युछे॥ तेटलुं पाणिछे ॥ ते तेमांथी काढे तेटलुं ते टांकामांथी पाणि ओछुं थाय तेएम-
काढता काढता खुटिरहे॥तेम भगवानना भक्त पासे जे ज्ञान होय ते तो टांकानुं पाणी छेतेजेटलुं भगवानपासेथी शि-
ख्योहोय तेटलुंते नीपासे ज्ञान होय॥ पणवधारे होयनहि ॥अने प्रगट भगवान पासेजे ज्ञानछे ते तो कुवानुं पाणी छे ते
बगरशिख्युं अपारज्ञान होय॥ ते अनंत अज्ञानीजीवोने ज्ञान आपीने ब्रह्मरुप करिमुकेछे तो पणजे ज्ञाननो अंत आ-

थतोनथि ॥ एवुं ज्ञानप्रगट भगवान पासे होय छे माटे ए रिते ज्ञाने करिने ज भगवान ओलखाय छे ॥ अने ज्ञान विना बिजी कोई रीते भगवान ओलखाता नथी ॥ अने वलि ते प्रगट भगवानना ज्ञाने करिने तेना आश्रित पंचविषयनी कामनाये रहित थईने दृढ निष्कामि थईने निरभय थाय छे ॥ एज प्रगट भगवाननो प्रताप छे माटे ज्ञाने करिने ज भगवान ओलखाय छे ॥ अने ज्ञान विना जे परछो मागे छे ते तो मूरख छे ने तेने प्रगट भगवान कोई काले ओलखाता नथी ॥ ते पण मुक्तानंद स्वामिना किरतनमां कह्युं छे ते ॥ ॥परछो दूछे तेने पामर जाणवो ॥ जननद छबुं जो मजाणे ॥ निष्कामी ते जनारायण रूप छे ॥ आत्माने ब्रह्म सउ रमां जे नाणे ॥ ॥माटे परछो मागे ते तो पामर कहेवाय केहे तां ते आस्करि जीव छे ने तेने भगवान ओलखाता नथी ॥ अने पूर्वे जेटला अवतार थई गया छे ते कोई अवतारमां परछो आप्यो नथी ॥ ने जेणे परछो माग्यो छे ॥ ते आसुर कहेवाणा छे ॥ अने जेणे ज्ञाने करिने ओलख्या छे ते भक्त कहेवाणा छे ॥ ते शास्त्रमां पण जुवो तो सर्वे अवतारनुं ज्ञान जलख्युं छे ॥ माटे ज्ञान छे एज सर्व कर्ता भगवाननु मोटुं प्राक्रम छे ॥ के मके अमारी पासे एक ज्ञान छे तो निर्भय थईने मूलक मां फरिये छैये ॥ ने ज्ञाने करिने निश्चय करावियें छिये ॥ पण ज्ञान विना बीजुं कांई अमारि पासे जोर जणातुं नथी ॥ तो-पण अमने कोई पुगवाने समरथ थतो नथी तेनुं कारण शुं छे तो ज्ञानमां अनंत शक्ति रहि छे ॥ ने ज्ञान विना बिजुं स्कजे तेटलुं बल होय पण ते सर्वे ज्ञान आगल तरणा मात्र छे ॥ जेम अंग्रेज सरकारनी पासे माथिक ज्ञान छे ॥ तो ते परदेशमांथी आविने बधाये माणसोने पोताने वश कर्या छे ॥ ने उपरथी जोईये तो ते माणस तो थोडाक छे ने आ देशना माणस तो तेना करतां लाखघणा वधारे छे ॥ पण आ देशना माणसने बुद्धि नथी तेथी ते मांब लन थी तेम प्रगट भगवानना माणस जे वाजणाता होय ने तेने कांई झाझां मनुष्य पण भेगां होय नहिं ॥ ने बिजा मतपंथवालाओने तो मनुष्य घणा होय ने घणां लोक तेने मान-ता होय ने पैसानुं पण तेने जोर घणुं होय ॥ तो पण ते सर्वे मलिने प्रत्यक्ष भगवानने पुगवाने समर्थ थता नथी ॥ ने भगवानमी छेटे रहिने अविद्या करे पण कोई पासे आव्ये पुगी शके नहिं ॥ ते दैवि जीव होय ने ते प्रगट भगवान पासे आवे तो तेने

ज्ञान आपिने पोताना आश्रीत करिने पोताना स्वरूपनो निश्चेय करावे छे ॥ ने असुरि जीव होय ने ते प्रगट भगवान पासे आवे तो तेने ज्ञान रुपि खडगे करिने नजीवो करे छे ॥ कहेतां ते असुर फरिने भगवानना भक्तने पिडि शके नहिं एवो तेनो पराजय करे छे ॥ एवो अदभूत ज्ञाननो प्रताप छे ॥ माटे ज्ञाने करिने जन्म मारू स्वरुप ओलखाय छे ने जिवनु कल्याण पण ज्ञाने करिने ज थाय छे ॥ पछे पदे लट्टरखजी भाईये महाराजने हाथ जोडिने कह्युं के हे महाराज तमे तो साक्षात्कार परमात्मा भगवान छो एवो मुने तमारा स्वरूपनो निश्चय थयो छे पण हवे तमारी मूर्ति मारा आत्माने विषे अखंड देखाय एवो उपाय मुने बतावो ॥ पछे महाराज बोल्या जे भगवाननी मूर्तिने देखवामां जे आत्माने आडु मायानुं आवरण छे तेने चिदाकाशनी दृष्टि करिने ते आवरणने टालि नाखे तो तेने मूर्ति अखंड देखाया करे ॥ हवे तेने के विरीते चिदाकाशनी दृष्टि करिये तो एम विचार करवो जे पिंड ब्रह्मांडादिक मायाकृत ते सर्वे मिथ्या छे ने स्वप्नवत छे ॥ एम जाणीने पोताना आत्माने निराकार ने व्यापक मानीने सर्व ठेकाणे आकाश बधायमां हुं रह्यो छुं ॥ हुं विना कोई जग्या खालि नथी ॥ एवो हुं अक्षर ब्रह्मरुप छुं ॥ ने ते मारा स्वरूपने विषे प्रत्यक्ष भगवान रह्या छे ॥ एम विचार करिने आ अमारी मूर्ति जेवी तमे देखो छो ते विचक्षणपुरुषे सहित संभारिने ध्यान करवुं ॥ ने मूर्ति सामुं जोई रहेवुं ॥ पछे एम ध्यान करवानो अभ्यास थोडाक दिवस करशो एटले अंतरमां प्रकाश थशे ॥ ने ते प्रकाशमां अमारु स्वरुप अनंत प्रतापने अनंत पारसदे सहित देखाशे ॥ पछे ते मूर्तिनी क्यारेय विस्मर्ति थशे नहिं ॥ माटे पूर्वे कह्यो एवो विचार करिने ध्याननो अभ्यास करजो एटले तमने अमारि मूर्ति आत्मामां अखंड देखाशे ॥

॥ इति श्रीसुख सिद्धांत समाप्तः ॥

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः ॥ ॥ संवत ॥ १९ ॥ ओगणिसें ॥ २४ ॥ चोविसना ॥ पोषवदि ॥ १० ॥ दशमिने दिवस ॥ महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री बोचासण मध्ये कोटवाल वाहाला कालात था बापु अमराने घेर गादितकिये युक्त पलंग बिछाव्यो हतो ते उपर विराजमान थया हतां ने किनखापनो सूरवाल ने डगलि धारण कर्यां हतां

॥ने लिलारंगनोजरियानीरेटोपेहेस्योहतो नेकसुंबलसेलुं एककडेडे बांध्युंहतुं॥ नेएकसेलुं रवभेधारण कर्युंहतुं ॥नेमुस्तक
उपर कसुंबलसोनेरिकोरे छेडालिमो टिपाघधारण करिहती॥ नेसर्वे अंगमांपिलापुष्पना आभूषण सोभिरह्यांहतां॥
नेकंकुनोचांदलोकर्योहतो ॥ नेपोतानामूखारविंदनीआगल साधुतथा घणाकहरिभक्तनीसभा भराईनेबेठिहती अने
तेपलंगउपर फूलनो हिंडोलोबांध्योहतो ॥ अनेमहाराजनी संध्याआर्तिथयापछी महाराजबोल्याजेजीवने विषे बेदो
षछे॥ एक अपराध ने बिजोमहाअपराध एबेदोष ज्यां सुधीहोयत्यां सुधिजीवनुं कल्याणथाय नहिं ॥ते अपराधशुंतो
जगतकर्ताएवाजे अनंतकोटि ब्रह्मांडनापति भगवान तेने नेनाव्रावंतए बेजेदेह तथादेहनासगांस्त्रि छोकरां मा बापतथा
धन्यदोलत गाम गरास तेबेयनेसरखांजाणेछे ॥ने भगवानउपरने माईक पदार्थउपर सरखुंहेत राखेछे ॥तेतो अपराधि
जीवछे ॥अनेजे भगवानना करतां माईक पदार्थमां वधारे हेतराखेछे ते तोमहाअपराधि छे ॥ केम के भगवानक्यांने
माईक पदार्थ क्यां॥ एबेमांतो घणोजभेद छे॥ जेमएकचिंतामणि ते क्यां ने एक फूटिल बदामनुं फोतरुं क्यां ॥तेम भग-
वानतो चिंतामणीरूपछे ॥नेमाईकपदार्थतो फूटिलबदामनाफोतराजेवांछेमाटे भगवानने देह ने देहनासगासंबंधी
धनमालने सरखांमाने छेनेसरखुंहेत राखेछे तेने अपराधिजीव जाणवो ॥ नेतेनुं कल्याणथायनहिं अनेजे भ
गवानना करतां माईक पदार्थमां वधारे हेतराखेछे ॥तेनेतो महाअपराधि जाणवो ॥केमके जीवनासाचासगानेसु-
खना आपनारातो भगवानछे ॥अनेदेहने देहना सगा संबंधी धन्यमाल गाम गरास तेतो कोई जीवनी भेगुं आवतुं न
थी ॥ने उलटाजीवनेदुःखनेदेनारां छे नेनाव्रावंतछे ॥तेमां वधारे प्रितिराखे छे ॥ने भगवानमांप्रीतिनथीराखतो तेनेतो
महाअपराधिजाणवो ॥अने अपराधिनेमहाअपराधि एवाजेजीव तेएमजाणे छेजे मुने स्त्रि मांथीसुखथाशे केद्रव्य
मांथीसुखथशे॥ के स्त्रिजाणेजे मारे पुरुषमांथी सुखथशे॥ ॥के सारुंसारुंखावामांथीसुखथशे के मारेआ आ
सगां संबंधिहोयतो तेमांथी सुखथशे केमुने घणा मनुष्य वखाणे नेमानआपेतोकरवीथ्यो थाउं ॥एवीरीतेमाईकपदार्थ

करिनेसुखथवानेइछेछे ॥ पणतेणेकरिने कोईकाले जीवनेसुखथयुंनथी नेथशेपणनहिं ॥ अनेआदिअंत्यनेमध्ये
भगवानजजीवनीरक्षाकरे छे ।।नेसर्वेसुखनासींधुतोएक भगवान छेअनेभगवानविना बिजुंसर्वेदुःखरुपछे माटे
भगवानने बिजामाईकपदार्थ नेसरखांजाणेछे तथा भगवानकरतांवधारेवालांकरेछे तेतो महाअपराधिछे।।नेते
नुंकल्याणकोई कालेथायनहिं। माटेजेनेपोतानाआत्मानाकल्याणनेईछवुंतेने भगवान जेवुं कोई पदार्थ वहालुंरा
खवुंनहिं।।त्यारे कोई एमकहेजे माईकपदार्थएवांनकारांनेदुःखनांदेनारांछे त्यारेतेनेपरमेश्वरे शुंकरवा कर्यांहशे।।नेते
मांसुखजेवुं शुंकरवा जणाव्युंहशे।।तो तेनुं एमछेजे भगवान ने पोतानासुखनुंज्ञान करावावासारुंजगतनीउत्पत्तिक
रिछे ।।नेतेजगतनेविषेजेसुख जणायछे तेसुखकेवुंछे तोजेमसमुद्रनाजळमांथी एकसळि भरिने बहारनाखे तेकेटलुं
थोडुंकहेवाय तेमसमुद्र जेटलुं भगवाननाधामनुं सुखछे तेसुखनुंज्ञानकरावावासारुं तेमांथीएकसळि जेटलुं सुख
एकमूळप्रकृतिपुरुषनेआप्युंछे।।तेसुखेकरिने प्रकृतिपुरुषेअनंत कोटिब्रह्मांड उपजाव्यां ॥ नेतेणेकरिनेसर्वेब्र-
ह्मांडेनाअनंतकोटिदेवदैत्यराजाप्रजापशुपक्षिजीवप्राणिमात्रसुखियाथयाछे अनेतेसुखेकरिनेमोटामोटादेवब्रह्मा
दिक तथा पशुपक्षादिक सर्वेरचिपचिरह्याछे ॥ नेतेमांसर्वे जिवप्राणिमात्र मोहपामिने तेमांएकतारजोडाईरह्याछे ॥
पणतेमाईकसुखमांथी कोईजीवतृप्तथतोनथी तेमतेसुखथकि कोईजीवपोताने जाणे उदास पणथतोनथीएवुं-
आश्चर्यकारिलागे छे ॥ पछेतेसुखमांथी वैराग करावीने पोतानासुखनोअनुभवकरावावासारुं परमात्मापोते पृथ्वी
उपर प्रगटथायछे नेप्रगटथईने पोतानेशरणेआव्याएवाजेजीवो।।तेनेएमज्ञानकरावेछे जेमाराएकसंकल्पेकरिने
अनंतकोटि ब्रह्मांडउत्पन्नथयाछे ॥ तेतमनेमारासुखनोअनुभवकरावावासारुं मिथ्यास्वप्नवतदेखाड्युंछे तोतेमां
तमेआश्चर्यपामिने तेमांजोडाईगयाछो।।एमअनुभवकरावीनेपोतानास्वरूपमां प्रितिकरावीनेदेह तथा देह संबंधि
पदार्थनीवासनाटळाविने निरवासनिक करिने ब्रह्मस्थिति करावि नेपोतानाअक्षर धामनेपमाडवासारुं भगवाने

जगतनीउत्पत्तिकारी छे।। माटे भगवाने जे जे कर्युं छे ते जीवना मोक्षने अर्थे कर्युं छे।। एम जाणिने अपराधने महाअपराध रूपि दोषनो त्याग करीने।। भगवानने भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागि निरवासनिक संत तेने विषे प्रीतिकरवि।। ने भगवानने भगवानना संत जेवुं कोई पदार्थ वहालुं राखवुं नहि।। ।।इतिश्रीसुखसिद्धांतसमाप्तः।। ।।श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः।। ।।संवत।।१९।।ओगणिसें।।२४।। चोविसना पोषवदि।।११।।एकादशिने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्रीबोचासणमध्ये।।पटेल गवडकाकुजीने घेर उत्तरादे बार ओरडानी आगल गादि तकिया बिछाविने ते उपर विराजमान थयाहता ने सर्वे कसंबल जरियनी वस्त्र धारण कर्यांहतां।। ने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां सोभि रह्यांहतां ने कंकुनो चांदलो कर्योहतो ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठिहति।। पछे पटेल हिराभाई नानाभाईये प्रश्नपुछ्युं जे हे महाराज रामचंद्रजी तो भगवान हता ने सर्वज्ञहता ने त्रणे कालनुं जाणे एवा हता।। तो पण सिताजिने रावण हरिगयो ते केम जाण्युं नहि।। पछे महाराज बोल्या जे रामचंद्रजी भगवानने सर्वज्ञने त्रणे कालने जाणनारा कह्याने तेणे सितानु हरण केम जाण्युं नहि एम कहेवाय नहि।। ने एम कहेवुं जे एम भगवान सर्वज्ञ छे।। ते सर्व वातने जाणता हता तो पण तेणे सितानुं हरण केम थवा दिधुं हशे।। एम कह्यो।। पछे हीरभाईये कह्युं के हा महाराज भगवाने एथि लिला शा सारुं करि।। पछे महाराज बोल्या जे भगवान छे ते न्याय करे छे ते न्याये करिने असुरनो नाश करे छे ने न्याये करिने जीवनुं कल्याण करे छे।। ते असुरने वांकमां आणिने तेनो नास करे छे।। ते पोते रामचंद्रजि जाणता हता जे सितानुं हरणथशे ते सिताजीने आगलथी कह्युं हतुं जे तमने रावण हरिजशे पण ते वातनी फिकर राखिश मा हि।। ने तमे आत्मा छो ते आत्माने देह थी नोखो छे।। ने निरले पछे एवी रीते ज्ञान अग्निमां सिताजीने प्रवेश कराव्यो हतो।। ने छायारूप जे पंचभुतनो देह ते ने रावण हरशे एवु आगलथी कह्युं हतुं।। माटे रामतो सर्वज्ञने करता हरता हता ते पोतानी ईछाये करिने

सितानुंद्धरणथयुं॥ने रावणअसुरहतो तेनेथांकमांआणिनेतेनोनाशकर्यो अनेभगवानेवानराओनां कल्याण कर्यां तेप
णभक्तिकर्याविनाकल्याण थायनहिं ॥तेभक्ति शुंतो प्रगट भगवानकहेतेमकरबुं तेनुंजनाम भक्तिछे तेरावणनेमार-
वानेअर्थे भगवानेजेमकह्युं तेमहनुमानसुग्रिवजांबुवाननलनिलआदिक अढारपद्म वांदरा तेणेआज्ञापालिनेप्रत्य
क्षभगवाननेविषेहेतेकरिनेजोडाईगयां तोतेसर्वेनुंकल्याण रामचंद्रजीयेकर्युं माटेप्रत्यक्ष भगवानछेते अंतरजामि
नेसर्वज्ञनेसर्व करताहर्ताछे॥ तोपणमनुष्यदेहधर्यो होयतेमनुष्यनीरीतेवरतेतेणेकरिनेअज्ञानीमनुष्यओजरवीशा-
केनहिं॥ पणजे दिव्यमूर्तिनेक्षरअक्षरनाआधारनेवेदजेनेनेतिनेति कहेछे नेजेथीपरकोईनथी तेजपोतेरामदशरथ
नेघेरप्रगटथयाहता॥ पणते विनाबिजोकोई भगवाननथी अनेजेरामहतातेजकृष्णथयाहता माटेजगतकरतानेस-
र्वेनाकारण भगवानतेजपोतेजीवोनांकल्याण करवानअर्थे नेअधर्मनेअसुरनोनाशकरवानेअर्थेनेधर्मनुंस्थाप
नकरवानेअर्थे॥ यारंमवार अवतारधारणकरिने प्रगटथायछे ॥पछेजेदैविनेशुभसंस्कारिजीवहोयतेप्रत्यक्ष भगवान
नोआश्रयकरिने सेवाभक्तिकरेछे तेजीवनुं भगवान कल्याणकरेछे नेजेअसुरिजीवहोयतेप्रत्यक्षभगवाननोद्रो
हकरेछे ॥ तेनोभगवान नाशकरेछे॥अनेदैविनेअसुरिनीखबरप्रगटभगवानहोयत्यारेजपडेछे॥ केजेदैविहोयते
प्रगट भगवाननो गुण लेईनेसेवाकरेछे ॥नेजे असुरिहोय तेप्रगट भगवाननो अवगुण लेईनेद्रोहकरेछे॥अनेजे-
णेप्रगटभगवाननो गुण लेईनेसेवाकरिछे तेनांकल्याण थयांछे नेजेणेप्रगट भगवाननो अवगुण लेईनेद्रोहकर्योछे
तेसर्वेनर्कमांगयाछे ॥माटेजेनेपोतानाआत्मानाकल्याणनेईछवुंतेनेप्रगटभगवाननोआश्रयकरवोनेतेनीआ-
ज्ञापालवि॥एजजीवनाकल्याणनुंअचलसिद्धांतछे॥ अनेकोईएमकहेतोहोयजे एकराम तोघटघटबोले॥बिजा
रामदशरथघरडोले॥तिजारामसकलपसारा॥चोथाराम सबसेंन्यारा॥एमरामनानोखानोखा भेदबताविने
प्रत्यक्ष दसरथनापुत्र रामतेनेविषेथीआस्थाउडाविनेनास्तिककरे॥तेतोनास्तिकछे नेकल्याणनाखपवाळाने

तेनोसंगकरवोनहिं ॥ नेजेरामदसरथनापुत्रते विना बिजो कोईक निरंजन निराकार भगवानछे एम कहे छे तेतो असुर छे ॥ नेमहापापिछे ॥ ने तेनो जेसंगकरे तेनेपण नित्येपंचमहापाप लागे छे ॥ ते पंचमहापापते क्यां तोएक ब्रह्महत्याने बिजीगौहत्या ने त्रिजी स्त्रिहत्याने चोथी बालहत्याने पांचमिए चारमांथी एके जणनो संगकरवो एपांचमहापाप छे ॥ ते जे प्रगटदसरथनापुत्रराम तेने मुकिने ते विना बिजो कोक भगवान छे एम कहे तो होय तेने ने तेनासंगनाकरनाराने नित्ये पंचमहापापलागे छे नेतेजीवनुं कोईकाले कल्याणथतुंनथी ॥ माटे एवापापिनो संग करवो नहिं ॥ ने सर्व करताने सर्वकारण प्रत्यक्षरामकृष्णादिक छे ॥ ते एम समजवुं ने तेनुं भजनकरवुं ॥ ने प्रत्यक्षरामकृष्णभगवाननुं भजनकरावताहोय नेचोरि छिनालि दारु माटि गांजादिक अधर्मनो त्यागकरि करावीने धर्ममां रहेतार रखावताहोय तेनो समागम करवो ने पोताने देहथी नोरवो आत्मारूप मानवुं ॥ नेपंचविषयनां पदार्थ उपर अरुचिराखवि ॥ ने प्रत्यक्षरामकृष्णादिक भगवाननि मूर्तियो ने तेना संततेने विषे महात्मेसहित प्रीतिकरवि एविरीते समजीने भगवाननुं भजनकरशे तेनुं कल्याण थशे ॥

॥ ॥ इति श्रीमुख सिद्धांतसमाप्तः ॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः ॥

॥ ॥ संवत ॥ १९ ॥ ओगणिसें ॥ २४ ॥ चोविसना महाशुदि ॥ १ ॥ पडवाने दिवस महाराज श्री हरिकृष्णभगवान् गाम श्री वोचासणमध्ये पटेल गणेसजी बेहेचरदासने घेरगादितकिया युक्तपलंगउपर विराजमानथयाहता ॥ नेपोतानामुखारविंदनीआगळ साधु तथा घणा कहरिभक्तनी सभाभराईनेबेठिहती ॥ ने कंकुनोचांदलो कर्योहतो ॥ पछे गामरोईसालाना भक्त भगवानजी लक्ष्मिरामे प्रश्नपुछ्युं जेहे महाराज आजीव छे ते क्यांथीआवतो हशे ने पाछो क्यांजतो हशे तेआवतोजतो जणातोनथी ते अमनेकहो जे क्यांथीआवे छे ने क्यांजाय छे ॥ पछे महाराज बोल्याजे एवात जाणवी घणीज कठण छे अनेजेम बिजां माईकपदार्थ देखाय छे तेविरीते जीव देखाय एवो पणनथी अनेसमजणेकरिने देखाय एवो छे ॥ ते समजणे करिने जीवने आव्योगयो देखाडुं छुं ॥ जेजीवने पांच कोशरूपि रहेवा-

नांपांचस्थानक छे ॥ ते पांचस्थानक कियां तो एक अन्नमयकोश छे ॥ बिजो प्राणमयकोश छे ॥ त्रिजो मनोमयकोश छे ॥
चोथो ज्ञानमयकोस छे ॥ ने पांचमो आनंदमयकोश छे ॥ ए पांचकोशने विषे जीव रह्यो छे ॥ तेमां प्रथम जीव आनंदमय
कोश रुप जे कारण माया घोर सुसुप्तिते ने विषे हतो ॥ पछे उत्पत्तिसमे आनंदमयकोसने भेगो लेईने विज्ञानमयकोस जे
बुद्धि ते मां प्रवेश करे छे ने ते पछे आनंदमयने विज्ञानमयकोसे सहित मनोमयकोस जे मन तेमां प्रवेश करे छे ॥ ने त्यार
पछे एत्रणे कोशे सहित जीव जे ते प्राणमयकोशमां प्रवेश करे छे ॥ ने त्यारपछे एचारे कोशने भेगा लेईने जीव जे ते अन्नम
य कोश जे स्थूल देह ते मां प्रवेश करे छे ॥ अने पाछो स्थूल देहनी आवरदा आवि रहे त्यारे प्राणमयकोशमां जाय छे ॥ ने प्रा
णमय मनोमय ने विज्ञानमय एत्रणे कोश मलिने सूक्ष्मदेह कहेवाय छे ॥ अने एत्रणे कोशने भेगा लेईने जीव जे ते आनंद
मयकोशरूप जे कारणदेह ते मां प्रवेश करे छे ॥ एविरीते जाय आवे छे ने जाय छे ॥ ने जन्ममरणने पामे छे ॥ ने वस्तुगते ए-
चारे देह थकि जीव जुदो छे ॥ पण ते जीवने ज्यां सुधि पंचविषयनी वासना छे त्यां सुधि ते जीव पांच कोशरुपि घरने वळगि
ने रह्यो छे अने ज्यारे जीवने रामकृष्णादिक भगवानना अवतार ते प्रत्यक्ष मले ने भगवानने भगवानना संतनो आश्रय करे
ने ते थकि ज्ञानने पामिने पंचविषयनी वासनानो त्याग करिने भगवानना स्वरूपमां जोडाय त्यारे ते आत्मा पांच कोशरू
पि घरनो त्याग करिने अखंड आनंदमांय एवुं जे अक्षरधाम तेने पामे छे अने वासना टलि न होय त्यां सुधि पांच कोश
रूपि घरमां बंधाई रहे छे ते पांचकोश केवा छे के जेम आपणो आ घर छे तेने पांच खंड छे ॥ एक मोटा आगलनो कक
हेवाय छे ॥ ने बिजुं एक रवेश कहेवाय छे ने त्रिजी एक पडशाल कहेवाय छे ॥ ने चोथो एक ओरडो कहेवाय छे ने पांचमुं
एक अगासियुं कहेवाय छे ॥ अने ते घरमां पुरुष रहे तो होय ते पुरुष ज्यारे चोकमां बेसे त्यारे तेनी पांचे खंडमां सरत रहे
ने बहार पण तेनी चारे कोरे नजर पडे ॥ अने ज्यारे चोकमां थी रवेशमां जाय त्यारे तेने बे कोरे नजर जाय ने बे कोरे न
जर जाय नहिं ॥ ने ज्यारे पडशालमां ते पुरुष जई ने बेशे ने आगला बारनुं कमाड बंध करे त्यारे तो तेने त्रण खंडमां

नजरजाय पण स्वेन्नाने चोक एबे नी खबर रहेनहिं ॥ अने ज्यारे ओरडा मांजाय त्यारे तोबे खंडनी सरत रहेनेत्रणनी खबर रहे नहिं ॥
अने ज्यारे अगासियामांजईने बेसे त्यारे तो चारे खंडनी खबर पडे नहिं॥ तेम चोकनेठेकाणेस्थूलदेह छे ते स्थूलदेहमां जीव वरत्तोहोय त्यारे तो तेने पांचे कोशनी खबररहेछे ने वहार चारे कोरे जगतनापदार्थनीपण खबर रहे छे ॥ अनेज्यारे स्वेन्नरूपस्वप्नमां जाय छे त्यारे तेने बहार पदार्थ देखाता नथी ने स्वप्ननां पदार्थ देखाय छे ॥ अने ज्यारे पडशाळरूप सूक्ष्म देहमां जिव जायछे त्यारे तो तेनेस्थूलदेह तथा स्थूलदेहे करिने जणाबाजे वहार पदार्थ तथा सूक्ष्मदेह तथा सूक्ष्मदेहे करिने देखाणांजे स्वप्नना पदार्थ ते एके नी खबर पडतिनथी ॥ अनेज्यारे ओरडारूप महासूक्ष्मदेहमां जिवजायछे त्यारे तेनेस्थूल सूक्ष्म ने कारण एत्रणे देहनी विसमर्ति थायछे ॥ अनेज्यारे अगासिया रुप महा कारणदेहमां जीवजायछे त्यारे तेने चार कोश रूपत्रणे अवस्थानी विसमर्ति थायछे ॥ नेवळि पाछो जीव महाकारणमांथी कारण देहमां आवे छे ने कारणमांथि सूक्ष्मदेहमां आवे छे ने सूक्ष्ममांथी स्थूलदेहमां आवेछे ॥ एवि रीते जिव आवे छे ने जाय छे ॥ नेजन्ममरणने पामे छे अने ज्यारे प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतनो आश्रो करिने ज्ञानने पामिने निवरतिपर थाय छे त्यारे ते जीव पांचकोशरूपमायानो त्यागकरिने ब्रह्मरुप थईने भगवामनाअक्षर धामनेपामेछे ॥ एतमारा प्रश्ननोउत्तर छे ॥ ॥

इति श्रीसुखसिद्धांतसमाप्तः ॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥

संवत ॥१९॥ ओगणिसें ॥२१॥ चोविसना ॥ महाशुदि ॥२॥ बिजने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवानगाम गोलल मध्ये पटेल वकोरंगनाथनेघेर गादितकियेजुक्तपलंगउपर विराजमानथयाहताने सर्वे वसंतिवस्त्र धारणकर्‍यां हताने पिळापुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभिरह्यांहतां ॥ ने कंकुनो चांरलो कर्‍योहतो ॥ ने पोताना मुख्यार्विंदनीआगल साधु तथा घणाक हरिभक्त नी सभा भराईने बेठिहती ॥ पछी महाराज बोल्याजे जिवने विषे काम लोभादिक पांचदोषनां बिज अनादिनां रह्यां छे ते कामादिक उदे थईने जिवने पिडा करे छे नेजन्ममरणने पमाडे छे ॥ मारेजे

नेकल्याणनेइछवुं तेने काम जो भादिकना स्वभावपडवादेवानहि ॥ अने स्वभावपड्याहोयतोते स्वभावने टालवानी खट-करारवविं ॥ अने कामादिकनास्वभावतोएनीमे लेबगरदाखडेजीवनेपडे छे नेतेस्वभावनेटाळवा तेतोदारवडो करे त्यारेटलेछे ॥ जेमवस्त्र मांमेलतोएनीमेजे मरायछे नेतेमेलनेकाढवानेअर्थे तोदारवडोकरवोपडेछे ॥ त्यारेते निसरेछे ॥ यलि जेमफानस मांकाजलतोएनीमेजेवलेछे नेचोखुंतोदारवडो करिनेकरे छे त्यारे थायछे तेमकामजो भस्वादमान आदिकनास्वभावतोजीवमां वगरशिखव्यापडेछे ॥ अने ते स्वभावनेटालवानेअर्थे तो महादारवडो करिने सतपुरुषनो समागमकरिने नित्ये खटको राखेत्यारे स्वभावटलेछे अने स्वभावजजीवनेदुःखनादेनाराछे ॥ नेजेने स्वभावटलि गयातेतो भगवानना धामने पामिरह्योछे ॥ माटेपोताने कामजो भादिकनास्वभावछे एजजीवना पाकाशत्रुछे ॥ प-ण बिजो कोई जीवनोशत्रु नथी ॥ केमके पोतानो कोई कहे तुंहोय ॥ नेतेने आपणा उपर अतिशे प्रितिहोय पणजो आ-पणे कामनीअतिशेवासनाहोय ने तेनि स्त्रिसारु तेनाघरमां पेसिये तो तेनोतेमाथुंवाढवा उभोथायने हे तुमटिनेशत्रुथा यछे ॥ तेशत्रु कोणेकर्यो केपोताने कामनो स्वभावहतो तेणेशत्रु कर्यो माटे कामादिक दोषछे एजजीवनाशत्रु छे ॥ माटेबुद्धिमानहोयतेने भगवानने भगवानना संतनो आश्रय करिनेपोतानादोषटालवाने विषे सूरविर थवुं ॥ अनेजे भगवानने भगवानना संतनी आज्ञामां रहिने पोताना दोषटालवानो खटको राखेछे तेनादोषटलि जायछे ॥ नेते नुंकल्याण थायछे ॥ माटेजेने पोताना आत्माने निरदोष करिने परमसुखनेपामवुं होय तेने भगवानने भगवानना संत नो समागमकरिने तेनीआज्ञामांवरतवुं ॥ अनेजे भगवानने भगवानना संतनी आज्ञाप्रमाणेवरतशे तेनासर्वदोषटलि ने परम मोक्षने पामशे ॥ ॥ इतिश्रीसुखसिद्धांतसमाप्तः ॥ ॥

श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ॥ ॥ संवत् ॥ १९ ॥ ओगणिसें ॥ २४ ॥ चोविसना महाशुदि ॥ ८ ॥ अष्टमि नेदिवस महाराजश्रीहरिकृष्णभगवान गामश्रीधर्मजमध्ये पटेलत्रिकमभाई तथा सिभाईने घेरउतरादा बारनाओर

हानीआगल गादितकिया बिछावि नेढोलियाउपर विराजमान थयाहताने सर्वे कसंबलजरियानीपस्त्र धारणकर्यांह
तां ॥ ने पिलापुष्पनांआभूषण सर्वेअंगमांघरो भीरह्यांहतां ने कंकुनोचांदलोकर्योहतो नेपोतानामुखारविंदनीआगल
साधुतथापणाकहरिभक्तनी सभाभराईनेबेठिहति ॥ पछेमहाराजनी संध्यार्ति थयाकेडे महाराज कृपाकरिनेसर्वे
सभाप्रत्ये बोल्याजे जेनेआलोकमां नेपरलोकमां महा सुखनेपामवुंहोय तेने सत्वगुण राखवो अने सत्वगुणे करि
नेआलोकनेपरलोकने विषेजीवनेमहासुखथायछे ॥ जे सत्वगुणराखिने काम करवानुं धारे तेकामसिद्ध थायछे
अनेजोरजोगुणनेतमोगुणमां महादुःख रह्युंछे ॥ नेरजोगुणि तमोगुणि ने कोई मनोरथसिद्धथतोनथी ॥ केमके कोईक
नीपासे आपणे कामकरावववुं होय त्यारे तेनीपासे जईने तेने सत्वगुण राखिने तेपासे मिठां मिठां वेण कहिशुंतो तेआ
पणुंकामकरशे ॥ अने जो रजोगुणके तमोगुण आणीने तेनेकडवां वचन कहियेतो तेने कामकरवुंहोय तोपणन
करेनेहेतुहोयतेपणशत्रुथाय ॥ अने आपणो कोईक शत्रुहोय पण तेनीआगल सत्वगुणराखिनेसत्यहितनांप्रियव
चन बोलिये तोतेशत्रु मटिनेहेतुथईजाय ॥ ने तेदुःखदेतोआसनेसुखदेवामंडे तेआलोकमांजेम सत्वगुणमांसु
खथायछे ॥ ने तमोगुणमांदुःखथायछे ॥ तेमपरलोकमांजीवना कल्याणनेअर्थे पण कोई महात्मापुरुष होयतेनि
पासेसत्वगुण राखिने निरमानी थईने दिनआधिनपणे हाथजोडिनेगरिबथईये ने महात्मापुरुषनी सेवा करिये ॥
तोते महात्मा पुरुष कृपाकरिने तेनेज्ञानआपे नेते ज्ञाने करिनेजीवनुं कल्याणथायछे ॥ पणजेतमोगुणे करिने महात्मा
पुरुषने कुचवावे तोतेनाउपर महात्मापुरुष प्रसन्नथायनहिं ॥ ने तेजीवमरिने महादुःखनेपामे माटेजेने पोतानाक
ल्याणने ईछवुं तेने कोई महात्मापुरुषआगल तमोगुण करवो नहिं ॥ ने तेने वसमुंलागे एवुं वचन तो भूल्यमांपण बो
लवुं नहिं ॥ अने विष्णुशिव गणपति देविने सूर्य एपंचदेवनी निंद्या क्यारेय करवी नहि ॥ ने तेनी निंद्या कोईक करतो
होय तेनो संग करवो नहिं ॥ अने ए पांचे देव जगतकर्ता जे परमात्मा तेनांरुपछे ॥ माटे पांचे देवनेपुज्यपणे करिने

मानवा अनेराम कृष्णादिक जे अवतार कहेवायछे तेपण सर्वना कारण ने सर्व ना आधार ने सर्वे थी पर एवा जे परब्रह्म परमात्मा भगवान तेनाज अवतार छे कहेतां ते परमात्मा पोतेज जीवोना कल्याण करवा सारुं स्वइछाये प्रथ्वी उपर प्रगट थायछे ने तेनो आश्रय करवाथकिज जीवनुं कल्याणथायछे॥ पण ते राम कृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवानना आश्रयविना-जीवनुं कल्याण कोई नुं थयुं नथी ने थशे पण नहिं॥ माटे रामकृष्णादिक भगवानना अवतारना मनुष्य चरित्रने विषे दोषजोवो नहिं॥ ने तेनां चरीत्रने तो कल्याणकारी जाणवां ने तेनुं गान करवुं॥ ने तेने विषे दोष देखाडे तेने महा पापि जाणवो॥ ने ते तो असुर छे॥ ने तेनो जे संग करे ते जिव नरकमां जायछे॥ माटे राम कृष्णादिक भगवानने विषे दोष देखाडे तेनो संग करवो नहिं ने तेनो जे संग करे छे॥ तेने नित्ये ब्रह्महत्यानुं पाप लागे छे एम समजीने सत्वगुणे राखिने शुद्ध ज्ञानदाता महात्मा पुरुष होय तेनी आगळ निरमानी थईने समागम करवो तो ते आत्मानुं कल्याण थाय छे॥ ॥

॥ ॥ इति श्रीमुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः

॥ ॥संवत्॥१९॥ ओगणिसें॥२४॥ चोविसना महाशुदि॥१०॥ दशमिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री धर्मज मध्ये पटेल गला भाईरण छोड भाईने घेर उगमणे बार मेडिनी आगळ गादिवालि ये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता॥ ने किनरवाप नो स्करवाल ने डगलि धारण कर्यां हतां ने लिलारंगनी सोनेरि बुटादार रेंटो पेहेर्यो हतो॥ ने कसुंबलसेलुं केडे बांध्युं हतुं ने एक बिजुं सेलुं खभे धारण कर्युं हतुं ने पिळा पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमांशोभी रह्यां हतां॥ ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हती पछे महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान कृपाकरिने सर्वे सभाप्रत्ये बोल्या जे वेदादिक सर्वे शास्त्रनी जे मूळ मतलब छे॥ तेने जे पुरुष महात्मा पासे थी समजे छे तेने शास्त्र सवळां पडे छे॥ अने सर्वेनी मूळमत्तलब न जाणी होय तेने शास्त्र अवळां पडे छे केमके कोई शास्त्रमां केम कह्युं होय ने कोई शास्त्रमां केम कह्युं होय

माटेबुद्धि भमिजायछे नेपछि नास्तिक भावश्रा विजायछे॥माटे कल्याणनारवपवाजाने कोई महात्मा पुरुष नोसमागम करिनेशा-
स्त्रनी मूलमत जवजेमछे तेम तमने कहियेछैये॥जेशास्त्रमांत्रण विचार कह्याछे॥एक भयानकविचारकह्योछेनेबिजोरेचक
विचार कह्योछे॥ने त्रिजोयथार्थ विचार कह्योछे॥तेत्रणप्रकार नाजीवछे तेत्रणेप्रकारनाजीवने नोरवोनोरवो विचार करव
नुंकह्युंछे॥तेत्रण प्रकारनाजीवकीया तोपामर विषयीने मुमुक्षु॥तेमां पामरने भयानक विचार आप्योछे॥ते भयानकतुं
श्रुरूपछे॥ तोपामरहोयते पापकर्म करतोहोय ने पापे करिनेजेदुःरवथशे तेनीरववरनथी॥माटे भयानकविचार आपिने
पापथकि भयपमाडिने पापमुकाववांछे तेसारुं जेटलांपापे करिनेदुःरव थाय छे ते यथार्थ दुःरवने भेगां करिने तेनोमहात्मा
पुरुषे सरवाळोलेईने छलारवनें चोरासिहजार नरक नाकुंड कर्या॥ तेमांश्रगविसकुंड तो मोटानामधारि कर्या॥
ने तेकुंडमां आवांआवां दुःरवजीवोने भोगववांपडेछे॥नेतेदुःरवनाश्रापनारा एवामोटा मोटा यमदूत नांरूपदेखाड्यां॥
ने तेयमदूत महाविकराळछे॥ने काजळजेवाकाळाछे॥नेसाततांडजेवडाउंचाछे नेतेनांरुवाटां बेर छिनीश्रणीजेवां
छे नेपापीजीवोने मारवासारुं अनेक प्रकारनांशस्त्र लीधांछे॥ने आवा पाप करेतेने आ विरीते जम मारेछे॥नेकाळि-
चिसोनरवावेछे॥ ने नरकनाकुंडमां डवकियो रववरावे छे ने माथाउपर मुदगळना मारमारेछे॥एविरीते पापकरेछे तेनेजम
पुरिमां जईने नरकना कुंडमां जमनामार खावापडेछे॥एवुंपापथकिदुःरवथायछे॥ एमसांभळ्युं त्यारे पामरने पण दुःरव
तोवसमुंलागेछे॥ तेपापथकिभयपामिने पापकरवुं मुकि दियेछे ने धर्म नियमने पाळेछे॥ ने तेजीव स्वरविवोथायछे॥अने
वस्तुगतेजमपुरितथा नर्कनाकुंड तथाजमनादुत नथीपणजमपुरीमां तथा नरकनाकुंडमां तथायमनादुतनां दुःरव
कह्यां तेथकि लारवघणांवधारे दुःरव जीवने पापकर्मे करिने गर्भवासमां भोगववांपडेछे तेदुःरव सांचांछे॥ पण एदुः
रवनीतोजीवने रववरनथी॥ माटेदुःरवनांरूपदेखाडीने पामरजीवनेपापथकिपाछोवाळेछे॥ने रेचक विचार आपिने
शुभकर्म कराववा सारुं महात्मा पुरुषे स्वर्गनां स्वरदेखाड्यां जेआवांकर्म वेदमां कह्याप्रमाणे करिशतो देवलो

कमांजईने आवां सुखपामिश ॥ ने तारे स्त्रिनी इछा हशे तो देवलोकमां घणी कअप्सराओ मळशे ने द्रव्यनी इछा हशे
तो हिरा मोति मणियो नाढगला मळशे ॥ एवि रीते शुभकर्म करिश तो मनजे चिंतविश ते सुख देवलोकमां तुने मळशे
॥ एवो विचार ज्यारे सांभल्यो त्यारे जीवने सुखतो सारुं लागे छे ॥ पछे शुभकर्म करवामंडि गयो ॥ पछे कर्मने विषे आस्था
वेठि ॥ ने शुभकर्म करिने विषयनां सुख पण मळवा मांड्यां त्यारे तेने यथार्थ विचार आव्यो जे भाई तुं शुभकर्म करिने दे-
वादिकना सुखने इछे छे पण ते सुख तो अंते नाश थवानां छे ॥ ने नित्य निमित प्राकृत ने आत्यंतिक प्रलयमां देवादिक
लोके सहित कोटि ब्रह्मांड नो नाश थई जशे ने ते मां तो महादुःख पामवुं पडशे ॥ माटे एसर्वेनी वासनानो त्याग करिने
तुं आत्मारूप थईने तारा शुभकर्मनुं फल ते परमात्माने अरपण कर एटले तुं मायाना परपंचथकि छुटिने भगवानना धा
मने पामिश ॥ एवि रीते यथार्थ विचार सांभल्यो त्यारे शुभकर्म करिने अंतःकरण शुद्ध थई रह्युं हतुं ॥ ते माटे ते विचार
जीवमां समजाई गयो ने विषयवासनानो त्याग करिने भगवान भजीने ते आत्मा भगवानना धामने पामे छे ॥ माटे आ
वि रीते जीवोना कल्याण ने अर्थे महात्मा पुरुषे दया करिने त्रण प्रकारना जीव छे ते सारु शास्त्रमां त्रण प्रकारना उपदे
शना भेद कर्या छे ॥ ते ने समजीनशाके पछे शास्त्रमां दोष काढे जे भाई शास्त्रनुं क्यां ठेकाणुं छे ॥ कोई कठेकाणे
केम कह्युं छे ने कोई कठेकाणे केम कह्युं छे ॥ माटे शास्त्र खोटां छे एम समजीने नास्तिक थई जाय छे ॥ माटे ना-
स्तिक न थवुं ने सत्पुरुष थकि शास्त्रने समजिये त्यारे शास्त्र सर्व जां समजाय छे ने जीवनुं कल्याण थाय छे ॥ मा
टे सत्पुरुष थकि शास्त्र सांभलवुं पण असतपुरुष पासे थी शास्त्र न सांभलवुं ॥ हवे शातपुरुष केवा होय ॥ अने अस
तपुरुष केवा होय ॥ तो सतपुरुषने विषे चार गुण होय छे ॥ अने असतपुरुषने विषे चार दोष होय छे ॥ हवे किया
गुण ने किया दोष तो सतपुरुष पंचविषयनो त्याग करता करावता होय ॥ अने असतपुरुष पंचविषयने भोगवता
होय ने बिजाने भोगवावता होय ॥ अने सतपुरुष पोते देह थी नोखो आत्मा ते ने पोतानुं रुप मानने दिव्य साकारएवा

जे परमात्मा प्रत्यक्ष भगवान राम कृष्णादिक तेनी भक्ति करता होय ने बिजाने भक्ति करावता होय ने जीव जुदा जुदा अनेक
छे ॥ ने जीव थी जुदा परमात्मा ते एक छे ॥ तेनी भक्ति करता करावता होय अने असतपुरुष होय ते तो बधा य जीव ने एक जा
णता होय अने जीव एज परमेश्वर छे ॥ एम समजीने राम कृष्णादिक भगवानना अवतार ने ने पोताने एक मानता होय ए
मोटो महादोष छे ॥ माटे एम समजे ने बिजाने एम समजावे तेने असतपुरुष जाणवा ने तेने महा पापि जाणवा अने जे पोते
जुदो आत्मा रुप थईने प्रत्यक्ष परमात्मानी भक्ति करे छे ने बिजाने भक्ति करावे छे ते मोटो गुण छे ॥ ने एवो गुण जेने विषे
होय तेने सतपुरुष जाणवा ॥ अने सतपुरुष ने विषे धर्म दृढ होय केहेतां इंद्रियो नियममां होय ॥ ने असतपुरुषनी इंद्रियो
नियममां होय नहि ॥ अने सतपुरुषने विषे वैराग होय कहेतां जगतना पदार्थ उपर अभाव होय ॥ अने असतपुरुषने
जगतना पदार्थ उपर प्रिति होय ए रीतना गुण दोष जोईने जेने विषे दोष जणाय तेने असतपुरुष जाणवा ने तेना सं
गनो त्याग करवो ॥ अने जेने विषे मोहोरे कह्या एवा गुण जणाय तेने सत्पुरुष जाणवा ने तेनो समागम करवो ने तेथकि
ज्ञान अने सांभलवां ॥ ए रीते समजे तेनुं कल्याण थाय छे ॥ माटे आ समे तमारे सर्वे प्रकारे सवळुं समजया नो ने मो
क्ष पामवानो समो आव्यो छे ॥ तेजे चेतिने निरमानी थईने अमारे चरणे आवशो ने जे चरणे आव्या छे तेना तो साक्षात्
कार कल्याण थयो एमां काई संशय नथी ॥ ॥ इति श्री मुख्य सिद्धांत समाप्त ॥

॥ ॥ श्री हरिकृष्णाय नमो नमः ॥ ॥ संवत् ॥ १९ ॥ ओगणिसें ॥ २१
॥ चोविसना महावदि ॥ ५ ॥ पंचमिने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री धर्मज मध्ये पटेल रणछोडभाई
गिरधरभाईने घेर गादितकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता ने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पि
ळा पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां सोभि रह्यां हतां ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु
तथा घणाक हरि भक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे महाराज कृपा करिने बोल्या जे सर्वे सांभलो एक वात करि

येछेये अने तेवात दैविजीवना कामनीछे ॥ अने जेआस्करि होय तेने तोएबात समजातिजनथी ॥ माटेआस्करिजीवने
पडुआमुकीने दैविजीयनेघातकरियेछेयेजे जीवने प्रत्यक्ष भगवाननुंस्वरूपओनरवायछे त्यारेजीवनुं कल्याणथाय-
छे तेप्रगट भगवान केनेओलखायछे ॥ तोप्रगटभगवानने विषेहेतथायछे ॥ त्यारे तेहेते करिने प्रगटभगवानना दिव्य
गुणतेजाण्या मांआवे छे ॥ अनेजेने विषेहेत नहोय तेनागुणतेनेजणाता नथी ॥ अनेजेने विषे जेने हेत होय तेनागुण
ज नजरेआवेछे ॥ नेहेतवालाना दोषतो देखायजनहि ॥ जेमजेने दिकरामांके स्त्रि मांहेत होय तो तेमां अनंतदोष
छे ॥ तोपण तेने तेना एकेदोषनजरे आवतानथी ॥ केमके स्त्रिने विषे वासनाहोय तोतेजीवनर्कमांजायछे ने दिकराने
विषेवासनाहोय तो त्यां पाछोजन्मधरवो पडेछे ॥ एवा मोटा मोटादोष छे तोपण तेने विषेजेने स्नेहहोय तेतोएमजा
णेजे मारीस्त्रिजे विकोईनी स्त्रिनथी ॥ ने मारा दिकराजेवो कोईनोदोकरोनथी एमस्नेहवालाने भासे अने पोतानुं
घर बार धन माल गामगरास सर्वे तेनेआपि दिये ॥ अनेजेने हेतनहोय तेने गुणतेदोषभासे ॥ तेमजेने प्रत्यक्षपर-
मात्माना गुणजाणवा होय तेने प्रथमतो महात्मापुरुष मांहेत करवुं नेहेते करिने तेमांजे अनंत कल्याणकारि
गुणरह्याछे ते जणायछे पणते विना भगवान साथेवैर बांधिने कहेजेतमारा गुणदेखाडो ॥ तोएविरीते कोईकाले
भगवानओलखातानथी नेतेजीवनुं कल्याण थतुंनथी माटेजेने पोताना कल्याणनेइछवुंहोय नेजेने प्रगट भग-
वानने भगवानना संतनेओलखवाहोय तेनेजेटलासंसारने विषे मोटापुरुष कहेवाताहोय ते बधायसाथेहेतरा
खवुं ॥ नेतेनो समागमकरवो नेहेतराखतांथकां तेने विषेजे गुणहोय अथवादोष होय ते जणायछे पछेतेने बीपेकोई
जातनो दोषजणायके कपटजणाय तोतेनासंगनो त्यागकरवो पण तेनो द्रोहन करवो अनेसमागम करतां कर
तां तेना गुणजणाय तो तेनोआश्रयकरवो ॥ तो तेथकिआत्मानुंकल्याणथाय छे पण भगवानने भगवानना सं
त प्रगटहोय नेतेने विषेहेतराखेनहि ॥ ने समागमकरेनहि ॥ नेउलटो निंद्या कर्या करतो होय नेएमकहेजे

जो भगवान होय तो सुने कांई पर छोदेरबाडिने ओलखावे तो हुं भगवान मानुं एम कहे तेने कोई काले भगवानने भगवानना संत ओलखाता नथी ॥ ने तेनुं कल्याण कोई काले थतुं नथी ने जे कोई महात्मा पुरुष पासे परछो मागे छे तेने तो असूर जाणवो ने ते नी जे संग करे तेना आत्मानुं पण अतिशेभुंडुं थाय छे ॥ अने जे सत पुरुषने विषे प्रितिकरिने सतपुरुषनी सेवा करशे तेने ज प्रगट भगवानने भगवानना संत ओलखाशे ने तेनुं कल्याण थशे ॥ माटे प्रथम तो प्रगट भगवानने संतसाथे अतिशेप्रितिकरवि ए ज कल्याणनुं मुख्य साधन छे ॥ पण ते मांजे दैविजीव हशे तेने आवात समजाशे ने समजीने सत पुरुषने विषे हेत प्रितकरशे ॥ अने जे असूरिजीव हशे तेने तो सतपुरुषने विषे कोई काले हेत प्रित थाय ज नहि ॥ अने ते तो ज्यारे सत्पुरुष प्रगट थाय त्यारे तेनो द्रोह ज करे छे ॥ अने तेनो जे संग करे छे तेने पण सत्पुरुषनो द्रोह ज करता शिखवे छे ॥ ने ते जीवनुं अतिशे भुंडुं थाय छे ॥ अने जे महात्मा पुरुषने विषे प्रितिकरिने सेवा करे छे तेने प्रगट भगवानने भगवानना संतनुं स्वरुप ओलखाय छे ॥ ने तेनुं कल्याण थाय छे ॥ माटे जेने पोताना कल्याणने इछवुं तेने प्रगट भगवानने भगवानना संत ओलखाय छे ॥ ने तेनुं कल्याण थशे ॥ ॥ इति श्री मुख सिद्धांत समाप्तः ॥ ॥ श्री हरिकृष्णाय नमो नमः ॥ ॥ संवत ॥ १९ ॥ ओगणिसें ॥ २४ ॥ चोविसना ॥ माहावदि ॥ १२ ॥ द्वादशिने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री धर्मज मध्ये पटेल तिकमभाई ओरडानी ओसरिमां गादितकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता ॥ ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हता ॥ ने सर्वे अंगमां पुष्पनां आभुषण धर्यां भिर्यां हतां ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगल संतमंडल तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे महाराजनी संध्या आर्ति थया पछे ॥ महाराज बोल्याजे गितामां अरजुने भगवानने कह्युं के तमे मुने एम कहो छो जे तुं युद्ध कर एम कहो छो पण ते मां मारे सुख थशे के दुःख थशे हार थशे के जीत थशे ए कांई मुने जणातुं नथी ॥ माटे हुं शुं करुं ॥ पछे भगवाने कह्युं के सुख दुःख लाभ अलाभ जय पराजय तेने समान करिने तुं युद्ध मारी आ

ज्ञाये करिने कर एटले तुने कोई कर्मबंधन कर्शे नहिं॥ ॥त्यांश्लोक॥ ॥सुखदुःख समे कृत्वा लाभा लाभौ
भौजयाजयौ ॥ ॥एमां भगवाने शुं कह्युं के जीवने स्थूलदेहनुं जेटलुं जेटलुं सुखदुःख हारवुं जीतवुं आदिक अनं-
तप्रकारनो स्थूलदेहनो व्यवहार छे ज्यारे स्वप्नने सुषुप्तिमां जायछे॥ त्यारे सर्वे मिथ्या थई जायछे॥ नेतेसमे राजापणुं केरं-
कपणुं कांई रहेतुं नथी॥ तेमज स्थूलदेहनो त्याग करे छे त्यारे पण ते देहनां सुखदुःखादिक उपाधि ते सर्वे मिथ्या थई जा-
यछे॥ माटे जे ज्ञानी होय ते आलोकनां सुखदुःखादिके करिने हरखशोकने पामतानथी ने आलोकने स्वप्नवत् दे-
खेछे॥ ने एक भगवानने सत्य जाणीने तेनुं भजन करेछे॥ पछे पटेल कासिदासे प्रश्न पुछ्युं जे जेम स्वप्नने सुषुप्ति-
मांजीव जायछे॥ त्यारे जगतनां पदार्थ सर्वे मिथ्या थई जायछे। ने कोई पदार्थ काम आवतुं नथी॥ तेम पापने पुन्य ते पण
नाश पामतुं हशे के नाश नहि पामतुं होय॥ तेनुं केम हशे ते अमने जेम होय तेम कहो॥ पछे महाराज बोल्या जे आजि-
वदेहनो त्याग करे छे त्यारे आलोकना भोगपदार्थ ने स्थानक ते मिथ्या थई जायछे पण ते देहे करिने शुभने अशुभ कर्यां
जे कर्म तेनुं जे फल पापने पुन्य ते तो सूक्ष्मने कारणदेहमां जीव भेगुं जायछे॥ पण ते कर्मनुं फल जेम आलोकमां पदार्थ
मिथ्या थाय छे तेम ते मिथ्या थतां नथी॥ केम के कर्म तो अंतःकरणनी समजणे करिने थायछे॥ तेजेने सतपुरुषने समाग-
मे करिने सवलि समजण होय ते शुभकर्म करेछे॥ अने जेनी असतपुरुषने संगे करिने अवलि समजण होयछे ते अशुभ
कर्म करेछे॥ माटे ते कर्मनुं फल पापने पुन्य बेय जीवना भेगां जायछे॥ ने पाछो फरिने जीव जे ते स्थूलदेहनुं धारण करि-
ने पूर्वना कर्मनुं फल सुखदुःख तेने भोगवे छे॥ अने तेने जे खोटुं कहे छे ते तो महापापि छे केम के तेणे घणाक पाप
कर्यां हशे॥ ने घणि घणांक तेने पाप करवां हशे॥ माटे ते कर्मना फलने मिथ्या कहे छे॥ अने जे शुद्ध संप्रदायना वे-
दोक्त धर्मि छे॥ ते तो कर्मना फलने सत्य जाणीने अशुभकर्मनो त्याग करिने शुभकर्म कर्या करेछे माटे कर्मनुं फल
नाश पामतुं नथी॥ अने एक वाते कर्मनुं फल नाश पामे छे॥ के जे आत्माने प्रत्यक्ष परमात्मा ने तेना संतनो आश्रय थ

थोहोयनेतेथकि ज्ञानने पामिनेत्रणदेहनो भावटालिनाखिने आत्मारूपथईने परमात्मानी भक्ति करतोहोयनेतेपरमात्माने तेना संतनी प्रसन्नताने अर्थे तेनीआज्ञाये करिने निष्काम कर्म करे तो तेने ते कर्मनुं फलभोगववुं पडतुं नथी ॥ केमकेतेने कर्मनाफलने रहेवानुं स्थान कजेअंतःकरणरूप सूक्ष्मशरिर ते नाशपामिगयुंछे ॥केमकेते ए मन आदिक इंद्रियो अंतःकरण परमात्माने तेनो एकांतिक पंचविषयना त्यागि संत तेने अरपण कर्युंछे ॥ माटेतेने कर्मबंधन करतुंनथी॥ अने ते पोताना मनने धारे कोई कर्म करेज नहि ॥ ने परमात्माने संतनी आज्ञाये करिने निष्काम भावे करे॥ ते पण गितामां श्रीकृष्ण भगवाने अरजुनने कह्युंछे जे तारामनकल्पित धर्म तेनो त्यागकरिने हुं कहुं एम मारि आज्ञायेकरिने कर्मकर एटले तुंने कर्म बंधन करशे नहिं॥ माटेएविरीते प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना एकांतिक संतनी आज्ञाये करिने जे जे कर्म करे ते कर्मनुं फल भोगववुं पडतुं नथी ने ते आत्मा तो भगवानना धामने पामे छे ॥ अने भगवान ने संतना आश्रय विना तेनीआज्ञा विना तो जीवने जेवां जेवां कर्म करेछे तेने तेवां तेवां फल भोगववां पडे छे एसिद्धांत वारता छे ॥

॥ इतिश्री मुखवारता समाप्तः॥

॥ श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥

॥संवत॥१९॥ओगणिसे॥२४॥ चोविसना फागणवदि॥९॥ नवमिने दिवस॥ महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री भादरण मध्ये पटेल हाथी भाई तलसि भाईने घेर उगमणे बार ओरडानी आगल संध्याआरति समे पाट उपर गादितकिये जुक्तपलंग बिछाव्यो हतो तेउपर विराजमान थया हता॥ ने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगने विषे पुष्पनां आभूषण सोभि रह्यां हतां ॥ने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो नैपोतानामुखारविंदनि आगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति पछे महाराज बोल्या जे जीवने पोताना आत्माना स्वरूपनुं तथा परमात्माना स्वरूपनुं अज्ञान छे तेणे करिने जन्ममरणादिक संसारमां दुःखने पामे छे॥ तेवेदमां पण कह्युंछेजे॥ ॥आत्माज्ञानतः जगत भातिइतिश्रुति॥

॥ ॥अर्थ॥ ॥जेआत्माब्रह्मेकरिने आत्मापरमात्मा बेयना स्वरूपना अज्ञाने करिने जीवनेजगतनो भास
थयोछे॥ नेजन्ममरणनेपामेछे॥ हवेज्ञानथायत्यारे जीवनीमुक्तिथाय॥ तेपणवेदमांकह्युंछेजे॥ ॥ऋतेज्ञानान्न
मुक्ति॥ ॥अर्थ॥ ॥ज्ञानविनामुक्तिथायनहिं॥ माटेज्ञानेकरिनेजमुक्तिथायछे॥ अनेतेज्ञानपोतानी
मेले थतुंनथी॥ केमकेपोतानीमेलेज्ञान थतुं होय तोजीवआजदिवसलगिशुंकरवाअज्ञानीरहे॥ माटेज्ञानआ
पनार बिजोकोईजोईये छिये॥ अने बिजोपुरुषजोईये तेपणमायापरहोयते ज्ञान आपनार हशे त्यारे ज्ञान थशे॥
पणजेमायामांहोयते थकि मायापरनुंज्ञान थायनहिं॥ तेसारुं मायापरतोएक परमात्माछे॥ तेपरमात्माजीवोनेज्ञानआ
पवासारुं मायापर रह्याथका पोताना सत्यसंकल्पे करिने मनुष्यने जोया मांआवेएवा रामकृष्णादिक अवतारनुंधारण
करेछे॥ नेजीवोनेज्ञान आपिने ब्रह्मरूपकरिने पोतानाधाममांलेईजायछे॥ माटेकल्याणनारथपवाजानेमहात्मापुरु
षपासेथी ज्ञानजरुर सांभलवुं॥ नेतेनी सेवाकरविताेतेनेज्ञानथाय नेकल्याणथायछे॥ पछेलभीरवाभाई रणछोडभाईये महा
राजने प्रश्नपुछ्युंजे परमात्माप्रत्यक्षहोय तेने शो लक्षणे करिने ओलखायजे आपरमात्माहशे॥ तेकहो॥ पछे म-
हाराज बोल्याजे जेमजे वृक्षने विषे जेवो गुणहोयछे॥ तेवो गुणतेनाफलमांआवेछे॥ ते फले करिनेजेम वृक्ष ओल-
खायछे॥ तेम परमात्मानागुण परमात्मानाज्ञाने करि सिद्धथायछे एवाजेतेमनाभक्तजनसंत तेनेजोई परमात्मा
ओलखायछे॥ जेमआंबानीकेरिजभियेनेतेकेरिनीमधूरता सरसहोयत्यारे एमजाणियेजे आ आंबो सरसछे॥
तेमजेनाज्ञानेकरिनेतेना आश्रित निरवासनिकथइनेपंचविषयथकीवेरागनेपामीने विषयनोत्यागकरिने
ब्रह्मस्थितिमांवर्तताहोयत्यारे एमजाणवुंजेपरमात्मा विनाबिजाकोयथकि निरवासनिकथायनहिं॥ माटेनि
रवासनीकनेपंचविषयनात्यागिसंतज्यांहोय त्यां परमात्माहोयछे एमजाणवुं॥ अनेज्यांप्रत्यक्षपरमात्माहोय
त्यांएवासंतजरुरहोय॥ पणते विनापंचविषयनात्यागि संतहोयनहि॥ अनेएवासंतहोय तेपंचविषयनोत्याग

करिनेब्रह्मरूपथईनेपरमात्मानीनवधा भक्तिकरताहोय ।।माटेएवा ब्रह्मरूपमुक्तजेनीसेवाकरेछे ।। तेपरमात्माछेएमजाणवुं।।
हवेहेनेतमेतेप्रमाणे नजरे जोईने परमात्मा ने ओलख्यो ।।एतमाराप्रश्ननोउत्तरछे।।पछेगाम सीसवानाथाणदार मांमा -
साहेबे श्रीमहाराजने प्रश्न पुछ्युंजेहेमहाराजजे काने सांभले तो नहिंहोयने मुंगोहोयतेनेपरमात्मानुं ज्ञानशिरीतेथाय
।।अनेज्ञानथयाविनातोजीवनीमुक्तिथायनहि।। माटेतेनेज्ञानथवाने कांईहरो केनहिंहोय ।।पछेमहाराजबोल्याजेजेबे
हेरोनेमुंगोहोय तेनांजेसगां भाईबाप केदिकरो होय तेतेने कोईठाकोरजीनुं मंदिर होय तथाप्रगट भगवानने तेनासंत पृ
थ्वीउपरहोय त्यांतेडिजायनेतेनेआंख्योहोय तेभगवानने भगवाननीमूर्त्तियोने संत तेनांदरशनकरावे ।।पछेतेभग
वानने भगवाननीमूर्त्तिने संतनेपगेलागतांने डंडवत करतां घणामनुष्यनेदेखे माटेतेबेहेरानामनमांएमज्ञानथाय
जेआकोईमोटादेवछे ।।एमजाणिनेपोतेपगेलागे डंडवतकरेनेमनमां स्तुतिकरे ।।नेएम चिंतवनकरेजे हेदेवमारुं
सारुंकरजे ।।एमतेनेज्ञानआंखेकरिनेथायछेनेतेजीवनुंकल्याणथायछे ।।पछेवलितेथाणदारेपुछ्युंजे कोईक -
आंधलाजीवने तो आंखकानजीभहाथपगादिकएकेइंद्रियोहोयनहिं ।। तेनेशीरीतेज्ञानथाय ।।केतेनुं कल्याण
शीरीतेथाय केतेनुंतोकल्याणजथायजनहिंतेकहो ।।पछेमहाराजबोल्याजेजेने एकेइंद्रियोहोमनहिंतेनुंतोएम
कल्याणथायजेतेनांसगांहोय ।।तेप्रगट भगवानने भगवानना संतनाचरणारविंदनेधोईने तेनुंचरणामृत तेनेपिवरा
वेनेतेनेशरिरेचोपडे ।।तथागंगामांनवरावे तोतेणेकरिनेतेनुंकल्याणथायछे ।।तेपण भागवतमां कह्युं छेजे जेवृ
क्षतले प्रगट भगवानने भगवाननाएकांतिकसंत उभाहोय तेवृक्षनेपण परमपदनुंअधीकारिकह्युंछे।।माटेप्रगट
भगवाननेसंतना संबंधमांजेजेजीवआविजाय ।।तेसर्वेनुंकल्याणथायछे एवोप्रत्यक्ष भगवानने भगवाननासं
तनासंबंधनोप्रतापछे ।। माटेजेनेकल्याणनेईछवुंहोय तेने पोताने प्रत्यक्ष भगवानने भगवाननासंतनोसंबं
धराखवो।।नेबिजांपोतानांसगांहोय तेनेभगवानने भगवाननासंतनोसमागमकरावचो ।।एजजीवनेकल्याण

धयानोउपायछे॥ केमके एक भगवानने देखवा ने देखीने जाणवात्यारेजीवनुं आत्यंतिक कल्याणथायछे तेमांदेख
वाणतो भगवाननी कृपाछे॥अने तेने जाणवा तेतोपुरुष प्रयत्नछे तेदरशनतो भगवान कृपाकरिने प्रगट थायछे त्यारे
ज्ञानि अज्ञानी सर्वेने दरशन थायछे॥पण तेने जाणवा कठणछे ॥माटे प्रगट भगवान नां दरशन करिने तेनेजाणवा
सारु नित्यसंतनोसमागमकरवोने सेवाकरवि॥ तोतेथकि प्रगट भगवानजणायछे नेओलखायछे॥नेतेजिवनुं
कल्याणथायछे॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायन-
मोनमः॥ ॥संवत॥१९॥ओगणिसें॥२४॥चोविसना फागणवदि॥१०॥दसमिने दिव
स महाराजश्रीहरिकृष्णभगवान गामश्री भादरण मध्ये सोनी गला भगवानने घेरउगमणे बार ओरडानी आगल
पाटउपर गादित कीयेयुक्त पलंग बिछाव्यो हतो॥ तेउपर विराजमानथया हता॥नेसर्वे जरियानीवस्त्र धारणकर्यां
हता॥ नेपुष्पनां आभूषण सर्वेअंगमां शोभिरह्यां हतां॥नेपोताना मुख्यार्थिदनी आगल साधु तथा घणा कहरिभक्त
नी सभा भराईने बेठिहती॥पछे महाराज बोल्याजे बे साधन सिद्धथायछे॥त्यारे जीवनेजन्म मरण टलेछे॥ ते बे सा
धनकियांतो एक प्रत्यक्ष भगवानना स्वरुपमां प्रीतिकरवि ने बिजुं वासनानो त्यागकरवो॥एबे साधन पुरां थाय त्यारे
जीवने जन्म मरणटले अने एबेमांथी एक वासनानो त्याग कर्यो होयपण तेने अक्षरातित परमात्मा प्रगट थईने मल्या
नहोय। अने तेने विषे प्रितिथई नहोय त्यां सुधि तेने जन्मधरवो पडेछे ॥अने कदापि प्रगट भगवान मल्या होय पण
तेने पंचविषयमां वासनारहिहोय॥ तो तेने पण जन्म धरवोपडेछे।माटे जेनेजन्म मरणटालिने आत्यंतिक मोक्षनेपा
मवुं होय॥ तेने बे य साधन सिद्ध करवां॥ तेमां वासनाटालवाने अर्थे त्रणसाधन सिद्ध करवां॥ एकतो धर्म दृढ करि
ने राखवो॥ के हे सांदृ द्रिष्टोने नियमे करिने विषयथकि पाछां वालवां ने वर्णाश्रमनो धर्म जेनेजेम वेदमां कह्यो होय
ते प्रमाणे वरतवुं॥ पणतेमां कोई दहाडे फेर पाडवो नहिं ।।नेआत्यंतिक ज्ञानने पामिने वासनाटली गई होय नेप्रत्य

क्ष भगवानने विषे प्रितिथई गईहोय ॥ तो पण वरणाश्रमनो धर्मने इंद्रियोनो नियम ते तो देह पर्यंत राखवां पण तेनो क्यारे त्या
ग करवो नहिं ॥ अने वरणाश्रमनो धर्म ने इंद्रियोनो नियम तेनो त्याग करिने अनियम पणे वर्तेशे तो ते स्हुजे एवो मोटो कहेवातो
हशे ॥ ने ब्रह्म स्थिति ने पाम्यो हशे ॥ तो पण ते भ्रष्ट थई जशे ॥ ने ते जन्म मरण ने पामशे ॥ ते पूर्वे नारदजी महा मोटा हता ॥ ने ब्र
ह्म स्थितिने पाम्या हता पण जो वर्णाश्रम धर्मने इंद्रियोना नियमनो त्याग करिने राजानी कंन्यानुं भविष्य जोवा सारुं तेना
हाथनो स्पर्ष कर्यो तो ते ब्रह्म स्थितिमांथी तत्काल पडि गया ॥ ए आदिक घणाकने नियम चुकया थी कलंक लाग्यां छे ॥
माटे नियमने वरणाश्रमनो धर्म तेने दृढ करिने राखवां ॥ अने बिजुं देह ने आत्मा ए बेने जुदा जाणवा ॥ अने आत्माने पो
तानुं स्वरूप मानवुं ॥ अने पंचविषयना भोग ते देहना छे ॥ पण आत्माना नथी ॥ एम जाणिने विषयनो त्याग करवो ॥ अने आ
त्मा अखंड अविनाशि छे ॥ तेने विषे स्थिति पामवि तेनुं नाम ज्ञान कहेवाय छे ॥ अने त्रिजुं चार प्रकारना प्रलयनो विचा
र करिने पिंड ब्रह्मांड थकि वैराग ने पामवुं ए त्रण साधने करिने वासना टळे छे ॥ पछे एवा ज्ञानना आपनारा ने निर्वा
सनिक करिने ब्रह्म स्थितिने पमाडनारा एवा जे प्रत्यक्ष सद्गुरु तेने विषे प्रिति करवि ॥ अने जे निरवासनिक थईने प्र
त्यक्ष भगवानने विषे प्रितिये करिने जोडाई गयो तेनी आत्यंतिक मूक्ति थाय छे अने ते मांजेटलुं अधूरुं होय छे तेट
लुं तेने जन्म मरण रहे छे ॥ ने पूर्वे भरत राजाने प्रगट भगवान रुषभदेवने विषे प्रिती तो थई हति ॥ पण तेने स्नेह
रुपी वासना टळिन होती ॥ तेने मृगलाना बच्चामां स्नेह थयो ने तेणे करिने जन्म धरवो पड्यो पछे त्रिजे जन्मे जड भर
त थया ॥ ने स्नेह रुपि वासनाने टाळवाने अर्थे जाणिने गांडा थया ॥ ने पंचविषयनो अतिशे त्याग कर्यो ने अतिशे वै-
रागने पामिने असंगपणे वरत्या ने अतिशे निरवासनिक थईने भगवानना अक्षर धामने पाम्या ॥ ते सर्वे शास्त्रने विषे
ने सर्वे पूराणने विषे लख्युं छे जे जड भरतना जेवो कोईनो त्याग वैराग नहिं ॥ केमके तेने एकवार वासनाये धको ल
गाड्यो ते सारुं वासनाने टाळवा सारु अतिशे सावधान थया ने वासना टळिने भगवानमां प्रिति तो पूरवनी हवि ॥

माटे ए साधन भेगां थयां ॥ त्यारे तेनो मोक्ष थयो ॥ अने गोपियोने वासना टलि गये ली हती ॥ पण तेने प्रत्यक्ष भगवान
ने विषे प्रिति न होती ते सारु श्रीकृष्ण भगवानने विषे प्रिति करवाने अर्थे भगवान साथे गोपियो रास रमियो ने प्रिति
भगवानमां थाय ते रीतनां अनंत साधन कर्यां॥ ने भगवानने पण पोताने विषे प्रिति कराबा सारुं गोपियो साथे ते
वी लीला करिने पोताने विषे प्रिति करावीने तेनो मोक्ष थयो ॥ केमके ते पूर्वे ऋषि हता ते जप तप घणा करिने वासना
टालि नाखि हती॥ पण तेने भगवान प्रगटमां प्रिति थई न होति॥ ने परोक्षपणे भगवाननुं ध्यान करता हता पछे तेने रामे
प्रगट थईने दरशन वनने विषे आप्यां ॥ पछे ते ऋषिये स्तुति करिने भगवानने कह्युं जे हे महाराज अमे चौद लोकना सुख-
नी वासनानो त्याग करिने तमने पामवा सारुं ध्यान करता हता॥ ते तमे कृपा करिने अमने दरशन आप्यां ॥ पण हवे त
मारे विषे प्रिति थाय एवि अमारा उपर कृपा करो ॥ पछे भगवाने तेने कह्युं के आज तमारे मारे विषे प्रिति नहिं थाय॥
माटे आगळ हुं कृष्णावतार धारण करिश॥ अने तमे वृंदावनने विषे स्त्रियोना देह धरजो एटले तमारा मनना मनो-
रथ सर्व सिद्ध थशे ने मारे विषे तमारे अतिशे प्रेम थशे ॥एम वरदान भगवाने आप्युं हतुं॥ पछे ऋषि व्रजमां गोपियो थय
ने भगवान कृष्णरूपे थया ॥ने तेने पोताने विषे प्रिति कराबा सारुं गोपियो साथे रसिकपणे वरत्या ने रास रम्या ॥ ने दुध
दहिंनी चोरियो करी ॥ ने दाण लीधां ने वस्त्र हर्यां एवा भाव देखाडीने गोपियोनां चित पोताने विषे जोडाव्यां ने अति
शे प्रेम उपजाव्यो॥ ते कृष्ण विना गोपियोने बिजुं कांई ज सांभरे नहिं ॥ ने घेलियो थईने कृष्ण कृष्ण करतियो फरे॥
एवो कृष्णने विषे गोपियोने अतिशे प्रेम थयो ॥ माटे पूर्वे वासना टालि हति ने प्रगट कृष्णने विषे निश्चये सहित प्रेम
थयो तो तेनुं कल्याण थयुं॥ माटे वासना टाळवाने अर्थे धर्म ज्ञानने वैराग्य दृढ करिने राखवां ने भगवानमां प्रीति
करवाने अर्थे ॥भगवाननी श्रवण किर्तनादिक नवधा भक्ति करवी ॥पछे भक्ति करतां करतां तेने प्रगट भग
वान मळे छे ॥ ने तेने विषे ते भक्तने निश्चय ने प्रेम थाय छे॥ ने ते भक्त अक्षर धामने पामे छे॥ माटे धर्मे सहित भ-

गवाननी भक्ति करे छे॥ तेनुं कल्याणथाय छे ॥पण भक्ति करे ने धर्म पाने नहिं ॥ तो तेनु कल्याण थतुं नथी ॥ ने धर्म पाळतो हो
य पण ते ओ भगवाननी भक्ति न करे तो पण कल्याण थाय नहिं ॥ ते पण कृष्णजन्मखंडने विषे भगवाने कह्युं छे ॥ जे मारि भ-
क्ति करतो होय पण जो ते धर्म पाळतो न होय तो ते मारो द्रोहि छे ॥ अने ते धर्मे रहित हेत्रु एम हे रुष्ण करतो होय॥ तो पण
ते नर्कमां जाय छे॥ माटे धर्मे सहित परमात्मा राम कृष्णादिक भगवान तेनी भक्ति करवि॥ ॥
इति श्री मुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥ श्री हरि कृष्णाय नमो नमः॥ ॥
संवत॥१९॥ ओगणिसें॥२४॥ चोविसना॥ फागण वदि॥१३॥ तेरसने दिवस महाराज श्री हरि कृष्ण भगवान गाम श्री भा
दरणमध्ये नवाडि सेवकरामनी स्त्रि बाई हरकुवरने घेर गादि तकिये युक्त पलंग बिछाव्यो हतो ते उपर विराजमान थया
हता॥ ने जरियानी कस्कंबल वस्त्र धारण कर्यां हता ॥ ने सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषणशो भिरह्यां हतां ॥ ने कंकुनो चां
द्लो कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हती॥ पछे महा
राज बोल्या जे जीवने दुःखना देनारा माईक पांच विषय छे॥ ते पांच विषय किया तो॥१॥ एक शब्द॥२॥ बिजो स्पर्श
॥३॥ त्रिजो रुप॥४॥ चोथो रस॥५॥ पांचमो गंध॥ ए पांच विषयनी वासनाये करिने जीव जे ते जन्ममरणने पामे छे॥
माटे पांच विषय जीवना शत्रु छे॥ अने ते शत्रुने जीवे हेतु मान्या छे ॥ एज जीवनुं महा अज्ञान छे ॥ केमके एक फेरो कोणे-
कमार्यो होय तो तेना उपर केवुं वेर थाय छे॥ तो पंच विषये तो जीवने अनंत फेरा मार्यो छे ने गर्भवासने चोरासिमां अपार
दुःख दिधां छे तो पण तेनी ते जीवने भान नथी॥ ने विषयमां प्रीति राखिने विषयने भोगवे छे ॥ एज जीवनुं महा अज्ञान छे
केमके अखंड ने अविनाशि ने अजर ने अमर एवुं जे पोताना आत्मानुं स्वरूप तेने भूलिने नाशवंत ने दुःखरूप एवो जे
देह तेने पोतापणुं मानिने ते देहने सुखे सुखवने देहने दुःखे दुःख माने छे ने ते देहने संगे करिने अपरमित क्लेशा
ने पामे छे॥ ने ते क्लेश थकि पोतानी मेले छुटवाने समरथ नथी माटे ते दुःख थकि जीव क्यारे छुटे तो माया पर

एवाजे भगवानने भगवानना एकांतिक पंच विषयनात्यागी संत तेजीवने मले नेतेने विषे प्रितिकरे त्यारे तेजीवने भगवानने भगवानना संत ज्ञान आपिने विषयनो त्याग करावे छे त्यारे तेजीव महासुखने पामे छे नेतेनुं कल्याण थाय छे ।।नेजन्म मरणगर्भवासने चोरासिनां महादुःखते मटिजाय छे ।।नेअद्भूतनेअलोकिकने पूरण एवुंजे भगवाननुं अक्षर धामतेने पामे छे ।।माटेते समो आजतमारे सर्वेने आव्यो छे ।।ते तमारा भाग्यनोपार नथी केमकेजेनेअनेक जन्मनां महापुन्यहोय तेने भगवानने भगवानना निरवासनिक संत मले छे ।।तेतमने आज भगवानने भगवानना संत मल्या छे ।।माटे पोतानुं मोटुं भाग्य मानीने अमारो ने अमारा निर्वासनिक संतना समागम करिने पंचविषयनो त्याग करवो ।।नेज्ञान पामिने अविनासि सुखने पामवु ॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः॥ ॥संवत॥१॥ओगणिसें॥२४॥चोविसना॥चैत्र शुदि॥३॥त्रिजने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री भादरण मध्ये पटेल हाथी भाई तलसिभाईने घेर गादितकिये जुक्त पलंग उपर विराजमान थया हता ।।नेसर्वे जरियानीवस्त्र धारण कर्यां हतां ।।नेपुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां न्योभिर्या हतां।।नेकंकुनोचांदलो कर्यो हतो ।। नेपोताना मुखारविंदनी आगल साधू तथा घणा कहरिभक्तनी सभा भराईनेबेठिहती ॥ पछे महाराज बोल्याजे परमात्माने साक्षातकार पामवानो एक एवो कियो रस्तो छे ।। जेणकरस्तेकरिने परमात्माने जीव पामिजाय॥ एप्रश्न सर्वेनेपुछिये छैयेतेकहो॥ पछे अक्षर मुक्तानंद स्वामिये कह्युं के आत्मारूप थईने परमात्मानी भक्ति करे॥ तो तेजीव परमात्माने पामे छे॥ पछे महाराज बोल्याजे अमे पुछ्युं तेनो उत्तर तो एम छेजे परमात्मानुंनाम ब्रह्म छे ते ब्रह्म जे परमात्मा तेने साक्षात्कार पामवानो एक रस्तो ब्रह्मचर्य व्रतसिद्ध करवुं ते ब्रह्मचर्यनो आ अर्थ छे।। तो ब्रह्मजे परमात्मा तेना स्वरूपने विषे गति करवि।। कहेतां परमात्माने पामवानो मार्ग तेनुंनाम ब्रह्मचर्य छे।।पण ब्रह्मचर्य विना बिजो परमात्मा ने पामवानो मार्ग नथी ॥ हवे ब्रह्मचर्य भुंतो कामनो त्याग करवो ।। तेनुंनाम

ब्रह्मचर्य छे॥ हवे कामथुं तोपुरुषने स्त्रिनाभोगनीइछा॥ अने स्त्रिनेपुरुषना भोगनीइछाएज कामछे॥ अथवाशब्दस्पर्शरुपरसनेगंध॥एपाजेमाईक पंचविषयतेने भोगववानीअभिलाषा तेनुंनाम पण कामछे॥ माटे एकामनोत्यागकरवो तेनुंनामब्रह्मचर्यछे॥ तेमां मुख्यपणे पुरुषने स्त्रिना संगनोत्यागकरवो॥ अने स्त्रिने पुरुषना संगनोत्यागकरवो॥ एजब्रह्मचर्य कहेवाय छे॥ अने जे स्त्रि पुरुषना संगनी ईछानो त्यागकरवो तेने पांचे विषयनी कामना टलिजशे॥ अने तेमजजे पुरुष स्त्रिना संगनीइछानो त्यागकरशे तेनेपण बिजा पांचे विषयनी कामना टलिजशे॥ केमके कामथकि जगतनीउत्पत्तिछे॥ अने अज्ञानथकि कामछे॥ माटे एमजेनेज्ञानथयुं जे काम एजजन्ममरणादिकदुःखनो देनारोछे एमसमजीने कामनोत्याग करेछे तेपरमात्माने पामेछे माटे ब्रह्मचर्य व्रतपालवुं॥ एजएकपरमात्माने पामवानो धकधोरी धर मारगछे पण ब्रह्मचर्य पाल्याविना परमात्माने पमायजनहिं॥ अने ब्रह्मचर्य व्रत पालतो नहिं होय॥ नेते बिजां जपतप दान्यपुन्य यज्ञादिक अनंतसाधन करतोहोय तेसर्वे तेनां साधन व्रथा थईजायछे॥ अनेजे ब्रह्मचर्यव्रत राखिनेजेजे दानपुन्यतिर्थादिक करशे तेनां साधन सफल थाशे॥ माटे ब्रह्मचर्य पाल्याविना कोईवातनी सिद्धि थति नथी तेसारुं जेने परमात्माने पामवुं होय तेने ब्रह्मचर्यव्रतना पालनाराएवाजे भगवानना एकांतिक पंचविषयनात्यागि निरवासनिक संततेनोसमागमकरिने ब्रह्मचर्यव्रतपालवुं॥ पण अमारो रंचमात्र अवगुण लियेनहिं॥ पछेवलि श्रीहरिकृष्णमहाराजे एकवारताकरिजे बाईअथवाभाई तेअमारा खराभक्त कियातो अमे तेने वांकेअथवावगरवांके सजे तेवावढिये मारिये तिरस्कार करिये काढि मुकिये॥ तोपण ते मुझायनहि॥ ने ते मां सामो राजी थाय॥ पण अमारो रंचमात्र अवगुण लीयेनहिं तेअमारो खरो भक्त छे॥ ने तेना उपर अमे घणा प्रसन्न थईये छिये॥ केमके पूर्वेपण जेजे भक्ते भगवाननी कसणिखमि छे॥ तेनाउपरज भगवान प्रसन्न थयाछे॥ तेजेम बलिराजाने वामनजि भगवाने घणी कसणी आपी॥ तोपण बलिराजा मुझाणोनहिं॥ ने सामो राजीथयो तो तेउपर वामनजि भगवान घणाप्रसन्न थया नेतेनेवसथईने तेने घेर भगवान अखंडरह्या

॥नेतेने भगवानेपोतानोएकांतिक भक्तकरिने अखंड सुखनेपमाड्यो॥ अने वलि मोरध्वजराजाने भगवाने माथे
करयलमुक्युं॥तोपणते मुझाणोनहिं नेरंच मात्र अवगुणपण लिधोनहिं॥नेसामु राजीथयो॥ अनेशरिरने वसमुंवागुं
त्यारेडाबिआं खमांथी आंसुपड्युं त्यारे भगवाने कह्युंके तारुं अंग आपता तुं कुराजीथयो त्यारे मारे तारुंअंग खपे नहिं॥एम
कहिने भगवानचालि निसर्या॥ पछे मोरध्वजराजायेभगवाननेकह्युंके हे प्रभु डाबि आंखमांतोएम आंसुआव्युंजे अ
मणाअंगने भगवानग्रहण करशे नेडाबाअंगनीतोनिभागजे भगवानना काममां नआव्युं॥ एमजाणिनेडाबि आं
खमां आंसु आव्युं छे॥ एम मोरध्वजराजाये कह्युंत्यारे तेनाउपर भगवानघणाप्रसन्न थया॥नेतेने पोतानो एकांतिकभ
क्त करिनेपोताना अक्षरधाम नेपमाड्यो॥एविरीतेकसणिं आपीने पोताना खरा भक्त करे छे तेकसणिनेजे खमे
छे॥ नेतेमां मुझातोनथी नेतेमां सामु जेरा जिथाय छे नेएमसमजे छेजे जेमजेम भगवानमुनेकसणिआपशेतेम
तेम मारा उपर भगवान घणा घणाप्रसन्न थशे॥ नेमारे घसथईने मने घणुं सुखआपशे एमसमजीनेजे अमारि भक्तिकर
शे तेनाउपर अमे घणा प्रसन्नथईशुं॥ अनेएविसमजणवाला तेज अमारा खरा भक्त छे नेतेनेकल्याणना मारगमां
कोईविघन आवशेनहिं॥अनेएविसमजणवालाहशे तेज अक्षरधामने पामशे॥ माटेएवा खरा भक्तथवुं॥पणलो
चापोचा रहेवुंनहिं॥ ॥इतिश्रीसुख सिद्धांत समाप्तः॥ ॥
श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत॥१९॥ओगणीसें॥२१॥चोविसना चैत्रसुदि॥५॥पं
चमिने दिवसमहाराज श्रीहरिकृष्णभगवान गामश्रीसोजित्रामध्ये व्यास कुबेरजीदुभरने घेर दक्षणादेवार ओरडानीआ
गल गादितकियेयुक्त पलंगबिछाव्यो हतो ते उपर विराजमानथयाहता नेसर्वेजरियानीवस्त्रधारण कर्यांहतां नेपुष्प
नांआभूषण सर्वेअंगने विषेधरि रह्यांहताने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो॥नेपोताना मुखारविंदनीआगल साधु तथा
घणाकहारी भक्तनी सभा भराईनेबेठिहति॥ पछेमहाराज बोल्याजे जिवजे तेत्रणगुणे करिने स्वर्गमृत्युनेपाताल

एत्रण लोकने विषे जन्म मरणने पामेछे ।।तेमां सत्वगुणिकर्मेकरिने जाग्रतअवस्थारूपमनुष्यनाजन्मनेपामेछे।।अने रजोगुणिक
र्मेकरिने स्वप्नअवस्था रूप पशुजातिमां जन्मपामे छे।।अने तमोगुणि कर्मेकरिने सुषुप्तिरूप वृक्षादिकमांजन्म पामेछे।।
मारे सत्वगुणनी वृद्धि थायछे त्यारे तेने मनुष्यना जेवोजन्म आवे छे ।।अने मनुष्यदेहे करिने जीवनुंकल्याणथायछे।।केमके
मनुष्यदेहे करिने प्रगट महात्मा पुरुषनो मेलापथायछे ।।पछे महात्मापुरुष मनुष्य देह धारीने आत्माने ज्ञानआपेछे ।।
ते ज्ञाने करिने कल्याणथायछे ।।ने मनुष्यदेहे महात्मा नमळेनेरजोगुणिकेतमोगुणि कर्मकरे तो तेने पाछो मनुष्यदेह
फरिने आववो घणोदुर्लभछे।।अनेसतपुरुषना आश्राविना नेसत्संग कर्‍याविना मनुष्यदेह सत्वगुणि कर्म थकि
थतुंजनथी।।अने सत्वगुणि विना मनुष्यदेहजीवने आवतोजनथी ।।अने जे जीव सत्पुरुषनो आश्रयनेसमागमकरीने
धर्म ज्ञानवैराग भक्ति सिलसंतोष दया क्षमादिक रूडागुणग्रहिसे तो तेने एने ए देहे करिने आत्मापरमात्मानुंज्ञान
पामतो तेज्जीवब्रह्मरुपथईने भगवानना धामेनेपामेछे ।। तेनेतो फरिनेजन्मधरवो पडतो नथी ।।अनेजे ने ज्ञानमां कांईक कस
र रहे छे।।तेने पाछो मनुष्यनोने मनुष्यनोजन्मआवेछे।।नेते धर्मज्ञानादिकसत्वगुणि कर्मकरे छे।।नेप्रत्यक्षराम-
कृष्णादिक भगवाननी भक्तिकरेछे ।। नेपछे तेने ज्यारेज्ञान थायछे त्यारे ते मोक्षनेपामेछे।। अने सतपुरुषना सत्संग वि
नाने प्रत्यक्षराम कृष्णादिकपरमात्माना आश्रयविना कोईएके मनुष्यने सत्वगुणी कर्म थतुंजनथी।।नेकोईने पाछो
फरिने मनुष्यदेह आवतोनथी।।त्यारे कोईने एमशंका थायजे सतपुरुषना आश्रयविना मनुष्यदेहे करिने सत्वगुणिक
र्म थतां नथी।।नेते फरिने मनुष्यदेह आवतोनथी।।त्यारे मनुष्यविना बिजा अवतारमां तोकेमसत्वगुणिकर्मजीव
करिशाकनो नेसत्वगुण वृध्धिपाम्या विना मनुष्यदेहतो आवतोनथी।। त्यारेते जीवने फेर मनुष्यदेह आवे छे केन-
थि आवतो ।।वलिएमकहेवाय छेजे चोराशिफरिरहे छे त्यारेतेने मनुष्यदेह आवेछे तेनुं केमहशे ए मशंकाथाय।।तो
त्यां कहियेछियेजे सतपुरुषना आश्रय विनानां जे बिजां मनुष्य तेनाकरतां तो पशुजातिमां तथावृक्षादिकने विषे

संहे जेसत्व गुणिकर्मथायछे ॥ केमके सत्वगुणिकर्मशुंछे ॥ तो हिंसायेरहितपरमार्थ करवो ॥ तेनुंनामसत्वगुणिकर्म छे तेगाय भेंस बलदआदिक पशुछे ते हिंसायेरहित परउपकार करेछे ॥ तथा आंबा राएयो रोरडी आदिक वृक्ष छे ते पण हिंसाये रहितपर उपकार करेछे ॥ मारे पशु वृक्षादिकने विषे सेहेजे सत्य गुणजीवने वृद्धि पामे छे नेतनेफरिने पाछो मनुष्यदेह आवेछे अने भगवानना आश्रयविनानो जे मनुष्य ते तो केवल हिंसाये सहित रजोगुणिनेतमोगुणि जकर्म करेछे ॥ पण सत्वगुणिकर्म करताजनथी ॥ मारे प्रत्यक्ष सतपुरुषना आश्रय विना नो मनुष्यजेटलो छे तेसर्वेने देह मुकिने लखचोरासिमां जवुं पडेछे ॥ अनेचोरासिमां पशुवृक्षादिकना जन्मने विषे सत्व गुणवृद्धि पामिने तेने पाछो मनुष्यदेह आवेछे ॥ माटे रामकृष्णादिक भगवानना आश्रितने तेनी आज्ञारुपि धर्म पालनारा भगवानना भक्त तेविनाना मनुष्यछे ॥ तेकरतां तो पशु तथा वृक्ष तेसारांने सुकृतिछे ने भगवानना भक्तविनाना मनुष्य ते तो पशुवृक्ष करतां महादुकृतिछे ॥ ने महापापियांछे ॥ ने आत्मघातिछे ॥ केमके भवसागर तरवाने अर्थे मनुष्यदेह रुपि परमेश्वरे नाव आपुं ते मनुष्यदेह करिने परमेश्वरना पद ने पामवाने अर्थे धर्मेसहित परमात्मा प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक नी उपासनाने भक्ति नकरि ॥ माटे ते तो मनुष्यरुपि गधाडो छे ॥ ने तेने धिकार छे ॥ ने जे प्रत्यक्ष अमारो आश्रय करिने अमारी आज्ञा जे वेद तेमां कह्याजे चार वरण ने चार आश्रमना धर्म तेने पालशे तेने धन्य छे ॥ ने तेवुं साक्षात्कार कल्याण थशे ॥

॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥

॥ ॥संवत॥१९॥ ओगणिसें॥२४॥ चोविसना चैतरवदि ॥१२॥ द्वादशिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री पलोल मध्ये पटेल कालुभाई बेचरभाईने घेर आथमणो बार ओरडानी आगल गादितकिये युक्त पलंग बिछाव्यो हतो ॥ ते उपर विराजमान थया हता ॥ ने सर्वे कसुंबल जरियानी वस्त्र धारणकर्यां हतां ॥ ने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगनेविषे सोभिरह्यां हतां ॥ ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो ॥ ने पोताना

मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति ॥ पछे महाराज कृपा करिने बोल्या जे आए
क अमे वात करयुं ते प्रमाणे जे समजशे ने वरतशे तेनुं साक्षात् कल्याण थशे ॥ अने ते वातने भूलिने बिजा अनंत उपा
य करशे तो पण तेनुं कल्याण थाय नहि ॥ हवे ते वात कहुं छुं ॥ तेमां प्रथम दृष्टांत कहे छे जे जेम आ लोकमां सुख पामवा
ने अर्थे पैसा एटले द्रव्य कमाईने भेगु करि राखे छे ॥ तेने काल पडे त्यारे काम आवे छे ने ते सुख रयने पामे छे ॥ अने जेने द्रव्य
ने धान्य न होय ते कालमां दुःखी थाय छे ॥ तेम आत्माने परलोकमां सुख पामवाने अर्थे प्रत्यक्ष भगवाननी धर्मे सहित
भक्ति करवि ॥ अने जे धर्मे सहित परमात्मा भगवाननी भक्ति करे छे ॥ ते आत्मा देह मुकिने परमात्मा भगवानना धाममां
जाय छे ॥ केम के जीव प्राणिमात्र मोहमाया रूप उंडा कुवामां पड्या छे ॥ ते मायारूपि कुवामांथी जीवोने काढवाने अर्थे
परमात्मा ये माया पर रह्या थका पोते प्रगट थईने धर्मरूपि दोरडुं मुक्युं छे ॥ ते धर्मरूपि दोरडाने जे जीव पकडशे तेने परमा
त्मा ताणिने मायारूपि कुवानी बहार काढशे ने ते आत्मा भगवानना धामने पामशे ॥ अने जे जीव प्रत्यक्षनी आज्ञारूपि
धर्मने नहि पकडे ॥ कहेतां धर्मने नहिं पाले ते जीवनुं कोई काले कल्याण थशे नहि ॥ माटे प्रत्यक्ष भगवाननी आज्ञारूपि
धर्म पालवो ॥ एज एक जीवना मोक्षने अर्थे अचल साधन छे ॥ अने जे धर्म पाले छे ॥ तेने धर्म अर्थ काम ने मोक्ष ए चारे
पुरुषार्थनि सिद्धि थाय छे ॥ हवे ते धर्म कहुं ॥ तो प्रत्यक्ष अमारी आज्ञा पालवि ए धर्म छे ॥ ते आज्ञा अमारी शी छे तो ग्रहस्थ
होय तेने एक चोरि न करवि ॥ तथा परस्त्रि तथा परपुरुषनो संग करवो नहिं ॥ तथा विश्वासघात न करवो ॥ तथा पारकी
थापण ओलववी नहिं ॥ तथा जुठि साहेदि भरवी नहिं ॥ तथा लांच लेवि नहिं ॥ तथा स्त्रि धनादिक पदार्थना स्वार्थ सा
रु जुठुं बोलवुं नहिं ॥ तथा मद्य मांस मफर माजम अफिण गांजो लिलागर आदिक केफ वस्तु तथा अभक्ष वस्तु तेने खा
विपिवी नहिं ॥ तथा ब्राह्मण साधु वेद तथा सूर्य गणपति देवि विष्णु ने शिव ए जे पंचदेव ते एक परमात्मानुं रूप छे ॥ माटे
तेनी निंदा करवि नहिं ॥ ने आ कायाथी पोताना आत्माने जुदो समजवो ॥ ते देह नाशवंत छे ने हुं आत्मा अविनाशी छुं

एमसमजवुं॥नेअमारिमूर्तिने अंतःकरणमां ध्यानकरिने अमारा नामनीपांचमालाफेरवे॥नेअमारो आश्रयदृढ राखे तोते गृहस्थाश्रमीहोय तेनाआत्मानुं साक्षात्कार कल्याणथायछे॥अनेजेत्यागिहोयतेपांचेविषयनो त्यागकरे नेअमारुंभजनकरे॥तोतेत्यागिनुं पण साक्षात् कल्याणथायछे॥अनेहुं प्रगटहुंउं नेमुने मुकिने बिजां साधनकरेछे नेबिजेतिर्थादिकमां फरेछे तेतो मूंढछे ने पापिछे॥नेतेनुं कल्याण कोई कालेनहिं थाय॥ ॥इतिश्रीसुखसिद्धांत समाप्तः॥

॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥

॥संवत्॥१९॥ओगणिसें॥२४॥चोविसना वैशाकशुदि॥१॥पडवाने दिवस॥महाराज श्रीहरिकृष्णभगवानगामश्री गाडामध्ये पटेलरामाभाईगगाभाईने घेर आथमणा बारना ओरडानीआगळ गादितकियेयुक्त पलंग बिछावीनेविराजमानथयाहता॥नेसर्वे जरियानीवस्त्रधारणकर्यां हतां॥नेपुष्पनांआभूषणसर्वेअंगमांशोभिरह्यांहतां॥नेकंकुनोचांदलो कर्यो हतो॥नेपोतानामुखारविंदनीआगळसाधुतथा घणाकहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठिहती॥पछेमहाराज कृपाकरिने बोल्याजेएकज्ञानछेनेएकअज्ञानछे॥तेअज्ञानजीवोनेअनादिनुंछे॥तेअज्ञान कारणछे॥नेअज्ञाननुं कार्य आपिंडब्रह्मांडरुप जगतछे तेकारणजेअज्ञान तेथकि जगतउपज्युंछे॥नेकार्यरुपजेजगत तेनेआधारे अज्ञानरह्युंछे॥जेमकुंभारनो चाकडोछे तेकारणछे नेनलियोतेनुंकार्यछे॥पणतेचाकडानेनलियानुं करेलुंघरतेनो आश्रयछे॥तेघरमांचाकडाने मुकेतो चोमासाना वरसादनेज लेकरिनेनासनपामे॥अनेजोघरमांनमुकेतो वर्सादनेजलेकरिने पललिनेतेनामुखाळानाडुचानिसरिजाय नेमाटीधोवाईनेचाकडोनाशपामिजाय॥तेमअज्ञानथकिउपन्युंजे जगतरुपइंद्रियोअंतःकरण तेनेआधारेअज्ञानरह्युंछे॥अनेजोइंद्रियोअंतःकरणनो नाशथायतो अज्ञान नाशपामे॥जेमबिज कारणछे॥नेतेनुंवृक्ष कार्यछे॥तेवृक्षनेफळथयामोहोरकापिनाखिये॥तोतेनाकारणरूपबिजनो नाशथईजाय अनेजोवृक्षनेनकापी नाखेतोते वृक्षमांथी बिजों घणांक थायछे॥तेमकारणजेअज्ञान तेथकि पिंड ब्रह्मांड रुपजगत उपन्युं छे ते पिंड ब्रह्मांड

रुप जगतनो निषेध करिये तो ज्ञानरुपी वरसादना जळे करिने अज्ञान रुपि चाकडो पलळिने नाश थई जाय छे ॥ ने ते जीवनो मोक्ष थाय छे ॥ माटे इंद्रियो अंतःकरण तथा इंद्रियो अंतःकरणना ग्रहण कर्यामां आवे एवा जे पांच विषय तेनो नाश करवो ॥ हवे ते इंद्रियो अंतःकरणनो के विरीते नाश करवो ॥ ने पंच विषयनो के विरीते नाश करवो ॥ तो इंद्रियो अंतःकरणनी बारजे जगतना विषय सनमुख वृत्ति छे ॥ ते अज्ञानने य धारनारि छे ॥ अने जगत संबंधी बाह्यार विषयनो त्याग करिने ते वृत्तिने पाछि वाळिने ते इंद्रियो अंतःकरण पर एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरुप जाणिने ते आत्माना प्रकाशक ने आत्माना आधार एवा जे परमात्मा रामकृष्णादिक भगवानना अवतार मायापर दिव्य मुर्त्ति प्रत्यक्ष तेने विषे इंद्रियो अंतःकरणना वृत्तियोने जोडि देवियो ॥ ते काने करिने जगतना माईक शब्दनो अभाव करिने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संत तेना शब्द प्रितिये करिने सांभळवा ॥ ने आंखे करिने जगतना माईक रुप आकारनो अभाव करीने भगवानने भगवानना संतनां दर्शन आंखे करिने प्रितियेसहित करवां ॥ एवि रीते जगत संबंधी माईक पंचविषयनो त्याग करिने भगवानने संतना दर्शन स्पर्शादिक विषयनुं ग्रहण करवुं ॥ अने एवि रीते जगत संबंधि माईक विषयनो अभाव करिने भगवानने संतना स्वरुपमां जोडाय छे ॥ ते एणे इंद्रियो अंतःकरणरुप पिंड ब्रह्मांडनो नाश कर्यो जाणवो ॥ अने इंद्रियो अंतःकरणरुपि पिंड ब्रह्मांडने नाशे करिने कारणरूप जे अनादिनुं अज्ञान तेनो नाश थई जाय छे ने ते आत्मा भगवानना धामने पामे छे ॥

॥इतिश्री मुख्य सिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः ॥

॥संवत॥१९॥ओगणिसें॥२४॥चोविसना वैशाक सुदि॥३॥ त्रिजने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री गाडा मध्ये॥ पटेल नरसिंगरवा भाईने घेर आथमणे बार ओरडानी आगळ गादि तकिये युक्त पलंग बिछाविने ते उपर विराजमान थया हता ने सर्वे कसुंबल तारा जांबरत्न धारण कर्या हतां ने पुष्पना आभुषण सर्वे अंगमां शोभि रह्यां हतां॥ ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो॥ ने पोताना मुख्यार्विंदनी आगळ साधु तथा घणा

कहरि भक्तनी सभाभराईनेबेठिहतिपछे महाराजनीसंध्याआर्तिथयाकडे महाराज बोल्याजे सर्वे शास्त्रनेविषे सत्
संगनोमहिमा बहुकह्योछे॥ अनेसत्संगे करिनेजीवनो मोक्ष थायछे॥ अनेसत्संगविना बिजांअनंत साधन करे तिर्थ
करे॥ ज्ञानकथे शास्त्रवांचेसांभले॥ तोपणजीवनोमोक्षथायनहिं॥ अनेबिजां साधन कांई कर्यां नहोय पणजोतेने
सत्संगनो योग थईजाय॥ तोतेआत्मानो ततकाल मोक्षथईजायछे॥ एवोसत्संगनोअपार महिमाछे अनेपूर्वे सत्सं
गेकरिने घणाकजीवपरमपदने पामि गयाछे॥ माटे मनुष्यमात्रने पोतानाआत्मानामोक्षनेअर्थे सत्संग जरुर करवो॥प
णतेसत्संग जीवनेमलवोतथाओलखवोघणोकठण छे॥ केमकेएकसत्संगछे॥नेएककुसंगछे॥तेउपरथीतोबेयनो
सररवोवेष जणातोहोय॥ जेमएकहंसछे॥नेएक बगलोछे॥तेउपरथीतो बेय धोलाजणाताहोय पणतेमां भेद घणो
छे॥ केमके जेहंसछे॥ तेतो मानसरोवरहोय त्यां रहे छे॥ नेमोतीनोचारोचरे पणते विना बिजुं कांई खाय नहि॥अ
नेतेहंस दूधपाणि बे भेगांहोयतेनेजुदां करिने दूधनुंग्रहणकरेछे नेपाणीनो त्यागकरेछे॥ अनेजेबगलोछे तेतोज्यां खा
डाखाबोचीयानां पाणि होय नेजेमां घणाजंतुहोय॥एवांतलावडांहोय त्यां रहेछे॥ नेमाछलादिकजीवनोआहारकरे
छे॥ नेदुधपाणीने जुराकरिशकतानथीमाटेहंसनेबगजाउपरथीसर्खाउज्वल जणाताहोय पणतेनीक्रियामां घणो भेदछे
तेमएकहंसरुप सतपुरुषछे॥ अनेएकबगलारुपअसतपुरुषछे तेउपरथीतोसाधुतथा ब्रह्मचारितथासन्यासितथा
परमहंसतथा ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य तथाछापमालातिलके युक्त भक्त ते सरवे सररवा जणाता होय पणतेनाआचरण-
मांनेतेनी समजण मांघणोभेदछे॥ तेजेहंस रुप सतपुरुषछे ते तो मानसरोवररुपजे परमात्मा प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक
भगवान तेनेआश्रयरहेताहोय पणते प्रत्यक्ष परमात्मानाआश्रयनोत्याग क्यारेय करेनहिं॥ अनेते प्रत्यक्ष परमात्माना
नाम गुण लिलाचरित्र तेरुपिमोतितेनुंश्रवणकिर्तनादिक नवधा भक्ति रुपिचारोकरताहोय॥अनेदुधपाणिनीपेठे
आत्मादूधरुपछे॥ नेदेहपाणिरुपछे॥तेबे एकथईगयांछे॥तेनेसांख्यविचारे करिने जुदाकरेछे नेपाणिरुपदेहनो

निषेधकरिनेदृधरुपआत्मानुंग्रहणकरावताहोय ॥अनेजे बगजारूपअसतपुरुषहोयतेतो खाडारवाओचियारुपजेक्षुद्रदेव
तेनाआश्रयमारहेताहोय॥ हवेक्षुद्रदेवतेशुंतोपरमात्माप्रत्यक्षना अवताररुपजे पंचदेव विष्णुशिवगणपतिसूर्यनेशक्तितेथि
नाजेने मद्यमांसतुं नैवेदयतुंहोय तेने क्षुद्रदेवजाणवा ॥माटे असतपुरुष तेनीउपासनाकरताहोय ने अनियमपणेपं-
चविषयने भोगवताहोय ॥नेदेहने पोतानुरुपमानताहोय नेतेनेजगतनांपदार्थमां प्रितिबहुहोय नेजे सत्पुरुष होयतेतो
इंद्रियोनानीयमरुपिधर्म दृढकरिने राखताहोय॥ नेपोतेआत्मारुपेवर्तताहोय नेजगतनापदार्थउपरतेनेप्रीतिनहोय
एवांलक्षणहोयतेने सत्पुरुषजाणवो॥ नेतेनो समागमकरवो तेनुंनाम सतसंगछे॥ नेतेसत्संगे करिने जीवनो मोक्षथा
यछे॥ तेसतसंगआजतमने मल्योछे ॥माटेतमारांबहुज मोटां भाग्यछे॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतस-
मासः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत् ॥१९॥ओगणिसें॥२४॥
चोविसना वैशाकशुदि ॥५॥पंचमिने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवानगामश्रीगाडामध्ये पटेललघुभाईदाजीभा
ईने घेर आथमणाबारनाओरडानीपडशालमां भोजनजमवाविराजमानथयाहता ने भोजनजमी नेते घरना उगमणा
परुभावतानेएक श्वेतधोतियुं खासकोरनुं पेहेर्युंहतुं ॥नेपोतानामुखारविंदनीआगल साधुचारउभाहता तथा हरिभक्तवि
लपचिसआशरे उभाहता ॥पछे महाराज कृपादृष्टिकरिने बोल्याजे अमनेसाक्षात्कार पामवाने अर्थे परोक्षपणेजपतपति
र्थव्रत यज्ञदान पुन्यधर्म ज्ञानवैरागादिक अनंतशुभकर्म करिने अक्षरधामविना बिजांअनंत धामछे तेनेपाम्याहता॥
तेसर्वेने अमारास्वरूपनी प्राप्तिकरावीने अक्षरधामने पमाडवानेअर्थे एसर्वे अनंत मुक्तने अमे आसमे मनुष्यनादेह
धराव्याछे॥ माटे सर्वे बाई भाई नानांमोटांने प्रितिथायछे। अने तेसर्वेने अमे जेजे नियमधरावियेछिये तेने शिरसाटे
पालेछे ॥ नेअमारुं ज्ञानसांभलिने पंचविषयनीवासनारुपि जेकाम तेनो त्यागकरे छे नेअखंडब्रह्मस्थिति मांवरतवाल
गेछे ॥नेमोटामोटायोगिने पण एविस्थिति आववी घणी कठण ॥ ते स्थितिअमारिवात सांभलीने सहेजमांआथि-

जायछे॥ ते एविस्थीति सेहेजमांपामेछे॥ तेनुं कारण शुंछे॥ तो आजअमे घणाक धामोनामुक्तनेदेह धराव्याछे माटे ब्रह्मस्थितिने सेहेजमांपामेछे ॥ ने अमारा स्वरूपमां कोईनेसंसय रहेतोनथी॥ ते अमेनानाबारवरसनीअवस्था अ मारीहती॥ तेदहाडे चुडे थी बलदाणे हुं जतो हतो॥ पछे ते बलदाणा घचेने चुडावचे अमेउभारहिने अमे एवो संकल्प कर्योके जे अमने पामवाने अर्थे साधनेकरिनेजेजे लोकमां रह्याहोय तथा जेजे धाममां गयाहोय तेसर्वे आ सोरठदेशमां सो सो गाउ फरता फरता जन्म धरजो॥ एवो संकल्प अमे कर्योहतो माटे तेबधाय मुक्त मुमुक्षुए जन्मधर्याछे॥ अनेजेटलेमुक्तमुमुक्षुए जन्मधर्याछे तेसर्वेने अमारे विषे सेहेजमां प्रितिथायछे॥ ने तेने अमारास्वरूपनो निश्चय थायछे॥ अनेजेटलानेसंस्कार ओछोछे तेने अमारा स्वरूपनो निश्चयथवामां वार लागे छे॥ माटे तमारे सर्वेने अमारे विषे तरत प्रिति थइ॥ ने अमारा स्वरूपनो निश्चय थयो ते अमे तमने जन्म धराव्याछे ने तमोने दरशनदेवासारुं ने तमो ने अमारा स्वरूपनो निश्चय कराविने अक्षरधामनेपमाडवाने अर्थे हुं पणमारि स्वईछायेकरिने प्रगट थयो छुं॥ ते हुं जे ने साक्षात्कार प्रगट मळ्युं छुं॥ ने मारा स्वरूपनो जेने निश्चय थायछे तेनुं लक्षण शुंछे॥ तो तेने संसारना सुखनी आशक्तिरूप जे काम ते नाशपामि जायछे॥ एजप्रगट भगवानने भगवानना संतमळवानो प्रतापछे॥ तेउपर तुळसीदासनी साखिछे॥ जं॥ ॥ रामत्यां काम नहिं॥ कामत्यां नहिं राम॥ तुळशीदोनुं नरहे॥ रविरजनीएके ठाम॥१॥ ॥ तेनोअर्थ॥ ॥ जे राम त्यां नहिं काम एटले राम कहेतां प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय जेनाअंतःकरणमां थायछे॥ तेनाअंतःकरणमां पंचविषयनी वासना रूपि काम नाश पामिजायछे॥ अने पंचविषयनीवासना रूपिकाम जेनाअंतःकरणमां छे तो तेनाअंतःकरणमां भगवान नथी॥ जेम दिवसनेरात्रि बे भेगां होयनहिं॥ तेम परमात्मानास्वरूपनुं ज्ञान जेनेथयुं॥ तेने विषयनीवासनारूपीअज्ञान रहेतुं नथी॥ अनेजेने पंचविषयने विषे आशक्तिरूप अज्ञान छे॥ तेने प्रत्यक्ष परमात्मानास्वरूपनुं ज्ञान थयुं नथी॥ एम जाणवुं॥ माटे आ तमने सर्वेने जन्म धराव्याछे॥ अने अनंतजन्मथयां अमनेपामवासारु जपतप साधन कर्याहतां

तिसर्वेनुंफलतमनेआजप्राप्तथयुंछे॥नेतमारांसर्वेनांसाधनपुरांथईरह्यांछे॥हवेतमारेकांई करवुंरह्युंनथी॥ माटेतमारेदेहरहे
त्यां सुधि अमेआप्यांजेवर्तमान तेनेदृढराखिनेअमारुं भजनकरयाकरजो॥एटले तमारो साक्षात्कारमोक्षथईरह्योछे॥

॥ ॥ इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥

॥ ॥ संवत॥१९॥ चोगणिसें॥२४॥ चोविसनावैशाक शुदि॥१३॥ तेरसनेदिवस महाराज-
श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्रीगढडामध्ये पटेलकाजीदास समडीतलेगादितकियेनुं कपलंगविछा
विनेतेउपर विराजमान थयाहता॥नेसर्वजरियानीवस्त्रधारणकर्यांहतां ॥ नेपुष्पनांआभूषण सर्वेअंगमांशोभिरह्यांहतां
नेकंकुनोचांदलोकर्योहतो॥ नेपोतानामुखारविंदनीआगल साधुतथा घणाक हरिभक्तनी सभाभराईनेबेठिहती॥पछे
महाराजबोल्याजे सर्वे सभानेएक प्रश्नपुछियेछैयेतेजेनेआवडेतेउत्तरकरजो॥तेप्रश्नउपरएकसाखिछे॥ ॥
दयामुक्तकोमूलहे॥नर्कमूलअभिमान॥तुलसिदयानछांडिये॥जबलगघटमे प्रान॥१॥ ॥जेदयाछे,तेमुक्तिनुं
मूलछे॥ अनेजेअभिमानछेतेनर्कनुंमूलछे॥हवेतेमापुछवानुंएछेजेजोदयाराखवाजायछेतोअहंकारविनादयारहे
तीनथी॥ अनेजोअहंकार रहेछेतो मुक्तथवातुंनथी॥ केमकेदेहनेजेदुःखने दयारहीछे॥ जेदेहनेदुःख कोईजीवने थतुंहो
य तेनेजोईनेतेनाउपरएमदयाआवेजेहुंएनुंदुःखमटाडुं॥एथीदयानेविषेअहंकाररहेछे॥अनेजोदेहनाअहंकारनोत्या
गकरिने आत्मारुप पोतानेमाने तोतेआत्मातोसदायेसुखरुपछे॥नेअखंडअविनाशिछे॥ नेदेहतोजडछेअनेतेम
ज सर्वेना आत्मातो सुखरुपने अखंडअविनाशि छे॥नेदेहतोजडछे॥ माटेकोनाउपरदयाराखवि॥एमसमजेछेतोअ-
हंकार टलिजायपण ते भेगीदयाटलिजायछे ॥अनेज्यारेदयाटलेछेत्यारे मुक्तिनुंमूलतोदयाछे तेमूलगयुंत्यारे मुक्ति
पणथायनहिं॥ माटेअहंकारटालियेछियेत्यारे दयारहेतीनथी॥अनेदयाराखियेछियेतोअहंकार टलतोनथी॥माटे
दयारहेनेअहंकारटले तेनोशोउपायछे॥तेकहो॥ पछे अक्षरमुक्तानंदस्वामियेकह्युंके देहनाअहंकारनो त्यागकरि

नेआत्मारुपथईने ब्रह्मदशानेपामिनेदेहनेदेहसंबंधिपदार्थनेनासवंतनेपापरुपनेदुःखरूपजाणिने जगतना माईकशब्दा
दिक पंचविषयनीवासनानोत्यागकरिनेपछेदयारारववि ॥ तेकेवीरीतेदयाराखवी तोएविरीते ब्रह्मरूपथयोहोय ते पण
पोतानादेहनारक्षण नेअर्थे अवस्य घटे तेटलुं देहनेरवषरावषुं पिवरावषुं ओढाडवुं पेहेरावषुंइत्यादिकपोतानादेहउपरद-
याराखेछे ॥ नेजो एटलीदया नराखेतोदेह पडिजाय ॥ अनेजो देह पडिजाय तो धर्मज्ञानवैराग्य भक्तियादिक भगवान-
नीप्रसन्नतानांसाधनतेओनेकरिनेकरे ॥ अने साधनकरे नहिं तोमुक्त थवायनहिं ॥ एम जाणिनेपोतानादेहनुंरक्षण
मुक्तथयोहोयतेपणकरेछे तोजेमपोतानादेहनुं ॥ तेमबिजा सर्वे जीवप्राणिमात्रनाशरीरनुंदयाराखिनेरक्षणकरवुं
एमसमजेतोतेनेदया पण रहेछे नेअहंकार पणटलिजायछे ॥ पछे महाराज बोल्याजे एपणउत्तर खरो ॥ पणएकते
नो बिजोउत्तर छे ॥ जे आमसमजेतोतेनेअहंकार पणटलिजायछे ॥ नेदयापणरहे ॥ तोजेजीवप्रत्यक्ष भगवानने
भगवानना संतनो दृढआश्रय करिने तेणे करिजेआज्ञा तेआज्ञा रुपिजेधर्म ते धर्मने दृढराखिने पछे जेवीरीते घटे ते विरी
तेपोतानासामर्थ्य प्रमाणे बिजा जीवो उपर दया राखे ॥ अनेजेदयाराखवामांपोतानाधर्मने लगारे पण घसारोआवे ॥ क
हेतांदयाराखतांधर्म लोपाय तोते दयानेपापरुपजाणिनेतेनोत्यागकरवो ॥ अने पोतानाइष्टदेवे जे नेजे जेनी मध्य
राख्या होय तेने पोताने शिरसाटेराखिनेपछे बिजाजीवोनुंजेम सारुं थाय एविदयाराखे तो तेनो अहंकारपणटलि-
जायछे ॥ नेते नेदयापण रहेछे ॥ नेतेमुक्तथईनेभगवाननाअक्षरधामनेपामेछे ॥ अनेजेपोतानो धर्मचुकिनेदयारा
खेछे ॥ तेतोमहापापिछे नेते तो महाअहंकारीछे ॥ नेतेनीदयाते पण बिजाजीवोनुं भुंडुंकरे एविछे अनेपोतानोध
र्मचुकिने जे दयाकरेछे ॥ तेतोदेहमुकिनेजरूर नर्कमांपडेछे ॥ माटेजेनेपोताना आत्मानुं कल्याणइछवुं होय तेने
तो परमात्माये कह्याजेपेदमां वर्ण नेआश्रमना धर्म तेनेदृढ करिनेपालवा ॥ नेते धर्म मांरहिनेदयाराखवी अनेपर
मात्माप्रत्यक्ष रामकृष्णादिक तेनुंभजनकरवुं ॥ एविरीतेसमजीनेवर्तशे तेजीवनुंकल्याणथशे ॥ ॥

॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥

संवत॥१९॥ओगणीसें॥२४॥चोविसना॥वैशाकशुदि॥८॥अष्टमिनेदिवसमहाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री
गाडामध्येपटेलहरखजीकालिदासनेघेरआथमणाबारनाओरडानीआगलगादितकिये जुक्तपलंगबिछाव्योह
तो॥ तेउपरविराजमानथयाहताने सरवेजरियानीक सुंबलवस्त्र धारणकर्यांहता॥ नेश्वेतपुष्पनांआभूषणसर्वेअंगमां
धरीरह्यांहतां नेकंकुनोचांदलोकर्योहतो॥ तथापोतानामुखारविंदनी आगलसाधुतथा घणाकहरिभक्तनी सभाभ
राईनेबेठिहती पछेमहाराजनी संध्याआर्तिथयाकेडे तेगामनाभक्तपटेल कल्याणभाईयेमहाराजनेएकप्रश्नपुछ्युं
जेआशब्दउठेछे॥ तेक्यांथीउठतोहशेनेतेशब्दशोनेकरिने बोलातोहशे॥ तेकृपाकरिनेकहो॥ पछेमहाराजश्रीह
रिकृष्णमहाराजबोल्याजे॥अर्धमात्रारूपजे तुरिया अवस्था त्यांथिप्रथमशब्दउठेछे॥नेतेशब्दनेपरावाणिकहिये
॥अनेते तुरियानुं स्थानक दशमोद्वारजेमगज त्यांछे॥अनेत्यांथीशब्दहृदयनेविषे आवेछे॥ नेतेहृदय मकार मात्रा
रूपकारणदेहनेसुषुप्तिअवस्थाछे॥ नेतेशब्दने पश्यंतिवाणि कहिये॥ अनेहृदयमांथी तेशब्दकंठेआवेछे॥नेतेकं
ठनेउकारमात्रारूप सूक्ष्मदेहनेस्वप्नअवस्थाछे॥ नेतेशब्दनेमध्यमावाणिकहिये॥अनेतेकंठेथीशब्दवाकइं
द्रियेआविनेबोलेछेनेतेवाकइंद्रि अकारमात्रारूपस्थूलदेहनेजाग्रतअवस्थाछे॥नेतेनेवैखरिवाणिकहिये॥माटे
मगजरूपजेविचारकरवानुंस्थानकदशमोद्वारत्यांथिशब्दउठेछे॥नेत्यांथीहृदयमांआवीनेपछेकंठमांथईनेवाणिये
आविनेजिह्वायेकरिनेबोलेछे॥एतमाराप्रश्ननोउत्तरछे॥ ॥ईतिश्रीमुखसिद्धांतसमा
प्त॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्॥१९॥ओगणिसें
॥२४॥चोविसनावैशाक शुदि॥१४॥चतुर्दशीनेदिवसमहाराज श्रीहरिकृष्णभगवानगामश्रीगाडामध्येपटेल
कालीदास नेघेरउगमणेबारओरडानीआगल चोकमांगादितकियेयुक्तपलंगबिछाविने.

सुख द्वांत ९५॥

गाडा. सि.८४

तेउपरविराजमानथयाहता॥नेसर्वेजरियानीवस्त्र धारणकर्यांहतां नेपुष्पनांआभूषणसर्वे अंगमांशोभिरह्यांहतां ॥नेकुंकुनोचांदलोकर्योहतो नेपोतानामुखारविंदनीआगल साधुतथाघणाकहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठिहतीपछेमहाराजकृपाकरिनेबोल्याजेसर्वे पिंडब्रह्मांडादिकअनंतकोटि ब्रह्मांड तेपरमात्मानेआधारेरह्यांछे ॥जेमआजगतनेविषे जेटलाआकार मात्रजणायछे ॥तेसर्वेनेआपृथ्वीनोआधारछे ॥नेतेआकार पृथ्वीथकिउपन्याछे नेपाछापृथ्वीमां लयपामेछे अनेपृथ्वीने जलनोआधारछे॥ नेजलनेअग्निनोआधारछे॥नेअग्निनेवायुनोआधार छे ॥नेवायुनेआकाशनोआधारछे॥ नेआकाशने अहंकारनोआधारछे ॥ नेअहंकारनेमहतत्वनोआधारछे ।।नेमहतत्त्वनेप्रधानपुरुषनोआधारछे ॥ नेप्रधानपुरुषनेप्रकृतिपुरुषनोआधारछे ।।नेप्रकृतिपुरुषनेअक्षरब्रह्मनोआधारछे।। अनेअक्षर ब्रह्मनेपरमात्मानो आधारछे॥ नेपरमात्मानेकोईनोआधारनथी॥ नेपरमात्मातोसर्वाधारछे ॥ नेनिराधारछे॥ केहेतांजीवईश्वरमाया ब्रह्मएसर्वेनेपरमात्मानोआधारछे ॥ मारेपरमात्मासर्वाधारकहेवायछे।अनेपरमात्मानेकोईनोआधारनथी ॥ मारेपरमात्मानिराधारकहेवायछे ।।अनेतेपरमात्मादिव्यमूर्त्तिमानछे।।ने।। ।।कर्तुमकर्तुनेअन्यथाकर्तुसमर्थछे।। ।।अने तेजपरमात्माजीवोनाकल्याणकरवानेअर्थे आपृथ्वीनेविषे रामकृष्णादिकअवतारनुंधारण करेछे अनेतेप्रत्यक्ष भगवाननोआश्रयजेजीव करेछे तेजीवनोमोक्षथायछे ।।अनेतेजीवात्मानुं अनादिघरजे अक्षरब्रह्मतेनेपामेछे पणप्रत्यक्ष भगवाननाआश्रयविनाजीवनोमोक्ष थतोनथी ।।नेपोतानुं मूलघर जे अक्षरब्रह्म तेजडतुंनथी।।केमकेप्रथमतोजीव अज्ञानअवस्थामां ब्रह्ममांथीसृष्टिमां आव्योछे ॥ मारेपोतानी जाणे पोतानुंमूलघर जेअक्षर ब्रह्मते जडतुंनथी ।।जेम कोईक मनुष्य अहिंथी काशीयेगयुं होय ।तेनेदिकरो छमहिनानो होय तेने भेगोतेडिगयो होय ते छोकरो मोटोथाय पण तो तेने पोतानाघरनीगमहोयनहिं।। अनेतेने घेरथी काशीये गयो॥तेमां जेजे गामरोहेरवचमांआव्या होय तेनीपण छोकराने खबर होय नहिं।। अनेतेछोकरानां माबापछे तेने पोताना घरनीपणखबर॥ ॥११५॥

અનેવચેમારગમાંજેજેગામનોદ્દેર આવ્યાંહોય તેનેપણજાણેછે તે પાછોતેનાદિકરાનેમારગ બતાવનો નેઘેરપોતાનેતેડિ જનો॥ ત્યારેતેપોતાનેમૂલઘેરપુગનો॥ તેમજીવપ્રથમપોતાનુંમૂલઘર જેઅક્ષરબ્રહ્મ તેનાકોકદેશનેવિષે અજ્ઞાનઅવસ્થામાં માહામાયાનેવિષેહતાં કેહેતાં ચિદાકાશનેવિષે ચારભૂતનાપ્રમાણોરૂપજે મહાકારણ શરીર તેને વિષેજીવ હતા॥ તેજીવોને માયામાંથીબહાર કાઢિને જ્ઞાનઆપિનેમહાસુખિયાકરવાસારૂ પરમાત્માયે પોતાનોઆધારઆપિને કાશીયે જવારૂપ જગતનીઉત્પત્તિકરિછે॥ તેકેવિરીતેશ્રૂષ્ટિકરિછે તો પ્રથમ ચિદાકાશનેવિષે જીવસહિત ચાર ભૂતના પ્રમાણોહતાં॥ તેમાંથીપરમાત્માયે વાયુનાંપ્રમાણો ભેગાં કરિને એકમોટો વાયુ કર્યો॥ અનેતે વાયુને વિષેત્રણ ગુણ રહ્યા છે॥ સત્વરજનેતમ તેમાંથીવાયુનાસત્વગુણની સ્વરાગ્રહણકરનારિત્વચાઇંદ્રિ પરમેશ્વરેકરિનેતેઇંદ્રિના વાયુનામે દેવકર્યા॥ અનેવાયુનારજોગુણથકિહસ્તઇંદ્રિકરિ॥ નેતેઇંદ્રિના ઇંદ્રનામે દેવ કર્યા॥ અનેવાયુના તમોગુણનોમોટો વાયુકર્યો નેપંચપ્રાણકર્યા॥ તથા ચલન વલન ધાવન પસારન ને આકોચનએપાંચભાગથયા॥ અને રૂપવિનાનોસ્પર્શ વિષય રુપ પ્રમાણો હતાં તે થકિવાયુ પરમેશ્વરે કર્યોછે॥ અનેવાયુરહ્યોછે॥ જેને વિષે એવોજેઆકાશ॥ તેઆકાશ વાયુનેઉપજવે કરિને અંધકારેજુક્તથયામાટે તેચિદાકાશ વિકાર પામિને મહદાકાશથયોઅને તેમહદાકાશનેવિષે ત્રણગુણરહ્યાછે॥ તેમાંસત્વગુણથકિ શબ્દગ્રહણકરનારી શ્રોત્ર ઇંદ્રિ થઇ॥ તથાતેઇંદ્રિનાદીગપાળનામે દેવપરમેશ્વરેકર્યાછે॥ અને આકાશનારજોગુણની વાક ઇંદ્રિ કરિને તેઇંદ્રિના અગ્નિનામદેવ કર્યાછે॥ અનેસૂક્ષ્મઆકાશનાતમોગુણના અંતઃકરણ મનબુદ્ધિ ચિત્તનેઅહંકાર કર્યાછે॥ અનેઅંતઃકરણનાદેવ કર્યાછેતે॥ મનનાદેવચંદ્રએટલે અનિરુદ્ધ॥ નેબુદ્ધિનાદેવ બ્રહ્મા એટલેપ્રદ્યુમન॥ અને ચિત્તના દેવવાસુદેવ નેઅહંકારનાદેવ રુદ્ર એટલે શંકરશણ એ ચાર દેવપરમાત્માયે નિરગુણ બ્રહ્મ રુપજે ચિદાકાશ તેથકીકર્યા છે॥ અનેતે આકાશને વિષે શબ્દ વિષયરહ્યો છે॥ તેમહદાકાશનું કારણ છે તેશબ્દથકિ મહદાકાશથયોછે॥ અનેમહદાકાશથકિ સ્પર્શ વિષયથયોછે નેસ્પર્શથકિ

वायुथयो छे॥ अनेते अग्निने विषे उना स्पर्शवाळां अग्निनांप्रमाणोरह्यांछे॥ तेनेपरमातमाये भेगा करिने तेनोरुपविषय
कर्यो॥ अनेते रुपविषय थकि मोटोअग्निकर्यो॥ अनेते अग्निने विषे पणत्रण गुणरह्याछे॥ तेमां सत्वगुणथकि रुपग्रह
ण करनारीचक्षुइंद्रि करिने तेइंद्रिनोदेव सूर्य कर्यो॥ नेअग्निनारजोगुणथकि पादइंद्रि करि॥ नेतेइंद्रि ना विष्णु
नामेदेव कर्या॥ अने अग्निना तमोगुणथकि भूख तरश निंद्राआळसनें कांति ए पांचभाग कर्याछे अनेतेअग्निने
विषे टाढस्पर्श विषय वाळा प्रमाणोरह्यां छे तेने भेगांकरिनेजळपरमेश्वरे कर्युं॥ अनेते जळने विषे त्रण गुणछे॥ ते
मां सत्वगुण थकि रसग्रहण करनारी रसनाइंद्रि करि॥ तथा तेइंद्रिना वरुण नामेदेव कर्या अनेजळनारजोगुण
थकि शिश्नइंद्रि करि॥ तथा तेइंद्रिना प्रजापति नामेदेव कर्या॥ अनेजळना तमोगुणथकि वीर्य मुत्र परसेवो ला
ळने लोहि एपांचभाग कर्याछे॥ अने तेजळने विषे कठण स्पर्शवाळां गंधविषय रुप पृथ्वीनां प्रमाणोरह्याछे तेनेपर
मात्माये भेगां करिने मोटीपृथ्वी करि॥ अनेते पृथ्वीना गंधविषय ग्रहण करनारी नासिकाइंद्रि करि तथा तेइंद्रिना
अश्वनीकुमार नाम देव कर्या॥ अनेपृथ्वीनारजोगुणथकि गुदाइंद्रि करि तथा तेइंद्रिना यमना मेदेव कर्या॥ अनेपृ
थ्वीना तमोगुण थकी हाडमांस नाडियो त्वचा नेरोम ए पांच भागकर्याछे॥ अनेतेमां मोटो आकाश मोटो वायु मोटो
अग्नि मोटुंजळनेमोटी पृथ्वी एपांचभूत तथाते पंचमहाभूतथकि थयांजेइंद्रियो अंतःकरण नेतेना देव अने ते सर्वे
थकि थयुंजे वैराटरुप ब्रह्मांड तेनेइश्वररुपे करिने परमात्माये पोतेधारण कर्युं छे अनेते परमात्मानुंअनवयस्वरुप
कहेवाय छे॥ अने ते पंचभूतना प्रमाणोने विषे हताजेजीव तेने मोटापंचभूतने अंषे करिने नानांशरीर सरजीआप्यां
तेशरीरनुं नाम पिंडकहेवायछे तेमां इश्वरनां इंद्रियो अंतःकरणछे॥ तेजीवनां इंद्रियो अंतःकरण नाढेवकहेवायछे एवि
रीते अक्षरमांथी जीव पींडमां आव्याछे तेने परमात्माजाणेछे पणजीवने तेनी खबर नथीजे हुं क्यांथी आव्यो छुं॥ मा
टे तेजीवने तो परमात्मा पोते तेनुं मूळघरजे अक्षरब्रह्म ते देखाडशे त्यारे तेपोताना मूळघर नेजीव पामशे॥ नेतेजी

थवी मुक्ति थशे ॥ जेम नाना बालकने तेनां मा बाप परदेशमां तेडि गया होय ते बालकने तेनां मा बाप पोतानुं घर बतावशे ॥ त्यारे ते बालकने खबर पडशे ॥ ते मोटो विस वरसनो थयो होय तो पण तेने पोताने जाणे पोताना मूल घरनी खबर पडे नहिं माटे ते बालकनां मा बाप तेनुं घर बतावशे ने घेर तेडी जशे त्यारे ते पोताना घरने पामशे ॥ अने समजु थया पछे पोतानां मा बाप पोताने घेर तेडि जाय ॥ त्यार केडे तो ते परदेश गयो हतो ॥ ते शेहेर तथा वचमां जे जे गाम शेहेर आव्यां होय ते सर्वेनी खबर पडे छे ॥ तेम मा बाप रूप एवा जे परमात्मा तेणे मूल घर जे अक्षर ब्रह्म त्यांथी परदेश रूप पिंड ब्रह्मांड मां जीव ने देह धराव्यो छे ते हवे तेने ज्ञान आपीने जीवात्मानुं मूल घर जे अक्षर ब्रह्म तेने पमाडवाने अर्थे परमात्मा पोते अक्षरमां रह्या थका राम कृष्णादिक अवतारनुं धारण करे छे पछे ते प्रत्यक्ष भगवानने आश्रये जे जीव आवे छे तेने जे रीते अक्षर-मांथी अज्ञान अवस्थामां जीव पिंड ब्रह्मांड मां आव्यो छ ते रीतने प्रत्यक्ष परमात्मा बतावि आपे छे ॥ केम के परमात्माये पोते जीवोने ज्ञान कराववा सारुं परदेश रूप पिंड ब्रह्मांड मां लाव्या छे ॥ अने जीव तो बालकनी पेठे अज्ञान मां आव्या-छे ॥ माटे जिव पोतानी मेले समर्थ नथी ॥ अने तेमज पिंड ब्रह्मांडने विषे सर्वे देव ब्रह्मादिक तथा सर्वे मनुष्यादिक अनंत कोटि ब्रह्मांडना जीव प्राणि मात्र ते सर्वे अज्ञानी अनादी ना हता ॥ माटे ज्ञान आपवा सारुं ए सर्वेने परमात्मा सृष्टि मां लाव्या छे ॥ मारे ते देव ब्रह्माने मनुष्यादिक कोई पण पोताना मूल घरने कदेवा जाणवाने पोतानी मेले समर्थ नथी ॥ माटे एक परमात्मा ज ज्ञान करावि ने मूल घर जे अक्षर ब्रह्म ते मां लेई जवाने समर्थ छे ॥ माटे प्रत्यक्ष भगवानना अवतार जे राम कृष्णादिक तेनो आश्रय जे जीव करे छ ते जीवनुं सेहेजमां थोडा कदारवडे कल्याण थाय छे ॥ जेम बालक परदेशमां गयो ॥ तेने पोताने घेर आववा सारुं तेनां मा बापनो आश्रय करिने ते भेगो चाल्यो आवे ॥ तो तेने मारग पुछवो पडे नहिं ॥ तथा क्यांई भूलो पण पडे नहिं ॥ तथा तेने वाटमां भाता पोतानी पण फिकर राखवी पडे नहि ने सेहेजमां पोताना मा बाप भेगो चाल्यो आवे तो पोताने घेर पोचे ॥ ने सुख ने पामे ॥ अने मूर्खाई करिने एम कहे जे हवे तो हुं

मोटो थयो छुं॥ तेमा बापनुं शुं कामछे ।।हुं मारीमेळेमारे घेर जाईश ।।एम कहीनेतेना मा बापथी जुदोपडिनेएकलोचाले
तोवाटमां भूलोपडे ।।नेपोतानुं घर होय पूरवमां नेचालवा मांडे पश्चिममां॥ पछे जेमजेम चाले तेमतेमपोताना घरथी
छेटुं पडतुंजाय॥ पछेपोताजेवाज अजाण्याहोय तेने मारगपुछे तोतेबराबर बतावि शकेनहि॥ माटे जीवत्यां रूधि
पंथकर्याकरे नेपरदेशमां भटक्याकरे ।।पणपोताने घेर पोहोंचेनहि।।नेआथडिआथडिनेवचमां तेनाप्राणजाय।।
तेमप्रत्यक्षपरमात्मानाआश्रयनोत्यागकरिने पोतानेजाणेनूशास्त्र ने भणि सांभलिवांचीने मोक्षने मारगे चालवाज
यछे ॥तोतेनोमोक्षकोई काले थतोनथी ।।नेतेतो नर्कचोरासिमां भटक्याकरेछे।। अनेजेप्रत्यक्ष भगवाननो आश्रयक
रीनेमोक्षने मारगे चालेछे ।।तेतोबगरदाखडे मोक्षने पामेछे ॥नेतेनेतो आलोकमां कोईवि घन लागतुं नथी।।नेतेनिर
भयथको परमपदने पामेछे॥ हवेतेप्रत्यक्षभगवान केविरीते अक्षरमांजीवनेलेईजायछे तो जेवीरीतेजगतनीउत्पत्ति
थईछे॥ तेवीरीतेपाछोज्ञानेकरिनेप्रलय करावेछे ॥जेप्रथम पृथ्वीनुंजीवने ज्ञानकरावेछे ।।जेघटपटादिकआकार
मात्र तेसर्वेपृथ्वीथकि थयाछे।।माटेतेआकारमात्र पाछापृथ्वीमां लयपामशे।। नेपृथ्वीगंध विषयमांथी थईछे॥माटे
ते पृथ्वी गंधमांलयपामशे।। अनेएगंधछे तेपरमाणोरूपथईनेजलनेविषे लयपामेछे ।।अनेजलछे तेरसनेविषे
लयपामशे॥ नेरस विषयरूप जलना प्रमाणोथईने अग्निने विषे लयपामशे।।अनेरुपविषयरुपअग्निनापरमाणोथई
नेवायुनेविषेलयपामशे ।।अनेवायुछे तेस्पर्शनेविषेलयपामशे ।। अनेस्पर्श विषयछे तेना प्रमाणोथईनेआकाशने
विषेलयपामशे॥ अनेआकाशछेते अहंकारमां लयपामशे।। अनेअहंकारछे तेचित्तमां लयपामशे ।।अनेचित्त
छेते महत्तत्वमांलयपामशे ॥ अनेमहत्तत्वछे तेमनमांलयपामशे ॥ अनेमनछेतेप्रधानपुरुषमां लयपामशे ।।
अनेप्रधानपुरुषछेतेबुद्धिने विषे लयपामशे॥ अनेबुद्धिछे तेमूलप्रकृतिपुरुषनेविषे लयपामशे।।अने प्रकृतिपुरु
षछेते रूद्र चैतनआत्माने विषे लयपामशे॥ अनेरूद्रचैतन आत्माछे ते अक्षरने विषे प्रवेश करशे कहेतां मायाना

...रहेनसके देहचेतन आत्माथयो॥ तेआत्माअक्षरब्रह्मजे पोतानुं मूळघर तेनेपामेछे॥अनेएअक्षरब्रह्मना
आधार अनेप्रकाशक एवाजेपरब्रह्म परमात्मा तेने पोतानाब्रह्मस्वरूपने विषे साक्षात्कार देखेछे॥ अनेतेजेअक्षरनाआ
धार अक्षरातित परमात्मातेजआप्रत्यक्ष मुनेमळ्याछे॥नेतेणेजमुनेमारुं मूळघरजे अक्षरब्रह्म तेनुं ज्ञान कराविने अक्षर
नेपमाड्यो॥एविरीते तेनेप्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनोउत्तमनिर्विकल्प निश्चय थायछे॥नेतेआत्मा अक्षरब्रह्मरूप थ
ईनेप्रत्यक्षभगवाननीमूर्ति नेविषे महात्म्यज्ञाने सहितजोडाईजायछे॥अनेतप्रत्यक्षपरमात्मा भगवाननीमूर्तिनेवि
षेजोडाणे करिने तेआत्मानीब्रह्ममय दिव्यएवी भगवतितनु बंधायछे॥अनेतेआत्मा आलोकमांहोय त्यांसुधिते
नोदेहउपरथीजोयामांतो मायिकने पंचभूतनोदेखाय॥तोपणमांहेतो तेआत्माब्रह्मनीजमूर्तिछे॥जेमकचरानुंबि
बुकरिने तेमां धातुनो रसरेडेछे॥एटले धातुनीमूर्ति बंधायछे॥ पणज्यांसुधि कचरानाबिबाने भांगिनाख्युंनथी॥
त्यांसुधि धातुनीमूर्ति देखातिनथी॥ तेमकचरानाबिबारूपजेपंचभूतनोदेह तेमां आत्मापरमात्मानाज्ञानरूपि
धातुनोरस तेरसइंद्रियो अंतःकरणरूपे द्वारेकरिने जेनाआत्मामांउतर्यो तेनीब्रह्ममयदिव्यएविभगवतितनुं बंधा
यछे॥पणज्यांसुधि पंचभूतनोदेह नाशनथीपाम्यो॥त्यांसुधिउपरथी बारदृष्टिवाळाने ब्रह्ममय दिव्यमूर्ति जोया
मांनथीआवति॥ अनेअंतरदृष्टिवाळाजे ज्ञानीपुरुषछे॥तेतोमुक्तने साक्षात्कार ब्रह्मनीजमूर्तिदेखछे अनेतेजि
वन्मुक्तकहेवायछे॥अनेज्यारेपंचभूतनादेहनोनाशथशे॥ त्यारेते मुक्त विदेहि मुक्तपदविनेपामशे॥अनेपर-
मात्मानीमूर्तिनेविषे भक्तिजेप्रिति तेणेकरिने अखंडजोडाईरहेछे॥नेतेमुक्त पाछो कोईकाळेदेहधरतोनथी नेअ
खंडसुखनेपामेछे॥ अनेप्रथमजीवनुं मूळघरजेअक्षर तेमांथीआव्योहतो एमकह्युं तेतो अक्षरनाकोकरेशाने विषे
अज्ञानअवस्थामां अनादिनोहतो॥ तेनेपरमात्माये ज्ञानआपीने अज्ञाननोनाश करिने आत्मानुं मूळघरजेअ-
क्षरब्रह्म तेनामअरूपजे व्यतिरेक ब्रह्म अनेतेव्यतिरेकब्रह्मनाप्रकाशक परमात्मा तेने साक्षात्कार पोतेपरमात्मा

येपमाड्यो ।। तेआत्मा पाछो फेर अक्षरमांथी आलोकमां पाछो देहधरतोनथि ।। ॥इतिश्रीमुख सिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत॥१९॥ ओगणिसें ॥२४॥ चो विसना वैशाकवदि ।। ६ ।। छठने दिवसे महाराजश्रीहरिकृष्ण भगवानगामश्री सोजिंत्रामध्ये पोतानामंदिरमां सेहेजधटउपरगादितकिये जुक्त पलंग बिछावीने तेउपर विराजमानथयाहता।। ने सर्वेजरियानीवस्त्र धारण कर्यां हतां ने पुष्पनांआभूषणसर्वेअंगमांशोभिरह्यांहतां ।। ने ललाटने विषे कंकुनोचांद्लो कर्योहतो ।। ने पोतानामुखारविंदनीआग लसाधुतथा घणाकहरिभक्तनीमोटि सभाभराईनेबेठिहति ।। पछे महाराजबोल्याजे आलस ने परमाद ए बेदोषवडे करिने जीव जन्ममरणादिकदुःखनेपामेछे।। तेआलसतेशुंतोकांईदेहेकरिने क्रियाकरवि नहिं ।। तेनुंनामआलस कहेवाय तेजे आलसु होय तेआलोकमांनेपरलोकमां कोई ठेकाणे सुखपामेनहि।। ने तेमहादुःखने पामे ।। पछे तेने कोईकएम कहे जेतुंकांईकउद्यम कर तो तने सुख मलशे पणउद्यम कर्याविना कांईसुखमलशेनहिं ।।एम कह्युंत्यारे तेणे उद्यमकरवामांड्यो पणतेउद्यमने विषेपण महादुःखथवामांड्युं।। केमके कर्मकरेछे पण परमादरुपिदोषेकरिनेदुःखउपजे एवुं नकरवानुं कर्मथायछे ।। नेसुखउपजे एवुंजे करवानुं कर्म तेथतुनथि।। केमकें करवानुं नकरवुं नेनकरवानु करवुं एजपरमादनुंरुपछे।। माटेपरमादेकरिने नकरवानुं कर्म करवाथकि महादुःखथवालाग्युं ।।त्यारे वलि कोई के एम कह्युंजे भाई कर्मनो त्यागकरिने निवृत्तिपामशो त्यारे सुखथाशे ।।एम सांभळीनेपाछो कर्मनो त्यागकरवागयो।।त्यां आळसरुपीदोष आव्यो।। तेआलसमां पणमहादुःखरह्युंछे।। एविरीतेजीवपोतानेजाणे कर्मनो त्याग करेछे।। तोपण आलसेकरिनेदुःख पामेछे ।। अनेकर्मकरेछे तो परमादे करिने नकरवानुं थायछे तेमांथी पण महादुःखनेपामेछे ।।एविरीतेकोटिकल्पथयां जीवजेतेजन्ममरणगर्भवास नेंचोरासिमां दुःखपाम्याकरेछे ।। हवेतेजीवसुखने क्यारेपामे नेएबेदोष क्यारेटळे ...यापरनेजेनेविषेएबेदोषकोईदहाडेहतानहिं ।। एवाजेपरमात्माने मेळा संवतेप्रत्यक्षमळे ।।

नेतेनोआश्रयजीवदृढकरे॥नेतेप्रत्यक्षभगवाननीमूर्तिनीअखंडस्मृतिराखे॥अनेतेभगवानने संतजेवीरीतेप्रसन्न
थायतेविरीतेआज्ञामांवर्ते तो तेजीवने विषेथी आळसनेपरमादरुपीदोषटलिजायछे॥ नेब्रह्मरुपथईनेभगवाननाअ
क्षरधामनेपामेछे॥अनेजेनेप्रगटभगवानने भगवानना निरवासनीक पंचविषयना त्यागिसंतमळेछे॥तेनेआळसरु
पीदोषहतो तेमटिनेतेनी तेआळसकल्याणकारीथायछे॥अनेजेपरमादरुपिदोषेकरिने कर्मबंधनकारीहतुं॥तेकर्म
प्रत्यक्षभगवानने संतनेआश्रयेकरिनेप्रमादरूपिदोषटळीनेकल्याणकारीथायछे॥माटेप्रत्यक्षभगवान ने संतजेनेम
ळेछे॥नेतेनोआश्रयकरिनेप्रत्यक्षभगवाननास्वरूपनीअखंडस्मृत्तिराखे॥नेतेनीप्रसन्नताप्रमाणेवर्ते॥तोतेनेआ
ळसनेप्रमादरुपि जेअनादिना जिवना महादोष तेटळिजायछे॥नेते जिवअक्षरधामनेपामेछे॥अनेप्रत्यक्षभगवानम-
ळ्याविना नेतेनोआश्रयप्रसन्नताने स्मृत्तिविना बीजांकोटिसाधनकरे॥तोपणतेने आळसनेप्रमादरुपिदोष कोई
कालेटलेनहिं॥ नेतेजीवनोमोक्षपणथायनहिं॥ तेसारुंजेने पोतानाआत्माना कल्याण नेइछवुंहोय तेनेतोप्रत्यक्षभग
वानने भगवाननाएकांतिक निरवासनीक पंचविषयना त्यागीसंत तेनोआश्रयकरिनेतेनी आज्ञाप्रमाणे मनकर्म
वचनेवर्तवुंअनेजे भगवानने भगवानना संतनी आज्ञा प्रमाणे वरतशे॥तेनाआळसनेपरमाद रुपीदोषटलिजशे॥नेते
ब्रह्मरूपथईनेअक्षरब्रह्मनेपामशे॥ ॥इतिश्रीसुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥
श्रीहरिकृष्णायेनमोनमः॥ ॥संवत्॥१९॥ओगणिसें॥२४॥चोविसना जेष्टवदि॥७॥बिजनेदि
वसमहाराजश्रीहरिकृष्णभगवान गामश्रीसोजींत्रामध्ये भक्तइश्वरदासअंबैदासने घेर पाटउपर गादितकिये जुक्तपलं
ग बिछाविने तेउपर संध्याआर्तिसमे सर्वेश्रृंगारधारणकरिने बिराजमान थयाहताने पोतानामूखारविंदनीआ-
गळसाधूतथा घणाक हरिभक्तनी सभाभराईने बेठाहता पछेमहाराजकृपाकरिनेबोल्याजे सर्वेजीवनाशरिरउपरअण
आकर्षण छे॥ जेमसर्वे खेडुना खेतर खेतरप्रत्ये चणनो हुकमछे॥एक खेडुखेतरनो धणिकहेवायछे॥अनेबिजोरा

जाये जेने प्रगएुं सोंप्युं होय एवो जे मेह तो तेनो पण ते खेतर उपर हुकम छे ॥ अने त्रिजो सर्वे खेतर उपर राजानो हुकम छे ॥ तेम देह देह प्रत्ये एकएक जीवनुं आकर्षण छे ॥ ते देहने जीव साचवे छे ॥ ने रक्षण करे छे ॥ जेम खेडु खेतरने साचवे छे ने रक्षण करे छे ॥ त्यारे तेमां निपज आवे छे ॥ ने खेडु न रक्षण करे तो खेतरमां निपज आवे नहिं ॥ ने खेडु दुःखने पामे ॥ तेम जीव देहने साचवे नहिं ने शुभ मारगे न जाये नहिं तो ते जीव महा दुःखने पामे ॥ माटे एक तो देह उपर जिवनुं आकर्षण छे ॥ तेणे करिने देहनो बंदोबस्त रहे छे ॥ ने जीव देह मांथी निसरि जाय ॥ ने देह पांच दश दिवस पड्यो रहे तो देह सडिने सांधे सांधे थी नोखो थईने विखरई जाय ॥ माटे एक जीवनुं धणिपणुं देह उपर छे ॥ अने बिजुं जे पृथ्वी उपर आपणे रहिये छैये ते तेने धारण नो करनारो एक जीव छे ॥ ते जीवनुं पण पृथ्वी उपल्या प्राणि मात्र उपर आकर्षण छे ॥ अने आ पृथ्वीमां जीव छे तेणे करिने जन्मा पृथ्वीनी मजबुताई रहे छे ॥ ने जीव पृथ्वीमां न होय तो पृथ्वी सिखल वीखल थईने परमाणो रूप थई जाय ॥ माटे पृथ्वीमां जीव छे ॥ ते जीवनुं सर्वे जीवना देह उपर आकर्षण छे ॥ अने तेमज पांचे भूतने विषे एकेको जीव छे ॥ तेनुं पण सर्वे जीवना देह उपर आकर्षण छे ॥ अने तेमज आ तारा मंडल देखाय छे ॥ तेमां सर्वेने विषे एकुको जीव छे ॥ ते तारा मंडलना जीवोनुं पण आ पृथ्वीना देहोजीवो ना सर्वे देह उपर आकर्षण छे ॥ अने भिजुं अनंत कोटि ब्रह्मांडना आधार एवा जे ईश्वर तेनुं पण सर्वे जीवना देह उपर आकर्षण छे ॥ ते ईश्वर सर्वे जीवना स्तुभ अस्तुभ सर्व कर्मने जाणे छे ने ते कर्म प्रमाणे सुख दुःख रूप फल ते जिवोने नवग्रहादिक द्वारा ये आपे छे ॥ तेम स्तुभ कर्मनुं फल स्तुभ ग्रहादिके करिने सुख आपे छे ॥ ने अस्तुभ कर्मनुं फल अस्तुभ ग्रहादिके करिने दुःख आपे छे ॥ माटे वेदनुं छठुं अंग जे ज्योतिष्य ते मांजे जे ग्रहादिके करिने सुख दुःख कह्युं छे ॥ ते प्रमाणे जीवने थाय छै ॥ ते सत्य छे ॥ ने जीव देह करिने वेदमां कह्या प्रमाणे शुभ कर्म करे छे तेने ईश्वर शुभ ग्रहादीके करिने सुख पमाडे छे ॥ अने जे जीव वेदना धर्मनो त्याग करिने अशुभ कर्म करे छे तेने अशुभ ग्रहादिके करिने ईश्वर दुःखरूप फल पमाडे छे ॥ जेम राजा छे ते जे पोताना कायदा प्रमाणे वर्ते छे तेने राजा पो

तानाचाकरजे मेहेताकारभारिसिपाई तेपासे ते लोकोने सुखियाराखवाने अर्थे तेनी रक्षा करावेछे ॥ अनेजे लोकोरा
जानो कायदो लोपिनेजुलम करछे ॥ तेने मेहेता कारभारी सिपाई तेपासे शिक्षाअपावेछे नेते कायदानो लोपनारो दुःख
ने पामेछे ॥ नेकायदा प्रमाणे वर्तनारा सुखनेपामेछे ॥ तेमइश्वरनो कायदोजे वेद तेमांकह्या प्रमाणे जे सूभ कर्म क
रेछे ॥ तेनेइश्वरपोतानाचाकरजे कालमाया नेब्रह्मादिक पासे सुखअपावेछे ॥अनेजे वेदरुपइश्वर नाकायदा लोपिने
असूभकर्म करेछे ॥ तेने इश्वर कालमायादिक पासे दुःखपमाडेछे ॥ अनेजीवनासुभअसुभ सर्व कर्मने इश्वरजाणेछे
नेतेनाकर्म प्रमाणे तेनांफलजरुरपमाडे छे ॥माटेआवार्तानेजेजाणेछे ॥ तेअसुभकर्मनो त्यागकरिनेशुभकर्मजकरेछे
अनेतेजीव आलोक परलोक मांसुखजपामेछे ॥अनेजे आवातनेनथीजाणता ॥ तथा तेनेजे खोटुं माने छे तेअसुभकर्म
करेछे ॥ अनेते आलोक परलोकमां दुःखजपामेछे ॥ने तेनुंकल्याणकोई काले थतुंनथी ॥ अनेजे इश्वरने अंतरजामीजा
णेछे ॥नेवेदमांजेजेकह्युंछे ॥तेनेसत्य मानेछे ॥तेतरतअसुभ कर्मनो त्यागकरिने सूभ कर्मकरेछे ॥ नेतेजीवनुंकल्या
णथायछे ॥ माटे जेने सुखियाथवुंहोय ॥तेने इश्वरने अंतरजामि जाणीने वेदमांजेजेशुभ कर्मकरवानुं कह्युं होय ते
सर्वेनेकरवुं ॥नेतेमां इश्वरनुं स्मरण करवुं ॥ ते इश्वर परमात्माछे ॥ अनेतेजपरमात्मा जीवोनाकल्याणने अर्थे राम
कृष्णादिक अवतारनुंधारणकरेछे ॥नेतेनोआश्रय करिने आलोकमांरहिने भजनकरे छे तेनुं कल्याण थायछे ॥ माटेआ
वार्ता सर्वनेजरुर समजवानीछे ॥ ॥इतिश्री सुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥

श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥ ॥संवत्॥१९॥ओगणिंसे॥२४॥चोविसनाजेष्टवदि॥५॥चतुर्थीने
दिवसमहाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीसोजिंत्रामध्ये पोतानामंदिरने विषे रवेस मां पाट उपर गादितकियेजु
क्तपलंग बिछाविने तेउपर संध्याआरतीसमे सर्वेशणगार धारणकरिने विराजमानथयाहता ॥ नेपोतानामुखा
रविंदनीआगल साधुतथाघणाकहरि भक्तनी सभा भराईने बेठिहति ॥ पछेमहाराजकृपाकरिनेबोल्याजेवेदने विषेच

रवर्णने चार आश्रम कह्याछे ॥ ते चार आश्रम कियां तो ब्रह्मचारि ग्रहस्थ वानप्रस्थ ने संन्यासि ॥ तेमां ब्रह्मचारीनो तो धर्म ए
छे जे स्त्रियादिक पांचे विषयनो त्याग करिने आत्मारुप पोताने मानीने परमात्माने पामवाने अर्थे वेदाभ्यासने करतो थको परमा
त्मानी नवधा भक्ति करे ॥ अने परमात्माना स्वरूपने साक्षात्कार पमाडे एवा जे सतगुरु तेनी सेवा करे ॥ अने ग्रहस्थनो ध
र्म एछे जे पोताने सांख्यविचारे करिने देहथी नोखो आत्मा मानीने परमात्मानी भक्ति ने उपासनाने करतो थको परउपकार
ने माटे ग्रहस्थाश्रम राखे ॥ ने साधु संत कोई महात्मा पोताना गुरु तेनी सेवामां पोतानुं तन मन धन स्त्रि छोकरां सर्वेने
जोडि देवा ॥ अने कोई गरिब अथवा समर्थ होय ने तेने कोईक देशकाले करिने दुःख आवि पडे ॥ तो तेना दुःखने पोताना सा-
मर्थ्य प्रमाणे टाल्यानो उपाय करवो ॥ ए विरीते जीव प्राणिमात्र उपर दया राखिने परउपगार पण करवो अने वानप्रस्थनो
ए धर्म छे जे पोते ग्रहस्थाश्रमनो त्याग करिने पंचविषयनी वासना मुकिने ब्रह्मरुप थईने परब्रह्म प्रत्यक्ष परमात्मानुं ध्यान
भजन ने सेवा करवि ॥ अने संन्यासिनो ए धर्म छे जे ॥ अक्षर ब्रह्म साथे पोताना आत्माने एक करिने ते ब्रह्म तो जेनां अंगनो
प्रकाश छे ॥ एवा जे परब्रह्म परमात्मा तेने विषे अद्वैतपणे जोडाई जाय ॥ ए विरीते चारे आश्रमनो धर्म छे ॥ तेमां हवे ग्रह-
स्थाश्रमिनो धर्म विस्तारे करिने जथार्थ कहुं छुं ॥ जे ग्रहस्थनो धर्म केवल परउपगार माटे परमेश्वरे स्थापन कर्यो छे ॥
केमके बिजा सर्वने देहनिरवाह करवाने अर्थे अन्न वस्त्रादिक जोईये ॥ ते ग्रहस्थाश्रमि द्वाराये परमेश्वर उपजावेछे ॥ त
था तेने घेर बंधाविआप्या छे ॥ तथा पैसा राखवानी तेने आज्ञा आपि छे ॥ माटे तेने अन्न धन वस्त्र घर शरीरादिक सर्वे परा
र्थे करिने परउपकार करवो ॥ एज ग्रहस्थनो धर्म छे ॥ अने जे परउपकार करे छे तेने कोई दुःख आवतुं नथी ने तेने क-
दापि पूर्वना कर्मे करिने दुःख आवि पडे ॥ तो ते दुःखने टालवाने अर्थे बिजा अनंत लोको सहाय करवाने लागे छे ॥
तेने दुःख ततकाल टलीजाय छे ॥ ते पोते मोटो ग्रहस्थ होय ने तेणे कोई गरिबने उपकार कर्यो होय ॥ तो ते गरिब
पण कोईक वखते मोटाने दुःख आवे तो तेने ते गरिब पण सहाय करिने दुःखथकि मुकावि शाके छे ॥ ते उपर एक द्रष्टांत छे

।।जेएक किडि पाणिमां तणाई जतीहती ।। तेने होलेदीठी ।। त्यारे तेहोलाने दया आवी जे ते किडीने बहार काढवानो उपाय मारायी बनी शके तेटलो करुं ।। एम जाणिने तेहोले एक खडसलानी सलीचांचवते लावीने ते किडिनी आगळ पाणिमां नाखिने तेसलिनो एक छेडो पाणिने कांठे पोतानापगवते दाबीराख्यो ।। पछे ते किडिसलीउपर चढिने बहार नीसरिने ते किडिये विचार कर्योजे मारुं तो मृत्युं आव्युं हतुं पण आ होले मुने जीवतिराखि ।। पण तेहोलाना उपगारने पाछो मारायी वळेतो ठिक ।। पछे तेहोलाने एक दिवसने समे वृक्षउपर बेठोहतो ।। तेने मारवाने अर्थे पारधिये बंधूक भरिने हैये चढावी ।। त्यारे तेने किडिये दीठे पछे ते किडिये होलाने उगारवाने अर्थे ते पारधिनी पगनी घुंटिमां जईने चटको भर्यो ।। ते चटके करिने तेनी नजर चुकि गई ।। ने बंधुक वछुटी तेने भडाके करिने होलो ऊडि गयो ।। एविरीते होलो जो घणो मोटो ।। ने किडि घणीनानी पण ते कीडीने होलेउपकार कर्यो हतो तो ते किडिये होलानो पण उपकार कर्यो ने मरणथकि उगार्यो तेम मोटो ग्रहस्थ होय ने ते गरिबने उपकार करे ।। तो ते गरीब पण कोक वखते मोटाने दुःख आवी पडे तो ते दुःख थकि मुकावी शके ।। माटे नाना मोटा सर्व ग्रहस्थो ने पर उपकार करवो ।। अने जे पर उपकार करे छे ।। तेना सर्वे प्राणियो हेतु थाय छे ।। ने ते सर्वे आसर्वाद आपे छे जे तेनु सारुं थजो सारुं थजो एम कहे छे ।। अने एवा परउपकारी छे ।। तेना उपर पण परमात्मानी पण कृपा थाय छे ।। अने तेनुं कल्याण थाय छे ।। अने जे ग्रहस्थ परउपकार नथी करता ।। ने पोतानां सर्वपदार्थनो पोते एकलोज भोक्ता थाय छे ।। ने पोतानां स्त्रिछोकरां ने भोग घावीने राजी थाय छे ।। तेनेतो महापापि जाणवो ।। अने ते तो दुःष्ट छे ने ग्रहस्थना धर्म थकी तेने भ्रष्ट थयो जाणवो ।। अने जे देहाभिमानी होय ते परउपकार करतो नथी ।। अने जे देहने पोतानुं स्वरुप मानीने पोतानां पदार्थ पोते एकलो भोगवे छे ।। ने ते मां थी परउपकारनी माटे कोईने नथी आपतो ।। तेने आ जगतने विषे जेटलुं पाप थाय छे ते सर्वे पाप तेने लागे छे ने ते मरिने घोर नर्कमां पडे छे ।। ने नर्कना जीव पण तेने तिरस्कार करे छे जे हे दुष्ट तुं अमारा भेगो क्यांथी आव्यो ।। केमके तें परउपकार कर्यो नथी ।। माटे तुने ईश्वर नर्कमांथी कोई काले काढशे नहि ।। ते तारे पापे करिने तारा

भेगुंअमारे पण घणाक काल नर्कमां रहेवुं पडशे ॥ केमके पापिना संगनुं पण पाप लागे छे ॥ माटे ते नर्कना जीव पण जेणे परउपकार
नथी कर्यो ते ने तिरस्कार करे छे ॥ ने श्राप आपे छे ॥ माटे जे ग्रहस्थाश्रम बांधिने बेठो ते कांई पण परउपकार नथि करतो ते जेवो तो
कोई पापि नथी ॥ अने जे ग्रहस्थ परउपकार करे छे ने पोतानो देह ने देहना सगा संबंधि ने विषे जेवी दया ने स्नेह छे ते वो बिजा
सर्व प्राणिने विषे दया ने स्नेह राखिने जेवुं देहने देहना संबंधिने सुख थाय तेम करे तेम सर्वे प्राणिमात्रने पोताना सामर्थ प्र-
माणे सुख थाय एम परउपकार करे छे ॥ ते ग्रहस्थने धन्य छे ॥ अने तेने आ जगतने विषे जेटलुं पुन्य थाय छे ॥ ने टलुं पुंन्य परउ-
पकारीने थाय छे ॥ अने जे परउपकारी होय तेनुं ज कल्याण थाय छे ॥ माटे जेने पोताना आत्माने परम सुखप माडवुं होय तेने पो-
ताना धर्ममां रहिने परमात्मानी भक्तिये सहित परउपकार करवो ॥ कहेतां एम समजवुं जे मारा इष्टदेव ने जगतना करता एवा जे
परमात्मा भगवान् ते सर्वे प्राणिमात्रना आत्माने विषे अंतरजामिपणे रह्या छे ॥ माटे सर्वे प्राणिने परउपकारे करिने परमात्मानी
सेवा थाय छे ॥ ने जे कोई प्राणिने माराथी दुःख थशे ॥ तो तेमां रह्या जे परमात्मा ते दुभाशे एम जाणिने परउपकार जे करे छे ॥ पण
पोताना स्वार्थने माटे कोई जीवने दुःखवतो नथि ॥ तेज ग्रहस्थाश्रमि खरो छे ॥ ने तेज अमारो भक्त छे ने तेनुंज कल्यांण आ ने आ
देहे करिने थशे ॥ अने जे परउपकार नथी करतो ॥ ने पोताना सर्व पदार्थ ने पोते एकलो ज भोगवे छे ॥ ने पोताना संबंधिने भोगवा
वे छे ॥ ने वधारे पदार्थ होय तेने संचि राखे छे ॥ ने वलि बिजां पदार्थ भेगां करवाने अर्थे बिजां प्राणियोने दुःखवे छे ते ग्रहस्थनुं तो
कोई काले कल्याण नहिं थाय ॥ ने ते तो ग्रहस्थ मोटो गधेडो छे ॥ ने जे परउपकार करे छे ॥ ते ग्रहस्थने धन्य छे ॥ माटे ग्रहस्थाश्रम प
रउपकारिने माटे परमेश्वरे बांध्यो छे ॥ तेने परउपकार करवो एज ग्रहस्थनो धर्म छे ॥ ॥ इति श्रीमुख सिद्धांत स
माप्तः ॥ ॥ श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः ॥ ॥ संपत् ॥ १९ ॥ ओगणिसें ॥ २४ ॥ चो विस-
ना जेष्ठ वदि ॥ ६ ॥ छठने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सेमजीं वा मध्ये पोताना मंदिर मां उत्तरादा बारनी मेडियोनी
रवेशमां सेजवट उपर गादि तकिये युक्त पलंग बिछाव्यो हतो ॥ ने ते उपर विराजमान थया हतां ॥ ने श्वेत सुरवाल ने फूल-

छाटमनीडगजीपेहेर्‍यांहता ।।नेगुडोरेटोपेहेरीनेतेउपर कसुंबल सेलुं धारणकर्‍युंहतुं ।। नेएक सेलुं रखभेनाखुं हतुं ने कसुंबल
सोनेरीपाघ मुस्तके धारण करीहती।। नेकंकुमो चांदलोकर्‍योहतो ।। नेपोतानामुखारविंदनी आगललसाधु तथा घणा कहरिभ-
क्तनीसभा भराईनेबेठीहती ।। पछे महाराज बोल्याजेजे नेसदाय सुखियारहेवुंहोय वे कोई दिवस दुःखदेखवुं नहोय तेने
आवातकहीशुं।। ते प्रमाणे समजीने वरते तोतेसदायसुखिया रहे नेतेने कोईदीवस दुःख आवेजनहिं ।। तेवातकहीयेतेसांभ-
ळो ।।जेपरमेश्वरे जगतनीउत्पत्तिकरीने तेजगतना सर्वे मनुष्योने सुखआपवानेअर्थे परमेश्वरे पोतानोधर्म रुपिहुतमोक
ल्योछे ।। तेधर्मने जे राखेछे तेसदायसुखनेपामेछे ।।नेजे धर्मने नथि राखता ते दुःखनेपामेछे ।। तेधर्म बेप्रकारनो छे ।।एक
वर्णाश्रमनोधर्मछे।। नेएकएकांतिकधर्मछे ।। तेवर्णाश्रमने धर्मे करिनेपापनोक्षयथायछे ।। नेएकांतिकधर्मेकरिने भगवानना
अक्षरधामनेपमायछे।। तेजेप्रथम वर्णाश्रमनोधर्मपालीने निसपापिथायछे ।। त्यारपछे ते एकांतिक धर्मने पामेछे ।। नेएकां-
तिकधर्मने पामिनेभगवाननोएकांतिकभक्तथईनेअक्षरधामनेपामेछे ।। माटेआत्मानामोक्षने अर्थे सर्वे मनुष्यमात्रनेव
र्णाश्रमनोधर्मजरुर पालवो ।। अनेजेधर्मपालेछे ।। तेनेआलोकमां कोईदहाडे दुःख आवतुं नथी ।। अनेपरलोकमांपणम-
हासुखनेपामेछे।। अनेजे धर्मने नथीजाणताने धर्मनो त्यागकरेछे।। तेने आलोकमांज रुरदुःखआवेछे ।। अनेपरलोकमांन
केमांपडेछे।। हवेधर्मशुंछे तोचारवरणने चारआश्रमनानोखानोखाधर्मछे ।।तेमांग्रहस्थाश्रमिनोधर्म कहियेछेये ।।जेग्र-
हस्थनेपरमेश्वरे एम आज्ञा करिछे जे ।। तेनेजेजे हक मेहेनतकरिने जे जे अन्न धनादिक पदार्थ कमावुं ।।तेमांथीदसमोभाग
चोखो काढिने भगवानने अरपण करवो ।। नेबाकि नवभागरह्या तेनेपोतानादेह निरवाहमां वावरवा ।। नेतेमां पणजो-
कोई वधारे परार्थरहे ।।तोतेने परउपकार करवो।। एविरीते जे धर्मनो भागकहाडिने भगवानने अरपणकरेछे।। तेने कोईदहाडे वे
हेवारमां दुःख आवतुं नथी नेतेने सुखेथी वेहेवारचालेछे ।। नेएविरीते जे धर्मनो भाग कहाडेछे ।।तेकोई दिवस अनितिअधर्म
करेजनहिं।। नेतेने परमेश्वर तेनाउद्यममां रस मुकेछे ।। केहेताते धर्मनाभागने काढनारो थोडोउद्यमकरे तेमांतेनेघणीउ

पजआवेछे ॥ अनेतेनापाप सर्वे नाशपामीजायछे॥ नेतेना उपर परमेश्वरनी कृपाथायछे ॥ अनेजेपोता नाउद्यमथकि प्राप्तथया
जेअनंत धनादिक पदार्थ ॥ तेमां थीदशमो भाग भगवानने अर्पणनथीकरतो नेते धर्म भागनो धणीपोते थाय छे तेतोमहापा
पिछे॥ नेतेतो आलोकमांजरूर दुःख पामेछे॥ अनेजेधर्म भाग पोताने जाणे काढिने भगवानने अरपण न थीकरतो तेने
परमेश्वर राजाद्वारे लेयरावेछे ॥ पण परमेश्वर पोतानो भाग मुकतानथी ॥पणजेपोताने जाणे भगवानने धर्मभाग अर्पणकरेछे
तेनिस्यापिथई नेमोक्षनेपामेछे॥ अनेजे धर्म भाग पोताने जाणे अर्पणनथीकरतो ॥ ते पुरुषपापने पामतो थको राजाचोर
अग्निद्वारे डंडाईने नर्कमां जायछे॥ माटेआसमे लोकोए धर्म भाग काढिने भगवानने अर्पण करवो बंध कर्यो छे तेसारुईश्व
रे राजामां प्रेरणाकरिने लोकोने डंडवा मांड्याछे॥ मारे आरवंडे रावने ईश्वरेज प्रेरणा करिछे ॥जे कोई लोको धर्म भाग अर्प
ण करवामांतो समजताजनथीमाटे राजाए सर्व स जेवा मांड्युछे॥नेकोईना घरमां धातुपात्र रहेवादेवुंनथी ॥एवुं ब्राह्मण
भाट आदिक सर्वेनुं जेई जे वुं॥ केमके सर्व लोको धर्म भाग ना धणिथईने पोतेज भोगवताथया छे॥ माटेराजानेईश्वरेज एवि
प्रेरणाकरि छे॥ अने ज्योसर्वे लोको धर्म भाग काढिने भगवानने अर्पणकरवा लागे तो हमणे राजानी बुद्धिसारि थायने सर्वे
लोकोने सुखथाय तेम करवा लागे॥ एविरीतेईश्वरराजामां प्रेरणाकरेछे॥ पणआसमे लोकोनी बुद्धि धर्म उपरथीउठि
गईछे माटेतेवुं थवुं महाकठणछे॥ अने ज्यारे धर्म उपर लोकोने आस्था आवशे॥ तोज्यारे कोईना घरमां अन्नरखवारहे
शेनहिं॥नेमहापिडानेपामशे ॥त्यारे ईश्वरने पोकार करवा लागशे ॥नेकोई धर्म गुरुहशे तेनेएम कहेशेजे हे महाराज अ
मारुं दुःख मटे तोतमे जेमकहोतेमकरिये ॥त्यारे ते धर्मगुरु तेने धर्मभाग गुरुने अर्पण करवानुं कहेशे ॥एटलेराजीथ
ईने अर्पण करवा लागशे॥ पण सारि स्थिति होय ने घरमां अन्न रखावाम लतुंहो य त्यां सुधि कोई नो उपदेशमनाय नहि
जेमकोईकिधन वानग्रहस्थ होय॥ तेनाशरिरने कोई कठण ग्रह आवनारोहोय ॥ नेतेशरिरे साजो नीरोगिहोय तेवासमा
मांकोई ब्राह्मणातेने एम कहेजे तारे घातचंद्र आवनारो छे॥ तेतुनेपिडाजरूरकरे एम छे ॥ माटेतेना निवारणने अर्थेशि

यविश्नुसूर्य गणपति आदिकदेवनामंत्रजपाव्य ॥नेवन्नाविस ब्राह्मण साधूजमाड्य नेदसविस रुपियानुंदान पुन्यकर॥तो तने घातचंद्रनडे नहिं ॥एम ब्राह्मण तेग्रहस्थने तेनाहित साऱु कहे ॥पण तेन्नारिरे साजोहोय त्यांसुधी तेने मनायनहिं ॥ नेतेसामो ब्राह्मणनेएमकहेजे तारेजमखुंइन्नोनेमारी पासेथी पैसा धूतिजवाहन्नो॥ पणहुं धूतावए योनथी।।एमन्नारीरे सा-जोहोय त्यांसुधितेब्राह्मणनोउपदेन्ना हितकारीछे॥पणमनायनहि॥ पणतेपुरुषतेनान्नरीरे मांदो थाय ॥नेन्नारीरमांपिडाब हुथवालागे नेमरणतुल्यथईजाय ॥ त्यारेते ब्राह्मणने तेडाविनेएमकहेजेहुं आ मंदवाडमांथीजीवतोरहुं नेसाजोथाउंतो तुंजेमकहे तेमकरुं ॥एविरीतेदुःखनी वखतेते ब्राह्मणजेमकहे तेमकरे ॥पणसारीस्थितिमांदानपुन्य करायनहिं ॥ अनेजे सारी स्थिति मांदान्यपुन्य करेछे तेनेदुःखआवनारुंहोय तेमटिजायछे॥ पणसारीस्थितिमांकोईकजदानपुन्य करनाकेछे॥ अनेदुःखआविपडे त्यारेतो सर्वे दानपुन्यजप करवालागेछे॥ तेम लोकनी सारिस्थिति नेसंपत्तिवानहोय तेनेधर्मगुरु धर्मभाग काढिने भगवानने अरपण करावानोउपदेन्नाआपे ते घणालोकोने मनायनहि माटे ते अंतेजरुरदु-खपामवानांछे॥ अनेज्यारेदुःखपामन्नेत्यारे धर्मगुरुनोउपदेन्नामनान्ने ॥पण आज मनाय एवुंजणातुंनथी॥ माटेवळी रे राजामां प्रवेन्नाकरिनेअनेक प्रकारना कायदा करिने पैसालोकोपासेथीलेवामांड्याछे तेपैसा घरमांथीजन्ने तोपण भगवा-नना तो चोररहेन्ने॥ नेतेपापेकरिनेनर्कमां पडवुंथन्ने॥माटेजे समजुहन्ने नेजेनेपरलोक आलोकमां सुखियाथवुंहोय तेनेपोतपोताना वर्णाश्रमना धर्ममांरहिने ग्रहस्थ होय तेने पोतपोताना उद्यम थकि पोताने प्राप्तथयुंजे अन्नधनादिक पदार्थ तेमांथीवेदमांकह्या प्रमाणे दसमोभागकाढिने भगवानने अर्पण करवो ॥कहेतां पोताना जेजे देव न्निववि श्नुआ-दिक प्रियेहोय ॥अथवापोतानागुरुहोय तेनामंदिरमां अर्पण करवो॥ अनेजे एविरीते श्रद्धायेसहित धर्मभागभग-वानने अर्पणकरन्ने तेआलोकमां कोईदहाडेदुःखपामन्ने नहिं॥ अने परलोकमांपण जरुरकल्याणतेनुंथायछे॥

॥ ॥इति श्रीसुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥

॥ ॥संवत्॥१९॥ओगणिसें॥२४॥चोविसना जेष्टवदि॥८॥अष्टमिने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्णभ
गवानगामश्री सोजींत्रामध्येपोतानामंदिरमां सेहेजवटउपर गादितकिये युक्तपलंगबिछावीने तेउपर विराजमानथया
हता॥नेसर्वे जरियानी वस्त्रधारणकस्यां हतां॥ ने ललाटने विषे कंकुनोचांदलोकस्योहतो॥ नेसर्वेअंगने विषे पुष्पनां
आभूषणशोभीरह्यां हतां॥नेपोतानामुखारविंदनीआगल साधूतथाघणाक हरिभक्तनीसभाभराईनेबेठिहति॥ पछेम
हाराजबोल्याजे परमेश्वरे प्रथम सृष्टि करित्यारे सर्वे ब्राह्मणहता॥ अनेतेनेषट्कर्मकरवानीआज्ञापरमेश्वरे करिहति
तेखटकर्ममांसर्वे बराबरज्यांसुधिरह्यांत्यांसुधि सर्वे ब्राह्मणकहेवाताहता॥ नेसर्वेएकपंक्तिमां बेसीनेखाताहता
॥पछेतेषटकर्ममां थीकेटलाक ओछां कर्मकरवालाग्या। त्यारे ते क्षत्रि कहेवाणा॥ तेथी ओछां कर्मरह्यां॥ त्यारेते
वैश्यकेहेवाणा॥ अनेते थीओछां कर्मकर्या॥त्यारेते शुद्रकहेवाणा॥अनेतेथीओछां कर्मकर्यां त्यारे तेअसतशुद्र कहेवाणा॥अ
नेमुद्दल कर्म करवानोत्यागकस्यो त्यारे तेढेडतथाओजगाणा तथामलेच्छादिक भावनेपामि गया॥माटे खटकर्मकरवे करिने
जीवउंचीपदवीनेपामेछे॥अने खटकर्मनो जेमजेमत्यागकरेछे तेमतेमनिची निचीगतिनेपामतोजायछे॥तेसर्वेमनुष्य मात्र
नेखटकर्मकरवानीआज्ञावेदनेविषे कहिछे॥अनेजेमनुष्यछ करम बराबरविधिसहितकरेछे तेखरोब्राह्मण कहेवायछे॥
कहेतां तेपरमात्माने जाणनारो थायछे॥ पणनिस्कामकर्मे करिनेअंतःकरणने स्फद्धनथीकरता तेनेभगवान ओलखाता-
नथी॥ माटेजेनेसुखियाथवानुं होय॥ नेजन्ममरणनादुःख थकि मुकावबुंहोय तेनेसउ सउनाधर्म प्रमाणेजरूर वरतवुं॥
॥ ॥इतिश्रीमुख सिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः॥
॥ ॥संवत॥१९॥ओगणिसें॥२४॥चोविसना अशाडवदि॥४॥चतुर्थिने दिवस महाराजश्रीह
रिकृष्ण भगवान गामश्री धोलकामध्ये शोनीगिरधर रणछोडतथानरसैंरणछोड नेघेरउत्तरादेबार मेडीनी ओसरिमांगादि
तकियाजुक्तपलंगबिछावीने तेउपर विराजमान थयाहता॥ नेसर्वेजरियानीवस्त्रधारणकर्याहतांनेपुष्पनांआभूषण

सर्वे अंगमां नो भिरह्यां हतां ॥ ने कंकुनो चांद लोक ल्यो हतो ॥ ने पोताना मुख्यारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्त नी सभा भराई ने बेठि हती ॥ पछे संध्या आरति थया पछे महाराजबोल्या जे वेदने विषे कह्युं छे जे ॥ ॥ रते ज्ञात्वा न तन मुक्तिर्हि ॥ ॥ ए श्रुतिमां एम कह्युं छे जे ज्ञान विना मुक्ति थाय नहि ॥ ते ज्ञान श्रुंतो क्षर अक्षर ने अक्षरातित ए त्रण पद ने जाणवा तेनुं नाम ज्ञान कहेवाय छे ॥ हवे त्रण ने जाणवाने अर्थे तेना रूप कहियें छीये ॥ जे क्षर ते श्रुंतो स्थूल सूक्ष्म कारण ने महाकारण ए चार देह ॥ अने जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति ने तुरिया ए चार अवस्था ॥ ए जिवना चार देहने चार अवस्था कहेवाय छे ॥ अने वैराट सूत्रात्मा ने अव्याकृत ए त्रणनो अभिमान धारण करनार ईश्वरनो आत्मा महतउपाधियें युक्त ए ईश्वरना चार देह अने उत्पत्ति स्थिति ने प्रलय ने महाप्रलय ए चार ईश्वरनी अवस्था कहेवाय छे ॥ ते जीवना देहने पंड कहे छे ॥ अने ईश्वरना देहने ब्रह्मांड कहे छे ॥ ए पिंड ने ब्रह्मांड तेनुं नाम क्षर कहेवाय छे ॥ कहेतां मिथ्या नाशवंत छे ॥ अने ए चार देहने चार अवस्था ते ने ज्ञान प्रलय करिने पोते सुद्ध चैतन निराकार व्यापक आत्मा रूप थईने ते आत्माना प्रकाशक एवा जे परमात्मा तेना अंगनो प्रकाश हुं छुं ॥ कहेतां अज्ञान रूप अंधकारे युक्त हती तेने जेणे ज्ञान आपिने ब्रह्म रूप कर्यो एवा जे परब्रह्म परमात्मा तेनो दास छुं एम जाणिने ते परमात्माने विषे ध्यान करिने जोडाय छे ॥ ने परमात्मा विना तेनी दृष्टिमां बिजुं कांई देखातुं नथी ॥ एक परमात्मानी मूर्ति ने अखंड देख्या करे छे ॥ एवा जे ब्रह्मरूप मुक्त तेनुं नाम अक्षर कहेवाय छे ॥ अने हवे अक्षरातित ते श्रुंतो ॥ ॥ कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं समर्थ ॥ ॥ एवा जे अक्षरना आधार ने अक्षरथी पर अने ईश्वरना आधार ने ईश्वरथी पर अने जीवना आधार ने जीवथी पर ॥ अने मायाना आधार ने मायाथी पर सर्वना आधार ने सर्वथी पर एवा ने पोते सर्वाधार ॥ कहेतां पोताने कोईनो आधार नथी ॥ अने पोते पोताने ज आधारे रह्या छे ॥ एवा जे प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवान ते अक्षरातित छे ॥ ए रिते क्षर अक्षर ने अक्षरातितना रूप जाणिने क्षरनो त्याग करिने अक्षर रूप पोताने जाणिने अक्षरातित एवा जे प्रत्यक्ष परमात्मा तेनो आश्रय करिने ते भगवाननी आज्ञामां दृढपणे रहिने तेने विषे प्रिति ये सहित भक्ति करे छे

तेजीवनीमुक्तिथायछे॥ पछेसभामां एक स्क वेदांति ब्राह्मणबेगेहतो॥ तणे महाराजने प्रश्नपुछ्युं जेहे महाराज
तमे तो एम कहो छोजे जीवनो रवोछे॥ इश्वर नोरवोछे॥ मायानोरवीछे॥ ब्रह्मनोरवुंछे॥ नेपरब्रह्मनोरवोछे॥ एविरी
तेपांचभेदकहोछो॥ अनेवेद तथा वेदांत मां तोएमकह्युंछेजे॥ ॥ सर्वं खल्विदं ब्रह्म॥ ॥ एश्रुतिमांएम कह्युंछेजे॥ स
र्वे ब्रह्म छे॥ वलिकह्युंके॥ ॥ उं सोहं तत्वमसि॥ ॥ एमां पण एमकह्युंछेजे ज्ञाननोआपनारोजेगुरु तेणे शि
ष्यने कह्युंके उंजे ब्रह्म ते सोहं कहेतां हुंब्रह्म छुं॥ अने सिष्यने कहे तुं पण ते ब्रह्मछोएम कह्युंछे तेनुं केम समजवुं॥ पछेमहारा
जबोल्याजे वेदांत बे प्रकारनुं छे॥ एक निरबिजवेदांतछे॥ ने बिजुंसबिजवेदांत छे॥ तेमां नीरबिज वेदांतछे तेतो वेदना छ
अंगछे॥ तेनांथी छठुंअंगवेदांतछे॥ ते छठाअंगमां तो छठा भागनुं ज्ञानहोय॥ माटे तेतो पांचभागे अधूरु ज्ञान छे ते सारु
अधुरा ज्ञानमां पूरीसमजणहोय नहिं॥ माटे जे एकलानीरबिजवेदांतने समजीने सर्वेने ब्रह्म माने छे॥ ने पोताने पणब्रह्म
समजीने पछे विधि निषेधने खोटामानीने धर्म नियमनो त्यागकरिने पापपुन्यनेस मान मानीने निसंकपणे वरतेछे॥ ने
रामकृष्णादिक प्रत्यक्षपरमात्मा परब्रह्म तेनी उपासना भक्ति सेवा नथि करतो॥ ने ते ब्रह्मचारी कहेवातो होय॥ ग्रहस्थहो
य॥ संन्यासिथयोहोय॥ परमहंस कहेवातो होय॥ ब्राह्मणहोय॥ क्षत्रिहोय॥ वैश्यहोय॥ तेसर्वे महापापि छे॥ अने तेए
ज्ञाननाकथनारा सर्वेनर्क मां जश्वे॥ त्यारे ए वेदश्रुतिनो अर्थ केम छे॥ तो सर्वे ब्रह्म छे॥ बिजुंकांई नथी एम कोण
बोल्युंछे॥ तोजे प्रत्यक्ष परमात्मा नो आश्रयकरिने तेथकि ज्ञानने पामीने चारदेहनो ज्ञानप्रलयकरिने पोते ब्रह्मरुप थ
ईनेपरब्रह्मनी मूर्तिने विषे प्रीतिये करिये जोडाई गयोछे॥ ने जेनी द्रष्टि मां परमात्माविना बिजुं कांई पिंडब्रह्मांडादिक
देखातुंनथी॥ ते एमबोल्योछेजे सर्व ब्रह्मछे बिजुं कांई नथी॥ तेएवा ज्ञान नेपाम्यो॥ तेने सर्वे ब्रह्म छे ते खरुं पणजेने
एवुं ज्ञान तो थयुं नथी॥ ने देहने पोतानुं रुपमानीने विषयने भोगवतो होय॥ ने देहने सुखे सुखने देहने दुःखे दुःख मा
नतो होय मेमोढेथी कहेवा शिख्यो होय जे सर्वे ब्रह्मछे माटे पापपुन्य केने छे॥ एम जाणिने वेदमां कह्याजे वरणाश्रमना

धर्मतेनेतोडिनेवर्ततादोयतेतोपापीछे ॥ नेतेने अक्षरजाणिनेकल्याणनारुपवाअनेतेनासंगनो त्यागकरवो ॥ माटे सर्वे मां ब्रह्म
कोणेजाण्यो ॥ तोजेणेइंद्रियो अंतःकरण मांथी माईक पंचविषयनीवासनानो त्याग करीनेजेनांइंद्रियो अंतःकरण मांप्रत्यक्षपो
ताने मल्याजे भगवान तेने धर्मवा कहेतांजेकानेकरिनेजगतनाशब्दप्रितिये करिने सांभजतो हतो ॥ ते जगतनाशब्दने तेमांप्रि
तीतेनोत्यागकरिने तेकाने प्रत्यक्ष परमात्मानाशब्दसांभजया ॥ अनेजे त्वचायेकरिनेमाईकजगतना स्त्रियादिकनी प्रितिये
करिने स्पर्शकरतोहतो ॥ तेजगतना स्त्रियादिक पदार्थना स्पर्शने तेमां प्रितितेनो त्याग करिने तेत्व चाये करिनेप्रत्यक्ष भ
गवानना चरणनो स्पर्शकरेछे ॥एविरीतेजेठेकाणेजगत देखातुंहतुं ॥ तेजगत नेठेकाणे ब्रह्मजे परमात्माप्रत्यक्ष भगवानते
नेजोथामाटेतेने ॥ ॥सर्वंखल्विदं ब्रह्म॥ ॥नो अर्थ सिद्ध थयोजाणवो ॥ अनेतेविना जे माईकजगतना पंचविष-
यने प्रितिये करिने भोगवेछे ॥ नेमोढेथीएम कहेछेजे सर्वे ब्रह्म छे ॥एम कहे नाराने तो ब्रह्म बकवा थयोजाणवो ॥नेते
तोपापिछे ॥नेतेनोजेसंगकरे नेतेनीजिवात माने तेने पण महापाप लागेछे ॥अनेजो सर्वे ब्रह्म होय ॥ ने बिजुंकांई नहोय
त्यारे शास्त्रसांभजवानुं काम शुं रह्युं॥ अनेगुरु करवानुंपण शुंकाम रह्युं॥ अने धर्म नियमजपतपतिर्थव्रत कर्मउपास
नाज्ञान एसर्वे रखोटुं ठरेछे॥ केमकेसर्वे एक ब्रह्मछे ॥ त्यारे ब्रह्म नेतो कांई करवुंनथी ॥माटे सर्वे ब्रह्मनथी ॥ ने ब्रह्म तोएक
प्रत्यक्षपरमात्मा राम कृष्णादिक भगवानना अवतारते ब्रह्मछे ॥ अने तेनोआश्रय करिने तेने विषे प्रितियेकरिनेजोडाईजा
यछे ॥ तेपण ब्रह्मरुपएवा प्रत्यक्ष पर ब्रह्मनोदासछे ॥ अने ते विना बिजासर्वे मायानाजीवछे ॥ ने तेजन्म मरणनेपामे-
छे॥माटेतेजीवोने ज्ञान आपिनेमायापर करवाने अर्थेप्रत्यक्ष परमात्मा उपदेश निमित्त बोल्याछेजे ॥ ॥ॐ सोहं त-
त्वमसि॥ ॥तेनोअर्थ ॥ ॥जेसर्वेथीपर नेसर्वेनो कारण ने सर्वे नोआधार नेजेनेवेद नेति नेति कहेछे ॥ तेहुंछुं
॥एमम नुष्यस्वरूप एयाजे प्रत्यक्ष भगवान तेणे पोताने शरणे आव्यो एवोजे जीव तेनेपोताना स्वरूपनुं ज्ञान आपवा
सारुं कह्युं॥ त्यारे तेशरणे आव्योएवोजेमुमुक्षु तेणेकह्युंके त्यारेहुं कोणछुं ॥ त्यारे ते परमात्मायेकह्युंकेतुं पण तेनोदासछे

त्यारे कहे हुं तेने क्यारे पामुं ॥ त्यारे तेणे कह्युं के तुं मारो आश्रय राखिने मारा विना बिजे प्रीति होय तेनो त्याग करवाने अर्थे मारी आज्ञा पाळ्य ने हुं कहुं ते प्रमाणे ज्ञान समज्य एटले ते स्वरूपने हुं तने पमाडिस ॥ ए विरीते प्रत्यक्ष भगवानना आश्रय करिने तेथकि कर्म उपासना ने ज्ञान सिद्ध करे छे ॥ ते जीव नुं जीवपणुं मटिने ब्रह्मरूप थईने परब्रह्मनो एकांतिक भक्त थईने मोक्षने पामे छे ॥ ते मां उपासना ते शुं ॥ तो प्रत्यक्ष पोताने मळ्या जे सद्गुरु ज्ञानदाता मनुष्य स्वरूप भगवान तेनो आश्रय राखवो कहे तो ते विना बिजो कोई नो आधार नहिं एक तेनो ज आधार राखवो ॥ तेनुं नाम उपासना कहेवाय ॥ अने कर्म एटले शुं तो ते प्रत्यक्ष भगवाननी आज्ञा दृढ करिने पाळवी ॥ ने तेमां ज रायफेर पडवा दे वो नहिं ॥ तेनुं नाम कर्मकांड कहेवाय छे ॥ अने ज्ञान एटले शुं ॥ तो चार देहने चार अवस्थानो त्याग करिने तेथी नोखो एवा जे सद्गुरु चैतन आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप जाणिने ते आत्माना प्रकाशक एवा जे परमात्मा परब्रह्म ते सर्वेना आधार छे ॥ ने तेथी पर कोई नथी एवा जे परमात्मा ते सदाय अखंड अक्षरधाममां रह्या थका जिवोने पोतानुं स्वरूप जणाववाने अर्थे ॥ ने जीवोने ज्ञान आपिने मुक्ति आपवा सारुं पोतानी स्वइछाये करिने राम कृष्णादिक मनुष्य स्वरूपनुं धारण करे छे ॥ एम जाणीने ते प्रत्यक्ष भगवानने ब्रह्मना आधार जाणवा ॥ ने ते प्रत्यक्ष मूर्तिने विषे इंद्रियो अंतःकरणने अनुभवे करिने जोडाई जवुं ॥ तेनुं नाम ज्ञान छे ॥ ने ए विरीते कर्म उपासनाने ज्ञानने समजीने प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रीति करे छे तेनी आत्यंतिक मुक्ति थाय छे ॥ अने जे राम कृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवाननो आश्रयनो त्याग करिने एक एम कहे छे जे हुं जीव छुं ने हुं अत्ता नी छुं ॥ ने पंचविषयने विषे लोलुप वर्ततो होय ॥ एवो एक पामर जीव अने एक एक ज्ञानि रबिज वेदांतना पुस्तकने साभळीने तथा वांचिने तेमां कथा प्रमाणे समजीने एम कहेतो होय ॥ जे स्थूलदेह हुं नहिं ॥ सूक्ष्मदेह हुं नहिं ॥ कारणदेह हुं नहिं ॥ महाकारणदेह हुं नहिं ॥ तथा जाग्रत स्वप्न सुसुप्ति तुरिया ए चार अवस्था हुं नहिं ॥ तथा विराट सूत्रात्मा अव्याकृत ने तेनो अभिमानी ईश्वर ते हुं नहिं ॥ ने हुं तो सर्वथी पर छुं ॥ हुं ब्रह्म छुं ॥ हुं सच्चिदानंद छुं ॥ एम कहेतो होय ॥ ने एम जाणतो होय ॥ अने एम जाणिने विधिनीषेधने मिथ्या जाणिने विष

यने भोगवतो होय ॥ अथवा विधिनिषेधनेसत्यजाणिने विषयनो त्यागकरिने निरवासनीकपणे बर्ततो होय पण पोताथी पर
परमात्मा परब्रह्म छे । नेते परमात्मा रामकृष्णादिक अवतारनुं धारण करे छे ॥ एमन समजतो होयने एम समजतो होयजे
आत्मा तेज परमात्मा छे । एम समजनारो एवो एक ज्ञानी अने एक कांईन समजतो होय ॥ एवोजे पामरजीव ॥ एबेय
सरखा छे ॥ नेए बेय मरिने नर्कमां जशे ॥ केमके ब्रह्मरुपथाय पण परब्रह्म एवाजे प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिक तेनी
उपासनाभक्ति नकरे तो तेने कांई पण सिद्धिथातीनथी ॥ नेप्रत्यक्ष भगवाननी उपासनानेभक्ति विनानो पोताने ब्रह्मरु
प माननारो एवोजे ज्ञानी तेनेतो अज्ञानीजीवनां करतां उलटुं वधारे बंधन थायछे ॥ नेतेनेतो परमात्मा पोताना अवतार
रामकृष्णादिक तेने नमानवारुप पापेकरिने तेने ब्रह्मना कोक देशने विषे महासकस्तिमां लिनकरिमूके छे तेपाछोते
नेकोई दिवसकाढतानथी ॥ माटे प्रत्यक्षपरमात्मानी भक्तिने उपासनानो त्याग करिने हुं ब्रह्म छुं ॥ एमसेमजवुं ॥ एमो
टुं पापछे ॥ नेतेनुं कोईकाळे कल्याणथाय नहिं ॥ त्यारे तेमां कोईने एमशंका थायजे ब्रह्म रुपेपोताने मानवुं ॥ तेपा
पशे ॥ तोहाजे ब्रह्मरुपमानवे करिने रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवाननी उपासनानेभक्ति टलिजाय एवुंजे ज्ञानतेतो
महापापरूपछे ॥ अने प्रत्यक्ष भगवाननी उपासनाने भक्ति दृढ करवासारुं ब्रह्मरुपथवुं ॥ तेतो मोटुं पुन्यछे ॥ जेमको
ई रजपूतनी दिकरी होय ॥ ते रूडागुणशीखिने पछे चक्रवती राजानेपरणे ने राजानी आज्ञा प्रमाणे करे नेपतिव्रताना
धर्मपाळे ॥ तोतेमहासुखने पामे ॥ नेजेटलामां राजानुं राज्यछे ॥ तेटलामां राणिनुं पण राज्य कहेवाय ॥ अनेजेटलीरा
जानी समृद्धि तेटलीराणिनी समृद्धि कहेवाय ॥ नेजेटलुं राजासुखभोगवे तेटलुं राणि पण सुखभोगवे ॥ अनेतेरज
पूतनीदिकरि रूडागुण शीखे ॥ पणराजाने परणेनहिं ॥ तोते सुखने पामेनहि ॥ नेते कंन्या दुरभागणि कहेवाय ॥ अने
रुडागुणने पामीए विजेकंन्या तेजो कोई पोताना कुळने घटित एवोजे पुरुष तेने परणेनहि ॥ तो ते अंते जतां जरुर
भ्रष्टथायने महादुःखनेपामे ॥ अने वळिभ्रष्टथयामो होर रुडागुणने मानेकरिने राजानो द्रोह करे ॥ नेएमकहेजेरा-

ज्ञाते राजानथी ॥ ने हुं राजाछुं ॥ एमकहिनेहुकमकरथाजाय ॥ तोराजातेनेकोपायमानथईने जन्मकेदकरे ॥ नेतेमहादुःख नेपामे ॥ तेमतुरियापदनेपामयुंने ब्रह्मरूपपोतानेमानवुं ॥ वे तो रजपूतनेघेरजेम शुभ गुणवानदिकरि थई तेराजानेप र्णवाजोग थई ॥ तेम ब्रह्मरूपथयोते प्रत्यक्षपरमात्मानी भक्तिनेउपासना करवानोअधिकारीथयो ॥ तेउपर गितानोश्लोक छे ॥ ॥ ब्रह्मभूतप्रसन्नात्मा ॥ नसोसति नकांसतीस्मसर्वेशु भुतेशु ॥ मद्भक्तिं लभतेपरा ॥ ॥ अर्थ ॥ ॥ परमात्मा एवाजे श्रीकृष्ण ॥ तेणेकह्युंके मारिभक्तिनो अधिकारिकोणछे ॥ तोब्रह्मरूपने प्रसन्नछे आत्मा जेनो नेहरखमे शोक गया छे जेनानेसर्वेभूत प्राणिमात्रने विषे समानछे ॥ द्रष्टिजेनी तेमारीभक्ति करिने माराधामने पामवानोअ-धिकारीछे ॥ एविरीते ब्रह्मरूपथईने प्रत्यक्ष पर्मात्मानी भक्ति करेछे ॥ तेपरममोक्षनेपामेछे ॥ अनेपूर्वेनारद सनका दिकमुनियो तथा जनकादिक भक्तो ते ब्रह्मरूप थईने प्रत्यक्षरामकृष्णादिक भगवाननी भक्तिकरिने मोक्षनेपामि ग-याछे ॥ पणते विना प्रत्यक्ष भगवाननी उपासनानोत्यागकरिने कोई मोक्षनेपाम्योनथी ॥ माटे ब्रह्मरूपथईने प्रत्यक्ष भ गवाननी भक्ति करवी एजमोक्षनोअचल सिद्धांतछे ॥ ॥इतिश्रीमुखसिद्धांतसमा प्तः ॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमोनमः ॥ ॥संवत् ॥१९॥ओगणिसें ॥२१॥ चोविसना ॥ अषाडवदि ॥१२॥ द्वादशिने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्णभगवानगामश्री धोलकामध्ये ॥ सोनी परभुदासगोविंदजीने घेरउगमणेबारमेडिनाचोकमां पाटउपर विराजमानथयाहता नेसर्वेजरियानीवस्त्र धारणक-र्यांहतां ॥ नेपुष्पनां आभूषण सर्वेअंगमांशोभीरह्यांहतां ने केसरीअरचाने ललाटने विषे चांदलो कर्योहतो ॥ नेपोतानामुखारविंदनीआगल साधु तथादेशदेशनाघणाक हरिभक्तनी सभाभराईनेबेठिहती ॥ पछेमहाराज बो-ल्याजे कर्मनि गहन गति छेके हेतां कर्म नेजथार्थजाणवुं घणुं कठणछे ॥ ते कर्मशुंतोवेदेजेजे आज्ञा करि होय ॥ ते प्रमाणे ॥ वर्तवुं ॥ तेनुंनामकर्मछे ॥ तेवेदनीपेहेलीआज्ञाजे हिंसानकरवि ॥ बिजीआज्ञाजेखोटुंनबोलवुं ॥ त्रिजीआ-

ज्ञाजे तप करवुं ।। चोथी आज्ञा जे व्रत करयां ।। पांचमी आज्ञा जे चोरी न करवी ।। छठि आज्ञा जे विभिचार न करयो ।। सातमी आज्ञा
जे मांस न खावुं ।। आठमी आज्ञा जे मद्य न पीवुं ।। नवमी आज्ञा जे कोईनी निंद्या न करवि ।। दसमी आज्ञा जे विष्णुनी भक्ति करवि
।। इत्यादिक अनेक प्रकारनी आज्ञाओ वेदमां कहेली छे ।। ते आज्ञाओ प्रमाणे वर्तवुं ।। तेनुं नाम कर्म छे ते आज्ञाओने जे बरा
बर पाले तेनुं कल्याण थाय ।। हवे ते आज्ञा अनेक प्रकारनी छे ।। तेमां परस्पर विरुद्ध आवे छे ।। तेने जाणवुं ते घणुं कठण छे ।। ते
शुं विरुद्ध छे ।। तो वेदनी पेहेली जे हिंसा न करवि ।। ने बिजी आज्ञा जे खोटुं न बोलवुं ।। ए बे आज्ञा जरूर पालवानी छे ।। पण तेमां एवो
दैवाकाल आवे जे कोई गायने कसाई मारतो होय ।। ने ते कसाईना हाथमांथी वछुटीने गाय नासी जती होय तेने आपणे जतां दी
ठी पछे तेने घांसे कसाई आव्यो ।। तेणे पुछ्युं के एक गाय आवा घरणनी ने आवां तेनां सिंगडां छे ।। ते जतां तमे दीठि एम कह्युं ने ह
वे जो साचुं बोलशुं ने तेने गाय बतावीशुं तो हिंसा थशे ।। अने जो गायने उगारवा जइशुं तो खोटुं बोलवुं पडशे ।। त्यारे त्यां
केम करवुं ।। तो तेनो तोल करवो ।। केनो परिणाम साचो छे ।। एम तपास करिने जोईशुं तो गायने उगारवी ।। एज श्रेष्ठ छे ।। ने
गायने उगारवाने अर्थे खोटुं बोलवुं पडे ते तो साचुं छे ।। एम जाणिने ते कसाईने एम कहेवुं जे न मारी गायने में जतां दीठि
ते गई होय उगमणीने बतावयी आथमणी ।। एवि रीते खोटुं बोलीने गायने उगारवि ।। ते उपर थी खोटुं बोल्यो कहेवाय
खरुं पण तेनो परिणाम साचो छे तो ते खोटुं ते पण साचुंज छे ।। केमके ते कसाई महा अधर्म करतो हतो ।। माटे जे उपाय क
रिने कसाईना हाथमांथी गाय मुकाववी एज साचुं छे ।। ते एज वेदनी आज्ञा छे ।। जे सर्वे आज्ञाओ पालीने जीव जीव प्राणीमात्र
ने सुखि करवा ।। अने ते प्राणियोने कोई दुःख देतुं होय ।। तो ते थकि हरेक उपाये करिने पोताना सामर्थ प्रमाणे तेने उगारवा
एज धर्म छे ।। ने एज परमेश्वरनी आज्ञा छे ।। एम समजे ते ज्ञानी कहेवाय ।। अने जे मूरख होय ते तो एम जाणे जे गाय तो मरे
के जीवे ।। पण आपणे तो खोटुं बोलवुं नहिं ।। एम समजीने ते कसाईने गाय बतावे तो तेमनमां एम जाणे जे हुं साचुं
बोलुछुं ।। तेने तो खोटा बोलो जाणवो ।। ने ते तो महापापि छे ।। केमके तेना बोलवाथी गायनो वध थशे माटे तेनुं साचुं

ते साफ खोटुं छे ॥ अने गायने उगारवाने अर्थे खोटुं बोल्यो तेणे करिने गाय जीवती रहेशे ॥ माटे तेनुं खोटुं ते साफ साचुं छे ॥ ए
विरीते तेना कर्मनो विवेक अनेक प्रकारनो छे ॥ ते पोतानी मेले आज्ञा शास्त्रमांथी सांभलिने पालवा जाय तो धर्म होय
तेने अधर्म मनाय छे ॥ ने अधर्म होय तेने धर्म मनाय छे ॥ माटे महत्पुरुषना संगविना कर्मनी शुद्धि थतीज नथी ते कर्म
छे ॥ तो पापक्षयने अर्थे पण सत्पुरुषना आश्रय विनाने तेना संगबिना जीव पोतानी मेले जे जे शुभ कर्म करे छे ते मांउलटां
पापज वृद्धि पामे छे ॥ माटे कर्मनी गहन गति छे ॥ केहेतां निरबाधपणानां कर्मने जाणी शकाय एम नथी ॥ केमके अज्ञान
नाने कर्मना भेद अनेक प्रकारना छे ॥ ते एकादशीने दिवस अन्न खावुं नहिं ॥ तथा त्यागीने नित्ये एक वखत खावुं ॥
ते एकादशिने दिवस तो सुरजन खावुं ॥ ने पछे रोज एक वखत खावुं ॥ एम आज्ञा छे ॥ पण तेने शरीरे मंदवाड थाय ॥ त्यारे
तेने नियम न राखवुं ॥ ने एकादशीने दिवस पण अन्न अने खावुं ॥ ते एक बे वखत खाय ॥ जे विरीते शरिने सुख थाय तेवीरी
ते खाय तेनो बाध नहिं ॥ ने मांदाने उपवास न थाय ने अन्न खाय एज धर्म छे ॥ केमके देह छे ते धर्म पालवानुं साधन छे ॥ तेदे
हु साजो हशे तो धर्म ज्ञान वैराग्य भक्ति सिद्ध शुभ थशे ॥ पण देह विना ए साधन थाय नहिं ॥ माटे देह पडि न जाय तेवीरीते
वर्तवुं ॥ एम समजीने मांदो होय तेने एकादशी न कराय तथा एक बे वखत खावानो नियम त्यागीने न रहे तथा गल्याचिक
णानो नियम न रहे तेनो कांई बाध नहिं ॥ ते मांदो भगवान प्रत्यक्षनो भक्त छे ते कर्म कांई नथी करतो पण तेने सर्वे कर्म
थाय छे ॥ अने मंदवाडमां पण एम जाणे जे एकादशीने दिवस ते अन्न खावानी ना पाडि छे ॥ ते मे केम खवाय ॥ ने बिजा पण
एम जाणे जे ते मांदो छे ॥ पण एकादशीने दिवस तके म खवाय ॥ अने साधु मांदो छे ते कांईक तेने भावे तेवुं दूध दहिं घी गोल
साकर खाय तो ठीक ॥ पण तेने खवाय नहिं ॥ केमके तेने नियम छे एम जे समजे तेने मूरख जाणवो ॥ केमके मांदाने तो ए-
कादशीनो तथा एक बे वखत खावानो तथा गल्याचिकणानो नियम न रहे तेनो दोष नथी ॥ माटे ते मांदाने तो जेम रुचे
ते प्रमाणे एकादशीने दिवस खाय तथा गल्युं चिकणुं खाय ॥ तथा एक बे त्रण वखत खायने शरिरने सुख थाय एम करवुं ॥

ने बिजानेएमकरावबुं एजस्फ़भकर्मछे ॥ अने तेमांजे दोषपरठेजे जोएकादशीने दिवस अन्नखायछे ॥ तथात्यागिथईने गल्युं चिकणुं खायछे ॥ एम समजीनेजे मांदानो अवगुण लियेछे तेने पापी जाणवो ॥ अने शरीरे निरोगी थायपछे जेनाजे मनियमहोय ते प्रमाणे नियमराखवा ॥ नेतेमां फेरपाडे तो तेने भ्रष्टथयोजाणवो ॥ एविरीतना अनेकप्रकारना कर्मनाविवेक छे ॥ तेनेजाणवा घणाकठण छे ॥ माटेकर्मनी गहनगति कहिछे ॥ तेसारु प्रत्यक्ष भगवान तथा भगवानना एकांतिक निरवासनीक संततेनो आश्रयकरिने तेनीआज्ञा प्रमाणे करे तोतेनुं प्रत्यक्ष कल्याण थाय ॥ पणतेविनाशास्त्रमांथी सांभलीने तथा अज्ञानी गुरुओ तथा भगवाननाआश्रयनो त्याग करिनेपोतानीमेलेजजे कर्म करशेतेने अवलुंजकर्मथाशे ॥ नेतेनुंकल्याणकोईकालेथायनहिं ॥ तेपणश्रीकृष्णभगवानेकह्युं छे जे ॥ ॥दैविएसा गुणमयी ॥ मममायादुरतया मामेवये प्रपद्यंते मायामेतां तरं तिते ॥ ॥तथा॥ ॥सर्व धर्मान् परितज्य मामेकंसरणं व्रज अहंत्व सर्व पाप भ्यो मो क्षयीस्या मिमांस्फच ॥ ॥अर्थ॥ ॥जेअज्ञानदशामां पोतानामानेला ॥ एवाजे सर्व धर्म तेनो त्यागकरय ॥ नेएकमाराचरणने पामय कहेतांहुंकहुं तेमप्रमाणे कर्म कर्य तोहुंतनेसर्वपापथकिमुकाविश ॥ नेतारो मोक्षकरिश ॥ तुं कांई चिंता राखिशनहिं ॥ तथापेहेला श्लोकमां दैविनेगुणमयी एविजे मारीमाया तेदुःखेकरिनेतरायएवीनथी ॥ पणजोएक माराचरणनेपामे कहेतां मारो आश्रयकरिने मारीआज्ञा प्रमाणे वर्ते तोतेमायाने तरिजाय ॥ एविरीते सर्वशास्त्रने विषे तथा वेदने विषे कहेलुंछे ॥ जे क्षरअक्षरथीपरएवाजे एवाजे परमात्मा तेजपरमात्माजीवोनाकल्याण करवा सारु पोतानी स्वईछाये करिने राम कृष्णादिक मनुष्यस्वरूपनुं धारणकरेछे ॥ ते प्रत्यक्ष भगवाननोआश्रयकरिने तेनी आज्ञा प्रमाणे वरतेछे ॥ तेनांज सर्वकर्म शुभथायछे ॥ ने तेना पाप मात्रक्षयथईजायछे ॥ नेप्रत्यक्ष भगवानना आश्रये करिनेजजीवनोआत्यंतिक मोक्ष थाय छे ॥ पण प्रत्यक्ष भगवाननेमल्याविनाने तेनोआश्रय कर्याविना कोईनो मोक्षथायनहि ॥ नेते विना कर्मस्फ जे एटलांकरे पणतेने कल्याणनो मारगस्फ-

जतो नथी ॥ ते पूर्वे रावण हतो ते वेदनो भणेलो हतो ॥ ने सर्वे शास्त्रनो पण भणेलो हतो ॥ अने वेदशास्त्रना कह्या प्रमाणे परोक्ष परमात्मा
ने पामवा सारु कर्म बराबर करतो ॥ ने उपासना पण मोक्षपणे शंकरने परमात्मा जाणीने करतो हतो ॥ ने ज्ञान पण तत्वमसि महा-
वाक्यना अर्थने जाणतो हतो ॥ तथा जरासंध तथा हरणाकंस तथा सहस्रार्जुन तथा दुरजोधन तथा कर्ण इत्यादिक मोटा मो
टा राजा ने सर्वे कर्मकांडनी उपासनावाळा ने ज्ञानी हता पण तेणे प्रत्यक्ष परमात्मा राम कृष्णादिक भगवानना अवतार तेनो
आश्रय कर्यो नहिं ने सामो तेनो द्रोह कर्यो तो तेना कर्म उपासना ज्ञान सर्वे अफळ थई गया ॥ ने ते उलटा दैत्य केहेवाणा ॥ अने
व्रजना गोपि गोवाळ तथा वांदरा ने घो राजा भील सवरी भीलडी कुबजा आदिक घणाक भक्तो थई गया ॥ ते कांई भणेला न हो
ता ॥ ने कर्म उपासना ज्ञानमां पण समजता न हता पण तेणे प्रगट भगवाननो आश्रय कर्यो ने प्रगटनी आज्ञामां वरत्या तो
तेनो मोक्ष थई गया ॥ ने तेना सर्वे साधन पुरां थई रह्यां ॥ माटे प्रगट भगवाननो आश्रय करिने तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं एज
कर्म मोक्षने अर्थे थाय छे ॥ अने प्रत्यक्ष भगवान मळ्या विना ने तेनो आश्रय कर्या विना स्हु जे तेटलां शुभ कर्म करवा जाय
॥ ते सर्वे अशुभ कर्म ज थाय छे ॥ ने ते कर्मे करिने उलटुं वधारे बंधन थाय छे ॥ माटे जेने पोताना कल्याणने इछवुं तेने प्रत्यक्ष
भगवाननो आश्रय करिने तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं ॥ तो तेनुं साक्षात्कार कल्याण थशे ॥ अने आ समेजे प्रत्यक्ष अमारो
आश्रय करिने अमारी आज्ञा प्रमाणे वर्ते छे ॥ तेनां तो साक्षात्कार कल्याण थई रह्यां छे ॥ ने तेने तो कांई करवुं रह्युं नथी
॥ अने अमारो आश्रय मुकिने बिजा स्हु जे एटलां कर्म करे तिर्थ करे वृत करे यज्ञ करे होम करे ज्ञान कथे वैराग राखे भस्म
लिये । तप करे योग साधे पण एक प्रत्यक्ष हुं प्रथ्वी उपर हुं ने मारो आश्रय करे नहिं तो तेनां सर्वे साधन वृथा छे मे
ते सर्वे साधने करिने कांई पण सिद्धि थती नथी ॥ माटे जेने पोताना कल्याणने इछवु तेने सर्वे मतपंथादिकना धर्मनो
त्याग करिने प्रत्यक्ष भगवानने भगवानना संतनो आश्रय करिने तेनी आज्ञा पाळवी एज मोक्षनो अचळ सिद्धांत
छे अने पूर्वे जेनां जेनां कल्याण थयां छे ॥ ते प्रत्यक्ष भगवान जेने मळ्या छे तेनां ज थयां छे पण ते विना कोईनां क

ल्याणथयांनथी ॥ माटेते दुर्लभसमोआजनमारे सर्वेनेआव्योछे ॥ तेजेचेतशे तेनोमोक्षथशे नेजेनहिंचेते तेनर्कमांजशे
एसिद्धांतवार्ताछे ॥ ॥इतिश्री मुखसिद्धांतसमाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णा
यनमोनमः॥ ॥संवत॥१९॥ओगणिसे ॥२४॥चोविसना श्रावणशुदि ॥१॥ पडवाने दिवस
महाराजश्रीहरिकृष्णभगवान गामश्रीधोलकामध्ये जोशीसदाशीव कृपाशंकर नेघेरउतरादेबार ओरडानीओसरिमां गा
दितकिये युक्तपलंग बिछावीने तेउपरबिराजमानथया हता॥ नेसर्वेजरियानीवस्त्र धारणकर्यां हतां ॥ नेपुष्पनांआभू
षण सर्वेअंगमां धारण कर्यां हतां ॥ ने ललाटने विषे केसरनी अरचा करि हती॥ नेपोतानामूखारविंदनीआगल साधु
तथाघणा कद हरिभक्तनी सभा भराईने बेठिहती ॥ नेसंध्याआर्तिथयापछे॥ महाराज कृपाकरिने बोल्याजे आजक्तने
विषे एक स्कंदने सत्य एवोवेदोक्तधर्म छे ॥ ने तेवेदोक्तधर्मनुं प्रतिपादनकरे एवां सत्यशास्त्रछे अनेतेने जेजेजीव-
आसरे छे ॥ तेनुंकल्याणथायछे॥ अनेबिजो वेदोक्तधर्मथीउलटो पाखंड धर्मछे ने तेपाखंड धर्मनुं प्रतिपादन करेए
वांअसतशास्त्रछे॥ अनेतेपाखंडधर्मनेजे जेआसरे छे तेजीव नर्क मांजायछे ॥ हवे वेदोक्त धर्मनुं शुंरूपछे ॥ नेपाखंडध
र्मनुंशुंरूपछे ॥ तो धर्मज्ञान वैरागनेभक्ति एचारसाधनने सिद्धकरवा तेनुंनाम वेदोक्तधर्मछे अनेते वेदोक्तधर्मथीउल
टो एटले अधर्म अज्ञान राग नेअभक्ति एचार वानांजेठेकाणे होय तेपाखंडधर्म कहेवाय ॥ हवे धर्म ते शुं तो परमात्मा
परब्रह्मवेदोक्त धर्मना प्रकाशक एवाजे रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवान तेनीआज्ञाजे वरणाश्रमनाधर्ममां रहिने पंच
विषयथकिइंद्रियोने पाछिवालीने इंद्रियोनीवृत्तियोने प्रत्यक्षभगवानना स्वरूपमां जोडिदेवी॥ तेनुंनामधर्म छे॥ अने
ज्ञानते शुं तो देह आत्मानो विवेक करिने देहने मिथ्याजाणवो॥ नेआत्माने पोतानुं स्वरूप जाणिने ते आत्माना आत्माए
वाजे परमात्मा प्रत्यक्ष भगवान तेनीउपासना भक्ति करवि तेनुं नाम ज्ञानछे॥ अनेअज्ञानशुं तो प्रथमदेहआत्मानो
विवेककरिने पोताने आत्मारूप मानीने पछे ते आत्मा एज परमात्माछे एममानीने विधिनिषेधने तोडिने विषयने

भोगवेछे॥ नेते पछे विप्रीतवामिथईने मद्यमांसादिकने भक्षण करेछे॥ नेप्रत्यक्ष भगवाननाआश्रयथकि विमुखथईने
नर्कमांजायछे॥ तेनेप्रत्यक्ष भगवाननाआश्रयविना ज्ञानविकारपामीने विप्रीत वामीथईने महाअज्ञानी थायछे॥ अने
अधर्म शुंतो धर्मविकारपाम्यो॥ राट जेअधर्म थईगयो तेके विरीते धर्म विकारपाम्यो तो प्रत्यक्ष भगवानना आश्रयनो त्या
गकरिने शास्त्र मां कह्या प्रमाणे धर्मपाळे ने नियमराखे नेविषयनो त्याग करे पण ते प्रत्यक्ष सत्पुरुषना आश्रयविना
धर्मनियमअंतेजतांरहेतांनथी ने भ्रष्टथाय पछेधर्म नि यमनो त्याग करिने विषयनीसंकथईने भोगववामंडिजाय
छे॥ पछे तेएमकहेजे अधूराहोय तेने नियमराखवुं पडे॥ पणजे सिद्धदशानेपाम्योहोय तेने नियम शुंकरवा राखवो
पडे॥ माटेजे नियमराखे छे तेतोह्जिसीद्धनथीनेअधूराछे॥ नेअमेतोसिद्धछैये माटे अमारे शुंकरवा नियमराखवोप
डे॥ एमकहिने निषंकथईने विषयने भोगवेछे ने भ्रष्टथायछे नेकेटलाक विषयनारागीने भोळाने विस्वासी लोकोने
भ्रष्टकरेछे ने तेसर्वे मरिने घोरनर्क मांजायछे॥ ने एवो अधर्म मारगीपंथमांछे तेजैनेकुडापंथकहेछे तथा बिजपंथ
कहेछे॥ तेपंथधर्म विकारपामिनेअधर्मनो चाल्यो छे॥ तेधर्मने पाखंडधर्म कहिये॥ अनेते धर्मनीजेने प्रतिति आवेछे॥ तेसर्वे
जीवनर्कमांजायछे॥ माटेए पंथधर्मथकि भ्रष्टथयेलाछे॥ तेसारुए पंथमां धर्म नियम कोईराखतुंनथी॥ अनेते पाखंड
धर्मनीपुष्टीकरेएवाभक्त माळादिक असतशास्त्र कर्यांछे॥ नेतेने विषे वर्णाश्रमने ब्रह्मचर्यनुं अतिशे खंडन कर्युंछे॥
माटे तेवेदोक्त थी विरूद्ध पाखंड धर्मछे नेते मारग नर्कमांजवानो छे अने ज्ञान विकारपामिने अज्ञानरूप एवो विप्री
तवामिनोपंथचाल्योछे कहेतां जेपंथमां शक्तिनुं नामलेईने दारु मांटीनुं भक्षणकरेछे॥ एधर्म पण पाखंड धर्मछे॥
केमके दारु मांटिनुं भक्षण करवुं ते तो वामा जे शक्ति तेने गमतुंजनथी॥ माटे शक्तिनुंनाम लेईने दारु मांसनुं भक्ष-
ण करेछे॥ तेना उपर तो शक्तिनो उल्टो कोपथायछे॥ केमके वेदने विषे पांचदेवरुपे परमात्मानी उपासना करवि॥
कहिछे॥ तेचोरि छिनाळी दारु माटि जुठुं बोलवुंने हिंसा ए छ वानानो त्याग करिने पंचदेवमांथी जेदेवपोताने प्रीयहोय

॥तेनी उपासना भक्ति करथि तो ते देव तेना उपर प्रसन्न थायछे॥ एछ मांथी एके वानुं करतो हशे ॥ तो तेना उपर पांच मांथी एके देव प्रसन्न थाशे नहिं॥ नेसामुं तेना उपर जे देवनुं भजन करतो होय ते देवनो ज ते ना उपर कोप थशे। माटे जे शक्तिनुं नाम लेईने दारु मांटिने विभिचारादिक भूंडां कर्म करेछे॥ तेतो विप्रीत वामीछे॥ ने पाखंडीछे। ने ते चोखो नर्कनो मार्ग छे॥

॥ इति श्रीसुखसिद्धांत समाप्तः॥ ॥श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः॥

॥संवत॥१९॥ओगणिसें॥२४॥चोविसना श्रावण शुदि॥८॥ अष्टमीने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धोलका मध्ये भक्त आशाराम जेठाने घेर हिंडोला खाट उपर विराजमान थया हता॥ ने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां॥ ने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां ने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो॥ ने पोताना मुखारविंदनी आगल साधु तथा घणा क हरिभक्तनी सभा भराईने बेठि हति॥ पछे महाराज बोल्या जे आज अमे वात करिशुं॥ ते वातने जे समजशे तेने पछे कांई समजवुं रहेशे नहिं॥ अने ते वातनी जोडे कोई बिजी वात आवे एम नथी॥ ए वात तो एक ज छे॥ अने ए वातने जे समजशे तेना संशय मात्र टलि जशे॥ ने निरसंशयपणे परमात्माना स्वरूपने जाणिने परम मोक्षने पामशे॥ माटे आ वात खबरदार थईने सांभलजो जे एक परब्रह्म छे॥ ने एक निर्गुण ब्रह्म छे॥ ने त्रिजुं सबल ब्रह्म छे॥ ने चोथुं मिथ्या ब्रह्म छे॥ ते मिथ्या ब्रह्मना त्रण भेद छे॥ उत्तम मध्यम ने कनिष्ट॥ हवे मिथ्या ब्रह्म ते शुं तो आ जगतरुप जे विराट सूत्रात्मा ने अव्याकृत ए जे ईश्वरनां त्रण शरीर तेनुं नाम मिथ्या ब्रह्म छे। अने ए त्रण शरिरनो धारणनो करनारो जे ईश्वर आत्मा तेनुं नाम सबल ब्रह्म छे॥ अने ए मिथ्या ब्रह्म ने सबल ब्रह्म ते जेनी दृष्टिमां नथी॥ एवुं जे शुद्ध चैतन्य सर्वव्यापक तेनुं नाम निर्गुण ब्रह्म छे॥ अने ए निर्गुण ब्रह्म तो जेना अंगनो प्रकाश छे॥ एवा जे दिव्य मूर्ति परमात्मा तेनुं नाम परब्रह्म छे॥ हवे मिथ्या ब्रह्मना त्रण भेद कह्या तेनुं एरुप छे जे जाडा पंचभूतात्मक जे ईश्वरनुं स्थूल वैराट देह तेनुं नाम मिथ्या कनिष्ट ब्रह्म छे॥ अने ए स्थूलने प्रकाश करनारुं सूक्ष्म पंचभूतात्मक ईश्वरनुं सूत्रात्मा देह

तेनुं नाम मध्यम मिथ्या ब्रह्म छे ॥ अने ए वैराटने सूत्रात्मा जेमांथी उत्पन्न थयो ए बिजे अहंवृत्तिरूप देहधरनुं अव्याकृत देह तेनुं नाम उत्तम मिथ्या ब्रह्म छे ॥ ए विरीते त्रण प्रकारनुं मिथ्या ब्रह्मने चोथुं सबल ब्रह्मने पांचमुं निर्गुण ब्रह्मने छठा परब्रह्म ए प्रकारे वेदने विषे ब्रह्मना छ भेद कह्या छे ॥ अने ए छ प्रकारना ब्रह्मना स्वरूपने नजाणनारा एवा अज्ञानी जीवो ते असंख्य छे ते जीवोने ज्ञान आपवा सारु छ प्रकारनुं ब्रह्म ते आ मृत्युलोकने विषे मनुष्य देहनुं धारण करे छे ॥ अने मनुष्य स्वरूपने धारण कर्युं एवुं जे ब्रह्म ते जीवोने छ प्रकारना ब्रह्मनुं ज्ञान आपिने निर्गुण ब्रह्म रूप करिने परब्रह्मने पमाडे छे ॥ त्यारे ते जीवनी मुक्ति थाय छे ॥ हवे ए छ प्रकारना ब्रह्म तेणे मनुष्य देह धारण कर्यो होय तेने ओलखवानी एरील छे जे कनिष्ट मिथ्या ब्रह्म जे वैराट तेणे देह धर्यो होय तो ते पोतानुं स्वरूप जे वैराट तेना ज्ञानने वगर शिख्युं जथार्थ जाणतो होय ते पोताने आश्रये आवे जे जीव तेने वैराट रूप ने कनिष्ट मिथ्या ब्रह्म तेनुं ज्ञान करावे छे ने ते वैराटने विषे जेटली कल्पाओ छे ते सर्वेनुं साक्षातकार ज्ञान कराविने तेना जाणपाने विषे निरसंषय करे छे ॥ अने ते बाहार दृष्टिये जोयामां तो माणस जेवो ज जणातो होय ॥ पण तेने ज्ञाने करिने जोईये तो तेना जेवुं ज्ञान बिजा कोई माणस पासे होय नहि अने ते पोताना शिष्योने एम कहे जे हुं ईश्वरनुं शरिर जे वैराट तेने विषे अहंतछुं ॥ कहेतां हुं वैराट छुं ॥ माटे तमे मारे विषे प्रिति करिने मारा स्वरूपमां ज्ञाने करिने जोडाई जावो एटले तमे मुने पामशो ॥ पछे तेने विषे विश्वास राखिने जे प्रितिये करिने जोडाई जाय ॥ ते वैराटना साधर्म्य पणाने पामे ॥ अने ते विजरीते सूत्रात्मारूप मध्य मिथ्या ब्रह्म देह धर्यो होय तो ते सूत्रात्मारूप ईश्वरना शरिरना ज्ञानने जथार्थ जाणतो होय ने ते एम कहे जे हुं सूत्रात्मा ब्रह्म छुं ॥ अने तमे मारे विषे प्रिति करो एटले तमे तेने पामशो ॥ अने अव्याकृतरूप मिथ्या ब्रह्मे देह धर्यो होय तो तेने विषे विराट सूत्रात्माने अव्याकृत ए त्रणेनुं ज्ञान होय ॥ अने ते एम कहे जे हुं अव्याकृत ब्रह्म छुं ॥ अने तेने विषे जे प्रितिये करिने जोडाई जाय छे ते अव्याकृतरूप मिथ्या ब्रह्मना साधर्म्य पणाने पामे छे ॥ अने सबल ब्रह्मे देह धर्यो होय तो तेने विषे सूत्रात्माने अव्याकृत

एत्रणशरिर नेधारणकरिरह्यो एवोजे सबल ब्रह्म एचारे प्रकारना ब्रह्मना ज्ञानने वगर शिरव्युंजथार्थजाणतो होय ॥
नेतेने आश्रये जेजेजीव आवेतेने ज्ञान आपीने अनंतकोटिब्रह्मांड ने हुथेजीमां जनतुंटीपुं देखाय तेमदेखाडिये नेतेनो
करतांनेकारण एवोजेसबल ब्रह्म तेनुंज्ञानकरावे ॥अने पोतेएमकहेजे हुंसबलब्रह्मछुं॥ अनेतेनोजे आश्रयकरिनेते
नीभक्तिकरेछे तेसबलब्रह्मरुपजे मूलप्रकृतिपुरुष तेनासाधर्मपणानेपामेछे ॥ अनेनिर्गुण ब्रह्मनो अवतार थयो होय
तोतेने विषेत्रणप्रकारना मिथ्या ब्रह्म नुंज्ञानहोय॥ तथा निर्गुण ब्रह्मनुंज्ञान होय ॥तेवगर शिरव्युंसाक्षात्ज्ञानहोय॥
अनेतेएमकहेजे॥ ॥ॐसोहं कहेतां मिथ्याब्रह्मनेसबलब्रह्मएबेयथी पर एवुंजे निरगुणब्रह्म ते मारुं स्वरुपछे
॥अनेतेनोजेजेजीव आश्रयकरे तेने निरगुण ब्रह्मनासाधर्मपणानेपमाडे छे ॥अने ज्यारे परब्रह्म पोते अवतार धारणक
रेछे त्यारे तेने विषे विराट सूत्रात्मा अव्याकृत रुप मिथ्या ब्रह्मनुंज्ञान तथासबलब्रह्मनुंज्ञान ॥तथानिर्गुण ब्रह्म नुंज्ञान
तथापरब्रह्मनुं एआदिक अनंत ब्रह्म विद्यानुज्ञान होयछे अनेतेपणएमकहेजे ॐसोहं केहेतांमिथ्या ब्रह्म निर्गुणब्रह्म
तेथीपरजेपरब्रह्म ते मारुं स्वरुछे अनेतेनो आश्रय करिनेतेने विषे जोडाईजायछे तेनिर्गुण ब्रह्मरुपथईने परब्रह्म
नासाधर्म्यपणानेपामेछे॥ एवीरीतेजेनो अवतार थयो होय तेनुंज्ञानतेनी पासे वगरशिरव्युंहोय एमज्ञानेकरिने
ओलखायछे ॥अनेजेनेजेजे मत्स्यादिकतेनाते भगवान कहेवाय ने भगवानजाणीनेतेनुंभजन करे अनेतेस
र्वे अवतार कर्यातेने विषेज्ञानतो जेवुंजेनुं स्वरुपहोय तेटलुंतेआपीनाखे पणसर्वेने विषेइंद्रियोनानियम रुपजे धर्मतथादे
हआत्मानाविवेक रुपजेज्ञान ॥तथापंचविषयना त्यागरुपजेवैराग अने एयाज्ञान ना आपनारा प्रत्यक्ष सत्गुरु तेनी
आज्ञानेसेवारुप भक्ति एचारसाधन तेनेसंपूरणसरखांहोयछे ॥एविरीते वेदनेविषे ब्रह्म ना ज्ञानना भेदकह्या
छे॥ते ज्ञानसर्वने मोक्ष पामवानुंछे॥तेमां क्षतो सर्वात्मा ब्रह्म जे पर ब्रह्म तेने पामशो त्यारे थशो॥ पणते परब्रह्म
नेपामवुं तेना मारगमां बिजा पांचप्रकारना ब्रह्मनुं ज्ञानपामवुं॥ जोईयेछेये ॥ते विना पाधरुं पर ब्रह्मने नथीपमातुं

॥तेसारु परब्रह्मेज एछ प्रकारना ब्रह्मनुंज्ञानउत्पन्न कर्युं छे ॥ नेकोई कोई समे एपांच प्रकारना ब्रह्म कह्या तेनेअव
तारधरावीने तेना स्वरुपनुंज्ञान जिवोनेकरावेछे ॥ तेजेनेज मल्याहोय तेनातें भगवानकहेवायछे॥ अने कोई समेतो
पोतेसर्वकारण सर्वकरता सर्वाधार नेसर्वथीपर परब्रह्मतें अवतार धारणकरेछे। नेछप्रकारना ब्रह्मनुं ज्ञानआपिने नि-
र्गुण ब्रह्मरुपजिवनेकरिनेपोताना साधर्म्यपणाने पमाडे छे॥ एरितेतेजीवनोमोक्ष ज्ञानआपीनेकरेछे ते एछप्रकारे ब्र
ह्मना अवतार आ पृथ्वीउपर थायछे ।तेउपरथीजोयामांतो सर्वे माणसजेवा सरखादेखाय ॥पण तेनाज्ञानमां घणोभेदहो
तेजेवाजेहोय तेटलुं तेनीपासेज्ञानहोयछे ॥ अनेतेमाणसजेवाहोय तोपणएमकहेजे अमे ब्रह्मछैये तेतो साचाब्रह्मछे॥के
मके तेनीपासे ब्रह्मनुं यथार्थज्ञानछे पण हवेजेने एवुं ज्ञान तोनहोयने पोते तोजीवहोय तेएमकहेजेहुं पण ब्रह्म छे।केमके
पूर्वे रामकृष्ण रषभकपिलादिक अवतार थई गयातेणे पण कह्युं छे जेअमेब्रह्मछैये तो तेपण माणसहता ॥ नेहुंपण तेजेवो
माणसछुं॥माटेहुंपण ब्रह्मछुं॥एमकहेनारो असुर छे॥नेपापिछे॥नेतेने ब्रह्म थकवा थयोजाणवो केमकेतेमाणसजे
वाहता पण तेनीपासे साक्षात्कार ब्रह्मनुज्ञानहतुं॥ ने तारिपासेतो ज्ञाननो लेशनथीमाटे तुने॥ तेरामकृष्णादिक स
रखाननथी ॥जेमएकपृथ्वीनो पतिराजातेमाणस नेएक कोईक रांक भिखमागतोहोय तेमाणस ॥ एबेमां केटलो भेद छे॥के
मकेजेराजाछे तेएमकहेजे हुंराजाछुं॥तेतो साचोराजाछे नेतेनो तोहुकमचालशे ॥ अनेजेरांकछेतेएमजाणेजे राजाय
माणसछे नेहुंयमाणसछे॥ माटेहुं पण राजाछुं ॥एमकहे पण तेनोहुकमचालेनहि॥ नेतेने राजाजाणेतो तेनुं घाणेघालि
नेतेल काढिनाखे॥तेमजे रामकृष्णादिक अवतार तेतो ब्रह्महता माटेतेणे कह्युंजे अमेब्रह्म छैये ॥नेतेनीपासेतो ब्रह्मरु
प करवानीअदभूत एवी ज्ञानशक्तिहती ॥ अनेतेनोवाद लेईने बिजो अज्ञानीजीवछे॥ तेशास्त्रमांथीसांभलीनेएम
कहेजेहुं ब्रह्मछुं॥ ते तोएमकहेनारोपापीछे ॥नेतेनाउपर तो ब्रह्मनो कोपथायछे॥ माटे एज्ञान खोटुं छे ॥ अने धर्मज्ञान
वैराग ने भक्तिये सहित एवुंजे ब्रह्मनुंजथार्थज्ञान तेजेनीपासे होय तेसाचाब्रह्म छे ॥अने ते माणसजे वादेखायछे॥तोप

पोतानीयोग्यमायायेकरिने माणसजेवादेखायछे॥
णतेमाणसनथी॥ ब्रह्मनीजमूर्तिछे॥ नेतेतो पोतानाधाममांरह्याथका पोतानीयोग्यमायायेकरिने माणसजेवादेखायछे॥ मारे मायापरने परब्रह्म
तेमअवतारादिकमनुष्यस्वरुपछे॥ तेतेमब्रह्मनीमूर्त्तिछे ॥पण तेनेविषे देहदेही एवो भेदनथी मारे मायापरने परब्रह्म
नेतेनाअवतार रामकृष्णादिक तेवे एकजछे।।अने ते अवतार विनाना बिजा माणस तेतोजीवछे तेजिवए प्रत्यक्षअव-
तारमूर्तितेनो आश्रयकरिने एथकि ज्ञाननेपामे तोते जीवनुं अज्ञानटलिनेमाया परथईने ब्रह्मनास्वरूपने साक्षात्का
रपामे॥ पणतेनाआश्रय विनाब्रह्मनास्वरूपने कोई पामेजनहिं।।अनेतेविना त्रागरआपी मांभलीनेहुं ब्रह्मछुंएमक
हेछे।। तेतोजेमरांकहोय तेएमकहेजेहुंराजाछुं ।।एमकहेपण तेनोरंचमात्र दुकमचालेनहिं।। ने भीखमागीनेते
नाप्राणजतारहे॥तेमरामकृष्णादिकपरब्रह्मनाअवतार ॥तेनाआश्रयनो त्याग करिने जीवकहेजेहुंब्रह्मछुं॥ एमकहेना
रातोजमनादुतनोमारखाशे ॥ने लखचोराशीमांजन्ममरणनेपामशे॥ तेकोईदहाडेतेनोछुटको नहिथाय॥ माटेजीव
कोईदहाडे ब्रह्मनथी॥ जीवते अनादिनाजीवजछे।।तेजीवने ब्रह्मनाअवतारजे रामकृष्णादिक तेनो आश्रय थाय नेतेने
विषेजीवजोडाईजाय ॥तोतेजीवब्रह्मनेपामे।।नेतेनेजन्ममरणटलिनेमुक्तिथाय ।।पणप्रत्यक्षपरब्रह्मना अवतारनाआश्र
यविनाजीवनीमुक्ति थायनहिं॥ त्यारेकोईएमकहेजेशास्त्रमांतो पोतानेब्रह्मरुपमानवुं एमकह्युंछे तेनुंकेमसमजवुं।।तो
तेनुंएमसमजवुंजे त्यारेप्रत्यक्षभगवान रामकृष्णादिकरूपे ज्ञानदाताजीवने मलेमेतेथकितेनोआश्रय करिने धर्मज्ञान
वैरागने भक्तिसिद्धकरिने निरवासनीकथाय॥त्यारेतेजीवब्रह्मरुपथायछे॥ पछेएवो ब्रह्मरुपनिरवासनीक थयो तेनेएम
मानवुंजे हुं ब्रह्मरुप एवो परब्रह्म नोदासछुं।।एमसमजवुंजे जेमराजानेघेरजन्मनेपामिने राजनीतिने भणीनेपछे॥ते
एमकहेजेहुंराजाछुं ।। तेतोराजाखरो॥ अनेजेरांकनेघेरजन्मीने मूरखजेवो होय ते एमकहेजे हुं राजाछुं॥ तेतो मूरखछे
॥नेराजानो गुन्हेगारथायछे॥ तेमजेने भगवाननेभगवानना निरवासनीकपंचविषयनात्यागीब्रह्मरुपसंततेनो आश्रयपवोछे
नेतेथकि धर्मज्ञान वैरागने महात्मेसहित प्रत्यक्षभगवाननी भक्तिसिद्धकरिने आत्यंतिक ज्ञाननेपामेछे ॥तेतो

ब्रह्मरुपछे ।।नेतेनेएम मानवुंजे हुं ब्रह्मछुं ॥ पणजे नेप्रत्यक्षभगवान रामकृष्णादिक नोआश्रय नहोय नेधर्मज्ञानादिक गुणपणनहोय ने पंचविषयमां लोलुपथई रह्यो होय ।।ने विषयनेभोगवतोहोय नेतेएम कहेजेहुं ब्रह्मछुं॥ तेतोपापीछे ॥ नेतेना उपर तो ब्रह्मनोकोपथायछे।। माटे प्रत्यक्षभगवानने भगवानना निर्वासनिक संतनो आश्रय करिने निर्वासनिक थाय ते ब्रह्मरुपछे।। नेतेनी मुक्ति थशे ।।नेजेनेभगवानने भगवाननासंतनो आश्रयनथी तेतो सर्वेजीवछे ॥ ।।इतिश्री मुख सिद्धांत समाप्तः।। ।।श्रीहरिकृष्णायनमो नमः॥ ॥संवत॥१९॥ओगणिसे ॥२४॥ चोविसना श्रावणशुदि ॥१२॥ द्वादशीनेदिवसमहाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीधोलकामध्ये श्रीनीनी धर्मशालामां हिंडोलाखाटउपर बिराजमानथयाहता ॥नेसर्वे जरियानीवस्त्र धारण कर्याहतां ॥ नेपुष्पनांआभूषणसर्वे अंगमांशोभिरह्यांहतां। नेपोतानामुखारविंदनीआगल साधुतथाघणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठिहती पछे महाराज बोल्याजे जीवनीमुक्ति थवी तेज्ञाने करिनेथायछे॥ पणआजगतने ज्ञाने करिनेमुक्तिथतिनथी॥केमके जगतनुंज्ञान तो मनुष्य ने पशु नेपंखिने एआदिकजेटला जंगमजीवमात्रछे॥ तेसर्वेने जगतनुंज्ञानछे॥ अनेझाड पहाडादिक स्थावरजीवकस्तिअवस्थामांछे तेने जगतनुंज्ञान नथी ॥ अनेजंगमजीवनेतो पोतपोताना देहनिर्वाहनेअर्थे विषयरुपजगतनुंज्ञानछे॥ माटेतेज्ञाने करिने मुक्तिथति नथी ॥ मुक्तितोवेदांतनेज्ञाने करिने थायछे॥ तेवेदांत एटलेशुं तो वेदजेजगतनुंजाणवुं॥ तेनो जेअंत तेनुं नामवेदांत छे॥ केहेतांजगतनोअंतएटले जगतपरजेज्ञान तेनुंनामवेदांतछे ॥ अनेवलिते वेदांतनो बिजोअर्थ छेजे वेदजेज्ञान तेनोअंत तेनुंनाम वेदांतछे॥ केहेतांज्ञानजे ब्रह्म तेथीपरएवाजे दिव्यमूर्त्ति परब्रह्म परमात्मा तेनेजाणवा।।तेनुंनाम वेदांत कहेवायछे ॥माटे वेदांतबेप्रकारनुंछे॥ एकनिरविशेष वेदांतछे ।।ने बिजुंसविशेष वेदांतछे ।। तेजगतनोअंतएटले जगतनोप्र-

लयकरिनेजेज्ञाननेपामवुंतेनुंनाम निरविशेषवेदांत कहेवायछे॥ अनेज्ञानरुपजे ब्रह्म ते रुप पोते थईने एब्रह्म नाप्रकाशक एवाजे दिव्यमूर्ति परब्रह्म तेने साक्षात्कार जाणवाने पामवा॥ तेनुं नाम सविशेष वेदांतकहेवायछे॥ माटेए बे प्रकारनावेदांतना ज्ञानने सिद्धकरे॥ तेजिवनी मुक्ति थायछे॥ हवेते वेदांतनुं ज्ञान सांख्यने योगे करिने सिद्ध थायछे॥ तेसांख्यने योग पण बे प्रकारनाछे॥ एक नीरबिजसांख्यछे नेएक निरबिज योग्य छे॥ नेबिजुं सबिज सांख्यछे ने सबिज योगछे॥ हवे निरबिजसांख्य ते शुं॥ तो आ देहथीजीवने जुदोजाणवो॥ अने ब्रह्मांड थीइश्वरनेजुदो जाणवो॥ तेनुं नाम निरबिजसांख्यकहेवायछे॥ अनेए पिंड ब्रह्मांडनीजे उत्पत्तिथईछे॥ ते मतेनो प्रलय करिनेजीवइश्वरने विषेजे दृष्टाद्रश्यनो भेदछे॥ तेनेटालिने ब्रह्मरूपजे अधोउर्ध भेदे रहित प्रकाश तेने विषे एकत्वपणुं करवुं॥ कहेतां ब्रह्मरुप प्रकाशविना पिंड ब्रह्मांड तथा जिवइश्वर कांई नजरे आवे नहिं॥ तेनुं नाम निर्बिज योग कहेवायछे॥ अने एथिरीते निर्बिजसांख्यने निर्बिजयोगना ज्ञाने करिने ब्रह्मना भावने पामवुं॥ केहे तां ब्रह्मथवुं॥ तेनुं नाम निरविषेषवेदांत कहेवायछे॥ पण तेएकलेनिरविषेषवेदांतने ज्ञाने करिने जन्ममरण टलतुं नथी॥ केमके प्रकाशमां निराकारपणे अधरपधर निराधार पणे रहेवातुं नथी॥ माटे तेने देहनो आधार टलतो नथी॥ माटे निर बिज सांख्य योगे करिने निर्विशेष वेदांत नाज्ञानने सिद्ध करिने ब्रह्मनाभावने पामिजायछे॥ ते पछे सविशेषवेदांतना ज्ञानने पामवा सारुं सबिज सांख्य नेसबिज योगने सिद्धकरवां॥ हवे सबिज सांख्य ते शुं॥ तो सशुद्ध चेतन निर्गुण निराकार व्यापक ब्रह्म रुप प्रकाश ते प्रकाशने मध्ये प्रकाशना आधार दिव्य मूर्ति परमात्मा रह्याछे॥ एमजाणवुं तेनुं नाम सबिज सांख्य कहेवायछे॥ केमके प्रकाशने मध्ये प्रकाशवान होय॥ जेम सूर्यना प्रकाशमां सूर्य रह्योछे॥ पण सूर्य विना प्रकाश एकलो अधरपधर रहेतो नथी॥ तेम ब्रह्मरुपजे प्रकाश तेनेमध्ये ते ब्रह्मना प्रकाशक एवा परब्रह्म परमात्मा ते दिव्यमूर्तिमान थका रह्या छे॥ एमसमजवुं तेनुंनाम सबिजसांख्य कहेवायछे॥ अने हवे सबिज योग्य ते शुं तो ए ब्रह्मना आधार एवाजे दिव्यमूर्ति परमात्मा

तेजपरमात्मा प्रत्यक्ष राम कृष्णादिक रूपे प्रगटथायछे ॥एमजाणिने ते प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषे प्रितियेकरिने जोडा
ईजवुं॥ तेनुं नाम सबिजयोगकहेवायछे॥ केमके प्रत्यक्ष सतगुरुथे सात प्रकारना ब्रह्मनुंज्ञान आपिने जीवने ब्रह्मरूपक
र्यो॥ माटे ब्रह्मथीपर होय तेज ब्रह्मरूपकरिशकेपण ते विना बिजो कोई ब्रह्मरूपकरवानेसमर्थनथी॥ माटेप्रत्यक्षरा
मकृष्णादिक परमात्माते ब्रह्मनाआधार ने ब्रह्मना मध्यने विषे दिव्य मूर्तिमान थकाअखंड रह्याछे॥एमजा
णिने ते प्रत्यक्षज्ञानदाता पोताने मल्या जे परमात्मा तेने विषे प्रितियेकरिने जोडाईजवुं॥ तेनुं नाम सविजयोगकहेवा
यछे॥ अनेसबिज सांख्ययोगे करिने ब्रह्मने विषे दिव्य मूर्ति परमात्माने सिद्धकरिने तेपरमात्मा प्रत्यक्षराम कृष्णादि
कपोतानेमल्याते छे॥एमजाणिने तेप्रत्यक्ष मूर्तिने विषे जोडाईजवुं॥ तेनुंनाम सविषेषवेदांतनुं ज्ञानजाणवुं॥एवि
रीते निरबिज सबिज सांख्ययोगादिके करिने निर्विशेषसविशेष वेदांतनाज्ञानने सिद्धकरवुं॥तेणे करिने आत्मा
नीमुक्तिथायछे॥ नेजन्ममरण टलेछे॥ माटेजेनेपोतानाआत्माने मोक्षपमाडवानीइच्छा होय तेने आत्यंतीकज्ञानना
आपनारा एवाजेप्रत्यक्ष भगवान तेनोआश्रयकरिने निर्विशेष सविषेष वेदांतनुंज्ञान सिद्धकरवुं॥हवेतेज्ञान पामवानी
रीतकहियेछिये॥ तेमांप्रथम निर्बिजसांख्यनुंज्ञानकहेवाछे॥ तेमां प्रथमजगतनी शिरीते उत्पत्तिथईछे॥तेनेजाण
वुंजे प्रथमआत्यंतिक प्रलयमां जगतवहोतुं॥ तेदहाडे दिव्य मूर्तिमान एवाजेपरमात्मा तेएकहता॥ अनेतेपरमात्मा
नाअंगनोप्रकाश जे सर्वव्यापकअक्षरब्रह्म तेने विषे एप्रकाशना स्वजातिएवा असंख्यकोटि जिवो ते अज्ञानअ
वस्थामां रह्याहता॥ तेब्रह्मनाप्रकाशमां मलिने रह्याहता॥ पण ब्रह्मथीजीव जुदादेखातानहोता॥ जेमसूर्यना प्रकाश
ने विषे चंद्रमानो प्रकाश तारानो प्रकाश मशालनो प्रकाश दिवानो प्रकाश एकमलिनेरहेछे॥पण दिवसनाप्रका
शमां एमनथीदेखातुं जे आटलो चंद्रमानो प्रकाश छे ने आटलो तारानो प्रकाश छे॥ ने आटलो मशालनो प्रकाश
छे॥ने आटलो दिवानो प्रकाश छे॥ एमदिवसनाप्रकाशमां कोईनो जुदो प्रकाश देखातो नथी सर्वेनो प्रकाश एक-

कजणायछे॥ तेमसूर्यरुपएवा दिव्यमूर्तिमान परमात्माछे॥ नेतेनाअंगनो प्रकाशसर्वव्यापक निरंजन निर्गुणब्रह्मछे॥ह
वे ते ब्रह्म केवुंछे तो सर्वव्यापक एटलेएनाविना कोईजग्यो खालिनथि॥ नेनिरंजनएटले जेमांअंधारुंनथीने निरगुणएटले
जेने विषे रज तम सत्वात्मकमायानागुण नथीएवुंब्रह्मछे॥पणतेने विषेअवकाशछे॥तेअवकाशने विषे ब्रह्मनाप्रकाश-
नास्वजातिजीवो तेअज्ञानअवस्था मां लिनपणेरह्याहता॥तेजीवोने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञाननथी॥नेतेनेपोताना
स्वरुपनुं पणज्ञाननथी॥एवाजेअज्ञानीजीवो॥तेने आत्मा परमात्मानुं ज्ञानकरावबासारुंए ब्रह्मनाप्रकाशक नेदिव्यमूर्त्ति
नेनिरअवकाशमूर्त्तिने॥ ॥कर्तुमकर्तुने अन्यथाकर्तुसमर्थ॥ ॥एवाजे परमात्मा परब्रह्म तेणे ब्रह्ममांअ-
खंडरह्याथका ब्रह्मनाकोकदेशने विषे जगतकरवानीईछाकरि पछे आजगतने विषेजीवरह्याछे॥तेबधायजीवभे-
गा करिये तेमांजेटलुं बल तेजछे॥तेथीअनंतघणुं बलनेजवालो एवो सर्वेजीवनो जिवनएक पुरुषप्रगटकर्यो॥तेनुं
नाममूलपुरुष कहेवायछे॥अनेबधायजीवनीबुद्धिभेगीकरिये एवडिएक बुद्धिरुप प्रकृति प्रगटकरि तेसर्वेजीवोनी
बुद्धिनेप्रकाशेछे॥अनेए प्रकृतिपुरुषथकि सर्वेजीवोनाबधाय मनभेगाकरियेएवुं महतईश्वरनामनरुपप्रधानपुरुष
प्रगटकर्युं॥ तेप्रधानपुरुषरुंपमन जेते सर्वजीवोनामनने प्रकाशकरेछे॥ अनेतेप्रधानपुरुषथकि परमात्माये सर्वेजीव
ना चितनी सरवाळो लेईये एवडुंएक इश्वरनुंचित्त उत्पन्नकर्युं॥तेनुंनाममहतत्व कहेवायछे॥ तेमहतत्वरुपई
श्वरनुं चित्त तेसर्वेजीवना चित्तनेप्रकाशकरेछे॥ अनेसर्वेजीवनाअहंकारनो सरवाळो लेईये एवडोएक अहंकार
प्रगटकर्यो॥ तेनुंनाम वैराट रुपईश्वरनो अहंकार कहेवायछे॥ अनेईश्वरनोआत्मा जे मूलपुरुष जेनेसबल ब्र-
ह्मकहेछे॥तेपुरुषजेते अनंतकोटि ब्रह्मांडनादेवदैत्य मनुष्य पशुपंखि सचराचर सर्वजीवमात्र तेनेप्रकाशेछे॥
तेपुरुषनेप्रकाशो करिने जिवने विषे चैतन्यताजाणपणुं व्यापकपणुं नेप्रकाशपणुं आवेछे॥अनेईश्वरजेते पुरुषरु-
पेकरिनेजीवनेप्रकाशेनहिं॥तोतेजीवने विषेचैतनतापणुं जाणपणुं व्यापकपणु नेप्रकाशपणुं तेजराखमात्रनरहे॥

नेपथरजेयोजडवत् जियथईजाय॥ माटेजीवनेविषेचैतन्यता जाणपणुं व्यापकपणुं प्रकाशपणुं ॥तेपुरुषनेप्रकाशावेकरिने आवेछे॥ अनेपुरुषनेपरमात्माये पोताना अंगनोप्रकाश रुपजे निरगुण ब्रह्म तेणे करिने प्रकाश्योछे॥ नेतेने प्रकाशेकरिने पुरुषजेतेअनंतकोटि ब्रह्मांडनाजीवोने प्रकाशवानीशक्तिनेपाम्योछे॥ अनेजोतेपुरुषनेपरमात्मानप्रकाशेतोतेपुरुष कांईकरवानेसमरथनथी॥ अनेपरमात्माना प्रकाश विनातो जेवोजीवछे॥ तेवोतेपुरुषपणजडरूपथईरहेछे॥ माटे परमात्माने प्रकाशावेकरिनेपुरुषजेतेअनंतकोटिब्रह्मांडनाजीवोने प्रकाशकरवानीशक्तिनेपाम्योछे ॥ माटेईश्वरजेतेपुरुषरुपेकरिने जीवमात्रनेप्रकाशोछे॥ अनेइश्वरनी बुद्धिजेमुलप्रकृति तेणेकरिनेअनंत कोटि ब्रह्मांडनाजे जीव प्राणिमात्र तेनीबुद्धिनेप्र काशेछे॥ तेणेकरिनेसर्वेजीवजेते सर्वपदार्थनो निश्चय करिशकेछे ॥अनेजोइश्वर पोतानीबुद्धिजे प्रकृति तेणेकरि नेप्रकाशानकरे तोजीवजेतेकोईपदार्थनो निश्चय करिशकेनहिं॥ माटेईश्वरनी महतबुद्धिजे मूलप्रकृति तेनेप्रकाशा वेकरिने सर्वजीवनीबुद्धि जेते निश्चयकरेछे॥ अनेईश्वरनुंमनजेप्रधान पुरुष तेणेकरिने सर्वेजीव प्राणिमात्रना मनमेप्रकाश करेछे॥तेणेकरिने संकल्प विकल्प करिशकेछे॥ पणईश्वरनुंमनजेप्रधानपुरुष तेनाप्रकाश विनाजिव जेते संकल्प करवाने समर्थनथी॥ माटेप्रधानपुरुषजे ईश्वरनुंमन तेजिवोने प्रकाशेछे ॥अनेमहतत्वरुपजेईश्वरनुं चित्त तेजेते सर्वजीवना चित्तने चिंतवनकरावेछे ॥अनेजोइश्वर महतत्वरुप पोताना चित्तेकरिने प्रकाशानक रेतो॥ कोईजीव चिंतवनकरिशकेनहिं॥ केहेतां कोईपदार्थनी स्मृति जीवनेरहेनहिंमाटेमहतत्वेकरिनेसर्वेजीव नाचित्तनेइश्वरप्रकाशेछे॥ तेणेकरिने पदार्थनीस्मृति करिशकेछे ॥अनेवैराटरुपअहंकारेकरिने इश्वरजेतेसर्व जीवनेअभीमानधरावेछे॥ अनेवैराट प्रकाशानकरेतोजीवजेतेपोतानादेहनुं घरनुंघरणनुं आश्रमनुं नात्यनुंजात्यनुं धन्यनुंइत्यादिककोईजातनुं अभिमानधरिशकेनहिं॥ केहेतांहुं कयावरणमांछुं केकयाआश्रममांछुंकेअमारी नात्यछे ॥केअमारुंघरछे॥ केअमारोदेहछे ॥के बिजोमारोदेहहशे ॥एमकोईजातनी खबररहेनहिं॥माटेनात

ज्ञातवरणआश्रम धर्म नियमदृत्यादिक मरजादानोरखावनारोजेअहंकार तेनेवैराटप्रकाशकरेछे ॥त्यारेतेनीमरजादा रहेछे ॥माटेमरजादानोरखाधनारोएवोजेअहंकार तेनेवैराटप्रकाशोछे ॥अनेईश्वरना देह मांजेमहतआकाश छे ते सर्वेजीवना देहमांअवकाशने आपेछे ॥केदेतां देहने बहारनोवेहवार हरवाफरवादिक तथादेहने मांहेनो वेहवार जे केडनीपोल ॥उदरनीपोल ॥छातीनीपोल कंठनीपोल ॥मुखकनीपोल्य तथाकान मोढुं आंखना कनिश्नु गुदा आदिकइंद्रियोनीपोल्य एसर्वेनेअवकाश आपेछे ॥ अनेजो महदाकासे करिने ईश्वरजीवने अवकाश नआपेतो कोईजीव काईपण वेवारकरिशकेनहिं ॥माटे ईश्वरजेते पोताना महदाकाशे करिने सर्वेजीवनादेहनेअवकाश आपेछे ॥ अनेईश्वर नादेह मांजे महतवायु तेणे करिनेजीवजेते प्राणादिकस्वासोस्वास लेईसके छे ॥ तथाचलन वलन धावन प्रसार आकोसनादिक क्रियाकरिशकेछे ॥ अनेईश्वरना महत अग्नियेकरिने जीवनादेह मांअन्नादिक पाचन थायछे ॥ अनेईश्वरनामहत जले करिने जीवनादेह मांविर्य मुत्रादिक नुंपोषण थायछे ॥ अने ईश्वरनीमहत पृथ्वीये करिने जीवनादेहमां अन्नादिकनुंपोषण थायछे ॥ माटेजेम चक्रवर्तिराजा पोतानीराजगादियेबेठोथको आखामुलकमां पोतानो कायदो पोताना कारभारी द्वारे अदलप्रमाणे चलावेछे ॥ तेमपरमात्मा भगवानपोताना अनंतईश्वरिये तथाअनंतसक्तियो द्वाराये अनंत ब्रह्मांडनाजीवोने तथाअनंत कोटिईश्वर तेनेपोतानीइच्छाशक्ति करिने वरतावेछे ॥ तेआ रामकथाना किस्किंधाकांडनीचोपाईछे ॥ ॥उमा दारु रिमरकट नाहिं ॥सबहिनचावत राम गुसांहिं ॥ ॥ माटेअखिल विश्वएक भगवाननीइच्छाये करिने सर्व क्रियाकरवाने समर्थ थायछे ॥ अनेमोक्षपण एक भगवानकरेछे का भगवानपासेथी ज्ञान पामिने सिद्धदशाने पामेला संत नेथकिमोक्ष थायछे ॥

॥ईतिश्रीमुख सिद्धांतसमाप्तः॥ ॥

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः॥ ॥संवत१९॥ओगणिसें॥२५॥ पचिसना श्रावण॥शुदि॥१५

[illegible]रणमासिने दिवस महाराजश्रीहरिकृष्णभगवानगाम श्री धोलका मध्येसोनीनी धर्मशालामां संध्या आर्तिनेसमे हिंडोला
स्वाट उपर विराजमानथयाहता ॥नेजरियानीवस्त्रधारण कर्यांहतां ॥नेसर्वे अंगमां पुष्पनाआभूषणधारीभर्यांहतां
नेकंकुनोचांदलोकर्योहतो॥ नेपोतानामुखारविंदनीआगल साधुतथाघणाकहरिभक्तनीसभाभराईनेबेठिहति॥प
छेमहाराजबोल्याजे गितामांश्रीकृष्णभगवानेकह्युंछेजे॥ रागद्वेषरहितथायत्यारेजीवमोक्षनेपामे ॥ तेरागद्वेषतेशुं
तोसारापदार्थउपर प्रिति तेनुंनामराग॥अनेनरसापदार्थउपर प्रितिनहि॥एअभावए बेयटलिजायत्यारेजीवनीमुक्ति
थाय॥ पणातेविनामुक्तिथायनहिं॥ माटेरागद्वेषटालवोघणोकठणछे॥ केमकेरागटालवाजायतो द्वेषरहेछे॥ अनेद्वेष
टालवाजायतो रागरहेछे॥ अनेकोईमुमुक्षुहोयनेतेएमजाणेजे आपणे तो रागकरवाजोगजेसारांपदार्थनेद्वेषकरवाजो
गजेनरसांपदार्थएबेयनो त्याग करिने भगवान भजवाएमजाणिनेजगतनापदार्थथीवैरागपामिने भगवानमां प्रितिकरे॥
तोपणतेनेरागद्वेषतोरहेछे॥ केमके जगतनापदार्थसाथे वैरागएटलेद्वेष थयो अने उत्तमगुणनेविषे प्रितिकरि
तोपण तेनेसूक्ष्मगुणजे धर्मज्ञानवैरागादिक तेनो अहंममत्व रूपरागरहेछे॥ माटेभगवानननाभक्तने रागनेद्वेष ट-
ल्योनहिं॥अनेकदापिभगवानमां प्रितिकरे तेवि जगतनांपदार्थमां पणप्रितिराखे ॥नेद्वेषकोईसाथेनराखे तोद्वेषतो
टल्यो पणएक तेनेदेहनिरवाहरूप रागरहेछे ॥ माटेरागपणबंधनकारीछे॥ अनेजो रागनोत्यागकरे कहेतां भगवा
नमांपण प्रितिनकरे ॥ नेसर्वेथकिउदासथईने एकलोबेठोरहेतो तेनेराग टल्यो पण तेनेद्वेषरहेछे ॥ केमकेद्वेष
विनाकोईपदार्थनो त्यागथतोनथी ॥ अनेराग विनाकोईपदार्थनुंग्रहणथतुंनथी॥ माटेरागटालवाजायछेत्या
रेद्वेषरहेछे ॥ नेद्वेषटालवाजायछेत्यारेरागरहेछे ॥अने रागनेद्वेषबेयटल्याविनामुक्तिथतिनथी ॥माटेतमनेसर्वे
नेहुं प्रश्नपुछुंछुंजे॥एरागनेद्वेष बेयटलिजायनेजीवनीमुक्तिथाय तेनोशोउपायछे॥तेकहो ॥ पछे कोईथीउत्तर
नथयो ॥ पछेमहाराजबोल्याजे प्रत्यक्षमायापरं सतगुरुमलेनेतेनेविषेजीवनेप्रीतीथायनेतेआत्मापरमात्मानुंज्ञान

क्तधआत्यंतिककरावे नेते निनिष्कामभावराखिनेसेवाकरे त्यारे रागनेद्वेषटळेछे॥ केमके पूराज्ञानने विषे रागने द्वेषछे जनहि॥ अने अधुराज्ञानने विषे राग द्वेषछे॥ अनेजेनेज्ञान थयुं एवोजेपुरुष तेसारअसारनोविवेक राखिनेवरतेछे॥ तेतो ज्ञानीजछे॥ केमकेभगवानना संतनेहंस कह्याछे॥ ते के महंसकह्याछे॥ तो हंस छे तेदूधपाणिनेजुदां करिने पाणीनेप-डयुं मुकिनेदूधनुंग्रहणकरेछे॥ तेम संतपण पींडब्रह्मांड रूपिमायानुं कुत तेनेपड्युं मुकिनेआत्मापरमात्मा तेनुंग्रहण करेछे॥ मारेसंतनेहंसनीउपमाआपेछे॥ ॥इति श्रीमुख्य सिद्धांत समाप्त:॥

॥ ॥श्रीहरिकृष्णायनमो नमः॥ ॥संवत॥१९॥ओगणिसें ॥२४॥ चोविसना भादरवा वदि॥८॥ अष्टमिने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री धरोडामध्ये ॥पंड्यागणुभाई पितांबरनी स्त्रि बाईअचरतने घेर उतरादा बारओरडानी आगळ पाट उपर गादितकिया बिछाविने विराजमानथयाहता॥ नेराता किनखापनो रुरवाळ पेहेर्योहतो॥ ने सोनेरी ल्पेटानीडगली धारणकरिहती॥ ने सोनेरि ग्रेबंधिलि लाल रंगनो रेटो पेहेरीने तेउपर कसुंबल सेलुं केडे धारणकर्युंहतुं ने एक सेलुं रपभे नाख्युंहतुं ने कंठमां गुलाबनापुष्पनाहार धारणकर्याहतां॥ नेबे हाथने विषे करेणाना पुष्पनां आभूषण बाजु ने गजरा धारणकर्याहतां॥ नेबे कान उपर गुलाबनापुष्पनागुच्छ धारणकर्याहतां॥ नेललाटने विषे केसरनीअरचाने कंकुनोचांदलो कर्योहतो॥ मस्तकउपर कसुंबल पाघ धारण करिहती॥ नेपाघमां पुष्पना तोरा बेकोरे लटकताहता॥ अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईनेबेठिहती॥ पछे भटनंबकरामे प्रश्नपुछ्युं जे हे महाराज पामर विषयी मुमुक्षु नेमुक्त एचार प्रकारना मनुष्यछे तेनांकेवांलक्षणहोय॥ तेकृपाकरिनेकहो॥ पछेमहाराज बोल्याजे बहु सारुंपुछ्युं॥ सांभलो॥ तेनां लक्षण कहियेजे एचार प्रकारना मनुष्यछे॥ तेने विषे चार दोष रह्याछे॥ ते चार दोष किया॥ तो एक महामोह ने बिजो मोह नेत्रीजो परमाद नेचोथो आलस एचारदोषेकरिनेजन्ममरणनेपामेछे

॥ तेमां पामरने विषे महामोह मुख्यपणे रह्यो छे। ने महामोहने विषे बिजा त्रण दोष मलिने भेगा रह्या छे॥ एटले पामरने वि-
षे चार दोष वरते छे॥ अने विषयीने विषे मुख्यपणे मोह वरते छे॥ ने बिजा बे दोष तेने विषे मलीने रह्या छे॥ एटले विषयीने
विषे त्रण दोष वरते छे॥ अने मुमुक्षुने विषे मुख्यपणे परमाद वरते छे॥ ते परमादने विषे आलस रह्यो छे माटे मुमुक्षुने वि-
षे बे दोष रह्या छे॥ अने मुक्तने विषे एक आलसरूपि दोष रह्यो छे॥ हवे पामरने विषे महामोह वरते छे॥ ते महामोह
नुं शुं रूप छे तो जेने महामोह वरतती होय तेने पापनी के पुन्यनी खबर होय नहिं॥ तथा धर्मनी के अधर्मनी खबर होय
नहिं॥ अने तेने आहार मैथुन ने निद्रा ने भय ए चार वानानुं ज्ञान होय॥ तेने पामर जीव जाणवो॥ हवे विषयीने विषे मोह वर-
ते छे॥ ते मोहनुं शुं रूप छे॥ तो जेने विषे मोह वरततो होय॥ तेने सत्यने विषे असत्यनी भावना होय॥ ने असत्यने विषे सत्यनी
भावना होय॥ के हे तो सत्य एवो जे आत्मा ने आत्माना आधार एवा जे परमात्मा भगवान तेनुं ज्ञान होय नहिं॥ अने अस-
त्य एवो जे देह ने देहने पोषण करे एवा जे पंचविषयनां पदार्थ तेने विषे सत्यपणानी भावनाये सहित भोगबुद्धि होय॥
माटे शास्त्रमां कह्या जे धर्म ने अधर्म पाप ने पुण्य तेने जाणीने॥ अधर्मनो त्याग करिने धर्ममां रहिने उत्तम विषय भोगने
पामवाने अर्थे इंद्रियो नियममां राखिने दान्य पुन्य जप तप तिर्थ व्रत यज्ञादिक शुभकर्म करे ने ते शुभकर्मे करिने प्राप्त
थयां जे मादक पंचविषयना पदार्थ तेने पोते देहे करिने भोगविने राजी थाय॥ तेने विषयी जीव जाणवो॥ अने ते विषयी
ने विषे मोह ने परमाद बेय दोष भेगा वरते छे॥ केम के मोहे करिने सत्यने असत्य जाण्युं ने असत्यने सत्य जाण्युं॥
अने परमाद एटले करवानुं न करवुं ने न करवानुं करवुं एज परमाद छे॥ माटे जेवुं समजाय छे तेवुं ज कराय छे॥ ते
साटु अविवेकि एवो जे विषयी जीव ते न करवा जोग जे विषयने पामवानी क्रिया तेने करे छे॥ अने करवा जोग जे आ-
त्मा परमात्माने पामवाने अर्थे निष्काम कर्म तेने नथी करतो ए आं लक्षण जेने विषे होय तेने विषयी जाणवो॥
अने पामर ने विषयी ए बेय मिथ्या एवो जे देह तेने पोतानुं रूप मानता होय॥ अने जे मुमुक्षु होय ते तो देहथी नोखो

जे आत्मा तेने पोतानुंरूप जाणेछे ॥ अने आत्माने बंधनना करनारा एवा जे मायिक पंचविषय तेथकी मुकावाने अर्थे निष
काम भावे धर्मज्ञान वैराग्यादिक साधन करतो होय ॥ तथा लिंगदेहादिक देह दमन करतो होय ॥ तथा पंचविषयथकि
मुकावे एवा जे प्रगट भगवान ॥ ॥ अथवा प्रगट भगवानना एकांतिक संत तेमुने क्यारे मले ॥ ए
म ईछा करतो होय ॥ अने विषयने भोगवतो होय ॥ ने बिजा ने भोगवावता होय ॥ एवा जे असतपुरुष तेथी दूर रहेतो
होय ॥ ने रामकृष्णादिक भगवानना अवतार तेने ब्रह्मना आधार एवा जे परब्रह्म जाणिने तेनी उपासना भक्ती कर
तो होय ॥ अने मायिक पंचविषयने पामवाने अर्थे जे उपाय तेनो त्याग करिने उदासथको रहेतो होय एवां जे नां लक्ष
ण होय ॥ तेने मुमुक्षु जाणवो ॥ अने जे मुक्त छे तेतो पंचविषयथकि मुकाईने ब्रह्मरूप थईने आत्मा परमात्माने
साक्षात्कार देखतो होय ॥ ते एवा मुक्त बे प्रकारना छे ॥ एक जीवनमुक्त छे ॥ ने एक विदेहि मुक्त छे ॥ तेमां जे जीव
नमुक्त छे ॥ तेतो विषयनो त्याग करिने पोतपोताना जे वरणाश्रमना धर्म कह्या छे ते धर्ममां रहिने विषयथकि विरक्त
वर्तता होय ॥ पण नियमरूपि धर्मने क्यारेय चूके नहिं ॥ अने जो नियमने चुके तो ततकाल मुक्त स्थितिथकि पडि
जाय ॥ माटे जीवनमुक्त छे ते देह पर्यंत पोतपोताना नियमरूपी जे धर्म तेने क्यारेय चुके नहिं ॥ अने जे विदेही मुक्त
छे ॥ तेतो विषयनु ग्रहण करता थका विषयथकि विरक्त वरतेछे ॥ ते केनी पेठे तेनुं दृष्टांत ॥ जेम एक माछलुं छे ॥ ते
जलमां ने जलमां रहेछे ॥ ने ते जो जलथी बहार निसरे तो ते माछलुं मरिजाय ॥ अने एक पक्षि छे ते वृक्ष उपर रहेछे
पण ते जो जलमां पेसे तो ते पक्षि मरिजाय ॥ अने एक जलकुकडि छे ते तो जलमां पण माछलानी भेगी रहे अने वलि प
क्षि भेगी वृक्ष उपर आकाशमां पण तेने क्यांई आवरण थाय नहिं ॥ तेम जे जीवनमुक्त छे ॥ ते तो माछलु ने पक्षि जे
वा छे ॥ माटे तेने तो पोतपोताना जे वरण ने आश्रम ए बेय प्रकारना धर्म वेदमां कह्या छे तेमां रहे तो ते मुक्त निर्वि-
घ्नपणे अक्षरधामने पामे छे ॥ अने धर्म चुके तो भगवानना मार्गथकि पडिने जन्ममरणने पामे ॥ अने जे विदेहि

मुक्तछे॥ तेतोजळकुकडिनीपेठे पोतानीनजरमां आवे ॥तेमवरते तोपण तेनेकांई बंधनथाय नहिं॥ अने विदेहि मुक्त तो पो
ताने चरणेजेजेजीव आवे तेनाअज्ञानने मायानाबंधन तेनेटाळीने जीवन मुक्त करि मुके एवुं अद्भूत सामर्थ तेमां होय
नेएवा विदेहि मुक्त कोण छे॥ तो परमात्मा परब्रह्मना अवतार जे राम कृष्णादिक जेनुं भजन थाय छे ते विदेहि मुक्त छे॥
अने एवी देहि मुक्तना भजने करिने सिद्धदशाने पाम्या॥ एवा जे नारद सनकादिक शुकदेव जडभरतादिक संतत
था ध्रुव प्रल्हादादिक भक्त ते सर्वजीवनमुक्त छे॥ तेजीवनमुक्त नेमाथे विधिनिषेधरूपि धर्मनो कायदो छे॥ अनेरा-
मकृष्णादिक जे भगवानना अवतार तेने माथे विधिनिषेधरूपि धर्मनो कायदो नथी॥ तेतो पोतानी ईछा आवे तेम वरते
पण तेने बंधन थतुं नथी॥ ने बिजा जीवोना अनंत बंधन नेकापिने अक्षरधामने पमाडे छे॥ अने बिजो कोई तेनो वा
लेईने नजरमां आवे तेमवरतवा जाय॥ तो ते घोर नर्कमां पडे॥ ने ते कृजेवो मोटो कहेवातो होय पण भ्रष्टथईने जगतमां
निंदावा लागे॥ ते नारद महा मोटा हता॥ पण तेणे जो पोतानो धर्म जे त्यागी होय तेने स्त्रिमो परस करवो नहिं॥ ते धर्मच्यु
किने राजानी कंन्यानो हाथ जोवा सारु स्पर्श कर्यो॥ तो ते नारदनी मोटी अपकिर्ति थई ने ब्रह्मस्थितिमांथी पडिग
या॥ ए आदिक घणाक मोटा मोटाने धर्मच्युक वाथ किफजेती थई छे॥ अनेरामकृष्णादिक भगवानना अवतार तेतो पो
तानी ईछामांआवे तेम वर्त्या छे॥ तो पणतेनां चरित्रतो कल्याणकारी कहेवाणां छे॥ नेतेचरित्रने मोटामोटा मुक्त तेणे
गान कर्यां छे ने तेने गाने करिने अनंतजीवोना उद्धार थई गया छे॥ एविरीते विदेहि मुक्तरूपजे प्रत्यक्ष परमात्माना अव-
तारजे रामकृष्णादिक तेने विषेजे दोषपरठे छे॥ तेतो असूर छे ने दैत्य छे॥ केमके जेने भजने करिने अनंतजीव भवोध्धरिग-
या छे॥ तेने विषेजेदोषपरठे छे तेजेवो पापी कोण॥ एतो महापापि छे॥ माटे विदेहि मुक्तरूप एवाजे रामकृष्णादिक भग-
वानना अवतार तेना चरित्र ने तेनुं ध्यान ने तेनी सेवा तेणे करिने पामर विषेयीने मुमुक्षु एत्रणे प्रकारना मनुष्य तेजीव
वन मुक्तपद पामे छे॥ ए विरीते पामर विषयी मुमुक्षुने मुक्तनां लक्षण छे॥ तेने समजीनेजे पोताना अंतरमां-

विचारकरिनेसतपुरुषनोसमागमकरिनेदोषनेमुकिनेगुणनोग्रहणकरेतेपणजीवनमुक्तनीपदवीनेपामेछे॥ ॥
इतिश्रीसुखसिद्धांतसमाप्तः॥ १६ ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥
॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥



आ पुस्तक अमदावाद मध्ये मामानी हवेलिमां युनाईटेड प्रिन्टिंग अने जनरल एजन्सि कंपनी "लिमिटेडना" प्रेसमां
रणछोडलाल गंगारामे छापी प्रसिद्ध कर्युं.

मुकाम अमदावाद.

संवत १९३३-३४ शाके. १७९९


इतिश्रीमुख सिद्धांतप्रकरणत्रीजुं समाप्त.